मुराकामी

1Q84

पुस्तक एक,
पुस्तक दो और
पुस्तक
तीन

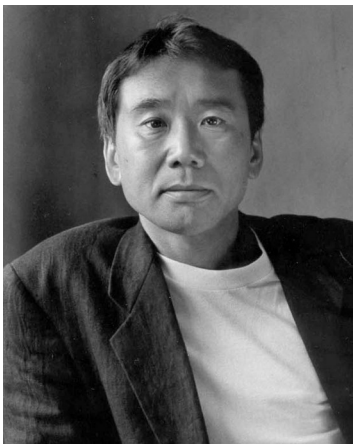

समकालीन जापान के सबसे लोकप्रिय लेखकों में से एक, हारुकी मुराकामी का जन्म 1949 में हुआ था। उन्होंने टोक्यो के वासेडा विश्वविद्यालय में साहित्य का अध्ययन किया। टोक्यो के एक जैज़ बार के मालिक के रूप में उनका अनुभव (जो उनके 1992 के उपन्यास, साउथ ऑफ़ द बॉर्डर, वेस्ट ऑफ़ द सन; पोलिरोम, 2003, 2004 में परिलक्षित होता है) और एफ. स्कॉट फिट्ज़गेराल्ड, जॉन इरविंग, ट्रूमैन कैपोर्टे और रेमंड कार्वर की रचनाओं के अनुवादक के रूप में उनका अनुभव पश्चिमीकृत जापान के संदेशवाहक के रूप में उनके व्यक्तित्व को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है – एक भ्रामक भूमि, जो आत्मा और सांस से रहित प्रतीत होती है, जिसकी प्राचीन भावना लगभग पूरी तरह से लुप्त हो गई है। उनके पहले उपन्यास, लिसन टू द विंड सिंग (1979) ने गुन्ज़ो पुरस्कार जीता, इसके बाद ऑटोमैट 1973 (1980) और इन सर्च ऑफ़ द फैंटास्टिक शीप (1982, नोमा पुरस्कार विजेता; पोलिरोम, 2003, 2005) प्रकाशित हुए। 1987 में उन्होंने नॉर्वेजियन वुड (पोलिरोम, 2002, 2004) प्रकाशित किया, जो एक अंतरराष्ट्रीय बेस्टसेलर था, जिसका कई भाषाओं में अनुवाद हुआ और जिसकी चार मिलियन से अधिक प्रतियां बिकीं। मुराकामी ने साक्षात्कार संग्रह अंडरग्राउंड: द टोक्यो बॉम्बिंग एंड द जापानी स्पिरिट (1997; पोलिरोम, 2008) और उपन्यास एट द एंड ऑफ द वर्ल्ड एंड इन द रफ लैंड ऑफ वंडर्स (1985, जिसके लिए उन्हें तानिज़ाकी पुरस्कार मिला; पोलिरोम, 2005), डांस डांस डांस (1988; पोलिरोम, 2004, 2006), क्रॉनिकल ऑफ द आर्क बर्ड (1994, प्रतिष्ठित ÎMPAC डब्लिन साहित्यिक पुरस्कार के लिए नामांकित; पोलिरोम, 2004), माई लव भी प्रकाशित किए। स्पुतनिक (1999; पोलिरोम, 2004), काफ्का ऑन द सीसाइड (2002; पोलिरोम, 2006) और एट नाइट (2004; पोलिरोम, 2007), साथ ही कहानियों या निबंधों के संग्रह द एलिफेंट डिसअपीयर्ड (1993; पोलिरोम, 2005), आफ्टर द अर्थक्वेक (2000; पोलिरोम, 2006), द ब्लाइंड विलो, द स्लीपिंग गर्ल (2006; पोलिरोम, 2007) और द राइटर'्स सेल्फ-पोर्ट्रेट एज ए लॉन्ग-डिस्टेंस रनर (2007; पोलिरोम, 2009)।
एक युवती लटकते राजमार्ग की आपातकालीन सीढ़ी से नीचे उतरती है। उसका इरादा एक आदमी को जान से मारने का है। महानगर के दूसरे हिस्से में, एक गणित शिक्षक डिस्लेक्सिया से पीड़ित एक लड़की के उपन्यास को फिर से लिखने के लिए सहमत हो जाता है। अनजाने में ही, दोनों एक-दूसरे से मिलते हैं, और उनके कार्यों से घटनाओं का एक अभूतपूर्व सिलसिला शुरू हो जाता है, क्योंकि मुराकामी की

कहानियों में सरल कहानियां कभी सरल नहीं होतीं। सामान्य वास्तविकता के पीछे हमेशा खतरनाक अंधेरा छिपा रहता है, और अतीत को न तो आसानी से बदला जा सकता है और न ही भुलाया जा सकता है। युवा हत्यारा और गणित शिक्षक धीरे-धीरे पाते हैं कि उन्होंने अंधेरे से ऐसी विशाल शक्तियों को जगा दिया है जो दुनिया के भाग्य के लिए खतरा हैं। इस उपन्यास को एक प्रेम कहानी के रूप में पढ़ा जा सकता है, लेकिन साथ ही यह कट्टरता और उससे उत्पन्न हिंसा पर एक गहन चिंतन भी है। अंत में, 1Q84 स्वतंत्रता के अस्तित्व पर सवाल उठाता है, चाहे उसकी अभिव्यक्ति के तरीके कुछ भी हों।

हारुकी

मुराकामी

1Q84

खंड I का III

जापानी से अनुवाद और इउलियाना ओप्रिना
और फ्लोरिन ओप्रिना के नोट्स

पॉलीरोम

2011

□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□,
□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□, □□□□ □□ □□□□ □□□
□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□
□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□

"□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□"
(□.□□□. □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□)

□□□□□□ – □□□

अध्याय 1 दिखावे से धोखा मत खाओ

टैक्सी में रेडियो पर शास्त्रीय संगीत बज रहा था। जनाचेक की सिम्फोनीटा। ट्रैफिक में फंसी टैक्सी के लिए यह संगीत बिल्कुल भी उपयुक्त नहीं था। अधेड़ उम्र का ड्राइवर भी इसे ज्यादा दिलचस्पी से नहीं सुन रहा था। वह चुपचाप सामने गाड़ियों की लंबी कतार को घूर रहा था, मानो कोई कुशल मछुआरा अपने जहाज के अगले हिस्से पर खड़ा होकर खुले समुद्र की लहरों का पीछा कर रहा हो। पिछली सीट पर गहरी नींद में बैठी आओमामे आधी बंद आँखों से संगीत सुन रही थी।
दुनिया में कितने लोग जनाचेक की सिम्फोनीटा को पहले सुरों से पहचान सकते हैं? शायद "बहुत कम" और "कोई नहीं" के बीच। लेकिन किसी कारणवश, आओमामे इसे पहचान सकती थी।
जनाचेक ने इस छोटी सी सिम्फनी की रचना 1926 में की थी। इसका प्रारंभिक संगीत किसी खेल प्रतियोगिता के लिए तैयार किया गया था। आओमामे ने कल्पना करने की कोशिश की कि 1926 में चेकोस्लोवाकिया कैसा दिखता होगा। प्रथम विश्व युद्ध समाप्त हो चुका था, देश हैब्सबर्ग राजवंश के लंबे शासन से मुक्त हो चुका था, और लोग कैफे में पिल्सनर बियर पी रहे थे और शानदार, लेकिन बिल्कुल असली, मशीनगन बना रहे थे, मध्य यूरोप में छाई अस्थायी शांति का आनंद ले रहे थे। दो साल पहले, फ्रांज काफ्का कठिन परिस्थितियों में इस दुनिया से चले गए थे। इसके कुछ ही समय बाद, हिटलर अचानक प्रकट हुआ और उस खूबसूरत छोटे से देश को एक झटके में निगल गया, लेकिन उस समय किसी को भी इस बात का अंदाजा नहीं था कि ऐसी भयावह घटना घटित होने वाली है। शायद इतिहास से सीखने वाला सबसे महत्वपूर्ण सबक यही है कि "उस समय, किसी को नहीं पता था कि क्या होने वाला है।" संगीत सुनते हुए, आओमामे ने बोहेमिया के मैदानों में बहती शांत हवा की कल्पना की और इतिहास के प्रवाह के बारे में सोचा।
1926 में सम्राट ताइशो का निधन हो गया और शोवा युग का प्रारंभ हुआ। जापान जल्द ही एक अंधकारमय दौर में प्रवेश करने वाला था। आधुनिकता और लोकतंत्र का संक्षिप्त दौर समाप्त हो रहा था और फासीवाद सत्ता में आ रहा था।
खेलों के साथ-साथ इतिहास भी आओमामे के शौक में से एक था। उसे उपन्यासों में ज़्यादा रुचि नहीं थी, लेकिन वह इस विषय पर बहुत सारी किताबें पढ़ती थी। इतिहास में उसे जो बात सबसे अच्छी लगती थी, वह यह थी कि सभी घटनाएँ एक निश्चित वर्ष और स्थान से जुड़ी होती हैं। उसे वर्ष याद रखने में कोई परेशानी नहीं होती थी। अगर वह घटनाओं को आपस में जोड़ पाती, तो वे अपने आप उसके दिमाग में आ जातीं, बिना संख्याओं को याद किए। प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय में, आओमामे ने अपनी कक्षा में इतिहास में सबसे अच्छे अंक प्राप्त किए थे। जब भी वह किसी ऐसे व्यक्ति से मिलती जिसे वर्ष याद नहीं रहते थे, तो आओमामे को आश्चर्य होता था कि वे इतनी मामूली सी बात भी कैसे नहीं कर सकते।
ओमामे उसका असली नाम था। उसके दादा फुकुशिमा प्रांत के थे, और उस क्षेत्र के किसी पहाड़ी गाँव या कस्बे में ओमामे उपनाम वाले कुछ लोग रहते थे। लेकिन वह कभी वहाँ नहीं गई थी। उसके पिता ने उसके जन्म से पहले ही परिवार से नाता तोड़

लिया था। उसकी माँ ने भी ऐसा ही किया था। इसी वजह से वह अपने दादा-दादी से कभी नहीं मिली थी। वह बहुत कम यात्रा करती थी, लेकिन जब कभी मौका मिलता, तो वह होटल की फोन बुक खोलकर देखती कि क्या आस-पास के इलाके में ओमामे नाम के कोई और लोग हैं। लेकिन अब तक, उसने जितने भी कस्बों का दौरा किया था, उनमें से किसी में भी उसे ओमामे नाम का कोई और व्यक्ति नहीं मिला था। यह हमेशा उसे एक अकेली परित्यक्त व्यक्ति की तरह महसूस कराता था, जैसे उसे खुले सागर में छोड़ दिया गया हो।
अपना परिचय देना हमेशा उसके लिए एक झंझट भरा काम होता था। हर बार जब वह अपना नाम बताती, तो सामने वाला व्यक्ति उसे हैरानी या उलझन भरी नज़रों से देखता। "आओमामे, आपका नाम?" "हाँ। यह 'हरा' के लिए 'आओ' और 'बीन्स' के लिए 'मामे' अक्षरों से लिखा जाता है।" जब वह किसी कंपनी में काम करती थी और उसे बिजनेस कार्ड रखने पड़ते थे, तो ऐसे अजीबोगरीब पल अक्सर आते थे। जब वह किसी को अपना बिजनेस कार्ड देती, तो लोग उसे ऐसे घूरते जैसे उन्हें अचानक कोई चिट्ठी थमा दी गई हो। फोन पर अपना नाम बताने पर कभी-कभी उसे हंसी की आवाज़ें सुनाई देती थीं। अस्पताल या नगर पालिका कार्यालय के प्रतीक्षालय में जब उसका नाम पुकारा जाता, तो लोग उत्सुकता से उसकी ओर देखते, यह जानने के लिए कि 'आओमामे' नाम की कोई महिला कैसी दिखती है।
उसे गलती से "एदामामे{1}-सान" कहकर पुकारा जाता था। यहाँ तक कि "सोरामामे{2}- सान" भी। तब वह उसे सुधारती: "नहीं, मेरा नाम आओमामे है, एदामामे (सोरामामे) नहीं। हाँ, नाम मिलता-जुलता है।" जिससे वह बात कर रही होती, वह शर्मिंदा होकर मुस्कुराते हुए माफी मांगता और कहता: "फिर भी यह एक अजीब नाम है।" तीस साल की उम्र में उसने कितनी बार यह बात सुनी थी? उसके नाम पर कितने मजाक बने थे? उसने सोचा, अगर मेरा यह नाम न होता, तो शायद मेरी जिंदगी अलग होती। अगर मेरा कोई आम नाम होता, जैसे सातो, तनाका या सुजुकी, तो शायद मैं भी ज्यादा शांतिपूर्ण जीवन जीती और दुनिया को ज्यादा सहनशीलता से देखती। शायद।
ओमामे आंखें बंद करके गाना सुन रही थी। उसने वाद्य यंत्रों की मधुर धुनों को अपने मन में उतरने दिया। एक पल उसे कुछ एहसास हुआ। टैक्सी के रेडियो के हिसाब से आवाज़ की गुणवत्ता आश्चर्यजनक रूप से अच्छी थी। हालांकि वॉल्यूम काफी कम था, फिर भी आवाज़ गूंज रही थी और सभी स्वर स्पष्ट रूप से सुनाई दे रहे थे। ओमामे ने आंखें खोलीं, आगे झुकी और डैशबोर्ड में लगे उपकरण को देखा। यह काला था और शान से चमक रहा था। वह निर्माता का नाम तो नहीं पढ़ पाई, लेकिन उसकी बनावट से ही समझ गई कि यह एक उच्च गुणवत्ता वाला उत्पाद है। इसमें ढेर सारे बटन और नॉब लगे थे और डिस्प्ले पर हरे रंग के अंक खूबसूरती से प्रदर्शित हो रहे थे। यह किसी लग्जरी श्रेणी का उपकरण लग रहा था। भला एक साधारण कंपनी टैक्सी में ऐसे ऑडियो उपकरण की उम्मीद कौन कर सकता था?
ओमामे ने गाड़ी के चारों ओर फिर से नज़र डाली। गाड़ी में बैठते ही वह विचारों में खोई हुई थी और उसने ध्यान ही नहीं दिया था कि यह एक साधारण टैक्सी से कहीं ज़्यादा कुछ है। अंदर का हिस्सा बहुत अच्छी तरह से सजाया गया था और सीटें बेहद आरामदायक थीं। इतना ही नहीं, अंदर एकदम सन्नाटा था। गाड़ी इतनी अच्छी तरह से साउंडप्रूफ थी कि बाहर का कोई शोर अंदर नहीं आ सकता था। ऐसा लग रहा था जैसे कोई साउंडप्रूफ रिकॉर्डिंग स्टूडियो हो। शायद यह एक निजी टैक्सी थी। कुछ निजी टैक्सी चालक गाड़ियों के मामले में कोई कसर नहीं छोड़ते। ओमामे ने

टैक्सी का रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट ढूंढने की कोशिश की, लेकिन वह कहीं नज़र नहीं आया। दूसरी ओर, यह कोई अवैध या बिना लाइसेंस वाली टैक्सी भी नहीं लग रही थी। इसमें किराया सही-सही रिकॉर्ड करने वाला उपकरण भी लगा था और उस समय उसमें 2150 येन दिखा रहा था। फिर भी, ड्राइवर के नाम वाला कोई रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट कहीं भी दिखाई नहीं दे रहा था।
"वाह, क्या शानदार कार है! और कितनी शांत है!" उसने ड्राइवर के सिर के पीछे देखते हुए कहा। "यह किस ब्रांड की है?"
"यह टोयोटा क्राउन रॉयल सैलून है," उन्होंने सरल और संक्षिप्त रूप से उत्तर दिया।
संगीत बहुत अच्छा लग रहा है।
— यह एक शांत कार है। यही एक कारण है कि मैंने इसे चुना। ध्वनि अवरोधन की बात करें तो, टोयोटा के पास अत्याधुनिक तकनीक है, जिसे विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त है।
ओमामे ने सिर हिलाया और अपनी सीट पर पीछे झुक गई। ड्राइवर के बोलने के तरीके में कुछ ऐसा था जो उसे चैन से बैठने नहीं दे रहा था, मानो उसे हमेशा कुछ बहुत ज़रूरी कहना हो। उदाहरण के लिए (और यह सिर्फ़ एक उदाहरण है), ऐसा लग रहा था जैसे वह इशारा कर रहा हो कि टोयोटा कारें ध्वनिरोधन के मामले में तो बेमिसाल हैं, लेकिन उनमें कुछ कमियाँ हैं। और जब उसने बोलना समाप्त किया, तो वह अपने पीछे एक छोटा सा मौन छोड़ गया, जो अर्थ से भरा हुआ था। यह कार की तंग जगह में हवा में तैरता रहा, मानो कोई छोटा सा अवास्तविक बादल हो। इससे ओमामे को थोड़ी बेचैनी महसूस हुई।
"यहां बहुत शांति है," उसने धुंध को दूर करते हुए कहा। "और ऑडियो उपकरण भी बहुत अच्छी गुणवत्ता के प्रतीत होते हैं।"
"इसे खरीदते समय मैंने बहुत सोच-विचार किया था," ड्राइवर ने एक सेवानिवृत्त जनरल के लहजे में जवाब दिया, जैसे वह अपनी पुरानी रणनीतियों का वर्णन कर रहा हो। "लेकिन यह देखते हुए कि मुझे कार में बहुत समय बिताना होगा, मैंने सोचा कि बेहतर होगा कि उसमें अच्छी आवाज़ हो और..."
ओमामे ने उसके बोलने का इंतज़ार किया, पर कुछ नहीं बोला। उसने फिर से अपनी आँखें बंद कर लीं और संगीत सुनने लगी। वह नहीं जानती थी कि जानचेक निजी जीवन में किस तरह का इंसान था, लेकिन उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि 1984 में, टोक्यो के एक महानगर राजमार्ग पर ट्रैफिक में फंसी एक शांत टोयोटा क्राउन रॉयल सैलून कार में कोई उसकी रचना सुनेगा।
फिर भी, आओमामे को आश्चर्य हो रहा था कि उसने जनाचेक की सिम्फोनीटा को तुरंत कैसे पहचान लिया और उसे कैसे पता चला कि इसकी रचना 1926 में हुई थी। वह शास्त्रीय संगीत की कोई बड़ी प्रशंसक नहीं थी, न ही जनाचेक से जुड़ी उसकी कोई निजी यादें थीं। फिर भी, जैसे ही उसने पहले सुर सुने, उसके मन में तरह-तरह की जानकारियाँ अपने आप भर गईं, मानो पक्षियों का झुंड खुली खिड़की से कमरे में घुस आया हो। इसके अलावा, संगीत ने उसे एक अजीब, विकृत सी अनुभूति दी। लेकिन बिना किसी दर्द या बेचैनी के। बस ऐसा लग रहा था जैसे उसका पूरा शरीर धीरे-धीरे सिकुड़ रहा हो। और वह समझ नहीं पा रही थी कि ऐसा क्यों हो रहा है। क्या सिम्फोनीटा ही इस अजीब सी अनुभूति का कारण थी?
"जनाचेक," आओमामे ने अनजाने में कहा, और तुरंत ही उसे इसका पछतावा हुआ।

- हेयर यू गो?
— जनाचेक। जिन्होंने इस रचना की रचना की।
मैं उसे नहीं जानता।
"वह एक चेक संगीतकार हैं," आओमामे ने उनसे कहा।
“जी?” ड्राइवर ने प्रभावित होकर कहा।
"क्या आप निजी हैं?" आओमामे ने विषय बदलने के लिए पूछा।
"जी हां," ड्राइवर ने रुककर जवाब दिया। "मैं एक आम नागरिक हूं। यह दूसरी कार है।"
इसमें बहुत आरामदायक बेंच सीट है।
"धन्यवाद। वैसे," उसने अपना सिर थोड़ा उसकी ओर घुमाते हुए कहा। "क्या आपको जल्दी है?"
"मेरी शिबुया में एक मीटिंग है। इसलिए मैंने यह रास्ता चुना।"
आपकी मीटिंग किस समय है?
- साढ़े चार पर।
"अभी पौने चार बज रहे हैं। जिस रफ्तार से हम चल रहे हैं, उस हिसाब से तो आप समय पर नहीं पहुंच पाएंगे।"
क्या ट्रैफिक जाम इतना बुरा है?
"आगे कहीं कोई गंभीर दुर्घटना हुई होगी। यह कोई सामान्य ट्रैफिक जाम नहीं है, क्योंकि हम काफी देर से बिल्कुल भी आगे नहीं बढ़ पाए हैं।"
ओमामे को आश्चर्य हुआ कि ड्राइवर यातायात संबंधी जानकारी के लिए रेडियो क्यों नहीं सुन रहा था। निलंबित राजमार्ग पूरी तरह से ठप्प था और वे वहीं फंसे हुए थे। एक टैक्सी चालक आमतौर पर किसी विशेष फ्रीक्वेंसी पर स्विच करके जानकारी ढूंढता है।
"क्या आप ट्रैफिक की जानकारी सुने बिना बता सकते हैं कि क्या हो रहा है?" आओमामे ने पूछा।
"यह यातायात संबंधी जानकारी कभी विश्वसनीय नहीं होती," चालक ने रूखे स्वर में उत्तर दिया। "यह आधा झूठ है। सार्वजनिक राजमार्ग कंपनी अपनी सुविधा के अनुसार जानकारी देती है। अगर आप सचमुच जानना चाहते हैं कि क्या हुआ था, तो आपको इसे अपनी आँखों से देखना होगा और अपने दिमाग से फैसला करना होगा।"
— और आपकी राय में, यातायात को इतनी आसानी से अनब्लॉक नहीं किया जा सकेगा? "बिल्कुल नहीं," उसने सिर हिलाते हुए जवाब दिया। "मैं गारंटी देता हूँ। एक बार जब वह उस तरह के मूड में आ जाता है, तो राजमार्ग नरक बन जाता है। क्या यह कोई महत्वपूर्ण बैठक है?"
आओमामे ने सोचा।
"जी हां, बिल्कुल। एक ग्राहक से मुलाकात है।"
"ओह, कितना अफसोस की बात है! मुझे बहुत खेद है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि हम समय पर पहुँच पाएंगे।"
ड्राइवर ने ये शब्द कहे और अपनी गर्दन को थोड़ा ढीला करने के लिए कुछ बार अपना सिर घुमाया। उसकी गर्दन के पिछले हिस्से की झुर्रियाँ किसी प्रागैतिहासिक जानवर की तरह हिल रही थीं। इस हरकत को अनमने ढंग से देखते हुए, आओमामे को अचानक अपने बैग के नीचे रखी नुकीली चीज़ याद आ गई। उसे महसूस हुआ कि उसकी हथेलियों में हल्का पसीना आने लगा है।

- क्या करता?
"आप कुछ नहीं कर सकते। हम हाईवे पर हैं और जब तक हम पहले एग्जिट तक नहीं पहुँच जाते, तब तक हम कुछ नहीं कर सकते। आप यहाँ उतरकर नज़दीकी स्टेशन से ट्रेन नहीं ले सकते, जैसा कि आप किसी सामान्य हाईवे पर करते हैं।"
और पहला निकास द्वार कौन सा है?
— इकेजिरी, लेकिन वहां पहुंचने में हमें शाम तक का समय लग सकता है।
शाम? आओमामे ने कल्पना की कि शाम तक उस टैक्सी में बंद रहना कैसा होगा। जनाचेक का संगीत जारी था। मानो तनाव कम करने के लिए, धीमी वायलिन की धुनें तेज़ हो गई थीं। पहले की बेचैनी लगभग पूरी तरह गायब हो गई थी। आखिर क्या बात थी? उसने सोचा।
आओमामे ने किनुता के पास एक टैक्सी ली और योगा से वे मेट्रोपॉलिटन हाईवे नंबर 3 पर आ गए। शुरुआत में तो सब ठीक चल रहा था, लेकिन संगेनजाया से पहले अचानक ट्रैफिक जाम हो गया और थोड़ी ही देर में वे पूरी तरह से ट्रैफिक से बाहर निकल गए। दूसरी तरफ का रास्ता सुचारू था। केवल शहर के केंद्र की ओर जाने वाली दिशा में ही अत्यधिक ट्रैफिक था। सामान्य तौर पर, दोपहर लगभग तीन बजे उस दिशा में इतना ट्रैफिक नहीं होना चाहिए था। इसीलिए आओमामे ने ड्राइवर से उस रास्ते से जाने के लिए कहा था।
"हाईवे पर, वे किराए में घंटे के हिसाब से शुल्क नहीं जोड़ते," ड्राइवर ने शीशे के ज़रिए उसे बताया। "इसलिए पैसे की चिंता मत करो। बस इतना है कि तुम्हें अपनी अपॉइंटमेंट के लिए देर नहीं करनी पड़ेगी, है ना?"
ड्राइवर ने शीशे में उसकी तरफ देखा। उसने हल्के रंग का चश्मा पहन रखा था, और रोशनी के कारण आओमामे उसके चेहरे के भाव नहीं पढ़ पा रही थी।
आपको यह जानना चाहिए कि समाधानों की कोई कमी नहीं है। एक आपातकालीन उपाय है जिसके तहत आप ट्रेन से शिबुया जा सकते हैं।
"क्या यह आपातकालीन उपाय है?"
— हाँ, एक ऐसा समाधान जिसे मैं खुलकर ढिंढोरा नहीं पीट सकता।
ओमामे बिना कुछ कहे उसके बोलने का इंतजार करती रही।
"देखो, थोड़ा आगे जाकर सड़क के किनारे गाड़ी खड़ी करने की जगह है," ड्राइवर ने आगे इशारा करते हुए कहा। "लगभग वहीं पर जहां से एस्सो के विज्ञापन वाला बड़ा सा बोर्ड शुरू होता है।"
ध्यान से देखने पर, आओमामे ने दूसरी लेन के बाईं ओर क्षतिग्रस्त कारों को रोकने के लिए बनाई गई जगह देखी। चूंकि राजमार्ग पर कोई आपातकालीन लेन नहीं थी, इसलिए आपात स्थिति में रुकने के लिए इस तरह के स्थान जगह-जगह बनाए गए थे। इनमें एक पीला टेलीफोन बूथ भी था, जिसके माध्यम से राजमार्ग के निदेशक से संपर्क किया जा सकता था। उस समय वहां कोई कार नहीं रुकी थी। दोनों दिशाओं में जाने वाले यातायात को अलग करने वाली इमारत की छत पर एस्सो पेट्रोल पंप का एक विशाल बिलबोर्ड लगा था। एक मुस्कुराता हुआ बाघ अपने हाथ में पेट्रोल पंप पकड़े हुए था।
— आपको पता है, वहाँ एक सीढ़ी है जो नीचे तक जाती है। आग या भूकंप जैसी आपदा की स्थिति में, इससे चालक अपनी गाड़ियाँ छोड़कर राजमार्ग से बाहर निकल सकते हैं। इसका इस्तेमाल आमतौर पर मरम्मत करने वाले कर्मचारी करते हैं। जैसे ही

आप नीचे उतरेंगे, पास ही में एक टोक्यो स्टेशन है, और वहाँ से आप सीधे शिबुया जा सकते हैं।
"मुझे नहीं पता था कि मेट्रोपॉलिटन ट्रेन में आपातकालीन सीढ़ियाँ भी हैं," आओमामे ने कहा।
— यह कोई ज्ञात बात नहीं है।
लेकिन क्या मैं इसे आपातकालीन स्थिति के बिना इस्तेमाल कर सकता हूँ? ड्राइवर कुछ क्षणों के लिए झिझक गया।
"क्या मुझे पता है? मुझे भी हाईवे कंपनी के नियमों की पूरी जानकारी नहीं है। लेकिन अगर आप किसी को परेशान नहीं कर रहे हैं, तो मुझे लगता है कि इस पर ध्यान नहीं दिया जाएगा। मुझे नहीं लगता कि कोई ऐसी छोटी-मोटी बातों पर ध्यान देता है। हाईवे कंपनी इस बात के लिए मशहूर है कि उसके पास हर जगह बहुत सारे कर्मचारी हैं, लेकिन उनमें से बहुत कम ही वास्तव में काम करते हैं।"
— यह किस प्रकार की सीढ़ी है?
— यह देखने में आग से बचने वाली सीढ़ी जैसी लगती है, जैसी पुरानी इमारतों के पीछे लगी होती हैं। यह खतरनाक नहीं है। यह तीन मंज़िला है, लेकिन आप इस पर से सामान्य रूप से उतर सकते हैं। इसके प्रवेश द्वार पर एक जाली लगी है, लेकिन यह ज़्यादा ऊंची नहीं है, इसलिए आप इसे बिना किसी परेशानी के पार कर सकते हैं। क्या आपने कभी इसका इस्तेमाल किया है?
कोई जवाब नहीं। ड्राइवर ने बस रियरव्यू मिरर में मुस्कुरा दिया। एक ऐसी मुस्कान जिसके कई मतलब हो सकते थे।
"ठीक है, जैसा आप चाहें," उन्होंने संगीत की धुन पर स्टीयरिंग व्हील पर उंगलियां थपथपाते हुए कहा। "मुझे कोई आपत्ति नहीं है अगर आप कार में आराम से बैठकर संगीत सुनें। लेकिन इस स्थिति में, हमें आगे आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार रहना होगा, क्योंकि हम चाहे कुछ भी कर लें, कहीं जा नहीं सकते। लेकिन अगर आपका कोई ज़रूरी काम है, तो आपातकालीन उपाय किए जा सकते हैं।"
ओमामे ने थोड़ा सा माथा सिकोड़ा, अपनी घड़ी पर नज़र डाली, फिर सिर उठाकर आसपास की कारों को देखा। दाईं ओर एक काली मित्सुबिशी पजेरो खड़ी थी, जिस पर धूल की सफेद परत जमी हुई थी। ड्राइवर के बगल में बैठा आदमी खिड़की नीचे करके ऊबते हुए सिगरेट पी रहा था। उसके लंबे बाल थे, सांवला रंग था और उसने गहरे लाल रंग की जैकेट पहनी हुई थी। डिग्गी में कई पुराने और गंदे सर्फ़बोर्ड रखे हुए थे। थोड़ा आगे एक ग्रे रंग की साब 900 खड़ी थी। उसकी खिड़कियां टिंटेड थीं, कसकर बंद थीं और अंदर कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। उस पर इतनी खूबसूरती से पॉलिश की गई थी कि अगर आप उसके पास जाते तो उसकी बॉडीवर्क में आपका प्रतिबिंब दिखाई देता।
जिस टैक्सी में आओमामे बैठी थी, उसके आगे नेरिमा नंबर प्लेट वाली एक लाल सुजुकी ऑल्टो खड़ी थी, जिसका बम्पर मुड़ा हुआ था। एक युवा महिला टैक्सी चला रही थी। ऊबे हुए बच्चे पीछे की सीट पर चढ़ गए थे और इधर-उधर खेल रहे थे। माँ उन्हें देख रही थी, उसके चेहरे पर झुंझलाहट के भाव थे। खिड़की से उसके होंठ हिलते हुए दिख रहे थे। ठीक दस मिनट पहले जैसा नज़ारा था, वैसा ही था। इस दौरान गाड़ी दस मीटर भी नहीं हिली थी।

ओमामे ने कुछ देर सोचा। उसने कई कारकों को प्राथमिकता के क्रम में रखा। उसे निष्कर्ष पर पहुँचने में ज़्यादा समय नहीं लगा। मानो उसके साथ तालमेल बिठाते हुए, जनाचेक की रचना भी अंतिम चरण में प्रवेश कर गई।
आओमामे ने अपने बैग से रे-बैन के छोटे आकार के धूप के चश्मे निकाले और पहन लिए। फिर उसने अपने बटुए से तीन हजार येन के नोट निकाले और ड्राइवर को दे दिए। "मैं यहाँ आ रही हूँ। मुझे देर करने का जोखिम नहीं उठाना चाहिए," उसने कहा। ड्राइवर ने सिर हिलाया और पैसे ले लिए।
क्या आपको रसीद चाहिए?
"नहीं, धन्यवाद। कोई बदलाव नहीं।"
"धन्यवाद," ड्राइवर ने कहा। "सावधान रहें, हवा बहुत तेज़ है। फिसलना मत।" "मैं इसका ख्याल रखूंगी," आओमामे ने जवाब दिया।
"और एक बात और," ड्राइवर ने रियरव्यू मिरर में देखते हुए कहा। "याद रखना, चीजें वैसी नहीं होतीं जैसी दिखती हैं।"
"चीज़ें वैसी नहीं हैं जैसी दिखती हैं," आओमामे ने थोड़ा भौंहें चढ़ाते हुए खुद से दोहराया।
- आपका क्या मतलब है?
सोच-समझकर शब्दों का चयन करते हुए ड्राइवर ने कहा:
"आपका मतलब है कि आप कुछ असामान्य करने वाली हैं। है ना? एक आम इंसान दिन दहाड़े मेट्रोपॉलिटन होटल की आग से बचने वाली सीढ़ी से नीचे नहीं उतरेगा। खासकर कोई महिला।"
"बिल्कुल सही," आओमामे ने कहा।
"अगर आप ऐसा करते हैं, तो आगे से आपकी रोजमर्रा की जिंदगी थोड़ी अलग दिख सकती है। मुझे भी यह अनुभव हुआ है। लेकिन दिखावे से धोखा मत खाइए। वास्तविकता हमेशा एक जैसी ही होती है।"
ओमामे ड्राइवर की कही बातों पर सोचने लगी। सोचते-सोचते जनाचेक का संगीत समाप्त हो गया और श्रोतागण तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठे। यह किसी संगीत कार्यक्रम की रिकॉर्डिंग थी। तालियाँ देर तक गूंजती रहीं और ज़ोरदार थीं। बीच-बीच में “ब्रावो!” की आवाज़ सुनाई दे रही थी। उसकी आँखों के सामने कंडक्टर की छवि उभर आई, जो खड़े श्रोतागणों को मुस्कुराते हुए प्रणाम कर रहा था। वह अपना सिर उठाता, हाथ उठाता, संगीत निर्देशक से हाथ मिलाता, पीछे जाकर दोनों हाथ उठाकर ऑर्केस्ट्रा के सदस्यों की प्रशंसा करता, फिर आगे आकर एक और गहरा प्रणाम करता। इन रिकॉर्ड की गई आवाज़ों को लंबे समय तक सुनने के बाद, ओमामे को तालियों की आवाज़ सुनाई देना बंद होने लगी। यह मंगल ग्रह से आने वाले अंतहीन रेत के तूफान जैसी लग रही थी।
"वास्तविकता हमेशा एक ही होती है," ड्राइवर ने धीरे-धीरे दोहराया, मानो किसी किताब की महत्वपूर्ण पंक्ति पर जोर दे रहा हो।
"ज़रूर," आओमामे ने जवाब दिया।
बिलकुल सही। एक शरीर केवल एक ही स्थान और एक ही समय में हो सकता है। आइंस्टीन ने इसे सिद्ध किया था। वास्तविकता असीम रूप से ठंडी और एकाकी है।
ओमामे ने ऑडियो उपकरण की ओर इशारा किया।
— यह तो बहुत बढ़िया लग रहा है।
ड्राइवर ने सिर हिलाया।

आपने संगीतकार का क्या नाम बताया था?
— जनाचेक।
"जनाचेक," उसने ऐसे दोहराया जैसे उसे कोई महत्वपूर्ण पासवर्ड याद हो, फिर एक लीवर खींचकर पीछे का स्वचालित दरवाजा खोल दिया। "सावधान रहना। मुझे उम्मीद है कि तुम समय पर पहुँच जाओगे।"
ओमामे ने अपना बड़ा चमड़े का थैला कसकर पकड़े हुए कार से बाहर निकली। रेडियो पर अभी भी तालियों की गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी। वह दस मीटर आगे स्थित आपातकालीन कक्ष की ओर सावधानी से सड़क के किनारे कदम रखते हुए चल पड़ी। जैसे ही विपरीत दिशा से एक ट्रक गुजरा, उसे अपनी ऊंची एड़ियों के नीचे डामर हिलता हुआ, या यूं कहें कि लहरों की तरह ऊपर-नीचे होता हुआ महसूस हुआ। ऐसा लग रहा था मानो वह लहरों से हिलते हुए किसी विमानवाहक पोत के डेक पर चल रही हो।
लाल सुजुकी ऑल्टो में बैठी छोटी बच्ची ने ड्राइवर की खिड़की से अपना सिर बाहर निकाला और मुंह खुला रखकर आओमामे को घूर रही थी। उसने अपनी माँ की ओर मुड़कर पूछा, "अरे, अरे, वो औरत क्या कर रही है? कहाँ जा रही है?" फिर उसने ज़िद की, "मुझे भी बाहर जाना है! माँ, माँ, मुझे बाहर निकलना है! माँ!" माँ ने बिना कुछ कहे सिर हिलाया और आओमामे को इल्ज़ाम भरी नज़रों से देखा। लेकिन आस-पास बस यही एक आवाज़ सुनाई दी थी, बस यही एक प्रतिक्रिया थी जो माँ ने देखी। बाकी ड्राइवर सिगरेट पी रहे थे और उसे हल्के से भौंहें चढ़ाकर देख रहे थे, जब वह आत्मविश्वास से कारों और रेलिंग के बीच से निकल गई, उनकी आँखें सिकुड़ी हुई थीं, मानो वे किसी चकाचौंध भरी चीज़ को देख रहे हों। एक पल के लिए, वे कुछ समझ नहीं पा रहे थे। हालाँकि कारें रुकी हुई थीं, लेकिन हाईवे पर किसी का चलना आम बात नहीं थी। उन्हें इस दृश्य को समझने और स्वीकार करने में कुछ समय लगा। खासकर तब जब वह एक छोटी स्कर्ट और ऊँची एड़ी के जूते पहने एक युवती थी।
ओमामे आत्मविश्वास से भरे कदमों से चल रही थी, सिर ऊंचा, निगाहें सीधी, कमर सीधी, लोगों की निगाहें खुद पर टिकी हुई। उसके भूरे रंग के चार्ल्स जॉर्डन हील्स डामर पर चटक रहे थे और हवा उसकी स्कर्ट को उड़ा रही थी। अप्रैल का महीना बीत चुका था, फिर भी हवा ठंडी और तेज़ थी। ओमामे ने अपने पतले हरे ऊनी सूट, जुनको शिमाडा, के ऊपर बेज रंग का ओवरकोट और एक काला चमड़े का शोल्डर बैग पहना हुआ था। उसके बाल कंधों तक कटे हुए थे और करीने से संवारे हुए थे। उसने कोई आभूषण नहीं पहना था। उसकी लंबाई पांच फीट छह इंच थी, शरीर पर जरा भी चर्बी नहीं थी और वह पूरी तरह से गठीली थी, लेकिन ओवरकोट के कारण यह दिखाई नहीं दे रहा था।
अगर आप उसे सामने से गौर से देखते, तो आपको पता चलता कि उसके कान आकार और बनावट में बहुत भिन्न थे। बायां कान दाएं कान से काफी बड़ा और विकृत था। लेकिन किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वे लगभग हमेशा उसके बालों के पीछे छिपे रहते थे। वह अपने होंठों को हमेशा एक सीधी रेखा में दबाए रखती थी, जो उसके ऐसे स्वभाव को दर्शाता था जो आसानी से किसी भी चीज़ के अनुकूल नहीं ढलती थी। उसकी संकरी और छोटी नाक, उभरी हुई गाल की हड्डियां, चौड़ा माथा और लंबी और सीधी भौहें, ये सभी बातें भी यही संकेत देती थीं। हालांकि, उसका चेहरा अंडाकार था, जिसमें काफी नियमित नैन-नक्श थे। कुल मिलाकर, उसे एक खूबसूरत महिला माना जा सकता था, लेकिन उसके चेहरे के भावों की सीमा बहुत सीमित थी। उसके हमेशा दबे हुए होंठों पर मुस्कान तभी आती थी जब आवश्यक होता था। उसकी निगाहें दृढ़ और

अध्याय 2 एक कम प्रचलित विचार

टेंगो की पहली स्मृति तब की है जब वह डेढ़ साल का था। उसकी माँ अपना ब्लाउज़ उतारती है और अपनी नाइटी की सफ़ेद पट्टियों को गिरने देती है, जिससे उसके स्तन दिखाई देते हैं। एक आदमी उसके निपल्स को चूमता है, वह आदमी टेंगो का पिता नहीं है। पालने में एक बच्चा है, शायद खुद टेंगो। वह उसे बाहर से देख सकता है। या शायद वह उसका जुड़वा भाई है? नहीं, बिलकुल नहीं। पालने में जो बच्चा है, वह खुद टेंगो है, डेढ़ साल की उम्र में। वह यह जानता है। बच्चा अपनी आँखें बंद कर लेता है और धीरे-धीरे साँस लेते हुए सो जाता है। यही उसकी पहली स्मृति है। लगभग दस सेकंड का एक दृश्य, चेतना की दीवार पर स्पष्ट रूप से अंकित। इसका न कोई आरंभ है और न कोई अंत। जैसे बाढ़ से ढके शहर के शिखर, कीचड़ भरे पानी से अपनी अकेली चोटियाँ उठाते हुए।
जब भी उसे मौका मिलता, टेंगो अपने आस-पास के लोगों से पूछता कि उसे सबसे पहली याद किस उम्र की है। ज़्यादातर लोगों ने जवाब दिया कि वह चार या पाँच साल का था। कुछ ने तो उससे भी पहले की उम्र बताई, लेकिन किसी को भी तीन साल से ज़्यादा पुरानी यादें नहीं थीं। ऐसा लगता है कि यही वह उम्र है जब बच्चा जागरूक हो पाता है और अपने आस-पास हो रही घटनाओं को कुछ हद तक समझ पाता है। उससे पहले, उसकी आँखों तक सभी छवियाँ एक समझ से परे अव्यवस्था के रूप में पहुँचती हैं। तब तक, दुनिया उसके लिए एक बेतरतीब, संरचनाहीन दलिया जैसी होती है जिसे वह पकड़ नहीं पाता, और उसके आस-पास की घटनाएँ उसकी यादों में साकार नहीं होतीं, बल्कि तुरंत गायब हो जाती हैं, मानो खिड़की से बाहर फेंक दी गई हों।
ज़ाहिर है, डेढ़ साल का बच्चा यह नहीं समझ सकता कि जब कोई पुरुष उसकी माँ के स्तन चूमता है तो इसका क्या मतलब होता है। यह स्पष्ट है। इसलिए, अगर यह टेंगो की सच्ची याद थी, तो यह बिना किसी निर्णय के, जैसी थी वैसी ही उसकी आँखों में अंकित हो गई होगी। ठीक वैसे ही जैसे एक कैमरा यांत्रिक रूप से, प्रकाश और छाया के मिश्रण के रूप में, छवि को फिल्म की मेमोरी में दर्ज करता है। फिर, जैसे- जैसे उसकी चेतना परिपक्व हुई, उसने धीरे-धीरे इस अपरिवर्तनीय छवि का विश्लेषण किया, जिसे उसने अलग रखा था। उसने इसे एक अर्थ दिया। लेकिन क्या सचमुच ऐसा हुआ था? क्या एक शिशु ऐसी छवि को याद रख सकता है?
कौन जाने, शायद यह एक झूठी याद थी। हो सकता है कि किसी समय उसके मन ने किसी खास मकसद से यह छवि गढ़ी हो। टेंगो ने इस संभावना के बारे में बहुत सोचा था, कि यादें गढ़ी जा सकती हैं, और इस नतीजे पर पहुँचा था कि शायद ऐसा नहीं था। यह इतनी स्पष्ट और विश्वसनीय थी कि इसे गढ़ी हुई याद कहना नामुमकिन था। रोशनी, गंध, धड़कन इतनी असली लग रही थीं कि यकीन करना मुश्किल था कि ये सब नकली हैं। फिर, अगर वह मान ले कि चीजें सचमुच ऐसी ही घटी थीं, तो बहुत कुछ समझाया जा सकता है। तार्किक और भावनात्मक दोनों तरह से।
लगभग दस सेकंड तक रहने वाली यह स्पष्ट छवि बिना किसी चेतावनी के उसकी आँखों के सामने प्रकट हुई। यह अचानक, बिना दस्तक दिए, आ गई और उसे पूरी तरह से चौंका दिया। यह सबसे अप्रत्याशित क्षणों में अचानक उस पर हावी हो जाती: जब वह ट्रेन

में होता, जब वह बोर्ड पर संख्याएँ लिख रहा होता, जब वह दोपहर का भोजन कर रहा होता, या जब वह किसी से बात कर रहा होता (जैसा कि अभी हुआ था)। यह विनाशकारी रूप से, चुपचाप, सुनामी की तरह आती। जब तक उसे एहसास होता कि क्या हो रहा है, तब तक यह स्मृति उसकी पूरी दृष्टि को अवरुद्ध कर चुकी होती, और उसके हाथ-पैर सुन्न हो जाते। समय का प्रवाह रुक गया। उसके आसपास की हवा पतली होती जा रही थी, और वह भारी साँसें ले रहा था। उसके आसपास के लोग और चीजें अब उससे जुड़ी हुई नहीं थीं। उस तरल दीवार ने उसे पूरी तरह से निगल लिया। हालाँकि उसे लगा कि दुनिया अँधेरी होती जा रही है और दूर होती जा रही है, उसकी चेतना ने उसे नहीं छोड़ा। लेकिन कहीं कुछ बदल रहा था और उसकी चेतना का एक हिस्सा, इसके विपरीत, अधिक सतर्क हो रहा था। उसे कोई डर नहीं था, लेकिन वह अपनी आँखें नहीं खोल पा रहा था। उसकी पलकें कसकर बंद रहीं। उसके आसपास की आवाज़ें भी दूर होती गईं। फिर वही जानी-पहचानी छवि बार-बार उसकी चेतना की स्क्रीन पर उभरने लगी। उसे पसीना आने लगा। उसे महसूस हुआ कि उसकी कमीज़ बगल से गीली हो रही है। उसका पूरा शरीर कांपने लगा और उसकी नाड़ी तेज़ और तीव्र हो गई।
अगर वह किसी के बगल में बैठा होता, तो टेंगो चक्कर आने का नाटक करता। सच तो यह था कि उसकी हालत कुछ-कुछ चक्कर जैसी ही होती थी। उसे थोड़ी देर इंतज़ार करना पड़ता, और सब कुछ सामान्य हो जाता। वह अपनी जेब से एक रुमाल निकालता और उसे अपने मुँह पर रख लेता। वह दूसरे व्यक्ति को हाथ हिलाकर कहता कि चिंता न करें, कुछ नहीं हुआ है। कभी-कभी यह तीस सेकंड में खत्म हो जाता, लेकिन कभी-कभी एक मिनट से ज़्यादा समय तक चलता। इस दौरान, वह दृश्य उसकी आँखों के सामने बार-बार दोहराता रहता, जैसे कोई वीडियो रिकॉर्डिंग लूप में चल रही हो। उसकी माँ अपनी नाइटी की पट्टियाँ नीचे करती है और एक अनजान आदमी उसके सख्त निपल्स को चूमता है। वह अपनी आँखें बंद कर लेती है और गहरी साँस लेती है। उसे धुंधली सी माँ के दूध की पुरानी यादों वाली खुशबू आती है। शिशुओं में, सूंघने की शक्ति सबसे तेज़ होती है। यह उन्हें बहुत कुछ सिखाती है। कभी-कभी यह उन्हें वह सब कुछ सिखाती है जिसकी उन्हें ज़रूरत होती है। कोई आवाज़ नहीं सुनाई देती। हवा एक गाढ़े तरल में बदल गई है। वह केवल अपने नन्हे दिल की धीमी धड़कन सुन सकता है। इसे देखो, बस इसे देखो, वे उससे कहते हैं। तुम यहाँ हो और तुम्हारे पास जाने के लिए और कोई जगह नहीं है! यह संदेश अनगिनत बार दोहराया जाता है।
*

इस बार, यह "घटना" काफी देर तक चली। टेंगो ने अपनी आँखें बंद कर लीं और हमेशा की तरह अपना रुमाल मुँह पर रखकर दाँतों से कसकर भींच लिया। उसे नहीं पता था कि यह सब कितनी देर तक चला, और शांत होने के बाद वह अपनी थकावट से बस यही अंदाज़ा लगा सकता था। वह पूरी तरह से थक चुका था। वह पहले कभी इतना थका हुआ नहीं था। उसे आँखें खोलने में भी काफी समय लगा। उसका दिमाग जितनी जल्दी हो सके ठीक होने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उसकी मांसपेशियाँ और अंग विरोध कर रहे थे, मानो वह शीतनिद्रा से समय से पहले, साल के गलत समय पर जाग गया हो।
“हे, टेंगो,” उसे दूर से एक आवाज़ सुनाई दी। एक फुसफुसाती आवाज़ जो किसी गुफा के पीछे से आती हुई लग रही थी। टेंगो समझ गया कि कोई उसका नाम पुकार रहा है। “क्या हुआ? और वो चीज़? क्या तुम ठीक हो?” आवाज़ कह रही थी। अब वो थोड़ा और करीब आ गई थी।

आखिरकार, टेंगो ने अपनी आँखें खोलीं और अपनी नज़रें एक जगह टिकाईं। उसने अपने दाहिने हाथ को देखा, जो मेज़ के किनारे को कसकर पकड़े हुए था। उसने यह सुनिश्चित किया कि उसका हाथ अभी भी मौजूद है, कि वह दुनिया से अलग नहीं हुआ है, कि वह उसी का हाथ है। उसके शरीर में अभी भी सुन्नपन था, लेकिन जो उसने देखा वह निश्चित रूप से उसका अपना दाहिना हाथ था। उसमें पसीने की गंध आ रही थी। यह एक असामान्य रूप से तीखी गंध थी, जैसे चिड़ियाघर में किसी जानवर के पिंजरे की गंध। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं था, यह उसी की गंध थी।
उसका गला सूख रहा था। टेंगो ने मेज से पानी का गिलास उठाया और उसे आधा खाली किया, ध्यान से कि पानी गिरे नहीं। उसने एक पल आराम किया, गहरी सांस ली और फिर बचा हुआ आधा पानी पी लिया। उसका दिमाग धीरे-धीरे सामान्य हो रहा था और उसकी इंद्रियां भी सामान्य हो रही थीं। उसने गिलास वापस मेज पर रखा और रुमाल से अपना मुंह पोंछा।
"माफ़ कीजिए। अब मुझे होश आ गया है," उन्होंने कहा।
फिर उसने यह सुनिश्चित किया कि उसके सामने बैठा व्यक्ति कोमात्सु ही है। वे शिंजुकु स्टेशन के पास एक कैफे में मिले थे। अब उसे आसपास की आवाज़ें सामान्य रूप से सुनाई दे रही थीं। बगल की मेज पर बैठे दोनों लोग उलझन में उसे देख रहे थे, यह समझने की कोशिश कर रहे थे कि क्या हुआ है। वेट्रेस घबराई हुई सी उसके पास आई। उसे शायद डर था कि टेंगो कुर्सी पर उल्टी कर देगा। टेंगो ने ऊपर देखा और उसे देखकर मुस्कुराया, फिर सिर हिलाकर इशारा किया कि कोई समस्या नहीं है और चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है।
— ये दौरे किसी बीमारी के लक्षण तो नहीं हैं, है ना?
"कोई बड़ी बात नहीं है। बस थोड़ा चक्कर आ रहा है। बस थोड़ा तेज़ है," टेंगो ने कहा। आवाज़ अभी भी उसकी अपनी नहीं लग रही थी। लेकिन काफ़ी हद तक मिलती-जुलती थी।
कोमात्सु ने उसकी आंखों में देखते हुए कहा, "गाड़ी चलाते समय ऐसा होना खतरनाक है।"
मैं गाड़ी नहीं चलाता।
"यह तो बहुत बढ़िया है। मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता था जिसे पराग से एलर्जी थी। गाड़ी चलाते समय उसे छींक आई और उसकी गाड़ी एक खंभे से टकरा गई। लेकिन आपको एलर्जी के दौरान बिल्कुल भी छींक नहीं आती। जब मैंने आपको पहली बार उस हालत में देखा, तो मैं डर गया था। हालांकि, उसके बाद मुझे इसकी आदत हो गई।"
- मैं क्षमाप्रार्थी हूं।
टेंगो ने मेज से कॉफी का कप उठाया और एक घूंट पिया। उसमें कोई स्वाद नहीं था।
वह बस एक गुनगुना तरल था जो उसके गले से नीचे उतर गया।
"क्या मुझे थोड़ा और पानी मांगना चाहिए?" कोमात्सु ने पूछा।
टेंगो ने अपना सिर हिलाया।
"कोई ज़रूरत नहीं। मैं पहले ही शांत हो चुका हूँ।"
कोमात्सु ने अपनी कोट की जेब से मार्लबोरो सिगरेट का एक पैकेट निकाला और बार से ली हुई माचिस से एक सिगरेट जलाई। फिर उसने अपनी घड़ी पर नज़र डाली।
“तो हम किस बारे में बात कर रहे थे?” टेंगो ने पूछा। उसे जल्द से जल्द सामान्य स्थिति में लौटना था।

"अरे, मैं क्या कह रहा था?" कोमात्सु ने कहा और एक पल के लिए सोचने लगा, उसकी निगाहें कहीं खोई हुई थीं। या शायद वह सिर्फ सोचने का नाटक कर रहा था, तेंगो को पता नहीं चल रहा था। कोमात्सु की कही और की गई कई बातें नाटकीय थीं। ओह, हाँ। मैं उस लड़की, फुकाएरी के बारे में बात कर रहा था। और एयर क्राइसालिस के बारे में भी।
टेंगो ने सिर हिलाया। वे फुकाएरी और वायु परईसालिस के बारे में चर्चा कर रहे थे। वह कोमात्सु को जानकारी देने ही वाला था कि उसे दौरा पड़ गया और उनकी बातचीत रुक गई। टेंगो ने अपने ब्रीफकेस से कागजों का एक बंडल निकाला— पांडुलिपि की एक प्रति—और उसे मेज पर रख दिया। उसने अपना हाथ उन पर रखा और हथेली में कागज का स्पर्श महसूस किया।
— मैंने फोन पर आपसे संक्षेप में कहा था, इस किताब की सबसे बड़ी खूबी यह है कि यह किसी की नकल नहीं करती। एक पहली रचना के लिए यह बहुत बड़ी बात है कि यह किसी की नकल करने की कोशिश नहीं करती, टेंगो ने सोच-समझकर शब्दों का चुनाव करते हुए कहा। बेशक, वाक्य थोड़े कच्चे हैं और शब्दों का चुनाव ठीक से नहीं हुआ है। शीर्षक से ही ऐसा लगता है जैसे कोकून (शंख का छोटा कोकून) को प्यूपा समझ लिया गया हो। और अगर आप चाहें तो इसमें और भी कई कमियां निकाल सकते हैं। लेकिन कम से कम कहानी में कुछ तो ऐसा है जो आपको आकर्षित करता है। हालांकि विषय पूरी तरह से काल्पनिक है, फिर भी विवरणों को एक विशेष यथार्थवाद के साथ वर्णित किया गया है। यही इसे एक बेहतरीन संतुलन देता है। मुझे नहीं पता कि मौलिकता या निरंतरता जैसे शब्द इसके लिए उपयुक्त हैं या नहीं। अगर कोई मुझसे कहे कि यह अभी उस स्तर तक नहीं पहुंची है, तो मैं सहमत हो जाऊंगा। लेकिन भले ही यह थोड़ी बोझिल लगे, लेकिन जब आप इसे खत्म करते हैं, तो यह आपके अंदर एक खामोश एहसास जगा देती है। भले ही वह एक असहज स्पर्श जैसा हो, जिसे आप समझ नहीं पाते। कोमात्सु चुप रहा और टेंगो को देखता रहा। वह और जानकारी की प्रतीक्षा कर रहा था। टेंगो ने आगे कहा:
मैं नहीं चाहता कि इस उपन्यास को सिर्फ़ खराब शब्दों की वजह से खारिज कर दिया जाए। मैं पिछले कुछ सालों से यह काम कर रहा हूँ और संपादकों को भेजी गई ढेरों पांडुलिपियाँ पढ़ चुका हूँ। खैर, मैंने उन्हें पढ़ा है, यह कहना भी कम होगा, क्योंकि कुछ हिस्से अभी भी अधूरे हैं। मैंने कुछ ऐसी पांडुलिपियाँ भी देखी हैं जो अच्छी तरह से लिखी गई थीं, लेकिन कुछ ऐसी भी थीं जो बिल्कुल भी अच्छी नहीं थीं - बेशक, बाद वाली तो बहुत बड़ी संख्या में हैं। खैर, मैंने बहुत सारी पांडुलिपियाँ पढ़ी हैं, लेकिन एकमात्र ऐसी पांडुलिपि जिसने मुझे सच में प्रभावित किया, वह है 'द एयर क्राइसालिस'। और यह पहली ऐसी पांडुलिपि थी जिसे खत्म करते ही मुझे दोबारा पढ़ने की इच्छा हुई।
"हम्म," कोमात्सु ने कहा, फिर थके हुए अंदाज़ में सिगरेट का धुआँ बाहर निकाला और अपने होंठ सिकोड़ लिए।
लेकिन तेंगो कोमात्सु को कल से आज तक नहीं जानता था, और वह उसके धोखे भरे हाव-भाव से इतनी आसानी से मूर्ख नहीं बनने वाला था। वह कभी-कभी ऐसे भाव प्रकट करता था जो या तो असंबद्ध होते थे या उसके वास्तविक भावों के बिल्कुल विपरीत होते थे। इसलिए तेंगो धैर्यपूर्वक उसकी बात सुनने के लिए प्रतीक्षा करता रहा। कुछ देर बाद कोमात्सु ने कहा, "मैंने भी इसे पढ़ा। आपके फोन करने के बाद मैंने इसे तुरंत पढ़ना शुरू कर दिया। हाँ, यह बेहद खराब लिखावट में है। इसमें

व्याकरण की गलतियाँ हैं और कुछ वाक्य तो ऐसे हैं जिन्हें समझना ही मुश्किल है। उपन्यास लिखने से पहले उसे अभिव्यक्ति का अभ्यास करना चाहिए।"
"लेकिन आपने इसे पूरा पढ़ा है, है ना?"
कोमात्सु मुस्कुराया। एक ऐसी मुस्कान जो मानो किसी ऐसे दराज के सबसे निचले हिस्से से निकाली गई हो जिसे शायद ही कभी खोला जाता हो।
— जी हाँ। जैसा आपने कहा, मैंने इसे पूरा पढ़ा। मुझे भी इस बात पर हैरानी हुई। मैं साहित्यिक पुरस्कारों के लिए भेजी गई उपन्यासों को कभी पूरा नहीं पढ़ता। इसके अलावा, कुछ अंश ऐसे थे जिन्हें मैंने दोबारा पढ़ा। मुझे यह स्वीकार करना होगा कि ऐसा करना मेरे लिए अक्सर ग्रहों के अनुकूल होने से कहीं ज्यादा होता है।
"ऐसा इसलिए है क्योंकि इसमें कुछ खास बात है। या मैं गलत हूँ?"
कोमात्सु ने अपनी सिगरेट ऐशट्रे में रख दी और अपने दाहिने हाथ की बीच वाली उंगली से अपनी नाक खुजलाई। लेकिन उसने टेंगो को कोई जवाब नहीं दिया।
"यह लड़की सिर्फ सत्रह साल की है। वह हाई स्कूल में पढ़ती है," टेंगो ने कहा। "उसे अभी उपन्यास पढ़ने-लिखने का ज्यादा अनुभव नहीं है। इस बार उसके लिए पुरस्कार जीतना शायद थोड़ा मुश्किल होगा। लेकिन उसकी किताब कम से कम अंतिम चयन तक तो पहुंचनी ही चाहिए। यह फैसला लेने का अधिकार आपके पास है। इस तरह, अगली बार उसे ज़रूर मौका मिलेगा।"
— हम्म, कोमात्सु ने फिर कहा और ऊबते हुए जम्हाई ली, फिर पानी का एक घूंट पिया। सुनो, टेंगो, ज़रा सोचो। अगर हम इस किताब को, बिना तराशे, फाइनल में ले गए, तो समिति नाराज़ हो जाएगी। शायद गुस्सा भी हो जाए। पहली बात तो यह है कि वे इसे अंत तक पढ़ेंगे ही नहीं। वे चारों ही सक्रिय लेखक हैं। वे सभी अपने-अपने काम में व्यस्त हैं। वे पहले कुछ पन्ने देखेंगे और फिर इसे यह कहकर रख देंगे कि यह तो प्राथमिक विद्यालय का निबंध है। चाहे मैं उन्हें कितनी ही उत्साह से कहूँ कि हमारे पास एक हीरा है जिसे बस तराशने की ज़रूरत है, तुम्हें क्या लगता है कौन मेरी बात सुनेगा? मान लो कि मेरे पास ऐसा निर्णय लेने की शक्ति है, लेकिन मैं इसे उन चीज़ों के लिए बचा कर रखना चाहता हूँ जिनका नज़रिया इससे कहीं बेहतर है।
"आपका मतलब है कि इसे तुरंत अलग रख दिया जाएगा?"
"मैंने ऐसा नहीं कहा," कोमात्सु ने अपनी नाक खुजाते हुए जवाब दिया। "इस उपन्यास के बारे में मेरा एक और भी अनोखा विचार है।"
"यह एक काफी असामान्य विचार है," टेंगो ने दोहराया, लेकिन उसकी आवाज में एक अप्रिय आशंका थी।
कोमात्सु ने कहा, "आपने सुझाव दिया था कि हम उसकी अगली किताब का इंतज़ार करें।" "बेशक, मैं भी यही उम्मीद कर रहा हूँ। किसी युवा लेखक को आगे बढ़ाने का मौका मिलना एक संपादक के लिए बहुत खुशी की बात होती है। आसमान में सबसे पहले किसी नए सितारे को देखना एक अलग ही खुशी देता है। लेकिन सच कहूँ तो, मुझे नहीं पता कि इस लड़की में एक और किताब लिखने की क्षमता है या नहीं। मैं सबसे कुशल संपादक तो नहीं हूँ, लेकिन बीस साल से इसी तरह अपना जीवन यापन कर रहा हूँ। इस दौरान मैंने बहुत से लेखकों को आते-जाते देखा है। मुझे समझ आ गया है कि किसका भविष्य है और किसका नहीं। और अगर आप मुझसे पूछें, तो इस लड़की का कोई भविष्य नहीं है। यह दुख की बात है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि वह एक और किताब लिख पाएगी,

— यही तो असली मुद्दा है!
कोमात्सु ने अपने होंठ सिकोड़े और अपने हाथ मेज पर रख दिए। फिर उसने आगे कहा: — इस समय मुझे अपने शब्दों का चुनाव बहुत सावधानी से करना होगा।
टेंगो ने अपना कॉफी का कप उठाया और उसमें बची हुई कॉफी देखी। फिर उसने कप वापस रख दिया। कोमात्सु ने अभी भी कुछ नहीं कहा।
"अब आप उस और भी अनोखे विचार का खुलासा करने वाले हैं जिसके बारे में आप बात कर रहे थे, है ना?" टेंगो ने पूछा।
कोमात्सु ने अपनी आँखें बंद कर लीं और उसे ऐसे देखा जैसे किसी शिक्षक को उसके छात्र से सही उत्तर मिल गया हो। फिर उसने धीरे से सिर हिलाया।
- बिल्कुल।
*

कोमात्सु एक ऐसा व्यक्ति था जिसे समझना कहीं भी असंभव था। उसके हावभाव और आवाज़ के लहजे से यह आसानी से पता नहीं चलता था कि वह क्या सोच रहा है या क्या महसूस कर रहा है। ऐसा लगता था कि उसे अपने सामने वाले को इस तरह रहस्यमय बनाए रखने में आनंद आता था। उसका दिमाग बहुत तेज़ था और वह दूसरों की अपेक्षाओं से प्रभावित हुए बिना निर्णय लेने वाला व्यक्ति था। वह केवल अपने विचारों पर भरोसा करता था। हालाँकि वह इसका बखान नहीं करता था, उसने बहुत कुछ पढ़ा था और विभिन्न क्षेत्रों में उसे गहन ज्ञान था। केवल ज्ञान ही नहीं, बल्कि उसकी दृष्टि भी बहुत अच्छी थी, लोगों और साहित्य दोनों के लिए उसमें गहरी समझ थी। यह सच है कि वह पूर्वाग्रहों से भरा हुआ था, लेकिन उसके लिए पूर्वाग्रह भी सत्य का एक महत्वपूर्ण तत्व थे।
वह स्वभाव से शांत थे। उन्हें बातें समझाना पसंद नहीं था, लेकिन ज़रूरत पड़ने पर वे अपनी राय तर्कसंगत और बुद्धिमानी से रख सकते थे। लेकिन जब उनका मन करता, तो वे बेहद असहनीय हो जाते। वे सीधे सामने वाले व्यक्ति की सबसे कमज़ोर कड़ी पर वार करते और कुछ ही शब्दों में उसे पछाड़ देते। लोगों और साहित्यिक कृतियों, दोनों के प्रति उनकी अपनी-अपनी पसंद बहुत पक्की थी, और किसी को पसंद करने की तुलना में नापसंद करने की संभावना कहीं अधिक थी। ज़ाहिर है, इसका मतलब यह था कि दूसरे भी उन्हें ज़्यादा पसंद नहीं करते थे, लेकिन कोमात्सु को प्यार पाने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। तेंगो ने जो देखा था, उससे यह स्पष्ट था कि उन्हें एकांत पसंद था और वे लोगों से दूरी बनाए रखना पसंद करते थे - या यहाँ तक कि उनके साथ असहनीय व्यवहार करना भी। उनका मानना था कि मानसिक तेज़ी सुख-सुविधाओं से नहीं आती।
कोमात्सु पैंतालीस वर्ष के थे, टेंगो से पंद्रह वर्ष बड़े। उन्होंने हमेशा एक साहित्यिक पत्रिका के संपादक के रूप में काम किया था। वे अपने काम के लिए साहित्य जगत में तो जाने-माने थे, लेकिन उनके निजी जीवन के बारे में बहुत कम जानकारी थी। यह एक ऐसा विषय था जिस पर वे अपने सहकर्मियों से कभी चर्चा नहीं करते थे। टेंगो को यह नहीं पता था कि उनका जन्म और पालन-पोषण कहाँ हुआ था, और न ही वे अब कहाँ रहते थे। चाहे कितनी भी चर्चा क्यों न हो, वे कभी इन बातों का ज़िक्र नहीं करते थे। लोग हैरान होते थे कि इतने उदासीन और एकांतप्रिय रवैये के बावजूद, जो लगभग साहित्यिक जगत के प्रति तिरस्कारपूर्ण प्रतीत होता था, वे पांडुलिपियाँ कैसे स्वीकार कर पाते थे। फिर भी, कोमात्सु बिना किसी रुकावट के अपना काम करते रहे और प्रसिद्ध लेखकों की पांडुलिपियों का संपादन करते

रहे। कई बार ऐसा हुआ था कि उन्हीं की बदौलत पत्रिका को आकार मिला था। यही कारण था कि भले ही उन्हें पसंद नहीं किया जाता था, फिर भी उनका सम्मान किया जाता था।
अफवाह थी कि 1960 के दशक में, जब कोमात्सु टोक्यो विश्वविद्यालय के साहित्य संकाय में छात्र थे, तब वे छात्र दंगों के प्रमुख नेताओं में से एक थे। यह भी कहा जाता था कि विरोध प्रदर्शनों के दौरान जब मिचिको काम्बा पर पुलिस ने हमला किया और उनकी हत्या कर दी, तब वे ठीक उनके बगल में थे और इस घटना में वे भी गंभीर रूप से घायल हो गए थे। यह बात सच थी या नहीं, यह कोई नहीं जानता था। अफवाहों से ही संतोष करना पड़ता था। वे दुबले-पतले थे, उनका मुंह कुछ बड़ा और नाक कुछ छोटी थी। उनके हाथ-पैर लंबे थे और उनकी उंगलियां निकोटीन से सनी रहती थीं। उनकी तुलना 19 वीं सदी के रूसी साहित्य में वर्णित पतनशील क्रांतिकारी बुद्धिजीवी से की जा सकती थी। वे आमतौर पर हंसते नहीं थे और जब हंसते भी थे, तो उनका चेहरा एक अजीब सी मुस्कान में बदल जाता था, और ऐसे क्षणों में वे बिल्कुल भी खुश नहीं दिखते थे। वे देर तक मुस्कुराते रहते थे, मानो कोई बूढ़ी चुड़ैल अपशगुन बता रही हो। वह साफ-सुथरा रहता था, लेकिन हमेशा एक जैसे कपड़े पहनता था, मानो दुनिया को दिखाना चाहता हो कि उसे कपड़ों की कोई परवाह नहीं है। वह ट्वीड कोट, सफेद ऑक्सफोर्ड शर्ट या हल्के भूरे रंग की पोलो शर्ट पहनता था, टाई नहीं और स्वेड के जूते। यही उसकी वर्दी थी। आप आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि उसकी अलमारी में छह तीन बटन वाली ट्वीड जैकेट टंगी होंगी, जिनमें कपड़े, रंग और डिज़ाइन में बहुत कम अंतर होगा, और उन्हें बड़े सलीके से साफ किया गया होगा। शायद उसने उन्हें पहचानने के लिए उन पर नंबर भी लिखे होंगे।
उसके बाल नुकीले और खुरदुरे थे, माथे पर थोड़े-थोड़े सफ़ेद बाल थे। टेंगो को हमेशा हैरानी होती थी कि उसके बाल उलझे हुए और कानों तक फैले रहते थे, मानो उसने एक हफ़्ते पहले ही बाल कटवा लिए हों। कभी-कभी उसकी आँखें चमक उठती थीं, मानो साफ़ सर्दियों के आकाश में तारे चमक रहे हों। जब कुछ होता, तो वह एकदम शांत हो जाता, जैसे चाँद के अंधेरे हिस्से पर कोई पत्थर पड़ा हो। उसके चेहरे से सारे भाव गायब हो जाते, और ऐसा लगता जैसे उसके शरीर की गर्माहट भी चली गई हो।
टेंगो की मुलाकात उनसे महज पांच साल पहले हुई थी। उन्होंने कोमात्सु की पत्रिका की पहली साहित्यिक प्रतियोगिता में अपनी पांडुलिपि जमा की थी और वह अंतिम दौर तक पहुंच गई थी। उन्हें कोमात्सु का फोन आया, जिन्होंने उनसे मिलने और बात करने की इच्छा जताई। उनकी मुलाकात शिंजुकु के एक कैफे में हुई (जहां वे अभी थे)। कोमात्सु ने उनसे कहा, "इस बार तुम पुरस्कार नहीं जीत पाओगे।" (सचमुच, वे नहीं जीते थे।) "लेकिन मुझे व्यक्तिगत रूप से तुम्हारा काम पसंद आया। मैं यह तुम्हें आभारी बनाने के लिए नहीं कह रहा हूं। मैं बहुत कम ही किसी से ऐसा कहता हूं," उन्होंने आगे कहा। (टेंगो को तब पता नहीं था, लेकिन यह सच था।) "इसलिए मैं चाहता हूं कि तुम अपनी अगली किताब सबसे पहले मुझे पढ़ने दो।" टेंगो मान गए।
फिर कोमात्सु उसके बारे में और जानना चाहता था। वह कहाँ पला-बढ़ा, उसका काम क्या था। तेंगो ने उसे जितना हो सका, खुलकर बताया। उसका जन्म और पालन-पोषण चिबा प्रांत के इचिकावा शहर में हुआ था। उसके जन्म के कुछ समय बाद ही उसकी माँ बीमार पड़ गई और उसकी मृत्यु हो गई। कम से कम उसके पिता ने उसे यही बताया था।

करने के लिए काफी था। हफ्ते में एक बार उसकी प्रेमिका, जो शादीशुदा थी और जिसके साथ वह दोपहर बिताता था, उससे मिलने आती थी। उससे दस साल बड़ी शादीशुदा महिला के साथ उसके रिश्ते का कोई भविष्य नहीं था और यही बात उसे सुविधाजनक लगती थी। शारीरिक संबंध ही उसे संतुष्ट कर देता था। शाम को वह लंबी सैर पर जाता और अंधेरा होने के बाद संगीत सुनते हुए पढ़ता। वह टीवी नहीं देखता था। जब टीवी बिल वसूलने वाला आता, तो वह विनम्रता से समझाता कि उसके पास टीवी नहीं है। सच में! आप अंदर जाकर देख सकते हैं। लेकिन वह कभी अंदर नहीं जाता था, क्योंकि लोगों के घरों में प्रवेश करना मना था।
*

कोमात्सु ने कहा, "मैं कुछ और महत्वपूर्ण बात के बारे में सोच रहा हूँ।"
"कुछ ज़्यादा ज़रूरी?"
— जी हाँ। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि साहित्यिक नवोदित कृति को दिया जाने वाला पुरस्कार कोई गंभीर बात नहीं है, लेकिन अगर हम कुछ करना चाहते हैं, तो मेरा सुझाव है कि हम उच्च लक्ष्य रखें।
टेंगो चुप रहा। उसे ठीक से पता नहीं था कि कोमात्सु का इरादा क्या था, लेकिन उसे एक अप्रिय अनुभूति हो रही थी।
कुछ देर बाद कोमात्सु ने कहा, "अकुतागावा पुरस्कार!"
"अकुतागावा पुरस्कार," टेंगो ने दोहराया मानो वह रेत में छड़ी से शब्द लिख रहा हो।
— जी हाँ, आप जैसे एकांत में रहने वाले लोगों ने भी उनके बारे में सुना होगा। अखबारों में उनके बारे में लिखा जाता है और टीवी पर भी उन्हें दिखाया जाता है।
"एक मिनट रुकिए, कोमात्सु-सान, मुझे समझ नहीं आया। क्या हम फुकाएरी के बारे में बात कर रहे हैं?"
"हां, हां। फुकेरी और एयर क्राइसालिस के बारे में। इसके अलावा और क्या हो सकता है?"
टेंगो ने अपने होंठ काट लिए। वह यह समझने की कोशिश कर रहा था कि इस कहानी के पीछे क्या छिपा है।
"लेकिन हमने अभी-अभी यह तय किया है कि उनके काम को डेब्यू पुरस्कार जीतने का कोई मौका नहीं है। क्या हम इसी बारे में चर्चा नहीं कर रहे थे? कि इसकी वर्तमान स्थिति में हम इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते?"
"बिल्कुल सही। अपने मौजूदा स्वरूप में यह किसी काम का नहीं है। यह बात तो स्पष्ट है।"
टेंगो को सोचने के लिए कुछ समय चाहिए था।
"क्या आप कह रहे हैं कि उसने जो काम प्रस्तुत किया है उसमें संशोधन किया जाना चाहिए?"
— इसके अलावा कोई और रास्ता नहीं है। अक्सर ऐसा होता है कि संपादक किसी आशाजनक रचना को दोबारा लिखने की सलाह देता है। यह कोई असामान्य बात नहीं है।
फर्क सिर्फ इतना है कि इस बार इसे लेखक नहीं, बल्कि कोई और लिखेगा।
"और कोई?" टेंगो ने पूछा, हालांकि उसे जवाब पता था इससे पहले कि वह उसे सुन पाता।
— आप इसे दोबारा लिखें।

टेंगो ने सही शब्द खोजने की कोशिश की, लेकिन उसे नहीं मिले। उसने आह भरी और कहा:
"लेकिन, कोमात्सु-सान, इस किताब को यूं ही इधर-उधर से व्यवस्थित नहीं किया जा सकता। इसे बिल्कुल नए सिरे से, ऊपर से नीचे तक, फिर से बनाना होगा!"
"बेशक, इसे पूरी तरह से फिर से लिखना होगा। कहानी की संरचना और यथासंभव माहौल को बरकरार रखना होगा। लेकिन लगभग सभी वाक्यों को फिर से लिखना होगा। एक तरह से कहें तो, आप साहित्यिक रूपांतरण कर रहे हैं। पुनर्लेखन की ज़िम्मेदारी आपकी है और मैं निर्माता हूँ।"
“क्या यह वाकई इतना आसान हो सकता है?” टेंगो ने मन ही मन कहा।
"बात ये है," कोमात्सु ने अपने हाथ में कॉफी का चम्मच लेते हुए कहा, फिर उसे टेंगो की ओर ऐसे इशारा किया जैसे कोई कंडक्टर किसी एकल कलाकार के लिए ताल का संकेत दे रहा हो। "फुकाएरी नाम की इस लड़की में कुछ खास बात है। 'द क्राइसालिस ऑफ एयर' पढ़ते ही आपको ये पता चल जाएगा। उसके जैसी कल्पनाशीलता हर जगह नहीं मिलती। लेकिन दुर्भाग्य से, उसकी लेखन शैली में बहुत कुछ कमी है। वो बेहद रूखी है। दूसरी तरफ, तुम अच्छा लिखते हो। तुम धाराप्रवाह और बुद्धिमानी से लिखते हो। भले ही तुम्हारा कद एक सीगल जितना है, तुम्हारी शैली नाजुक और कुशल है, लेकिन उसमें जोश की कमी नहीं है। लेकिन फुकाएरी के विपरीत, तुम्हें अभी भी नहीं पता कि क्या लिखना है। इसी वजह से, कभी-कभी तुम कहानी का सार भी नहीं देख पाते। जो बातें तुम्हें लिखनी चाहिए, वो तुम्हारे अंदर कहीं हैं। बस किसी झिझकते जानवर की तरह किसी गड्ढे में छिपी हुई हैं। वो बाहर नहीं आना चाहतीं। इसी वजह से मैंने तुमसे कहा था कि समय बीतने दो।"
टेंगो अपनी प्लास्टिक की कुर्सी पर असहज होकर हिलने-डुलने लगा। उसने कुछ नहीं कहा।
कोमात्सु ने चम्मच का हैंडल थोड़ा हिलाते हुए कहा, "यह बहुत आसान है। मैं तुम दोनों को मिला दूंगा और मुझे एक नया लेखक मिल जाएगा। तुम फुकाएरी की कच्ची कहानी को अच्छे से संवार दोगे। यह मेल एकदम सही है। यही तुम्हारी क्षमता है। इसीलिए मैंने अब तक तुम्हारा साथ दिया है। है ना? बाकी मैं संभाल लूंगा। अगर तुम दोनों साथ मिलकर काम करोगे, तो डेब्यू पुरस्कार कुछ भी नहीं है, तुम अकुतागावा पुरस्कार के लिए भी लक्ष्य रख सकते हो। मेरी बात सुनो, मुझे ये सब बातें अच्छी तरह से पता हैं। मैंने अब तक जो भी किया है, वह व्यर्थ नहीं गया है।"
टेंगो मुंह खुला रखकर कोमात्सु को घूरता रहा। कोमात्सु ने चम्मच को वापस तश्तरी पर रख दिया, जिससे ज़ोरदार आवाज़ हुई।
"मान लीजिए कि वह अकुतागावा पुरस्कार जीत जाता है। उसके बाद क्या होगा?" तेंगो ने होश में आने के बाद पूछा।
"अगर इसे पुरस्कार मिलता है, तो लोगों की दिलचस्पी बढ़ेगी। ज़्यादातर लोगों को पता नहीं होता कि उपन्यास की क्या कीमत होती है, लेकिन वे अनजान रहना पसंद नहीं करते। इसीलिए वे पुरस्कार जीतने वाली और चर्चित किताब खरीदते और पढ़ते हैं। खासकर तब जब लेखक एक हाई स्कूल का छात्र हो। और अगर किताब बिकती है, तो हमें मुनाफा होता है। हम मुनाफ़ा तीन हिस्सों में बाँट लेते हैं। यही मेरा काम है।"

"पैसा कैसे बांटा जाए, यह अभी मेरी चिंता का विषय नहीं है," टेंगो ने रूखेपन से कहा। "लेकिन क्या यह आपकी संपादकीय नैतिकता के खिलाफ नहीं है? अगर यह बात सामने आ गई कि आपने ऐसा कुछ किया है, तो आप बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ जाएंगे। हो सकता है वे आपको नौकरी से भी निकाल दें।"
— ये इतनी आसानी से नहीं निकलता। अगर मैं ठान लूँ तो इसे आसानी से टाल सकता हूँ। और अगर ऐसा हो भी जाए, तो मैं खुशी-खुशी अपनी मौजूदा नौकरी छोड़ दूँगा। वैसे भी, मेरे बॉस अब मुझे पसंद नहीं करते और मेरे साथ बुरा बर्ताव करते हैं। ज़रूरत पड़ने पर मैं जल्दी ही कहीं और काम ढूँढ सकता हूँ। और आप जानते हैं, मैं ये सब पैसे के लिए नहीं कर रहा हूँ। मेरी इच्छा है कि साहित्य जगत हँसे। इन निकम्मे चापलूसों पर जितना हो सके हँसूँ, जो कीचड़ के ढेर की तरह जमा होकर एक-दूसरे की चापलूसी करते हैं और ज़ख्म चाटते हैं, जबकि असल में एक-दूसरे के रास्ते में रुकावट डालते हैं। दूसरी तरफ, वे साहित्य के महत्वपूर्ण मिशन की बात करते हुए सीना तानते हैं। मैं इस व्यवस्था को उलट-पुलट कर उनके मुँह पर हँसना चाहता हूँ। क्या ये कमाल की बात नहीं होगी?
टेंगो को यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा। तब तक उसे साहित्यिक जगत से परिचित होने का ज़्यादा मौका नहीं मिला था। कोमात्सु जैसे सक्षम व्यक्ति की बचकानी प्रेरणा देखकर वह कुछ क्षणों के लिए अवाक रह गया। उसे लगा मानो वह किसी खतरनाक पुल को पार करने की कोशिश कर रहा हो।
— जो आप प्रस्तावित कर रहे हैं, वह मुझे एक प्रकार की धोखाधड़ी लगती है। कोमात्सु ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, "सहयोग से रचनाएँ लिखना कोई असामान्य बात नहीं है। पत्रिकाओं में धारावाहिक रूप से प्रकाशित होने वाली आधी कॉमिक्स इसी तरह बनती हैं। संपादकीय टीम एक विचार सोचती है, कहानी का खाका तैयार करती है और रूपरेखा बनाती है। फिर एक सहायक उसमें बारीकियां जोड़ता है और रंग भरता है। ठीक वैसे ही जैसे अलार्म घड़ी बनाते हैं। लेकिन उपन्यासों की दुनिया में भी ऐसे ही मामले देखने को मिलते हैं। उदाहरण के लिए, सस्ते प्रेम उपन्यास। इनमें से कई उपन्यास एक ऐसे लेखक द्वारा लिखे जाते हैं जिसे प्रकाशक द्वारा बताई गई कहानी लिखने के लिए नियुक्त किया जाता है, क्योंकि प्रकाशक को लेखन का तरीका पता होता है। संक्षेप में, यह श्रम विभाजन की एक प्रणाली है। इसके बिना बड़े पैमाने पर उत्पादन संभव नहीं है। लेकिन गंभीर साहित्य की दुनिया में ऐसे तरीके आधिकारिक तौर पर स्वीकार्य नहीं हैं, इसलिए हमारी ठोस रणनीति फुकाएरी को अकेले ही आगे लाना है। अगर सच्चाई सामने आती है, तो शायद एक सार्वजनिक विवाद होगा, लेकिन आखिरकार, हम कुछ भी गैरकानूनी नहीं कर रहे हैं। यह तो समय का चलन है। और ऐसा भी नहीं है कि हम बाल्ज़ाक या मुरासाकी शिकिबू की रचनाओं को फिर से लिख रहे हैं।" हम बस एक हाई स्कूल की लड़की के घटिया काम को लेकर उसे बेहतर बना रहे हैं। इसमें समस्या क्या है? अगर हम कुछ ऐसा बनाते हैं जो गुणवत्तापूर्ण हो और कई पाठकों को पसंद आए, तो हम किसे नुकसान पहुंचा रहे हैं?
टेंगो ने कोमात्सु की बातें सुनीं। फिर उसने सोच-समझकर अपने शब्दों का चयन किया।
"दो समस्याएं हैं। शायद और भी हों, लेकिन फिलहाल हम इन्हीं दो पर ध्यान देते हैं। पहली बात तो यह है कि हमें नहीं पता कि फुकाएरी अपना काम किसी और से दोबारा लिखवाने के लिए राजी होंगी या नहीं। अगर उनका जवाब 'ना' है, तो कहानी

यहीं खत्म हो जाएगी। फिर, अगर फुकाएरी मान भी जाती हैं, तो सवाल उठता है कि क्या मैं वाकई कहानी को ठीक से दोबारा लिख पाऊंगा। टीमवर्क बहुत नाजुक मामला है, और चीजें उतनी आसानी से नहीं हो सकतीं जितनी आप सोच रहे हैं।"
"मुझे तुम्हारी चिंता नहीं है, तुम निश्चित रूप से सक्षम हो," कोमात्सु ने तुरंत जवाब दिया, मानो उसे इस आपत्ति की उम्मीद थी। "निस्संदेह, तुम कर सकते हो। जब से मैंने 'द एयर क्राइसालिस' पढ़ी है, तब से मैं यही सोच रहा हूँ। मुझे लगा कि टेंगो को इसे फिर से लिखना चाहिए। और सटीक कहें तो, यह एक ऐसी कहानी है जो तुम्हारी शैली के लिए एकदम उपयुक्त है। यह तुम्हारे द्वारा फिर से लिखे जाने की प्रतीक्षा कर रही है। क्या तुम सहमत नहीं हो?"
टेंगो ने अपना सिर हिलाया। उसके शब्द अनसुने रह गए।
कोमात्सु ने शांत स्वर में कहा, "जल्दबाजी करने की कोई जरूरत नहीं है। यह एक महत्वपूर्ण निर्णय है। दो-तीन दिन सोच-विचार कर लीजिए। 'द एयर क्राइसालिस' एक बार फिर पढ़ लीजिए। फिर मैंने जो प्रस्ताव रखा है, उस पर ध्यान से विचार कीजिए। अरे हाँ, मैं आपको यह भी दे देता हूँ!"
कोमात्सु ने अपनी जैकेट की जेब से एक भूरा लिफाफा निकाला और टेंगो को दे दिया। अंदर एक लड़की की दो साधारण रंगीन तस्वीरें थीं। पहली तस्वीर में उसका सीने तक का हिस्सा दिख रहा था, और दूसरी में वह पूरी तरह से दिख रही थी। ये साधारण स्नैपशॉट थे, जो एक ही दिन खींचे गए प्रतीत होते थे। लड़की बड़े पत्थर की सीढ़ियों के सामने खड़ी थी। उसका चेहरा पारंपरिक रूप से सुंदर था। वह छोटी और पतली थी, उसके लंबे, सीधे बाल थे और उसने सफेद ब्लाउज पहना हुआ था। उसके होंठ मुस्कुराने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन उसकी आँखें मुस्कुराने से इनकार कर रही थीं। एक बेहद गंभीर नज़र, मानो किसी चीज़ की चाहत रखती हो। टेंगो ने कुछ पल तस्वीरों को देखा, कभी एक को, कभी दूसरी को। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्यों, लेकिन उन्हें देखकर उसे अपना बचपन याद आ गया। फिर उसे अपने सीने में एक हल्की सी चुभन महसूस हुई। एक अजीब सा दर्द, ऐसा दर्द जो उसने लंबे समय से महसूस नहीं किया था। लड़की के चेहरे में कुछ ऐसा था जो इतना दर्द पैदा कर रहा था।
"ये फुकाएरी है," कोमात्सु ने कहा। कितनी सुंदर है, है ना? और वो साफ-सुथरी भी है। उसकी उम्र सत्रह साल है। उसमें कोई कमी नहीं दिखती। उसका असली नाम एरिका फुकाडा है, पर वो खुद को कभी इस नाम से नहीं बुलाती। वो चाहती है कि उसे फुकाएरी ही कहा जाए। क्या लगता है, अगर वो अकुतागावा को जीत ले, तो खूब हंगामा होगा, है ना? पत्रकार शाम ढलते ही चमगादड़ों की तरह उसके पीछे टूट पड़ेंगे। किताब धड़ाधड़ बिकेगी।
टेंगो असमंजस में पड़ गया और सोचने लगा कि कोमात्सु को वे तस्वीरें कहाँ से मिलीं। वे पांडुलिपि के साथ नहीं भेजी गई थीं। लेकिन उसने न पूछने का फैसला किया। शायद जवाब न जानना ही बेहतर था, और वैसे भी उसे शक था कि उसे कोई जवाब मिला भी होगा।
“आप इन्हें रख सकते हैं। ये आपके काम आ सकते हैं,” कोमात्सु ने कहा। टेंगो ने तस्वीरों को वापस लिफाफे में रखा और लिफाफे को पांडुलिपि के ऊपर रख दिया। कोमात्सु-सान, मुझे व्यापार के बारे में कुछ भी नहीं पता। लेकिन आम आदमी के नज़रिए से, आपकी योजना मुझे बेहद खतरनाक लगती है। अगर हम जनता से एक बार झूठ बोलेंगे, तो हमें हमेशा झूठ बोलना पड़ेगा। हमें लगातार झूठ बोलना होगा। और यह

करना आसान नहीं है, और भावनात्मक रूप से इसे सहना भी आसान नहीं है। अगर हममें से किसी ने भी अपनी पोल खोल दी, तो यह हम सबके लिए घातक होगा। क्या आप सहमत नहीं हैं?
कोमात्सु ने सिगरेट के पैकेट से एक और सिगरेट निकाली और उसे जलाया।
— बिलकुल सही। आपकी बात एकदम सटीक है। यह वाकई एक जोखिम भरा प्लान है। फिलहाल इसमें कई अनिश्चितताएं हैं। कभी भी कुछ ऐसा हो सकता है जिससे हमारी योजनाएँ विफल हो जाएँ। हम असफल हो सकते हैं और यह हम दोनों के लिए बुरा दिन साबित हो सकता है। मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ। लेकिन, टेंगो, मैंने सब कुछ सोच-समझ लिया है और मेरा अंतर्ज्ञान कहता है कि आगे बढ़ो। क्योंकि यह मौका दोबारा नहीं मिलता। ऐसा मौका हमें पहले कभी नहीं मिला और शायद फिर कभी नहीं मिलेगा। जुए से तुलना करना शायद ठीक नहीं है, लेकिन हमारे पास अच्छा मौका है और दांव लगाने के लिए कुछ है। अगर हम यह मौका गँवा देते हैं, तो बाद में पछताएंगे। टेंगो चुप हो गया और अपने वार्ताकार के चेहरे पर दिखाई देने वाली अशुभ मुस्कान को देखने लगा।
और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि 'द एयर क्राइसालिस' को एक असाधारण कृति के रूप में नया रूप दिया जाए। यह एक ऐसी कहानी है जिसे और बेहतर ढंग से लिखने की आवश्यकता है। इसमें कुछ बहुत महत्वपूर्ण है, कुछ ऐसा जिसे उजागर करने की आवश्यकता है। मुझे पता है कि आप भी अपने दिल से यही मानते हैं। है ना? इसी उद्देश्य से हम सब मिलकर इस परियोजना में अपना-अपना योगदान देंगे, हर कोई अपनी-अपनी कुशलता से। हमें किसी के सामने अपने लक्ष्य को लेकर शर्मिंदा होने की कोई जरूरत नहीं है।
"लेकिन, कोमात्सु-सान, हम चाहे जो भी बहाने बनाएँ, चाहे हमारा मकसद कितना भी जायज़ हो, चाहे आप कुछ भी सोचें, यह फिर भी धोखाधड़ी है। हो सकता है कि हमें अपने मकसद के लिए किसी के सामने शर्मिंदा न होना पड़े, लेकिन सच्चाई यह है कि हम जो कर रहे हैं उसे खुलकर बोल भी नहीं सकते। हमें छिपकर काम करना होगा। अगर धोखाधड़ी सही शब्द नहीं है, तो हम इसे राजद्रोह कह सकते हैं। भले ही हम कानून न तोड़ रहे हों, फिर भी नैतिक मुद्दा तो है ही। अपने ही पत्रिका के पहले पुरस्कार के लिए लेख में हेराफेरी करने वाला संपादक उस दलाल की तरह है जो शेयर बाजार में मुनाफा कमाने के लिए गोपनीय जानकारी का इस्तेमाल करता है।" साहित्य और विद्वत्ता की तुलना नहीं की जा सकती। ये दोनों बिल्कुल अलग-अलग चीजें हैं।
— मुझे एक उदाहरण दीजिए जिससे पता चले कि वे कैसे भिन्न हैं।
"उदाहरण के लिए, देखो, तुम एक बहुत महत्वपूर्ण तथ्य को नज़रअंदाज़ कर रहे हो," कोमात्सु ने कहा और उसके चेहरे पर एक असामान्य रूप से चौड़ी मुस्कान आ गई। या यूँ कहें कि तुम जानबूझकर उससे नज़रें फेर रहे हो। क्योंकि तुम हमेशा से यही करना चाहते थे। तुम पहले से ही 'द क्राइसालिस ऑफ एयर' को फिर से लिखना चाहते हो, और मैं यह जानता हूँ। जोखिम और नैतिकता की चिंता छोड़ो! तेंगो, मुझे यकीन है कि तुम इस किताब को फिर से लिखने के लिए बेताब हो। तुम फुकाएरी की जगह इसके अंदर छिपी किसी गहरी भावना को बाहर लाना चाहते हो। देखो, यही विद्वत्ता और साहित्य में अंतर है। वहाँ अच्छाई या बुराई नहीं होती, पैसे के अलावा किसी और मकसद से कुछ नहीं होता। घर जाओ और अपने अंदर झाँको। आईने में देखो। यह तुम्हारे चेहरे पर साफ लिखा है!"

उसके आसपास की हवा पतली लग रही थी। टेंगो ने एक पल के लिए चारों ओर देखा। क्या उसे वे तस्वीरें फिर से दिखाई देंगी? उसे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि ऐसा होगा। यह पतली हवा किसी दूसरी दुनिया से आ रही थी। उसने अपनी जेब से रुमाल निकाला और अपना माथा पोंछा। कोमात्सु को हमेशा सही ही क्यों होना होता है?

अध्याय 3 कुछ सत्य बदल गए

ओमामे बिना जूतों के, सिर्फ़ मोज़े पहने ही संकरी सीढ़ियों से नीचे उतरने लगी। हवा खुली सीढ़ियों पर सरसराहट करती हुई बह रही थी। उसकी स्कर्ट तंग थी, लेकिन नीचे से आती तेज़ हवा उसे बीच-बीच में नौका के पाल की तरह फुला रही थी, जिससे उसका संतुलन बिगड़ रहा था। ओमामे एक-एक करके पीछे की ओर सीढ़ियाँ उतरती गई, रेलिंग का काम कर रहे पाइप को कसकर पकड़े हुए। बीच-बीच में वह रुकती, अपने बालों को आँखों से हटाती और अपने बैग को ठीक करती, जो उसके आसपास बिखरा पड़ा था।
उसके नीचे राष्ट्रीय सड़क 246 थी। इंजनों की गर्जना, हॉर्न, अलार्म, चुनावी गाड़ियों के लाउडस्पीकरों से गूंजते पुराने राष्ट्रवादी नारे, कंक्रीट के टूटने की गड़गड़ाहट और शहर के अन्य कई शोर उसे चारों ओर से घेरे हुए थे। ये शोर हवा की हर दिशा से, ऊपर से नीचे से, हर संभव दिशा से आ रहे थे। इन्हें सुनकर (उसे ये शोर सुनना बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था, लेकिन उसके पास खड़े होकर कान ढकने का समय नहीं था), आओमामे को समुद्री बीमारी जैसी मतली महसूस हुई। कुछ देर बाद, वह एक पैदल पुल पर पहुंचा जो वापस राजमार्ग के बीचोंबीच जाता था, और फिर सीधे नीचे की ओर चला गया।
आपातकालीन सीढ़ियों के ठीक बगल में, एक गली से अलग, एक छोटी चार मंजिला अपार्टमेंट इमारत थी। लाल ईंटों से बनी यह इमारत अपेक्षाकृत नई थी। सीढ़ियों की ओर वाली तरफ बालकनियाँ थीं, लेकिन सभी खिड़कियाँ बंद थीं और पर्दे लगे हुए थे। भला किस वास्तुकार ने मेट्रोपॉलिटन एक्सप्रेसवे के ठीक सामने बालकनियाँ बनाने के बारे में सोचा होगा? कोई भी वहाँ चादरें सुखाने के लिए नहीं टांगेगा, और न ही कोई हाथ में जिन और टॉनिक लिए शाम के ट्रैफिक जाम को देखने के लिए बैठेगा। फिर भी, कई बालकनियों पर नायलॉन की कपड़े सुखाने की रस्सियाँ दिखाई दे रही थीं, मानो किसी नियम के अनुसार वहाँ टांगी गई हों। उनमें से एक पर कुछ बगीचे की कुर्सियाँ और एक गमले में लगा रबर का पेड़ भी था। एक जर्जर और मुरझाया हुआ पेड़, जिसके पत्ते जगह-जगह से झड़ रहे थे और मुरझा रहे थे। आओमामे को उस पर तरस आ गया। उसने सोचा, अगर मेरा पुनर्जन्म होता, तो मैं ऐसा बिल्कुल नहीं बनना चाहती।
सीढ़ी बिल्कुल भी इस्तेमाल की हुई नहीं लग रही थी, क्योंकि जगह-जगह मकड़ी के जाले लगे हुए थे। एक छोटी काली मकड़ी जाले से लटकी हुई थी, धैर्यपूर्वक अपने छोटे शिकार के आने का इंतज़ार कर रही थी। असल में, मकड़ियां खुद को धैर्यवान नहीं मानतीं, आओमामे ने सोचा। जाले बुनने के अलावा वे किसी और काम में माहिर नहीं होतीं, और उनके पास वहाँ बेसुध पड़े रहने के अलावा कोई और विकल्प नहीं होता। वे एक ही जगह बैठकर अपने शिकार का इंतज़ार करती हैं, एक दिन उनका समय आता है, वे मर जाती हैं और सूख जाती हैं। सब कुछ पहले से ही जीन में लिखा होता है। कोई झिझक, निराशा या पछतावा नहीं होता। कोई आध्यात्मिक उथल-पुथल या नैतिक संघर्ष नहीं होता। शायद। लेकिन मैं वैसी नहीं हूँ। मुझे एक उद्देश्य के साथ आगे बढ़ना है, और यही कारण है कि मैं अब मेट्रोपॉलिटन हाईवे नंबर 3 पर इस

दौड़ी, जितना हो सके उतने कार्ड इकट्ठा करने की कोशिश की, लेकिन हवा बहुत तेज़ थी और जो कार्ड बार-बार खो रहे थे उनकी संख्या बहुत ज़्यादा थी। 1954, 1984, 1645, 1881, 2006, 771, 2041… ये सभी वर्ष एक-एक करके हवा में उड़ गए। वंशावली खो गई, ज्ञान लुप्त हो रहा था, विचार की सीढ़ी हमारे पैरों तले ढह रही थी।
आओमामे और तामाकी एक ही बिस्तर पर हैं। दोनों सत्रह साल की हैं और अपनी उम्र की आज़ादी का भरपूर आनंद उठा रही हैं। दोस्तों के रूप में यह उनकी पहली यात्रा है, जो उन्हें बेहद उत्साहित कर रही है। उन्होंने गर्म पानी के झरनों में स्नान किया, फ्रिज से एक कैन बियर साथ में पी, फिर लाइट बंद करके बिस्तर पर लेट गईं। पहले तो वे बस मस्ती कर रही थीं। वे एक-दूसरे को शरारत से गुदगुदी कर रही थीं। लेकिन कुछ देर बाद, तामाकी ने हाथ बढ़ाकर पतले टी-शर्ट के ऊपर से ही आओमामे के निपल्स को हल्के से चुटकी काट ली। आओमामे के शरीर में बिजली के झटके की तरह सिहरन दौड़ गई। उन्होंने अपने टी-शर्ट और पैंटी उतार दिए और दोनों नग्न हो गईं। यह गर्मी की रात थी। हम यात्रा पर कहाँ गए थे? वह सोचती है। मुझे याद नहीं। कोई बात नहीं। बिना किसी के कहने का इंतज़ार किए, दोनों अपने शरीर को ध्यान से देखने लगीं। वे एक-दूसरे को देख रही थीं, छू रही थीं, सहला रही थीं, चूम रही थीं, चाट रही थीं। आधा मज़ाक में, आधा गंभीरता से। तामाकी छोटी और गोल-मटोल है। उसके स्तन बड़े हैं। ओमामे लंबी और पतली है। उसका शरीर सुगठित है और स्तन छोटे हैं। तामाकी हमेशा वजन कम करने की शिकायत करती रहती थी, जबकि ओमामे खुद को जैसी है वैसी ही बेहद खूबसूरत मानती थी। तामाकी की त्वचा चिकनी और मुलायम है। उसके निपल्स खूबसूरत अंडाकार आकार के हैं, जो जैतून की याद दिलाते हैं। उसके गुप्तांग के बाल पतले और महीन हैं, जैसे विलो का पेड़। वहीं आओमामे के बाल तार की तरह खुरदुरे हैं। दोनों इस अंतर पर हंसती हैं। वे एक-दूसरे के शरीर को ध्यान से महसूस करती हैं और पता लगाती हैं कि कौन से अंग ज़्यादा संवेदनशील हैं। कुछ जगहें एक जैसी हैं, कुछ अलग। फिर वे एक-दूसरे की क्लिटोरिस को उंगलियों से छूती हैं। दोनों पहले भी हस्तमैथुन कर चुकी हैं। बहुत बार। और दोनों सोचती हैं कि यह एहसास कितना अलग है। बोहेमिया के मैदानों में हवा बह रही है।
ओमामे रुक गई और उसने फिर से अपना सिर हिलाया। उसने गहरी साँस ली और सीढ़ियों की रेलिंग को कसकर पकड़ लिया। उसने खुद से कहा, "मुझे इन विचारों से खुद को शांत करना होगा। मुझे उतरते समय सावधान रहना होगा। मैं शायद आधे से ज़्यादा नीचे आ चुकी हूँ। फिर यह भयानक शोर क्यों है? हवा इतनी तेज़ क्यों चल रही है? ऐसा लग रहा है जैसे यह मुझे डांट रही हो, जैसे मुझे सज़ा दे रही हो।"
लेकिन इन सब बातों को छोड़ दें तो, अगर मैं नीचे उतरते समय किसी से टकरा जाऊं और वह मुझसे पूछे कि मैं वहां क्या कर रही हूं, तो मैं क्या कहूंगी? क्या मैं उनसे कहूंगी कि "हाईवे पर ट्रैफिक जाम था, इसलिए मैं इमरजेंसी सीढ़ियों से नीचे आ गई। मुझे कुछ जरूरी काम है" और वहां से भाग जाऊंगी? मैं मुसीबत में पड़ सकती हूं। और आओमामे किसी भी मुसीबत में नहीं पड़ना चाहती थी। खासकर उस दिन तो बिल्कुल नहीं।
*

सौभाग्य से, नीचे कोई नहीं था जो उसे सीढ़ियों से उतरते देख सके। ज़मीन पर पहुँचते ही, आओमामे ने अपने बैग से जूते निकाले और पहन लिए। सीढ़ियों के नीचे

जाँच करने आया हूँ। क्या मैं आपको पाँच मिनट के लिए परेशान कर सकता हूँ?" आओमामे ने मुस्कुराते हुए फुर्ती से कहा।
वह व्यक्ति असंतुष्ट होकर भौंहें चढ़ा बैठा।
मुझे एक बहुत जरूरी काम है। मैं एक घंटे में यहाँ से निकल रहा हूँ, क्या आप तब तक इंतजार कर सकते हैं? वैसे, मुझे इस कमरे में एयर कंडीशनिंग में अभी कोई समस्या नहीं दिख रही है।
"मुझे खेद है, लेकिन यह बिजली कटौती से संबंधित एक अत्यावश्यक सुरक्षा जांच है, और मैं इसे जल्द से जल्द पूरा करना चाहता हूं। मैं बारी-बारी से हर कमरे का निरीक्षण कर रहा हूं। यदि आप मुझे अनुमति दें, तो मैं पांच मिनट से भी कम समय में काम पूरा कर सकता हूं।"
"मुझे लगता है मेरे पास कोई विकल्प नहीं है," उस आदमी ने जीभ चटकाते हुए जवाब दिया। "हालांकि मैंने होटल का कमरा इसलिए बुक किया था ताकि मैं बिना किसी रुकावट के काम कर सकूं।"
उस व्यक्ति ने अपनी मेज पर रखे कागजों की ओर इशारा किया। उनमें प्रिंटर से छपे जटिल सारणियाँ और आरेख थे। संभवतः वह उस शाम की बैठक के लिए अपनी सामग्री तैयार कर रहा था। उसके पास एक डेस्कटॉप कंप्यूटर और संख्याओं से भरी एक नोटबुक भी थी।
ओमामे जानती थी कि वह आदमी एक तेल कंपनी में काम करता था। वह मध्य पूर्वी देशों में पूंजी निवेश का विशेषज्ञ था। उसे मिली जानकारी के अनुसार, वह इस क्षेत्र में बहुत कुशल था। उसके पहनावे से ही इसका अंदाजा लगाया जा सकता था। वह पढ़ा-लिखा था, उसकी आमदनी अच्छी-खासी थी और वह एकदम नई जगुआर कार चलाता था। बचपन में उसे खूब लाड़-प्यार मिला था, वह विदेश में पढ़ाई करने गया था, अंग्रेजी और फ्रेंच अच्छी तरह बोलता था और अपने हर काम में उसे पूरा भरोसा था। और वह ऐसा आदमी था जिसे कोई कुछ भी पूछे जाने पर गुस्सा आता था। वह आलोचना भी बर्दाश्त नहीं कर पाता था, खासकर किसी महिला की। दूसरी ओर, वह दूसरों को बुलाने में जरा भी नहीं हिचकिचाता था। अगर वह अपनी पत्नी को गोल्फ क्लब से पीटकर उसकी कुछ पसलियां तोड़ भी देता, तो भी उसे कोई पछतावा नहीं होता था। वह खुद को दुनिया का केंद्र समझता था। उसे लगता था कि उसके बिना दुनिया रुक जाएगी। जब कोई उसके रास्ते में आता या उसे परेशान करता, तो वह बहुत गुस्सा हो जाता था। वह बुरी तरह भड़क उठता था। उसका गुस्सा फूट पड़ता था।
“असुविधा के लिए क्षमा करें,” आओमामे ने मुस्कुराते हुए कहा। फिर, स्थिति को स्पष्ट करने के लिए, वह लगभग चुपके से कमरे में दाखिल हुई और दरवाजे से पीठ टिकाकर फोल्डर खोला और कलम से कुछ लिखा। “क्या आपका नाम… श्री मियामा है?” उसने पूछा।
उसने कई बार तस्वीरों में उसका चेहरा देखा था और जानता था कि वह कैसी दिखती है, लेकिन यह सुनिश्चित करना ज़रूरी था कि वह सही व्यक्ति को ही पहचाने। एक बार गलती हो जाने पर उसे सुधारा नहीं जा सकता था।
"जी हां, मियामा," उस आदमी ने कठोर स्वर में उत्तर दिया।
फिर उसने हताशा से आह भरी और उसे अपनी मर्जी से करने दिया। हाथ में कलम लिए वह मेज की ओर चला और जिन कागजों को वह पढ़ रहा था, उन्हें उठा लिया। उसका सूट जैकेट और धारीदार टाई बिना बिछे डबल बेड पर लापरवाही से पड़े थे। दोनों ही महंगे लग रहे थे। आओमामे कंधे पर बैग लटकाए अलमारी की ओर चली गई। उसे पहले से

पता था कि एयर कंडीशनिंग का कंट्रोल पैनल वहीं है। अंदर उसे एक मुलायम ट्रेंच कोट और एक गहरे भूरे रंग का कश्मीरी स्कार्फ मिला। मियामा के पास सामान के लिए सिर्फ एक चमड़े का ब्रीफकेस था। उसके पास बदलने के लिए कपड़े या टॉयलेटरीज़ नहीं थे, जिसका मतलब था कि वह ज्यादा देर रुकने का इरादा नहीं रखती थी। मेज पर रूम सर्विस से मंगाई गई कॉफी का एक बर्तन रखा था। लगभग तीस सेकंड तक पैनल चेक करने का नाटक करने के बाद, आओमामे मियामा की ओर मुड़ी। "आपकी समझदारी के लिए धन्यवाद, श्री मियामा। आपके कमरे में मौजूद उपकरण ठीक हैं।"
“क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि यह काम करेगा?” उस अहंकारी व्यक्ति ने उसकी ओर मुड़े बिना ही कहा।
"श्री मियामा?" आओमामे ने शर्माते हुए पूछा। "गुस्सा मत होइए, लेकिन आपके मन में कुछ चल रहा है।"
"यहाँ?" उसने हैरानी से कहा और अपना हाथ अपने सिर के पीछे रख लिया। उसने उसे थोड़ा रगड़ा, फिर सवालिया निगाहों से अपनी हथेली को देखा। "मुझे नहीं लगता कि मेरे पास कुछ है।"
"माफ़ कीजिए," उसने डेस्क के पास आते हुए कहा। "क्या मैं इसे और करीब से देख सकती हूँ?"
"जी हां, ठीक है," उसने उलझन भरे चेहरे से जवाब दिया। "लेकिन बात क्या है?"
"यह पेंट जैसा दिखता है। यह चमकीला हरा है।"
- रँगना?
"मैं ठीक से नहीं बता सकता। रंग देखकर तो लगता है कि यह पेंट है। क्या मैं इसे छू सकता हूँ? हो सकता है यह पहले से ही किसी और का हो।"
"हम्म," मियामा ने जवाब दिया, उसका सिर आगे की ओर झुका हुआ था और उसके सिर का पिछला हिस्सा आओमामे की ओर मुड़ा हुआ था।
ऐसा लग रहा था जैसे उसने अभी-अभी बाल कटवाए हों, क्योंकि उसकी गर्दन के पीछे बाल नहीं थे। आओमामे ने गहरी सांस ली और सांस रोककर ध्यान केंद्रित किया और तुरंत उस जगह को पहचान लिया। फिर उसने अपनी उंगली वहाँ दबाई, मानो कोई निशान बना रही हो। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और सुनिश्चित किया कि उसकी उंगलियाँ सही जगह को छू रही हैं। हाँ, वही जगह थी। वह आराम से समय लेना चाहती थी, जल्दी नहीं करना चाहती थी, लेकिन उसके पास समय नहीं था। उसे परिस्थितियों के अनुसार जो संभव था वही करना था।
"माफ़ कीजिए, क्या आप थोड़ी देर इसी स्थिति में रह सकते हैं? मेरे बैग में एक टॉर्च है और मैं उसे लेना चाहता हूँ। इस रोशनी में देखना मुश्किल है।" "लेकिन वह पेंट वहां आया कहां से?"
मुझे नहीं पता। मैं अभी देख लूंगा।
उस आदमी की गर्दन पर अपनी उंगली हल्के से दबाते हुए, उसने अपने बैग से एक प्लास्टिक का डिब्बा निकाला, उसे खोला और उसमें से एक मोटे कपड़े में लिपटी हुई चीज़ निकाली। उसने जल्दी से एक हाथ से उसे खोला और उसमें से बर्फ तोड़ने वाले औजार जैसी एक वस्तु निकली। यह लगभग दस सेंटीमीटर लंबी थी, जिसमें एक छोटा, सख्त लकड़ी का हैंडल लगा था। लेकिन यह बर्फ तोड़ने वाला औजार नहीं था। दरअसल, यह एक ऐसा औजार था जिसे उसने खुद डिजाइन और बनाया था। इसकी नोक सिलाई की सुई की तरह नुकीली थी। उस नुकीली नोक को टूटने से बचाने के लिए, उसने उसे एक

कॉर्क के टुकड़े में फंसा रखा था, जिसे खास तौर पर रुई की तरह मुलायम बनाया गया था। आओमामे ने सावधानी से अपने नाखूनों से कॉर्क को निकाला और अपनी जेब में रख लिया। फिर उसने औजार की नोक को मियामा की गर्दन के पिछले हिस्से पर निशाना बनाया। "शांत रहो, यह बहुत ही नाजुक पल है," उसने खुद को समझाया। "एक मिलीमीटर के दसवें हिस्से की भी गलती नहीं कर सकते। बस एक छोटी सी गलती सब कुछ बर्बाद कर सकती है। ध्यान केंद्रित करना बहुत जरूरी है।"
"अभी तक काम खत्म नहीं हुआ? कितना समय लगेगा?" उस आदमी ने चिढ़कर पूछा।
मुझे खेद है। मैं इसे अभी पूरा कर दूंगा।
चिंता मत करो, मैं पलक झपकते ही काम खत्म कर दूंगी, आओमामे ने मन ही मन उस आदमी से कहा। बस थोड़ा और इंतज़ार करो, फिर तुम्हें किसी चीज़ के बारे में नहीं सोचना पड़ेगा। न तेल शोधन प्रणालियों के बारे में, न बाज़ार के रुझानों के बारे में, न निवेशक समूह की तिमाही रिपोर्ट के बारे में, न बहरीन के लिए हवाई टिकट बुक करने के बारे में, न अधिकारियों को रिश्वत देने के बारे में, न अपनी प्रेमिका के लिए उपहारों के बारे में, बिल्कुल कुछ भी नहीं। अब तक इतनी सारी बातों की चिंता करना तुम्हारे लिए मुश्किल हो गया होगा, है ना? माफ़ करना, लेकिन कृपया थोड़ा और धैर्य रखो। मैं अपना काम ठीक से करना चाहती हूँ, इसलिए मुझे परेशान मत करो। कृपया।
एक बार जब उसने अपना लक्ष्य तय कर लिया, तो आओमामे ने अपनी दाहिनी हथेली हवा में उठाई, अपनी सांस रोकी, और फिर कुछ क्षण बाद उसे लकड़ी के हैंडल पर रख दिया। लेकिन ज़्यादा ज़ोर से नहीं। अगर वह ज़्यादा ज़ोर लगाती, तो सुई त्वचा के नीचे टूट जाती, और वह उस सुई की नोक को पीछे नहीं छोड़ सकती थी। हथेली को धीरे से, सावधानी से, सही दिशा में, संतुलित बल के साथ नीचे लाना था। गुरुत्वाकर्षण के विपरीत बल के बिना। पतली सुई सहजता से अंदर चली गई, मानो निगल ली गई हो। गहरी, चिकनी, घातक। जिस कोण और बल से उसने दबाया, वह महत्वपूर्ण था। अगर वह इन बातों का ध्यान रखती, तो बाकी सब बेहद आसान था, जैसे टोफू के टुकड़े में सुई चुभोना। नोक मांस को भेदती है और मस्तिष्क के निचले हिस्से में उस जगह को चुभती है, और दिल तुरंत रुक जाता है, जैसे मोमबत्ती बुझ जाती है। सब कुछ पल भर में हो गया। बहुत जल्दी। आओमामे ही ऐसी थी जो ऐसा कर सकती थी। कोई और उस जगह को महसूस करके नहीं ढूंढ सकता था। लेकिन वह ढूंढ सकती थी। उसकी उंगलियों में यह विशेष इंद्रिय क्षमता थी।
उस आदमी की सांस अटक गई। उसके शरीर की हर मांसपेशी तन गई। जैसे ही आओमामे ने यह महसूस किया, उसने सुई निकाल ली और अपनी जेब में रखी जालीदार पट्टी को घाव पर लगा दिया ताकि खून बहना बंद हो जाए। सुई की नोक बहुत पतली थी और उसने उसे कुछ ही सेकंड के लिए अंदर रखा था। अगर खून बह भी जाता, तो कोई बड़ी बात नहीं होती, लेकिन उसे हर सावधानी बरतनी थी। वह खून का एक भी निशान नहीं दिखाना चाहती थी। एक बूंद भी जानलेवा हो सकती थी। सावधानी बरतना उसके गुणों में से एक था।
धीरे-धीरे, मियामा का तनावग्रस्त शरीर ढीला पड़ने लगा, जैसे कोई पिचकी हुई बास्केटबॉल। अपनी तर्जनी उंगली उस आदमी की गर्दन पर दबाए रखते हुए, आओमामे ने उसका सिर मेज पर एक तरफ झुका दिया, उसका गाल कागजों पर टिका हुआ था। उसकी आँखें चौड़ी खुली थीं और उसका चेहरा विस्मय से भरा था, मानो उसने अभी-अभी कुछ बेहद अजीब देखा हो। उसकी आँखों में कोई डर नहीं था। कोई दर्द नहीं। बस शुद्ध

*

अध्याय 4 अगर आप यही चाहते हैं

टेलीफोन की घंटी बजने से टेंगो की नींद खुल गई। घड़ी की चमकीली सुइयाँ एक बजने का समय बता रही थीं। ज़ाहिर है, उस समय सब कुछ घोर अंधेरे में डूबा होता था, और वह शुरू से ही जानता था कि कोमात्सु उसे ढूंढ रहा है। उसके जान-पहचान वालों में से सिर्फ़ कोमात्सु ही सुबह एक बजे फ़ोन कर सकता था। और सिर्फ़ वही इतना ज़िद कर सकता था। वह इतनी देर तक फ़ोन की घंटी बजाता रहता था कि बेचैनी से उठकर आखिरकार रिसीवर उठा ही लिया जाता था। कोमात्सु को "देर" का मतलब नहीं पता था। अगर उसके मन में कोई विचार आता, तो वह बिना समय सोचे तुरंत फ़ोन उठा लेता। चाहे आधी रात हो या सुबह, चाहे शादी की रात हो या मौत के बिस्तर पर, कोमात्सु को कोई फ़र्क नहीं पड़ता था। उसे यह ख्याल भी नहीं आता था कि वह किसी को परेशान कर रहा है।
टेंगो को यकीन था कि वह सबके साथ ऐसा बर्ताव नहीं करता था। आखिर कोमात्सु भी एक कर्मचारी था और उसे भी तनख्वाह मिलती थी। वह सबके साथ इतना रूखा और भेदभाव रहित बर्ताव नहीं कर सकता था। लेकिन टेंगो उसका सहकर्मी था, और इसीलिए वह उसके साथ ऐसा बर्ताव करता था। कोमात्सु के लिए, वह लगभग उसका ही एक हिस्सा था, जैसे उसके हाथ-पैर। वह खुद और दूसरे में कोई फर्क नहीं करता था। इसलिए, अगर वह जागा होता, तो उसे लगता कि दूसरा भी जागा होगा। अगर उसके पास कोई खास काम नहीं होता, तो टेंगो रात दस बजे सो जाता और सुबह छह बजे उठता। उसकी जिंदगी काफी नियमित थी। वह गहरी नींद सोता था, लेकिन अगर कोई बात उसे जगा देती, तो उसे दोबारा सोने में मुश्किल होती थी। वह इस बात को लेकर बहुत सचेत था और उसने कोमात्सु को कई बार चेतावनी दी थी। उसने उससे साफ-साफ कहा था कि वह उसे रात में फोन न करे, ठीक वैसे ही जैसे फसल कटाई की पूर्व संध्या पर टिड्डियों के झुंड से बचने के लिए किसान भगवान से प्रार्थना करता है। "मैं समझ गया। मैं अब रात में तुम्हें फोन नहीं करूंगा," कोमात्सु ने उसे आश्वासन दिया था। लेकिन यह वादा उसके मन में बैठा ही नहीं। पहली बारिश ने उसे तहस-नहस कर दिया और पानी उसे बहा ले गया।
टेंगो बिस्तर से उठा और अंधेरे में लड़खड़ाते हुए, रास्ते में आने वाली हर चीज़ से टकराता हुआ, रसोई तक पहुँचा जहाँ टेलीफोन था। पूरे रास्ते टेलीफोन लगातार बजता रहा।
कोमात्सु ने कहा, "मैंने फुकेरी से बात की।"
हमेशा की तरह, बिना अभिवादन या किसी परिचय के। बिना यह कहे कि "क्या आप सो रही थीं?" या "इस समय फोन करने के लिए क्षमा करें!" वाह! वह हमेशा उसे आश्चर्यचकित करने में कामयाब रहती थी।
अंधेरे में, टेंगो चुपचाप बैठा रहा, उसके चेहरे पर शिकन थी। आधी रात को अचानक नींद से जागने पर भी उसका दिमाग ठीक से काम नहीं कर रहा था।
— हेलो, क्या आप मुझे सुन पा रहे हैं?
- मैं तुम्हें सुनता हूं।

मैंने उससे बात की। फ़ोन पर, लेकिन हमने बात की। खैर, ज़्यादातर मैं ही था, वो बस सुनती रही। आम तौर पर बातचीत जैसी कोई बात नहीं थी। वो बहुत शांत स्वभाव की लड़की है। और जब वो बोलती है, तो अजीब तरह से बोलती है। जब तुम उसे सुनोगे, तब समझ जाओगे। तो, मैंने उसे मोटे तौर पर अपनी योजना बता दी। किसी से 'द क्राइसालिस ऑफ़ एयर' को दोबारा लिखवाना और इस तरह बेहतर उपन्यास के साथ साहित्यिक नवोदित पुरस्कार के लिए प्रयास करना। फ़ोन पर होने के कारण मैं उसे ज़्यादा जानकारी नहीं दे सका। मैंने उससे पूछा कि क्या वो मिलना चाहेगी, ताकि हम ठोस बातों पर चर्चा कर सकें। मैंने यथासंभव अप्रत्यक्ष रहने की कोशिश की। अगर मैं उसे सब कुछ साफ़-साफ़ बता देता, तो मैं खुद को एक नाज़ुक स्थिति में डाल सकता था।
- और?
उन्होंने मुझे कोई जवाब नहीं दिया।
"कोई जवाब नहीं?"
कोमात्सु कुछ देर रुका। उसने एक सिगरेट निकाली और माचिस से जला ली। रिसीवर से आ रही आवाज़ों से टेंगो सिर्फ़ उस दृश्य की कल्पना ही कर सकता था। कोमात्सु लाइटर का इस्तेमाल नहीं करता था।
कोमात्सु ने सिगरेट का धुआँ उड़ाते हुए कहा, "फुकेरी पहले आपसे मिलना चाहती है। उसने यह नहीं बताया कि उसे दिलचस्पी है या नहीं, या वह चाहती है कि हम यह करें या नहीं। अभी के लिए, यह ज़रूरी है कि वह आपको जान ले, आप दोनों बात करें। लगता है कि वह आपसे मिलने के बाद ही जवाब देगी। यह आपके लिए एक बड़ी ज़िम्मेदारी है, है ना?"
— ठीक है, अब आगे क्या?
क्या आप कल रात खाली हैं?
प्रारंभिक विद्यालय की कक्षाएं सुबह जल्दी शुरू होती थीं और दोपहर चार बजे समाप्त होती थीं। चाहे अच्छा हो या बुरा, उनके पास शाम को करने के लिए कोई अन्य कार्यक्रम नहीं थे।
"हां, मैं खाली हूं," टेंगो ने जवाब दिया।
शाम छह बजे, शिंजुकु में नाकामुराया रेस्तरां में जाइए। मेरे नाम से आपके लिए एक टेबल आरक्षित है, पीछे की तरफ, इसलिए वहाँ शांति रहेगी। आप जो चाहें खा-पी सकते हैं, बिल मेरी कंपनी चुकाएगी। आराम से बैठिए और बातें कीजिए।
"क्या इसका मतलब है कि तुम नहीं आ रहे हो?"
"फुकेरी की शर्त यह थी कि आप दोनों इस पर निजी तौर पर चर्चा करें। फिलहाल उनसे मिलने का उनका कोई कारण नजर नहीं आता।"
टेंगो चुप रहा।
“बस यही बात है,” कोमात्सु ने खुशी से कहा। “मुझे उम्मीद है कि तुम अच्छा करोगे। तुम भले ही भालू जितने बड़े हो, लेकिन लोगों पर तुम्हारी छाप अच्छी पड़ती है। और तो और, तुम एक शिक्षक हो, इसलिए तुम्हें होशियार हाई स्कूल के छात्रों से बात करने की आदत तो होगी ही। इस स्थिति के लिए तुम मुझसे कहीं ज़्यादा उपयुक्त हो। मुस्कुराते रहो और विश्वास दिलाते हुए उसका भरोसा जीत लो। मैं तुम्हारे लिए अच्छी खबर लेकर इंतज़ार करूँगा!”
"एक मिनट रुको! यह तो हमारी पिछली बातचीत से बिलकुल अलग है! मैंने अभी तक तुम्हें कोई जवाब नहीं दिया है! मैंने पिछली बार भी कहा था कि यह मुझे एक

जोखिम भरा प्लान लगता है और मुझे नहीं पता कि सब कुछ इतनी आसानी से हो पाएगा। हम मुसीबत में पड़ सकते हैं। मैंने अभी तक तय नहीं किया है कि मैं मानूँ या नहीं, और तुम मुझे एक ऐसी लड़की को मनाने के लिए भेज रहे हो जिसे मैंने कभी देखा तक नहीं है। मैं यह नहीं कर सकता!"
कोमात्सु कुछ देर चुप रहा, फिर बोला:
"टेंगो, यह मामला तो हद से ज़्यादा बिगड़ चुका है। अब तुम ट्रेन रोककर उतर नहीं सकते। मैं तो दृढ़ निश्चयी हूँ, और मुझे लगता है कि तुम भी आधे से ज़्यादा मान चुके हो। जैसा कि कहते हैं, हम दोनों एक ही नाव में सवार हैं।" टेंगो ने सिर हिलाया। क्या हम भी उसी नाव में हैं? क्या तुम उनकी आवाज़ सुन रहे हो! आखिर कब से हालात इतने गंभीर हो गए?
"लेकिन क्या आपने मुझे थोड़ी देर बैठकर सोचने के लिए नहीं कहा था?"
"तब से पांच दिन बीत चुके हैं। आपने क्या फैसला लिया है?"
टेंगो अवाक रह गया।
उन्होंने ईमानदारी से कहा, "मैं अभी तक किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा हूं।" "अच्छा, तो कम से कम आप फुकेरी से मिल कर बात कर सकते हैं। आप बाद में फैसला ले सकते हैं।"
टेंगो ने अपनी तर्जनी उंगली को अपनी कनपटी पर जोर से दबाया। उसका दिमाग अभी भी ठीक से काम नहीं कर रहा था।
"मैं समझता हूँ। खैर, मैं फुकाएरी से मिल रहा हूँ। कल शाम छह बजे शिंजुकु के नाकामुराया में। मैं उसे मोटे तौर पर स्थिति समझा दूँगा। लेकिन मैं इससे ज़्यादा कुछ वादा नहीं करूँगा। मैं समझाऊँगा, लेकिन मुझे नहीं पता कि मैं उसे मना पाऊँगा या नहीं।"
"बिल्कुल। इतना काफी है।"
"लेकिन वह मेरे बारे में क्या जानती है?"
मैंने उसे आपके बारे में कुछ सामान्य बातें बताईं। जैसे कि आपकी उम्र उनतीस-तीस साल है, आप अविवाहित हैं, और आप योयोगी के एक प्रारंभिक विद्यालय में गणित पढ़ाते हैं। आप काफी प्रभावशाली हैं, लेकिन बुरे इंसान नहीं हैं। आप युवा लड़कियों का शोषण नहीं करते। आप सादगी भरा जीवन जीते हैं और आपका चेहरा सौम्य है। मुझे आपका लेखन बहुत पसंद है। बस यही सब मैंने उसे बताया।
टेंगो ने आह भरी। उसने अपने विचारों को समेटने की व्यर्थ कोशिश की, वास्तविकता उसके हाथों से ठीक उसी क्षण फिसल गई जब उसे लगा कि वह उसे पकड़ने के लिए तैयार है।
"कोमात्सु-सान, क्या मैं वापस बिस्तर पर जा सकती हूँ? डेढ़ बजने ही वाला है और सूरज निकलने से पहले मुझे थोड़ी नींद लेनी है। कल सुबह मेरी तीन कक्षाएं हैं।"
"ज़रूर। शुभ रात्रि!" कोमात्सु ने कहा। मीठे सपने! फिर उसने फोन काट दिया। टेंगो कुछ पल तक रिसीवर हाथ में लिए वहीं खड़ा रहा, उसे देखता रहा। फिर उसने फोन रख दिया। अगर उसे नींद आ सकती थी, तो वह जितनी जल्दी हो सके सोना चाहता था। अगर उसे अच्छे सपने आ जाएं, तो और भी अच्छा। लेकिन इस समय जबरदस्ती जगाए जाने और इतनी अप्रिय कहानी सुनने के बाद, वह जानता था कि उसे आसानी से नींद नहीं आएगी। एक विकल्प यह था कि वह कुछ पी ले जिससे नींद आ जाए, लेकिन उसे शराब पीने का मन नहीं था। आखिरकार, उसने एक गिलास पानी पिया, वापस बिस्तर पर गया, लाइट

जलाई और पढ़ना शुरू कर दिया। उसका इरादा तब तक पढ़ने का था जब तक उसे नींद न आ जाए, लेकिन उसे नींद तभी आई जब सुबह होने लगी थी।
*

प्रारंभिक विद्यालय में अपनी तीन कक्षाएं पूरी करने के बाद, टेंगो ट्रेन में सवार होकर शिंजुकु के लिए रवाना हो गया। उसने किनोकुनिया किताबों की दुकान से कुछ किताबें खरीदीं और फिर नाकामुराया कैफे चला गया। प्रवेश द्वार पर उसने कोमात्सु का नाम लिया और उसे कैफे के पिछले हिस्से में एक शांत मेज पर बैठा दिया गया। फुकाएरी अभी तक नहीं आई थी। टेंगो ने वेटर से कहा कि वह उसके आने तक इंतजार करेगा। वेटर ने उससे पूछा कि क्या वह इस बीच कुछ पीना चाहेगा। "नहीं, कुछ नहीं," टेंगो ने जवाब दिया। वेटर उसके लिए मेनू और एक गिलास पानी लाया और फिर चला गया। टेंगो ने अभी खरीदी हुई किताबों में से एक खोली और पढ़ना शुरू कर दिया। यह मंत्रों और ताबीजों के बारे में एक किताब थी। इसमें जापानी समाज में उनके कार्य पर चर्चा की गई थी। प्राचीन काल में, ताबीजों ने समुदाय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका कार्य सामाजिक व्यवस्था को पूर्ण करना और उसकी कमियों और विरोधाभासों को दूर करना था। क्या रोचक समय था!
सवा छह बज चुके थे, फुकाएरी अभी तक नहीं आई थी। लेकिन तेंगो बिना किसी चिंता के पढ़ता रहा। उसे मीटिंग में देर होने पर ज़्यादा हैरानी नहीं हुई। वैसे भी पूरी कहानी बेतुकी थी, तो अगर वो और भी बेतुकी हो जाती तो भला कौन शिकायत करता? असल में, अगर फुकाएरी अपना इरादा बदल लेती और आती ही नहीं तो भी कोई हैरानी नहीं होती। वो तो चाहता कि वो आती ही नहीं। इससे सब कुछ आसान हो जाता। वो कोमात्सु को बताता कि उसने फुकाएरी का एक घंटे इंतज़ार किया, लेकिन वो नहीं आई। आगे क्या होता, उसे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। वो अकेले ही अपना लंच करता और फिर घर चला जाता। इससे कोमात्सु के प्रति उसका फर्ज़ पूरा हो जाता। फुकाएरी छह बजकर बाईस मिनट पर आई। वेटर उसे मेज तक ले गया और वह तेंगो के सामने बैठ गई। उसने अपने छोटे हाथ मेज पर रखे और अपना कोट उतारे बिना ही सीधे उसकी ओर देखने लगी। उसने न तो "मुझे देर हो गई, माफ़ करना" कहा, न ही "उम्मीद है आपको ज़्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ा होगा।" यहाँ तक कि उसने "हैलो" भी नहीं कहा। अपने होंठ कसकर दबाए हुए, उसने तेंगो की आँखों में सीधे देखा। ऐसा लग रहा था जैसे वह दूर से किसी ऐसी चीज़ को देख रही हो जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था। खैर, जो होगा देखा जाएगा! तेंगो ने सोचा।
फुकाएरी कद में छोटी थी और तस्वीरों में जितनी खूबसूरत दिखी थी, उससे कहीं ज़्यादा सुंदर थी। उसकी आँखें देखते ही आपका ध्यान खींच लेती थीं। गहरी, प्रभावशाली आँखें। उन नम, काली आँखों की निगाहों के नीचे तेंगो बेचैनी से हिलने लगा। लड़की ने पलकें भी नहीं झपकाईं। मानो साँस ही नहीं ले रही हो। उसके बाल इतने सीधे थे कि देखकर लगता था जैसे किसी ने हर एक लट को स्केल से खींचा हो। उसकी भौहों का आकार उसके बालों के स्टाइल से मेल खाता था। कई खूबसूरत युवतियों की तरह, उसके चेहरे पर जीवन की कोई झलक नहीं थी। लेकिन उसके अंदर एक नाजुक संतुलन था, जो कभी भी बिगड़ सकता था। शायद इसलिए कि उसकी पुतलियाँ आपको एक अलग ही तीव्रता से देख रही थीं, जिससे आपको बेचैनी महसूस हो रही थी। आप अंदाज़ा नहीं लगा सकते थे कि वह क्या सोच रही है। उसकी सुंदरता किसी संगीत स्टार या मैगज़ीन मॉडल जैसी नहीं थी। लेकिन उसमें कुछ ऐसा उत्तेजक था जो आपको आकर्षित करता था।

टेंगो ने किताब बंद की और उसे मेज पर रख दिया। फिर उसने अपनी पीठ सीधी की, शरीर को तरोताज़ा किया और पानी का एक घूंट पिया। कोमात्सु सही कह रही थी। अगर उस जैसी लड़की ने साहित्यिक पुरस्कार जीता होता, तो प्रेस उसके पीछे टूट पड़ती। ज़रूर कुछ हंगामा होता। लेकिन क्या वह बस इतना ही करके बच निकलती?
वेटर आया और उसके सामने मेनू और एक गिलास पानी रख दिया। फुकाएरी फिर भी टस से मस नहीं हुआ। वह तेंगो को देखता रहा और उसने मेनू को छुआ तक नहीं। कुछ और करने को न होने पर तेंगो ने कहा:
- नमस्ते।
उसके सामने वह खुद को एक विशालकाय व्यक्ति के रूप में महसूस करता था।
फुकेरी ने अभिवादन का जवाब नहीं दिया, बल्कि उसे घूरती रही।
"मैं तुम्हें जानती हूँ," उसने अंत में धीमी आवाज़ में कहा।
“क्या तुम मुझे जानते हो?” उसने पूछा।
आप गणित पढ़ाते हैं।
मैं सहमत हूं:
- यह सही है।
मैं दो बार जा चुका हूँ।
"मेरी कक्षाओं में?"
- हाँ।
उसके बोलने के तरीके में कुछ विचित्र विशेषताएँ थीं। उसमें किसी भी प्रकार का स्वर-लहर नहीं था और वह अपने शब्दों को सरल रखती थी, बिना किसी अलंकरण के – ऐसा लगता था जैसे वह विशेषणों का प्रयोग ही नहीं करती थी। इसके अलावा, उसकी शब्दावली बहुत सीमित थी (या कम से कम ऐसा ही प्रतीत होता था)। वह सनकी थी, जैसा कि कोमात्सु ने कहा था।
"क्या मतलब, तुम उसी तैयारी स्कूल में हो जहाँ मैं पढ़ाता हूँ?" टेंगो ने पूछा।
फुकेरी ने अपना सिर हिलाया।
मैं तो बस सुनने आया था।
लेकिन मुझे नहीं लगता कि आप छात्र पहचान पत्र के बिना कक्षा में प्रवेश कर सकते हैं।
उसकी प्रतिक्रिया में उसने हल्के से कंधे उचका दिए। "तुम एक समझदार आदमी हो और इस तरह की बकवास बातें कर रहे हो," उसने उसे फटकार लगाते हुए कहा।
“और क्लास कैसी रही?” टेंगो ने पूछा। एक और निरर्थक सवाल।
फुकाएरी ने उससे नज़रें हटाए बिना पानी का एक घूंट पिया। उसने कोई जवाब नहीं दिया। लेकिन तेंगो को शक था कि उसने बुरा प्रभाव नहीं डाला होगा, क्योंकि वह दूसरी बार आई थी। अगर उसे दिलचस्पी नहीं होती, तो वह पहली बार में ही हार मान लेती।
“तुम बारहवीं कक्षा में हो, है ना?” टेंगो ने पूछा।
— फिलहाल के लिए।
और आप कॉलेज जा रहे हैं?
लड़की ने सिर हिलाया, लेकिन टेंगो समझ नहीं पाया कि उसके इशारे का मतलब था कि वह अनुमति नहीं दे रही है या फिर वह इस बारे में बात नहीं करना चाहती। उसे याद आया कि कोमात्सु ने फोन पर उसे चेतावनी दी थी कि वह बहुत शांत स्वभाव की है।

वेटर उनका ऑर्डर लेने आया और फुकेरी ने ब्रेड और सलाद मांगा। उसने अभी भी अपना कोट पहना हुआ था।
"बस यही है," उसने वेटर को मेनू देते हुए कहा। फिर, मानो अचानक उसे यह विचार आया हो, उसने आगे कहा, "और सफेद वाइन।"
युवा वेटर शराब पीने की उम्र के बारे में कुछ कहने ही वाला था कि लड़की की निगाह पड़ते ही वह शर्म से लाल हो गया और अपने शब्द निगल गया। खैर, जो होगा देखा जाएगा! तेंगो ने फिर सोचा। उसने सीफूड लिंगुइन का ऑर्डर दिया और फुकाएरी की तरह सफेद वाइन का एक गिलास भी मंगवाया।
"आप एक शिक्षक हैं, लेकिन आप उपन्यास भी लिखते हैं," फुकेरी ने कहा।
लेकिन यह एक सवाल था। उसके बोलने के तरीके की एक खासियत यह थी कि वह सही स्वर-लहर के बिना सवाल पूछती थी।
"अभी तो हां," टेंगो ने कहा।
— तुम भी कुछ नहीं दिखाते।
"शायद," उन्होंने कहा और मुस्कुराने की कोशिश की, लेकिन मुस्कुरा नहीं पाए।
"मैं योग्य हूं और एक प्रारंभिक विद्यालय में पढ़ाता हूं, लेकिन मैं आधिकारिक तौर पर खुद को शिक्षक नहीं कह सकता। फिर, हालांकि मैं उपन्यास लिखता हूं, लेकिन अभी तक कोई भी प्रकाशित नहीं हुआ है, इसलिए मैं उपन्यासकार नहीं हूं।"
- आप कुछ भी नहीं।
मैं सहमत हूं।
"बिल्कुल सही। अब मैं कुछ भी नहीं हूँ।"
आपको गणित पसंद है।
टेंगो समझ गया कि भले ही शब्दों में स्वर का अभाव था, फिर भी यह एक प्रश्न था।
उसने उसके शब्दों में उचित स्वर जोड़ा और प्रश्न का उत्तर दिया:
मुझे यह पसंद है। मुझे यह लंबे समय से पसंद है और अब भी पसंद है।
- क्या वास्तव में?
"मुझे गणित में क्या पसंद है?" टेंगो ने सवाल को दोबारा पूछा। "दरअसल, जब मैं संख्याओं के सामने होता हूँ तो मैं शांत हो जाता हूँ। सब कुछ अपने आप ठीक हो जाता है।"
— समाकलन रोचक थे।
"मेरी कक्षा में?"
फुकेरी ने सिर हिलाया।
क्या आपको गणित पसंद है?
फुकेरी ने संक्षेप में अपना सिर हिलाया। उसे यह पसंद नहीं आया।
“लेकिन क्या आपको समाकलन दिलचस्प लगे?” टेंगो ने पूछा।
फुकेरी ने फिर से कंधे उचका दिए।
आपने उन्हें बहुत महत्वपूर्ण बताया था।
“ओह, सच में?” टेंगो ने कहा। इससे पहले किसी ने उससे ऐसा नहीं कहा था।
"ऐसा लगता है कि आप किसी व्यक्तित्व के बारे में बात कर रहे थे," फुकेरी ने कहा।
"जब मैं तार वाद्ययंत्र सिखाता हूँ, तो शायद मैं और भी उत्साहित हो जाता हूँ," टेंगो ने कहा। "हाई स्कूल के पाठ्यक्रम में, तार वाद्ययंत्र ही मुझे सबसे ज्यादा पसंद हैं।"

"क्या तुम्हें तार पसंद हैं?" फुकेरी ने सपाट लहजे में पूछा।
"मेरे लिए वे बाख के वेल-टेम्पर्ड क्लैवियर की तरह हैं। मैं उनसे कभी ऊब नहीं सकता। वे हमेशा एक नया अनुभव होते हैं।"
— मैं वेल-टेम्पर्ड क्लैवियर को जानता हूँ।
क्या आपको बाख पसंद है?
फुकेरी ने सिर हिलाया।
शिक्षक हमेशा ध्यान से सुनते हैं।
"शिक्षक?" टेंगो ने पूछा। "स्कूल में आप?"
फुकाएरी ने कोई जवाब नहीं दिया। तेंगो ने उसके चेहरे पर एक ऐसा भाव देखा जिससे पता चलता था कि इस तरह की बात पर चर्चा करना अभी जल्दबाजी होगी।
फिर, मानो उसे अचानक एहसास हुआ हो कि उसने अभी भी कपड़े पहने हुए हैं, फुकाएरी ने पतंगे की तरह अपने कोकून से बाहर निकलते हुए अपना कोट उतारने के लिए छटपटाना शुरू कर दिया। उसने उसे बिना मोड़े ही बगल वाली सीट पर फेंक दिया। उसके नीचे उसने एक पतला हल्का हरा स्वेटर और सफेद जींस पहनी हुई थी। उसने कोई गहने या मेकअप नहीं किया था। फिर भी, आपकी नज़र उस पर तुरंत पड़ गई। जानबूझकर या अनजाने में, आपकी निगाहें उसके सुडौल शरीर के विपरीत, उसकी खूबसूरती और सुडौल स्तनों पर टिक गईं। तेंगो को खुद को रोकना पड़ा ताकि वह उन्हें न देखे। लेकिन तमाम कोशिशों के बावजूद, उसकी नज़रें बार-बार उस लड़की के स्तनों पर जा रही थीं, मानो किसी भंवर में खिंची जा रही हों।
उनके लिए शराब परोसी गई। फुकाएरी ने एक घूंट लिया। उसने गिलास को ध्यान से देखा, फिर उसे वापस मेज पर रख दिया। तेंगो ने गिलास को मुश्किल से छुआ। उसके सामने एक महत्वपूर्ण चर्चा थी।
एक मनमोहक अंदाज़ में, फुकाएरी ने अपने बालों को संवारने के लिए उनमें हाथ फेरा। उसकी उंगलियां बेहद खूबसूरत थीं। हर उंगली में मानो एक अलग ही व्यक्तित्व झलक रहा था। उनमें कुछ जादुई सा एहसास होता था।
"मुझे गणित में क्या पसंद है?" टेंगो ने अपनी उंगलियों और छाती से ध्यान हटाने के लिए खुद से फिर पूछा। गणित पानी के बहाव जैसा है। बेशक, इसमें कुछ जटिल सिद्धांत हैं, लेकिन मूल तर्क बहुत सरल है। जैसे पानी हमेशा ऊपर से नीचे की ओर, सबसे छोटा रास्ता अपनाते हुए बहता है, वैसे ही संख्याएँ भी एक ही दिशा में बहती हैं। अगर आप धैर्य से देखें, तो आप उनका रास्ता देख सकते हैं। आपको और कुछ करने की ज़रूरत नहीं है, बस धैर्य से उन्हें देखते रहिए। अगर आप अपना ध्यान केंद्रित करें और अपनी नज़र उन पर टिकाएँ, तो वे अपने आप स्पष्ट हो जाती हैं। इस विशाल संसार में, संख्याओं से बढ़कर कोई भी मेरे लिए इतना अच्छा नहीं है।
फुकेरी ने कुछ देर तक उसकी बातों पर विचार किया।
"आप उपन्यास क्यों लिखते हैं?" उसने सपाट लहजे में पूछा।
टेंगो ने अपने प्रश्न को एक लंबे वाक्य में बदल दिया:
"अगर मुझे संख्याएँ इतनी पसंद हैं, तो मैं उपन्यास लिखने की जहमत क्यों उठाता हूँ? क्या मेरे लिए गणित ही काफी नहीं है? क्या आप मुझसे यही पूछ रहे हैं?" फुकेरी ने सिर हिलाया।
हां। असल ज़िंदगी और गणित दो अलग-अलग चीज़ें हैं। चीज़ें हमेशा सीधे रास्ते से नहीं चलतीं। मेरे लिए गणित, मैं कैसे कहूँ, बेहद स्वाभाविक है। यह एक

खूबसूरत नज़ारे की तरह है। यह बस मौजूद है। आपको कुछ भी बदलने की ज़रूरत नहीं है। इसीलिए जब मैं संख्याओं के बीच होता हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं पारदर्शी हो गया हूँ। कभी-कभी इससे मुझे डर भी लगता है।
फुकेरी ने बिना नज़र हटाए सीधे उसकी आँखों में देखा। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी घर में झाँक रही हो, उसका चेहरा खिड़की से सटा हुआ हो।
टेंगो आगे कहते हैं:
जब मैं लिखता हूँ, तो मैं शब्दों का उपयोग करके अपने आस-पास के परिदृश्य को कुछ ऐसा रूप देता हूँ जो मुझे अधिक स्वाभाविक लगता है। मैं उसे पुनर्निर्मित करता हूँ। इस तरह, मैं यह सुनिश्चित करता हूँ कि एक मनुष्य के रूप में मेरा वास्तविक अस्तित्व है। यह गणित की दुनिया से बिल्कुल अलग गतिविधि है।
"यह सुनिश्चित करो कि तुम्हारा अस्तित्व वास्तव में है," फुकेरी ने कहा। "मैं यह तो नहीं कह सकती कि मेरी हालत बहुत अच्छी है," टेंगो ने कहा। फुकाएरी टेंगो के स्पष्टीकरण से संतुष्ट नहीं दिखीं, लेकिन उन्होंने और कुछ नहीं कहा। उन्होंने शराब का गिलास होठों तक उठाया और बिना किसी आवाज के एक घूंट पी लिया, मानो वह स्ट्रॉ से पी रही हों।
"मेरी राय यह है कि अंततः आप वही काम करते हैं। आप अपने देखे हुए दृश्य को शब्दों में ढालकर उसका पुनर्निर्माण करते हैं। आप एक व्यक्ति के रूप में वास्तविकता में अपनी स्थिति के बारे में खुद को आश्वस्त करते हैं," टेंगो ने कहा।
फुकेरी हाथ में शराब का गिलास लिए वहीं खड़ी थी और उसके कहे शब्दों के बारे में सोच रही थी। लेकिन इस बार वह भी उसकी राय से सहमत नहीं थी।
और इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप एक रूप बनता है। किताब। और अगर पर्याप्त लोग इससे जुड़ाव महसूस करते हैं और इसे अपने दिल से मानते हैं, तो इसका मतलब है कि यह एक मूल्यवान साहित्यिक कृति है।
फुकेरी ने दृढ़ता से अपना सिर हिलाया।
मुझे आकार से कोई फर्क नहीं पड़ता।
"तुम्हें रूप की परवाह नहीं है," टेंगो ने दोहराया।
इस रूप का कोई अर्थ नहीं है।
तो फिर आपने लिखा क्यों और साहित्यिक प्रतियोगिता के लिए आवेदन क्यों किया? फुकेरी ने शराब का गिलास वापस मेज पर रख दिया।
- मुझे नहीं।
खुद को शांत करने के लिए, टेंगो ने पानी का गिलास उठाया और एक घूंट पिया।
— आपका मतलब है कि आपने प्रतियोगिता में भाग नहीं लिया?
"मैंने इसे नहीं भेजा," फुकेरी ने सहमति जताई।
"तो फिर आपकी पांडुलिपि प्रकाशक को किसने भेजी?"
फुकेरी ने हल्के से कंधे उचकाए, फिर लगभग पंद्रह सेकंड तक चुप रही।
अंत में उसने कहा, "कोई तो होगा।"
"कोई है," टेंगो ने दोहराया। फिर उसने होंठ सिकोड़कर एक लंबी साँस ली। "ओह, ओह, चीजें इतनी आसानी से नहीं हो रही हैं। जैसा मैंने सोचा था।"
*

अब तक, टेंगो के प्रीप स्कूल की कुछ लड़कियों के साथ संबंध रहे थे। लेकिन ये संबंध तब बने जब वे स्नातक होकर कॉलेज चली गई थीं। उन्हीं लड़कियों ने उससे

संपर्क किया था और मिलना चाहा था। वे एक-दूसरे से मिली थीं, बातें की थीं और साथ में बाहर घूमने गई थीं। टेंगो को समझ नहीं आ रहा था कि उनमें ऐसी क्या बात थी जो उन्हें उसकी ओर आकर्षित करती थी। लेकिन वह अविवाहित था, और वे लड़कियां अब उसकी छात्राएं नहीं थीं, इसलिए उसके पास डेट को ठुकराने का कोई कारण नहीं था।
दो मौकों पर, ये मुलाक़ातें यौन संबंध में बदल गई थीं। लेकिन वे ज़्यादा देर तक नहीं चलीं, बल्कि स्वाभाविक रूप से और बिना किसी को पता चले टूट गईं। कॉलेज में अभी-अभी दाखिला लेने वाली एक चंचल युवती के साथ टेंगो सहज महसूस नहीं कर रहा था। उसे घर जैसा महसूस नहीं हो रहा था। जैसे किसी बहुत चंचल बिल्ली के बच्चे के साथ खेलना, शुरू में तो यह एक ताज़ा और दिलचस्प अनुभव लगता था, लेकिन धीरे-धीरे वह इससे ऊब गया। फिर लड़कियों को भी पता चला कि वह वास्तव में उस गणित पढ़ाने वाले शिक्षक से अलग था जिसे वे जानती थीं और वे कुछ हद तक निराश हुईं। टेंगो उनकी भावनाओं को समझता था।
बड़ी उम्र की महिला की मौजूदगी में वह ज़्यादा सहज महसूस करता था। चाहे वह कुछ भी करे, उसे ज़िम्मेदारी लेने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी, और इससे उसके कंधों से बोझ हल्का हो जाता था। इसके अलावा, उससे बड़ी उम्र की कई महिलाएं उसे पसंद करती थीं। एक साल से उसका अपने से दस साल बड़ी एक शादीशुदा महिला के साथ रिश्ता था। इसीलिए उसने जवान लड़कियों से डेटिंग करना पूरी तरह छोड़ दिया था। हफ्ते में एक बार उसकी प्रेमिका उसके अपार्टमेंट में आती और उसकी स्त्रीत्व की इच्छा (या ज़रूरत) को पूरा करती। उसके बाद, अपने कमरे में बंद होकर वह लिखता, पढ़ता, संगीत सुनता। कभी-कभी वह पास के स्विमिंग पूल में तैरने चला जाता। वह अपने सहपाठियों से बस कुछ ही शब्द बोलता था और इसके अलावा किसी और से बात नहीं करता था। लेकिन वह अपने जीवन से बिल्कुल भी असंतुष्ट नहीं था। बल्कि, वह अपने आदर्श जीवन के करीब पहुँच रहा था।
लेकिन जब उसने फुकेरी को देखा, तो उसकी आत्मा में एक तीव्र हलचल मच गई। ठीक वैसा ही जैसा उसने तस्वीरों में उसे देखकर महसूस किया था, बस फर्क इतना था कि आमने-सामने होने पर यह हलचल कहीं ज़्यादा प्रबल थी। यह न तो प्रेम था और न ही यौन इच्छा। बल्कि, कुछ ऐसा था जो एक संकरे रास्ते से निकलकर उसके भीतर के खालीपन को भरने आ रहा था। यही उसकी अनुभूति थी। यह खालीपन फुकेरी के कारण नहीं बना था, बल्कि वह हमेशा से उसके भीतर मौजूद था। फुकेरी बस उसे फिर से बाहर ला रही थी, उस पर एक विशेष प्रकाश डाल रही थी।
*

"आपको लेखन में कोई दिलचस्पी नहीं है, और आपने प्रतियोगिता के लिए अपनी पांडुलिपि भी जमा नहीं की," टेंगो ने पुष्टि की।
फुकेरी ने सिर हिलाया, लेकिन अपनी नज़रें उससे हटाए बिना। फिर उसने कंधे उचकाए, मानो वह ठंडी हवा से बचने की कोशिश कर रही हो।
“तुम लेखिका नहीं बनना चाहती।” टेंगो अपने ही प्रश्न में स्वरहीनता देखकर आश्चर्यचकित रह गया। निश्चित रूप से उसके बोलने का तरीका संक्रामक था।
"मैं ऐसा नहीं करना चाहती," फुकेरी ने कहा।
उसी क्षण उनका खाना लाया गया। उसे सलाद का एक बड़ा कटोरा और साथ में ब्रेड रोल दिए गए। टेंगो के लिए सीफूड लिंगुइन पास्ता था। फुकेरी ने कांटे से सलाद के पत्ते को कई बार इधर-उधर पलटा, मानो वह अखबार की कोई हेडलाइन पढ़ रहा हो।

लेकिन खैर, किसी ने आपकी पांडुलिपि, 'द एयर क्राइसालिस', संपादक को भेजी, और मैंने इसे पढ़ा और इसने मेरा ध्यान आकर्षित किया।
"हवा का कोकून," फुकेरी ने आंखें सिकोड़ते हुए कहा।
“यही तो तुम्हारी लिखी किताब का शीर्षक है!” टेंगो ने कहा।
फुकेरी ने कोई जवाब नहीं दिया, उसकी आंखें अभी भी सिकुड़ी हुई थीं।
“क्या आपने उसे वह उपाधि नहीं दी थी?” टेंगो ने चिंता से पूछा।
फुकेरी ने धीरे से अपना सिर हिलाया।
टेंगो फिर से असमंजस में पड़ गया। उसने फिलहाल शीर्षक के बारे में और कुछ न पूछने का फैसला किया। उसे चर्चा को आगे बढ़ाना था।
इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वैसे भी, शीर्षक बुरा नहीं है। यह माहौल बनाता है और ध्यान आकर्षित करता है। यह आपको सोचने पर मजबूर करता है कि कहानी किस बारे में है। चाहे इसका नाम किसी ने भी रखा हो, मुझे इससे कोई शिकायत नहीं है। मुझे प्यूपा और कोकून में अंतर नहीं पता, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं कहना चाहता हूँ कि मुझे आपका काम बहुत पसंद आया। मैंने इसे कोमात्सु-सान को दिखाया और उन्हें भी यह पसंद आया। लेकिन उनका मानना है कि अगर आप साहित्यिक पदार्पण पुरस्कार के लिए गंभीर हैं, तो आपको शैली बदलनी होगी। कहानी सशक्त है, लेकिन इसके विपरीत, वाक्य कमज़ोर हैं। वे इसे दोबारा लिखवाना चाहते हैं, लेकिन आपके द्वारा नहीं, बल्कि मेरे द्वारा। मैंने अभी तक इस बारे में कोई फैसला नहीं किया है। मैंने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया है। मुझे नहीं पता कि यह सही होगा या नहीं।
टेंगो फुकेरी की प्रतिक्रिया देखने के लिए रुका। कोई प्रतिक्रिया नहीं।
"अब मैं यह जानना चाहता हूँ कि अगर मैं आपकी जगह 'द एयर क्राइसालिस' को दोबारा लिखूँ तो आप क्या सोचेंगे। क्योंकि चाहे मैं कितना भी दृढ़ निश्चयी क्यों न हो जाऊँ, अगर आप सहमत नहीं होंगे तो मैं कुछ भी नहीं कर पाऊँगा।"
फुकेरी ने एक चेरी टमाटर उठाया और उसे अपने मुंह के पास ले गया। टेंगो ने एक क्लैम उठाया और उसे खा लिया।
"तुम कर सकते हो," फुकेरी ने सरल शब्दों में कहा।
फिर उसने एक और टमाटर लिया।
आप इसे अपनी इच्छानुसार ठीक कर सकते हैं।
"क्या इस पर थोड़ा सोच-विचार करना, थोड़ा और इंतजार करना बेहतर नहीं होगा? यह काफी महत्वपूर्ण मामला है," टेंगो ने कहा।
फुकेरी ने सिर हिलाया। कोई ज़रूरत नहीं।
“अगर मैं तुम्हारी किताब दोबारा लिखूँ,” उसने समझाया, “तो मैं कहानी को बदले बिना, सिर्फ़ वाक्यों को बेहतर बनाऊँगा। शायद काफ़ी कुछ बदल दूँ। लेकिन तुम ही लेखिका रहोगी। यह फुकाएरी नाम की सत्रह साल की लड़की की लिखी किताब होगी। इसमें कोई बदलाव नहीं होगा। अगर यह पुरस्कार जीतती है, तो तुम अकेले ही इनाम पाओगी। अगर यह प्रकाशित होती है, तो तुम ही लेखिका रहोगी। हम दोनों, कोमात्सु- सान, एक टीम बनाएँगे। लेकिन कवर पर सिर्फ़ तुम्हारा नाम होगा। हम दोनों पर्दे के पीछे ही रहेंगे। जैसे किसी नाटक में। क्या तुम समझ रही हो मेरा मतलब?” फुकेरी ने अजवाइन का एक टुकड़ा अपने मुंह में डाला। उसने हल्का सा सिर हिलाया।
- मैं समझता हूँ।

एयर क्राइसालिस आपकी कहानी है, और सिर्फ आपकी। यह आपकी ही रचना है। मैं इसे अपना नहीं बनाना चाहता। मैं सिर्फ तकनीकी पहलुओं में आपकी मदद कर रहा हूँ।
लेकिन आपको यह बात पूरी तरह गुप्त रखनी होगी कि मैं आपकी मदद कर रहा हूँ। वरना हम दुनिया से झूठ बोलकर उसमें भागीदार बन जाएँगे। आप चाहे जैसे भी देखें, इस तरह के रहस्य को अपने तक रखना आसान नहीं है।
"अगर आप ऐसा कहते हैं," फुकेरी ने कहा।
टेंगो ने सीप के खोल को अपनी प्लेट के किनारे पर धकेल दिया और पास्ता खाने लगा, लेकिन फिर उसने अपना इरादा बदल दिया। फुकेरी ने एक खीरा उठाया और उसे ध्यान से चबाया, मानो वह कोई नई चीज़ हो। अपने हाथ में कांटा लिए हुए टेंगो ने कहा,
— मैं आपसे फिर पूछता हूँ, अगर मैं आपके द्वारा लिखी गई कहानी को दोबारा लिखूँ तो क्या आपको कोई आपत्ति है?
खीरा खाने के बाद फुकेरी ने कहा, "जैसा चाहो वैसा करो।"
मैं इसे फिर भी दोबारा लिख दूंगा, आपको कोई आपत्ति तो नहीं है?
- मुझे कोई आपत्ति नहीं है।
"लेकिन आप इस पर कैसे विश्वास कर सकते हैं? आप मेरे बारे में कुछ नहीं जानते!" फुकेरी ने बिना कुछ कहे कंधे उचका दिए।
वे कुछ देर तक चुपचाप खाते रहे। फुकाएरी ने अपना सारा ध्यान सलाद पर केंद्रित कर लिया। बीच-बीच में वह एक बन पर मक्खन लगाकर उसे खाता। फिर शराब का एक घूंट लेता। टेंगो ने मशीनी ढंग से पास्ता को अपने मुंह तक उठाया, और मन ही मन तरह-तरह के विचार करने लगा। अंत में, उसने अपना कांटा नीचे रखा और कहा:
"जब कोमात्सु-सान ने पहली बार मुझे यह विचार बताया, तो यह एक बुरे मजाक जैसा लगा। एक असंभव सी बात। मैं उन्हें मना करना चाहता था। लेकिन घर आकर जब मैंने उनके प्रस्ताव के बारे में सोचा, तो मेरी इच्छा और भी प्रबल होती चली गई। नैतिक हो या न हो, इस बात को एक तरफ रखते हुए, अंततः मैं आपकी रचित कहानी, 'एयर क्राइसेंथेमम' को एक नया रूप देना चाहता था। मैं इसे कैसे कहूँ, यह एक स्वाभाविक, सहज इच्छा थी।"
यह महज़ इच्छा से कहीं बढ़कर था, मैं सचमुच उसे पाने के लिए तरस रहा था, टेंगो ने मन ही मन सोचा। कोमात्सु ने सही अनुमान लगाया था कि इस इच्छा को नियंत्रित करना उसके लिए दिन-प्रतिदिन कठिन होता जाएगा।
फुकेरी ने कुछ नहीं कहा। उसने उदासीन और सुंदर आँखों से उसकी ओर देखा, मानो गहराई से देख रही हो। ऐसा लग रहा था मानो वह उसके शब्दों को समझने के लिए संघर्ष कर रही हो।
“क्या आप इसे दोबारा लिखना चाहते हैं?” उसने पूछा।
टेंगो ने उसकी आंखों में सीधे देखा।
- मुझे भी ऐसा ही लगता है।
फुकेरी की काली पुतलियाँ हल्की सी चमक उठीं, मानो अंदर कुछ हलचल हुई हो। कम से कम तेंगो को तो यही लगा।
टेंगो ने अपने हाथों को इस तरह पकड़ा हुआ था मानो वह कोई काल्पनिक डिब्बा पकड़े हुए हो। उसके इस हावभाव का कोई विशिष्ट अर्थ नहीं था, लेकिन वह काल्पनिक वस्तु उसके भावों को व्यक्त करने का माध्यम थी।

मैं इसे ठीक से समझा नहीं सकती, लेकिन 'द एयर क्राइसालिस' को कई बार पढ़ने पर मुझे ऐसा लगा कि मैं भी वही चीजें देख पा रही हूँ जो आपने देखीं। खासकर जब छोटे लोग दिखाई देते हैं। आपकी कल्पना शक्ति अद्भुत है। मौलिक और प्रेरणादायक।
फुकेरी ने धीरे से चम्मच को प्लेट पर रख दिया और नैपकिन से अपना मुंह पोंछ लिया।
"छोटे कद के लोग सचमुच मौजूद हैं," उसने धीमी आवाज़ में कहा।
क्या सचमुच ऐसा कोई है?
फुकेरी रुका। फिर उसने कहा:
— मेरी और तुम्हारी तरह।
"मेरी और तुम्हारी तरह," टेंगो ने दोहराया।
अगर आप चाहें तो आप भी उन्हें देख सकते हैं।
फुकेरी के बोलने का संक्षिप्त तरीका असाधारण रूप से प्रभावशाली था। हर शब्द सुई की तरह दिमाग में उतरता हुआ महसूस होता था। लेकिन तेंगो अभी भी तय नहीं कर पाया था कि वह कितनी गंभीर थी। उसमें कुछ असामान्य था, कुछ बेकाबू सा। शायद यह जन्मजात प्रतिभा थी, शायद वह किसी वास्तविक प्रतिभाशाली व्यक्ति के सामने था। या शायद वह सिर्फ दिखावा कर रही थी। होशियार किशोर लड़कियाँ कभी-कभी सहज रूप से दिखावा करती हैं। वे सनकी होने का नाटक करती हैं। वे अपने सामने वाले को इशारों में उलझा देती हैं। उसने यह कई बार देखा था। कभी-कभी यह बताना मुश्किल होता है कि वे दिखावा कर रही हैं या गंभीर हैं। तेंगो ने बातचीत को वास्तविकता की ओर लाने का फैसला किया। या कम से कम वास्तविकता के करीब लाने का।
— अगर आप सहमत हैं, तो मैं कल से ही 'द एयर क्राइसालिस' को फिर से लिखना शुरू करना चाहूंगा।
"अगर आप यही चाहते हैं।"
"मैं यही चाहता हूँ," टेंगो ने संक्षिप्त रूप से उत्तर दिया।
"आपको किसी से मिलना है," फुकेरी ने कहा।
“क्या मुझे किसी से मिलने की जरूरत है?” टेंगो ने कहा।
फुकेरी ने सिर हिलाया।
“तुम किसके बारे में बात कर रहे हो?” उसने पूछा।
उनके सवाल को नजरअंदाज कर दिया गया।
"तुम उससे बात कर रहे हो," लड़की ने कहा।
— यदि आवश्यक हो, तो अवश्य।
"क्या आप रविवार सुबह खाली हैं?" उसने बिना किसी भाव-भंगिमा के फिर से पूछा।
"मैं खाली हूँ," उसने जवाब दिया, मानो वह झंडों से इशारा करते हुए बातचीत कर रहा हो।
*

खाना खत्म करने के बाद वे अलग हो गए। टेंगो ने रेस्टोरेंट के पे फोन में कुछ दस-येन के सिक्के डाले और काम पर कोमात्सु को फोन किया। वह वहीं था, लेकिन उसने फोन उठाने में थोड़ी देर लगा दी। टेंगो ने रिसीवर कान से लगाए रखा और उसकी आवाज़ सुनने तक इंतज़ार किया।
"कैसा रहा? सब ठीक रहा?" कोमात्सु ने पूछा।

"मैंने उन्हें किताब के पुनर्लेखन के बारे में बताया, और वे सैद्धांतिक रूप से सहमत हो गए। कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगता है।"
"बस बहुत हो गया!" कोमात्सु ने उत्साह भरी आवाज़ में कहा। "बहुत बढ़िया। सच तो यह है कि मैं चिंतित था। मुझे डर था कि आप इस तरह की बातचीत के लिए उपयुक्त नहीं हैं।"
"यह कोई खास बातचीत नहीं थी," टेंगो ने कहा। "मुझे उसे मनाने की जरूरत नहीं पड़ी। मैंने उसे अपना विचार समझाया और उसने अपना मन बना लिया।"
"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अगर मुझे वो मिल गया जो मैं चाहता था, तो मुझे कोई शिकायत नहीं है। हमारी योजना आगे बढ़ रही है।"
"लेकिन उससे पहले, वह कहता है कि मुझे किसी से मिलना होगा।"
"कोई व्यक्ति?"
"मुझे नहीं पता कौन है। मुझे बस इतना पता है कि फुकेरी चाहता है कि मैं उससे मिलूं और बात करूं।"
कोमात्सु कुछ सेकंड तक चुप रहा।
और आप लोग कब मिलेंगे?
"इस रविवार को। वह मुझे उसके पास ले जा रही है।"
कोमात्सु ने गंभीरता से कहा, "रहस्यों के बारे में एक महत्वपूर्ण नियम है। उन्हें कम से कम लोगों को पता होना चाहिए। अभी हमारी योजना केवल तीन लोगों को पता है। तुम, मैं और फुकाएरी। अगर संभव हो तो मैं इसे जितना हो सके गुप्त रखना चाहता हूँ। क्या तुम समझते हो?"
"सैद्धांतिक रूप से," टेंगो ने कहा।
लेकिन फिर कोमात्सु की आवाज दोबारा नरम हो गई।
"खैर, फुकेरी ने अपनी पांडुलिपि में संशोधन करने के लिए सहमति दे दी है। यही सबसे महत्वपूर्ण बात है। बाकी के साथ क्या होता है, हम देखेंगे।"
टेंगो ने रिसीवर को अपने बाएं हाथ में ले लिया। फिर उसने अपने दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली से अपनी कनपटी को दबाया।
"कोमात्सु-सान, आप जानती हैं, मुझे कुछ परेशान कर रहा है। मेरे पास कोई ठोस कारण नहीं है, लेकिन मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं किसी असामान्य चीज़ में फंस रहा हूँ। जब मैं फुकाएरी से बात कर रहा था, तब मुझे इतनी चिंता नहीं थी, लेकिन उससे रिश्ता टूटने के बाद से यह भावना और तीव्र हो गई है। शायद यह कोई पूर्वाभास है, शायद अंतर्ज्ञान है, लेकिन इस कहानी में कुछ तो गड़बड़ है। कुछ तो असामान्य है। मैं इसे अपने दिमाग से नहीं, बल्कि अपने पूरे शरीर से महसूस कर रहा हूँ।"
— क्या फुकेरी को देखने के बाद आपको ऐसा महसूस हुआ?
"शायद। मुझे लगता है कि फुकाएरी सौ प्रतिशत प्रामाणिक है। बेशक, यह सिर्फ मेरा अंतर्ज्ञान है।"
"तुम्हारा मतलब है कि वह वाकई प्रतिभाशाली है?"
"मुझे नहीं पता कि यह प्रतिभा है या कुछ और। मैं उससे मुश्किल से ही मिली हूँ," टेंगो ने कहा। "लेकिन ऐसा लगता है कि वह ऐसी चीजें देख सकती है जो हम नहीं देख सकते। शायद उसमें कुछ खास बात है। यही बात मुझे परेशान कर रही है।" "तुम्हारा मतलब है कि वह पागल है?"

"उसमें कुछ अजीब आदतें हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि वह पागल है। उससे काफी सामान्य बातचीत हो सकती है," टेंगो ने कहा, फिर कुछ देर चुप हो गया। "लेकिन कोई बात मुझे परेशान कर रही है।"
"खैर, उसे आपमें दिलचस्पी थी," कोमात्सु ने कहा।
टेंगो ने सही शब्दों की तलाश की, लेकिन व्यर्थ।
"मुझे नहीं पता कि यह सच है या नहीं," उसने जवाब दिया।
— वो आपसे मिलना चाहते थे और उन्हें लगा कि आप 'द एयर क्राइसालिस' को फिर से लिख सकते हैं। मतलब, उन्हें आप पसंद आए। आपने अच्छा काम किया, टेंगो। अब आगे क्या होगा, मुझे नहीं पता। बेशक जोखिम तो हैं, लेकिन जोखिम ही तो जीवन का रोमांच है। 'द एयर क्राइसालिस' को तुरंत फिर से लिखना शुरू कर दीजिए। हमारे पास ज्यादा समय नहीं है। हमें नए संस्करण को बाकी पांडुलिपियों के ढेर में जितनी जल्दी हो सके रखना है। हम इसे मूल पांडुलिपि से बदल देंगे। क्या आप इसे दस दिनों में कर सकते हैं?
टेंगो ने आह भरी।
— थोड़ा मुश्किल है।
"यह अंतिम संस्करण होना जरूरी नहीं है। जब हम अगले स्तर पर पहुंच जाएंगे, तो हम इसमें थोड़ा और बदलाव कर सकते हैं। फिलहाल, इसे बस एक आकार दे दीजिए।" टेंगो ने मन ही मन आकलन किया कि उसके पास कितना काम है।
"तो शायद मैं दस दिनों में कुछ कर पाऊँ। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह आसान है!"
“तो फिर करो,” कोमात्सु ने प्रसन्नता से कहा। दुनिया को उसकी नज़रों से देखना; उसकी दुनिया और वास्तविक दुनिया के बीच मध्यस्थ बनना। तुम यह कर सकते हो, टेंगो। मेरे लिए—”
यहीं पर दस येन का आखिरी नोट समाप्त होता है।

अध्याय 5 एक ऐसा पेशा जिसके लिए विशेष तैयारी और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है

अपना काम खत्म करने के बाद, आओमामे थोड़ी देर चली, फिर टैक्सी लेकर अकासाका के एक होटल में गई। घर जाकर सोने से पहले उसे अपनी घबराहट को शांत करने के लिए थोड़ी शराब की ज़रूरत थी। चाहे कुछ भी कहा जाए, उसने अभी-अभी किसी को परलोक भेजा था। वह एक नीच इंसान था जो मरने लायक था, लेकिन आखिर इंसान तो इंसान ही होता है। जीवन के अंत का एहसास अभी भी उसके हाथों में था। एक आखिरी सांस और आत्मा शरीर छोड़ देती है। आओमामे उस होटल के बार में कई बार जा चुकी थी। वह एक गगनचुंबी इमारत की सबसे ऊपरी मंजिल पर था, वहाँ से शानदार नज़ारा दिखता था और बार में बैठना बहुत आरामदायक था।
वह सात बजने के कुछ देर बाद बार में दाखिल हुई। एक युवा जोड़ी पियानो और गिटार पर 'स्वीट लॉरेन' बजा रही थी, साथ में नैट किंग कोल का एक पुराना गाना भी था। सुनने में बुरा नहीं लग रहा था। आओमामे हमेशा की तरह बार में बैठ गई और उसने जिन और टॉनिक और पिस्ता का ऑर्डर दिया। अभी ज़्यादा भीड़ नहीं थी। दो युवक रात के नज़ारे का लुत्फ़ उठाते हुए कॉकटेल का आनंद ले रहे थे, चार सूट पहने व्यवसायी गहरी बातचीत में मशगूल थे, एक अधेड़ उम्र का विदेशी जोड़ा था, दोनों के हाथों में मार्टिनी थी। आओमामे ने धीरे-धीरे अपना जिन और टॉनिक पिया। वह जल्दी नशे में चूर नहीं होना चाहती थी। शाम तो अभी शुरू ही हुई थी।
उसने अपने बैग से एक किताब निकाली और पढ़ना शुरू किया। यह 1930 के दशक की मंचूरियन रेलवे के बारे में थी। रूस-जापान युद्ध की समाप्ति के एक साल बाद, जापान ने रूसियों से रेलवे का नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया और मंचूरियन रेलवे (दक्षिण मंचूरियन रेलवे कंपनी) की स्थापना की, जिसका तेजी से विकास हुआ। उन्होंने जापानी साम्राज्य के चीन पर आक्रमण का नेतृत्व किया था और 1945 में सोवियत सेना द्वारा उन्हें नष्ट कर दिया गया था। 1941 में जर्मन-सोवियत युद्ध की शुरुआत तक, मंचूरियन रेलवे और फिर साइबेरियाई रेलवे का उपयोग करके, शिमोनोसेकी से पेरिस तेरह दिनों में पहुँचा जा सकता था।
आओमामे ने सोचा कि अगर कोई युवती बिजनेस सूट पहने, कंधे पर बड़ा सा बैग लिए, मंचूरियाई रेलवे पर एक (पेपरबैक) किताब बड़े चाव से पढ़ रही हो, और बार में अकेली बैठी शराब पी रही हो, तो उसे देखकर ऐसा बिल्कुल नहीं लग सकता कि वह ग्राहकों की तलाश में निकली कोई उच्च वर्ग की वेश्या है। दूसरी ओर, उसे यह भी नहीं पता था कि एक उच्च वर्ग की वेश्या असल में कैसी दिखती है। उदाहरण के लिए, अगर वह सचमुच एक वेश्या होती जिसके ग्राहक अमीर व्यापारी होते, तो शायद वह इसे ज़ाहिर न करती, ताकि उन्हें असहज महसूस न हो और उसे बार से बाहर न निकाल दिया जाए। हो सकता है उसने जुन्को शिमाडा का सूट, सफेद शर्ट, हल्का मेकअप, एक बड़ा सा सुविधाजनक बैग पहना हो और उसके हाथ में मंचूरियाई रेलवे पर एक किताब हो। इसलिए उस समय वह जो कर रही थी, वह एक उच्च वर्ग की वेश्या के अपने ग्राहकों का इंतज़ार करने से बहुत अलग नहीं था।
थोड़ी देर बाद, बार में काफी भीड़ हो गई थी। चारों ओर से आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। लेकिन जिस ग्राहक का वह इंतज़ार कर रही थी, वह अभी तक नहीं आया था।

लेकिन उसने कहा नहीं, कुछ भी चलेगा। उसकी आवाज़ धीमी और शांत थी। वह कंसाई लहजे में बोल रहा था। लेकिन उस आदमी ने तुरंत अपना मन बदल लिया और पूछा कि क्या उनके पास कटी सार्क है। बारटेंडर ने हाँ कहा। बिल्कुल भी बुरा नहीं, आओमामे ने सोचा। उसे अच्छा लगा कि उसने चिवास रीगल या कोई फैंसी सिंगल माल्ट नहीं चुना। उसने सोचा कि जो लोग अपने ड्रिंक्स को लेकर बहुत नखरे करते हैं, वे आमतौर पर बिस्तर में बोरिंग होते हैं। क्यों, यह कोई नहीं जानता था।
ओमामे को उसका लहजा पसंद आया था। उसे खासकर यह बात हास्यास्पद लगी कि कंसाई क्षेत्र में पैदा हुआ और पला-बढ़ा एक आदमी टोक्यो आकर स्थानीय मुहावरों का इस्तेमाल करने में संघर्ष कर रहा है। शब्दावली और उच्चारण के बीच का बेमेलपन उसे अचंभित कर गया। शब्दों की ध्वनि अजीब तरह से सुकून देने वाली थी। उसने फैसला किया, "मैं उसे चुनूंगी। मैं अपनी उंगलियां उसके कम होते बालों में फेरना चाहती हूं।" जब बारटेंडर उसके लिए कटी सार्क का गिलास लाया, तो उसने उसे रोककर इतनी धीमी आवाज़ में कहा कि वह आदमी सुन सके:
— बर्फ से लदी एक कट्टी सार्क नाव।
"अभी तुरंत," बारटेंडर ने भावहीनता से जवाब दिया।
उस आदमी ने अपनी कमीज़ का ऊपर वाला बटन खोला और छोटे अक्षरों वाली नेवी ब्लू टाई को ढीला किया। उसका सूट भी नेवी ब्लू रंग का था। कमीज़ सादे, हल्के नीले रंग की थी। आओमामे पढ़ते हुए अपने पेय का इंतज़ार कर रही थी। इसी बीच उसने लापरवाही से अपनी कमीज़ का एक बटन खोल दिया। ऑर्केस्ट्रा 'इट्स ओनली अ पेपर मून' बजा रहा था। पियानोवादक कोरस के कुछ सुर बजा रहा था। जैसे ही उसे बर्फ के साथ व्हिस्की मिली, आओमामे ने गिलास अपने होठों तक उठाया और एक घूंट लिया। उसने देखा कि वह आदमी चोरी-छिपे उसकी तरफ देख रहा था। उसने किताब के पन्नों से नज़रें उठाकर लापरवाही से उसकी तरफ देखा। जब उसकी नज़रें उससे मिलीं, तो वह लगभग न के बराबर मुस्कुराई और तुरंत अपनी आँखें सीधे सामने टिका लीं, जैसे खिड़की से बाहर देख रही हो।
उसके पास जाने का यही सही मौका था। उसने जानबूझकर यह स्थिति बनाई थी। लेकिन उस आदमी ने उससे बात नहीं की। अविश्वसनीय, आखिर वो क्या कर रहा है? आओमामे ने सोचा। वो एक इशारे का मतलब कैसे नहीं समझ सकता? शायद उसमें हिम्मत नहीं है, उसने सोचा। वो पचास साल का है, मैं बीस साल की हूँ, और शायद उसे डर है कि अगर वो मुझसे बात करेगा तो मैं उसे नज़रअंदाज़ कर दूँगी, कि मैं उस पर हँसूँगी, एक गंजे सिर वाले इज़्ज़तदार आदमी पर। खैर, जो होगा देखा जाएगा! उसे इन सब बातों का कोई अंदाज़ा नहीं है!
ओमामे ने किताब बंद की और उसे अपने बैग में रख लिया। फिर उसने उस आदमी से बात की:
"क्या आपको कट्टी सार्क पसंद है?"
उस आदमी ने हैरानी और असमंजस भरे भाव से उसकी ओर देखा, मानो उसे सवाल समझ ही न आया हो। फिर उसके चेहरे से वो भाव गायब हो गया।
"अह... हाँ, कट्टी सार्क..." वह हकलाते हुए बोला। "मैं इसे काफी समय से पी रहा हूँ, क्योंकि मुझे इसका लेबल पसंद है। इस पर एक जहाज बना हुआ है।"
— तो आपको नावें पसंद हैं।
— जी हाँ, पाल वाली नावें।

ओमामे ने अपना गिलास उठाया। उस आदमी ने भी अपना गिलास थोड़ा सा उठाया। मानो उनके बीच कोई झड़प हुई हो।
फिर आओमामे ने अपना बैग कंधे पर टांगा, गिलास उठाया और दो कुर्सियाँ खिसकाकर उस आदमी के पास ले आई। वह आदमी हैरान तो हुआ, लेकिन अपनी प्रतिक्रिया छिपाने की कोशिश की।
"मैं अपनी एक पुरानी हाई स्कूल की सहपाठी से मिलने जा रही थी, लेकिन मुझे पता चला कि वह मुझे धोखा दे रही है," आओमामे ने अपनी घड़ी देखते हुए कहा। "वह आई ही नहीं, उसने मुझसे संपर्क भी नहीं किया।"
"हो सकता है उसने मीटिंग की तारीख गलत लिख दी हो।"
"शायद। वैसे भी वो हमेशा से थोड़ी लापरवाह रही है। मैं सोच रहा था कि उसका थोड़ा और इंतज़ार कर लूँ और इस बीच बात कर लूँ। या फिर तुम अकेले, चुपचाप रहना पसंद करोगी?"
"नहीं, बिल्कुल नहीं," उस आदमी ने कुछ अस्पष्ट स्वर में उत्तर दिया।
वह भौंहें चढ़ाकर आओमामे को ऐसे देखने लगा जैसे किसी गिरवी रखी वस्तु का मूल्यांकन कर रहा हो। मानो वह सोच रहा हो कि कहीं वह कोई वेश्या तो नहीं है जो ग्राहकों को लुभाने आई हो। लेकिन आओमामे वैसी बिल्कुल नहीं दिखती थी। सचमुच, वह वेश्या जैसी नहीं लग रही थी। उस आदमी को थोड़ी राहत मिली।
“क्या तुम यहीं होटल में ठहरी हो?” उसने उससे पूछा।
ओमामे ने अपना सिर हिलाया।
नहीं, मैं टोक्यो में रहता हूँ। मैं यहाँ अपनी गर्लफ्रेंड से मिलने आया था।
आप?
— मैं एक यात्रा पर था। मैं ओसाका से एक बैठक में शामिल होने आया था। यह कोई बहुत महत्वपूर्ण बैठक नहीं थी, लेकिन यह अपरिहार्य था कि ओसाका स्थित कंपनी के मुख्यालय से कोई न कोई अवश्य ही उपस्थित होगा।
ओमामे ने विनम्रता से मुस्कुराते हुए कहा। मुझे तुम्हारी सेवा से कोई लेना- देना नहीं है, उसने मन ही मन सोचा। मुझे तुम्हारे सिर का आकार पसंद आया, बस इतना ही। लेकिन, ज़ाहिर है, उसने अपने मन की बात किसी को नहीं बताई।
"मैंने अपना काम खत्म कर लिया और मुझे कुछ पीने का मन हुआ। मुझे कल सुबह कुछ और काम करना है और मैं ओसाका वापस जा रहा हूँ।"
मैंने भी अभी-अभी एक महत्वपूर्ण काम पूरा किया है।
"जी? किस तरह की नौकरी?"
मुझे काम के बारे में बात करने का मन नहीं है, लेकिन, खैर, कुछ विशेष विषय के बारे में।
"विशेषज्ञतापूर्ण," उस व्यक्ति ने दोहराया। "एक ऐसा पेशा जिसके लिए विशेष प्रशिक्षण और शिक्षा की आवश्यकता होती है, जो आम लोग नहीं कर सकते।"
तुम चलती-फिरती शब्दकोश हो क्या? आओमामे ने मन ही मन सोचा और बिना कुछ कहे मुस्कुरा दी।
- ऐसा कुछ।
उस आदमी ने एक और घूंट लिया और काउंटर पर रखे कटोरे से कुछ मूंगफली के दाने कुतर कर खा लिए।
मैं जानना चाहता हूं कि आप क्या करते हैं, लेकिन आपने कहा कि आप इसके बारे में बात नहीं करना चाहते।

"अभी नहीं," उसने सहमति जताई।
"क्या इसका संबंध शब्दों से हो सकता है? उदाहरण के लिए, संपादक या शोधकर्ता?" "आप ऐसा किस लिए सोचते हो?"
उस व्यक्ति ने अपनी टाई की गांठ खोली और उसे कसकर बांध लिया। उसने अपनी कमीज के बटन भी बंद कर लिए।
— बस इतना ही। क्योंकि आप रुचि से एक मोटी किताब पढ़ रहे थे।
ओमामे ने अपनी उंगली के नाखून से गिलास के किनारे पर हल्के से थपथपाया।
मैं किताब इसलिए पढ़ रहा था क्योंकि मुझे वह पसंद है। इसका काम से कोई लेना- देना नहीं है।
"तो फिर मुझे सच में नहीं पता। मैं इसका पता नहीं लगा सकता।"
"तुम खुद को नहीं रोक सकते," आओमामे ने कहा। "हमेशा-हमेशा के लिए," उसने मन ही मन जोड़ा।
उस आदमी ने उसे बड़ी बेपरवाही से ऊपर से नीचे तक देखा। मानो उसने कुछ देखा ही न हो, आओमामे थोड़ा झुक गई, ताकि वह उसकी छाती को मनचाहे ढंग से निहार सके। शायद वह उसके स्तनों का आकार भी देख पा रहा था। और सफेद लेस वाली ब्रा भी। फिर वह सीधी खड़ी हुई और व्हिस्की का एक घूंट लिया। बड़े-बड़े गोल बर्फ के टुकड़े गिलास से टकराकर सूखी सी आवाज़ करने लगे।
"क्या मुझे एक और लाइन मांगनी चाहिए? मुझे एक और चाहिए," उस आदमी ने कहा।
- कृपया।
आप अच्छी तरह से शराब संभाल सकते हैं।
ओमामे ने अस्पष्ट मुस्कान दी और अचानक गंभीर भाव धारण कर लिया।
"अच्छा हुआ मुझे याद आ गया। मुझे एक सवाल पूछना है।"
"क्या वास्तव में?"
"क्या हाल ही में पुलिस की वर्दी में कोई बदलाव हुआ है? और उनके द्वारा ले जाए जाने वाले हथियारों में भी?"
— "हाल ही में" से आपका क्या तात्पर्य है?
- एक सप्ताह के बारे में।
“पुलिस की वर्दी और हथियार बदले हैं, हाँ, लेकिन कुछ ही साल पहले,” उन्होंने हैरानी भरे भाव से जवाब दिया। “वे उस तंग वर्दी से ढीली वर्दी पर आ गए हैं, जैसे स्वेटर में होती है, और अब उनके पास नई स्वचालित पिस्तौलें हैं। मुझे नहीं लगता कि कोई और बड़ा बदलाव होगा।”
"लेकिन पिछले हफ्ते तक उनके पास पुराने रिवॉल्वर थे, है ना?"
व्यक्ति ने अपना सिर हिलाया।
"बिल्कुल नहीं। वे सभी काफी समय से स्वचालित हथियार लेकर घूम रहे हैं।" "क्या आपको पूरा यकीन है?"
उसकी आवाज़ सुनकर वह झिझक गया। उसने भौंहें चढ़ाईं और याद करने की कोशिश की। खैर, अब मुझे इतना यकीन नहीं है। लेकिन मुझे यकीन है कि उन्होंने अखबार में लिखा था कि सभी पुलिसकर्मियों को नए हथियार मिल गए थे। उस समय थोड़ी हलचल मची थी। जाहिर है, नागरिकों के कुछ समूहों ने सरकार से विरोध जताया था कि वे बहुत ज्यादा कुशल हैं।
— कुछ साल पहले?

उस व्यक्ति ने उम्रदराज बारटेंडर को बुलाया और उससे पूछा कि पुलिसकर्मियों की वर्दी और हथियार कब बदले गए थे।
"दो साल पहले, वसंत ऋतु में," उन्होंने बिना किसी झिझक के उत्तर दिया।
“क्या आपने कभी देखा है कि एक लग्जरी होटल का बारटेंडर सब कुछ जानता है?” उस आदमी ने हंसते हुए कहा।
बारटेंडर भी हंस पड़ा।
बिलकुल नहीं। मेरा छोटा भाई पुलिसवाला है, इसीलिए मुझे वो घटना अच्छी तरह याद है। वो हमेशा शिकायत करता रहता था कि उसे वर्दी पसंद नहीं है और बंदूक बहुत भारी है। वो अब भी शिकायत करता है। ये बेरेटा कंपनी की नौ मिलीमीटर की बंदूकें हैं, जो एक ही झटके में सेमी-ऑटोमैटिक बन जाती हैं। इनका उत्पादन देश में मित्सुबिशी कंपनी लाइसेंस के तहत करती है। यहाँ सशस्त्र संघर्ष ज़्यादा नहीं होते और हमें इतनी उन्नत बंदूकों की ज़रूरत भी नहीं है। अगर ये चोरी हो जातीं तो ज़्यादा चिंता की बात होती। लेकिन सरकार ने एक समय पुलिस व्यवस्था में सुधार करने की नीति लागू की थी।
“और उन पुराने रिवॉल्वरों का क्या हुआ?” आओमामे ने अपनी आवाज़ को यथासंभव नियंत्रित करते हुए पूछा।
"उन्हें इकट्ठा करके नष्ट कर दिया गया," बारटेंडर ने जवाब दिया। "मैंने टीवी पर इस प्रक्रिया के बारे में एक रिपोर्ट देखी थी। इतनी सारी बंदूकों को नष्ट करना और गोलियों को कचरे में फेंकना बहुत ही जटिल काम है।"
"वे उन्हें विदेश में बेचना ज्यादा पसंद करेंगे," उस आदमी ने कहा।
बारटेंडर ने विनम्रता से कहा, "संविधान हमें हथियारों का निर्यात करने से रोकता है।"
— देखिए, एक लग्जरी होटल का बारटेंडर…
“तो, जापानी पुलिस ने दो साल से रिवॉल्वर का इस्तेमाल नहीं किया है। क्या यह सही है?” आओमामे ने उस आदमी की बात काटते हुए बारटेंडर से पूछा।
— जहाँ तक मुझे पता है, हाँ।
ओमामे ने थोड़ा सा माथा सिकोड़ा। क्या मेरे दिमाग को कुछ हो गया है? आज सुबह ही मैंने एक पुलिसवाले को पुरानी वर्दी में कमर पर रिवाल्वर बांधे देखा था। मैंने कहीं भी यह नहीं सुना कि पुरानी रिवाल्वरें पूरी तरह से चलन से बाहर हो गई हैं। दूसरी ओर, यह मानना भी नामुमकिन है कि वे दोनों गलत हैं या मैं झूठ बोल रही हूँ। तो, ज़रूर मैं ही गलत हूँ।
“धन्यवाद, बस इतना ही काफी है,” उसने बारटेंडर से कहा। उसने मुस्कुराते हुए बात खत्म की और अपना काम फिर से शुरू कर दिया।
"क्या आपको पुलिस में दिलचस्पी है?" उस आदमी ने उससे पूछा।
"नहीं, ऐसा नहीं है। मुझे ठीक से याद नहीं आ रहा था," उसने टालमटोल करते हुए जवाब दिया।
दोनों ने अपनी दूसरी कट्टी सार्क पी ली। वह आदमी उससे नौकाओं के बारे में बातें करने लगा। उसके पास एक नौका थी जिसे वह निशिनोमिया के एक घाट पर रखता था। जब भी उसे फुर्सत मिलती, वह उसे समुद्र में ले जाता था। वह बड़े उत्साह से उसे बताता कि समुद्र में अकेले रहना और चेहरे पर हवा का झोंका महसूस करना कितना अद्भुत होता है। आओमामे को नौकाओं के बारे में उसकी बकवास सुनने की कोई

इच्छा नहीं थी। वह तो बॉल बेयरिंग का इतिहास या यूक्रेन के खनिज संसाधनों के बारे में सुनना पसंद करती। उसने अपनी घड़ी पर नज़र डाली।
"काफी देर हो रही है। क्या मैं आपसे एक छोटा सा सवाल पूछ सकता हूँ?"
- हाँ।
— यह थोड़ा... अंतरंग है।
— अगर मैं आपके सवाल का जवाब दे सकता हूँ, तो ज़रूर।
क्या आपके पास कोई बड़ा वाला है?
उस आदमी ने अपना मुंह थोड़ा सा खोला, भौंहें चढ़ाईं और कुछ देर तक आओमामे को देखता रहा। उसे अपनी सुनी हुई बात पर यकीन नहीं हो रहा था, लेकिन आओमामे बहुत गंभीर थी। वह मजाक नहीं कर रही थी। उसकी नज़र से ही वह समझ गया था।
"मुझे भी पता है..." उसने बहुत गंभीरता से जवाब दिया। "मुझे लगता है यह सामान्य बात है। आपने मुझे चौंका दिया, मुझे समझ ही नहीं आ रहा कि क्या कहूँ..." “तुम्हारी उम्र कितनी है?” उसने उससे पूछा।
"मैं पिछले महीने ही इक्यावन साल का हुआ हूँ," उस व्यक्ति ने अनिश्चितता से जवाब दिया।
— आप पचास साल से अधिक समय से एक सामान्य मस्तिष्क, दूसरों की तरह नौकरी, यहां तक कि एक नौका के साथ जी रहे हैं, लेकिन आप यह नहीं बता सकते कि आपकी नौका छोटी है या बड़ी?
"अच्छा... मुझे लगता है कि यह थोड़ा बड़ा है," उसने कुछ क्षण सोचने के बाद मुश्किल से उत्तर दिया।
"वास्तव में?"
"आपको इस बात की चिंता क्यों है?"
"क्या इससे मेरा कोई लेना-देना है?" लेकिन किसने कहा कि इससे मेरा कोई लेना- देना है?
"नहीं, कोई नहीं..." उस आदमी ने पीछे हटते हुए जवाब दिया। मुझे लगा कि कोई समस्या होगी।
"इसमें कोई दिक्कत नहीं है," आओमामे ने साफ-साफ कहा। मुझे तो बस बड़ा ही पसंद है, बस देखने के हिसाब से। ऐसा नहीं है कि अगर बड़ा न हो तो मुझे कुछ महसूस ही नहीं होता। इसका मतलब ये नहीं कि बड़ा ही होना चाहिए, बस बात खत्म, बल्कि मुझे बड़ा पसंद है। क्या ये जायज़ नहीं है? सबकी अपनी-अपनी पसंद होती है, है ना? खैर, बहुत ज्यादा बड़ा भी नहीं होना चाहिए, क्योंकि उससे दर्द होता है। समझी?" "तो शायद आपको यह पसंद आएगा। यह थोड़ा बड़ा है, लेकिन बहुत ज्यादा बड़ा नहीं है। दूसरे शब्दों में, यह बिल्कुल सही है।"
"तुम मुझसे झूठ तो नहीं बोल रहे हो ना?"
— झूठ बोलने से कुछ भी हल नहीं होगा।
— हम्म। तो फिर मुझे दिखाओ!
- यहाँ?
आओमामे ने भौंहें चढ़ाईं, लेकिन खुद पर काबू पाने में कामयाब रही।
"यहाँ? क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है? तुम्हारी उम्र में ऐसी बातें सोचना अच्छा लगता है! एक शानदार सूट, गले में टाई, लेकिन पैर ज़मीन पर नहीं? तुम इसे यहाँ कैसे ला सकते हो? क्या तुम नहीं सोचते कि लोग क्या कहेंगे? हम

तुम्हारे कमरे में चलते हैं, तुम अपनी पैंट उतारो और मुझे दिखाओ। चलो हम दोनों ही अकेले रहते हैं। क्या तुम्हें यह बात समझ नहीं आई?"
“और जब मैं आपको यह दिखा दूंगा, तो हम क्या करेंगे?” उस आदमी ने चिंता से पूछा। "इसे दिखाने के बाद हम क्या करेंगे?" आओमामे ने दोहराया, फिर गुस्से से भौंहें चढ़ा लीं और सांस रोक ली। हम सेक्स कर रहे हैं, और क्या करेंगे? या फिर हम तुम्हारे कमरे में जाकर मुझे दिखाएंगे, और फिर मैं कहूंगी, "बहुत-बहुत धन्यवाद। तुमने मुझे कुछ अद्भुत दिखाया। शुभ रात्रि!" और घर चली जाऊंगी। क्या तुम्हारे पास अब भी कोई लिंग बचा है?"
उसके चेहरे में इतना बड़ा बदलाव देखकर उस आदमी ने गहरी सांस ली। ज़्यादातर आदमी उसे इस तरह गुस्से में देखकर दुम दबाकर भाग जाते। बच्चे भाग जाने के खतरे में थे, उसका चेहरा इतना डरावना था। आओमामे को एहसास हुआ कि उसने कुछ ज़्यादा ही कर दिया था। उसका इरादा उसे इतना डराने का नहीं था। उसे पहले कुछ ज़रूरी काम निपटाना था। उसने जल्दी से अपना चेहरा सीधा किया और ज़बरदस्ती मुस्कुराई, फिर उसे याद दिलाया:
संक्षेप में कहें तो, हम तुम्हारे कमरे में जाते हैं, बिस्तर पर लेटते हैं और सेक्स करते हैं। तुम समलैंगिक या नपुंसक तो नहीं हो?
नहीं, नहीं। मेरे भी दो बच्चे हैं...
"किसी ने आपसे यह नहीं पूछा कि आपके कितने बच्चे हैं, है ना? मैं जनगणना लेकर नहीं आई हूँ, इसलिए कृपया फालतू की बातें करना बंद करें। मेरा सवाल सिर्फ इतना था कि क्या आप किसी महिला के साथ बिस्तर पर होने पर उत्तेजित होते हैं? बस इतना ही।"
"मुझे इससे पहले कभी अकेला नहीं छोड़ा गया। लेकिन आप भी तो पेशेवर नहीं हैं... मेरा मतलब है, यह आपका काम नहीं है, है ना?"
नहीं, चिंता मत करो। मैं न तो कोई पेशेवर हूँ और न ही कोई विकृत मानसिकता वाला व्यक्ति। मैं बस एक आम नागरिक हूँ जो विपरीत लिंग के किसी साथी के साथ सोना चाहता है। मुझे कुछ भी असामान्य नहीं चाहिए, मैं बस सामान्य सा चाहता हूँ। क्या इसमें कुछ गलत है? मैंने काम पर एक मुश्किल काम खत्म किया है, शाम हो गई है और मुझे आराम करने के लिए एक ड्रिंक पीने और किसी अजनबी के साथ सोने का मन कर रहा है। थोड़ा आराम करने के लिए। मुझे इसकी ज़रूरत है। एक पुरुष होने के नाते, आप समझते हैं ना?
"बेशक मैं समझता हूँ, लेकिन..."
मुझे तुमसे पैसों की कोई ज़रूरत नहीं है। अगर तुम मुझे संतुष्ट कर दो तो मैं तुम्हें पैसे दे भी दूँगा। मेरे पास कंडोम हैं, इसलिए किसी भी बीमारी की चिंता मत करो। समझे?
मैं समझता हूँ, लेकिन…
"लगता है तुम्हारा मूड नहीं है। क्या तुम्हें ये पसंद नहीं हैं?"
"नहीं, बिलकुल नहीं। मुझे बस समझ नहीं आ रहा। तुम जवान और खूबसूरत हो, और मैं शायद तुम्हारे पिता की उम्र का हूँ और—"
— बकवास करना बंद करो, प्लीज़! हमारे बीच चाहे कितने भी साल का अंतर हो, मैं तुम्हारी बेटी नहीं हूँ और तुम मेरे पिता नहीं हो। यह बात साफ़ समझ लो। ऐसी बेतुकी बातें मत करो, मुझे गुस्सा आ रहा है। मुझे तुम्हारा गंजा सिर पसंद है। और उसका आकार भी। समझे?

"मैं यह नहीं कहूंगा कि मैं गंजा हूं। बस इतना है कि मेरे सिर के कुछ हिस्सों के बाल थोड़े पतले होने लगे हैं..."
"बस करो!" आओमामे ने गुस्से से कहा, भौंहें चढ़ाने की कोशिश न करते हुए, फिर अपनी आवाज़ नरम कर ली, ताकि वह डरकर भाग न जाए। "देखो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। कृपया, बकवास करना बंद करो!"
आओमामे ने सोचा, वह जो चाहे कह सकता है, उसका सिर बिल्कुल गंजा है। अगर जनगणना के फॉर्म में गंजेपन के बारे में कोई सेक्शन होता, तो शायद उसे ही चुना जाता। अगर स्वर्ग जाना है, तो गंजे स्वर्ग में जाओगे। अगर नरक जाना है, तो गंजे नरक में जाओगे। समझे? अगर समझे, तो हकीकत से मुंह मत मोड़ो। चलो! मैं तुम्हें सीधे गंजे स्वर्ग ले जा रही हूँ।
*

उस आदमी ने बिल चुकाया, फिर वे दोनों साथ में उसके कमरे में चले गए।
सचमुच, उसका लिंग औसत से बड़ा था, लेकिन अत्यधिक विशाल नहीं। बिल्कुल वैसा ही जैसा उसने बताया था। आओमामे ने कुशलतापूर्वक उसकी मालिश की, जिससे वह और बड़ा और सख्त हो गया। फिर उसने अपनी कमीज़ और स्कर्ट उतार दी।
"मेरे स्तन छोटे हैं, है ना?" उसने ठंडे लहजे में उसे नीचे देखते हुए कहा। "तुम्हें मूर्खता महसूस हो रही है क्योंकि मेरे स्तन छोटे हैं, जबकि तुम्हारे बड़े हैं। तुम्हें ठगा हुआ महसूस हो रहा है, है ना?"
"नहीं, बिलकुल नहीं। मुझे नहीं लगता कि आपके स्तन छोटे हैं। उनका आकार बहुत अच्छा है।"
"सच में? देखो, मैं तुम्हें एक बात बताती हूँ। यह मत सोचो कि मैं हमेशा ये लेस वाली ब्रा पहनती हूँ। मैंने इसे इसलिए पहना क्योंकि मैं काम पर थी और मेरे पास कोई और विकल्प नहीं था। ताकि मैं अपनी क्लीवेज दिखा सकूँ।"
"और आपने किस तरह की नौकरी के बारे में बताया था?"
मैंने आपको पहले भी बताया है कि मुझे इस बारे में बात करने का मन नहीं है। लेकिन आपको यह पता होना चाहिए कि आपका पेशा चाहे जो भी हो, एक महिला होना मुश्किल है।
पुरुषों के पास भी जीवन में पर्याप्त धन-दौलत है।
"लेकिन अगर वे नहीं पहनना चाहतीं तो उन्हें लेस वाली ब्रा पहनने की जरूरत नहीं है।"
— यह सच है, लेकिन...
"तो समझने का दिखावा मत करो। महिलाओं को पुरुषों से ज़्यादा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। क्या तुमने कभी ऊँची एड़ी के जूते पहनकर सीढ़ियों से नीचे उतरी हो? क्या तुमने कभी छोटी, तंग स्कर्ट पहनकर बाड़ फांदी है?"
"मुझे खेद है," उस व्यक्ति ने ईमानदारी से माफी मांगी।
ओमामे ने पीछे से अपनी ब्रा खोली और उसे ज़मीन पर फेंक दिया। उसने अपनी स्टॉकिंग्स को ऊपर लपेटा, उतारा और उन्हें भी ज़मीन पर फेंक दिया। फिर वह बिस्तर पर लेट गई और दोबारा उसके लिंग की मालिश करने लगी।
"यह बहुत ही खूबसूरत है! मैं सचमुच प्रभावित हूँ। इसका आकार भी बहुत सुंदर है, एकदम सही साइज है, और यह पेड़ की जड़ जितना मजबूत है।"
"मुझे यह बताने के लिए धन्यवाद," उस व्यक्ति ने राहत भरी आवाज में कहा।

"देखो, मैं तुम्हें तब तक सहलाऊंगा जब तक तुम सह नहीं पाओगी। तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा।"
"क्या पहले नहा लेना बेहतर नहीं होगा? मुझे थोड़ा पसीना आ रहा है।"
"चुप रहो!" आओमामे ने कहा और चेतावनी के तौर पर अपने दाहिने अंडकोष पर हल्के से थप्पड़ मारा। मैं यहाँ सेक्स करने आई हूँ, नहाने नहीं। समझे? पहले हम इसे पहनेंगे। ज़ोर से पहनेंगे। मुझे पसीना आने की परवाह नहीं है। मैं शर्मीली छात्रा नहीं हूँ।
- मैं समझता हूँ।
*

जब वे काम खत्म कर चुके थे, तो पेट के बल लेटे थके हुए आदमी की पीठ सहलाते हुए, आओमामे के मन में एक तीव्र इच्छा जागी कि वह उस नुकीली सुई को उसकी गर्दन के पिछले हिस्से में चुभो दे। उसने लगभग ऐसा करने का मन बना ही लिया था। उसके थैले में कपड़े में लिपटी हुई छेनी थी। उसकी सावधानी से तेज की गई नोक पर विशेष रूप से तैयार किया गया कॉर्क का ढक्कन लगा था। अगर वह चाहती, तो वह इसे बहुत आसानी से कर सकती थी। उसका दाहिना हाथ लकड़ी के हैंडल पर पड़ता और वह आदमी बिना कुछ समझे ही मर जाता। बिना जरा भी दर्द के। इसे स्वाभाविक मृत्यु माना जाता। लेकिन, ज़ाहिर है, आओमामे ने यह विचार छोड़ दिया। उसके पास इस आदमी को समाज से मिटाने का कोई कारण नहीं था। सिवाय इसके कि उसके लिए, अब उस आदमी का कोई अस्तित्व नहीं रह गया था। आओमामे ने खतरनाक विचारों को दूर भगाने के लिए अपना सिर हिलाया।
वह बुरा आदमी नहीं है, उसने सोचा। सेक्स तो काफी सुखद रहा था। उसने तब तक वीर्यपात नहीं किया जब तक वह संतुष्ट नहीं हो गई। उसका सिर सुंदर था और सिर पर एक गंजापन था जो उसे पसंद आया। उसका लिंग बिल्कुल सही आकार का था। वह विनम्र था, सलीके से कपड़े पहने हुए था, ज़बरदस्ती नहीं करता था। अच्छे संस्कारों वाला था। हाँ, उसने बहुत उबाऊ बातें कही थीं और उसे काफी परेशान किया था, लेकिन यह कोई ऐसा अपराध नहीं था जिसके लिए मौत की सज़ा दी जाए। शायद।
“क्या मैं टीवी चालू कर सकती हूँ?” उसने पूछा।
"ज़रूर," उसने बिस्तर पर पेट के बल लेटते हुए जवाब दिया।
नग्न अवस्था में, आओमामे ने ग्यारह बजे की पूरी खबरें देखीं। मध्य पूर्व में, ईरान और इराक के बीच खूनी युद्ध अभी भी जारी था। वे पूरी तरह से संघर्ष में उलझे हुए थे, और संघर्ष के सुलझने की कोई उम्मीद नहीं थी। इराक में, सैन्य भर्ती से बचने वाले युवकों को सबक सिखाने के लिए टेलीग्राफ के खंभों से लटकाया जा रहा था। ईरानी सरकार सद्दाम हुसैन की तंत्रिका गैस और जैविक हथियारों के इस्तेमाल के लिए आलोचना कर रही थी। वाल्टर मोंडेल और गैरी हार्ट राष्ट्रपति पद के लिए डेमोक्रेटिक पार्टी के नामांकन हेतु चुनाव लड़ रहे थे। उनमें से कोई भी विशेष रूप से बुद्धिमान नहीं लग रहा था। एक बुद्धिमान राष्ट्रपति हत्या का निशाना बन सकता था, और शायद सभी लोग ऐसे लोगों से बचने की कोशिश करते थे जिनका दिमाग बहुत तेज होता था।
चांद पर एक स्थायी अड्डा बनाने की दिशा में प्रगति हो रही थी। अमेरिका और सोवियत संघ के बीच एक अजीब सी होड़ लगी हुई थी, ठीक वैसे ही जैसे दक्षिणी ध्रुव अनुसंधान अड्डे के मामले में हुई थी। चांद पर अड्डा? आओमामे ने सोचा। उसने पहले कभी ऐसी बात नहीं सुनी थी। आखिर चल क्या रहा था? अंत में, उसने इस

अध्याय 6 क्या हम बहुत दूर जा रहे हैं?

कोमात्सु ने शुक्रवार को भोर होते ही उसे फोन किया। अभी मुश्किल से पाँच बजे ही बीते थे और टेंगो सपने में था कि वह एक लंबे पत्थर के पुल पर है। वह कुछ ज़रूरी कागज़ात दूसरी तरफ भूल गया था और अब उन्हें लेने के लिए पुल पार कर रहा था। वह पुल पर अकेला था। नदी सुंदर थी, जगह-जगह रेत के टीले थे। पानी शांत बह रहा था और रेत के टीलों पर विलो के पेड़ उगे हुए थे। उनकी ताज़ी हरी पत्तियों वाली शाखाएँ लगभग पानी की सतह को छू रही थीं। ट्राउट मछलियों की सुंदर आकृतियाँ भी दिखाई दे रही थीं। यह दृश्य किसी सजावटी चीनी थाली जैसा लग रहा था। अँधेरे में जागकर टेंगो ने बिस्तर के सिरे पर लगी घड़ी पर नज़र डाली। रिसीवर उठाने से पहले ही उसे शक हो गया कि इतनी सुबह उसे कौन फोन कर रहा है। "टेंगो, क्या तुम्हारे पास वर्ड प्रोसेसर है?" कोमात्सु ने बिना किसी परिचय के पूछा।
अगर वह इस समय जागा हुआ था, तो ज़रूर रात लंबी रही होगी। वह सूर्योदय देखने के लिए नहीं जागा था। सोने से पहले उसे याद आया होगा कि वह टेंगो से कुछ कहना चाहता था।
“बिल्कुल नहीं!” टेंगो ने जवाब दिया।
बाहर अभी भी अंधेरा था, और वह अभी भी उस लंबे पत्थर के पुल पर था। उसके लिए इतने सजीव सपने देखना दुर्लभ था।
उन्होंने आगे कहा, "इसमें गर्व करने जैसी कोई बात नहीं है, लेकिन मैं इस तरह की चीज खरीदने का सामर्थ्य नहीं रखता।"
लेकिन क्या आप जानते हैं कि इसका उपयोग कैसे करना है?
मुझे पता है। और एक वर्ड प्रोसेसर, और एक कंप्यूटर। मेरे पास स्कूल में ये सब हैं और मैं काम पर भी इनका हर समय इस्तेमाल करता हूँ।
"तो आज ही जाकर एक खरीद लो। मुझे इस तरह की चीजों का कोई ज्ञान नहीं है, इसलिए तुम खुद तय कर लो कि कौन सा ब्रांड और मॉडल लेना है। मैं तुम्हें बाद में पैसे वापस कर दूंगा। मैं चाहता हूं कि तुम एयर क्राइसालिस को वर्ड प्रोसेसर में बदलने का काम जल्द से जल्द शुरू कर दो।"
"खैर, एक सस्ता वाला भी ढाई लाख येन का ही तो होता है!"
- कोई फर्क नहीं पड़ता कि।
रिसीवर हाथ में लिए हुए टेंगो ने अपना सिर हिलाया।
मेरा मतलब है, क्या आप मुझे वर्ड प्रोसेसर खरीदकर दे रहे हैं?
"जी हां, मेरे थोड़े से खर्च में से। हमारे प्रोजेक्ट को इस निवेश की ज़रूरत है। अगर हम सिर्फ़ बेकार की चीज़ों पर पैसा खर्च करते रहेंगे तो हम कहीं नहीं पहुंच पाएंगे। आपको पता ही है कि मूल पांडुलिपि वर्ड प्रोसेसर पर लिखी गई थी। इसलिए हमें भी वैसा ही करना होगा। जहां तक हो सके, प्रारूप को मूल के जितना करीब हो सके, रखने की कोशिश करें। क्या आप इस पर अभी काम शुरू कर सकते हैं?" टेंगो ने कुछ पल सोचा।
"ठीक है। अगर मैं चाहूँ तो अभी शुरू कर सकता हूँ। लेकिन मुझे रविवार को उस व्यक्ति से मिलना होगा, यह फुकेरी की शर्तों में से एक है कि मैं उनकी किताब

को दोबारा लिखूँ, और हमारी अभी तक मुलाकात नहीं हुई है। हो सकता है कि मुलाकात के बाद बातचीत विफल हो जाए और सारा पैसा और मेहनत बेकार हो जाए।"
"कोई बात नहीं। सब कुछ ठीक हो जाएगा। छोटी-मोटी बातों की चिंता मत करो। अभी से काम शुरू कर दो। हमारे पास समय कम है।"
— क्या आपको भरोसा है कि रविवार को मेरी बैठक अच्छी तरह से संपन्न होगी? "मेरी अंतरात्मा यही कहती है," कोमात्सु ने कहा। और मेरी अंतरात्मा काफी सटीक बैठती है। मुझमें कोई विशेष प्रतिभा नहीं है, लेकिन मेरी अंतरात्मा बहुत मजबूत है। मैं दावे से कह सकता हूँ कि इसी ने मुझे अब तक जीवित रहने में मदद की है। क्या आप जानते हैं कि अंतरात्मा और प्रतिभा में सबसे बड़ा अंतर क्या है?
- नहीं।
आपको चाहे कितनी भी प्रतिभा मिल जाए, यह जरूरी नहीं कि इससे आपके घर में खाने की व्यवस्था हो ही जाए। वहीं दूसरी ओर, अगर आपको कोई विशेष अंतर्ज्ञान प्राप्त है, तो आपको भूखे रहने की चिंता करने की जरूरत नहीं है।
"मैं याद रखूंगा," टेंगो ने कहा।
"इसलिए मुझे चिंता नहीं है। आप तुरंत काम शुरू कर सकते हैं।"
"अगर आप ऐसा कहते हैं तो ठीक है। मैं बस इतना नहीं चाहता कि हम सब कुछ समेटकर परियोजना शुरू करें और फिर पता चले कि हमारी सारी मेहनत व्यर्थ गई।"
"यह काम मुझ पर छोड़ दो।"
"मैं समझता हूँ। मुझे आज दोपहर किसी से मिलना है, लेकिन इसके अलावा मैं खाली हूँ। मैं सुबह शहर जाकर एक वर्ड प्रोसेसर खरीद लूँगा।"
"बस ऐसे ही किया जाता है। मुझे आप पर भरोसा है। आइए मिलकर दुनिया को उलट-पुलट कर दें!"
*

नौ बजे के कुछ देर बाद उसकी प्रेमिका ने उसे फोन किया। वह अपने पति और बच्चों को रेलवे स्टेशन तक छोड़कर आई थी। उस दिन वह टेंगो से मिलने जा रही थी। शुक्रवार ही वह दिन होता था जब वे हमेशा एक-दूसरे से मिलते थे।
उन्होंने कहा, "आज मेरी तबीयत ठीक नहीं है। मुझे माफ करना, लेकिन मैं नहीं आ सकती। हम इसे अगले हफ्ते तक के लिए टाल देंगे।"
"मैं अस्वस्थ हूँ" - यह उसका मासिक धर्म होने का घुमावदार तरीका था। उसे यही सिखाया गया था कि शालीन और सौम्य शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। हालांकि, बिस्तर पर चीजें न तो शालीन थीं और न ही घुमावदार, लेकिन वह एक अलग ही कहानी थी। टेंगो ने अफ़सोस जताया कि वे मिल नहीं सकते। आखिर वह क्या कर सकता था?
सच तो यह था कि इस बार उसे उतना बुरा नहीं लग रहा था। उसे उसके साथ सोना अच्छा लगता था, लेकिन अब उसके सारे विचार एयर क्राइसालिस पर केंद्रित थे। उसका दिमाग जीवन की दहलीज पर खड़े आदिम सागर की तरह उथल-पुथल मचा रहा था। क्या और कैसे दोबारा लिखा जाए, इस बारे में अनगिनत विचार तेज़ी से आते-जाते रहे। मैं ठीक वही कर रहा हूँ जो कोमात्सु करता है, उसने सोचा। मैं अभी से ही, बिना किसी आधिकारिक निर्णय के, अपने दम पर काम में जुट गया हूँ।
दस बजे वह शिंजुकु गया और फुजित्सु वर्ड प्रोसेसर खरीदा, जिसका भुगतान उसने अपने क्रेडिट कार्ड से किया। उसने नवीनतम मॉडल चुना, जो पिछली पीढ़ी के मुकाबले हल्का था। उसने स्याही की रिबन और कागज भी खरीदे। वह उन्हें लेकर घर लौटा, मशीन को अपनी डेस्क पर रखा और उसे प्लग इन किया। उसने कार्यालय में बड़े

फुजित्सु प्रोसेसर इस्तेमाल किए थे, और यह छोटा होने के बावजूद लगभग वही काम करता था। सब कुछ ठीक से काम कर रहा है, यह सुनिश्चित करने के बाद, टेंगो ने तुरंत एयर क्राइसालिस पर काम करना शुरू कर दिया।
यह कहना गलत होगा कि उनके मन में उपन्यास को फिर से लिखने की कोई स्पष्ट योजना थी। उनके पास केवल कुछ ही विचार थे, जिनमें कुछ बारीकियों का ज़िक्र था। उन्होंने प्रूफरीडिंग के लिए कोई व्यवस्थित सिद्धांत या विधि स्थापित नहीं की थी। सबसे पहले तो, उन्हें इस बात का यकीन नहीं था कि इतने काल्पनिक और भावपूर्ण उपन्यास को तार्किक रूप से समझा जा सकता है। यह स्पष्ट था कि, जैसा कि कोमात्सु ने कहा था, वाक्यों को पूरी तरह से फिर से लिखना ज़रूरी था, लेकिन साथ ही, पुस्तक का वातावरण और सार भी संरक्षित रखना था। यह एक तितली को कंकाल में बदलने की कोशिश करने जैसा था। इन विचारों से उनका गुस्सा बढ़ गया और उनकी चिंता भी बढ़ गई, लेकिन काम शुरू हो चुका था और समय सीमित था। वे निष्क्रिय नहीं बैठ सकते थे। किसी भी हालत में, वे केवल ठोस बारीकियों से शुरुआत कर सकते थे। शायद जब वे बारीकियों पर काम कर रहे होंगे, तो उनके सामने एक बड़ी तस्वीर भी उभर आएगी।
"तेंगो, तुम यह कर सकते हो। मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ," कोमात्सु ने आत्मविश्वास से उससे कहा था। और बिना यह समझे कि क्यों, तेंगो ने उसकी बात पूरी तरह मान ली थी। वह एक जटिल व्यक्ति था, जिससे संवाद करना और बातचीत करना मुश्किल था, और जो मूल रूप से केवल अपने बारे में सोचता था। ज़रूरत पड़ने पर, वह बिना सोचे समझे तेंगो को रास्ते से हटा देता। लेकिन, जैसा कि उसने खुद कहा था, एक संपादक के रूप में उसमें एक विशेष अंतर्ज्ञान था। वह शायद ही कभी भ्रमित होता था। चाहे कुछ भी हो जाए, वह मौके पर ही फैसला लेता और अपने आस-पास के लोगों की राय की परवाह किए बिना काम करता। यह एक असाधारण अग्रिम पंक्ति के कमांडर के लिए आवश्यक गुण था। और तेंगो में, चाहे वह समस्या को किसी भी नज़रिए से देखे, यह गुण नहीं था।
दोपहर साढ़े बारह बजे उन्होंने पूरी लगन से काम शुरू किया। उन्होंने 'द एयर क्राइसालिस' के कुछ पन्ने, मूल पाठ के ठीक वैसे ही, एक अंश के अंत तक, वर्ड प्रोसेसर में कॉपी किए। सबसे पहले, उन्हें उस अंश को दोबारा लिखना था और उससे संतुष्ट होना था। उन्होंने विषयवस्तु में कोई बदलाव नहीं किया, केवल अभिव्यक्ति को बदला। यह ऐसा था मानो वे किसी घर का जीर्णोद्धार कर रहे हों: उन्होंने संरचना को अपरिवर्तित छोड़ दिया, क्योंकि उसकी बनावट में कोई समस्या नहीं थी। बाथरूम और रसोई अपनी जगह पर ही रहे। लेकिन जो कुछ वे बदल सकते थे, जैसे कि फर्श, छत और दीवार, उन्हें उन्होंने तोड़कर उनकी जगह नए बना दिए। मैं एक शिल्पकार हूँ जिसे सब कुछ सौंपा गया है, टेंगो ने सोचा। उनके पास कोई जीर्णोद्धार योजना नहीं थी। उन्होंने अंतर्ज्ञान और अनुभव के आधार पर, जहाँ आवश्यक था, बदलाव किए।
वह एक बार पढ़ता और जहाँ समझना मुश्किल होता, वहाँ स्पष्टीकरण जोड़ देता। वह वाक्यों को सहज बनाता। वह अनावश्यक भागों और दोहराए गए भावों को हटा देता और जहाँ कमी होती, वहाँ पूरा करता। कभी-कभी वह वाक्यों का क्रम बदल देता। क्रियाविशेषण और विशेषण बहुत कम थे, और शैली की इस विशिष्टता का सम्मान करते हुए, वह जहाँ आवश्यक समझता, वहाँ उपयुक्त विशेषण जोड़ देता। फुकाएरी द्वारा लिखे गए वाक्य आम तौर पर बचकाने थे, लेकिन उनमें कुछ अच्छे अंश भी थे जिनमें

*

लिए भी नज़र से ओझल नहीं होने देना चाहिए। यही नियम है। लेकिन छोटी लड़की की लापरवाही के कारण बकरी मर जाती है। इसके लिए उसे दंड मिलता है। उसे मरी हुई बकरी के साथ एक पुराने शेड में बंद कर दिया जाता है। उसे वहाँ से निकलने की अनुमति नहीं है और वह दस दिनों तक पूरी तरह से अलग-थलग रहती है। उसे किसी से भी बात करने की अनुमति नहीं है।
बकरी नन्हे लोगों के लिए इस दुनिया में प्रवेश का द्वार है। लड़की को नहीं पता कि नन्हे लोग अच्छे हैं या बुरे (और ज़ाहिर है, टेंगो को भी नहीं पता)। रात होने पर वे बकरी के शरीर के ज़रिए इस दुनिया में प्रवेश करते हैं। फिर, दिन होने पर वे वापस दूसरी दुनिया में लौट जाते हैं। लड़की उनसे बात कर सकती है, और वे उसे हवा में कोकून बनाना सिखाते हैं।
*

तेंगो उस अंधे बकरे की आदतों के विस्तृत और सटीक वर्णन से बहुत प्रभावित हुआ। ऐसे ही विवरणों ने पूरी किताब को जीवंत बना दिया था। क्या फुकेरी ने कभी किसी अंधे बकरे की देखभाल की थी? और क्या वह पहाड़ों में बसे ऐसे ही किसी आश्रम में रहता था जैसा उसने वर्णन किया था? तेंगो को शक था कि वह रहा होगा। अगर जवाब 'नहीं' था, तो फुकेरी एक असाधारण कहानीकार था।
उसने तय किया कि अगली बार जब वह उससे मिलेगा (जो रविवार को होना था) तो वह उससे बकरी और कम्यून के बारे में कुछ पूछेगा। ज़ाहिर है, फुकाएरी शायद जवाब न दे। उनकी पहली मुलाकात के अनुभव से ऐसा लगता था कि वह केवल वही जवाब देती थी जो उसके लिए उपयुक्त होता था। जब वह जवाब नहीं दे पाती थी या देना नहीं चाहती थी, तो वह सवाल को पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर देती थी, मानो उसने सुना ही न हो। बिल्कुल कोमात्सु की तरह। इस मामले में वे एक जैसे थे। लेकिन तेंगो ऐसा नहीं था; उससे चाहे जैसा भी सवाल पूछा जाए, वह यथासंभव ईमानदारी से जवाब देता था, और यह स्पष्ट रूप से उसका जन्मजात गुण था।
*

शाम पांच बजे उसकी प्रेमिका उसे फोन करती है।
“तुम क्या कर रहे थे?” उसने पूछा।
"मैं सारा दिन लिखता रहा," टेंगो ने जवाब दिया। आधा झूठ, आधा सच। उसने अपने उपन्यास के बारे में नहीं लिखा था। लेकिन उसे इतनी सारी बातें बताने की ज़रूरत भी नहीं थी।
और क्या आपकी सैलरी बढ़ी?
- हम कहते हैं।
"आज न आ पाने के लिए क्षमा करें। मुझे लगता है कि हम अगले सप्ताह मिल सकते हैं।"
"मुझे खुशी है," टेंगो ने कहा।
- मैं भी।
उसने उसे अपने बच्चों के बारे में बताया। वह अक्सर ऐसा करती थी। उसकी दो छोटी बेटियाँ थीं। टेंगो का कोई भाई-बहन नहीं था और ज़ाहिर है, उसके अपने बच्चे भी नहीं थे। उसे छोटे बच्चे होने का अनुभव नहीं था। लेकिन उसे कोई आपत्ति नहीं थी, और उसने उसे अपनी बेटियों के बारे में बताया। टेंगो ज़्यादा बातूनी नहीं था। उसे दूसरों की बातें सुनना ज़्यादा पसंद था, और इसीलिए उसने उस महिला की बातें बड़े चाव से सुनीं। बड़ी बेटी दूसरी कक्षा में पढ़ती थी और लगता था कि

स्कूल में उसके सहपाठी उसे तंग करते थे। उसने कुछ नहीं कहा, लेकिन उसने स्कूल की एक और बच्ची की माँ से यह बात सुनी थी। टेंगो उस छोटी बच्ची से मिला तो नहीं था, लेकिन उसने एक बार उसकी तस्वीर देखी थी। वह अपनी माँ से बिल्कुल अलग दिखती थी।
“लेकिन वे उसे क्यों चिढ़ा रहे हैं?” उसने पूछा।
"उसे अस्थमा के दौरे पड़ते हैं और इस वजह से वह दूसरे बच्चों के साथ कुछ काम नहीं कर पाती। शायद यही कारण हो। वैसे तो वह शांत स्वभाव की लड़की है और उसके पढ़ाई के स्तर में भी कोई कमी नहीं है।"
"लेकिन यह तो सरासर बेतुका है!" टेंगो ने कहा। "अस्थमा से पीड़ित बच्चे की रक्षा की जानी चाहिए, उसे धमकाया नहीं जाना चाहिए!"
"बच्चे इस तरह नहीं सोचते," उसने आह भरते हुए कहा। "अगर आप समूह के बाकी लोगों से अलग हैं, तो आपको तुरंत बहिष्कृत कर दिया जाता है। वयस्कों की दुनिया में भी ऐसा होता है, लेकिन बच्चों में ये चीजें कहीं अधिक प्रत्यक्ष रूप ले लेती हैं।"
- आपका क्या मतलब है?
उन्होंने उसे ठोस उदाहरण दिए। एक-एक करके देखें तो ये कोई बहुत गंभीर बात नहीं थी, लेकिन अगर ये रोज़ाना जारी रहे तो ये ऐसी चीजें थीं जो एक बच्चे को प्रभावित कर सकती थीं: वे आपसे कुछ छिपाते हैं; वे आपको नज़रअंदाज़ करते हैं और आपसे बात नहीं करते; वे जानबूझकर आपकी नकल करते हैं।
"क्या आपने बचपन में इनमें से किसी भी चीज़ का अनुभव नहीं किया?"
टेंगो को अपना बचपन याद आ गया।
मुझे ऐसा नहीं लगता। या शायद मैंने ऐसा किया हो, लेकिन मुझे इसका एहसास नहीं हुआ।
"अगर आपको इसका एहसास नहीं हुआ, तो आपने वास्तव में इसे झेला ही नहीं है। ये मज़ाक ऐसी चीज़ें नहीं हैं जिन्हें आप अनदेखा कर देते हैं; इनका मकसद आपको यह एहसास दिलाना होता है कि आपका मज़ाक उड़ाया जा रहा है। आप बदमाशी का शिकार होकर अनजान नहीं रह सकते।"
टेंगो बचपन से ही ताकतवर और विशालकाय था। हर कोई उसका सम्मान करता था। शायद इसीलिए उसे कभी किसी ने तंग नहीं किया था। हालांकि, उस समय टेंगो के सामने तंग किए जाने से भी बड़ी समस्या थी।
“लेकिन क्या आपको कभी तंग किया गया था?” उसने पूछा।
"नहीं," उसने स्पष्ट रूप से उत्तर दिया। फिर, कुछ झिझक के बाद, उसने आगे कहा: "लेकिन मैंने तुम्हें चिढ़ाया था।"
— क्या दूसरे बच्चों के साथ?
हां। जब हम पांचवीं कक्षा में थे, तो हम सबने मिलकर तय किया था कि हम एक सहपाठी से बात नहीं करेंगे। मुझे याद भी नहीं कि क्यों। शायद कोई वजह रही होगी, पर मुझे याद नहीं, जिसका मतलब है कि कोई खास वजह नहीं थी। खैर, मुझे आज भी अफसोस है कि मैंने ऐसा किया। मेरे दिमाग में क्या चल रहा था? मुझे भी समझ नहीं आता। टेंगो को अचानक एक पुरानी घटना याद आ गई, जो बहुत समय पहले घटी थी, लेकिन बार-बार उसके दिमाग में घूमती रहती थी। वह इसे भूल नहीं पा रहा था, लेकिन उसने कभी किसी को बताया नहीं था। पहली बात तो यह कि कहानी बहुत लंबी थी, और दूसरी बात यह

कि यह ऐसी घटना थी जिसे बताने पर उसके सबसे महत्वपूर्ण पहलू खो जाते हैं। उसने यह बात किसी को नहीं बताई थी और शायद कभी बताएगा भी नहीं।
महिला आगे कहती है, "सच तो यह है कि आप बहिष्कार करने वालों के पक्ष में होने पर ज़्यादा सुरक्षित महसूस करते हैं, न कि बहिष्कार किए जाने वालों के पक्ष में। आप मन ही मन कहते हैं, 'अच्छा हुआ कि मैं उनमें से नहीं हूँ!' किसी भी युग और किसी भी समाज में, अंततः स्थिति एक जैसी ही रहती है। यदि आप बहुसंख्यक लोगों के पक्ष में हैं, तो आपको चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है।"
और जब आप कुछ लोगों का साथ देते हैं, तो आप केवल अपने लिए ही समस्याएं पैदा करते हैं।
"कुछ हद तक," उसने उदास स्वर में उत्तर दिया। "लेकिन कम से कम ऐसी परिस्थितियों में आप अपना दिमाग इस्तेमाल करना शुरू कर देते हैं।"
तुम अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करके खुद को मुसीबत में डाल रहे हो!
— खैर, यही तो असल समस्या है!
"तुम्हें इतनी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है," टेंगो ने कहा। "यह उतना गंभीर नहीं होगा। मुझे यकीन है कि उसके सहपाठियों में कुछ समझदार बच्चे ज़रूर होंगे।"
"हाँ, बिल्कुल," उसने जवाब दिया। फिर उसने थोड़ी देर सोचा।
फोन का रिसीवर कान से लगाए हुए, टेंगो धैर्यपूर्वक महिला के अपने विचारों को समाप्त करने की प्रतीक्षा करने लगा।
"धन्यवाद। आपसे बात करके मुझे अच्छा लगा," उसने कुछ देर बाद कहा। ऐसा लगा जैसे उसे कोई विचार आ गया हो।
मुझे भी अच्छा लग रहा है।
- क्यों?
"क्योंकि मैंने तुमसे बात की थी।"
“अगले शुक्रवार!” उसने आगे कहा।
*

फोन रखने के बाद, टेंगो पास के एक सुपरमार्केट में गया और कुछ सामान खरीदा। जब वह कागज़ का थैला लिए घर लौटा, तो उसने मछली और सब्ज़ियों को एक-एक करके प्लास्टिक में लपेटकर फ्रिज में रख दिया। फिर वह रेडियो पर संगीत सुनते हुए अपना खाना बनाने लगा, तभी फोन की घंटी बजी। एक ही दिन में चार बार फोन बजना असामान्य था। ऐसा साल में एक बार होता था। इस बार फुकाएरी का फोन था।
"रविवार वाली बात," उसने बिना किसी भूमिका के कहा।
रिसीवर से गाड़ियों के हॉर्न की तेज़ आवाज़ आ रही थी। ड्राइवर बहुत घबराया हुआ लग रहा था। फुकाएरी ने उसे किसी व्यस्त सड़क पर लगे पे फोन से फोन किया होगा।
"रविवार, यानी परसों, जब हम मिलेंगे और मैं किसी और से मिलने जा रहा हूँ," टेंगो ने फुकेरी के रूखे भाव में कुछ गंभीरता जोड़ते हुए कहा।
“सुबह नौ बजे, शिंजुकु स्टेशन पर, ताचिकावा की ओर जाने वाले प्लेटफार्म के आखिरी छोर पर,” उसने कहा। तीन जानकारियों को एक साथ जोड़ दिया गया।
— तो हम चूओ लाइन के प्लेटफॉर्म पर, पहले डिब्बे के बगल में मिलेंगे, क्या आपका यही मतलब है?
- हाँ।

मुझे कितने सफर के लिए टिकट खरीदना चाहिए?
- कोई फर्क नहीं पड़ता कि।
"क्योंकि मैं कोई भी टिकट खरीद सकता हूँ, और जब हम अपने गंतव्य पर पहुँचेंगे तो मैं कीमत का अंतर चुका सकता हूँ," टेंगो ने सोचा, मानो वह 'द क्राइसालिस' को मन ही मन फिर से लिख रहा हो। क्या हम बहुत दूर जा रहे हैं?"
"तुम क्या कर रहे थे?" फुकाएरी ने तेंगो के सवाल को पूरी तरह से अनदेखा करते हुए कहा।
मैं रात का खाना बना रही थी।
— सी.
"मैं अकेला खाना खा रहा हूँ, इसलिए कुछ खास नहीं बना रहा हूँ। मैं कद्दूकस की हुई सफेद मूली के साथ सूखी बैराकुडा मछली तल रहा हूँ। फिर, क्लैम और हरे प्याज के साथ मिसो सूप, साथ में कुछ टोफू। इसके अलावा, समुद्री शैवाल, चावल और कुछ अचार वाली चीनी पत्तागोभी के साथ खीरे का सलाद। बस इतना ही।"
- सुनने में तो अच्छा लगता है।
"जी? मुझे तो इसमें कुछ खास नहीं लगता। मैं आमतौर पर यही खाता हूँ," टेंगो ने कहा।
फुकेरी चुप रही। लंबे समय तक चुप्पी रहने से उसे कोई खास परेशानी नहीं हुई।
लेकिन तेंगो ऐसा नहीं था।
उन्होंने कहा, "वैसे, मैंने आज 'द एयर क्राइसालिस' पर काम शुरू कर दिया है। मुझे अभी तक आपकी अंतिम मंजूरी नहीं मिली है, लेकिन चूंकि दिन गिने-चुने हैं, अगर मैंने अभी तक शुरू नहीं किया होता, तो मेरे पास इसे पूरा करने का समय नहीं होता।"
"कोमात्सु-सान ने यही कहा था।"
"बिल्कुल सही। उन्होंने मुझसे इसे दोबारा लिखना शुरू करने को कहा।"
— आप कोमात्सु-सान के अच्छे दोस्त हैं।
"हाँ, मुझे ऐसा लगता है," उन्होंने कहा, हालाँकि उन्हें यकीन नहीं था कि दुनिया में कोई ऐसा व्यक्ति है जो कोमात्सु के करीब हो सकता है। उन्होंने कुछ नहीं कहा, क्योंकि इससे बातचीत अनावश्यक रूप से लंबी हो जाती।
लेखन कार्य अच्छा चल रहा है।
— फिलहाल तो हां। सामान्य तौर पर।
— कितना अच्छा!
फुकाएरी ने यह बात महज़ शिष्टाचारवश नहीं कही थी। वह वास्तव में इस बात से बहुत खुश थी कि किताब पर काम अच्छी तरह चल रहा था, लेकिन उनकी सीमित अभिव्यक्ति इस सामान्य स्तर से आगे नहीं बढ़ सकी।
"मुझे उम्मीद है कि आपको यह पसंद आएगा," टेंगो ने कहा।
"मुझे चिंता नहीं है," उसने तुरंत कहा।
“आपको ऐसा क्यों लगता है?” टेंगो ने पूछा।
लेकिन फुकाएरी ने कोई जवाब नहीं दिया। रिसीवर पर वह चुप रही। यह जानबूझकर की गई चुप्पी थी, शायद तेंगो को कुछ सोचने पर मजबूर करने के लिए। हालांकि, तेंगो चाहे कितना भी सोच-विचार कर ले, उसे फुकाएरी का आत्मविश्वास समझ में नहीं आया।

"सुनो, मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता था," उसने चुप्पी तोड़ने की कोशिश करते हुए कहा। "क्या तुम सचमुच किसी कम्यून में रहती थी और बकरियों की देखभाल करती थी? क्योंकि तुम्हारा वर्णन बहुत यथार्थवादी है। इसीलिए मैं जानना चाहता था कि क्या तुमने सचमुच ऐसा कुछ अनुभव किया है।"
फुकेरी ने धीरे से खांसा।
मैं बकरी की बात नहीं कर रहा हूँ।
"ठीक है," टेंगो ने कहा। "अगर आप बात नहीं करना चाहते, तो कोई बात नहीं। मैंने तो बस एक सवाल पूछा था, चिंता मत कीजिए। एक लेखक के लिए काम ही सब कुछ होता है। और ज़्यादा स्पष्टीकरण देने की ज़रूरत नहीं है। तो, रविवार को मिलते हैं। जब हम दूसरे व्यक्ति से मिलें, तो क्या मुझे किसी बात का ध्यान रखना चाहिए?"
- मैं नहीं समझता।
"मेरा मतलब है... जैसे, क्या मुझे अच्छे कपड़े पहनने चाहिए या क्या मुझे कोई उपहार ले जाना चाहिए वगैरह। ऐसी ही चीजें। क्योंकि मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं है कि जिस व्यक्ति से मैं मिलने जा रही हूं वह कैसा है।"
फुकेरी फिर चुप हो गया। लेकिन इस बार यह जानबूझकर की गई चुप्पी नहीं थी। वह टेंगो के प्रश्न का उद्देश्य या अर्थ समझ ही नहीं पा रहा था। उसके शब्द फुकेरी की चेतना तक नहीं पहुँचे थे, बल्कि शून्यता में हमेशा के लिए समा गए थे। ठीक वैसे ही जैसे कोई रॉकेट किसी अकेले ग्रह की खोज में प्लूटो को पार कर गया हो।
"कोई बात नहीं। कोई फर्क नहीं पड़ता," टेंगो ने कहा। फुकाएरी से यह सवाल पूछना एक गलती थी। "चलो, मैं कुछ फल खरीद लेता हूँ," उसने सोचा। "ठीक है, रविवार को नौ बजे," उसने आगे कहा।
फुकेरी ने कुछ और सेकंड इंतजार किया, फिर फोन काट दिया। न अलविदा, न कुछ और। उसने बस फोन उसके नाक पर पटक दिया।
या शायद उसने टेंगो को सिर हिलाकर इशारा किया हो। लेकिन दुर्भाग्य से, अधिकतर मामलों में, शारीरिक हाव-भाव से फ़ोन पर कोई असर नहीं पड़ता। टेंगो ने रिसीवर वापस रखा, दो गहरी साँसें लीं और अपना ध्यान वास्तविक चीज़ों पर केंद्रित करते हुए, अपने सादे भोजन की तैयारी जारी रखी।

अध्याय 7 धीरे-धीरे, तितलियों को न जगाएं

शनिवार दोपहर एक बजे के बाद, आओमामे विलो हाउस के पास रुकी। घर के आंगन में कई पुराने, विशाल विलो के पेड़ थे जो चारों ओर की पत्थर की दीवार से ऊपर तक फैले हुए थे, और जब हवा चलती थी, तो वे चुपचाप ऐसे झूलते थे मानो खोई हुई आत्माओं का झुंड हो। इसीलिए स्थानीय लोगों ने पश्चिमी शैली में बने इस पुराने घर का नाम "विलो हाउस" रख दिया था। यह अज़ाबू में एक खड़ी ढलान पर काफी ऊंचाई पर स्थित था। पक्षी शाखाओं पर आराम कर रहे थे, और एक बड़ी बिल्ली छत पर धूप सेंक रही थी। आसपास की गलियां संकरी, घुमावदार और सुनसान थीं। ऊंचे पेड़ों के कारण, दिन में भी अर्ध-अंधेरे का एहसास होता था। जब आप दुनिया के इस कोने में चलते थे, तो ऐसा लगता था कि समय थोड़ा धीरे चल रहा है। इलाके में कुछ दूतावास थे, लेकिन वहां ज्यादा आवाजाही नहीं होती थी। आमतौर पर वहां एकदम सन्नाटा रहता था, लेकिन गर्मियों में झींगुरों की तेज आवाज से माहौल बदल जाता था।
ओमामे ने डोरबेल बजाई और इंटरकॉम पर अपना नाम बताया। फिर, हल्की सी मुस्कान के साथ, उसने अपना चेहरा अपने सिर के ऊपर लगे कैमरे की ओर घुमाया। लोहे का गेट अपने आप खुला और उसके पीछे बंद हो गया। ओमामे हमेशा की तरह आंगन पार करके प्रवेश द्वार की ओर चल पड़ी। यह जानते हुए कि कैमरे उसे देख रहे हैं, वह एक पुतले की तरह छोटे-छोटे कदमों से, सीधी पीठ और आगे की ओर झुकी हुई चल रही थी। उसने कैजुअल कपड़े पहने थे - जींस, ग्रे स्वेटशर्ट और नेवी जैकेट। सफेद स्नीकर्स और कंधे पर एक बैग। इस बार उसके पास छेनी नहीं थी। जब उसे इसकी ज़रूरत नहीं होती थी, तो वह इसे अलमारी के दराज में रख देती थी।
मुख्य द्वार के सामने सागौन की कुछ कुर्सियाँ रखी थीं, और उनमें से एक पर एक लंबा आदमी दुबका बैठा था। वह बहुत लंबा तो नहीं था, लेकिन देखकर ही पता चलता था कि उसका शरीर बहुत सुगठित था। उसकी उम्र लगभग चालीस वर्ष थी, सिर मुंडा हुआ था और मूंछें करीने से संवारी हुई थीं। उसने चौड़े कंधों वाला धूसर सूट, सफेद कमीज और गहरे धूसर रंग की रेशमी टाई पहनी हुई थी। उसके जूते बेदाग काले रंग के थे। दोनों कानों में बालियाँ थीं। वह किसी जिला नगर निगम के कैशियर या कार बीमा एजेंट जैसा नहीं दिखता था। पहली नज़र में वह एक पेशेवर अंगरक्षक लगता था, और यही उसका पेशा था। कभी-कभी वह ड्राइवर का काम भी करता था। उसने कराटे में उच्च प्रशिक्षण प्राप्त किया था, और ज़रूरत पड़ने पर वह कुशलता से हथियार चलाना जानता था। वह अपने दांत दिखा सकता था और किसी से भी ज़्यादा हिंसक हो सकता था। लेकिन आमतौर पर वह शांत, सौम्य और बुद्धिमानी से व्यवहार करता था। अगर आप उसे ध्यान से देखते – अगर वह आपको देखने की अनुमति देता – तो आपको उसके भीतर एक गर्मजोशी भरी चमक दिखाई देती।
खास तौर पर, उन्हें तरह-तरह के उपकरणों से छेड़छाड़ करना, 60 और 70 के दशक के प्रोग्रेसिव रॉक रिकॉर्ड्स इकट्ठा करना पसंद था। वे अपने प्रेमी, एक युवा और आकर्षक स्टाइलिस्ट के साथ अज़ाबू में रहते थे। उनका नाम तमारू था। किसी को नहीं पता था कि यह उनका पहला नाम था या अंतिम नाम, या इसे किस रूप में लिखा जाता था। सब उन्हें तमारू-सान कहकर बुलाते थे, बस इतना ही।

कुर्सी पर बैठे हुए तमारू ने आओमामे की ओर देखा और सिर हिलाया।
"नमस्कार," आओमामे ने उनका अभिवादन किया और उनके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई।
"मैंने सुना है कि शिबुया के एक होटल में एक आदमी की मौत हो गई है," उसने अपने कॉर्डोवन जूतों की चमक का निरीक्षण करते हुए कहा।
"मुझे नहीं पता था," आओमामे ने जवाब दिया।
"क्योंकि यह खबर लायक नहीं है। दिल का दौरा। अफसोस की बात है, वह केवल चालीस वर्ष के थे।"
दिल के साथ खिलवाड़ नहीं करना चाहिए।
तामारू ने सिर हिलाया।
— आपका जीवन जीने का तरीका बहुत महत्वपूर्ण है। अनियमित जीवनशैली, तनाव और अपर्याप्त नींद जानलेवा साबित हो सकती है।
देर-सवेर आपको कुछ न कुछ मिल ही जाएगा।
— सैद्धांतिक रूप से, हाँ।
“क्या वे शव का पोस्टमार्टम करने वाले हैं?” आओमामे ने पूछा।
तामारू नीचे झुका और अपने जूते से धूल का एक लगभग अदृश्य कण पोंछ दिया।
"पुलिस के पास भी बहुत काम है। बजट सीमित है। उन्हें बिना किसी बाहरी चोट के साबुत शव का पोस्टमार्टम करने की ज़रूरत नहीं है। और परिवार के नज़रिए से देखें तो उस व्यक्ति की मृत्यु शांतिपूर्वक हुई है, इसलिए मुझे नहीं लगता कि वे उसे इस तरह टुकड़ों में काटना चाहेंगे।"
"विशेषकर उनकी विधवा।"
तामारू कुछ देर चुप रहा, फिर उसने अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ाया, जो मुक्केबाजी के दस्ताने की तरह मोटा था। आओमामे ने उसे कसकर पकड़ लिया।
"थोड़ा आराम करो, तुम थक गई होगी," उसने उससे कहा।
आओमामे मुस्कुराते समय एक सामान्य व्यक्ति की तरह अपने होंठों के कोनों को थोड़ा ऊपर उठाती है, लेकिन उसके चेहरे पर कोई मुस्कान नहीं है, केवल मुस्कान का भ्रम है।
“बन क्या कर रही है?” उसने पूछा।
— ओह, बहुत बढ़िया।
दरअसल, वह एक जर्मन शेफर्ड कुत्ता थी। वह बहुत अच्छी और समझदार थी, लेकिन उसकी कुछ अजीबोगरीब आदतें थीं।
क्या वह अब भी पालक खाता है?
"यह बहुत बुरा है। और हाल ही में इसकी कीमत इतनी बढ़ गई है कि मुझे इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ रही है। इसमें बहुत पैसा खर्च हो रहा है।"
मैंने कभी किसी कुत्ते को पालक का पीछा करते हुए नहीं सुना।
— उसे नहीं लगता कि वह कुत्ता है।
लेकिन किस बात पर विश्वास किया जाता है?
— एक बिल्कुल अद्वितीय प्राणी, जो इस तरह के वर्गीकरणों से परे है।
— एक सुपरडॉग?
- शायद।
"और इसीलिए उसे पालक पसंद है?"

"पालक का इससे कोई लेना-देना नहीं है, उसे बस पालक पसंद है। उसे बचपन से ही पालक पसंद है।"
"लेकिन शायद इसी वजह से उसके मन में खतरनाक विचार आए।"
"शायद," तामारू ने अपनी घड़ी देखते हुए जवाब दिया। "वैसे, आज आपकी डेढ़ बजे मीटिंग है, है ना?"
"हां। अभी उसमें थोड़ा समय है," आओमामे ने सहमति जताई।
तामारू धीरे-धीरे खड़ा हुआ।
"एक मिनट यहीं रुकिए। हो सकता है मैं काम जल्दी करवा सकूँ," उसने कहा और दरवाजे से बाहर निकल गया।
ओमामे भव्य विलो वृक्षों को निहारते हुए प्रतीक्षा कर रही थी। हवा बिल्कुल नहीं चल रही थी और उनकी शाखाएँ ध्यानमग्न लोगों की तरह ज़मीन पर झुकी हुई थीं।
थोड़ी देर बाद, तामारू लौट आया।
"पीछे से आ जाओ। आज ग्रीनहाउस में मिलते हैं।"
वे दोनों पिछवाड़े में घूमते हुए विलो पेड़ों की कतार के पास से होते हुए ग्रीनहाउस की ओर चल पड़े। ग्रीनहाउस मुख्य भवन के पीछे था। उसके चारों ओर कोई पेड़ नहीं थे, खासकर इसलिए कि उसे पूरी धूप मिल सके। तमारू ने सावधानी से कांच का दरवाजा खोला ताकि कोई तितली बाहर न निकल जाए और आओमामे को अंदर आने दिया। फिर वह अंदर घुस गया और तुरंत दरवाजा बंद कर लिया। उसके कद-काठी का आदमी ये हरकतें इतनी सहजता से नहीं कर सकता था। उसने इन्हें संक्षेप में और सटीकता से किया। बस, बिना किसी नज़ाकत के।
कांच से घिरे विशाल ग्रीनहाउस में बसंत का आगमन हो चुका था। अनगिनत प्रजातियों के खूबसूरत फूल खिल उठे थे। इनमें से अधिकतर साधारण पौधे थे। ग्लेडियोली, एनीमोन, डेज़ी और अन्य फूल जो हर जगह दिखते हैं, गमलों में सजे हुए थे। इनमें से कुछ ऐसे थे जो आओमामे को खरपतवार जैसे लग रहे थे। महंगे ऑर्किड, गुलाब की दुर्लभ किस्में, पोलिनेशिया के चटख रंगों वाले फूल या उस तरह के अन्य पौधों का कोई नामोनिशान नहीं था। आओमामे को पौधों में खास दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन उसे यह सादा ग्रीनहाउस बहुत अच्छा लगा।
इसके बजाय, वहाँ बहुत सारी तितलियाँ रहती थीं। इस विशाल कांच के कमरे में अनोखे पौधे उगाने के बजाय, घर की मालकिन अनोखी तितलियाँ पालने में ज़्यादा रुचि रखती थीं। इनमें से ज़्यादातर पौधे अमृत से भरपूर थे, जो उन्हें पसंद थे। ग्रीनहाउस में तितलियाँ पालने के लिए असाधारण देखभाल, कौशल और मेहनत की आवश्यकता होती है, लेकिन आओमामे को समझ नहीं आ रहा था कि इतनी देखभाल किस लिए। गर्मी के महीनों को छोड़कर, मकान मालकिन कभी-कभी आओमामे को ग्रीनहाउस में बुलाती थीं, जहाँ वे बैठकर निजी बातें करती थीं। कांच की दीवारों के कारण बाहर से किसी के भी उनकी बातचीत सुनने का कोई खतरा नहीं था। और उनकी बातचीत ऐसी नहीं थी जिसे कहीं भी ऊँची आवाज़ में किया जा सके। इसके अलावा, उनके आसपास के फूल और तितलियाँ उन्हें सुकून देती थीं, जो उनके चेहरे पर तुरंत दिखाई देता था। आओमामे को अंदर थोड़ी गर्मी लगती थी, लेकिन असहनीय नहीं।
घर की मालकिन लगभग पचहत्तर वर्ष की एक छोटी कद की महिला थीं। उनके बाल सुंदर, सफेद और छोटे कटे हुए थे। उन्होंने लंबी आस्तीन वाली कैलिको कमीज, क्रीम रंग की सूती पतलून और गंदे स्नीकर्स पहने हुए थे। उन्होंने सफेद काम के दस्ताने

पहने हुए थे और एक बड़े धातु के पानी देने वाले डिब्बे से एक-एक करके गमलों में पानी डाल रही थीं। उनके सारे कपड़े शायद थोड़े बड़े साइज के थे, लेकिन उन पर बहुत अच्छे लगते थे। जब भी आओमामे उन्हें देखतीं, तो उनके सहज, स्वाभाविक और शालीन व्यवहार के प्रति सम्मान का भाव उनके मन में जाग उठता था।
वह एक प्रसिद्ध उद्योगपति की पुत्री थीं, जिनका विवाह युद्ध से पहले एक कुलीन परिवार में हुआ था, लेकिन वे देखने में बिल्कुल भी नाजुक या दुर्बल नहीं लगती थीं। युद्ध के तुरंत बाद उन्होंने अपने पति को खो दिया और फिर परिवार की छोटी निवेश कंपनी के प्रबंधन में जुट गईं, जहाँ उन्होंने शेयरों की खरीद-बिक्री में अद्वितीय कौशल का प्रदर्शन किया। कोई भी यह पहचान सकता था कि उनमें जन्मजात प्रतिभा थी। उनकी मदद से कंपनी ने तेजी से विकास किया और उन्हें विरासत में मिली संपत्ति में भी काफी वृद्धि हुई। इस धन से उन्होंने महानगर क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण भूखंड खरीदे, जो अन्य कुलीनों या शाही परिवार के सदस्यों के स्वामित्व में थे। दस साल पहले ही वे सेवानिवृत्त हो चुकी थीं और उन्होंने अपने शेयरों को ऊँची कीमत पर बेचने का सही समय सोच-समझकर चुना था, जिससे उनकी संपत्ति और भी बढ़ गई। उन्होंने यथासंभव सार्वजनिक रूप से प्रकट होने से परहेज किया और इसलिए समाज में लगभग अज्ञात थीं, लेकिन व्यापार जगत में ऐसा कोई नहीं था जिसने उनके बारे में न सुना हो। यह अफवाह थी कि राजनीतिक जगत में भी उनके मजबूत संबंध थे। इसके अलावा, वे एक दयालु और बुद्धिमान महिला थीं, जो निर्भीक थीं। उसने अपनी अंतरात्मा पर भरोसा किया और एक बार मन बना लेने के बाद वह अडिग रही।
जब उसने आओमामे को देखा, तो उसने स्प्रिंकलर नीचे रख दिया और उसे दरवाजे के पास रखी धातु की बगीचे की कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। आओमामे उस कुर्सी पर बैठ गई जो उसे दी गई थी, और वह उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई। वह लगभग चुपचाप चली, जैसे कोई लोमड़ी जंगल में दबे पांव चलती है।
“क्या मैं आपके लिए कुछ पीने को लाऊं?” तामारू ने पूछा।
“एक गर्म हर्बल चाय,” उसने जवाब दिया, फिर आओमामे की ओर देखा। “और तुम?”
- जो उसी।
तामारू ने संक्षिप्त रूप से सिर हिलाया और बाहर निकलने की ओर चल पड़ा। उसने सुनिश्चित किया कि आसपास कोई तितली न हो, फिर उसने दरवाज़ा थोड़ा सा खोला, तेज़ी से बाहर निकला और बंद कर दिया। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी नृत्य-कविता के चरणों का अनुसरण कर रहा हो।
उस महिला ने अपने सूती दस्ताने ऐसे उतारे जैसे रेशमी दस्ताने किसी पार्टी के लिए पहने हों और उन्हें मेज पर करीने से एक के ऊपर एक करके रख दिया। फिर उसने अपनी काली, चमकती आँखों से आओमामे को देखा, ऐसी आँखें जिन्होंने बहुत कुछ देखा था। आओमामे ने भी उसे देखा, बस इतना कि असभ्य न लगे।
उन्होंने कहा, "मैंने सुना कि एक और व्यक्ति का निधन हो गया है। तेल उद्योग में एक बहुत ही जाने-माने व्यक्ति। वह युवा थे, लेकिन जाहिर तौर पर उनका काफी प्रभाव था।"
वह महिला हमेशा इतनी धीमी आवाज़ में बोलती थी कि हवा का एक झोंका भी उसकी फुसफुसाहट को दबा देता। जो भी उसे सुनता, उसे उसकी बातों पर पूरा ध्यान देना पड़ता था। कभी-कभी आओमामे का मन करता कि वह आवाज़ का नॉब दाईं ओर घुमा दे। लेकिन, ज़ाहिर है, वहाँ ऐसा कोई नॉब नहीं था, इसलिए वह बस ध्यान से सुनती रही।

"लेकिन जहां तक हम देख सकते हैं, उनके अचानक गायब होने से कोई बड़ी असुविधा नहीं हुई। दुनिया चलती रहती है," आओमामे ने कहा।
महिला मुस्कुराई।
“इस दुनिया में ऐसा कोई नहीं है जिसकी जगह कोई और न ले सके। चाहे आप कितना भी ज्ञानी हों, चाहे आप कितना भी काबिल हों, कहीं न कहीं कोई न कोई ऐसा ज़रूर होगा जो आपकी जगह ले सकता है। अगर दुनिया में हर जगह अपूरणीय लोग होते, तो हम सब कष्ट भोगते। बेशक...” उसने कहा और अपनी बात पर ज़ोर देने के लिए अपने दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली हवा में उठाई। “मुझे नहीं लगता कि आप जैसे किसी व्यक्ति का कोई विकल्प हो सकता है।”
"शायद मेरे लिए नहीं, लेकिन मैं जो कर सकती हूं उसके हिसाब से मुझे नहीं लगता कि यह बहुत मुश्किल होगा," आओमामे ने टिप्पणी की।
महिला ने संतुष्टि भरी मुस्कान के साथ चुपचाप उसकी ओर देखा।
"शायद," उसने कहा। "लेकिन अगर ऐसा होता, तो अब हमारे बीच एक भी बात समान नहीं होती। तुम तुम हो और कोई और नहीं, और मैं तुम्हारी बहुत आभारी हूँ। मैं तुम्हें बता भी नहीं सकती कि मैं कितनी आभारी हूँ।"
महिला झुकी और अपने हाथ आओमामे के हाथों पर रख दिए। उसने दस सेकंड तक उन्हें वहीं रखा, फिर हाथ हटाकर चेहरे पर प्रसन्नता का भाव लिए खड़ी हो गई। लाल धब्बों वाली एक सफेद तितली उड़कर आई और उसके कंधे पर, उसकी नीली कमीज़ पर बैठ गई। वह वहाँ निर्भय होकर झपकी लेने लगी।
"मुझे लगता है आपने पहले कभी ऐसी तितलियाँ नहीं देखी होंगी," महिला ने कंधे के ऊपर से देखते हुए कहा, उसकी आवाज़ में थोड़ा गर्व झलक रहा था। "ओकिनावा में भी इन्हें ढूंढना आसान नहीं है। ये तितलियाँ एक खास तरह के पौधे पर पलती हैं जो सिर्फ ओकिनावा के पहाड़ों में उगता है। इन्हें पालने के लिए, मुझे पहले उस पौधे को यहाँ लाना पड़ा और उसकी खेती करनी पड़ी। यह काफी मुश्किल काम है। और हां, महंगा भी।"
— मुझे लगता है कि आपको यह तितली बहुत पसंद है।
महिला मुस्कुराई।
— उसे लगता है कि मैं उसकी प्रेमिका हूँ।
क्या आप तितलियों से दोस्ती कर सकते हैं?
"उनसे दोस्ती करने के लिए आपको पहले प्रकृति का हिस्सा बनना होगा। इंसान होना छोड़ देना होगा, स्थिर खड़े होकर खुद को एक पेड़, एक फूल, एक घास के तिनके के रूप में देखना होगा। इसमें लंबा समय लगता है, लेकिन एक बार जब वे अपना संकोच छोड़ देते हैं, तो आप उनसे बहुत ही स्वाभाविक तरीके से दोस्त बन जाते हैं।" "क्या आप इन्हें नाम देते हैं?" आओमामे ने जिज्ञासावश पूछा। "आपका मतलब है कि आप इन्हें कुत्तों या बिल्लियों की तरह अलग-अलग नाम देते हैं?"
— नहीं, मैं इन्हें नाम नहीं देती, महिला ने सिर हिलाते हुए उत्तर दिया। मैं इन्हें इनके आकार और रंग से पहचान सकती हूँ, बिना नाम के भी। और वैसे भी, मेरे पास इन्हें नाम देने का समय नहीं होगा, क्योंकि ये मर जाएँगी। ये मेरे क्षणभंगुर और गुमनाम दोस्त हैं। मैं यहाँ हर दिन आती हूँ, इन्हें देखती हूँ, इनका अभिवादन करती हूँ और इनसे बातें करती हूँ। लेकिन जब इनका समय आता है, तो ये चुपचाप गायब हो जाती हैं। मुझे यकीन है कि ये मर जाती हैं, लेकिन मैं इन्हें कितना भी ढूँढ़ लूँ, इनके अवशेष कभी नहीं मिलते। ये बिना कोई निशान

छोड़े गायब हो जाती हैं, मानो हवा ने इन्हें निगल लिया हो। तितलियाँ सबसे क्षणभंगुर और नाज़ुक जीव हैं। ये मानो कहीं से भी जन्म लेती हैं, अपना छोटा और सरल जीवन चक्र पूरा करती हैं, और फिर गायब हो जाती हैं। ये किसी दूसरी दुनिया में विलीन हो जाती हैं।
ग्रीनहाउस की हवा गर्म और नम थी, खुशबूओं से भरी हुई। तितलियाँ इधर-उधर फड़फड़ा रही थीं, मानो चेतना की एक ऐसी धारा में क्षणिक विराम चिह्न हों जिसका कोई आरंभ या अंत न हो। हर बार जब आओमामे ग्रीनहाउस में प्रवेश करती, तो उसे ऐसा लगता जैसे वह समय का ध्यान खो रही हो।
तामारू एक ट्रे लेकर आया जिस पर एक खूबसूरत सेलेडॉन चायदानी और दो मैचिंग कप रखे थे। उनके बगल में उसने बिस्कुट की एक प्लेट और सूती नैपकिन रखे थे। हर्बल चाय की खुशबू आसपास के फूलों की महक के साथ घुलमिल गई।
"धन्यवाद, तामारू, मैं इसका ध्यान रखूंगी," महिला ने कहा।
तमारू ने ट्रे मेज पर रखी, झुककर प्रणाम किया और बिना किसी को आहट सुनाए चली गई। पहले की तरह ही, वह ग्रीनहाउस से बाहर निकली और उसी कोमल भाव से दरवाजा खोला और बंद किया। महिला ने चायदानी का ढक्कन हटाया, उसकी सुगंध को सूंघा, यह देखा कि पत्तियाँ ठीक से खिल गई हैं या नहीं, फिर बारी-बारी से हर कप में चाय डाली, इस बात का ध्यान रखते हुए कि चाय की मात्रा बराबर हो।
"मुझे पता है कि यह मेरा मामला नहीं है, लेकिन आप प्रवेश द्वार पर जाली वाला दरवाजा क्यों नहीं लगा देते?" आओमामे ने पूछा।
महिला ने उसकी ओर देखा।
— मेश?
— जी हां, अगर आप अंदर की तरफ जाली वाला दरवाजा लगा दें, तो आपको हर बार अंदर या बाहर जाते समय तितली के उड़ जाने की चिंता नहीं करनी पड़ेगी।
महिला ने अपने बाएं हाथ से तश्तरी उठाई, अपने दाहिने हाथ में प्याला लिया, उसे अपने मुंह तक लाया और धीरे से एक घूंट पिया। स्वाद का आनंद लेते हुए उसने धीरे से सिर हिलाया। उसने प्याले को तश्तरी पर और तश्तरी को ट्रे पर वापस रख दिया। उसने नैपकिन से अपने होंठों को हल्के से पोंछा और फिर उसे अपनी गोद में रख लिया। इन सभी क्रियाओं में उसे एक सामान्य व्यक्ति की तुलना में कम से कम तीन गुना अधिक समय लगा। आओमामे ने सोचा, वह मानो किसी वन परी की तरह सुबह की ओस से अपनी प्यास बुझा रही हो।
महिला को हल्की खांसी आई।
"मुझे नेट पसंद नहीं है," उसने कहा।
ओमामे चुप हो गई और उसके बोलने का इंतज़ार करने लगी, लेकिन आगे कुछ नहीं बोला गया। बात वहीं खत्म हो गई, यह स्पष्ट नहीं हो पाया कि क्या उसे नेट नापसंद था क्योंकि आज़ादी को सीमित करने वाली चीज़ों के प्रति उसका यही रवैया था, या फिर सौंदर्य संबंधी कारण थे, या फिर यह महज़ निजी पसंद का मामला था, जिसका कोई खास कारण नहीं था। लेकिन उस समय यह कोई बड़ी बात नहीं थी। ओमामे ने यह सवाल बस इसलिए पूछा था क्योंकि उस समय उसके मन में यह बात आई थी।
ओमामे ने तश्तरी और प्याला उठाया और बिना आवाज़ किए एक घूंट पिया। उसे चाय पसंद नहीं थी। उसे तो आधी रात को भी एकदम काली, गरमागरम कॉफी पसंद थी। लेकिन दोपहर में कंज़र्वेटरी में कॉफी परोसना ठीक नहीं था, इसीलिए उसने भी वही चीज़ माँगी थी जो उस महिला ने माँगी थी। उसके कहने पर ओमामे ने एक बिस्किट लिया। यह

बिस्किट ओवन से निकला हुआ ताज़ा था और इसमें अदरक की तेज़ खुशबू आ रही थी।
ओमामे को याद आया कि युद्ध से पहले वह महिला कुछ समय इंग्लैंड में रही थी।
उसने भी एक बिस्किट लिया और उसे धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा करके चबाया, ताकि उसके कंधे पर सो रही उस अजीब सी तितली को नींद से न जगा दे।
"जब आप लौटेंगे, तो तमारू आपको पिछली बार की तरह एक चाबी देगा," उसने कहा। "काम पूरा होने के बाद, कृपया इसे पहले की तरह डाक से वापस भेज दें।"
- मैं समझता हूँ।
कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा। बंद ग्रीनहाउस में बाहरी दुनिया की कोई आवाज नहीं थी। तितली शांति से सोती रही।
"हम कुछ भी गलत नहीं कर रहे हैं," महिला ने आओमामे की आंखों में सीधे देखते हुए कहा।
आओमामे ने अपने होंठ हल्के से काट लिए।
- मुझे पता है।
कृपया उस लिफाफे में देखें।
ओमामे ने कॉफी टेबल से लिफाफा उठाया और उसमें मौजूद सात पोलरॉइड तस्वीरों को खूबसूरत चायदानी के बगल में इस तरह सजा दिया, मानो वे टैरो कार्ड हों जो बुरी घटनाओं की भविष्यवाणी करते हैं। तस्वीरों में एक युवती के नग्न शरीर के अंगों के क्लोज-अप थे। उसकी पीठ, उसके स्तन, उसका नितंब, उसकी जांघें। यहां तक कि उसके पैर भी। उसका चेहरा किसी भी तस्वीर में नहीं था। हर जगह हिंसा के निशान थे—चोट के निशान और घाव। ये बेल्ट के निशान जैसे लग रहे थे। उसके गुप्तांग के बाल मुंडे हुए थे, जिससे सिगरेट से जलने के निशान दिख रहे थे। ओमामे ने अनजाने में ही भौंहें सिकोड़ लीं। उसने पहले भी ऐसी तस्वीरें देखी थीं, लेकिन इतनी भयावह नहीं।
"आप इसे पहली बार देख रहे हैं, है ना?"
ओमामे ने सिर हिलाया।
मुझे इसके बारे में बताया गया था, लेकिन मैंने तस्वीरें नहीं देखी थीं।
“उस आदमी ने ही ये किया। तीनों हड्डियों का इलाज हो गया, लेकिन उसके एक कान की सुनने की शक्ति चली गई और शायद कभी वापस न आए,” महिला ने उतनी ही धीमी, लेकिन ठंडे और कठोर स्वर में कहा। मानो उसकी बदली हुई आवाज़ से चौंककर उसके कंधे पर बैठी तितली जाग उठी, अपने पंख फैलाए और उड़ गई।
“ऐसा करने में सक्षम व्यक्ति को उसके हाल पर नहीं छोड़ा जा सकता,” उसने आगे कहा। “चाहे वह कुछ भी हो।”
ओमामे ने तस्वीरों को इकट्ठा किया और उन्हें वापस लिफाफे में रख दिया।
क्या आप सहमत नहीं हैं?
- नहीं।
हम दोनों ने सही काम किया।
महिला अपनी कुर्सी से उठी और शायद खुद को शांत करने के लिए, अपने पास रखे पानी देने वाले डिब्बे को एक अत्यंत परिष्कृत हथियार की तरह उठा लिया। उसका चेहरा थोड़ा पीला पड़ गया था। उसकी निगाहें ग्रीनहाउस के एक कोने पर टिकी हुई थीं।
आओमामे ने भी उसकी दृष्टि का पीछा किया, लेकिन उसे अंत में कुछ खास नहीं दिखा।
वहाँ बस कांटेदार पौधों का एक गमला था।
"आने के लिए धन्यवाद," उसने अपने हाथ में खाली पानी का डिब्बा लिए हुए कहा।

बैठक समाप्त हो चुकी थी। आओमामे भी खड़ी हुई और अपना बैग उठाया।
चाय के लिए धन्यवाद।
और मैं आपको एक बार फिर धन्यवाद देना चाहता हूं।
आओमामे मुस्कुराई।
"चिंता मत करो, मैंने सही किया," महिला ने आगे कहा। उसकी आवाज़ में अब फिर से शांति आ गई थी और उसकी आँखों में एक स्नेह भरी चमक थी। उसने हल्के से अपनी बांह को छुआ।
ओमामे ने सिर हिलाया। उनकी बातचीत हमेशा इन्हीं शब्दों के साथ समाप्त होती थी। उसने सोचा, शायद वह इन्हें मन ही मन दोहरा रही थी। जैसे कोई मंत्र या प्रार्थना हो। "चिंता मत करो, मैंने सही काम किया है।"
ओमामे ने यह सुनिश्चित किया कि आसपास कोई तितली न उड़ रही हो, फिर उसने दरवाज़ा थोड़ा सा खोला, बाहर गई और उसे बंद कर दिया, उस महिला को पानी देने वाले कैन के साथ वहीं छोड़ दिया। जैसे ही वह ग्रीनहाउस से बाहर निकली, बाहर की हवा ठंडी और ताज़ी लगी। पेड़ों और घास की खुशबू फैली हुई थी। यही असली दुनिया थी, जहाँ समय सामान्य रूप से चलता था। ओमामे ने वास्तविकता की उस हवा में गहरी साँस ली।
*

तामारू प्रवेश द्वार पर सागौन की कुर्सी पर बैठकर उसका इंतजार कर रहा था, ताकि उसे मेलबॉक्स की चाबी दे सके।
"तैयार हो?" उसने उससे पूछा।
"ठीक है," उसने जवाब दिया, फिर उसके बगल वाली कुर्सी पर बैठ गई, चाबी ली और उसे अपने बैग की जेब में रख लिया।
वे दोनों कुछ देर तक आँगन से गुज़रने वाले पक्षियों को चुपचाप देखते रहे। हवा बिल्कुल नहीं चल रही थी और विलो के पेड़ की शाखाएँ स्थिर थीं। कुछ शाखाएँ तो लगभग ज़मीन को छू रही थीं।
“वह महिला कैसा महसूस कर रही है?” आओमामे ने पूछा।
"कौन सी महिला?"
— शिबुया के एक होटल में दिल का दौरा पड़ने वाले व्यक्ति की पत्नी।
"अभी हालत इतनी अच्छी नहीं है," तामारू ने भौंहें चढ़ाते हुए जवाब दिया। "वह अभी भी सदमे में है। ज्यादा बात नहीं कर रहा है। उसे समय चाहिए।"
वह किस तरह का आदमी है?
"वह लगभग तीस-पैंतीस साल की है। उसके कोई बच्चे नहीं हैं। वह खूबसूरत है, उसका स्वभाव मिलनसार है। उसका शरीर भी आकर्षक है। लेकिन दुर्भाग्य से, वह इस गर्मी में स्विमसूट में अपनी अदाएं नहीं दिखा पाएगी। शायद अगले साल भी नहीं। क्या आपने तस्वीरें देखी हैं?"
- हाँ अब।
"भयानक है ना?"
— बिलकुल भयानक।
"यह एक आम पैटर्न है," तामारू ने कहा। "वह व्यक्ति सामाजिक रूप से सक्षम है। वह सम्मानित, सुसंस्कृत और शिक्षित है। उसका सामाजिक रुतबा है।"
“लेकिन घर पहुँचते ही वो बिलकुल अलग इंसान बन जाता है,” आओमामे ने उसकी जगह बोलना जारी रखा। वो हिंसक हो जाता है, खासकर जब वो शराब पीता है। वो उस तरह का

इंसान है जो सिर्फ़ औरतों पर ही शारीरिक हमला करता है। वो सिर्फ़ अपनी पत्नी को पीटता है। घर के बाहर दोस्ताना, घर के अंदर निर्दयी। उसे एक ज़िम्मेदार और अच्छा पति माना जाता है। उसकी पत्नी चाहे कितनी भी गालियाँ दे और अपने साथ घटी भयानक बातें बताए, कोई उस पर विश्वास नहीं करेगा। वो ये जानता है, और इसीलिए वो उसे ऐसी जगहों पर मारता है जहाँ वो दिखा नहीं सकता या ऐसे तरीके से मारता है जिससे निशान न पड़ें। कुछ ऐसा ही?
तामारू ने सिर हिलाया।
"असल में, हाँ। वह शराब को हाथ भी नहीं लगाता। वह दिन दहाड़े, होश में रहकर ये सब करता है। ये बेहद घिनौना है। वो तलाक चाहती थी, लेकिन उसने उसकी बात नहीं सुनी। शायद उसे उसकी परवाह थी, या शायद वो इतनी आसान शिकार को खोना नहीं चाहता था। या शायद उसे अपनी पत्नी का बेरहमी से बलात्कार करना अच्छा लगता था।" तामारू ने अपना पैर थोड़ा ऊपर उठाया और अपने जूतों की चमक को फिर से परखा। फिर वह आगे बढ़ी।
घरेलू हिंसा के सबूत मिलने पर तलाक तो मिल जाता है, लेकिन इसमें समय और पैसा लगता है। और अगर आपको कोई अच्छा वकील मिल जाए, तो आप गंभीर मुसीबतें खड़ी कर सकते हैं। पारिवारिक न्यायालय में बहुत भीड़ है और न्यायाधीशों की संख्या बहुत कम है, और तलाक अंतिम रूप से तय होने और गुजारा भत्ता निर्धारित होने के बाद, बहुत कम पुरुष भुगतान करते हैं। वे किसी तरह गुजारा कर लेते हैं। जापान में, परिवार के पूर्व मुखिया को गुजारा भत्ता न देने पर जेल नहीं होती। अगर वह भुगतान करने की इच्छा दिखाता है और लिखित रूप में एक निश्चित राशि का भुगतान करता है, तो अदालत उसके साथ बहुत नरमी बरतती है। जापानी समाज अभी भी पुरुषों के प्रति बहुत सहिष्णु है।
"लेकिन कुछ दिन पहले, सौभाग्य से इस हिंसक व्यक्ति को शिबुया के एक होटल में दिल का दौरा पड़ गया," आओमामे ने कहा।
— “धन्यवाद” कहना मुझे कुछ ज़्यादा ही सीधा लगता है, तामारू ने हल्के से ताली बजाते हुए कहा। मुझे तो “ईश्वरीय कृपा” कहना ज़्यादा पसंद है। वैसे भी, उनकी मृत्यु में कुछ भी संदिग्ध नहीं है, और चूंकि जीवन बीमा की राशि इतनी बड़ी नहीं है कि किसी का ध्यान आकर्षित करे, इसलिए बीमा कंपनी को भी कोई संदेह नहीं होगा। वे निश्चित रूप से बिना किसी परेशानी के भुगतान कर देंगे। इसका मतलब यह नहीं है कि यह अच्छी-खासी रकम नहीं है। बीमा से मिली रकम से विधवा एक नए जीवन की ओर पहला कदम बढ़ा सकती है। साथ ही, इस तरह तलाक की प्रक्रिया में समय और पैसा बर्बाद नहीं हुआ। सभी जटिल और बेतुकी कानूनी प्रक्रियाओं और उनसे होने वाले सभी मानसिक आघात से भी बचा जा सका।
— इतना ही नहीं, वह नीच आदमी दुनिया भर में घूमकर दोबारा कोई नया शिकार नहीं ढूंढ सकता।
"ईश्वरीय कृपा," तामारू ने कहा। "दिल का दौरा पड़ने की वजह से हालात शांत हो गए। अंत भला तो सब भला।"
"अगर इसका कोई अंत है तो," आओमामे ने कहा।
तामारू के होंठों के कोने पर एक हल्की सी सिलवट दिखाई दी, जिससे मुस्कान का आभास हुआ।

कहीं न कहीं अंत तो है, लेकिन यह स्पष्ट रूप से लिखा नहीं है: "यही अंत है।" है ना? सीढ़ी के आखिरी पायदान पर कुछ ऐसा लिखा होता है: "यह आखिरी पायदान है।
कृपया आगे न बढ़ें।"
ओमामे ने अपना सिर हिलाया।
"यह एक ही बात है," तामारू ने कहा।
— आप अपनी सामान्य बुद्धि का प्रयोग करें, अपनी आँखें खुली रखें, और आप पता लगा लेंगे कि अंत कहाँ है।
तामारू ने सिर हिलाया।
"और अगर तुम खुद को गिरने से नहीं भी बचा पाओगे...", उसने उंगलियों से गिरने की ओर इशारा करते हुए कहा, "तो भी तुम वहीं गिरोगे।"
वे दोनों कुछ देर चुपचाप बैठे रहे और पक्षियों की चहचहाहट सुनते रहे। अप्रैल की वह दोपहर शांत थी, जिसमें द्वेष या हिंसा का कोई नामोनिशान नहीं था।
“अब यहां कितनी महिलाएं रहती हैं?” उसने पूछा।
"चार," तामारू ने तुरंत जवाब दिया।
— क्या सभी एक ही स्थिति में हैं?
“इसी तरह की स्थितियों में,” उसने कहा और अपने होंठ सिकोड़ लिए। “लेकिन बाकी तीन मामले इतने गंभीर नहीं हैं। बेशक, उनके आदमी घिनौने लोग हैं, लेकिन उतने बुरे नहीं जितने वो आदमी जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं। वे छोटे दिल वाले, घमंडी लोग हैं। वे तुम्हारे झंझट के लायक नहीं हैं। मैं उनका निपटारा कर दूंगा।”
— कानूनी तौर पर।
"हां, मोटे तौर पर कहें तो। वहां अभी भी कुछ खतरे मौजूद रहेंगे। बेशक, और दिल का दौरा पड़ना मृत्यु का पूरी तरह से कानूनी कारण है।"
- बिल्कुल।
तामारू कुछ देर तक चुपचाप अपने घुटनों पर हाथ रखे, विलो के पेड़ों की स्थिर शाखाओं को देखता रहा।
ओमामे कुछ क्षणों के लिए हिचकिचाई, फिर उसने इस विषय को उठाया:
सुनिए, तामारू-सान, मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ।
"क्या वास्तव में?"
पुलिस की वर्दी और हथियारों में बदलाव कितने साल पहले हुआ था?
तामारू ने भौंहें चढ़ाईं। उसने उसकी आवाज़ में एक अस्पष्ट बदलाव महसूस किया था जिसने खतरे का संकेत दे दिया था।
आप ऐसा क्यों पूछ रहे हैं?
"कोई खास वजह नहीं। मैं बस सोच रहा था।"
तामारू ने उसकी आँखों में देखा। उसकी निगाहें तटस्थ थीं, लेकिन उनमें कोई भाव नहीं था। वे किसी भी दिशा में झुक सकती थीं।
— 1981 में, अक्टूबर के मध्य के आसपास, यामानाशी पुलिस और चरमपंथी समूह के बीच मोटोसु झील के पास सशस्त्र संघर्ष हुआ था, और अगले वर्ष पुलिस में व्यापक सुधार किए गए थे। यानी दो साल पहले।
ओमामे ने बिना चेहरे के भाव बदले सिर हिलाया। उसे ऐसी किसी घटना के बारे में कुछ भी याद नहीं था, लेकिन उसे तामारू की बात माननी ही थी।

— यह एक बेहद खूनी घटना थी। कुछ पुराने जमाने के छह-गोली वाले रिवॉल्वर के सामने पाँच कलाश्निकोव एके-47 राइफलें थीं। पुलिस के पास बचने का कोई मौका नहीं था। तीन पुलिसकर्मी गोलियों से छलनी हो गए। आत्मरक्षा बलों की विशेष वायु सेना ने तुरंत हेलीकॉप्टरों के साथ हस्तक्षेप किया। पुलिस हंसी का पात्र बन गई। कुछ समय बाद, प्रधानमंत्री नाकासोन ने पुलिस बल को मजबूत करने के लिए हर संभव प्रयास किया। एक बड़ा ढांचागत सुधार किया गया, एक विशेष सशस्त्र प्रभाग का गठन किया गया, और पुलिस को उच्च क्षमता वाले स्वचालित हथियार भी दिए गए। बेरेटा 92 पिस्तौलें। क्या आपने कभी इसे चलाया है?
ओमामे ने अपना सिर हिलाया। उसने कभी एयर गन चलाई भी नहीं थी।
हां, मेरे पास है। पंद्रह गोलियों वाली सेमी-ऑटोमैटिक रिवॉल्वर, जो 9 मिमी पैराबेलम गोला-बारूद का इस्तेमाल करती है। यह एक मशहूर हथियार है, जो अमेरिकी सेना के पास भी है। यह सस्ता तो नहीं है, लेकिन सिग या ग्लॉक से ज़्यादा महंगा भी नहीं है, इसलिए इसकी अच्छी बिक्री होती है। लेकिन यह बंदूक किसी नौसिखिए के लिए उपयुक्त नहीं है। पहले की रिवॉल्वरों का वज़न सिर्फ़ 490 ग्राम था, जबकि इनका वज़न 850 ग्राम है। ऐसे हथियार को किसी ऐसे जापानी पुलिसकर्मी के हाथ में देने का कोई फ़ायदा नहीं है जिसे पर्याप्त प्रशिक्षण न मिला हो, क्योंकि यह बेकार है। अगर वह किसी भीड़भाड़ वाली जगह पर इस तरह के शक्तिशाली हथियार से गोली चलाए, तो कोई आम नागरिक इसे उठा लेगा।
- यह आपको कहां से मिला?
— खैर, मैं भी बाकी सब लोगों की तरह ही हूँ। एक दिन मैं एक झरने के मुहाने पर औषधीय जड़ी-बूटियाँ इकट्ठा कर रहा था, तभी अचानक एक परी प्रकट हुई, उसने मुझे एक बेरेटा 92 पिस्तौल दी और पास में ही मौजूद एक सफेद खरगोश को गोली मारने की सलाह दी।
- सच में नहीं।
तामारू के होंठों के कोने पर पड़ी झुर्रियाँ लगभग न के बराबर गहरी हो गईं। उन्होंने कहा, "मैं तो सिर्फ सच बोलता हूँ। वैसे भी, हथियार और वर्दी दो साल पहले, वसंत ऋतु में, लगभग इसी समय बदले गए थे। क्या मैंने आपके सवाल का जवाब दे दिया?"
- दो वर्ष पहले।
तामारू ने एक बार फिर उसे तीखी निगाहों से देखा।
"अगर आपके मन में कुछ है तो बेहतर होगा कि आप मुझे बता दें। क्या पुलिस इसमें शामिल है?"
"नहीं, ऐसा नहीं है," आओमामे ने अपने हाथों को हल्के से हिलाते हुए जवाब दिया। "मैं वर्दी को लेकर थोड़ी उलझन में थी। मुझे नहीं पता था कि वर्दी कब बदली गई।"
कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा और उनकी बातचीत अपने आप समाप्त हो गई। तमारू ने अपना दाहिना हाथ फिर से बढ़ाया।
उन्होंने कहा, "मुझे खुशी है कि सब कुछ अच्छे से समाप्त हुआ।"
ओमामे ने उसका हाथ दबाया। उसने सोचा, यह आदमी जानता है। वह जानता है कि एक कठिन काम के बाद, जिसमें जान जोखिम में डाली जाती है, एक गर्मजोशी भरे स्पर्श की जरूरत होती है।

"छुट्टी ले लो," तामारू ने कहा। "थोड़ा आराम करो और दिमाग को तरोताज़ा करो।
अपने प्रेमी के साथ गुआम जाओ।"
ओमामे खड़ी हुई, अपना बैग कंधे पर टांगा और अपनी स्वेटशर्ट की हुड ठीक की। तमारू भी खड़ा हो गया। वह लंबा नहीं था, लेकिन जब वह खड़ा हुआ तो ऐसा लगा जैसे कोई दीवार खड़ी हो गई हो। उसका विशाल कद हमेशा ही प्रभावशाली था।
तामारू उसे जाते हुए देखता रहा। आओमामे को महसूस हो रहा था कि उसकी निगाहें उसकी पीठ पर टिकी हैं, इसलिए वह आत्मविश्वास से भरे कदमों से सीधी रेखा में, ठुड्डी आगे और पीठ सीधी करके चलती रही। लेकिन अपने मन में, जहाँ कोई उसे देख नहीं सकता था, वह उलझन में थी। ऐसी घटनाएँ घट रही थीं जिन पर उसका कोई नियंत्रण नहीं था। कुछ समय पहले तक, दुनिया उसके हाथों में थी। कोई बचाव नहीं, कोई गड़बड़ी नहीं, लेकिन अब सब कुछ बिखरने लगा था।
मोतोसु झील के पास सशस्त्र संघर्ष? बेरेटा 92?
आखिर हो क्या रहा था? आओमामे इतनी अहम खबर को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती थी। इस दुनिया के सारे नियम अचानक उलट-पुलट हो गए थे। आगे बढ़ते हुए, आओमामे का दिमाग तेज़ी से घूम रहा था। चाहे कुछ भी हो जाए, मुझे हर हाल में स्थिति को संभालना होगा। मुझे हर हाल में कोई न कोई रास्ता निकालना होगा। और जल्दी, इससे पहले कि हालात पूरी तरह बेकाबू हो जाएं।
तामारू ने उसके भीतर की उलझन को अवश्य भांप लिया था। वह एक सावधान, अत्यंत सहज ज्ञान वाला व्यक्ति था। और साथ ही खतरनाक भी। तामारू घर की मालकिन का बहुत सम्मान करता था और उसके प्रति पूर्णतः वफादार था। उसने उसकी सुरक्षा के लिए हर संभव प्रयास किया। वह और आओमामे एक-दूसरे को स्वीकार करते थे और एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति रखते थे, या कम से कम सहानुभूति जैसी भावना रखते थे। लेकिन अगर उसे यह एहसास होता कि आओमामे का अस्तित्व मालकिन के किसी काम का नहीं है, तो वह शायद बिना सोचे-समझे उसे हटा देता। वह इसे सबसे सरल तरीके से कर देता। लेकिन आओमामे इसके लिए उसे दोषी नहीं ठहरा सकती थी। आखिरकार, यह उसका कर्तव्य था।
जैसे ही वह आंगन पार कर रही थी, द्वार खुल गया। आओमामे ने कैमरे की ओर मुस्कुराते हुए हल्के से हाथ हिलाया, मानो कुछ हुआ ही न हो। उसके बाहर कदम रखते ही द्वार धीरे-धीरे उसके पीछे बंद हो गया। अज़ाबू की खड़ी ढलान से नीचे उतरते हुए, आओमामे ने मन ही मन अपने कामों को व्यवस्थित किया और एक सूची बनाई।
संक्षिप्त और सटीक।

अध्याय 8 एक अज्ञात स्थान पर, एक अज्ञात व्यक्ति

कई लोग रविवार की सुबह को आराम का प्रतीक मानते हैं। लेकिन टेंगो के लिए, बचपन से ही रविवार की सुबह कभी खुशी का स्रोत नहीं रही। इसके विपरीत, उसका सारा मूड खराब हो जाता था। जैसे ही वीकेंड आता, उसका शरीर भारी होता जाता, उसकी भूख कम हो जाती और उसे तरह-तरह के दर्द होने लगते। टेंगो के लिए रविवार की सुबह एक टेढ़े-मेढ़े चाँद की तरह थी जो सिर्फ अपना काला चेहरा दिखाता था। कितना अच्छा होता अगर यह मनहूस दिन कभी वापस न आता! कितना अच्छा होता अगर मुझे हर दिन स्कूल जाना पड़ता और कभी छुट्टी न मिलती, वह बचपन में अक्सर खुद से कहता था। उसने एक बार प्रार्थना भी की थी कि रविवार कभी वापस न आए, लेकिन ज़ाहिर है उसकी प्रार्थना पूरी नहीं हुई। बड़े होने पर भी, जब वीकेंड उसके लिए कोई खतरा नहीं रह गया था, तब भी वह बिना किसी खास वजह के उदास मन से उठता था। उसके शरीर के हर हिस्से में दर्द होता था और कभी-कभी उसे मतली भी होती थी। ये प्रतिक्रियाएँ उसके दिल में गहराई से बसी हुई थीं। शायद उसके अवचेतन मन में भी।
उनके पिता एनएचके{6} में रेडियो और टीवी लाइसेंस कलेक्टर के रूप में काम करते थे, और हर रविवार को वे छोटे टेंगो को खेत में ले जाते थे। कहानी टेंगो के किंडरगार्टन जाने से पहले शुरू हुई और पांचवीं कक्षा में पहुंचने तक, हर रविवार को जारी रही, सिवाय उन दिनों के जब उसकी कोई विशेष स्कूल गतिविधि होती थी। वे सुबह सात बजे उठते, टेंगो को साबुन से चेहरा धुलवाते, उसके कान और नाखून की जांच करते, उसे यथासंभव साफ-सुथरे (लेकिन सादे) कपड़े पहनाते, और बाद में उसे कुछ अच्छा खाने को देने का वादा करते।
टेंगो को यह तो नहीं पता था कि बाकी कैशियर अपनी छुट्टी के दिनों में काम करते हैं या नहीं, लेकिन जहाँ तक उसे याद था, उसके पिता हमेशा रविवार को काम करते थे। बल्कि उससे भी ज़्यादा लगन से, क्योंकि उस दिन उन्हें वे लोग मिल जाते थे जो हफ़्ते के दिनों में घर से बाहर रहते थे।
उसके पिता के उसे अपने साथ ले जाने के कई कारण थे। उनमें से एक यह था कि वे छोटे टेंगो को घर पर अकेला नहीं छोड़ सकते थे। सप्ताह के दिनों में और शनिवार को वह डेकेयर, किंडरगार्टन या स्कूल में रहता था, लेकिन रविवार को वह वहाँ नहीं रह सकता था। दूसरा, वे अपने बेटे को यह दिखाना चाहते थे कि वे किस तरह का काम करते हैं और खाने-पीने का पैसा कहाँ से आता है; टेंगो को छोटी उम्र से ही काम का मतलब सीखना था। उसे खुद बचपन से ही हर रविवार खेतों में ले जाया जाता था। जब खेतों में बहुत काम होता था, तो वह स्कूल भी नहीं जाता था। ऐसा जीवन उसके लिए बिल्कुल स्वाभाविक था।
आखिरी कारण, जिसने टेंगो को सबसे ज़्यादा दुख पहुँचाया, एक छोटी सी बात पर आधारित था: यानी, बच्चे के साथ होने पर कर वसूलना उसके लिए आसान होता था, और उसके पिता यह बात अच्छी तरह जानते थे। किसी के लिए भी यह कहना मुश्किल था, "मुझे छोड़ दो, मैं कुछ नहीं देता," जब कोई कर वसूलने वाला किसी छोटे बच्चे का हाथ पकड़े हो। कभी-कभी, बच्चे की आँखों में सीधे देखते ही, कुछ बच्चे अनजाने

“रविवार को एक दोस्त के घर पर कुछ लोग मिल रहे हैं,” वह कभी-कभी अपने पिता से कहता था, लेकिन वह शुरू से ही जानता था कि उसे जाने की इजाज़त नहीं मिलेगी। इसलिए वह व्यस्त होने का बहाना बनाकर निमंत्रण ठुकरा देता था। बार-बार मना करने पर धीरे-धीरे निमंत्रण आने बंद हो गए। देखते ही देखते, वह किसी भी समूह का हिस्सा नहीं रहा और हमेशा अकेला रहने लगा।
रविवार को चाहे कुछ भी हो जाए, वह सुबह से शाम तक अपने पिता के साथ हमेशा की तरह अपने तय रास्तों पर चलता था। यह एक अटल नियम था, जिसमें कोई अपवाद या बदलाव की गुंजाइश नहीं थी। उसे ज़ुकाम और लगातार खांसी हो, पेट में दर्द हो या हल्का बुखार हो, तब भी उसे छूट नहीं मिलती थी। वह अपने पिता के पीछे लड़खड़ाते हुए चलता और सोचता कि काश वह गिरकर मर जाता। शायद इससे उसके पिता अपने कार्यों पर थोड़ा विचार करते। शायद उन्हें लगता कि उन्होंने बच्चे के साथ बहुत सख्ती की है। लेकिन, चाहे अच्छा हो या बुरा, टेंगो का शरीर मजबूत था। बुखार हो, पेट में दर्द हो या जी मिचला रहा हो, वह गिरता या बेहोश नहीं होता, बल्कि बिना शिकायत किए अपने पिता के साथ लंबे रास्तों पर चलता रहता।
*

टेंगो के पिता युद्ध के अंतिम वर्ष में मंचूरिया से निर्धन होकर लौटे थे। वे तोहोकू के एक किसान परिवार के तीसरे पुत्र थे और कुछ ग्रामीणों के साथ वहाँ पहुँचे थे, उस समय जब सरकार मंचूरिया में प्रवास को प्रोत्साहित कर रही थी। ऐसा इसलिए नहीं था कि वे सरकार के इस प्रचार में विश्वास कर बैठे थे कि मंचूरिया धरती पर स्वर्ग है, वहाँ की विशाल भूमि उपजाऊ है और वहाँ विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत किया जा सकता है। वे भली-भांति जानते थे कि धरती पर स्वर्ग जैसी कोई चीज़ नहीं होती। बात बस इतनी थी कि वे गरीब और भूखे थे। अगर वे गाँव में ही रहते, तो उनका सामना भुखमरी के कगार पर होता। आर्थिक मंदी के कारण दुनिया भर में बेरोज़गारों की भरमार थी और अगर वे शहर जाते, तो उन्हें कोई उचित नौकरी नहीं मिलती। इस स्थिति में उनके पास एकमात्र उपाय मंचूरिया में प्रवास करना था। उन्हें हथियारों के इस्तेमाल का संक्षिप्त प्रशिक्षण दिया गया, क्योंकि संकट की स्थिति में उपनिवेशवादियों को गोली चलाने की अनुमति थी; उन्हें मंचूरिया में खेती के बारे में कुछ जानकारी दी गई और तीन बार बानज़ाई का नारा लगाकर वे अपने पैतृक गाँव से निकल पड़े। डालियान से उन्हें ट्रेन द्वारा देश की सीमा तक ले जाया गया। वहाँ उन्हें खेती योग्य भूमि, औजार और एक राइफल दी गई। अपने साथियों के साथ मिलकर उन्होंने ज़मीन पर खेती शुरू की। ज़मीन बंजर और पत्थरों से भरी थी, और सर्दियों में सब कुछ जम जाता था। भूख से बेहाल होकर वे आवारा कुत्तों को भी खाने लगे। शुरुआती वर्षों में उन्हें सरकार से कुछ मदद मिली और इस तरह वे किसी तरह जीवित रह पाए।
अगस्त 1945 में, जब उनके लिए जीवन थोड़ा आसान होने लगा था, सोवियत सेना ने अनाक्रमण संधि तोड़कर मंचूरिया पर आक्रमण कर दिया। यूरोप में लड़ाई में सोवियत सेना की भागीदारी समाप्त होने के बाद, ट्रांस-साइबेरियन रेलवे के माध्यम से पूर्व में बड़ी संख्या में सैनिकों को लाया गया और आक्रमण की तैयारी शुरू कर दी गई। तेंगो के पिता, जो संयोगवश एक सरकारी अधिकारी के मित्र बन गए थे, को इस आसन्न स्थिति की गुप्त सूचना मिल गई थी और वे सोवियत आक्रमण की आशंका जता रहे थे। अधिकारी ने उन्हें गुप्त रूप से समझाया था कि क्वांगतुंग सेना इस हमले का सामना करने के लिए बहुत कमजोर है और बेहतर होगा कि वे सब कुछ

छोड़कर भागने की तैयारी कर लें। जितनी जल्दी वे भाग निकलें, उतना ही अच्छा होगा। इसलिए, जैसे ही सोवियत सेना के सीमा पार करने की खबर फैली, वे अपने घोड़े पर सवार हुए, स्टेशन की ओर दौड़े और डालियान जाने वाली आखिरी से पहले वाली ट्रेन में सवार हो गए। अपने सभी साथियों में से, वे उस वर्ष जापान सुरक्षित लौटने वाले एकमात्र व्यक्ति थे।
युद्ध के बाद, वह टोक्यो चले गए और काला बाज़ार में व्यापार करने लगे, फिर एक बढ़ई के यहाँ काम सीखने लगे, लेकिन इनमें से कोई भी काम सफल नहीं हुआ। वह बड़ी मुश्किल से ही भूख से बचने लायक कमा पाते थे। 1947 की शरद ऋतु में, असाकुसा में एक शराब की दुकान से सामान पहुँचाकर गुज़ारा करते समय, उनकी मुलाक़ात मंचूरिया में बिताए समय के एक परिचित से हुई। वह वही अधिकारी थे जिन्होंने उन्हें सोवियत-जापानी युद्ध के बारे में चेतावनी दी थी। उनका तबादला मंचूरिया की डाक सेवा में हो गया था, लेकिन अब वह जापान लौट आए थे और संचार एवं परिवहन मंत्रालय में फिर से काम कर रहे थे। उन्हें तेंगो के पिता पसंद आए, शायद इसलिए कि वे एक ही गाँव के थे, या शायद इसलिए कि वह जानते थे कि वह मेहनती थे। खैर, उन्होंने उन्हें रात के खाने पर आमंत्रित किया।
जब उन्हें पता चला कि उस आदमी के पास कोई स्थायी नौकरी नहीं है और वह आर्थिक तंगी से जूझ रहा है, तो उन्होंने उसे एनएचके में कैशियर की नौकरी की पेशकश की। उनका एक करीबी दोस्त वहाँ काम करता था और उसने उसके लिए सिफारिश कर दी। टेंगो के पिता आभारी थे। उन्हें ठीक से पता नहीं था कि एनएचके क्या है, लेकिन कोई भी नौकरी जिससे उन्हें स्थिर आय मिल सके, उन्हें मंजूर थी। क्लर्क ने उसके लिए सिफारिशी पत्र लिखा और उसकी सिफारिश भी की। उन्हीं की बदौलत उसे नौकरी मिल गई। उन्होंने उसे प्रशिक्षण दिया, वर्दी पहनाई और उसे काम का निर्धारित हिस्सा दिया। लोग युद्ध में हार के सदमे से उबरने लगे थे, और गरीबी में जीवन यापन करने के बावजूद, हर कोई मनोरंजन की तलाश में था। सबसे सस्ता और आसानी से उपलब्ध मनोरंजन रेडियो था, जिस पर संगीत, खेल और कॉमेडी कार्यक्रम प्रसारित होते थे। युद्ध-पूर्व काल की तुलना में, रेडियो ने अभूतपूर्व लोकप्रियता हासिल कर ली थी। एनएचके को कर संग्रह के लिए फील्ड में भेजने के लिए बहुत सारे कर्मचारियों की आवश्यकता थी।
टेंगो के पिता एक मेहनती व्यक्ति थे। उनकी सबसे बड़ी खूबी उनका धैर्य और सहनशीलता थी। बचपन से ही उन्हें कभी भरपेट खाना नहीं मिला था। ऐसे व्यक्ति के लिए कर संग्रह करना कोई मुश्किल काम नहीं था। उन्हें हमेशा प्रशंसा मिलती रहती थी। सबसे निचले पद पर होने के बावजूद, उन्हें एक विशाल संगठन का हिस्सा होने का संतोष प्राप्त था। शुरुआत में उन्हें अस्थायी तौर पर, केवल कमीशन के आधार पर और काम के नतीजों के अनुसार वेतन दिया गया था, लेकिन केवल एक साल बाद ही उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन और बेदाग पेशेवर रवैये के कारण उन्हें स्थायी पद की पेशकश की गई। एनएचके के लिए उन्हें इस तरह नियुक्त करना एक बड़ा अपवाद था। इसका कारण यह था कि उन्होंने मुश्किलों वाले क्षेत्रों में भी बेहतरीन प्रदर्शन किया, साथ ही मंत्रालय में उनके मित्र का प्रभाव भी था। उन्हें एक निश्चित वेतन और अन्य लाभ दिए गए। उन्हें चिकित्सा बीमा और कंपनी द्वारा निर्मित आवास भी मिला। यह कमीशन पर काम करने वाले अधिकांश कैशियरों के व्यवहार से बिलकुल अलग था, जो आते-जाते रहते थे। यही उनका सौभाग्य था। बहरहाल,

यह तस्वीर टेंगो के पास उसकी माँ की थी। दस सेकंड का वह दृश्य उसके मन में गहराई से अंकित था। यही एकमात्र ठोस जानकारी थी जो उसके पास उसकी माँ के बारे में थी। उसका मन इस तस्वीर के ज़रिए अपनी माँ को मुश्किल से ही पहचान पाता था। यह तस्वीर मानो एक गर्भनाल की तरह थी जो उसे उसकी माँ से जोड़ती थी। उसकी चेतना उस स्मृति के गर्भनाल में तैरती रहती थी, अतीत की गूँज सुनती रहती थी। लेकिन उसके पिता को यह नहीं पता था कि यह तस्वीर उसके मन में इतनी स्पष्ट रूप से अंकित है। उन्हें यह नहीं पता था कि वह लगातार इस रोटी के टुकड़े को ऐसे चबा रहे थे जैसे कोई गाय मैदान में चर रही हो और उससे रस चूस रहे हों। पिता और पुत्र दोनों के अपने-अपने गहरे, काले रहस्य थे।
*

रविवार की सुबह सुहावनी और साफ थी। हवा ठंडी थी, और अप्रैल का मध्य होने के बावजूद सर्दी का असर अभी भी बाकी था। टेंगो ने पतला, काला क्रू-नेक स्वेटर पहना हुआ था, और उसके ऊपर ज़िगज़ैग जैकेट थी जो उसके पास कॉलेज के दिनों से थी। अंदर उसने बेज रंग की चिनो पैंट और अपेक्षाकृत नए भूरे रंग के हश पपीज़ जूते पहने थे। यही सबसे साफ-सुथरा पहनावा था जो वह पहन सकता था।
जब वह शिंजुकु स्टेशन पर चूओ लाइन के ताचिकावा जाने वाले प्लेटफार्म के आगे वाले छोर पर पहुँची, तो फुकाएरी पहले से ही वहाँ मौजूद थी। वह एक बेंच पर अकेली बैठी थी, बिना हिले-डुले, खाली जगह को घूर रही थी, उसकी आँखें आधी खुली थीं। उसने प्रिंटेड सूती गर्मियों की ड्रेस पहनी हुई थी, जिसके ऊपर उसने कच्चे हरे रंग का मोटा विंटर कार्डिगन पहना हुआ था। उसने बिना मोजे के फीके भूरे रंग के स्नीकर्स पहने हुए थे। साल के इस समय के लिए यह थोड़ा अजीब पहनावा था। ड्रेस बहुत पतली थी, कार्डिगन बहुत मोटा। लेकिन उसे इस बात से ज़रा भी शर्मिंदगी नहीं हो रही थी। शायद यह बेमेल पहनावा दुनिया के बारे में उसके विचारों को व्यक्त करने का उसका तरीका था। लेकिन ऐसा भी नहीं लग रहा था। शायद उसने बिना सोचे-समझे ही अपने कपड़े गलत तरीके से पहन लिए थे।
फुकेरी न तो अखबार पढ़ रही थी, न कोई किताब, और न ही अपने वॉकमैन पर संगीत सुन रही थी। वह बस चुपचाप बैठी अपनी बड़ी-बड़ी काली आँखों से सामने घूर रही थी। समझ में नहीं आ रहा था कि क्या सोचें। क्या उसकी निगाहें कहीं खोई हुई थीं या वह किसी चीज को ध्यान से देख रही थी? क्या वह गहरी सोच में डूबी हुई थी, या इसके विपरीत, क्या वह कुछ सोच ही नहीं रही थी? दूर से देखने पर वह किसी खास धातु से तराशी गई असली मूर्ति जैसी लग रही थी।
“क्या तुम बहुत देर से इंतजार कर रहे हो?” टेंगो ने पूछा।
फुकेरी ने तेंगो की ओर देखा, फिर अपना सिर कुछ इंच हिलाया। उसकी काली आँखों में रेशमी चमक थी, लेकिन पिछली मुलाकात की तरह, उनमें कोई भाव नहीं था। ऐसा लग रहा था कि वह किसी से बात करने के मूड में नहीं है। इसलिए तेंगो ने बातचीत जारी रखने का विचार छोड़ दिया और बिना कुछ कहे उसके बगल वाली बेंच पर बैठ गया। जब ट्रेन आई, तो फुकाएरी चुपचाप खड़ी हो गई। दोनों ट्रेन में चढ़ गईं। छुट्टी का दिन होने के कारण ताकाओ जाने वाली एक्सप्रेस ट्रेन काफी खाली थी। तेंगो और फुकाएरी एक बेंच पर अगल-बगल बैठ गईं और बिना कुछ बोले, सामने वाली खिड़की से तेज़ी से गुज़रते शहर को देखने लगीं। हमेशा की तरह फुकाएरी चुप थी, इसलिए तेंगो भी चुप रही। अपने होंठ कसकर और नज़रें सामने रखते हुए, फुकाएरी ने अपने स्वेटर का कॉलर कसकर खींच लिया, मानो वह अचानक ठंड पड़ने की तैयारी कर रही हो।

टेंगो ने अपनी जेब से किताब निकाली और पढ़ना शुरू किया, लेकिन वह थोड़ा उलझन में था। उसने किताब वापस जेब में रख ली और फुकाएरी की नकल करते हुए दोनों हाथ घुटनों पर रखकर सामने खाली निगाहों से देखने लगा। उसने कुछ सोचने की कोशिश की, लेकिन उसे कोई उपयुक्त विषय नहीं सूझा। वह कुछ देर से वायु परकोटे के बारे में सोच रहा था, और इसी वजह से उसका दिमाग काम करना बंद कर चुका था। उसके दिमाग में बस कुछ उलझे हुए विचार ही थे।
टेंगो खिड़की से बाहर के नज़ारे को निहार रहा था और ट्रेन की एकरस आवाज़ सुन रहा था। चूओ लाइन सीधी बिछी हुई थी, मानो नक्शे पर स्केल से खींची गई हो। दरअसल, इसे इसी तरह बनाया गया था। कांटो मैदान के इन हिस्सों में कोई खास भौगोलिक बाधाएँ नहीं थीं। इसीलिए रेलवे लाइन को बिना किसी स्पष्ट मोड़, उतार-चढ़ाव, पुल या सुरंग के बनाया गया था। एक स्केल ही काफी था। ट्रेन सीधी रेखा में अपने गंतव्य की ओर बढ़ रही थी।
कुछ देर बाद तेंगो को नींद आ गई। जब उसने आँखें खोलीं, तो ट्रेन ओगिकुबो स्टेशन पर रुकने के लिए धीमी हो रही थी। उसे ज़्यादा देर नींद नहीं आई थी। फुकाएरी ठीक उसी तरह बैठी थी, सीधे आगे देख रही थी। तेंगो को नहीं पता था कि वह वास्तव में क्या देख रही थी। लेकिन उसके एकाग्र भाव से ऐसा नहीं लग रहा था कि वह उतरने की तैयारी कर रही है।
"तुम आमतौर पर क्या पढ़ती हो?" तेंगो ने मितका स्टेशन से गुजरते हुए अपनी ऊब दूर करने के लिए फुकाएरी से पूछा। यह एक ऐसा सवाल था जो वह फुकाएरी से पहले पूछना चाहता था।
लड़की ने एक पल के लिए उसकी तरफ देखा, फिर अपनी निगाहें सीधे आगे की ओर कर लीं।
"मैं पढ़ती नहीं हूँ," उसने सीधे-सादे शब्दों में जवाब दिया।
- बिल्कुल नहीं?
फुकेरी ने संक्षेप में सिर हिलाया।
“क्या आपको पढ़ने में रुचि नहीं है?” उसने पूछा।
"इसमें काफी समय लगता है," फुकेरी ने उत्तर दिया।
"तुम इसलिए नहीं पढ़ते क्योंकि इसमें बहुत समय लगता है?" उसने हैरानी से पलटकर पूछा।
फुकेरी सीधे आगे देखती रही, कोई जवाब नहीं दिया। उसके हावभाव से ऐसा लग रहा था कि वह उसका विरोध नहीं कर रही है।
बेशक, आम तौर पर किताब पढ़ने में समय लगता है। यह टीवी देखने या कॉमिक्स पढ़ने जैसा नहीं है। पढ़ना अपेक्षाकृत समय लेने वाली गतिविधि है। लेकिन फुकाएरी के "इसमें बहुत समय लगता है" कहने के तरीके से इस सामान्य सत्य का एक अलग ही अर्थ निकल आता है।
"क्या इसमें लंबा समय लगता है, आपका मतलब है... क्या इसमें असाधारण रूप से लंबा समय लगता है?" टेंगो ने पूछा।
"असाधारण," उसने सपाट स्वर में कहा।
"अन्य लोगों की तुलना में कहीं अधिक?"
फुकेरी ने सहमति में सिर हिलाया।
"और तुम्हें स्कूल में कोई परेशानी नहीं होती? कक्षा में तुम्हें तरह-तरह की किताबें पढ़ने को दी जाती हैं। और अगर तुम कहो कि इसमें बहुत समय लगता है..." "मैं नाटक कर रही हूँ," उसने उदासीनता से जवाब दिया।

टेंगो को अपने सिर में एक अशुभ दस्तक सुनाई दी। वह इसे अनदेखा करना चाहता था और जाने देना चाहता था, लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका। उसे सच्चाई का पता लगाना ही था।
"क्या आप कह रहे हैं कि आपको डिस्लेक्सिया है?"
"डिस्लेक्सिया?" फुकेरी ने पूछा।
पढ़ने में कठिनाई।
मुझे यही बताया गया था। डिसल…”
- तुमसे किसने कहा?
लड़की ने हल्के से कंधे उचकाए।
"मेरा मतलब..." टेंगो शब्दों को लेकर अटक गया। "क्या तुम बचपन से ही ऐसे हो?" फुकेरी ने सिर हिलाया।
— तो आपने अब तक शायद ही कोई उपन्यास पढ़ा हो।
"अकेले," फुकेरी ने उत्तर दिया।
इसका मतलब यह था कि उसने जो लिखा वह किसी भी लेखक से प्रभावित नहीं था। यह एक बेहतरीन व्याख्या थी और तर्कसंगत भी थी।
"तुमने इसे खुद से नहीं पढ़ा," टेंगो ने कहा।
किसी ने मुझे यह पढ़कर सुनाया।
क्या आपके पिता या माता आपको पढ़कर सुनाते थे?
फुकेरी ने कोई जवाब नहीं दिया।
"लेकिन अगर तुम पढ़ नहीं सकते, तो लिख तो सकते हो, है ना?" टेंगो ने पूछा, उसके अंदर डर उमड़ रहा था।
फुकेरी ने अपना सिर हिलाया।
इसे लिखने में काफी समय लगता है।
"बहुत?"
फुकेरी ने फिर से कंधे उचका दिए। जवाब हां था।
टेंगो बेंच पर बेचैनी से बैठा था।
— इसका मतलब है कि आपने 'द एयर क्राइसालिस' नहीं लिखी।
मैंने इसे नहीं लिखा।
टेंगो कुछ सेकंड के लिए चुप रहा। वो कुछ सेकंड बहुत भारी लगे।
"तो फिर इसे किसने लिखा?"
"अज़मी," जवाब आया।
— Cine-i Azami?
वह मुझसे दो साल छोटी है।
फिर थोड़ी देर सन्नाटा छा गया।
उन्होंने आपके लिए एयर क्राइसालिस लिखा।
फुकेरी ने अत्यंत सहज भाव से सिर हिलाया।
टेंगो ने खुद को मजबूर करके अपने दिमाग को सक्रिय किया।
— आपका मतलब है, आपने आज़मी को कहानी सुनाई और उसने उसे लिख लिया, क्या आपका यही मतलब है?
"उसने प्रोसेसर को टैप किया और प्रिंट किया," फुकेरी ने कहा।
टेंगो ने अपने होंठ काट लिए। उसने अपने मन में नई मिली जानकारी को व्यवस्थित किया, फिर कहा:

— तो इस आज़मी ने आपकी पांडुलिपि साहित्यिक प्रतियोगिता में भेज दी, शायद आपको बिना बताए, और उसने इसका शीर्षक भी 'द एयर क्राइसालिस' रखा।
फुकेरी ने सिर हिलाकर ऐसा इशारा किया जिसका मतलब न तो हां था और न ही ना।
लेकिन उसने तेंगो का विरोध भी नहीं किया। तेंगो ने शायद बिल्कुल सही बात कही थी।
"क्या आज़मी दोस्त है?"
हम साथ रहेंगे।
— और शिक्षक जी, आप कैसे हैं?
फुकेरी ने अपना सिर हिलाया।
वह प्रोफेसर की बेटी है।
"शिक्षक," टेंगो ने कहा। "और यह शिक्षक आपके साथ रहता है?"
फुकेरी ने सिर हिलाया, मानो उसे समझ ही न आया हो कि उसने अभी-अभी ऐसा सवाल क्यों पूछा था।
— अहा, तो जिससे मैं आज मिलने जा रहा हूँ, वह वास्तव में प्रोफेसर ही हैं, है ना?
फुकेरी उसकी ओर मुड़ी और कुछ देर तक उसे देखती रही, मानो दूर बादलों के प्रवाह का निरीक्षण कर रही हो। या मानो किसी ऐसे कुत्ते के साथ क्या करना है, यह तय करने की कोशिश कर रही हो जिसे प्रशिक्षित करना मुश्किल हो। फिर उसने सिर हिलाया।
"हम प्रोफेसर से बात करने जा रहे हैं," उसने भावहीन स्वर में कहा।
बातचीत यहीं समाप्त हो गई। दोनों फिर चुप हो गए, उनकी निगाहें खिड़की के बाहर के नज़ारे पर टिकी थीं। दूर-दूर तक फैली समतल भूमि पर, बिना किसी विशिष्ट पहचान वाली इमारतें दूर-दूर तक फैली हुई थीं। अनगिनत टीवी एंटीना कीड़ों की तरह आसमान की ओर उठे हुए थे। क्या वहाँ रहने वाले लोग एनएचके का शुल्क अदा करते हैं? टेंगो ने सोचा। रविवार को, वह जो भी करता, रेडियो और टीवी शुल्क के बारे में सोच ही लेता था। ऐसा नहीं था कि वह इसके बारे में सोचना चाहता था, लेकिन यह एक ऐसा विषय था जिससे वह बच नहीं सकता था।
*

अप्रैल के मध्य में इस साफ़ रविवार की सुबह, कुछ ऐसी बातें सामने आईं जो बिल्कुल भी सुखद नहीं थीं। सबसे पहले तो, फुकेरी ने 'द एयर क्राइसेंथेमम' स्वयं नहीं लिखी थी। अगर उनकी बातों पर विश्वास किया जाए (और अब तक उन पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं था), तो फुकेरी ने केवल कहानी बोलकर सुनाई थी और किसी और ने उसे कागज़ पर उतार दिया था। रचना प्रक्रिया के संदर्भ में, यह बिल्कुल मौखिक साहित्य की तरह थी, जैसे 'द बुक ऑफ एंशिएंट थिंग्स'{7} या 'द टेल ऑफ द ताइरा क्लैन'{8}।
इससे पाठ में बदलाव करने के लिए उनके अपराधबोध की भावना कुछ हद तक कम हो गई, लेकिन व्यापक दृष्टिकोण से देखा जाए तो स्थिति इतनी उलझ गई थी कि उससे निकलने का कोई रास्ता नहीं था।
फिर उस लड़की को डिस्लेक्सिया होने के कारण पढ़ने में दिक्कत होने लगी।
टेंगो ने इस विकार के बारे में जो कुछ भी जानता था, उसे याद करने की कोशिश की। उसने कॉलेज में शिक्षाशास्त्र मॉड्यूल के हिस्से के रूप में इस विषय पर एक कोर्स किया था। सिद्धांत रूप में, डिस्लेक्सिया से पीड़ित लोग लिख और पढ़

सकते हैं और उन्हें कोई संज्ञानात्मक समस्या नहीं होती है। लेकिन उन्हें पढ़ने में बहुत समय लगता है। वे छोटे वाक्यों को तो पढ़ लेते हैं, लेकिन जब वाक्य लंबे हो जाते हैं, तो जानकारी को समझने की उनकी क्षमता कमज़ोर पड़ जाती है। उन्हें संकेतों को उनके अर्थ से जोड़ने में कठिनाई होती है। डिस्लेक्सिया आमतौर पर इसी तरह प्रकट होता है। इसके कारणों को अभी तक पूरी तरह से समझा नहीं गया है। लेकिन आपकी कक्षा में एक या दो डिस्लेक्सिया से पीड़ित छात्र होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। आइंस्टीन, एडिसन और चार्ली मिंगस सभी इस समस्या से पीड़ित थे।
टेंगो को यह नहीं पता था कि डिस्लेक्सिया से पीड़ित लोगों को आमतौर पर लिखने में एक जैसी ही समस्याएँ होती हैं या नहीं। लेकिन फुकाएरी के मामले में, ऐसा ही लग रहा था। उसे पढ़ने और लिखने दोनों में एक जैसी ही कठिनाइयाँ थीं।
अगर कोमात्सु को यह पता चलता तो वह क्या सोचता? तेंगो ने अनजाने में एक गहरी साँस ली। यह सत्रह साल की लड़की डिस्लेक्सिया से पीड़ित थी और उसे लंबे वाक्य पढ़ने या लिखने में दिक्कत होती थी। और जब वह बोलती भी थी, तो मुश्किल से एक वाक्य पूरा कर पाती थी (अगर वह जानबूझकर ऐसा न करती हो)। वह कभी लेखिका नहीं बन सकती थी। भले ही तेंगो ने 'द एयर क्राइसालिस' को इतनी खूबसूरती से गढ़ दिया होता कि उसे नवोदित लेखक का पुरस्कार मिल जाता, किताब प्रकाशित हो जाती और उसे अच्छी समीक्षाएँ मिलतीं, फिर भी वे जनता से झूठ बोलना जारी नहीं रख सकते थे। अगर शुरुआत में सब ठीक रहा, तो आखिरकार लोगों को पता चल ही जाता कि कुछ गड़बड़ है। और अगर सच्चाई सामने आ गई, तो इसमें शामिल हर कोई बर्बाद हो जाएगा। तेंगो का लेखन करियर—जो अभी शुरू भी नहीं हुआ था—पूरी तरह से तबाह हो जाएगा। इतनी खामियों वाली योजना के कामयाब होने की संभावना बहुत कम थी। उसे शुरू से ही लग रहा था कि वह बहुत जोखिम भरे रास्ते पर चल रहा है, लेकिन अब यह कहावत बिल्कुल सटीक बैठ रही थी। उसने अभी कदम भी नहीं रखा था कि बर्फ में दरार पड़नी शुरू हो गई थी। उसे घर लौटते समय कोमात्सु को फोन करके कहना चाहिए, "माफ़ कीजिए, कोमात्सु-सान, लेकिन मैं इस योजना से पीछे हट रहा हूँ, यह बहुत खतरनाक है।" कोई भी समझदार आदमी यही करता।
लेकिन जब तेंगो ने 'द एयर क्राइसालिस' के बारे में सोचा, तो उसका संयम टूट गया और वह विरोधाभासी भावनाओं से घिर गया। कोमात्सु की योजना चाहे कितनी भी जोखिम भरी क्यों न हो, तेंगो पांडुलिपि को संशोधित करना बंद नहीं करना चाहता था। अगर यह सब काम शुरू करने से पहले हुआ होता, तो शायद वह सफल हो जाता। लेकिन अब यह असंभव था। वह पूरी तरह से किताब में डूब गया था। वह उस दुनिया की हवा में सांस ले रहा था, उसके गुरुत्वाकर्षण बल ने उसे अपनी ओर खींच लिया था। कहानी का सार उसके भीतर तक समा गया था। उसे उस कहानी पर काम करने की तीव्र इच्छा थी, एक ऐसी आवश्यकता जिसे वह गहराई से महसूस कर रहा था। यह कुछ ऐसा था जो करना ही था और अनिवार्य रूप से उसके द्वारा किया जाना था, कुछ ऐसा जो करने लायक था।
बेंच पर बैठे, आँखें बंद किए, वह इस स्थिति से निपटने के सर्वोत्तम तरीके के बारे में सोचने की कोशिश कर रहा था। लेकिन वह किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सका। जब आप भ्रमित और असमंजस में हों तो आप किसी ठोस निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सकते।
“क्या आज़मी ठीक वही लिखता है जो तुम कहते हो?” टेंगो ने पूछा।
"बिल्कुल वही जो मैं कह रही हूँ," फुकेरी ने जवाब दिया।

“तो आप बोलकर लिखवाते हैं और वह लिखती है?” उसने पूछा।
लेकिन मुझे धीरे-धीरे बोलना होगा।
- क्यों?
फुकेरी ने गाड़ी में चारों ओर नज़र डाली। वहाँ नाममात्र का ही कोई यात्री था।
बस एक माँ अपने दो छोटे बच्चों के साथ, उनसे कुछ दूरी पर, दूसरी तरफ बैठी थी।
ऐसा लग रहा था जैसे वे कहीं मौज-मस्ती करने जा रहे हों। दुनिया में ऐसे खुशमिजाज लोग भी हैं।
"इसलिए वे मुझे सुन नहीं सकते," फुकेरी ने धीमी आवाज़ में कहा।
“वो?” टेंगो ने कहा।
उसकी निगाहें कहीं और भटकती देख, उसे स्पष्ट रूप से एहसास हुआ कि वह दो बच्चों वाली माँ को नहीं देख रही थी। वह किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में बात कर रही थी जो वहाँ नहीं था, किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में जिसे वह जानती थी, किसी खास व्यक्ति के बारे में, जिसके बारे में टेंगो को कोई जानकारी नहीं थी।
“वे कौन हैं?” उसने फिर पूछा। उसकी आवाज़ थोड़ी धीमी हो गई थी।
फुकेरी ने कोई जवाब नहीं दिया। उसकी भौहों के बीच एक हल्की सी शिकन आ गई, लेकिन उसके होंठ कसकर बंद रहे।
“छोटे लोग?” टेंगो ने पूछा।
कोई जवाब नहीं।
— आप जिनकी बात कर रहे हैं, वे तब गुस्सा हो जाते हैं जब कोई उनकी कहानी लिखकर प्रकाशित कर देता है और लोग उनके बारे में बात करने लगते हैं?
फुकेरी ने सवाल का जवाब नहीं दिया। वह बस खाली निगाहों से घूरता रहा। तेंगो ने थोड़ी देर इंतजार किया, लेकिन जब उसे एहसास हुआ कि उसे कोई जवाब नहीं मिलेगा, तो उसने दूसरा सवाल पूछा:
"आपने मुझे प्रोफेसर के बारे में कुछ नहीं बताया। वो किस तरह के आदमी हैं?" फुकेरी ने असमंजस में तेंगो की ओर देखा। मानो वह पूछ रही हो, यह क्या बकवास कर रहा है? फिर उसने कहा:
आप जल्द ही प्रोफेसर से मिलेंगे।
"ज़रूर," टेंगो ने कहा। "बिल्कुल ऐसा ही होगा। मैं उससे मिलूंगा और खुद देखूंगा कि वह किस तरह का आदमी है।"
कोकुबुंजी में, बुजुर्ग लोगों का एक समूह ट्रेन में चढ़ा, सभी पैदल यात्रा के लिए सजे-धजे थे। कुल मिलाकर लगभग दस पुरुष और महिलाएं थीं, जिनकी उम्र पैंसठ से पचहत्तर वर्ष के बीच थी। हर किसी की पीठ पर एक बैग और सिर पर टोपी थी। वे स्कूली बच्चों की तरह खुशी-खुशी बातें कर रहे थे। उनके कमरबंद पर पानी के जग बंधे थे या उनके बैग से लटके हुए थे। क्या मैं भी उस उम्र में इतना खुशमिजाज रहूंगा? तेंगो ने सोचा। फिर उसने हल्के से सिर हिलाया। शायद नहीं। उसने कल्पना की कि वे पहाड़ की चोटी पर अपने जग से पानी पी रहे हैं।
*

अपने छोटे आकार के बावजूद, नन्हे लोग खूब पानी पीते हैं। लेकिन उन्हें नल का पानी पसंद नहीं है; वे बारिश का पानी या पास की नदी का पानी पीना पसंद करते हैं। इसीलिए, दिन के समय, लड़की नदी से बाल्टी भरकर पानी लाती है ताकि नन्हे लोग पी सकें। जब बारिश होती है, तो वह बाल्टी को नाली के पास रख देती है और छज्जे से बहकर आने वाले पानी को इकट्ठा करती है। नन्हे लोग लड़की के प्रति

आभारी हैं क्योंकि वह उनकी देखभाल करती है, क्योंकि वे नदी के पानी की तुलना में बारिश का पानी पसंद करते हैं, हालांकि दोनों ही प्राकृतिक हैं।
*

टेंगो को एहसास हुआ कि वह अपने विचारों को एक दिशा में केंद्रित नहीं रख पा रहा है। यह अच्छा संकेत नहीं था। शायद इसलिए कि आज रविवार था। उसके भीतर एक अजीब सी उलझन पनप रही थी। भावनाओं के समतल मैदान पर एक भयानक रेत का तूफान उठने ही वाला था। रविवार को कभी-कभी ऐसा ही होता है।
"क्या हुआ?" फुकेरी ने धीरे से पूछा। उसने तेंगो की घबराहट को भांप लिया था। “क्या मैं सफल हो पाऊंगा?” उसने कहा।
- क्या वास्तव में…
क्या मैं ठीक से बोल पाऊंगा?
“ठीक से बोलो,” उसने पूछा। उसे उसकी बात समझ नहीं आई।
— प्रोफेसर के साथ।
"आप प्रोफेसर से ठीक से बात कर पाएंगे," उसने दोहराया।
टेंगो एक पल के लिए हिचकिचाया, फिर उसने सच बोलने का फैसला किया:
मुझे ऐसा लग रहा है कि अंत में चीजें ठीक नहीं होंगी और सब कुछ व्यर्थ हो जाएगा।
फुकेरी ने मुड़कर उसकी आंखों में सीधे देखा।
"तुम क्यों डर रहे हो?" उसने उससे पूछा।
“मुझे डर क्यों लग रहा है?” उसने दोहराया।
फुकेरी ने बिना कुछ कहे सिर हिलाया।
"मुझे लगता है कि मुझे नए लोगों से मिलने से डर लगता है। खासकर रविवार की सुबह," टेंगो ने कहा।
"रविवार ही क्यों?" फुकेरी ने पूछा।
टेंगो के बगल से पसीना बहने लगा था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसकी छाती किसी पट्टे में जकड़ी हुई हो। वह किसी से मिलने वाला था और नई चीजें घटने वाली थीं।
उसकी जिंदगी बदलने वाली थी।
"रविवार ही क्यों?" लड़की ने फिर पूछा।
टेंगो को अपने बचपन के रविवार याद आ रहे थे। जब उनका रोज़ का काम खत्म हो जाता, तो उसके पिता उसे रेलवे स्टेशन के सामने एक कैफे में ले जाते और उसे मनचाहा खाना मंगवाने के लिए कहते। यह उसके लिए एक इनाम जैसा होता था। वे सादगी से रहते थे, और यही वो समय होता था जब वे बाहर खाना खाते थे। कभी-कभी, उसके पिता एक बियर पी लेते (वे शराब को लगभग कभी हाथ नहीं लगाते थे)। लेकिन टेंगो, चाहे वह कुछ भी चुन सकता था, उसकी भूख मर जाती थी। आमतौर पर उसे हमेशा भूख लगती थी, लेकिन रविवार को कोई भी खाना स्वादिष्ट नहीं लगता था। उसके लिए अपनी थाली में रखा सारा खाना खत्म करना किसी यातना से कम नहीं था – और किसी भी हालत में थाली में कुछ भी छोड़ना मना था। कभी-कभी तो उसे उल्टी जैसा महसूस होता था। टेंगो के बचपन के रविवार ऐसे ही होते थे।
फुकेरी उसे देखती रही, उसकी आँखों में कुछ खोजने की कोशिश कर रही थी। फिर उसने हाथ बढ़ाकर टेंगो का हाथ पकड़ लिया। टेंगो चौंक गया, लेकिन उसने अपनी भावनाओं को ज़ाहिर न होने देने की कोशिश की।

कुनिताची स्टेशन पहुँचने तक फुकाएरी ने उसका हाथ थामे रखा। उसका हाथ उम्मीद से कहीं ज़्यादा मज़बूत और कोमल था। न तो गर्म था और न ही ठंडा। उसका आकार लगभग तेंगो की हथेली का आधा था।
"डरो मत। यह कोई साधारण रविवार नहीं है," लड़की ने ऐसे लहजे में कहा मानो वह कोई ऐसी बात कह रही हो जो हर कोई जानता हो।
टेंगो ने सोचा, मुझे लगता है कि यह पहली बार है जब मैंने उसे एक बार में एक से अधिक वाक्य बोलते हुए सुना है।

अध्याय 9 परिदृश्य बदलता है, नियम बदलते हैं

ओमामे पास के पुस्तकालय में गई और अख़बारों के संक्षिप्त संस्करण देखने को कहा। सितंबर से नवंबर 1981 तक के तीन महीने के अंक। पुस्तकालयाध्यक्ष ने उससे पूछा कि उसे कौन सा अख़बार पसंद है, असाही, योमिउरी, मैनिची या निक्केई। वह चश्मा पहने एक अधेड़ उम्र की महिला थी, जो पूर्णकालिक पुस्तकालय कर्मचारी की बजाय अंशकालिक गृहिणी जैसी दिखती थी। वह ज़्यादा मोटी नहीं थी, लेकिन उसकी कलाइयाँ पायल की तरह सूजी हुई थीं।
ओमामे ने उससे कहा कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वे सब तो वैसे भी एक जैसे ही हैं।
"आप सही कह रहे हैं, लेकिन कृपया एक विकल्प चुनें," महिला ने आगे की टिप्पणियों को रोकने के लिए एकरस स्वर में कहा।
आओमामे को इस विषय पर और चर्चा करने का मन नहीं था, इसलिए उसने यूं ही मैनिची अखबार उठा लिया। फिर वह अलग-थलग पड़ी पढ़ने की मेजों में से एक पर बैठ गई, एक नोटबुक खोली और कलम हाथ में लेकर लेखों को सरसरी तौर पर पढ़ने लगी।
1981 की शरद ऋतु की शुरुआत में कोई बड़ी घटना नहीं घटी थी। उसी साल जुलाई में प्रिंस चार्ल्स ने डायना से शादी की थी, और उनकी शादी की गूंज अभी भी हर जगह सुनाई दे रही थी। वे कहाँ गए थे, उन्होंने क्या किया था, डायना ने क्या पहना था, उन्होंने क्या-क्या गहने पहने थे। बेशक, आओमामे को चार्ल्स और डायना की शादी के बारे में पता था, लेकिन इसमें उनकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह समझ नहीं पा रही थीं कि ग्रेट ब्रिटेन के किसी राजकुमार या राजकुमारी का भाग्य इतना दिलचस्प क्यों हो सकता है। चार्ल्स उन्हें राजकुमार से ज़्यादा पेट की समस्याओं से ग्रस्त भौतिकी के प्रोफेसर जैसे लगते थे।
पोलैंड में, वालेसा के नेतृत्व वाली सॉलिडेरिटी ट्रेड यूनियन ने शासन के खिलाफ अपना विरोध और मजबूत कर लिया था, और सोवियत संघ ने इस पर अपनी "चिंता" व्यक्त की थी। दूसरे शब्दों में, अगर पोलिश सरकार स्थिति पर नियंत्रण पाने में विफल रहती, तो उन्हें बख्तरबंद सेना भेजने का खतरा था, जैसा कि 1968 के प्राग स्प्रिंग में हुआ था। आओमामे को भी इनमें से अधिकांश घटनाएँ याद थीं। वह जानती थी कि अंततः सोवियत संघ ने उन पर आक्रमण करने का इरादा छोड़ दिया था। इसीलिए लेखों को विस्तार से पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं थी। हालाँकि, एक बात ने उसका ध्यान खींचा, और वह यह थी कि सोवियत हस्तक्षेप को हतोत्साहित करने के प्रयास में, अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने घोषणा की थी: "हमें उम्मीद है कि पोलैंड में तनाव चंद्रमा पर एक सैन्य अड्डा बनाने की संयुक्त अमेरिकी- सोवियत योजनाओं को प्रभावित नहीं करेगा।" चंद्रमा पर एक अड्डा? उसने ऐसी बात कभी नहीं सुनी थी। हालाँकि ऐसा लग रहा था कि उसने हाल ही में टीवी पर इस संबंध में एक समाचार रिपोर्ट सुनी थी। उस रात जब वह अकासाका के होटल में कंसाई के गंजे आदमी के साथ सोई थी।
20 सितंबर को जकार्ता में विश्व की सबसे बड़ी पतंगबाजी प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें दस हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया। यह खबर आओमामे ने नहीं सुनी

थी, लेकिन आश्चर्य की बात भी नहीं थी। तीन साल पहले जकार्ता में हुई पतंगबाजी प्रतियोगिता किसे याद होगी?
6 अक्टूबर को मिस्र के राष्ट्रपति अनवर सादात की एक चरमपंथी इस्लामी समूह के सदस्यों ने हत्या कर दी थी। आओमामे को वह घटना याद आई और वह राष्ट्रपति सादात के बारे में सोचकर दुखी हुई। उसे उनका गंजा सिर बहुत पसंद था और वह धार्मिक कट्टरपंथियों से दिल से नफरत करती थी। उसे गुस्सा तभी आता था जब वह उनकी संकीर्ण सोच, उनके अहंकारी श्रेष्ठता के भाव या दूसरों के मामलों में उनकी बेपरवाही के बारे में सोचती थी। यह ऐसा गुस्सा था जिसे वह पूरी तरह से काबू नहीं कर पाती थी। लेकिन इसका उसकी मौजूदा समस्याओं से कोई लेना-देना नहीं था। आओमामे ने कुछ गहरी सांसें लीं, खुद को शांत किया और अगला पृष्ठ पलट दिया।
12 अक्टूबर को टोक्यो के इटाबाशी जिले के एक मोहल्ले में, एनएचके के एक छप्पन वर्षीय कैशियर का एक छात्र से झगड़ा हो गया। छात्र ने रेडियो और टीवी का शुल्क देने से इनकार कर दिया था, जिसके बाद कैशियर ने अपने बैग में रखे चौड़े धार वाले चाकू से कैशियर के पेट में वार कर दिया। पुलिस ने तुरंत हस्तक्षेप किया और उसे गिरफ्तार कर लिया। वह घटनास्थल पर खून से सना चाकू हाथ में पकड़े खड़ा रहा और गिरफ्तारी का कोई विरोध नहीं किया। एक सहकर्मी ने बताया कि वह व्यक्ति एनएचके में छह साल से काम कर रहा था और एक मेहनती कर्मचारी था जिसके काम करने का तरीका बहुत अच्छा था।
ओमामे को इस घटना के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। वह योमियूरी अखबार की सब्सक्राइबर थी और उसे हर दिन शुरू से अंत तक पढ़ती थी। वह सामाजिक अनुभाग के लेखों को विशेष ध्यान से पढ़ती थी, खासकर अपराधों और जुर्मों से संबंधित लेखों को। और यह लेख शाम के संस्करण के सामाजिक पृष्ठ के लगभग आधे हिस्से में फैला हुआ था। यह अकल्पनीय था कि वह इतने बड़े लेख को न देखे। लेकिन यह भी पूरी तरह से असंभव नहीं था कि उसकी नज़र उस पर संयोग से पड़ी हो। इसकी संभावना बहुत कम थी, लेकिन यह पूरी तरह से असंभव भी नहीं था।
माथे पर शिकन लिए, आओमामे ने कुछ देर तक इस संभावना पर विचार किया। फिर उसने अपनी नोटबुक में घटना की तारीख और उसका संक्षिप्त विवरण लिख लिया।
कैशियर का नाम शिनोसुके अकुतागावा था। कितना शानदार नाम, मानो किसी साहित्यकार का हो। उसकी तस्वीर नहीं दिखी, बल्कि सिर्फ़ उस लड़के की तस्वीर दिखी जिसे चाकू मारा गया था—अकीरा तागावा, इक्कीस साल का। वह निहोन विश्वविद्यालय में कानून का तीसरे साल का छात्र था और केंडो में द्वितीय-दान था। अगर उसके हाथ में बाँस की तलवार होती, तो वह इतनी आसानी से खुद को चाकू नहीं लगने देता, लेकिन भला कौन सामान्य व्यक्ति हाथ में तलवार लिए एनएचके के कैशियर से बात करेगा? दूसरी ओर, कोई भी सामान्य एनएचके कैशियर अपने बैग में चाकू लेकर शहर में नहीं घूमता। आओमामे ने अगले कुछ दिनों तक खबरों पर बारीकी से नज़र रखी, लेकिन उसे ऐसी कोई खबर नहीं मिली जिसमें छात्र की मौत की बात कही गई हो। शायद वह बच निकला था।
16 अक्टूबर को, होक्काइडो के युबारी में एक खदान में भीषण दुर्घटना हुई थी। एक हजार मीटर गहरी सुरंग में आग लग गई और भूमिगत फंसे पचास खनिकों की दम घुटने से मौत हो गई। आग की लपटें फैलती गईं और लगभग धरती की सतह तक पहुंच गईं, जिससे दस और खनिकों की जान चली गई। आग को फैलने से रोकने के लिए, कंपनी ने यह सुनिश्चित किए बिना कि कोई जीवित बचा है या नहीं, पंप से सुरंगों में पानी भर

क्यों न इसे इस तरह से देखा जाए: समस्या मुझमें नहीं, बल्कि मेरे आस-पास की दुनिया में है। मेरे मन और मनोदशा में कुछ भी नहीं बदला, लेकिन बाहरी दुनिया की कुछ चीजों में एक बल के प्रभाव से विभिन्न परिवर्तन हुए।
वह जितना ज्यादा इसके बारे में सोचती गई, यह सिद्धांत उतना ही अधिक तर्कसंगत लगने लगा, क्योंकि वह इस विचार को स्वीकार नहीं कर सकती थी कि उसके दिमाग को कुछ नुकसान पहुंचा है।
इसलिए, उन्होंने इस सिद्धांत को आगे बढ़ाया।
मुझे नहीं, बल्कि मेरे आसपास की दुनिया को कष्ट सहना पड़ा।
हां, यह इसी तरह काम करता है।
एक समय ऐसा आया जब मेरी जानी-पहचानी दुनिया गायब हो गई और उसकी जगह एक नई दुनिया आ गई। ठीक वैसे ही जैसे रेल की पटरी के पॉइंट्स बदल दिए जाते हैं। दूसरे शब्दों में, मेरा मन अब मूल दुनिया से जुड़ा हुआ है, लेकिन दुनिया खुद बदल चुकी है। और इसमें बदलाव अभी सीमित हैं। मेरी जानी-पहचानी ज़्यादातर चीज़ें नई दुनिया में वैसे ही स्थानांतरित हो गई हैं। इसीलिए मुझे रोज़मर्रा की ज़िंदगी में (अभी तक) कोई खास कठिनाई नहीं आई है। लेकिन ये "बदलाव" धीरे- धीरे बढ़ते जाएंगे और मेरे आस-पास और भी ज़्यादा विसंगतियां पैदा करेंगे। गलतियां धीरे-धीरे बढ़ेंगी, मेरे कार्यों के तर्क को प्रभावित करेंगी और शायद मुझे गंभीर गलतियां करने पर मजबूर कर देंगी। यह मेरे लिए सचमुच घातक होगा।
समानांतर दुनियाएँ।
आओमामे ने मुंह बनाया जैसे उसके मुंह में कुछ बहुत खट्टा स्वाद आ गया हो, लेकिन पहले जितना तेज़ नहीं। वह फिर से अपने सामने के दांतों पर पेन से थपथपाने लगी और गले से गुर्राने लगी। उसके पीछे बैठा हाई स्कूल का छात्र उसकी आवाज़ सुन गया, लेकिन इस बार उसने अनसुना करने का नाटक किया।
आओमामे ने सोचा, हम पहले ही विज्ञान कथा की दुनिया में प्रवेश कर चुके हैं। क्या ऐसा हो सकता है कि मैंने आत्मरक्षा की भावना से प्रेरित होकर यह स्वार्थी सिद्धांत गढ़ लिया हो? शायद वास्तव में मेरे साथ कुछ हुआ हो। मैं अपने दिमाग को सौ प्रतिशत सामान्य मानता हूँ और यह मानता हूँ कि मेरी मनोदशा किसी भी तरह से प्रभावित नहीं है। लेकिन क्या कोई मानसिक रूप से बीमार व्यक्ति यही दावा नहीं करेगा कि वह पूरी तरह से सामान्य है और दुनिया पागल हो गई है? क्या मैंने समानांतर दुनियाओं का यह मनगढ़ंत सिद्धांत केवल अपने पागलपन को जबरदस्ती सही ठहराने के लिए गढ़ा है?
मुझे एक निष्पक्ष तीसरे पक्ष की राय चाहिए।
मैं इलाज के लिए मनोचिकित्सक के पास नहीं जा सकता। मामला बहुत पेचीदा है और मैं कई बातों पर चर्चा भी नहीं कर सकता। उदाहरण के लिए, मेरे उस "धंधे" के बारे में जो निस्संदेह गैरकानूनी है। आखिर, मैं अपने हाथों से बनाई हुई छेनी से लोगों की हत्या करता हूँ। मैं डॉक्टर को ऐसी बात नहीं बता सकता, भले ही वे लोग कितने ही नीच और भ्रष्ट क्यों न हों।
अगर मैं किसी तरह गैरकानूनी पहलुओं को छुपा भी लूँ, तो भी मैं यह नहीं कह सकता कि अब तक मेरा कानूनी जीवन बिल्कुल सामान्य रहा है। यह गंदे कपड़ों से भरे एक संदूक की तरह है। और इसमें इतनी बातें हैं जो किसी को भी पागल कर सकती हैं।

शायद दो-तीन भी। मेरी यौन जिंदगी का जिक्र करना ही काफी होगा। यह ऐसी बात नहीं है जिसके बारे में मैं किसी से आमने-सामने बात कर सकूँ।
"मैं डॉक्टर के पास नहीं जा सकती," आओमामे ने निष्कर्ष निकाला। "मुझे इस समस्या का समाधान खुद ही करना होगा।"
चलिए, मैं अपने इस सिद्धांत को थोड़ा और आगे बढ़ाने की कोशिश करता हूँ।
यह मानते हुए कि वास्तव में ऐसा हुआ था, यानी यह मानते हुए कि जिस दुनिया में मैं अभी हूं वह वास्तव में अलग है, वह सटीक क्षण और बिंदु क्या है जिस पर यह परिवर्तन हुआ?
ओमामे ने ध्यान केंद्रित किया और अपनी याददाश्त खंगाली।
पहली बार उसने बदलाव तब महसूस किया जब कुछ दिन पहले उसने शिबुया के एक होटल के कमरे में तेल विशेषज्ञ से मिलने का इंतज़ाम किया था। वह मेट्रोपॉलिटन हाईवे नंबर 3 पर टैक्सी से उतरा, आपातकालीन सीढ़ियों से डीएन 246 पर गया, अपनी टाइट्स पहनीं और टोक्यो लाइन के संगेनजाया स्टेशन के लिए निकल पड़ा। रास्ते में उसकी मुलाकात एक युवा पुलिसकर्मी से हुई और उसने देखा कि वह हमेशा की तरह नहीं दिख रहा था। यह पहली बार था जब उसने ऐसा देखा। इसका मतलब था कि दुनियाओं के बीच का बदलाव कुछ समय पहले ही हो चुका था। उस सुबह घर के पास उसने जिस पुलिसकर्मी को देखा था, उसने अपनी सामान्य वर्दी पहनी हुई थी और उसकी कमर पर एक पुरानी रिवॉल्वर थी।
ओमामे को टैक्सी में जनाचेक के सिम्फोनीटा की शुरुआत सुनते हुए हुई अजीब सी अनुभूति याद आई। ऐसा लगा जैसे उसका पूरा शरीर मरोड़ रहा हो। उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे उसे किसी चिथड़े की तरह निचोड़ा जा रहा हो। फिर ड्राइवर ने उसे आपातकालीन सीढ़ी के बारे में बताया, और उसने अपने जूते उतार दिए और उस खतरनाक सीढ़ी से नीचे उतरने लगी। जैसे-जैसे वह नंगे पैर और हवा से लहराते बालों के साथ नीचे उतर रही थी, सिम्फोनीटा की शुरुआत का संगीत उसके मन में बार-बार गूंज रहा था। ओमामे ने सोचा, यही शुरुआत रही होगी।
टैक्सी चालक भी कुछ अजीब था। आओमामे को उसके विदाई के शब्द अभी भी याद थे, जिन्हें वह यथासंभव सटीक रूप से अपने मन में दोहराने की कोशिश कर रही थी।

अगर आप ऐसा करते हैं, तो हो सकता है कि अब से आपकी दिनचर्या थोड़ी अलग दिखे। लेकिन दिखावे से धोखा मत खाइए। वास्तविकता हमेशा एक जैसी ही रहती है।

और तब आओमामे को उसके शब्द अजीब लगे थे। लेकिन उसे वास्तव में समझ नहीं आया था कि उसका मतलब क्या था, और उसे परवाह भी नहीं थी। वह जल्दी में थी और उसके पास जटिल बातों के बारे में सोचने का समय नहीं था, लेकिन अब उसे एहसास हुआ कि उसके शब्द आश्चर्यजनक और अजीब थे। वह उन्हें एक चेतावनी के रूप में ले सकती थी, या शायद एक संकेत के रूप में भी। वह उसे क्या बताने की कोशिश कर रहा था?
फिर जनासेक का संगीत था।
मैंने जनाचेक की सिम्फोनीटा को तुरंत कैसे पहचान लिया? उसने सोचा। मुझे कैसे पता चला कि यह 1926 में रचित हुई थी? यह इतनी प्रसिद्ध रचना नहीं है कि कोई भी इसे पहले सुरों से पहचान ले। इसके अलावा, मैं शास्त्रीय संगीत की प्रशंसक नहीं हूँ। मैं हेडन और बीथोवेन में भी अंतर नहीं कर सकती। तो फिर टैक्सी में

रेडियो पर इसे सुनते ही मैंने तुरंत "यह जनाचेक की सिम्फोनीटा है" क्यों कहा? और इसने मुझे इतना झकझोर क्यों दिया?
हाँ, इसने मुझे व्यक्तिगत रूप से बहुत प्रभावित किया। ऐसा लगा जैसे मेरे भीतर लंबे समय से दबी हुई कुछ यादें अचानक जाग उठी हों, जब मुझे इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। ऐसा लगा जैसे उसने मुझे कंधे से पकड़कर हिला दिया हो। इसका मतलब है कि शायद किसी समय मैं इस रचना से गहराई से जुड़ा हुआ था, और जैसे ही मैंने इसे सुना, मानो कोई स्विच ऑन हो गया और कुछ यादें उभरने लगीं। जनाचेक की सिम्फोनीटा। और फिर भी, चाहे आओमामे ने अपनी यादों में कितनी भी गहराई से खोजबीन की हो, उसे कुछ नहीं मिला।
ओमामे ने चारों ओर देखा, अपने हाथों को देखा, अपने नाखूनों को निहारा और यहाँ तक कि अपनी कमीज़ के ऊपर से अपने स्तनों को भी महसूस किया। कुछ नहीं बदला, उसने सोचा। उनका आकार और रूप पहले जैसा ही है। मैं वही हूँ, दुनिया वही है। और फिर भी कुछ बदलना शुरू हो रहा है। मैं इसे महसूस कर रही हूँ। जैसे कोई खेल हो जिसमें आपको अंतर ढूंढना होता है। दीवार पर अगल-बगल चिपकी हुई दो तस्वीरें हैं, जो देखने में बिल्कुल एक जैसी लगती हैं। लेकिन अगर आप उन्हें बहुत ध्यान से देखें, तो आपको उनमें कुछ छोटे-छोटे अंतर नज़र आते हैं।
अपना मूड ठीक करने के लिए, आओमामे ने अखबार के पन्ने पलटे और मोतोसु झील के पास हुए सशस्त्र संघर्ष के बारे में कुछ जानकारी लिख ली। अनुमान लगाया जा रहा था कि चीन में बनी पांच AK-47 कलाश्निकोव राइफलें असल में कोरियाई प्रायद्वीप से तस्करी करके लाई गई थीं। संभवतः, ये सेना के पुराने हथियार थे, लेकिन अच्छी हालत में थे। इनमें पर्याप्त गोला-बारूद भी था। जापान सागर का तट लंबा है, और अंधेरे की आड़ में मछली पकड़ने वाली नावों के वेश में हथियार और गोला-बारूद लाना मुश्किल नहीं है। इसी तरह तस्कर जापान में लाए गए नशीले पदार्थों और हथियारों से मोटी कमाई करते थे।
यामानाशी पुलिस को इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि चरमपंथी समूह कितने हथियारों से लैस था। उन्होंने हिंसा की घटनाओं के लिए तलाशी वारंट हासिल किया था – शायद महज़ एक बहाना – और दो पुलिस कारों और एक मिनीबस में सवार होकर वे अपने सामान्य साजो-सामान के साथ उस "फार्म" की ओर चल पड़े, जहाँ डॉन ऑफ द डे नामक समूह का ठिकाना था, जो ऊपरी तौर पर जैविक खेती में लगा हुआ था। उन्होंने पुलिस को परिसर में प्रवेश करने से मना कर दिया, माहौल तनावपूर्ण हो गया और परिणामस्वरूप गोलीबारी शुरू हो गई।
समूह के पास चीन निर्मित शक्तिशाली ग्रेनेड भी थे, लेकिन उन्होंने उनका इस्तेमाल नहीं किया था। इसका कारण यह था कि उन्हें ये ग्रेनेड अभी-अभी मिले थे और उन्हें उचित प्रशिक्षण प्राप्त करने का समय नहीं मिला था। यह एक बड़ी राहत साबित हुई, क्योंकि अगर ग्रेनेड का इस्तेमाल किया जाता तो पुलिस और आत्मरक्षा बलों के हताहतों की संख्या और भी अधिक होती। शुरुआत में, पुलिस ने बुलेटप्रूफ जैकेट तक नहीं पहनी थी। लोगों ने पुराने उपकरणों और अधिकारियों द्वारा सूचनाओं के विश्लेषण में बरती गई सतहीपन पर ध्यान दिया था। लेकिन सबसे ज्यादा भयभीत करने वाली बात यह थी कि ऐसा चरमपंथी समूह अभी भी एक सशस्त्र इकाई के रूप में मौजूद था और दुनिया की नजरों से दूर पूरी तरह सक्रिय था। 1960 के दशक के उत्तरार्ध में, भव्य "क्रांति" का शोर अतीत की बात हो चुका

था, और असामा सान्सो घटना में चरमपंथी गुटों के अंतिम अवशेषों को पूरी तरह से नष्ट मान लिया गया था।
अपने सारे नोट्स लेने के बाद, आओमामे ने अखबार वापस रख दिए, संगीत की अलमारी से 'दुनिया भर के संगीतकार' शीर्षक वाली एक मोटी किताब उठाई और पढ़ने की मेज पर लौट आई। उसने उसे जनाचेक के बारे में लिखे पृष्ठ पर खोला।
*

लियोस जनाचेक का जन्म 1854 में मोराविया के एक गाँव में हुआ था और उनका निधन 1928 में हुआ। पुस्तक में उनकी वृद्धावस्था की एक तस्वीर भी शामिल है। उनके सिर के बाल बिल्कुल नहीं झड़े थे, लेकिन वे घास की तरह घने सफेद बालों से ढके हुए थे। उनके सिर का आकार पहचानना मुश्किल था। उन्होंने 1926 में सिम्फोनीटा की रचना की थी। जनाचेक का वैवाहिक जीवन सुखहीन और प्रेमहीन था, लेकिन 1917 में, तिरसठ वर्ष की आयु में, उनकी मुलाकात कामिला से हुई, जो एक विवाहित महिला थीं, और जिनसे उन्हें प्रेम हो गया। दो परिपक्व विवाहित व्यक्तियों के बीच प्रेम का यह प्रेम प्रसंग था। अवसाद से ग्रस्त जनाचेक ने कामिला से हुई मुलाकात का उपयोग अपनी रचनात्मक ऊर्जा को फिर से जगाने के लिए किया। अपने अंतिम वर्षों में उन्होंने एक के बाद एक उत्कृष्ट कृतियों का निर्माण किया। एक दिन, पार्क में उनके साथ टहलते हुए, उन्होंने देखा कि पास में ही एक खुला संगीत कार्यक्रम चल रहा है और वे उसे सुनने के लिए रुक गए। उसी क्षण, जनाचेक को परमानंद का अनुभव हुआ, जिसने इस सिम्फोनिएटा की धुन को प्रेरित किया। उन्हें याद आया कि कैसे उनके दिमाग में कुछ विस्फोट हुआ और वे परमानंद की लहर में डूब गए। ठीक उसी समय, उन्हें एक बड़ी खेल प्रतियोगिता के लिए एक फैनफेयर की रचना करने के लिए कहा गया था, और उन्होंने पार्क से प्रेरित धुन का उपयोग किया, इस प्रकार सिम्फोनिएटा को जन्म दिया। इस रचना को "सिम्फोनिएटा" कहा जाता है, लेकिन इसकी संरचना बहुत ही अपरंपरागत है, और पीतल वाद्ययंत्रों द्वारा बजाया गया उत्सवपूर्ण और उज्ज्वल फैनफेयर, मध्य यूरोपीय स्ट्रिंग वाद्ययंत्रों के नाजुक समूह के साथ मिलकर एक अनूठा वातावरण बनाता है - ऐसा उन्होंने प्रस्तावना में लिखा है।
ओमामे ने अपनी नोटबुक में जीवनी संबंधी यह विवरण और इसके साथ दिए गए स्पष्टीकरण लिख लिए। लेकिन इस नोटबुक से उन्हें यह पता नहीं चल पाया कि उनका और इस सिम्फोनीटा का क्या संबंध था या हो सकता था। ओमामे पुस्तकालय से निकलकर कुछ देर तक गलियों में भटकती रहीं, जहाँ शाम ढलने लगी थी। बीच-बीच में वह कुछ बुदबुदाती और अपना सिर हिलाती रहतीं।
हाँ, ये तो बस एक सिद्धांत है, चलते-चलते उसने सोचा। लेकिन फिलहाल, यही सबसे ठोस सिद्धांत है जो मेरे पास है। जब तक कोई और ठोस सिद्धांत सामने नहीं आता, मुझे इसी पर अमल करना होगा, वरना कौन जाने मैं कहाँ पहुँच जाऊँगी। और इसीलिए मुझे अपनी इस नई स्थिति के लिए एक उपयुक्त नाम ढूंढना होगा। मुझे एक ऐसा विशिष्ट नाम चाहिए, जिससे मैं इस दुनिया को उस दूसरी दुनिया से अलग कर सकूँ, जहाँ पुलिसवालों की कमर में पुरानी रिवॉल्वरें होती थीं। यहाँ तक कि कुत्तों और बिल्लियों के भी नाम होते हैं। तो बदलावों से भरी इस नई दुनिया को भी एक नाम चाहिए।
आओमामे ने फैसला किया, "वर्ष 1Q84 - मैं इस दुनिया को यही नाम दूंगी।"
Q, प्रश्न चिह्न से आया है। क्योंकि यहाँ बहुत सारे प्रश्न चिह्न हैं।

ओमामे ने सिर हिलाया और आगे बढ़ गई।
चाहे पसंद हो या ना हो, मैं अब "वर्ष 1Q84" में हूँ। 1984, जैसा कि मैं उसे जानता था, अब नहीं रहा। अब 1Q84 है। एक अलग वातावरण, एक अलग परिदृश्य। मुझे इस अनिश्चितता से भरी दुनिया में जल्द से जल्द खुद को ढालना होगा। ठीक वैसे ही जैसे किसी नए जंगल में छोड़ा गया जानवर। अपनी रक्षा करने और जीवित रहने के लिए, मुझे इस जगह के नियमों को जल्दी से समझना होगा और उनका पालन करना होगा।
*

ओमामे जियुगाओका स्टेशन के पास एक संगीत की दुकान में गई और जनाचेक की सिम्फोनीटा ढूंढने लगी। चूंकि जनाचेक एक प्रसिद्ध संगीतकार नहीं थे, इसलिए उनके लिए समर्पित अनुभाग छोटा था, और उसे सिम्फोनीटा की केवल एक ही रिकॉर्डिंग मिली। इसे जॉर्ज स्ज़ेल के निर्देशन में क्लीवलैंड ऑर्केस्ट्रा ने प्रस्तुत किया था। ए साइड पर बार्टोक का ऑर्केस्ट्रा कॉन्सर्टो था। ओमामे को नहीं पता था कि वह प्रस्तुति कैसी थी, लेकिन चूंकि उसके पास कोई और विकल्प नहीं था, इसलिए उसने एलपी खरीद ली। वह घर लौटी, फ्रिज से शैब्लिस की एक बोतल निकाली, उसका ढक्कन खोला, रिकॉर्डिंग को टर्नटेबल पर रखा और सुई नीचे कर दी। फिर उसने ठंडी वाइन का आनंद लेते हुए संगीत सुना। शुरुआती धुन शानदार थी। यह बिल्कुल वही थी जो उसने टैक्सी में सुनी थी। इसमें कोई संदेह नहीं था। ओमामे ने अपनी आँखें बंद कर लीं और संगीत पर ध्यान केंद्रित किया। प्रस्तुति बुरी नहीं थी। लेकिन इस बार कुछ नहीं हुआ। उसने संगीत सुना, और बस इतना ही। उसे अपने शरीर में कोई विकृति या इंद्रियों में कोई परिवर्तन महसूस नहीं हुआ। उसने गाना अंत तक सुना, फिर रिकॉर्ड को उसके कवर में वापस रखा, ज़मीन पर बैठ गई और दीवार से टेक लगाकर गिलास से घूंट लेती रही। अकेले में इस तरह पीते हुए, सोचते हुए, उसे शराब का कोई स्वाद नहीं लग रहा था। आओमामे बाथरूम गई, साबुन से चेहरा धोया, कैंची से भौंहें संवारीं और रुई से कान पोंछे।
या तो मेरे साथ कुछ अजीब हुआ है, या फिर दुनिया के साथ, उसने सोचा। दोनों में से एक बात तो पक्की है। पर पता नहीं कौन सी। ढक्कन जार पर ठीक से फिट नहीं हो रहा। शायद जार में कोई खराबी है, शायद ढक्कन में। खैर, आकार तो मेल नहीं खाते, और यह एक निर्विवाद सत्य है।
ओमामे ने फ्रिज खोला और उसमें रखी चीजों का जायजा लिया। उसमें ज्यादा कुछ नहीं था, क्योंकि उसने कुछ दिनों से खरीदारी नहीं की थी।
उसने एक पका हुआ पपीता निकाला, उसे चाकू से आधा काटा और चम्मच से खा लिया। फिर उसने तीन खीरे लिए, उन्हें धोया और उन पर मेयोनेज़ लगाकर धीरे-धीरे चबाया।
फिर उसने एक गिलास सोया दूध पिया और इसी के साथ उसका रात का खाना खत्म हो गया। एक साधारण भोजन, लेकिन कब्ज से बचने के लिए आदर्श। कब्ज उन चीजों में से एक थी जिनसे आओमामे को सबसे ज्यादा नफरत थी। ठीक वैसे ही जैसे उसे क्रूर, हिंसक पुरुषों और संकीर्ण सोच वाले धार्मिक कट्टरपंथियों से नफरत थी।
खाना खाने के बाद, आओमामे ने कपड़े उतारे और गर्म पानी से नहाने चली गई। नहाने के बाद, उसने तौलिए से खुद को सुखाया और दरवाजे पर लगे शीशे में नग्न अवस्था में खुद को देखा। पतली कमर, सुडौल मांसपेशियां। बेजान, असमान स्तन, और गुप्तांगों के बाल किसी फुटबॉल मैदान की तरह बिखरे हुए। शीशे में नग्न अवस्था में देखते हुए, उसे अचानक याद आया कि एक हफ्ते में वह तीस साल की हो

□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□! □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□!
□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □ □□□□
□□□□□ 1Q84.
□□ □□□□□ □□ □□□□

अध्याय 10 वास्तविक क्रांति, रक्तपात के साथ

"हम बदल रहे हैं," फुकेरी ने कहा।
फिर ट्रेन के ताचिकावा स्टेशन पहुंचने से ठीक पहले उसने उसका हाथ दोबारा पकड़ लिया।
जैसे ही वे ट्रेन से उतरे और दूसरे प्लेटफार्म पर जाने के लिए सीढ़ियाँ चढ़े, फुकाएरी ने उसका हाथ थामे रखा। यकीनन आस-पास के लोगों ने उन्हें एक जोड़ा ही समझा होगा। दोनों की उम्र में काफी अंतर था, लेकिन तेंगो अपनी उम्र से छोटा दिखता था। निस्संदेह, बाहर से देखने पर, दोनों की ऊँचाई का अंतर मज़ेदार लगता था। वसंत ऋतु में, रविवार की सुबह, एक सुखद मुलाकात।
हालांकि, फुकाएरी के हाथ में कोई कामुक भावना नहीं थी। उसने लगातार बलपूर्वक उसका हाथ पकड़ रखा था। उसकी उंगलियां किसी डॉक्टर की तरह नब्ज़ जांच रही थीं। तेंगो ने सोचा, शायद यह लड़की अपनी उंगलियों और हथेलियों के स्पर्श से कुछ ऐसी बातें कह और समझ रही थी जो वह शब्दों से नहीं कह सकती थी। लेकिन मान भी लें तो भी, यह संवाद एकतरफा ही था। शायद वह अपनी हथेली के ज़रिए तेंगो के भीतर कुछ महसूस कर रही थी, लेकिन वह इस तरह फुकाएरी के विचारों को नहीं पढ़ सकता था। तेंगो को इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। वह उसकी आत्मा से जो चाहे पढ़ सकता था, उसके पास उससे छिपाने के लिए कोई विचार या भावना नहीं थी।
खैर, भले ही यह कामुक न हो, लेकिन यह लड़की मुझे कुछ हद तक पसंद करती है, टेंगो ने अनुमान लगाया। शायद मैंने उस पर बुरा प्रभाव नहीं डाला होगा। वरना, चाहे जो भी कारण हो, वह इतनी देर तक मेरा हाथ नहीं थामे रहती।
वे दोनों ओउमे लाइन के प्लेटफार्म पर गए और वहाँ खड़ी ट्रेन में चढ़ गए। रविवार होने के कारण, डिब्बा उम्मीद से कहीं अधिक भरा हुआ था, जिसमें परिवार और पर्वतीय यात्रा के लिए तैयार बुजुर्ग लोग मौजूद थे। वे बैठे नहीं, बल्कि दरवाजों के पास खड़े रहे।
"ऐसा लग रहा है जैसे वे किसी यात्रा पर जा रहे हैं," टेंगो ने चारों ओर देखते हुए कहा।
“क्या मैं आपका हाथ पकड़ सकती हूँ?” उसने पूछा।
और ट्रेन में चढ़ने के बाद भी वह उसका हाथ पकड़े रही।
"जी हां, बिल्कुल," उसने उत्तर दिया।
फुकेरी पहले से ज़्यादा शांत लग रही थी। उसकी हथेलियाँ और उंगलियाँ पहले की तरह ही कोमल थीं और उन पर ज़रा भी पसीना नहीं आया था। ऐसा लग रहा था मानो वह अभी भी उसके अंदर कुछ खोज रही हो और जाँच रही हो।
"क्या अब तुम्हें डर नहीं लगता?" उसने अपने सामान्य तटस्थ स्वर में पूछा। "नहीं, अब मेरे पास वह नहीं है," टेंगो ने उत्तर दिया।
यह झूठ नहीं था। रविवार की सुबह जो घबराहट उसे सता रही थी, वह काफी हद तक शांत हो चुकी थी, शायद फुकाएरी की वजह से। उसे अब पसीना नहीं आ रहा था, न ही उसके दिल की धड़कन सुनाई दे रही थी। उसे मतिभ्रम भी नहीं हो रहा था। उसकी सांसें भी सामान्य हो गई थीं।

"यह अच्छा है," फुकेरी ने सपाट लहजे में कहा।
कितना अच्छा है, टेंगो ने सोचा।
एक हड़बड़ी भरी आवाज़ ने बताया कि ट्रेन जल्द ही चलने वाली है, और दरवाज़े ज़ोरदार आवाज़ के साथ बंद हो गए। जैसे कोई बड़ा, बूढ़ा जानवर नींद से जागकर खुद को झटकता है, वैसे ही ट्रेन ने आखिरकार प्लेटफॉर्म को पीछे छोड़ते हुए चलना शुरू कर दिया।
फुकाएरी और टेंगो हाथ पकड़े खिड़की से बाहर देख रहे थे। पहले तो उन्हें साधारण घर ही दिखाई दिए, लेकिन जैसे-जैसे वे आगे बढ़े, मुसाशिनो के मैदान पहाड़ों में तब्दील होते गए और नज़ारा बदलने लगा। हिगाशी-ओउमे स्टेशन से रेलवे की केवल एक ही लाइन थी। उन्होंने तीसरी बार ट्रेन बदली। आसपास के पहाड़ अब और भी ज़्यादा दिखाई देने लगे थे। वे टोक्यो आने-जाने वाले लोगों के इलाके से बाहर निकल चुके थे। पहाड़ अभी भी सर्दियों के फीके रंग से ढके हुए थे, लेकिन फिर भी सदाबहार पेड़ों की ताज़ी हरियाली आँखों को भा रही थी। जब ट्रेन स्टेशन पर रुकी और दरवाज़े खुले, तो महसूस हुआ कि बाहर से आने वाली हवा में एक अलग ही गंध थी। आवाज़ें भी बदल गई थीं। उनके चारों ओर ज़्यादा से ज़्यादा खेत और किसानों के घर दिखाई देने लगे। सड़क पर कारों से ज़्यादा पिकअप ट्रक थे। टेंगो ने सोचा, हम काफ़ी दूर आ चुके हैं। अब हमें कितनी दूर जाना है?
"चिंता मत करो," फुकेरी ने ऐसे कहा मानो उसने उसके मन की बात पढ़ ली हो।
टेंगो ने चुपचाप सिर हिलाया। उसने सोचा, मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं किसी डेट पर जा रहा हूँ, अपने होने वाले ससुराल वालों से मिल रहा हूँ।
*

वे दोनों फुटामाताओ नामक स्टेशन पर उतरे। यह एक असामान्य नाम था, जिसे टेंगो ने पहले कभी नहीं सुना था। स्टेशन एक पुरानी लकड़ी की इमारत थी। उन दोनों के अलावा, लगभग पाँच और यात्री उतरे। कोई भी चढ़ा नहीं था। लोग ताज़ी हवा लेने और पहाड़ पर चढ़ने के लिए फुटामाताओ तक आते थे। बेशक, वे आते थे, लेकिन कोई भी यहाँ 'मैन ऑफ ला मांचा' शो देखने, डिस्को में घूमने, एस्टन मार्टिन शोरूम देखने या लॉबस्टर ग्रैटिन के लिए मशहूर किसी फ्रांसीसी रेस्तरां में जाने के लिए नहीं आता था। यह बात वहाँ उतरे यात्रियों को देखकर ही समझ आ जाती थी। स्टेशन के सामने कोई दुकान नाम की चीज़ नहीं थी, और सड़क पर भी कोई नज़र नहीं आ रहा था। इसके बजाय, एक टैक्सी ग्राहकों का इंतज़ार कर रही थी। शायद यह ट्रेनों के आने के समय आती होगी। फुकाएरी ने टैक्सी ड्राइवर की खिड़की पर धीरे से दस्तक दी। दरवाज़ा खुला और वह अंदर चढ़ गई, और तेंगो को भी अपने पीछे आने का इशारा किया। दरवाज़ा बंद होने पर, फुकाएरी ने ड्राइवर को संक्षेप में बताया कि उन्हें कहाँ जाना है, और ड्राइवर ने सिर हिलाकर सहमति दी।
उन्हें ज़्यादा दूर नहीं जाना था, लेकिन रास्ता बेहद घुमावदार था। वे खड़ी पहाड़ियों पर चढ़े, उतनी ही खड़ी ढलानों से उतरे और ऐसी संकरी ग्रामीण सड़कों को पार किया जहाँ दो कारें एक साथ नहीं चल सकती थीं। उन्होंने अनगिनत मोड़ लिए। लेकिन ड्राइवर मोड़ते समय बिल्कुल भी धीमा नहीं हुआ, इसलिए तेंगो, जिसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था, को दरवाज़े के ऊपर लगे हैंडल को कसकर पकड़ना पड़ा। कार एक स्की ढलान जितनी खड़ी चढ़ाई पर चढ़ी और ऊपर पहुँचकर रुक गई। ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी रोलर कोस्टर पर हो, टैक्सी में नहीं। तेंगो ने अपने बटुए से दो हज़ार येन के नोट निकाले और रसीद व बाकी पैसे ले लिए।

पुराने जापानी शैली के घर के सामने, एक छोटी व्हीलबेस वाली काली पजेरो और एक बड़ी हरी जगुआर खड़ी थीं। पजेरो एकदम साफ-सुथरी थी, लेकिन पुरानी जगुआर इतनी धूल भरी थी कि उसका रंग भी पहचानना मुश्किल था। ऐसा लग रहा था जैसे उसे काफी समय से हिलाया नहीं गया हो, क्योंकि विंडशील्ड गंदी थी। हवा आश्चर्यजनक रूप से साफ थी और चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। इतना गहरा सन्नाटा कि उसे सुनने के लिए कान लगाने पड़ते थे। आसमान बहुत ऊंचा था और सूरज की किरणों की गर्माहट त्वचा पर कोमल महसूस हो रही थी। बीच-बीच में किसी अनजान पक्षी की तीखी आवाज सुनाई देती थी, जिसे आप देख नहीं सकते थे।
घर बड़ा और भव्य था। देखने में पुराना लगता था, लेकिन अच्छी तरह से रखा हुआ था। बगीचे के पेड़ करीने से छंटे हुए थे। दरअसल, उन्हें इतनी सावधानी से लगाया गया था कि उनमें से कुछ प्लास्टिक के बने हुए लगते थे। एक बड़ा चीड़ का पेड़ ज़मीन पर भरपूर छाया फैला रहा था। जगह खुली थी और दूर-दूर तक कोई दूसरा घर नज़र नहीं आता था। भला कौन ऐसी असुविधाजनक जगह में रहना चाहेगा? तेंगो को शक था कि घर के मालिक को दूसरे लोगों से मिलना-जुलना पसंद नहीं होगा।
फुकेरी ने बिना ताला लगा हुआ दरवाज़ा ज़ोर से खोला और अंदर चली गई। उसने तेंगो को अपने पीछे आने का इशारा किया। कोई भी उनसे मिलने बाहर नहीं आया। उन्होंने बड़े, शांत हॉल में अपने जूते उतारे। वे हॉलवे के ठंडे, पॉलिश किए हुए फर्श पर कदम रखते हुए बैठक कक्ष में दाखिल हुए। खिड़की से दूर पहाड़ों का मनोरम दृश्य दिखाई दे रहा था। उन्हें सूरज की रोशनी में एक घुमावदार नदी भी दिखाई दे रही थी। यह एक खूबसूरत नज़ारा था, लेकिन तेंगो का मन इसे ठीक से देखने का नहीं था। फुकेरी ने उसे एक बड़े सोफे पर बैठने का इशारा किया और बिना कुछ कहे कमरे से बाहर चली गई। सोफे से बीते दिनों की महक आ रही थी। कितने बीते दिनों की, तेंगो को इसका कोई अंदाज़ा नहीं था।
बैठक कक्ष में सजावट की कोई वस्तु नहीं थी। मोटे तख्ते से बनी नीची मेज पर कुछ भी नहीं था। न ऐशट्रे, न मेज़पोश। दीवारों पर एक भी तस्वीर, घड़ी या कैलेंडर नहीं टंगा था। पूरे कमरे में एक भी फूलदान नहीं था। न कोई साइडबोर्ड, न किताबें, न पत्रिकाएँ। बस एक पुराना कालीन था, जो इतना फीका पड़ गया था कि उसका पैटर्न भी मुश्किल से दिखाई दे रहा था, और उतना ही पुराना सोफा, साथ में तीन आरामकुर्सियाँ। एक खुली चिमनी भी थी, लेकिन उसे देखकर ऐसा नहीं लग रहा था कि हाल ही में उसका इस्तेमाल हुआ हो। अप्रैल का मध्य होने के बावजूद, कमरा ठंडा था, मानो सर्दियों की ठंड अभी भी उसमें बसी हो। ऐसा लग रहा था मानो यह कमरा अपने मेहमानों का स्वागत न करने का फैसला कर चुका हो। फुकाएरी बिना कुछ कहे मुड़ी और सोफे पर तेंगो के बगल में बैठ गई।
दोनों काफी देर तक चुप रहे। फुकाएरी अपनी रहस्यमयी दुनिया में खोई हुई थी, और टेंगो धीरे-धीरे गहरी सांसें लेकर खुद को शांत करने की कोशिश कर रहा था। दूर से आती चिड़ियों की हल्की चहचाहट के अलावा, कमरा एकदम शांत था। टेंगो को लगा कि अगर वह ध्यान से सुने, तो इस खामोशी में कुछ छिपे हुए अर्थ हैं। यह सिर्फ शोर का न होना नहीं था, बल्कि खामोशी मानो अपने बारे में कुछ कह रही थी। टेंगो ने यूं ही अपनी घड़ी देखी। उसने अपनी नज़रें उठाकर खिड़की से बाहर देखा, फिर घड़ी पर वापस आ गया। घड़ी में वही समय था। रविवार की सुबह हमेशा समय बहुत धीरे-धीरे बीतता है।
*

लगभग दस मिनट बाद, अचानक दरवाजा खुला और एक दुबला-पतला, उत्तेजित आदमी अंदर आया। वह लगभग पैंसठ वर्ष का और लगभग पाँच फीट लंबा था, लेकिन उसका शरीर सीधा था और वह बिल्कुल भी कमजोर नहीं लग रहा था। उसने अपनी ठुड्डी पीछे की ओर खींच रखी थी और उसकी पीठ इतनी सीधी थी कि मानो उसमें लोहे की छड़ लगी हो। उसके मोटे फ्रेम वाले काले चश्मे के नीचे, जो लोगों को डराने के लिए ही बने लगते थे, उसकी घनी भौहें दिखाई दे रही थीं। उसकी चाल-ढाल किसी संकुचित, सुगठित मशीन की याद दिलाती थी। उसमें कुछ भी अतिरिक्त नहीं था और उसके सभी अंग पूरी कुशलता से काम कर रहे थे। टेंगो उसका अभिवादन करने के लिए खड़ा होने लगा, लेकिन उस आदमी ने हाथ से इशारा करके उसे बैठे रहने को कहा। उसने बात मान ली और सोफे पर वापस बैठ गया। कुछ देर तक वह आदमी बिना कुछ बोले उसे देखता रहा। उसकी निगाहें भेदक नहीं थीं, लेकिन बिना रुके, सिर से पैर तक आपको परख रही थीं। कभी-कभी वह अपनी आँखें सिकोड़ता, फिर उन्हें फैलाता, जैसे कोई फोटोग्राफर अपने लेंस का अपर्चर समायोजित कर रहा हो।
उस आदमी ने सफेद कमीज के ऊपर गहरे हरे रंग का स्वेटर और भूरे रंग की ऊनी पैंट पहनी हुई थी। ऐसा लग रहा था मानो वह पिछले दस सालों से रोज़ यही कपड़े पहनता आ रहा हो। ये कपड़े उस पर अच्छे लग रहे थे, लेकिन काफी पुराने और खस्ताहाल थे। शायद उसे इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं थी कि वह क्या पहनता है, और शायद उसके आस-पास कोई ऐसा भी नहीं था जिसे इसकी परवाह हो। उसके झड़ते बालों ने उसके लंबे सिर को और भी उभार दिया था। उसके गाल नुकीले और जबड़ा चौकोर था। बस उसके भरे हुए, मासूम से होंठ ही उसके पूरे रूप से मेल नहीं खा रहे थे। उसके चेहरे पर कुछ जगह दाढ़ी नहीं बनी थी, या शायद ये रोशनी के पड़ने के कारण पड़ने वाली परछाइयाँ थीं; खिड़की से आने वाली पहाड़ी रोशनी टेंगो की आदत से कुछ अलग थी। मुझे यहां तक आने के लिए खेद है।
उनकी आवाज में एक विशिष्ट लय थी। यह किसी ऐसे व्यक्ति की आवाज थी जो विशाल श्रोताओं के सामने सुसंगत भाषण देने का आदी था।
— मैं कई कारणों से यहां से नहीं जा सकता था, इसलिए आपके आने के अलावा कोई और रास्ता नहीं था।
टेंगो ने जवाब दिया कि उन्हें कोई आपत्ति नहीं है। फिर उन्होंने अपना परिचय दिया और बिजनेस कार्ड न होने के लिए माफी मांगी।
"मेरा नाम एबिसुनो है," उस आदमी ने कहा। "मेरे पास बिजनेस कार्ड भी नहीं है।" "एबिसुनो-सान," टेंगो ने पुष्टि की।
— मुझे सब लोग “प्रोफेसर” कहकर बुलाते हैं। मेरी अपनी बेटी भी मुझे इसी नाम से पुकारती है।
लेकिन आपके नाम को लिखने के लिए किन प्रतीकों का उपयोग किया जाता है?
"यह एक असामान्य नाम है, बहुत प्रचलित नहीं है। एरी, इसके चित्रलिपि खुद लिखो!"
फुकेरी ने सिर हिलाया, एक नोटबुक निकाली और बहुत धीरे-धीरे सफेद कागज पर लिखा:

फुकेरी की लेखन शैली किसी ईंट पर कील से खरोंचने वाले व्यक्ति की याद दिलाती थी। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि उसमें एक विशेष प्रकार की सुंदरता नहीं थी।
— इसका अनुवाद "जंगली लोगों का मैदान" होगा। मैंने लंबे समय से सांस्कृतिक मानवविज्ञान का अध्ययन किया है और इस विशेषज्ञता के लिए मुझे लगता है कि यह एक बहुत ही उपयुक्त नाम था, प्रोफेसर ने कहा और उनके होठों पर हल्की सी मुस्कान आ गई, हालांकि उनकी आंखों में सतर्कता कम नहीं हुई। फिर उन्होंने आगे कहा:
लेकिन मैंने अकादमिक जीवन से नाता बहुत पहले ही तोड़ लिया था। अब मैं पूरी तरह से किसी और काम में व्यस्त हूँ। मैं एक अलग तरह के निर्जन मैदान की ओर चल पड़ा हूँ।
यह नाम वाकई असामान्य था, लेकिन टेंगो ने इसे पहले सुना था। क्या 1960 के दशक के उत्तरार्ध में एबिसुनो नाम का कोई प्रसिद्ध शोधकर्ता नहीं था, जिसने कुछ पुस्तकें प्रकाशित की थीं जिन्हें उस समय काफी सराहना मिली थी? उसे यह तो नहीं पता था कि उन पुस्तकों में क्या था, लेकिन यह नाम उसके मन में कहीं न कहीं बसा हुआ था। खैर, किसी समय वह आकाश से गायब हो गया था।
"मुझे लगता है मैंने तुम्हारा नाम पहले भी सुना है," टेंगो ने सवालिया लहजे में कहा।
"सब कुछ संभव है," प्रोफेसर ने दूर देखते हुए उत्तर दिया, मानो वह किसी ऐसे व्यक्ति से बात कर रहे हों जो वहां मौजूद न हो। खैर, यह तो पुरानी कहानी है।
टेंगो अपने बगल में बैठे फुकाएरी की शांत सांसों को महसूस कर सकता था। वह गहरी और आराम से सांस ले रहा था।
"टेंगो कावाना," प्रोफेसर ने ऐसे कहा जैसे वह अपने बैज पर लिखा नाम पढ़ रहे हों।
"बिल्कुल सही," टेंगो ने कहा।
“आपने गणित में स्नातक की उपाधि प्राप्त की है और अब आप योयोगी के एक प्रारंभिक विद्यालय में पढ़ाती हैं,” प्रोफेसर ने कहा। “दूसरी ओर, आप साहित्य लिखती हैं। एरी ने मुझे ये जानकारी दी है, आशा है कि ये सही हैं?”
- मैं हूँ।
"आप गणित के शिक्षक जैसे नहीं दिखते। लेकिन आप लेखक जैसे भी नहीं दिखते।" मेरे पास zâmbi amar है।
"मुझे हाल ही में यह बात बताई गई थी। शायद मेरी शारीरिक बनावट की वजह से।" "मेरा मतलब बुरे इरादे से नहीं था," प्रोफेसर ने जवाब दिया। फिर उन्होंने अपनी काली रंग की चश्मे को उंगली से नाक पर ऊपर सरकाया। किसी खास तरह का दिखना कोई बुरी बात नहीं है। इसका मतलब है कि आप एक ही ढर्रे पर नहीं अटके हुए हैं। "मुझे खुशी है कि आप मुझे यह बता रहे हैं। मैं अभी खुद को लेखक नहीं कह सकता। मैं बस उपन्यास लिखने की कोशिश कर रहा हूँ।"
- क्या आप कोशिश कर रहे हैं?
मैं अपनी गलतियों से सीखता हूँ।
“मैं समझ गया,” प्रोफेसर ने अपने हाथों को आपस में रगड़ते हुए कहा, मानो उन्हें अभी-अभी कमरे की ठंड का एहसास हुआ हो। “तो, जैसा कि मैं समझ रहा हूँ, आप एरी द्वारा लिखे गए उपन्यास में कुछ बदलाव करना चाहते हैं, ताकि उसे बेहतर

रूप दिया जा सके और उम्मीद है कि उसे किसी साहित्यिक पत्रिका से पुरस्कार मिलेगा। आप एरी को एक लेखक के रूप में बढ़ावा देना चाहते हैं। क्या मैं सही समझ रहा हूँ?”
टेंगो ने सोच-समझकर अपने शब्दों का चयन किया:
"असल में, बात वही है जो आपने कही। यह विचार कोमात्सु नाम के एक संपादक का है। मुझे नहीं पता कि यह योजना वास्तव में काम करेगी या नहीं। मुझे यह भी नहीं पता कि यह नैतिक रूप से सही है या नहीं। इस पूरे मामले में मेरी भूमिका बस इतनी है कि 'द क्राइसालिस ऑफ एयर' में कही गई बात को थोड़ा बदलकर कहूँ तो, मैं सिर्फ एक तकनीशियन हूँ। बाकी सब कुछ की ज़िम्मेदारी कोमात्सु-सान की है।"
प्रोफेसर सोच में डूबे हुए थे। शांत कमरे में, ऐसा लग रहा था मानो उनके दिमाग की कार्यप्रणाली सुनाई दे रही हो। फिर उन्होंने कहा:
— तो इस संपादक, कोमात्सु ने योजना बनाई, और आप व्यावहारिक पहलुओं को संभालते हैं।
- बिल्कुल।
मैं एक शोधकर्ता थी और सच कहूँ तो, मुझे कथा लेखन में कोई खास रुचि नहीं है। इसलिए मुझे लेखकों के बीच प्रचलित रीति-रिवाजों का तो पता नहीं, लेकिन आप मेरे साथ जो करने की सोच रहे हैं, वह मुझे एक तरह का धोखा लग रहा है। क्या मैं गलत हूँ?
"नहीं, आप गलत नहीं हैं। मुझे तो दोनों एक जैसे ही लग रहे हैं," टेंगो ने कहा।
शिक्षक ने थोड़ा सा भौंहें सिकोड़ीं।
— तो आपको भी इस योजना की नैतिकता पर संदेह है, लेकिन साथ ही आप इसमें शामिल होना भी चाहते हैं।
मैं फिलहाल इससे आगे कुछ नहीं कह रहा हूँ, लेकिन मैं फिर भी इसमें शामिल हूँ।
"लेकिन क्यों?"
"यह एक ऐसा सवाल है जो मैं पिछले एक हफ्ते से बार-बार खुद से पूछ रहा हूं," टेंगो ने ईमानदारी से कहा।
प्रोफेसर और फुकेरी चुपचाप खड़े रहे और उनके बोलने का इंतजार करते रहे। तर्क, सामान्य ज्ञान और अंतर्ज्ञान मुझे बताते हैं कि इस कहानी से जल्द से जल्द निकल जाना ही बेहतर होगा। मैं एक सतर्क और तर्कसंगत व्यक्ति हूँ। मुझे न तो जुआ खेलना पसंद है और न ही रोमांच। मैं कहूँगी कि मुझमें साहस की कमी है। लेकिन इस बार, चाहे मैं कितना भी चाहूँ, कोमात्सु-सान की इस जोखिम भरी योजना को मैं मना नहीं कर सकती। इसका केवल एक ही कारण है, और वह यह है कि मैं 'द एयर क्राइसालिस' से बहुत ज़्यादा आकर्षित हूँ। अगर यह कोई और रचना होती, तो मैं बिना ज़्यादा सोचे-समझे मना कर देती।
प्रोफेसर ने कुछ देर तक आश्चर्य से टेंगो को देखा।
"तो आपको इस कहानी के घोटाले वाले हिस्से में कोई दिलचस्पी नहीं है, लेकिन आप किताब पर काम करने में बहुत रुचि रखते हैं। क्या यही बात है?"
"बिल्कुल सही। मुझे इसमें बहुत दिलचस्पी है। अगर कोई 'द एयर क्राइसालिस' को दोबारा लिखने वाला है, तो मैं किसी और को ऐसा नहीं करने देना चाहता।"
"तो," प्रोफेसर ने मुंह बनाते हुए कहा, मानो उन्होंने अनजाने में नींबू का एक टुकड़ा खा लिया हो। "तो... मुझे लगता है कि मैं समझ सकता हूँ कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं। लेकिन यह कोमात्सु किसलिए है? पैसा? शोहरत?"

"सच कहूँ तो, मुझे भी कोमात्सु-सान समझ नहीं आते," टेंगो ने कहा। "लेकिन मुझे लगता है कि उनके पीछे पैसे या प्रसिद्धि से कहीं अधिक गंभीर मकसद हैं।"
- यह कैसे हो सकता है?
"शायद वह इसे स्वीकार न करे, लेकिन वह उन लोगों में से एक है जो साहित्य के प्रति जुनूनी हैं। उनके जैसे लोग एक ही चीज़ की तलाश में रहते हैं: एक सच्ची, त्रुटिहीन कृति खोजना। एक ही काफी है। एक बार मिल जाए, तो उसे थाली में सजाकर दुनिया के सामने पेश कर देना।"
प्रोफेसर ने कुछ देर तक टेंगो को देखा। फिर उन्होंने कहा:
"तो आप दोनों के मकसद अलग-अलग हैं। लेकिन यह पैसे या प्रसिद्धि के बारे में नहीं है।"
- मैं बस यही कहूँगा।
"लेकिन जैसा कि आप कह रहे हैं, आपके इरादे चाहे जो भी हों, यह एक बेहद जोखिम भरा प्लान है। अगर यह प्लान कभी भी सार्वजनिक हो गया, तो हंगामा मचना तय है। आप दोनों ही शायद अकेले ऐसे नहीं होंगे जिन्हें सार्वजनिक बदनामी झेलनी पड़ेगी। सत्रह साल की एरी के लिए तो यह एक जानलेवा झटका होगा। यही बात मुझे सबसे ज्यादा परेशान करती है।"
"चिंता होना स्वाभाविक है," टेंगो ने सहमति जताते हुए कहा। "आप बिलकुल सही हैं।"
प्रोफेसर ने भौंहें चढ़ाईं और उनकी घनी, गहरे काले रंग की भौहें एक इंच और करीब आ गईं।
और फिर भी, भले ही आप अंततः एरी को खतरे में डाल दें, फिर भी आप एयर क्राइसालिस को फिर से लिखने की उम्मीद रखते हैं।
"जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, ये भावनाएँ तर्क या सामान्य ज्ञान से परे हैं। बेशक मैं एरी की यथासंभव रक्षा करना चाहता हूँ। हालाँकि, मैं आपको यह आश्वासन नहीं दे सकता कि वह किसी भी खतरे में नहीं होगी। यह झूठ होगा।"
"मैं समझ गया," प्रोफेसर ने कहा और खांसते हुए, मानो अपनी बात पर ज़ोर दे रहे हों। वैसे भी, आप एक ईमानदार आदमी लगते हैं।
मैं यथासंभव खुला रहने की कोशिश करता हूं।
प्रोफेसर ने अपने हाथों को देखा, जो उनके घुटनों पर टिके हुए थे, मानो वे कोई ऐसी वस्तु हों जिन्हें उन्होंने पहले कभी नहीं देखा हो। उन्होंने अपने हाथों के पिछले हिस्से को गौर से देखा, फिर उन्हें पलटकर अपनी हथेलियों का अध्ययन किया। अंत में, उन्होंने ऊपर देखा और कहा:
क्या संपादक कोमात्सु को लगता है कि उसकी योजना सफल होगी?
टेंगो ने कहा, "उनका नजरिया यह है कि हर चीज के दो पहलू होते हैं। एक अच्छा पहलू और एक उतना बुरा नहीं।"
शिक्षक हंस पड़ा।
"काफी अनोखा दृष्टिकोण है। क्या मुझे यह समझना चाहिए कि वह एक आशावादी और आत्मविश्वासी व्यक्ति है?"
"न तो यह, न ही वह। वह बस एक निराशावादी व्यक्ति है।"
प्रोफेसर ने धीरे से अपना सिर हिलाया।
"ऐसे लोग, जब निराशावादी होते हैं, तो आशावादी बन जाते हैं। या उनमें आत्मविश्वास आ जाता है। कुछ ऐसा ही होता है, है ना?"

— यह संभव है कि उनमें भी ऐसी प्रवृत्तियाँ हों।
— वह एक जटिल व्यक्ति प्रतीत होता है।
"काफी जटिल है," टेंगो ने कहा। "लेकिन यह बेवकूफी भरा नहीं है।"
प्रोफेसर ने गहरी सांस ली, फिर फुकेरी की ओर मुड़े:
"एरी, तुम क्या सोचती हो? इस योजना के बारे में तुम्हारा क्या विचार है?" फुकेरी अंतरिक्ष में एक अज्ञात बिंदु को घूर रही थी।
"यह अच्छी बात है," उसने कहा।
शिक्षक ने फुकेरी की संक्षिप्त अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक शब्द जोड़े:
"मेरा मतलब है, आपका मतलब है कि आपको इस बात से कोई आपत्ति नहीं है कि वह 'द एयर क्राइसालिस' को फिर से लिखे?"
"मुझे कोई आपत्ति नहीं है," फुकेरी ने कहा।
आपको इसके लिए परेशानी हो सकती है।
फुकेरी ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने बस अपने कार्डिगन का कॉलर अपनी गर्दन के चारों ओर और कसकर खींच लिया। लेकिन इस हावभाव से फुकेरी को यह संकेत मिला कि उसका संकल्प अडिग है।
"शायद वह सही कह रहा है," प्रोफेसर ने मन ही मन हार मान ली।
टेंगो ने फुकेरी की भीगी हुई मुट्ठियों को देखा।
प्रोफेसर ने टेंगो से कहा, "एक और समस्या है। तुम और कोमात्सु नाम का यह लड़का एयर क्राइसालिस को मशहूर करना चाहते हो और एरी को लेखिका बनाना चाहते हो।
लेकिन उसे लिखने और पढ़ने में दिक्कत होती है। उसे डिस्लेक्सिया है। क्या तुम्हें यह पता था?"
— उसने मुझे अभी ट्रेन में बताया कि हालात कैसे हैं।
— यह शायद जन्मजात समस्या है। इसी वजह से स्कूल में उसे हमेशा थोड़ा मंदबुद्धि समझा जाता था, लेकिन सच्चाई यह है कि उसका दिमाग बहुत तेज़ है। वह असाधारण बुद्धि से संपन्न है। हालांकि, मैं संयम से कहूँ तो, मुझे नहीं लगता कि डिस्लेक्सिया की कहानी आपकी योजना पर कोई सकारात्मक प्रभाव डालेगी।
— यह बात कितने लोगों को पता है?
"उसके अलावा, तीन लोग हैं," प्रोफेसर ने कहा। "मैं, मेरी बेटी आज़मी और आप। बाकी के बारे में किसी को नहीं पता।"
"क्या एरी-सान के शिक्षकों को यह बात नहीं पता?"
"नहीं। यह एक छोटा सा ग्रामीण स्कूल है। उन्होंने डिस्लेक्सिया के बारे में कभी सुना ही नहीं है। साथ ही, वह अक्सर कक्षा में भी नहीं जाता था।"
"तो मुझे लगता है कि हम इसे किसी तरह गुप्त रख सकते हैं।"
प्रोफेसर ने उसे ध्यान से देखा।
कुछ क्षण बाद उसने कहा, "मुझे लगता है एरी तुम पर भरोसा करती है। मुझे नहीं पता उसके क्या कारण हैं, लेकिन..."
टेंगो चुपचाप आगे की कार्यवाही का इंतजार करता रहा।
लेकिन मैं एरी पर भरोसा करता हूँ। इसलिए अगर वह आपको किताब देने के लिए सहमत हो जाती है, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। लेकिन अगर आप वाकई इस प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाना चाहते हैं, तो आपको उसके बारे में कुछ बातें जाननी होंगी। प्रोफेसर ने अपनी हथेली से अपनी पतलून के दाहिने घुटने पर अभी-अभी मिले कुछ काल्पनिक रेशों को झाड़ दिया। फिर उन्होंने आगे कहा:

"यानी, आपको यह जानना होगा कि वह कहाँ और कैसे पला-बढ़ा और वह मेरी देखरेख में कैसे आया। लेकिन कहानी काफी लंबी है।"
मैं सुन रहा हूँ।
फुकेरी, टेंगो के बगल में सोफे पर बैठ गया, उसके हाथ अभी भी उसके कार्डिगन के कॉलर पर थे।
*

— बहुत खूब, प्रोफेसर ने कहा। कहानी 1960 के दशक में शुरू होती है। एरी के पिता और मैं बचपन से ही पक्के दोस्त थे। मैं उनसे लगभग दस साल बड़ा हूँ, लेकिन हम दोनों एक ही विश्वविद्यालय में, एक ही विभाग में काम करते थे। हमारे व्यक्तित्व और विश्वदृष्टिकोण अलग-अलग थे, फिर भी हम दोनों की आपस में अच्छी बनती थी। हम दोनों ने देर से शादी की थी और शादी के कुछ समय बाद ही हमारी एक-एक बेटी हुई। हम विश्वविद्यालय के एक ही हॉस्टल में रहते थे और कभी-कभी अपने परिवारों के साथ घूमने जाते थे। हमारा काम अच्छा चल रहा था। उस समय हमें "उत्साही प्रोफेसर" कहा जाता था। हम अक्सर मीडिया में भी दिखाई देते थे। ये वो समय था जब कई दिलचस्प घटनाएँ घट रही थीं। हालाँकि, 1960 के दशक के अंत तक, राजनीतिक स्थिति तनावपूर्ण होने लगी। अमेरिका और जापान के बीच सहयोग और सुरक्षा संधि के विस्तार के विरोध में छात्र आंदोलन तेज़ हो गए, विश्वविद्यालयों में बैरिकेड लगा दिए गए, और मोबाइल पुलिस ब्रिगेड के साथ झड़पें और खूनी आंतरिक संघर्ष हुए। लोगों की जान गई। इन प्रतिकूल परिस्थितियों में, मैंने विश्वविद्यालय छोड़ दिया। वैसे भी मैं अकादमिक जीवन के लिए बना ही नहीं था, और उस समय तक तो मुझे इससे पूरी तरह नफरत हो चुकी थी। मुझे न तो व्यवस्था के खिलाफ होने में कोई दिलचस्पी है और न ही उसके पक्ष में। आखिरकार, ये सब संगठनों के बीच के झगड़े मात्र हैं। और मैं तो संगठनों पर भरोसा नहीं करता, चाहे वे बड़े हों या छोटे। आपकी शक्ल-सूरत देखकर तो लगता है कि आप उस समय छात्र नहीं थे, है ना?
जब मैंने कॉलेज में दाखिला लिया, तब तक विरोध प्रदर्शन शांत हो चुके थे। पार्टी खत्म हो गई थी।
- एकदम सही।
प्रोफेसर ने अपने हाथ हवा में उठाए, फिर उन्हें वापस अपने घुटनों पर रख लिया। विश्वविद्यालय छोड़ने के दो साल बाद, एरी के पिता भी सेवानिवृत्त हो गए। उस समय, वे माओ के क्रांतिकारी विचारों में दृढ़ विश्वास रखते थे और चीन में हुई सांस्कृतिक क्रांति का समर्थन करते थे। सांस्कृतिक क्रांति इतिहास का एक रक्तरंजित और अमानवीय अध्याय था, लेकिन उस समय हमें ऐसी जानकारी नहीं मिली थी। कुछ बुद्धिजीवी हलकों में, माओत्से तुंग के कथनों से भरी लाल किताब लहराना एक फैशन बन गया था। एरी के पिता ने कुछ छात्रों को रेड गार्ड्स की तर्ज पर एक कट्टरपंथी समूह में संगठित किया और हड़तालों में भाग लिया। यहां तक कि अन्य विश्वविद्यालयों के छात्र भी, जो उन पर विश्वास करते थे, उनके संगठन में शामिल हो गए, जिससे उनका समूह कुछ समय के लिए काफी बढ़ गया। विश्वविद्यालय प्रशासन के अनुरोध पर, पुलिस ब्रिगेड जबरन परिसर में घुस गई और उन्हें उन छात्रों के साथ गिरफ्तार कर लिया, जिनके साथ उन्होंने खुद को अंदर बंद कर लिया था। फिर उन्हें न्याय के कटघरे में लाने का सवाल उठा। फिर, व्यावहारिक

रूप से, उन्हें निकाल दिया गया। एरी तब छोटी थी, शायद उसे इनमें से कुछ भी याद नहीं है।
फुकेरी चुप रही।
“उनका नाम तमोत्सु फुकाडा है। विश्वविद्यालय छोड़ने के बाद, उन्होंने अपने रेड गार्ड संगठन के लगभग दस छात्रों के साथ ताकाशीमा अकादमी में दाखिला लिया। अधिकांश छात्रों को निष्कासित कर दिया गया था और उन्हें कुछ समय के लिए रहने की जगह की ज़रूरत थी, और ताकाशीमा अकादमी उनके लिए एक अच्छी जगह थी। उस समय, इस कहानी ने मीडिया में काफी हलचल मचाई थी। क्या आपको पता था?”
टेंगो ने अपना सिर हिलाया।
मैंने इस कहानी के बारे में नहीं सुना है।
"फुकाडा अपने परिवार को साथ ले गया था। मतलब उसकी पत्नी और एरी को। तुम भी अपने परिवार के साथ वहाँ जा सकते थे। क्या तुम्हें ताकाशीमा अकादमी के बारे में कुछ पता है?"
"हाँ, मूल रूप से," टेंगो ने कहा। यह एक प्रकार का सामूहिक समुदाय था जहाँ सब कुछ साझा होता था, वे निजी संपत्ति को स्वीकार नहीं करते थे। वे कृषि से अपना जीवन यापन करते थे और दुग्ध उत्पादों का व्यापार भी शुरू कर चुके थे। उनका आंदोलन पूरे देश में फैल चुका था।
— बिलकुल सही। प्रोफेसर ने माथे पर शिकन डालते हुए कहा, फुकादा इस संस्था में एक आदर्श दुनिया पाने का सपना देखता था। लेकिन कहने की ज़रूरत नहीं, इस दुनिया में कोई आदर्श दुनिया नहीं है। ठीक वैसे ही जैसे कोई पारस पत्थर या शाश्वत गति मशीन नहीं है। अगर मैं अपनी निजी राय व्यक्त करूँ, तो ताकाशीमा में लोग असल में ऐसे रोबोट बना रहे थे जो सोचते नहीं थे। वे उन सर्किटों को नष्ट कर रहे थे जो आपको स्वतंत्र रूप से सोचने की अनुमति देते हैं। जॉर्ज ऑरवेल के उपन्यासों जैसी दुनिया। हालाँकि, जैसा कि आप शायद जानते हैं, दुनिया में ऐसे बहुत से लोग हैं जो बिना किसी मानसिक प्रयास के जीविका कमाना चाहते हैं। उनके लिए यह आसान है, उन्हें इसकी चिंता नहीं करनी पड़ती, वे बस वही करते हैं जो उन्हें कहा जाता है, बिना कुछ कहे। उन्हें भूख नहीं लगती। ऐसे वातावरण की तलाश करने वालों के लिए, ताकाशीमा अकादमी शायद एक आदर्श दुनिया थी। लेकिन फुकादा उस तरह का व्यक्ति नहीं था। वह अपने दिमाग से सोचता था। सोचना ही उसका काम था। इसीलिए वह ताकाशीमा जैसी जगह पर संतुष्ट नहीं हो सके। बेशक, उन्हें इस बात का शुरू से ही वाकिफ थे। विश्वविद्यालय से निष्कासित होने के बाद, कुछ प्रतिभाशाली छात्रों के साथ, उनके पास जाने के लिए कोई जगह नहीं थी और उन्होंने उस जगह को अस्थायी शरणस्थली के रूप में चुना था। इसके अलावा, वह एक संगठन बनाने के लिए आवश्यक जानकारी की तलाश में थे। सबसे बढ़कर, उन्हें कृषि तकनीकें सीखनी थीं। फुकादा और उनके छात्र दोनों शहर में पले-बढ़े थे और कृषि के बारे में उन्हें जरा भी जानकारी नहीं थी। ठीक वैसे ही जैसे मुझे रॉकेट तकनीक के बारे में कुछ नहीं पता। इसीलिए उन्हें शुरू से ही व्यावहारिक रूप से ज्ञान और आवश्यक तकनीकें सीखनी पड़ीं। उन्हें वितरण तंत्र, आत्मनिर्भरता की संभावनाओं और सीमाओं, और साथ रहने के ठोस नियमों के बारे में भी बहुत कुछ सीखना था। लगभग दो वर्षों में, उन्होंने वह सब सीख लिया जो उन्हें सीखना था। आप देखिए, जब ये लोग किसी काम में मन लगा लेते थे तो बहुत सक्षम होते थे।

उन्होंने ताकाशीमा की खूबियों और कमियों का सटीक विश्लेषण किया। फिर, अपने समूह के साथ, फुकादा वहां से चले गए और स्वतंत्र हो गए।
फुकेरी ने कहा, "मुझे ताकाशिमा पसंद आया।"
प्रोफेसर मुस्कुराए।
"छोटे बच्चों के लिए यह जगह बेशक खूबसूरत थी। लेकिन जैसे-जैसे वे बड़े होते गए और उनका व्यक्तित्व विकसित होता गया, वहां के कई बच्चों के लिए जीवन नरक बन गया। खुद सोचने की उनकी स्वाभाविक इच्छा को जबरदस्ती कुचल दिया गया। जिस तरह बच्चों के पैर बांधे जाते थे, उसी तरह उनके दिमाग को भी बांध दिया गया।" "क्या उनके पैर बंधे हुए थे?" फुकेरी ने पूछा।
"पुराने समय में, चीन में, लड़कियों को अपने पैरों को बढ़ने से रोकने के लिए बहुत छोटे जूते पहनने के लिए मजबूर किया जाता था," टेंगो ने समझाया।
फुकेरी ने कल्पना की कि वह चीज कैसी दिखती होगी, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। शिक्षक आगे कहते हैं:
फुकादा के नेतृत्व वाले गुट का मूल आधार तो वही पूर्व रेड गार्ड छात्र थे जिनके साथ उन्होंने काम किया था, लेकिन उनके अलावा और भी लोग थे जो उनसे जुड़ना चाहते थे, जिससे उनका समूह बर्फ के गोले की तरह बढ़ता गया और उम्मीद से कहीं अधिक बड़ा हो गया। ऐसे कई लोग थे जो आदर्शों से भरे हुए अकादमी में आए थे, लेकिन वहां की स्थिति से निराश थे। ताकाशीमा में ऐसे हिप्पी थे जो एक समुदाय में रहना चाहते थे, छात्र संघर्षों के परिणामों से निराश वामपंथी थे, या फिर ऐसे लोग थे जो सामान्य जीवन से ऊब चुके थे और एक नई आध्यात्मिक दुनिया की तलाश में थे। वहां अविवाहित लोग भी थे, लेकिन फुकादा जैसे कुछ लोग अपने परिवारों के साथ भी आए थे। यह एक विविध समूह था, और फुकादा उनके नेता थे। उनमें नेतृत्व की स्वाभाविक प्रतिभा थी, ठीक वैसे ही जैसे मूसा ने यहूदियों का मार्गदर्शन किया था। उनका दिमाग तेज था, वे अच्छे वक्ता थे, और उनमें अच्छी समझ थी, साथ ही करिश्मा भी था। वे लंबे थे। हाँ, बिल्कुल तुम्हारी तरह। लोग स्वाभाविक रूप से उन्हें समूह के बीच में रखते थे और उनके फैसलों का पालन करते थे।
प्रोफेसर ने फुकाडा का कद दिखाने के लिए अपने हाथ फैलाए। फुकाएरी ने उनके हाथों को देखा, फिर तुलना के लिए टेंगो को देखा। उसने कुछ नहीं कहा।
— फुकाडा और मैं व्यक्तित्व और शारीरिक बनावट दोनों में बिल्कुल अलग हैं। वो जन्मजात नेता हैं, मैं अकेला रहना पसंद करता हूँ। उन्हें राजनीति में रुचि है, जबकि मैं राजनीति से दूर रहता हूँ। वो लंबे हैं, मैं छोटा। वो आकर्षक हैं और उनका व्यक्तित्व मनमोहक है, जबकि मैं किताबों का शौकीन हूँ और मेरा सिर अजीबोगरीब आकार का है। लेकिन इन सब के बावजूद, हम बहुत अच्छे दोस्त थे। हमने एक-दूसरे को स्वीकार किया और एक-दूसरे पर भरोसा किया। बिना किसी अतिशयोक्ति के, वो मेरे जीवन के इकलौते दोस्त थे।
*

फुकाडा के नेतृत्व वाले समूह को यामानाशी प्रांत के पहाड़ों में एक निर्जन गाँव मिला जो उनके उद्देश्यों के लिए उपयुक्त था। गाँव लगभग वीरान था, जिसमें केवल कुछ बूढ़े किसान रहते थे जिनकी खेती-बाड़ी में मदद करने वाला कोई नहीं था। उन्होंने खेती योग्य भूमि और मकान लगभग मुफ्त में खरीद लिए थे। उनके पास ग्रीनहाउस भी थे। उन्हें स्थानीय अधिकारियों से इस शर्त पर सब्सिडी भी मिली थी कि वे खेती जारी रखेंगे। उन्हें कम से कम कुछ वर्षों के लिए करों से छूट

मिली हुई थी। इसके अलावा, फुकाडा के पास आय के अपने स्रोत भी थे। यह पैसा कहाँ से आता था, यह बात प्रोफेसर एबिसुनो को भी नहीं पता थी।
— धन के स्रोत के बारे में फुकाडा चुप रहे और उन्होंने किसी को भी इसका रहस्य नहीं बताया। किसी तरह, उन्होंने कम्यून स्थापित करने के लिए आवश्यक अच्छी- खासी रकम कहीं से जुटा ली। इस धन से उन्होंने कृषि उपकरण खरीदे, निर्माण सामग्री खरीदी और एक आरक्षित निधि बनाई। उन्होंने मौजूदा घरों की मरम्मत स्वयं की और तीस सदस्यों की ज़रूरतों के अनुसार सुविधाएं निर्मित कीं। यह सब 1974 में हुआ। नए कम्यून का नाम 'पायनियर्स' रखा गया।
पायनियर्स? टेंगो ने यह नाम पहले कहीं सुना था, लेकिन उसे याद नहीं आ रहा था कि कहाँ। वह अपनी यादों को सुलझा नहीं पा रहा था, और यह बात उसे पागल कर रही थी। प्रोफेसर ने आगे कहा:
फुकादा शुरुआती कुछ वर्षों में समुदाय के प्रबंधन में आने वाली समस्याओं के लिए तैयार थे, जब तक कि परिस्थितियाँ स्थिर नहीं हो जातीं, लेकिन सब कुछ उम्मीद से कहीं बेहतर रहा। जलवायु अनुकूल थी और उन्हें स्थानीय लोगों से भी मदद मिली। लोग फुकादा जैसे ईमानदार नेता पर भरोसा करते थे। वे उनके साथ मिलकर खेती करते थे, जिससे समुदाय के युवा सदस्य प्रभावित हुए। स्थानीय लोग अक्सर अच्छी सलाह लेकर आते थे। इस तरह, उन्होंने वहाँ की ज़मीन पर खेती करना और उससे अपना जीवन यापन करना सीखा। मूल रूप से, उन्होंने ताकाशीमा में प्राप्त ज्ञान का पालन किया, लेकिन कुछ विशेष परिस्थितियों के लिए उन्होंने नए विचार भी विकसित किए। उदाहरण के लिए, उन्होंने पूरी तरह से जैविक खेती के तरीकों को अपना लिया। उन्होंने कीटों के खिलाफ रसायनों का उपयोग नहीं किया और केवल प्राकृतिक उर्वरकों से सब्जियां उगाईं। उन्होंने डाक द्वारा शहर के धनी लोगों को सब्जियां बेचना शुरू कर दिया। इस तरह उन्हें बेहतर कीमत मिल जाती थी। वे एक तरह से जैविक खेती कर रहे थे। उन्हें परिस्थितियों का अच्छी तरह से ज्ञान था। समुदाय के कई सदस्य शहर में पले-बढ़े थे और जानते थे कि शहरवासियों को क्या चाहिए। लोग प्रदूषण रहित, ताज़ी सब्जियों के लिए अच्छी कीमत देते थे। उन्होंने वितरण प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए कूरियर कंपनियों के साथ सीधे अनुबंध किए और उत्पादों को शहरों तक शीघ्रता से पहुंचाने के लिए अपनी खुद की प्रणाली विकसित की। उन्होंने टेढ़ी-मेढ़ी, मिट्टी से सने सब्जियों की अप्रिय छवि को पूरी तरह से बदल दिया और उसे बिक्री योग्य वस्तु में परिवर्तित कर दिया।
*

— प्रोफेसर ने कहा, “मैंने फुकाडा के खेत का कई बार दौरा किया। वह बहुत ही जीवंत थे, क्योंकि उन्होंने वहाँ एक नया वातावरण खोज लिया था और नई संभावनाओं का पता लगा लिया था। यह उनके जीवन का सबसे शांतिपूर्ण और आशापूर्ण दौर था। उनका परिवार भी नई जीवनशैली में ढल गया था। पियोनिएरी के खेतों के बारे में कई लोगों ने अच्छी बातें सुनी थीं और कई लोग कम्यून में शामिल होने आए। व्यापार के कारण उनका नाम प्रसिद्ध हो गया था और उनकी सफलता का उदाहरण मीडिया में भी दिया गया था। ऐसे बहुत से लोग हैं जो इस पागल दुनिया से भागना चाहते हैं जहाँ सब कुछ पैसे के इर्द-गिर्द घूमता है और प्रकृति के बीच अपनी मेहनत से जीविका कमाना चाहते हैं। पियोनिएरी कम्यून ऐसी ही लोगों को आकर्षित करने वाला स्थान था। जो लोग साक्षात्कार और मूल्यांकन से गुजरना चाहते थे, और यदि

जिससे तीखी बहसें होती थीं। इस स्थिति में, कम्यून का दो भागों में बंटवारा होना तय था।
समय बीतने के साथ-साथ तटस्थ रुख अपनाना कठिन होता चला गया। जल्द ही, फुकादा को भी अपना रुख स्पष्ट करना पड़ा। उस समय तक उन्हें यह स्पष्ट हो चुका था कि 1970 के दशक के जापान में क्रांति की कोई गुंजाइश नहीं बची थी। शुरू से ही उनके मन में क्रांति की एक संभावना थी, या उससे भी बढ़कर, एक रूपक, एक परिकल्पना। उनका मानना था कि इस तरह की संस्था-विरोधी गतिविधियाँ और विनाशकारी इरादे एक सशक्त समाज के लिए अपरिहार्य थे। जैसे कि कहा जाता है, सेहत बढ़ाने वाले मसाले। लेकिन उनके नेतृत्व में रहे छात्र एक वास्तविक क्रांति चाहते थे, जिसमें रक्तपात हो। बेशक, इसमें फुकादा की भी भूमिका थी। समय के प्रवाह में बहकर, उन्होंने ही उनके दिमाग में ऐसी बेतुकी बातें भर दी थीं जिनसे रगों में खून खौल उठता था और दिल की धड़कन तेज हो जाती थी। उन्होंने उन्हें कभी नहीं बताया कि यह सिर्फ एक अमूर्त क्रांति थी। वे एक ईमानदार और बुद्धिमान व्यक्ति थे। वे एक शोधकर्ता के रूप में भी उत्कृष्ट थे। दुर्भाग्य से, वे बहुत वाक्पटु थे और अपनी ही बातों में मदहोश हो जाते थे। उसमें गहन आत्मनिरीक्षण का अभाव था और वह ठोस साक्ष्यों पर आधारित नहीं था।
इस तरह, पियोनिएरी कम्यून दो भागों में बंट गया। उदारवादी गुट उसी स्थान पर और उसी नाम से बना रहा, जबकि सैन्यवादियों ने लगभग पाँच किलोमीटर दूर एक परित्यक्त गाँव खोज लिया, जहाँ वे चले गए और अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए एक अड्डा स्थापित किया। फुकाडा परिवार, अन्य सभी परिवारों की तरह, पियोनिएरी कम्यून में ही रहा। यह विभाजन सौहार्दपूर्ण था। फुकाडा ने फिर से एक दूसरा कम्यून स्थापित करने के लिए आवश्यक धन जुटा लिया। और विभाजन के बाद, दोनों फार्मों ने कम से कम ऊपरी तौर पर, सहयोगात्मक संबंध बनाए रखे। वे एक-दूसरे को ज़रूरत का सामान उधार देते थे और आर्थिक कारणों से, अपने उत्पादों को बेचने के लिए एक ही रास्ते का इस्तेमाल करते थे। उन्हें एक-दूसरे की मदद करने की ज़रूरत थी।
कुछ समय बाद, दोनों समुदायों के बीच लोगों का आना-जाना बंद हो गया। उनके लक्ष्य बहुत अलग थे। अलगाव के बाद केवल फुकादा और उनके नेतृत्व में रहे कट्टरपंथी पूर्व छात्र ही संपर्क में रहे। फुकादा को उनके प्रति बहुत ज़िम्मेदारी महसूस होती थी। उन्होंने ही उन्हें संगठित किया था और यामानाशी के पहाड़ों में लाए थे। वे उन्हें यूँ ही नहीं छोड़ सकते थे। इसके अलावा, दूसरे समुदाय को उनकी आय के गुप्त स्रोत की आवश्यकता थी।
*

“आप कह सकते हैं कि फुकादा दो हिस्सों में बँट गया था,” प्रोफेसर ने कहा। अब उसे न तो क्रांति की संभावना पर और न ही उसके रोमांटिकवाद पर दिल से विश्वास था। लेकिन वह इन विचारों को पूरी तरह से त्याग भी नहीं सकता था। ऐसा करने का मतलब होता कि वह अब तक किए गए अपने सभी कार्यों को त्याग दे और सबके सामने अपनी गलतियों को स्वीकार करे। वह ऐसा नहीं कर सकता था। वह बहुत स्वाभिमानी था और उसे डर था कि उसके पीछे हटने से पूर्व छात्रों में अशांति फैल जाएगी। उस समय भी उसके पास उन्हें कुछ हद तक नियंत्रित करने की शक्ति थी। इस प्रकार वह दो समुदायों के बीच बँटा हुआ जीवन जीने लगा। एक ओर वह पायनियर्स का नेता था, तो दूसरी ओर सैन्यवादी समूह का सलाहकार। क्रांति में विश्वास न रखने वाला

व्यक्ति क्रांतिकारी सिद्धांतों की व्याख्या करता रहा। अलगाववादी, अपने कृषि कार्यों के अलावा, सैन्य अभ्यासों और प्रचार में भी पूरी तरह से लगे हुए थे। राजनीतिक रूप से, वे अधिकाधिक कट्टरपंथी होते जा रहे थे और फुकादा के विचारों से दूर होते जा रहे थे। वे पूरी तरह से अलग-थलग पड़ गए और उन्होंने बाहरी लोगों को कम्यून में प्रवेश करने की अनुमति देना बंद कर दिया। पुलिस ने सशस्त्र क्रांति भड़काने वाले इस समूह की निगरानी में बहुत ढिलाई बरती, जबकि इस समूह को कड़ी निगरानी में रखा जाना चाहिए था।
प्रोफेसर ने एक बार फिर अपनी पैंट के घुटनों की ओर देखा। फिर उन्होंने ऊपर देखा और आगे कहा:
— पायनियर्स समूह 1976 में टूट गया। एरी वहां से निकलकर अगले साल मेरे पास आ गई। उसी समय के आसपास, अलगाववादियों ने ज़ोरी दे ज़ी नाम अपना लिया।
टेंगो ने अपना सिर उठाया और अपनी आँखें सिकोड़ लीं।
"एक मिनट रुको," उसने कहा। भोर का दिन। उसने यह नाम पहले कहीं सुना था। लेकिन उसकी यादें इतनी धुंधली और अस्पष्ट क्यों थीं? उसने व्यर्थ ही अपनी यादों को खंगाला क्योंकि उसे वास्तविकता के केवल अस्पष्ट टुकड़े ही मिले।
“क्या कुछ समय पहले डॉन परिवार एक बड़ी घटना में शामिल नहीं था?” उसने पूछा। “जी हां,” प्रोफेसर एबिसुनो ने कहा, फिर उन्होंने तेंगो को ऐसी गंभीरता से देखा जैसी गंभीरता उन्होंने पहले कभी नहीं दिखाई थी। पहाड़ों में, मोतोसु झील के पास, पुलिस बलों के साथ सशस्त्र संघर्ष चल रहा था। यह वही कुख्यात गिरोह, डॉन ऑफ द डे, था।
सशस्त्र संघर्ष, टेंगो ने सोचा। उसने यह कहानी कहीं सुनी थी। यह एक बड़ी घटना थी। लेकिन उसे विवरण याद नहीं आ रहे थे। सब कुछ उलझन भरा था। खुद को याद दिलाने की कोशिश करते हुए, उसने महसूस किया कि उसका पूरा शरीर किसी ड्रिल की तरह ज़ोर से मुड़ रहा है, मानो उसके शरीर के दोनों हिस्से विपरीत दिशाओं में घूम रहे हों। उसका सिर दर्द से तीखा हो रहा था, और उसके आसपास की हवा तेज़ी से पतली होती जा रही थी। आवाज़ें दबी हुई थीं, जैसे पानी के अंदर हों। उसे दौरा पड़ने वाला था।
"क्या तुम्हें कुछ हो गया?" प्रोफेसर ने चिंता से पूछा। उनकी आवाज़ बहुत दूर से आती हुई सुनाई दी।
टेंगो ने अपना सिर हिलाया। फिर वह किसी तरह बुदबुदाया:
"कोई बात नहीं। मैं अभी शांत हो जाऊंगी।"

अध्याय 11 शरीर मनुष्य का मंदिर है

इस दुनिया में बहुत कम लोग अंडकोष पर लात मारने में अओमामे की तरह माहिर हैं। वह हर दिन अलग-अलग तरह के वार करने के तरीकों का अध्ययन करने में समय लगाती थी और उसे व्यावहारिक प्रशिक्षण की भी कोई कमी नहीं थी। अंडकोष पर लात मारने में सबसे ज़रूरी है झिझक को काबू में रखना। यह शरीर के सबसे कमज़ोर हिस्से पर बेरहमी से, हिंसक और बिजली की तेज़ी से होने वाला हमला है। ठीक वैसे ही जैसे हिटलर ने हॉलैंड और बेल्जियम पर उनकी तटस्थता की परवाह किए बिना हमला किया, मैजिनोट लाइन को तोड़कर फ्रांस पर कब्ज़ा कर लिया। बिना किसी झिझक के। एक पल की झिझक भी आपकी जान ले सकती है।
व्यवहारिक रूप से देखा जाए तो, एक महिला के पास सीधे मुकाबले में अपने से बड़े और ताकतवर पुरुष को हराने का कोई दूसरा मौका नहीं होता। यह आओमामे का अटूट विश्वास था। शरीर का वह हिस्सा पुरुष का सबसे संवेदनशील अंग होता है, जिस पर वह निर्भर करता है। और अधिकतर मामलों में, इसकी ठीक से सुरक्षा नहीं की जाती। यह एक ऐसा फायदा है जिसका आपको पूरा लाभ उठाना चाहिए।
एक महिला होने के नाते, आओमामे को ठीक-ठीक पता नहीं था कि किसी पुरुष के अंडकोष पर ज़ोर से चोट लगने पर उसे कितना दर्द होता है। वह केवल अनुमान ही लगा सकती थी। लेकिन पुरुष की प्रतिक्रिया और चेहरे के भाव देखकर वह समझ गई कि उसे बहुत दर्द हो रहा था। कोई भी पुरुष, चाहे वह कितना भी बड़ा और बलवान क्यों न हो, ऐसी यातना सहन करने में सक्षम नहीं लगता था। इसके अलावा, ऐसा करने से उनके स्वाभिमान को भी बहुत ठेस पहुँचती थी।
"तुम कहती हो कि सब खत्म हो गया है, दुनिया का अंत आ गया है, इससे बहुत दर्द होता है। इसकी तुलना किसी और चीज से नहीं की जा सकती। यह सिर्फ दर्द नहीं है," एक बार एक आदमी ने उसके अनुरोध पर, काफी सोच-विचार करने के बाद उसे समझाया था। ओमामे ने उसकी उपमा पर विचार किया। क्या यह दुनिया का अंत था?
"तो, इसके विपरीत, दुनिया का अंत ऐसा है जैसे कोई आपके अंडकोष पर जोर से वार करे?" उसने पूछा।
"मैंने कभी दुनिया के अंत का अनुभव नहीं किया है और मैं आपको ठीक-ठीक नहीं बता सकता कि यह कैसा होता है, लेकिन सब कुछ संभव है," उस आदमी ने खालीपन में घूरते हुए जवाब दिया। "आपको बेबसी का एक भयानक एहसास होता है। उदास, घुटन भरा, पूर्ण निराशा का।"
इस चर्चा के बाद, एक रात आओमामे ने टीवी पर लगभग 1960 के दशक की एक अमेरिकी फिल्म 'द लास्ट शोर' देखी। अमेरिका और सोवियत संघ के बीच भीषण युद्ध छिड़ चुका था, परमाणु मिसाइलें उड़ती मछलियों के झुंड की तरह महाद्वीपों के बीच चक्कर लगा रही थीं, पृथ्वी नष्ट हो चुकी थी और मानवता लगभग पूरी तरह विलुप्त हो चुकी थी। हालांकि, हवा की दिशा या किसी अज्ञात कारण से, रेडियोधर्मी बादल अभी तक दक्षिणी गोलार्ध, ऑस्ट्रेलिया तक नहीं पहुंचा था। दूसरे शब्दों में, यह केवल समय की बात थी। मानवता का विलुप्त होना अपरिहार्य था। जो लोग अभी भी जीवित थे, वे असहाय होकर आसन्न अंत की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे अपने-अपने तरीके से अपने

अंतिम दिन जी रहे थे। यही फिल्म का विषय था। एक निराशाजनक, हताश फिल्म जिसने आओमामे के इस विश्वास को और मजबूत कर दिया कि भीतरी तौर पर, हर कोई दुनिया के अंत की प्रतीक्षा कर रहा है।
बहरहाल, आधी रात को अकेले उस फिल्म को देखते हुए, आओमामे इस निष्कर्ष पर पहुंची थी कि अंडकोष में लात लगने पर शायद ऐसा ही महसूस होता होगा।
*

शारीरिक शिक्षा संकाय से स्नातक होने के बाद, आओमामे ने चार साल तक एक ऐसी कंपनी में काम किया जो स्पोर्ट्स ड्रिंक्स और पौष्टिक आहार बनाती थी। वह कंपनी की महिला सॉफ्टबॉल टीम की एक अहम खिलाड़ी थीं (वह एक बेहतरीन पिचर थीं)। टीम ने शानदार प्रदर्शन किया और कई बार राष्ट्रीय चैंपियनशिप के क्वार्टर फाइनल तक पहुंची। हालांकि, तामाकी की मृत्यु के एक महीने बाद, आओमामे ने इस्तीफा दे दिया और सॉफ्टबॉल खिलाड़ी के रूप में अपने करियर को समाप्त कर दिया। अब उनमें खेल को आगे खेलने की कोई प्रेरणा नहीं बची थी और वह अपना जीवन पूरी तरह से बदलना चाहती थीं। फिर उन्होंने कॉलेज के एक दोस्त के माध्यम से हिरोओ के एक स्पोर्ट्स क्लब में प्रशिक्षक के रूप में नौकरी कर ली। स्पोर्ट्स क्लब में, वह मुख्यतः मांसपेशियों को मजबूत करने और मार्शल आर्ट की कक्षाएं सिखाती थीं। यह एक प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध क्लब था, जिसकी प्रवेश फीस और सदस्यता शुल्क बहुत अधिक था, और कई मशहूर हस्तियां भी इसमें शामिल होती थीं। आओमामे ने महिलाओं के लिए आत्मरक्षा की कक्षाएं शुरू की थीं, जिसमें वह माहिर थीं। उन्होंने एक बड़े आदमी के आकार का कपड़े का पुतला बनाया, उस पर अंडकोष के रूप में एक बड़ा काला दस्ताना सिल दिया, और महिलाओं को उस हिस्से पर प्रहार करने का अभ्यास करवाया। इसे और अधिक वास्तविक दिखाने के लिए, वह कभी-कभी उसमें दो स्क्वैश बॉल भर देती थीं, जिन पर महिलाएं तेजी से, लगातार और बार-बार प्रहार करती थीं। क्लब के अधिकांश सदस्य इन अभ्यासों से बहुत प्रभावित हुए और अपनी तकनीक को अपनी आंखों से देखकर सुधार रहे थे, लेकिन कुछ ऐसे भी थे जिन्हें यह विचार पसंद नहीं आया (ज्यादातर पुरुष, ज़ाहिर है) और उन्होंने क्लब प्रबंधन से शिकायत की कि "यह अभी भी बहुत ज्यादा है, आपको नहीं लगता?" इसलिए, निदेशक ने आओमामे को अपने कार्यालय में बुलाया और उनसे इन अभ्यासों में थोड़ी नरमी बरतने को कहा।
“लेकिन अगर कोई महिला किसी पुरुष के हमले का शिकार हो जाए, तो उसके पास खुद का बचाव करने का लगभग कोई तरीका नहीं होता, सिवाय उसे अंडकोष पर लात मारने के,” उसने जोर देकर कहा। पुरुष आमतौर पर बड़े और ताकतवर होते हैं। पैरों के बीच एक तेज़ लात ही एकमात्र तरीका है जिससे महिला जीत सकती है। माओत्से तुंग ने यही कहा था। अपने प्रतिद्वंदी की कमज़ोरी ढूंढो और पहले हमला करो। सेना के खिलाफ एक गुरिल्ला के पास यही एकमात्र मौका होता है।
"जैसा कि आप भली-भांति जानते हैं, हम एक चुनिंदा और प्रतिष्ठित क्लब हैं," असंतुष्ट निदेशक ने उत्तर दिया। हमारे अधिकांश ग्राहक सेलिब्रिटी हैं। हमें हर तरह से अपने मानकों को बनाए रखना होता है। छवि सर्वोपरि है। अगर हम कुछ युवतियों को इकट्ठा करके उन्हें पुतले के पैरों के बीच में मारने का अभ्यास करवाएं और साथ ही तरह-तरह की आहें भरवाएं, तो इससे हमारी प्रतिष्ठा धूमिल हो जाएगी, चाहे इसके पीछे कोई भी कारण हो। ऐसा भी हुआ है कि संभावित भावी ग्राहक क्लब देखने आए, संयोग से आपकी क्लास के दौरान ही वहां पहुंच गए, और तुरंत

सदस्यता लेने का विचार छोड़ दिया। पुरुष ऐसी चीज़ें देखकर डर जाते हैं, घबरा जाते हैं और घृणा करने लगते हैं, चाहे माओत्से तुंग या चंगेज़ खान कुछ भी कहें।
पुरुषों में भय, घबराहट या घृणा पैदा करने के लिए आओमामे को अपने अंतरात्मा की कोई परवाह नहीं थी। बेरहमी से बलात्कार किए जाने के दर्द की तुलना में ऐसी घृणा तो विचार करने लायक भी नहीं थी। लेकिन वह अपने बॉस के निर्देशों का उल्लंघन नहीं कर सकती थी। उसे आत्मरक्षा कक्षाओं में आक्रामकता का स्तर काफी कम करने के लिए मजबूर किया गया था। उसे पुतले का उपयोग करने से भी मना किया गया था। परिणामस्वरूप, प्रशिक्षण नरम और केवल दिखावे के लिए रह गया था। बेशक, आओमामे को यह पसंद नहीं था और क्लब के सदस्य भी खुश नहीं थे, लेकिन एक साधारण कर्मचारी होने के नाते, उसके बस में कुछ भी बदलने का अधिकार नहीं था।
ओमामे का मानना था कि अगर कोई आपको घेर ले और आप उसके अंडकोष पर ठीक से लात न मार सकें, तो आपके पास और कोई चारा नहीं बचता। हमलावर की बांह पकड़कर उसे पीछे की ओर मोड़ने जैसी जटिल तकनीकें हमेशा कारगर नहीं होती थीं। हकीकत और फिल्में दो अलग-अलग चीजें होती हैं। ऐसी कोशिश करने के बजाय, बेहतर यही होगा कि आप सब कुछ छोड़कर भाग जाएं।
किसी भी हालत में, आओमामे ने अंडकोष पर वार करने की दस तकनीकों में महारत हासिल कर ली थी, जिनका उसने सुरक्षा उपकरण पहने एक युवा सहकर्मी की मदद से वास्तविक जीवन में परीक्षण किया था। "बहुत दर्द होता है और वो भी सुरक्षा उपकरण के साथ। बस करो, कृपया!", उसने शिकायत की थी। अगर उसे इन निपुण तकनीकों को व्यवहार में लाने की ज़रूरत पड़ती, तो वह ज़रा भी नहीं हिचकिचाती। "कोई बेवकूफ मुझ पर हमला करने की कोशिश करे, तो मैं उसे दिखा दूँगी कि दुनिया का अंत कैसा होता है," उसने दृढ़ता से खुद से कहा। "मैं उसे सबके सामने दिखा दूँगी कि 'तेरा राज्य आए' का क्या मतलब होता है। मैं उसे सीधे दक्षिणी गोलार्ध में फेंक दूँगी, जहाँ वो रेडियोधर्मी मलबे में कंगारुओं के साथ नहाएगा।"
*

ओमामे बार में बैठी टॉम कॉलिन्स पी रही थी और आने वाले राज्य के बारे में सोच रही थी। बीच-बीच में वह अपनी घड़ी देखती, मानो किसी से मिलने जा रही हो, जबकि असल में उसे किसी के आने की उम्मीद नहीं थी। वह बस वहाँ मौजूद ग्राहकों में से किसी उपयुक्त पुरुष की तलाश कर रही थी। साढ़े आठ बज रहे थे। उसने नीले रंग का ब्लाउज, बेज रंग का सूट और नेवी रंग की छोटी स्कर्ट पहनी हुई थी। उस दिन उसके पास उसका छेनी भी नहीं था। उसने उसे तौलिये में लपेटकर अपनी अलमारी के दराज में रख दिया था।
यह बार रोप्पोंगी में स्थित था और इसे सिंगल्स बार के नाम से जाना जाता था। इसकी यह ख्याति इस तथ्य से फैली थी कि यहाँ अविवाहित पुरुष अविवाहित महिलाओं की तलाश में आते थे - या इसके विपरीत। यहाँ कई विदेशी भी आते थे। यह जगह बहामास के एक बार की शैली में सजी हुई थी, जहाँ हेमिंग्वे अपना जीवन यापन करते थे। एक दीवार पर स्वोर्डफ़िश की आकृति बनी हुई थी और छत से मछली पकड़ने का जाल लटका हुआ था। वहाँ कुछ तस्वीरें भी लगी थीं जिनमें विभिन्न लोग पानी से बड़ी-बड़ी मछलियाँ निकालते हुए दिखाई दे रहे थे, और हेमिंग्वे का एक चित्र भी था। हंसमुख पापा हेमिंग्वे। यहाँ आने वालों को इस बात की परवाह नहीं थी कि अपने

जीवन के अंतिम समय में लेखक शराबी बन गए थे और उन्होंने बंदूक से आत्महत्या कर ली थी।
उस शाम कई पुरुषों ने उससे संपर्क किया, लेकिन कोई भी उसे पसंद नहीं आया। दो आकर्षक दिखने वाले छात्रों ने उससे बात करने की कोशिश की, लेकिन उसने उन्हें जवाब देना तक की जहमत नहीं उठाई। एक तीस वर्षीय व्यक्ति, जो क्लर्क जैसा दिखता था और जिसकी आँखों में तीखी नज़र थी, को उसने यह कहकर चुप करा दिया कि उसकी एक डेट है। आम तौर पर, उसे युवा पुरुष पसंद नहीं थे। वे आत्ममुग्ध और आत्मविश्वास से भरे होते थे, लेकिन बातचीत में अच्छे नहीं होते थे और उबाऊ होते थे। बिस्तर पर वे जल्दबाज़ी करते थे और उन्हें यौन संबंध का असली आनंद लेना नहीं आता था। उसे अधेड़ उम्र के पुरुष पसंद थे, जो थोड़े थके हुए हों और आदर्श रूप से जिनके बाल झड़ने शुरू हो गए हों। वे साफ-सुथरे और किसी भी तरह की अश्लीलता से मुक्त होते थे। इसके अलावा, उनके सिर का आकार सुडौल होना भी ज़रूरी था। लेकिन ऐसा पुरुष आसानी से नहीं मिलता था, इसलिए उसे समझौता करना पड़ा।
बार में चारों ओर नज़र घुमाते हुए, आओमामे ने धीरे से आह भरी। इस दुनिया में हमें एक अच्छा आदमी क्यों नहीं मिल पाता? उसने शॉन कॉनरी के बारे में सोचा, और सिर्फ़ उनके चेहरे की आकृति की कल्पना करते ही उसके शरीर में एक दर्द सी दौड़ गई। उसने सोचा, अगर शॉन कॉनरी यहाँ आ जाएँ, तो मैं उन्हें पाने के लिए हर संभव कोशिश करूँगी। लेकिन यह तो ज़ाहिर है कि रोप्पोंगी के बहामास स्थित सिंगल्स बार में उनका कोई काम नहीं है।
दीवार पर लगे बड़े टीवी पर क्वीन का वीडियो चल रहा था। आओमामे को उनका संगीत पसंद नहीं था, इसलिए उसने स्क्रीन की तरफ देखना टाल दिया। उसने स्पीकर से आ रहे संगीत को भी नज़रअंदाज़ करने की कोशिश की। क्वीन का गाना खत्म होते ही एबीबीए का गाना शुरू हो गया। ओह, अब क्या हो! उसने मन ही मन सोचा, उसे पहले से ही आभास हो गया था कि उसकी शाम खराब जाने वाली है।
*

ओमामे की मुलाकात विलो हाउस की उस महिला से उस स्पोर्ट्स क्लब में हुई थी जहाँ वह काम करती थी। वह उसके आत्मरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम में नामांकित थी। उसका यह क्रांतिकारी प्रशिक्षण कार्यक्रम, जो समय से पहले ही समाप्त हो गया था, एक पुतले पर हमले पर केंद्रित था। वह कद में छोटी और प्रतिभागियों में सबसे उम्रदराज थी, लेकिन वह फुर्तीली थी और जोरदार वार करती थी। ओमामे को पूरा यकीन था कि अगर ऐसी स्थिति आती, तो वह अपने हमलावर के अंडकोष पर लात मारने में एक पल भी नहीं हिचकिचाती। वह सीधे-सीधे बोलती थी और जरूरत से ज्यादा कुछ नहीं कहती थी। ओमामे को उसकी ये बातें बहुत पसंद थीं।
कक्षा समाप्त होने पर उसने मुस्कुराते हुए उससे कहा, "मेरी उम्र में तो मुझे आत्मरक्षा करना भी नहीं सीखना चाहिए।"
"उम्र का सवाल नहीं है, बल्कि जीवन जीने के तरीके का सवाल है। ऐसा रवैया अपनाना बहुत ज़रूरी है जिससे आप हर समय अपनी रक्षा कर सकें। हमलों के आगे चुपचाप झुकने से आप कहीं नहीं पहुंच पाएंगी। लगातार लाचारी आपको अंदर से खोखला कर देती है और बर्बाद कर देती है।"

वह महिला कुछ देर तक बिना कुछ कहे उसे देखती रही। आओमामे के शब्द या जिस लहजे में उसने उन्हें कहा था, उससे वह बहुत प्रभावित हुई प्रतीत हुई। फिर उसने चुपचाप सिर हिलाया।
"आपकी बात सही है। आप ठीक हैं। आपकी सोच अच्छी है।"
कुछ दिनों बाद, आओमामे को क्लब के पते पर एक लिफाफा मिला। उसके अंदर एक छोटा सा पत्र था जिसमें महिला का नाम और फोन नंबर साफ-सुथरे अक्षरों में लिखा था, साथ ही यह अनुरोध भी था कि जब भी उन्हें समय मिले, उनसे संपर्क किया जाए।
फोन का जवाब एक ऐसे व्यक्ति ने दिया जो उनका सहायक लग रहा था। आओमामे ने अपना परिचय दिया, और उस व्यक्ति ने बिना कुछ कहे एक्सटेंशन नंबर डायल कर दिया। इस बार महिला ने फोन उठाया, कॉल के लिए धन्यवाद दिया और उन्हें रात के खाने पर आमंत्रित किया, क्योंकि उन्हें उनसे कुछ निजी बातें विस्तार से करनी थीं। आओमामे ने स्वीकार कर लिया, और महिला ने अगले दिन साथ में रात का खाना खाने का सुझाव दिया। आओमामे को कोई आपत्ति नहीं थी, लेकिन वह आश्चर्य से सोचने लगीं कि आखिर उन्हें उनसे क्या बात करनी है।
दोनों ने अज़ाबू के एक शांत इलाके में स्थित एक फ्रांसीसी रेस्तरां में भोजन किया। महिला उस रेस्तरां की पुरानी ग्राहक लग रही थी, क्योंकि उन्हें बेहतरीन भोजन परोसा गया था और एक उम्रदराज वेटर, जो उन्हें जानता था, ने विनम्रता से उनकी सेवा की थी। उन्होंने एक सादी, सुंदर कट वाली (1960 के दशक की गिवेंची जैसी) पोशाक पहनी थी और गले में जेड का हार था। एक समय रेस्तरां प्रबंधक आया और उसने सम्मानपूर्वक उनका अभिवादन किया। मेनू में कई सब्ज़ी आधारित व्यंजन थे, जिनका स्वाद संयमित और परिष्कृत था। उस दिन का सूप हरी बीन्स का था। महिला ने एक गिलास शैब्लिस वाइन पी थी और आओमामे ने उनका साथ दिया था। वाइन भोजन की तरह ही उत्तम और सुरुचिपूर्ण थी। आओमामे ने ग्रिल्ड सफेद मछली मंगवाई थी। महिला ने केवल सब्ज़ियाँ खाई थीं और जिस नज़ाकत से उन्होंने उन्हें खाया था, वह किसी कलाकृति के समान था। उन्होंने महिला से कहा कि उनकी उम्र में शरीर कम भोजन से संतुष्ट रहता है, फिर उन्होंने मज़ाक में कहा कि कम, लेकिन बेहतर गुणवत्ता वाला भोजन।
उस महिला ने आओमामे से निजी तौर पर मार्शल आर्ट सिखाने का अनुरोध किया था। हफ्ते में दो या तीन बार घर पर ही मार्शल आर्ट की कक्षाएं लेने और संभव हो तो मांसपेशियों को मजबूत करने के लिए भी कहा था।
"बिल्कुल संभव है," आओमामे ने कहा था। "लेकिन ग्राहक के घर पर निजी प्रशिक्षण के लिए, आपको क्लब से भी संपर्क करना होगा।"
“कोई बात नहीं,” महिला ने जवाब दिया। “लेकिन मैं आपसे व्यक्तिगत रूप से समय-सारणी तय करना चाहूंगी। अगर कोई और बीच में आ जाए तो मामला पेचीदा हो जाता है और मैं किसी भी तरह की उलझन से बचना चाहती हूं। क्या आपको कोई आपत्ति है?”
- नहीं।
"तो चलिए अगले सप्ताह से शुरू करते हैं।"
और इसी के साथ उनका काम समाप्त हो गया।
"पिछली बार जब हमने जिम में बात की थी, तब आपने जो कहा था, उससे मैं वाकई बहुत प्रभावित हुआ था। मेरा मतलब है, नपुंसकता के बारे में हुई चर्चा। नपुंसकता लोगों को कितना प्रभावित करती है। याद है?"
"मुझे याद है," आओमामे ने सहमति जताई।

"क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ? समय बचाने के लिए, एक सीधा सवाल।"
- तुम्हारा मुझसे कोई भी प्रश्न हो सकता है।
— क्या आप नारीवादी हैं या समलैंगिक?
आओमामे शरमा गई और उसने अपना सिर हिलाया।
नहीं। यह मेरी निजी सोच है। मैं न तो नारीवादी हूँ और न ही समलैंगिक।
"मैं समझ गई," उस महिला ने शांत भाव से उत्तर दिया, फिर उसने बड़े सलीके से ब्रोकोली का एक टुकड़ा अपने मुंह में डाला, जिसे उसने बड़े सलीके से चबाया और शराब का एक घूंट लिया।
फिर उन्होंने आगे कहा:
"अगर आप नारीवादी या समलैंगिक होतीं तो मुझे ज़रा भी आपत्ति नहीं होती। इससे मुझ पर कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन मैं मानता हूँ कि इस तरह से बात ज़्यादा आसान है। आप समझ रही हैं ना मेरा मतलब?"
- मुझे भी ऐसा ही लगता है।
*

ओमामे सप्ताह में दो बार लेडी के घर जाती और उनसे मार्शल आर्ट सीखती। विला में एक बड़ा कमरा था जिसके चारों ओर शीशे लगे थे। इस कमरे का इस्तेमाल उनकी बेटी के बचपन में बैले सीखने के लिए किया जाता था, और अब वे इसका इस्तेमाल बारीकी से व्यायाम करने के लिए करते थे। उम्र के बावजूद, लेडी का शरीर लचीला था और वे तेजी से प्रगति कर रही थीं। कद में छोटी होने के बावजूद, उन्होंने वर्षों से अपने शरीर का अच्छा ख्याल रखा था। ओमामे उन्हें स्ट्रेचिंग की बुनियादी तकनीकें भी सिखाती और उनकी मांसपेशियों को आराम देने के लिए मालिश करती थीं।
ओमामे मालिश में माहिर थी। कॉलेज में इस क्षेत्र में उससे बेहतर कोई नहीं था। उसे मानव शरीर की सभी हड्डियों और मांसपेशियों के नाम अच्छी तरह से याद थे। वह प्रत्येक मांसपेशी की भूमिका और विशेषताओं को जानती थी और उन्हें स्वस्थ और मजबूत बनाए रखने का तरीका भी जानती थी। शरीर मनुष्य का मंदिर है, और आप इसमें जिसकी भी पूजा करते हैं, उसे यथासंभव मजबूत, सुंदर और पवित्र रखना चाहिए—यह उसका अटूट विश्वास था।
साधारण खेल चिकित्सा को अपर्याप्त पाते हुए, आओमामे ने एक्यूपंक्चर की तकनीक में भी महारत हासिल कर ली थी, जो उसे दिलचस्प लगती थी। उसने एक चीनी चिकित्सक से वर्षों तक लगन से इसका अध्ययन किया था। चिकित्सक उसकी तीव्र प्रगति से प्रभावित हुए थे और उन्होंने उससे कहा था कि वह पेशेवर रूप से बिना किसी समस्या के इसका अभ्यास कर सकती है। आओमामे को सब कुछ आसानी से याद रहता था और मानव शरीर की कार्यप्रणाली के बारे में छोटी से छोटी जानकारी प्राप्त करने की उसकी जिज्ञासा कभी खत्म नहीं होती थी। और सबसे बढ़कर, उसकी उंगलियों में एक अद्भुत अंतर्ज्ञान शक्ति थी। जैसे कुछ लोगों में संगीत की उत्कृष्ट समझ होती है या वे जमीन के नीचे पानी का पता लगा सकते हैं, वैसे ही उसकी उंगलियां पल भर में उन सूक्ष्म बिंदुओं का पता लगा लेती थीं जो शरीर की कार्यप्रणाली को नियंत्रित करते हैं। और उसने यह किसी से नहीं सीखा था। यह उसे स्वाभाविक रूप से प्राप्त हुआ था।
स्ट्रेचिंग और मसाज खत्म होने के बाद, आओमामे और लेडी ने चाय पीते हुए कुछ समय साथ बिताया और बातें कीं। तामारू हमेशा चाय के बर्तनों से सजी चांदी की ट्रे

लेकर आता था। पहले महीने तक उसने आओमामे के सामने एक शब्द भी नहीं बोला था, और आओमामे ने तो उससे यह भी पूछा था कि क्या वह गूंगा है।
एक दिन, उस महिला ने आओमामे से पूछा कि क्या उसने कभी आत्मरक्षा में अंडकोष पर प्रहार करने का अभ्यास किया है।
"सिर्फ एक बार," उसने जवाब दिया।
"और क्या यह ठीक रहा?"
"यह काम कर गया," आओमामे ने सावधानीपूर्वक, अनिच्छा से कहा था।
क्या आपको लगता है कि ऐसा कदम तामारू के साथ कारगर साबित होगा?
ओमामे ने अपना सिर हिलाया।
"मुझे शक है। तामारू-सान को इन सब बातों की जानकारी है। जिन्हें ज़रूरी जानकारी होती है, वे तुरंत आपकी हरकतों को भांप लेते हैं और आप कुछ नहीं कर सकते। अंडकोष पर लात मारना सिर्फ़ नौसिखियों पर असर करता है, उन पर जिन्हें लड़ने का कोई अनुभव नहीं होता।"
— क्या आप यह कह रहे हैं कि आपको एहसास हो गया है कि तामारू कोई "शौकिया" नहीं है?
"हां। वह एक साधारण आदमी जैसा नहीं दिखता," आओमामे ने सोच-समझकर शब्दों का चयन करते हुए कहा था।
उस महिला ने अपनी चाय में दूध डाला और चम्मच से धीरे-धीरे हिलाया।
"दूसरे शब्दों में कहें तो, उस समय आप जिस व्यक्ति से बात कर रहे थे, वह एक नौसिखिया था। लंबा?"
ओमामे ने बिना कुछ कहे सिर हिला दिया। वह आदमी हट्टा-कट्टा और ताकतवर लग रहा था। लेकिन वह घमंडी था और एक औरत के साथ व्यवहार करते हुए लापरवाह हो गया था। इससे पहले किसी ने भी उसके अंडकोष पर चोट नहीं पहुंचाई थी, और उसने कभी सोचा भी नहीं था कि उसके साथ ऐसा कुछ हो सकता है।
“क्या उसे चोट लगी थी?” महिला ने पूछा था।
"नहीं, उसे चोट नहीं लगी थी। वह बस कुछ देर के लिए असहनीय दर्द से बेहाल हो गया था।"
महिला कुछ देर चुप रही, फिर उसने पूछा:
"क्या आपने कभी किसी पुरुष पर हमला किया है? सिर्फ उसे दर्द पहुंचाने के लिए नहीं, बल्कि जानबूझकर उसे चोट पहुंचाने के लिए?"
"हाँ," आओमामे ने ईमानदारी से जवाब दिया। झूठ बोलना उसकी खासियत नहीं थी।
— क्या आप मुझे और जानकारी दे सकते हैं?
ओमामे ने धीरे से अपना सिर हिलाया।
मुझे खेद है, लेकिन मेरे लिए इस बारे में बात करना आसान नहीं है।
"कोई बात नहीं। यह ऐसा विषय नहीं है जिस पर आसानी से बात की जा सके। खुद पर दबाव मत डालो।"
दोनों ने चुपचाप चाय पी, दोनों अपने-अपने विचारों में खोई हुई थीं।
अंततः, उस महिला ने चुप्पी तोड़ी।
"अगर कभी आपको लगे कि आप मुझे बता सकते हैं कि क्या हुआ था, तो क्या आप बताएंगे?"

"हो सकता है कि किसी दिन मैं इसके बारे में बात करने में सक्षम महसूस करूं। यह भी संभव है कि अंत में मैं ऐसा न कर पाऊं। सच कहूं तो, मुझे खुद भी यकीन नहीं है।"
उस महिला ने कुछ देर तक उसे देखा, फिर बोली:
मैंने आपसे यह सवाल सिर्फ जिज्ञासावश नहीं पूछा था।
ओमामे ने कोई जवाब नहीं दिया था।
— मैं देख सकता हूँ कि तुम्हारे मन में कुछ दफ़न है। बहुत भारी बोझ। जब से मैं तुमसे पहली बार मिला हूँ, तब से मुझे यह महसूस हो रहा है। तुम्हारा चेहरा दृढ़ और आत्मविश्वास से भरा है। सच कहूँ तो, मेरे मन में भी एक बोझ है। इसीलिए तुम्हें देखकर मुझे इसका एहसास हुआ। तुम्हें अभी तुरंत कुछ करने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन अगर कभी तुम उस बोझ को अपने अंदर से निकाल दो तो अच्छा होगा। मैं तो बिल्कुल अवाक हूँ। और मेरे पास अपने साधन हैं, इसलिए हो सकता है कि मैं तुम्हारी किसी तरह मदद कर सकूँ।
बाद में, जब वह लेडी से अपने मन की बात कहने में कामयाब हुई, तो आओमामे ने अपने जीवन में एक नया द्वार खोल दिया।
*

"अरे, तुम क्या पी रही हो?" किसी ने उसके कान में पूछा। यह एक महिला की आवाज थी।
अपने पैरों पर खड़े होते हुए, आओमामे ने ऊपर उस व्यक्ति की ओर देखा। उसके बगल में बार स्टूल पर एक युवती बैठी थी, जिसके बाल 1950 के दशक की शैली में पोनीटेल में बंधे थे। उसने छोटे-छोटे फूलों की छपाई वाली ड्रेस और एक छोटा सा गुच्ची बैग ले रखा था। उसके नाखून हल्के गुलाबी रंग के थे। वह बिल्कुल मोटी नहीं थी, लेकिन थोड़ी गोल-मटोल थी, उसका चेहरा गोल था। उसका चेहरा सौम्य था और उसके स्तन बड़े थे।
ओमामे को उम्मीद नहीं थी कि कोई महिला उससे बात करने की कोशिश करेगी, इसलिए वह हैरान रह गई। जिस जगह वे थीं, वहां पुरुष ही महिलाओं से बात करना शुरू करते थे।
“टॉम कॉलिन्स,” उसने जवाब दिया।
- अच्छी है?
"ज़रूरी नहीं। लेकिन यह मुश्किल नहीं है और आसानी से सरकता है।"
"वह टॉम कॉलिन्स को क्यों फोन कर रही होगी?"
"मुझे नहीं पता। शायद यह उस व्यक्ति का नाम है जिसने इसका आविष्कार किया था। वैसे यह कोई बहुत बड़ा आविष्कार नहीं है।"
लड़की ने बारटेंडर को हाथ हिलाकर टॉम कॉलिन्स मांगी, जो उसे तुरंत मिल गई। "क्या मैं आपके बगल में बैठ सकती हूँ?" उसने पूछा।
"हाँ। यहाँ भीड़ नहीं है," आओमामे ने जवाब दिया, यह सोचते हुए कि वह वैसे भी बैठ चुका है।
"तुम्हारे पास कोई डेट तो नहीं है ना?"
ओमामे ने बिना कुछ कहे उस लड़की का चेहरा देखा। वह लड़की उससे लगभग तीन या चार साल छोटी लग रही थी।

"देखो, मुझे दूसरी तरफ बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं है, इसलिए चिंता मत करो," उसने धीमी आवाज़ में कहा, मानो वह उसे कोई राज़ बता रही हो। "अगर तुम्हें इसी बात का डर था, तो ठीक है। मुझे भी मर्द पसंद हैं। बिल्कुल तुम्हारी तरह।" "मेरी तरह?"
"अच्छा, तुम यहाँ अकेले ही किसी आदमी की तलाश में आई हो, है ना?"
"क्या वे ऐसे ही दिखते हैं?"
लड़की ने अपनी आंखें थोड़ी सिकोड़ीं।
"कम से कम इतना तो स्पष्ट है, क्योंकि बार का उद्देश्य यही है। साथ ही, मुझे नहीं लगता कि आप भी पेशेवर हैं।"
- प्रत्यक्ष।
"तो क्यों न हम साथ मिलकर बात करें? मुझे लगता है कि पुरुष एक अकेली लड़की से बात करने के बजाय दो लड़कियों के साथ मिलकर बात करना ज़्यादा पसंद करेंगे। और इस तरह हम अकेले की तुलना में ज़्यादा सहज और आरामदायक महसूस करेंगे। मैं ज़्यादा स्त्रीत्व वाली हूँ, तुम ज़्यादा लड़के जैसे हो, और मुझे लगता है कि हम साथ में बुरे नहीं लगेंगे।"
आओमामे ने सोचा, लड़कों जैसी। उसे पहली बार इस नाम से पुकारा गया था।
"हम एक टीम बना सकते हैं, लेकिन पुरुषों को लेकर हमारी पसंद अलग-अलग हो सकती है। मुझे नहीं पता कि यह काम करेगा या नहीं।"
लड़की ने अपने होंठ हल्के से सिकोड़ लिए।
— बस इतना ही। पसंद... अच्छा, आपको किस तरह के पुरुष पसंद हैं?
"मध्य आयु वर्ग के पुरुष। मुझे युवा पुरुष ज्यादा पसंद नहीं हैं। मुझे वे उस उम्र के पुरुष ज्यादा पसंद हैं जब उनके बाल झड़ने शुरू हो जाते हैं।"
"आह," लड़की ने प्रशंसा भरे लहजे में कहा। "कितने अधेड़ हैं आप! मुझे तो जवान, आकर्षक दिखने वाले लड़के पसंद हैं। मुझे बूढ़े आदमियों में कोई खास दिलचस्पी नहीं है, लेकिन अगर आप कहते हैं कि आपको बूढ़े पसंद हैं, तो शायद एक बार कोशिश करके देखना चाहिए। आखिर अनुभव ही तो सब कुछ है, है ना? और आप कह रहे हैं कि वे अच्छे हैं? मेरा मतलब, सेक्स के मामले में, यही था।"
"यह मामले पर निर्भर करता है," आओमामे ने जवाब दिया।
"बेशक," लड़की ने अपनी आँखें सिकोड़ते हुए कहा, मानो वह किसी सिद्धांत की परीक्षा ले रही हो। "आप यौन मामलों में सामान्यीकरण नहीं कर सकते। लेकिन इस तरह, निष्कर्ष के रूप में?"
"वे बुरे नहीं हैं। वे इसे कई बार नहीं कर सकते, लेकिन वे आपको काफी समय देते हैं। वे आपको जल्दबाजी नहीं करवाते। दूसरे शब्दों में, वे आपको कई बार काम पूरा करवाने में कामयाब हो जाते हैं।"
लड़की ने कुछ पल सोचा।
"अगर ऐसा है, तो मुझे भी इसमें दिलचस्पी होगी। मुझे लगता है कि मैं इसे कम से कम एक बार जरूर आजमाऊंगा।"
- जैसी आपकी इच्छा।
"क्या आपने कभी चार लोगों के समूह में यौन संबंध बनाए हैं? क्या आपने बीच में अपने पार्टनर बदले?"
- नहीं।
"मैं भी नहीं, लेकिन क्या आप इसमें रुचि रखेंगे?"

"मुझे ऐसा नहीं लगता," आओमामे ने कहा। "टीम बनाना ठीक है, लेकिन अगर हम साथ मिलकर कुछ करने वाले हैं, चाहे वह थोड़े समय के लिए ही क्यों न हो, तो मैं पहले आपको थोड़ा बेहतर तरीके से जानना चाहूंगी। अन्यथा, रास्ते में गलतफहमियां होने का खतरा रहेगा।"
"कोई बात नहीं। आपने जो कहा वह बिल्कुल सही है। आप मेरे बारे में क्या जानना चाहेंगे?"
— अच्छा, उदाहरण के लिए… आप जीविका के लिए क्या करते हैं?
लड़की ने अपने टॉम कॉलिन्स का एक घूंट लिया और गिलास को वापस स्टैंड पर रख दिया। फिर उसने अपने होंठों को हल्के से पोंछा और नैपकिन पर लगे लिपस्टिक के निशानों को ध्यान से देखा।
"यह वाकई बहुत अच्छा है," उसने कहा। "यह जिन से बना है, है ना?"
— जिन, नींबू का रस और मिनरल वाटर।
— हाँ, आप इसे कोई महान आविष्कार तो नहीं कह सकते, लेकिन इसका स्वाद बिल्कुल भी बुरा नहीं है।
- मैं खुश हूँ कि आपको यह पसंद है।
— तो मैं क्या करूँ… यह थोड़ा मुश्किल सवाल है। और हो सकता है कि आप मेरी बात पर विश्वास न करें, भले ही मैं आपको ईमानदारी से जवाब दूँ।
"तो चलिए मुझसे शुरू करते हैं," आओमामे ने सुझाव दिया। "मैं एक स्पोर्ट्स क्लब में प्रशिक्षक हूं। मुख्य रूप से मार्शल आर्ट। मैं स्ट्रेचिंग भी करवाता हूं।"
"मार्शल आर्ट्स," लड़की ने प्रशंसा भरे लहजे में दोहराया। "ब्रूस ली की तरह?"
- ऐसा कुछ।
और क्या आप मजबूत हैं?
— विलय।
लड़की मुस्कुराई और सौभाग्य के प्रतीक के रूप में अपना गिलास उठाया।
— तो, एक तरह से हम सचमुच एक अजेय जोड़ी बन सकते हैं, क्योंकि मैं बहुत लंबे समय से आइकिडो का अभ्यास कर रहा हूँ। और, सच कहूँ तो, मैं एक पुलिस अधिकारी हूँ।
*

"पुलिसवाली," आओमामे ने थोड़ा मुंह खुला रखते हुए दोहराया, वह कुछ और कहने में असमर्थ थी।
"मैं मेट्रोपॉलिटन पुलिस विभाग में काम करता हूँ। आपको ऐसा नहीं लगता होगा, है ना?"
- बिल्कुल नहीं।
"लेकिन मैं यही करती हूँ। सच में। मेरा नाम आयुमी है।"
मैं आओमामे हूँ।
"आओमामे? क्या यही तुम्हारा असली नाम है?"
ओमामे ने गंभीरता से सिर हिलाया।
क्या आप पुलिस अधिकारी हैं, यानी आपके पास वर्दी है, बंदूक है और आप पुलिस कार में सड़कों पर गश्त करते हैं?
"मैं पुलिस अधिकारी इसलिए बनी क्योंकि मैं यही करना चाहती थी, लेकिन मुझे मौका ही नहीं मिलता," आयुमी ने अपने भरे हुए कटोरे से नमक लगे प्रेट्ज़ेल का

दुनिया में महिला पुलिसकर्मी एक तरह से दूसरे दर्जे की नागरिक हैं। वे ट्रैफिक चालान निपटाती हैं, दफ्तर में बैठकर कागज़ात छाँटती हैं, स्कूलों में जाकर बच्चों को सुरक्षा के बारे में सिखाती हैं, गिरफ्तार महिलाओं की तलाशी लेती हैं, और उन्हें सिर्फ़ बेहद नीरस काम दिए जाते हैं। और मुझसे काफ़ी कमज़ोर पुरुषों को अपराध स्थल पर भेज दिया जाता है। बॉस खुलेआम बड़े- बड़े दावे करते हैं कि वे पुरुषों और महिलाओं को समान अवसर देते हैं, लेकिन असलियत में हालात ऐसे नहीं हैं। वहाँ काम करने की प्रेरणा भी खत्म हो जाती है। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं?
आओमामे सहमत है।
ये सब चीजें मुझे सच में पागल कर रही हैं!
- आपका कोई दोस्त है क्या?
आयुमी ने मुंह बनाया और अपनी उंगलियों के बीच फंसी सिगरेट पर नजर डाली।
"एक महिला के तौर पर, एक बार जब आप पुलिस अधिकारी बन जाती हैं, तो हकीकत में बॉयफ्रेंड बनाना बहुत मुश्किल हो जाता है। काम के घंटे अनियमित होते हैं, इसलिए आपका शेड्यूल बाकी लोगों से मेल नहीं खाता, और अगर किसी के साथ बात बन भी जाए, तो जब आप कहती हैं कि आप पुलिस अधिकारी हैं, तो पुरुष आमतौर पर पीछे हट जाते हैं। वे ऐसे पीछे हटते हैं जैसे केकड़े समुद्र तट से भागते हैं। भयानक है ना?"
ओमामे ने सिर हिलाकर धीरे से सहमति जताई।
"तो अब बस काम के रिश्ते ही बचे हैं, और अभी तक मुझे इनसे ज़्यादा समझदार कोई नहीं मिला। ये सब बेवकूफ हैं जिन्हें गंदे चुटकुलों के सिवा कुछ नहीं आता। या तो ये जन्म से ही मूर्ख हैं, या फिर ये सिर्फ़ तरक्की के बारे में सोचते हैं। इन्हीं लोगों की देखरेख में समाज की सुरक्षा टिकी है। जापान का भविष्य बिलकुल भी उज्ज्वल नहीं है।"
"लेकिन तुम खूबसूरत हो और मुझे लगता है कि तुम्हें पुरुषों में दिलचस्पी है," आओमामे ने कहा।
"हां, मैं यह नहीं कह सकता कि मैं नहीं करता। जब तक मैं अपनी नौकरी का खुलासा नहीं करता। इसलिए, ऐसी स्थितियों में, मैं आमतौर पर कहता हूं कि मैं एक बीमा कंपनी के लिए काम करता हूं।"
- क्या आप अक्सर यहां आते हैं?
"मैं यह नहीं कहूंगी कि अक्सर। कभी-कभार," आयुमी ने कहा, और कुछ पल सोचने के बाद, उसने गोपनीय स्वर में कहा। "कभी-कभी मुझे सेक्स करने का मन करता है। मुझे सच में एक पुरुष चाहिए। ऐसा कभी-कभी होता है। और फिर मैं कुछ बढ़िया, कुछ बहुत ही आकर्षक लॉन्जरी पहनती हूँ और आती हूँ। मैं एक असली साथी ढूंढती हूँ और उसके साथ पूरी रात सेक्स करती हूँ। इस तरह, मुझे थोड़ी देर के लिए सुकून मिल जाता है। मेरी सेक्स ड्राइव सामान्य है, मैं कामुक या सेक्स की आदी नहीं हूँ, इसलिए एक बार जब मैं थोड़ा तनाव कम कर लेती हूँ, तो मैं शांत हो जाती हूँ। लेकिन मैं कभी भी हद से ज्यादा नहीं उलझती। अगले दिन मैं अवैध रूप से पार्क की गई कारों को ढूंढने के काम पर वापस चली जाती हूँ। आप?"
ओमामे ने गिलास लिया और चुपचाप घूंट-घूंट कर पेय पिया।
— मैं भी लगभग ऐसा ही महसूस करता हूँ।
क्या तुम्हारा कोई दोस्त नहीं है?

मैं यह नहीं करना चाहता। मुझे इसमें समय बर्बाद करने का मन नहीं है।
— अस्तबल का आदमी सिरदर्द होता है, है ना?
— म्दा.
"लेकिन कभी-कभी आपका मन करता है कि आप ऐसा करें," आयुमी ने कहा।
— या यूं कहें कि मुझे वाल्व खोलने दीजिए।
"या फिर पूरी रात बितानी पड़े?"
- या ऐसा।
"खैर, बस एक रात, बिना किसी झंझट में पड़े।"
ओमामे ने सिर हिलाया।
आयुमी ने अपनी कोहनियों को काउंटर पर टिकाया और अपने गालों को हाथों में थाम लिया, और सोच में डूब गई।
— हममें बहुत कुछ समान हो सकता है।
"शायद," आओमामे ने स्वीकार किया।
लेकिन तुम पुलिसवाले हो, और मैं लोगों को मारता हूँ। हम कानून के एक तरफ हैं, दूसरा दूसरी तरफ। और यही एक बड़ा अंतर है।
"बात कुछ इस तरह है," आयुमी ने कहा। "हम दोनों एक ही बीमा कंपनी में काम करते हैं। कंपनी का नाम गुप्त है। आप बॉस हैं, मैं आपकी अधीनस्थ। आज दफ्तर में कुछ अजीब घटना हुई, इसलिए हम यहाँ ड्रिंक करने और मौज-मस्ती करने आए हैं। और हम खूब मजे कर रहे हैं। आपको यह कहानी कैसी लगी?"
— यह तो बहुत अच्छी बात है, लेकिन मुझे तो बीमा के बारे में कुछ भी नहीं पता। "तो फिर मैं ही बचता हूँ। मैं कहानियां गढ़ने में बहुत माहिर हूँ।"
- अच्छा तब।
“वैसे, हमारे ठीक पीछे वाली मेज पर दो अधेड़ उम्र के आदमी बैठे हैं जो कामुक निगाहों से एक-दूसरे को बार-बार देख रहे हैं,” आयुमी ने कहा। उसने बेपरवाही से पीछे मुड़कर उनकी तरफ देखा।
ओमामे ने बात मान ली और बेपरवाही से मुँह फेर लिया। उनसे दो टेबल दूर दो अधेड़ उम्र के आदमी बैठे थे। दोनों सूट और टाई पहने हुए थे और ऐसा लग रहा था जैसे काम के बाद आराम करने आए हों। उनके सूट फटे-पुराने नहीं थे, न ही उनकी टाई बेढंगी थी। कम से कम वे अस्त-व्यस्त तो नहीं लग रहे थे। एक की उम्र लगभग पैंतालीस लग रही थी, दूसरे की चालीस से कम। बड़ा आदमी पतला था, अंडाकार चेहरा था और माथे पर एक जगह बाल नहीं थे। छोटा आदमी किसी पूर्व कॉलेज रग्बी खिलाड़ी जैसा लग रहा था, हाल ही में व्यायाम न करने के कारण उसका वजन थोड़ा बढ़ गया था। उसके चेहरे पर अभी भी जवानी झलक थी, लेकिन ठुड्डी के आसपास चर्बी बढ़ने लगी थी। वे व्हिस्की और पानी पी रहे थे और बातें कर रहे थे, लेकिन उनकी निगाहें बार में इधर-उधर घूम रही थीं।
आयुमी ने दोनों का विश्लेषण किया।
"ऐसा लगता है कि वे इस तरह की जगह के आदी नहीं हैं। वे मौज-मस्ती करने आए थे, लेकिन लड़कियों से बात करने में उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं है। शायद दोनों शादीशुदा हैं। वे थोड़े दोषी भी लग रहे हैं।"
ओमामे उसकी पैनी नजर से प्रभावित हुई। क्या उसने बातचीत के दौरान इन सब बातों पर ध्यान दिया था? शायद इसका संबंध इस तथ्य से था कि वह पुलिस अधिकारियों के परिवार से आती थी।

"आपने कहा था कि आपको थोड़े गंजे लड़के पसंद हैं, है ना? तो मैं थोड़े मजबूत शरीर वाले लड़के को चुन लूँगी। क्या यह ठीक है?"
ओमामे ने फिर पीछे मुड़कर देखा। गंजे आदमी का सिर काफी अच्छा था। वह शॉन कॉनरी से तो कोसों दूर था, लेकिन ठीक-ठाक था। आखिर, आज रात उसके दिमाग में क्वीन और अब्बा के गाने चल रहे थे। भला उसे और क्या चाहिए था?
"यह तो अच्छी बात है। लेकिन हम उन्हें हमसे बात करने के लिए कैसे राजी करें?" "हम कल सुबह तक इंतजार नहीं कर सकते, इसलिए हम इसे खुद ही संभाल लेंगे।" मुस्कुराते हुए, दोस्ताना और उत्साही लहजे में।
- गंभीरता से?
"ज़रूर। मुझ पर छोड़ो, मैं जाकर उनसे बात करती हूँ। तुम यहीं इंतज़ार करो," आयुमी ने कहा, फिर एक घूंट टॉम कॉलिन्स पीकर, अपने हाथों को आपस में रगड़ा, अपना गुच्ची बैग कंधे पर डाला और मुस्कुराई। "चलो छड़ी चलाते हैं!"

अध्याय 12 तेरा राज्य आए

प्रोफेसर ने फुकेरी की ओर मुड़कर कहा:
— एरी, क्या तुम हमारे लिए थोड़ी चाय ला सकती हो?
लड़की उठी और कमरे से बाहर चली गई। उसने दरवाज़ा धीरे से बंद कर दिया। प्रोफ़ेसर बिना कुछ बोले, सोफ़े पर बैठे टेंगो के शांत होने और अपने विचारों को इकट्ठा करने का इंतज़ार करते रहे। उन्होंने अपने काले फ्रेम वाले चश्मे उतारे और एक गंदे रुमाल से उनके लेंस पोंछे। फिर उन्होंने उन्हें वापस अपनी नाक पर लगा लिया। खिड़की से दिखाई देने वाले आकाश के एक छोटे से हिस्से में एक काला बिंदु तेज़ी से गुज़रा। शायद वह कोई पक्षी था, या शायद किसी की आत्मा जो दुनिया के अंत की ओर फेंकी गई थी।
"मुझे क्षमा करें," टेंगो ने कहा। "मुझे होश आ गया है, मैं ठीक हूँ। कृपया कहानी जारी रखें।"
प्रोफेसर ने सिर हिलाया और बोलना शुरू किया:
सशस्त्र संघर्ष के परिणामस्वरूप, डॉन गुट तीन साल पहले, 1981 में पूरी तरह से नष्ट हो गया था। यह एरिका के यहाँ आने के चार साल बाद हुआ था। लेकिन फिलहाल इसका डॉन गुट से कोई लेना-देना नहीं है। एरी दस साल की उम्र में मेरे साथ रहने आई थी। मैंने उसे द्वार पर पाया, बिना उसके कुछ बताए। वह उससे बिल्कुल अलग थी जैसा मैं उसे जानती थी। वह अजनबियों के सामने हमेशा शांत और गुमसुम रहती थी, लेकिन बचपन से ही वह मेरे बहुत करीब थी और हम बहुत बातें करते थे, लेकिन जब वह मेरे द्वार पर आई, तो उसने किसी से एक शब्द भी नहीं कहा। ऐसा लग रहा था जैसे वह अवाक रह गई हो। अगर आप उससे कुछ कहते, तो उसकी एकमात्र प्रतिक्रिया हाँ या ना में सिर हिलाना होती थी।
प्रोफेसर अब पहले से ज़्यादा तेज़ी से और स्पष्ट स्वर में बोल रहे थे। वे फुकेरी के कमरे से बाहर रहने के दौरान कहानी का ज़्यादा से ज़्यादा हिस्सा सुनाने की कोशिश कर रहे थे।
"मुझे लगता है कि उसके लिए यहाँ पहाड़ की चोटी तक पहुँचना बहुत मुश्किल रहा होगा। उसके पास कुछ पैसे और मेरे पते वाला एक कागज़ का टुकड़ा था, लेकिन बेचारी एकांत में पली-बढ़ी थी और मुँह तक नहीं खोलती थी। उस कागज़ के टुकड़े को हाथ में लिए वह किसी भी वाहन से चलकर आखिरकार मेरे गेट तक पहुँची। मैं तुरंत समझ गया कि उसके साथ कुछ बुरा हुआ है। आज़मी और नौकरानी ने उसकी देखभाल की। कुछ दिनों बाद वह शांत होने लगी। मैंने पायनियर्स को फोन किया और फुकादा से बात करने को कहा। लेकिन मुझे बताया गया कि वह फोन नहीं उठा सकते। मैंने कारण पूछा, लेकिन मुझे कोई और स्पष्टीकरण नहीं दिया गया। मैंने उनकी पत्नी से बात करने को कहा। वह भी उपलब्ध नहीं थीं। अंत में, मैं उन दोनों में से किसी से भी संपर्क नहीं कर पाया।"
— क्या आपने उन्हें तब बताया था कि आप एरी को अपनी देखरेख में ले रहे हैं? प्रोफेसर ने अपना सिर हिलाया।

नहीं, जब तक मैं फुकाडा से सीधे बात नहीं कर रही थी, तब तक मुझे लगा कि एरी के मेरे साथ होने की बात किसी को न बताना ही बेहतर होगा। तब से मैंने उनसे संपर्क करने की अनगिनत कोशिशें की हैं, हर संभव तरीके से। लेकिन सब व्यर्थ रहा। टेंगो ने भौंहें चढ़ाईं।
"क्या आपका मतलब है कि इन सात सालों में आपने उसके माता-पिता से एक बार भी संपर्क नहीं किया?"
शिक्षक ने सिर हिलाया।
सात साल की पूरी चुप्पी!
"और उसके माता-पिता ने इतने समय तक उसकी तलाश करने की कोशिश क्यों नहीं की?" मुझे भी इस बात पर यकीन करना मुश्किल लग रहा है। फुकाडा परिवार अपनी बेटी से बहुत प्यार करता था और उसका बहुत ख्याल रखता था। इसके अलावा, अगर उन्हें किसी चीज की जरूरत होती तो वे सिर्फ मेरे पास ही आ सकते थे। उन्होंने अपने परिवार से सारे संपर्क तोड़ दिए थे और एरी अपने दादा-दादी को जाने बिना ही बड़ी हुई। वे सिर्फ मुझसे ही मदद मांग सकते थे। और उन्होंने खुद एरी से कहा था कि अगर कभी कुछ हो जाए तो वह मेरे पास आए। फिर भी, मुझे उनसे कोई खबर नहीं मिली। यह अविश्वसनीय है।
"आपने पहले कहा था कि पायनियर्स एक खुला कम्यून था," टेंगो ने कहा।
— बिलकुल सही। अपनी स्थापना से ही, पायनियर्स एक निरंतर खुला समुदाय रहा था। लेकिन एरी के वहाँ से भागने से कुछ समय पहले ही, उन्होंने धीरे-धीरे बाहरी दुनिया से संबंध तोड़ना शुरू कर दिया था। मुझे इसका पहला संकेत तब मिला जब फुकादा से मेरा संपर्क थमने लगा। वह बहुत लिखते थे और मुझे लंबे-लंबे पत्र भेजते थे जिनमें वे तरह-तरह की बातें लिखते थे: समुदाय की घटनाएँ, उनकी मन की स्थिति। लेकिन एक समय ऐसा आया जब उन्होंने लिखना बंद कर दिया। मुझे अपने पत्रों का जवाब तक नहीं मिला। अगर मैं उन्हें फोन करता, तो उनसे बात नहीं हो पाती थी, और जब होती भी थी, तो बातचीत सीमित और संक्षिप्त होती थी। वे रूखेपन से बोलते थे, मानो उन्हें पता हो कि कोई उनकी बातें सुन रहा है।
प्रोफेसर ने अपने हाथ अपने घुटनों पर रख लिए।
मैं कुछ बार पायनियर्स के यहाँ गया था। मुझे एरी के बारे में फुकाडा से बात करनी थी, और चूंकि फोन कॉल और चिट्ठियाँ बेकार थीं, मेरे पास वहाँ जाने के अलावा कोई चारा नहीं था। लेकिन मुझे कम्यून के अंदर जाने की इजाज़त नहीं थी। मुझे सचमुच गेट से भगा दिया गया। मैंने उनसे कितनी भी मिन्नतें कीं, उन्होंने मेरी तरफ ध्यान नहीं दिया। रातों-रात पायनियर्स के परिसर को ऊँची बाड़ से घेर दिया गया था, और जो भी अंदर जाना चाहता था, उसे रोक दिया जाता था। बाहरी लोगों के लिए, अंदर की गतिविधियाँ एक रहस्य बन गई थीं। मुझे पता था कि सैन्यवादी डॉन गुट बंद था। वे सशस्त्र क्रांति चाहते थे, इसलिए उन्हें छिपना पड़ा। लेकिन पायनियर्स अपनी जैविक खेती से ही खुश थे और हमेशा बाहरी लोगों के प्रति मित्रवत रहे थे। यही कारण था कि वे अपने आसपास के लोगों को पसंद थे। लेकिन अब, उनका कम्यून एक किले में बदल गया था। ऐसा लग रहा था कि अंदर रहने वालों का रूप-रंग और व्यवहार पूरी तरह बदल गया था। इलाके के लोग, मेरी तरह, इस बदलाव से हैरान थे। मुझे फुकाडा परिवार की चिंता होने लगी, ऐसा नहीं था कि उनके साथ कुछ बुरा हुआ हो। लेकिन उस समय, मैं सिर्फ एरी की देखभाल कर सकता था। सात साल इसी तरह बीत गए, और कुछ भी स्पष्ट नहीं हुआ।

“तुम्हें यह भी नहीं पता कि वे अभी जीवित हैं या नहीं?” टेंगो ने पूछा। प्रोफेसर ने अपना सिर हिलाया।
"बिल्कुल नहीं। मुझे कुछ पता नहीं। मैं बुरी बातों के बारे में न सोचने की पूरी कोशिश करता हूँ। लेकिन अगर पिछले सात सालों से फुकाडा का कोई अता-पता नहीं है, तो कुछ तो गड़बड़ है। मैं ये सोचे बिना नहीं रह सकता कि उनके साथ कुछ हुआ होगा," प्रोफेसर ने कहा, फिर धीरे से आगे बोला, "शायद उन्हें जबरदस्ती वहाँ रखा गया है। या शायद उनके साथ कुछ और भी बुरा हुआ हो।"
"और इससे भी ज्यादा भयानक?"
"मैं सबसे बुरे हालात की संभावना से इनकार नहीं कर सकता। पायनियर्स अब वह शांतिपूर्ण, कृषि प्रधान समुदाय नहीं रह गए हैं जो वे कभी हुआ करते थे।" "क्या ये अग्रणी लोग किसी खतरनाक दिशा में आगे बढ़ रहे हैं?"
मुझे तो ऐसा ही लगता है। स्थानीय लोगों के अनुसार, वहाँ हर तरह के लोग आने- जाने लगे हैं। गाड़ियाँ लगातार आती-जाती रहती हैं, जिनमें से कई पर टोक्यो की नंबर प्लेट लगी होती हैं। बड़ी-बड़ी, आलीशान गाड़ियाँ, ऐसी गाड़ियाँ जो ग्रामीण इलाकों में कम ही देखने को मिलती हैं। ऐसा लगता है कि कम्यून के सदस्यों की संख्या भी अचानक बढ़ गई है। उनके पास नई, बेहतर इमारतें और सुविधाएँ हैं। वे आसपास की ज़मीन बहुत कम दामों पर खरीदते आ रहे हैं, और ट्रैक्टर, खुदाई मशीनें और कंक्रीट मिक्सर भी मंगवा चुके हैं। ज़मीन पर खेती पहले की तरह जारी है और शायद यह उनकी आमदनी का एक अहम ज़रिया है। पियोनिएरी लेबल वाली सब्ज़ियाँ तेज़ी से लोकप्रिय हो रही हैं, और वे उन्हें सीधे ऑर्गेनिक खाना परोसने वाले रेस्टोरेंट तक भी पहुँचाते हैं। उनके लग्ज़री सुपरमार्केट के साथ भी अनुबंध हैं। उनका मुनाफा ज़रूर बढ़ा होगा। हालाँकि, खेती के साथ-साथ, लगता है वहाँ कुछ और भी चल रहा है। चाहे वे कितने भी प्याज़ बेच लें, उससे इतने बड़े पैमाने पर विकास कार्य के लिए पैसे नहीं मिल पा रहे हैं। स्थानीय लोगों का मानना है कि उनकी गोपनीयता को देखते हुए, वहाँ कुछ संदिग्ध हो रहा है, जिसे सार्वजनिक नहीं किया जा सकता।
“क्या उन्होंने अपनी राजनीतिक गतिविधियां फिर से शुरू कर दी हैं?” टेंगो ने पूछा।
“मुझे ऐसा नहीं लगता,” प्रोफेसर ने जवाब दिया। पायनियर्स राजनीतिक विचारधारा से अलग राह पर चलते हैं। यही कारण है कि एक समय उन्हें ज़ोरी दे ज़ी से संबंध तोड़ने पड़े।
लेकिन उसके बाद, संगठन के भीतर कुछ ऐसा हुआ, जिसके कारण एरी-सान को वहां से भागना पड़ा।
"क्या हुआ होगा?" प्रोफेसर ने पूछा। कुछ महत्वपूर्ण, कुछ ऐसा जिसकी वजह से तुम अपने माता-पिता को छोड़कर अकेले ही वहां से भाग गई। लेकिन एरी इस बारे में कुछ भी कहना नहीं चाहती।
क्या उन्हें कोई ऐसा सदमा या आघात लगा है जिसके कारण वे ठीक-ठीक यह नहीं बता पा रहे हैं कि क्या हुआ था?
नहीं, उसने मुझे ऐसा कोई आभास नहीं दिया कि उसे कोई सदमा लगा हो या वह किसी बात से डरी हुई हो, न ही इस बात से परेशान थी कि वह अपने माता-पिता से अलग होकर अकेली रह गई है। वह बस सुन्न-सी लग रही थी। लेकिन वह यहाँ के जीवन में बिना

किसी बाधा के सहज हो गई। मैं तो यह भी कहूँगा कि बहुत आसानी से, बिना किसी बेहोशी के।
प्रोफेसर ने कक्षा के दरवाजे की ओर एक नजर डाली। फिर उन्होंने अपनी नजर टेंगो की ओर घुमाई।
एरी के साथ जो भी हुआ, मैंने उसके मन की बात जानने की कोशिश नहीं की। मुझे लगा कि उसे समय चाहिए। इसीलिए मैंने उससे कोई सवाल नहीं पूछा और उसे अकेला छोड़ दिया, मानो मुझे उसकी चुप्पी से कोई फर्क नहीं पड़ता। एरी अपना सारा समय आज़मी के साथ बिताती थी। जब आज़मी स्कूल से घर आती, तो वे जल्दी-जल्दी खाना खाकर अपने कमरे में बंद हो जातीं। वहाँ वे क्या करतीं, मुझे नहीं पता। शायद अकेले में वे आपस में कुछ बातें कर लेतीं। खैर, मैंने दखल नहीं दिया और उन्हें अपनी मर्जी से करने दिया। और, उसकी खामोशी के अलावा, हमारी जिंदगी बिना किसी परेशानी के चलती रही। वह एक समझदार और आज्ञाकारी लड़की है। वह आज़मी से तुरंत दोस्त बन गई। बस, उस दौरान एरी स्कूल नहीं जा सकती थी। भला जो बच्चा एक शब्द भी न बोले, उसे स्कूल कैसे भेजा जा सकता है?
— तब तक आप सिर्फ आज़मी के साथ ही रहते थे?
“मेरी पत्नी का निधन लगभग दस साल पहले हो गया था,” प्रोफेसर ने कहा और थोड़ी देर रुके। एक कार दुर्घटना में; उनकी तुरंत मृत्यु हो गई। हम दोनों बच गए। पास में ही एक दूर के रिश्तेदार रहते हैं जो घर की देखभाल करते हैं। वे लड़कियों की भी देखभाल करते हैं। मेरी पत्नी की मृत्यु मेरे और आज़मी दोनों के लिए बहुत दर्दनाक थी। यह इतनी अचानक हुई कि हमें भावनात्मक रूप से खुद को तैयार करने का समय ही नहीं मिला। इसलिए, हमारे लिए, एरी का यहाँ आकर रहना, चाहे जो भी परिस्थितियाँ रही हों, एक अच्छी बात थी। भले ही वह बोल नहीं पाती थी, लेकिन उसके हमारे पास होने से हमें एक अजीब सी शांति मिलती थी। इन सात वर्षों के दौरान, एरी धीरे-धीरे बोलने लगी। जब वह यहाँ आई थी, तब की तुलना में उसने काफी प्रगति की है। किसी बाहरी व्यक्ति को उसका बोलने का तरीका अजीब और विचित्र लग सकता है। लेकिन हमारे लिए, यह एक उल्लेखनीय विकास है।
"क्या एरी-सान अब स्कूल जा रही है?"
नहीं, ऐसा नहीं है। मैंने उसे बस नाम के लिए दाखिला दिला दिया था, लेकिन सच तो यह है कि वह स्कूल के माहौल में ढल नहीं पाई। इसीलिए मैं या मेरे यहाँ पढ़ने वाले छात्र, जब भी मुझे खाली समय मिलता, उसे निजी ट्यूशन देते थे। फिर भी, आखिर में, ये सब बस टुकड़ों में ही था और इसे व्यवस्थित शिक्षा नहीं कहा जा सकता। क्योंकि उसे खुद से पढ़ना मुश्किल था, इसलिए जब भी मौका मिलता, मैं उसे पढ़कर सुनाता था। मैंने उसके लिए ऑडियो किताबें भी खरीदीं। बस इतनी ही शिक्षा उसे मिली है। लेकिन वह आश्चर्यजनक रूप से तेज़ है। अगर वह कुछ सीखने की ठान लेती है, तो वह उसे जल्दी और कुशलता से सीख लेती है – उसमें असाधारण क्षमता है। लेकिन उसकी पसंद और नापसंद में बहुत बड़ा अंतर है। जिन चीजों में उसकी रुचि नहीं होती, वह उन्हें देखती तक नहीं।
बैठक कक्ष का दरवाजा अभी भी बंद था। फुकाएरी को पानी उबालने और चाय बनाने में काफी समय लग गया।
“तो एरी-सान ने आज़ामी-सान को एयर क्राइसालिस के बारे में बता दिया?” टेंगो ने पूछा।

जैसा कि मैंने आपको बताया था, एरी और आज़ामी रात को अपने कमरे में बंद हो जाती थीं। मुझे नहीं पता वे क्या करती थीं। यह उनका राज़ था। लेकिन, लगता है किसी समय एरी की कहानी उनके लिए एक अहम विषय बन गई थी। आज़ामी एरी की बातें लिख लेती या रिकॉर्ड कर लेती और फिर मेरे दफ्तर में रखे वर्ड प्रोसेसर में उन्हें लिखती। उसके बाद से एरी धीरे-धीरे अपनी भावनाएं वापस पाने लगी। जिस उदासीनता में वह पूरी तरह डूबी हुई थी, मानो किसी झिल्ली में लिपटी हो, वह गायब हो गई और उसका चेहरा फिर से खिल उठा। वह वैसी ही एरी बन गई जैसी पहले हुआ करती थी। क्या तब से उनकी सेहत धीरे-धीरे सामान्य हो गई है?
"पूरी तरह नहीं। आंशिक रूप से। लेकिन हां। शायद उस कहानी को सुनाने से उसे ठीक होने में मदद मिलने लगी।"
टेंगो ने प्रोफेसर की कही बातों पर विचार किया। फिर, विषय बदलते हुए, उसने पूछा:
क्या आपने पुलिस से संपर्क करके उन्हें बताया है कि आप अब फुकाडा परिवार से संपर्क नहीं कर पा रहे हैं?
हां, मैं वहां के स्थानीय पुलिस स्टेशन गया था। मैंने एरी का ज़िक्र तो नहीं किया, लेकिन उन्हें बताया कि मैं काफी समय से अंदर मौजूद कुछ दोस्तों से संपर्क नहीं कर पा रहा हूं और मुझे डर है कि कहीं उन्हें जबरन वहां बंधक बनाकर न रखा गया हो। लेकिन उस समय वे कुछ नहीं कर सकते थे। पायनियर्स का परिसर निजी संपत्ति है और जब तक वहां किसी अपराध का कोई सबूत नहीं मिलता, पुलिस अंदर नहीं जा सकती। मैंने कितना भी आग्रह किया, उन्होंने मेरी मदद नहीं की। फिर, 1979 की शुरुआत से, उस समुदाय की कोई भी जांच करना लगभग नामुमकिन हो गया।
प्रोफेसर ने उस समय को याद करते हुए अपना सिर हिलाया।
“1979 में क्या हुआ था?” टेंगो ने पूछा।
— उसी वर्ष, पायनियर्स को एक धार्मिक संस्था के रूप में मान्यता दी गई थी।
टेंगो कुछ क्षणों के लिए अवाक रह गया।
— धार्मिक संस्था?
“सचमुच, यह अप्रत्याशित था,” प्रोफेसर ने कहा। अचानक, पायनियर्स एक धार्मिक संस्था बन गए थे। यामानाशी के प्रीफेक्ट ने उन्हें आधिकारिक स्वीकृति दे दी थी। एक बार यह दर्जा मिलने के बाद, पुलिस के लिए समुदाय के भीतर जांच करना बहुत मुश्किल हो गया था। क्योंकि इससे संविधान द्वारा प्रदत्त धार्मिक स्वतंत्रता को खतरा होता। पायनियर्स ने एक कानूनी अधिकारी नियुक्त कर लिया था और बहुत सख्त रक्षात्मक रुख अपना लिया था। स्थानीय पुलिस का उनसे कोई लेना-देना नहीं था। पुलिस ने मुझे धार्मिक संस्था के बारे में बताया, और यह सुनकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। पहले तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ, लेकिन मैंने दस्तावेज़ देखे और अपनी आँखों से देखा, फिर भी यह ऐसी बात थी जिसे मैं स्वीकार नहीं कर सका। मैं फुकादा का लंबे समय से मित्र था। मैं उनके स्वभाव को जानता था। मैं एक सांस्कृतिक मानवविज्ञानी होने के नाते धर्म से अलग नहीं था, लेकिन वह, मेरे विपरीत, एक राजनेता थे जो अपने तर्कों का समर्थन केवल तर्क के आधार पर करते थे। मैं तो यह कहूंगा कि उन्हें धर्म से घृणा थी। भले ही उसने रणनीतिक कारणों से ऐसा किया हो, लेकिन मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि उसने समुदाय को एक धार्मिक समुदाय में बदल दिया था।

— इसके अलावा, मुझे लगता है कि धार्मिक संस्था बनने की मंजूरी प्राप्त करना आसान नहीं है।
"ज़रूरी नहीं," प्रोफेसर ने कहा। "आपको कई परीक्षाओं से गुज़रना होगा और नगर पालिका में कुछ जटिल औपचारिकताओं को पूरा करना होगा, लेकिन अगर आपको थोड़ा सा राजनीतिक दबाव मिल जाए, तो आप इन झंझटों से बच सकते हैं और फिर चीज़ें आसान हो जाती हैं। सच्चा धर्म क्या है और सिर्फ़ एक पंथ क्या है, इसके बीच बहुत बारीक अंतर है। इसकी कोई स्पष्ट परिभाषा नहीं है, यह ऐसी चीज़ है जिसकी व्याख्या अलग-अलग तरीके से की जा सकती है। और जहाँ व्याख्या की गुंजाइश होती है, वहाँ राजनीतिक प्रभाव और निहित स्वार्थों की भी गुंजाइश होती है। एक बार मंज़ूरी मिल जाए, तो आप कर मुक्त हो जाते हैं और कानून द्वारा संरक्षित हो जाते हैं।" "किसी भी सूरत में, पायनियर्स अब एक कृषि प्रधान समुदाय नहीं, बल्कि एक धार्मिक समुदाय बन गए हैं। और वह भी बेहद ही बंद और भयावह रूप से।"
"एक नया धर्म। हालांकि, सच कहूं तो, यह वास्तव में एक पंथ है।"
"मुझे सच में समझ नहीं आ रहा है। उनके ऐसा कदम उठाने के पीछे कोई महत्वपूर्ण कारण जरूर रहा होगा।"
प्रोफेसर ने अपने हाथों के पिछले हिस्से पर नजर डाली। वे उलझे हुए भूरे बालों से भरे हुए थे।
— बिलकुल सही। ज़रूर कोई महत्वपूर्ण घटना रही होगी जिसने ऐसा बदलाव लाया। मैंने इस बारे में बहुत सोचा है। कई तरह की संभावनाएं हैं। लेकिन फिर भी मुझे समझ नहीं आया। वो घटना क्या थी? उन्होंने खुद को सबसे अलग कर लिया और किसी को भी यह नहीं बताया कि कम्यून में क्या चल रहा था। फिर, पायनियर्स के नेता फुकाडा का नाम फिर कभी सामने नहीं आया।
"और तीन साल पहले सशस्त्र घटना घटी और डॉन गैंग का सफाया हो गया," टेंगो ने कहा।
शिक्षक ने सिर हिलाया:
— ज़ोरी दे ज़ी को दरकिनार कर देने वाले पायनियर्स एक धार्मिक संस्था के रूप में अस्तित्व में हैं और विकसित हो रहे हैं।
तो क्या सशस्त्र घटना पायनियर्स के लिए कोई बड़ा झटका नहीं थी?
“बिल्कुल सही,” प्रोफेसर ने कहा। “इसके विपरीत, इससे उन्हें और भी प्रसिद्धि मिली। ये लोग चालाक हैं, वे हर बात को अपने फायदे में बदलना जानते हैं। लेकिन, खैर, ये सब बातें एरी के वहां से जाने के बाद हुई हैं। जैसा कि मैंने आपको बताया, इनका उससे कोई सीधा संबंध नहीं है।”
इन अंतिम शब्दों से संकेत मिला कि अब चर्चा का विषय बदलने का समय आ गया है। “क्या आपने ‘द एयर क्राइसालिस’ पढ़ी है?” टेंगो ने पूछा।
- बिल्कुल।
और आपको यह कैसा लगा?
प्रोफेसर ने कहा, "यह एक दिलचस्प कहानी है। एक अनोखी और बहुत ही विचारोत्तेजक कहानी। लेकिन, सच कहूँ तो, मुझे इसका सटीक अर्थ नहीं पता। अंधी बकरी का क्या मतलब है? छोटे लोगों या हवा के कोकून का क्या मतलब है?"
— क्या आपको लगता है कि वह पायनियर्स में अपने अनुभव का जिक्र कर रहा होगा, या किसी ऐसी विशिष्ट घटना का जो उसने देखी हो?

"यह संभव है। लेकिन यह निश्चित रूप से जानना मुश्किल है कि वास्तविकता कहाँ है और कल्पना कहाँ से शुरू होती है। इसे एक प्रकार के मिथक के रूप में पढ़ा जा सकता है, लेकिन एक चतुर रूपक के रूप में भी।"
एरी ने मुझे बताया कि लिटिल पीपल सचमुच मौजूद हैं।
यह सुनकर प्रोफेसर ने frowning किया।
“तो आपको लगता है कि ‘द क्राइसालिस ऑफ एयर’ में वर्णित कहानी सचमुच घटी थी?” उन्होंने पूछा।
टेंगो ने अपना सिर हिलाया।
मेरा मतलब है, कहानी बेहद विस्तृत और यथार्थवादी ढंग से वर्णित है, और यही एक उपन्यास के लिए महत्वपूर्ण बिंदुओं में से एक है।
"और आप कहानी को फिर से लिखना चाहते हैं, उपन्यास में निहित बातों को और भी स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करना चाहते हैं। क्या यही इसका सार है?"
- यदि केवल मैं इसे कर सकता!
प्रोफेसर ने कहा, "मेरी विशेषज्ञता सांस्कृतिक मानवविज्ञान में है। मैं अब शोध नहीं करता, लेकिन वैज्ञानिक सोच आज भी मेरे भीतर गहराई से बसी हुई है। इस क्षेत्र का एक लक्ष्य व्यक्ति की विशिष्ट धारणाओं को सापेक्षिक बनाना, उनमें मौजूद सार्वभौमिक समानताओं को खोजना और उन्हें मनुष्य से जोड़ना है। इस तरह, व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता बनाए रखता है, लेकिन साथ ही साथ वह किसी चीज़ से जुड़ा हुआ भी महसूस करता है। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं?"
- मुझे ऐसा लगता है।
मुझे लगता है कि आप भी वही करने की कोशिश कर रहे हैं।
टेंगो ने अपने हाथ अपने घुटनों पर रख लिए।
— यह मुश्किल लगता है।
— और फिर भी, आपको लगता है कि इसे आजमाना सार्थक होगा।
मुझे भी नहीं पता कि यह फायदेमंद है या नहीं।
प्रोफेसर ने टेंगो की ओर देखा। उनकी आँखों में एक विशेष चमक थी।
— मैं जानना चाहता हूँ कि पायनियर्स में एरी के साथ क्या हुआ था। और फुकाडा परिवार का क्या हुआ। इन सात वर्षों में मैंने इस रहस्य को सुलझाने की पूरी कोशिश की है, लेकिन अंत में मुझे एक भी सुराग नहीं मिला। मैं एक ऐसी मोटी और अड़ियल दीवार से टकरा गया हूँ जिसे पार नहीं कर पा रहा हूँ। शायद एयर क्राइसालिस में कहीं इस रहस्य की कुंजी छिपी हो। भले ही इसकी संभावना बहुत कम हो, लेकिन जब तक यह मौजूद है, मैं इस पर दांव लगा रहा हूँ। मुझे नहीं पता कि आप इसके लिए उपयुक्त हैं या नहीं। लेकिन आप एयर क्राइसालिस की सराहना करते हैं और इसके प्रति काफी जुनूनी हैं। शायद यह भी एक योग्यता है।
"मैं आपसे स्पष्ट उत्तर चाहता हूँ: हाँ या ना," टेंगो ने कहा। "इसीलिए मैं आज आपसे मिलने आया हूँ। क्या आप मुझे किताब को दोबारा लिखने की अनुमति देंगे?" शिक्षक ने सिर हिलाया।
मैं भी आपके काम के नतीजे पढ़ना चाहूँगा। एरी को आप पर काफ़ी भरोसा है, और आज़मी और मुझे छोड़कर, उसके पास ऐसा करने के लिए कोई और नहीं है। तो, आप यह कर सकते हैं। मैं आपको किताब दे दूँगा। जवाब है हाँ।

*

पूरी कक्षा जानती थी कि वह साक्षी चर्च की सदस्य है। वह “धार्मिक कारणों” से क्रिसमस की गतिविधियों में भाग नहीं लेती थी और बौद्ध एवं शिंटो मंदिरों की स्कूली यात्राओं पर भी नहीं जाती थी। वह खेल गतिविधियों में भी भाग नहीं लेती थी, न ही राष्ट्रगान या विद्यालय का राष्ट्रगान गाती थी। ऐसे कार्यों को, जिन्हें अतिवादी ही कहा जा सकता है, के कारण वह कक्षा में और भी अधिक अलग-थलग पड़ गई। कैंटीन में, खाना शुरू करने से पहले, उसे प्रार्थना करनी पड़ती थी। इतना ही नहीं, उसे यह प्रार्थना ज़ोर से करनी पड़ती थी ताकि सभी सुन सकें। ज़ाहिर है, अन्य बच्चों को यह पसंद नहीं था। उसे भी सार्वजनिक रूप से ऐसा करना बिल्कुल पसंद नहीं था। हालाँकि, उसके मन में यह बात बिठा दी गई थी कि उसे भोजन से पहले प्रार्थना करनी है और उसे लापरवाही नहीं करनी चाहिए, भले ही कोई दूसरा विश्वासी उसे देख न रहा हो। क्योंकि प्रभु स्वर्ग से सब कुछ देखते हैं।

हे स्वर्ग में विराजमान प्रभु, तेरा नाम पवित्र माना जाए, तेरा राज्य आए। हमारे पापों को क्षमा कर। और हमारे मार्ग को आशीष दे। आमीन।

स्मृति बड़ी अजीब चीज़ है। बीस साल बीत जाने के बावजूद, उसे वह प्रार्थना आज भी अच्छी तरह याद थी। तेरा राज्य आए। जब भी वह यह प्रार्थना सुनता, नन्हा टेंगो सोचता कि वह कैसा राज्य होगा। क्या वहाँ एनएचके होगा? नहीं, शायद नहीं। और अगर एनएचके नहीं होगा, तो कर भी नहीं वसूले जा सकेंगे। ऐसे में, वह राज्य जल्द से जल्द आए!
टेंगो ने उससे कभी बात नहीं की थी। हालाँकि वे एक ही कक्षा में थे, लेकिन उसे कभी उससे सीधे बात करने का मौका नहीं मिला था। वह हमेशा दूसरों से दूर, अकेली खड़ी रहती थी और जब तक ज़रूरी न हो, बोलती नहीं थी। ऐसा लगता था जैसे वह किसी को अपने पास आने ही नहीं देती थी। फिर भी, टेंगो उसके मन की बात अच्छी तरह समझता था। उनमें एक खास बात समान थी: उसे रविवार को अपने माता-पिता के साथ लोगों के दरवाज़े खटखटाने जाना पड़ता था। हालाँकि कर वसूलना और धर्म प्रचार करना दो अलग-अलग बातें हैं, लेकिन टेंगो अच्छी तरह समझता था कि इस काम में मजबूर बच्चे का दिल कितना गहरा ज़ख्मी होता है। रविवार को बच्चों को दूसरे बच्चों के साथ खुलकर खेलना चाहिए। लोगों को पैसे वसूलने के लिए धमकाना या उन्हें दुनिया के भयानक अंत की घोषणा करना नहीं चाहिए। ये काम - अगर ज़रूरी हों - तो बड़ों को करने चाहिए।
*

टेंगो ने चौथी कक्षा के पतझड़ के मौसम में सिर्फ एक बार उस लड़की की मदद की थी। भौतिकी के एक प्रयोग के दौरान, उसके सहपाठी ने उसे कुछ अपशब्द कहे थे। उसने अपने काम का क्रम गड़बड़ा दिया था। टेंगो को ठीक से याद नहीं था कि उसने क्या गलती की थी। एक और लड़के ने साक्षी चर्च की सदस्य होने और घर-घर जाकर बेवकूफी भरे पर्चे बांटने के कारण उसका मज़ाक उड़ाना शुरू कर दिया। फिर वह उसे "हे भगवान" कहने लगा। यह काफी अजीब था, क्योंकि आमतौर पर उसके सहपाठी उसे चिढ़ाने और उस पर हंसने के बजाय उसे पूरी तरह से नज़रअंदाज़ करना पसंद करते थे। लेकिन वे उसे विज्ञान के प्रयोगों जैसे समूह परियोजनाओं से बाहर नहीं कर सकते थे। उन्होंने जो शब्द उसके लिए इस्तेमाल किए थे, वे बहुत ही ज़हरीले थे। टेंगो बगल वाली मेज पर बैठे समूह का हिस्सा था, लेकिन वह यह दिखावा नहीं कर

शायद मिताका और ओगिकुबो के बीच उसके सामने खड़ी दो महिलाएं भी साक्षी चर्च की सदस्य थीं। शायद वे हर रविवार की तरह धर्म प्रचार की तैयारी कर रही थीं। फूला हुआ कैनवास का थैला शायद बाढ़ से पहले की पुस्तिकाओं से भरा हो। महिला की छतरी और लड़की की आंखों में पल भर की चमक ने तेंगो को अपने पुराने सहपाठी की याद दिला दी।
नहीं, शायद ट्रेन में बैठी वो दोनों महिलाएं विटनेस चर्च से नहीं हैं, बल्कि एक आम मां-बेटी हैं, जो किसी निजी पाठ के लिए जा रही हैं। उनके बैग में पियानो की शीट या सुलेख के उपकरण हो सकते हैं। मैं हमेशा छोटी-छोटी बातों से बहुत प्रभावित हो जाता हूँ, टेंगो ने सोचा। फिर उसने अपनी आंखें बंद कीं और धीरे से सांस छोड़ी। रविवार को समय अलग तरह से बीतता है और सब कुछ विकृत सा लगता है।
*

घर लौटकर उसने अपने लिए सादा खाना बनाया। सच कहूँ तो उसने दोपहर का खाना भी नहीं खाया था। खाना खाने के बाद उसने कोमात्सु को फोन करने के बारे में सोचा। वह ज़रूर जानना चाहता था कि आज की मीटिंग कैसी रही। लेकिन रविवार था और कोमात्सु ऑफिस में नहीं था। तेंगो को उसका घर का नंबर नहीं पता था। खैर, अब कोई चारा नहीं था, अगर उसे जानना ही था तो उसे फोन ही करना पड़ेगा।
घड़ी में दस बजने वाले थे और टेंगो सोने की सोच ही रहा था कि तभी फोन की घंटी बजी। उसने सोचा कि कोमात्सु का फोन होगा, लेकिन जब उसने रिसीवर उठाया तो उसे अपनी प्रेमिका की आवाज सुनाई दी।
"मैं ज्यादा देर नहीं रुक सकती, मैं बस यह पूछना चाहती थी कि क्या मैं परसों दोपहर को आ सकती हूँ," उसने कहा।
पृष्ठभूमि में पियानो की मधुर धुन बज रही थी। ऐसा लग रहा था कि उसका पति अभी तक घर नहीं आया है। "बिल्कुल आ सकती हो," टेंगो ने जवाब दिया। अगर वह आ जाती, तो उसे अपनी पांडुलिपि पर काम रोकना पड़ता। लेकिन उसकी आवाज़ सुनकर टेंगो को एहसास हुआ कि वह उसके शरीर के लिए तरस रहा है। फोन रखने के बाद, वह रसोई में गया, अपने लिए एक गिलास वाइल्ड टर्की वाइन डाली और सिंक के सामने खड़े-खड़े बिना पानी डाले पी गया। फिर वह बिस्तर पर लेट गया, कुछ पन्ने पढ़े और सो गया। इस प्रकार टेंगो का लंबा और असामान्य रविवार समाप्त होता है।

अध्याय 13 पीड़ित होने के लिए ही जन्मा

ओमामे ने आंखें खोलीं और तुरंत महसूस किया कि उसे भयानक हैंगओवर है। उसे कभी हैंगओवर नहीं होता था। चाहे वह कितना भी पी ले, अगले दिन उसका दिमाग एकदम तरोताज़ा होता था और वह तुरंत अपना काम शुरू कर सकती थी। उसे इस बात पर गर्व था। लेकिन उस दिन उसके सिर में तेज़ दर्द हो रहा था और दिमाग सुस्त सा था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसका सिर किसी लोहे के छल्ले में जकड़ा हुआ है जो लगातार कसता जा रहा है। घड़ी में दस बज चुके थे। दोपहर की ढलती सूरज की किरणें उसकी आंखों में सुई की तरह चुभ रही थीं। सड़क पर तेज़ी से दौड़ती मोटरसाइकिलों की गड़गड़ाहट कमरे में किसी यातना यंत्र की तरह गूंज रही थी।
वह नग्न अवस्था में अपने बिस्तर पर थी, लेकिन उसे याद नहीं था कि वह घर कैसे पहुँची। पिछली रात पहने हुए कपड़े फर्श पर बिखरे पड़े थे। ऐसा लग रहा था जैसे उसने खुद ही उन्हें फेंक दिया हो। उसका बैग मेज पर था। आओमामे फर्श पर पड़े कपड़ों के ऊपर से कदम रखते हुए रसोई में गई और नल से कुछ गिलास पानी पिया। फिर वह बाथरूम में गई, ठंडे पानी से अपना चेहरा धोया और बड़े शीशे में खुद को नग्न अवस्था में देखा। उसने ध्यान से और बिना जल्दबाजी के खुद को देखा, लेकिन उसे कुछ भी नहीं मिला। उसने राहत की सांस ली। फिर भी, उसे अपने शरीर के निचले हिस्से में वही सनसनी महसूस हो रही थी जो हिंसक यौन संबंध के बाद अगले दिन होती है। एक सुखद शिथिलता, मानो उसके अंदर गहराई तक हलचल हुई हो। फिर उसने अपने गुदा में एक हल्की सी बेचैनी महसूस की। ओह, ठीक है! आओमामे ने सोचा और अपनी उंगलियों से अपनी कनपटी दबाई। और हमने उनके साथ ऐसे ही किया था? लेकिन उसकी झुंझलाहट के लिए, उसे कुछ भी याद नहीं आ रहा था।
भारी और उलझन भरे मन से आओमामे ने दीवार पर हाथ टिकाकर गर्म पानी से स्नान किया। पिछली रात की यादों को मिटाने के लिए, या उस अज्ञात चीज़ को जो उसे उस रात की याद दिला रही थी, उसने अपने पूरे शरीर पर साबुन लगाया। उसने विशेष रूप से गुप्तांग और गुदा को अच्छी तरह धोया। उसने अपना सिर भी धोया। टूथपेस्ट की पुदीने जैसी सुगंध से ऊबकर, उसने अपने मुँह में चिपचिपेपन को दूर करने के लिए अपने दाँत ब्रश किए। फिर उसने अपने अंडरवियर और मोज़े बेडरूम के फर्श से उठाए और नज़रें झुकाकर उन्हें कपड़े धोने की टोकरी में फेंक दिया।
उसने मेज पर रखे अपने बैग में तलाशी ली। उसका बटुआ वहीं था। उसके क्रेडिट कार्ड भी वहीं थे। उसके बटुए में लगभग उतने ही पैसे थे। ऐसा लग रहा था कि उसने सिर्फ घर तक टैक्सी का किराया ही दिया था। उसके बैग से सिर्फ कुछ कंडोम गायब थे। उसने उन्हें गिना तो पाया कि चार कम थे। चार? उसे एक नोट भी मिला जिस पर एक स्थानीय फोन नंबर लिखा था। लेकिन उसे बिल्कुल याद नहीं आ रहा था कि यह किसका नंबर है।
वह बिस्तर पर वापस लेट गई और पिछली रात की घटनाओं को जितना हो सके याद करने की कोशिश करने लगी। अयुमी पुरुषों के खाने की मेज पर गई, मुस्कुराते हुए उनसे बातचीत की, फिर चारों ने मिलकर ड्रिंक ली और खूब मस्ती की। उसके बाद सब कुछ योजना के अनुसार ही हुआ। उन्होंने सेमी-डबल बेड वाले दो कमरे लिए थे। उनमें

लेकिन मैं इसे कब तक जारी रख पाऊँगी? आओमामे ने सोचा। मैं इसे कब तक जारी रख पाऊँगी? मैं जल्द ही तीस साल की हो जाऊँगी। और उतनी ही जल्दी चालीस के करीब भी पहुँच जाऊँगी।
लेकिन आओमामे ने चिंता करना छोड़ दिया। उसने तय किया, "मैं इस बारे में किसी और समय, अपने खाली समय में सोच सकती हूँ। अभी मुझे इसकी कोई तत्काल आवश्यकता नहीं है। ताकि मैं गंभीरता से इस बारे में सोच सकूँ..."
ठीक उसी क्षण टेलीफोन की घंटी बजी। घंटी की आवाज़ उसके कानों में चुभ गई। ऐसा लगा जैसे कोई एक्सप्रेस ट्रेन सुरंग से तेज़ी से गुज़र रही हो। वह लड़खड़ाते हुए बिस्तर से उठा और रिसीवर उठाया। दीवार पर लगी बड़ी घड़ी में साढ़े बारह बज रहे थे।
“आओमामे?” एक कर्कश महिला की आवाज आई। यह अयुमी थी।
- हाँ।
"क्या तुम ठीक हो? तुम्हारी आवाज़ सुनकर ऐसा लग रहा है जैसे तुम पर बस चढ़ गई हो।"
- ऐसा कुछ।
हैंगओवर?
"हाँ। और अभी भी बुरा है," आओमामे ने जवाब दिया। "तुम्हें मेरा फ़ोन नंबर कैसे मिला?"
"क्या तुम्हें याद नहीं? तुमने इसे एक कागज पर लिखकर मुझे दिया था। तुमने कहा था कि हम जल्द ही फिर मिलेंगे। तुम्हारा नंबर भी तुम्हारे पर्स में होना चाहिए।"
"ओह, हाँ? मुझे कुछ याद नहीं है।"
"हाँ, ठीक है, मैं सोच रहा था। इसीलिए मैंने आपको फोन किया था। मैं चिंतित था। मुझे नहीं पता था कि आप सुरक्षित घर पहुँच गए हैं या नहीं। मैंने आपको रोप्पोंगी के चौराहे पर एक टैक्सी में बिठाया और ड्राइवर को बताया कि आपको कहाँ ले जाना है, लेकिन..."
ओमामे ने आह भरी।
"मुझे कुछ याद नहीं है, लेकिन अब बहुत हो गया। जब मैं जागा, तो मैं अपने ही बिस्तर पर था।"
- मैं खुश हूं।
- आप अभी क्या कर रहे हैं?
"मैं काम पर हूँ। मैं दस बजे अपनी कार में बैठा और तब से पार्किंग टिकट दे रहा हूँ। मैं बस थोड़ा आराम कर रहा था।"
“शाबाश!” आओमामे ने प्रभावित होकर कहा।
"हाँ, मुझे थोड़ी नींद की कमी है। लेकिन कल रात बहुत बढ़िया थी। मैं पहली बार इतना मदहोश था। आप सबका शुक्रिया।"
ओमामे ने अपनी उंगली अपनी कनपटी पर दबाई।
सच कहूँ तो, मुझे शाम का दूसरा हिस्सा ठीक से याद नहीं है। मतलब, आपके मेरे कमरे में आने के बाद का।
"नहीं? कितनी अफ़सोस की बात है!" आयुमी ने गंभीरता से कहा। "उसके बाद तो वाकई बहुत मज़ा आया। हमने चार लोगों के साथ सेक्स किया, यकीन नहीं होता। ऐसा लग रहा

था जैसे हम किसी पोर्न फ़िल्म में हों। हम दोनों ने नग्न अवस्था में लेस्बियन का रोल भी किया। और..."
ओमामे ने जल्दबाजी में उसकी बात काट दी।
"ऐसा तो है, लेकिन क्या मैंने कंडोम का इस्तेमाल किया था? मुझे याद नहीं आ रहा और यह बात मेरे दिमाग में घूम रही है।"
"बिल्कुल। मैंने इस बात का पूरा ध्यान रखा था, इसलिए चिंता मत करो। पार्किंग चालान के अलावा, मैं इस इलाके के स्कूलों की हाई स्कूल की छात्राओं को सभागार में इकट्ठा करता हूँ और उन्हें कंडोम सही तरीके से लगाना सिखाता हूँ।" "कंडोम कैसे लगाते हैं?" आओमामे ने सोचा। भला वो ऐसी बात किसी पुलिसवाली से क्यों सीखेगी?
— मेरा मुख्य उद्देश्य हाई स्कूलों में जाकर छात्रों को बलात्कार के खतरों, विकृत मानसिकता वाले लोगों से दूर रहने के तरीकों, यौन उत्पीड़न से खुद को बचाने के तरीकों के बारे में जानकारी देना है। इसके अलावा, मेरी ओर से एक व्यक्तिगत संदेश के रूप में, मैं दूसरा पहलू भी जोड़ना चाहूँगा। अगर उन्हें यौन संबंध बनाना ही है, तो वे ऐसा करेंगे ही, इसलिए बेहतर है कि वे गर्भावस्था से बचने या यौन संचारित रोगों से बचने के तरीके जान लें। ठीक है, मैं यह बात शिक्षकों के सामने खुलकर नहीं कह रहा हूँ। मैं कहूँगा कि यह बात मेरे लिए एक पेशेवर आदत बन चुकी है। मैं इसे कभी नहीं भूलता, चाहे मैं कितना भी नशे में क्यों न हूँ। आप निश्चिंत रह सकते हैं, आप बिल्कुल साफ हैं। बिना कंडोम के यौन संबंध नहीं। यही मेरा मूलमंत्र है।
"धन्यवाद। आपने सचमुच मेरी चिंता दूर कर दी।"
— सुनो, क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें विस्तार से बताऊं कि हमने कल रात क्या किया?
"जब भी मौका मिलेगा," आओमामे ने अपने फेफड़ों से भारी हवा निकालते हुए कहा। "मुझे विस्तार से किसी और समय बताना। अभी नहीं, क्योंकि मुझे लग रहा है जैसे मेरा सिर दो टुकड़ों में फट जाएगा।"
"मैं समझ गई। फिर कभी बात करेंगे," अयुमी ने हंसमुख स्वर में कहा। "तुम्हें पता है, आज सुबह उठने के बाद से मैं यही सोच रही हूँ कि हम कितनी अच्छी टीम हैं। क्या मैं तुम्हें फिर से कॉल कर सकती हूँ? मतलब, जब मेरा मन करे कि हम फिर से वही करें जो हमने कल रात किया था?"
- ज़रूर।
- कितना बढ़िया!
— कॉल करने के लिए धन्यवाद।
"अपना ख्याल रखना," आयुमी ने कहा और फोन काट दिया।
*

दोपहर दो बजे तक, काली कॉफी और झपकी की बदौलत, उसका दिमाग काफी हद तक तरोताज़ा हो गया था। सौभाग्य से, उसका सिरदर्द भी ठीक हो गया था। उसके शरीर में बस थोड़ी सी लंगड़ाहट रह गई थी। आओमामे ने अपना जिम बैग उठाया और घर से निकल गई। ज़ाहिर है, वह छेनी नहीं ले गई थी। उसके पास बस कपड़े बदलने के लिए एक जोड़ी और एक तौलिया था। हमेशा की तरह, तमारू ने प्रवेश द्वार पर उसका स्वागत किया।
वह आओमामे को लंबी, संकरी बरामदे में ले गया। आंगन की ओर खुलने वाली बड़ी खिड़कियाँ खुली थीं, लेकिन पर्दे लगे हुए थे ताकि कोई अंदर न देख सके। उनके

किनारे गमलों में सजावटी पौधे कतार में लगे थे। छत पर लगे छोटे स्पीकर से मधुर बारोक संगीत बज रहा था। बांसुरी और हार्पसीकोर्ड के लिए एक सोनाटा। कमरे के बीच में एक मसाज बेड था, जिस पर महिला पहले से ही पेट के बल लेटी हुई थी, सफेद वस्त्र पहने हुए।
तमारू के कमरे से चले जाने के बाद, आओमामे ने अपने प्रशिक्षण के दौरान इस्तेमाल होने वाले कपड़े पहन लिए। कपड़े बदलते समय, लेडी बिस्तर से उसे देख रही थी, उसका सिर उसकी ओर मुड़ा हुआ था। आओमामे को इस बात की परवाह नहीं थी कि कोई समान लिंग का व्यक्ति उसे नग्न देख रहा है। एक एथलीट होने के नाते, यह उसके लिए सामान्य बात थी, और लेडी भी मालिश के समय लगभग नग्न ही रहती थी, क्योंकि इस तरह वह उसकी मांसपेशियों की स्थिति का आसानी से आकलन कर सकती थी। आओमामे ने अपनी ब्लाउज और पैंट उतार दी और ट्रैकसूट पहन लिया। उसने अपने कपड़े मोड़कर एक कोने में रख दिए।
"तुम्हारा शरीर बहुत सुगठित है," उस महिला ने उससे कहा, फिर वह खड़ी हो गई और अपना वस्त्र उतार दिया, केवल एक पतली सूती अंतर्वस्त्र पहने रह गई।
"धन्यवाद," आओमामे ने उत्तर दिया।
मैं भी पहले ऐसा ही दिखता था।
- मुझे आप पर विश्वास है।
और उसे इस बात पर पूरा यकीन था। लगभग सत्तर साल की उम्र में भी उसके शरीर में जवानी के कई गुण बरकरार थे। उसकी काया अभी भी सुडौल थी और स्तन भी अभी भी मजबूत थे। संतुलित आहार और नियमित व्यायाम ने उसकी प्राकृतिक सुंदरता को बनाए रखने में मदद की थी। आओमामे का मानना था कि कुछ कॉस्मेटिक सर्जरी ने भी इसमें योगदान दिया होगा। नियमित झुर्रियां हटाने वाले उपचार और आंखों व मुंह के आसपास की फेसलिफ्ट सर्जरी।
"और अब तुम्हारा शरीर बेहद खूबसूरत हो गया है," उसने कहा।
महिला ने अपने होंठ हल्के से सिकोड़ लिए।
धन्यवाद, लेकिन यह पहले जैसा बिल्कुल भी नहीं है।
ओमामे ने उसे कोई जवाब नहीं दिया।
"मुझे अपने शरीर का भरपूर आनंद मिला और मेरे साथी को भी। क्या आप समझ रहे हैं मेरा मतलब?"
- मैं समझता हूँ।
"लेकिन क्या आपको इसमें मजा आता है?"
"कभी-कभी," आओमामे ने उत्तर दिया।
— पेट के बल लेटी महिला ने कहा, “मुझे नहीं लगता कि ‘कभी-कभी’ काफी है। जवानी में जितना हो सके उतना आनंद लो। जितना तुम्हारा दिल चाहे। क्योंकि बुढ़ापे में जब तुम ऐसा नहीं कर पाओगे, तो सिर्फ यादों से ही तुम्हारा शरीर गर्म होगा।”
आओमामे को पिछली रात की याद आ गई। उसके गुदा में अभी भी प्रवेश का हल्का सा एहसास बाकी था। क्या बुढ़ापे में ऐसी कोई याद उसे सहारा देगी?
ओमामे ने अपने हाथ अपने शरीर पर रखे और ज़ोर-शोर से खिंचाव शुरू कर दिया। पहले जो सुस्ती महसूस हो रही थी, वह गायब हो गई थी। जब से उसने अपना ट्रैकसूट पहना था और लेडी के शरीर को अपनी उंगलियों से छुआ था, उसकी इंद्रियां फिर से तेज हो गई थीं।

वह अपनी उंगलियों से हर मांसपेशी को ऐसे छूती थी मानो किसी नक्शे का अनुसरण कर रही हो। उसने हर मांसपेशी में तनाव का स्तर, उसकी दृढ़ता और उस पर पड़ने वाले प्रतिरोध को विस्तार से याद कर रखा था। वह ऐसा करती थी जैसे कोई पियानोवादक बिना देखे कोई लंबा संगीत बजा रहा हो। मानव शरीर के मामले में, आओमामे को विस्तार से याद रखने की अद्भुत क्षमता प्राप्त थी। और अगर वह कुछ भूल भी जाती, तो उसकी उंगलियां उसे याद रखती थीं। जब उसे किसी मांसपेशी में जरा सा भी बदलाव महसूस होता, तो वह उसे अलग-अलग कोणों से और अलग-अलग तीव्रता से उत्तेजित करती, और उससे होने वाली प्रतिक्रिया पर ध्यान देती। चाहे वह दर्द हो, सुख हो या कोई संवेदना न हो। वह न केवल तनावग्रस्त और कठोर भागों को शिथिल करती, बल्कि महिला को यह भी दिखाती कि उन्हें स्वयं कैसे काम में लाया जाए। बेशक, कुछ बिंदु उसके लिए अकेले हल करना मुश्किल थे, और वहां उसने पूरी तरह से खिंचाव पर ध्यान केंद्रित किया। हालांकि, मांसपेशियों को सबसे ज्यादा जो पसंद आता है और जिसे वे खुशी से स्वीकार करती हैं, वह है उनकी अपनी ताकत से किया गया दैनिक प्रयास।
“यहाँ दर्द हो रहा है?” आओमामे ने पूछा। उसकी जांघ के निचले हिस्से की मांसपेशी सामान्य से कहीं ज़्यादा कसी हुई थी। बेहद अकड़ी हुई। आओमामे ने अपनी उंगलियाँ उसकी श्रोणि की हड्डियों के बीच डालीं और धीरे से उसकी जांघ को एक कोण पर घुमाया।
"बहुत अच्छा," महिला ने मुंह बनाते हुए जवाब दिया।
"यह अच्छी बात है। दर्द महसूस करना अच्छी बात है। दर्द महसूस न करना बुरी बात है। क्या आप थोड़ी देर और रुक सकते हैं?"
- ज़रूर।
पूछने की कोई ज़रूरत नहीं थी। वह महिला बहुत ही सहनशील थी। वह बिना किसी शिकायत के लगभग हर चीज़ सह सकती थी। उसका चेहरा ज़रूर बिगड़ जाता था, लेकिन उसके मुँह से एक भी आह नहीं निकलती थी। आओमामे ने यह अनगिनत बार देखा था और उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति से वह हमेशा प्रभावित होती थी।
अपनी दाहिनी बांह को कोहनी से सहारा देकर और उसे एक लीवर की तरह इस्तेमाल करते हुए, आओमामे ने अपनी जांघ को और मोड़ा। एक तेज़ चटकने की आवाज़ आई और जोड़ हिल गया। महिला हांफ उठी, लेकिन उसने कोई आवाज़ नहीं निकाली।
"अब सब ठीक है," आओमामे ने कहा। "सब बेहतर हो जाएगा।"
महिला ने लंबी सांस छोड़ी। उसका माथा पसीने से चमक रहा था।
"धन्यवाद," उसने धीरे से कहा।
ओमामे ने एक घंटा अपनी मांसपेशियों को आराम देने, उन्हें उत्तेजित करने, खींचने और जोड़ों को ढीला करने में बिताया। इन गतिविधियों से काफी दर्द हुआ, लेकिन दर्द के बिना कुछ भी हल नहीं होता। ओमामे और लेडी दोनों यह बात जानती थीं। इसलिए, दोनों ने वह घंटा मौन में बिताया। कुछ देर बाद, बांसुरी की धुन समाप्त हो गई और सीडी प्लेयर बंद हो गया। केवल बगीचे में पक्षियों की चहचहाहट सुनाई दे रही थी।
कुछ देर बाद महिला ने कहा, "मुझे बहुत हल्का महसूस हो रहा है।"
वह मसाज टेबल पर लेटी हुई थी, पसीने से तरबतर एक बड़ा तौलिया उसके नीचे फैला हुआ था।
- मैं खुश हूं।

"तुम्हारा साथ होना वाकई बहुत अच्छा लगता है। तुम्हारे बिना जीना मुश्किल होता।"
— चिंता मत करो, मैं अभी कहीं नहीं जा रहा हूँ।
कुछ क्षणों की चुप्पी के बाद, जिसमें वह झिझकती हुई प्रतीत हुई, महिला ने पूछा:
मैं असावधान नहीं होना चाहता, लेकिन क्या आपके जीवन में कोई ऐसा व्यक्ति है जिसकी आप परवाह करते हैं?
"मेरे पास है," आओमामे ने उत्तर दिया।
- कितना बढ़िया!
लेकिन, दुर्भाग्य से, उस व्यक्ति को मेरी परवाह नहीं है।
"यह पूछना थोड़ा अजीब लग सकता है, लेकिन वे आपकी परवाह क्यों नहीं करेंगे? वस्तुनिष्ठ रूप से देखा जाए तो, मैं तो यही कहूंगा कि आप एक आकर्षक युवती हैं।"
"क्योंकि उसे तो यह भी नहीं पता कि मेरा अस्तित्व है।"
उस महिला ने कुछ क्षणों तक आओमामे के शब्दों पर विचार किया।
और आपका अपनी मौजूदगी को सार्वजनिक करने का कोई इरादा नहीं है?
- अभी तक नहीं।
"क्या कुछ चल रहा है? क्या कोई ऐसी बात है जो आपको खुद उससे संपर्क करने से रोक रही है?"
"कई बातें हो सकती हैं। लेकिन ज्यादातर यह इस बात से संबंधित है कि मैं कैसा महसूस करता हूं।"
उस महिला ने आओमामे को प्रशंसा भरी नजरों से देखा।
— मैंने अब तक कई असामान्य लोगों से मुलाकात की है, और मुझे लगता है कि आप भी उनमें से एक हैं।
ओमामे ने अपने होंठों को थोड़ा ढीला छोड़ दिया।
"मुझमें कुछ भी असामान्य नहीं है। मैं बस अपनी भावनाओं को लेकर बहुत खुलकर बोलता हूं।"
— आप अपने ही बनाए नियमों का कड़ाई से पालन करते हैं।
- हाँ।
और आप थोड़े जिद्दी और चिड़चिड़े भी हैं।
- शायद हां।
"लेकिन कल रात तुमने थोड़ी ज्यादा मौज-मस्ती कर ली थी, है ना?"
आओमामे का चेहरा लाल हो गया।
- आपने देखा?
"त्वचा से पता चलता है। गंध से। आपमें अभी भी मर्दानगी के अंश बाकी हैं। उम्र के साथ, आपको कई तरह की बातें समझ आने लगती हैं।"
आओमामे ने थोड़ा मुंह बनाया।
"मुझे कभी-कभी ऐसी ही किसी चीज़ की ज़रूरत पड़ती है। मुझे पता है कि यह गर्व करने लायक बात नहीं है, लेकिन..."
उस महिला ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और धीरे से उसे आओमामे के हाथ पर रख दिया।
— बिल्कुल, मैं ऐसा ही सोचता हूँ। कभी-कभी यह ज़रूरी होता है। चिंता मत करो, मैंने तुम्हें दोष नहीं दिया। लेकिन मैं चाहता हूँ कि तुम ज़्यादा सामान्य

तरीके से खुश रहो। अपने प्रिय व्यक्ति के साथ रहो और सब कुछ अच्छे से समाप्त हो।
मुझे भी यही अच्छा लगेगा। लेकिन यह मुश्किल है।
- क्यों?
ओमामे ने कोई जवाब नहीं दिया। उसके लिए समझाना आसान नहीं था।
"अगर आपको निजी मामलों पर किसी से सलाह लेने की ज़रूरत महसूस हो, तो कृपया मुझसे बात करें," उस महिला ने कहा, फिर अपना हाथ पीछे खींच लिया और तौलिए से अपने चेहरे से पसीना पोंछा। "किसी भी बात पर। हो सकता है मैं आपकी किसी तरह मदद कर सकूँ।"
- धन्यवाद।
— कभी-कभी ऐसा होता है कि खुद को पूरी छूट देने से ही हर समस्या का समाधान नहीं हो जाता।
- आप ठीक कह रहे हैं।
"आप कुछ भी विनाशकारी नहीं कर रहे हैं," महिला ने कहा। "बिल्कुल नहीं। क्या आप यह जानते हैं?"
- हाँ।
आओमामे ने सोचा, "बिल्कुल जैसा उसने कहा था। मैं कुछ भी विनाशकारी नहीं कर रही हूँ। फिर भी, कुछ न कुछ तो रह ही जाता है। जैसे शराब की बोतल के तल में तलछट जम जाती है।"
*

ओमामे को तमाकी की मृत्यु का समय आज भी याद था। जब उसने सोचा कि वह अब कभी उससे मिल नहीं पाएगी और न ही उससे बात कर पाएगी, तो उसका दिल टूट गया। तमाकी उसकी पहली दोस्त थी। वे एक-दूसरे से सब कुछ कहती थीं, बिना कुछ छिपाए। ओमामे को उससे पहले या उसके बाद कभी कोई ऐसी दोस्त नहीं मिली। उसकी जगह कोई नहीं ले सकता। अगर वह उसे न जानती, तो उसका जीवन और भी उदास और अंधकारमय होता।
वे दोनों एक ही उम्र की थीं और एक महानगर के हाई स्कूल की सॉफ्टबॉल टीम में साथी खिलाड़ी थीं। आओमामे मिडिल स्कूल से लेकर हाई स्कूल तक एक समर्पित सॉफ्टबॉल खिलाड़ी रही थीं। शुरुआत में उन्होंने इस खेल में ज्यादा मेहनत नहीं की थी और टीम के सदस्यों की कमी के कारण सिर्फ उनके बुलावे पर ही खेलती थीं, लेकिन आखिरकार यह खेल उनके जीवन का असली मकसद बन गया था। वह इस खेल से इस कदर जुड़ गई थीं जैसे कोई तेज हवा के झोंके से बचने के लिए किसी खंभे को पकड़ लेता है। उन्हें ऐसे ही सहारे की जरूरत थी। एक खिलाड़ी के तौर पर उनमें असाधारण प्रतिभा थी, जिसका उन्हें खुद भी एहसास नहीं था। मिडिल स्कूल और हाई स्कूल दोनों में वह टीम की अहम खिलाड़ी थीं और उन्हीं की बदौलत टीम ने चैंपियनशिप में लगातार जीत हासिल की थी। इससे आओमामे को आत्मविश्वास मिला (या शायद पूरा आत्मविश्वास तो नहीं, लेकिन कुछ-कुछ वैसा ही)। टीम के लिए उनका महत्व निर्विवाद था और आओमामे को उस दुनिया में अपनी स्पष्ट स्थिति का भरपूर आनंद आता था, चाहे वह कितनी भी छोटी क्यों न हो। किसी को तो उनकी जरूरत थी ही। ओमामे चौथे नंबर पर बल्लेबाजी करती थी, यानी सीधे मैदान के बीच में। तमाकी सेकंड बेस पर खेलती थी और टीम की कप्तान भी थी। कद में छोटी होने के बावजूद, उसकी फुर्ती और बुद्धि का इस्तेमाल करना बखूबी आता था। वह किसी भी स्थिति का तुरंत और व्यापक आकलन कर लेती थी।

थीं। उसने पैंटी और मोज़ों वाली दराज में केचप डाल दिया था। उसने फ्रिज का फ्यूज निकालकर खिड़की से बाहर फेंक दिया था। उसने टॉयलेट टैंक का ढक्कन फाड़कर तोड़ दिया था। उसने शावर कैप भी तोड़ दी थी। उसने सब कुछ बड़ी सावधानी से किया था, कुछ भी नहीं छोड़ा था। कमरा बिल्कुल वैसा ही दिख रहा था जैसा उसने हाल ही में बेरूत बम धमाके के बाद अखबार में देखा था।
*

तमाकी एक होशियार लड़की थी (स्कूल में उसके नंबर आओमामे से कहीं कम थे), और सॉफ्टबॉल के खेल में वह बहुत चौकस खिलाड़ी थी, उससे कभी कोई गलती नहीं होती थी। जब आओमामे किसी मुश्किल में होती, तो वह तुरंत उसके पास आती, उसे अच्छी सलाह देती, मुस्कुराती, बल्ले से उसके नितंब पर हल्की सी थपकी देती और अपनी जगह पर लौट जाती। उसका दिमाग खुला था, दिल नरम था और उसमें हास्यबोध भी था। वह एक मेहनती छात्रा थी और भाषण देने में माहिर थी। अगर वह इसी रफ्तार से पढ़ाई जारी रखती, तो एक शानदार वकील बन जाती।
लेकिन जब बात पुरुषों की आती थी, तो उसका निर्णय किसी चमत्कार से कम नहीं था। तामाकी को सुंदर पुरुष पसंद थे। दूसरे शब्दों में, वह दिखावे को बहुत महत्व देती थी, जिसे आओमामे लगभग एक विकृत प्रवृत्ति मानती थी। चाहे पुरुष का व्यक्तित्व कितना भी अच्छा हो, चाहे उसकी क्षमताएं कितनी भी महान हों, अगर उसे उसका रूप पसंद नहीं आता था, तो वह उसकी ओर बिल्कुल भी आकर्षित नहीं होती थी, चाहे वह उसे लुभाने की कितनी भी कोशिश करे। उसकी रुचि हमेशा उन सुंदर पुरुषों में ही जागती थी जो अंदर से खोखले होते थे। और पुरुषों के मामले में, तामाकी बेहद जिद्दी थी और आओमामे की बात बिल्कुल नहीं सुनती थी, चाहे वह कुछ भी कह दे। आम तौर पर, वह हमेशा उसकी राय सुनती और उसका सम्मान करती थी, लेकिन वह अपने प्रेमी की किसी भी आलोचना को स्वीकार नहीं करती थी। एक समय के बाद से, आओमामे ने खुद को उसके प्रभाव में आने दिया और उसे सलाह देना बंद कर दिया। वह तामाकी से बहस करके अपनी दोस्ती को इस तरह की बात पर खराब नहीं करना चाहती थी। आखिरकार, यह उसका जीवन था और उसे वही करने देना था जो वह चाहती थी। बहरहाल, विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दौरान तामाकी ने कई पुरुषों के साथ संबंध बनाए और हमेशा मुसीबत में फंसी, धोखा खाया, चोट खाई और अंत में उसे छोड़ दिया गया। और हर बार, वह पागलपन की हद तक पहुंच जाती थी। उसने दो बार गर्भपात करवाया था। पुरुषों और महिलाओं के बीच संबंधों की बात करें तो, तामाकी को जन्मजात पीड़ित कहा जा सकता है।
आओमामे का कभी कोई स्थायी दोस्त नहीं बना था। वह कभी-कभार डेट पर जाती थी, और उनमें से कुछ डेट्स काफी अच्छी भी होती थीं, लेकिन उसने कभी किसी गंभीर रिश्ते में नहीं पड़ी थी।
"क्या तुम कभी बॉयफ्रेंड न बनाने और हमेशा कुंवारी रहने की योजना बना रही हो?" तामाकी ने उससे पूछा था।
"मैं बहुत व्यस्त हूँ," उसने जवाब दिया था। "मैं मुश्किल से रोजमर्रा की जिंदगी संभाल पाती हूँ। मेरे पास ऐसे मनोरंजन के लिए समय नहीं है।"
कॉलेज से स्नातक होने के बाद, तामाकी ने मास्टर डिग्री हासिल करने और बार परीक्षा की तैयारी करने के लिए वहीं पढ़ाई जारी रखी। आओमामे को स्पोर्ट्स ड्रिंक्स और हेल्थ फूड बनाने वाली एक कंपनी में नौकरी मिल गई और वह उनके लिए

सॉफ्टबॉल खेलना जारी रखती थी। वे दोनों सप्ताहांत में मिलते थे, साथ में लंच करते थे, ठीक वैसे ही जैसे वे छात्र जीवन में करते थे, और घंटों बातें करते थे। चौबीस साल की उम्र में तमाकी ने अपने से दो साल बड़े आदमी से शादी कर ली थी। सगाई होने पर उसने मास्टर डिग्री की पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी और बार परीक्षा की तैयारी भी बंद कर दी। इसका कारण यह था कि उसके पति ने उसे ऐसा करने नहीं दिया था। आओमामे उससे सिर्फ एक बार मिली थी। वह एक अमीर परिवार से था, उसका चेहरा दिखने में आकर्षक था, लेकिन उसमें कोई गहराई नहीं थी। उसे नौकाओं का शौक था। वह बातूनी और बुद्धिमान था, लेकिन उसमें कोई व्यक्तित्व नहीं था और उसकी बातों में कोई दम नहीं था। वह तमाकी को पसंद आने वाला आदमी था। उसके आस-पास एक रहस्यमयी आभा भी रहती थी। आओमामे को वह शुरू से ही बिल्कुल पसंद नहीं था, और शायद वह भी उसे पसंद नहीं करता था।
"यह शादी किसी भी हालत में सफल नहीं हो सकती," उसने तामाकी से कहा था।
उसे दखल देना पसंद नहीं था, लेकिन यह शादी थी, प्रेम का खेल नहीं। वह उसकी दोस्त थी और चुपचाप बैठी नहीं रह सकती थी। यह पहली बार था जब उन दोनों के बीच इतनी भयंकर लड़ाई हुई थी। जब तमाकी ने देखा कि आओमामे शादी का विरोध कर रही है, तो वह बेकाबू हो गई और उसने उसे कुछ कड़वी बातें कह दीं। उनमें से कुछ बातें ऐसी थीं जो आओमामे सुनना नहीं चाहती थी। इसलिए वह शादी में भी नहीं गई। लेकिन दोनों में जल्द ही सुलह हो गई। हनीमून के तुरंत बाद, तामाकी अचानक आओमामे के घर पहुँच गया और माफी माँगी। उसने कहा कि वह चाहता है कि वे दोनों उसकी कही हुई बातों को भूल जाएँ। कि वह उसकी जगह पर नहीं था। कि यात्रा के दौरान वह हर समय उसके बारे में सोच रहा था। आओमामे ने उससे कहा कि चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है, क्योंकि वह सब कुछ भूल चुका है। फिर उन्होंने एक-दूसरे को गले लगाया। उन्होंने एक-दूसरे से मज़ाक किया और हँसे।
फिर भी, शादी के बाद, उनके मिलने-जुलने का सिलसिला तेज़ी से कम होता चला गया। वे अक्सर चिट्ठियाँ लिखते और फ़ोन पर बात करते, लेकिन तमाकी को मिलने का समय निकालना मुश्किल लगता था। वह हमेशा बहाने बनाती, कहती कि वह घर के कामों में व्यस्त है और एक समर्पित गृहिणी बनना मुश्किल है। लेकिन उसकी बातों से आओमामे समझ गई कि शहर में किसी से मिलना उसके पति के हित में नहीं था। इसके अलावा, तमाकी अब अपने ससुराल वालों के साथ एक ही आँगन में रहती थी और जब चाहे घर से बाहर नहीं जा सकती थी। और उसने कभी आओमामे को अपने नए घर में आमंत्रित नहीं किया।
तामाकी, आओमामे को हर मौके पर बताती कि उनकी शादीशुदा ज़िंदगी अच्छी चल रही है। उसका पति नेक दिल है और उसके माता-पिता बहुत अच्छे हैं। उसे किसी चीज़ की कमी नहीं है। कभी-कभी, सप्ताहांत में, वे नौका पर एनोशिमा घूमने जाते थे। उसे लॉ स्कूल छोड़ने का कोई अफ़सोस नहीं था क्योंकि बार परीक्षा बहुत तनावपूर्ण थी। शायद ऐसा साधारण जीवन ही उसके लिए सबसे उपयुक्त था। इस बीच, उसके बच्चे होंगे और वह एक नीरस माँ बन जाएगी। और शायद तब आओमामे उससे बात भी नहीं करना चाहेगी। उसकी आवाज़ हमेशा खुशमिजाज़ रहती थी और उसे उसकी बातों पर शक करने का कोई कारण नहीं देती थी। आओमामे ने उससे कहा कि वह खुश है। और वह सच में खुश थी। अपनी बुरी भावना के बारे में गलत होना, सही होने से कहीं बेहतर था। उसने कल्पना की कि तामाकी को आखिरकार आंतरिक शांति मिल गई है। या कम से कम वह ऐसा ही दिखाने की कोशिश करता था।

*

अध्याय 14 जो किसी ने कभी नहीं देखा

कोमात्सु और टेंगो हमेशा की तरह शिंजुकु स्टेशन के पास वाले कैफे में मिले। वहाँ कॉफी सस्ती तो नहीं थी, लेकिन मेजें इतनी दूरी पर थीं कि आप बिना किसी के सुनने की चिंता किए आराम से बातें कर सकते थे। हवा काफी साफ थी और संगीत भी हल्का और सुकून देने वाला था। हमेशा की तरह, कोमात्सु बीस मिनट देर से पहुँचा। वह कभी समय पर नहीं आता था। दूसरी ओर, टेंगो कभी देर से नहीं आता था। उसका काम हमेशा समय पर होता था। कोमात्सु चमड़े का ब्रीफकेस, अपनी हमेशा वाली ट्वीड जैकेट और नेवी पोलो शर्ट पहने हुए आया था।
"देर से आने के लिए क्षमा करें," उसने कहा, हालांकि उसे जरा भी पछतावा नहीं था।
वह हमेशा की तरह अच्छे मूड में लग रहा था, और उसके होठों पर एक नए राजकुमार जैसी मुस्कान तैर रही थी।
टेंगो ने बस सिर हिलाया, कुछ नहीं कहा।
"मुझे खेद है कि मैंने आप पर दबाव डाला। मुझे लगता है कि यह काफी कठिन था," कोमात्सु ने बैठते हुए कहा।
"मैं बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कहना चाहता, लेकिन इन दस दिनों तक मुझे यह भी नहीं पता था कि मैं जीवित हूं या मृत," टेंगो ने कहा।
— हाँ, लेकिन तुमने कर दिखाया। तुमने फुकाएरी के शिक्षक से बिना किसी बाधा के अनुमति प्राप्त कर ली और उपन्यास को फिर से लिख डाला। यह बहुत बड़ी बात है।
अकादमिक जगत में बैठे तेंगो के लिए यह एक बड़ी सफलता है। इतना ही नहीं, अब मैं तुम्हें अलग नजरिए से देखता हूँ।
टेंगो इन तारीफों को नजरअंदाज कर देता है।
"क्या तुमने फुकेरी की स्थिति के बारे में मैंने जो लिखा था, वह लंबी रिपोर्ट पढ़ी?"
— ओह, बिल्कुल। मैंने इसे फुर्सत में पढ़ा। मैं क्या कहूँ, यह काफी पेचीदा मामला है। किसी नदी पर आधारित उपन्यास के अंश जैसा। खैर, यह वैसा ही है, लेकिन मुझे उम्मीद नहीं थी कि उसके ट्यूटर खुद प्रोफेसर एबिसुनो होंगे। दुनिया कितनी छोटी है! और क्या प्रोफेसर ने मेरे बारे में कुछ कहा?
— आपके बारे में?
— जी हाँ, मेरे द्वारा।
- नहीं!
कोमात्सु ने हैरानी से कहा, "कितना अजीब आदमी था! मैंने उसके साथ एक बार काम किया था। मैं तो पांडुलिपि लेने के लिए विश्वविद्यालय स्थित उसके कार्यालय भी गया था। बहुत समय पहले की बात है, जब मैं एक युवा संपादक था।"
"अगर इतना समय बीत गया है, तो वह भूल गया होगा। उसने मुझसे पूछा था कि तुम किस तरह के आदमी हो।"
"बकवास!" कोमात्सु ने हैरानी से कहा। उसने भौंहें चढ़ाकर सिर हिलाया। "यह नामुमकिन है। बिलकुल नहीं। वह आदमी कुछ भी नहीं भूलता। उसकी याददाश्त वाकई कमाल की है। जब हम मिले थे, हमने कई तरह की बातें की थीं... खैर, छोड़ो। वह बूढ़ा

आदमी काफी पेचीदा है। तो, तुम्हारी रिपोर्ट से तो यही लगता है कि फुकाएरी के पीछे की कहानी काफी पेचीदा है।"
सीधे शब्दों में कहूँ तो, मैंने एक बहुत बड़ा बवाल खड़ा कर दिया है। फुकाएरी किसी भी तरह से सामान्य नहीं है। वह सिर्फ़ एक खूबसूरत सत्रह वर्षीय लड़की नहीं है। वह डिस्लेक्सिया से पीड़ित है और किताब नहीं पढ़ सकती। वह ठीक से लिख भी नहीं सकती। ऐसा लगता है कि एक भयानक सदमे के कारण उसकी यादों का एक बड़ा हिस्सा मिट गया है। उसका पालन-पोषण एक कम्यून में हुआ और वह मुश्किल से ही स्कूल गई। उसके पिता एक वामपंथी संगठन के नेता हैं और डॉन के साथ सशस्त्र संघर्ष में अप्रत्यक्ष रूप से शामिल थे। अब उसकी देखभाल एक समय के प्रसिद्ध सांस्कृतिक मानवविज्ञानी, प्रोफेसर एबिसुनो कर रहे हैं, जिनसे आप परिचित हैं। अगर उसका उपन्यास चर्चा का विषय बन जाता है, तो मीडिया इस तरह के कई सनसनीखेज खुलासे करेगा। यह बहुत सुखद नहीं होगा।
"हां, बिल्कुल ऐसा हंगामा हो सकता है जैसे नरक के द्वार टूट गए हों," कोमात्सु ने कहा, लेकिन उनके चेहरे से मुस्कान गायब नहीं हुई थी।
"तो क्या हम इस परियोजना को रोक दें?"
"क्या हमें परियोजना रोक देनी चाहिए?"
"कहानी बहुत जटिल है। यह खतरनाक है। चलिए मूल पांडुलिपि को फिर से एक साथ जोड़ते हैं।"
"खैर, यह इतना आसान नहीं है। मैंने आपकी संशोधित पांडुलिपि पहले ही प्रिंटर को भेज दी है, और कॉलम अभी-अभी छपे हैं। छपने के बाद, इसे समिति के चार सदस्यों, प्रधान संपादक और प्रकाशन विभाग के प्रमुख को वितरित किया जाएगा। मैं अभी जाकर उनसे यह नहीं कह सकता, 'आप जानते हैं, यह एक गलती थी, इसे वापस भेज दीजिए और ऐसा दिखावा कीजिए कि आपने इसे देखा ही नहीं।'"
टेंगो ने आह भरी।
"हम कुछ नहीं कर सकते। हम समय को पीछे नहीं मोड़ सकते," कोमात्सु ने कहा। उसने एक मार्लबोरो सिगरेट ली और आँखें सिकोड़ते हुए बार से ली हुई माचिस से सिगरेट जलाई। फिर उसने कहा:
— मैं आगे की योजना पर विचार करूँगा। टेंगो, आपको चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है। अगर 'क्राइसालिस डे ल'एयर' पुरस्कार जीतती है, तो हम फुकाएरी को लाइमलाइट से दूर रखने की कोशिश करेंगे। हम ऐसा कर सकते हैं अगर हम उनकी छवि "एक रहस्यमयी युवा लेखिका जो सार्वजनिक रूप से सामने नहीं आना चाहती" के रूप में पेश करें। संपादक के तौर पर, मैं उनका प्रवक्ता रहूँगा। मैं इस तरह की चीज़ें संभाल सकता हूँ, इसलिए कोई दिक्कत नहीं है।
"मुझे तुम्हारी काबिलियत पर कोई शक नहीं है, लेकिन फुकाएरी आम लड़कियों से अलग है। वो दूसरों की बात मानने वाली नहीं है। अगर वो किसी बात को ठान लेती है, तो वो उसे करके ही रहती है, चाहे कोई कुछ भी कहे। और जब उसे कोई बात पसंद नहीं आती, तो ऐसा लगता है मानो वो तुम्हारी बात सुन ही नहीं रही हो। ये इतना आसान नहीं होगा।"
कोमात्सु ने बिना कुछ कहे माचिस की डिब्बी को अपने हाथ में कुछ बार पलटा। लेकिन किसी भी हालत में, इस समय हमें आगे बढ़ने का फैसला करना होगा। सबसे पहले, एयर क्राइसालिस का नया संस्करण शानदार है। मेरी उम्मीदों से कहीं बेहतर। यह लगभग परिपूर्ण है। यह निश्चित रूप से पुरस्कार जीतेगा, और इसका नाम

हर किसी की जुबान पर होगा। हम इसे अभी दफना नहीं सकते। मेरे विचार से, यह एक अपराध होगा। और, जैसा कि मैंने आपको पहले बताया था, चीजें पहले से ही आगे बढ़ रही हैं।
“हत्या?” टेंगो ने कोमात्सु की ओर देखते हुए पूछा।
"क्या तुम ये शब्द जानते हो?" कोमात्सु ने कहा। "हर कला और हर शोध, हर क्रिया और हर निर्णय की तरह, किसी न किसी अच्छे की ओर अग्रसर प्रतीत होते हैं; इसलिए यह बात बिल्कुल सही कही गई है कि अच्छाई वह है जिसकी ओर सभी चीजें अग्रसर होती हैं।"
- यह क्या है?
"अरस्तू। यह निकोमेचियन एथिक्स से है। क्या आपने कभी अरस्तू को पढ़ा है?"
- ज़रूरी नहीं।
"इसे पढ़ो। तुम्हें पसंद आएगा। जब मेरे पास पढ़ने के लिए कुछ नहीं बचता, तो मैं हमेशा यूनानी दार्शनिकों की ओर रुख करता हूँ। मैं उनसे कभी नहीं ऊबता। मुझे हमेशा कुछ न कुछ सीखने को मिलता है।"
— और इस उद्धरण का क्या अर्थ है?
"हर बात का नतीजा अच्छा ही होता है। अच्छाई ही हर चीज का परिणाम है। शंकाओं को कल के लिए छोड़ देते हैं," कोमात्सु ने कहा। यही इस कथन का सार है।
— जी हाँ? और होलोकॉस्ट के बारे में अरस्तू क्या कहते?
कोमात्सु के चेहरे पर अमावस्या की मुस्कान और भी गहरी हो गई।
— अरस्तू मुख्य रूप से कला, विज्ञान और शिल्प के बारे में बात करते हैं।
*

कोमात्सु को वह कल से नहीं जानता था, आज से भी नहीं। तेंगो ने उसके दिखावे और उसके पीछे छिपी सच्चाई को भांप लिया था। कोमात्सु अपने पेशे में एक अकेला योद्धा था और ऐसा लगता था कि वह सिर्फ वही करता है जो उसे पसंद होता है, अकेले ही। कई लोग उसके इस बाहरी दिखावे से धोखा खा जाते थे। लेकिन अगर आप उसे ध्यान से देखते और परिस्थितियों की पुष्टि करते, तो आप समझ जाते कि उसके कार्यों के पीछे बहुत ही सावधानीपूर्वक गणनाएँ होती थीं। शतरंज की भाषा में कहें तो, वह कुछ चालें पहले ही भांप लेता था। बेशक उसे जटिल योजनाएँ पसंद थीं, लेकिन उसने अपनी क्षमता और सीमा के बीच एक रेखा खींच रखी थी और उसे पार नहीं करता था। आप कह सकते हैं कि वह इस मामले में काफी सतर्क था। उसके ज्यादातर बेपरवाह शब्द सिर्फ दिखावा थे।
उन्होंने कुछ बातों को सावधानीपूर्वक छिपा लिया था। उदाहरण के लिए, वे एक अखबार के शाम के संस्करण में सप्ताह में एक बार सांस्कृतिक संपादकीय लिखते थे। उसमें वे विभिन्न लेखकों की प्रशंसा या आलोचना करते थे, और आलोचना करते समय वे काफी कठोर हो जाते थे। वे इसमें माहिर थे। संपादकीय गुमनाम होता था, लेकिन उद्योग में हर कोई जानता था कि इसे किसने लिखा है। ज़ाहिर है, अखबारों द्वारा उपहास किया जाना किसी को पसंद नहीं होता। इसीलिए लेखक कोमात्सु को किसी भी बात से परेशान न करने का ध्यान रखते थे। जब वे उनसे पत्रिका के लिए कुछ लिखने को कहते थे, तो वे मना न करने की कोशिश करते थे। कम से कम कभी-कभी उन्हें मजबूरी में स्वीकार करना पड़ता था। वरना, कौन जाने संपादकीय में वे उनके बारे में क्या लिख देते।

कोमात्सु का यह सोची-समझी चालबाज़ी वाला पहलू तेंगो को बिल्कुल पसंद नहीं था। वह साहित्यिक जगत का मज़ाक उड़ाता था, लेकिन साथ ही साथ अपनी मर्ज़ी से व्यवस्था का इस्तेमाल भी करता था। संपादक के तौर पर कोमात्सु की सूझबूझ कमाल की थी और तेंगो के साथ उसके अच्छे संबंध थे। वह तेंगो को उसके उपन्यासों के बारे में अहम सलाह देता था। हालांकि, तेंगो अपने रिश्ते में एक निश्चित दूरी बनाए रखने का ध्यान रखता था। उसे यह सोच पसंद नहीं थी कि कहीं वह बहुत ज़्यादा करीब न हो जाए और फिर खुद को बेसहारा न पाए। इस लिहाज़ से तेंगो बहुत सतर्क था।
— जैसा कि मैंने अभी आपको बताया, आपने 'द एयर क्राइसालिस' को लगभग एक परिपूर्ण उपन्यास में बदल दिया है। कोमात्सु ने आगे कहा, "निःसंदेह, मैं चाहूँगा कि यदि संभव हो तो आप एक जगह पर, अकेले में, कुछ बदलाव करें। अभी नहीं। साहित्यिक प्रतियोगिता के लिए यह जैसा है वैसा ही ठीक है। पुरस्कार मिलने के बाद, जब यह पत्रिका में प्रकाशित होगा, तब आप कुछ बदलाव कर सकते हैं।"
"क्या वास्तव में?"
"जब नन्हे लोग अपना प्यूपा बना लेते हैं, तो दो चाँद दिखाई देते हैं।" लड़की आसमान की ओर देखती है और उसे दो चाँद दिखाई देते हैं। क्या तुम्हें याद है कहाँ?
- बिलकुल हाँ।
"मेरी राय है कि उन दो महीनों के बारे में पर्याप्त चर्चा नहीं होती। बिल्कुल भी नहीं। उनका अधिक विस्तार से और ठोस रूप से वर्णन किया जाना चाहिए। मैं बस यही चाहता हूं कि आप ऐसा करें।"
सच में, विवरण थोड़ा संक्षिप्त है। मैं मूल पाठ के प्रवाह को बहुत अधिक स्पष्टीकरणों से बाधित नहीं करना चाहता था।
कोमात्सु ने सिगरेट पकड़े हुए हाथ को ऊपर उठाया।
— टेंगो, ज़रा इस तरह सोचो: पाठकों ने अब तक आसमान में चाँद को अनगिनत बार देखा होगा। है ना? लेकिन दो चाँद किसी ने नहीं देखे। जब उपन्यास में कोई ऐसी चीज़ दिखाई देती है जिसे किसी ने कभी नहीं देखा हो, तो उसका विस्तृत और सटीक वर्णन ज़रूरी होता है। उसे छोटा नहीं किया जा सकता। या फिर, जिन चीज़ों को ज़्यादातर लोगों ने देखा है, उनके वर्णन को छोटा करना चाहिए।
"मैं समझ गया," टेंगो ने कहा। कोमात्सु की बातें सही थीं। मैं दो चंद्रमाओं के प्रकट होने वाले हिस्से का और विस्तार से वर्णन करूँगा।
"ठीक है। यह एकदम सही रहेगा," कोमात्सु ने कहा और फिर अपनी सिगरेट बुझा दी। "इसके अलावा मुझे और कुछ नहीं कहना है।"
"जब आप मेरी लिखी हुई चीज़ की प्रशंसा करते हैं तो मुझे खुशी होती है, लेकिन इस बार मैं पूरे दिल से खुश नहीं हो सकता," टेंगो ने कहा।
कोमात्सु ने रुक-रुक कर धीरे-धीरे कहा, "तुम बहुत जल्दी परिपक्व हो रहे हो। एक लेखक के रूप में, एक उपन्यासकार के रूप में। तुम्हें खुश होना चाहिए। तुमने 'द एयर क्राइसालिस' से बहुत कुछ सीखा है, और यह तुम्हारे अगले उपन्यास को लिखने में तुम्हारी मदद करेगा।"
मैं चाहता हूँ कि एक और उपन्यास लिखा जाए।
कोमात्सु रंजी लार्ग।

"कोई बात नहीं। तुमने अपना काम कर दिया। अब मेरी बारी है। तुम बेंच पर बैठो और चुपचाप मैच देखो।"
वेट्रेस आई और उनके गिलासों में ठंडा पानी भर दिया। टेंगो ने आधा पानी पी लिया, फिर उसे एहसास हुआ कि वह वास्तव में कुछ पीना नहीं चाहता था।
“मनुष्य की आत्मा तर्क, इच्छाशक्ति और भावनाओं से बनी होती है। अरस्तू ने यही कहा था, है ना?” टेंगो ने पूछा।
— प्लेटो। अरस्तू और प्लेटो मेल टोर्मे और बिंग क्रॉस्बी की तरह एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हैं। खैर, पुराने ज़माने में चीज़ें कितनी सरल थीं! क्या यह कल्पना करना अच्छा नहीं लगता कि तर्क, भावना और इच्छाशक्ति एक गोल मेज पर बैठकर बहस कर रहे हों?
मुझे नहीं लगता कि उनमें से कोई भी जीतेगा।
कोमात्सु ने हवा में इशारा करते हुए कहा, "मुझे तुम्हारे बारे में जो बात पसंद है, वह है तुम्हारा हास्यबोध।"
यह कोई हास्य नहीं है, टेंगो ने सोचा, लेकिन उसने ये शब्द ज़ोर से नहीं कहे।
*

कोमात्सु से विदा होने के बाद, टेंगो किनोकुनिया की किताबों की दुकान पर गया और कुछ किताबें खरीदीं। फिर वह पास के एक बार में गया और बीयर पीते हुए उनमें से एक किताब पढ़ने लगा। उसके लिए यह सबसे सुखद पल होना चाहिए था। नई किताबें खरीदना और फिर साथ में बीयर का गिलास लेकर पढ़ना।
उस शाम, वह पढ़ने पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सका। उसकी माँ की छवि, जैसा कि उसने मतिभ्रम में देखा था, बार-बार उसकी आँखों के सामने आ रही थी और वह उससे खुद को मुक्त नहीं कर पा रहा था। उसने अपनी सफेद नाइटी की पट्टियाँ हटा दीं, जिससे उसके सुंदर स्तन दिखाई दिए। एक आदमी उसके निपल्स को चूम रहा था। वह उसका पिता नहीं था। वह हट्टा-कट्टा, जवान और सुडौल था। शिशु टेंगो, अपने पालने में बैठा, आँखें बंद करके सो गया, उसकी साँसें शांत थीं। उस महिला के चेहरे पर परमानंद का भाव था। यह कुछ हद तक टेंगो की प्रेमिका के उस भाव जैसा था जब वह चरम सुख के करीब पहुँच रही थी।
जिज्ञासावश, टेंगो ने एक बार उससे नाइटगाउन पहनने को कहा था। "ज़रूर," उसकी प्रेमिका ने हंसते हुए जवाब दिया। "अगर आपको पसंद हो तो मैं अगली बार पहन लूंगी। क्या आपकी कोई और इच्छा है? आप जो चाहें मांग सकते हैं, इसमें शर्म की कोई बात नहीं है।"
— यदि संभव हो तो, यथासंभव सरल सफेद ब्लाउज पहनें।
अगले सप्ताह वह उसके पास सफेद ब्लाउज और नाइटी पहनकर आई। टेंगो ने उसका ब्लाउज खोला, नाइटी की पट्टियाँ नीचे कीं और उसके निपल्स को चूमा। ठीक उसी तरह जैसे उसके मतिभ्रम में, उसी स्थिति में। उसे एक तरह का चक्कर आया, मानो उसका सिर धुंध से घिरा हो। आगे क्या हुआ, यह उसे स्पष्ट नहीं था। उसे अपने गुप्तांग में भारी दबाव महसूस हुआ, जो तेजी से बढ़ता गया। जब उसे समझ आया कि क्या हो रहा है, तो वह कांपते हुए ज़ोर से स्खलित हो गया।
"क्या हुआ? क्या तुमने पहले ही छोड़ दिया?" आश्चर्यचकित महिला ने पूछा। टेंगो को वास्तव में समझ नहीं आया कि क्या हुआ था, लेकिन किसी भी मामले में, उसने उसके नाइटगाउन के किनारे पर वीर्यपात कर दिया था।
"मुझे खेद है," उसने कहा। "मैं ऐसा नहीं चाहता था।"

"माफी मांगने की कोई जरूरत नहीं है," उसने उसे हिम्मत देते हुए कहा। पानी से धोने पर यह तुरंत साफ हो जाता है। यह तो बस वीर्य है! अगर यह शराब या सोया सॉस होता, तो धीरे-धीरे निकलता।"
उसने अपनी नाइटी उतारी और उसे सिंक में धोया। फिर उसने उसे शॉवर के पर्दे की छड़ पर सूखने के लिए टांग दिया।
"तुम कुछ ज़्यादा ही उत्तेजित हो गए हो," उसने धीरे से मुस्कुराते हुए और हथेली से उसके पेट पर थपथपाते हुए कहा। "लगता है तुम्हें सफ़ेद नाइटगाउन पसंद हैं!"
"बात वो नहीं है," टेंगो ने जवाब दिया, लेकिन वह अपने अनुरोध का असली कारण नहीं बता सका।
"अगर आपके मन में इस तरह की और भी कल्पनाएँ हों, तो मुझे बता सकते हैं। मैं सहयोग करने को तैयार हूँ। मुझे भी कल्पनाएँ पसंद हैं। उनके बिना, लगभग, जीवन जीना असंभव है। क्या आपको ऐसा नहीं लगता? क्या आप चाहते हैं कि मैं अगली बार सफेद नाइटगाउन पहनूँ?"
टेंगो ने अपना सिर हिलाया।
"एक बार ही काफी है। धन्यवाद।"
*

टेंगो अक्सर सोचता था कि क्या उसके मतिभ्रम में दिखने वाला युवक उसका असली जैविक पिता था। क्योंकि वह उस व्यक्ति से बिलकुल भी मिलता-जुलता नहीं था जिसे वह अपना पिता कहता था—एक कुशल रेडियो और टीवी कर संग्रहकर्ता। टेंगो लंबा और सुगठित था, उसका माथा चौड़ा और नाक पतली थी, और कान गोल और खुरदुरे थे। उसके पिता छोटे और गठीले थे और देखने में औसत दर्जे के लगते थे। उनका माथा संकरा और नाक चपटी थी, और उनके कान घोड़े की तरह नुकीले थे। वे बिल्कुल भी एक जैसे नहीं दिखते थे। टेंगो का चेहरा शांत और उदार था, जबकि उसके पिता सनकी और कंजूस लगते थे। कई लोगों ने उनसे कहा कि वे पिता-पुत्र जैसे बिल्कुल नहीं दिखते। हालांकि, टेंगो का संदेह उनके शारीरिक रूप से अधिक उनके गुणों और मानसिक विशेषताओं के कारण था। उनके पिता में बौद्धिक जिज्ञासा या ऐसी कोई भी बात नहीं दिखती थी जो इसे सार्थक बनाती हो। यह सच है कि उनकी शिक्षा अपर्याप्त थी। उनका जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था और उन्हें व्यवस्थित संस्कृति विकसित करने का समय नहीं मिला था। टेंगो को इन परिस्थितियों का कुछ हद तक अफसोस था। फिर भी, उनके पिता में जानने की बुनियादी इच्छा का अभाव था - और टेंगो का मानना था कि ऐसी इच्छा स्वाभाविक रूप से लोगों में पैदा होती है, भले ही अलग-अलग मात्रा में हो। जीवन ने उन्हें कई व्यावहारिक बातें सिखाई थीं, लेकिन वे अपने ज्ञान को गहरा करने, एक व्यापक और विस्तृत दुनिया को देखने के लिए कोई प्रयास करने में रुचि नहीं रखते थे।
वह अपनी ही छोटी सी दुनिया में डूबा रहता था, अपने ही बनाए नियमों का पालन करता था, उसे तंग जगह या घुटन भरी हवा की भी परवाह नहीं थी। उसने उसे घर पर कभी किताब उठाते नहीं देखा था। वह अखबार भी नहीं देखता था (उसका कहना था कि तय समय पर एनएचके की खबरें ही काफी हैं)। उसे फिल्मों या संगीत में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी। वह कभी घूमने भी नहीं जाता था। उसे बस एक ही बात की फ़िक्र रहती थी, और वो थी कर वसूलते समय अपना रास्ता। उसने इलाके का नक्शा बना रखा था और उसे

अलग-अलग रंगों से चिह्नित किया था। जब भी उसे समय मिलता, वह उसका अध्ययन करता, जैसे कोई जीवविज्ञानी गुणसूत्रों को छाँटता है।
उसके विपरीत, टेंगो को बचपन से ही विद्यालय में विलक्षण प्रतिभा वाला बच्चा माना जाता था। गणित में उसके उत्कृष्ट परिणाम थे; तीसरी कक्षा में ही वह हाई स्कूल के प्रश्न हल करने में सक्षम था। अन्य विषयों में भी बिना किसी विशेष प्रयास के उसके अच्छे अंक आते थे। जब भी उसे खाली समय मिलता, वह खूब पढ़ता था। वह जिज्ञासु था और एक खुदाई करने वाली मशीन की तरह जमीन खोदते हुए सभी क्षेत्रों से ज्ञान को लगन से आत्मसात करता था। इसलिए, जब भी वह अपने पिता को देखता, तो उसके लिए यह स्वीकार करना मुश्किल होता था कि इस साधारण और अशिक्षित व्यक्ति के कम से कम आधे जीन उसमें मौजूद हैं।
बचपन में ही उसे यह यकीन हो गया था कि उसका असली पिता कहीं और है। संयोगवश, उसका पालन-पोषण उसी व्यक्ति ने किया जिसे वह पिता कहता था, जबकि उससे उसका कोई रक्त संबंध नहीं था। ठीक वैसे ही जैसे डिकेंस के उपन्यासों में भाग्य के मारे अनाथ बच्चे होते हैं।
बचपन में यह संभावना उसके लिए एक बुरे सपने और एक उम्मीद दोनों थी। वह डिकेंस के उपन्यास बड़े चाव से पढ़ता था। उसने ओलिवर ट्विस्ट से शुरुआत की थी और तब से डिकेंस का दीवाना हो गया था। उसने पुस्तकालय में मिलने वाली लगभग हर किताब पढ़ डाली थी। उस परीकथा की दुनिया में खोकर वह अपने बारे में कल्पनाओं में डूब जाता था। ये कल्पनाएँ (या भ्रम) उसके मन में लंबी और जटिल होती गईं। लेकिन मूल भाव वही था, अनगिनत रूपों में। वह खुद से कहता था, "यह मेरी जगह नहीं है। मुझे गलती से इस पिंजरे में बंद कर दिया गया है। एक दिन, मेरे असली माता-पिता मुझे ढूंढ लेंगे, ईश्वर की कृपा से, और मुझे इस भयानक और तंग पिंजरे से निकालकर उस जगह ले जाया जाएगा जहाँ मैं वास्तव में रहता हूँ। वहाँ मुझे आज़ाद, सुंदर और शांतिपूर्ण रविवार मिलेंगे।"
टेंगो के असाधारण अंकों से उसके पिता बहुत प्रसन्न थे। उन्हें अपने अंकों पर गर्व था और वे पड़ोसियों के सामने भी उनकी प्रशंसा करते थे। लेकिन साथ ही, कई बार वे अपने बेटे की प्रतिभा और बुद्धिमत्ता को अनदेखा भी कर देते थे। कभी- कभी जब टेंगो पढ़ने बैठता, तो वे उसे जानबूझकर परेशान करते थे। वे उससे घर के काम करवाते और झाड़ियों में उसे चिढ़ाते ताकि उसका ध्यान उस पर जाए। उनकी डांट-फटकार हमेशा एक ही बात पर केंद्रित होती थी: कर संग्रह में उसकी मेहनत, उसकी पैदल यात्रा और उसकी तनख्वाह। इसके मुकाबले, तुम्हारा जीवन कितना आसान है, कितना सुखमय है। जब मैं तुम्हारी उम्र का था, तो मुझे घर पर कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी और हर मौके पर मेरे पिता और भाई मुझे सजा के तौर पर पीटते थे। वे मुझे पर्याप्त भोजन नहीं देते थे और मेरे साथ जानवरों जैसा व्यवहार करते थे। तुम्हारे अंक भी अच्छे आए हैं, इस बात को अपने सिर पर मत चढ़ा लेना। उसके पिता हमेशा उसे इसी तरह समझाते थे।
कुछ समय बाद, टेंगो को शक होने लगा कि उसके पिता उससे ईर्ष्या करते हैं। उन्हें मेरी स्थिति या मेरे व्यवहार से ईर्ष्या थी। लेकिन क्या कोई पिता सचमुच अपने बेटे के बारे में ऐसा महसूस कर सकता है? ज़ाहिर है, टेंगो, जो अभी बच्चा ही था, इतनी जटिल बातों को समझ नहीं सकता था। लेकिन वह अपने पिता के शब्दों में टपकती तुच्छता को महसूस किए बिना नहीं रह सका और उसे दिल से घृणा होने लगी। कभी-कभी उसे लगता था कि यह सिर्फ़ ईर्ष्या नहीं थी, बल्कि वह उसके

अंदर किसी चीज़ से नफ़रत करता था। वह टेंगो से नहीं, बल्कि उसके अंदर किसी चीज़ से नफ़रत करता था। ऐसी चीज़ जिसे वह माफ़ नहीं कर सकता था।
*

गणित ने टेंगो को शरण दी। संख्याओं की दुनिया में प्रवेश करते ही वह वास्तविकता के अप्रिय पिंजरे से बच निकला। बचपन से ही उसने यह महसूस किया था कि वह मन ही मन एक बटन दबाकर उस दुख-मुक्त दुनिया में जा सकता है। और जब तक वह उस सुसंगत और असीम क्षेत्र में घूमता और खोजबीन करता रहा, वह पूरी तरह से स्वतंत्र था। वह एक विशाल इमारत के घुमावदार गलियारों से गुजरा और एक-एक करके क्रमांकित दरवाजे खोलता गया। हर बार जब उसकी आँखों के सामने एक नया दृश्य खुलता, तो वास्तविक दुनिया के धुंधले निशान और भी पीछे छूटते चले जाते। उसके लिए, संख्याओं द्वारा शासित दुनिया एक पूरी तरह से सुरक्षित और वैध छिपने की जगह थी। वह इस दुनिया के भूगोल को किसी और से बेहतर समझता था और सबसे सटीक रास्ते चुन सकता था। कोई भी उसका पीछा नहीं कर सकता था। जब तक वह उस दुनिया में था, वह वास्तविकता के बोझ और दमनकारी नियमों को भूल गया और अनदेखा कर दिया।
गणित—एक भव्य काल्पनिक रचना—की तुलना में, डिकेंस के उपन्यासों के माध्यम से साहित्य की दुनिया, जैसा कि टेंगो ने उसे खोजा था, एक गहरे, मनमोहक जंगल के समान थी। गणित असीम ऊंचाइयों तक पहुँचता था, परन्तु यह जंगल उसके चरणों में मौन पड़ा था। वृक्षों की मजबूत, गहरी जड़ें धरती में गहराई तक फैली हुई थीं। यहाँ न कोई नक्शा था, न कोई क्रमांकित दरवाजे।
प्राथमिक विद्यालय से लेकर उच्च विद्यालय तक, वह पूरी तरह से गणित की दुनिया में डूबा रहा। गणित की स्पष्टता और उसमें मिलने वाली पूर्ण स्वतंत्रता ने उसे सबसे ज़्यादा आकर्षित किया। जीने के लिए उसे इनकी ज़रूरत थी। लेकिन जब वह किशोरावस्था में पहुँचा, तो उसे लगातार यह महसूस होने लगा कि यह काफ़ी नहीं है। जब तक वह गणित की दुनिया में रहता, तब तक कोई समस्या नहीं थी। सब कुछ उसके मन मुताबिक चलता था। लेकिन जब वह वहाँ से निकलकर वास्तविकता में लौटता (क्योंकि उसे अंततः लौटना ही था), तो वह खुद को उसी दयनीय पिंजरे में फंसा हुआ पाता जिसमें वह पहले था। उसकी स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। इसके विपरीत, ऐसा लगता था मानो जंजीरें और भी भारी होती जा रही हों। तो फिर गणित की दुनिया में भागने का क्या फ़ायदा? क्या यह महज़ एक अस्थायी राहत थी? क्या इससे वास्तविक दुनिया में उसकी स्थिति और भी बदतर नहीं हो रही थी?
ऐसे सवालों से परेशान होकर, टेंगो धीरे-धीरे संख्याओं की दुनिया से दूर होने लगा और साथ ही साहित्य के घने जंगल की ओर अधिक आकर्षित होने लगा। बेशक, पढ़ना भी वास्तविकता से बचने का एक तरीका था। जब वह किताब के पन्ने बंद करता, तो उसे रोज़मर्रा की दुनिया में लौटना पड़ता था। हालांकि, टेंगो ने महसूस किया कि उपन्यासों की दुनिया से लौटने पर उसे उतनी निराशा नहीं होती थी जितनी गणित की दुनिया से लौटने पर होती थी। क्यों? उसने इस बारे में बहुत सोचा और एक निष्कर्ष पर पहुंचा। साहित्य के जंगल में, भले ही चीजों के बीच संबंध स्पष्ट हों, आपको कोई स्पष्ट व्याख्या नहीं मिलती। यही गणित से अंतर था। संक्षेप में, कहानी का उद्देश्य किसी समस्या को एक अलग रूप में प्रस्तुत करना है। और समाधान आपको साहित्यिक रूप से उसकी दिशा और उसके आगे बढ़ने के तरीके से सुझाया जाता है। इस सुझाव को लेकर टेंगो वास्तविक दुनिया में लौट आया। यह

कागज के एक टुकड़े पर लिखे एक समझ से परे मंत्र की तरह था। कभी-कभी वह अपनी सुसंगति खो देता था और बेकार हो जाता था, लेकिन फिर भी एक संभावना की झलक देता था। शायद एक दिन वह उस जादू को तोड़ देगा। इस संभावना ने उसके दिल को गहराई से सुकून दिया।
जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए, टेंगो इन कथात्मक सुझावों से और भी अधिक मोहित होते गए। वयस्क होने पर भी, गणित उनके लिए एक बड़ा आनंद बना रहा। जब वे प्रारंभिक विद्यालय में अपने छात्रों को गणित पढ़ाते थे, तो वही आनंद स्वाभाविक रूप से उनमें जागृत हो उठता था जो उन्हें बचपन में महसूस होता था। वे तर्क की इस स्वतंत्रता के आनंद को किसी के साथ साझा करना चाहते थे। यह एक अद्भुत अनुभव था। हालांकि, अब वे संख्याओं की दुनिया में पूरी तरह से खो नहीं सकते थे। इसका कारण यह था कि वे समझ गए थे कि चाहे वे उस दुनिया में कितना भी खोजबीन कर लें, उन्हें वहाँ अपने सवालों के जवाब नहीं मिलेंगे।
*

पांचवीं कक्षा में, काफी सोच-विचार करने और अपना मन बदलने के बाद, टेंगो ने अपने पिता से कहा: "मैं पहले की तरह रविवार को स्कूल के बाद आपके साथ नहीं जाना चाहता। मैं घर पर रहकर अपना होमवर्क करना चाहता हूँ, पढ़ना चाहता हूँ या खेलना चाहता हूँ। जैसे आपका काम है, वैसे ही मेरे भी घर के काम हैं। मैं अपने आस-पास के सभी लोगों की तरह एक सामान्य जीवन जीना चाहता हूँ।"
उसने बस इतना ही कहा। संक्षेप में, लेकिन स्पष्ट रूप से।
ज़ाहिर है, उसके पिता क्रोधित हो गए। मुझे परवाह नहीं कि दूसरे परिवार क्या करते हैं, हम चीज़ें इसी तरह करते हैं, किसी और तरीके से नहीं! वे चिल्लाए। सामान्य जीवन क्या होता है? अपनी नाक तो देखो! सामान्य जीवन के बारे में तुम्हें क्या पता? टेंगो ने कोई आपत्ति नहीं जताई। वह चुपचाप सुनता रहा। उसे शुरू से ही पता था कि उसकी उनसे नहीं बनेगी। ठीक है, अगर तुम अपने पिता की बात नहीं सुनना चाहते, तो अब तुम मेरे साथ खाना नहीं खाओगे और इस घर में तुम्हारा कोई काम नहीं है। चले जाओ!
टेंगो ने ठीक वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था। उसने कुछ सामान पैक किया और घर से निकल गया। वह दृढ़ निश्चयी था और बिल्कुल भी डरा हुआ नहीं था, चाहे उसके पिता कितने भी क्रोधित हों, कितना भी चिल्लाएँ, और यहाँ तक कि अगर वे उस पर हाथ भी उठाएँ (हालांकि उसने ऐसा नहीं किया था)। वास्तव में, उसे पिंजरे से बाहर निकलने की अनुमति मिलने पर राहत महसूस हुई।
लेकिन, दस साल का बच्चा अकेले सब कुछ नहीं संभाल सकता। कोई और चारा न होने पर, क्लास के बाद उसने ईमानदारी से टीचर को सारी परेशानी बता दी। उसने बताया कि उसके पास रात को सोने की कोई जगह नहीं है। उसने समझाया कि रेडियो और टीवी की फीस इकट्ठा करने के बाद हर रविवार को अपने पिता के साथ पैदल जाना उसके लिए कितना बोझिल होता है।
शिक्षिका लगभग तीस वर्ष की अविवाहित महिला थीं। वे सुंदर नहीं थीं और मोटे चश्मे पहनती थीं, लेकिन उनका रंग गोरा था और हृदय कोमल था। वे कद में छोटी और आमतौर पर शांत और सौम्य थीं, लेकिन दिखने में ऐसी न होने के बावजूद, उन्हें जल्दी गुस्सा आ जाता था और जब उन्हें गुस्सा आता था तो कोई भी उन्हें काबू नहीं कर पाता था और वे बिल्कुल अलग इंसान बन जाती थीं। हर कोई उनके इस बदलाव

को देखकर हैरान रह जाता था। लेकिन तेंगो को शिक्षिका बहुत पसंद थीं। यहां तक कि जब वे गुस्सा होती थीं तब भी वह उनसे नहीं डरता था।
उस महिला ने टेंगो की कहानी सुनी, उसे समझा और उसके प्रति सहानुभूति दिखाई। उस रात उसने उसे अपने घर में सोने दिया। उसने बैठक के सोफे पर कंबल बिछाया और उसे वहाँ लिटा दिया। सुबह उसने उसके लिए नाश्ता भी बनाया। फिर अगली शाम, वह टेंगो को लेकर उसके पिता के पास गई, जिनसे उसकी काफी देर तक बातचीत हुई। टेंगो को कहीं और काम ढूंढने के लिए कहा गया था, इसलिए उसे नहीं पता था कि उन दोनों के बीच क्या बातचीत हुई। लेकिन अंत में, उसके पिता को अपने हथियार डालने पड़े। चाहे वह कितना भी गुस्से में क्यों न हो, वह दस साल के बच्चे को सड़कों पर भटकने नहीं दे सकता था। आखिर माता-पिता कानूनी रूप से अपने बच्चों की देखभाल करने के लिए बाध्य होते हैं।
बातचीत का नतीजा यह निकला कि टेंगो को रविवार अपनी मर्ज़ी से बिताने की छूट मिल गई। सुबह उसे घर के कुछ काम करने पड़ते थे, लेकिन उसके बाद वह जो चाहे कर सकता था। यह उसके पिता पर उसकी पहली जीत थी, एक ठोस अधिकार जो उसने हासिल किया था। उसके पिता बहुत गुस्से में थे और कुछ समय तक उससे बात नहीं की, लेकिन टेंगो को इसकी परवाह नहीं थी। उसने इससे कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण चीज़ हासिल की थी। आज़ादी और आत्मनिर्भरता की ओर पहला कदम।
*

प्राथमिक विद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद, उसने अपनी शिक्षिका को लंबे समय तक नहीं देखा। शायद कभी-कभार उसे कक्षा के पुनर्मिलन समारोहों में बुलाया जाता था, जहाँ उसकी शिक्षिका से मुलाकात हो जाती थी, लेकिन वह उनमें नहीं जाता था। प्राथमिक विद्यालय में ऐसा कुछ भी नहीं था जिसे वह सुखद रूप से याद करता हो। फिर भी, वह कभी-कभी उस शिक्षिका के बारे में सोचता था। आखिर, वही तो थी जिसने उसे अपने घर पर रात बिताने की अनुमति दी थी और उसके जिद्दी पिता को शांत किया था। वह ऐसी बात को भूल नहीं सकता था।
ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ते समय उसकी मुलाकात उससे दोबारा हुई। टेंगो स्कूल क्लब में जूडो खेलता था, लेकिन पिंडली में चोट लगने के कारण उसे दो महीने तक अभ्यास बंद करना पड़ा। इसके बजाय, उसे किसी और की जगह परकशन वाद्य यंत्र बजाने के लिए भर्ती कर लिया गया। एक महत्वपूर्ण प्रतियोगिता आने वाली थी, और क्लब के दो परकशन वादकों में से एक बिना सूचना दिए दूसरे स्कूल में स्थानांतरित हो गया था, और दूसरा गंभीर फ्लू के कारण बिस्तर पर पड़ा था। ब्रास बैंड इतना बेताब था कि वे किसी भी ऐसे व्यक्ति को लेने को तैयार थे जो अपने हाथों में दो छड़ियां पकड़ सके, और उन्होंने उसे चुन लिया। संगीत शिक्षक की नज़र संयोगवश टेंगो पर पड़ी, जो चोटिल होने के कारण बहुत ऊब गया था। उन्होंने उसे भरपेट भोजन और सत्र के अंत के शोध पत्रों में कुछ छूट देने का वादा करके मना लिया।
टेंगो ने इससे पहले कभी कोई ताल वाद्य यंत्र नहीं बजाया था, न ही इसमें उनकी कोई रुचि थी, लेकिन जब उन्होंने इसे बजाना शुरू किया, तो उन्होंने पाया कि यह उनके स्वभाव के लिए आश्चर्यजनक रूप से अनुकूल था। उन्हें समय को छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँटने, उसे फिर से जोड़ने और उसे प्रभावी ध्वनियों की एक श्रृंखला में बदलने में स्वाभाविक आनंद मिलता था। वे सभी ध्वनियों को अपने मन में रेखाचित्रों के रूप में देखते थे। पानी सोखने वाले स्पंज की तरह,

— जब मेरा पैर ठीक हो जाएगा, तो मैं जूडो में वापस जाऊँगा। आख़िरकार, इसी से मुझे पक्का पता है कि मुझे भूखा नहीं रहना पड़ेगा। हमारे स्कूल में जूडो क्लब में काफ़ी पैसा लगाया जाता है। मैं छात्रावास में रह सकता हूँ और वे मुझे कैफ़ेटेरिया में दिन में तीन बार खाने के टिकट देते हैं। मार्चिंग बैंड में ऐसा नहीं है।
"क्या आप अपने पिता की मदद के बिना काम चलाने की कोशिश कर रहे हैं?"
"तुम उसे सिर्फ उसके असली रूप में ही जानते हो," टेंगो ने कहा।
शिक्षक मुस्कुराए।
"कितनी अफ़सोस की बात है। तुम तो बहुत अच्छे और होशियार लड़के हो!"
टेंगो ने एक बार फिर उसे नीचे देखा। फिर उसे याद आया कि कैसे उसने उसे अपने घर में सोने दिया था। उसे अपना वो अपार्टमेंट याद आया, जो सादा और साफ-सुथरा था। पर्दे, कुछ बर्तन, इस्त्री करने का तख्ता और वो किताब जिसे उसने पढ़ना शुरू किया था। दीवार पर टंगी गुलाबी ड्रेस। उस सोफे की महक जिस पर वो सोया था। अब, जब वो उसके सामने खड़ी थी, टेंगो ने देखा कि वो एक छोटी बच्ची की तरह बेचैन हो रही थी। उसे फिर से एहसास हुआ कि वो भी अब वो असहाय दस साल का बच्चा नहीं, बल्कि एक हट्टा-कट्टा सत्रह साल का युवक था। उसकी छाती चौड़ी थी, दाढ़ी बढ़ रही थी और कामुकता उस पर बेकाबू थी। इसके अलावा, जब वो किसी बड़ी उम्र की महिला के साथ होता था, तो वो आश्चर्यजनक रूप से शांत रहता था।
शिक्षक ने कहा, "आपको देखकर मुझे खुशी हुई।"
"मुझे भी आपसे मिलकर खुशी हुई," टेंगो ने जवाब दिया।
वह वाकई खुश था। लेकिन उसे उसका नाम याद क्यों नहीं आ रहा था?

अध्याय 15 ज़मीन से बंधे गुब्बारे की तरह

ओमामे अपने खान-पान पर पूरा ध्यान देती थीं। उनके दैनिक भोजन में सब्जियां मुख्य होती थीं, जिनमें वे मछली, विशेषकर सफेद मछली, शामिल करती थीं। कभी-कभी वे चिकन भी खाती थीं। वे केवल ताजी सब्जियां ही चुनती थीं और मसालों का कम से कम इस्तेमाल करती थीं। उन्होंने अपने आहार से वसायुक्त खाद्य पदार्थों को पूरी तरह से हटा दिया था और कार्बोहाइड्रेट का सेवन सीमित कर दिया था। वे सलाद में ड्रेसिंग नहीं डालती थीं, बल्कि केवल जैतून का तेल, नमक और नींबू डालती थीं। वे केवल ढेर सारी सब्जियां ही नहीं खाती थीं, बल्कि उनके पोषण मूल्यों का विस्तार से अध्ययन करती थीं और विभिन्न किस्मों को संतुलित तरीके से मिलाकर खाने की कोशिश करती थीं। उन्होंने अपना मेनू खुद बनाया था और क्लब के सदस्यों को भी सलाह देती थीं जब वे उनसे पूछते थे। वे हमेशा कहती थीं, "कैलोरी की गिनती के बारे में चिंता मत करो! अगर आप सही चीजों को चुनने और संयम से खाने की आदत डाल लें, तो गिनती के बारे में चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है।"
लेकिन वह इस सख्त खान-पान को बेताब होकर नहीं अपनाती थी, बल्कि जब भी उसे खाने की इच्छा होती, वह पास के किसी रेस्टोरेंट में जाकर मोटा स्टेक या लैम्ब चॉप ऑर्डर कर देती थी। उसका मानना था कि जब भी उसे किसी चीज़ की तीव्र इच्छा होती है, तो उसका शरीर उसे संकेत देता है कि उसे उसकी ज़रूरत है। और वह उस प्राकृतिक संकेत का पालन करती थी।
उसे शराब और साके पीना पसंद था, लेकिन वह अपने जिगर की रक्षा करने और शर्करा का सेवन नियंत्रित रखने के लिए अत्यधिक सेवन से परहेज करती थी, इसीलिए उसने सप्ताह में तीन दिन शराब न पीने के लिए निर्धारित किए थे। उसका शरीर आओमामे के लिए एक पवित्र मंदिर था, और उसे इसे हर समय सुंदर रखना था। बिना किसी गंदगी के, बिना किसी दाग के। वास्तव में वहाँ किसकी पूजा करनी थी, यह एक अलग बात थी। वह इस बारे में बाद में सोच सकती थी।
उसके शरीर पर बिल्कुल भी चर्बी नहीं थी। सिर्फ़ मांसपेशियां थीं। हर दिन वह आईने के सामने कपड़े उतारकर बारीकी से खुद को देखती थी। ऐसा इसलिए नहीं था कि वह खुद से मोहित थी। बल्कि इसके विपरीत। उसके स्तन बहुत छोटे और असममित थे। उसके गुप्तांग के बाल ऐसे लगते थे जैसे किसी पैदल सेना के मार्च करते हुए घास के गुच्छे को रौंद दिया गया हो। हर बार जब वह खुद को देखती तो उसका चेहरा सिकुड़ जाता था। फिर भी, उसके शरीर पर बिल्कुल भी चर्बी नहीं थी। वह अपनी उंगलियों के बीच कुछ भी अतिरिक्त पकड़ नहीं पाती थी।
*

ओमामे एक सादा जीवन जीती थी। खाने पर वह सबसे ज्यादा खर्च सोच-समझकर ही करती थी। खाने के मामले में वह कीमत की परवाह नहीं करती थी और केवल अच्छी शराब ही पीती थी। जब वह बाहर खाना खाती थी, तो वह ऐसे रेस्तरां चुनती थी जहाँ खाना बड़े ध्यान से और अच्छे से पकाया जाता हो। इसके अलावा, उसे लगभग किसी और चीज में दिलचस्पी नहीं थी।

उसे कपड़ों, सौंदर्य प्रसाधनों या गहनों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह कैजुअल कपड़ों में जींस और स्वेटर पहनकर स्पोर्ट्स क्लब जा सकती थी, और वहाँ पहुँचकर पूरा दिन ट्रैकसूट में ही बिताती थी। ज़ाहिर है, वह एक्सेसरीज़ भी नहीं पहनती थी। उसे खाना बनाने या बाहर जाने के लिए कोई खास अवसर नहीं मिलते थे। उसका कोई बॉयफ्रेंड नहीं था, इसलिए वह डेट पर भी नहीं जाती थी। तमाकी की शादी के बाद, उसने अपनी इकलौती दोस्त को भी खो दिया जिसके साथ वह डिनर करती थी। जब वह सेक्स के लिए पार्टनर ढूंढती थी, तो मेकअप करती थी और खास तरह से तैयार होती थी, लेकिन ऐसा भी महीने में एक बार से ज़्यादा नहीं होता था। उसे ज़्यादा कपड़ों की ज़रूरत नहीं थी।
जब उसे किसी चीज़ की ज़रूरत होती, तो वह आओयामा के बुटीक्स में जाती, अपने लिए एक नई, चमकीली ड्रेस खरीदती, उसके साथ एक-दो एक्सेसरीज़ और ऊँची एड़ी के जूते लेती, और बस उसकी समस्या हल हो जाती। वह आमतौर पर फ्लैट जूते पहनती और अपने बालों को पीछे बाँध लेती। वह साबुन से चेहरा धोती, क्रीम लगाती, और उसका चेहरा हमेशा खूबसूरत दिखता था। जब शरीर स्वच्छ और स्वस्थ हो, तो और किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं होती।
ओमामे बचपन से ही सादा और सरल जीवन जीने की आदी थी। संयम और संतुलन, ये वो बुनियादी बातें थीं जो उसे बचपन से ही सिखाई गई थीं। उसके घर में किसी भी चीज़ की कोई कमी नहीं थी। उसके परिवार में सबसे ज़्यादा बोले जाने वाले शब्द थे, "कुछ भी बर्बाद मत करो।" उनके पास टीवी नहीं था, वे अखबार नहीं खरीदते थे। उसके परिवार में तो जानकारी को भी बेकार समझा जाता था। वे खाने में मांस या मछली बहुत कम परोसते थे, और ओमामे को बढ़ने के लिए ज़रूरी पोषक तत्व स्कूल से मिलने वाले भोजन से ही मिल जाते थे। बाकी सब लोग अपनी थाली में बचा हुआ खाना यह कहकर छोड़ देते थे कि अच्छा नहीं है, सिर्फ़ उसे ही और खाना माँगने का मन करता था।
उसके सारे कपड़े उसे दूसरों से मिले थे, जो अब उसे छोटे हो गए थे। विश्वासियों के बीच बैठकें होती थीं जहाँ वे अपने फालतू कपड़े आपस में बदल लेते थे। इसलिए, स्कूल द्वारा दिए गए खेल के सामान के अलावा, उन्होंने उसे कभी नए कपड़े नहीं दिलाए थे, और उसे याद नहीं था कि उसने कभी अपने नाप के जूते पहने हों। रंगों और शैलियों का मेल बेहद अजीब था। अगर उसका परिवार गरीब होता, तो उनके लिए इस तरह का जीवन जीना समझ में आता, लेकिन वे बिल्कुल भी गरीब नहीं थे। उसके पिता इंजीनियर थे, अच्छी तनख्वाह कमाते थे और उनके पास बचत भी थी। उन्होंने इस बेहद सीमित जीवनशैली को जीवन के एक सिद्धांत के रूप में अपनाया था।
बहरहाल, उसका जीवन अन्य बच्चों से बहुत अलग था, यही कारण था कि वह लंबे समय से दोस्त नहीं बना पाई थी। उसके पास दोस्तों के साथ बाहर जाने के लिए पहनने को कुछ नहीं था, और न ही वह कहीं जाने का खर्च उठा सकती थी। उसे कभी जेब खर्च नहीं मिलता था, और अगर उसे किसी की जन्मदिन पार्टी में आमंत्रित भी किया जाता (चाहे अच्छा हो या बुरा, ऐसा कभी हुआ ही नहीं था), तो वह छोटा सा उपहार भी नहीं खरीद पाती।
इन्हीं कारणों से वह अपने माता-पिता से नफ़रत करती थी और उस दुनिया से घृणा करती थी जिसमें वे रहते थे, यहाँ तक कि उसकी विचारधारा से भी। वह दूसरों की तरह एक सामान्य जीवन जीना चाहती थी। उसे विलासिता नहीं चाहिए थी। वह एक साधारण, सादगीपूर्ण जीवन से संतुष्ट रहती। अगर उसे वह मिल जाता, तो उसे और कुछ

नहीं चाहिए होता। वह बड़ी होने, अपने माता-पिता का साथ छोड़कर अपनी मर्ज़ी से जीने के लिए बेताब थी। जो चाहे जितना चाहे उतना खाना, अपनी मर्ज़ी से पैसे खर्च करना, अपने मनपसंद कपड़े और जूते पहनना, और जहाँ चाहे वहाँ जाना। उसके कई दोस्त हों जिनके साथ वह खूबसूरती से लपेटे हुए उपहारों का आदान-प्रदान कर सके।
लेकिन जैसे-जैसे आओमामे बड़ी होती गई, उसे एहसास हुआ कि संयमित और मादक जीवन जीने में ही उसे सबसे अच्छा लगता है। उसकी सबसे बड़ी इच्छा सज-धज कर किसी के साथ बाहर जाना नहीं थी, बल्कि घर पर अकेले ट्रैकसूट पहनकर समय बिताना था।
*

तामाकी की मृत्यु के बाद, आओमामे ने अपनी नौकरी छोड़ दी, उस छात्रावास को भी छोड़ दिया जहाँ वह तब तक रहती थी, और एक दो कमरों के छोटे से फ्लैट में रहने लगी जिसमें एक सेमी-डबल बेड था। वहाँ उन्होंने एक-दूसरे को खूब छुआ और सहलाया। वे समलैंगिक नहीं थीं। वे बस जियुगाओका के प्रति उत्सुकता से प्रेरित होकर कुछ साहसिक करना चाहती थीं। फ्लैट बहुत बड़ा नहीं था, लेकिन हवादार दिखता था। खाना पकाने के लिए उसमें ज़रूरत की सभी चीज़ें थीं, लेकिन फर्नीचर नाममात्र का था। आओमामे के पास बहुत कम सामान था। उसे पढ़ना पसंद था, लेकिन जैसे ही वह कोई किताब खत्म करती, उसे किसी पुरानी किताबों की दुकान पर बेच देती। उसे संगीत भी पसंद था, लेकिन वह रिकॉर्ड्स इकट्ठा नहीं करती थी। उसे घर में किसी भी तरह की चीज़ें जमा होते देखना बर्दाश्त नहीं होता था, चाहे वे कुछ भी हों। हर बार कुछ खरीदने पर उसे अपराधबोध होता था। उसे लगता था कि उसे वास्तव में इसकी ज़रूरत नहीं है। जब उसने अलमारी में करीने से रखे कपड़े और जूते देखे, तो उसका दिल बैठ गया और गले में एक गांठ सी बन गई। विडंबना यह है कि जिस दृश्य ने उसे स्वतंत्रता और समृद्धि की प्रेरणा दी, वही दृश्य उसे उसके गरीब और बंधनों से भरे बचपन की याद दिला रहा था।
वह अक्सर सोचता था कि आज़ाद होने का क्या मतलब होता है। क्या आप एक पिंजरे से निकलकर दूसरे, उससे भी बड़े पिंजरे में पहुँच जाते हैं?
अज़ाबू की महिला ने उन आदमियों का सत्कार करने के बाद उसे इनाम दिया था। दोनों बार, आओमामे को मेलबॉक्स में कागज़ में कसकर लिपटा हुआ पैसों का एक बंडल मिला था, जिस पर न तो प्राप्तकर्ता का नाम लिखा था और न ही भेजने वाले का। उसने तामारू से मेलबॉक्स की चाबी ली, उसे खाली किया और फिर चाबी वापस कर दी। उसने बिना देखे ही उन बंडलों को उठाया और बिना खोले ही बैंक की तिजोरी में फेंक दिया। अब वे वहाँ दो ईंटों की तरह पड़े थे।
ओमामे ने अपनी पूरी तनख्वाह भी खर्च नहीं की थी और उसके पास कुछ पैसे बचे हुए थे, इसलिए उसे उस इनाम की बिल्कुल भी जरूरत नहीं थी। यही बात उसने पहली बार पैसे देते समय मालकिन से कही थी।
"यह महज़ एक औपचारिकता है," उस महिला ने धीमी, शांत आवाज़ में समझाया। "इसे एक साधारण रिवाज़ समझिए। लेकिन आपको इन्हें लेना ही होगा। अगर आपको इनकी ज़रूरत नहीं है, तो इनका इस्तेमाल न करें। अगर यह आपको ठीक नहीं लगता, तो आप इन्हें किसी संस्था को गुमनाम रूप से दान कर सकते हैं। आप इनके साथ जो चाहें कर सकते हैं। लेकिन अगर आप मुझे सलाह देने की अनुमति दें, तो फिलहाल इन्हें बिना छुए किसी सुरक्षित जगह पर रख देना बेहतर होगा।"
लेकिन मैं इस तरह के काम के लिए पैसे लेना पसंद नहीं करूंगा।

"मैं समझती हूँ। लेकिन इन बदमाशों से छुटकारा पाने के कारण अब तलाक नहीं होते, बच्चों की कस्टडी को लेकर कोई लड़ाई नहीं होती। और औरतें अब इस डर में नहीं जीतीं कि उनके पति आकर उन्हें पीटेंगे। जीवन बीमा और उत्तरजीवी पेंशन ले लीजिए। जो पैसा आपको मिले, उसे उनकी ओर से कृतज्ञता का प्रतीक समझिए। आपने सही काम किया, इसमें कोई शक नहीं। लेकिन यह व्यर्थ का काम नहीं होना चाहिए। क्या आप जानते हैं क्यों?"
"नहीं," आओमामे ने ईमानदारी से स्वीकार किया।
क्योंकि तुम न तो फरिश्ता हो और न ही भगवान। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे काम शुद्ध भावनाओं से प्रेरित हैं, और इसीलिए मैं समझता हूँ जब तुम कहते हो कि तुम पैसे नहीं लेना चाहते। लेकिन सच्ची और शुद्ध भावनाएँ अपने आप में खतरनाक होती हैं। किसी हाड़-मांस के इंसान के लिए ऐसी भावनाओं को अपने मन में रखना सचमुच असाधारण है। इसलिए तुम्हें उन्हें ज़मीन पर मजबूती से टिकाए रखना होगा, जैसे कोई गुब्बारा ज़मीन से बंधा होता है। उनका यही उद्देश्य है। सिर्फ इसलिए कि यह सही काम है और भावनाएँ शुद्ध हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि तुम कुछ भी कर सकते हो। क्या तुम समझते हो?
कुछ क्षण सोचने के बाद, आओमामे ने सिर हिलाया।
मुझे ठीक से समझ नहीं आया, लेकिन फिलहाल मैं आपकी बात मानूंगा।
महिला मुस्कुराई और चाय की एक घूंट ली।
"इन्हें अपने खाते में जमा न करें। अगर आयकर विभाग को इनके बारे में पता चलता है, तो वे सवाल पूछ सकते हैं। इन्हें ऐसे ही ले जाएं और बैंक के सेफ डिपॉजिट बॉक्स में रख दें। ये कभी काम आ सकते हैं।"
"मैं यही करूंगी," आओमामे ने जवाब दिया।
*

क्लब से लौटते समय, आओमामे अपना खाना बना ही रही थी कि फोन की घंटी बज उठी। “आओमामे?” एक थोड़ी कर्कश महिला की आवाज सुनाई दी। यह अयुमी थी।
रिसीवर को कान से लगाए हुए, आओमामे ने चूल्हे की आंच धीमी कर दी।
"पुलिस की नौकरी कैसी चल रही है?"
"मैं एक के बाद एक पार्किंग चालान काट रही हूँ और पूरी दुनिया की नफरत मोल ले रही हूँ। मैं बिना किसी पुरुष के साथ कड़ी मेहनत कर रही हूँ।"
- बहुत अच्छा।
सुनो, तुम अभी क्या कर रहे हो?
मैं रात का खाना बना रही हूँ।
क्या आप परसों शाम को खाली हैं?
"हां, लेकिन आप जानते हैं कि मैं पिछली बार वाली चाल नहीं दोहराने वाला। मैं फिलहाल कुछ समय के लिए आराम कर रहा हूं।"
हां, मैं कुछ समय के लिए इस बारे में चुप रहूंगा। लेकिन मैं सोच रहा था कि आपसे मिले हुए काफी समय हो गया है और आपसे दोबारा मिलकर बात करने में कोई हर्ज नहीं है।
ओमामे ने अपने प्रस्ताव के बारे में एक पल के लिए सोचा, लेकिन तुरंत कोई फैसला नहीं कर पाई।
"देखिए, मैं अभी थोड़ी व्यस्त हूँ," उसने कहा। "मेरे दिमाग में कुछ चल रहा है।
क्या आप मुझे लगभग आधे घंटे में वापस कॉल कर सकते हैं?"

ठीक है, मैं आपको आधे घंटे में कॉल करूंगा।
ओमामे ने फोन रखा और सब्ज़ियों को भाप में पकाना पूरा किया। फिर उसने अंकुरित बीन्स के साथ मिसो सूप बनाया और उसे ब्राउन राइस के साथ खाया। उसने आधी कैन बीयर पी और बाकी सिंक में बहा दी। उसने बर्तन धोए और जैसे ही वह सांस लेने के लिए सोफे पर बैठी, अयुमी ने फिर से फोन किया।
"अगर हम साथ में डिनर कर सकें तो मुझे अच्छा लगेगा," उसने कहा। "मैं हमेशा अकेले खाना खाकर ऊब गई हूँ।"
क्या आप हमेशा अकेले ही खाना खाते हैं?
मैं छात्रावास में रहती हूँ और हम सब कैंटीन में मेज के चारों ओर इकट्ठा होते हैं। लेकिन कभी-कभी मेरा मन करता है कि शांति से कुछ अच्छा खाऊँ। खासकर किसी अच्छी जगह पर। लेकिन मैं अकेले नहीं जाना चाहती, आप समझ रहे हैं ना?
- बेशक मैं।
"पर मेरे साथ जाने वाला कोई नहीं है। न कोई पुरुष, न कोई महिला। सब के सब पब जाना पसंद करते हैं। लेकिन मैं सोच रही थी कि अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो आप मेरे साथ आ सकते हैं।"
मुझे कोई आपत्ति नहीं है। ठीक है, चलो कहीं अच्छे रेस्टोरेंट में खाना खाते हैं। मैंने भी काफी समय से ऐसा नहीं किया है।
"सच में? मुझे बहुत खुशी हुई!"
तो क्या यह परसों की तारीख है?
"हाँ, क्योंकि मैं अगले दिन खाली हूँ। क्या आपको कोई अच्छे रेस्टोरेंट पता हैं?"
आओमामे ने नोगिज़का में एक फ्रेंच रेस्टोरेंट का सुझाव दिया। उसका नाम सुनते ही अयुमी चौंक गई।
"लेकिन क्या यह एक बेहद मशहूर रेस्टोरेंट नहीं है? यह बहुत महंगा है, और मैंने एक पत्रिका में पढ़ा था कि यहाँ रिजर्वेशन कराने में दो महीने लग जाते हैं। मेरी तनख्वाह में तो मैं इसे अफोर्ड नहीं कर सकता।"
चिंता मत करो। मालिक मेरे क्लब में आता है और मैं उसे निजी तौर पर ट्रेनिंग देता हूँ। मैं उसे मेनू में मौजूद खाने के पोषण मूल्यों के बारे में भी सलाह देता हूँ। अगर मैं उससे पूछूँ, तो वह हमें खाना खिला सकता है और अच्छी छूट भी दे सकता है। बस हो सकता है कि खाना उतना स्वादिष्ट न हो।
वे हमें कोठरी में बंद कर सकते हैं, क्योंकि इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। “तो अच्छे से तैयार हो जाओ!” आओमामे ने कहा।
फोन रखने के बाद, आओमामे को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि उसे उस युवा महिला पुलिसकर्मी के प्रति स्वाभाविक सहानुभूति महसूस हो रही थी। तामाकी की मृत्यु के बाद पहली बार उसे किसी के लिए ऐसा महसूस हुआ था। बेशक, यह वैसा नहीं था जैसा उसे तामाकी के लिए महसूस होता था, लेकिन बहुत समय हो गया था जब उसने किसी के साथ खाना खाया था, या किसी के साथ होने का एहसास किया था। और तो और, वह व्यक्ति एक महिला पुलिसकर्मी थी। आओमामे ने आह भरी। कितनी अजीब दुनिया है!
*

ओमामे ने नीली-धूसर आस्तीन वाली ड्रेस, एक छोटा सा सफेद कार्डिगन और फेरागामो हील्स पहनी हुई थी। उसने कान की बालियां और सोने का कंगन भी पहना था। वह अपना रोज़ का बैग (और अपना छेनी भी) घर पर ही भूल गई थी और उसकी जगह ला बैगेरी का

पर्स ले आई थी। अयुमी ने लो-कट ब्राउन टी-शर्ट, एक सादा काला कॉमे डेस गार्सन जैकेट, एक पतला फूलों वाला स्कर्ट, पिछली बार वाला ही गुच्ची बैग, मोतियों की बालियां और ब्राउन फ्लैट्स पहने हुए थे। वह पहले से कहीं ज़्यादा सुंदर और स्टाइलिश लग रही थी। और बिलकुल भी पुलिसवाली जैसी नहीं।
दोनों की मुलाकात बार में हुई, उन्होंने मिमोसा कॉकटेल पी और फिर उन्हें एक मेज पर ले जाया गया। खाना बिल्कुल भी बुरा नहीं था। इसी बीच, बार का मालिक आया, आओमामे से कुछ देर बात की और उन्हें बताया कि शराब मुफ्त में है।
मुझे खेद है, लेकिन यह एक खुली हुई बोतल है, जिसका इस्तेमाल केवल एक बार वाइन चखने के लिए किया गया था। मैंने कल इसे दूसरी बोतल से बदल दिया क्योंकि मुझे वाइन के स्वाद के बारे में शिकायत मिली थी, हालांकि वास्तव में इसमें कोई खराबी नहीं है। शिकायतकर्ता एक प्रसिद्ध राजनेता थे, जो अपने सर्कल में वाइन के पारखी माने जाते हैं, लेकिन वास्तव में उन्हें वाइन के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। वे सिर्फ दूसरों के सामने अच्छा दिखने के लिए शिकायत करते हैं और कहते हैं कि हम उनके लिए थोड़ी तीखी बरगंडी वाइन लाए हैं। उनकी आदत के अनुसार, हमने उनसे कहा: "आप सही कह रहे हैं। हो सकता है कि इसका स्वाद थोड़ा तीखा लगा हो। शायद आयातक ने इसे ठीक से स्टोर नहीं किया होगा। मैं अभी आपके लिए दूसरी बोतल लाता हूँ। लेकिन मुझे आपको बताना होगा कि आप वाइन के असली पारखी हैं। आप अच्छी तरह जानते हैं।" और उन्हें नाराज़ न करने के लिए दूसरी बोतल उनके लिए लाई गई। खैर, मैं यह बात ज़ोर से नहीं कह सकता, लेकिन उनका बिल उसी हिसाब से बढ़ गया। उन्होंने प्रोटोकॉल खाते से भुगतान किया। लेकिन आपको यह पता होना चाहिए कि चाहे कुछ भी हो जाए, हमारे रेस्टोरेंट में एक बार लौटाया गया सामान हम किसी अन्य ग्राहक को नहीं देते। स्वाभाविक रूप से।
लेकिन इससे हमें कोई फर्क नहीं पड़ता।
मालिक ने उन्हें आँख मारी।
"आपको कोई आपत्ति तो नहीं होगी?"
“बिल्कुल नहीं!” आओमामे ने जवाब दिया।
"बिल्कुल नहीं," आयुमी ने कहा।
"क्या यह खूबसूरत युवती छोटी बहन है?" मालिक ने आओमामे से पूछा।
“क्या ऐसा लगता है?” आओमामे ने पूछा।
— तुम दिखने में एक जैसे नहीं हो, लेकिन तुम दोनों का अंदाज़ एक जैसा है।
"हम दोस्त हैं। वह एक पुलिसवाली है।"
- गंभीरता से?
मालिक ने अयुमी को अविश्वास भरी निगाहों से देखा।
— एक महिला पुलिसकर्मी सड़कों पर गश्त कर रही है, उसकी कमर में बंदूक है? "मैंने अभी तक किसी को गोली नहीं मारी है," आयुमी ने कहा।
मुझे उम्मीद है कि मैंने कुछ भी अनुचित नहीं कहा होगा।
आयुमी ने अपना सिर हिलाया।
- बिल्कुल कुछ भी नहीं।
मालिक मुस्कुराया और अपने हाथों को अपनी छाती पर जोड़ लिया।
— यह बरगंडी की एक मशहूर वाइन है, जिसे मैं पूरे भरोसे के साथ किसी को भी सुझा सकता हूँ। यह एक प्रतिष्ठित अंगूर के बाग से आती है, एक अच्छे साल की वाइन है, जिसकी कीमत आम तौर पर हजारों येन होती है।

वेटर आया और उसने गिलासों में पेय पदार्थ डाले। आओमामे और आयुमी ने गिलासों को आपस में टकराया। गिलास हल्के से आपस में टकराए, जिससे एक झनझनाहट भरी ध्वनि निकली, मानो दूर स्वर्ग से कोई घंटी बज रही हो।
"यह मेरे जीवन की सबसे बेहतरीन शराब है," अयुमी ने एक घूंट लेने के बाद आंखें सिकोड़ते हुए कहा। भला कौन उसे दोष दे सकता है?
"कोई न कोई ऐसा होता है जो हर चीज में कमी निकाल सकता है," आओमामे ने कहा।
फिर उन दोनों ने मेनू का बारीकी से अध्ययन किया। आयुमी ने एक कुशल वकील की तरह, जो किसी महत्वपूर्ण अनुबंध की जांच कर रहा हो, मेनू को दो बार पढ़ा। ताकि कोई भी ज़रूरी बात छूट न जाए, कोई भी चालाकी से छिपाई गई खामी न मिल जाए। उसने मन ही मन नियमों और शर्तों का मूल्यांकन किया और संभावित परिणामों पर विचार किया। उसने लाभ और हानि का सावधानीपूर्वक आकलन किया। मेज के दूसरी ओर बैठी आओमामे उसे लगातार रुचि से देखती रही।
"क्या तुमने फैसला कर लिया है?" आओमामे ने पूछा।
— समुद्र में।
"तो आपको क्या मिल रहा है?"
"मछली का सूप, तीन प्याज का सलाद, और बोर्डो वाइन में मैरीनेट किया हुआ इवाते बछड़े का दिमाग। आप?"
"दाल का सूप, धीमी आंच पर पकी हुई हरी सब्जियां और कागज में लिपटी हुई एंग्लरफिश, साथ में पोलेंटा। यह रेड वाइन के साथ उतना अच्छा नहीं लगता, लेकिन मुझे कोई शिकायत नहीं है, क्योंकि यह मुफ्त में मिल रहा है।"
"क्या हम एक दूसरे का स्वाद ले सकते हैं?"
"बिल्कुल," आओमामे ने कहा। "और देखो, हम स्टार्टर के तौर पर साथ में झींगा फ्रिट्टो खा सकते हैं।"
- बहुत अच्छा!
अगर हमने फैसला कर लिया है, तो बेहतर होगा कि हम मेनू बंद कर दें, वरना वेटर फिर कभी नहीं आएगा।
"हाँ, बिल्कुल," आयुमी ने हिचकिचाते हुए मेनू बंद किया और उसे वापस मेज पर रख दिया।
वेटर तुरंत आया और उसने ऑर्डर ले लिया।
वेटर के चले जाने के बाद अयुमी ने कहा, "रेस्टोरेंट में ऑर्डर देने के बाद मुझे हमेशा ऐसा लगता है कि मैंने वो चीज़ ऑर्डर नहीं की जो मुझे करनी चाहिए थी।" "क्या आपको भी ऐसा नहीं लगता?"
"अगर आप गलत ऑर्डर भी कर देते हैं, तो भी यह सिर्फ खाना ही तो है। जीवन में इंसान से होने वाली गलतियों की तुलना में यह कोई बड़ी बात नहीं है।" "बिल्कुल नहीं," आयुमी ने जवाब दिया। "लेकिन यह मेरे लिए महत्वपूर्ण है। बचपन से ही ऐसा है। हर बार ऑर्डर करने के बाद मुझे पछतावा होता है। 'मुझे सॉस वाले मीटबॉल की जगह फ्राइड श्रिम्प ऑर्डर करना चाहिए था।' क्या आप हमेशा से इतने शांत और सौम्य रहे हैं?"
जिस घर में मैं पली-बढ़ी, वहाँ कई कारणों से बाहर खाना खाने की कोई आदत नहीं थी। बिलकुल भी नहीं। मुझे याद नहीं कि मैंने कभी किसी रेस्टोरेंट में कदम रखा हो, और जब तक मैं बड़ी नहीं हुई, मुझे यह भी नहीं पता था कि मेन्यू देखकर, अपनी पसंद का खाना चुनकर ऑर्डर करने का क्या मतलब होता है। हर दिन, जो भी मेरे

सामने परोसा जाता, मैं उसे खा लेती थी। मैं खुद को यह शिकायत करने की इजाज़त नहीं दे सकती थी कि खाना अच्छा नहीं है, काफी नहीं है, या मुझे पसंद नहीं आया। सच कहूँ तो, आज भी मैं किसी भी चीज़ से खुश रहती हूँ।
"तो फिर। मुझे नहीं पता कि आपके साथ क्या स्थिति थी, लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता था। आप जिस तरह से पेश आते हैं, उससे लगता है कि आप बचपन से ही ऐसी जगहों के आदी हैं।"
तामाकी ने ही आओमामे को इन सब बातों से परिचित कराया था। किसी अच्छे रेस्टोरेंट में कैसे व्यवहार करना है, खाना कैसे चुनना है ताकि शर्मिंदगी न हो, वाइन कैसे ऑर्डर करनी है, मिठाई कैसे मांगनी है, वेटर से कैसे बात करनी है, चम्मच-कांटा कैसे इस्तेमाल करना है, ये सब बातें आओमामे ने तामाकी से विस्तार से सीखी थीं। साथ ही, कपड़े कैसे चुनने हैं, एक्सेसरीज़ कैसे मैच करनी हैं या मेकअप कैसे करना है, ये सब भी। आओमामे के लिए ये सब कुछ नया था। तामाकी टोक्यो के एक रिहायशी इलाके में एक अमीर परिवार में पली-बढ़ी थी, और उसकी माँ बहुत ही मिलनसार और पहनावे और शिष्टाचार के मामले में बहुत सख्त थीं। इसीलिए तामाकी हाई स्कूल से ही इन सब चीजों की आदी थी। वह बिना किसी झिझक के बड़ों की भीड़- भाड़ वाली जगहों पर जा सकती थी। आओमामे ने ये सब बातें उससे बड़ी उत्सुकता से सीखी थीं। अगर उसे ऐसी अच्छी गुरु न मिली होती, तो उसकी जिंदगी बिल्कुल अलग होती। कभी-कभी आओमामे को लगता था कि तामाकी आज भी उसके अंदर जीवित है।
पहले तो अयुमी थोड़ी तनावग्रस्त लग रही थी, लेकिन जैसे-जैसे उसने शराब पी, वह शांत हो गई।
"मैं आपसे कुछ पूछना चाहती हूँ," उसने कहा। "अगर आप जवाब नहीं देना चाहते, तो मत दीजिए। लेकिन मैं फिर भी आपसे पूछना चाहती हूँ। आपको कोई आपत्ति तो नहीं है?"
— मैं परेशान नहीं हूँ।
"अगर मैं आपसे कोई अजीब सवाल पूछूं, तो मेरा इरादा कोई बुरी मंशा नहीं है। कृपया इसे समझें। मैं बस बहुत उत्सुक हूं। हालांकि यह सच है कि कभी-कभी लोग इस पर बहुत गुस्सा हो जाते हैं।"
— चिंता मत करो, मैं नाराज नहीं हूँ।
"क्या आप निश्चित हैं?" क्योंकि हर कोई यही बात कहता है और फिर भी नाराज़ हो जाता है।
मैं एक विशेष मामला हूं। इसलिए इसके बारे में चिंता न करें।
"क्या बचपन में किसी पुरुष ने आपके साथ कुछ गलत किया था?"
ओमामे ने अपना सिर हिलाया।
- क्यों नहीं?
"ये तो बस एक सवाल था। अच्छा हुआ कि तुमने नहीं पूछा," अयुमी ने विषय बदलते हुए कहा। "क्या तुम्हारा कभी कोई बॉयफ्रेंड रहा है? मतलब, कोई गंभीर रिश्ता?"
- नहीं।
"कोई नहीं?"
"बिल्कुल नहीं," आओमामे ने जवाब दिया, और कुछ क्षणों की झिझक के बाद उसने आगे कहा। "सच कहूँ तो, मैं छब्बीस साल की उम्र तक कुंवारी थी।"
आयुमी अवाक रह गई। उसने अपना कांटा और चाकू नीचे रख दिया, नैपकिन से अपना मुंह पोंछा और काफी देर तक आंखें सिकोड़कर आओमामे को देखती रही।

"तुम्हारे जैसी कूल लड़की? मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा!"
— यह एक ऐसा विषय था जिसमें मुझे बिल्कुल भी रुचि नहीं थी।
"आपका मतलब है कि आपको पुरुषों में कोई दिलचस्पी नहीं थी?"
"मैंने सिर्फ एक ही आदमी को पसंद किया है। मुझे उससे दस साल की उम्र में प्यार हो गया था और मैंने उसका हाथ पकड़ा था।"
"जब तुम दस साल की थी तब तुम्हें एक लड़के से प्यार हो गया था। बस इतना ही?"
- बस इतना ही।
आयुमी ने अपना कांटा और चाकू लिया और सोच में डूबी हुई एक झींगा मछली को छोटे- छोटे टुकड़ों में काट लिया।
— और वो लड़का अब कहाँ है और क्या कर रहा है?
ओमामे ने अपना सिर हिलाया।
मुझे नहीं पता। हम चिबा के इचिकावा में तीसरी और चौथी कक्षा में सहपाठी थे, लेकिन मैं पाँचवीं कक्षा में टोक्यो चला गया और तब से उससे न तो मिला हूँ और न ही उससे कोई बात हुई है। मुझे उसके बारे में बस इतना पता है कि अगर वह जीवित है, तो अब उसकी उम्र उनतीस साल होगी। शायद पतझड़ में वह तीस साल का हो जाएगा।
"क्या मतलब, तुमने अब तक यह पता लगाने की जहमत भी नहीं उठाई कि वह कहाँ है या क्या करता है?" मुझे नहीं लगता कि पता लगाना मुश्किल होगा।
ओमामे ने दृढ़ता से अपना सिर हिलाया।
मैं उसे ढूंढना नहीं चाहता था।
"कितनी अजीब बात है! अगर मैं तुम्हारी जगह होती, तो मैं उसे ढूंढने के लिए हर संभव कोशिश करती। खासकर अगर तुम उसे इतना पसंद करती हो, तो तुम्हें उसे ढूंढकर उसके सामने कहना चाहिए कि तुम उससे प्यार करती हो।"
"मैं ऐसा नहीं करना चाहता। मेरी यही उम्मीद है कि एक दिन संयोग से हमारी मुलाकात हो जाए। चलो, सड़क पर एक-दूसरे से मिलें या एक ही बस में सफर करें।" — एक पूर्वनियोजित मुलाकात।
"कुछ ऐसा ही," आओमामे ने शराब का एक घूंट लेते हुए कहा। "और फिर मैं उसे सब कुछ बता दूंगी। मैंने अपनी पूरी जिंदगी में सिर्फ तुमसे प्यार किया है, मैं उसे यही बताऊंगी।"
"हाँ, वो बहुत रोमांटिक है," अयुमी ने झुंझलाते हुए कहा, "लेकिन तुम्हारे उससे मिलने की संभावना बहुत कम है। वैसे भी, तुमने उसे बीस साल से नहीं देखा है और उसका चेहरा काफी बदल गया होगा। अगर तुम उसे सड़क पर देखो तो शायद पहचान भी न पाओ।"
ओमामे ने अपना सिर हिलाया।
"चाहे वह कितना भी बदल जाए, मैं उसे एक नज़र में पहचान लूंगी। बिना किसी शक के।"
- तो यह बात है।
- हाँ।
— तो, आपको पूरा यकीन है कि आपकी उससे मुलाकात संयोग से ही होगी, इसीलिए आप बैठकर इंतजार कर रहे हैं।
— इसीलिए मैं हमेशा सड़क पर चलते समय एक पल के लिए भी अपना ध्यान नहीं भटकने देता।

"ये कैसी बात है," आयुमी ने कहा। "लेकिन तुम उससे कितना भी प्यार करो, तुम्हें दूसरे पुरुषों के साथ सोने में कोई आपत्ति नहीं होती। मतलब, छब्बीस साल की उम्र के बाद।"
ओमामे ने एक पल सोचा, फिर कहा:
"ये सब बातें मेरे सामने से गुजर जाती हैं। कुछ भी पीछे नहीं छूटता।"
कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा, दोनों का ध्यान अपने खाने पर केंद्रित था। थोड़ी देर बाद, अयुमी ने चुप्पी तोड़ी:
मैं आपसे एक थोड़ा अविवेकी सवाल पूछ रहा हूँ, लेकिन क्या छब्बीस साल की उम्र में आपके साथ कुछ हुआ था?
ओमामे ने सिर हिलाया।
"हां, मेरे साथ कुछ ऐसा हुआ जिसने मुझे हमेशा के लिए बदल दिया। माफ कीजिए, लेकिन मैं अभी इसके बारे में बात नहीं करना चाहता।"
"बिल्कुल ठीक है। लेकिन आपको मेरे कपड़े उतारने से कोई आपत्ति तो नहीं है ना?"
- बिल्कुल नहीं।
सूप आ गया और दोनों चुपचाप उसे खाने लगे। उन्होंने कुछ देर के लिए बातचीत रोक दी। चम्मच नीचे रखने और वेटर के प्लेटें हटाने के बाद ही उन्होंने फिर से बातचीत शुरू की।
"लेकिन क्या तुम्हें डर नहीं लगता?"
"आखिर क्यों?"
— हो सकता है कि आप उससे फिर कभी न मिलें। बेशक, इस दुनिया में संयोग होते हैं, और अगर ऐसा हो तो मुझे खुशी होगी। सच में, मैं यही उम्मीद करती हूँ। लेकिन, हकीकत में, इस बात की काफी संभावना है कि आप दोनों फिर कभी एक-दूसरे को देखे बिना ही सब कुछ खत्म हो जाएगा। शायद उसकी शादी हो गई हो और उसके दो बच्चे हों। है ना? और अगर ऐसा है, तो आप अपनी बाकी जिंदगी अकेले नहीं गुजार सकतीं। इस दुनिया में जिस एकमात्र इंसान से आप प्यार करती हैं, उसके बिना। क्या आपको इस तरह सोचने से डर नहीं लगता?
ओमामे ने अपने गिलास में रखी लाल शराब को देखा।
"शायद ऐसा हो। लेकिन कम से कम मैं किसी से प्यार तो करता हूँ।"
"भले ही वह तुमसे प्यार न करता हो?"
अगर आप किसी से पूरे दिल से प्यार कर पाते हैं, चाहे सिर्फ एक ही व्यक्ति से, तो आप पूरी तरह से खोए हुए नहीं हैं। भले ही आप उनके साथ न रह सकें।
आयुमी ने कुछ देर सोचा। वेटर आया और उनके गिलासों में शराब भर दी। आओमामे ने एक घूंट लिया और आयुमी की बात से सहमत हो गई। भला इस शराब पर आपत्ति कौन कर सकता है?
"आओमामे, तुम असाधारण हो! तुम चीजों को कितने दार्शनिक ढंग से देखती हो!"
मैं उन्हें दार्शनिक नजरिए से नहीं देखता। मैं बस इसी तरह सोचता हूं।
"मैंने भी किसी से प्यार किया था," आयुमी ने कबूल किया। "जिसके साथ मैंने हाई स्कूल से ग्रेजुएशन करने के तुरंत बाद पहली बार शारीरिक संबंध बनाए थे। वो मुझसे तीन साल बड़ी थी। लेकिन उसने तुरंत ही किसी और को ढूंढ लिया। मैं बहुत दुखी हुई थी, आप जानते हैं। मैंने इस बात को स्वीकार कर लिया है, लेकिन उस सदमे

से अभी तक पूरी तरह उबर नहीं पाई हूँ। एक बेवकूफ जिसने मुझे धोखा दिया। वो सिर्फ बातें करता था। लेकिन चाहे कुछ भी हो, मैं उसे पसंद करती थी।"
ओमामे ने सिर हिलाया। अयुमी ने हाथ में वाइन का गिलास लिया और एक घूंट पिया। वह अब भी मुझे कभी-कभार फोन करता है और पूछता है कि क्या मैं उससे मिलना चाहती हूँ। ज़ाहिर है, वह बस मेरे साथ सोना चाहता है। यह मुझे साफ़ समझ आता है, इसलिए मैं उससे नहीं मिलती। अगर मैं उससे मिलने लगी, तो मुझे फिर से उसके पीछे जाना पड़ेगा। लेकिन आप जानते हैं, मैं अपने दिमाग से तो समझती हूँ, पर मेरा शरीर प्रतिक्रिया करता है। उसके मुझे बाहों में लेने के ख्याल से ही मुझे झुनझुनी होने लगती है। और जब यह हद से ज़्यादा हो जाता है, तो मुझे खुद को आज़ाद करने की ज़रूरत महसूस होती है। आप जानते ही हैं ना, कैसा होता है?
- मैं समझता हूँ।
"वह सचमुच एक हारा हुआ इंसान है। संकीर्ण सोच वाला और बिस्तर पर भी कुछ खास अच्छा नहीं। लेकिन कम से कम वह मुझसे डरता नहीं है और कम से कम जब हम साथ होते हैं, तो वह मेरे साथ अच्छा व्यवहार करता है।"
"आप इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते," आओमामे ने कहा। "वह तो बिना बुलाए घुस आया है। ऐसा तो है नहीं कि आप मेनू से कोई व्यंजन चुन रहे हों।"
— यह ठीक वैसा ही है जैसे आप गलत ऑर्डर कर देते हैं और फिर पछताते हैं।
वे दोनों जोर से हंस पड़े।
"लेकिन आप जानते हैं," आओमामे ने कहा, "चाहे वह मेनू हो, पुरुष हों या कुछ और, हमें ऐसा लगता है कि हम ही चुनाव कर रहे हैं, जबकि वास्तव में हम कुछ भी नहीं चुन रहे हैं। शायद सब कुछ शुरू से ही तय था, और हम बस चुन रहे हैं। शायद स्वतंत्र इच्छाशक्ति सिर्फ एक परिकल्पना है। कभी-कभी मुझे चीजें इसी तरह दिखती हैं।"
अगर ऐसा है तो जीवन थोड़ा निराशाजनक है।
- क्या आप जानते हैं?
लेकिन अगर आप किसी से पूरे दिल से प्यार करते हैं, चाहे वह व्यक्ति कितना भी बुरा क्यों न हो और चाहे वह आपसे प्यार न करे, कम से कम जीवन अब नरक नहीं रह जाता। चाहे वह कितना भी निराशाजनक क्यों न हो।
- यह सही है।
"लेकिन तुम्हें पता है मैं क्या सोचती हूँ?" आयुमी ने कहा। यह दुनिया न केवल अतार्किक है, बल्कि इसमें दया का भी अभाव है।
"शायद। लेकिन हम इसे किसी और चीज़ से बदल नहीं सकते।"
नहीं, क्योंकि वापसी की समय सीमा समाप्त हो चुकी है।
और मैंने रसीद फेंक दी।
- एकदम सही।
"लेकिन कोई बात नहीं। यह दुनिया पलक झपकते ही खत्म हो जाएगी।"
- सुनने में तो अच्छा लगता है!
और फिर राज्य आएगा।
“मैं और इंतजार नहीं कर सकती!” आयुमी ने उत्साह से कहा।
*

दोनों ने मिठाई खाई, एक-एक एस्प्रेसो पी और आश्चर्यजनक रूप से कम बिल को आपस में बाँट लिया। फिर वे पास के एक बार में रुके और एक-एक कॉकटेल ऑर्डर किया।

सुनो, क्या वह लड़का तुम्हें पसंद नहीं है?
ओमामे ने अपनी निगाहें उसकी ओर घुमाईं। एक लंबा, अधेड़ उम्र का आदमी काउंटर के कोने पर अकेला बैठा मार्टिनी पी रहा था। वह अच्छे अंकों वाला, चुस्त-दुरुस्त हाई स्कूल का छात्र था, जिसकी उम्र का असर उस पर साफ दिख रहा था। उसके बाल कम हो रहे थे, लेकिन चेहरा जवान था।
"शायद, लेकिन आज मेरा मन पुरुषों से बात करने का नहीं है," आओमामे ने सपाट लहजे में कहा। "और वैसे भी, हम एक शानदार बार में हैं।"
"मुझे पता है। लेकिन मैंने सोचा कि फिर भी आपको बता दूं।"
— ये अगली बार के लिए है।
आयुमी ने उसकी ओर देखा।
"क्या मतलब, तुम अब भी मेरे साथ आ रही हो? मतलब, तुम पुरुषों की तलाश में हो।" "मैं आ रही हूँ," आओमामे ने कहा। "हम साथ चलेंगे।"
"कितना अच्छा! जब मैं तुम्हारे साथ होती हूँ, तो मुझे लगता है कि मैं कुछ भी कर सकती हूँ।"
ओमामे के सामने एक डाइक्विरी रखी थी, और अयुमी एक टॉम कॉलिन्स पी रही थी। “वैसे, जब हमने फोन पर बात की थी, तो तुमने मुझे बताया था कि हमने लेस्बियन का रोल किया था,” आओमामे ने कहा। “हमने क्या किया था?”
"ओह, हाँ। हमने कुछ खास नहीं किया। हमने बस थोड़ा-बहुत मस्ती की ताकि हमारा मूड अच्छा हो जाए। क्या तुम्हें सच में कुछ याद नहीं है? तुम तो पूरी तरह से मग्न थे।"
मुझे कुछ भी याद नहीं है। बिलकुल कुछ भी नहीं।
— खैर, हमने नग्न अवस्था में एक-दूसरे के स्तनों को थोड़ा सा सहलाया, हमने वहाँ नीचे की ओर चुंबन किया...
“क्या हमने नीचे किस किया था?” आओमामे ने अचानक कहा, फिर घबराहट में इधर-उधर देखा, शांत बार में उसकी आवाज़ सामान्य से कहीं ज़्यादा तेज़ थी। सौभाग्य से, किसी ने भी उसकी बात नहीं सुनी।
"हम तो बस दिखावा कर रहे थे। हमने अपनी जीभ का भी इस्तेमाल नहीं किया।"
"ओह, ठीक है!" आओमामे ने आह भरी और अपनी उंगलियों को कनपटी पर दबाया। "मेरे दिमाग में आखिर चल क्या रहा था?"
"मुझे माफ कर दीजिए," आयुमी ने माफी मांगी।
"कुछ नहीं, चिंता मत करो। इतनी ज्यादा शराब पी लेने की गलती मेरी ही है।" "लेकिन नीचे से तुम बहुत अच्छी लग रही हो। यह खूबसूरत है और तुम कहती हो कि यह बिल्कुल नया है।"
— खैर, यह बिल्कुल हमारे जैसा ही है।
— क्या आप इसका इस्तेमाल बहुत कम करते हैं?
ओमामे ने सिर हिलाया।
— हाँ। सुनो, क्या तुममें समलैंगिक प्रवृत्ति है?
आयुमी ने अपना सिर हिलाया।
"ऐसा मैंने पहली बार किया है। कसम से। मैं खुद भी काफी नशे में था और मैंने सोचा, क्योंकि तुम हो, तो क्यों न मैं भी कोशिश कर लूँ। अगर ये सिर्फ एक मज़ाक है, तो थोड़ा मज़ा क्यों न कर लूँ?" तुम?

"मेरी भी ऐसी कोई इच्छा नहीं है। मैंने हाई स्कूल में सिर्फ एक बार ऐसा किया था, अपने एक अच्छे दोस्त के साथ। मेरा ऐसा करने का इरादा नहीं था, लेकिन बस हो गया।"
— ऐसा अब भी होता है। और कैसा रहा, आपको पसंद आया?
"हाँ, मुझे अच्छा लगा," आओमामे ने ईमानदारी से जवाब दिया। "लेकिन यह सिर्फ एक बार हुआ। मुझे यह सही नहीं लगा, इसलिए मैंने इसे दूसरी बार नहीं किया।"
क्या आपको नहीं लगता कि लेस्बियन होना ठीक है?
"नहीं, मुझे नहीं लगता कि समलैंगिक होना अनैतिक है। मैं उस व्यक्ति के साथ उस तरह का रिश्ता नहीं रखना चाहती थी। मैं अपनी दोस्ती को शारीरिक संबंध में नहीं बदलना चाहती थी।"
"आहा," आयुमी ने कहा। "सुनो, अगर तुम्हें कोई आपत्ति न हो, तो क्या मैं आज रात तुम्हारे यहाँ रुक सकती हूँ? मैं छात्रावास वापस नहीं जाना चाहती। वहाँ पहुँचते ही यह सारा शानदार माहौल पल भर में बिखर जाएगा।"
ओमामे ने अपने डाइक्विरी का आखिरी घूंट लिया और गिलास को काउंटर पर रख दिया। "तुम मेरे घर पर रह सकते हो, लेकिन कोई बकवास नहीं, समझे?"
"ज़रूर। बात वो थी ही नहीं। मैं बस थोड़ी देर और तुम्हारे साथ रहना चाहता था। तुम जहाँ चाहो सो सकती हो, क्योंकि मैं ज़मीन पर कहीं भी सो सकता हूँ। और कल मैं फ़्री हूँ, इसलिए सुबह मुझे कोई जल्दी नहीं है।"
*

वे दोनों मेट्रो से जियुगाओका गए और ग्यारह बजे से कुछ पहले आओमामे के घर पहुँचे। दोनों को हल्का नशा था और नींद आ रही थी। आओमामे ने सोफा ठीक किया और अयुमी को एक जोड़ी पजामा दिया।
"क्या मैं थोड़ी देर के लिए आपके साथ बिस्तर पर सो सकती हूँ? मैं थोड़ी देर के लिए आपके साथ गले लगना चाहती हूँ। कोई बकवास नहीं, मैं वादा करती हूँ," आयुमी ने कहा।
- ठीक है।
एक महिला जिसने एक ड्यूटी पर तैनात महिला पुलिसकर्मी के साथ बिस्तर पर तीन पुरुषों की हत्या कर दी, ओमामे आश्चर्यचकित रह गई। यह दुनिया कितनी विचित्र है!
आयुमी धीरे से बिस्तर पर चढ़ गई और आओमामे को बाहों में भर लिया, अपने सुडौल स्तनों को उससे सटा दिया। उसकी सांसों से टूथपेस्ट के साथ मिली हुई शराब की गंध आ रही थी।
सुनो, क्या तुम्हें नहीं लगता कि मेरे स्तन बहुत बड़े हैं?
"बिल्कुल नहीं। इनका आकार बहुत सुंदर है।"
"लेकिन बड़े स्तन आपको बेवकूफ दिखाते हैं, है ना? दौड़ते समय वे इधर-उधर हिलते हैं, और मुझे दो सलाद के कटोरे जैसे दिखने वाले ब्रा को सुखाने के लिए टांगने में शर्म आती है।"
लेकिन पुरुषों को यह पसंद आता है।
और मेरे निपल्स बहुत बड़े हैं।
आयुमी ने अपने पजामा टॉप के कुछ बटन खोले, अपना एक स्तन बाहर निकाला और आओमामे को अपना निप्पल दिखाया।
"देखो यह कितना बड़ा है! क्या यह अजीब नहीं दिखता?"

आओमामे ने उसे देखा। वह छोटा तो नहीं था, लेकिन बहुत बड़ा भी नहीं लग रहा था। वह तमाकी के निपल्स से थोड़ा बड़ा था।
"बहुत बढ़िया। क्या किसी ने आपको बताया है कि ये बहुत बड़े हैं?"
"हां, एक आदमी। उसने कहा कि उसने कभी इतने बड़े निपल्स नहीं देखे थे।"
"इसका मतलब है कि उसने अपने जीवन में ज्यादा कुछ नहीं देखा है। वह सामान्य दिखता है। मेरे तो बहुत छोटे हैं।"
"मुझे तुम्हारे स्तन पसंद हैं। उनका आकार नाजुक है और वे तुम्हें एक बुद्धिमान रूप देते हैं।"
"लेकिन ये आए कहां से? ये बहुत छोटे और असमान हैं। मुझे हमेशा ब्रा खरीदने में परेशानी होती है क्योंकि मेरे बाएं और दाएं कप अलग-अलग हैं।"
"ओह, हाँ? देखिए, हम सभी को कुछ न कुछ बातें परेशान करती हैं।"
"बिल्कुल सही," आओमामे ने निष्कर्ष निकाला। "ठीक है, अब सोने चलते हैं!" आयुमी ने हाथ बढ़ाकर आओमामे के पजामे में उंगलियां डालने की कोशिश की। आओमामे ने उसका हाथ पकड़कर उसे रोक दिया।
"नहीं! क्या आपने मुझसे वादा नहीं किया था कि कोई बकवास नहीं होगी?"
"माफ़ करना," आयुमी ने कहा और अपना हाथ पीछे खींच लिया। "हाँ, मैंने तुमसे वादा किया था। मैं नशे में थी, यह तो पक्का है। लेकिन तुम्हें पता है, मैं तुम्हारे लिए मर चुकी हूँ। बिल्कुल एक हाई स्कूल की छात्रा की तरह।"
आओमामे ने कुछ नहीं कहा।
"जो भी तुम्हारे लिए सबसे महत्वपूर्ण है, उसे अपने दिल में रखो, खासकर उसके लिए," आयुमी ने फुसफुसाते हुए कहा। "मुझे तुमसे ईर्ष्या होती है। कि तुम्हारे पास ऐसा करने के लिए कोई है।"
हां, ओमामे ने सोचा। लेकिन वह चीज क्या है?
"ठीक है, अब सो जाओ!" आओमामे ने उससे कहा। "जब तक तुम सो नहीं जाती, मैं तुम्हें पकड़े रहूंगी।"
धन्यवाद। और सच में, आपको परेशान करने के लिए मुझे खेद है!
"माफ़ी मांगने की ज़रूरत नहीं है। तुम मुझे ज़रा भी परेशान नहीं कर रही हो।" आओमामे को अपनी बगल में अयुमी की गर्म साँस महसूस हुई। दूर कहीं एक कुत्ते के भौंकने की आवाज़ आई और एक खिड़की ज़ोर से बंद हो गई। इस सब के दौरान, आओमामे अपने बालों को सहलाती रही।
*

आओमामे बिस्तर से उठी और अयुमी को सोने दिया। ऐसा लग रहा था कि उसे उस रात सोफे पर ही सोना पड़ेगा। उसने फ्रिज से पानी की बोतल निकाली और दो गिलास पानी पिया। फिर वह बालकनी में गई, एल्युमीनियम की कुर्सी पर बैठी और शहर को देखने लगी। यह एक शांत बसंत की रात थी। दूर की गलियों से हवा के साथ आती समुद्र की कृत्रिम गर्जना सुनाई दे रही थी। आधी रात हो चुकी थी और नियॉन लाइटें मंद पड़ गई थीं।
*

मुझे अयुमी से पूरी सहानुभूति है, यह तो पक्का है। मैं उसकी देखभाल करना चाहती हूँ। तमाकी, तुम्हारे जाने के बाद, मैंने लंबे समय तक यह ठान लिया था कि मैं किसी से भी करीबी रिश्ता नहीं रखूँगी। मैं कभी कोई नया दोस्त नहीं बनाना चाहती थी। लेकिन, पता नहीं क्यों, मैं अयुमी से आसानी से अपने दिल की बात कह

सकती हूँ। एक हद तक, मैं उससे अपने दिल की बात भी खुलकर कह सकती हूँ। लेकिन, ज़ाहिर है, वह तुमसे बिल्कुल अलग है, आओमामे ने अपने भीतर पल रही तमाकी से कहा। तुम एक बिलकुल खास इंसान हो। मैं तुम्हारे साथ पली-बढ़ी हूँ। तुम्हारी तुलना किसी और से नहीं की जा सकती।
ओमामे ने अपना सिर पीछे झुकाया और आकाश की ओर देखा। उसने आसमान को निहारा और उसके विचार दूर की यादों में खो गए। तामाकी के साथ बिताया समय, एक-दूसरे से कही बातें, और कैसे उन्होंने एक-दूसरे को सांत्वना दी थी... लेकिन, एक पल के लिए, ओमामे ने महसूस किया कि आकाश कुछ अलग दिख रहा है। कुछ तो गड़बड़ थी। वह अजीब सी अनुभूति अस्पष्ट थी, लेकिन उसे नकारा नहीं जा सकता था।
उसे यह समझने में थोड़ा समय लगा कि क्या बदल गया है। और जब उसे समझ आ भी गया, तो उसे इस सच्चाई को स्वीकार करने में काफी संघर्ष करना पड़ा। उसका दिमाग उसकी आँखों के सामने जो कुछ हो रहा था, उसे स्वीकार नहीं कर पा रहा था।
आकाश में दो चंद्रमा थे। एक छोटा और एक बड़ा। वे आकाश में ऊँचाई पर, अगल-बगल स्थित थे। बड़ा वाला चंद्रमा वही था जिसे वह हमेशा से जानती थी। पीला, लगभग पूरा। लेकिन उसके बगल में एक और चंद्रमा था। एक अजीब आकार का चंद्रमा। बेढंगा और हरा, मानो काई की पतली परत से ढका हुआ हो। यही उसकी दृष्टि में प्रकट हुआ। ओमामे ने काफी देर तक चांद को टकटकी लगाकर देखा, आंखें सिकोड़ते हुए। फिर उसने आंखें बंद कर लीं, कुछ पल रुकी, गहरी सांस ली और फिर से खोल दीं, यह उम्मीद करते हुए कि सब कुछ सामान्य हो जाएगा और आकाश में केवल एक ही चांद होगा। लेकिन कुछ भी नहीं बदला था। यह प्रकाश का भ्रम नहीं था, न ही उसकी आंखों का धोखा था। निःसंदेह, और उसकी आंखों का धोखा न होते हुए, आकाश में दो चांद थे। एक पीला, एक हरा।
ओमामे ने सोचा कि वह अयुमी को जगाकर उससे पूछे कि क्या सचमुच आकाश में दो चाँद हैं। लेकिन उसने अपना इरादा बदल दिया। अयुमी शायद कहती, "अरे, ये तो सामान्य बात है! पिछले साल से ही दो चाँद दिख रहे हैं।" या फिर, "ये क्या कह रही हो, ओमामे? तुम्हें तो सिर्फ़ एक ही चाँद दिख रहा है। क्या तुम्हारी आँखों को कुछ हो गया है?" जवाब चाहे जो भी होता, उससे उसकी समस्या हल नहीं हुई। बल्कि और भी पेचीदा हो गई।
ओमामे ने अपने हाथों से अपना चेहरा आधा ढक लिया और चांद को घूरती रही। उसने खुद से कहा, "कुछ तो हो रहा है, यह तो पक्का है," उसकी धड़कन तेज़ हो रही थी। "या तो दुनिया में कुछ हुआ है या मुझमें। दो में से एक बात तो प्याले में है या ढक्कन में?"
वह अंदर गई, बालकनी का दरवाजा बंद किया और पर्दे खींच दिए। उसने अलमारी से कॉन्यैक की बोतल निकाली और अपने गिलास में डाली। अयुमी बिस्तर पर शांति से सो रही थी। आओमामे उसे देखते हुए धीरे-धीरे अपना कॉन्यैक पीती रही। वह रसोई की मेज पर कोहनियाँ टिकाकर बैठ गई, और पर्दे के पीछे क्या हो रहा है, इसके बारे में न सोचने की कोशिश कर रही थी।
उसने सोचा, शायद दुनिया सचमुच खत्म हो रही है।
"और वह राज्य आएगा," उसने धीरे से कहा।
किसी ने जवाब दिया, "मैं इंतजार नहीं कर सकता।"

अध्याय 16 मुझे खुशी है कि आपको यह पसंद आया

टेंगो 'द क्राइसालिस ऑफ एयर' को फिर से रचने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे थे, लेकिन पांडुलिपि कोमात्सु को सौंपने के बाद उन्हें शांति और सुकून का दौर मिला। वे तैयारी विद्यालय में सप्ताह में तीन दिन पढ़ाते थे और शुक्रवार को अपनी प्रेमिका से मिलते थे। बाकी समय वे घर की देखभाल करते, टहलते या लिखते थे। इस तरह अप्रैल का महीना बीत गया। चेरी के पेड़ झड़ चुके थे, लेकिन मैग्नोलिया के पेड़ कलियाँ और फूल खिला रहे थे। मौसम धीरे-धीरे आगे बढ़ा। दिन नियमित रूप से, सुचारू रूप से और बिना किसी अप्रत्याशित घटना के बीतते गए। यह ठीक वही जीवन था जो टेंगो चाहते थे—सप्ताह बिना किसी रुकावट के स्वाभाविक रूप से एक के बाद एक बीतते रहे।
लेकिन एक बदलाव आ चुका था। एक अच्छा बदलाव। लिखते-लिखते उन्होंने महसूस किया कि उनके भीतर एक नया झरना फूट रहा है। यह पत्थरों के बीच एक हल्की सी सिसकी थी, जिससे ज़्यादा पानी नहीं बह रहा था। लेकिन फिर भी, छोटी सी सिसकी लगातार बह रही थी। टेंगो को कोई जल्दी नहीं थी और न ही वह अधीर हुए। वह किनारों के बीच पानी के इकट्ठा होने का इंतज़ार करते, फिर उसे अपने हाथों में समेट लेते और बस अपनी मेज़ पर बैठकर उसे वाक्यों में ढाल देते। इस तरह उनकी कहानी अपने आप आगे बढ़ती चली गई।
एयर क्राइसालिस पर लगातार और एकाग्रता से किए गए काम ने झरने को अवरुद्ध करने वाले पत्थरों को हटा दिया था। टेंगो को समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों हुआ, लेकिन उसे यकीन था कि कहीं से कोई भारी ढक्कन हट गया है। उसका शरीर हल्का महसूस हो रहा था, मानो वह किसी छेद से बाहर निकला हो और अब अपने हाथ-पैर स्वतंत्र रूप से फैला सकता हो। शायद एयर क्राइसालिस ने उसके अंदर छिपी किसी चीज को जागृत कर दिया था।
इसके अलावा, उसे लगा कि आखिरकार उसके अंदर महत्वाकांक्षा जाग उठी है। उसने पहले कभी ऐसा महसूस नहीं किया था। हाई स्कूल और कॉलेज में उसके जूडो कोच और बड़े सहपाठियों ने उससे यही कहा था, "तुममें गुण हैं, ताकत है और तुम खूब अभ्यास करते हो। लेकिन तुम्हारे अंदर कोई महत्वाकांक्षा नहीं है।" सचमुच, यही सच था। उसे किसी भी कीमत पर जीतने की चाह नहीं थी। यही कारण था कि वह सेमीफाइनल या फाइनल तक तो पहुँच जाता था, लेकिन अक्सर निर्णायक मैच में जल्दी हार जाता था। और यह सिर्फ जूडो की बात नहीं थी। टेंगो में आम तौर पर यही प्रवृत्ति थी। वह बहुत उदासीन था, वह बिल्कुल भी संघर्ष करने की कोशिश नहीं करता था। उपन्यासों के साथ भी उसका यही हाल था। वह काफी दिलचस्प चीजें लिखता था और वाक्य भी ठीक-ठाक बनाता था। लेकिन पाठक के मन को पूरी तरह से मोहित करने की क्षमता उसमें नहीं थी। उन्हें पढ़ने के बाद, मन में एक अधूरापन सा रह जाता था। यही कारण था कि वह हमेशा फाइनल तक तो पहुँच जाता था, लेकिन साहित्यिक पुरस्कार नहीं जीत पाता था। कोमात्सु ने उससे यही कहा था।
'द क्राइसालिस ऑफ एयर' पर काम खत्म करने के बाद उन्हें कुछ अफसोस हुआ था। उपन्यास पर दोबारा काम करते समय वे पूरी तरह से तल्लीन थे, उनके दिमाग में और

कुछ नहीं था। फिर, जब उन्होंने पांडुलिपि कोमात्सु को दी, तो उन्हें बेबसी का तीव्र एहसास हुआ। कोमात्सु के शांत होने के बाद, उनके भीतर गुस्सा पनपने लगा। यह गुस्सा खुद पर था। मैंने किसी और की कहानी उधार ली और उसे एक धोखेबाज की तरह दोबारा लिखा। मैंने इस पर अपने उपन्यासों से भी ज्यादा लगन से काम किया। यह सोचकर तेंगो को शर्म महसूस हुई। एक सच्चा लेखक अपने भीतर छिपी कहानियों को खोजता है और उन्हें उपयुक्त शब्दों में पिरोता है। धिक्कार है तुम पर। अगर तुम ठान लो, तो तुम भी कर सकते हो। है ना?
उसे खुद को यह साबित करना था कि वह ऐसा कर सकता है।
उसने दृढ़ता से उस पांडुलिपि को फेंक दिया जिस पर वह तब तक काम कर रहा था और बिल्कुल नई कहानी लिखना शुरू कर दिया। आँखें बंद करके, वह अपने भीतर उमड़ते झरने की आवाज़ को लंबे समय तक सुनता रहा। जल्द ही, शब्द अपने आप निकलने लगे और उसने उन्हें बिना किसी हड़बड़ी के कागज़ पर उतार दिया।
*

मई महीने की एक शाम, नौ बजे, उन्हें कोमात्सु का फोन आया। उन्होंने काफी समय से उनसे बात नहीं की थी।
"उसने फैसला कर लिया है," उसने कहा। उसकी आवाज़ में एक खास तरह का उत्साह था, जो कोमात्सु के लिए काफी असामान्य था।
पहले तो टेंगो को ठीक से समझ नहीं आया कि वह क्या कह रहा है।
क्या निर्णय लिया गया?
तो फिर क्या हुआ? हवाई परकोटे की जीत हुई। उन्होंने अभी-अभी फैसला लिया है। समिति के सभी सदस्य सहमत थे। कोई विरोध नहीं हुआ। नहीं, ऐसे अच्छे काम के लिए तो यही सामान्य बात है। खैर, काम आगे बढ़ चुका है और हम सब मिलकर इसका लाभ उठाएंगे।
टेंगो ने दीवार पर लगे कैलेंडर पर एक नज़र डाली। वाकई, आज ही साहित्यिक प्रतियोगिता के विजेता का फैसला होना था। वह अपने उपन्यास में इतना मग्न था कि तारीख ही भूल गया था।
"तो अब क्या चल रहा है? कार्यक्रम क्या है?" उसने पूछा।
"कल इसकी घोषणा हो जाएगी। यह सभी राष्ट्रीय समाचार पत्रों में छपेगा। शायद इसकी तस्वीर भी छपेगी। सत्रह साल की ऐसी खूबसूरत लड़की की जीत से काफी हलचल मचेगी। यह उससे बिलकुल अलग बात होगी अगर कोई तीस साल का प्रीप स्कूल शिक्षक जीत जाए, जो देखने में किसी भालू जैसा लगता हो और शीतनिद्रा में जाने की तैयारी कर रहा हो।"
"बिल्कुल अलग ही नज़ारा है," टेंगो ने सहमति जताई।
पुरस्कार समारोह 16 मई को शिम्बाशी के एक होटल में आयोजित किया जाएगा। इसके साथ ही एक प्रेस कॉन्फ्रेंस भी होगी।
क्या फुकाएरी भी प्रेस कॉन्फ्रेंस में भाग ले रही हैं?
— यही तो विचार है। बस एक बार के लिए। आप अपने साहित्यिक पुरस्कार समारोह को मिस नहीं कर सकते। अगर यह सब ठीक से हो गया, तो हम काम पर लग जाएंगे। माफ कीजिए, लेखक सार्वजनिक रूप से सामने नहीं आना चाहते। हम उन्हें यहीं रोक रहे हैं। इस तरह समस्याएँ उजागर नहीं होंगी।

टेंगो ने फुकाएरी को एक बड़े होटल के कमरे में प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए कल्पना करने की कोशिश की। चारों ओर माइक्रोफोन लगे थे, फ्लैश चमक रहे थे। ऐसे माहौल में फुकाएरी की कल्पना करना मुश्किल था।
— कोमात्सु-सान, क्या आप सचमुच उसे प्रेस कॉन्फ्रेंस में भेजने वाले हैं?
— आपको कम से कम एक बार तो ऐसा करना ही होगा, वरना यह बुरा होगा।
लेकिन यह एक भीषण आपदा होगी!
— इसीलिए तो आपकी यही भूमिका है, यह सुनिश्चित करना कि कुछ भी बुरा न हो।
टेंगो चुप हो गया। एक बुरा एहसास, मानो काले बादल क्षितिज पर मंडरा रहे हों। “अरे, क्या तुम अभी भी यहीं हो?” कोमात्सु ने पूछा।
"मैं हूँ," टेंगो ने कहा। "तुम्हारा क्या मतलब है, यही मेरी भूमिका है?" "अच्छा, तुम फुकेरी को समझाओ कि प्रेस कॉन्फ्रेंस कैसे होती है और उसे क्या करना है। उससे किस तरह के सवाल पूछे जाएंगे। इसलिए, तुम पहले से ही कुछ सवाल तैयार कर लो जो तुम्हें लगता है कि पूछे जा सकते हैं और उसे याद करवा दो। तुम एक टीचर हो, तुम्हें पता होना चाहिए कि क्या करना है।"
"क्या मुझे ऐसा करना चाहिए?"
"हां, हां। फुकेरी तुम पर भरोसा करती है। वह तुम्हारी बात सुनती है। मैं नहीं कर सकता, मेरे पास उससे मिलने का समय भी नहीं है।"
टेंगो ने आह भरी। वह एयर क्राइसालिस और इस पूरे मामले से पूरी तरह से नाता तोड़ना चाहता था। उसने अपना काम कर दिया था और अब वह अपने काम पर ध्यान देना चाहता था। लेकिन उसे आभास था कि यह आसान नहीं होगा। और दुर्भाग्य से, बुरी आशंकाएँ अच्छी आशंकाओं से कहीं ज़्यादा सच हो जाती हैं।
"क्या आप परसों की रात खाली हैं?" कोमात्सु ने पूछा।
- मैं आज़ाद हूं।
"शाम छह बजे, शिंजुकु के उसी कैफे में। फुकाएरी वहां होगी।"
"लेकिन, कोमात्सु-सान, मैं ऐसा नहीं कर सकता। मुझे नहीं पता कि प्रेस कॉन्फ्रेंस में क्या होता है। मैं कभी किसी प्रेस कॉन्फ्रेंस में नहीं गया।" "तुम उपन्यासकार बनना चाहते हो, है ना? अपनी कल्पना का इस्तेमाल करो! यही तो एक लेखक का काम है, उन चीजों की कल्पना करना जिन्हें उसने देखा नहीं है।" लेकिन क्या तुमने मुझसे यह नहीं कहा था कि एक बार मैं 'द एयर क्राइसालिस' को दोबारा लिख लूँ तो मुझे कुछ नहीं करना पड़ेगा? कि मैं आराम से बेंच पर बैठकर मैच देख सकता हूँ, बाकी सब तुम संभाल लोगे?
"टेंगो, मैं अपनी तरफ से जो कर सकता हूँ, वह करने में मुझे खुशी है। मुझे भी दूसरों पर निर्भर रहना पसंद नहीं है। लेकिन मैं यह अनुरोध आपके पास इसलिए लेकर आया हूँ क्योंकि मैं ऐसा नहीं कर सकता। इसे ऐसे समझो, हम एक नाव में हैं जो तेज़ धाराओं में बह रही है, और मेरे हाथ पतवार पर हैं और मैं उसे छोड़ नहीं सकता। इसलिए आपको चप्पू संभालना होगा। अगर आप ऐसा नहीं कर सकते, तो हमारी नाव पलट जाएगी और हम सब मर जाएँगे। फुकेरी के साथ। मुझे नहीं लगता कि आप ऐसा होने देना चाहते हैं।"
टेंगो ने फिर आह भरी। आखिर उसे हमेशा ऐसी परिस्थितियों में क्यों डाल दिया जाता था जहाँ वह मना नहीं कर सकता था?
मैं समझता हूँ। मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा। लेकिन मैं यह गारंटी नहीं दे सकता कि यह सफल होगा।

"ठीक है। मैं आपका आभारी रहूंगा। वैसे भी, यह स्पष्ट है कि फुकाएरी सिर्फ आपसे ही बात करता है," कोमात्सु ने कहा। "और एक बात और। हम एक अनुबंध पर हस्ताक्षर करने जा रहे हैं।"
- कंपनी?
"कार्यालय, कंपनी... आप इसे जो चाहें कह लें। किसी भी मामले में, फुकाएरी के साहित्यिक कार्यों को संभालने के लिए एक फर्म। बेशक, यह केवल कागज़ी तौर पर ही काम करेगी। ऊपरी तौर पर, इसका उद्देश्य फुकाएरी की आय का प्रबंधन करना है। इसके प्रतिनिधि प्रोफेसर एबिसुनो होंगे। आपको भी नियुक्त किया जाएगा, चाहे कोई भी पद हो, लेकिन किसी भी मामले में, आपको वहीं से आपका हिस्सा मिलेगा। मैं इसमें शामिल रहूंगा, लेकिन मेरा नाम कहीं भी नहीं आएगा। अगर पता चला कि मैंने किसी भी नोट पर हाथ लगाया है, तो बहुत बुरा होगा। इस तरह हम मुनाफ़ा बाँट सकते हैं। मुझे बस कुछ कागज़ों पर आपकी मुहर चाहिए। अन्यथा, मैं सब कुछ संभाल लूंगा। मैं एक अच्छे वकील को जानता हूँ।"
टेंगो ने एक पल सोचा।
"कोमात्सु-सान, क्या आप मुझे इस साज़िश से बाहर नहीं निकाल सकते? मुझे पैसों की ज़रूरत नहीं है। मुझे 'द एयर क्राइसालिस' लिखने में बहुत मज़ा आया और मैंने इससे बहुत कुछ सीखा। सबसे ज़रूरी बात यह है कि फुकाएरी ने पुरस्कार जीता। मैं उसे प्रेस कॉन्फ्रेंस के लिए तैयार कर लूंगी, मैं किसी तरह इंतज़ाम कर लूंगी। लेकिन मैं सचमुच इस तरह की जटिल योजना में शामिल नहीं होना चाहती। इसे तो संगठित धोखाधड़ी कहा जा सकता है।"
"तेंगो, अब तुम पीछे नहीं हट सकते," कोमात्सु ने कहा। संगठित घोटाला? हाँ, शायद है। तुम ऐसा कह सकते हो। लेकिन तुम यह सब पहले से जानते थे। हमारी योजना फुकाएरी नाम के एक अर्ध-काल्पनिक लेखक के ज़रिए लोगों को ठगने की थी। है ना? ज़ाहिर है, इसमें पैसा शामिल है, और इसे संभालने के लिए हमें एक व्यवस्थित प्रणाली की ज़रूरत है। यह कोई बच्चों का खेल नहीं है। अब डरने और शामिल न होने की बात कहने का समय नहीं है। अगर तुम इस धंधे से बाहर निकलना चाहते थे, तो तुम्हें बहुत पहले ही निकल जाना चाहिए था, जब सब कुछ ठीक चल रहा था। अब बहुत देर हो चुकी है। अनुबंध पर हस्ताक्षर करने के लिए मुझे कुछ नामों की ज़रूरत है, और मैं उन लोगों को शामिल नहीं कर सकता जिन्हें इस बारे में कुछ पता नहीं है। मुझे तुम्हें शामिल करना ही होगा। तुम्हारे शामिल होने से ही काम आगे बढ़ेगा।
टेंगो ने बहुत दिमाग लगाया, लेकिन उसे कोई अच्छा विचार नहीं सूझा।
"मेरा एक सवाल है," उसने कहा। "आपकी बातों से ऐसा लगता है कि प्रोफेसर एबिसुनो भी इस कहानी में पूरी तरह से शामिल हैं। मुझे पता चला है कि उन्होंने एक काल्पनिक कंपनी बनाने पर सहमति दे दी है जिसमें वे फुकाएरी के प्रतिनिधि होंगे।"
— फुकेरी के शिक्षक होने के नाते, प्रोफेसर को सब पता है, वे स्थिति से संतुष्ट हैं और उन्होंने अपनी सहमति दे दी है। आपसे बात करने के बाद मैंने तुरंत उन्हें फोन किया। ज़ाहिर है, उन्हें मैं याद था। वे बस आपसे जानना चाहते थे कि आप मेरे बारे में क्या सोचती हैं। वे आपसे प्रभावित हुए, उन्होंने कहा कि आप लोगों को अच्छी तरह समझती हैं। मुझे आश्चर्य है कि आप मेरे बारे में उनसे क्या कहतीं।

"और इस योजना में शामिल होकर प्रोफेसर एबिसुनो को क्या लाभ होगा? मुझे नहीं लगता कि यह पैसे के बारे में है।"
"बिल्कुल सही। वह कुछ पैसों के लिए इतनी सारी परेशानी उठाने वाला आदमी नहीं है।"
"तो फिर वह इतनी खतरनाक योजना में क्यों शामिल हो रहा है? क्या उसे इससे कुछ फायदा होने वाला है?"
मुझे नहीं पता। वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसके इरादों को समझना असंभव है।
"अगर आप भी उन्हें नहीं पढ़ सकते, तो वे वाकई बहुत गहरे छिपे हुए हैं।"
"हां," कोमात्सु ने कहा। "बाहर से देखने पर वह एक निर्दोष बूढ़ा आदमी लगता है, लेकिन सच्चाई यह है कि आप नहीं जानते कि उसके अंदर क्या छिपा है।"
फुकेरी को इस कहानी के बारे में कितना पता है?
"उसे उसके अंदरूनी मामलों के बारे में कुछ नहीं पता, और उसे जानने की ज़रूरत भी नहीं है। फुकाएरी को प्रोफेसर एबिसुनो पर भरोसा है, और वह तुम्हें पसंद करता है। इसलिए मैं तुमसे एक बार फिर मदद के लिए गुहार लगा रहा हूँ।"
टेंगो ने रिसीवर को दूसरे हाथ में ले लिया। उसे किसी भी तरह स्थिति को संभालना था।
"वैसे, एबिसुनो अब वास्तव में प्रोफेसर नहीं हैं। वे विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त हो चुके हैं और अब लेखन कार्य नहीं करते हैं।"
"हां, उन्होंने अकादमिक जगत से नाता तोड़ लिया था। वे एक महान शोधकर्ता थे, लेकिन ऐसा लगता नहीं था कि वे उस दुनिया से बहुत जुड़े हुए थे। उन्हें संगठन और सत्ता पसंद नहीं थी। वे एक तरह से विधर्मी थे।"
और अब वह क्या कर रहा है?
कोमात्सु ने कहा, "शेयर बाजार।" वह एक निवेश सलाहकार हैं। वह पूंजी जुटाते हैं, उसे एक जगह से दूसरी जगह ले जाते हैं, और इसी से मुनाफा कमाते हैं। वह पहाड़ पर बैठकर तय करते हैं कि क्या बेचना है और क्या खरीदना है। वह असाधारण रूप से कुशल हैं। वह स्थितियों का विश्लेषण करने में माहिर हैं और उनका अपना एक तरीका है। पहले तो उन्होंने इसे शौक के तौर पर शुरू किया, लेकिन जल्द ही यह उनका नया पेशा बन गया। कुछ ऐसा ही। जाहिर है, शेयर बाजार की दुनिया में वह काफी मशहूर हैं। एक बात मैं आपको बता सकता हूं, उनके पास पैसों की कोई कमी नहीं है।
मुझे सांस्कृतिक मानवविज्ञान और शेयर बाजार में ट्रेडिंग के बीच कोई सीधा संबंध नजर नहीं आता।
— सामान्य तौर पर तो कोई संबंध नहीं होता, लेकिन उसके लिए संबंध है।
और आप उसके इरादों को नहीं समझ सकते।
- बिल्कुल।
टेंगो ने अपनी उंगली से अपनी कनपटी को रगड़ा। फिर उसने हार मान ली और कहा:
"कल शाम छह बजे, मैं फुकाएरी से हमेशा की तरह उसी कैफे में मिलूंगा और हम प्रेस कॉन्फ्रेंस के बारे में चर्चा करेंगे। क्या यह ठीक रहेगा?"
"यही तो बात है," कोमात्सु ने कहा। "तेंगो, खुद पर इतना कठोर मत बनो। हालात के साथ चलो। जीवन में ऐसी चीज़ें बार-बार नहीं होतीं। यह एक रोमांचक उपन्यास की खूबसूरत दुनिया है। हर चीज़ के लिए तैयार रहो और बुराई की भरपूर खुशबू का

आनंद लो। हमें बहा ले जाने वाली तेज़ धाराओं का लुत्फ़ उठाओ। इस तरह, कम से कम हम शान से खाई में गिरेंगे।"
*

दो दिन बाद, तेंगो की मुलाकात शिंजुकु के एक कैफे में फुकाएरी से हुई। लड़की ने टाइट जींस और एक पतला सा गर्मियों का स्वेटर पहना हुआ था जिससे उसके स्तन उभरे हुए दिख रहे थे। उसके बाल लंबे और सीधे थे, और उसकी त्वचा बेहद खूबसूरत थी। उसके आसपास के पुरुष उसे लगातार देख रहे थे। तेंगो उनकी निगाहों को महसूस कर सकता था, लेकिन फुकाएरी को इसका एहसास नहीं था। यकीनन, ऐसी लड़की को साहित्यिक पुरस्कार मिलने पर हलचल मच जाएगी।
फुकेरी को पहले से ही पता था कि उपन्यास 'क्राइसालिस ऑफ एयर' ने पुरस्कार जीत लिया है। लेकिन वह खुश या उत्साहित नहीं लग रही थी। उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि वह जीती है या नहीं। हालांकि गर्मी का दिन था, उसने गर्म कोको मंगवाया और कप को दोनों हाथों से पकड़कर बड़ी सावधानी से पिया। उसे प्रेस कॉन्फ्रेंस के बारे में पता नहीं था, लेकिन जब उसे इसके बारे में पता चला तो उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।
— आपको पता ही होगा कि प्रेस कॉन्फ्रेंस क्या होती है, है ना?
“प्रेस कॉन्फ्रेंस,” उसने दोहराया।
अखबारों और पत्रिकाओं के पत्रकार इकट्ठा होते हैं और आपसे तरह-तरह के सवाल पूछते हैं। आप एक मंच पर खड़ी होती हैं। वे आपकी तस्वीरें लेते हैं। हो सकता है कि वे टेलीविजन से भी हों। आपके जवाब पूरे देश के मीडिया में प्रसारित किए जाएंगे। सत्रह साल की लड़की के लिए यह पुरस्कार जीतना असामान्य बात है। यह सनसनीखेज खबर होगी। इसके अलावा, समिति के सदस्यों ने सर्वसम्मति से आपको विजेता चुना है, और यह बात हर किसी की जुबान पर होगी। क्योंकि ऐसा अक्सर नहीं होता।
"मैं सवाल पूछ रही हूँ," फुकेरी ने पूछा।
मैं आपसे सवाल पूछता हूं और आप उनका जवाब देते हैं।
— किस तरह के प्रश्न?
"हर तरह की बातें। उपन्यास के बारे में, आपके बारे में, आपके निजी जीवन के बारे में, शौक के बारे में, भविष्य की योजनाओं के बारे में। शायद बेहतर होगा कि हम इन सब बातों के जवाब अभी से तैयार कर लें।"
- क्यों।
"इस तरह से यह ज़्यादा सुरक्षित है। इससे आप उलझन में नहीं पड़ेंगे या ऐसी कोई बात नहीं कहेंगे जिससे गलतफहमी पैदा हो सकती है। थोड़ी तैयारी करने में आपका कुछ भी नुकसान नहीं है। हम एक तरह का पूर्वाभ्यास कर रहे हैं।"
फुकेरी ने अपनी कोको की चुस्की ली। फिर उसने तेंगो की ओर ऐसे देखा जैसे उसे इन सब बातों की परवाह न हो, लेकिन अगर उसे ज़रूरी लगे तो वह उसे खुश करने के लिए तैयार थी। उसकी निगाहें कभी-कभी उसके शब्दों से भी ज़्यादा प्रभावशाली होती थीं। कम से कम उसकी आँखें एक बार में एक से ज़्यादा वाक्य कह सकती थीं। दुर्भाग्य से, प्रेस कॉन्फ्रेंस में वह सिर्फ़ अपनी आँखों से जवाब नहीं दे सकती थी।

टेंगो ने अपने बैग से एक कागज़ निकाला और उसे खोला। उसने कुछ ऐसे सवाल लिख रखे थे जो उसे लगता था कि सम्मेलन में उससे पूछे जा सकते हैं। पिछली रात उसने बहुत सोच-विचार किया था और काफी समय बर्बाद करके उन्हें लिखा था।
मैं आपसे सवाल पूछ रहा हूं, इसलिए मान लीजिए कि मैं एक पत्रकार हूं।
फुकेरी ने सिर हिलाया।
— क्या आपने अब तक कई उपन्यास लिखे हैं?
"हां," उसने उत्तर दिया।
आपने लिखना कब शुरू किया?
- कब का।
"यह बहुत अच्छा है," टेंगो ने कहा। "संक्षिप्त उत्तर अच्छे होते हैं। अनावश्यक विवरण देने की कोई आवश्यकता नहीं है। मेरा मतलब है, आज़मी ने इसे आपके लिए लिखा है, है ना?"
फुकेरी ने सिर हिलाया।
"आपको उन्हें यह बताने की जरूरत नहीं है। यह एक ऐसा रहस्य है जिसे हम दोनों जानते हैं।"
मैं उन्हें नहीं बता रहा हूँ।
जब आपने प्रतियोगिता के लिए अपनी पांडुलिपि जमा की थी, तो क्या आपको जीतने की उम्मीद थी?
लड़की मुस्कुराई, लेकिन उसने अपना मुंह नहीं खोला। सन्नाटा छाया रहा।
“क्या तुम जवाब नहीं देना चाहते?” टेंगो ने पूछा।
- नहीं।
"बहुत खूब। अगर आप जवाब नहीं देना चाहते तो चुप रहिए। वैसे भी यह एक बेवकूफी भरा सवाल था।"
फुकेरी ने फिर से सिर हिलाया।
— आपको एयर क्राइसालिस का विचार कहाँ से आया?
— अंधी बकरी से।
"आप 'अंधा' नहीं कह सकते," टेंगो ने कहा। "बेहतर होगा कि 'अंधा' कहा जाए।"
- क्यों।
— "अंधा" एक भेदभावपूर्ण शब्द है। अगर पत्रकार इसे सुनें, तो उनमें से कुछ को हल्का दिल का दौरा पड़ सकता है।
— भेदभावपूर्ण शब्द।
"इसे समझाना थोड़ा मुश्किल है। वैसे, क्या आप 'अंधा बकरी' की जगह 'अंधा बकरी' कह सकते हैं?"
फुकेरी कुछ पल चुप रही, फिर बोली:
— अंधी बकरी से।
"यह बहुत अच्छा है," टेंगो ने कहा।
"मैं 'अंधा' नहीं कह सकता," फुकेरी ने उसे आश्वस्त किया।
"बिल्कुल सही। लेकिन जवाब बहुत अच्छा है।"
टेंगो ने सवाल पूछना जारी रखा:
— जब आपके सहपाठियों को पता चला कि आपने यह पुरस्कार जीता है, तो उन्होंने क्या कहा?
मैं स्कूल नहीं जाता।

- क्यों?
मौन।
क्या आप और उपन्यास लिखेंगे?
चुप रहो।
टेंगो ने अपनी कॉफ़ी खत्म की और कप को तश्तरी पर रख दिया। छत में लगे स्पीकरों से तारों पर बजने वाले संगीत की मधुर ध्वनि सुनाई दी। बारिश की बूँदें, गुलाब, बिल्ली के बच्चे की मूंछें...
"मैं गलत जवाब दे रही हूँ," फुकेरी ने पूछा।
"नहीं," टेंगो ने कहा। "बिल्कुल नहीं। यह बहुत अच्छा है।"
- मैं खुश हूं।
टेंगो ईमानदार थी। भले ही वह एक बार में एक वाक्य से ज़्यादा नहीं बोलती थी और विराम चिह्नों का इस्तेमाल नहीं करती थी, फिर भी उसके जवाब एक तरह से एकदम सटीक होते थे। उसे सबसे ज़्यादा पसंद यह था कि वह तुरंत जवाब देती थी। और वह बिना पलक झपकाए, सीधे आँखों में देखकर जवाब देती थी। यही इस बात का सबूत था कि वह ईमानदारी से जवाब दे रही थी। वह दो वाक्यों में जवाब देकर आपका मज़ाक नहीं उड़ाती थी। इसके अलावा, कोई भी उसकी बात पूरी तरह समझ नहीं पाता था। टेंगो की यही इच्छा थी: ईमानदार जवाब देना, लेकिन साथ ही साथ अपने सामने वाले को एक रहस्यमयी धुंध में डुबो देना।
आपको कौन सी किताबें पसंद हैं?
— ताईरा कबीले की कहानी।
यह टेंगो के लिए एक शानदार जवाब जैसा लग रहा था।
"तैरा कबीले की कहानी का कौन सा भाग?"
- कुल
- और कुछ भी?

— प्राचीन काल की कहानियाँ।{9}
— लेकिन आप तो आधुनिक साहित्य बिल्कुल नहीं पढ़ते?
फुकेरी ने एक पल सोचा।
— राज्यपाल संशो।
बहुत बढ़िया! मोरी ओगाई ने यह लघु कहानी 20 वीं शताब्दी के आरंभ में लिखी थी।
उनके अनुसार, इसे ही नव साहित्य कहा जाता था।
आपके शौक क्या-क्या हैं?
मैं संगीत सुन रहा हूँ।
— किस तरह का संगीत?
मुझे बाख पसंद है।
आपको बाख के बारे में सबसे ज्यादा क्या पसंद है? — बीडब्ल्यूवी846 से बीडब्ल्यूवी893 तक।
टेंगो ने थोड़ी देर सोचा, फिर कहा:
— द वेल-टेम्पर्ड क्लैवियर, खंड एक और दो।
- हाँ।
— आप उन्हें कैटलॉग नंबर से क्यों याद रखते हैं? — इस तरह से यह आसान हो जाता है।

— वेल-टेम्पर्ड क्लैवियर गणितज्ञों के लिए दिव्य संगीत है। इसमें क्रोमैटिक स्केल की सभी बारह कुंजियों में, मेजर और माइनर दोनों स्केलों में, प्रील्यूड्स और फ्यूग्स शामिल हैं। कुल चौबीस रचनाएँ हैं। पहले और दूसरे खंड में कुल अड़तालीस रचनाएँ हैं, जो एक पूर्ण चक्र बनाती हैं। आपको और क्या पसंद है?
— बीडब्ल्यूवी244.
टेंगो को तुरंत याद नहीं आया कि BWV244 क्या था। संख्या तो जानी-पहचानी लग रही थी, लेकिन उसे नाम याद नहीं आ रहा था।
फुकेरी ने गाना शुरू किया:

पश्चाताप और प्रायश्चित
पश्चाताप और प्रायश्चित
क्या पापी हृदय दो टुकड़ों में टूट जाता है?
पश्चाताप और प्रायश्चित
पश्चाताप और प्रायश्चित
क्या पापी हृदय दो टुकड़ों में टूट जाता है? क्या पापी हृदय दो टुकड़ों में टूट जाता है? पश्चाताप और प्रायश्चित
पश्चाताप और प्रायश्चित
क्या पापी हृदय दो टुकड़ों में टूट जाता है?
पश्चाताप और प्रायश्चित
क्या पापी हृदय दो टुकड़ों में टूट जाता है?
मेरे आँसुओं की बूँदें
सुखद मसाला
हे प्रभु यीशु, तुम्हें धारण करने के लिए।

टेंगो अवाक रह गया। स्वर उतने सटीक नहीं थे, लेकिन जर्मन उच्चारण स्पष्ट और आश्चर्यजनक रूप से सही था।
"मैथ्यू के अनुसार यीशु का दुख भोगो," उन्होंने कहा। "और गीत के बोल याद रखना!" नहीं, मैं उन्हें नहीं जानता।
टेंगो ने कुछ कहना शुरू किया, लेकिन शब्द व्यर्थ थे। उसने हार मान ली और अपने हाथ में मौजूद नोट्स को देखते हुए अगले प्रश्न की ओर बढ़ गया:
- आपका कोई दोस्त है क्या?
फुकेरी ने अपना सिर हिलाया।
"क्यों नहीं?"
मैं गर्भवती नहीं होना चाहती।
"लेकिन अगर तुम्हारा बॉयफ्रेंड है तो गर्भवती होना ज़रूरी नहीं है।" फुकाएरी ने कुछ नहीं कहा। उसने बस कुछ बार पलकें झपकाईं।
आप गर्भवती क्यों नहीं होना चाहतीं?
फुकेरी चुप रहा। तेंगो को लगा कि उसने मूर्खतापूर्ण सवाल पूछ लिया है।

"चलिए यहीं रुकते हैं," उसने कहा और सूची को अपने बैग में रख लिया। "मुझे नहीं पता कि वे आपसे वास्तव में क्या सवाल पूछेंगे, और आप उन सवालों के जवाब अपनी मर्जी से दे सकते हैं। आप ठीक रहेंगे।"
"यह अच्छी बात है," फुकेरी शांत हो गई।
— इंटरव्यू की तैयारी करना व्यर्थ लगता है, है ना?
फुकेरी ने हल्के से कंधे उचकाए।
"मैं आपके दृष्टिकोण से सहमत हूं। मैंने भी यह अपनी पसंद से नहीं किया। कोमात्सु-सान ने मुझसे ऐसा करने को कहा था।"
फुकेरी ने सिर हिलाया।
टेंगो ने कहा, "बस, मैं चाहता हूं कि आप किसी को भी यह बताना बंद कर दें कि मैंने 'द एयर क्राइसालिस' को दोबारा लिखा है। आप समझ रहे हैं ना?"
फुकेरी ने दो बार सिर हिलाया।
मैंने इसे खुद लिखा है।
"हवा का कोकून बनाना आपका काम है, किसी और का नहीं। यह शुरू से ही स्पष्ट रहा है।"
"मैंने इसे खुद लिखा है," फुकेरी ने दोहराया।
"क्या आपने मेरा संशोधित संस्करण पढ़ा?"
— Mi-a cit-o Azami.
और आपको यह कैसा लगा?
आप बहुत अच्छा लिखते हैं।
— मुझे लगता है कि आपको यह पसंद आया?
— ऐसा लगता है जैसे मैंने ही इसे लिखा हो।
टेंगो ने फुकाएरी की ओर देखा। लड़की ने कोको का प्याला उठाया और पी लिया। टेंगो ने अपनी नज़रें उसके खूबसूरत स्तनों से हटाने की कोशिश की।
उन्होंने कहा, "यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। मुझे 'द एयर क्राइसालिस' पर काम करने में बहुत आनंद आया। लेकिन मैंने यह सुनिश्चित करने के लिए भी कड़ी मेहनत की कि यह पूरी तरह से आपका ही काम रहे। इसलिए यह महत्वपूर्ण था कि आपको भी अंतिम परिणाम पसंद आया।"
फुकेरी ने चुपचाप सिर हिलाया। फिर, मानो कुछ जाँच रही हो, उसने अपने सुंदर कानों पर हाथ रख लिए।
वेट्रेस आई और उनके गिलासों में ठंडा पानी डाला। टेंगो ने गले को तर करने के लिए पानी का एक घूंट लिया। फिर उसने गहरी सांस ली और उस विचार को ज़बान पर लाया जो कुछ समय से उसके मन में घूम रहा था:
मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ। बेशक, अगर आप सहमत हों तो।
- क्या वास्तव में?
— यदि संभव हो, तो आज प्रेस कॉन्फ्रेंस में आपने जो कपड़े पहने थे, वही कपड़े पहनें।
फुकाएरी ने असमंजस भरी नजरों से टेंगो को देखा। फिर उसने अपने पहने हुए कपड़ों को एक-एक करके देखा, मानो उसे अब तक पता ही न चला हो कि उसने क्या पहना हुआ है।
"क्या मुझे इन्हें वहां पहनना चाहिए?" उसने पूछा।
— जी हाँ। प्रेस कॉन्फ्रेंस में ये कपड़े पहनकर आइए।

- क्यों।
— क्योंकि ये आप पर बहुत अच्छे लगते हैं। मेरा मतलब है, इनसे आपकी छाती बहुत अच्छी दिखती है, और अगर रिपोर्टर इसे इस तरह देखेंगे, तो वे आपसे ज़्यादा मुश्किल सवाल नहीं पूछेंगे। कम से कम मेरा तो यही मानना है। अगर आप सहमत नहीं हैं, तो कोई बात नहीं। मैं आपको ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं करना चाहता। "अज़ामी हमेशा मेरे कपड़े चुनती है," फुकेरी ने कहा।
"क्या आप उन्हें खुद नहीं चुनते?"
मुझे इस बात की परवाह नहीं है कि मैं क्या पहनती हूँ।
— और आज भी, क्या आज़मी उन्हें आपके लिए फिट कर पाती है?
— जी हां, मैक्सामी।
— ये आप पर बहुत अच्छे लग रहे हैं।
"क्या मेरे स्तन अच्छे दिखते हैं?" उसने अपने हमेशा के सपाट स्वर में पूछा।
— जी हाँ, मैं आपको कैसे बताऊँ, वे सबसे अलग हैं।
— यह स्वेटर ब्रा के साथ अच्छा लगेगा।
फुकेरी की निगाहों को घूरते हुए, टेंगो के गाल लाल हो गए।
उन्होंने कहा, "मुझे नहीं पता कि वे मेल खाते हैं या नहीं, लेकिन किसी भी मामले में, परिणाम अच्छा है।"
फुकाएरी लगातार टेंगो को घूरती रही। फिर उसने गंभीरता से पूछा:
आपकी निगाहें उनसे हट जाती हैं।
"हाँ, मुझे यह स्वीकार करना होगा," टेंगो ने सोच-समझकर शब्दों का चयन करते हुए उत्तर दिया।
फुकेरी ने उसके स्वेटर का कॉलर खींचा और अंदर झाँककर देखा। शायद वह यह देख रहा था कि उसने कौन सी ब्रा पहनी है। फिर उसने तेंगो की तरफ देखा, जो केकड़े की तरह लाल हो गया था, मानो वह कोई अजीब प्राणी हो।
कुछ देर बाद उसने कहा, "मैं वैसा ही करूंगा जैसा आप कहेंगे।"
"धन्यवाद," टेंगो ने कहा, और यहीं उनकी मुलाकात समाप्त हो गई।
*

टेंगो उसे शिंजुकु स्टेशन तक ले गया। कई लोग अपने मोटे कपड़े उतार चुके थे। कुछ लड़कियाँ छोटी आस्तीन वाली शर्ट में भी नज़र आ रही थीं। लोगों की चहल-पहल और गाड़ियों का शोर महानगर के शोर में घुलमिल गया था। गर्मियों की शुरुआत की ताज़ी हवा सड़कों पर बह रही थी। लेकिन शिंजुकु की सड़कों पर इतनी सुखद महक वाली यह हवा कहाँ से आ रही थी? टेंगो को यह अजीब लगा।
“क्या तुम अब घर जा रही हो?” तेंगो ने फुकाएरी से पूछा। ट्रेनें खचाखच भरी थीं और मंज़िल तक पहुँचने में काफी समय लग जाता।
फुकेरी ने अपना सिर हिलाया।
— शिनानोमाची में मेरा एक घर है।
जब देर हो जाती है, तो क्या आप रात भर वहीं रुकते हैं?
फुटामाताओ बहुत दूर है।
स्टेशन तक पूरे रास्ते, फुकाएरी ने पिछली बार की तरह ही तेंगो का हाथ थामे रखा, जैसे कोई बच्चा किसी बड़े से लिपटा हो। इतनी खूबसूरत लड़की के साथ चलते हुए तेंगो का दिल ज़ोर से धड़कने लगा।

स्टेशन पहुँचकर, फुकाएरी ने उसे जाने दिया और मशीन से शिनानोमाची के लिए टिकट खरीदा।
"प्रेस कॉन्फ्रेंस की चिंता मत करो," फुकेरी ने उससे कहा।
- मैं नहीं।
सब ठीक हो जाएगा।
"मुझे पता है," टेंगो ने कहा। "मुझे चिंता नहीं है, मुझे यकीन है कि सब ठीक हो जाएगा।"
और कुछ कहे बिना, फुकाएरी प्लेटफार्मों की ओर बढ़ रही लोगों की भीड़ में गायब हो गई।
*

फुकेरी से विदा होने के बाद, टेंगो किनोकुनिया किताबों की दुकान के बगल में एक छोटे से बार में गया और जिन और टॉनिक का ऑर्डर दिया। वह कभी-कभार यहाँ आता था। उसे यहाँ की पुरानी सजावट और संगीत का न होना अच्छा लगता था। वह काउंटर पर अकेला बैठ गया और बिना कुछ सोचे-समझे कुछ देर तक अपने बाएं हाथ को देखता रहा। यही वह हाथ था जिसे फुकेरी ने पकड़ा था। उसकी उंगलियों की याद अब भी उसकी हथेली में बसी हुई थी। फिर उसे उसके स्तनों का आकार याद आया। वे बहुत सुंदर थे। इतने सुंदर और सुडौल कि उनमें कामुकता का कोई अंश ही नहीं रह गया था।
ये सोचते हुए टेंगो को अपनी प्रेमिका से फोन पर बात करने का मन हुआ। उसे उससे कोई ज़रूरी बात नहीं करनी थी। कुछ भी हो सकता था—बच्चों की शिकायत, नाकासोन सरकार का समर्थन, कुछ भी। बस वो उसकी आवाज़ सुनने के लिए बेताब था। अगर मुमकिन होता, तो वो उससे तुरंत मिलना चाहता और उसके साथ कहीं जाकर सोना चाहता। लेकिन वो उसे घर पर फोन नहीं कर सकता था, क्योंकि हो सकता है उसका पति फोन उठा ले। या फिर कोई बच्चा फोन उठा ले। उसने कभी उसे फोन नहीं किया था। यही उनका नियम था। टेंगो ने एक और जिन और टॉनिक का ऑर्डर दिया, और अपने ऑर्डर का इंतज़ार करते हुए उसने कल्पना की कि वह एक छोटी नाव में तेज़ धाराओं के साथ बहता जा रहा है। "कम से कम हम शान से खाई में गिर सकते हैं," कोमात्सु ने फ़ोन पर कहा था। लेकिन क्या वह उसकी बात पर भरोसा कर सकता था? क्या कोमात्सु गिरने से ठीक पहले पास की किसी चट्टान से कूद गया था? "टेंगो, मुझे माफ़ करना, मुझे याद आया कि मुझे कुछ काम निपटाना था। तुम खुद कर लो," वह कहेगा। टेंगो नाव में अकेला रह जाएगा और बिना किसी बचाव के, शान से खाई में गिर जाएगा। यह मुमकिन था। हालांकि, यह नामुमकिन नहीं था। असल में, इसकी काफ़ी संभावना थी।
*

टेंगो ने बहुत समय से कोई सपना नहीं देखा था, लेकिन उस रात उसे एक बहुत ही स्पष्ट सपना आया। ऐसा लग रहा था मानो वह एक विशाल पहेली का एक छोटा सा टुकड़ा हो। लेकिन वह एक स्थिर टुकड़ा नहीं था, बल्कि पल-पल अपना आकार बदल रहा था। इसीलिए वह कहीं भी ठीक से फिट नहीं हो रहा था। इसके अलावा, सही जगह ढूंढने के लिए उसे जितना समय मिला था, उतने ही समय में उसे टिम्पानी के नोट्स भी इकट्ठा करने थे। तेज़ हवा से वे चारों ओर बिखर गए थे, और उसने उन्हें एक-एक करके इकट्ठा किया। फिर उसे पृष्ठ संख्या देखकर उन्हें क्रम में लगाना था। इस बीच, वह अमीबा की तरह अपना आकार बदलता रहा। वह अब और बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था। तभी, फुकाएरी कहीं से प्रकट हुई और उसका हाथ पकड़ लिया। तब टेंगो का आकार बदलना बंद हो गया। हवा अचानक रुक गई और नोट्स अपनी जगह पर स्थिर हो गए। कितना

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] "[illegible] [illegible] [illegible]," [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अध्याय 17 चाहे हम खुश हों या नहीं

अगली शाम, आकाश में दो चाँद अभी भी दिखाई दे रहे थे। बड़ा चाँद वही पुराना चाँद था। उसका रंग कुछ अजीब सा सफ़ेद था, मानो वह राख के पहाड़ से गुज़रा हो, लेकिन उस बात को छोड़ दें तो, वह वही पुराना और जाना-पहचाना चाँद था, जिस पर नील आर्मस्ट्रांग ने 1969 की उस गर्म गर्मी में अपना पहला कदम रखा था, छोटा लेकिन विशाल। और उसके बगल में छोटा चाँद था, हरा और विकृत। वह हवा में तैर रहा था, बड़े चाँद के पास शरमाते हुए, मानो कोई अपूर्ण बच्चा हो।
आओमामे ने सोचा, मेरे साथ कुछ तो हुआ होगा। हमेशा से एक ही चंद्रमा रहा है, और अब भी एक ही होना चाहिए। अगर अचानक दूसरा चंद्रमा प्रकट हो जाए, तो पृथ्वी पर जीवन में निश्चित रूप से कई बड़े बदलाव आएंगे। उतार-चढ़ाव पूरी तरह से बदल जाएगा, और यह मानवता के लिए एक बड़ी घटना होगी। मैं इसे नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती। यह तो बस गलती से कुछ अखबार के लेख गिरा देने जैसा नहीं है।
लेकिन क्या सचमुच ऐसा है? क्या मैं यह बात सौ प्रतिशत निश्चितता के साथ कह सकता हूँ?
ओमामे काफी देर तक भौंहें चढ़ाए बैठी रही। उसने सोचा, आजकल मेरे आस-पास अजीबोगरीब चीजें हो रही हैं। दुनिया मेरी जानकारी के बिना ही एक अलग दिशा में जा रही है। जैसे किसी खेल में, जहां सब तभी चल सकते हैं जब मेरी आंखें बंद हों। और अगर ऐसा है, तो आकाश में दो चंद्रमाओं का दिखना कोई अजीब बात नहीं है। शायद, किसी समय, जब मेरा मन शांति से सो रहा था, तब यह ब्रह्मांड की गहराइयों से कहीं प्रकट हुआ, हमारे चंद्रमा के किसी दूर के रिश्तेदार जैसा दिखता हुआ, और पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र में रहने का फैसला कर लिया।
पुलिस के पास नई वर्दी और हथियार हैं। पहाड़ों की गहराई में, यामानाशी में, पुलिस और एक चरमपंथी समूह के बीच गंभीर सशस्त्र संघर्ष हुआ। यह सब मेरी जानकारी के बिना हुआ। और यह भी खबर आई थी कि अमेरिका और सोवियत संघ ने मिलकर चंद्रमा पर एक सैन्य अड्डा बनाया है। क्या इसका इस बात से कोई संबंध हो सकता है कि अब केवल एक ही चंद्रमा नहीं है? आओमामे ने पुस्तकालय के अखबारों में नए चंद्रमा के बारे में कोई लेख पढ़ने की कोशिश की, लेकिन उसे कुछ याद नहीं आया। अगर वह किसी से पूछ पाती तो बेहतर होता, पर उसे समझ नहीं आ रहा था कि किससे पूछे और कैसे पूछे। वह इस विषय पर कैसे बात शुरू करती? "अरे, आसमान में दो चांद हैं, क्या तुम उन्हें देखने आना चाहोगे?" चाहे वह किसी भी तरह से पूछती, सवाल बेवकूफी भरा ही होता। अगर सच में एक और चांद होता, तो यह अजीब होता कि उसे पहले से पता नहीं था, और अगर हमेशा की तरह सिर्फ एक ही चांद होता, तो लोग उसे पागल ही समझते।
फोल्डिंग कुर्सी पर बैठी, पैर रेलिंग पर रखे, आओमामे मन ही मन दस संभावित प्रश्न सोच रही थी। उसने उन्हें ज़ोर से भी कहा। लेकिन हर एक प्रश्न उतना ही मूर्खतापूर्ण लग रहा था। बस यही बात थी। स्थिति इतनी असामान्य थी कि वह इसके बारे में कोई तार्किक प्रश्न नहीं पूछ सकती थी। यह स्पष्ट था।

ओमामे ने स्थिति का जायजा लेने तक दूसरे महीने के मुद्दे को फिलहाल टालने का फैसला किया। फिलहाल, उसे इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता था। और कौन जाने, शायद एक दिन उसे एहसास हो कि यह मुद्दा अब मौजूद ही नहीं है।
*

अगले दिन, दोपहर के भोजन के बाद, वह हिरोओ स्पोर्ट्स क्लब गई, जहाँ उसने मार्शल आर्ट की दो कक्षाएं और एक निजी पाठ पढ़ाया। वह रिसेप्शन पर रुकी और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गई कि उसे उस महिला का संदेश मिला है। उसने उनसे अनुरोध किया कि जब भी उन्हें समय मिले, वे उनसे संपर्क करें।
हमेशा की तरह, तामारू ने फोन उठाया।
"क्या मैं आपसे कल आने का अनुरोध कर सकता हूँ? कार्यक्रम हमेशा की तरह ही रहेगा, लेकिन उसके बाद अगर आप सादा भोजन करने के लिए रुक सकें तो हमें खुशी होगी," तामारू ने उससे कहा।
ओमामे ने जवाब दिया कि वह चार बजे के बाद रवाना होगी और उसे रात के खाने के लिए रुकने में खुशी होगी।
"बहुत बढ़िया," तामारू ने कहा। "तो हम कल शाम चार बजे के बाद मिलेंगे।"
सुनिए, तामारू-सान, क्या आपने हाल ही में तारों को देखा है?
"तारों की ओर?" तामारू ने पूछा। आकाश के तारों की ओर?
- हाँ।
"मुझे याद नहीं आ रहा कि मैंने हाल ही में ऐसा कुछ किया हो। क्या उनमें कुछ गड़बड़ है?"
"नहीं, कुछ खास नहीं," आओमामे ने कहा। "ठीक है, कल चार बजे के बाद।"
तामारू ने एक पल इंतजार किया, फिर फोन काट दिया।
*

उस शाम आकाश में दो चाँद थे। दोनों दो दिनों से घट रहे थे। हाथ में ब्रांडी का गिलास लिए, आओमामे उन दोनों चाँदों को काफी देर तक देखती रही, मानो वे कोई अनसुलझी पहेली हों। जितना ज़्यादा वह उन्हें देखती, उतना ही यह मेल उसे रहस्यमय लगता। अगर वह कर पाती, तो वह सीधे चाँद से ही पूछ लेती, "तुम्हें यह छोटा हरा साथी अचानक कहाँ से मिल गया?" लेकिन ज़ाहिर है, चाँद सवालों के जवाब नहीं देता।
वह सबसे लंबे समय से पृथ्वी को दूर से देख रही है। उसने पृथ्वी पर घटित सभी घटनाओं और परिघटनाओं को देखा है। लेकिन वह चुप है। वह अपने भीतर इस दमनकारी अतीत को ठंडे और संशयपूर्ण ढंग से लिए बैठी है। चंद्रमा पर न हवा है, न पवन, केवल एक निर्वात है जो यादों को बरकरार रखने के लिए बनाया गया है। कोई भी उसके दिल को नरम नहीं कर सकता। आओमामे उसके सम्मान में अपना गिलास उठाती है। "क्या तुमने हाल ही में किसी की बाहों में सोया है?" उसने पूछा।
कोई जवाब नहीं।
- क्या आपके पास दोस्त हैं?
कोई जवाब नहीं।
क्या आप इस तरह ठंडे और उदासीन जीवन से थक नहीं गए हैं?
कोई जवाब नहीं।
*

हमेशा की तरह, तमारू ने प्रवेश द्वार पर उसका अभिवादन किया।

"मैंने कल रात आसमान की तरफ देखा था, तुम्हें पता है ना," तामारू ने कहना शुरू किया।
- हाँ?
"जबसे मैंने आपसे बात की है, मैं इसके बारे में सोच रहा हूँ। मैंने बहुत समय से तारों को नहीं देखा है, और वे बहुत सुंदर हैं। वे आपको शांति का एहसास देते हैं।"
क्या आपने अपने बॉयफ्रेंड के साथ उनकी प्रशंसा की?
"हाँ," तामारू ने अपनी नाक में उंगली दबाते हुए कहा। "क्या तारों के बारे में कुछ था?"
"नहीं, कुछ नहीं," आओमामे ने सोच-समझकर शब्दों का चयन करते हुए उत्तर दिया। "मैं आजकल तारों के बारे में ही सोच रही हूँ।"
"बिना किसी कारण के, ऐसे ही?"
— जी हाँ, बिना किसी विशेष कारण के।
तामारू ने बिना कुछ कहे सिर हिलाया। मानो उसे कुछ आभास हो गया हो। वह ऐसा व्यक्ति था जो निराधार बातों पर विश्वास नहीं करता था। लेकिन उसने उससे सवाल करना बंद कर दिया और हमेशा की तरह उसे बरामदे में ले गया। वह महिला व्यायाम के कपड़ों में एक कुर्सी पर बैठी, जॉन डाउलैंड का गीत 'लाक्रिमाए' सुन रही थी। यह उसका पसंदीदा गीत था। उसने यह गीत आओमामे को कई बार सुनाया था और उसे इसकी धुन पहचान में आ गई थी।
"आपको इतनी देर से फोन करने के लिए क्षमा करें," महिला ने कहा। "मुझे पहले ही अपॉइंटमेंट ले लेना चाहिए था, लेकिन अचानक मेरा शेड्यूल खाली हो गया।"
"मेरी चिंता मत करो," आओमामे ने जवाब दिया।
तामारू एक ट्रे में हर्बल चाय का एक बर्तन लेकर आई और उसे दो सुंदर प्यालों में डाला। फिर वह कमरे से बाहर चली गई और दरवाजा बंद कर दिया। आओमामे और लेडी ने चुपचाप चाय का आनंद लिया, बगीचे में खिले हुए रोडोडेंड्रोन के फूलों की खूबसूरती निहारते हुए और डाउलैंड का गाना सुनते हुए। आओमामे ने सोचा, "जब भी मैं यहाँ आती हूँ, मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं किसी दूसरी दुनिया में हूँ। यहाँ की हवा में एक अलग ही ऊर्जा है। और समय एक खास ढंग से बहता है।"
"जब मैं यह संगीत सुनती हूँ, तो कभी-कभी मुझे समय के बारे में एक अजीब सी अनुभूति होती है," उस महिला ने कहा, मानो उसने अनुमान लगा लिया हो कि आओमामे क्या सोच रही है। "इस बात के बारे में कि चार सौ साल पहले लोग ठीक वही संगीत सुनते थे जो हम आज सुनते हैं। क्या इस नज़रिए से देखना अजीब नहीं लगता?" "बिल्कुल सही," आओमामे ने जवाब दिया। "लेकिन अगर ऐसा है, तो चार सौ साल पहले के लोग भी वही तारे देखते थे जो हम आज देखते हैं।"
उस महिला ने थोड़ी हैरानी से आओमामे की ओर देखा, फिर सिर हिलाया।
— बिलकुल सही। आप बिल्कुल सही हैं। अगर हम इस नज़रिए से देखें, तो इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है कि हम हर चार शताब्दियों में एक ही तरह का संगीत सुनते हैं।
— या यूं कहें कि लगभग वही सितारे।
ओमामे ने महिला के चेहरे की ओर देखा, लेकिन उनके शब्दों से कोई दिलचस्पी पैदा नहीं हुई।

"इस सीडी पर जो रिकॉर्डिंग है, वह भी पुराने ज़माने की प्रस्तुति है," उस महिला ने कहा। "इसमें इस्तेमाल किए गए वाद्ययंत्र उस समय के ही थे, और संगीत भी उस समय की परंपराओं के अनुसार ही बजाया गया था। दूसरे शब्दों में कहें तो, संगीत आज भी वैसा ही लगता है जैसा उस समय लगता था। और सितारे भी वैसे ही दिखते हैं।"
"लेकिन शायद लोगों का नज़रिया बदल गया है, भले ही चीज़ें वही हों," आओमामे ने कहा। शायद उस समय रात का अंधेरा ज़्यादा गहरा होता था, और तारे ज़्यादा बड़े और चमकदार होते थे। और हाँ, लोगों के पास रिकॉर्ड, कैसेट या सीडी नहीं होती थीं। वे जब चाहें, अच्छे संगीत का लुत्फ़ नहीं उठा सकते थे। वह अपने आप में एक खास बात थी।
"आप सही कह रहे हैं," महिला ने स्वीकार किया। "हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जहाँ सब कुछ हमारी उंगलियों पर है, यही कारण है कि हम कम ग्रहणशील हो गए हैं। भले ही आकाश में तारे एक जैसे हों, फिर भी हमें कुछ अलग दिखाई दे सकता है। चार सदियाँ बीत जाने के बाद, हमारी आत्माएँ प्रकृति के अधिक करीब और समृद्ध थीं।" लेकिन यह एक दयनीय दुनिया थी। आधे से ज़्यादा बच्चे महामारियों या कुपोषण से मर जाते थे। लोग पोलियो, तपेदिक, चेचक या रूबेला जैसी बीमारियों से मरते थे। चालीस साल से ज़्यादा उम्र के आम लोग मुश्किल से मिलते थे। औरतें बहुत सारे बच्चे पैदा करती थीं और तीस साल की उम्र तक उनके दांत गिर जाते थे और वे बूढ़ी औरतों जैसी दिखने लगती थीं। गुज़ारा करने के लिए लोगों को अक्सर हिंसा का सहारा लेना पड़ता था। बच्चों से छोटी उम्र से ही कठिन श्रम करवाया जाता था, जिससे उनकी हड्डियाँ टूट जाती थीं, और हर जगह किशोर वेश्याओं की भरमार थी। या कहें कि किशोरियों की। ज़्यादातर लोग जीवन-यापन के लिए संघर्ष करते थे, ऐसी दुनिया में जहाँ ग्रहणशीलता या आध्यात्मिक समृद्धि का कोई स्थान नहीं था। सड़कें बीमारों, भिखारियों और अपराधियों से भरी रहती थीं। बहुत कम लोग ऐसे थे जो तारों को निहार सकते थे, शेक्सपियर के नाटकों की प्रशंसा कर सकते थे या डाउलैंड का सुंदर संगीत सुन सकते थे।
महिला मुस्कुराई।
आप एक बेहद दिलचस्प व्यक्ति हैं।
"मैं बाकी सब लोगों की तरह एक सामान्य इंसान हूं। मुझे बस पढ़ना अच्छा लगता है। खासकर इतिहास की किताबें।"
मुझे भी इतिहास पसंद है। इतिहास की किताबें हमें यही सिखाती हैं कि हम मूल रूप से आज भी वैसे ही हैं जैसे पहले थे। हमारे पहनावे और जीवनशैली में अंतर है, लेकिन हमारी सोच और कर्म लगभग एक जैसे ही हैं। आखिर, मनुष्य तो बस जीनों का एक माध्यम है, परिवर्तन का एक ज़रिया है। जीन एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में ऐसे जाते हैं जैसे किसी सजे-धजे घोड़े को दूसरे से बदला जाता है। वे अच्छे-बुरे के बारे में नहीं सोचते। उन्हें इस बात की परवाह नहीं कि हम खुश हैं या नहीं, क्योंकि हम तो बस एक ज़रिया हैं। उन्हें बस यही फ़िक्र होती है कि वे ज़्यादा से ज़्यादा कुशलता से काम कर सकें।
"फिर भी, हम अच्छे और बुरे के बारे में सोचने से खुद को रोक नहीं पाते। क्या आपका यही मतलब है?"
महिला ने सिर हिलाया।

"बिल्कुल सही। लोगों को इस बात को ध्यान में रखना होगा। और फिर भी, हमारे जीने का तरीका जीन पर निर्भर करता है। तो, जाहिर है, यहाँ एक विरोधाभास है," उसने मुस्कुराते हुए कहा।
इतिहास पर बातचीत यहीं समाप्त होती है। दोनों ने अपनी चाय खत्म की और मार्शल आर्ट की क्लास शुरू की।
*

उस दिन, आओमामे ने विलो कॉटेज में हल्का भोजन किया।
"यह तो बस एक साधारण भोजन है, क्या आपको वाकई कोई आपत्ति नहीं है?" महिला ने पूछा।
- बिलकुल नहीं।
तामारू एक ठेले पर खाना लेकर आया। खाना एक रसोइए ने बनाया था, लेकिन परोसने का काम भी उसी का था। तामारू ने वाइन शेकर से बोतल निकाली और बड़ी कुशलता से गिलासों में डाली। महिला और आओमामे ने उसे चखा। वह सुगंधित और एकदम ठंडी थी। खाने में उबली हुई शतावरी, नीस सलाद और केकड़े का आमलेट, साथ ही मक्खन लगे ब्रेड थे। सभी सामग्रियां ताज़ी और स्वादिष्ट थीं, और खाना भरपूर था। महिला हमेशा बहुत कम खाती थी। वह चिड़िया की तरह छोटे-छोटे निवाले लेती थी, और बड़ी सलीके से चाकू और कांटे का इस्तेमाल करती थी। इस पूरे समय, तामारू कमरे के सबसे दूर कोने में एकांत में बैठा रहा।
ओमामे को हमेशा इस बात पर हैरानी होती थी कि इतने कद का आदमी इतने लंबे समय तक किसी की नजरों में कैसे आ सकता है।
भोजन के दौरान दोनों ने ज्यादा बातचीत नहीं की। दोनों का ध्यान भोजन पर केंद्रित था। संगीत धीमी आवाज़ में बज रहा था। हेडन का एक सेलो कॉन्सर्टो, जो उस महिला का एक और पसंदीदा संगीत था।
खाना खत्म होने के बाद कॉफी आ गई। तमारू ने उसे कपों में डाला, और महिला ने उसकी ओर उंगली उठाई।
"धन्यवाद, इतना ही काफी है," उसने उससे कहा।
तामारू ने हल्का सा सिर हिलाया और हमेशा की तरह बिना कदमों की आहट के कमरे से बाहर निकल गया। दरवाजा धीरे से बंद हो गया। जब वे अपनी कॉफी पी रहे थे, तभी संगीत बंद हो गया और फिर से सन्नाटा छा गया।
"हम एक-दूसरे पर भरोसा करते हैं, है ना?" महिला ने आओमामे की आंखों में सीधे देखते हुए कहा।
आओमामे ने संक्षिप्त रूप से सिर हिलाया, लेकिन बिना किसी संकोच के।
"हम एक बड़ा रहस्य साझा करते हैं," उसने आगे कहा। "एक तरह से, हम एक-दूसरे को एक-दूसरे के भरोसे छोड़ देते हैं।"
ओमामे ने चुपचाप एक बार फिर सिर हिलाया।
*

जब उसने उसे अपना रहस्य बताया था, तब वे दोनों एक ही कमरे में थे। आओमामे को वह समय अच्छी तरह याद था। उसे लगा कि उसे किसी को अपने दिल पर पड़े बोझ को कबूल करना ही होगा, कि वह अपनी सीमा तक पहुँच चुकी है और उस रहस्य को अपने अंदर छिपाकर जीने की पीड़ा अब और सहन नहीं कर सकती। जब उस महिला ने उसकी ज़बान बंद करने की कोशिश की, तो उस रहस्य के द्वार, जो लंबे समय से बंद थे, अचानक खुल गए।

उसने उसे अपनी सबसे अच्छी दोस्त के बारे में बताया था, जिसे उसके पति ने कई सालों तक प्रताड़ित किया था, जिससे वह मानसिक रूप से अस्थिर हो गई थी, उसे कोई रास्ता नहीं सूझा था और बहुत कष्ट सहने के बाद उसने अपनी जान ले ली थी। लगभग एक साल बाद, आओमामे ने उस आदमी से मिलने का बहाना बनाया और फिर ऐसी व्यवस्था की कि वह उसके सिर के पिछले हिस्से में सुई चुभोकर उसे मार डाले। एक ही वार में, बिना कोई निशान छोड़े, बिना खून बहाए। मौत का कारण एक साधारण बीमारी बताया गया। किसी को शक नहीं हुआ। आओमामे को नहीं लगा था कि उसने कुछ गलत किया है, और अब भी उसे ऐसा नहीं लगता। उसे कोई अपराधबोध नहीं था। लेकिन इससे जानबूझकर किसी आदमी की जान लेने का बोझ कम नहीं हो जाता।
उस महिला ने उसका लंबा बयान सुना। वह चुपचाप सुनती रही जब तक कि उसने लड़खड़ाते कदमों से सारी घटना नहीं बता दी। जब आओमामे ने अपनी कहानी खत्म कर ली, तो उसने उससे कुछ अस्पष्ट बातों के बारे में कुछ सवाल पूछे। फिर वह उसकी ओर झुकी और काफी देर तक उसका हाथ कसकर पकड़े रही।
"तुमने सही किया," उसने उसे साफ-साफ कहा था। अगर वह आदमी ज़िंदा रहता, तो वह दूसरी औरतों के साथ भी ठीक यही करता। उसके जैसे लोग हमेशा शिकार ढूंढ लेते हैं। वे बार-बार वही काम दोहराते हैं। बुराई को जड़ से उखाड़ फेंकना ज़रूरी है। यह सिर्फ़ निजी बदला नहीं था। शांत रहो।
ओमामे कुछ देर तक सिर हाथों में लिए रोती रही। वह तामाकी के लिए रो रही थी। उस महिला ने रुमाल लेकर उसके आंसू पोंछे।
"यह एक अजीब संयोग है," उसने शांत, दृढ़ स्वर में कहा। "लेकिन मैंने लगभग इन्हीं कारणों से एक आदमी को गायब कर दिया था।"
आओमामे ने अपना सिर उठाया और उसकी तरफ देखा। उसे शब्द नहीं सूझ रहे थे। उसका मतलब क्या था?
— "बेशक, मैंने ये सीधे अपने हाथों से नहीं किया," महिला ने आगे कहा। "मेरे पास उतनी शारीरिक शक्ति नहीं है और न ही आपके जैसी कोई खास तकनीक। मैंने उसे गायब करने के लिए हर संभव कोशिश की। लेकिन मेरे पास कोई ठोस सबूत नहीं है। इसके विपरीत, अगर मैं खुद को दोषी भी ठहरा दूं, तो भी कुछ साबित करना नामुमकिन होगा। जैसे आपके मामले में है। अगर मृत्यु के बाद अंतिम न्याय होता है, तो ईश्वर ही मेरा न्याय करेंगे। लेकिन मुझे ज़रा भी डर नहीं है। मैंने कुछ भी गलत नहीं किया है। और मैं ये बात सबके सामने ज़ोर-ज़ोर से कहती हूं।"
राहत की सांस लेते हुए महिला ने आगे कहा:
"और अब हम एक-दूसरे का राज जान गए हैं। है ना?"
हालांकि, आओमामे को अभी भी पूरी तरह समझ नहीं आया था कि उस महिला का क्या मतलब था। क्या उन्होंने ही उसे गायब किया था? उसके चेहरे पर संदेह और गहरे सदमे के भाव उभर आए थे। उसे आश्वस्त करने के लिए, उस महिला ने शांत स्वर में उसे सब कुछ समझाया।
*

उनकी बेटी ने भी तमाकी की तरह ही आत्महत्या कर ली थी। उसने गलत व्यक्ति से शादी कर ली थी। महिला को शुरू से ही पता था कि उनकी शादी ठीक नहीं चल रही है। उनकी नज़र में, यह स्पष्ट था कि उस व्यक्ति का स्वभाव विकृत था। उसने अतीत में भी कई समस्याएं खड़ी की थीं, और उनकी जड़ें गहरी थीं। लेकिन कोई भी उन्हें शादी करने से नहीं रोक पाया था। जैसा कि अपेक्षित था, हिंसा की घटनाएं जारी

रहीं। धीरे-धीरे, उनकी बेटी ने अपना आत्मसम्मान और आत्मविश्वास खो दिया, उसे सताया जाने लगा और वह अवसाद में डूब गई। उसकी स्वतंत्रता छीन ली गई थी और मकड़ी के जाले में फंसी मक्खी की तरह, वह बच नहीं पाई। और एक दिन उसने व्हिस्की के साथ मुट्ठी भर नींद की गोलियां निगल लीं।
पोस्टमार्टम से उसके शरीर पर हिंसा के निशान मिले। पिटाई के निशान, टूटी हड्डियाँ और अनगिनत सिगरेट से जले हुए निशान। दोनों कलाइयाँ इस बात का सबूत थीं कि उसे कसकर बाँधा गया था। ऐसा लगता है कि वह आदमी रस्सियों का इस्तेमाल करना पसंद करता था। उसके निपल्स विकृत थे। पति को पुलिस के पास बुलाया गया और उससे पूछताछ की गई। उसने कुछ हद तक हिंसा करने की बात स्वीकार की, लेकिन केवल पत्नी की सहमति से और यौन क्रिया के हिस्से के रूप में, और यहाँ तक कि उसने यह भी कहा कि उसकी पत्नी को इसमें आनंद आता था।
अंततः, तामाकी के मामले की तरह ही, पुलिस उसके पति को कानूनी रूप से जिम्मेदार नहीं ठहरा सकी। उसने पुलिस में कोई शिकायत दर्ज नहीं कराई थी, और अब तो उसकी मृत्यु हो चुकी थी। उसके पति का सामाजिक रुतबा था और उसके पास एक सक्षम वकील भी था। इसके अलावा, इसमें कोई संदेह नहीं था कि यह आत्महत्या का मामला था।
"क्या तुमने उस आदमी को मार डाला?" आओमामे ने अचानक पूछा।
नहीं, मैंने उसे नहीं मारा।
ओमामे चुपचाप उसे देखती रही, कुछ समझ नहीं पा रही थी।
"मेरी बेटी का पूर्व पति, वह नीच आदमी, अभी भी जीवित है। वह हर सुबह बिस्तर से उठता है और अपने पैरों पर चलता है। और मेरा उसे मारने का कोई इरादा नहीं है।" वह महिला कुछ देर के लिए रुकी, और आओमामे के मन में अपनी बात को अच्छी तरह से समझने का इंतजार करने लगी।
मैंने अपने पूर्व दामाद के साथ जो किया, वो उसे हमेशा के लिए तबाह करना था। उसे पूरी तरह से बर्बाद करना। मेरे पास ये शक्ति है। वो एक कमज़ोर आदमी है।
उसका दिमाग तेज़ है, उसकी ज़बान अच्छी है, और समाज में उसकी इज़्ज़त भी है, लेकिन दिल से वो कमज़ोर और नीच स्वभाव का है। जो लोग अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ आक्रामक व्यवहार करते हैं, वो स्वभाव से हमेशा सबसे कमज़ोर होते हैं। कमज़ोर होने की वजह से ही वो अपने से भी कमज़ोर किसी को अपना शिकार बनाते हैं। उसे तबाह करना बहुत आसान था, और एक बार तबाह हो जाने पर, उसके जैसा आदमी फिर कभी सामने नहीं आ सकता। मेरी बेटी बहुत पहले गुज़र गई, लेकिन मैंने उस आदमी पर नज़र रखना कभी नहीं छोड़ा। मैं उसे फिर कभी सामने नहीं आने दूंगी। वो अभी भी ज़िंदा है, लेकिन एक लाश की तरह। वो आत्महत्या करने की कोशिश नहीं कर रहा क्योंकि उसमें इतनी हिम्मत नहीं है। और यहीं पर मेरा हाथ है। मैं उसे एक वार में नहीं, दो वार में मारूंगी। मैंने उसे बेरहमी से, निर्दयता से तड़पाया, लेकिन फिर भी उसे ज़िंदा छोड़ दिया। मानो मैं उसकी खाल उतार रही थी। मैंने दूसरों को गायब कर दिया। और मेरे पास उन्हें दूसरी दुनिया में भेजने के ठोस कारण थे।
*

महिला ने अपनी बात जारी रखी। अपनी बेटी की मृत्यु के एक साल बाद, उन्होंने घरेलू हिंसा की शिकार महिलाओं के लिए एक निजी आश्रय स्थल स्थापित किया था। विलोज़ विला के बगल वाली ज़मीन पर उनकी एक छोटी दो मंज़िला इमारत थी, जिसे उन्होंने जल्द ही गिराने के इरादे से खाली रखा था। उन्होंने उस इमारत की

थोड़ी मरम्मत करवाकर उसे उन महिलाओं के लिए शरणस्थल बनाने का फैसला किया था, जिनके पास रहने के लिए कोई और जगह नहीं थी। वकीलों की मदद से, उन्होंने "हिंसा की शिकार महिलाओं के लिए परामर्श सत्र" आयोजित किए, जहाँ विभिन्न स्वयंसेवक फोन पर या व्यक्तिगत रूप से सलाह देते थे। वहाँ मौजूद लोग महिला से संपर्क करते और ज़रूरतमंद महिलाओं को आश्रय स्थल पर भेजते थे। अक्सर उनके साथ छोटे बच्चे भी होते थे। कुछ तो किशोरियाँ भी थीं, जिनका उनके पिताओं ने यौन शोषण किया था। वे वहाँ कुछ समय के लिए तब तक रहतीं जब तक उन्हें कोई स्थायी जगह नहीं मिल जाती। वहाँ उन्हें ज़रूरत की हर चीज़ मुहैया कराई जाती थी। उन्हें कपड़े और भोजन दिया जाता था, और वे एक तरह से सामुदायिक जीवन जीती थीं, एक-दूसरे की मदद करती थीं। सभी खर्चे महिला स्वयं वहन करती थीं।
वकील और परामर्शदाता समय-समय पर आश्रय स्थल पर आते, उनकी देखभाल करते और आगे की योजनाओं पर चर्चा करते। महिला भी जब भी खाली समय मिलता, वहाँ आती, हर किसी से बात करती और उन्हें उचित सलाह देती। कभी-कभी वह उनके लिए नौकरी और रहने की जगह भी ढूंढ देती। अगर कोई समस्या खड़ी हो जाती जिसका समाधान ज़रूरी होता, तो तामारू जाकर उसे हल करती। कभी-कभी ऐसा भी होता था कि कोई पति अपनी पत्नी को ढूंढ निकालता और उसे ज़बरदस्ती वापस लाने की कोशिश करता, और ऐसे मामलों में तामारू से ज़्यादा कुशलता और तेज़ी से समस्या का समाधान करने वाला कोई नहीं होता था।
"लेकिन कभी-कभी ऐसे मामले सामने आते हैं जिन्हें केवल तामारू और मैं ही नहीं संभाल सकते और जिनमें कोई कानून हमें ठोस समाधान खोजने में मदद नहीं करता," उस महिला ने उससे कहा था।
जब महिला बोल रही थी, आओमामे ने देखा कि उसके चेहरे पर एक लालिमा छा गई है, जिसने उसकी सामान्य दयालुता और शालीनता को बदल दिया है। उसके चेहरे पर केवल क्रोध या घृणा से कहीं अधिक कुछ था। ऐसा लग रहा था मानो उसकी आत्मा के सबसे गहरे कोने में एक छोटा, कठोर, अनाम कोर छिपा हो। फिर भी उसकी आवाज़ में हमेशा की तरह शांति बनी हुई थी।
— बेशक, मैं किसी पुरुष का भाग्य केवल इसलिए तय नहीं करती कि इससे तलाक की पेचीदगियों से बचा जा सकेगा और बीमा राशि मिल जाएगी। मैं हर पहलू पर अलग-अलग विचार करती हूँ, उसका सही और सावधानीपूर्वक विश्लेषण करती हूँ, और जब मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचती हूँ कि वह व्यक्ति दया का पात्र नहीं है, तभी मैं कार्रवाई करने के लिए विवश होती हूँ। ये पुरुष परजीवी हैं जो केवल कमजोरों का खून चूसकर ही जीवित रह सकते हैं। ये टूटी हुई आत्मा वाले, ठीक न होने वाले, खुद को सुधारने की इच्छा न रखने वाले और इस दुनिया में रहने के लायक नहीं हैं।
वह महिला चुप रही और कुछ देर तक आओमामे को ऐसी निगाहों से देखती रही मानो पत्थर की दीवार को भी भेद सकती हो। फिर उसने शांत स्वर में बोलना जारी रखा: "मैं ऐसे लोगों को किसी न किसी तरह गायब ही कर सकता हूँ। और अगर संभव हो तो, इस तरह से कि किसी का ध्यान आकर्षित न हो।"
- क्या ऐसा करना संभव है?
"किसी व्यक्ति के गायब होने के कई तरीके होते हैं," उस महिला ने सोच-समझकर शब्द चुनते हुए कहा, फिर थोड़ी देर रुकी। "मैं एक खास तरह से गायब होने का इंतजाम कर सकती हूँ। मेरे पास वह शक्ति है।"

ओमामे ने कुछ क्षणों के लिए उसके शब्दों पर विचार किया। लेकिन महिला के चेहरे के भाव बहुत अस्पष्ट थे।
हम सभी ने एक बेहद अन्यायपूर्ण तरीके से किसी प्रियजन को खोया है, और हम गहरे आहत हैं। हमारी आत्मा का यह घाव कभी नहीं भरेगा। लेकिन हम चुपचाप बैठकर इस घाव को देखते नहीं रह सकते। हमें उठकर कार्रवाई करनी होगी। और यह व्यक्तिगत प्रतिशोध के रूप में नहीं, बल्कि व्यापक अर्थों में न्याय के लिए होगा। आपका क्या कहना है, क्या आप मेरी मदद करना चाहेंगे? मुझे सक्षम लोगों की ज़रूरत है, जिन पर मैं भरोसा कर सकूँ। ऐसे लोग जिनके साथ मैं यह रहस्य और अपना मिशन साझा कर सकूँ।
आओमामे को अपने विचारों को समेटने और अपनी कही हुई हर बात को समझने में काफी समय लगा। उसका कबूलनामा और सुझाव अविश्वसनीय थे। सुझाव के बारे में फैसला करने में भी उसे काफी समय लगा। इस पूरे समय, लेडी अपनी कुर्सी पर बिना हिले- डुले बैठी रहीं और बिना कुछ कहे आओमामे को देखती रहीं। उन्हें कोई जल्दी नहीं थी। ऐसा लग रहा था कि वह जितना हो सके इंतजार करने को तैयार थीं।
आओमामे ने सोचा, "यह औरत बेशक थोड़ी सनकी है। लेकिन पागल नहीं हुई है। बीमार भी नहीं है। बल्कि, उसका दिमाग बेहद संतुलित और स्पष्ट है। इसके सबूत भी हैं। यह पागलपन नहीं है, बल्कि पागलपन से मिलता-जुलता कुछ है। एक तरह का अटूट विश्वास। और वह मुझसे यही चाहती है कि मैं भी उसके साथ इस पागलपन या विश्वास को उसी शांति और सहजता से साझा करूँ। उसे लगता है कि मैं ऐसा कर सकता हूँ।" पता नहीं वह कितनी देर से सोच रही थी। ध्यान में लीन होकर वह समय का ध्यान ही भूल गई थी। बस उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से और नियमित रूप से धड़क रहा था। आओमामे ने अंदर के कई छोटे कमरों के दरवाज़े खोले और समय में पीछे चली गई, जैसे कोई मछली धारा के विपरीत तैरती है। वहाँ उसे जानी-पहचानी चीज़ें और लंबे समय से भूली हुई गंधें मिलीं। कोमलता और तड़प। लेकिन साथ ही भयानक दर्द भी। कहीं से अचानक प्रकट हुई प्रकाश की एक छोटी सी किरण ने उसे भेद दिया। उसे अजीब सा एहसास हुआ जैसे वह पारदर्शी हो गई हो। उसने अपना हाथ उस किरण के आर-पार किया और उसके आर-पार देखा। उसका शरीर हल्का महसूस हुआ। उस क्षण, आओमामे ने सोचा कि अगर वह उस पागलपन या विश्वास में डूबकर, उसी क्षण, खुद को नष्ट कर ले, और पूरी दुनिया गायब हो जाए, तो उसे आखिर क्या खोना पड़ेगा?
"मैं समझ गई," उसने कुछ पल के लिए अपने होंठ दबाते हुए कहा। "अगर मैं कर सकती हूँ, तो मैं आपकी मदद करूँगी।"
उस महिला ने उसकी ओर झुककर उसका हाथ दबाया। उस पल से, दोनों ने वह रहस्य साझा किया और अपने मिशन में, उस तरह के पागलपन में साथी बन गईं। या शायद यह सचमुच शुद्ध पागलपन ही था। आओमामे सीमा रेखा को पहचान नहीं पा रही थी। और जिन पुरुषों को उसने उस महिला के साथ दूसरी दुनिया में भेजा था, वे ऐसे व्यक्ति थे जो किसी भी तरह से दया के पात्र नहीं थे।
*

“मुझे पता है कि शिबुया होटल वाले उस आदमी को तुमने कुछ ही समय पहले मौत के घाट उतारा था,” उस महिला ने धीमी आवाज़ में कहा। उसने ये शब्द ऐसे इस्तेमाल किए मानो वो डाक से भेजे गए किसी सामान का ज़िक्र कर रही हो।
"चार दिन में दो महीने हो जाएंगे," आओमामे ने जवाब दिया।

"अभी दो महीने भी नहीं बीते हैं। इसलिए अभी मेरे लिए दोबारा अनुरोध करना बिल्कुल भी उचित नहीं है। मैं कम से कम आधा साल बीतने देना चाहूंगी। अगर अंतराल बहुत कम हो जाता है, तो आपका मानसिक बोझ बढ़ जाता है। मैं इसे कैसे समझाऊं... क्योंकि यह कोई आम बात नहीं है। इसके अलावा, हो सकता है कि कोई मेरे द्वारा चलाए जा रहे आश्रय स्थल से जुड़े पुरुषों में दिल का दौरा पड़ने के बढ़ते खतरे को नोटिस करे।"
आओमामे मुस्कुराई और बोली:
इस दुनिया में बहुत से संदिग्ध लोग हैं।
उस महिला ने भी मुस्कुरा दिया।
जैसा कि आप जानते हैं, मैं बेहद सतर्क व्यक्ति हूँ। मैं संयोग, उम्मीदों या भाग्य पर भरोसा नहीं करता। मैं आखिरी क्षण तक शांतिपूर्ण विकल्प की तलाश करता हूँ और तभी उसे चुनता हूँ जब मुझे पूरी तरह से यकीन हो जाता है कि कोई और रास्ता नहीं है। और जब मुझे उसे अमल में लाना ही पड़ता है, तो मैं उन सभी जोखिमों को दूर कर देता हूँ जो मुझे लगता है कि पैदा हो सकते हैं। मैं सभी पहलुओं का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करता हूँ, सारी तैयारियाँ करता हूँ और जब मुझे पूरी तरह से यकीन हो जाता है कि सब कुछ ठीक है, तभी मैं आपसे संपर्क करता हूँ। यही कारण है कि मुझे अब तक कोई समस्या नहीं आई है। है ना?
"हाँ, बिल्कुल," आओमामे ने स्वीकार किया।
और ठीक वैसा ही हुआ। आओमामे अपना औजार लेकर तय जगह पर चली जाती। सब कुछ पहले से ही तय था। वह सुई से व्यक्ति की गर्दन में एक ही बार, ठीक उसी जगह पर चुभोती। यह सुनिश्चित करने के बाद कि उसने उन्हें "दूसरी दुनिया में भेज दिया है", वह चली जाती। तब तक सब कुछ सुचारू रूप से और व्यवस्थित तरीके से चल रहा था।
"लेकिन इस बार, मुझे डर है कि मैं आपसे कुछ ज्यादा ही उम्मीद कर रहा हूँ। समय ठीक नहीं है, कई अनिश्चितताएं हैं, और संभावना है कि स्थिति पहले की तरह सुचारू रूप से व्यवस्थित नहीं हो पाएगी। हालात थोड़े अलग हैं।"
— किस दृष्टिकोण से?
"जिस व्यक्ति की बात हो रही है, वह सामान्य पद पर नहीं है," महिला ने सोच-समझकर शब्दों का चयन करते हुए कहा। और स्पष्ट रूप से कहें तो, उसकी बहुत कड़ी सुरक्षा की जा रही है।
क्या वह राजनीतिज्ञ हैं?
महिला ने अपना सिर हिलाया।
"नहीं, वह राजनेता नहीं हैं। हम इस बारे में बाद में बात करेंगे। मैंने आपके बिना अन्य विकल्पों के बारे में बहुत सोचा है, लेकिन उनमें से कोई भी कारगर नहीं होगा। पारंपरिक तरीके काम नहीं आएंगे। मुझे बहुत खेद है, लेकिन आपके अलावा मेरे पास मदद के लिए कोई और विकल्प नहीं है।"
“क्या यह बहुत जरूरी है?” आओमामे ने पूछा।
"नहीं, यह कोई आपात स्थिति नहीं है। हमारे पास कोई समय सीमा नहीं है। लेकिन जितनी देर हम करेंगे, उतने ही अधिक लोगों को परेशानी हो सकती है। और हमारे पास अवसर सीमित हैं। यह कहना मुश्किल है कि दूसरा अवसर कब मिलेगा।"
बाहर घना अंधेरा था और बरामदा एकदम शांत था। आओमामे सोच रही थी कि क्या चांद निकल आया है, लेकिन जहां वह बैठी थी, वहां से उसे बाहर दिखाई नहीं दे रहा था।

मैं आपको हर बात विस्तार से समझाना चाहता हूँ, लेकिन उससे पहले आपको किसी से मिलना होगा। हम अभी जा सकते हैं।
क्या वह आश्रयगृह में रहता है?
उस महिला ने धीरे से सांस ली और गले से एक हल्की सी आवाज़ निकाली। उसकी आँखों में एक विशेष चमक थी।
"उसे छह हफ्ते पहले यहाँ भेजा गया था। चार हफ्तों तक वह पूरी तरह से उदासीन रही और एक शब्द भी नहीं बोली। हमें बस उसका नाम, उम्र और यह पता है कि वह रेलवे स्टेशन पर दयनीय हालत में सोती हुई मिली थी, फिर उसे इधर-उधर घुमाया गया और अंत में हमारे पास भेज दिया गया। हमने उससे धीरे-धीरे बात की। उसे यह विश्वास दिलाने में बहुत समय लगा कि वह एक सुरक्षित जगह पर है, जहाँ उसे डरने की ज़रूरत नहीं है। अब वह कुछ बोलने लगी है। वह हकला रही है और उलझन में है, लेकिन मैंने किसी तरह घटना को समझने की कोशिश की है। यह इतनी भयानक घटना है कि मैं आपको बता भी नहीं सकती। एक अत्याचार।"
क्या वह अपने पति द्वारा प्रताड़ित की गई थी?
"नहीं," महिला ने रूखे स्वर में उत्तर दिया। "वह केवल दस वर्ष का है।"
*

महिला और आओमामे आंगन पार करके एक फाटक का ताला खोलकर आश्रय स्थल की ओर चल पड़ीं। यह छोटी सी लकड़ी की इमारत कभी यहाँ काम करने वाले नौकरों का घर हुआ करती थी, जब यहाँ नौकरों की संख्या ज़्यादा थी। यह दो मंज़िला इमारत अपने आप में बेहद खूबसूरत थी, लेकिन किराए पर देने के लिए थोड़ी जर्जर हो चुकी थी। लेकिन यह उन महिलाओं के लिए एक सुरक्षित ठिकाना बन सकती थी जिनके पास रहने के लिए कोई और जगह नहीं थी। एक पुराना बलूत का पेड़ अपनी शाखाओं से इसे सुरक्षा प्रदान कर रहा था, और सामने के दरवाज़े पर एक सुंदर सजावटी कांच लगा था। कुल मिलाकर दस कमरे थे, हर कमरे में एक सेमी-डबल बेड था। यहाँ उन्होंने एक-दूसरे को छुआ और हर जगह स्पर्श किया। वे समलैंगिक नहीं थीं। वे बस कुछ साहसिक करना चाहती थीं, जिज्ञासावश उन्होंने खिड़कियों में रोशनी जला रखी थी। बच्चे के कभी-कभार रोने की आवाज़ के अलावा, आमतौर पर वहाँ सन्नाटा छाया रहता था। इमारत मानो अपनी साँस रोके खड़ी थी। उसमें से ऐसी कोई आवाज़ नहीं आती थी जो किसी आबाद घर में आती हो। फाटक के पास एक जर्मन शेफर्ड कुत्ता जंजीर से बंधा खड़ा था, जो किसी के आने का आभास होने पर पहले गुर्राता था, फिर भौंकने लगता था। यह तो पता नहीं कि इसे किसने और कैसे प्रशिक्षित किया था, लेकिन इसे सिखाया गया था कि जब कोई आदमी पास आए तो यह जोर से भौंके। हालांकि, यह सबसे ज्यादा तमारू से ही जुड़ा हुआ था।
जब महिला उसके पास पहुँची, तो कुत्ते ने भौंकना बंद कर दिया और अपनी पूंछ हिलाने लगी और खुशी से म्याऊं करने लगी। महिला ने झुककर उसके सिर पर कुछ बार थपथपाया। आओमामे ने अपने कान भी खुजलाए। कुत्ते ने आओमामे को पहचान लिया। वह एक समझदार कुत्ता थी और किसी कारण से कच्ची पालक के लिए पागल हो रही थी। महिला ने चाबी से गेट बंद कर दिया।
"यहां रहने वाली महिलाओं में से एक उस छोटी बच्ची की देखभाल करती है। वह उसके साथ कमरे में रहती है और यथासंभव कोशिश करती है कि वह उसकी नजरों से ओझल न हो। मुझे अब भी उसे अकेला छोड़ने में डर लगता है।"

आश्रयगृह में रहने वाली महिलाएं एक-दूसरे का ख्याल रखती थीं, अपने अनुभव साझा करती थीं और एक-दूसरे को हिम्मत देती थीं, चुपचाप एक-दूसरे के दर्द को समझती थीं। कई मामलों में, वे धीरे-धीरे खुद ही ठीक हो गईं। जो महिलाएं पहले से वहां रह रही थीं, उन्होंने नई आने वाली महिलाओं को घर का इस्तेमाल करना सिखाया और उन्हें ज़रूरी चीज़ें मुहैया कराईं। वे बारी-बारी से सफाई और खाना पकाने का काम करती थीं। बेशक, कुछ महिलाएं अकेले रहना और अपने अनुभव साझा न करना पसंद करती थीं, और इन महिलाओं के अकेलेपन और चुप्पी का सम्मान किया जाता था। लेकिन अधिकांश महिलाएं अपने अनुभव उन दूसरी महिलाओं के साथ खुलकर साझा करने के लिए उत्सुक थीं, जिन्होंने उनके जैसी ही परिस्थितियों का सामना किया था, और उनसे जुड़ाव महसूस करना चाहती थीं। घर में केवल शराब का सेवन, धूम्रपान और बिना अनुमति के अन्य लोगों के प्रवेश पर प्रतिबंध था, इसके अलावा कोई और पाबंदी नहीं थी।
आश्रय स्थल में प्रवेश द्वार के पास बने कॉमन रूम में एक टेलीफोन और एक टेलीविजन था। उस कमरे में अभी भी एक पुराना डाइनिंग सेट और एक बड़ी मेज थी। कई निवासी अपना अधिकांश समय वहीं बिताते थे। लेकिन वे शायद ही कभी टेलीविजन चलाते थे। और अगर टेलीविजन चलता भी था, तो वे आवाज़ इतनी धीमी रखते थे कि लगभग सुनाई ही न दे। वे अपनी बाहों में किताब लिए, सामने अखबार खोलकर, बुनाई करना या माथे सटाकर फुसफुसाते हुए बातें करना पसंद करते थे। कुछ महिलाएं पूरा दिन चित्रकारी करती रहती थीं। यह एक अजीब जगह थी। रोशनी कम और फैली हुई थी, मानो वास्तविक दुनिया और परलोक के बीच एक क्षणभंगुर स्थान हो। चाहे आसमान साफ हो या बादल छाए हों, दिन हो या रात, कमरे में हमेशा एक जैसी रोशनी रहती थी। हर बार जब आओमामे वहां जाती, तो उसे ऐसा लगता जैसे वह वहां की नहीं है, जैसे कोई अजनबी हो। ये महिलाएं एक विशेष आवश्यकताओं वाले समूह का हिस्सा थीं। उनका अकेलापन और आओमामे का अकेलापन बिल्कुल अलग-अलग कारणों से था।
जब वह महिला प्रकट हुई, तो बैठक में बैठी तीनों महिलाएं खड़ी हो गईं। उनके प्रति उनका गहरा आदर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। महिला ने उन्हें बैठने को कहा।
"वहीं चुपचाप रहो। मैं त्सुबासा से थोड़ी देर बात करने आया हूँ।"
"त्सुबासा अपने कमरे में है," ओमामे के लगभग समान उम्र की एक महिला ने कहा, जिसके लंबे, चिकने बाल थे।
"वह साइको के साथ है। वह अभी तक यहां नहीं आया है," एक अन्य, बुजुर्ग व्यक्ति ने कहा।
"उन्हें थोड़ा और समय चाहिए," महिला ने प्रसन्नतापूर्वक कहा।
तीनों महिलाओं ने चुपचाप सिर हिलाया। वे समय की आवश्यकता का अर्थ अच्छी तरह समझती थीं।
*

ऊपर के कमरे में प्रवेश करते ही, महिला ने उस छोटी सी महिला से, जिसकी उपस्थिति लगभग न के बराबर थी, कमरे से बाहर जाने को कहा। साइको नाम की महिला मुस्कुराई, कमरे से बाहर निकली, दरवाजा बंद किया और सीढ़ियों से नीचे चली गई। केवल दस वर्षीय लड़की त्सुबासा ही कमरे में रह गई। लड़की, महिला और आओमामे एक छोटी मेज के चारों ओर बैठकर रात का खाना खाने लगे। खिड़कियाँ मोटे पर्दों से ढकी हुई थीं।

"ये आओमामे है," उस महिला ने छोटी बच्ची से कहा। "ये मेरे साथ काम करती है, इसलिए तुम निश्चिंत रहो।"
छोटी बच्ची ने आओमामे की ओर एक नजर डाली और लगभग अगोचर सी हरकत के साथ अस्पष्ट रूप से सिर हिलाया।
"यह त्सुबासा है," महिला ने अपना परिचय देते हुए बच्चे से पूछा: "तुम यहां कब से हो?"
उसने अपना सिर थोड़ा सा एक तरफ झुकाया, जिससे यह संकेत मिला कि उसे पता नहीं है। उसने अपना सिर एक इंच से ज्यादा नहीं हिलाया था।
"छह सप्ताह और तीन दिन," उस महिला ने कहा। "हो सकता है आपने गिनती करने के लिए समय न निकाला हो, लेकिन मैंने की। क्या आप जानते हैं क्यों?"
छोटी बच्ची ने अपना सिर फिर से थोड़ा सा एक तरफ झुकाया।
"क्योंकि कभी-कभी समय बहुत महत्वपूर्ण होता है। इसका हिसाब रखना भी बहुत मायने रखता है।"
आओमामे की नज़र में त्सुबासा किसी भी दस साल की बच्ची जैसी ही दिखती थी। अपनी उम्र के हिसाब से वह काफी लंबी थी, लेकिन दुबली-पतली थी और उसकी छाती अभी पूरी तरह विकसित नहीं हुई थी। वह कुपोषण की शिकार थी। उसमें कोई कुरूपता नहीं थी, लेकिन उसका व्यक्तित्व बिल्कुल भी प्रभावशाली नहीं था। उसकी आँखें धुंधली खिड़कियों जैसी थीं। आप उनमें देख तो सकते थे, लेकिन अंदर कुछ भी स्पष्ट नहीं दिखता था। उसके सूखे, पतले होंठ समय-समय पर बेचैनी से काँपते थे, मानो शब्द बनाने की कोशिश कर रहे हों, लेकिन कोई आवाज़ न निकल रही हो।
उस महिला ने अपने साथ लाए हुए थैले से चॉकलेट का एक डिब्बा निकाला। डिब्बे पर स्विस आल्प्स के एक खूबसूरत नज़ारे की तस्वीर बनी हुई थी। उसमें बारह चॉकलेट थीं, हर एक अलग आकार की। उसने एक-एक चॉकलेट त्सुबासा को दी, एक आओमामे को, फिर खुद एक चॉकलेट उठाकर अपने मुंह में डाल ली। आओमामे ने भी ऐसा ही किया। उन दोनों को देखकर त्सुबासा ने भी एक चॉकलेट खा ली। कुछ देर तक तीनों चुपचाप चॉकलेट चबाते रहे।
"क्या तुम्हें याद है जब तुम दस साल की थी?" महिला ने आओमामे से पूछा।
"बिल्कुल," उसने जवाब दिया।
उस साल उसने एक लड़के से हाथ मिलाया और जीवन भर उससे प्यार करने की कसम खाई।
कुछ महीनों बाद उसे पहली बार मासिक धर्म हुआ और उसके अंदर बहुत कुछ बदल गया।
उसने अपना धर्म त्याग दिया और अपने माता-पिता से संबंध तोड़ने का फैसला किया।
“मुझे भी यह अच्छी तरह याद है,” महिला ने आगे कहा। जब मैं दस साल की थी, मेरे पिता मुझे पेरिस ले गए और मैंने वहाँ पूरा एक साल बिताया। उस समय मेरे पिता एक राजनयिक के रूप में काम करते थे। हम लक्ज़मबर्ग गार्डन के पास एक पुराने अपार्टमेंट में रहते थे। पहला विश्व युद्ध समाप्त होने वाला था, और रेलवे स्टेशन घायल सैनिकों से भरा हुआ था। कुछ जवान थे, लगभग बच्चे, कुछ बूढ़े। पेरिस किसी भी मौसम में अद्भुत सुंदरता का शहर है, लेकिन मुझे वहाँ केवल खून ही खून दिखाई देता था, जहाँ भी देखो। खाइयों में लड़ाई तेज हो गई थी, और बिना आँखों, हाथों और पैरों वाले लोग सड़कों पर भटक रहे थे, मानो खोई हुई आत्माओं की तरह। मुझे बस उनकी पट्टियों का सफेद रंग और महिलाओं के हाथों पर शोक का काला रंग दिखाई देता था। अनगिनत नए ताबूतों को गाड़ियों में भरकर कब्रिस्तान

ले जाया जा रहा था। जब कोई ताबूत सड़क से गुजरता, तो लोग अपनी निगाहें नीचे कर लेते और चुप हो जाते।
महिला ने मेज के उस पार अपना हाथ बढ़ाया। कुछ क्षण सोचने के बाद, छोटी बच्ची ने अपने घुटने से हाथ उठाकर महिला के हाथ में रख दिया। महिला ने उसका हाथ हल्के से दबाया। जब वह छोटी थी और पेरिस की सड़कों पर ताबूत ले जा रही गाड़ी के पास से गुज़रती थी, तो शायद उसके माता-पिता ने भी उसका हाथ इसी तरह कसकर पकड़ा होगा। और उन्होंने उसे दिलासा देते हुए कहा होगा कि उसे डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। वह सुरक्षित है और उसे कुछ नहीं होगा।
"पुरुष प्रतिदिन लाखों शुक्राणु उत्पन्न करते हैं," उस महिला ने आओमामे से कहा। "क्या तुम्हें पता था?"
— हां, मुझे पता था कि बहुत सारे हैं, लेकिन उनकी सही संख्या नहीं पता थी।
— हाँ, मुझे भी ठीक-ठीक नहीं पता कि कितने होते हैं। खैर, अनगिनत होते हैं। वे सबको एक साथ नष्ट कर देते हैं। लेकिन एक महिला के पास अंडों की संख्या सीमित होती है। क्या आपको पता है कितने?
मुझे ठीक से पता नहीं है।
"जीवनकाल में चार सौ से ज़्यादा नहीं। अंडे हर महीने नहीं बनते, बल्कि जन्म से ही शरीर में मौजूद होते हैं। एक बार जब महिला को मासिक धर्म शुरू हो जाता है, तो हर महीने एक परिपक्व अंडा निकलता है। और इस छोटी बच्ची के अंदर वे सभी अंडे मौजूद हैं। उसे अभी तक मासिक धर्म नहीं आया है, इसलिए फिलहाल वे अछूते हैं। वे एक दराज में बंद हैं। और अंडों का काम स्पष्ट रूप से शुक्राणु ग्रहण करना और निषेचित होना है।"
ओमामे ने सिर हिलाया।
"पुरुषों और महिलाओं के बीच अधिकांश अंतर प्रजनन प्रणाली में इन्हीं अंतरों के कारण होते हैं। शारीरिक रूप से, हम महिलाएं अपना जीवन इन्हीं सीमित अंडों के इर्द-गिर्द जीती हैं। आप, मैं और वह," महिला ने मुस्कुराते हुए कहा। "बेशक, मेरे मामले में, मुझे भूतकाल का प्रयोग करना चाहिए।"
ओमामे ने मन ही मन जल्दी से हिसाब लगाया और निष्कर्ष निकाला कि तब तक वह लगभग दो सौ अंडे नष्ट कर चुकी थी। उसके पास अभी भी लगभग आधे अंडे बचे थे, जिन पर शायद बड़े अक्षरों में 'आरक्षित' लिखा हुआ था।
"लेकिन उसके अंडे कभी निषेचित नहीं होंगे," उस महिला ने कहा। "पिछले हफ्ते मेरे परिचित एक डॉक्टर ने उसकी जांच की थी। उसका गर्भाशय नष्ट हो चुका है।" आओमामे ने उसे घूरकर देखा। फिर उसने अपना सिर उस छोटी बच्ची की ओर घुमाया। वह कुछ कह नहीं सकी।
- नष्ट किया हुआ?
"हां, यह पूरी तरह से नष्ट हो चुका है। इसे शल्य चिकित्सा द्वारा भी ठीक नहीं किया जा सकता।"
लेकिन भला कौन उसके साथ ऐसा कर सकता है?
मुझे अभी पक्का पता नहीं है।
“छोटे लोग,” छोटी बच्ची ने फुसफुसाते हुए कहा।

अध्याय 18 बिग ब्रदर अब प्रकट नहीं होता

प्रेस कॉन्फ्रेंस के बाद, कोमात्सु ने उन्हें फोन किया और बताया कि सब कुछ बिना किसी बाधा के सुचारू रूप से संपन्न हुआ।
"यह बहुत बढ़िया था," उन्होंने असामान्य रूप से उत्साहित स्वर में कहा। "सच में, मुझे उम्मीद नहीं थी कि यह इतना सहज होगा। उन्होंने प्रश्नों के उत्तर बुद्धिमानी से दिए और वहां मौजूद सभी लोगों पर बहुत अच्छा प्रभाव छोड़ा।" कोमात्सु की बातों से टेंगो को ज़रा भी हैरानी नहीं हुई। बिना किसी खास वजह के, उसने प्रेस कॉन्फ्रेंस को लेकर कोई चिंता नहीं जताई थी। उसे उम्मीद थी कि फुकाएरी अपने दम पर अच्छा प्रदर्शन करेगी। हालांकि, "बहुत अच्छा प्रभाव" जैसा वाक्यांश उसके मामले में सटीक नहीं बैठता था।
"क्या कुछ भी सामने नहीं आया?" उसने यह सुनिश्चित करने के लिए पूछा। उन्होंने अपनी बात यथासंभव संक्षिप्त रखी और बड़ी चतुराई से अप्रिय सवालों से बचते रहे। और सच तो यह है कि वे सवाल वास्तव में अप्रिय नहीं थे। पत्रकार होने के नाते, वे शायद सत्रह साल की एक खूबसूरत लड़की को परेशान नहीं करना चाहते थे। बेशक, उन्होंने "अभी के लिए" शब्द का प्रयोग किया। आगे क्या होगा, मुझे नहीं पता। इस दुनिया में, हवा की दिशा अचानक बदल जाती है!
टेंगो ने कल्पना की कि कोमात्सु एक ऊँची चट्टान पर गंभीर चेहरे के साथ खड़ा है और हवा की दिशा जानने के लिए अपनी उंगली चाट रहा है।
"खैर, आपने उनके साथ जो रिहर्सल की, उसकी बदौलत सब ठीक रहा। मैं आभारी हूं। पुरस्कार की घोषणा और प्रेस कॉन्फ्रेंस की रिपोर्ट कल शाम के अखबारों में प्रकाशित होगी।"
फुकेरी ने कौन से कपड़े पहने थे?
"कपड़े? सामान्य कपड़े। एक पतला, टाइट स्वेटर और जींस।"
क्या उसके स्तन उभरे हुए थे?
“ओह, जी हाँ, बिल्कुल सही। वे बेहद खूबसूरत लग रही थीं। एकदम नई और आकर्षक,” कोमात्सु ने कहा। “यह लड़की एक प्रतिभाशाली लेखिका के रूप में बहुत नाम कमाएगी। दिखने में अच्छी है और होशियार भी, भले ही उसकी बोलने का तरीका थोड़ा अटपटा हो। वैसे भी, वह आम इंसान जैसी नहीं दिखती। मैंने अब तक कई लेखकों के पहले प्रकाशन समारोह देखे हैं। लेकिन यह लड़की खास है। और अगर मैं कह रहा हूँ, तो आप जानते ही हैं कि वह वाकई खास है। पत्रिका का नया अंक एक हफ्ते में आ रहा है, जिसमें हम ‘द एयर क्राइसालिस’ प्रकाशित कर रहे हैं, और मैं शर्त लगा सकता हूँ कि यह तीन दिनों में बिक जाएगा। मैं अपनी जान की बाजी लगा सकता हूँ।” टेंगो ने खबर के लिए उन्हें धन्यवाद दिया और फोन रख दिया। फिर उसने राहत की सांस ली। आखिरकार, कम से कम उन्होंने पहली बाधा तो पार कर ली थी। लेकिन अब उन्हें कितनी और बाधाओं का सामना करना था?
अगले दिन शाम के अखबारों में प्रेस कॉन्फ्रेंस की खबर छपी। स्कूल से घर लौटते समय, टेंगो ने स्टेशन के पास एक न्यूज़स्टैंड से चार अखबार खरीदे और घर आकर उन्हें पढ़ा। सभी अखबारों में कमोबेश एक ही बात लिखी थी। वे लंबी खबरें तो

नहीं थीं, लेकिन साहित्यिक पुरस्कार की घोषणा करने वाले लेखों के हिसाब से उन्हें असाधारण तवज्जो मिली थी (ज़्यादातर मामलों में, ऐसी खबरें पाँच पंक्तियों से ज़्यादा लंबी नहीं होती थीं)। जैसा कि कोमात्सु ने भविष्यवाणी की थी, सत्रह साल की लड़की के पुरस्कार जीतने की खबर पर मीडिया ने तुरंत प्रतिक्रिया दी थी। जूरी के चारों सदस्यों ने सर्वसम्मति से 'द क्राइसालिस ऑफ एयर' के पक्ष में मतदान किया था। कोई विरोध नहीं हुआ था और विचार-विमर्श पंद्रह मिनट में ही समाप्त हो गया था। यह असामान्य था। चार समकालीन लेखकों, जिनके अहंकार बहुत प्रबल थे, का एकमत होना असंभव था। इस कृति ने पहले ही साहित्य जगत में सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ बटोर ली थीं। पुरस्कार समारोह वाले होटल में एक छोटी प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई, जिसमें लेखिका ने "मुस्कुराते हुए और स्पष्ट रूप से" जवाब दिया।
जब उनसे पूछा गया, "क्या आप और उपन्यास लिखेंगी?", तो उनका जवाब था, "उपन्यास तो बस अभिव्यक्ति का एक रूप है। मैंने संयोगवश अभी यही रूप चुना है, पर अगली बार क्या चुनूँगी, ये मुझे नहीं पता।" यह मानना मुश्किल था कि फुकाएरी ने इतना लंबा वाक्य कहा था। पत्रकारों ने शायद उनके अधूरे वाक्यों को जोड़कर, छूटे हुए हिस्सों को मिलाकर एक वाक्य बना दिया था। लेकिन हो सकता है कि उन्होंने सचमुच इतना लंबा वाक्य कहा हो। फुकाएरी के मामले में, किसी भी बात पर यकीन नहीं किया जा सकता था।
जब उनसे पूछा गया कि उन्हें कौन सी किताबें पसंद हैं, तो उन्होंने जवाब दिया, बेशक, 'तैरा कबीले की कहानी'। एक पत्रकार ने उनसे पूछा कि उन्हें कौन सा हिस्सा सबसे ज़्यादा पसंद है, और उन्होंने लगभग पाँच मिनट का एक लंबा अंश सुनाया। इससे वहाँ मौजूद सभी लोग प्रभावित हुए, और उनके सुनाने के बाद कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया। सौभाग्य से (यह कहना उचित होगा), किसी ने उनसे यह नहीं पूछा कि उन्हें कौन सा संगीत पसंद है।
उन्होंने उससे पूछा, "साहित्यिक पदार्पण पुरस्कार जीतने पर सबसे ज्यादा खुश कौन था?" और उसने लंबी चुप्पी के बाद (टेंगो उस दृश्य की कल्पना कर सकता था) जवाब दिया: "यह एक रहस्य है।"
अखबारों में जो कुछ उसने पढ़ा था, उससे उसे पता चला था कि फुकाएरी ने पत्रकारों से कभी झूठ नहीं बोला था। उसके सभी जवाब सच थे। अखबारों में उसकी एक तस्वीर भी छपी थी, जिसमें वह तेंगो की याद से भी कहीं ज़्यादा खूबसूरत लग रही थी। जब वह उससे आमने-सामने मिला, तो उसे उसके हाव-भाव, चेहरे के भाव और उसकी बातों पर ध्यान देना पड़ा, लेकिन तस्वीर में उसे देखकर उसे फिर से एहसास हुआ कि वह कितनी खूबसूरत थी। यह प्रेस कॉन्फ्रेंस में ली गई एक छोटी सी तस्वीर थी (उसने वाकई वही स्वेटर पहना था), लेकिन उसमें एक अलग ही चमक थी। शायद कोमात्सु का यही मतलब था जब उसने कहा था कि वह एक आम इंसान जैसी नहीं दिखती। टेंगो ने अखबारों को समेटा और बीयर पीते हुए रसोई में जाकर सादा खाना बनाने लगा। उसकी लिखी किताब को जूरी ने सर्वसम्मति से साहित्यिक पुरस्कार दिया था, उसकी खूब सराहना हुई थी और शायद वह बेस्टसेलर बनने वाली थी। यह सोचकर उसे अजीब सा लग रहा था। एक तरफ तो वह सचमुच खुश था, लेकिन दूसरी तरफ वह बेचैन भी था और चैन से नहीं बैठ पा रहा था। यही योजना थी, लेकिन क्या वाकई सब कुछ इतना आसानी से हो पाएगा?

*

*

*

"क्या तुम जाग रहे थे?" उसने पूछा। हमेशा की तरह, बिना प्रश्नवाचक चिह्नों के और बिना किसी भाव-भंगिमा के।
"बिल्कुल," टेंगो ने जवाब दिया।
आप आज दोपहर खाली हैं।
— चार बजे के बाद, हाँ।
- हम मुलाक़ात कर सकते हैं।
"हम कर सकते हैं," टेंगो ने उत्तर दिया।
"हम पिछली बार कहाँ मिले थे?" फुकेरी ने पूछा।
"ठीक है," टेंगो ने कहा। "चार बजे, शिंजुकु के उसी कैफे में। वैसे, अखबारों में छपी तस्वीर बहुत अच्छी लग रही है। प्रेस कॉन्फ्रेंस वाली।"
उन्होंने कहा, "मैंने वही स्वेटर पहना था।"
"यह तुम पर बहुत अच्छा लग रहा था," टेंगो ने कहा।
— क्योंकि तुम्हें मेरे स्तन पसंद हैं।
"शायद। लेकिन इस मामले में सबसे महत्वपूर्ण बात दूसरों पर अच्छा प्रभाव डालना था।"
कुछ देर तक फुकाएरी रिसीवर पर चुप रही, मानो वह बगल की शेल्फ पर रखी किसी चीज़ को देख रही हो। शायद वह सोच रही थी कि उसके स्तनों के आकार और अच्छे प्रभाव के बीच क्या संबंध है। यह सोचकर तो तेंगो को भी समझ नहीं आ रहा था कि आखिर क्या संबंध हो सकता है।
"चार," फुकेरी ने कहा और फोन काट दिया।
*

चार बजने से कुछ ही पहले, टेंगो कैफे में दाखिल हुआ, लेकिन फुकाएरी पहले से ही वहाँ मौजूद थी। उसके बगल में प्रोफेसर एबिसुनो बैठे थे। उन्होंने हल्के भूरे रंग की लंबी आस्तीन वाली कमीज और गहरे भूरे रंग की पैंट पहनी हुई थी। हमेशा की तरह, वे मूर्ति की तरह सीधे खड़े थे। टेंगो उन्हें वहाँ देखकर थोड़ा हैरान हुआ। कोमात्सु के ज्ञान के अनुसार, उनका "पहाड़ से नीचे आना" बहुत ही दुर्लभ था, जैसा कि उन्होंने कहा था।
टेंगो उनके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया और एक कॉफ़ी मंगवाई। हालाँकि बारिश का मौसम अभी शुरू नहीं हुआ था, फिर भी दिन गर्मियों के बीचोंबीच जैसी गर्मी से भरा था। फिर भी, फुकाएरी पिछली बार की तरह ही आराम से गर्म कोको पी रहा था।
प्रोफ़ेसर एबिसुनो ने एक आइस्ड कॉफ़ी ली थी, लेकिन उसे छुआ तक नहीं था। बर्फ़ पिघलकर ऊपर एक पारदर्शी परत बना चुकी थी।
"मुझे खुशी है कि आप आए," प्रोफेसर एबिसुनो ने कहा।
इस बीच जो कॉफी आई थी, उसका एक घूंट टेंगो ने पिया।
"लगता है सब कुछ ठीक-ठाक रहा," प्रोफेसर ने धीरे से कहा, मानो अपनी आवाज़ परख रहे हों। "आप सफल रहे हैं। बहुत बड़ी सफलता। सबसे पहले तो मैं इसके लिए आपका धन्यवाद करता हूँ।"
"आपके स्नेहपूर्ण शब्दों के लिए धन्यवाद, लेकिन जैसा कि आप जानते हैं, इस कहानी में मेरा कोई आधिकारिक अस्तित्व नहीं है," टेंगो ने कहा। "और जिनका कोई आधिकारिक अस्तित्व नहीं होता, वे सफल नहीं होते।"
प्रोफेसर एबिसुनो ने मेज पर अपने हाथ रगड़े, मानो खुद को गर्म करने की कोशिश कर रहे हों।

अरे, इतनी विनम्रता की कोई ज़रूरत नहीं है। आधिकारिक बयान चाहे जो भी हो, आप बिल्कुल असली हैं। और अगर आप न होते, तो अब तक सब कुछ इतना अच्छा न होता। आपकी बदौलत ही 'द एयर क्राइसालिस' एक बेहद खास किताब बन पाई है। आपने इसे मेरी उम्मीदों से कहीं ज़्यादा गहन और समृद्ध विषयवस्तु से भरपूर बना दिया है। कोमात्सु को लोगों को पहचानने की वाकई अच्छी समझ है।
उसके बगल में बैठी फुकाएरी चुपचाप कोको पी रही थी, मानो कोई बिल्ली का बच्चा दूध पी रहा हो। उसने एक साधारण सफेद छोटी आस्तीन वाली ब्लाउज और एक छोटी नेवी ब्लू स्कर्ट पहनी हुई थी। हमेशा की तरह, उसने कोई आभूषण नहीं पहना था। जब वह आगे झुकी, तो उसके लंबे, सीधे बाल उसके चेहरे को ढक लेते थे।
"मैं वास्तव में आपको ये बातें सीधे तौर पर बताना चाहता था। इसीलिए मैंने आपको विशेष रूप से यहां आने के लिए कहा था," एबिसुनो ने कहा।
"आपको इतनी मेहनत करने की ज़रूरत नहीं थी। एयर क्राइसालिस को दोबारा बनाना मेरे लिए भी एक सार्थक काम था।"
— मुझे लगता है कि अब आपको फिर से धन्यवाद देने का समय आ गया था।
"धन्यवाद कोई मायने नहीं रखता," टेंगो ने कहा। "लेकिन क्या मैं आपसे एरी-सान के बारे में एक निजी सवाल पूछ सकता हूँ?"
— बिल्कुल, अगर मैं आपके सवाल का जवाब दे सकूँ।
"क्या आप आधिकारिक तौर पर उसके अभिभावक हैं?"
प्रोफेसर ने अपना सिर हिलाया।
"नहीं, आधिकारिक तौर पर नहीं। अगर हो सकता तो मैं ज़रूर करता। लेकिन, जैसा कि मैंने आपको पिछली बार बताया था, मैं उसके माता-पिता से संपर्क नहीं कर पाया हूँ। कानूनी तौर पर, मेरा उस पर कोई अधिकार नहीं है। वह सात साल पहले मेरे पास आई थी, और मैंने बस उसकी देखभाल की। बस इतना ही।"
"ऐसे में, क्या उसकी मौजूदगी को यथासंभव छिपाकर रखना ज़्यादा स्वाभाविक नहीं है? अब जब वह सुर्खियों में आ गई है, तो उसके मुसीबत में पड़ने की संभावना है। वह अभी नाबालिग भी नहीं है।"
"क्या आपको लगता है कि उसके माता-पिता आ सकते हैं और एरी को अपने साथ ले जाने की मांग कर सकते हैं? क्या वे उसे जबरदस्ती वापस उसी जगह ले जाना चाहेंगे जहां से वह भाग गई थी?"
"बिल्कुल सही। इसीलिए तो मुझे यह बात समझ नहीं आती।"
"यह एक स्वाभाविक सवाल है। लेकिन वे सार्वजनिक रूप से कोई कार्रवाई भी नहीं कर सकते। एरी जितनी ज्यादा सुर्खियों में आएगी, उसके बारे में वे जो भी करेंगे, उतना ही ज्यादा लोगों का ध्यान आकर्षित होगा, और वे यही बिल्कुल नहीं चाहते।"
"कौन से?" टेंगो ने पूछा। "तुम्हारा मतलब पायनियर्स से है?"
“बिल्कुल,” प्रोफेसर ने कहा। “पायनियर्स नामक धार्मिक संगठन के लिए। एरी को सात साल तक पालने-पोसने का श्रेय भी मुझे ही जाता है। एरी खुद मेरे साथ रहना चाहती है। और उसके माता-पिता की स्थिति चाहे जो भी रही हो, अंत में उन्होंने उसे सात साल के लिए छोड़ दिया था। उसे वापस उनके हवाले करना इतना आसान नहीं होगा।”
टेंगो ने अपने विचारों को समेटा। फिर उसने कहा:

— हमारी योजना के अनुसार, एयर क्राइसालिस बेस्टसेलर बनेगी। एरी लोगों का ध्यान आकर्षित करेगी। इससे पायनियर्स के लिए आगे बढ़ना मुश्किल हो जाएगा। अब तक तो मुझे यही समझ आया है। लेकिन अब आगे आप क्या चाहते हैं?
"मुझे भी नहीं पता," एबिसुनो ने बेपरवाही से जवाब दिया। "उसके आगे का इलाका बिल्कुल अनजान है। वहाँ कोई नक्शा नहीं है। हमें नहीं पता कि अगले मोड़ पर क्या है, लेकिन अगर हम आगे नहीं बढ़े तो कभी पता ही नहीं चलेगा। मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं है।"
“क्या तुम्हें जरा भी अंदाजा नहीं है?” टेंगो ने कहा।
हां। यह थोड़ा गैरजिम्मेदाराना लग सकता है, लेकिन यही इस कहानी का मूल तथ्य है। मैंने एक गहरे तालाब में पत्थर फेंका। वह छपा! उसकी गूंज चारों ओर सुनाई दी। हम सूखे गले से इंतज़ार करते हैं कि तालाब से क्या निकलेगा।
वे कुछ देर चुप रहे। तीनों ने कल्पना की कि झील की सतह पर लहरें एक वृत्त में फैल रही हैं। टेंगो ने पानी के शांत होने का इंतजार किया और शांत स्वर में कहा:
"जैसा कि मैंने तुम्हें पहली बार बताया था, हम जो कर रहे हैं वह एक घोटाला है। तुम इसे असामाजिक कृत्य भी कह सकते हो। भविष्य में इसमें काफी पैसा शामिल होगा, छोटी रकम नहीं। झूठ बर्फ के गोले की तरह जमा होते जाते हैं। झूठ से झूठ पैदा होता है, और वे तब तक जमा होते रहते हैं जब तक कि शायद कोई उन्हें संभाल न सके। और अगर सच्चाई सामने आ गई, तो एरी-सान समेत इसमें शामिल सभी को भुगतना पड़ेगा, या सबसे बुरा, हम बर्बाद हो जाएंगे। सामाजिक दृष्टि से, हम मरे हुए लोग होंगे। क्या तुम इससे सहमत हो?"
प्रोफेसर ने अपने चश्मे के फ्रेम को पकड़ा।
मेरे पास कोई और विकल्प नहीं है।
"कोमात्सु-सान की बातों से तो यही लगता है कि आप उनकी बनाई जा रही काल्पनिक कंपनी में प्रतिनिधि बनने को तैयार हैं। इसका मतलब है कि आप कोमात्सु-सान की योजना में पूरी तरह से शामिल हो रहे हैं। आप अपनी जान जोखिम में डालने को तैयार हैं।"
हां, ऐसा हो सकता है।
"मेरी समझ से, आप असाधारण बुद्धि के धनी हैं, दुनिया को देखने का आपका नजरिया मौलिक है और आपको वास्तविकता की गहरी समझ है। हालांकि, आप नहीं जानते कि यह कहानी किस दिशा में जा रही है। आप यह अनुमान नहीं लगा सकते कि आगे क्या होने वाला है। मुझे यह समझ नहीं आता कि आप जैसा व्यक्ति खुद को इतनी जोखिम भरी और अर्थहीन स्थिति में कैसे डाल सकता है।"
"आपकी सराहना के लिए धन्यवाद, भले ही यह अनुचित हो। और इस बारे में..." प्रोफेसर ने कहा और थोड़ा रुक गए। "मैं आपकी बात अच्छी तरह समझ गया हूँ।" सन्नाटा छा गया।
"क्या होगा, यह कोई नहीं जानता," फुकेरी ने अचानक बीच में कहा। फिर वह चुप हो गई। कोको का प्याला पहले ही खाली हो चुका था।
“बिल्कुल सही,” प्रोफेसर ने कहा। जैसा कि एरी कहती है, कोई नहीं जानता कि आगे क्या होगा।
"लेकिन फिर भी आपके पास किसी न किसी तरह की योजना होनी चाहिए," टेंगो ने कहा।
"मेरे पास कुछ योजना है," प्रोफेसर एबिसुनो ने उत्तर दिया।

"क्या मैं इसका अनुमान लगाने की कोशिश कर सकता हूँ?"
- बिल्कुल।
"उपन्यास के प्रकाशन से एरी-सान के माता-पिता के साथ जो हुआ, उसका सच सामने आएगा। क्या झील में फेंके गए पत्थर का यही मतलब है?"
“आप सही कह रहे हैं,” प्रोफेसर एबिसुनो ने कहा। अगर ‘द एयर क्राइसेंथेमम’ खूब बिकती है, तो मीडिया इस पर ऐसे टूट पड़ेगा जैसे तालाब में मछली रोटी फेंकने पर टूट पड़ती है। सच तो यह है कि उपन्यास ने पहले ही काफी हलचल मचा दी है। प्रेस कॉन्फ्रेंस के बाद से मुझे पत्रिकाओं और टेलीविजन चैनलों से साक्षात्कार के लिए अनगिनत अनुरोध मिले हैं। बेशक, मैंने उन सभी को ठुकरा दिया है, लेकिन अब, किताब प्रकाशित होने के बाद, दबाव और भी बढ़ जाएगा। अगर मैं उनके अनुरोधों का जवाब नहीं देता, तो वे एरी के जीवन के बारे में जानकारी हासिल करने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। उसके माता-पिता कौन हैं, वह कहाँ पली-बढ़ी, अब उसकी देखभाल कौन कर रहा है। यह दिलचस्प खबर होगी। मुझे इसमें भी कोई दिलचस्पी नहीं है। मैं पहाड़ की चोटी पर शांति से अपना जीवन व्यतीत करता हूँ। मुझे दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचने की बिल्कुल परवाह नहीं है। मुझे इससे कुछ भी हासिल नहीं होगा। लेकिन अगर मैं सही तरीके से चारा डालूँ, तो मुझे उम्मीद है कि मैं पत्रकारों को एरी के माता-पिता के बारे में पता लगाने में मदद कर सकूँगा। यह पता लगाने में कि वे क्या कर रहे हैं और कहाँ हैं। यानी, उन पर वो ज़िम्मेदारी डालना जो पुलिस नहीं कर सकती या नहीं करेगी। अगर सब ठीक रहा, तो मुमकिन है कि हम उन दोनों को वहाँ से निकाल लें। वैसे भी, फुकाडा परिवार मेरे लिए और एरी के लिए बहुत अहम है। हम उन्हें यूँ ही गायब नहीं होने दे सकते।
"लेकिन अगर फुकाडा परिवार वहां है, तो उन्हें सात साल तक कैदी क्यों रखा गया? इतना लंबा समय क्यों?"
“मुझे भी नहीं पता। मैं सिर्फ अनुमान लगा सकता हूँ,” प्रोफेसर एबिसुनो ने कहा। “जैसा कि मैंने आपको बताया है, पायनियर्स की शुरुआत एक क्रांतिकारी कृषि समुदाय के रूप में हुई थी, लेकिन किसी समय वे सैन्यवादी डॉन समूह से अलग हो गए, अपना रास्ता बदल लिया और एक धार्मिक समुदाय बन गए। डॉन घटना के संबंध में पुलिस ने उनकी भी जाँच की, लेकिन उन्हें पता चला कि उनका उस घटना से कोई लेना- देना नहीं था। तब से, समुदाय धीरे-धीरे अपनी स्थिति मजबूत कर रहा है। वास्तव में, आप कह सकते हैं कि वे इसे काफी तेजी से कर रहे हैं। लेकिन वास्तव में कोई नहीं जानता कि वे वहाँ क्या करते हैं। क्या आपको, उदाहरण के लिए, कोई जानकारी है?”
"बिल्कुल नहीं," टेंगो ने कहा। "मैं ज़्यादा टीवी नहीं देखता और न ही अखबार पढ़ता हूँ। मुझे नहीं लगता कि मैं तुलना का अच्छा पैमाना हूँ।"
नहीं, आप अकेले नहीं हैं जिन्हें कुछ नहीं पता। वे यथासंभव गुप्त रूप से काम करते हैं, ताकि किसी को पता न चले कि वे क्या कर रहे हैं। अन्य धार्मिक समूह अधिक से अधिक अनुयायियों को आकर्षित करने के लिए अपनी पहचान बनाने की कोशिश करते हैं, लेकिन पायनियर्स ऐसा नहीं करते। आम तौर पर, धार्मिक समूह स्थिर आय सुनिश्चित करने के लिए अधिक से अधिक लोगों को धर्म परिवर्तन कराने का प्रयास करते हैं, लेकिन पायनियर्स को इसकी आवश्यकता नहीं है। वे सक्षम लोगों में अधिक रुचि रखते हैं। वे अच्छे इरादों वाले, विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञ, युवा और स्वस्थ अनुयायियों को चाहते हैं। इसी कारण वे किसी को भी जबरदस्ती

धर्म परिवर्तन कराने का प्रयास नहीं करते। न ही वे किसी को भी अपने समूह में शामिल करते हैं। जो लोग उनसे जुड़ना चाहते हैं, उनका साक्षात्कार के माध्यम से चयन किया जाता है। या फिर उन्हें सीधे उनके द्वारा भर्ती किया जाता है। परिणामस्वरूप, उन्होंने एक सुस्थापित, जुझारू और उच्च नैतिक मूल्यों वाला संगठन बनाया है। ऊपरी तौर पर वे कृषि कार्य करते हैं, जबकि साथ ही साथ वे तपस्या के मार्ग पर भी चलते हैं।
लेकिन ये शिक्षाएं किस प्रकार की हैं?
उनके पास कोई स्थापित धर्मग्रंथ नहीं है। या अगर हैं भी, तो शायद वे कई ग्रंथों का मिश्रण हैं। मोटे तौर पर कहें तो, वे एक गूढ़ संप्रदाय हैं जो जटिल सिद्धांतों के बजाय कर्म और तपस्या पर ध्यान केंद्रित करते हैं। और उनकी प्रथाएं सतही नहीं हैं, बल्कि वास्तव में काफी कठोर हैं। देश भर से ऐसे युवा वहां एकत्रित हुए, जो ऐसा आध्यात्मिक जीवन जीना चाहते थे। अंततः, उन्होंने बाहरी दुनिया के प्रति बहुत ही संकीर्ण दृष्टिकोण अपना लिया और वे आपस में बहुत घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं।
क्या इसका कोई संस्थापक है?
आधिकारिक तौर पर तो नहीं। वे व्यक्तिवाद को त्यागकर सामूहिक नेतृत्व करते हैं। लेकिन अंदरूनी जानकारी स्पष्ट नहीं है। मैंने उनके बारे में यथासंभव जानने की कोशिश की है, लेकिन उनकी चारदीवारी के बाहर से बहुत कम जानकारी ही निकल पाती है। मैं आपको एक बात बता सकता हूँ, और वह यह है कि समूह तेजी से विकसित हो रहा है और उसके पास पर्याप्त धन है। पायनियर्स के कब्जे वाली जमीनें बढ़ रही हैं और सुविधाएं भी बेहतर होती जा रही हैं। और उनके चारों ओर की बाड़ भी मजबूत होती जा रही है।
और उनके आरंभिक नेता फुकादा-सान का नाम अब आधिकारिक तौर पर कहीं भी दिखाई नहीं देता है।
"बिल्कुल सही। यह पूरी तरह असामान्य है। यह ऐसी बात है जिसे मैं स्वीकार नहीं कर सकता," प्रोफेसर एबिसुनो ने फुकाएरी और फिर टेंगो की ओर देखते हुए कहा। "पायनियर्स कोई बड़ा रहस्य छुपा रहे हैं। वहाँ किसी समय कुछ बड़ा घटित हुआ होगा। मुझे नहीं पता क्या। लेकिन उस घटना ने उन्हें पूरी तरह से बदल दिया, एक कृषि प्रधान समुदाय से एक धार्मिक समूह में। और इसके साथ ही, वे अचानक एक उदार और खुले विचारों वाले समूह से एक कठोर और बेहद गुप्त समूह में परिवर्तित हो गए। मुझे लगता है कि शायद यह क्षण पायनियर्स के भीतर एक तरह का तख्तापलट था। और इसमें फुकादा किसी न किसी तरह से शामिल था। जैसा कि मैंने आपको बताया, फुकादा का धर्म से कोई लेना-देना नहीं है। वह एक कट्टर भौतिकवादी है। और वह ऐसा व्यक्ति नहीं है जो चुपचाप बैठकर अपने द्वारा स्थापित संगठन को एक धार्मिक समूह में बदलते हुए देखे। मुझे पूरा विश्वास है कि उसने ऐसा होने से रोकने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी होगी। शायद पायनियर्स के भीतर वर्चस्व की लड़ाई में उसे हार का सामना करना पड़ा।"
टेंगो ने सुनी हुई बातों पर विचार किया।
"मैं आपकी बात समझ रहा हूँ, लेकिन अगर ऐसा होता, तो क्या वे फुकाडा को पायनियर्स से निष्कासित नहीं कर देते? ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने डॉन से शांतिपूर्वक नाता तोड़ा था। उसे कैद में रखने की कोई ज़रूरत नहीं थी।"

“आप सही कह रहे हैं। आम तौर पर, वे उसे बंदी बनाकर रखने की ज़हमत नहीं उठाते। लेकिन क्या फुकादा को पायनियर्स के राज़ पता नहीं थे? ऐसे राज़ जो सार्वजनिक होने पर उन्हें मुसीबत में डाल सकते थे। इसलिए वे उसे यूँ ही जाने नहीं दे सकते थे। समुदाय के संस्थापक के रूप में, फुकादा लंबे समय से उनके प्रभावी नेता रहे थे। उन्हें तब तक हुई हर बात की जानकारी थी। शायद उन्होंने बहुत कुछ देख लिया था। इसके अलावा, उनका नाम काफी प्रसिद्ध था। तमोत्सु फुकादा का नाम उस दौर से गहराई से जुड़ा हुआ है और आज भी उसका बहुत प्रभाव है। अगर फुकादा पायनियर्स को छोड़ देते, तो उनके शब्दों और कार्यों ने दुनिया का ध्यान आकर्षित कर लिया होता, चाहे वे चाहें या न चाहें। इसलिए, भले ही फुकादा परिवार पीछे हटना चाहता, पायनियर्स उन्हें इतनी आसानी से जाने नहीं दे सकते थे।”
— इसीलिए, तामोत्सु फुकाडा की बेटी एरी-सान के सनसनीखेज पदार्पण और बेस्टसेलर 'द एयर क्राइसालिस' के माध्यम से, आप जनता की रुचि जगाना चाहते हैं और इस तरह इस गतिहीन स्थिति को गति देना चाहते हैं।
"सात साल बहुत लंबा समय होता है, और इस पूरे समय में मैंने कुछ भी हासिल नहीं किया है। अगर मैंने इस अवसर का लाभ नहीं उठाया, तो यह रहस्य कभी सुलझ नहीं पाएगा।"
— एरी-सान को चारा बनाकर बड़े बाघ को झाड़ियों से बाहर निकालने की कोशिश करें।
"कोई नहीं जानता कि झाड़ियों से क्या निकलेगा। जरूरी नहीं कि बाघ ही निकले।" लेकिन जिस तरह से चर्चा हुई, उससे मुझे लगता है कि आप अभी भी कुछ आक्रामक करने के बारे में सोच रहे हैं।
"हां, यह भी एक संभावना है," विचारशील प्रोफेसर ने कहा। "आप शायद जानते होंगे कि एक समरूप और बंद समूह में कुछ भी हो सकता है।"
गहरी खामोशी छा गई, जिसे फुकेरी की आवाज ने तोड़ा:
— क्योंकि छोटे लोग आ गए थे।
टेंगो ने प्रोफेसर के बगल में बैठी फुकाएरी की ओर देखा। हमेशा की तरह, उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था।
"तो, क्या बौनों के आने से पायनियर्स में कुछ बदलाव आया है?" उसने उससे पूछा। फुकाएरी ने सवाल का जवाब नहीं दिया। वह अपनी ब्लाउज के कॉलर पर लगे बटन से खेल रही थी।
प्रोफेसर एबिसुनो ने चुप्पी तोड़ने के लिए कहा:
"मुझे नहीं पता कि एरी जिन छोटे लोगों की बात करती है, वे क्या हैं। वह भी यह नहीं समझा सकती कि वे क्या हैं। या शायद वह समझाना नहीं चाहती। खैर, यह तो काफी स्पष्ट है कि उन्होंने पायनियर्स को एक कृषि प्रधान समुदाय से एक धार्मिक समूह में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।"
"द लिटिल पीपल या कुछ ऐसा ही," टेंगो ने कहा।
"बिल्कुल सही," प्रोफेसर ने कहा। "मुझे नहीं पता कि ये 'द लिटिल पीपल' हैं या कुछ इसी तरह का। लेकिन एयर क्राइसालिस में इन पात्रों का दिखना किसी महत्वपूर्ण घटना का संकेत देता प्रतीत होता है।"
प्रोफेसर ने कुछ देर तक अपने हाथों को देखा। फिर उन्होंने ऊपर देखा।
जैसा कि आप जानते हैं, जॉर्ज ऑरवेल के उपन्यास '1984' में 'बिग ब्रदर' नामक तानाशाह प्रकट होता है। बेशक, यह स्टालिनवाद का एक रूपक है। और 'बिग ब्रदर'

शब्द ने समाज में एक प्रतीकात्मक भूमिका हासिल कर ली है। यह ऑरवेल की उपलब्धि है। लेकिन '1984' की वास्तविकता में, बिग ब्रदर इतना प्रसिद्ध है कि उसका अस्तित्व स्पष्ट है। अगर वह प्रकट होता, तो हम सब उसे पहचान लेते और उसकी ओर उंगली उठाकर कहते: "सावधान रहो, यह बिग ब्रदर है!" दूसरे शब्दों में, वास्तविक दुनिया में उसका कोई स्थान नहीं है। इसके बजाय, 'छोटे लोग' प्रकट होते हैं। क्या आपको इन शब्दों के बीच का अंतर रोचक नहीं लगता?
प्रोफेसर ने हल्की सी मुस्कान दी और टेंगो को ध्यान से देखा।
"हम उन छोटे लोगों को देख नहीं सकते। हमें नहीं पता कि वे अच्छे हैं या बुरे, वे असली हैं या नहीं। लेकिन वे हमारे पैरों तले ज़मीन खोद रहे हैं," प्रोफेसर ने रुकते हुए कहा। "फुकाडा परिवार और एरी के साथ क्या हुआ, यह जानने के लिए हमें पहले यह समझना होगा कि ये छोटे लोग आखिर हैं क्या।"
"तुम्हारा मतलब है कि तुम छोटे लोगों को अंधेरे से बाहर लाना चाहते हो?" टेंगो ने पूछा।
"क्या हम किसी ऐसी चीज़ को अंधेरे से बाहर ला सकते हैं जिसके अस्तित्व के बारे में हमें पता भी नहीं है?" प्रोफेसर ने होठों पर मुस्कान लिए कहा। मुझे लगता है कि जिस बड़े बाघ की आप बात कर रहे हैं, वह वास्तविकता के ज़्यादा करीब है। किसी भी सूरत में, इससे यह तथ्य नहीं बदलता कि एरी-सान को चारा के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है।
नहीं, 'लालच देना' सही शब्द नहीं लगता। सही उदाहरण यह है कि मैं एक भंवर पैदा करने की कोशिश कर रहा हूँ। जल्द ही, मेरे आस-पास की चीजें इस भंवर में खिंची चली जाएंगी। मैं इसी का इंतजार कर रहा हूँ।
प्रोफेसर ने हवा में उंगली घुमाई, मानो कोई बुलबुला बना रहे हों। फिर उन्होंने आगे कहा:
— केंद्र में एरी है, और जो भंवर के ठीक बीच में है वह घूमता नहीं है। केवल उसके आसपास की चीजें ही घूमती हैं।
टेंगो चुपचाप सुनता रहा।
"अगर आप मुझे आपके ही शब्दों का इस्तेमाल करने की इजाज़त दें, तो सिर्फ़ एरी ही नहीं, बल्कि हम सब चारा हैं।" प्रोफ़ेसर ने टेंगो पर अपनी नज़रें गड़ा दीं। "इसमें तुम भी शामिल हो।"
"मुझे 'द एयर क्राइसालिस' को फिर से लिखना पड़ा। जैसा कि कहते हैं, मैं तो बस एक निचले पद पर तैनात तकनीशियन था। यह प्रस्ताव कोमात्सु-सान ने शुरू से ही दिया था।"
- मैं समझता हूँ।
"लेकिन धीरे-धीरे चीजें बदलती गईं," टेंगो ने कहा। "मेरा मतलब है, कोमात्सु- सान ने जो योजना शुरू में बनाई थी, उसमें आपने बदलाव किया था, है ना?"
"नहीं, मेरा कुछ भी बदलने का इरादा नहीं था। कोमात्सु अपने लक्ष्य साधता है, और मैं अपने। संयोगवश, फिलहाल हमारे लक्ष्य एक ही दिशा में बढ़ रहे हैं।" योजना आगे बढ़ती है, और आपके लक्ष्य साथ-साथ चलते हैं।
- आप कह सकते हैं कि।
दो लोग एक ही घोड़े पर सवार होकर अलग-अलग गंतव्यों की ओर जा रहे हैं। एक निश्चित बिंदु तक उनका मार्ग एक समान है, लेकिन उसके बाद क्या होगा, यह कोई नहीं जानता।

आप सही भाव व्यक्त करने में माहिर हैं।
टेंगो ने आह भरी।
मुझे डर है कि संभावनाएं बहुत अच्छी नहीं हैं। वैसे भी, हम समय को वापस नहीं मोड़ सकते।
प्रोफेसर ने कहा, "अगर हम इसे दान में भी दे दें, तो भी उसी जगह पर वापस लौटना मुश्किल होगा जहां से हमने शुरुआत की थी।"
चर्चा यहीं समाप्त होती है। टेंगो के पास कहने के लिए और कुछ नहीं था।
*

प्रोफेसर एबिसुनो सबसे पहले उठे। उन्होंने कहा कि उन्हें पास में ही किसी से मिलना है और वे चले गए, लेकिन फुकाएरी वहीं रुक गई। अकेले रह जाने पर, टेंगो और फुकाएरी कुछ देर तक चुपचाप एक-दूसरे को देखते रहे।
“क्या तुम्हें भूख नहीं लगी?” टेंगो ने पूछा।
- ज़रूरी नहीं।
अंदर भीड़ बढ़ने लगी थी, और उनमें से किसी ने भी जाने का सुझाव नहीं दिया, इसलिए वे कैफे से निकल गए। वे कुछ देर तक शिंजुकु में यूं ही भटकते रहे। शाम के छह बजने वाले थे और कई लोग स्टेशन की ओर जल्दी-जल्दी जा रहे थे, लेकिन आसमान अभी भी रोशन था। गर्मियों की सुबह की धूप पूरे शहर को अपनी चपेट में ले रही थी। तहखाने में बने कैफे से बाहर निकलते ही वह रोशनी कृत्रिम सी लगने लगी। “क्या तुम अब कहीं जा रहे हो?” टेंगो ने पूछा।
"मेरे पास जाने के लिए कोई जगह नहीं है," फुकेरी ने जवाब दिया।
"क्या मैं आपको घर छोड़ दूं?" टेंगो ने कहा। मेरा मतलब है, शिनानोमाची वाले अपार्टमेंट तक। आप वहां रात भर रुकेंगे, है ना?"
"मैं वहां नहीं जा रहा," फुकेरी ने कहा।
- क्यों?
उसने कोई जवाब नहीं दिया।
“क्या आपको लगता है कि वहां न जाना ही बेहतर है?” टेंगो ने पूछा।
फुकेरी ने चुपचाप सिर हिलाया।
वह उससे पूछना चाहता था कि क्यों, लेकिन उसे संदेह था कि उसे कोई स्पष्ट उत्तर नहीं मिलेगा।
"तो क्या आप प्रोफेसर के घर वापस जा रहे हैं?"
फुटामाताओ तक का रास्ता बहुत लंबा है।
"क्या आपके पास कहीं और जाने की जगह है?"
मैं आज रात तुम्हारे साथ रुकूंगा।
"यह थोड़ा जटिल हो सकता है," टेंगो ने सोच-समझकर शब्दों का चयन करते हुए उत्तर दिया। "मैं एक छोटे से अपार्टमेंट में अकेला रहता हूँ, और मुझे नहीं लगता कि प्रोफेसर एबिसुनो भी इस बात से सहमत होंगे।"
"प्रोफेसर को कोई आपत्ति नहीं है," फुकेरी ने कहा। फिर उसने कंधे उचकाते हुए कहा, "मुझे भी कोई परेशानी नहीं है।"
“शायद यह मुझे परेशान करता है!” टेंगो ने कहा।
- क्यों।
“अच्छा…” उसने बोलना शुरू किया, लेकिन बोल नहीं पाया। वह भूल गया था कि उसे क्या कहना था। फुकाएरी से बात करते समय उसके साथ अक्सर ऐसा होता था। वह पूरी

तरह भूल जाता था कि बात किस बारे में है और वह क्या कहना चाहता है। मानो तेज़ हवा ने उसके सामने रखे संगीत के पन्ने बिखेर दिए हों।
फुकेरी ने हाथ बढ़ाकर टेंगो का बायां हाथ पकड़ लिया, मानो उसे दिलासा दे रही हो।
"तुम वास्तव में नहीं समझते," उसने उससे कहा।
मुझे क्या समझ नहीं आ रहा है?
— कि हम एक हैं।
“हम एक हैं!” टेंगो ने उत्साहपूर्वक कहा।
हमने मिलकर एक किताब लिखी।
टेंगो को अपनी हथेली पर उसकी उंगलियों की पकड़ महसूस हुई। यह मजबूत नहीं थी, लेकिन लगातार बनी हुई थी।
— बिल्कुल सही। हमने मिलकर 'द एयर क्राइसालिस' लिखी थी। और बाघ हमें साथ-साथ खा जाएगा।
"कोई बाघ नहीं आ रहा है," फुकेरी ने आश्चर्यजनक रूप से गंभीर होकर कहा।
"यह तो अच्छी बात है," टेंगो ने कहा, लेकिन उसे खुद को भाग्यशाली महसूस नहीं हो रहा था। शायद कोई बाघ नहीं आ रहा था, लेकिन उसे नहीं पता था कि और क्या हो सकता है।
वे दोनों शिंजुकु स्टेशन के टिकट काउंटर के सामने खड़े थे। फुकाएरी अभी भी उसका हाथ पकड़े हुए उसे देख रही थी। उनके चारों ओर दुनिया एक तेज़ बहती नदी की तरह गुज़र रही थी।
"ठीक है। अगर तुम यही चाहते हो तो मेरे साथ रहो," टेंगो ने हार मानते हुए कहा। "मैं सोफे पर सो जाऊंगा।"
"धन्यवाद," फुकेरी ने कहा।
यह पहली बार था जब उसने उसके मुंह से धन्यवाद जैसे शब्द सुने थे। या शायद यह पहली बार नहीं था, लेकिन उसे याद नहीं था कि उसने आखिरी बार उसे धन्यवाद कब कहते सुना था।

अध्याय 19 महिलाएं अपने रहस्य साझा करती हैं

"छोटे लोग?" आओमामे ने धीरे से उसकी आँखों में देखते हुए पूछा। "ये छोटे लोग कौन हैं?"
लेकिन त्सुबासा ने अपने होंठ कसकर बंद कर लिए, और उसकी निगाहों की गहराई गायब हो गई, मानो उन शब्दों को कहकर उसने अपनी लगभग सारी ऊर्जा खर्च कर दी हो। “क्या आप इन लोगों को जानते हैं?” आओमामे ने पूछा।
कोई जवाब नहीं।
"उन्होंने पहले भी कई बार ऐसा कहा है," महिला ने समझाया। "छोटे लोग। मुझे नहीं पता कि उनका मतलब क्या है।"
इन शब्दों में एक उदासी भरी गूंज थी। आओमामे के कानों ने उस धुंधली प्रतिध्वनि को दूर की गड़गड़ाहट की तरह महसूस किया।
"क्या ये वही लोग हो सकते हैं जिन्होंने उसे चोट पहुंचाई?" आओमामे ने महिला से पूछा।
उसने अपना सिर हिलाया।
"मुझे नहीं पता। लेकिन ये नन्हे लोग उसके लिए बहुत मायने रखते हैं, चाहे वे कोई भी हों।"
छोटी बच्ची अपनी धुंधली आँखों से खाली निगाहों से घूरती रही और अपने हाथों को मेज पर टिकाए रही, अपनी स्थिति में जरा भी नहीं बदली।
“क्या हुआ?” आओमामे ने महिला से पूछा।
“जांच में बलात्कार के लक्षण मिले हैं,” उसने कुछ उदासीन स्वर में उत्तर दिया। बार-बार बलात्कार हुआ है। उसकी योनि और गुप्तांग बुरी तरह से फटे हुए हैं। उसके गर्भाशय पर भी घाव हैं, क्योंकि उसके अविकसित गर्भाशय में एक परिपक्व और कठोर लिंग प्रवेश कर गया था। गर्भाशय की वह दीवार, जिस पर अंडाणु जुड़ता है, काफी हद तक नष्ट हो गई है। डॉक्टर ने कहा कि वह बड़ी होने पर भी गर्भवती नहीं हो पाएगी।”
वह महिला जानबूझकर ही बच्ची को ये चौंकाने वाली बातें बता रही थी। छोटी बच्ची चुपचाप सुनती रही। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं बदला। कभी-कभी उसका मुंह थोड़ा हिलता था, लेकिन कोई आवाज़ नहीं निकलती थी। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी अनजान व्यक्ति के बारे में हो रही बातचीत को विनम्रता से सुन रही हो।
“और बात यहीं खत्म नहीं होती,” महिला ने धीरे से कहा। “अगर किसी चमत्कार से उसका गर्भाशय ठीक भी हो जाए, तो मुझे नहीं लगता कि वह कभी किसी के साथ यौन संबंध बनाना चाहेगी। ऐसे घावों के साथ, संभोग से बहुत दर्द होता था, और यह कई बार दोहराया गया था। मुझे नहीं लगता कि उस दर्द की याद कभी मिट पाएगी। आप समझ ही रहे हैं ना मेरा मतलब?”
ओमामे ने सिर हिलाया। उसने अपने हाथ घुटनों पर रखे हुए थे, उंगलियां मुट्ठी में बंद थीं।

"दूसरे शब्दों में कहें तो, उसके शरीर में तैयार हुए अंडों के पास जाने के लिए कोई जगह नहीं है। वे पहुँच चुके हैं..." महिला ने त्सुबासा की ओर देखते हुए कहा, और फिर आगे बोली। बांझ।
आओमामे को इस बात का अंदाज़ा नहीं था कि वह छोटी बच्ची कितना कुछ समझती है। लेकिन चाहे वह कितना भी समझती हो, उसकी भावनाएँ मानो कहीं और ही थीं, उनके सामने नहीं। वे कहीं और थीं, एक छोटे से अंधेरे कमरे में बंद।
"मैं यह नहीं कह रही कि स्त्री का जीवन का एकमात्र उद्देश्य गर्भवती होना और बच्चे पैदा करना है," उस महिला ने आगे कहा। "हर किसी को अपनी पसंद का जीवन चुनने की स्वतंत्रता है। लेकिन किसी पुरुष द्वारा किसी स्त्री से उसके जन्मजात अधिकार को जबरदस्ती छीनना अक्षम्य है।"
ओमामे ने चुपचाप सिर हिलाया।
"यह अक्षम्य है," महिला ने दोहराया।
आओमामे ने गौर किया कि उसकी आवाज थोड़ी कांप रही थी। ऐसा लग रहा था मानो वह अपनी भावनाओं पर मुश्किल से काबू पा पा रहा हो।
"यह छोटी बच्ची कहीं से भागकर आई है," महिला ने आगे कहा। "मुझे नहीं पता कि वह कैसे भागने में कामयाब हुई, लेकिन उसे कहीं और नहीं जाना चाहिए, वह कहीं और सुरक्षित नहीं रहेगी।"
उसके माता-पिता कहाँ हैं?
महिला ने भौंहें चढ़ाईं और अपनी उंगलियों के नाखूनों से मेज पर हल्के से थपथपाया।
"मुझे पता है वे कहाँ हैं। लेकिन ये वही लोग हैं जिन्होंने यह सब बर्दाश्त किया।" दूसरे शब्दों में, वह अपने माता-पिता से भाग गई।
"क्या आप कह रहे हैं कि वे अपनी ही बेटी के साथ बलात्कार करवाने के लिए सहमत हो गए थे?"
उन्होंने न केवल इसे स्वीकार किया, बल्कि इसे प्रोत्साहित भी किया।
"लेकिन कैसे..." आओमामे ने कहना शुरू किया, लेकिन वह अपने शब्द पूरे नहीं कर सकी।
महिला ने अपना सिर हिलाया।
"यह बहुत भयानक है। अक्षम्य है। लेकिन मामला पेचीदा है। यह सिर्फ घरेलू हिंसा का मामला नहीं है। डॉक्टर ने कहा कि उसे पुलिस को सब कुछ बता देना चाहिए, लेकिन मैंने उससे ऐसा न करने को कहा। वह मेरा करीबी परिचित है, और आखिरकार मैं उसे मनाने में कामयाब हो गई।"
"लेकिन क्यों?" आओमामे ने पूछा। "पुलिस को इसकी सूचना क्यों नहीं देते?"
“इस बच्ची के साथ जो बर्ताव किया गया वह अमानवीय था और समाज को इसे बर्दाश्त नहीं करना चाहिए। यह एक घिनौना अपराध है जिसके लिए कड़ी सजा मिलनी चाहिए,” महिला ने सोच-समझकर शब्दों का चुनाव करते हुए कहा। “लेकिन अगर हम पुलिस के पास गए, तो वे क्या कार्रवाई कर सकते हैं? जैसा कि आप देख सकते हैं, वह मुश्किल से ही बोल पाती है। वह ठीक से यह भी नहीं बता सकती कि उसके साथ क्या हुआ। और अगर वह किसी तरह बता भी दे, तो इसे साबित करने का कोई तरीका नहीं होगा। अगर पुलिस उसे ले गई, तो शायद वे उसे उसके माता-पिता के पास वापस भेज देंगे, उसके पास कहीं और जाने की जगह नहीं है, और माता-पिता का अधिकार तो उन्हीं के पास है।

अगर वह उनके पास वापस चली गई, तो वही सब फिर से होगा, और मैं ऐसा नहीं होने दे सकती।”
ओमामे ने सिर हिलाया।
"मैं उसे पालूंगी," उस महिला ने स्पष्ट स्वर में कहा। "मैं उसे किसी को नहीं दूंगी। उसके माता-पिता आ सकते हैं, कोई भी आ सकता है, क्योंकि मैं उसे उन्हें नहीं दूंगी। मैं उसे कहीं छिपाकर खुद पालूंगी।"
कुछ देर तक आओमामे बारी-बारी से उस महिला और छोटी बच्ची को देखती रही।
“और क्या आप उस आदमी की पहचान बता सकते हैं जिसने उसके साथ यौन उत्पीड़न किया? क्या वह सिर्फ एक ही आदमी है?” आओमामे ने पूछा।
मैं उसे पहचान सकता हूँ। वह एक ही है।
"लेकिन आप उसे अदालत में नहीं ले जा सकते।"
“वह बहुत प्रभावशाली व्यक्ति है,” महिला ने उत्तर दिया। “उसका सीधा और मजबूत प्रभाव है, जिसके तहत उसके माता-पिता भी थे। और अभी भी हैं। ये लोग वही करते हैं जो वह उन्हें आदेश देता है। ये ऐसे लोग हैं जिनमें कोई व्यक्तित्व या विवेक नहीं है। उनके लिए, इस आदमी की कही हर बात निर्विवाद रूप से सही है। इसलिए, अगर वह उनसे अपनी बेटी को उसे सौंपने के लिए कहता है, तो वे आपत्ति नहीं कर सकते। वे उसकी हर बात पर विश्वास करते हैं और खुशी-खुशी उसे सौंप देते हैं, भले ही वे जानते हों कि क्या हो रहा है।”
ओमामे को उस महिला की कही हुई सारी बातें ठीक से समझने में कुछ समय लगा। उसने बहुत ध्यान लगाया, तब जाकर उसे सब कुछ स्पष्ट रूप से समझ आया।
"क्या यह किसी प्रकार का समूह है या कुछ और?"
— हाँ। एक विशिष्ट समूह जिसमें बीमार और संकीर्ण मानसिकता वाले लोग समान रूप से शामिल हैं।
"किसी प्रकार का पंथ?"
"जी हां," महिला ने सहमति जताते हुए कहा। "और यह एक बेहद दुष्ट और खतरनाक पंथ है।"
यह स्पष्ट था। यह केवल एक पंथ ही हो सकता था। ऐसे लोग जो हूबहू वही करते हैं जो उन्हें कहा जाता है। जिनमें कोई व्यक्तित्व या विवेक नहीं होता। आओमामे ने अपने होंठ चबाते हुए सोचा, अगर मेरे साथ भी ऐसा ही हो जाए तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा।
बेशक, साक्षी चर्च में किसी का भी बलात्कार में कोई हाथ नहीं था। या कम से कम उसके साथ तो किसी भी तरह का यौन उत्पीड़न नहीं हुआ था। उसके आस-पास के सभी "भाई" और "बहन" शांत और ईमानदार लोग थे। वे ऐसे लोग थे जो अपने धर्म को गंभीरता से लेते थे और अपने सिद्धांतों को बहुत महत्व देते थे - कभी-कभी तो अपनी जान तक दांव पर लगा देते थे। लेकिन अच्छे इरादे हमेशा अच्छे परिणाम नहीं देते। बलात्कार सिर्फ शरीर पर हमला नहीं है। हिंसा हमेशा दिखाई देने वाली नहीं होती, और घाव सिर्फ खून बहने वाले नहीं होते।
त्सुबासा को देखकर आओमामे को अपनी ही उम्र की याद आ गई। उसने सोचा, मैं तो वहाँ से अपनी मर्ज़ी से भाग निकली थी। लेकिन इस बच्ची को इतना गहरा ज़ख्म लगा है कि मुझे नहीं लगता कि अब कोई रास्ता बचा है। वह अब कभी खुशमिजाज़ नहीं होगी। यह सोचकर आओमामे के सीने में तेज़ दर्द उठा। त्सुबासा में उसे अपनी वो छवि दिखाई दी जो वह बन सकती थी।

"आओमामे," उस महिला ने गोपनीय स्वर में कहा। "अब आपको यह बताने का अच्छा समय है कि मैंने आपके अतीत की जांच की है।"
ये शब्द सुनकर आओमामे अचानक होश में आई और उसकी तरफ देखने लगी।
"मैंने यह तब किया जब आप पहली बार यहां आए थे और आपसे बात की थी। मुझे उम्मीद है कि आप इसे मेरे खिलाफ नहीं मानेंगे।"
"नहीं, मुझे आपसे कोई शिकायत नहीं है," आओमामे ने जवाब दिया। "यह स्वाभाविक ही है कि आप मेरे अतीत की छानबीन करें। हम जो कर रहे हैं वह सामान्य नहीं है।" "बिल्कुल सही। हम बहुत नाजुक और नाजुक स्थिति में हैं। और इसीलिए हमें एक-दूसरे पर भरोसा करना पड़ता है। लेकिन आप किसी पर तब तक भरोसा नहीं कर सकते जब तक आप उसके बारे में सब कुछ न जान लें। इसलिए मैंने आपके बारे में हर चीज की छानबीन की है। वर्तमान से लेकर अतीत तक। लगभग सब कुछ, जाहिर है। कोई भी किसी के बारे में पूरी तरह से नहीं जान सकता। भगवान भी नहीं।"
और न ही शैतान ऐसा करता है।
"और शैतान भी नहीं," महिला ने दोहराया और मुस्कुराई। "मैं जानती हूँ कि बचपन में एक पंथ के कारण तुम्हें कितने आध्यात्मिक घाव लगे थे। तुम्हारे माता- पिता साक्षी चर्च के कट्टर अनुयायी थे और आज भी हैं। और उन्होंने तुम्हें अपना धर्म छोड़ने के लिए माफ़ नहीं किया है। यह बात आज भी तुम्हें परेशान करती है।"
ओमामे ने चुपचाप सिर हिलाया।
“मेरी सच्ची राय यह है,” उस महिला ने आगे कहा, “कि विटनेस चर्च एक सच्चा धर्म नहीं है। अगर बचपन में आपको गंभीर चोट लगी होती, अगर आप बीमार होते और आपको सर्जरी की ज़रूरत होती, तो शायद आपकी मृत्यु हो जाती। एक ऐसा धर्म जो जीवन रक्षक ऑपरेशन को केवल इसलिए नकारता है क्योंकि वह बाइबल के लिखित सिद्धांतों से अलग है, वह एक पंथ से ज़्यादा कुछ नहीं है। यह सिद्धांतों का घोर दुरुपयोग है।”
ओमामे ने सिर हिलाया। साक्षी चर्च में बच्चों के मन में सबसे पहले यही बात बिठाई जाती है कि रक्त चढ़ाने से इनकार करना कितना तर्कसंगत है। उन्हें सिखाया जाता है कि पवित्र शरीर और आत्मा के साथ मरना और स्वर्ग जाना, प्रभु की शिक्षाओं के विरुद्ध रक्त चढ़ाने से कहीं बेहतर है, क्योंकि रक्त चढ़ाने से नरक में जाना पड़ता है। और यहाँ कोई समझौता नहीं हो सकता। अंत में या तो नरक जाएगा या स्वर्ग, दो में से एक रास्ता। बच्चे चीजों को आलोचनात्मक ढंग से देखना नहीं जानते। उन्हें यह जानने का कोई तरीका नहीं होता कि ऐसा तर्क समाज में स्वीकार्य है या वैज्ञानिक रूप से सही है। बच्चे अपने माता-पिता से सीखी हर बात को बिना सोचे-समझे मान लेते हैं। ओमामे ने सोचा, अगर बचपन में मुझे कभी रक्त चढ़ाने की ज़रूरत पड़ती, तो मैं शायद अपने माता-पिता की बात मानकर इनकार कर देती और मृत्यु को चुन लेती। और अंत में स्वर्ग जाती या पता नहीं कहाँ। "क्या यह कोई जाना-माना पंथ है?" आओमामे ने पूछा।
"इसे 'द पायनियर्स' कहा जाता है। मुझे यकीन है कि आपने इनके बारे में सुना होगा, क्योंकि एक समय ऐसा था जब ये लगभग हर दिन अखबारों में छपते थे।"
आओमामे को वह नाम पहले कभी सुनने की याद नहीं थी, लेकिन उसने अस्पष्ट रूप से सिर हिलाया और कुछ नहीं कहा। उसे लगा कि इस तरह प्रतिक्रिया देना ही सबसे अच्छा है। वह जानती थी कि उस समय वह 1984 में नहीं, बल्कि 1Q84 की दुनिया में

थी, जिसमें कई अंतर थे। फिलहाल, यह सिर्फ एक अनुमान था, लेकिन यह हर दिन और अधिक वास्तविक होता जा रहा था। और इस नई दुनिया में ऐसी बहुत सी जानकारियाँ थीं जो उसे अभी तक नहीं मिली थीं। उसे बेहद सावधान रहना होगा।
— लेडी ने आगे बताया कि पायनियर्स मूल रूप से एक छोटा कृषि प्रधान समुदाय था, जो नव वामपंथी विचारधारा से जुड़े लोगों के एक समूह पर आधारित था। लेकिन एक समय अचानक उन्होंने अपना रुख बदल लिया और एक धार्मिक संप्रदाय में परिवर्तित हो गए। इसका सटीक कारण और यह सब कैसे हुआ, यह ज्ञात नहीं है। कहानी बहुत ही विचित्र है। लेकिन फिर भी, अधिकांश सदस्य वहीं बने रहे। उन्हें एक धार्मिक संस्था के रूप में मान्यता प्राप्त है, लेकिन उनकी पहचान के बारे में लगभग कुछ भी पता नहीं है। वे मूल रूप से गूढ़ बौद्ध धर्म से संबंधित हैं, लेकिन उनके सिद्धांत केवल दिखावटी प्रतीत होते हैं। फिर भी, संप्रदाय ने जल्दी ही कई अनुयायी प्राप्त कर लिए और यह लगातार मजबूत होता जा रहा है। हालांकि वे इतनी गंभीर घटना में शामिल थे, लेकिन एक संप्रदाय के रूप में उनकी छवि को जरा भी नुकसान नहीं पहुंचा। उन्होंने स्थिति का अविश्वसनीय रूप से सुंदर ढंग से सामना किया। उन्होंने खुद को इसी रूप में प्रचारित भी किया।
महिला ने गहरी सांस ली और बोलना जारी रखा।
दुनिया को इस बात का पता नहीं है, लेकिन इस पंथ का नेतृत्व "नेता" नाम का एक व्यक्ति करता है, जिसके बारे में माना जाता है कि उसके पास विशेष शक्तियां हैं। वह कभी-कभी इन शक्तियों का उपयोग गंभीर बीमारियों को ठीक करने, भविष्य बताने और तरह-तरह की अलौकिक घटनाओं को अंजाम देने के लिए करता है। ज़ाहिर है, ये सब बस बड़े-बड़े धोखे हैं, लेकिन फिर भी ये बहुत से लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने में कामयाब रहते हैं।
— अलौकिक घटनाएँ?
उस महिला ने अपनी खूबसूरती से तराशी हुई भौहों को सिकोड़ लिया।
मुझे ठीक से पता नहीं है कि यह क्या है। सच कहूँ तो, मुझे इस तरह की रहस्यमयी चीजों में बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं है। इस तरह के घोटाले प्राचीन काल से ही पूरी दुनिया में होते आ रहे हैं। इनका तरीका हमेशा एक जैसा ही होता है। फिर भी ये घिनौने घोटाले कभी कमजोर नहीं पड़ते, और इसका कारण यह है कि ज्यादातर लोग सच्चाई पर नहीं, बल्कि उस पर विश्वास करना पसंद करते हैं जिसे वे सच्चाई मान लेते हैं। चाहे वे अपनी आँखें कितनी भी खोल लें, उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं देता। ऐसे लोगों को धोखा देना बच्चों का खेल है।
"पायनियर्स," आओमामे ने धीरे से कहा। उसने सोचा, यह किसी एक्सप्रेस ट्रेन का नाम लगता है। कोई सोच भी नहीं सकता कि यह किसी धार्मिक संप्रदाय का नाम है। 'पायनियर्स' शब्द सुनते ही त्सुबासा ने एक पल के लिए अपनी निगाहें नीचे कर लीं, मानो उसके भीतर छिपी किसी गूंज का जवाब दे रहा हो। लेकिन उसने तुरंत अपनी निगाहें ऊपर उठाईं और अपने भावहीन चेहरे पर लौट आया। ऐसा लगा जैसे उसके भीतर अचानक एक छोटा सा भंवर उठ खड़ा हुआ हो, जो तुरंत शांत हो गया।
"पायनियर्स संप्रदाय के नेता ने ही त्सुबासा का बलात्कार किया है," उस महिला ने कहा। उसने दावा किया कि उसने आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करने के बहाने ऐसा किया। माता-पिता को बताया गया था कि यह समारोह उसके पहले मासिक धर्म से पहले पूरा होना चाहिए और शुद्ध आध्यात्मिक ज्ञान केवल उसी बच्ची को दिया जा सकता है जो अभी तक पवित्र हो। असहनीय पीड़ा एक बाधा है जिसे पार करना उच्च स्तर तक

पहुँचने के लिए आवश्यक है। माता-पिता ने उसकी हर बात पर विश्वास कर लिया। यह वाकई अविश्वसनीय है कि लोग कितने मूर्ख हो सकते हैं। और यह केवल त्सुबासा के मामले में ही नहीं हुआ। मुझे जो जानकारी मिली है, उससे लगता है कि संप्रदाय की अन्य लड़कियों के साथ भी ऐसा ही हुआ है। नेता एक भ्रष्ट व्यक्ति है जिसकी यौन प्रवृत्ति विकृत है। इसमें कोई संदेह नहीं है। संप्रदाय और उसके सिद्धांत केवल एक पर्दा हैं जिसके पीछे वह अपनी वासनाओं को छुपाता है।
क्या इस नेता का कोई नाम है?
दुर्भाग्य से, मैं उसे ढूंढ नहीं पाया हूँ। उसे "नेता" कहा जाता है, लेकिन मैं नहीं जानता कि वह कौन है, उसका अतीत क्या है, या वह कैसा दिखता है। मैंने कितनी भी कोशिश की, मुझे उसके बारे में कोई जानकारी नहीं मिली। सब कुछ अवरुद्ध है। वह पहाड़ों में, यामानाशी स्थित संप्रदाय के मुख्यालय में कैद है, और वह शायद ही कभी सार्वजनिक रूप से दिखाई देता है। संप्रदाय के भीतर भी, बहुत कम लोगों को उससे मिलने की अनुमति है। वह आमतौर पर किसी अंधेरी जगह पर बैठकर ध्यान करता है।
और हम इस आदमी को आज़ाद नहीं जाने दे सकते।
उस महिला ने त्सुबासा की ओर देखा और सिर हिलाया।
"हम उसे और शिकार नहीं करने दे सकते। क्या यह सही है?"
दूसरे शब्दों में कहें तो, हमें कार्रवाई करने की जरूरत है।
उस महिला ने हाथ बढ़ाकर त्सुबासा के हाथ पर अपना हाथ रख दिया और फिर कुछ देर तक चुप रही।
कुछ देर बाद उसने कहा, "बिल्कुल सही।"
"क्या यह निश्चित है कि वह इन विकृतियों को दोहराता है?" आओमामे ने महिला से पूछा।
हमारे पास इस बात के पुख्ता सबूत हैं कि इस संप्रदाय में लड़कियों का बलात्कार किया जाता है।
"अगर यह सच है, तो यह अक्षम्य है," आओमामे ने शांत भाव से कहा। "जैसा कि आप कहती हैं, हम उसे और लोगों को अपना शिकार बनाने नहीं दे सकते।"
वह महिला विरोधाभासी विचारों से परेशान प्रतीत हो रही थी।
उन्होंने कहा, "हमें इस नेता के बारे में और अधिक जानकारी जुटानी ही होगी। हम किसी भी तरह की अस्पष्टता नहीं छोड़ सकते। आखिरकार, यह जीवन और मृत्यु का मामला है।"
क्या वह सार्वजनिक स्थानों पर बहुत कम ही बाहर निकलता है?
— जी हाँ। और इसकी सुरक्षा बेहद कड़ी है।
ओमामे ने अलमारी के दराज के पीछे छिपी अपनी नुकीली छेनी को देखकर भौंहें चढ़ाईं।
"किसी भी सूरत में, यह एक कठिन कार्य होगा," उन्होंने कहा।
"बेहद मुश्किल," उस महिला ने पुष्टि की।
फिर उसने त्सुबासा के हाथ से अपना हाथ हटाया और अपनी बीच वाली उंगली को अपनी भौंह पर रखा। यह इस बात का संकेत था कि वह किसी बात को लेकर बहुत सोच-विचार कर रहा था – ऐसा बहुत कम होता था।

— हकीकत में देखा जाए तो, यामानाशी तक जाना, कड़ी सुरक्षा वाले संप्रदाय के बीचोंबीच घुसपैठ करना, नेता को मार गिराना और फिर शांति से निकल जाना थोड़ा मुश्किल होगा। अगर मैं किसी निंजा फिल्म में होता, तो भी यही हाल होता… "मैंने तो आपसे ऐसी कोई बात पूछने के बारे में सोचा भी नहीं था। बिल्कुल," उस महिला ने गंभीरता से कहा, फिर मुस्कुराई जैसे उसे अभी-अभी एहसास हुआ हो कि यह एक मज़ाक था। "ऐसा तो हो ही नहीं सकता।"
"और एक और बात है जो मुझे परेशान कर रही है," आओमामे ने उसकी आँखों में देखते हुए कहा। "छोटे लोगों वाली बात। ये छोटे लोग कौन हैं और क्या हैं? और इन्होंने त्सुबासा के साथ क्या किया? मुझे लगता है कि हमें इनके बारे में जानकारी चाहिए।"
“मुझे भी चिंता हो रही है,” महिला ने अपनी उंगली भौंह पर रखे हुए कहा। छोटी बच्ची मुश्किल से बोलती है, लेकिन उसने ये शब्द कई बार कहे हैं। ये शब्द उसके लिए बहुत मायने रखते होंगे। लेकिन वह हमें ये नहीं बता रही कि वे कौन हैं। जब बात उनके बारे में आती है, तो वह चुप हो जाती है। मुझे थोड़ा और समय दीजिए। मैं इस बारे में पता लगाऊंगी।
क्या पायनियर्स के बारे में अधिक विस्तृत जानकारी प्राप्त करने का कोई तरीका है?
उस महिला ने हल्की सी मुस्कान दिखाई।
"ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसे पैसे से न खरीदा जा सके। और मैं इस मामले में, खासकर इस मामले में, बहुत पैसा खर्च करने को तैयार हूँ। इसमें थोड़ा समय लग सकता है, लेकिन मुझे वह जानकारी मिल जाएगी जिसकी मुझे ज़रूरत है।"
आओमामे ने सोचा, कुछ चीजें ऐसी होती हैं जिन्हें पैसे से नहीं खरीदा जा सकता। उदाहरण के लिए, चंद्रमा।
"क्या तुम सचमुच त्सुबासा को ले जाकर खुद उसकी परवरिश करने जा रही हो?" आओमामे ने विषय बदल दिया।
"बिल्कुल। मैं उसे कानूनी रूप से गोद लेने के बारे में सोच रहा हूँ।"
"मुझे लगता है कि आप यह जानते होंगे, लेकिन कानूनी कार्यवाही आसानी से हल नहीं होती। हालात ऐसे ही हैं..."
"मैं इसके लिए तैयार हूँ," उस महिला ने कहा। "मैं अपने पास मौजूद हर साधन का इस्तेमाल करूंगी। मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूंगी। मैं इस बच्चे को किसी को नहीं दूंगी।"
उसकी आवाज़ में बहुत तीव्रता झलक रही थी। उस पल तक उसने कभी भी अपनी भावनाओं को इतनी स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं होने दिया था। इससे आओमामे थोड़ी चिंतित हो गई, और लेडी ने उसके चेहरे पर दिख रही चिंता को भांप लिया।
"मैं आपको कुछ ऐसा बताने जा रही हूँ जो मैंने पहले कभी किसी को नहीं बताया," उस महिला ने धीमी आवाज़ में, गोपनीय लहजे में कहा। "यह बात मैंने अपने तक ही रखी है, क्योंकि इसके बारे में बात करना मेरे लिए बहुत मुश्किल था। जब मेरी बेटी ने आत्महत्या की, तब वह गर्भवती थी। छह महीने की। शायद वह उस आदमी के बच्चे को जन्म नहीं देना चाहती थी, और इसीलिए उसने अपनी जान ले ली, और गर्भ में पल रहे बच्चे को भी मार डाला। अगर वह जीवित रहती, तो वह त्सुबासा की उम्र की होती। मैंने एक ही झटके में दो अनमोल जिंदगियाँ खो दीं।"
"मुझे खेद है," आओमामे ने कहा।

"लेकिन चिंता मत करो। मैं निजी मामलों से प्रभावित होकर निर्णय नहीं लेता। मैं तुम्हें किसी भी अनावश्यक खतरे में नहीं डालूंगा। और तुम मेरे लिए एक महत्वपूर्ण बेटी हो। हम पहले से ही एक परिवार हैं।"
ओमामे ने चुपचाप सिर हिलाया।
"हमारे बीच एक ऐसा बंधन है जो हमें खून के रिश्ते से भी अधिक मजबूती से जोड़ता है," महिला ने शांत स्वर में कहा।
ओमामे ने फिर से सिर हिलाया।
"इस आदमी को हर हाल में खत्म करना होगा," उस महिला ने कहा, मानो खुद को याद दिला रही हो, फिर आओमामे की तरफ देखा। "उसे जल्द से जल्द मौत के घाट उतार देना चाहिए। इससे पहले कि वह किसी और को नुकसान पहुंचा सके।"
आओमामे ने अपनी निगाहें मेज के दूसरी ओर बैठी त्सुबासा की ओर घुमाईं। उसकी निगाहें किसी खास बिंदु पर टिकी नहीं थीं। वह बस खालीपन में घूर रही थी। वह एक खोखली सी लग रही थी।
"लेकिन हमें जल्दबाजी करने की जरूरत नहीं है," उस महिला ने कहा। "हमें सावधानी और धैर्य रखना होगा।"
*

आओमामे, त्सुबासा को महिला के साथ छोड़कर कमरे से चली गई। महिला ने उससे कहा था कि वह छोटी बच्ची के सो जाने तक उसके साथ रहेगी। नीचे के बैठक कक्ष में, चार महिलाएं एक गोल मेज के चारों ओर माथे झुकाए फुसफुसाते हुए बैठी थीं। आओमामे के लिए यह एक अवास्तविक दृश्य था। वे ऐसी लग रही थीं मानो उन्होंने कोई अमूर्त चित्र बनाया हो, जिसका शीर्षक 'रहस्य साझा करती महिलाएं' रखा जा सकता था। आओमामे उनके पास से गुजरी, लेकिन उनके द्वारा बनाई गई छवि में कोई बदलाव नहीं आया।
इमारत से निकलते समय, आओमामे नीचे झुकी और कुछ देर तक कुत्ते को सहलाती रही, जो खुशी से अपनी पूंछ हिला रहा था। जब भी वह किसी कुत्ते से मिलती, तो उनके बीच की असीम खुशी देखकर अचंभित हो जाती। उसने कभी कुत्ता, बिल्ली या पक्षी नहीं पाला था। उसने कभी गमला भी नहीं खरीदा था। आओमामे को अचानक आकाश की ओर देखने की याद आई। लेकिन आकाश एक जैसे भूरे बादलों से ढका हुआ था, जो मानो बारिश के मौसम की शुरुआत का संकेत दे रहे थे। चाँद दिखाई नहीं दे रहा था। शाम शांत थी, हवा बिल्कुल नहीं चल रही थी। बादलों के पार से एक हल्की रोशनी दिखाई दे रही थी, लेकिन यह बताना असंभव था कि वह किस चाँद से आ रही थी।
*

सबवे जाते समय, आओमामे सोच रही थी कि दुनिया कितनी अजीब है। अगर वह महिला सही थी और हम सिर्फ़ जीन ढोने वाले वाहन हैं, तो हममें से इतने सारे लोगों का जीवन इतना विचित्र क्यों है? उसने सोचा। अगर हम सादा जीवन जीते, बिना किसी चिंता के, सिर्फ़ जीवित रहने और प्रजनन की चिंता करते हुए, तो क्या यह डीएनए को आगे बढ़ाने के अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए काफ़ी नहीं होगा? जीन के लिए एक जटिल और कभी-कभी बिल्कुल ही अनुचित जीवन जीने का क्या फ़ायदा है?
एक ऐसा पुरुष जो मासिक धर्म से पहले की लड़कियों का बलात्कार करने में आनंद लेता है, एक हट्टा-कट्टा समलैंगिक अंगरक्षक, ऐसे धर्मनिष्ठ श्रद्धालु जो रक्त चढ़ाने से इनकार करते हुए मर जाते हैं, एक छह महीने की गर्भवती महिला जो नींद की गोलियां खाकर आत्महत्या कर लेती है, एक महिला जो समस्याग्रस्त

पुरुषों को सिर के पिछले हिस्से में नुकीली सुई से गोदकर मार डालती है, ऐसे पुरुष जो महिलाओं से नफरत करते हैं और ऐसी महिलाएं जो पुरुषों से नफरत करती हैं। ऐसे लोगों के अस्तित्व से जीन को क्या लाभ होता है? क्या वे इन सभी उलझी हुई कहानियों का आनंद रंग के धब्बे की तरह लेते हैं, या वे इनका उपयोग किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए करते हैं?
ओमामे के पास कोई जवाब नहीं था। वह बस इतना जानती थी कि एक बार वहाँ पहुँचने के बाद, वह दूसरा जीवन नहीं चुन सकती थी। चाहे जो भी हो, उसे वही जीवन जीना था। वह उसे वापस नहीं लौटा सकती थी, न ही उसे किसी नए जीवन से बदल सकती थी। वही उसका जीवन था, चाहे वह कितना भी विचित्र या विकृत क्यों न हो।
चलते-चलते उसने सोचा, कितना अच्छा होता अगर लेडी और त्सुबासा खुशी-खुशी साथ रह पाते। मेरे लिए तो भविष्य की कोई उम्मीद ही नहीं है। हालांकि, सच कहूँ तो मुझे नहीं लगता कि वे शांतिपूर्ण और संतुष्टि भरा जीवन जी पाएंगे – या फिर एक साधारण जीवन भी। हम कुछ हद तक एक जैसे हैं। हमने जीवन भर बहुत बोझ उठाए हैं। जैसा कि लेडी कहा करती थीं, हम एक परिवार हैं। हम एक बड़ा परिवार हैं जो एक घायल आत्मा, कई कमियों और एक अंतहीन संघर्ष को साझा करते हैं।
ऐसा सोचते हुए, आओमामे को एहसास हुआ कि उसे एक पुरुष के शरीर की तीव्र आवश्यकता है। "ऐसे समय में मुझे पुरुषों की चाह क्यों होती है?" वह सोचने लगी और वहाँ से चली गई। उसे समझ नहीं आ रहा था कि यह यौन इच्छा तनाव के कारण है, उसके गर्भ में पल रहे अंडों की स्वाभाविक पुकार है, या उसके जीन्स की कोई जटिल योजना है। किसी भी हालत में, यह यौन इच्छा गहरी जड़ें जमा चुकी थी। अयुमी ज़रूर कुछ ऐसा कहती, "इस समय मैं और क्या पहनूँगी!" आओमामे सोच रही थी कि क्या करे। वह अपने पसंदीदा बार में जाकर किसी पुरुष को ढूँढ सकती थी। रोप्पोंगी तो बस एक मेट्रो स्टॉप दूर था। लेकिन वह बहुत थकी हुई थी और पुरुषों को आकर्षित करने के लिए उसने ठीक से कपड़े भी नहीं पहने थे। उसने स्नीकर्स पहने थे, कंधे पर स्पोर्ट्स बैग था और मेकअप भी नहीं किया था। उसने घर जाकर, रेड वाइन की एक बोतल खोलकर हस्तमैथुन करने के बारे में सोचा। यही सबसे अच्छा विकल्प था। और उसे चाँद के बारे में सोचना बंद करना था।
*

हिरो से जियुगाओका तक, एक ऐसा व्यक्ति उसके सामने बैठा था जो बिल्कुल उसकी पसंद का था। वह लगभग पैंतालीस वर्ष का था, अंडाकार चेहरे वाला और उसके सिर के बाल झड़ने शुरू हो गए थे। उसके सिर का आकार भी बुरा नहीं था। उसके गालों पर स्वस्थ रंगत थी और पतले काले फ्रेम वाला स्टाइलिश चश्मा पहने हुए था। उसने सलीके से कपड़े पहने थे। उसने सफेद पोलो शर्ट और एक पतली गर्मियों की जैकेट पहनी हुई थी, और अपने घुटनों पर एक चमड़े का ब्रीफकेस रखा हुआ था। पैरों में भूरे रंग के लोफर्स थे। ऐसा लगता था कि वह किसी ऑफिस में काम करता है, लेकिन वह किसी ऐसी कंपनी में कार्यरत था जो बहुत सख्त नहीं थी। किसी प्रकाशन गृह में संपादक, किसी छोटी आर्किटेक्चर फर्म में आर्किटेक्ट, या शायद कपड़ा उद्योग में कर्मचारी। वह एक कवर में लिपटी किताब को बड़े चाव से पढ़ रहा था।
अगर मुमकिन होता, तो आओमामे उस आदमी के साथ कहीं जाती और बेहिसाब सेक्स करती। उसने कल्पना की कि वह उसके कड़े लिंग को कसकर दबा रही है। वह उसे इतनी ज़ोर से दबाएगी कि मानो उसका खून बहना ही बंद हो जाए। और दूसरे हाथ से वह उसके अंडकोषों की धीरे-धीरे मालिश करेगी। घुटनों पर टिकी हथेलियों में उसे

*

*

थे। इस बीच, छोटे लोगों की ऊँचाई लगभग साठ सेंटीमीटर हो गई थी। वे अपनी इच्छानुसार अपना आकार बदल सकते थे।
वे पाँचों कई घंटों तक बिना एक शब्द बोले लगन से काम करते रहे। उन्होंने एक एकजुट टीम बना ली थी। महिला और त्सुबासा बिना हिले-डुले गहरी नींद में सो रहे थे। आश्रय स्थल में मौजूद अन्य महिलाएं भी असामान्य रूप से गहरी नींद में थीं। कुत्ता शायद कुछ सपना देख रहा था, क्योंकि वह घास पर लेटा हुआ था और कभी- कभी अपनी अचेतन अवस्था से दबी हुई सी आवाज निकाल रहा था।
मानो उन्हें समझ लिया गया हो, आकाश की ऊँचाई से, दोनों चंद्रमाओं ने दुनिया पर एक अजीब रोशनी डाली।

अध्याय 20 गरीब गुलियन लोग

टेंगो को नींद नहीं आ रही थी। फुकाएरी अपने पजामे में बिस्तर पर गहरी नींद में सो रही थी। टेंगो ने सोफे पर अपना बिस्तर लगाया (वह अक्सर दोपहर के भोजन के बाद वहाँ झपकी लेता था, इसलिए उसे कोई परेशानी नहीं थी) और लेट गया। नींद न आने पर वह अपने उपन्यास पर काम करने के लिए रसोई में चला गया। वर्ड प्रोसेसर बेडरूम में था, इसलिए वह अब नोटबुक पर कलम से लिख रहा था। उसे इससे भी कोई परेशानी नहीं थी। बेशक टाइप करना तेज़ और ज़्यादा कारगर था, लेकिन उसे कागज़ पर हाथ से चित्रलिपि बनाने का पारंपरिक तरीका बहुत पसंद था।
उनके लिए आधी रात को काम करना काफी असामान्य था। उन्हें उजाले में, जब लोग अपने-अपने काम में व्यस्त होते थे, तब लिखना पसंद था। अगर वे अंधेरे और सन्नाटे में डूबे हुए समय में काम करते, तो उनके शब्द बोझिल हो जाते। उन्हें अगले दिन उजाले में, पिछली रात के काम को फिर से लिखना पड़ता था। चीजों को इतना जटिल बनाने के बजाय, उन्होंने शुरू से ही दिन के समय लिखना बेहतर समझा। उन्होंने काफी समय से आधी रात को सीधे कागज पर नहीं लिखा था, और उनका दिमाग खूब चल रहा था। उनकी कल्पना शक्ति बेकाबू हो गई थी और कहानी अपने आप ही आगे बढ़ती जा रही थी। एक विचार से दूसरा विचार जन्म लेता जा रहा था। यह प्रवाह बिना रुके जारी रहा। उनकी कलम की नोक सफेद कागज पर लगातार, दृढ़ ध्वनि के साथ चलती रही। जब उनका हाथ थक गया, तो उन्होंने कलम एक तरफ रख दी और संगीत कार्यक्रम से पहले पियानोवादक की तरह हवा में अपनी उंगलियां हिलाने लगे। घड़ी में डेढ़ बज रहे थे, और हैरानी की बात यह थी कि बाहर कोई आवाज नहीं थी। शहर को मोटे कपड़े की तरह ढके बादलों ने हर आवाज को सोख लिया था।
फिर उसने कलम उठाई और कागज़ पर शब्द लिखने लगा। लिखते-लिखते उसे अचानक याद आया कि उसकी प्रेमिका अगले दिन उससे मिलने आ रही है। वह हमेशा शुक्रवार की सुबह ग्यारह बजे आती थी। तब तक उसे फुकाएरी को विदा करना होता था। अच्छा हुआ कि उसने इत्र नहीं लगाया था। अगर बिस्तर में कोई भी अजीब सी गंध रह जाती तो उसकी प्रेमिका तुरंत पहचान जाती। तेंगो अच्छी तरह जानता था कि वह बहुत सावधान और बेहद ईर्ष्यालु थी। वह कभी-कभी अपने पति के साथ सोती थी, लेकिन अगर तेंगो किसी दूसरी औरत को देख लेता तो वह बहुत गुस्सा हो जाती थी।
"पति-पत्नी के बीच यौन संबंध थोड़ा अलग होता है," उसने समझाया। वह एक अलग ही विपत्ति में फंस गई।
— किसी अन्य रजिस्ट्री में?
— जी हां, इसमें अन्य अनुभाग भी शामिल हैं।
क्या इसमें अन्य भावनाएं भी शामिल हैं?
"बिल्कुल सही। शरीर तो वही रहता है, लेकिन भावनाएं अलग होती हैं। तो ठीक है।
मुझ जैसी समझदार महिला ऐसा कर सकती है। लेकिन तुम्हें किसी और के साथ सोने की इजाज़त नहीं है।"
"मैं तो ऐसा करता ही नहीं," टेंगो ने जवाब दिया था।

"भले ही आप किसी दूसरी महिला के साथ यौन संबंध न बनाएं," उसने कहा था, "लेकिन इस संभावना के बारे में सोचकर ही मुझे बुरा लगता है!"
“सिर्फ संभावना का अस्तित्व ही?” टेंगो ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।
"आप नहीं जानते कि एक महिला कैसा महसूस करती है। भले ही आप लेखक हों।"
— यह मुझे काफी अनुचित लगता है।
"बिल्कुल सही। लेकिन मैं तुम्हें पर्याप्त इनाम दूंगी," उस महिला ने कहा था, और उसने झूठ नहीं बोला था।
*

टेंगो अपनी प्रेमिका के साथ अपने रिश्ते से संतुष्ट था। वह आम तौर पर सुंदर महिलाओं जैसी नहीं थी। उसके चेहरे की बनावट कुछ अलग थी। कुछ लोग उसे बदसूरत भी मान सकते थे। लेकिन टेंगो को उसका चेहरा शुरू से ही पसंद था और बिस्तर पर भी उसे कोई शिकायत नहीं थी। वह उससे ज्यादा कुछ नहीं चाहती थी। हफ्ते में एक बार तीन-चार घंटे साथ बिताना और आराम से यौन संबंध बनाना। हो सके तो दो बार। दूसरी महिलाओं के करीब न जाना। संक्षेप में, टेंगो से उसकी यही इच्छा थी। वह अपने परिवार से प्यार करती थी और उसके कारण उसे तोड़ना नहीं चाहती थी। हालांकि, वह अपने पति के साथ होने वाले यौन संबंधों से संतुष्ट नहीं थी। उनकी रुचियां ज्यादातर मामलों में मिलती-जुलती थीं।
टेंगो को दूसरी महिलाओं में कोई आकर्षण नहीं था। वह बस अपना खाली और शांत समय चाहता था। अगर उसे नियमित अंतराल पर यौन संबंध बनाने का मौका मिल जाता, तो वह किसी महिला से इससे ज़्यादा कुछ नहीं माँगता। उसे अपनी उम्र की किसी से मिलने, प्यार में पड़ने, शारीरिक संबंध बनाने और उससे जुड़ी ज़िम्मेदारी का ख्याल भी पसंद नहीं था। वह उन सभी परेशानियों के बोझ से जितना हो सके दूर रहना चाहता था जो उससे जुड़ी हुई थीं: अंतरंगता की ओर बढ़ने के सभी कदम, भविष्य के संकेत, और वे टकराव जिनसे बचना मुश्किल था...
सामान्यतः, दायित्व का विचार टेंगो को भयभीत कर देता था और उसे पीछे हटने पर मजबूर कर देता था। अपने जीवन में अब तक वह चतुराई से ऐसे हालातों से बचता रहा था जहाँ उसे कोई दायित्व निभाना पड़ता। वह अकेले, स्वतंत्र रूप से, मानवीय रिश्तों की जटिलताओं में उलझे बिना, जहाँ तक संभव हो नियमों से बंधे बिना और दूसरों का कर्ज लिए बिना जीना चाहता था। यही उसकी निरंतर इच्छा थी। इस स्वतंत्रता के बदले वह कई असुविधाएँ सहने को तैयार था।
जिम्मेदारी से बचने के लिए, टेंगो ने बचपन से ही खुद पर ध्यान आकर्षित न करने का तरीका खोज लिया था। उसने अपनी क्षमताओं को दूसरों के सामने पूरी तरह प्रकट नहीं किया, अपने विचार व्यक्त नहीं किए और आगे आने से बचता रहा। उसने अपनी उपस्थिति को यथासंभव गुमनाम रखने की कोशिश की। उसे बचपन से ही अपनी ताकत के दम पर जीने की स्थिति में डाल दिया गया था, बिना किसी और पर निर्भर हुए। लेकिन एक बच्चे के पास वास्तव में कोई शक्ति नहीं होती। इसलिए, तूफान का सामना करते समय उसे छिपना पड़ता था और किसी चीज को कसकर पकड़ना पड़ता था, ताकि हवा उसे उड़ा न ले जाए। उसे लगातार ऐसे उपाय खोजने पड़ते थे। डिकेंस के उपन्यासों के अनाथों की तरह।
अब तक टेंगो के लिए सब कुछ ठीक चल रहा था। वह फिलहाल सभी जिम्मेदारियों से बच निकला था। उसने विश्वविद्यालय में पढ़ाई नहीं की थी, सही मायने में कोई नौकरी नहीं की थी, शादी नहीं की थी, उसके पास एक ऐसी नौकरी थी जिससे उसे पर्याप्त

स्वतंत्रता मिलती थी, उसे एक ऐसा साथी मिल गया था जो उसे संतुष्ट करता था (और बदले में ज्यादा कुछ नहीं मांगता था) और अपने खाली समय का पूरा उपयोग करते हुए वह उपन्यास लिख रहा था। कोमात्सु के रूप में उसे एक साहित्यिक गुरु मिला हुआ था और उसकी बदौलत उसे नियमित रूप से लेख लिखने को मिलते थे। उसके उपन्यास अभी तक प्रकाशित नहीं हुए थे, लेकिन अब तक उसके जीवन में कोई परेशानी नहीं थी। उसके कोई करीबी दोस्त नहीं थे और न ही कोई प्रेमिका थी। अब तक वह लगभग दस महिलाओं के साथ संबंध बना चुका था, लेकिन कोई भी रिश्ता ज्यादा समय तक नहीं चला। लेकिन कम से कम वह स्वतंत्र तो था।
हालांकि, 'द एयर क्राइसालिस' को दोबारा लिखने के बाद से, उनका शांतिपूर्ण जीवन बिखरने लगा था। सबसे पहले, वे लगभग अनजाने में ही कोमात्सु की खतरनाक योजना में फंस गए थे। उनकी मुलाकात एक खूबसूरत लड़की से हुई जिसने उनके दिल को एक खास तरीके से धड़का दिया। फिर, 'द एयर क्राइसालिस' को दोबारा लिखने के दौरान, टेंगो के भीतर एक बदलाव आया। इसके चलते, उनमें लिखने की तीव्र इच्छा जागृत हुई। यह बदलाव बेशक सुखद था, लेकिन इसके साथ ही उनके लगभग परिपूर्ण जीवन का चक्र भी बदल गया, जिसे उन्होंने अब तक बड़ी मेहनत से बनाए रखा था।
खैर, कल शुक्रवार है, उसने सोचा। मेरी प्रेमिका आ रही है। तब तक मुझे फुकाएरी को यहाँ से भगाना होगा।
*

फुकाएरी करीब दो बजे उठा। उसने दरवाजा खोला और पायजामे में ही रसोई में आ गया। उसने नल का पानी एक बड़ा गिलास पिया, फिर मेज पर बैठ गया और अपनी आँखें मलने लगा।
"मैं आपको परेशान कर रहा हूँ," उसने हमेशा की तरह प्रश्न चिह्न को अनदेखा करते हुए कहा।
नहीं, आप मुझे परेशान नहीं कर रहे हैं।
- आप क्या लिख रहे हो?
टेंगो ने नोटबुक बंद की और कलम को एक तरफ रख दिया।
"कोई बड़ी बात नहीं," उन्होंने कहा। "मैं वैसे भी इसे खत्म करने की तैयारी कर रहा था।"
“क्या मैं कुछ समय के लिए आपके साथ रह सकती हूँ?” उसने पूछा।
"बिल्कुल। मैं थोड़ी शराब लूंगा, आप क्या पीना चाहेंगे?"
लड़की ने अपना सिर हिलाया। उसे कुछ नहीं चाहिए था।
मैं तुम्हारे साथ थोड़ी देर और रहना चाहता हूँ।
"ठीक है। मुझे भी नींद नहीं आ रही है।"
फुकेरी का पजामा बड़ा था, इसलिए उसने अपनी ब्लाउज और पैंट के कफ मोड़ रखे थे।
जब वह आगे झुकी, तो उसके स्तनों की गोलाई साफ दिखाई दी। फुकेरी को पजामे में देखकर तेंगो की सांसें तेज हो गईं। उसने फ्रिज खोला और बची हुई शराब अपने गिलास में डाल ली।
"क्या तुम्हें भूख लगी है?" उसने उससे पूछा।
घर लौटते समय वे कोएंजी स्टेशन के पास एक छोटे से रेस्तरां में रुके और स्पेगेटी खाई। परोसी गई स्पेगेटी की मात्रा बहुत अधिक नहीं थी और तब तक काफी घंटे बीत चुके थे।
“क्या मैं आपके लिए कुछ जल्दी से बना दूं, जैसे कि सैंडविच?” उसने आगे कहा।

मुझे भूख नहीं है। बेहतर होगा कि आप मुझे वह पढ़कर सुनाएं जो आपने लिखा है।
"क्या मैं अभी आपको वह पढ़कर सुनाऊं जो मैं लिख रहा था?"
- हाँ।
टेंगो ने कलम उठाई और उसे अपनी उंगलियों के बीच घुमाया। उसके विशाल हाथ में वह कलम छोटी सी लग रही थी।
"मैं अपनी पांडुलिपियों को तब तक किसी को नहीं दिखाता जब तक वे पूरी तरह से तैयार और प्रूफरीड न हो जाएं। अन्यथा इससे दुर्भाग्य आता है।"
इससे दुर्भाग्य आता है।
— यह एक व्यक्तिगत निर्णय है।
फुकेरी ने कुछ क्षण तक टेंगो के चेहरे को देखा, फिर अपना कॉलर ठीक किया।
"तो मुझे कुछ पढ़कर सुनाओ।"
"अगर मैं तुम्हें पढ़कर सुनाऊं तो क्या तुम्हें नींद आ जाती है?"
- हाँ।
"प्रोफेसर एबिसुनो अक्सर आपको पढ़कर सुनाया करते थे, है ना?"
शिक्षक हमेशा सुबह तक जागते रहते हैं।
"और उन्होंने तुम्हें तायरा कबीले की कहानी भी पढ़कर सुनाई?" फुकेरी ने अपना सिर हिलाया।
मैंने उसे टेप पर सुना था।
"और तुमने इसे कंठस्थ कर लिया। लेकिन पता नहीं कितने टेप होंगे!"
फुकेरी ने अपने हाथों से कैसेट के ढेर से घिरी जगह की ओर इशारा किया।
- बहुत।
प्रेस कॉन्फ्रेंस में आपने उन्हें कौन सा हिस्सा पढ़कर सुनाया था?
— मिनामोटो नो योशित्सुने राजधानी से भाग जाता है।
ताइरा वंश के पतन के बाद, योरीटोमो द्वारा पीछा किए जाने पर मिनमोटो नो योशित्सुने क्योटो छोड़ देता है। विजयी वंश के भीतर आंतरिक संघर्ष शुरू हो जाता है।
— जी हाँ, वही वाला।
और इसके अलावा, आप और क्या सुना सकते हैं?
— वही कहो जो तुम सुनना चाहते हो।
टेंगो दुविधा में था कि क्या चुने। तायरा वंश की कहानी लंबी है और इसमें कई दृश्य हैं। अंत में, उसने संयोगवश दान नो उरा की लड़ाई को चुना।
फुकेरी बीस सेकंड तक मौन धारण करते रहे। फिर उन्होंने पाठ करना शुरू किया:

अब जबकि मिनामोटो सैनिकों ने तायरा कबीले के जहाजों पर कब्जा कर लिया था, नाविक और चप्पू चलाने वाले बेड़ों के तल पर पड़े थे, जो तलवार या तीर से मारे गए थे, और जहाजों को संभालने के लिए कोई भी नहीं बचा था।
सलाहकार तोमोनोरी एक छोटी नाव में सवार होकर शासक के जहाज की ओर रवाना हुए। "हम भयानक समय में जी रहे हैं! चलो इन सभी चीजों को समुद्र में फेंक देते हैं, जो देखने में अप्रिय हैं!"
यह कहते हुए, टोमोनोरी डेक के एक छोर से दूसरे छोर तक गोल-गोल दौड़ने लगा, झाड़ू लगाने, पोछा लगाने और खुद को साफ करने लगा।
और सभी महिलाओं ने उनसे पूछा:

"पार्षद महोदया, चुनाव प्रचार कैसा चल रहा है?"
"निस्संदेह, तुम्हारे भोले-भाले चेहरे पूरब के उन लंपटों को देख लेंगे," तोमोनोरी ने रूखी हंसी हंसते हुए जवाब दिया।
"अरे, ये मजाक करने का समय नहीं है!" महिलाओं ने जोर से चिल्लाकर कहा।
यह देखकर, बहन तोकीको, जो मन ही मन ऐसे अवसर के लिए तैयार थीं, ने अपने सिर पर राख के रंग का तह किया हुआ वस्त्र ओढ़ लिया, अपनी चमकदार रेशमी पतलून को ऊपर लपेट लिया, पवित्र रत्न को अपनी बगल में दबा लिया और पवित्र तलवार को अपनी कमर पर रख लिया। {11}
उसने राजकुमार को अपनी बाहों में उठाया और इस प्रकार बोला:
"यद्यपि मैं एक गरीब महिला हूँ, मैं शत्रु का शिकार नहीं बनना चाहती। मैं राजकुमार के साथ खड़ी रहना चाहती हूँ। और आपमें से जिनके मन में भी यही भावनाएँ हैं, वे शीघ्र ही मेरे पीछे आएँ!"
फिर वह नाव के अगले हिस्से की ओर चल पड़ा।
राजकुमार की उम्र केवल आठ वर्ष थी, लेकिन देखने में वह बड़ा लगता था। वह इतना सुंदर था कि उसकी सुंदरता उसके चारों ओर एक आभा की तरह चमकती थी। उसके काले बाल कमर तक लहराते हुए लहरा रहे थे। स्तब्ध होकर उसने पूछा:
— नन, आप मुझे कहाँ ले जा रही हैं?
उसके मासूम चेहरे को देखकर, नन ने बड़ी मुश्किल से अपने आँसू रोकते हुए कहा: — हे गुरु, क्या आप अभी तक नहीं जानते? अपने पिछले जन्म में आपने दस सद्गुणों का पूर्णतया पालन किया था{12}, और इसी कारण आप दस हजार रथों के सेनापति के रूप में जन्म लिए थे। परन्तु आप शत्रु के चंगुल में फँस गए, और आपका सौभाग्य समाप्त हो गया। सर्वप्रथम पूर्व दिशा की ओर, इशे के महान मंदिर की ओर मुड़ें और उन्हें विदाई दें। फिर, स्वयं को याद दिलाएँ कि अमिदा बुद्ध में अपनी आस्था रखें, जो निर्मल भूमि के पश्चिमी स्वर्ग से आपका स्वागत करने आ रहे हैं। अतः पश्चिम की ओर मुड़ें और उनके नाम का जाप करें{13}। हम एक दूर देश में रहते हैं, जो धूल में गिरे बाजरे के दाने के समान छोटा है, संसार की दुखद सीमाओं पर। परन्तु मैं आपके साथ उस अद्भुत स्थान, निर्मल भूमि के स्वर्ग तक चलूँगा!
इस प्रकार, आँखों में आँसू लिए वह बोला। और कबूतर के रंग के वस्त्र पहने राजकुमार ने अपने बालों को दो चोटियों में बाँधकर कानों के ऊपर रखा और अपने छोटे हाथों को जोड़कर सिसकियों में डूब गया। पहले वह पूर्व की ओर घुटने टेककर इशे के महान मंदिर से विदा ली। फिर वह पश्चिम की ओर मुड़ा और अमीदा का नाम पुकारा।
राजकुमार को अपनी बाहों में थामे हुए नन ने उसे प्रोत्साहित किया:
लहरों के नीचे एक और राजधानी छिपी है!
और फिर वे एक हजार फैदम गहरे पानी में कूद गए।

आँखें बंद करके फुकाएरी के पाठ को सुनते हुए, तेंगो को ऐसा लगा मानो वह वीणा बजाते किसी अंधे भिक्षु के सामने खड़ा हो। तेंगो को फिर से एहसास हुआ कि ताईरा वंश की गाथा सुनने के लिए है, पढ़ने के लिए नहीं। फुकाएरी की आवाज़ आम तौर पर नीरस, बिना किसी उतार-चढ़ाव और लहजे के होती थी, लेकिन जब वह पाठ करती थी, तो वह आश्चर्यजनक रूप से सशक्त, समृद्ध और रंगीन हो जाती थी। मानो उस पर

किसी आत्मा का वास हो। उसकी आवाज़ में, 1185 में कानमोन जलडमरूमध्य में समुद्र में लड़ी गई वीरतापूर्ण लड़ाई फिर से जीवंत हो उठी। ताईरा वंश की पराजय पहले ही तय हो चुकी थी। कियोमोरी की पत्नी तोकीको ने युवा सम्राट अंतोकु को अपनी बाहों में उठाया और खुद को लहरों में झोंक दिया। दरबार की महिलाएं, पूर्व के योद्धाओं के हाथों में न पड़ना चाहती थीं, इसलिए उन्होंने भी उसका अनुसरण किया। तोमोमोरी, अपनी हार के दर्द को छुपाते हुए, दरबार की महिलाओं से मज़ाक करते हुए कहता है कि वे भी अपनी जान दे दें। अन्यथा, वे जीते जी नरक भोगेंगी। अपनी जान लेना ही बेहतर होगा।
"क्या तुम जारी रखोगे?" फुकेरी ने पूछा।
"नहीं, बस इतना ही। धन्यवाद," टेंगो ने कहा, अभी भी सम्मोहन की अवस्था में।
अब उन्हें अच्छी तरह समझ आ गया था कि प्रेस कॉन्फ्रेंस में पत्रकारों को कैसा महसूस हुआ होगा।
लेकिन आप इतने लंबे पाठ को याद रखने में कामयाब कैसे हो जाते हैं?
मैंने इसे टेप पर कई बार सुना है।
टेंगो ने कहा, "ज्यादातर लोग इसे बार-बार सुन सकते हैं और फिर भी उन्हें याद नहीं रहेगा।"
फिर उसे एहसास हुआ। यह लड़की, जो पढ़ नहीं सकती थी, दूसरों की तुलना में सुनी हुई बातों को याद रखने की कहीं अधिक क्षमता रखती थी। ठीक वैसे ही जैसे विलक्षण प्रतिभा से ग्रस्त बच्चे बड़ी मात्रा में दृश्य जानकारी को तुरंत याद कर लेते हैं।
"मैं चाहती हूं कि तुम मुझे पढ़कर सुनाओ," फुकेरी ने कहा।
मैं आपको क्या पढ़कर सुनाऊं?
आपने प्रोफेसर से एक किताब के बारे में बात की थी। जिसमें बिग ब्रदर का जिक्र है।
— ए, 1984. एन-ओ एम.
- क्या चल रहा है?
टेंगो ने उपन्यास के विषय को याद करने की कोशिश की।
मैंने इसे बहुत समय पहले स्कूल की लाइब्रेरी से पढ़ा था, और मुझे इसके विवरण याद नहीं हैं। खैर, यह किताब 1948 में प्रकाशित हुई थी, और उस समय 1984 अभी भी बहुत दूर का भविष्य था।
— यह इसी साल होगा।
हां, यह 1984 है। भविष्य वर्तमान बन चुका है। और जल्द ही यह अतीत बन जाएगा। जॉर्ज ऑरवेल ने अपने उपन्यास में एक अंधकारमय, तानाशाही समाज का वर्णन किया है। लोग बिग ब्रदर नामक एक तानाशाह के कड़े नियंत्रण में हैं। सूचना सीमित है, और इतिहास को लगातार फिर से लिखा जा रहा है। मुख्य पात्र एक सरकारी संस्था में काम करता है, जहां उसे शब्दों को बदलने का काम सौंपा गया है। एक नया इतिहास रचा जा रहा है, और पुराने इतिहास को मिटाया जा रहा है। साथ ही, शब्दों को भी इस तरह बदला जा रहा है कि अब कोई यह नहीं जान सकता कि सच क्या है। आपको यह भी नहीं पता कि आपका दुश्मन कौन है और आपका साथी कौन। यही कहानी है।
इतिहास को फिर से लिखने के लिए।
"इतिहास चुराना किसी व्यक्ति के चरित्र का एक हिस्सा चुराना है। यह एक अपराध है।"

फुकेरी कुछ देर तक चुप रही, सोच में डूबी हुई।
टेंगो ने कहा, "हमारी स्मृति व्यक्तिगत और सामूहिक स्मृतियों से बनी है। ये दोनों आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हैं। और इतिहास वास्तव में सामूहिक स्मृति है। यदि इसे चुरा लिया जाए या फिर से लिखा जाए, तो मनुष्य भी अपने चरित्र को एक अधिकार के रूप में बरकरार नहीं रख सकता।"
— और आप उसे दोबारा लिखते हैं।
टेंगो हँसा और उसने शराब का एक घूंट लिया।
मैंने आपके उपन्यास को बेहतर बनाने के लिए उसमें कुछ बदलाव किए हैं। इतिहास को दोबारा लिखना एक बिल्कुल अलग बात है।
"तो आपके पास यहां बिग ब्रदर की किताब नहीं है?" उसने पूछा।
"दुर्भाग्यवश, नहीं। इसलिए मैं इसे आपको पढ़कर नहीं सुना सकता।"
— फिर एक और किताब।
टेंगो पुस्तकालय गया और किताबों की जिल्दों को देखने लगा। उसने अब तक बहुत कुछ पढ़ लिया था, लेकिन बहुत कम ही किताबें अपने पास रखी थीं। उसे घर में ज़्यादा सामान रखना पसंद नहीं था, इसलिए कुछ किताबों को छोड़कर, वह पढ़ी हुई किताबों को पुरानी किताबों की दुकान पर बेच देता था। वह केवल वही किताबें खरीदता था जिन्हें वह तुरंत पढ़ सके, और महत्वपूर्ण किताबों को वह ध्यान से पढ़ता था ताकि जितना हो सके उतना याद रख सके। बाकी किताबें वह पास के पुस्तकालय से उधार ले लेता था।
उसे चुनने में काफी समय लगा। उसे यह बिल्कुल भी समझ नहीं आ रहा था कि कौन सी किताब जोर से पढ़ने के लिए अच्छी रहेगी, क्योंकि उसने पहले कभी ऐसा नहीं किया था। बहुत सोच-विचार के बाद, उसने चेखव की 'सखालिन द्वीप' निकाली, जिसे उसने एक सप्ताह पहले ही पढ़ना समाप्त किया था। उसने रोचक अंशों के आगे लेबल लगा दिए थे, ताकि वह आसानी से सबसे उपयुक्त अंश चुन सके।
पढ़ने से पहले, टेंगो ने उन्हें किताब के बारे में कुछ बातें समझाईं। 1890 में, चेखव सखालिन द्वीप समूह की यात्रा पर गए थे। उनकी उम्र तीस वर्ष थी और वे टॉल्स्टॉय और दोस्तोयेव्स्की से एक पीढ़ी छोटे थे। एक उभरते हुए लेखक, जो जनता के चहेते थे और मॉस्को में शान से जीवन बिता रहे थे, उन्होंने दुनिया के दूसरे छोर, सखालिन द्वीप समूह जाने और वहाँ लंबे समय तक रहने का फैसला क्यों किया, यह कोई निश्चित रूप से नहीं जानता था। सखालिन का उपयोग अधिकतर दंड बस्तियों के लिए किया जाता था और अधिकांश लोगों के लिए यह दुख और दुर्भाग्य का प्रतीक मात्र था। उस समय साइबेरिया में कोई रेलवे नहीं थी, इसलिए उन्हें कड़ाके की ठंड में चार हज़ार किलोमीटर से अधिक की यात्रा बैलगाड़ी से करनी पड़ी, और इस तपस्या ने चेखव के पहले से ही नाज़ुक स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर डाला। सुदूर पूर्व में उनके आठ महीने के प्रवास का परिणाम सखालिन द्वीप था, एक ऐसी किताब जिसने कई पाठकों को उलझन में डाल दिया। साहित्यिक तत्वों को दबा दिया गया था, और यह रचना एक आधिकारिक भौगोलिक रिपोर्ट की तरह लगती थी। लोग आपस में फुसफुसा रहे थे, यह सोचकर कि चेखव ने इतना कीमती समय एक बेकार और अर्थहीन रचना पर क्यों बर्बाद किया। आलोचकों का कहना था कि यह खुद पर ध्यान आकर्षित करने की एक चाल थी। कुछ अन्य लोगों का मानना था कि वे नए विषयों की तलाश में वहाँ गए थे, क्योंकि उनके पास लिखने के लिए विषय खत्म हो गए थे। पुस्तक के अंत में, तेंगो ने फुकेरी को मानचित्र पर सखालिन द्वीप दिखाए।

"चेखव सखालिन क्यों गए थे?" फुकेरी ने पूछा।
"मेरा मतलब है, मुझे ऐसा क्यों लगता है कि वह चला गया है?"
— जी हाँ। आपने किताब पढ़ी है।
- मेंने इसे पढ़ा।
- आप क्या सोचते हैं?
"मुझे नहीं लगता कि चेखव को भी ठीक-ठीक पता था कि ऐसा क्यों था," टेंगो ने कहा। "वह बस वहाँ जाना चाहते थे। उन्होंने नक्शे पर सखालिन द्वीप देखे और अचानक उन्हें वहाँ जाने का मन हुआ। मेरे साथ भी ऐसा कई बार हुआ है, नक्शा देखते हुए किसी खास जगह जाने की इच्छा हुई है। और मुझे नहीं पता कि ऐसा कैसे होता है, लेकिन अक्सर आप दूर-दराज और दुर्गम जगहों को ही देखते हैं। आप यह जानने के लिए बेताब हो जाते हैं कि वहाँ क्या-क्या देखने लायक है, वहाँ क्या-क्या गतिविधियाँ हो रही हैं। इससे आपमें जोश भर जाता है। इसीलिए आप किसी एक व्यक्ति पर उंगली नहीं उठा सकते कि यह जुनून कहाँ से आता है। क्या यह जिज्ञासा थी, शब्द के शुद्धतम अर्थ में? या फिर एक अनसुलझी प्रेरणा? बेशक, उस समय मॉस्को से सखालिन की यात्रा अकल्पनीय रूप से कठिन थी, इसलिए मुझे नहीं लगता कि चेखव का एकमात्र मकसद यही था।"
- और क्या।
चेखव एक लेखक होने के साथ-साथ एक चिकित्सक भी थे। एक वैज्ञानिक के रूप में वे विशाल रूसी राज्य के बीमार पहलुओं को अपनी आँखों से देखना चाहते थे। एक सफल लेखक के रूप में बड़े शहर में रहना उन्हें असहज लगता था। वे मॉस्को के साहित्यिक जगत से ऊब चुके थे और उन खोखले साहित्यकारों के बीच सहज महसूस नहीं करते थे जो एक-दूसरे की राह में बाधा डालने के अलावा कुछ नहीं करते थे। उनके मन में केवल द्वेषपूर्ण आलोचकों के प्रति ही घृणा थी। शायद सखालिन की यात्रा उनके लिए एक प्रकार की तीर्थयात्रा थी जिसके माध्यम से उन्होंने साहित्यिक जगत की गंदगी से खुद को शुद्ध किया। और कई मायनों में, सखालिन द्वीप समूह ने उन्हें अभिभूत कर दिया। शायद यही कारण है कि उन्होंने अपनी यात्रा के अनुभव का उपयोग किसी साहित्यिक रचना में नहीं किया। यह कोई सतही बात नहीं थी जिसे आसानी से उपन्यास में समेटा जा सके। और वह बीमार पहलू उनका अभिन्न अंग बन गया। कौन जानता है, शायद यही वह खोज रहे थे।
"क्या यह किताब दिलचस्प है?" फुकेरी ने पूछा।
मुझे यह पसंद आया। यह आंकड़ों और सांख्यिकी से भरा हुआ है और जैसा कि मैंने आपको पहले बताया, इसमें साहित्यिक महत्वाकांक्षा की कमी है। आप चेखव के वैज्ञानिक पक्ष को महसूस कर सकते हैं। लेकिन मुझे इसमें एक दृढ़ निश्चय दिखाई देता है, और प्रकृति के वर्णन और लोगों के चित्र जो यहाँ-वहाँ दिखाई देते हैं, उन ठंडे और औपचारिक विवरणों के साथ मिलकर इसे और भी प्रभावशाली बनाते हैं। लेकिन अंत में, वे भाग भी जहाँ वह केवल तथ्यों को सूचीबद्ध करते हैं, बिल्कुल बुरे नहीं हैं। कभी-कभी तो वे अद्भुत भी होते हैं। उदाहरण के लिए, गुल्याकी पर एक पूरा अध्याय है।
"घिलियासी," फुकेरी ने कहा।
यह कहानी उस आबादी के बारे में है जो रूसियों के आने से बहुत पहले सखालिन द्वीप पर रहती थी। शुरुआत में वे दक्षिण की ओर बसे हुए थे, लेकिन होक्काइडो से आए ऐनू लोगों ने उन्हें केंद्र की ओर धकेल दिया। ऐनू लोगों को भी जापानियों

ने धकेल दिया, जो होक्काइडो से समुद्र पार करके आए थे। चेखव ने सखालिन द्वीप समूह के रूसीकरण और गिलियाक संस्कृति के तेजी से लुप्त होने का बारीकी से अवलोकन किया और उनके बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखने का प्रयास किया।
टेंगो ने पुस्तक में गिउलियानी पर लिखे अध्याय को खोला और पढ़ना शुरू किया, बीच-बीच में कुछ बदलाव करते हुए और संक्षिप्त करते हुए ताकि इसे समझना आसान हो जाए। {14}

"घिलियाक लोगों का शरीर मजबूत और गठीला होता है, कद मध्यम या छोटा होता है। अधिक ऊँचाई होने पर टैगा में उन्हें चलने में परेशानी हो सकती है। उनकी हड्डियाँ बड़ी और जोड़ मोटे होते हैं; उनकी विकसित मांसपेशियाँ प्रकृति के साथ उनके अथक और कठिन संघर्ष का अनुमान लगाती हैं। सभी घिलियाक लोगों का शरीर शुष्क होता है, [...] और वसा ऊतक कम विकसित होते हैं; आपको उनमें से कोई भी मोटा या वसायुक्त नहीं दिखेगा। वसा का उपयोग सखालिन के अत्यधिक कम तापमान और हवा में अत्यधिक नमी के कारण होने वाली गर्मी की कमी को पूरा करने के लिए आवश्यक गर्मी उत्पन्न करने में किया जाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि घिलियाक लोग इतनी अधिक वसा क्यों खाते हैं। वे वसायुक्त सील और सैल्मन का मांस, व्हेल की चर्बी, स्टर्जन और कच्चा मांस खाते हैं। वे यह सब बड़ी मात्रा में, कच्चा, सूखा या जमा हुआ खाते हैं; उनके बिना पके भोजन के कारण, उनकी चबाने वाली मांसपेशियाँ और जबड़े के जोड़ विशेष रूप से विकसित होते हैं, और उनके दांत जल्दी खराब हो जाते हैं। उनका भोजन केवल पशु-आधारित होता है, केवल कभी-कभार जब वे घर पर खाना खाते हैं या कोई पार्टी होती है, तो वे मांस में मंचूरियन लहसुन या फल मिलाते हैं। नेवेल्स्कोई लिखते हैं कि घिलियाक लोग कृषि को महत्वपूर्ण मानते हैं। यह एक बड़ा पाप है। जो भी ज़मीन खोदता है या कुछ बोता है, वह थोड़े ही समय में मर जाता है। हालाँकि, उन्हें रूसियों द्वारा दी जाने वाली रोटी बहुत पसंद है और वे उसे केक की तरह बड़े चाव से खाते हैं। आज के समय में, अलेक्जेंड्रोव्स्क या रिवको में किसी घिल्याक को बगल में रोटी लिए देखना कोई असामान्य बात नहीं है।

यहाँ तेंगो रुका और गहरी साँस ली। ध्यान से सुन रही फुकाएरी के चेहरे से वह यह नहीं बता सका कि उसे यह पसंद आया या नहीं।
"हे, क्या मैं तुम्हें फिर से पढ़कर सुना सकता हूँ? या तुम्हें कोई दूसरी किताब चाहिए?" उसने पूछा।
मैं गिलियाक पक्षियों के बारे में और अधिक जानना चाहता हूँ।
— फिर मैं आगे जारी रखूंगा।
"क्या मैं बिस्तर पर आ सकती हूँ?" फुकेरी ने पूछा।
"बिल्कुल," टेंगो ने जवाब दिया।
वे दोनों बेडरूम में चले गए। फुकाएरी बिस्तर पर चढ़ गया, और टेंगो उसके बगल में एक कुर्सी खींचकर बैठ गया। उसने फिर से पढ़ना शुरू किया:

"घिल्याक लोग कभी नहाते नहीं हैं, इसलिए नृवंशविज्ञानियों के लिए भी उनके चेहरों का असली रंग देखना मुश्किल है; वे अपने कपड़े नहीं धोते, और उनके फर के कपड़े और जूते ऐसे लगते हैं मानो किसी मरे हुए कुत्ते की खाल से बने हों।

घिल्याकों से दुर्गंध आती है, और उनके घरों के पास पहुँचने का संकेत धूप में सुखाई गई मछलियों और सड़ती हुई मछलियों की असहनीय बदबू से मिलता है। हर तंबू के पास एक सुखाने का कमरा होता है, जो दो टुकड़ों में कटी हुई मछलियों से भरा होता है, जो दूर से, खासकर धूप में, मूंगे की पंक्तियों की तरह दिखती हैं। क्रुज़ेनश्टर्न ने इन सुखाने के कमरों के आसपास छोटे-छोटे कीड़ों का एक झुंड देखा, जो ज़मीन को एक इंच मोटी परत से ढक रहे थे।"

— क्रुज़ेनस्टर्न.
"मुझे लगता है कि वह वहां पहुंचने वाला पहला अन्वेषक था। चेखव एक मेहनती छात्र थे और उन्होंने सखालिन के बारे में लिखी गई हर चीज पढ़ ली थी।"
- पढ़ते रहिये।

"सर्दियों में, उनके तंबू दम घोंटने वाले धुएं से भर जाते हैं जो चूल्हे की आग और गिलियाक लोगों के पाइपों से निकलता है, क्योंकि वे, उनकी पत्नियां और यहां तक कि उनके बच्चे भी धूम्रपान करते हैं। गिलियाक लोगों की बीमारियों और मृत्यु दर के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है; हालांकि, यह अनुमान लगाया जा सकता है कि ऐसी अस्वच्छ परिस्थितियों में रहने से उनके स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। शायद यही स्वच्छता की कमी उनके छोटे कद, सूजे हुए चेहरों और सुस्त चाल का कारण भी है।"

"गरीब लोग," फुकेरी ने कहा।

"घिल्यकों के चरित्र के बारे में अलग-अलग मत हैं, लेकिन सभी इस बात पर सहमत हैं कि वे शांतिप्रिय लोग हैं, उन्हें झगड़े और लड़ाई-झगड़े पसंद नहीं हैं, और वे अपने पड़ोसियों के साथ बहुत अच्छे से रहते हैं। बेशक, वे विदेशियों के प्रति संदेहपूर्ण थे, उनके भविष्य को लेकर चिंतित थे, लेकिन उन्होंने उनका विनम्रतापूर्वक स्वागत किया, बिना किसी विरोध के, और भले ही उन्होंने कभी-कभी उनसे झूठ बोला हो, सखालिन का निराशाजनक वर्णन किया हो, ऐसा उन्होंने केवल उन्हें स्वेच्छा से द्वीप छोड़ने के लिए किया था। वे क्रुज़ेनश्टर्न के साथियों के साथ जल्दी ही मित्र बन गए, और जब एल.आई. श्रेन्क बीमार पड़े, तो यह खबर घिल्यकों में तेजी से फैल गई, जिससे वे बहुत दुखी हुए। वे केवल खरीद-फरोख्त करते समय या किसी ऐसे व्यक्ति से बात करते समय झूठ बोलते हैं जिस पर उन्हें भरोसा नहीं होता, और झूठ बोलने से पहले वे चुपके से बच्चों की तरह खुद को देखते हैं। खुलेआम झूठ बोलना और डींग मारना उनके व्यापारिक क्षेत्र के लिए अस्वीकार्य है।"

"वे बहुत प्यारे हैं," फुकेरी ने कहा।

“उन्हें जो भी काम दिया जाता है, घिलियाक उसे पूरी निष्ठा से निभाते हैं और ऐसा कभी नहीं हुआ कि उनमें से किसी ने बीच में ही डाक फेंक दी हो या किसी विदेशी वस्तु का दुरुपयोग किया हो। […] वे साधन संपन्न, तेज बुद्धि वाले, हंसमुख होते हैं और अमीर और शक्तिशाली लोगों के समाज में भी भयभीत नहीं होते।

वे किसी भी प्रकार के अधिकार को नहीं मानते और ऐसा लगता है कि उन्हें “बड़ा” या “छोटा” जैसी अवधारणाओं का कोई ज्ञान ही नहीं है। […] जैसा कि अक्सर लिखा और कहा गया है, घिलियाक परिवारिक सम्मान को भी नहीं जानते। पिता स्वयं को पुत्र से श्रेष्ठ नहीं समझता, पुत्र अपने पिता का सम्मान नहीं करता और अपनी मर्जी से जीवन व्यतीत करता है, और बूढ़ी माँ को तंबू में छोटी बच्ची से अधिक अधिकार प्राप्त नहीं होता। बोस्नियाक लिखते हैं कि उन्होंने अक्सर देखा है कि कैसे एक पुत्र अपनी ही माँ को पीटता और घर से बाहर निकाल देता था और कोई भी उसे डांटने का हकदार नहीं समझता था। परिवार के सभी पुरुषों के समान अधिकार होते हैं। यदि आप घिलियाक को वोदका देते हैं, तो आपको छोटे लड़कों को भी देना होगा। हालाँकि, महिलाओं को उनके अधिकार प्राप्त नहीं हैं। चाहे वे दादी हों, माँ हों या बच्चे, उनके कोई अधिकार नहीं हैं। उन्हें पालतू जानवरों की तरह माना जाता है, ऐसी वस्तुएँ जिन्हें कुत्ते की तरह फेंका जा सकता है, बेचा जा सकता है या लात मारकर भगाया जा सकता है। हालाँकि, घिल्याक कभी-कभी कुत्तों को सहलाते हैं, लेकिन महिलाओं को कभी नहीं। विवाह को एक तुच्छ बात माना जाता है, एक आम दावत से भी कम महत्व का - और वे इसे किसी भी धार्मिक रीति-रिवाज या अनुष्ठान के साथ नहीं मनाते। घिल्याक एक लड़की को अपने तंबू में लाने के बदले में एक नाव, एक भाला या एक कुत्ता देता है, उसके साथ भालू की खाल पर सोता है और बस इतना ही। बहुविवाह की अनुमति है, लेकिन बड़े पैमाने पर इसका अभ्यास नहीं किया जाता है, हालाँकि महिलाओं की संख्या पुरुषों से अधिक है। महिलाओं के प्रति तिरस्कार इतना अधिक है कि उनकी गुलामी, शब्द के वास्तविक और क्रूर अर्थ में गुलामी, की भी निंदा नहीं की जाती है। […] स्पष्ट रूप से, उनके लिए महिला केवल एक वस्तु है जिस पर सौदेबाजी की जा सकती है, जैसे तंबाकू या कपड़ा। स्वीडिश लेखिका स्ट्रिंडबर्ग, प्रसिद्ध नारी-विरोधी, जो चाहती थीं कि महिला केवल एक गुलाम हो, हमेशा पुरुष की इच्छाओं के अधीन रहे, की सोच घिल्याक की सोच के बहुत करीब है। अगर स्ट्रिंडबर्ग उत्तरी सखालिन घूमने आए होते, तो मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि घिलियाक लोग उनका भाईचारे के साथ स्वागत करते।

टेंगो थोड़ी देर आराम करने के लिए रुका। फुकाएरी चुप रही, उसने कोई भाव नहीं दिखाया। टेंगो ने आगे कहा:

"घिलियाक लोगों में विवेक नाम की कोई चीज नहीं होती, उन्हें न्याय का मतलब ही नहीं पता। उन्हें हमें समझने में इतनी कठिनाई इसलिए भी होती है क्योंकि वे सड़कों की उपयोगिता को नहीं समझते। जिन जगहों पर सड़क बनकर चालू हो चुकी है, वहां भी वे टैगा के बीच से ही पैदल चलते हैं। अक्सर घिलियाक लोगों के समूह छोटे-बड़े जानवरों और कुत्तों के साथ दलदली रास्ते से चुपके से, पगडंडी के ठीक बगल से गुजरते हुए दिखाई देते हैं।"

फुकेरी ने अपनी आँखें बंद कर ली थीं और बहुत धीमी साँसें ले रही थी। तेंगो ने कुछ पल उसके चेहरे को देखा, लेकिन वह यह नहीं बता सका कि वह सो गई है या नहीं। इसलिए उसने किताब का दूसरा पृष्ठ खोला और ज़ोर से पढ़ना जारी रखा। एक तरफ तो वह यह सुनिश्चित करना चाहता था कि वह पूरी तरह सो गई है, लेकिन दूसरी तरफ वह चेखव की पंक्तियों को फिर से ज़ोर से सुनना चाहता था।

नदी के मुहाने पर कभी नाइबुसी चौकी हुआ करती थी, जिसकी स्थापना 1866 में हुई थी। किंवदंती के अनुसार, यहाँ 18 घर, एक छोटा मंदिर और एक भोजन भंडार था। 1871 में इस चौकी का दौरा करने वाले एक संवाददाता ने लिखा कि उन्होंने वहाँ एक गैर-कमीशन अधिकारी की कमान में बीस सैनिकों को पाया। एक झोपड़ी में, एक सैनिक की पत्नी, एक लंबी और सुंदर महिला, उसे ताजे अंडे और काली रोटी परोस रही थी; वह यहाँ के जीवन से संतुष्ट थी, केवल चीनी के महंगे होने की शिकायत करती थी। आज उस झोपड़ी का कोई निशान नहीं है, और आसपास की वीरानगी को देखकर सैनिक की सुंदर पत्नी एक मिथक जैसी लगती है। अब यहाँ निगरानी चौकी के लिए एक घर बनाया जा रहा है, बस इतना ही। समुद्र ठंडा, मैला है; धूसर लहरें गरजती हुई किनारे से टकराती हैं, मानो वे हताशा से पूछना चाहती हों: 'हे भगवान, आपने हमें क्यों बनाया?' यह अब समुद्र का पानी नहीं, बल्कि विशाल प्रशांत महासागर का पानी है। इस तट पर, नाइबुसी नदी के मुहाने पर, निर्माण स्थल से कैदियों की कुल्हाड़ियों की आवाज़ सुनाई देती है; दूसरे तट पर, बहुत दूर, अमेरिका है। बाईं ओर कोहरे में सखालिन की चट्टानें दिखाई देती हैं, दाईं ओर वही चट्टानें और मैं कसम खाता हूँ, वहाँ एक भी जीवित प्राणी नहीं, न कोई पक्षी, न कोई मक्खी, और यह समझ से परे लगता है कि लहरें क्यों गरजती और संघर्ष करती हैं, रातों में कौन उन्हें सुनता है, वे क्या कहना चाहती हैं और अंत में, मेरे यहाँ से जाने के बाद वे किसके लिए गरजेंगी। इस एकांत तट पर खड़े होकर आप चिंतन में डूब जाते हैं; आप खिल उठते हैं और साथ ही आप वहीं रहना चाहते हैं, लहरों की निरंतर गति को देखते रहना चाहते हैं और उनकी भयंकर गर्जना को बार-बार सुनना चाहते हैं।

फुकेरी पूरी तरह सो गई थी। उसकी साँसें शांत और गहरी थीं। तेंगो ने किताब बंद की और उसे बेडसाइड टेबल पर रख दिया। फिर वह उठा और बेडरूम की लाइट बंद कर दी। उसने फुकेरी को आखिरी बार देखा। वह शांति से सो रही थी, चेहरा ऊपर की ओर और होंठ दबे हुए। तेंगो ने दरवाजा बंद किया और रसोई में चला गया।
लेकिन अब वह अपने शब्दों में लिख नहीं सकता था। चेखव द्वारा वर्णित सखालिन की सुनसान चट्टानों की छवियाँ उसके मन में बस गई थीं। उसे लहरों की गर्जना भी सुनाई देती थी। अगर वह अपनी आँखें बंद कर लेता, तो वह एक गहरी कल्पना में खो जाता, ओखोत्स्क सागर के लहरों से टकराते किनारे पर अकेला, उसके आसपास कोई नहीं होता। वह चेखव के उदास और लक्ष्यहीन विचारों को समझता था। दुनिया के इस छोर पर, उसने खुद को बेहद असहाय महसूस किया होगा। 19 वीं सदी के अंत में एक रूसी लेखक होना शायद एक ऐसे भयानक भाग्य को ढोने के समान था जिससे कोई बच नहीं सकता था। जितना अधिक उसने रूस से भागने की कोशिश की, उतना ही रूस उसे निगल गया।
टेंगो ने अपने वाइन के गिलास को धोया और बाथरूम में दांत साफ करने के बाद, उसने रसोई की लाइट बंद कर दी, सोफे पर लेट गया और खुद को कंबल में लपेट लिया। उसने सोने की कोशिश की, लेकिन समुद्र की गर्जना अभी भी उसके कानों में गूंज रही थी। लेकिन उसे लगा कि नींद धीरे-धीरे उससे दूर होती जा रही है और आखिरकार वह गहरी नींद में सो गया।
*

वह सुबह साढ़े आठ बजे उठा। फुकेरी बिस्तर से गायब थी, और जो पजामा उसने उसे उधार दिया था, वह बाथरूम की वॉशिंग मशीन में पड़ा था। उसकी कमीज़ और पैंट दोनों वहीं थे, कफ़ ऊपर की ओर मुड़े हुए। उसने रसोई की मेज पर उसके लिए एक नोट छोड़ा था। उसने एक कागज़ पर कलम से लिखा था: "अब ये भूत क्या कर रहे हैं? मैं घर जा रहा हूँ।" उसके छोटे, चौकोर अक्षरों में कुछ अजीब सा भाव था। ऐसा लग रहा था जैसे ऊपर से देखने पर रेत पर सीपियों की माला से बना कोई संदेश हो। उसने कागज़ को मोड़कर अपनी डेस्क की दराज में रख दिया। उसकी प्रेमिका को ग्यारह बजे आना था, और अगर उसे ऐसा नोट मिल जाता, तो उसकी हालत बहुत खराब हो जाती।
टेंगो ने बिस्तर ठीक किया और चेखव की किताब को वापस शेल्फ पर रख दिया। फिर उसने अपने लिए कॉफी बनाई और ब्रेड टोस्ट की। नाश्ता करते समय उसे एहसास हुआ कि उसके सीने पर कोई भारी चीज़ दबाव डाल रही है। उसे यह समझने में थोड़ा समय लगा कि वह क्या है। वह सो रही फुकेरी का शांत चेहरा था।
क्या मुझे इस लड़की से प्यार हो रहा है? नहीं, ऐसा नहीं है, उसने सोचा। बस उसके अंदर कुछ ऐसा है जो मेरे दिल की धड़कनें तेज़ कर देता है, सचमुच। लेकिन मैं उसके पहने हुए पजामे के बारे में क्यों सोचता रहता हूँ? मैंने (लगभग अनजाने में) उन्हें क्यों उठाया और सूंघा?
बहुत सारे सवाल। चेखव ने कहा था कि लेखक समस्याओं का समाधान नहीं करता, बल्कि उन्हें उठाता है। यह बात सही है। लेकिन चेखव ने यही रवैया न केवल अपनी रचनाओं के प्रति, बल्कि अपने जीवन के प्रति भी अपनाया। समस्याएं तो आईं, लेकिन उन्होंने उनका समाधान नहीं किया। हालांकि उन्हें पता था कि वे तपेदिक से पीड़ित हैं, जो उस समय एक लाइलाज बीमारी थी (वे एक डॉक्टर थे, यह बात उन्हें पता ही होगी), फिर भी उन्होंने सच्चाई को नजरअंदाज करने की कोशिश की और आखिरी पलों तक अपनी मृत्यु को मानने से इनकार कर दिया। फेफड़ों में गंभीर रक्तस्राव के कारण कम उम्र में ही उनकी मृत्यु हो गई।
टेंगो ने सिर हिलाया और मेज से उठ गया। उसकी प्रेमिका आज उससे मिलने आ रही थी। उसे कपड़े धोने और सफाई करनी थी। बेहतर होगा कि वह इन सब बातों को बाद के लिए छोड़ दे।

अध्याय 21 चाहे वह कितनी भी दूर भागने की कोशिश करे

ओमामे दोबारा ज़िला पुस्तकालय गई, उसी प्रक्रिया का पालन किया और अपनी मेज़ पर रखा एक संक्षिप्त अख़बार खोला। वह तीन साल पहले शरद ऋतु में यामानाशी प्रांत के पहाड़ों में पुलिस और चरमपंथी समूह के बीच हुए सशस्त्र संघर्ष के बारे में फिर से पूछताछ करने आई थी। जिस संप्रदाय, 'पायनियर्स', के बारे में उस महिला ने उसे बताया था, उसका मुख्यालय यामानाशी के पहाड़ों में था, जहाँ यह संघर्ष भी हुआ था। शायद यह महज़ एक संयोग था। लेकिन संयोग एक ऐसी चीज़ थी जो ओमामे को पसंद नहीं थी। शायद दोनों के बीच कोई संबंध था। और उस महिला के हावभाव, "इतनी गंभीर घटना," से भी एक संबंध का संकेत मिलता था।
यह संघर्ष तीन साल पहले, 19 अक्टूबर 1981 को हुआ था (या, आओमामे के सिद्धांत के अनुसार, 1Q84 से तीन साल पहले)। पिछली बार जब वह पुस्तकालय गए थे, तब उन्होंने अखबारों के लेखों से अधिकांश विवरण प्राप्त कर लिए थे। इसलिए उन्होंने उन अनुभागों को सरसरी तौर पर पढ़ने और घटना के बारे में बाद में प्रकाशित लेखों और विषय का विभिन्न कोणों से विश्लेषण करने वाले लेखों पर ध्यान केंद्रित करने का निर्णय लिया।
पहली गोलीबारी में तीन पुलिसकर्मी मारे गए और दो अन्य चीनी निर्मित कलाश्निकोव राइफलों से गंभीर रूप से घायल हो गए। इसके बाद, चरमपंथी अपने सभी हथियारों के साथ पहाड़ों में भाग गए, और पुलिस ने पूरे इलाके में व्यापक तलाशी अभियान चलाया। आत्मरक्षा बलों की एक पूर्णतः सशस्त्र हवाई इकाई ने हेलीकॉप्टरों के साथ हस्तक्षेप किया। तीन चरमपंथियों ने आत्मसमर्पण करने से इनकार कर दिया और उन्हें गोली मार दी गई, दो गंभीर रूप से घायल हो गए (एक की तीन दिन बाद अस्पताल में मृत्यु हो गई, और लेख में दूसरे के बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई), और चार को बिना किसी चोट के या मामूली चोटों के साथ पकड़ लिया गया। पुलिसकर्मियों और आत्मरक्षा बलों के सदस्यों को उच्च-प्रदर्शन वाली बुलेटप्रूफ जैकेट से लैस किया गया था, और उनमें से कोई हताहत नहीं हुआ। केवल एक पुलिसकर्मी पीछा करने के दौरान एक चट्टान से गिर गया और उसका पैर टूट गया। केवल एक चरमपंथी भाग निकला। व्यापक जांच के बावजूद, वह लापता हो गया। शुरुआती सदमे के शांत होने के बाद, अखबारों ने इस चरमपंथी समूह के गठन की विस्तृत जानकारी देना शुरू कर दिया। इसके सदस्य 1970 के दशक के छात्र आंदोलनों की उपज थे। उनमें से आधे से अधिक टोक्यो विश्वविद्यालय या निहोन विश्वविद्यालय के यासुदा सभागार पर कब्जे में शामिल थे। पुलिस के हस्तक्षेप और उनके प्रतिरोध को विफल करने के बाद, निष्कासित छात्रों या उन लोगों ने, जिन्हें लगा कि विश्वविद्यालय परिसरों के केंद्र में स्थित शहरी क्षेत्र में राजनीतिक गतिविधियां ठप हो गई हैं, कुछ शिक्षण कर्मचारियों के साथ मिलकर यामानाशी प्रान्त में एक फार्म स्थापित किया, जहाँ उन्होंने खुद को एक कम्यून के रूप में संगठित किया। शुरुआत में, वे "ताकाशीमा अकादमी" के नाम से जाने जाने वाले कम्यूनों के समूह से संबंधित थे, लेकिन उस जीवन से असंतुष्ट होकर, वे उनसे अलग हो गए और खुद को पुनर्गठित किया। उन्होंने पहाड़ों के

देखा था। पत्रकारों को कतार में खड़ा करके पूर्वनिर्धारित दौरे पर नहीं ले जाया गया, बल्कि उन्हें जहाँ चाहें जाने, जिससे चाहें बात करने और अपने लेखों के लिए सामग्री का उपयोग करने की अनुमति दी गई। उन्होंने केवल एक समझौते पर हस्ताक्षर किए थे जिसके अनुसार वे केवल उन्हीं वीडियो और छवियों का उपयोग करेंगे जिनके लिए उन्हें सहमति प्राप्त हुई थी, ताकि अनुयायियों की निजता की रक्षा की जा सके। नेतृत्व के कुछ सदस्य, साधारण वस्त्रों में, एक बड़े बैठक कक्ष में एकत्रित हुए थे, जहाँ उन्होंने पत्रकारों के प्रश्नों के उत्तर दिए और संप्रदाय के संगठन, मान्यताओं और प्रशासनिक नीतियों के बारे में बताया। उन्होंने विनम्रता और खुलेपन से बात की। उन्होंने धार्मिक समूहों द्वारा आमतौर पर किए जाने वाले प्रचार के किसी भी अंश को पूरी तरह से नकार दिया था। वे किसी धार्मिक समूह के नेताओं की बजाय, प्रस्तुति देने में विशेषज्ञता प्राप्त किसी विज्ञापन एजेंसी के शीर्ष कर्मचारियों की तरह अधिक दिख रहे थे।
केवल उनके कपड़े अलग थे।
उन्होंने समझाया था, "हमारा कोई विशिष्ट सिद्धांत नहीं है। हमें किसी निर्धारित पाठ्यपुस्तक की आवश्यकता नहीं है। हम प्रारंभिक बौद्ध धर्म और उससे जुड़ी विभिन्न तपस्या पद्धतियों के सैद्धांतिक अध्ययन से संबंधित हैं। इन व्यावहारिक अभ्यासों के माध्यम से हम एक ऐसी धार्मिक जागृति प्राप्त करना चाहते हैं जो शाब्दिक नहीं बल्कि अधिक गतिशील हो। आप प्रत्येक व्यक्ति की इस स्वैच्छिक जागृति को ही हमारी सामूहिक आस्था का आधार मान सकते हैं। हम सिद्धांत और फिर ज्ञानोदय में विश्वास नहीं करते, बल्कि पहले व्यक्तिगत ज्ञानोदय में विश्वास करते हैं, जिससे हमारे सिद्धांतों की नींव रखने वाले सिद्धांत स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होते हैं। यही हमारी मूल नीति है। इस संदर्भ में, हमारी संरचना अन्य स्थापित धर्मों से काफी भिन्न है।"
हमारे आर्थिक संसाधनों की बात करें तो, कई अन्य धार्मिक समूहों की तरह, हम वर्तमान में अपने अनुयायियों के स्वैच्छिक दान पर निर्भर हैं। लेकिन अंततः, हम पूरी तरह से इन दानों पर निर्भर नहीं हैं, बल्कि कृषि पर केंद्रित एक सरल और आत्मनिर्भर जीवन जीने का प्रयास करते हैं। "जो कुछ है उसी से संतुष्ट" रहकर, अपने शरीर को शुद्ध करके और अपनी आत्मा को संवारकर, हम मन की शांति प्राप्त करने की आशा रखते हैं। जो लोग प्रतिस्पर्धी समाज के भौतिकवाद की निरर्थकता को समझते हैं और अधिक गहन मूल्यों की खोज में लगे हैं, वे एक के बाद एक हमारे साथ जुड़ते हैं। ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है जिन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की है, विशिष्ट पदों पर कार्यरत रहे हैं और एक निश्चित सामाजिक प्रतिष्ठा का आनंद लेते हैं। हम उस चीज़ से अलग हैं जिसे दुनिया "नया धर्म" कहती है और खुद से अलग। हम कोई ऐसा धार्मिक समूह नहीं हैं जो आसानी से लोगों की सांसारिक चिंताओं को अपने ऊपर ले लेता है और एक ही बार में सभी की मदद करने लगता है, न ही हम उस दिशा में जाना चाहते हैं। हमें एक ऐसे संस्थान के रूप में समझना अधिक उचित होगा जो एक धार्मिक स्नातकोत्तर विद्यालय के समकक्ष है और उन लोगों को सही स्थान और समर्थन प्रदान करता है जो जानते हैं कि कमजोरों की मदद करना निस्संदेह एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है, लेकिन जो स्वयं की सहायता करने का भी प्रयास करते हैं।
एक समय ऐसा आया जब प्रशासन की नीति को लेकर हमारे और ज़ोरी दे ज़ी के बीच मतभेद पैदा हो गए, और अतीत में इस मुद्दे पर विवाद भी हुए। हालांकि, बातचीत के

*

*

*

रूप में करता है। मीडिया को इस बारे में पता नहीं है। उन्होंने वहाँ केवल आधा दिन बिताया। उन्हें कुछ ध्यान स्थल दिखाए गए जो पूरी तरह से व्यवस्थित और अनुशासित थे, ताज़ा और स्वादिष्ट भोजन परोसा गया, उन्होंने आत्मा के जागरण के बारे में एक सुंदर कहानी सुनी और संतुष्ट होकर घर लौट गए। उन्होंने यह नहीं देखा कि पर्दे के पीछे वास्तव में क्या चल रहा था।
*

पुस्तकालय से निकलने के बाद, आओमामे एक कैफे में गई और एक कॉफी मंगवाई। उसने कैफे के फोन से अयुमी के ऑफिस नंबर पर कॉल किया, वही नंबर जो अयुमी ने उसे बताया था कि वह कभी भी कॉल कर सकती है। एक सहकर्मी ने फोन उठाया और बताया कि वह फील्ड में है, लेकिन दो घंटे में स्टेशन वापस आ जाएगी। आओमामे ने अपना नाम बताए बिना बस इतना कहा कि वह फोन करके जवाब देगी।
वह घर लौटा और दो घंटे बाद उसने फिर से उस नंबर पर कॉल किया। अयुमी ने जवाब दिया।
"हैलो, आओमामे! कैसी हो?"
- तुम ठीक हो?
"ठीक है, मैं भी। मेरे पास दुनिया जैसा कोई आदमी नहीं है। तुम्हारे पास है क्या?"
- मेरे पास भी नहीं।
"ऐसा मुमकिन नहीं है," आयुमी ने कहा। "अगर हम जैसी दो जवान, आकर्षक महिलाएं भरपूर यौन इच्छा न होने की शिकायत कर रही हैं, तो इस दुनिया में कुछ गड़बड़ है। कुछ तो करना ही पड़ेगा।"
"यह सच है, लेकिन... क्या इतनी जोर से बात करना वाकई ठीक है? आप काम पर हैं, है ना? आस-पास कोई नहीं है?"
"कोई बात नहीं। आप मुझसे किसी भी विषय पर बात कर सकते हैं।"
"अगर अनुमति हो तो, मेरी आपसे एक विनती है। मेरे पास मदद के लिए और कोई नहीं है।"
"ज़रूर। मुझे नहीं पता कि मैं आपके किसी काम आ सकता हूँ या नहीं, लेकिन मैं सुन रहा हूँ।"
"क्या आप पायनियर्स नामक धार्मिक समूह को जानते हैं? वे पहाड़ों में, यामानाशी में स्थित हैं।"
— हम्म, पायनियर्स… अयुमी ने कहा और लगभग दस सेकंड तक उसने बहुत सोचा। हाँ, मुझे लगता है मैं उन्हें जानती हूँ। यह उस धार्मिक समुदाय के बारे में है जिसका डॉन हिस्सा थी, वही चरमपंथी समूह जिसने यामानाशी में सशस्त्र संघर्ष को जन्म दिया था। एक गोलीबारी जिसमें तीन पुलिस अधिकारी मारे गए थे। कितना दुखद। लेकिन पायनियर्स इसमें शामिल नहीं थे। घटना के बाद उनकी जाँच हुई, लेकिन कुछ भी गलत नहीं पाया गया। उनके बारे में क्या?
"मैं यह जानना चाहता हूँ कि उस घटना के बाद पायनियर्स किसी और मामले में शामिल थे या नहीं। चाहे वो आपराधिक मामला हो या दीवानी। लेकिन एक आम नागरिक होने के नाते मेरे पास इन बातों का पता लगाने का कोई तरीका नहीं है। मैं हर अखबार को पन्ने-दर-पन्ने नहीं पढ़ सकता। लेकिन मुझे लगा कि एक पुलिसवाला पता लगाने का कोई न कोई तरीका जरूर ढूंढ लेगा।"

— ये तो बहुत आसान है। आप कंप्यूटर में खोजिए और तुरंत पता चल जाएगा… मैं आपको ये बताना चाहता था, लेकिन दुर्भाग्य से जापानी पुलिस इतनी कंप्यूटरीकृत नहीं है। इसमें अभी कुछ साल और लगेंगे। अभी, ऐसी जानकारी पाने के लिए मुझे यामानाशी पुलिस से दस्तावेजों की प्रतियां डाक से मंगवानी पड़ेंगी। लेकिन इसके लिए मुझे पहले दस्तावेजों के लिए अनुरोध करना होगा और अपने वरिष्ठों से मंजूरी लेनी होगी। बेशक, अनुरोध का कारण भी बताना होगा। आखिर हम एक सरकारी दफ्तर हैं, जहां हर कोई चीजों को जरूरत से ज्यादा जटिल बनाकर ही अपना गुजारा करता है।
"तो फिर," आओमामे ने कहा और आह भरी। "यह तो संभव ही नहीं है।"
"लेकिन आप यह क्यों जानना चाहते हैं? क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो पायनियर से संबंधित किसी घटना में शामिल रहा हो?"
ओमामे हिचकिचाई, लेकिन अंततः खुलकर बोलने का फैसला किया।
कुछ ऐसा ही। यह बलात्कार के बारे में है। इस समय मैं ज्यादा कुछ नहीं कह सकता, लेकिन यह लड़कियों के बलात्कार के बारे में है। मेरे पास जानकारी है कि यह सब धर्म की आड़ में सुनियोजित तरीके से हो रहा है।
फोन पर अयुमी के frowning की आवाज सुनकर आओमामे को समझ आ गई।
"बलात्कार? यह अक्षम्य है।"
"बिल्कुल," आओमामे ने पुष्टि की।
— लड़कियों की उम्र कितनी है?
"ज्यादा से ज्यादा दस। वैसे भी, कुछ लड़कियां ऐसी भी हैं जिन्हें अभी तक मासिक धर्म नहीं हुआ है।"
आयुमी कुछ देर तक फोन पर खामोशी में डूबी रही। फिर उसने तटस्थ स्वर में कहा: "मैं समझता हूँ। अगर ऐसी कोई बात है, तो मैं कोई उपाय सोच लूँगा। क्या आप मुझे दो-तीन दिन का समय दे सकते हैं?"
"ज़रूर। मैं आपके संपर्क का इंतज़ार कर रहा हूँ।"
उन्होंने कुछ और बातें कीं, फिर अयुमी ने उससे कहा कि उसे काम पर वापस जाना होगा।
*

फोन रखने के बाद, आओमामे खिड़की के पास वाली कुर्सी पर बैठ गई और कुछ देर तक अपने दाहिने हाथ को देखती रही। उंगलियां पतली और लंबी थीं, नाखून छोटे कटे हुए थे और उन पर नेल पॉलिश नहीं लगी थी। उन्हें देखकर उसे लगा जैसे उसका अस्तित्व बेहद नाजुक और क्षणभंगुर है। उसने अपने नाखूनों का आकार भी खुद नहीं चुना था। किसी और ने तय किया था, और उसने उन्हें वैसे ही स्वीकार कर लिया था, बिना कुछ कहे, चाहे उसे पसंद हो या न हो। लेकिन आखिर किसने तय किया होगा कि उसके नाखूनों का आकार ऐसा होना चाहिए?
हाल ही में, उस महिला ने आओमामे से कहा था, “तुम्हारे माता-पिता साक्षी चर्च के सच्चे अनुयायी थे, और आज भी हैं।” इसका मतलब था कि वे आज भी धर्म प्रचार के प्रति उतने ही समर्पित थे। आओमामे का एक भाई था जो उससे चार साल बड़ा था। एक बहुत ही अच्छा लड़का। जिस समय वह घर से भागी थी, उस समय वह आस्था के मार्ग पर चल रहा था, ठीक वैसे ही जैसे उसके माता-पिता ने उसे बताया था। अब वह क्या कर रहा होगा? लेकिन आओमामे को अपने परिवार के बारे में जानने की कोई खास इच्छा

नहीं थी। वे उसके जीवन का एक बंद अध्याय थे। उसने उनसे सारे संपर्क तोड़ दिए थे।
लंबे समय तक उसने दस साल की उम्र से पहले घटी हर बात को भुलाने की कोशिश की। उसने खुद से कहा, "मेरी ज़िंदगी तो दस साल की उम्र में ही शुरू हुई। इससे पहले जो कुछ भी हुआ, वह बस एक बुरा सपना था। मुझे इन यादों से छुटकारा पाना होगा।" लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद, मौका मिलते ही वह खुद को उस भयानक सपने की दुनिया में खिंचा चला जाता था। उसकी ज़्यादातर चीज़ें उस काली मिट्टी में गहराई से जमी हुई थीं, जिससे उन्हें पोषण मिलता था। चाहे वह कितनी भी दूर भागने की कोशिश करे, अंत में उसे वहीं लौटना पड़ता था।
उसने निश्चय किया, मुझे इस "नेता" को परलोक में भेजना ही होगा। वह भी अपने लिए।
*

तीसरे दिन की शाम को उन्हें अयुमी का फोन आया।
उन्होंने कहा, "मैं कुछ बातें पता लगाने में कामयाब रही।"
— अग्रदूतों के बारे में, है ना?
हां। जब मैं यही सोच रहा था, तभी मुझे याद आया कि मेरे साथ ही यहाँ काम करने वाले एक सहकर्मी के चाचा यामानाशी पुलिस में काम करते हैं। वो काफी ऊंचे ओहदे पर हैं। मैंने उनसे बात की। मैंने उन्हें बताया कि मेरे एक रिश्तेदार की बेटी इस संप्रदाय में शामिल हो गई है और उसे कुछ परेशानियां आ रही हैं। इसलिए मैंने पायनियर्स के बारे में जानकारी जुटाना शुरू किया और उनसे बहुत विनम्रता से मदद मांगी। आप जानते हैं, मैं इस तरह के कामों में काफी माहिर हूँ।
"धन्यवाद। मैं वास्तव में आभारी हूं।"
— उस व्यक्ति ने यामानाशी में अपने चाचा को फोन किया, स्थिति समझाई, और चाचा ने उसे जांच का नेतृत्व कर रहे व्यक्ति से मिलवाया। और इस तरह संयोगवश मेरी सीधे उस व्यक्ति से फोन पर बात हुई।
- आश्चर्यजनक!
"मैंने उनसे काफी बातचीत की और पायनियर्स के बारे में बहुत कुछ सीखा, लेकिन मुझे लगता है कि आप पहले से ही जानते हैं कि प्रेस में क्या छपा है, इसलिए मैं आपको केवल कम ज्ञात हिस्से ही बताऊंगा। क्या यह ठीक है?"
- अच्छी बात है।
सबसे पहले तो, पायनियर्स को अब तक कानून के साथ कई समस्याओं का सामना करना पड़ा है। कई दीवानी मुकदमे चल रहे हैं, जिनमें से अधिकांश जमीन की बिक्री से संबंधित हैं। इस संप्रदाय के पास बहुत पैसा है और वे अपने आसपास की सारी जमीन एक के बाद एक खरीद लेते हैं। ठीक है, यह ग्रामीण इलाका है, इसलिए जमीनें सस्ती हैं। और जिस तरह से वे यह करते हैं, वह अक्सर काफी आक्रामक होता है। वे एक फर्जी कंपनी के पीछे छिपकर, रियल एस्टेट एजेंसियों को दरकिनार करके, बिना उन्हें संप्रदाय की जानकारी दिए सब कुछ खरीद लेते हैं। अक्सर मालिकों और स्थानीय अधिकारियों के साथ समस्याएं होती हैं। ये वे हथकंडे हैं जो रियल एस्टेट के सट्टेबाज इस्तेमाल करते हैं। लेकिन अब तक पुलिस किसी भी दीवानी मुकदमे में शामिल नहीं हुई है। चीजें अभी तक सार्वजनिक नहीं हुई हैं, हालांकि बहुत कम सबूत बचे हैं। यह बहुत संभव है कि राजनेता, खतरनाक व्यक्ति, इसमें

शामिल हों। बस एक राजनेता को पर्दे के पीछे से काम करने की जरूरत है, और पुलिस उनके इशारे पर काम करती है। अगर यह मामला जोर पकड़ ले और डाकघर से पता चले कि उन पर मुकदमा चलाया जाना चाहिए, तो स्थिति अलग होगी।
आर्थिक गतिविधियों के मामले में अग्रणी लोग उतने भोले नहीं होते जितने वे दिखते हैं।
आम अनुयायियों के बारे में तो मुझे नहीं पता, लेकिन उनके संपत्ति लेन-देन को देखकर लगता है कि धन का प्रबंधन करने वाले प्रशासनिक अधिकारी बिल्कुल बेदाग नहीं हैं। चाहे आप उन्हें कितनी भी नरमी से देखें, यह मानना मुश्किल है कि वे धन का उपयोग शुद्ध आध्यात्मिकता प्राप्त करने के लिए करते हैं। इसके अलावा, उन्होंने टोक्यो और ओसाका के मध्य क्षेत्रों में, न केवल यामानाशी में, बल्कि हर तरह की जमीन और इमारतें खरीदी हैं। ये सभी शिबुया, मिनामी-आओयामा, शोटो आदि में बेहतरीन जगहों पर स्थित हैं। इससे स्पष्ट है कि यह संप्रदाय राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार करना चाहता है। हां, अगर वे अपना पेशा बदलकर संपत्ति के कारोबार में ही रहना चाहें तो बात अलग है।
लेकिन एक धार्मिक समूह जिसका अंतिम लक्ष्य प्रकृति की गोद में रहना और शुद्ध एवं कठोर तपस्या का अभ्यास करना है, वह शहरों में क्यों प्रवेश करना चाहेगा? "और उन्हें इतना पैसा कहाँ से मिलता है?" आयुमी ने आश्चर्य से सोचा। "गाजर और मूली उगाकर इतनी पूंजी जमा करना तो असंभव है।"
वे अनुयायियों से चंदा वसूलते हैं।
वे शायद ऐसा भी करते होंगे, लेकिन उनके पैसे कमाने का कोई न कोई तरीका तो ज़रूर होगा। इसके अलावा, मुझे एक और जानकारी मिली है जो मुझे चिंतित करती है और मुझे लगता है कि आपको भी इसमें दिलचस्पी होगी। इस संप्रदाय के कई बच्चे स्थानीय प्राथमिक विद्यालय जाते हैं, लेकिन कुछ समय बाद उनमें से अधिकतर स्कूल छोड़ देते हैं। चूंकि शिक्षा अनिवार्य है, इसलिए विद्यालय उन्हें उपस्थित रहने के लिए कहता है, लेकिन संप्रदाय का कहना है कि "कुछ बच्चे कक्षा में जाना ही नहीं चाहते" और वे इस पर ध्यान नहीं देते। उनका दावा है कि वे स्वयं उन बच्चों को आवश्यक शिक्षा प्रदान करते हैं और उनकी पढ़ाई को लेकर चिंता करने की कोई बात नहीं है।
ओमामे को अपने प्राथमिक विद्यालय के दिन याद थे। वह समझती थी कि उस संप्रदाय के बच्चे वहां क्यों नहीं जाना चाहते थे क्योंकि उनके साथ वहां अजनबियों जैसा व्यवहार किया जाता था, उन्हें नजरअंदाज किया जाता था या डराया जाता था। "हो सकता है कि उन्हें वहां सहज महसूस न हो," उसने कहा। "और स्कूल न जाना कोई अजीब बात भी नहीं है।"
लेकिन उनके शिक्षकों का कहना है कि उन्होंने इन बच्चों में से कई में मानसिक विकार देखे हैं, चाहे वे लड़के हों या लड़कियाँ। शुरुआत में वे सभी अन्य बच्चों की तरह हंसमुख होते हैं, लेकिन जैसे-जैसे वे ऊपरी कक्षाओं में जाते हैं, वे धीरे-धीरे शांत, भावहीन और फिर पूरी तरह से उदासीन हो जाते हैं, और अंत में वे स्कूल आना बिल्कुल बंद कर देते हैं। पायनियर संप्रदाय के बहुत से बच्चे इसी दौर से गुजरते हैं और उनमें यही लक्षण दिखाई देते हैं। शिक्षक असमंजस में हैं और चिंतित हैं। उन बच्चों का क्या होता है जो अब स्कूल नहीं आते और संप्रदाय के अंदर ही बंद रहते हैं? क्या वे ठीक हैं, स्वस्थ हैं? लेकिन

उनसे संपर्क करने का उनके पास कोई तरीका नहीं है, क्योंकि संप्रदाय में बाहरी लोगों का प्रवेश वर्जित है।
आओमामे ने मन ही मन सोचा, त्सुबासा में भी वही लक्षण हैं। अत्यधिक उदासीनता, भावहीनता, लगभग पूर्ण मौन।
"आपकी धारणा यह है कि पायनियर्स के भीतर बच्चों का दुर्व्यवहार होता है। व्यवस्थित रूप से। और वहां बलात्कार भी होता है।"
लेकिन पुलिस किसी आम नागरिक की निराधार धारणाओं के आधार पर ही कार्रवाई नहीं कर सकती।
नहीं। पुलिस एक कठोर और रूढ़िवादी संस्था है, जिसके शीर्ष अधिकारियों को सिर्फ अपने करियर की चिंता रहती है। उनमें से कुछ अलग हैं, लेकिन अधिकतर का जीवन का लक्ष्य उच्च पदों पर यथासंभव पदोन्नति पाना होता है, और सेवानिवृत्ति के बाद निजी क्षेत्र या किसी गैर-सरकारी संगठन में काम करना होता है। इसलिए वे शुरू से ही संवेदनशील मुद्दों पर बात करने से बचते हैं। मुझे लगता है कि ये लोग पिज्जा भी ठंडा होने तक नहीं खाते। अगर पीड़ित अपना नाम बता दें और अदालत में गवाही दे सकें, तो स्थिति अलग हो सकती है, लेकिन मुझे लगता है कि यह और भी मुश्किल है।
"शायद," आओमामे ने कहा। "खैर, धन्यवाद। आपने जो कहा वह बहुत मददगार है। मुझे किसी न किसी तरह से आपका एहसान चुकाना होगा।"
"चिंता मत करो। हम रोप्पोंगी में एक साथ सर्दियाँ बिता सकते हैं। चलो हम दोनों अपनी चिंताओं और परेशानियों को भूल जाते हैं।"
- ठीक है।
"मैं तुम्हें ऐसे ही देखना चाहती हूँ!" आयुमी ने उत्साह से कहा। वैसे, क्या तुम हथकड़ी का खेल खेलना चाहोगे?"
"मुझे ऐसा नहीं लगता," आओमामे ने जवाब दिया।
हथकड़ी का खेल?
"ओह, सच में? बहुत बुरा हुआ," आयुमी ने निराशा से कहा।

अध्याय 22 समय असमान रूप से बह सकता है

टेंगो अपने दिमाग के बारे में सोच रहा था। उसे बहुत सी बातों पर विचार करना था।
मानव मस्तिष्क ढाई मिलियन वर्षों में लगभग चार गुना बढ़ गया है। वजन के हिसाब से, यह शरीर के कुल द्रव्यमान का केवल दो प्रतिशत है, लेकिन ऊर्जा का चालीस प्रतिशत खपत करता है (उसने हाल ही में एक किताब में पढ़ा था)। मस्तिष्क के इस अद्भुत विकास ने मनुष्यों को समय, स्थान और संभावना की अवधारणाएँ प्रदान कीं।
समय, स्थान और संभावना की अवधारणाएँ।
टेंगो जानता था कि समय का प्रवाह अनियमित हो सकता है। अपने आप में, यह स्थिर है, लेकिन यह अपनी प्रवाहशीलता खो सकता है और बुरी तरह विकृत हो सकता है। कभी यह बहुत धीमा और बोझिल होता है, कभी हल्का और तेज़। कभी घटनाएँ अपना क्रम बदल लेती हैं या पूरी तरह से गायब हो जाती हैं। कभी ऐसी घटनाएँ घटित होती हैं जिनका अस्तित्व ही नहीं होना चाहिए। समय को अपनी इच्छानुसार नियंत्रित करके, लोग अपने अस्तित्व के अर्थ को समायोजित करते हैं। दूसरे शब्दों में, ऐसा करके वे किसी न किसी तरह अपनी मानसिक स्थिति को बचाए रखते हैं। यदि उन्हें इसे एकसमान रूप से और इसके प्रवाह के सही क्रम में देखने के लिए मजबूर किया जाए, तो वे संभवतः मानसिक रूप से टूट जाएँगे। ऐसा जीवन परम यातना होगा।
मस्तिष्क के विकास के साथ, मनुष्य ने समय की अवधारणा को ग्रहण किया, और साथ ही साथ इसे समायोजित करने का तरीका भी सीख लिया। मनुष्य निरंतर समय का उपभोग करता है और समानांतर रूप से अपनी चेतना द्वारा संशोधित समय का पुनर्निर्माण करता है। यह किसी अन्य व्यवसाय की तरह नहीं है। इसीलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि शरीर की 40 प्रतिशत ऊर्जा मस्तिष्क द्वारा उपयोग की जाती है।
*

क्या डेढ़-दो साल पुरानी उसकी यादें वाकई वही थीं जो उसने अपनी आँखों से देखी थीं? वह अक्सर सोचता था। उसकी माँ अंडरवियर में और वह अजनबी आदमी उसके निपल्स चूम रहा था। उसकी बाहें उसके चारों ओर लिपटी हुई थीं। क्या डेढ़-दो साल का बच्चा इतनी बारीकियाँ याद रख सकता है? क्या वह इन तस्वीरों को इतनी स्पष्टता से याद रख सकता है? या यह एक झूठी याद थी जो उसने बाद में खुद को बचाने के लिए गढ़ी थी?
यह भी एक संभावना थी। खुद को यह साबित करने के लिए कि जिसे वह पिता कहता था, वह वास्तव में उसका जैविक पिता नहीं था, किसी समय उसके मन ने अनजाने में एक अज्ञात व्यक्ति की याद बना ली थी (जो उसका असली पिता हो सकता था)। फिर, उसने अपने करीबी रक्त संबंधियों के दायरे से उस व्यक्ति को हटाने की कोशिश की जिसे वह पिता कहता था। अपने भीतर एक काल्पनिक पिता और एक ऐसी माँ की कल्पना करके, जो निश्चित रूप से कहीं रहती हो, वह अपने सीमित और घुटन भरे जीवन में एक नया रास्ता खोजने की कोशिश कर रहा था।

फिर भी उसकी स्मृति इतनी जीवंत और वास्तविक थी। वह उसे छू सकता था, उसका भार, उसकी गंध, उसकी गहराई महसूस कर सकता था। वह उसकी चेतना की दीवारों से इस प्रकार मजबूती से जुड़ी हुई थी जैसे किसी परित्यक्त जहाज के तलवे पर सीप चिपकी हो। चाहे वह उसे झटकने की कितनी भी कोशिश करे, किसी तरह उसे हटाने की कोशिश करे, वह उसे अलग नहीं कर सकता था। टेंगो को विश्वास नहीं हो रहा था कि ऐसी स्मृति केवल उसके मन की आवश्यकता से गढ़ी गई एक मनगढ़ंत कहानी थी। यह इतनी वास्तविक और इतनी शक्तिशाली थी कि महज़ एक कल्पना नहीं हो सकती थी।
तो, अगर हम यह मान लें कि यह सच है, कि यह वाकई हुआ था तो क्या होगा?
शिशु अवस्था में, टेंगो उस दृश्य को देखकर अवश्य भयभीत हो गया होगा। उसका दूध कोई और पी रहा था। कोई उससे कहीं अधिक बड़ा और बलवान। और कुछ क्षणों के लिए ही सही, उसकी माँ के मन से उसका अस्तित्व ही मिट गया था। यह एक ऐसी स्थिति थी जिसने उसके नाज़ुक अस्तित्व को खतरे में डाल दिया था। शायद उन क्षणों का भय उसकी चेतना में अंकित हो गया था।
और उस डर की याद कभी-कभी अचानक लौट आती, बिना किसी पूर्वसूचना के, और उसे पानी की तोप की तरह लगती। यह टेंगो को लगभग घबराहट की स्थिति में डाल देती। यह उससे बात करती, उसे याद दिलाती। आप कहीं भी जाएं, कुछ भी करें, आप इस दबाव से बच नहीं सकते। यह एक ऐसी याद है जो आपको एक व्यक्ति के रूप में परिभाषित करती है, आपके जीवन को आकार देती है, और आपको एक पूर्वनिर्धारित स्थान पर ले जाती है। आप चाहे कितनी भी कोशिश करें, आप इसके प्रभाव से बच नहीं सकते।
एक सवाल टेंगो को लगातार परेशान कर रहा था। जब उसने फुकाएरी के पहने हुए पजामे को वाशिंग मशीन से निकाला, उसे अपनी नाक के पास ले जाकर सूंघा, तो क्या वह अपनी माँ की खुशबू ढूंढ रहा था? बेशक, वह ढूंढ सकता था। लेकिन उसे अपनी बिछड़ी हुई माँ की खुशबू एक सत्रह साल की लड़की के शरीर की खुशबू में क्यों ढूंढनी पड़ी? यकीनन ढूंढने के लिए और भी ज़्यादा उपयुक्त जगहें थीं। उदाहरण के लिए, उसकी बड़ी प्रेमिका के शरीर में।
*

टेंगो की प्रेमिका उससे दस साल बड़ी थी। उसके स्तन बड़े और खूबसूरत थे, बिल्कुल उसकी माँ जैसे, जैसा कि उसे याद था। सफेद नाइटगाउन उस पर खूब जंच रहा था। लेकिन किसी कारणवश, टेंगो को उसमें अपनी माँ की छवि नहीं दिख रही थी। उसे उसके शरीर की गंध में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उसने बड़ी कुशलता से उसके अंदर एक हफ्ते से जमा हुई सारी कामेच्छा को शांत कर दिया। और टेंगो उसे (ज़्यादातर मामलों में) यौन संतुष्टि दे पाता था। यह बेशक एक बड़ी उपलब्धि थी। लेकिन उनके रिश्ते में इससे ज़्यादा गहरा कोई अर्थ नहीं था।
जब वे साथ सोते थे, तो आमतौर पर पहल वही करती थी। टेंगो को कुछ भी सोचने की ज़रूरत नहीं थी, बस उसके निर्देशों का पालन करना होता था। उसे कोई चुनाव या निर्णय नहीं लेना पड़ता था। उससे केवल दो ही अपेक्षाएँ थीं: इरेक्शन होना और जब स्खलन न करना हो तब स्खलन न करना। "अभी नहीं! थोड़ी देर और रुको!" वह उससे कहती, और वह पूरी ताकत से रुका रहता। जब वह उसके कान में फुसफुसाती, "अब! चलो, चलो!", तो वह उसी क्षण, सटीक और ज़ोरदार तरीके से स्खलन कर देता। फिर उसकी प्रेमिका उसकी प्रशंसा करती। वह धीरे से उसके गालों को सहलाती और उसे बताती कि वह कितना अद्भुत है। टेंगो की सटीकता की चाहत उसके जन्मजात गुणों में से

मुझे इसके बारे में सोचने की ज़रूरत नहीं है, उसने अचानक होश में आते हुए खुद से कहा। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी।
उसने अपनी प्रेमिका के मुंह में कई बार ज़ोर से वीर्यपात किया। वह उसके समाप्त होने का इंतज़ार करती रही, फिर बिस्तर से उठकर बाथरूम चली गई। उसने उसे पानी चालू करके मुंह धोने की आवाज़ सुनी। फिर वह शांति से बिस्तर पर लौट आई।
“माफ़ कीजिए,” टेंगो ने कहा।
"तुम कुछ नहीं कर सकते थे," उसने अपनी उंगली से उसकी नाक सहलाते हुए कहा। "कुछ नहीं। क्या तुम्हें सच में इतना अच्छा लगा?"
"बिल्कुल," उन्होंने कहा। "और अगर हम थोड़ी देर और रुकें, तो मैं इसे दोबारा कर सकता हूँ।"
"बहुत बढ़िया," उसने कहा। फिर उसने अपना गाल उसकी छाती से सटा दिया। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और शांत लेट गई। टेंगो को उसकी कोमल साँसें अपने निप्पल्स पर महसूस हो रही थीं।
“क्या आप जानते हैं कि आपकी छाती देखकर मुझे किस बात का ख्याल आता है?” उसने उससे पूछा।
- मुझें नहीं पता।
— कुरोसावा की फिल्मों में महलों के द्वारों पर।
“किले के द्वार?” टेंगो ने उसकी पीठ सहलाते हुए कहा।
"हाँ, स्पाइडर-मैन कैसल या द हिडन फोर्ट्रेस जैसी उन पुरानी ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों में, वे बड़े-बड़े, मजबूत गेट दिखाते हैं। जो बहुत सारे बड़े-बड़े कीलों से जकड़े होते हैं। जब भी मैं तुम्हारी बड़ी, चौड़ी छाती देखता हूँ, तो मेरे दिमाग में हमेशा यही छवि आती है।"
"लेकिन मेरे पास नाखून नहीं हैं," टेंगो ने कहा।
"जी हाँ? मुझे तो पता ही नहीं चला," उसने कहा।
*

प्रकाशन के दो सप्ताह बाद ही 'द एयर क्राइसालिस' बेस्टसेलर सूची में शामिल हो गई और तीसरे सप्ताह में बिक्री चार्ट में पहले स्थान पर पहुंच गई। टेंगो ने स्कूल कार्यालय के अखबारों में इसकी बढ़ती लोकप्रियता पर नजर रखी। एक विज्ञापन भी दो बार छपा था, जिसमें पुस्तक के कवर के साथ फुकाएरी की तस्वीर थी। उसने वही पतला गर्मियों का स्वेटर पहना हुआ था जिसे वह पहले से जानता था, जिससे उसके खूबसूरत स्तन उभर रहे थे (शायद यह प्रेस कॉन्फ्रेंस में ली गई तस्वीर थी)। उसके लंबे बाल कंधों तक लहरा रहे थे और उसकी काली, रहस्यमयी आंखें कैमरे के लेंस से होकर आप पर टकटकी लगाए देख रही थीं, मानो आपके दिल में छिपे रहस्यों को पढ़ रही हों - ऐसे रहस्य जिनके बारे में आपको खुद भी पता नहीं था। यह एक तटस्थ नजर थी, लेकिन साथ ही साथ गर्मजोशी भी। उस अडिग निगाह के सामने, आपके सारे बचाव धराशायी हो जाते थे। शायद काफी लोगों ने उस तस्वीर को देखकर किताब खरीदने का फैसला किया था।
प्रकाशन के कुछ दिनों बाद, कोमात्सु ने उसे दो प्रतियाँ भेजीं, लेकिन टेंगो ने उन्हें खोला तक नहीं। यह पहली बार था जब उसकी लिखी कोई किताब प्रकाशित हुई थी, लेकिन उसे पढ़ने की कोई ज़रूरत महसूस नहीं हुई। उसने पन्ने भी नहीं पलटे। उसे उन्हें देखकर कोई खुशी नहीं हुई। भले ही पंक्तियाँ उसकी थीं, कहानी पूरी

*

की कामुक रुचि नहीं थी। वे उनके पहने हुए पायजामे की गंध भी नहीं लेना चाहते थे।
उसने खुद से फिर कहा, "निस्संदेह, फुकाएरी एक खास शख्सियत है। उसकी तुलना दूसरी लड़कियों से नहीं की जा सकती। उसका मेरे लिए एक विशेष महत्व है, वह, मैं इसे क्या कहूँ, मेरे लिए एक तरह का वैश्विक संदेश है। बस मैं इस संदेश को समझ नहीं पा रहा हूँ।"
*

लेकिन उसकी बुद्धि ने उसे साफ और स्पष्ट रूप से बताया कि फुकाएरी से कोई वास्ता न रखना ही बेहतर होगा। एयर क्राइसालिस से, जो अब किताबों की दुकानों की खिड़कियों में छाई हुई थी, और प्रोफेसर एबिसुनो से, जिनके इरादों का अंदाजा लगाना नामुमकिन था, और रहस्यमय और उग्र संप्रदायवादियों से, जितना हो सके दूर रहना ही बेहतर होगा। और उसे कोमात्सु से भी कुछ दूरी बनाए रखनी चाहिए, कम से कम कुछ समय के लिए। अन्यथा, वह और भी अधिक मुसीबतों में फंसता चला जाएगा। उसे एक खतरनाक कोने में धकेल दिया जाएगा, जहाँ तर्क का कोई नामोनिशान नहीं होगा, और वह ऐसी स्थिति में फंस जाएगा जहाँ से निकलना नामुमकिन होगा। लेकिन वह अच्छी तरह समझता था कि इन जटिल योजनाओं से निकलना अब आसान नहीं रहा। वह पहले ही इसमें बुरी तरह फंस चुका था। हिचकॉक की फिल्मों के किरदारों की तरह, वह भी इस साजिश में अचानक फंस गया था। उसने खुद को इसमें झोंक दिया था, यह जानते हुए कि इसमें कुछ जोखिम हैं। मशीन पहले ही चल चुकी थी। वह पूरी ताकत से चल रही थी और उसे रोका नहीं जा सकता था, और टेंगो उसका एक पुर्जा था। एक महत्वपूर्ण पुर्जा। वह उसकी भारी गड़गड़ाहट सुन सकता था और उसकी अदम्य गति को महसूस कर सकता था।
*

क्रिसैलिस डे ल'एयर के लगातार दूसरे सप्ताह नंबर एक पर रहने के कुछ दिनों बाद, कोमात्सु उसे ढूंढने निकला। वह रात ग्यारह बजे से जागा हुआ था जब फोन की घंटी बजी। टेंगो पहले ही अपने पजामा पहनकर बिस्तर पर लेट चुका था। वह पेट के बल लेटकर पढ़ रहा था और बस बिस्तर के पास का लैंप बंद करके सोने की तैयारी कर रहा था। उसने फोन की घंटी से अंदाज़ा लगा लिया कि कौन है। वह समझा नहीं सकता था कि क्यों, लेकिन वह जानता था कि कोमात्सु उसे फोन कर रहा है क्योंकि उसकी आवाज़ एक खास तरह की होती थी। जैसे टेक्स्ट मैसेज की अपनी एक शैली होती है, वैसे ही कोमात्सु के फोन की घंटी बजने का भी अपना एक अनोखा तरीका होता था।
टेंगो बिस्तर से उठा, रसोई में गया और फोन उठाया। सच तो यह था कि वह फोन उठाना नहीं चाहता था। वह चैन से सोना चाहता था। जंगली बिल्लियों, पनामा नहर, ओजोन परत या मात्सुओ बाशो के बारे में सपने देखना चाहता था, कुछ भी जिससे वह इन सब से दूर हो सके। लेकिन अगर उसने अभी जवाब नहीं दिया, तो पंद्रह-तीस मिनट में फोन फिर से उसी तरह बजेगा। कोमात्सु को देर का मतलब ही नहीं पता था। और उसे सामान्य जीवन जीने वाले लोगों के लिए कोई हमदर्दी नहीं थी। इसलिए बेहतर यही था कि वह अभी जवाब दे दे।
“क्या कर रहे हो, टेंगो, क्या सो रहे थे?” कोमात्सु ने अपने हमेशा की तरह शांत स्वर में पूछा।
"मैं सोने की तैयारी कर रहा था," टेंगो ने जवाब दिया।

कोमात्सु ने बिना किसी खेद के कहा, "मुझे खेद है। मैं आपको बताना चाहता था कि एयर क्रिसलिडा में बिक्री बहुत अच्छी चल रही है।"
- मुझे वह सुनकर बेहद खुशी हुई।
"ये किताबें धड़ाधड़ बिक रही हैं, छपते ही, बांटते ही। इनके पास छपाई के लिए भी पर्याप्त समय नहीं है, और बाइंडिंग का काम करने वाले बेचारे लोगों को मांग पूरी करने के लिए रात भर काम करना पड़ता है। खैर, हमें पहले से ही अंदाजा था कि ये खूब बिकेगी। बिल्कुल। ये एक सत्रह साल की लड़की का उपन्यास है। और इसके बारे में खूब चर्चा हो रही है। इसमें वो सभी तत्व हैं जो एक किताब को सफल बनाते हैं।"
— इसकी तुलना उस उपन्यास से नहीं की जा सकती जो एक तीस वर्षीय प्रोफेसर द्वारा लिखा गया हो जो देखने में भालू जैसा लगता हो।
"बिल्कुल सही। फिर भी आप यह नहीं कह सकते कि यह एक ऐसी उपन्यास है जिसकी विषयवस्तु बेहद आकर्षक है। इसमें न तो यौन दृश्य हैं और न ही ऐसे दृश्य जो आपको रुला दें। इसीलिए मैंने भी यह नहीं सोचा था कि यह इतनी सफल होगी।" कोमात्सु कुछ देर रुका, मानो टेंगो की प्रतिक्रिया देखने का इंतज़ार कर रहा हो। लेकिन जब टेंगो ने कुछ नहीं कहा, तो उसने आगे कहा:
"यह किताब न सिर्फ खूब बिक रही है, बल्कि समीक्षकों ने भी इसकी खूब सराहना की है। यह किताब सिर्फ लोगों का ध्यान खींचने के लिए लिखी गई बचकानी सनक नहीं है। यह बेहतरीन ढंग से लिखी गई है। आपकी सशक्त और शानदार साहित्यिक तकनीक ने इसकी खूबियों को उजागर किया है। मैं क्या कहूँ, आपने वाकई कमाल का काम किया है।"
मैंने उसकी क्षमताओं को उजागर किया। कोमात्सु की प्रशंसाओं को अनसुना करते हुए, टेंगो ने अपनी उंगली हल्के से अपनी कनपटी पर रखी। जब भी कोमात्सु बिना किसी संकोच के उसकी प्रशंसा करता था, तो वह जानता था कि इसके बाद कोई अप्रिय खबर जरूर आएगी।
“कोमात्सु-सान, बुरी खबर क्या है?” उसने पूछा।
"आपको कैसे पता चला कि मेरे पास बुरी खबर है?"
"अच्छा, आपने मुझे इस समय फोन किया। ज़ाहिर है, कोई बुरी खबर ही होगी।" "बिल्कुल सही," कोमात्सु ने प्रभावित होकर कहा। "बेशक सही है। टेंगो, तुम्हारी सूझबूझ कमाल की है।"
यह अंतर्ज्ञान नहीं है, यह तो बस बुनियादी तर्क है, टेंगो ने सोचा, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा, बल्कि कोमात्सु की अगली चाल का इंतजार करने लगा।
"बिल्कुल सही। दुर्भाग्य से, मेरे पास कुछ बहुत ही बुरी खबर है," कोमात्सु ने कहा और कुछ देर रुक गया। ऐसा लग रहा था मानो अंधेरे में उसकी आँखें किसी नेवले की तरह चमक रही हों।
"शायद 'द एयर क्राइसालिस' के लेखक से संबंधित है, है ना?" टेंगो ने कहा। "बिल्कुल सही। इसका संबंध फुकेरी से है। यह काफी बुरा है। बात यह है कि वह कुछ समय से लापता है।"
टेंगो ने अपनी कनपटी को दबाना जारी रखा।
— कुछ समय से, मतलब कब से?
तीन दिन बीत गए। बुधवार की सुबह वह ओकुतामा स्थित घर से टोक्यो के लिए रवाना हुई। एबिसुनो उसे गाड़ी से ले गया। उसने यह नहीं बताया कि वह कहाँ जा रही है।

फिर उसने फोन करके बताया कि वह उस शाम वापस नहीं आएगी, बल्कि शिनानोमाची स्थित अपार्टमेंट में रुकेगी। प्रोफेसर की बेटी भी वहीं रुकने वाली थी।
लेकिन फुकाएरी फिर कभी वहाँ नहीं पहुँची और तब से उसका कोई अता-पता नहीं है। टेंगो ने पिछले तीन दिनों के बारे में सोचा। लेकिन उसे कुछ भी महत्वपूर्ण याद नहीं आया।
"उसके बारे में अब कोई कुछ नहीं जानता। मैं सोच रही थी कि शायद उसने किसी तरह आपसे संपर्क किया हो?"
“नहीं,” टेंगो ने कहा। उसके अपार्टमेंट में बिताई रात चार सप्ताह से भी अधिक समय पहले की बात थी।
उसने एक पल सोचा कि क्या उसे कोमात्सु को फुकाएरी की कही बात बतानी चाहिए, कि शिनानोमाची वाले अपार्टमेंट में वापस न जाना ही बेहतर होगा। शायद उसे वहाँ कुछ खतरे का आभास हुआ था। अंत में, उसने चुप रहने का फैसला किया। कोमात्सु को यह पता न चले कि फुकाएरी ने उसके यहाँ रात बिताई थी, यही बेहतर था।
"वह और भी अजीब है," टेंगो ने कहा। "कौन जानता है कि वह बिना कुछ कहे कहां चली गई होगी।"
"नहीं, ऐसा नहीं है। फुकाएरी भले ही अजीब लगे, लेकिन वह एक ईमानदार लड़की है। वह हमेशा घर पर फोन करके बताती है कि वह कहाँ है, कहाँ जा रही है और क्या कर रही है। प्रोफेसर एबिसुनो यही कहते हैं। इसीलिए तीन दिन से उससे कोई खबर न मिलना थोड़ा अजीब है। हो सकता है कोई बुरी घटना घट गई हो।"
मेरे पास गेमू है:
"कुछ बुरा हुआ?"
कोमात्सु ने कहा, "प्रोफेसर और उनकी बेटी दोनों चिंतित हैं।"
— वैसे भी, जब तक फुकेरी के बारे में कुछ भी पता नहीं चलता, तब तक आप भी काफी अप्रिय स्थिति में हैं, है ना?
हां, अगर पुलिस इसमें दखल देती है, तो मामला थोड़ा पेचीदा हो जाएगा। आखिर, सफलता की राह पर तेज़ी से आगे बढ़ रही एक खूबसूरत उपन्यासकार गायब हो गई है। मैं समझ सकता हूं कि पत्रकार कैसे उत्तेजित हो जाएंगे। और अगर ऐसा हुआ, तो प्रभारी संपादक, यानी मैं, हर तरफ से घिर जाऊंगा और मुझसे बयान मांगे जाएंगे। और यह मुझे बिलकुल भी पसंद नहीं है। मैं एकांतप्रिय व्यक्ति हूं, मुझे दिन के उजाले की आदत नहीं है। यह तो तय है कि हमारे कुछ गुप्त ठिकाने भी सबके सामने आ जाएंगे।
"और प्रोफेसर एबिसुनो क्या कहते हैं?"
"वह कल पुलिस के पास जाकर उसके लापता होने की रिपोर्ट दर्ज कराएगा। मेरे अनुरोध पर उसने कुछ और दिनों के लिए देरी की है, लेकिन वह इसे ज्यादा देर तक टाल नहीं सकता।"
अगर यह पता चल जाए कि उसके लापता होने की रिपोर्ट दर्ज कराई गई है, तो मीडिया जरूर आ जाएगा, है ना?
"मुझे नहीं पता कि पुलिस इस मामले को कैसे संभालेगी। फुकाएरी एक असली इंसान है, कोई भागा हुआ बच्चा नहीं। इस कहानी को लोगों की नजरों से दूर रखना काफी मुश्किल है।"
या शायद प्रोफ़ेसर एबिसुनो यही चाहते हों, टेंगो ने सोचा। फुकाएरी को मोहरे के रूप में इस्तेमाल करके दुनिया में हलचल मचाना और इस मौके का फायदा उठाकर

लड़की के माता-पिता का पता लगाना और उनके गायब होने में पायनियर्स की भूमिका का पता लगाना। अगर ऐसा था, तो प्रोफ़ेसर की योजना उम्मीद के मुताबिक चल रही थी। लेकिन क्या उन्हें इस बात का एहसास था कि वे जो कर रहे थे वह कितना खतरनाक था? शायद हाँ। वे जल्दबाज़ नहीं थे। उनका काम शुरू से ही गहराई से सोचना था। इसके अलावा, ऐसा लग रहा था कि फुकाएरी की स्थिति के कुछ महत्वपूर्ण पहलू थे जो टेंगो को नहीं पता थे। टेंगो को पहेली सुलझाने के लिए बस कुछ बिखरे हुए टुकड़े दिए गए थे। एक समझदार आदमी शुरू से ही ऐसी साजिशों में शामिल नहीं होता।
क्या आपको कोई अंदाजा है कि यह कहाँ हो सकता है?
— फिलहाल तो नहीं।
"हम्म," कोमात्सु ने कहा। उसकी आवाज़ में थोड़ी दृढ़ता थी, जो अजीब थी क्योंकि वह अक्सर अपनी कमजोरी नहीं दिखाता था। "मुझे माफ़ करना कि मैंने तुम्हें आधी रात को जगा दिया।"
यह काफी असामान्य है और इसके लिए माफी मांगनी चाहिए।
"कुछ नहीं। तुम्हें मुझे बता देना चाहिए था," टेंगो ने कहा।
मैं भी आपको इन उलझनों में शामिल नहीं करना चाहता था। आपका काम सिर्फ लिखना है, और आपने वह काम बखूबी किया है। लेकिन दुनिया में ऐसा ही होता है, चीजें बिना किसी परेशानी के खत्म नहीं होतीं। और मैंने आपसे कहा था, हम एक ही नाव में सवार हैं, जो तेज़ धाराओं में बह रही है।
"और हम लाभ आपस में बाँट लेंगे," टेंगो ने यंत्रवत ढंग से कहा।
- बिल्कुल।
लेकिन, अगर फुकेरी के लापता होने की खबर फैल जाती है, तो क्या इससे क्रिसालिडा की बिक्री और भी ज्यादा नहीं बढ़ जाएगी?
कोमात्सु ने हताशा भरे लहजे में कहा, "यह अभी भी ठीक-ठाक बिक रहा है। इसे और प्रचार की ज़रूरत नहीं है। अख़बारों के पहले पन्ने पर छपने वाला घोटाला मुसीबत का कारण ही बनेगा। हमें कोई ऐसी जगह ढूंढनी चाहिए जहाँ हम सुरक्षित रूप से अपना जहाज़ किनारे लगा सकें।"
“क्या हम किनारे पर गाड़ी रोकें?” टेंगो ने कहा।
रिसीवर में उसने कोमात्सु को जोर से निगलते हुए और फिर हल्की खांसी करते हुए सुना।
"हम इस बारे में बाद में बात करेंगे। शायद हम साथ में खाना खाने के लिए मिलें। जब सारा हंगामा थोड़ा शांत हो जाए। शुभ रात्रि, टेंगो। अच्छी नींद लो!"
इतना कहकर कोमात्सु ने फोन काट दिया। मानो किसी जादू के असर में आकर, थकान के बावजूद टेंगो को नींद नहीं आ रही थी।
"क्या बकवास है, अच्छी नींद लो," उसने सोचा। वह काम करने के इरादे से रसोई की मेज पर बैठ गया, लेकिन उसका किसी भी काम में मन नहीं था। उसने शेल्फ से व्हिस्की की बोतल उठाई और बिना बर्फ के छोटे-छोटे घूंटों में एक गिलास पी लिया।
*

फुकाएरी को शायद योजना के अनुसार चारा बनाया गया था और पायनियर्स ने उसका अपहरण कर लिया था। तेंगो को लगा कि यह संभव है। वे शिनानोमाची में उसके अपार्टमेंट पर नज़र रख रहे थे, और जब फुकाएरी वहाँ पहुँची, तो कुछ लोगों ने

उसे जबरदस्ती कार में बिठाया और उसे लेकर चले गए। अगर वे तेज़ी से काम करते और सही समय चुनते, तो ऐसा करना मुश्किल नहीं होता। फुकाएरी ने उससे कहा था कि शिनानोमाची न जाना ही बेहतर होगा, उसे कुछ आभास हुआ था।
उसने उसे बताया था कि नन्हे लोग और वायु कोकून सचमुच मौजूद हैं। जब वह पायनियर्स के यहाँ थी, तो उसकी देखरेख में रहने वाली अंधी बकरी मर गई थी, और जब उसे सज़ा दी जा रही थी, तब उसकी मुलाकात नन्हे लोगों से हुई थी। उनके साथ, रात-रात भर, उसने वायु कोकून बनाया था। और उसके साथ कुछ बहुत महत्वपूर्ण घटित हुआ था। उसने इस घटना का वर्णन उपन्यास में किया था। और तेंगो ने ही उपन्यास को प्रकाशन योग्य रूप दिया था। दूसरे शब्दों में, उसने इसे एक व्यावसायिक उत्पाद में बदल दिया था। और यह उत्पाद (कोमात्सु के शब्दों में) धड़ाधड़ बिक रहा था। पायनियर्स के लिए, यह शायद एक अप्रिय स्थिति थी। शायद नन्हे लोगों और कोकून की कहानी एक बड़ा रहस्य था जिसे किसी और को नहीं जानना चाहिए था। इसीलिए उन्होंने फुकाएरी का अपहरण किया था, ताकि उसका मुँह बंद कर दिया जाए और उसे इस रहस्य को और उजागर करने से रोका जा सके। और उन्हें बल का प्रयोग करना पड़ा, भले ही इससे दुनिया का संदेह पैदा हो गया और वे जोखिम में पड़ गए। बेशक, यह महज़ एक परिकल्पना थी जिसे टेंगो ने गढ़ा था। इसका कोई आधार नहीं था और इसे साबित करना नामुमकिन था। अगर वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे कि नन्हे लोग और हवा के कोकून मौजूद हैं, तो कौन उस पर विश्वास करेगा? सबसे पहले तो, टेंगो खुद "अस्तित्व" शब्द का मतलब ही नहीं समझता था।
या शायद फुकाएरी, एयर क्राइसालिस के आसपास के हंगामे से तंग आकर कहीं गायब हो गई हो। बेशक, यह भी एक संभावना थी। उसके आगे के कदमों का अनुमान लगाना लगभग नामुमकिन था। लेकिन अगर ऐसा भी होता, तो उससे उम्मीद की जा सकती थी कि वह प्रोफेसर एबिसुनो और उनकी बेटी आज़ामी के लिए चिंता न करने का संदेश छोड़ जाती। उसके पास ऐसा न करने का कोई कारण नहीं था।
लेकिन अगर सचमुच उसे पंथवादियों ने अगवा कर लिया होता, तो टेंगो आसानी से समझ सकता था कि वह खतरे में है। जैसे एक समय उसके माता-पिता के बारे में कुछ भी पता नहीं था, शायद फुकाएरी के बारे में भी कुछ पता न चले। प्रेस चाहे पायनियर्स से उसके संबंधों को लेकर कितना भी हंगामा मचाए (और ऐसा होने में ज्यादा समय नहीं लगेगा), अगर पुलिस ने कंधे उचकाकर यह कह दिया कि उसके अपहरण का कोई ठोस सबूत नहीं है, तो सारा हंगामा व्यर्थ हो जाएगा। फुकाएरी कम्यून की ऊंची दीवारों के पार कहीं कैद रहेगी। या शायद उसके साथ कुछ और बुरा हो जाए। क्या प्रोफेसर एबिसुनो ने अपनी योजना बनाते समय इस स्थिति पर विचार किया था?
टेंगो प्रोफेसर को फोन करके उनसे बात करना चाहता था, लेकिन तब तक एक घंटा बीत चुका था। उसे अगले दिन तक इंतजार करना पड़ेगा।
*

अगली सुबह उन्होंने प्रोफेसर एबिसुनो को फोन किया, लेकिन उनसे संपर्क नहीं हो पाया। "यह नंबर किसी को आवंटित नहीं है। कृपया नंबर जांचें और दोबारा कोशिश करें," रिकॉर्डेड संदेश बार-बार दोहराया जा रहा था। उन्होंने कई बार फोन करने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। शायद फुकाएरी के डेब्यू के बाद उन्होंने इंटरव्यू के अनुरोधों की बाढ़ से बचने के लिए अपना फोन नंबर बदल लिया था।

अध्याय 23 यह तो बस शुरुआत है

ओमामे और अयुमी एक अंतरंग लेकिन पर्याप्त कामुक माहौल में पूरी रात बिताने के लिए बिल्कुल सही जोड़ी थीं। अयुमी छोटी और मुस्कुराती हुई थी, बिल्कुल भी शर्मीली नहीं, बातचीत में माहिर थी और अगर ठान लेती तो किसी भी बात का सामना आशावाद से कर सकती थी। उसका हास्यबोध भी अच्छा था। उसकी तुलना में, दुबली- पतली और मजबूत शरीर वाली ओमामे भावहीन और संकोची थी। वह पहली बार मिलने वाले किसी पुरुष से दोस्ताना व्यवहार नहीं कर पाती थी। कभी-कभी उसके शब्दों में थोड़ी सी, लेकिन स्पष्ट रूप से, व्यंग्य और आक्रामकता झलकती थी। उसकी आँखों में असहिष्णुता की झलक थी। लेकिन अगर वह चाहती, तो ओमामे अपने आप को खुलेपन के ऐसे आवरण में लपेट सकती थी जो पुरुषों को आकर्षित करता था। यह उस कामुक उत्तेजना से भरी गंध की तरह था जो जानवर और कीड़े-मकोड़े जरूरत पड़ने पर छोड़ते हैं। वह इसे जानबूझकर या प्रयास से नहीं करती थी। यह उसकी सहज प्रवृत्ति थी। या शायद यह कुछ ऐसा था जो उसने अपने जीवन में किसी न किसी कारण से हासिल किया था। बहरहाल, उनकी उस आभा ने न केवल पुरुषों को, बल्कि आश्चर्यजनक रूप से, उनकी साथी, आयुमी को भी प्रेरित किया, जो और भी अधिक उत्साहित और जीवंत प्रतीत हुईं।
जब उन्हें पसंद के पुरुष मिल जाते, तो अयुमी अकेले ही उनसे मिलने निकल जाती, अपने मिलनसार स्वभाव का प्रदर्शन करती और इस तरह दोस्ती की नींव रखती। सही समय पर, आओमामे भी उनके साथ शामिल हो जाती, जिससे एक पूर्ण सामंजस्य और एक विशेष वातावरण बन जाता, मानो कोई ओपेरा और फिल्म नॉयर का मिश्रण हो। एक बार जब वे इस मुकाम पर पहुँच जातीं, तो बाकी सब आसान हो जाता। वे कहीं जातीं और, अयुमी के शब्दों में कहें तो, "खुद को परखतीं"। सबसे मुश्किल काम सही साथी ढूंढना था। उनके लिए साथ रहना, साफ-सुथरा रहना और कम से कम थोड़ा अच्छा दिखना ज़रूरी था। उनमें थोड़ी समझदारी होनी चाहिए थी, लेकिन इतनी भी नहीं कि वे बहुत ज़्यादा समझदार हों, ताकि उबाऊ बातचीत में पूरी रात बर्बाद न हो जाए। एक और ज़रूरी शर्त यह थी कि उनके पास पर्याप्त साधन हों, क्योंकि ज़ाहिर है, बार या क्लब और होटल के कमरे का बिल तो वही चुकाती थीं।
*

हालांकि, जून के अंत में उन्होंने एक और कामुक पार्टी आयोजित करने की कोशिश की (यह उनका आखिरी कार्यक्रम होता), लेकिन उन्हें कोई उपयुक्त पुरुष नहीं मिला। वे जगह-जगह घूमती रहीं, काफी समय खोजबीन में बिताया, लेकिन नतीजा वही रहा। हालांकि यह महीने की आखिरी शुक्रवार रात थी, रोप्पोंगी और यहां तक कि अकासाका के सभी बार आश्चर्यजनक रूप से सुनसान थे। ग्राहकों की कमी थी। आसमान धीरे-धीरे बादलों से घिर गया और पूरे शहर में उदासी और मातम छा गया।
"आज तो हम बिल्कुल भी सफल नहीं हो पाएंगे। हमें हार मान लेनी चाहिए," आओमामे ने कहा।
साढ़े दस बज चुके थे। आयुमी ने अनिच्छा से सिर हिलाया।

"ओह, ठीक है! मैंने अपनी जिंदगी में कभी शुक्रवार की रात को इतना पतला कूल्हा नहीं देखा। और मैंने सेक्सी लाल लॉन्जरी पहनी है।"
"फिर घर जाओ और आईने में खुद को निहारो।"
लेकिन पुलिस छात्रावास के बाथरूम में ऐसा करने की हिम्मत मुझमें नहीं है। खैर, आज के लिए हम यहीं पर बात खत्म कर सकते हैं, साथ में एक अच्छी ड्रिंक पी सकते हैं, फिर घर जाकर सो सकते हैं।
"अच्छा रहेगा," आयुमी ने कहा, और फिर जल्दी से बोली, "ओह, हाँ, घर जाने से पहले हम कुछ खाने के लिए रुकें तो कैसा रहेगा? मेरे पास तीस हज़ार येन बचे हैं।" ओमामे ने भौंहें चढ़ाईं।
"तुम यहीं रुके रहे? तुम वहां क्या कह रहे हो? क्या तुम हमेशा अपनी कम तनख्वाह और पैसों की कमी के बारे में शिकायत नहीं करते?"
आयुमी ने अपनी तर्जनी उंगली से अपनी नाक खुजलाई।
सच कहूँ तो, पिछली बार मुझे उस आदमी से तीस हज़ार येन मिले थे। उसने मुझे ये तब दिए जब हम वहाँ से निकल रहे थे, और कहा कि ये टैक्सी का किराया है। उसी समय हमारी रियल एस्टेट एजेंसी में काम करने वाले उन दो लोगों से लड़ाई हो गई। “तुमने उन्हें भी ले लिया?” आओमामे ने आश्चर्य से पूछा।
"मुझे लगता है उन्होंने हमें अर्ध-पेशेवर समझ लिया था," आयुमी ने हंसते हुए कहा। "कौन सोच सकता था कि हममें से एक पुलिस अधिकारी है और दूसरा मार्शल आर्ट प्रशिक्षक? खैर, तो क्या हुआ? आप लोग रियल एस्टेट सौदों से खूब पैसा कमाते हैं, है ना? मैंने सोचा कि हम कुछ अच्छा खाने जा सकते हैं, इसलिए मैं उन्हें ले गई। वरना, मुझे अपने उन खर्चों को उनके साथ उठाने का मन नहीं करता।"
ओमामे ने कोई टिप्पणी नहीं की। किसी अजनबी के साथ यौन संबंध बनाना और बदले में पैसे मिलना - यह बात उसे बिल्कुल अविश्वसनीय लग रही थी। वह यह सोच ही नहीं पा रही थी कि उसके साथ ऐसा कुछ हो सकता है। मानो वह खुद को एक ऐसे दर्पण में देख रही हो जो छवि को बिगाड़ रहा हो। लेकिन नैतिक रूप से ज़्यादा सही क्या था, किसी पुरुष को मारने के लिए पैसे लेना या उसके साथ सोने के लिए? यह कहना मुश्किल था।
"क्या तुम्हें किसी पुरुष से पैसे लेने का विचार पसंद नहीं है?" आयुमी ने चिंता से पूछा।
ओमामे ने अपना सिर हिलाया।
"ऐसा नहीं है कि मुझे यह पसंद नहीं है, बल्कि मुझे यह थोड़ा अजीब लगता है। और मुझे यह बात समझ में नहीं आती कि एक महिला पुलिसकर्मी व्यावहारिक रूप से एक वेश्या की तरह व्यवहार करे।"
"बिल्कुल नहीं," आयुमी ने खुशी से जवाब दिया। मुझे इसकी परवाह नहीं है। सुनो, वेश्याएं वो होती हैं जो कीमत तय होने के बाद किसी के साथ यौन संबंध बनाती हैं। और भुगतान हमेशा पहले ही किया जाता है। पहले पैसे दो, फिर अपने कपड़े उतारो। यही नियम है। अगर तुम तब तक नहीं जागतीं जब तक वो यह न कह दे, "लेकिन, तुम्हें पता है, मेरे पास पैसे नहीं हैं," तो सौदा नहीं हुआ है। लेकिन अगर वो आदमी बाद में बिना मोलभाव किए कुछ पैसे दे, जैसे टैक्सी का किराया, तो ये सिर्फ़ कृतज्ञता का एक साधारण इशारा है। ये पेशेवर वेश्यावृत्ति नहीं है। यहीं पर अंतर है।
आयुमी की बातों में भी तर्क था।

*

पिछली बार, उनके चुने हुए साथी पैंतीस से चालीस साल की उम्र के दो युवक थे। दोनों के बाल घने थे, लेकिन इस बार आओमामे ने समझौता कर लिया था। उन्होंने बताया कि वे रियल एस्टेट में काम करते हैं। लेकिन उनके ह्यूगो बॉस सूट और मिसोनी उओमो टाई से साफ पता चलता था कि वे मित्सुबिशी या मित्सुई जैसी किसी बड़ी कंपनी में नहीं, बल्कि किसी आक्रामक और लचीले रवैये वाली कंपनी में काम कर रहे थे। शायद कोई विदेशी नाम वाली कंपनी, जिसमें सख्त आंतरिक नियम-कानून न हों, परंपराओं का घमंड न हो और अंतहीन बैठकें न होती हों। इसके लिए कुछ खास व्यक्तिगत कौशल की ज़रूरत होती थी, लेकिन अगर आप वहां के तौर-तरीकों को समझ लेते, तो इनाम भी बहुत बड़ा होता था। उनमें से एक के पास एकदम नई अल्फ़ा रोमियो कार की चाबी थी। दोनों ने कहा कि टोक्यो में ऑफिस की जगह कम पड़ रही है। अर्थव्यवस्था तेल संकट से उबरने के संकेत दे रही थी और पूंजी अधिक गतिशील हो रही थी। चाहे कितनी भी गगनचुंबी इमारतें बन जाएं, वे फिर भी स्थिति को संभाल नहीं पाएंगे।
— यह समझने के लिए कि रियल एस्टेट लाभदायक है, आओमामे ने टिप्पणी की।
“हाँ, आओमामे। अगर तुम्हारे पास कुछ पैसे हैं, तो तुम्हें ज़मीन खरीदनी चाहिए,” आयुमी ने कहा। टोक्यो जैसे सीमित क्षेत्र में भारी मात्रा में पैसा आ रहा है और ज़मीन की कीमतें बढ़ रही हैं। अभी खरीदने में तुम्हारा कोई नुकसान नहीं है। यह ठीक वैसे ही है जैसे किसी ऐसे घोड़े को खरीदना जिसके जीतने का तुम्हें पूरा भरोसा हो। दुर्भाग्य से, मुझ जैसे एक साधारण सरकारी कर्मचारी के पास इतने पैसे नहीं हैं। वैसे, आओमामे, क्या तुम पैसा लगाकर निवेश कर रही हो?”
ओमामे ने अपना सिर हिलाया।
मुझे सिर्फ नकदी पर ही भरोसा है।
आयुमी जोर से हंस पड़ी।
— यह तो आपराधिक मानसिकता है!
मैं अपने गद्दे के नीचे पैसों का एक बंडल छिपाकर रखता हूँ और अगर हालात बिगड़ जाते हैं, तो मैं उसे उठाता हूँ और खिड़की से बाहर भाग जाता हूँ।
"बिल्कुल!" आयुमी ने उंगलियां चटकाते हुए कहा। स्टीव मैकक्वीन की फिल्म 'द हिट' की तरह। पैसों का ढेर और बंदूक। मुझे बहुत पसंद है!"
"क्या यह सिर्फ कानून का पक्ष लेने से कहीं अधिक है?"
"ये तो मेरी पसंद है," आयुमी ने मुस्कुराते हुए कहा। "मुझे तो बागी लोग पसंद हैं। पार्किंग चालान काटने से कहीं ज़्यादा रोमांचक है ये। शायद यही बात मुझे तुम्हारी तरफ आकर्षित करती है।"
"क्या मैं समाज से बहिष्कृत जैसा दिखता हूँ?"
आयुमी ने सिर हिलाया।
"हाँ, आपमें वो बात है। आप मशीन गन लिए हुए फेय डुनावे जैसी तो नहीं हैं, लेकिन फिर भी।"
"मुझे मशीन गन की जरूरत नहीं है," आओमामे ने कहा।
*

"पायनियर्स की बात करें, जिनके बारे में हम थोड़ी देर पहले बात कर रहे थे," आयुमी ने कहना शुरू किया।

वे इइकुरा के एक छोटे से इतालवी रेस्तरां में थे, जो देर रात तक खुला रहता था, और चियांटी वाइन के एक गिलास के साथ हल्का भोजन कर रहे थे। आओमामे टूना सलाद खा रही थी और अयुमी तुलसी की चटनी के साथ ग्नोची खा रही थी।
- हाँ?
— इस बात ने मेरा ध्यान खींचा और मेरी दिलचस्पी इसमें और भी बढ़ गई। लेकिन जितना मैंने इसके बारे में जानने की कोशिश की, कहानी उतनी ही संदिग्ध लगने लगी। वे खुद को एक धार्मिक समूह बताते हैं और उनके पास मान्यता भी है, लेकिन असल में उनमें कोई धार्मिक तत्व नहीं है। वे, मैं कैसे कहूँ, एक तरह से विखंडनवादी हैं, वे बस धार्मिक प्रतीकों का एक मिश्रण हैं। और इसमें न्यू एज आध्यात्मिकता, दिखावटी अकादमिकता, प्रकृति की ओर वापसी, पूंजीवाद-विरोधी और रहस्यवाद का तड़का लगा हुआ है। बस इतना ही। उनमें कोई सार नहीं है। और जब मैं यह कहता हूँ, तो मेरा मतलब है कि उनका कोई सांप्रदायिक पृष्ठभूमि नहीं है। मैक्लुहान के शब्दों में, माध्यम ही संदेश है। बढ़िया, बढ़िया।
— मैक्लुहान?
"मैं भी पढ़ती हूँ, तुम्हें पता है ना," आयुमी ने नाराज़गी भरे लहजे में कहा।
मैक्लुहान अपने समय से बहुत आगे थे। एक समय वे बहुत लोकप्रिय थे, इसीलिए उन्हें कम आंका गया, लेकिन उनकी बातें बिल्कुल सही थीं।
"पैकेज पर ही अंदर की सामग्री का पता चलता है। क्या यही लिखा था?"
— जी हाँ। सामग्री का निर्धारण पैकेजिंग से होता है, न कि इसके विपरीत। ओमामे ने एक पल सोचा, फिर कहा:
— यह तो ज्ञात नहीं है कि पायनियर्स संप्रदाय के भीतर क्या चलन है, लेकिन फिर भी लोग उनकी ओर आकर्षित होते हैं और वहां इकट्ठा होते हैं। क्या आपका यही मतलब है?
आयुमी ने सिर हिलाया।
— मैं यह तो नहीं कह सकता कि उनकी संख्या आश्चर्यजनक रूप से बहुत अधिक है, लेकिन उनके पास जाने वालों की संख्या कम नहीं है। और जैसे ही कोई दूसरा आता है, वे कुछ पैसे इकट्ठा कर लेते हैं। बिल्कुल, है ना? मुझे लगता है कि इस संप्रदाय की ओर लोगों को आकर्षित करने वाली बात यह है कि वे बहुत धार्मिक नहीं हैं। वे बहुत साफ-सुथरे, बुद्धिमान और व्यवस्थित लगते हैं। संक्षेप में, वे गरीब लोगों जैसे नहीं दिखते। और यही बात युवा पीढ़ी को आकर्षित करती है जो विभिन्न विशिष्ट क्षेत्रों या शोध में काम करते हैं। यह उनकी बौद्धिक जिज्ञासा को उत्तेजित करता है। यह उन्हें एक ऐसी संतुष्टि का एहसास देता है जो उन्हें वास्तविक दुनिया में कहीं और नहीं मिल सकता। यह एक ठोस, लगभग स्पर्शनीय अनुभूति है। और ये बौद्धिक अनुयायी ही संप्रदाय के भीतर मस्तिष्क का निर्माण करते हैं, जैसे कुलीन सैन्य अधिकारियों का एक दल। इसके अलावा, ऐसा लगता है कि यह "नेता" बहुत करिश्माई व्यक्तित्व वाला नेता है। लोग उसकी पूजा करते हैं। मैं तो यह भी कह सकता हूँ कि उसका अस्तित्व ही इस सिद्धांत का मूल है। संरचनात्मक रूप से, यह एक प्रकार का आदिम धर्म है। शुरुआत में ईसाई धर्म कुछ ऐसा ही था, लेकिन इसका नेता दुनिया के सामने बिल्कुल भी प्रकट नहीं होता। हम यह भी नहीं जानते कि वह कैसा दिखता है। उसका नाम या उम्र भी नहीं। दुनिया की नज़र में, इस संप्रदाय का संचालन एक परिषद द्वारा किया जाता है, लेकिन अध्यक्ष का पद किसी और के पास होता है। यही व्यक्ति आधिकारिक समारोहों में

संप्रदाय का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन वास्तव में वह केवल नाममात्र का मुखिया होता है। इस व्यवस्था के केंद्र में वह नेता है जिसकी पहचान करना असंभव है।
— यह स्पष्ट है कि वह हर कीमत पर अपनी पहचान छिपाना चाहता है।
— वह कुछ छिपाने की कोशिश कर रहा है या फिर इस रहस्यमय माहौल को बनाए रखने के लिए खुद को प्रकट नहीं करना चाहता।
या फिर यह बेहद बदसूरत है।
"ऐसा भी हो सकता है। शायद यह कहना थोड़ा ज़्यादा होगा कि वह किसी दूसरी दुनिया से आया है," आयुमी ने एक अजीब सी आवाज़ निकालते हुए कहा, मानो वह किसी अलौकिक घटना का संकेत दे रही हो। खैर, पंथ के संस्थापक के अलावा भी कई ऐसी चीज़ें हैं जो सतह पर दिखाई नहीं देतीं। उनमें से एक है रियल एस्टेट बाज़ार में उनकी ज़बरदस्त सक्रियता, जिसके बारे में मैंने फ़ोन पर बात की थी। जो कुछ भी दिखता है, वह महज़ दिखावा है। सुंदर भूनिर्माण, बेदाग जनसंपर्क, एक बुद्धिमान सिद्धांत, कुलीन अनुयायी, तपस्या, योग, मन की शांति, भौतिकवाद का त्याग, जैविक खेती, स्वच्छ हवा और स्वादिष्ट शाकाहारी भोजन... सब कुछ एक सोची-समझी तस्वीर जैसा लगता है। जैसे अख़बार के रविवार के अंक में आलीशान विलाओं का विज्ञापन पृष्ठ। बाहरी दिखावट बहुत अच्छी लगती है। लेकिन ऐसा लगता है कि पर्दे के पीछे कुछ संदिग्ध गतिविधियाँ चल रही हैं, जिनमें से कुछ अवैध भी हो सकती हैं। विभिन्न सामग्रियों का अध्ययन करने के बाद मुझे यही आभास हुआ।
लेकिन फिलहाल पुलिस कोई कार्रवाई नहीं कर रही है।
— हो सकता है कि कोई गुप्त गतिविधि चल रही हो, लेकिन मुझे इसकी कोई जानकारी नहीं है। लेकिन आपको यह पता होना चाहिए कि यामानाशी पुलिस इस संप्रदाय की गतिविधियों पर कुछ हद तक नज़र रख रही है। फोन पर हुई बातचीत में जांच के प्रभारी व्यक्ति के लहजे से मुझे यही आभास हुआ। पायनियर्स ही डॉन ऑफ द डे समूह के सदस्य हैं, जो सशस्त्र संघर्ष के लिए ज़िम्मेदार हैं, और चीन में बनी कलाश्निकोव असॉल्ट राइफलों की खरीद का मार्ग कथित तौर पर उत्तर कोरिया है, हालांकि इस मामले की पूरी तरह से पुष्टि नहीं हुई है। पायनियर्स भी शायद कुछ हद तक निशाने पर हैं, लेकिन उन्हें एक धार्मिक संस्था का दर्जा प्राप्त है और उन पर आसानी से कार्रवाई नहीं की जा सकती। उन्होंने उस जगह की तलाशी ली है और पता चला है कि उनका सशस्त्र संघर्ष से कोई सीधा संबंध नहीं है। और मुझे यह भी नहीं पता कि सुरक्षा विभाग क्या कर रहा है। ये लोग बहुत ही गुप्त हैं, और पुलिस और सुरक्षा विभाग के बीच वैसे भी कभी अच्छे संबंध नहीं रहे हैं।
क्या आपने उन बच्चों के बारे में कुछ नहीं सुना जो अब स्कूल नहीं जाते? "नहीं, कुछ भी पता नहीं है। एक बार जब वे जाना बंद कर देते हैं, तो वे संप्रदाय की चारदीवारी से बाहर कदम नहीं रखते। मेरे पास उनके बारे में और जानने का कोई तरीका नहीं है। अगर दुर्व्यवहार के ठोस सबूत सामने आते हैं, तो स्थिति बदल जाएगी, लेकिन फिलहाल ऐसा कोई सबूत नहीं है।"
— क्या पायनियर्स को छोड़ने वाले लोग इस बारे में अधिक जानकारी नहीं दे सकते? निश्चित रूप से कुछ लोग तो निराश हो ही जाते हैं या अत्यधिक कठोर प्रथाओं के आगे झुककर संप्रदाय छोड़ देते हैं, है ना?
- बेशक, लोग आते-जाते रहते हैं। कुछ लोग संप्रदाय में शामिल होते हैं, तो कुछ निराश होकर इसे छोड़ देते हैं। सिद्धांत रूप में, वे ऐसा करने के लिए

स्वतंत्र हैं। हस्ताक्षरित अनुबंध के अनुसार, पंजीकरण के समय "संस्थान के स्थायी उपयोग शुल्क" के रूप में दान की गई बड़ी राशि में से उन्हें कोई पैसा वापस नहीं मिलता, लेकिन यदि वे इस शर्त को स्वीकार करते हैं, तो वे अपने पास जो कुछ भी है, उसे लेकर जा सकते हैं। संप्रदाय से अलग हुए लोगों का एक संगठन भी है, और ये लोग दावा करते हैं कि पायनियर्स एक खतरनाक और असामाजिक पंथ है जो धोखाधड़ी करता है। उन्होंने उन पर मुकदमा भी किया है। वे एक छोटा सा समाचार पत्र भी प्रकाशित करते हैं। लेकिन उनकी आवाज बहुत कमजोर है और दुनिया पर उसका कोई प्रभाव नहीं है। संप्रदाय ने कुछ शीर्ष वकीलों को नियुक्त किया है जिन्होंने अपने चारों ओर एक अभेद्य प्रणाली बना ली है, जो कानूनी पक्ष में पानी की एक बूंद भी नहीं घुसने देती। कोई भी मुकदमा उन्हें हिला नहीं सकता। — ये लोग न तो नेता के बारे में कुछ कहते हैं और न ही संप्रदाय के अनुयायियों के बच्चों के बारे में?
मुझे ठीक से पता नहीं, क्योंकि मेरे पास पढ़ने के लिए कोई बुलेटिन नहीं था, लेकिन जितना मैंने समझा, ये सभी असंतुष्ट लोग निचले तबके के थे। वे महत्वहीन थे। भले ही पायनियर सांसारिक मूल्यों को नकारने का दावा करते हों, लेकिन वे स्पष्ट रूप से सांसारिक समाज से कहीं अधिक पदानुक्रमित समाज हैं। ऊपरी और निचले पद स्पष्ट रूप से विभाजित हैं। उच्च शिक्षा या विशेष योग्यता के बिना नेतृत्व के पदों में आपका कोई स्थान नहीं है। जो लोग नेता को जानते हैं और उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं, जो व्यवस्था के मूल तक पहुँच रखते हैं, वे केवल कुलीन, उच्च पदस्थ अनुयायी हैं। बाकी दुनिया आवश्यक आर्थिक योगदान देती है, ताजी हवा में ध्यान करती है और खेतों में काम करती है। वे बस यही जीवन जीते हैं, नीरस और बस इतना ही। वे भेड़ों के झुंड की तरह हैं। वे सुबह चरवाहे और कुत्तों की निगरानी में चरागाह जाते हैं और शाम को बाड़े में लौट आते हैं। वे बहुत शांतिपूर्ण जीवन जीते हैं। वे उस दिन की आशा में जीते हैं जब वे संप्रदाय में उच्च पद प्राप्त करेंगे और बिग ब्रदर के समक्ष उपस्थित होंगे, लेकिन वह दिन कभी नहीं आता। आम अनुयायी आंतरिक संगठन के बारे में लगभग कुछ भी नहीं जानते, और यदि वे संप्रदाय छोड़ भी देते हैं, तो उनके पास दुनिया को देने के लिए कोई प्रासंगिक जानकारी नहीं होती। उन्होंने नेता को व्यक्तिगत रूप से देखा भी नहीं होता।
"क्या कोई ऐसा विशिष्ट अनुयायी नहीं है जो सेवानिवृत्त हो चुका हो?"
— जहाँ तक मुझे पता है, नहीं।
"एक बार जब आप सिस्टम का रहस्य जान लेते हैं, तो आपको इसे छोड़ने की अनुमति नहीं होती?"
"मुझे लगता है कि जब आप उस स्थिति में पहुँच जाते हैं, तो हालात एकदम बदल जाते हैं," आयुमी ने कहा और एक लंबी आह भरी। "सुनो, आओमामे, तुमने मुझे कुछ समय पहले जिन बलात्कार की घटनाओं के बारे में बताया था, वो कहानी कितनी विश्वसनीय है?" यह बात काफी हद तक निश्चित है, लेकिन फिलहाल इसका कोई ठोस सबूत नहीं है।
— क्या आप कह रहे हैं कि यह संप्रदाय के भीतर व्यवस्थित रूप से घटित होने वाली कोई घटना है?
"मुझे भी अभी इस बारे में पक्का पता नहीं है। लेकिन एक असली पीड़ित है, जिससे मैं वास्तव में मिला था। उसने बहुत भयानक स्थिति का सामना किया है।"

— क्या उसके साथ बलात्कार हुआ था, यानी क्या स्पष्ट रूप से यौन प्रवेश हुआ था?
- बिना किसी संशय के।
आयुमी सोच में डूब गई और उसने अपने होंठ सिकोड़ लिए।
"मैं समझ गया। मैं इस मामले की और गहराई से जांच करूंगा।"
"लेकिन आराम से रहो।"
"मैं इसे ले लूंगी," आयुमी ने कहा। "जैसा कि आप देख सकते हैं, मैं एक ऐसा आदमी हूं जिसे पता है कि वह क्या कर रहा है।"
*

दोनों ने खाना खत्म कर लिया और वेटर ने उनकी प्लेटें हटा दीं। उन्होंने मिठाई लेने से इनकार कर दिया और केवल अपने वाइन के गिलास लेकर रह गए।
“आपने कहा था कि बचपन में पुरुषों के साथ आपका कोई अप्रिय अनुभव नहीं रहा, है ना?” आयुमी ने पूछा।
आओमामे ने कुछ पल के लिए अयुमी के चेहरे के भावों को देखा और सिर हिलाया। "मेरा परिवार बहुत धार्मिक था और हम कभी भी सेक्स के बारे में बात नहीं करते थे। हमारे आस-पास के सभी लोग भी ऐसा ही व्यवहार करते थे। सेक्स एक वर्जित विषय था।"
लेकिन आपकी धार्मिकता और आपकी यौन इच्छा दो अलग-अलग बातें हैं। यह सर्वविदित है कि धर्मगुरुओं में भी कई यौन विक्षिप्त लोग होते हैं। सच्चाई यह है कि वेश्यावृत्ति या छेड़छाड़ के आरोप में पुलिस स्टेशन पहुंचने वालों में से काफी लोग धार्मिक या शैक्षणिक क्षेत्र से होते हैं।
"ऐसा हो सकता है, लेकिन कम से कम मेरे आस-पास तो मुझे इसका कोई संकेत नहीं दिखा। कोई भी व्यक्ति मूर्खतापूर्ण हरकतें नहीं कर रहा था।"
"बहुत बढ़िया," आयुमी ने कहा। "यह सुनकर मुझे खुशी हुई।"
"क्या आपके साथ भी ऐसा ही था?"
आयुमी हिचकिचाई और उसने हल्के से कंधे उचका दिए।
"सच कहूं तो, मैं इस दौर से अनगिनत बार गुज़र चुकी हूं," उसने कहा। "जब मैं छोटी थी तब से।"
- किसके साथ?
— मेरे भाई और चाचा।
ओमामे ने भौंहें चढ़ाईं।
— भाई और चाचा?
"बिल्कुल सही। वे दोनों अब पुलिस अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं। चाचा को तो हाल ही में उनकी उत्कृष्ट सेवा के लिए सार्वजनिक सम्मान भी मिला है। तीस वर्षों की निरंतर सेवा के दौरान स्थानीय पर्यावरण और सार्वजनिक सुरक्षा में सुधार के लिए उनके विशाल योगदान के लिए। उन्होंने रेलवे लाइन से एक बेचारी कुतिया और उसके पिल्लों की जान बचाई और उनके बारे में अखबार में भी लिखा गया।" और उन्होंने तुम्हारे साथ क्या किया?
उन्होंने मेरी टांगों के बीच में हाथ लगाया और मुझे उन्हें चूसने के लिए मजबूर किया।
आओमामे ने और भी ज्यादा भौंहें चढ़ा लीं।
"तुम्हारा भाई और चाचा?"

"हाँ, हर एक के साथ अलग-अलग। जब मैं दस साल का था और मेरा भाई लगभग पंद्रह साल का था। मेरे चाचा के साथ भी पहले ऐसा हो चुका है। लगभग दो या तीन बार, जब वह हमारे साथ रात भर रुके थे।"
और क्या आपने किसी को बताया?
आयुमी ने धीरे-धीरे कुछ बार अपना सिर हिलाया।
नहीं। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं किसी को न बताऊं और मुझे डराया कि अगर मैंने किसी को बताया तो मेरे साथ बुरा होगा। और अगर उन्होंने मुझे डराया न होता, तो मुझे लगता कि अगर मैंने बताया तो वे मुझे पहले से भी ज़्यादा डांटेंगे और मुझे भी तकलीफ झेलनी पड़ेगी। इसी बात ने मुझे डरा दिया और मैंने एक शब्द भी नहीं कहा।
"तुम अपनी माँ के पास भी नहीं जा सकते थे?"
"खासकर मेरी माँ के साथ। मेरा भाई हमेशा उनका पसंदीदा था, और वह मुझसे हमेशा निराश रहती थीं। मैं न तो नाज़ुक थी और न ही सुंदर, बल्कि मोटी और पढ़ाई में कम नंबर लाने वाली थी। मेरी माँ एक अलग तरह की बेटी चाहती थीं। गुड़िया जैसी सुंदर और बैले डांसर जैसी आकर्षक। यानी, वह असंभव की उम्मीद कर रही थीं।"
और आप उसे और भी ज्यादा निराश नहीं करना चाहते थे।
"बिल्कुल सही। मुझे लगा कि अगर मैंने उसे बताया कि मेरा भाई मेरे साथ क्या कर रहा है, तो वह मुझसे और भी ज़्यादा नफरत करेगा। वह कहेगा कि मैंने ही कुछ किया होगा और उसी की वजह से यह सब हुआ होगा। मेरे भाई को दोष देने के बजाय।"
ओमामे ने अपनी उंगलियों से अपना माथा रगड़ा। उसने सोचा, "जब मैं दस साल की थी और मैंने अपने धर्म को त्यागने की घोषणा की, तो मेरी माँ ने मुझसे फिर कभी बात नहीं की। अगर उन्हें कुछ कहना होता, तो वे मुझे एक पत्र लिखतीं। लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहा। मैं अब उनकी बेटी नहीं थी। मैं बस 'एक ऐसी लड़की' थी जिसने अपना धर्म त्याग दिया था। फिर मैं घर से भाग गई।"
"लेकिन बिना प्रवेश के?" आओमामे ने अयुमी से पूछा।
"नहीं। मैं वैसे भी इतना दर्दनाक काम नहीं कर सकती थी। उन्होंने मुझसे ऐसा करने के लिए कहा भी नहीं था।"
क्या आप अब भी अपने भाई और चाचा से मिलते हैं?
जब से मुझे नौकरी मिली और मैं घर से दूर हो गई, तब से उनसे ज़्यादा मुलाकात नहीं हुई है, लेकिन वे मेरे रिश्तेदार हैं और हम एक ही क्षेत्र में काम करते हैं, इसलिए मुलाक़ात होना तय है। और फिर मैं उस स्थिति को यथासंभव प्रसन्नतापूर्वक संभालती हूँ। मैं ज़्यादा हंगामा नहीं करती। उन्हें तो याद भी नहीं कि क्या हुआ था।
"क्या उन्हें याद नहीं है?"
"वे भूल सकते हैं," आयुमी ने कहा। "लेकिन मैं नहीं भूल सकती।"
- सामान्य।
— इतिहास में हुए नरसंहारों की तरह।
— नरसंहार?
जो लोग हर चीज़ को उत्पन्न करते हैं, वे अपने कार्यों को उचित तर्क से सही ठहरा सकते हैं और यहाँ तक कि उन्हें भूल भी सकते हैं। वे उन चीज़ों से नज़रें फेर सकते हैं जिन्हें वे देखना नहीं चाहते। लेकिन पीड़ित भूल नहीं सकते। और वे नज़रें नहीं फेर सकते। उनकी यादें माता-पिता से बच्चों तक पीढ़ी दर पीढ़ी

चलती रहती हैं। यह दुनिया विरोधी खेमों की यादों के बीच एक अंतहीन संघर्ष के सिवा कुछ नहीं है।
"बिल्कुल," आओमामे ने थोड़ा भौंहें चढ़ाते हुए कहा।
विरोधी खेमों की यादों के बीच एक अंतहीन लड़ाई?
सच कहूँ तो, मुझे पहले से ही ऐसा लग रहा था कि आपके साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ होगा।
- क्यों?
मुझे ठीक से पता नहीं क्यों। मुझे लगा कि शायद इसीलिए अब तुम अजनबियों के साथ एक रात के रिश्ते रखना पसंद करती हो। और मुझे लगा कि तुम्हारे अंदर कुछ गुस्सा है। गुस्सा, नाराजगी। तुम वो सब करने में सक्षम नहीं लगती जो बाकी दुनिया करती है, यानी बॉयफ्रेंड रखना, डेट पर जाना, खाना-पीना और सिर्फ उसी के साथ सोने में सहज महसूस करना। खैर, मेरे साथ भी ऐसा ही है।
— आपका मतलब है कि बचपन में मेरे साथ हुई किसी घटना के कारण मैं अब चीजों के सामान्य क्रम का पालन नहीं कर सकता?
— मुझे भी यही लगा, आयुमी ने कहा और हल्के से कंधे उचकाए। मैं तो मर्दों से डरती हूँ। मतलब, किसी के साथ करीबी रिश्ता बनाने से। और उस इंसान की हर बात को पूरी तरह स्वीकार करने से। जब मैं इसके बारे में सोचती हूँ, तो मुझे लगता है जैसे मेरे पैर टूट जाएँगे। लेकिन कभी-कभी मेरे लिए अकेले रहना मुश्किल हो जाता है। मैं चाहती हूँ कि कोई मर्द मुझे अपनी बाहों में ले, मेरे अंदर प्रवेश करे। मुझे सेक्स की इतनी तीव्र इच्छा होती है कि मैं खुद को रोक नहीं पाती। और फिर सबसे आसान तरीका है किसी अनजान लड़के के साथ। बिल्कुल।
- क्या आप डरते हैं?
— हाँ। बहुत बुरा।
"मुझे नहीं लगता कि मैं किसी भी तरह से पुरुषों से डरती हूं," आओमामे ने कहा। लेकिन क्या आप किसी चीज से डरते हैं?
"बिल्कुल, मुझे डर लगता है। मुझे सबसे ज्यादा डर खुद से लगता है। कि मुझे नहीं पता कि मैं क्या कर रहा हूँ। कि मुझे नहीं पता कि मैं अभी क्या कर रहा हूँ।" "और अब आप क्या कर रहे हो?"
ओमामे कुछ देर तक वहीं खड़ी रही, उसकी निगाहें उसके हाथ में पकड़े शराब के गिलास पर टिकी हुई थीं।
"मैं भी यही जानना चाहती हूँ," उसने ऊपर देखते हुए कहा। "लेकिन मुझे नहीं पता। मुझे यह भी नहीं पता कि मैं किस दुनिया में हूँ या कौन सा साल चल रहा है।" वर्ष 1984 है। स्थान: टोक्यो, जापान।
काश मैं भी इतने आत्मविश्वास से यह बात कह पाता।
"कितनी अजीब बात है," आयुमी ने हंसते हुए कहा। "ये इतनी स्पष्ट सच्चाईयां हैं, और आप इन्हें विश्वास के साथ नहीं कह सकते।"
— मैं अब भी ठीक से यह नहीं समझा सकता कि ऐसा क्यों है, लेकिन मेरे लिए, ये इतनी स्पष्ट वास्तविकताएं नहीं हैं।
"ओह, सच में?" आयुमी ने प्रशंसा भरे लहजे में कहा। मैं ये तो नहीं कह सकती कि मुझे इस बारे में कुछ समझ है, लेकिन चाहे जो भी साल हो और चाहे जो भी जगह हो, तुम्हारे पास एक ऐसा आदमी है जिससे तुम दिल से प्यार करती हो। मेरी नज़र में, ये तो वाकई ईर्ष्या करने लायक बात है। मेरे पास तो कोई है ही नहीं।

ओमामे ने शराब का गिलास मेज पर रख दिया और नैपकिन से अपना मुंह पोंछा। फिर उसने कहा:
"शायद तुम सही हो। चाहे कोई भी साल हो या हम कहीं भी हों, मैं उससे मिलना चाहती हूँ। मेरी इतनी तीव्र इच्छा है कि मुझे लगता है मैं मर जाऊँगी। यही मेरी एकमात्र निश्चितता है। यही एक बात है जो मैं विश्वास के साथ कह सकती हूँ।" "क्या आपको कोई आपत्ति होगी अगर मैं पुलिस संसाधनों का इस्तेमाल करूं? अगर आप मुझे कुछ जानकारी दें, तो शायद मैं पता लगा सकूं कि वह कहां है और क्या कर रहा है।"
"उसे मत ढूंढो," आओमामे ने सिर हिलाते हुए कहा। "प्लीज़। मैंने तुमसे कहा था, एक दिन मैं उससे कहीं न कहीं मिल ही जाऊंगी। इत्तेफाक से। अब मैं बस वहीं बैठी उस पल का इंतज़ार कर रही हूँ।"
"बिल्कुल सीरियल की तरह," आयुमी ने प्रशंसा करते हुए कहा। "मुझे ये सब बहुत पसंद है। इससे मुझे डर लगता है।"
मैं यह नहीं कह रहा कि यह मुश्किल नहीं है।
"मैं समझ सकती हूँ," आयुमी ने अपनी उंगली को हल्के से अपनी कनपटी पर दबाते हुए जवाब दिया। "और फिर भी, चाहे आप किसी से कितना भी प्यार क्यों न करें, आपको अजनबियों के साथ सोने का मन करता है।"
ओमामे ने अपनी उंगली के नाखून से गिलास के पतले किनारे पर हल्के से थपथपाया। — एक इंसान होने के नाते, जो मांस और खून से बना है, मुझे अपना संतुलन बनाए रखने के लिए ऐसा करना पड़ता है।
— आपके भीतर मौजूद प्रेम को ठेस पहुंचाए बिना।
"यह तिब्बती भावना चक्र की तरह है। जैसे-जैसे यह घूमता है, मूल्य और भावनाएँ ऊपर उठती हैं या नीचे गिरती हैं। वे प्रकाश में चमकती हैं या अंधेरे में डूब जाती हैं। लेकिन जब सच्चा प्यार इसे थाम लेता है, तो यह हिलता नहीं है।" "कितना सुंदर!" आयुमी ने कहा। यही है तिब्बती प्रेम चक्र।
इसके बाद दोनों ने अपने शराब के गिलास खाली कर दिए।
*

दो दिन बाद, शाम आठ बजे के कुछ देर बाद, आओमामे को तामारू का फोन आया। हमेशा की तरह, उसने बिना अभिवादन या परिचय के, सीधे उन बातों से बातचीत शुरू की जिन पर उसे उससे चर्चा करनी थी।
क्या आप कल दोपहर को खाली हैं?
मेरे पास अभी कोई काम तय नहीं है, इसलिए मैं आपके लिए सुविधाजनक किसी भी समय आ सकता हूँ।
"क्या साढ़े चार बजे का समय ठीक रहेगा?"
"कोई बात नहीं," आओमामे ने जवाब दिया।
"बहुत बढ़िया," तामारू ने कहा, और उसे एजेंडा में समय अंकित करते हुए, पेन को जोर से दबाते हुए सुना जा सकता था।
"वैसे, त्सुबासा कैसी है?"
"मुझे लगता है यह अच्छा है। वह महिला हर रोज उससे मिलने आती है। बच्चे उससे आसानी से घुलमिल जाते हैं।"
- मैं खुश हूं।
"हां, यह अच्छी बात है। लेकिन कुछ अप्रिय घटना घटित हुई।"

— अप्रिय?
ओमामे जानती थी कि तामारू जिसे अप्रिय कह रहा था, वह वास्तव में बेहद अप्रिय था।
उन्होंने कहा, "कुत्ता मर गया।"
"कुत्ता? तुम्हारा मतलब बन से है?"
"हां। वो जर्मन शेफर्ड कुत्ता जिसे पालक खाना बहुत पसंद था। उसकी कल रात मौत हो गई।"
ओमामे बहुत हैरान थी। वह तो सिर्फ पांच या छह साल की थी, और कुत्ते इतनी कम उम्र में नहीं मरते।
"लेकिन जब मैंने उसे आखिरी बार देखा था, तब वह स्वस्थ लग रही थी।"
"उसकी मौत बीमारी से नहीं हुई," तामारू ने रूखेपन से कहा। "आज सुबह मैंने उसका शव इधर-उधर बिखरा हुआ पाया।"
- बिखरा हुआ?
"उसके शरीर के अंदरूनी अंग चारों ओर बिखरे हुए थे, मानो वह फट गई हो। मुझे उन्हें टुकड़ों-टुकड़ों में उठाना पड़ा। वह ऐसी लग रही थी जैसे उसे अंदर से बाहर कर दिया गया हो। मानो किसी ने उसके पेट में बम रख दिया हो।"
बेचारी!
“बस बहुत हो गया,” तामारू ने कहा। “मरा हुआ कोई वापस नहीं आता। मैं दूसरा रखवाली करने वाला कुत्ता ढूंढ लूंगी। मुझे जो बात परेशान कर रही है, वो ये है कि क्या हुआ। कुत्ते में बम रखना आसान नहीं होता। और वैसे भी, जब एक अजनबी पास आया, तो वो ऐसे भौंकी जैसे नरक के द्वार खुल गए हों। ये करना आसान नहीं है।” "ज़रूर," आओमामे ने रूखेपन से कहा।
आश्रय स्थल पर मौजूद महिलाएं सदमे और डर में हैं। कुत्ते को खाना खिलाने वाली महिला ने उसे आज सुबह वहीं पाया। उसने इतनी उल्टी की कि वह कुछ खा नहीं सकी, फिर उसने मुझे फोन किया। मैंने उससे पूछा कि क्या रात में कुछ संदिग्ध हुआ था, तो उसने कहा नहीं। कोई धमाका नहीं हुआ था। और वैसे भी, ऐसी आवाज से तो सब जाग जाते, खासकर वे महिलाएं जो डर में जीती हैं। दूसरे शब्दों में, यह एक खामोश धमाका था। किसी ने उसके भौंकने की आवाज नहीं सुनी। रात बेहद शांत थी, लेकिन सुबह तक कुत्ते का शरीर पूरी तरह उलट-पुलट हो चुका था। उसकी सारी आंतें इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं, जिसे देखकर आस-पड़ोस के कौवे बहुत खुश हुए। लेकिन मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं आया।
— कुछ अजीबोगरीब हो रहा है।
"यह तो पक्का है। कुछ अजीब हो रहा है। और अगर मेरा अनुमान सही है, तो यह तो बस शुरुआत है।"
क्या आपने पुलिस से संपर्क किया है?
"अरे नहीं!" तमारू लगभग हंसते हुए बोला। "पुलिस किसी काम की नहीं है। वे तो बस गलत काम करेंगे, वो भी जहां उन्हें नहीं करना चाहिए, और इससे मामला और भी पेचीदा हो जाएगा।"
इस बारे में महिला का क्या कहना है?
"वह कुछ नहीं कहता। जब मैंने उसे बताया, तो उसने सुना और बस सिर हिलाया। मैं प्रभारी हूं और सुरक्षा से संबंधित हर चीज का ध्यान रखता हूं। सिर से पैर तक। यही मेरा काम है।"

[illegible]
"[illegible]
"[illegible]

अध्याय 24 दूसरी दुनिया का क्या मतलब है?

गुरुवार की सुबह बारिश हो रही थी। तेज़ तो नहीं, लेकिन बेहद ज़िद्दी बारिश थी, जो दोपहर के खाने के बाद शुरू हुई थी और एक पल भी नहीं रुकी थी। जब लगा कि बारिश रुकने वाली है, तभी दोबारा शुरू हो गई। हालांकि बारिश का मौसम बीत चुका था, लेकिन उसके खत्म होने के कोई आसार नहीं थे। घने काले आसमान के नीचे, मानो कोई मोटी चादर ओढ़े, दुनिया भारी नमी में डूबी हुई थी।
दोपहर से पहले, टेंगो ने एक लबादा और टोपी पहनी और पास में ही कुछ खरीदारी करने निकल गया। डाकपेटी में उसे एक मोटा, दो तरफा भूरा लिफाफा मिला। उस पर कोई डाक टिकट या पोस्टमार्क नहीं था। प्राप्तकर्ता का पता और भेजने वाले का नाम गायब था। केवल सामने की तरफ, चौकोर अक्षरों में, किसी ने कलम से लिखा था: "टेंगो"। ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने सूखी मिट्टी पर नाखून से खरोंच कर लिखा हो। यह निस्संदेह फुकाएरी की लिखावट लग रही थी। उसने लिफाफा खोला और अंदर उसे बिना लेबल वाली एक सादी, साठ मिनट की टीडीके कैसेट मिली। इसके अलावा कुछ नहीं था, न कोई पत्र, न कोई नोट, न ही कैसेट का डिब्बा।
टेंगो थोड़ा हैरान हुआ, लेकिन आखिरकार उसने अपनी खरीदारी छोड़ दी और टेप सुनने के लिए घर चला गया। उसने टेप को हवा में उठाया और कुछ बार हिलाया। यह जितना रहस्यमय लग रहा था और चाहे वह इसे कितना भी ध्यान से देखे, यह बस एक आम ऑडियो कैसेट ही थी। अगर वह इसे कैसेट प्लेयर में डालकर चलाए तो यह निश्चित रूप से फट नहीं जाएगी।
अपना लबादा उतारने के बाद, उसने रेडियो लाकर रसोई की मेज पर रख दिया, फिर लिफाफे से कैसेट निकालकर प्लेयर में डाल दी। उसने कुछ लिखने की ज़रूरत पड़ने पर एक कागज़ और कलम तैयार रखी। उसने चारों ओर देखा और सुनिश्चित किया कि वह अकेला नहीं है, फिर प्ले बटन दबा दिया।
पहले तो कुछ नहीं था। रिकॉर्डिंग न होने का सिलसिला काफी देर तक चलता रहा। जब वह सोच ही रहा था कि टेप पर कुछ रिकॉर्ड हुआ है या नहीं, तभी अचानक कुछ आवाज़ें सुनाई दीं। कुर्सी खींचने की आवाज़। हल्की खांसी (या ऐसा ही लगा)। फिर अचानक फुकेरी बोलने लगा।
“तेंगो-सान,” उसने माइक्रोफोन चेक करते हुए कहा। तेंगो को याद था कि फुकाएरी ने पहली बार उसका नाम लिया था।
उसे फिर खांसी आई। वह थोड़ी तनावग्रस्त लग रही थी।

लिख पाना अच्छी बात है, लेकिन चूंकि मेरे लिए खुद को टेप पर रिकॉर्ड करना मुश्किल है, इसलिए मैं फोन पर बात करना पसंद करूंगा, शायद कोई हमारी फोन कॉल सुन रहा हो, एक मिनट रुकिए, चलिए थोड़ा पानी पी लेते हैं।

फुकेरी को पानी का गिलास उठाते, एक घूंट पीते और (शायद) उसे वापस मेज पर रखते हुए सुना जा सकता था। बिना रुके, बिना उतार-चढ़ाव और बिना किसी लहजे के बोलने का उनका अनोखा तरीका, किसी निजी बातचीत की तुलना में टेप पर रिकॉर्ड होने पर

और भी असामान्य प्रभाव पैदा कर रहा था। यह अवास्तविक लग रहा था। हालांकि, फुकेरी अब एक के बाद एक कई वाक्य बोल रही थीं।

मैंने सुना है कि मैं लापता हूँ, शायद आप चिंतित होंगे, लेकिन कोई बात नहीं, मैं एक ऐसी जगह पर हूँ जहाँ कोई खतरा नहीं है, मैं आपको यह बताना चाहता था, मुझे वास्तव में यह नहीं कहना चाहिए था, लेकिन मुझे लगा कि आपके लिए यह जानना बेहतर होगा।

(दस सेकंड का मौन)

मुझे किसी को न बताने के लिए कहा गया था कि मैं यहाँ हूँ। शिक्षक ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है, लेकिन पुलिस कोई कार्रवाई नहीं कर रही है। बच्चों का घर से भाग जाना कोई असामान्य बात नहीं है, इसलिए मैं कुछ समय के लिए यहीं रहूँगा।

(पंद्रह सेकंड का मौन)

मैं कहीं दूर हूँ और जब तक मैं बाहर नहीं निकलता, कोई मुझे ढूंढ नहीं सकता। मैं बहुत दूर हूँ। आज़मी आपको यह टेप भेज रहा है। इसे डाक से भेजना ठीक नहीं है। मुझे सावधानी बरतनी होगी। एक मिनट रुकिए और देखिए कि कुछ रिकॉर्ड हुआ है या नहीं।

(एक सूखी सी आवाज़। कुछ क्षणों का सन्नाटा, फिर शोर सुनाई देने लगा)

ओके की रिकॉर्डिंग हो रही है।

दूर से बच्चों के चीखने और संगीत की हल्की-हल्की आवाज़ सुनाई दे रही थी। शायद ये आवाज़ें खुली खिड़की से आ रही थीं। शायद पास में ही कोई बालवाड़ी केंद्र था।

मुझे अपने घर पर सोने देने के लिए धन्यवाद, मुझे उस समय इसकी ज़रूरत थी, मुझे आपको जानना ज़रूरी था, मुझे पढ़कर सुनाने के लिए धन्यवाद, मुझे भूत-प्रेत दिलचस्प लगे, वे सड़कों पर क्यों नहीं जाते और टैगा के दलदलों में क्यों नहीं फंस जाते?

(टेंगो ने मन ही मन अपनी आवाज़ में छूटे हुए प्रश्न चिह्न को जोड़ लिया)

सड़क पर चलना बेहतर है, लेकिन भूतों के लिए सड़क से दूर जंगल से होकर जाना आसान है। सड़क पर चलने के लिए उन्हें अपना चलने का तरीका बदलना चाहिए, और अगर वे अपना चलने का तरीका बदलते हैं, तो उन्हें और भी चीजें बदलनी होंगी। मैं उनके जैसा नहीं रह सकता। मुझे पुरुषों द्वारा लगातार पीटे जाना पसंद नहीं है, और पेट में बहुत सारे कीड़े होना भी बुरा लगता है। मुझे चौड़ी सड़कें भी पसंद नहीं हैं, और मैं पानी पीता हूँ।

फुकेरी ने पानी पिया। कुछ देर तक सन्नाटा पसरा रहा। फिर गिलास को मेज पर रखने की आवाज़ आई, और फिर थोड़ी देर की खामोशी छा गई – इस दौरान उसने अपने हाथ से अपना मुँह पोंछा। क्या उसे पता नहीं था कि टेप रिकॉर्डर में पॉज़ बटन भी होता है?

शायद आप मेरे गायब हो जाने से नाराज़ हैं, लेकिन मैं लेखिका नहीं बनना चाहती और अब से कुछ भी नहीं लिखना चाहती। मैंने आज़मी से घिलियासी जनजाति के बारे में जानकारी खोजने को कहा और वह पुस्तकालय गई। ऐनू या अमेरिका के भारतीयों की तरह, उनके पास लेखन नहीं है और वे कोई रिकॉर्ड नहीं छोड़ते। मैं भी वैसी ही हूँ। अगर मैं इसे कागज़ पर उतार दूँगी तो यह मेरी कहानी नहीं रहेगी। आपने शब्दों को खूबसूरती से बदल दिया है और मुझे नहीं लगता कि कोई उन्हें इससे बेहतर बदल सकता था, लेकिन अब यह मेरी कहानी नहीं है। खैर, चिंता मत करो, इसमें आपकी कोई गलती नहीं है क्योंकि मैं बस मुख्य सड़क पर चल रही हूँ।

फुकेरी फिर रुक गई। तेंगो ने कल्पना की कि वह लड़की चुपचाप मुख्य सड़क से दूर जा रही है।

गुरु के पास अपार शक्ति और गहन ज्ञान है, लेकिन नन्हे लोगों के पास भी अपार शक्ति और गहन ज्ञान है। जंगल में सावधान रहें, वहाँ कुछ महत्वपूर्ण है, और जंगल में नन्हे लोग भी हैं। किसी भी नुकसान से बचने के लिए, आपको ऐसी कोई चीज़ ढूंढनी होगी जो नन्हे लोगों के पास न हो। इस तरह आप जंगल से सुरक्षित रूप से गुजर सकते हैं।

फुकेरी ने ये शब्द एक ही सांस में कहे, फिर गहरी सांस ली। चूंकि उसने अपना मुंह माइक्रोफोन से दूर नहीं रखा था, इसलिए स्पीकर से ऐसी आवाज़ आई जैसे कोई हवा का झोंका इमारतों के बीच से गुज़र रहा हो। जब फिर से शांति छाई, तो दूर से गाड़ियों के हॉर्न सुनाई दिए। ये ट्रकों के हॉर्न की तेज़, भारी आवाज़ थी। छोटी-छोटी दो आवाज़ें। फुकेरी किसी बड़े राजमार्ग के पास कहीं मौजूद लग रहा था।

(खांसी) मेरा गला सूख गया है, मेरा ख्याल रखने के लिए, मेरे स्तनों को सुंदर दिखाने के लिए, और मुझे अपने घर में स्वागत करने और कुछ देर के लिए अपने पायजामे देने के लिए धन्यवाद। मुझे नहीं लगता कि हम फिर मिल पाएंगे, छोटे लोग शायद नाराज़ होंगे कि मैंने उनके बारे में लिखा है, लेकिन चिंता मत करो, मुझे जंगल की आदत है, अलविदा।

वहाँ, एक नीरस ध्वनि के साथ, रिकॉर्डिंग समाप्त हो जाती है।
टेंगो ने टेप रोककर उसे शुरू से रिवाइंड किया। छज्जे से गिरती बारिश की आवाज़ सुनते हुए उसने गहरी साँसें लीं, कुछ देर तक कलम को हाथ में घुमाया और फिर उसे मेज पर रख दिया। अंत में, उसने कुछ भी नहीं लिखा था। उसने बस फुकाएरी को उसके

अनोखे अंदाज़ में बोलते सुना था। लेकिन कुछ भी लिखने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि उसका संदेश स्पष्ट था।
(1) उसका अपहरण नहीं हुआ था, वह बस कहीं छिपी हुई थी। उसे चिंता करने की ज़रूरत नहीं थी।
(2) उनका कोई इरादा दूसरी किताब लिखने का नहीं था। उनकी कहानी सुनाने के लिए थी, प्रकाशित करने के लिए नहीं।
(3) छोटे लोग प्रोफेसर एबिसुनो से कम बलवान और बुद्धिमान नहीं थे। सावधान रहो!
ये तीन विचार थे जो उन्हें व्यक्त करने थे। फिर, घिलियासी की कहानी। एक ऐसा समूह जो पारंपरिक राह पर नहीं चलता।
टेंगो ने अपने लिए एक कप कॉफ़ी बनाई। कॉफ़ी पीते हुए वह टेप को खाली निगाहों से देखता रहा। फिर उसने उसे शुरू से दोबारा सुना। इस बार उसने बीच-बीच में रोककर ज़रूरी बातें लिख लीं। अंत में उसने अपने नोट्स पर नज़र डाली, लेकिन उसे कोई नई जानकारी नहीं मिली।
क्या फुकाएरी ने बोलते समय संदर्भ के लिए पहले से कुछ नोट्स तैयार कर रखे थे? तेंगो को ऐसा नहीं लगता था। वह उस तरह की नहीं थी। वह निश्चित रूप से विचारों के आते ही (बिना पॉज़ बटन दबाए) माइक्रोफ़ोन में बोलती थी।
अब वह किस तरह की जगह पर थी? टेप पर सुनाई दे रही आवाज़ों से टेंगो को कोई खास सुराग नहीं मिला। दूर से किसी के दरवाज़ा ज़ोर से बंद होने की आवाज़। खुली खिड़की से बच्चों के चीखने की आवाज़। कोई बालवाड़ी? किसी ट्रक का हॉर्न। खैर, फुकाएरी किसी घने जंगल के बीच में तो नहीं थी। वह किसी शहर में थी। रिकॉर्डिंग शायद सुबह देर से या दोपहर के शुरुआती समय में की गई थी। दरवाज़ा बंद होने की आवाज़ से पता चलता है कि वह अकेली नहीं थी।
यह बात स्पष्ट थी कि फुकाएरी ने खुद को उस जगह छिपा लिया था। किसी ने भी उसे टेप रिकॉर्ड करने के लिए मजबूर नहीं किया था। उसकी आवाज़ और बोलने के तरीके से यह बात साफ थी। शुरुआत में वह थोड़ी तनाव में लग रही थी, लेकिन इसके अलावा उसने माइक्रोफोन में खुलकर बात की और ठीक वही कहा जो उसके मन में था।

गुरु के पास अपार शक्ति और गहन ज्ञान है, लेकिन नन्हे लोगों के पास भी अपार शक्ति और गहन ज्ञान है। जंगल में सावधान रहें, वहाँ कुछ महत्वपूर्ण है, और जंगल में नन्हे लोग भी हैं। किसी भी नुकसान से बचने के लिए, आपको ऐसी कोई चीज़ ढूंढनी होगी जो नन्हे लोगों के पास न हो। इस तरह आप जंगल से सुरक्षित रूप से गुजर सकते हैं।

टेंगो ने इस हिस्से को दोबारा सुना। फुकाएरी बिना रुके, तेज़ी से बोल रही थी। छोटे लोग उसे या प्रोफ़ेसर एबिसुनो को नुकसान पहुँचा सकते थे। हालाँकि, फुकाएरी के लहजे से यह निष्कर्ष निकालना ज़रूरी नहीं था कि वे सिर्फ़ परेशानी पैदा करने वाले थे। उसकी बातों से ऐसा लग रहा था कि वे एक तटस्थ स्थिति में थे, जहाँ से वे किसी भी दिशा में झुक सकते थे। एक और अंश था जिसने टेंगो को परेशान किया:

छोटे कद के लोग शायद इस बात से नाराज होंगे कि मैंने उनके बारे में लिखा है।

अगर बौने लोग सचमुच क्रोधित थे, तो यह स्वाभाविक ही था कि टेंगो उनके क्रोध का शिकार बने। वह उन लोगों में से एक था जिसने उनकी कहानी को सबके सामने लाया और सार्वजनिक किया। उनके सामने यह साबित करना शायद व्यर्थ ही होगा कि उसका कोई बुरा इरादा नहीं था।
छोटे लोग किस तरह का नुकसान कर सकते थे? यह एक ऐसा सवाल था जिसका जवाब टेंगो के पास नहीं था। उसने टेप को रिवाइंड किया, उसे लिफाफे में डाला और लिफाफे को दराज में रख दिया। उसने दोबारा अपना लबादा और टोपी पहनी और मूसलाधार बारिश में खरीदारी करने निकल गया।
*

उस शाम, नौ बजे के बाद, उन्हें कोमात्सु का फोन आया। इस बार, फोन उठाने से पहले ही उन्हें पता था कि दूसरी तरफ कौन है। टेंगो बिस्तर पर लेटे-लेटे पढ़ रहे थे। उन्होंने फोन को तीन बार बजने दिया, धीरे से उठे, रसोई की मेज तक गए और फोन उठाया।
"आह, टेंगो," कोमात्सु ने कहा। "क्या तुमने कुछ पिया है?"
नहीं, मैं बिल्कुल शांत दिमाग से काम कर रहा हूँ।
"अच्छा, हमारी बातचीत खत्म होने के बाद, मुझे लगता है कि आप कुछ पीना चाहेंगे," कोमात्सु ने कहा।
— तो आपके पास अच्छी खबर है?
"क्या मुझे पता है? मैं यह नहीं कहूंगा कि वह वाकई इतनी अच्छी है। शायद वह मजाकिया है, लेकिन एक अनोखे तरीके से।"
चेखव की कहानियों की तरह।
"बिल्कुल सही," कोमात्सु ने कहा। चेखव की कहानियों की तरह। आपने बिल्कुल सही कहा! आप हमेशा सटीक और संक्षिप्त अभिव्यक्ति ढूंढ लेते हैं।"
टेंगो चुप रहा। कोमात्सु ने आगे कहा:
मामला थोड़ा पेचीदा हो गया है। प्रोफ़ेसर एबिसुनो की रिपोर्ट के बाद, पुलिस ने आधिकारिक तौर पर फुकाएरी के लापता होने की जांच शुरू कर दी है। खैर, पुलिस इसे गंभीरता से नहीं ले रही है। उन्हें फिरौती की कोई मांग नहीं मिली है। वे चुपचाप बैठे नहीं रह सकते, कहीं कुछ गड़बड़ न हो जाए, इसलिए फिलहाल वे दिखावा कर रहे हैं कि मामला आगे बढ़ रहा है। लेकिन पत्रकारों के साथ ऐसा नहीं है, वे इतनी आसानी से हार नहीं मानते। कुछ पत्रकार मुझसे सवाल पूछने आ चुके हैं। ज़ाहिर है, मैं थोड़ा लापरवाह रहा हूँ। खैर, इस समय मेरे पास उन्हें बताने के लिए कुछ नहीं है। उन्होंने शायद फुकाएरी और प्रोफ़ेसर एबिसुनो के बीच, और लड़की के माता-पिता के क्रांतिकारी करियर के बीच संबंध का पता लगा लिया है। ये बातें धीरे-धीरे सामने आ जाएँगी। लेकिन असली समस्या साप्ताहिक पत्रिकाएँ हैं। चाहे वे फ्रीलांसर हों या पेशेवर पत्रकार, खून की गंध आते ही वे शार्क की तरह टूट पड़ते हैं। वे सब जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं, और एक बार जब वे आप पर अपना शिकंजा कस लेते हैं, तो आप ज़िंदा नहीं बच पाएंगे। उनके लिए निजता या मर्यादा जैसी कोई चीज़ नहीं है। वे आपकी तरह ही लेखक हैं, लेकिन उनसे यह उम्मीद न करें कि वे आपकी तरह युवा और साहित्य के जानकार होंगे।
"तो फिर मुझे भी अपना ख्याल रखना चाहिए?"

"बिल्कुल सही। तैयार रहें और अपनी स्थिति पर डटे रहें। आपको कभी पता नहीं चलेगा कि वे कहां और कैसे कुछ सूंघ लेंगे।"
टेंगो ने कल्पना की कि वह एक छोटी नाव में बैठा है और चारों ओर शार्क का झुंड है। लेकिन यह दृश्य एक हास्यहीन व्यंग्यचित्र जैसा था। "तुम्हें कुछ ऐसा ढूंढना होगा जो छोटे लोगों के पास न हो," फुकेरी ने कहा था। इसका क्या मतलब था? "लेकिन, कोमात्सु-सान, क्या यह प्रोफेसर एबिसुनो की योजना का हिस्सा नहीं था?"
"उह, जो भी हो सके," कोमात्सु ने कहा। उसने शायद चुपके से हमारा इस्तेमाल किया होगा। लेकिन हम शुरू से ही जानते थे कि वह कुछ न कुछ साजिश रच रहा है। उसने हमसे कभी नहीं छिपाया कि उसकी अपनी योजनाएँ हैं। इस लिहाज़ से, यह दोनों पक्षों के लिए एक उचित सौदा था। और हम उसे तब भी कह सकते थे कि वह बहुत खतरनाक है और हम इसमें दखल नहीं देंगे। एक गंभीर संपादक तो ऐसा ही करता, बेशक। लेकिन, जैसा कि आप अच्छी तरह जानते हैं, मैं एक गंभीर संपादक नहीं हूँ। हालात पहले ही बेकाबू होने लगे थे और मेरे अपने लक्ष्य थे। शायद इसीलिए मैंने थोड़ी ढिलाई बरती।
रिसीवर में सन्नाटा छा गया। एक छोटा लेकिन गहरा सन्नाटा।
टेंगो ने कहा:
— तो आपकी योजना को रास्ते में ही प्रोफेसर एबिसुनो ने हाईजैक कर लिया।
"आप ऐसा कह सकते हैं। उन्हें भविष्य में होने वाली घटनाओं का कहीं अधिक व्यापक और बेहतर अनुमान था।"
और क्या आपको लगता है कि प्रोफेसर एबिसुनो इस पागलपन से सुरक्षित निकल पाएंगे?
"बिल्कुल, वह कर सकता है। उसका दिमाग तेज है और उसमें आत्मविश्वास भी है। वह शायद अच्छा प्रदर्शन करेगा। लेकिन अगर यह पागलपन एबिसुनो की उम्मीदों से कहीं ज्यादा बढ़ गया, तो उसके लिए भी हालात बेकाबू हो सकते हैं। चाहे वह कितना भी कुशल क्यों न हो, कौशल की भी एक सीमा होती है। इसलिए बेहतर होगा कि हम अपनी सीट बेल्ट कस लें।"
— कोमात्सु-सान, दुर्घटनाग्रस्त विमान में आपकी सीट बेल्ट किसी काम की नहीं है।
— हां, लेकिन आपको अधिक शांति महसूस होती है।
टेंगो ने अनजाने में मुस्कुरा दिया, लेकिन वह एक कमजोर मुस्कान थी।
तो ये खबर उतनी अच्छी नहीं है, बल्कि मजेदार है, लेकिन एक अनोखे तरीके से? "आपको इस मुसीबत में डालने के लिए मुझे दिल से खेद है," कोमात्सु ने सपाट स्वर में कहा।
"यह मेरे बारे में नहीं है। मेरे पास खोने के लिए कुछ नहीं है। मेरा कोई परिवार नहीं है, कोई सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं है, और भविष्य भी नजर नहीं आता। मुझे फुकेरी की ज्यादा चिंता है। वह सिर्फ सत्रह साल की लड़की है।"
"बेशक, मुझे भी चिंता होती है। चिंता होना लाज़मी है। लेकिन हम जितना चाहें उतना चिंता कर सकते हैं, क्योंकि इससे कुछ हासिल नहीं होगा। बेहतर होगा कि हम किसी चीज़ से मज़बूती से जुड़ जाएं, ताकि हवा का एक झोंका भी हमें उड़ा न ले जाए। फिलहाल, अखबारों में छपी खबरों पर ध्यान दें।"
— आजकल मैं हर रोज अखबार पढ़ना सुनिश्चित कर रहा हूँ।

"बहुत खूब," कोमात्सु ने कहा। "वैसे, क्या आपको कोई अंदाज़ा है कि फुकाएरी कहाँ गायब हो गई होगी? कोई सुराग, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो।"
"मुझे कुछ नहीं पता," टेंगो ने कहा। वह झूठ बोलने में माहिर नहीं था, और कोमात्सु की अंतर्ज्ञान शक्ति अच्छी थी। हालांकि, कोमात्सु ने टेंगो की आवाज़ में हल्की सी कंपन को महसूस नहीं किया। वह अन्य बातों में इतना मग्न था।
"अगर तुम्हें कुछ पता चले तो मुझे फोन करना," उसने कहा और फोन काट दिया। रिसीवर को वापस हुक पर रखने के बाद, उसने सबसे पहले एक गिलास में दो उंगली भर व्हिस्की डाली। कोमात्सु सही था, उनकी बातचीत के बाद उसे कुछ पीने की ज़रूरत महसूस हुई।
*

शुक्रवार को हमेशा की तरह उसकी प्रेमिका आई। बारिश रुक गई थी, लेकिन आसमान घने, भूरे बादलों से ढका हुआ था, जिससे आसमान की एक किरण भी दिखाई नहीं दे रही थी। दोनों ने हल्का भोजन किया और फिर बेडरूम में चले गए। संभोग के दौरान भी, टेंगो छोटी-छोटी बातों के बारे में सोच रहा था, लेकिन इससे उसके शारीरिक आनंद में कोई कमी नहीं आई। हमेशा की तरह, उसकी प्रेमिका ने एक हफ्ते से उसके अंदर जमा सारी यौन उत्तेजना को कुशलता से दूर कर दिया। इससे उसे भी भरपूर संतुष्टि मिली। ठीक वैसे ही जैसे कोई कुशल कर सलाहकार बहीखाते में संख्याओं के जटिल हेरफेर में गहरी खुशी पाता है। फिर भी उसने तुरंत महसूस कर लिया था कि कोई बात उसे परेशान कर रही है।
"मुझे दिख रहा है कि तुम्हारी व्हिस्की की बोतल खाली हो रही है," उसने कहा। वह एक हाथ टेंगो की मजबूत छाती पर रखकर बैठी थी, संभोग के बाद के शांत पलों का आनंद ले रही थी। उसकी अनामिका उंगली में एक शादी की अंगूठी थी जिसमें एक छोटा लेकिन चमकदार हीरा जड़ा था। वह वाइल्ड टर्की की उस बोतल का जिक्र कर रही थी जो काफी समय से शेल्फ पर रखी थी। वह आसपास के माहौल में आए छोटे-छोटे बदलावों से वाकिफ थी, ठीक वैसे ही जैसे कई अन्य अधेड़ उम्र की महिलाएं जो कम उम्र के पुरुषों के साथ यौन संबंध बनाती हैं।
"मैं आजकल रात में बहुत बार जाग जाता हूँ," टेंगो ने कहा।
"क्या तुम प्यार में नहीं हो?"
टेंगो ने अपना सिर हिलाया।
- मैं नहीं हूँ।
क्या आपका काम ठीक नहीं चल रहा है?
"हां, ऐसा ही है। कम से कम यह आगे तो बढ़ रहा है।"
— फिर भी मुझे लगता है कि कोई बात आपको परेशान कर रही है।
"क्या मुझे पता है? मुझे अब ठीक से नींद नहीं आती। मेरे साथ ऐसी चीजें नहीं होतीं। आमतौर पर, जब मैं सो रहा होता हूँ, तो आप मेरे ऊपर लकड़ी काट सकते हैं।" "बेचारे तुम," उसने अपने दाहिने हाथ से उसके अंडकोषों को धीरे से सहलाते हुए कहा। "और तुम्हें बुरे सपने भी आ रहे हैं?"
"मैं सपना नहीं देख रहा हूँ," उसने कहा। यही सच था।
"मुझे अक्सर सपने आते हैं। और वही चीज़ न जाने कितनी बार। सपने के दौरान भी मुझे एहसास होता है कि यह खुद को दोहरा रहा है। क्या आपको यह अजीब नहीं लगता?" आप किस बारे में सपना देख रहे हैं?

उदाहरण के लिए, जंगल में एक झोपड़ी।
"जंगल में एक झोपड़ी," टेंगो ने कहा।
उसने जंगल में रहने वाले लोगों के बारे में सोचा। घिलियाक, बौने लोग और फुकेर। फिर उसने उससे पूछा:
— यह किस प्रकार का केबिन है?
"क्या तुम सचमुच चाहते हो कि मैं तुम्हें बताऊं? क्या तुम दूसरों के सपने सुनकर थक नहीं जाते?"
"नहीं, बिलकुल नहीं। अगर आप तैयार हैं, तो मैं सचमुच चाहता हूं कि आप मुझे बताएं," टेंगो ने ईमानदारी से कहा।
ऐसा लगता है जैसे मैं किसी जंगल में चल रहा हूँ। लेकिन यह हेंसेल और ग्रेटेल के खोए हुए जंगल की तरह घना और खतरनाक जंगल नहीं है। नहीं, यह आसान श्रेणी का जंगल है, यह उज्ज्वल और सुखद है। दोपहर सुहावनी और खुशनुमा है, और मैं आराम से चल रहा हूँ। रास्ते में मुझे एक छोटा सा घर दिखाई देता है, जिसमें एक छोटा सा बरामदा और एक चिमनी है। खिड़कियों पर चेकदार पर्दे लगे हैं। संक्षेप में, यह बहुत ही दोस्ताना लगता है। मैं दरवाजे पर दस्तक देता हूँ और "हैलो" कहता हूँ, लेकिन कोई जवाब नहीं देता। मैं एक बार फिर, थोड़ा ज़ोर से दस्तक देता हूँ और दरवाजा अपने आप खुल जाता है, क्योंकि वह ठीक से बंद नहीं था। मैं अंदर कदम रखता हूँ। "हैलो, क्या कोई है? क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?"
उस महिला ने टेंगो की आंखों में देखा और धीरे से उसके अंडकोषों को सहलाया। क्या आप समझते हैं कि यहाँ का माहौल कैसा है?
- हाँ।
— उस झोपड़ी में सिर्फ एक कमरा है और वह बहुत ही सादा है। उसमें एक पलंग और एक मेज है, और एक कोने में रसोईघर है। बीच में लकड़ी का चूल्हा है। मेज चार लोगों के लिए सजी है। प्लेटों से भाप उठ रही है। लेकिन अंदर कोई नहीं है। ऐसा लगता है जैसे वे खाने के लिए बैठने ही वाले थे कि कुछ हुआ और वे बाहर भाग गए। पता नहीं, शायद उनके सामने कोई भूत प्रकट हो गया हो। हालांकि कुर्सियां इधर-उधर नहीं पड़ी हैं। सब कुछ शांत है और बिल्कुल सामान्य सा दिखता है। बस, यह जगह वीरान है।
और खाने में किस तरह का भोजन परोसा गया है?
महिला ने सिर हिलाया।
मुझे याद नहीं आ रहा। आखिर खाना क्या है? खैर, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, फर्क सिर्फ इस बात से पड़ता है कि खाना ताजा पका है। खैर, मैं एक कुर्सी पर बैठ जाता हूँ और वहाँ रहने वालों के लौटने का इंतज़ार करता हूँ। मुझे उनका इंतज़ार करना ही है। पता नहीं क्यों, पर करना ही है। वैसे, आप जानते ही हैं कि सपनों में क्या होता है, सारी बातें साफ-साफ नहीं होतीं। शायद मैं उनसे वापस आने का रास्ता पूछना चाहता हूँ या उन्हें मुझे कुछ देना है, कुछ ऐसा ही। खैर, मैं उनके लौटने का इंतज़ार करता हूँ। पर चाहे मैं कितना भी इंतज़ार करूँ, कोई नहीं आता। खाना गरमागरम पक रहा है और उसे देखकर मुझे बहुत भूख लग रही है। पर जब तक कोई न हो, मेज पर रखा खाना खाना ठीक नहीं है। आपको नहीं लगता?
"शायद नहीं," टेंगो ने कहा। "मुझे भी पक्का पता नहीं है, क्योंकि यह एक सपना है।"

— मैं वहीं बैठा था, सूरज डूबने लगा। कमरे में अंधेरा छाने लगा। मेरे चारों ओर जंगल घना होता जा रहा था। मैं बत्ती जलाना चाहता था, पर समझ नहीं आ रहा था कि कहाँ जलाऊँ। मेरी बेचैनी बढ़ती जा रही थी। अचानक मुझे कुछ एहसास हुआ: अजीब बात है, कुछ घंटे बीत जाने के बावजूद खाने से उतनी ही भाप निकल रही थी जितनी पहले निकल रही थी। खाना अभी भी गर्म था। मुझे कुछ अजीब सा लगा। कुछ तो गड़बड़ है। यहीं पर सपना खत्म होता है।
और आपको नहीं पता कि उसके बाद क्या होता है?
"कुछ तो ज़रूर होने वाला है," उसने कहा। बाहर अंधेरा है, मुझे घर का रास्ता नहीं पता, और मैं इस अजीब सी झोपड़ी में अकेली हूँ। कुछ होने वाला है, और मुझे लग रहा है कि यह अच्छा नहीं होगा। लेकिन सपना हमेशा यहीं खत्म हो जाता है। और मैंने इसे अनगिनत बार देखा है।
उसने उसके अंडकोषों को सहलाना बंद कर दिया और अपना गाल उसकी छाती से सटा दिया।
मुझे लगता है इस सपने का कोई मतलब है।
- किस बारे मेँ?
उसने कोई जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, उसने पूछा:
— टेंगो, क्या तुम जानना चाहते हो कि इस सपने का सबसे डरावना हिस्सा क्या है?
- ज़रूर।
महिला ने गहरी सांस ली। उसकी गर्म सांसें टेंगो के निप्पल पर ऐसे गुजरीं जैसे किसी जलडमरूमध्य से गर्म हवा बह रही हो।
"शायद मैं ही भूत हूँ। मुझे कभी-कभार यह ख्याल आया था। वहाँ बैठे लोग मेरी मौजूदगी में ही मेज छोड़कर भाग गए। और जब तक वे वहाँ रहेंगे, वापस नहीं आ सकेंगे। फिर भी, मुझे केबिन में उनका इंतज़ार करना होगा। यह सोचकर ही मुझे डर लगता है। बचने का कोई रास्ता नहीं है।"
"या शायद," टेंगो ने कहा, "तुम्हारा घर वहीं है और तुम अपने भागे हुए रूप का इंतजार कर रहे हो।"
जैसे ही उसने ये शब्द कहे, टेंगो को एहसास हुआ कि चुप रहना ही बेहतर होता। लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी, वो अपने शब्द वापस नहीं ले सकता था। औरत काफी देर तक चुप रही। फिर उसने उसके अंडकोषों को इतनी ज़ोर से पकड़ा कि वो साँस तक नहीं ले पा रहा था।
"तुमने इतनी भयानक बात क्यों कही?"
"इसका कोई मतलब नहीं है। बस मेरे दिमाग में यह बात आई थी," टेंगो ने किसी तरह बुदबुदाते हुए कहा।
महिला ने अपनी पकड़ ढीली की और आह भरी। फिर उसने कहा:
"अब मुझे अपना एक सपना सुनाओ। टेंगो का सपना।"
टेंगो हांफ रहा था।
मैंने आपको पहले भी बताया था कि मुझे सपने बिल्कुल नहीं आते। खासकर आजकल। "आपको सपने जरूर देखने चाहिए। दुनिया में ऐसा कोई नहीं है जो सपने न देखता हो। अगर आप ऐसा कुछ कहेंगे तो डॉ. फ्रायड नाराज हो जाएंगे।"
"हो सकता है मैं सपना देखता हूँ, लेकिन जागने पर मुझे वो याद नहीं रहता। अगर मुझे कुछ सपना याद भी रहता है, तो मुझे याद नहीं रहता कि वह क्या था।"

उस महिला ने उसके शिथिल लिंग को उठाया और सावधानीपूर्वक अपनी हथेली में उसका वजन किया, मानो उसका वजन कोई महत्वपूर्ण सत्य बयां कर रहा हो।
ठीक है, तो मुझे बताओ कि तुम अभी क्या लिख रहे हो।
— यदि संभव हो तो, मैं उस उपन्यास के बारे में बात नहीं करना चाहूंगा जिस पर मैं वर्तमान में काम कर रहा हूं।
"मैं तुमसे पूरी कहानी शुरू से अंत तक बताने के लिए नहीं कह रहा हूँ। मैं तुमसे ऐसा करने के लिए नहीं कह रहा हूँ। मुझे पता है कि तुम इस बारे में संवेदनशील हो। बस मुझे प्रासंगिक हिस्सा थोड़ा-थोड़ा बता दो। या कोई छोटी- मोटी बात। बस थोड़ा-थोड़ा सब कुछ। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे कुछ ऐसा बताओ जो अभी तक किसी और को नहीं पता, जो सिर्फ मुझे पता हो। उस भयानक घटना की भरपाई के लिए, तुम समझ रहे हो ना मैं क्या कह रहा हूँ?"
"मुझे ऐसा ही लगता है," टेंगो ने अविश्वास से कहा।
- तो मुझे बताओ!
उसका लिंग अभी भी उसकी हथेली में था, और टेंगो बोलने लगा:
"यह कहानी मेरे बारे में है। या फिर किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में है जिसका व्यक्तित्व मुझसे मिलता-जुलता है।"
"मैं सोच रही थी," महिला ने कहा। "और मैं भी इस कहानी का हिस्सा हूँ?"
"तुम प्रकट नहीं होते। क्योंकि मैं इस दुनिया में नहीं, बल्कि किसी और दुनिया में हूं।"
"और मैं उस दुनिया में नहीं हूँ?"
"सिर्फ आप ही नहीं। यहां से कोई भी वहां नहीं है।"
और वह दुनिया यहाँ की दुनिया से किस प्रकार भिन्न है? आपको कैसे पता चलेगा कि आप किस दुनिया में हैं?
"मुझे पता है। क्योंकि मैं ही कहानी लिख रहा हूँ।"
"आपको नहीं, बाकी लोगों को कैसे पता चलेगा? मैं यही पूछ रहा था। अगर, उदाहरण के लिए, पता नहीं कैसे, मैं उस दुनिया में खो जाऊं तो क्या होगा?"
"आप इसे समझ सकते हैं। उदाहरण के लिए, उस दुनिया में आकाश में दो चंद्रमा हैं। इस तरह आपको इसका अंदाजा लग जाएगा।"
आकाश में दो चंद्रमाओं का विचार 'द क्राइसालिस ऑफ एयर' से आया था। वह उस दुनिया में एक लंबी, अधिक जटिल कहानी लिखना चाहते थे—और एक ऐसी कहानी जो उनकी अपनी हो। शायद एक ही विषयवस्तु के कारण आगे कुछ समस्याएं उत्पन्न हों। लेकिन, टेंगो दो चंद्रमाओं वाली दुनिया के बारे में एक कहानी लिखना चाहते थे। आगे क्या होगा, यह वे उस समय देख सकते थे।
"इसलिए अगर आप रात में आसमान की ओर देखें और दो चंद्रमा देखें, तो आप समझ जाइए कि आप इस दुनिया में नहीं हैं," उसने कहा।
— यही संकेत है।
— क्या ये दोनों महीने आपस में ओवरलैप नहीं करते?
टेंगो ने अपना सिर हिलाया।
मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन उनके बीच हमेशा एक निश्चित दूरी बनी रहती है।
वह महिला कुछ देर चुपचाप उस दुनिया के बारे में सोचती रही। उसकी उंगलियां टेंगो की नंगी छाती पर आकृतियां बना रही थीं।

“सुनो, क्या तुम्हें अंग्रेजी में 'लूनाटिक' और 'इंसेन' के बीच का अंतर पता है?” उसने पूछा।
— ये दोनों विशेषण हैं जो मानसिक समस्याओं को संदर्भित करते हैं। मुझे इससे अधिक जानकारी नहीं है।
— पागल वह व्यक्ति होता है जिसे जन्म से ही मानसिक समस्याएँ हों। ऐसे व्यक्ति का इलाज डॉक्टर से करवाना उचित होता है। वहीं, विक्षिप्त वह व्यक्ति होता है जो चंद्रमा के प्रभाव में आकर अस्थायी रूप से अपना मानसिक संतुलन खो देता है। 19 वीं शताब्दी में इंग्लैंड में, यदि कोई व्यक्ति विक्षिप्त पाया जाता था, तो उसके द्वारा किए गए अपराधों की सज़ा कम कर दी जाती थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि चंद्रमा का प्रभाव उस व्यक्ति को प्रभावित कर रहा था और वह पूरी तरह से इसके लिए ज़िम्मेदार नहीं था। यह अविश्वसनीय लग सकता है, लेकिन यह कानून वास्तव में मौजूद था। यानी, यह कानूनी रूप से मान्य था कि चंद्रमा के प्रभाव से व्यक्ति पागल हो जाता है।
“तुम्हें ये सब कैसे पता?” टेंगो ने हैरानी से पूछा।
"इतना आश्चर्यचकित मत होइए। मैं इस दुनिया में आपसे लगभग दस साल ज्यादा जी चुका हूं। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि मैं आपसे ज्यादा जानता हूं।"
"जी हां, यह सच है," टेंगो ने स्वीकार किया।
"सच कहूँ तो, मैंने यह कॉलेज में अंग्रेजी साहित्य की कक्षाओं में सीखा था। डिकेंस पर एक क्लास थी। मेरे एक अजीब प्रोफेसर थे जो उपन्यास को छोड़कर हर चीज़ के बारे में बात करते थे, है ना? खैर, मैं यह कह रहा था कि अगर एक चाँद लोगों को पागल कर सकता है, तो क्या आप समझते हैं कि जब आकाश में दो चाँद होते हैं तो वे कितने पागल हो जाते हैं? और ज्वार-भाटा बदलता रहता है, और महिलाओं के मासिक धर्म अनियमित हो जाते हैं। एक के बाद एक असामान्य चीजें होती रहती हैं।"
टेंगो ने उसकी कही बात पर विचार किया।
— ऐसा ही होगा।
— उस दुनिया में, क्या लोग थोड़े पागल होते हैं?
"नहीं। ऐसा बिल्कुल नहीं है। मेरा मतलब है, वे लगभग वही काम करते हैं जो हम यहां करते हैं।"
उसने धीरे से उसके लिंग को अपने हाथ में दबाया।
"तो वहां के लोग भी लगभग वही काम करते हैं जो हम यहां करते हैं। तो फिर दूसरी दुनिया का क्या मतलब है?"
"यहीं से इस दुनिया के अतीत को फिर से लिखा जा सकता है," टेंगो ने कहा।
क्या आप अतीत को अपनी पसंद के अनुसार फिर से लिख सकते हैं?
- हाँ।
"क्या आप अतीत को फिर से लिखना चाहते हैं?"
"क्या आप अतीत को फिर से लिखना नहीं चाहते?"
महिला ने अपना सिर हिलाया।
मुझे इतिहास या अतीत को बदलने का ख्याल कभी नहीं आता। मैं तो वर्तमान को फिर से लिखना चाहूंगा।

लेकिन अगर आप अतीत को फिर से लिखते हैं, तो स्वाभाविक रूप से वर्तमान भी बदल जाता है। वर्तमान अतीत के संचय से ही बनता है।
महिला ने गहरी सांस ली। फिर उसने उस हथेली को, जिसमें अभी भी टेंगो का लिंग था, कुछ बार ऊपर-नीचे किया, मानो वह लिफ्ट की जांच कर रही हो।
मैं तुम्हें सिर्फ एक बात बता सकता हूँ। तुम गणित में विलक्षण प्रतिभा के धनी थे, जूडो में ब्लैक बेल्ट धारक हो, और उपन्यास लिखते हो। लेकिन इन सबके बावजूद, तुम्हें इस दुनिया के बारे में कुछ भी समझ नहीं है। बिलकुल कुछ भी नहीं!
टेंगो को उसके इस कथन पर ज़रा भी आश्चर्य नहीं हुआ। वह इस बात से भी पूरी तरह अवगत था कि उसे कुछ भी समझ नहीं आया था। यह उसके लिए कोई नई बात नहीं थी।
"पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम नहीं समझते," उसकी प्रेमिका ने मुड़कर अपने स्तन उसके शरीर से दबाते हुए कहा। टेंगो, वह स्वप्निल गणित शिक्षक जो दिन-रात उपन्यास लिखता है। लिखते रहो! मुझे तुम्हारा लिंग बहुत पसंद है। मुझे इसका स्पर्श और इसका आकार दोनों पसंद हैं। मुझे यह तब भी पसंद है जब यह कठोर होता है और जब यह नरम होता है। चाहे अच्छा हो या बुरा। और, कुछ समय के लिए, यह पूरी तरह से मेरा है। है ना?"
"हाँ, बिल्कुल सही," टेंगो ने स्वीकार किया।
— मुझे लगता है मैंने आपको पहले भी बताया था कि मैं बहुत ईर्ष्यालु हूँ, है ना?
"तुमने ही मुझे बताया था। हद से ज़्यादा ईर्ष्या।"
"बिल्कुल समझ से परे। मैं हमेशा से ऐसा ही रहा हूँ," उसने कहा और टेंगो के लिंग पर अपनी उंगलियाँ फेरने लगा। "मैं इसे अभी फिर से बाहर निकाल देता हूँ। क्या तुम्हें कोई आपत्ति है?"
टेंगो को कोई आपत्ति नहीं थी।
- आप किस बारे में सोच रहे हैं?
— कॉलेज में अंग्रेजी साहित्य की कक्षाओं में आपका प्रदर्शन कैसा था? "किताब का नाम था मार्टिन चज़लविट। मैं अठारह साल की थी और एक सुंदर सी झालरदार ड्रेस पहने थी और मेरे बाल पोनीटेल में बंधे थे। मैं एक बहुत अच्छी छात्रा थी। उस समय मैं थोड़ी मोटी थी। ऐसा लगता है जैसे मैं किसी और जन्म की बातें कर रही हूँ। पागल और विक्षिप्त के बीच का अंतर मैंने कॉलेज में सबसे पहले सीखा था। अरे, क्या इसके बारे में सोचकर आपको रोमांच होता है?"
- बिल्कुल।
उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और कल्पना की कि वह एक झालरदार पोशाक पहने है और उसके बाल पोनीटेल में बंधे हैं। एक कुंवारी छात्रा, बहुत अच्छी। लेकिन हद से ज़्यादा ईर्ष्यालु। डिकेंस के लंदन पर चाँद चमक रहा है। पागल और विक्षिप्त लोग सड़कों पर घूम रहे हैं। वे एक जैसी टोपियाँ पहने हैं और उनकी मूंछें भी एक जैसी हैं। आप उन्हें कैसे पहचान सकते हैं? आँखें बंद किए हुए, टेंगो को अब यकीन नहीं था कि वह किस दुनिया से ताल्लुक रखता है।

HARUKI MURAKAMI

Volumul II din III

Traducere din limba japoneză şi note de
Iuliana Oprina şi Florin Oprina

POLIROM
2011

□□□□□ – □□□□□□

अध्याय 1 दुनिया का सबसे उबाऊ शहर

बरसात का मौसम अभी आधिकारिक तौर पर समाप्त नहीं हुआ था, लेकिन आसमान एकदम साफ था और ग्रीष्म ऋतु का सूरज धरती पर अपनी किरणें भरपूर बिखेर रहा था। हरे पत्तों से लदे विलो के पेड़ एक बार फिर अपनी घनी छाया बिखेर रहे थे।
तमारू ने पतले, गहरे रंग के सूट, सफेद कमीज और सादी टाई पहने हुए प्रवेश द्वार पर आओमामे का अभिवादन किया। उसके शरीर पर पसीने का कोई निशान नहीं था। आओमामे के लिए यह एक रहस्य था कि इतना लंबा आदमी गर्म दिनों में भी पसीना कैसे नहीं बहाता था।
उसे देखकर तमारू ने हल्का सा सिर हिलाया, धीमी आवाज़ में लगभग सुनाई न देने वाला अभिवादन किया और फिर कुछ नहीं बोला। उसने उनकी रोज़ाना की संक्षिप्त बातचीत को छोड़ दिया और बिना पीछे मुड़े उसे लंबे गलियारे से होते हुए उस कमरे में ले गया जहाँ मालकिन उसका इंतज़ार कर रही थीं। आओमामे ने सोचा कि वह हंसी-मज़ाक के मूड में नहीं था। कुत्ते की मौत से वह ज़रूर दुखी था। उसने फ़ोन पर उससे कहा था कि "एक और रखवाली करने वाला कुत्ता है" जैसे कि वे मौसम की बात कर रहे हों। लेकिन आओमामे जानती थी कि उसके मन में कुछ और चल रहा था। तमारू उस जर्मन शेफर्ड कुत्ते से बहुत प्यार करता था और सालों से उनका गहरा रिश्ता था। उसने उसकी अचानक और रहस्यमय मौत को अपने ऊपर एक व्यक्तिगत हमला या द्वंद्वयुद्ध की चुनौती के रूप में लिया था। उसकी शांत, चौड़ी पीठ को देखकर आओमामे उसके अंदर सुलगते गुस्से की कल्पना कर सकती थी।
तामारू ने बैठक के कमरे का दरवाजा खोला, आओमामे को अंदर आने के लिए आमंत्रित किया और दरवाजे पर रुककर मालकिन के निर्देशों की प्रतीक्षा करने लगा।
"हमें अभी पीने के लिए कुछ नहीं चाहिए," उसने उससे कहा।
तामारू ने बिना कुछ कहे बस हल्के से सिर हिलाया और धीरे से दरवाज़ा बंद कर दिया। कमरे में सिर्फ़ वे दोनों ही रह गए। जिस कुर्सी पर मालकिन बैठी थीं, उसके बगल वाली मेज़ पर एक गोल मछलीघर रखा था, जिसमें दो लाल मछलियाँ तैर रही थीं। एक साधारण सा मछलीघर और साधारण सी मछलियाँ। पानी में हमेशा की तरह हरी शैवाल तैर रही थीं। आओमामे इस सजे-धजे बैठक कक्ष में कई बार आ चुकी थीं, लेकिन मछलियों को उन्होंने पहली बार देखा था। एयर कंडीशनर धीमी गति से चल रहा था, क्योंकि बीच-बीच में उन्हें अपनी त्वचा पर ठंडी हवा का झोंका महसूस हो रहा था। उनके पीछे वाली मेज़ पर एक फूलदान में तीन सफ़ेद लिली रखी थीं। बड़े, पारदर्शी फूल किसी अनोखे जीव की तरह लग रहे थे, मानो ध्यान में लीन हों।
उस महिला ने आओमामे को अपने बगल वाले सोफे पर बैठने का इशारा किया। बगीचे की ओर खुलने वाली खिड़की सफेद पर्दे से ढकी थी, लेकिन गर्मी की दोपहर की धूप की किरणें तेज चमक रही थीं। रोशनी से वह थकी हुई लग रही थी। वह उस बड़ी कुर्सी पर धंसी हुई बैठी थी, उसकी ठुड्डी पतले हाथ पर कमजोर सी टिकी थी। उसकी आँखें धुंधली थीं और गर्दन पर पहले से ज़्यादा झुर्रियाँ थीं। उसके होंठ पीले थे और उसकी लंबी भौहें थोड़ी झुकी हुई थीं, मानो उन्होंने गुरुत्वाकर्षण को चुनौती देना छोड़ दिया हो। उसकी त्वचा चूने की तरह सफेद थी, शायद खराब रक्त संचार के

कारण। पिछली बार जब उसने उसे देखा था, उससे वह पाँच-छह साल बड़ी लग रही थी, और उसे अपनी थकान का एहसास भी नहीं हो रहा था। यह असामान्य था। आओमामे उसे हमेशा सलीके से रहने वाली, अपनी पूरी इच्छाशक्ति जुटाने वाली, सीधी मुद्रा बनाए रखने वाली, दृढ़ चेहरे वाली और बुढ़ापे का कोई भी निशान न आने देने की कोशिश करने वाली महिला के रूप में देखता था। और यह प्रयास प्रशंसा के योग्य सफलता में परिणत हुआ था।
आओमामे ने गौर किया कि उस दिन कई चीजें अलग दिख रही थीं। यहां तक कि रोशनी की चमक भी बदल गई थी। और वह साधारण सा मछलीघर भी था, जो पुराने, सुरुचिपूर्ण फर्नीचर से सजे ऊँची छत वाले कमरे में बिल्कुल भी मेल नहीं खा रहा था।
कुछ देर तक वह महिला चुप रही। वह आओमामे के बगल में एक जगह को घूरती रही, उसकी कोहनी कुर्सी के आर्मरेस्ट पर टिकी थी और ठुड्डी हाथ पर। आओमामे को एहसास हुआ कि उस जगह पर कुछ खास नहीं था। उसे बस कुछ देर के लिए अपनी नज़र को किसी दिशा में मोड़ने की ज़रूरत थी।
"क्या तुम्हें प्यास लगी है?" उसने धीरे से पूछा।
"नहीं, मुझे प्यास नहीं लगी है," आओमामे ने जवाब दिया।
उस महिला ने प्रवेश द्वार के पास रखी एक छोटी मेज की ओर इशारा किया, जिस पर बर्फीली नींबू चाय का एक बर्तन रखा था। उसके बगल में अलग-अलग रंगों के तीन क्रिस्टल के गिलास रखे थे।
"धन्यवाद," आओमामे ने कहा, लेकिन वह बिना हिले-डुले खड़ी रही, उसके कुछ और कहने का इंतजार करती रही।
वह महिला कुछ देर चुप रही। शायद वह कुछ कहने ही वाली थी, लेकिन एक बार कह देने पर बात पक्की हो जाती। उसकी चुप्पी से लग रहा था कि वह उस पल को जितना हो सके टालने की कोशिश कर रही है। उसने मछली के टैंक पर एक नज़र डाली, फिर जैसे असमंजस में पड़कर सीधे आओमामे की आँखों में देखा। उसने अपने होंठ कसकर दबाए रखे और मुस्कुराने की कोशिश की।
"क्या तामारू ने तुम्हें बताया कि आश्रय स्थल की रखवाली करने वाला कुत्ता मर गया? कि उसकी मौत रहस्यमय परिस्थितियों में हुई?" महिला ने उससे पूछा।
— हाँ, उसने मुझे बताया था।
— फिर त्सुबासा गायब हो गई।
आओमामे ने थोड़ा सा भौंहें सिकोड़ीं।
"क्या यह चला गया?"
"वह गायब हो गई, शायद रात के दौरान। वह आज सुबह तक गायब थी।"
ओमामे ने अपने होंठ सिकोड़ लिए, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। उसे शब्द नहीं मिल रहे थे।
लेकिन मुझे समझ आ गया था कि त्सुबासा हमेशा किसी न किसी के साथ सोता रहता था। वह उसकी देखभाल करने के लिए उसी कमरे में उसके साथ रहता था।
"हाँ, बिल्कुल सही। लेकिन ऐसा लगता है कि वह महिला गहरी नींद में सो रही थी और उसे पता ही नहीं था कि वह गायब है। जब वह सुबह उठी, तो उसने देखा कि त्सुबासा उसके बिस्तर में नहीं था।"
"कुत्ते की मौत के अगले दिन वह गायब हो गया," आओमामे ने पुष्टि करते हुए कहा।
महिला ने सिर हिलाया।

"हमें अभी भी पक्का पता नहीं है कि दोनों घटनाओं के बीच कोई संबंध है या नहीं। लेकिन मुझे लगता है कि संबंध है।"
आओमामे ने बिना किसी खास वजह के मेज पर रखे मछलीघर को देखा। दो मछलियाँ अपने छोटे से कांच के तालाब में कांप रही थीं, उनके पंख धीरे-धीरे फड़फड़ा रहे थे। मछलीघर में सूरज की रोशनी अजीब तरह से परावर्तित हो रही थी, जिससे ऐसा भ्रम पैदा हो रहा था मानो आप रहस्यों से भरे समुद्र की गहराइयों के एक टुकड़े को देख रहे हों।
"मैंने ये मछलियाँ त्सुबासा के लिए खरीदी थीं," महिला ने आओमामे की ओर देखते हुए समझाया। अज़ाबू में एक छोटा सा त्योहार था और मैं उसके साथ घूमने गई थी। मैंने सोचा कि उसका हर समय घर में बंद रहना ठीक नहीं होगा। ज़ाहिर है, तामारू भी हमारे साथ आया था। मैंने वहाँ के रात्रि बाज़ार से मछलीघर और मछलियाँ खरीदीं। उसे उनमें बहुत दिलचस्पी थी। वह उन्हें अपने कमरे में रखती थी और दिन भर उन्हें देखती रहती थी, कभी ऊबती नहीं थी। लेकिन जब से वह गायब हुई है, मैं उन्हें यहाँ ले आई हूँ। मैं भी उन्हें देखती रहती हूँ। मैं बस बैठकर देखती रहती हूँ, कुछ नहीं करती। यह अजीब है, लेकिन मैं उनसे कभी नहीं थकती, हालाँकि मैंने पहले कभी मछलियों को इतनी दिलचस्पी से नहीं देखा।
“क्या आपको कोई अंदाजा है कि वह कहां हो सकता है?” आओमामे ने पूछा।
"कोई नहीं। उसके पास रहने के लिए कोई रिश्तेदार नहीं है। जहाँ तक मुझे पता है, इस दुनिया में उसके पास जाने के लिए और कोई जगह नहीं है।"
क्या ऐसी संभावना है कि किसी ने इसे जबरदस्ती छीन लिया हो?
उस महिला ने अपना सिर हल्के से हिलाया, मानो वह किसी अदृश्य मक्खी को भगा रही हो।
नहीं, वो छोटी बच्ची बस वहाँ से चली गई। किसी ने उसे ज़बरदस्ती नहीं उठाया। अगर ऐसा कुछ होना होता, तो कोई न कोई जाग जाता। वहाँ की औरतें वैसे भी हल्की नींद सोती हैं। मुझे लगता है त्सुबासा अपनी मर्ज़ी से चली गई। वो चुपचाप नीचे गई, धीरे से सामने का दरवाज़ा खोला, बाहर निकली और उसे ले जाया गया। मैं उस दृश्य की कल्पना अच्छे से कर सकती हूँ। कुत्ता नहीं भौंका, क्योंकि वो पिछली रात ही मर गया था। उसने अपने पजामे भी नहीं बदले। बिस्तर के पास कपड़ों की एक कतार तैयार रखी थी, लेकिन वो जैसे कपड़े पहने ही चली गई। और उसके पास पैसे भी नहीं हैं।
ओमामे का चेहरा और भी ज्यादा सिकुड़ गया।
"अकेले, अपने पायजामे में?"
“हाँ,” महिला ने सहमति जताते हुए कहा। “दस साल की बच्ची आधी रात को, बिना एक पैसा लिए, अकेले, पायजामे में कहाँ जाएगी? कल्पना करना मुश्किल है। फिर भी, मुझे नहीं पता क्यों, पर यह मुझे कुछ खास अजीब नहीं लगता। वास्तव में, मुझे लगता है कि जो होना था वही हुआ। इसीलिए मैं इसके बारे में पता लगाने की कोशिश भी नहीं करती। मैं बस बैठकर मछलियों को देखती रहती हूँ, कुछ नहीं करती।”
उस महिला ने एक बार फिर एक्वेरियम पर नजर डाली, फिर अपनी निगाहें आओमामे की ओर घुमाईं।
"क्योंकि मुझे पता है कि उसे ढूंढना बेकार होगा। अब वह पहले से ही ऐसी जगह पर है जहां हम नहीं पहुंच सकते।"

ये कहते हुए उसने अपनी ठुड्डी हथेली से उठाई और लंबे समय से रोकी हुई हवा को धीरे-धीरे बाहर निकाला। उसने अपने दोनों हाथ घुटनों पर रख लिए।
“लेकिन वह क्यों चली गई?” आओमामे ने सोचा। वह आश्रय में सुरक्षित थी और उसके पास जाने के लिए और कोई जगह नहीं थी।
पता नहीं क्यों, लेकिन मुझे ऐसा लग रहा है कि कुत्ते की मौत ने ही सब कुछ शुरू किया। जब से वह यहाँ आया था, तब से वह उससे बहुत प्यार करती थी और कुत्ता भी उससे बहुत लगाव रखता था। वे दो अच्छे दोस्तों की तरह थे। त्सुबासा बहुत सदमे में थी, खासकर इसलिए क्योंकि यह इतनी खूनी और समझ से परे मौत थी। यह स्वाभाविक था। वहाँ मौजूद सभी महिलाएं सदमे में थीं। लेकिन, अब जब मैं इस बारे में सोचती हूँ, तो शायद वह भयानक मौत वास्तव में त्सुबासा के लिए एक संदेश थी।
— कोई संदेश?
"हां, उसे एक संदेश भेजा गया है जिसमें लिखा है कि उसे अब यहां रहने की अनुमति नहीं है। हम जानते हैं कि तुम यहां छिपे हुए हो। तुम्हें यहां से जाना होगा, वरना तुम्हारे आस-पास के लोगों के साथ और भी बुरी चीजें हो सकती हैं।"
वह महिला काल्पनिक लय में अपनी उंगलियों को अपने घुटनों पर थपथपा रही थी। आओमामे उसके जारी रखने का इंतजार कर रही थी।
"बच्ची संदेश का अर्थ समझ गई और अपनी मर्जी से वहां से चली गई। उसने यह स्वेच्छा से तो नहीं किया। वह अच्छी तरह जानती थी कि उसके पास जाने के लिए कोई जगह नहीं है, लेकिन उसके पास जाने के लिए कोई जगह नहीं थी। यह मेरे लिए बहुत दुखद है कि केवल दस साल की बच्ची को ऐसा निर्णय लेना पड़े।"
आओमामे का मन हुआ कि वह आगे बढ़कर उससे हाथ मिला ले, लेकिन उसने अपना इरादा बदल दिया। उसने अभी अपनी कहानी पूरी नहीं की थी।
"कहने की ज़रूरत नहीं, यह मेरे लिए बहुत बड़ा सदमा था," उस महिला ने आगे कहा। "ऐसा लगा जैसे मेरा ही एक हिस्सा मुझसे छीन लिया गया हो। मैं उसे गोद लेना चाहती थी और उसे अपने बच्चे की तरह पालना चाहती थी। बेशक, मुझे पता था कि चीजें इतनी आसान नहीं हैं। मुझे कठिनाइयों का एहसास था, फिर भी मैं यही चाहती थी। मुझे शिकायत करने का कोई खास कारण नहीं है, लेकिन सच कहूँ तो, मुझे अपनी उम्र का एहसास हो रहा है।"
"लेकिन शायद एक दिन त्सुबासा वापस आ जाए," आओमामे ने कहा। "अगर उसके पास पैसे न हों और रहने की जगह न हो।"
"मैं भी यही सोचना चाहती हूँ, लेकिन ऐसा होने वाला नहीं है," उस महिला ने भावहीन स्वर में कहा। "वह सिर्फ दस साल की है, लेकिन वह अपने फैसले खुद लेती है और उसने खुद ही जाने का फैसला किया है। वह खुद वापस नहीं आएगी।"
ओमामे ने बहाना बनाकर उठ खड़ी हुई, फिर दरवाजे के पास रखी साइड टेबल पर गई और नीले रंग के क्रिस्टल ग्लास में आइस्ड टी डाली। उसे प्यास तो नहीं लगी थी, लेकिन उसे थोड़ी देर आराम करने की ज़रूरत महसूस हुई। वह सोफे पर लौटी, चाय की एक घूंट ली और ग्लास को टेबल पर रख दिया।
"अभी के लिए, त्सुबासा के बारे में मुझे आपको बस इतना ही बताना है," आओमामे के बेचैन होना बंद करने के बाद उस महिला ने कहा।
और, मानो उस चर्चा को समाप्त करने के लिए, उसने अपना गला साफ किया और उसके सामने अपनी उंगलियों को आपस में जोड़ लिया।

— अब हम पायनियर नेता के बारे में बात करेंगे। मैं आपको उनके बारे में जो कुछ पता चला है, वह बताता हूँ। उन्हीं की वजह से मैंने आज आपको यहाँ बुलाया है।
बेशक, अंत में, यह मामला त्सुबासा से भी जुड़ा हुआ है।
ओमामे ने सिर हिलाया। उसे भी यही उम्मीद थी।
— जैसा कि मैंने आपको बताया था, चाहे कुछ भी हो जाए, हमें इस नेता नाम के आदमी का इंतज़ाम करना ही होगा। यानी, उसे परलोक भेजना होगा। आप जानते ही हैं कि उसे दस साल की बच्चियों का बलात्कार करने की आदत है। वो भी ऐसी बच्चियां जिनका अभी तक मासिक धर्म शुरू नहीं हुआ है। अपने इस कृत्य को सही ठहराने के लिए उसने एक ऐसा सिद्धांत गढ़ लिया है जो उसे भाता है और वह उस संप्रदाय की आड़ में छिपा है। मैंने इन सब बातों के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा जानकारी जुटाने की कोशिश की। मैंने हर मुमकिन स्रोत से संपर्क किया और अच्छी-खासी रकम खर्च की। यह आसान नहीं था। उम्मीद से ज़्यादा रकम लगी, लेकिन मैं उन चार लड़कियों की पहचान करने में कामयाब रहा जिनके साथ उस आदमी ने बलात्कार किया था। चौथी लड़की खुद त्सुबासा है।
ओमामे ने चाय का प्याला उठाया और एक घूंट पिया। उसमें कोई स्वाद नहीं था। ऐसा लग रहा था मानो उसका मुंह रुई से भरा हो, जो सारा स्वाद सोख ले।
“अभी तक पूरी जानकारी पक्की नहीं हुई है, लेकिन चार लड़कियों में से कम से कम दो अभी भी संप्रदाय में रह रही हैं,” उस महिला ने कहा। वे उनके दल का हिस्सा हैं, जैसे कुंवारी कन्याएँ। वे आम भक्तों को बिल्कुल भी दिखाई नहीं देतीं। मुझे नहीं पता कि वे अपनी मर्ज़ी से वहाँ रुकी हैं या उनके पास भागने के अलावा कोई चारा नहीं था क्योंकि वे भाग नहीं सकती थीं। यह भी स्पष्ट नहीं है कि उनके और नेता के बीच अभी भी यौन संबंध हैं या नहीं। किसी भी हालत में, यह निश्चित है कि वे एक ही जगह पर रहती हैं। एक परिवार की तरह। नेता के निवास स्थान वाले क्षेत्र में प्रवेश सख्त वर्जित है और आम भक्त वहाँ तक पहुँच भी नहीं सकते। लगभग सब कुछ रहस्य में डूबा हुआ है।
मेज पर रखे कांच के गिलास पर भाप जमने लगी थी। महिला ने सांस लेने के लिए थोड़ी देर रुककर फिर बोलना शुरू किया।
— केवल एक बात निश्चित है। और वह यह है कि नेता का पहला शिकार उसकी अपनी बेटी थी।
ओमामे ने भौंहें चढ़ाईं। उसके चेहरे की मांसपेशियां अनैच्छिक रूप से हिंसक रूप से फड़कने लगीं। उसने कुछ कहने की कोशिश की, लेकिन उसके मुंह से शब्द नहीं निकल रहे थे।
"जैसा कि आपने सुना। पता चला है कि लीडर ने जिस पहली लड़की का बलात्कार किया था, वह उसकी अपनी बेटी थी। सात साल पहले, जब वह दस साल की थी।"
*

महिला ने इंटरकॉम उठाया और तामारू से शेरी की एक बोतल और दो गिलास लाने को कहा। इस दौरान दोनों चुप रहीं, दोनों अपने-अपने विचारों में खोई हुई थीं। तामारू एक बंद शेरी की बोतल और दो सुंदर क्रिस्टल गिलास एक ट्रे में लेकर आई। उसने उन्हें मेज पर रखा और बोतल का कॉर्क एक झटके में, जैसे किसी चिड़िया की गर्दन मरोड़ रही हो, खोल दिया। फिर उसने शोर मचाते हुए शेरी गिलासों में डाली। महिला ने सिर हिलाया और तामारू झुककर कमरे से बाहर चली गई। उसने एक शब्द भी नहीं कहा। उसके कदमों की आहट भी सुनाई नहीं दी।

तो, आओमामे ने सोचा, बात सिर्फ कुत्ते की नहीं थी। उस छोटी बच्ची (जो लेडी के लिए इतनी महत्वपूर्ण थी) का उसकी नाक के नीचे से गायब हो जाना उसे बहुत गहरा दुख पहुँचा रहा था। इसमें उसकी कोई गलती नहीं थी। वह यहाँ नहीं रहता और जब तक उसे कोई काम न हो, वह शाम को दस मिनट में घर पहुँचकर सो जाता है। कुत्ते की मौत और बच्ची का गायब होना, दोनों घटनाएँ रात में हुईं, जब वह वहाँ नहीं था। वह इन्हें रोक नहीं सकता था। उसका काम लेडी और विला विद द विलोस की रक्षा करना है, और वह आश्रय स्थल की रखवाली नहीं कर सकता, जो वैसे भी विला की सीमा से बाहर है। लेकिन तमारू ने इसे अपनी व्यक्तिगत हार, अपने लिए एक अक्षम्य अपमान समझा। "क्या आप उस व्यक्ति से निपटने के लिए तैयार हैं?" महिला ने आओमामे से पूछा। "मैं हूँ," उसने सीधे-सीधे जवाब दिया।
"यह आसान नहीं होगा। बेशक, मैं आपसे जो भी करने को कह रहा हूँ, वह आसान नहीं है। लेकिन इस बार यह विशेष रूप से कठिन है। मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा, लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि मैं इस समय आपकी कितनी अच्छी तरह रक्षा कर पाऊंगा। जोखिम सामान्य से कहीं अधिक हैं।"
- मुझे उसके बारे में पता है।
"जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया था, मैं आपको खतरे में नहीं डालना चाहता, लेकिन इस बार हमारे पास कोई विकल्प नहीं है।"
"मुझे कोई आपत्ति नहीं है," आओमामे ने कहा। "हम उस आदमी को अब और जीवित नहीं रहने दे सकते।"
महिला ने गिलास उठाया और धीरे-धीरे शेरी का एक घूंट पिया। फिर वह कुछ देर खड़ी रही, उसकी निगाहें उस छोटी मछली पर टिकी हुई थीं।
मुझे गर्मियों की दोपहर में कमरे के तापमान पर शेरी पीना हमेशा से अच्छा लगता रहा है। बाहर जब गर्मी होती है तो मुझे ठंडी शेरी पीना बिल्कुल पसंद नहीं है। आमतौर पर शेरी पीने के बाद मैं थोड़ी देर लेट जाता हूँ और सो जाता हूँ। जब उठता हूँ तो थोड़ी ठंडक महसूस करता हूँ। मैं इसी तरह मरना चाहता हूँ। गर्मियों की दोपहर में थोड़ी सी शेरी पीकर, सोफे पर लेट जाऊँ, सो जाऊँ और फिर कभी न उठूँ।
ओमामे ने गिलास हाथ में लिया और उसे चखा। उसे यह ज़्यादा पसंद नहीं आया, लेकिन कुछ पीने की इच्छा हो रही थी। आइस टी के विपरीत, इसमें थोड़ा स्वाद था। उसे अपनी जीभ पर अल्कोहल की चुभन महसूस हुई।
"मैं चाहती हूँ कि आप मुझे ईमानदारी से जवाब दें," उस महिला ने कहा। "क्या आपको मृत्यु से डर लगता है?"
आओमामे को सोचने के लिए समय की जरूरत नहीं थी। उसने अपना सिर हिला दिया। मुझे सच में डर नहीं लगता। जिस तरह की जिंदगी मैं जी रहा हूँ, उसे देखते हुए... महिला के चेहरे पर मुस्कान आ गई। उसका रंग लौट आया था और वह पहले से कहीं अधिक युवा दिख रही थी। शायद आओमामे के साथ हुई बातचीत ने उसे तरोताज़ा कर दिया था। या शायद शेरी का असर हो गया था।
"लेकिन ऐसा लग रहा था कि तुम किसी पुरुष से प्यार करती हो।"
हां, लेकिन उसके साथ रहने की संभावना लगभग शून्य है। इसलिए अगर मैं अभी मर जाऊं, तो इस तरह खो जाने वाली चीजों की संख्या लगभग शून्य होगी।
उस महिला ने अपनी आंखें सिकोड़ लीं।

"क्या आपके पास कोई ठोस कारण है जिससे आपको लगता है कि आप कभी उसके साथ नहीं होंगी?"
"ज़रूरी नहीं," आओमामे ने जवाब दिया। "सिवाय इसके कि मैं मैं हूँ।"
"तुम उसके बारे में कुछ नहीं करने वाले हो, है ना?"
ओमामे ने अपना सिर हिलाया।
मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मैं इसे दिल से चाहूं।
वह महिला कुछ देर तक उसे प्रशंसा भरी नजरों से देखती रही।
आप चीजों को बहुत स्पष्ट रूप से देखते हैं।
"मुझे यह करना ही है," आओमामे ने कहा और औपचारिकतावश शेरी का गिलास होठों तक उठाया। "मैं इसे आनंद के लिए नहीं करती।"
कुछ देर के लिए कमरे में सन्नाटा छा गया। लिली के फूल सिर झुकाए खड़े रहे और मछलियाँ एक्वेरियम में परावर्तित सूर्य की रोशनी में तैरती रहीं।
"मैं आपके लिए नेता से अकेले मिलने का इंतज़ाम कर सकती हूँ," उस महिला ने कहा। "यह आसान नहीं होगा और इसमें काफी समय लगेगा, लेकिन आखिरकार मैं सफल हो जाऊँगी। और फिर आप वही कर सकते हैं जो आप आमतौर पर करते हैं। बस इस बार आपको गायब होना होगा। आपको प्लास्टिक सर्जरी करवानी होगी। ज़ाहिर है, आप अपनी मौजूदा नौकरी से इस्तीफा देकर कहीं दूर चले जाएँगे। आप अपना नाम भी बदल लेंगे। आपको अपनी सारी संपत्ति त्यागनी होगी। आप पूरी तरह से एक अलग इंसान बन जाएँगे। बेशक, आपको एक बड़ी रकम मिलेगी। और बाकी सब कुछ मैं संभालूँगी। क्या यह ठीक है?"
"जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया है, मेरे पास खोने के लिए कुछ नहीं है। मेरी नौकरी, मेरा नाम, टोक्यो में मेरा जीवन मेरे लिए कोई मायने नहीं रखता। मुझे कोई आपत्ति नहीं है।"
"क्या तुम अपना रूप भी नहीं बदल रहे हो?"
क्या यह इसे बेहतर बनाने के बारे में है?
"अगर आप यही चाहती हैं, तो बिल्कुल कर सकती हैं," महिला ने गंभीर स्वर में उत्तर दिया। "आप अपने चेहरे पर जो चाहे भाव ला सकती हैं, लेकिन कुछ सीमाओं के भीतर, जाहिर है।"
— तो शायद मुझे अपने स्तनों का आकार बढ़वाना चाहिए।
"यह अच्छा विचार होगा," महिला ने सहमति जताते हुए कहा। "इससे आपको अपना भेष बेहतर ढंग से बदलने में मदद मिलेगी।"
"यह एक मज़ाक था," आओमामे ने कुछ सहज भाव से कहा। "मुझे अपने स्तनों पर गर्व करने लायक कुछ खास नहीं है, लेकिन मुझे उन्हें ऐसे ही रखने में कोई आपत्ति नहीं है। वे हल्के हैं, इसलिए मुझे उन्हें इधर-उधर ले जाने की ज़रूरत नहीं है, और अगर मुझे अलग साइज़ की अंडरवियर खरीदनी पड़े तो यह बहुत शर्म की बात होगी।" लेकिन मैं आपको जितना चाहें उतना खरीद कर दे सकता हूँ।
"और वह भी एक मजाक था।"
उस महिला ने भी मुस्कुरा दिया।
"माफ़ कीजिए। मुझे आपके चुटकुले सुनने की आदत नहीं है।"
"मैं कॉस्मेटिक सर्जरी के बिल्कुल खिलाफ नहीं हूं," आओमामे ने कहा। "मैंने पहले कभी इसे करवाने की इच्छा नहीं की, लेकिन मेरे पास इसे मना करने का कोई

कारण नहीं है। वैसे भी, मुझे अपने चेहरे की कोई परवाह नहीं है, और न ही दूसरों को।"
— आप अपने दोस्तों को भी खो देंगे।
"मेरा कोई ऐसा दोस्त नहीं है जिसे मैं अपना मित्र मानती हूँ," आओमामे ने कहा और तुरंत उसे अयुमी की याद आ गई।
अगर मैं अचानक गायब हो जाऊं, तो अयुमी शायद मुझे याद करेगी, उसने सोचा। या शायद उसे धोखा महसूस होगा। लेकिन उसे दोस्त कहना शुरू से ही मजबूरी थी। एक महिला पुलिसकर्मी से दोस्ती करना बहुत खतरनाक है।
— महिला ने कहा, “मेरे दो बच्चे थे। एक लड़का और एक लड़की, जो मुझसे तीन साल छोटी थी। लड़की की मृत्यु हो गई। जैसा कि मैंने आपको बताया, उसने आत्महत्या कर ली थी। उसकी कोई संतान नहीं थी। लड़के से मेरी कई कारणों से लंबे समय से नहीं बनती। अब तो हम मुश्किल से ही बात करते हैं। मेरे तीन पोते-पोतियां हैं, लेकिन मैंने उन्हें लंबे समय से नहीं देखा है। लेकिन जब मैं मर जाऊंगी, तो मेरी अधिकांश संपत्ति अपने आप लड़के और उसके बच्चों को मिल जाएगी। आजकल वसीयत पहले जैसी अच्छी तरह से नहीं लिखी गई है। लेकिन फिलहाल मेरे पास काफी पैसा है जिसे मैं अपनी मर्जी से खर्च कर सकती हूं। अगर आप यह काम कर सकती हैं, तो मैं आपको इसका एक अच्छा हिस्सा देना चाहूंगी। मैं नहीं चाहती कि आप मुझे गलत समझें। यह मत सोचिए कि मैं आपको खरीदना चाहती हूं। मैं बस इतना कह रही हूं कि मैं आपको अपनी बेटी मानती हूं और काश आप मेरी बेटी होतीं।”
ओमामे चुपचाप उसे देखती रही। महिला ने गिलास मेज पर रख दिया, मानो उसे अभी-अभी याद आया हो। फिर उसने लिली की चमकीली पंखुड़ियों पर एक नज़र डाली। उसने उनकी मनमोहक सुगंध को महसूस किया और ओमामे की ओर मुड़ गई।
मैंने तुम्हें पहले भी बताया था कि मैं त्सुबासा को गोद लेने वाला था। लेकिन मैंने उसे खो दिया। मैंने उसकी ज़रा भी मदद नहीं की। मैं बस वहीं खड़ा रहा और उसे रात के अंधेरे में गायब होते देखता रहा। और अब मैं तुम्हें भी एक खतरनाक स्थिति में डालने वाला हूँ। मैं सच में ऐसा नहीं करना चाहता, लेकिन दुर्भाग्य से, मेरे पास अपना लक्ष्य हासिल करने का कोई और रास्ता नहीं है। मैं बस तुमसे ठोस तरीके से बदला ले सकता हूँ।
ओमामे चुपचाप उसकी बातें सुनती रही। जब महिला चुप हो गई, तो कांच के दरवाजे के पीछे से एक चिड़िया की मधुर चहचहाहट सुनाई दी। कुछ देर चहचहाने के बाद चिड़िया उड़ गई।
"इस लड़के को हर हाल में ठीक करना होगा," आओमामे ने कहा। "अभी यही सबसे ज़रूरी है। मुझे इतना महत्व देने के लिए मैं आपकी बहुत आभारी हूँ। जैसा कि आप जानते हैं, किसी कारणवश मैंने अपने माता-पिता को छोड़ दिया। और किसी कारणवश मेरे माता-पिता ने मुझे बचपन में ही त्याग दिया था। मुझे माता-पिता के स्नेह से रहित जीवन जीने के लिए मजबूर होना पड़ा। मुझे अकेले जीने के लिए इस तरह की सोच अपनानी पड़ी। यह बिल्कुल भी आसान नहीं था। कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं कचरे का एक टुकड़ा हूँ। एक घिनौना, अर्थहीन कचरा। इसलिए आप समझ सकते हैं कि आप जो कह रहे हैं उसके लिए मैं कितनी आभारी हूँ। मेरे लिए अपनी सोच या जीवनशैली बदलना अब बहुत देर हो चुकी है। लेकिन त्सुबासा के लिए नहीं। उसे अभी भी बचाया जा सकता है। कृपया इतनी आसानी से हार मत मानिए। उम्मीद मत छोड़िए, उसे वापस ले आइए!"

महिला ने सिर हिलाया।
मुझे लगता है मैंने अपनी बात ठीक से नहीं कही। बेशक मैं त्सुबासा को बचाने की उम्मीद नहीं छोड़ रही हूँ। मैं उसे वापस लाने के लिए हर संभव कोशिश करूंगी। लेकिन, जैसा कि आप देख सकते हैं, मैं अब बहुत थक गई हूँ। मैं उसकी मदद नहीं कर पाई, और इससे मुझे बहुत लाचारी महसूस हुई। मुझे अपनी ऊर्जा वापस पाने के लिए थोड़ा समय चाहिए। हालांकि शायद उम्र का असर मुझ पर पड़ रहा है और शायद मुझमें फिर कभी इतनी ताकत न आए।
ओमामे सोफे से उठी और उनके पास गई। वह कुर्सी के आर्मरेस्ट पर बैठ गई और उस महिला के कोमल और नाजुक हाथ को हल्के से दबाया।
"तुम एक अविश्वसनीय रूप से मजबूत महिला हो," उसने उससे कहा। "तुम किसी से भी ज्यादा मजबूत हो। तुम बस अभी परेशान और थके हुए हो। तुम्हें लेटकर थोड़ा आराम करना चाहिए। जब तुम उठोगे, तो बिल्कुल तरोताजा हो जाओगे।"
"धन्यवाद," उस महिला ने कहा और आओमामे से हाथ मिलाया। "हाँ, मुझे सच में थोड़ी नींद लेनी चाहिए।"
मैं भी जा रहा हूँ। मैं आपके संपर्क का इंतजार कर रहा हूँ। मैं अपना सारा सामान व्यवस्थित कर लूँगा। वैसे भी मेरे पास ज्यादा सामान नहीं है।
"इन्हें इस तरह बनाइए कि आप आसानी से इधर-उधर जा सकें। अगर आपके पास पर्याप्त नहीं हैं, तो मैं आपके लिए तुरंत तैयार कर दूंगा।"
ओमामे ने महिला का हाथ छोड़ दिया और खड़ी हो गई।
"अच्छी नींद लो! सब ठीक हो जाएगा।"
महिला ने सिर हिलाया और अपनी आँखें बंद कर लीं। आओमामे ने मेज पर रखे मछलीघर पर एक नज़र डाली, लिली की खुशबू को महसूस किया और भोजन कक्ष से बाहर निकल गई।
*

तामारू हॉल में उसका इंतज़ार कर रहा था। पाँच बज रहे थे, लेकिन सूरज अभी भी आसमान में ऊँचा था और उसकी चमक ज़रा भी कम नहीं हुई थी। उसके काले कॉर्डोवन जूते उतने ही चमकदार थे और उन पर सूरज की रोशनी चकाचौंध कर रही थी। हवा में कुछ सफ़ेद, गर्मियों के बादल थे, मानो किसी कोने में दुबके हों ताकि सूरज को किसी भी तरह से परेशान न करें। बारिश का मौसम खत्म होने में अभी समय नहीं था, लेकिन पिछले कुछ दिनों से मौसम गर्मियों के मौसम जैसा सुहाना था। बगीचे के पेड़ों से झींगुरों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। आवाज़ अभी बहुत तेज़ नहीं थी, बल्कि थोड़ी धीमी थी। लेकिन वे भरोसेमंद संकेत थे। दुनिया हमेशा की तरह चलती रही। झींगुर चहचहा रहे थे, बादल आसमान में तैर रहे थे, और तामारू के चमड़े के जूतों पर कोई दाग नहीं था। फिर भी, आओमामे को यह देखकर ताज़गी महसूस हो रही थी कि दुनिया बिना किसी बदलाव के आगे बढ़ रही है।
"तामारू-सान," उसने कहा। "क्या हम थोड़ी देर बात कर सकते हैं? क्या आपके पास समय है?"
"हां," उसने चेहरे पर कोई भाव बदले बिना जवाब दिया। "मेरे पास समय है। समय बिताना मेरे कर्तव्यों का हिस्सा है।"
तामारू मुख्य द्वार के ठीक बाहर एक बगीचे की कुर्सी पर बैठ गया। आओमामे भी उसके बगल में बैठ गई। मेहराबदार छज्जे ने सूरज की किरणों को रोककर ठंडी छाया प्रदान की। वहाँ ताज़ी घास की महक फैली हुई थी।
— A venit vara, zise Tamaru.

झींगुरों ने भी गाना शुरू कर दिया है।
"मुझे लगता है कि इस साल ये सामान्य से थोड़ा पहले शुरू हो गए हैं। यहाँ बहुत शोर होगा। कान दुखने लगेंगे। जब मैं नियाग्रा फॉल्स के पास उस कस्बे में रहता था, तब भी ऐसा ही होता था। सुबह से शाम तक, लगातार। ऐसा लगता था जैसे लाखों झींगुर, अलग-अलग आकार के, चहचहा रहे हों।"
"क्या आप नियाग्रा गए हैं?"
तामारू ने सिर हिलाया।
"यह दुनिया का सबसे उबाऊ शहर है। मैं वहां तीन दिन अकेले रहा और झरने की गर्जना सुनने के अलावा मेरे पास करने को कुछ नहीं था। शोर के कारण मैं पढ़ भी नहीं पा रहा था।"
"और आपने नियाग्रा में अकेले तीन दिन क्या किया?"
तामारू ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने बस अपना सिर हल्के से हिलाया।
दोनों कुछ देर तक चुप रहे और झींगुरों की धीमी चहचहाहट सुनते रहे।
"मेरी एक विनती है," आओमामे ने कहा।
उसकी बातों ने तामारू की दिलचस्पी बढ़ा दी। आओमामे उस तरह की इंसान नहीं थी जो अक्सर उससे अनुरोध लेकर आती हो।
"यह तो कुछ असामान्य अनुरोध है," उसने कहा। "मुझे उम्मीद है कि आपको कोई आपत्ति नहीं होगी।"
"मुझे नहीं पता कि मैं आपकी किसी तरह मदद कर सकता हूँ या नहीं, लेकिन मैं सुन रहा हूँ। वैसे भी, शिष्टाचार मुझे एक युवती के अनुरोधों पर ध्यान न देने की सलाह देता है।"
"मुझे एक बंदूक चाहिए," आओमामे ने पेशेवर अंदाज़ में कहा। "इतनी छोटी कि मेरे बैग में आसानी से आ जाए। कम रिकॉइल वाली, मारक क्षमता वाली और भरोसेमंद। कोई मॉडिफाइड रेप्लिका बंदूक या फिलीपीनी कॉपी नहीं। अगर मुझे इसका इस्तेमाल करना पड़े, तो सिर्फ़ एक बार। शायद मुझे सिर्फ़ एक गोली की ज़रूरत होगी।" सन्नाटा छा गया। तामारू ने आओमामे के चेहरे से अपनी निगाहें नहीं हटाईं। उसकी निगाहें एक मिलीमीटर भी नहीं हिलीं।
तामारू ने स्पष्ट रूप से बात की, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उसकी बात समझ में आ जाए:
"इस देश में आम नागरिक के लिए बंदूक रखना गैरकानूनी है। आपको यह पता था, है ना?"
- बेशक मैं।
— देखिए, मैं आपको एक बात बताता हूँ। आप जानते हैं, मुझे कभी किसी अपराध के लिए दोषी नहीं ठहराया गया है। दूसरे शब्दों में, मेरा कोई आपराधिक रिकॉर्ड नहीं है। हो सकता है मैंने कानून का उल्लंघन किया हो, मैं इससे इनकार नहीं करता। लेकिन मेरा रिकॉर्ड बेदाग है। एकदम साफ, त्रुटिहीन। मैं समलैंगिक हूँ, लेकिन यह गैरकानूनी नहीं है। मैं समय पर टैक्स भरता हूँ और मतदान भी करता हूँ। ऐसा नहीं है कि मैंने जिन उम्मीदवारों को वोट दिया है, उन्होंने कभी खुलकर अपनी समलैंगिकता का खुलासा किया हो। मैं अपने पार्किंग चालान भी समय पर भरता हूँ। मुझे दस साल से कोई स्पीडिंग चालान नहीं मिला है। मैं अपने स्वास्थ्य बीमा का योगदान देता हूँ। और रेडियो और टीवी टैक्स सीधे अपने बैंक खाते से भरता हूँ। मेरे पास अमेरिकन एक्सप्रेस और मास्टरकार्ड कार्ड हैं।

ऐसा नहीं है कि मैं ऐसा करने का इरादा रखता हूँ, लेकिन अगर मैं चाहूँ तो मुझे लगता है कि मैं तीस साल का मॉर्गेज ले सकता हूँ। और मैं अपनी स्थिति से बहुत खुश हूँ। और आप आकर एक ऐसे नागरिक से, जिसे सही मायने में समाज का स्तंभ कहा जा सकता है, बंदूक माँगते हैं। आप यह समझते हैं, है ना?
"अच्छा, मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मुझे उम्मीद है कि तुम्हें कोई आपत्ति नहीं होगी?"
मैंने यही सुना है।
मुझे खेद है, लेकिन मेरे पास वास्तव में कोई और नहीं है जिससे मैं मदद मांग सकूं।
तामारू ने अपने गले के पिछले हिस्से से कुछ बुदबुदाया। यह एक दबी हुई आह की तरह लग रहा था।
"मान लीजिए कि मैं आपको इस तरह की कोई चीज दिलाने की स्थिति में होता, तो सामान्य ज्ञान के आधार पर मैं आपसे यह सवाल पूछता: आप इससे किसे शूट करना चाहते हैं?"
ओमामे अपनी तर्जनी उंगली से अपनी कनपटी की ओर इशारा करती है।
देखो कौन है।
तामारू ने बिना किसी भाव के अपनी उंगली को देखा।
मैं आपसे आगे यह प्रश्न पूछूंगा, "किस कारण से?"
"क्योंकि मैं पकड़ा नहीं जाना चाहता। मुझे मरने से डर नहीं लगता। जेल जाना अप्रिय होगा, लेकिन मैं इसे स्वीकार कर लूंगा, बस इतना ही। लेकिन मैं नहीं चाहता कि कोई मुझे पकड़ ले और यातना दे, क्योंकि मैं किसी का नाम उजागर नहीं करना चाहता। आप समझ रहे हैं ना?"
- हाँ।
"आप किसी को गोली मारने या बैंक लूटने वाले नहीं हैं। इसलिए आपको बीस गोलियों वाली बड़ी बंदूक की जरूरत नहीं है। आपको एक कॉम्पैक्ट और कम रिकॉइल वाली बंदूक चाहिए।"
"ज़हर भी एक विकल्प हो सकता है। बंदूक की तुलना में यह अधिक व्यावहारिक विकल्प है।"
"लेकिन इसे बाहर निकालने और निगलने में समय लगता है। जब तक आप कैप्सूल को अपने दांतों के बीच कुचलते हैं, तब तक वे अपना हाथ आपके मुंह में डाल सकते हैं और आप हिल भी नहीं पाएंगे। लेकिन बंदूक से आप उन्हें तब तक दूर रख सकते हैं जब तक आप अपनी समस्या का समाधान नहीं कर लेते।"
तामारू ने थोड़ी देर और समस्या पर विचार किया, उसकी दाहिनी भौंह थोड़ी उठी हुई थी।
"अगर मुमकिन हो तो मैं तुम्हें खोना नहीं चाहूंगा," उसने उससे कहा। "मैं तुम्हें व्यक्तिगत रूप से बहुत पसंद करता हूं।"
आओमामे मुस्कुराई।
"क्या आपका मतलब यही है कि भले ही मैं एक महिला हूँ?"
"औरत हो, मर्द हो या कुत्ता, मुझे बहुत से लोग पसंद नहीं आते, चाहे वे कुछ भी हों," तामारू ने अपने चेहरे के भाव बदले बिना कहा।
- बिल्कुल।

"लेकिन साथ ही, इस समय मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण चीज महिला का स्वास्थ्य और सुरक्षा है। इसके अलावा, मैं इसे कैसे कहूँ, मैं एक पेशेवर हूँ।"
— इस पर कोई चर्चा नहीं हो सकती।
तो, इस लिहाज़ से, मैं कोशिश करूंगा कि मैं क्या कर सकता हूं। मैं किसी बात की गारंटी तो नहीं दे सकता, लेकिन शायद मैं किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढ सकूं जो आपकी इच्छा पूरी कर सके। यह बहुत ही संवेदनशील मामला है। यह डाक से इलेक्ट्रिक कंबल मंगवाने जैसा नहीं है। मुझे लगता है कि जवाब मिलने में लगभग एक हफ़्ता लग जाएगा।
- वह बहुत अच्छा है।
तामारू ने आंखें सिकोड़ते हुए उन पेड़ों की ओर देखा जिनसे झींगुरों की आवाज सुनाई दे रही थी।
"मैं प्रार्थना करता हूं कि सब कुछ ठीक हो जाए। मैं अपनी तरफ से हर संभव प्रयास करूंगा, जितना उचित होगा।"
"धन्यवाद। यह मेरा आखिरी मिशन होगा और शायद हम फिर कभी एक-दूसरे से नहीं मिलेंगे।"
तामारू ने अपनी बाहें फैला दीं, हथेलियाँ ऊपर की ओर थीं, मानो कोई रेगिस्तान के बीच में बारिश शुरू होने का इंतज़ार कर रहा हो। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। उसकी हथेलियाँ बड़ी और मोटी थीं, घावों से भरी हुई। वे किसी मानव शरीर के अंग की बजाय किसी विशाल भारी मशीन के पुर्जे जैसी लग रही थीं।
"मुझे अलविदा कहना पसंद नहीं है," तामारू ने कहा। "मैंने अपने माता-पिता को भी अलविदा नहीं कहा।"
"क्या वे मर गए हैं?"
मुझे नहीं पता कि वे अब जीवित हैं या नहीं। मेरा जन्म सखालिन में, युद्ध की समाप्ति से एक साल पहले हुआ था। सखालिन का दक्षिणी भाग जापानी क्षेत्र था और उस समय कराफुतो कहलाता था, लेकिन 1945 की गर्मियों में सोवियत सैनिकों ने उस पर कब्ज़ा कर लिया और मेरे माता-पिता को बंदी बना लिया गया। मुझे लगता है कि मेरे पिता बंदरगाह पर काम करते थे। अधिकांश जापानी नागरिक बंदियों को उनके देश वापस भेज दिया गया, लेकिन मेरे माता-पिता कोरियाई थे और काम करने के लिए वहाँ भेजे गए थे, इसलिए उन्हें वापस जाने की अनुमति नहीं दी गई। जापानी सरकार ने उन्हें शरण देने से इनकार कर दिया, इस आधार पर कि युद्ध की समाप्ति के साथ, कोरियाई प्रायद्वीप के मूल निवासी अब जापानी साम्राज्य के नागरिक नहीं रह गए थे। भयानक कहानी। दया कहाँ है? अगर वे चाहते तो उत्तर कोरिया जा सकते थे, लेकिन दक्षिण नहीं जा सकते थे, क्योंकि उस समय सोवियत संघ दक्षिण कोरिया को मान्यता नहीं देता था। मेरे माता-पिता पुसान क्षेत्र के एक मछुआरे गाँव से थे और उत्तर नहीं जाना चाहते थे। वहाँ उनके कोई रिश्तेदार या परिचित नहीं थे। मुझे, जो उस समय एक शिशु था, घर लौट रहे कुछ जापानियों के हवाले कर दिया गया, जो मुझे होक्काइडो ले गए। उस समय सखालिन में आपूर्ति की स्थिति बहुत खराब थी और सोवियत सेना कैदियों के साथ बहुत बुरा बर्ताव करती थी। मेरे माता-पिता के कई बच्चे थे और उनके लिए मुझे वहाँ पालना मुश्किल होता। शायद उन्होंने सोचा होगा कि वे मुझे होक्काइडो पहले ही भेज देंगे, इस उम्मीद में कि हम बाद में फिर मिलेंगे। या हो सकता है कि वे बस मुझसे चुपके से छुटकारा पाना चाहते हों।

मुझे ठीक से पता नहीं है। खैर, हम फिर कभी नहीं मिले। मेरे माता-पिता अभी भी सखालिन में ही होंगे। यानी, अगर उनकी मृत्यु नहीं हुई है तो।
"क्या आपको उनके बारे में कुछ भी याद नहीं है?"
— बिलकुल कुछ नहीं, क्योंकि जब हम अलग हुए तब मैं लगभग एक साल की ही थी। उस दंपत्ति ने कुछ समय तक मेरा पालन-पोषण किया, फिर वे मुझे हाकोडेट के पास पहाड़ों में स्थित एक अनाथालय में ले गए। वे भी हमेशा के लिए मेरी देखभाल नहीं कर सकते थे। वह एक कैथोलिक संस्था द्वारा संचालित अनाथालय था, बहुत ही कठोर जगह। युद्ध के बाद, वहाँ बहुत सारे अनाथ बच्चे रह गए थे, और भोजन और गर्मी की कमी थी। जीवित रहने के लिए, मुझे हर तरह के काम करने पड़े, तमारू ने अपने दाहिने हाथ के पिछले हिस्से को देखते हुए कहा। वहाँ मुझे केवल नाम के लिए गोद लिया गया, मुझे जापानी नागरिकता मिली, और मुझे एक जापानी नाम दिया गया। केनिची तमारू। मेरा असली नाम पाक है, लेकिन मुझे बस इतना ही पता है। और पाक नाम के अनगिनत कोरियाई लोग हैं।
ओमामे और तमारू एक दूसरे के बगल में खड़े थे, उनके कान झींगुरों की चहचहाहट पर टिके हुए थे।
"तुम्हें एक और कुत्ता ले आना चाहिए," आओमामे ने कहा।
"और उस महिला ने भी यही बात कही कि आश्रय स्थल को एक नए रखवाली कुत्ते की जरूरत है। लेकिन मुझे यह बात बिल्कुल पसंद नहीं है।"
"मैं आपकी बात पर विश्वास करता हूँ। लेकिन आपको किसी और को ढूंढना होगा। मैं आपको सलाह देने की स्थिति में नहीं हूँ, लेकिन मेरा यही मानना है।"
"मैं उसे ढूंढूंगा," तामारू ने कहा। "वह प्रशिक्षित ही होगा। मैं जितनी जल्दी हो सके उसे देखूंगा।"
ओमामे ने अपनी घड़ी देखी और खड़ी हो गई। सूर्यास्त में अभी कुछ समय था, लेकिन शाम के संकेत दिखने लगे थे। आसमान में नीले रंग की एक अलग ही छटा घुलने लगी थी। ओमामे को शेरी के नशे से हल्का चक्कर आ रहा था। क्या मालकिन अभी भी सो रही थीं?
"देखो चेखव क्या कहते हैं," तामारू ने खड़े होते हुए कहा। "अगर कहानी में बंदूक दिखाई देती है, तो उसे चलाना ही होगा।"
- आपका क्या मतलब है?
तामारू उसके सामने सीधा खड़ा था। वह उससे कुछ सेंटीमीटर ही लंबा था।
मेरा मतलब है, कहानी में अनावश्यक चीज़ें नहीं डाली जातीं। अगर बंदूक दिखाई देती है, तो इसका मतलब है कि किसी न किसी मोड़ पर उसे चलाना ही पड़ेगा। चेखव को अनावश्यक अलंकरणों से रहित उपन्यास लिखना पसंद था।
ओमामे ने अपनी ड्रेस की आस्तीनें ठीक कीं और अपना बैग कंधे पर टांग लिया।
और यह बात आपको परेशान करती है। कि अगर कोई बंदूक दिखाई दे, तो वह निश्चित रूप से गोली चलाएगा।
चेखव के दृष्टिकोण से।
और क्या आप कृपया, यदि संभव हो तो, मेरे हाथ में बंदूक न थमाएंगे?
"यह खतरनाक और गैरकानूनी है। और चेखव एक ऐसे लेखक हैं जिन पर मुझे भरोसा है।" "लेकिन यह कोई कहानी नहीं है। यह हकीकत है।"
तामारू ने आओमामे को घूरते हुए अपनी आँखें सिकोड़ीं और फिर धीरे से बोली: कौन जान सकता है?

अध्याय 2 वे मुझसे मेरी आत्मा के अलावा कुछ नहीं ले सकते।

टेंगो ने जनाचेक की सिम्फोनीटा को टर्नटेबल में रखा और प्ले बटन दबाया। यह शिकागो सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा का प्रदर्शन था, जिसका संचालन सेइजी ओज़ावा कर रहे थे। टर्नटेबल 33 चक्कर प्रति मिनट की रफ्तार से घूमने लगा, टोन आर्म केंद्र की ओर बढ़ा और सुई रिकॉर्ड के खांचे पर सरकने लगी। सबसे पहले ब्रास वाद्ययंत्रों की ध्वनि स्पीकरों से निकली, उसके बाद टिम्पानी की मधुर ध्वनि सुनाई दी। यही वह हिस्सा था जो टेंगो को सबसे ज्यादा पसंद था।
संगीत सुनते हुए वह अपने वर्ड प्रोसेसर पर काम कर रहा था। सुबह-सुबह जनाचेक की सिम्फोनीटा का आनंद लेना उसकी आदत थी। हाई स्कूल में एक अस्थायी पर्कशनिस्ट होने के कारण इस रचना का उसके लिए विशेष महत्व था। वह संगीत उसे प्रोत्साहित और सुरक्षित रखता था। या कम से कम, उसे ऐसा ही लगता था।
कभी-कभी वह अपनी प्रेमिका के साथ सिम्फोनीटा सुनता था। "बुरा नहीं है," उसने कहा था। लेकिन उसे पुराना जैज़ संगीत ज़्यादा पसंद था। जितना पुराना, उतना अच्छा। उसकी उम्र के हिसाब से उसकी पसंद कुछ हटके थी। उसे लुई आर्मस्ट्रांग का एक शुरुआती रिकॉर्ड खास तौर पर पसंद था, जिसमें उन्होंने डब्ल्यू. सी. हैंडी का ब्लूज़ बजाया था, साथ में बार्नी बिगार्ड क्लैरिनेट पर और ट्रम्मी यंग ट्रॉम्बोन पर थे। उसने वह रिकॉर्ड टेंगो को तोहफे में दिया था, लेकिन इसलिए नहीं कि उसने खुद दिया था, बल्कि इसलिए कि वह उसे घर पर रख सके।
सेक्स के बाद, वे अक्सर बिस्तर पर लेटे-लेटे उस एल्बम को सुनते थे। चाहे वह उसे कितनी भी बार बजाए, उसका मन नहीं भरता था। उसने उससे कहा था, "आर्मस्ट्रांग के गानों या उनके ट्रम्पेट की तो कोई शिकायत नहीं कर सकता, लेकिन मुझे लगता है कि सबसे ज़्यादा सुनने लायक बार्नी बिगार्ड का क्लैरिनेट है।" हालांकि, उस एल्बम में बिगार्ड के सोलो बहुत कम थे, और जो थे भी वे छोटे थे। आखिर, उस एल्बम में लुई आर्मस्ट्रांग मुख्य कलाकार थे। लेकिन उसने बिगार्ड के उन कुछ हिस्सों को बड़े चाव से याद कर लिया था और उन्हें धीरे-धीरे गुनगुनाती थी।
बार्नी बिगार्ड से बेहतर क्लैरिनेट वादक शायद होंगे, लेकिन जैज़ को इतनी गर्माहट और कोमलता से बजाने वाला कोई और नहीं मिलेगा, उन्होंने समझाया था। उनके बजाए गए टुकड़े, जब अच्छे से बजते थे, तो मन में एक दृश्य रच देते थे। लेकिन टेंगो को अन्य जैज़ क्लैरिनेट वादकों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। लेकिन जैसे-जैसे उन्होंने वह रिकॉर्ड सुना, उन्हें भी धीरे-धीरे क्लैरिनेट की सुंदर, समृद्ध ध्वनि की सराहना होने लगी, जो कल्पना से भरपूर थी और बिल्कुल भी थकाऊ नहीं थी। लेकिन अगर उनके पास एक कुशल मार्गदर्शक न होता और उन्होंने मेहनत न की होती, तो वे इन गुणों को शायद ही जान पाते।
"बार्नी बिगार्ड एक प्रतिभाशाली सेकंड बेसमैन की तरह हैं," उन्होंने एक बार उनसे कहा था। "निःसंदेह उनके एकल प्रदर्शन शानदार हैं, लेकिन वे सबसे ज़्यादा तब चमकते हैं जब वे पृष्ठभूमि में रहते हैं। वे एक बहुत ही कठिन चीज़ को आसान

बना देते हैं, और यह एक ऐसा गुण है जिसे केवल वही लोग सराह सकते हैं जो ध्यान से सुनना जानते हैं।"
जब रिकॉर्ड के बी-साइड का छठा गाना, अटलांटा ब्लूज़, शुरू होता था, तो वह हमेशा टेंगो से चिपकी रहती थी और कोरस और आर्मस्ट्रांग के सोलो के बीच में मौजूद बिगार्ड के सरल और अद्भुत क्लैरिनेट पार्ट की लगातार प्रशंसा करती थी। ध्यान से सुनो, पहले तो यह किसी आश्चर्यचकित बच्चे के रोने जैसा लगता है। समझ नहीं आता कि यह आश्चर्य, खुशी या आनंद का रोना है। फिर यह एक मधुर आह में बदल जाता है और नदी के घुमावों पर बहता हुआ अंत में किसी अनजान और अद्भुत जगह में विलीन हो जाता है। केवल वही इस तरह का एकल वादन कर सकता है जो आपको इस तरह से छू ले। जिम्मी नून, सिडनी बेचेट, पी वी रसेल या बेनी गुडमैन सभी बहुत अच्छे क्लैरिनेट वादक हैं, लेकिन उनमें से कोई भी ऐसी कलाकृति रचने में सक्षम नहीं है।
"तुम पुराने जैज़ संगीत में इतनी अच्छी कैसे हो?" टेंगो ने उससे पूछा था। "मेरे अतीत की कई ऐसी बातें हैं जो तुम नहीं जानते। एक ऐसा अतीत जिसे कोई बदल नहीं सकता," उसने अपनी हथेली से उसके अंडकोषों को सहलाते हुए जवाब दिया था।
*

सुबह का काम खत्म करने के बाद, टेंगो रेलवे स्टेशन गया और एक अखबार खरीदा। फिर वह एक कैफे में गया और उबले अंडे और टोस्ट का नाश्ता ऑर्डर किया। खाना आने तक वह अखबार पढ़ता रहा और कॉफी पीता रहा। जैसा कि कोमात्सु ने उसे चेतावनी दी थी, सामाजिक समाचार पृष्ठ के निचले भाग में फुकाएरी के बारे में एक छोटा सा लेख था, जो मित्सुबिशी के विज्ञापन के ठीक ऊपर छपा था।
खबर की हेडलाइन में लिखा था कि युवा लेखक लापता हो गया है।
बेस्टसेलर किताब 'क्राइसालिस ऑफ एयर' की लेखिका एरिका फुकाडा (17 वर्षीय) का असली नाम एरिका फुकाडा है। उनके लापता होने की सूचना ** की दोपहर को मिली। उनके अभिभावक, सांस्कृतिक मानवविज्ञानी ताकायुकी एबिसुनो (63 वर्षीय) ने ओउमे पुलिस स्टेशन में रिपोर्ट दर्ज कराई। उनके अनुसार, एरिका फुकाडा 27 जून की शाम से न तो ओउमे स्थित अपने घर लौटी हैं और न ही टोक्यो स्थित अपने अपार्टमेंट में, और न ही उन्होंने अपने अभिभावक से संपर्क किया है। श्री एबिसुनो ने फोन पर बताया कि आखिरी बार जब उन्होंने एरिका फुकाडा को देखा था, तब वह स्वस्थ थीं और उनमें कोई समस्या नहीं थी। उनके लापता होने का कोई कारण ज्ञात नहीं है। आज तक, यह किशोरी कभी भी घर से भागकर नहीं गई है। किसी दुर्घटना की आशंका है।
'द क्राइसालिस ऑफ एयर' का प्रकाशन ** प्रकाशन गृह द्वारा किया गया था। इसी प्रकाशन गृह के संपादक युजी कोमात्सु कहते हैं: "यह छह सप्ताह से बेस्टसेलर सूची में है। हालांकि, लेखिका फुकादा-सान मीडिया से दूर हैं। हमें नहीं पता कि उनका गायब होना सार्वजनिक नजरों से दूर रहने की उनकी इच्छा से जुड़ा है या नहीं। फुकादा-सान एक बहुत ही युवा और प्रतिभाशाली लेखिका हैं, और हमें उनके भविष्य से बहुत उम्मीदें हैं। हम दिल से आशा करते हैं कि वे जल्द से जल्द सुरक्षित लौट आएंगी।"
पुलिस ने कई संभावनाओं पर विचार करते हुए जांच शुरू कर दी है।
इस समय तो उनके पास लिखने के लिए कुछ था ही नहीं, टेंगो ने सोचा। अगर वे इसे सनसनीखेज खबर के रूप में पेश करते, और दो दिन में फुकाएरी सुरक्षित घर लौट

आती, तो लेखक और अखबार दोनों की छवि खराब हो जाती। पुलिस के साथ भी यही हाल था। वे एक तटस्थ, सरल बयान जारी करते, स्थिति का जायजा लेने की कोशिश करते, और फिर देखते कि आगे क्या होता है। यह खबर तभी सुर्खियां बटोरती जब यह साप्ताहिक पत्रिकाओं और टेलीविजन समाचारों में छपती। लेकिन तब तक उनके पास कुछ दिन का समय था।
लेकिन इसमें कोई शक नहीं था कि खबर फैलनी ही थी। 'द क्राइसालिस ऑफ एयर' एक बेस्टसेलर थी, जिसे एक खूबसूरत सत्रह वर्षीय लड़की ने लिखा था, जिसने सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया था। और अब उसकी लेखिका गायब हो गई थी। इसमें हलचल मचने का कोई कारण नहीं था। दुनिया में केवल चार लोग जानते थे कि लड़की का अपहरण नहीं हुआ था, बल्कि वह कहीं छिपी हुई थी। फुकाएरी को तो पता ही था, फिर तेंगो, प्रोफेसर एबिसुनो और आज़ामी को। लेकिन इनके अलावा, किसी को भी शक नहीं हो सकता था कि लड़की का गायब होना एक धोखा था, जिसे जानबूझकर लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए रचा गया था।
टेंगो को समझ नहीं आ रहा था कि उसे खुश होना चाहिए या चिंतित कि वह उन गिने- चुने लोगों में से एक था जिन्हें असलियत पता थी। शायद उसे खुश होना चाहिए था, क्योंकि कम से कम उसे यह तो पता था कि फुकाएरी सुरक्षित है और उसे चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है। दूसरी ओर, वह एक जटिल साज़िश में फंस गया था। प्रोफ़ेसर एबिसुनो ने एक घातक चट्टान को लोहे की छड़ से हटाकर उसके नीचे से निकलने वाली चीज़ को देखने की तैयारी कर रहे थे। टेंगो अपनी इच्छा के विरुद्ध प्रोफ़ेसर के बगल में बैठा था, क्योंकि वह यह नहीं जानना चाहता था कि चट्टान के नीचे से क्या निकलेगा। अगर मुमकिन होता, तो वह देखना ही नहीं चाहता। यकीनन वहाँ से अप्रिय और परेशान करने वाली चीज़ों के अलावा कुछ नहीं निकलेगा। लेकिन उसके मन में कहीं न कहीं यह बात थी कि उसे देखना ही पड़ेगा।
खाना और कॉफी पीने के बाद, उसने अखबार मेज पर रखा और कैफे से निकल गया। वह घर गया, दांत साफ किए और नहाया। फिर वह स्कूल जाने के लिए तैयार हो गया।
*

दोपहर के भोजन के अवकाश के दौरान, एक अजनबी उसे ढूंढते हुए आया। सुबह की कक्षाओं के बाद, वह दफ्तर में आराम करने गया था और अखबार पढ़ने की तैयारी ही कर रहा था कि प्रधानाचार्य की सचिव प्रकट हुई। वह एक प्रतिभाशाली महिला थी, जो उससे एक साल बड़ी थी। हालाँकि कागज़ पर वह केवल सचिव थी, वास्तव में वह विद्यालय के लगभग सभी प्रशासनिक कार्यों को संभालती थी। उसके चेहरे की बनावट इतनी असंतुलित थी कि उसे सुंदर नहीं कहा जा सकता था, लेकिन उसकी पसंद अच्छी थी और उसे पहनावे का अच्छा ज्ञान था।
"श्री उशिकावा आपको ढूंढ रहे हैं," उसने घोषणा की।
वह नाम उसे ज्ञात नहीं था। महिला ने भौंहें चढ़ाकर कहा:
"उनका कहना है कि यह बहुत महत्वपूर्ण मामला है और वे आपसे अकेले में बात करना चाहते हैं।"
"महत्वपूर्ण मामला?" टेंगो ने सोचा। इस स्कूल में उसका क्या महत्वपूर्ण काम हो सकता है?
मैंने उनसे कहा कि बोर्डरूम खाली है। हालांकि, आपकी स्थिति में, आपको वहां अपनी मर्जी से प्रवेश करने का कोई अधिकार नहीं है।
"बहुत-बहुत धन्यवाद," टेंगो ने यथासंभव विनम्रता से मुस्कुराते हुए कहा।

क्या है या स्थायी प्रबंधक का पद किस प्रकार का होता है। उनके पहनावे के विपरीत, बिजनेस कार्ड सुरुचिपूर्ण था, उस पर उभरा हुआ प्रतीक चिन्ह था और ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि उसे जल्दबाजी में बनाया गया हो। टेंगो ने कुछ देर तक कार्ड का अध्ययन किया, फिर सामने खड़े व्यक्ति की ओर देखा। उन्होंने सोचा, इस पद पर बैठे व्यक्ति से जो आभास होना चाहिए, वह इससे नहीं मिलता।
दोनों एक आरामकुर्सी पर बैठ गए और उनके बीच रखी छोटी मेज के पार एक-दूसरे को देखने लगे। उस आदमी ने कई बार एक दुबले-पतले रुमाल से अपने माथे से पसीना पोंछा और फिर उसे अपनी जैकेट की जेब में रख लिया। रिसेप्शनिस्ट उनके लिए चाय लेकर आई। तेंगो ने उसे धन्यवाद दिया, लेकिन उशिकावा ने कुछ नहीं कहा।
"आपके विश्राम में खलल डालने और बिना सूचना दिए आने के लिए कृपया मुझे क्षमा करें," उशिकावा ने क्षमा मांगी।
उसने विनम्रता से बात की, लेकिन एक परिचित लहजे में। एक और बात जो टेंगो को पसंद नहीं आई।
"क्या आपने दोपहर का भोजन कर लिया? अगर आप चाहें तो हम खाते समय बात कर सकते हैं।"
"मैं काम पर रहते हुए दोपहर का खाना नहीं खाता," टेंगो ने जवाब दिया। "मैं दोपहर के बाद ही हल्का भोजन करता हूँ। आप इसके बारे में चिंता न करें।"
"मैं समझ गया। तो हम यहीं रुककर शांति से बात कर सकते हैं," उशिकावा ने बोर्डरूम का जायज़ा लेते हुए चारों ओर नज़र घुमाई। कमरा कुछ खास नहीं था। एक दीवार पर पहाड़ की एक बड़ी सी पेंटिंग टंगी थी, जो अपने रंगीन होने की वजह से ही ध्यान खींच रही थी। एक गुलदस्ते में डहलिया जैसे दिखने वाले कुछ फूल थे। फूल किसी अधेड़ उम्र की महिला की तरह नीरस। तेंगो सोच रहा था कि स्कूल को ऐसे उदास बोर्डरूम की क्या ज़रूरत है।
"मैं अपना परिचय देना भूल गया था। मेरा नाम उशिकावा है, जैसा कि मेरे बिजनेस कार्ड पर लिखा है। लेकिन मेरे सभी दोस्त मुझे उशी कहकर बुलाते हैं। कोई भी मुझे मेरे पहले नाम से नहीं बुलाता, सब मुझे ऊपर से उशी और नीचे से उशी कहकर बुलाते हैं," उस व्यक्ति ने मुस्कुराते हुए कहा।
दोस्त? भला किस तरह के लोग स्वेच्छा से ऐसे व्यक्ति से दोस्ती करना चाहेंगे? टेंगो ने मन ही मन सोचा। यह शंका विशुद्ध जिज्ञासा से उपजी थी।
*

उशिकावा को देखकर उसके मन में जो पहली छाप पड़ी, वह किसी ऐसे जीव की थी जो जमीन में गहरे छेद से बाहर रेंग रहा हो।
एक अस्पष्ट आकार का, चिपचिपा प्राणी, जिसे कभी भी प्रकाश में नहीं आना चाहिए था। शायद यह प्राणी उन प्राणियों में से एक था जिन्हें प्रोफेसर एबिसुनो ने चट्टान के नीचे से जगाया था। तेंगो ने अनजाने में भौंहें सिकोड़ीं और अपना बिजनेस कार्ड मेज पर रख दिया। तोशिहारू उशिकावा, यही उस आदमी का नाम था। "श्रीमान कावाना, मुझे यकीन है कि आप बहुत व्यस्त व्यक्ति हैं। इसलिए कृपया मुझे सीधे मुद्दे पर आने की अनुमति दें," उशिकावा ने कहा।
मैं सहमत हूं।
उशिकावा ने चाय की एक घूंट ली, फिर मुद्दे की बात पर आए:
— आपने शायद न्यू जापान एसोसिएशन फॉर द प्रमोशन ऑफ साइंस एंड आर्ट (टेंगो सिर हिलाते हुए) के बारे में नहीं सुना होगा। यह अपेक्षाकृत हाल ही में गठित

संस्था है जिसका मुख्य कार्य प्रतिभाशाली युवाओं, वैज्ञानिकों या स्वतंत्र कलाकारों, विशेषकर उन लोगों को सहायता प्रदान करना है जिन्हें अभी तक सार्वजनिक रूप से पहचान नहीं मिली है। संक्षेप में, हम जापानी संस्कृति के सभी पहलुओं में अगली पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतिभाशाली लोगों को तैयार करते हैं। हम सभी क्षेत्रों के शोधकर्ताओं के साथ मिलकर सबसे उपयुक्त उम्मीदवारों का चयन करते हैं। हर साल हम पांच लोगों, कलाकारों और शोधकर्ताओं का चयन करते हैं, जिन्हें हम वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं। एक वर्ष की अवधि के लिए, वे बिना किसी बाध्यता के अपनी रुचियों को अपनी इच्छानुसार आगे बढ़ा सकते हैं। उन्हें बस वर्ष के अंत में एक रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होती है, लेकिन यह केवल एक औपचारिकता है। उन्हें बस अपने कार्यों और उस वर्ष के दौरान प्राप्त परिणामों के बारे में संक्षेप में लिखना होता है। यह रिपोर्ट फिर संस्था की पत्रिका में प्रकाशित होती है। कोई अन्य झंझट नहीं। चूंकि यह एक नई पहल है, इसलिए सबसे महत्वपूर्ण बात ठोस परिणाम प्राप्त करना है। संक्षेप में, हमने अभी-अभी बीज बोए हैं। विशेष रूप से, यह प्रति वर्ष तीन मिलियन येन की छात्रवृत्ति है।
"आप बहुत उदार हैं," टेंगो ने कहा।
अगर आप कुछ सार्थक बनाना चाहते हैं या कोई महत्वपूर्ण खोज करना चाहते हैं, तो आपको समय और पैसा दोनों चाहिए। बेशक, सिर्फ पैसा और समय से ही कुछ खास हासिल नहीं हो जाता। लेकिन इनसे कोई नुकसान भी नहीं होता। खासकर जब समय बहुत सीमित हो। घड़ी की सुई लगातार चल रही है। समय बीतता जाता है, अवसर हाथ से निकल जाते हैं। लेकिन अगर आपके पास पैसा है, तो आप अपना मनचाहा समय खरीद सकते हैं। अगर आप चाहें, तो अपनी आजादी भी खरीद सकते हैं। समय और आजादी, ये दो सबसे महत्वपूर्ण चीजें हैं जो लोग पैसे से हासिल कर सकते हैं।
सहज ही, टेंगो ने घड़ी की ओर देखा। समय सचमुच बिना रुके बह रहा था।
"आपका समय लेने के लिए क्षमा चाहता हूँ," उशिकावा घबराते हुए, जल्दी से इशारे करते हुए बोले। "अब और बात न करें। बेशक, सालाना तीन मिलियन येन एक मामूली रकम है, आराम से जीने के लिए पर्याप्त नहीं है। लेकिन युवाओं के लिए, यह फिर भी काफी अच्छी मदद है। हम चाहते हैं कि वे बिना काम किए, अपनी इच्छानुसार शोध और कलात्मक रचना कर सकें। यदि वर्ष के अंत में निदेशक मंडल इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि सकारात्मक परिणाम आए हैं, तो वित्तीय सहायता एक वर्ष से अधिक समय के लिए बढ़ाई जा सकती है।"
टेंगो चुपचाप आगे की कार्यवाही का इंतजार करता रहा।
“मैंने कुछ दिन पहले इस स्कूल में आपके व्याख्यान सुने। बहुत रोचक थे,” उशिकावा ने कहा। “मुझे गणित बिल्कुल भी नहीं आता, बल्कि मुझे यह कभी पसंद ही नहीं आया। स्कूल में भी मुझे गणित की कक्षाएँ बिल्कुल पसंद नहीं थीं। सिर्फ़ यह शब्द सुनकर ही मुझे घिन आती थी और मैं भाग जाता था। लेकिन श्रीमान कावाना, आपके व्याख्यान बहुत रोचक थे। बेशक मुझे विश्लेषण के सिद्धांतों का एक अंश भी समझ नहीं आता, लेकिन आपको सुनकर इतना मज़ा आया कि मेरा मन गणित पढ़ने का करने लगा। आप तो कमाल के शिक्षक हैं! आपमें एक असाधारण प्रतिभा है। आप तो यह भी कह सकते हैं कि आपमें लोगों को मोहित करने की प्रतिभा है। मैंने सुना है कि आपने यहाँ एक शिक्षक के रूप में अच्छी प्रतिष्ठा अर्जित की है, और मैं आपको बता सकता हूँ कि यह बिल्कुल सही है।”

टेंगो सोच रहा था कि उशिकावा ने उसके व्याख्यान कहाँ और कैसे सुने होंगे।
उसने कक्षा पर नज़र गड़ा दी। उसे सभी छात्र याद तो नहीं थे, लेकिन अगर उशिकावा जैसा कोई असाधारण छात्र उनमें से होता, तो वह उसे नज़रअंदाज़ नहीं कर पाता। वह तुरंत उसका ध्यान खींच लेता, जैसे चीनी के कटोरे में कोई कीड़ा। फिर भी उसने इस बारे में कुछ नहीं कहा। क्योंकि इससे कहानी और लंबी हो जाती।
बातचीत को संक्षिप्त करते हुए उन्होंने कहा, "जैसा कि आप जानते हैं, मैं इस प्रारंभिक विद्यालय में केवल एक शिक्षक हूँ। मैं गणित नहीं पढ़ता। मैं छात्रों को केवल पहले से ज्ञात विषयों को रोचक और सरल तरीके से समझाता हूँ। मैं उन्हें प्रवेश परीक्षा में दिए जाने वाले प्रश्नों को हल करने के सबसे प्रभावी तरीके सिखाता हूँ। यही मेरा काम है - या कम से कम मैं यही करने की कोशिश करता हूँ। मैंने शोधकर्ता बनने का सपना बहुत पहले ही छोड़ दिया है। इसका कारण यह है कि मैं आर्थिक रूप से सक्षम नहीं हूँ, और साथ ही मुझमें अकादमिक जगत में करियर बनाने के लिए आवश्यक न तो योग्यता है और न ही प्रतिभा। इसलिए, मुझे नहीं लगता कि मैं आपके किसी काम का हूँ।"
उशिकावा ने जल्दी से अपना हाथ उठाया, हथेली टेंगो की ओर थी।
नहीं, बात वो नहीं है। मैंने विषय बदल दिया। मुझे माफ़ करें। बेशक, आपके गणित के पाठ्यक्रम बहुत अच्छे हैं। वे अनोखे हैं, मौलिकता से भरपूर हैं। लेकिन मैं आज आपसे बात करने इसलिए नहीं आया था। जिस चीज़ ने हमारा ध्यान खींचा है, वह है आपका लेखन।
टेंगो इतना आश्चर्यचकित हुआ कि वह कुछ क्षणों के लिए चुप रहा।
“मेरी लेखन कला?” उसने अंततः पूछा।
- बिल्कुल।
"मुझे आपकी बात ठीक से समझ नहीं आई। यह सच है कि मैं कुछ सालों से उपन्यास लिख रहा हूँ, लेकिन अभी तक उनमें से कोई भी प्रकाशित नहीं हुआ है। जिसने कुछ भी प्रकाशित नहीं किया है, उसे लेखक नहीं कहा जा सकता। और उसने आपका ध्यान कैसे आकर्षित किया?"
उशिकावा ने तेंगो की प्रतिक्रिया देखी, फिर खुशी से मुस्कुराया और अपने टेढ़े-मेढ़े दांत दिखाए। उसके दांत हर तरह से गंदे थे और अलग-अलग कोणों पर मुड़े हुए थे, मानो तेज़ लहरों से बहते समुद्र तट पर पड़े खूंटे हों। शायद दांतों का इलाज करवाने का समय आ चुका था, लेकिन कम से कम किसी को तो उसे ठीक से दांत साफ करना सिखाना चाहिए था।
“इस मामले में हमारा संगठन अद्वितीय है,” उशिकावा ने संतोष से कहा। हमारे सहयोगी शोधकर्ता जानते हैं कि जनता की नज़र से अभी तक अछूते लेखकों को कैसे खोजा जाए। यही उनका एक लक्ष्य है। जैसा कि आपने कहा, श्री कावाना, आपकी रचनाएँ प्रकाशित नहीं हुई हैं। मैं यह भली-भांति जानता हूँ। लेकिन आप हर साल छद्म नाम से साहित्यिक पदार्पण प्रतियोगिता में भाग लेते रहे हैं। दुर्भाग्य से, आप जीत तो नहीं पाए, लेकिन कई बार आप अंतिम चरण तक पहुँचे हैं। और यह बात काफी लोगों की नज़र में आई है। इनमें से कई लोगों ने आपकी प्रतिभा को पहचाना है। निश्चित रूप से, निकट भविष्य में आप पुरस्कार जीतेंगे और एक लेखक के रूप में अपना पदार्पण करेंगे। यही हमारे शोधकर्ताओं का मत है। जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया है, हमारा मूल उद्देश्य समय का सदुपयोग करना और अगली पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतिभाशाली लेखकों को विकसित करना है।

टेंगो ने कप उठाया और उसमें से थोड़ी सी चाय पी ली जो ठंडी होने लगी थी।
— क्या आप यह कह रहे हैं कि आपने मुझे छात्रवृत्ति के लिए एक नौसिखिया लेखक के रूप में चुना है?
"बिल्कुल सही। फर्क सिर्फ इतना है कि आप सिर्फ उम्मीदवार नहीं हैं, आप तो पहले ही जीत चुके हैं। अगर आप इसे स्वीकार करते हैं, तो औपचारिकताओं को पूरा करने का अधिकार मेरे पास है। आप बस कुछ कागज़ों पर हस्ताक्षर कीजिए, और देखते ही देखते तीन मिलियन येन आपके बैंक खाते में आ जाएंगे। आप आधा साल या पूरा एक साल का अवकाश लेकर लेखन पर ध्यान दे सकते हैं। मुझे पता चला है कि आप फिलहाल एक बड़े उपन्यास पर काम कर रहे हैं। यह एक शानदार अवसर है।"
टेंगो ने भौंहें चढ़ाईं।
आपको कैसे पता चलता है कि मैं क्या लिखता हूँ?
उशिकावा ने एक बार फिर अपने दांत दिखाए। लेकिन उसकी आँखों में ज़रा भी मुस्कान नहीं थी। उसकी पुतलियों के पीछे की चमक बर्फीली थी।
"हमारे जांचकर्ता कुशल और मेहनती हैं। वे हर उम्मीदवार का हर पहलू से विश्लेषण करते हैं। आपके संपर्क में कुछ लोग शायद जानते होंगे कि आप इस समय किस पर काम कर रहे हैं। आखिरकार, ये बातें बाहर आ ही जाती हैं।"
कोमात्सु को पता था कि वह एक लंबा उपन्यास लिख रहा है। उसकी प्रेमिका को भी पता था। लेकिन क्या उनके अलावा किसी और को यह बात पता थी? शायद नहीं।
टेंगो ने कहा, "मैं चाहूंगा कि आप मुझे अपने संगठन के बारे में और अधिक जानकारी दें।"
"बिल्कुल, आप जो चाहें मुझसे पूछ सकते हैं।"
— आपको धनराशि कहां से मिलती है?
— हमें कुछ खास लोगों से आर्थिक सहायता मिलती है। आप कह सकते हैं कि यह संस्था उन्हीं की है। कर छूट दिलाने में भी संस्था की कुछ भूमिका है। बेशक, यह एक अलग पहलू है, लेकिन ये लोग कला और विज्ञान में विशेष रुचि रखते हैं और युवा पीढ़ी की मदद करना चाहते हैं। फिलहाल मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं बता सकता। संबंधित लोग और उनकी संस्था, दोनों ही गुमनाम रहना चाहते हैं। संस्था का प्रशासन संस्था की समिति के हाथ में है। और मैं इस समिति का सदस्य हूं। टेंगो ने कुछ पल इन सब बातों पर सोचा। लेकिन उसके पास सोचने के लिए वास्तव में कुछ नहीं था। उसने बस उशिकावा के शब्दों को क्रम में लगाया, उन्हें एक सीधी रेखा में समेट दिया।
“अगर मैं सिगरेट पी लूँ तो क्या आपको कोई आपत्ति होगी?” उशिकावा ने पूछा।
"ये लो," टेंगो ने भारी कांच की ऐशट्रे उसकी ओर बढ़ाते हुए जवाब दिया। उशिकावा ने अपनी जैकेट की जेब से सेवन स्टार्स का एक पैकेट निकाला, एक सिगरेट निकाली और उसे सोने के लाइटर से जलाया। एक बेहद खूबसूरत लाइटर जो देखने में बहुत महंगा लग रहा था।
"तो, श्री कवाना?" उन्होंने पूछा। "क्या आप हमारी वित्तीय सहायता स्वीकार करने के लिए तैयार हैं?" "सच तो यह है कि उस आकर्षक व्याख्यान को सुनने के बाद, मुझे यह जानने में बहुत दिलचस्पी है कि भविष्य में आपके साहित्यिक प्रयास किस दिशा में आगे बढ़ेंगे।"

टेंगो ने कहा, "आपके उदार प्रस्ताव के लिए मैं बहुत आभारी हूं। यह मेरे लिए सम्मान की बात है, शायद मैं इसके योग्य भी हूं या नहीं। लेकिन मैं यह पैसा स्वीकार नहीं कर सकता।"
उशिकावा की उंगलियों के बीच सिगरेट से सीधा धुआं उठ रहा था। उस आदमी ने आंखें सिकोड़कर कहा,
"मेरा मतलब है, कैसे?"
"पहली बात तो यह है कि मैं किसी अनजान व्यक्ति से पैसे नहीं ले सकती। दूसरी बात, मुझे अभी पैसों की ज़रूरत नहीं है। मेरी यहाँ हफ्ते में तीन दिन क्लास होती हैं और बाकी समय मैं लिखती हूँ, इसलिए मैं उसका इंतज़ाम कर सकती हूँ। मैं अपनी जीवनशैली में कोई बदलाव नहीं करना चाहती। यही मेरे कारण हैं।"
तीसरी बात, श्रीमान उशिकावा, मैं आप जैसे व्यक्ति के साथ उलझना नहीं चाहता। चौथी बात, शेयर बाजार की कहानी, आप इसे किसी भी तरह से देखें, थोड़ी संदिग्ध है। यह सच होने के लिए बहुत अच्छी लगती है, इसमें कुछ और भी गड़बड़ जरूर है। मैं शायद दुनिया का सबसे समझदार व्यक्ति नहीं हूँ, लेकिन मुझे भी लगता है कि इस कहानी में कुछ तो गड़बड़ है। बेशक, टेंगो ने ये बातें ज़ोर से नहीं कहीं। “मैं समझ गया,” उशिकावा ने कहा, फिर धुएँ का एक गहरा कश लिया और बड़े आनंद से उसे बाहर निकाला। “मैं आपको अच्छी तरह समझता हूँ। आप सही हैं। लेकिन, श्रीमान कावाना, आपको अभी मुझे कोई पक्का जवाब देने की ज़रूरत नहीं है। घर जाइए और दो- तीन दिन इस बारे में सोचिए। हमें कोई जल्दी नहीं है। हमारे प्रस्ताव पर बिना किसी हड़बड़ी के विचार कीजिए। यह बुरा विचार नहीं है।”
टेंगो ने थोड़े समय के लिए लेकिन दृढ़ता से अपना सिर हिलाया।
धन्यवाद, लेकिन मैं आपको तुरंत जवाब देना पसंद करूंगा। इससे हम दोनों का समय और परेशानी बचेगी। मुझे बहुत खुशी है कि आपने मुझे इस छात्रवृत्ति के लिए चुना और मैं आभारी हूं कि आपने मुझे यह जानकारी देने के लिए इतनी कृपा की। लेकिन मेरा इनकार अभी भी कायम है – और यही मेरा अंतिम जवाब है। इसमें कोई संदेह नहीं है।
उशिकावा ने कुछ बार सिर हिलाया, फिर अफसोस के साथ उस सिगरेट को बुझा दिया जिससे उसने केवल दो कश ही लिए थे।
"ठीक है। मैं आपकी बात समझ गया और आपके विचार का सम्मान करता हूँ। आपको इतनी जल्दी बुलाने के लिए क्षमा चाहता हूँ। तो हम यहीं रुकेंगे।"
लेकिन उशिकावा ने उठकर जाने का कोई संकेत नहीं दिया। उसने अपने सिर के पीछे खुजली की और अपनी आँखें सिकोड़ीं।
— श्रीमान कावाना, आपको शायद इसका एहसास न हो, लेकिन आपके लेखन करियर से बहुत उम्मीदें हैं। आप प्रतिभाशाली हैं। गणित और साहित्य के बीच भले ही कोई सीधा संबंध न हो, लेकिन कक्षा में आप मानो कहानी सुना रहे होते हैं। यह हर किसी के बस की बात नहीं है। आपके पास कहने के लिए कुछ खास है। यह बात मुझ जैसे व्यक्ति को भी स्पष्ट है। इसीलिए आपको अपना बेहतर ख्याल रखना चाहिए। मैं आपको दिल से कहता हूँ, आपके लिए सबसे अच्छा यही होगा कि आप अपने रास्ते पर चलें और उन चीजों में दखल न दें जिनमें आपको नहीं देना चाहिए।
“इसमें क्या गलत है?” टेंगो ने पूछा।
उदाहरण के लिए, ऐसा लगता है कि आपका एरिका फुकाडा से कुछ संबंध है, जो 'द क्राइसालिस ऑफ एयर' की लेखिका हैं। या यूं कहें कि आप उनसे कई बार मिल चुके

हैं। मैंने आज के अखबार में पढ़ा कि फुकाडा लापता हैं। मीडिया इस पर खूब हंगामा करेगा। यह निश्चित रूप से अखबार के पहले पन्ने की खबर बनेगी।
"मान लीजिए कि मैं एरिका फुकाडा से मिला। इसका क्या मतलब है?"
उशिकावा ने एक बार फिर अपनी हथेली टेंगो की ओर की। उसका हाथ छोटा था, लेकिन उंगलियां मोटी थीं।
— अरे, अरे, ज़्यादा मत सोचो! मेरा मतलब कुछ बुरा नहीं था! मैं बस इतना कहना चाहता था कि अपना समय और प्रतिभा उन चीज़ों पर बर्बाद करना शर्म की बात है जिनसे कुछ भी अच्छा नहीं मिलता। मेरी गुस्ताखी के लिए मुझे माफ़ करना, लेकिन मैं तुम्हारी जैसी प्रतिभा को, जो हीरे की तरह तराशने के लिए तैयार है, कुछ छोटी-मोटी बातों की वजह से बर्बाद होते नहीं देखना चाहता। अगर उन्हें तुम्हारे और फुकादा के रिश्ते के बारे में पता चल गया, तो कुछ लोग तुम्हें चैन से नहीं बैठने देंगे, वे काँटे की तरह तुमसे चिपक जाएँगे। वे तुम्हें बेवजह डाँटेंगे। क्योंकि वे ज़िद पर अड़े हैं, इसीलिए।
टेंगो ने बिना कुछ कहे उशिकावा को देखा। आँखें सिकोड़कर वह आदमी अपना कान खुजा रहा था। उसके कान छोटे थे, लेकिन उनके लोब असामान्य रूप से बड़े थे। इस आदमी की विचित्र शारीरिक बनावट को देखकर कोई भी दिन भर आश्चर्यचकित हो सकता था।
"नहीं, नहीं, ऐसा मत सोचो कि ये मेरी तरफ से है," उशिकावा ने मुंह बंद करने का नाटक करते हुए कहा। "मैं वादा करता हूँ। देखने में भले ही ऐसा न लगे, लेकिन मुझे चुप रहना आता है। आप कह सकते हैं कि पिछले जन्म में मैं मछली था। ये बात सिर्फ हमारे बीच की है, ये इस बात का सबूत है कि मैं तुम्हारा कितना सम्मान करता हूँ।"
ये कहते हुए, उशिकावा आखिरकार अपनी कुर्सी से उठे और अपने सिकुड़े हुए सूट को ठीक किया। यह एक व्यर्थ प्रयास था, क्योंकि सिकुड़न गायब नहीं हुई। उनका उद्देश्य अनावश्यक रूप से आपका ध्यान आकर्षित करना था।
“अगर छात्रवृत्ति के बारे में आपका मन बदल जाए, तो आप मेरे बिजनेस कार्ड पर दिए गए नंबर पर मुझसे संपर्क कर सकते हैं। अभी भी समय है। और अगर इस साल नहीं, तो अगले साल मौका है,” उन्होंने अपनी तर्जनी उंगलियों से इशारा करते हुए कहा, मानो पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूम रही हो। “हमें कोई जल्दी नहीं है,” उन्होंने आगे कहा। “इस बार कम से कम मुझे आपसे मिलने और अपना संदेश देने का अवसर तो मिला।”
उशिकावा ने एक बार फिर अपने भयानक दांत दिखाते हुए मुस्कुराया, मुड़ा और कमरे से बाहर चला गया।
*

अगली क्लास शुरू होते-होते, टेंगो अभी-अभी हुई बातचीत को दोहरा रहा था। उशिकावा को किसी तरह पता चल गया था कि वह एयर क्राइसालिस मामले में शामिल था। उसके बोलने के तरीके से ही उसे पता चल गया था। उसने रूखेपन से कहा था, "अपना समय और प्रतिभा बर्बाद करने से कोई फायदा नहीं है।"
हमें पता है – यही उनका संदेश था।
"इस बार कम से कम मुझे आपसे मिलने और आपको अपना संदेश देने का अवसर तो मिला।" क्या उन्होंने उशिकावा को सिर्फ इसी मकसद से, सिर्फ यही संदेश देने के लिए तीन मिलियन येन की "छात्रवृत्ति" देने भेजा था? यह बात समझ में नहीं आती थी।

इतनी छोटी सी बात के लिए इतनी जटिल योजना बनाने का कोई मतलब नहीं था। वह उनके इशारों पर चल रहा था। अगर वे चाहते, तो उसे सीधे धमका भी सकते थे। या फिर वे इस छात्रवृत्ति से उसे खरीदना चाह रहे थे? दोनों ही सूरत में, वे बहुत ही नाटकीय व्यवहार कर रहे थे। लेकिन वे कौन थे? क्या न्यू जापान एसोसिएशन का संबंध पायनियर्स से था? क्या सच में ऐसा कोई संगठन मौजूद था?
टेंगो, उशिकावा का बिजनेस कार्ड लेकर सचिव के पास गया।
"क्या मैं आपसे कोई बात पूछूं?"
“ज़रूर! क्या बात है?” उसने टेंगो की ओर देखते हुए कहा।
"कृपया इस नंबर पर कॉल करके पूछें कि क्या यह विज्ञान और कला संवर्धन हेतु नव जापान संघ का नंबर है। और यह भी पूछें कि क्या प्रबंधक उशिकावा वहां मौजूद हैं। यदि नहीं, तो पूछें कि आप उनसे किस समय मिल सकते हैं। यदि वे जानना चाहें कि उन्हें कौन ढूंढ रहा है, तो कोई नकली नाम बता दें। मैं कॉल कर सकता था, लेकिन मैं नहीं चाहता कि वे मेरी आवाज़ पहचान लें।"
सचिव ने नंबर डायल किया। दूसरी तरफ से तुरंत एक पेशेवर आवाज सुनाई दी। दोनों के बीच संक्षिप्त बातचीत हुई, मानो पेशेवरों के बीच हो रही हो।
"यह संस्था सचमुच मौजूद है," रिसेप्शन पर बैठी लड़की ने जवाब दिया। वह बीस साल की उम्र के आसपास है और काफी विनम्र है। उशिकावा सचमुच वहां काम करती है। वह लगभग साढ़े तीन बजे ऑफिस लौटती है। लेकिन उसने मुझसे मेरा नाम नहीं पूछा। अगर पूछा होता तो मैं जरूर पूछता।
"बेशक तुम पूछते ही," टेंगो ने कहा। "धन्यवाद।"
"खुशी से," उसने कार्ड वापस देते हुए जवाब दिया। "क्या यह वही उशिकावा है जो थोड़ी देर पहले मिला था?"
- हाँ।
मैंने उसे ठीक से नहीं देखा, लेकिन वह काफी डरावना लग रहा था।
"और अगर आपके पास इसे ध्यान से देखने का समय होता, तो आप अपना विचार नहीं बदलते," टेंगो ने बिजनेस कार्ड को अपने बटुए में रखते हुए जवाब दिया।
"मैं लोगों को उनके बाहरी रूप-रंग से आंकने की कोशिश नहीं करता। मैंने पहले यह गलती की है और मुझे इसका पछतावा हुआ है। लेकिन इस आदमी को देखकर ही आप उस पर भरोसा नहीं कर पाएंगे। यही मेरी राय है।"
"तुम अकेले नहीं हो," टेंगो ने जवाब दिया।
"मैं अकेली नहीं हूं," उसने वाक्य को समझने की कोशिश करते हुए दोहराया। "वैसे, ये जैकेट तो वाकई बहुत अच्छी है!" टेंगो ने कहा। वो उसकी तारीफ करने की कोशिश नहीं कर रहा था, उसे सच में वो जैकेट पसंद आई थी। उशिकावा के सस्ते, झुर्रीदार सूट को देखने के बाद, ये बढ़िया सिलाई वाली लिनेन की जैकेट उसे किसी शांत दोपहर में स्वर्ग से गिरी हुई किसी वस्तु जैसी लग रही थी। “धन्यवाद!” उसने जवाब दिया।
लेकिन अगर उन्होंने फोन का जवाब भी दिया, तो इसका मतलब यह नहीं है कि वास्तव में ऐसा कोई संबंध मौजूद है।
"बिल्कुल सही। यह एक काफी जटिल घोटाला हो सकता है। आपको एक फोन लाइन और एक नंबर चाहिए, बस इतना ही। जैसे उस फिल्म 'द स्कैमर्स' में दिखाया गया है। लेकिन वे ऐसा क्यों करेंगे? मुझे कहने में कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन आप देखने में बिल्कुल भी अमीर नहीं लगते, जिन्हें वे ठग सकें।"

— हाँ, वे मुझसे कुछ नहीं ले सकते। सिवाय मेरी आत्मा के।
मुझे तो पहले से ही मेफिस्टोफेल्स के प्रकट होने की उम्मीद है!
मुझे लगता है कि मुझे वहां जाकर यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि उस पते पर कोई कार्यालय है या नहीं।
"जो भी पता चले, मुझे बताना," उसने अपने नाखूनों को देखते हुए कहा।
*

जापान विज्ञान और कला संवर्धन संघ सचमुच अस्तित्व में था। अपनी कक्षाएं समाप्त करने के बाद, टेंगो ने योत्सुया के लिए ट्रेन ली और वहाँ से कोजिमाची तक पैदल चला। बिजनेस कार्ड पर दिया गया पता एक तीन मंजिला इमारत का था। प्रवेश द्वार पर एक धातु की पट्टिका लगी थी जिस पर संघ का नाम लिखा था। कार्यालय दूसरी मंजिल पर थे। उसी मंजिल पर मिकिमोटो संगीत स्टूडियो और सवादा लेखा कार्यालय भी थे। इमारत के आकार को देखकर लगता था कि कार्यालय बहुत बड़े नहीं होंगे, और न ही वे बहुत समृद्ध दिखते थे। बेशक, बाहर से देखकर अंदाजा लगाना मुश्किल था। टेंगो ने तीसरी मंजिल तक लिफ्ट से जाने का सोचा। वह दरवाजा खोलकर देखना चाहता था कि कार्यालय कैसा दिखता है। लेकिन गलियारे में उशिकावा से टकराना बहुत अप्रिय होता।
टेंगो ट्रेन से घर लौटा और कोमात्सु को फोन किया। अप्रत्याशित रूप से, कोमात्सु काम पर था और उसने तुरंत फोन उठा लिया।
"आप गलत हैं," कोमात्सु ने सामान्य से अधिक तेज़ी और उत्तेजना के साथ कहा। "माफ़ कीजिए, लेकिन मैं अभी बात नहीं कर सकता।"
"यह बहुत महत्वपूर्ण बात है, कोमात्सु-सान!" टेंगो ने कहा। "आज स्कूल में एक अजनबी मुझसे मिलने आया था। उसे एयर क्राइसालिस से मेरे संबंध के बारे में कुछ पता था।"
कोमात्सु कुछ सेकंड तक चुप रहा।
मैं आपको बीस मिनट में फोन करूंगा। क्या आप घर पर हैं?
"हां," टेंगो ने जवाब दिया, और कोमात्सु ने फोन काट दिया।
कोमात्सु के फोन का इंतज़ार करते हुए, टेंगो ने रसोई के दो चाकू तेज़ किए और चाय के लिए पानी उबाला। ठीक बीस मिनट बाद फोन की घंटी बजी। कोमात्सु का इतना समय का पाबंद होना असामान्य था।
इस बार उनका लहजा काफी शांत था। ऐसा लग रहा था कि वे किसी शांत जगह पर चले गए हैं जहाँ वे आराम से बात कर सकें। तेंगो ने संक्षेप में उशिकावा के साथ अपनी मुलाकात का ब्योरा दिया।
"मैंने इस संस्था के बारे में कभी नहीं सुना। और ये सब क्या चल रहा है कि वे तुम्हें तीन मिलियन येन देना चाहते हैं! बेशक तुम्हारा भविष्य एक लेखक के रूप में उज्ज्वल है, मैंने तुम्हें ये भी बताया था, लेकिन तुमने अभी तक कुछ भी प्रकाशित नहीं किया है। कितनी अविश्वसनीय कहानी है! इसके पीछे ज़रूर कोई राज़ छिपा होगा।"
— मैं भी यही सोचता हूँ।
"मुझे इस संबंध की थोड़ी छानबीन करने दीजिए। अगर मुझे कुछ पता चलता है, तो मैं आपको बता दूंगा। वैसे भी, इस उशिकावा को आपके और फुकाएरी के बीच के संबंध के बारे में पता है।"
- बिल्कुल।

— ▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒
"▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒," ▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ "▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒-▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒"
▒▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒
— ▒▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒ ▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒-▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒
"▒▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒?"
"▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒"
— ▒▒ ▒▒▒▒, ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒, ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒ ▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒?
"▒▒▒▒▒, ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒," ▒▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒ "▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒?"
"▒▒▒ ▒▒▒ ▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒"
▒▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒:
— ▒▒▒▒▒▒, ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒, ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒ ▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒
▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒, ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒
"▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒, ▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒, ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒, ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒"
“▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒!” ▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒
"▒▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒," ▒▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒, ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒
▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒? ▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒, ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒
▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒, "▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒" ▒▒▒▒ ▒▒, ▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒ ▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒▒▒▒ ▒▒▒▒

अध्याय 3 आप अपने जन्म का तरीका नहीं चुन सकते, लेकिन आप अपनी मृत्यु का तरीका चुन सकते हैं।

जुलाई की उस शाम, जब आसमान को लंबे समय से ढके घने बादल आखिरकार छंट गए, तो आकाश में दो चाँद दिखाई दिए। आओमामे ने अपनी छोटी सी बालकनी से उन्हें देखा। उसका मन किया कि वह किसी को फोन करके कहे, "कृपया खिड़की से अपना सिर बाहर निकाल कर आसमान में देखो! तुम्हें कितने चाँद दिख रहे हैं? मुझे तो दो साफ़- साफ़ दिख रहे हैं। तुम्हारा कितना दिख रहा है?"
लेकिन उसके पास किसी को फोन करने का कोई ज़रिया नहीं था। शायद अयुमी को, लेकिन वह उसके साथ अपने रिश्ते को और मज़बूत नहीं करना चाहता था। वह एक पुलिस अधिकारी थी। जल्द ही, आओमामे किसी और आदमी को मार डालेगी, अपना नाम और रूप बदल लेगी, कहीं दूर चली जाएगी और गायब हो जाएगी। और फिर वह अयुमी को फिर कभी नहीं देख पाएगा। न ही उससे संपर्क कर पाएगा। एक बार जब आप किसी के करीब आ जाते हैं, तो उनसे रिश्ता तोड़ना मुश्किल हो जाता है।
आओमामे घर लौटी, दरवाजा बंद किया और एयर कंडीशनर चालू कर दिया। उसने पर्दे खींच लिए, जिससे उसके और उन दो चंद्रमाओं के बीच एक रुकावट खड़ी हो गई जो उसे बेचैन कर रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो वे पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण को असंतुलित कर रहे हों और उसके शरीर पर असर डाल रहे हों। उसका मासिक धर्म अभी काफी दूर था, लेकिन उसका शरीर असामान्य रूप से नरम और भारी महसूस हो रहा था। उसकी त्वचा रूखी थी और उसकी नाड़ी अनियमित थी। आओमामे ने उन दो चंद्रमाओं के बारे में न सोचने का निश्चय किया, हालांकि यह एक ऐसा विषय था जिसके बारे में उसे सोचना चाहिए था।
अपनी सुस्ती दूर करने के लिए, आओमामे चटाई पर बैठ गई और स्ट्रेचिंग शुरू कर दी। उसने बारी-बारी से उन मांसपेशियों पर काम किया जिनका इस्तेमाल वह अपनी रोज़मर्रा की गतिविधियों में नहीं कर पाती थी, और व्यवस्थित और सावधानीपूर्वक अभ्यास किया। उसकी मांसपेशियां दर्द से कराह रही थीं, और पसीने की बूंदें ज़मीन पर टपक रही थीं। उसने अपना खुद का स्ट्रेचिंग प्रोग्राम बनाया था, जिसे वह हर दिन और भी प्रभावी और ज़ोरदार बनाने के लिए बदलती रहती थी। यह प्रोग्राम सिर्फ़ उसके लिए था। वह इसे स्पोर्ट्स क्लब में इस्तेमाल नहीं करती थी, क्योंकि आम लोग इतना दर्द सहन नहीं कर सकते थे। वहाँ के ज़्यादातर प्रशिक्षक शिकायत करते थे।
इस दौरान, आओमामे रिकॉर्ड प्लेयर पर ग्योर्गी सेल द्वारा संचालित जनाचेक की सिम्फोनीटा सुन रही थी। यह रचना लगभग पच्चीस मिनट की थी, जो उसकी सभी मांसपेशियों को प्रभावी ढंग से थका देने के लिए काफी थी। न बहुत लंबी, न बहुत छोटी। बिल्कुल सही। जब रचना समाप्त हुई, रिकॉर्ड बंद हो गया और उसका हाथ स्वतः ही अपनी मूल स्थिति में लौट आया, तो आओमामे को ऐसा लगा जैसे उसका सिर और शरीर किसी चिथड़े की तरह निचोड़ा गया हो।
वह सिम्फोनीटा की हर छोटी से छोटी बात जानती थी। मांसपेशियों को चरम सीमा तक खींचते हुए वह जो संगीत सुनती थी, उससे उसे अजीब तरह की शांति मिलती थी। यातना

सहना और साथ ही यातना सहना। बल प्रयोग करना और साथ ही विवश होना। यही आत्म-केंद्रित स्वायत्तता थी जो वह चाहती थी, जिससे उसे सुकून मिलता था। और जनाचेक की सिम्फोनीटा पृष्ठभूमि संगीत के रूप में एकदम सही थी।
*

रात के दस बजने से कुछ ही देर पहले फोन की घंटी बजी। आओमामे ने रिसीवर उठाया और तामारू की आवाज सुनी।
“कल के लिए तुम्हारी क्या योजनाएँ हैं?” उसने पूछा।
मैं साढ़े छह बजे काम खत्म करता हूँ।
"क्या आप बाद में यहाँ आ सकते हैं?"
- हाँ।
"ठीक है," उसने जवाब दिया, और उसे अपनी डायरी में नोट्स बनाते हुए सुना जा सकता था।
“वैसे, क्या तुमने एक और कुत्ता पाला है?” आओमामे ने पूछा।
"कुत्ता? जी हां, मैंने एक मादा जर्मन शेफर्ड चुनी है। मुझे अभी तक उसके स्वभाव के बारे में पूरी तरह से पता नहीं है, लेकिन उसे बुनियादी प्रशिक्षण दिया गया है और वह आपकी बात सुनती है। मैं उसे दस दिन पहले लाई थी और वह काफी हद तक यहां के माहौल में ढल गई है। और उसके आने के बाद से महिलाएं भी शांत महसूस करती हैं।"
- कितना बढ़िया!
"यह तो सामान्य कुत्ते का खाना है। इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।"
— आम तौर पर, जर्मन शेफर्ड नस्ल के कुत्ते पालक नहीं खाते हैं।
"दूसरा वाला तो काफी अजीब था। और कुछ मौसमों में पालक सस्ता भी नहीं होता था," तमारू ने उदास स्वर में बड़बड़ाते हुए कहा, फिर कुछ पल की चुप्पी के बाद उसने विषय बदल दिया। "आज तारे देखने में बहुत सुंदर हैं।"
आओमामे ने थोड़ा सा भौंहें सिकोड़ीं।
"सितारों की बात क्यों कर रहे हो?"
मुझे कभी-कभी उनके बारे में बात करने का अधिकार है।
"ज़रूर," आओमामे ने कहा। "लेकिन तुम बिना किसी वजह के फ़ोन पर प्रकृति की सुंदरता के बारे में बात करने वाले इंसान नहीं हो," उसने मन ही मन सोचा। तामारू कुछ देर चुप रहा, फिर बोला:
"कुछ देर पहले आपने फोन पर तारों का ज़िक्र किया था। क्या आपको याद है? तब से मैं उनके बारे में सोच रहा हूँ। और अभी थोड़ी देर पहले मैंने आसमान देखा, वहाँ एक भी बादल नहीं था, और तारे बहुत सुंदर लग रहे थे।"
और चाँद? कितने चाँद थे? आओमामे पूछने ही वाली थी कि उसने खुद को रोक लिया। यह बहुत खतरनाक था। कुछ देर पहले, तमारू ने उसे अपने बारे में बताया था। कि कैसे वह एक अनाथ के रूप में पला-बढ़ा, जिसने अपने माता-पिता को नहीं जाना, अपनी राष्ट्रीयता के बारे में। यह पहली बार था जब उसने उसे इतना बोलते सुना था। और वैसे भी, वह अपने स्वभाव से अपने बारे में ज्यादा नहीं बोलता था। वह आओमामे को बहुत पसंद करता था और उसके सामने बेफिक्र हो गया था। लेकिन वह एक पेशेवर था और अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए सबसे छोटा रास्ता अपनाने के लिए प्रशिक्षित था। ज्यादा न बोलना ही बेहतर था।

"मैं काम खत्म कर रही हूं और मुझे लगता है कि मैं लगभग सात बजे वहां पहुंच जाऊंगी," उसने कहा।
"यह अच्छी बात है। मुझे लगता है कि आपको भूख लगी होगी। रसोइया कल छुट्टी पर है और हम आपको ठीक से खाना नहीं दे सकते, लेकिन अगर आप सैंडविच खाना चाहें तो मैं खुद बना सकती हूँ।"
- धन्यवाद।
मुझे आपका ड्राइविंग लाइसेंस, पासपोर्ट और स्वास्थ्य बीमा चाहिए। इन्हें कल मेरे पास ले आइए। और अपने घर की चाबी की एक प्रति भी ले आइए। क्या आप ला सकते हैं?
- मुझे भी ऐसा ही लगता है।
"और एक बात और। दूसरे मामले के बारे में, मैं आपसे अकेले में बात करना चाहूंगा। कृपया मैडम से बात खत्म करने के बाद थोड़ा समय निकालें।"
"दूसरी बात?"
तामारू कुछ देर तक चुप रहा। चारों ओर रेत की बोरी जितनी गहरी खामोशी छा गई। "तुम मुझसे कुछ लाने को कह रहे थे। क्या तुम भूल गए?"
"बिल्कुल नहीं," आओमामे ने जल्दी से कहा। वह अभी भी दो महीनों के सदमे से उबर नहीं पाई थी।
"कल, सात बजे," तामारू ने कहा और फोन काट दिया।
*

अगली शाम, चंद्रमाओं की संख्या में कोई बदलाव नहीं हुआ था। जब आओमामे काम खत्म करके और जल्दी से नहाकर स्पोर्ट्स क्लब से निकली, तो पूर्वी आकाश में दो धुंधले चंद्रमा दिखाई दे रहे थे, जहाँ हल्की सी रोशनी अभी भी बाकी थी। आओमामे गाइएन-निशी बुलेवार्ड के ऊपर बने पैदल पुल पर रुक गई और रेलिंग से टेक लगाकर उन्हें देखने लगी। कोई और उन्हें ध्यान से नहीं देख रहा था। वहाँ से गुजरने वाले लोग उसे वहाँ आकाश में टकटकी लगाए देखकर आश्चर्य से उसकी ओर देख रहे थे। वे सबवे स्टेशन की ओर जल्दी-जल्दी जा रहे थे, आकाश पर ज़रा भी ध्यान नहीं दे रहे थे। चंद्रमाओं को देखते हुए, आओमामे को वही सुस्ती फिर से महसूस होने लगी जो उसे कल महसूस हुई थी। बस बहुत हो गया, मुझे इन्हें इतना घूरना बंद करना होगा, उसने मन ही मन सोचा। इनका मुझ पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ रहा है। लेकिन चाहे वह अपनी नज़रें हटाने की कितनी भी कोशिश करे, उसे अपनी त्वचा पर उनकी निगाहें महसूस हो रही थीं। मैं देखे बिना नहीं रह सकती, क्योंकि वे मुझे देख रहे हैं, उसने सोचा। वे जानते हैं कि मैं क्या करने वाली हूँ।
*

महिला और आओमामे ने पुराने, खूबसूरती से सजाए गए कपों में गरमागरम, कड़क कॉफी पी। महिला ने अपने लिए दूध की सिर्फ एक बूंद डाली और बिना हिलाए पी गई। बिना चीनी के। आओमामे हमेशा की तरह बिना दूध के कॉफी पीना पसंद करती थी। तामारू अपने वादे के मुताबिक कुछ सैंडविच लाया था। उन्हें छोटे-छोटे टुकड़ों में काटा गया था, जिन्हें एक बार में निगलना आसान था। आओमामे ने कुछ टुकड़े लिए। वे सादे थे, काले ब्रेड से बने थे जिनमें खीरा और पनीर था, लेकिन उनका स्वाद लाजवाब था। तामारू को सादे, लेकिन बेहद स्वादिष्ट व्यंजन बनाना आता था। वह चाकू चलाने में माहिर था और सभी सामग्रियों को उचित आकार और मोटाई में काटता

था। उसे पता था कि उन्हें किस क्रम में तैयार करना है, और इसका असर व्यंजन के स्वाद पर अद्भुत रूप से पड़ता था।
“क्या आपने अपना सामान पैक कर लिया है?” महिला ने पूछा।
मैंने अपने पुराने कपड़े और किताबें दान कर दीं। मैंने अपनी नई जिंदगी के लिए जरूरी सामान एक आसानी से ले जाने वाले बैग में पैक कर लिया। बिजली के उपकरण, खाना पकाने के बर्तन, बिस्तर और चादरें व बर्तन घर में ही रह गए।
"बाकी सब हम संभाल लेंगे। किराये के समझौते या अन्य छोटी-मोटी औपचारिकताओं की चिंता मत कीजिए। आपको बस अपना सामान पैक करना है ताकि आप उसे लेकर जा सकें।" "क्या मुझे ऑफिस में भी कुछ नहीं कहना चाहिए? ताकि अगर मैं अचानक एक दिन गायब हो जाऊं तो उन्हें शक न हो।"
महिला ने धीरे से कप को मेज पर रख दिया।
"आपको उस बारे में भी चिंता करने की जरूरत नहीं है," उसने कहा।
ओमामे ने चुपचाप सिर हिलाया। उसने एक और सैंडविच लिया और कॉफी की एक घूंट पी।
“वैसे, क्या आपके बैंक में पैसे हैं?” महिला ने पूछा।
"हां, मेरे बचत खाते में छह लाख येन हैं। और दो मिलियन येन की सावधि जमा भी है।"
महिला ने राशि पर ध्यानपूर्वक विचार किया।
"आप बचत खाते से चार लाख येन तक की राशि कई किस्तों में निकाल सकते हैं। लेकिन जमा राशि को हाथ न लगाएं। अभी इसे निकालना उचित नहीं होगा। वे शायद अभी आपके निजी जीवन की जांच कर रहे हैं। हमें यथासंभव सावधानी बरतनी चाहिए। बाकी जानकारी मैं बाद में दूंगा। क्या आपके पास कोई अन्य संपत्ति है?"
— जो कुछ मुझे आपसे मिला, उसे मैंने बैंक में तिजोरी में रख दिया।
"उन्हें वहां से बाहर निकालो, लेकिन उन्हें घर में मत रखो। उन्हें रखने के लिए कोई उपयुक्त जगह ढूंढो।"
- मैं समझता हूँ।
"फिलहाल मैं आपसे बस इतना ही करने का अनुरोध करता हूँ। और हमेशा की तरह व्यवहार करें। अपनी जीवनशैली में किसी भी तरह का बदलाव न करें, ऐसा कुछ भी न करें जिससे लोगों का ध्यान आकर्षित हो। और फोन पर महत्वपूर्ण बातों पर चर्चा न करें।"
अपनी बात समाप्त करने के बाद, महिला अपनी कुर्सी पर गहरी नींद में धंस गई, मानो उसने अपने सम्मान के सभी संसाधनों को समाप्त कर दिया हो।
“क्या तारीख तय हो गई है?” आओमामे ने पूछा।
“दुर्भाग्यवश, मुझे अभी पता नहीं है,” महिला ने उत्तर दिया। “हम किसी के संपर्क करने का इंतज़ार कर रहे हैं। सारी व्यवस्थाएँ हो चुकी हैं, लेकिन उनका कार्यक्रम अंतिम समय तक तय नहीं होता। इसमें एक हफ़्ता या एक महीना लग सकता है। जगह भी अभी तय नहीं हुई है। मुझे पता है इससे आप चिंतित हैं, लेकिन कृपया धैर्य रखें और प्रतीक्षा करते रहें।”
"मुझे इंतज़ार करने में कोई आपत्ति नहीं है," आओमामे ने कहा। "लेकिन क्या आप मुझे मोटे तौर पर बता सकते हैं कि चीजें कैसे आगे बढ़ेंगी?"
आप उनके साथ स्ट्रेचिंग सेशन करने वाले हैं। जैसा कि आप आमतौर पर करते हैं। उन्हें कुछ स्वास्थ्य समस्याएं हैं। कोई गंभीर या जानलेवा समस्या नहीं है, लेकिन ऐसा लगता है कि उन्हें बहुत कुछ सीखना बाकी है। उन्होंने अपनी "समस्या"

को हल करने के लिए हर तरह के उपाय आजमाए हैं। न केवल पारंपरिक चिकित्सा, बल्कि एक्यूप्रेशर, एक्यूपंक्चर, मालिश, सब कुछ। लेकिन अब तक किसी से भी कोई स्पष्ट परिणाम नहीं मिला है। यह शारीरिक "समस्या" लीडर की एकमात्र कमजोरी है, जो अब हमारे लिए एक अवसर बन गई है।
महिला के पीछे की खिड़कियाँ पर्दों से ढकी हुई थीं। चाँद दिखाई नहीं दे रहे थे, लेकिन आओमामे अपनी त्वचा पर उनकी ठंडी निगाहों को महसूस कर सकती थी। उनकी मिलीभगत वाली चुप्पी कमरे में घुल रही थी।
— संप्रदाय के अंदर हमारा एक मुखबिर है, जिसके ज़रिए मैंने उन्हें यह जानकारी दी कि आप मांसपेशियों को फैलाने में माहिर हैं। यह ज़्यादा मुश्किल नहीं था, क्योंकि आप यही तो हैं। और अब वे आपमें बहुत दिलचस्पी ले रहे हैं। पहले तो वे आपको यामानाशी स्थित संप्रदाय के मुख्यालय में बुलाना चाहते थे, लेकिन उन्हें बताया गया कि संप्रदाय आपको किसी भी हालत में शहर छोड़ने की अनुमति नहीं देता। खैर, वह व्यक्ति महीने में एक बार व्यापार के सिलसिले में टोक्यो आता है। और ध्यान आकर्षित न करने के लिए, वह शहर के एक होटल में ठहरता है। आप उसके होटल में मांसपेशियों को फैलाने के सत्र के लिए जाएंगे। और फिर आप वही करेंगे जो आप आमतौर पर करते हैं।
ओमामे उस दृश्य की कल्पना करती है। होटल का कमरा। आदमी योगा मैट पर लेटा है, और वह उसकी मांसपेशियों पर काम कर रही है। उसका चेहरा दिखाई नहीं दे रहा है।
पेट के बल लेटे होने के कारण आदमी के सिर का पिछला हिस्सा पूरी तरह से खुला है। ओमामे हाथ बढ़ाकर अपने बैग से छेनी निकालती है।
“क्या हम कमरे में अकेले रह सकते हैं?” उसने पूछा।
महिला ने सिर हिलाया।
— नेता इस कमजोरी को अन्य विश्वासियों के सामने प्रकट न करने का प्रयास करता है। इसलिए आप अकेले रह जाएंगे।
क्या उन्हें मेरा नाम और कार्यस्थल पहले से ही पता है?
"वे बहुत सतर्क लोग हैं। उन्होंने आपकी पूरी तरह से जाँच कर ली है। लेकिन ऐसा लगता है कि उन्हें कोई समस्या नहीं मिली है। कल मुझे बताया गया था कि वे चाहते हैं कि आप उस होटल में जाएँ जहाँ वे ठहरे हुए हैं। जगह और समय तय होते ही बता दिए जाएँगे।"
"लेकिन अगर वे मुझे यहां आते हुए देख लें तो क्या उन्हें आप लोगों से मेरे संबंध होने का शक नहीं होगा?"
मैं उस स्पोर्ट्स क्लब का सदस्य हूँ जहाँ आप काम करते हैं, और हम घर पर निजी ट्यूशन भी देते हैं, बस इतना ही। उनके पास यह सोचने का कोई कारण नहीं है कि हमारे बीच कोई और संबंध है।
ओमामे ने सिर हिलाया।
जब नेता संप्रदाय के मुख्यालय से निकलते हैं, तो आमतौर पर उनके साथ दो अंगरक्षक होते हैं। दोनों अनुयायी हैं और कराटे में ब्लैक बेल्ट धारक हैं। मुझे नहीं पता कि वे हथियारबंद हैं या नहीं, लेकिन वे सक्षम हैं। वे प्रतिदिन अभ्यास करते हैं। हालांकि, तमारू की राय में, वे मूल रूप से सिर्फ नौसिखिए हैं।
"क्या मैं तामारू-सान से अलग हूँ?"

हां। तमारू आत्मरक्षा बलों की कमांडो टुकड़ियों में था। उसे लक्ष्य हासिल करने के लिए जो भी आवश्यक हो, उसे तुरंत और बिना किसी झिझक के लागू करने का प्रशिक्षण मिला है। वह किसी भी लक्ष्य के सामने संकोच नहीं करता। नौसिखिए तो संकोच करते हैं। खासकर अगर वह कोई युवती हो।
महिला ने अपना सिर कुर्सी की पीठ पर टिकाया और आह भरी। फिर वह सीधी खड़ी हुई और आओमामे की आँखों में सीधे देखने लगी।
"जब आप नेता से बात करेंगे, तो दो अंगरक्षक बगल के कमरे में इंतज़ार करेंगे। आपको उनके साथ लगभग एक घंटा अकेले बिताने का मौका मिलेगा। यही व्यवस्था हम अभी कर रहे हैं। हालांकि, मौके पर असल में क्या होगा, यह कोई नहीं जानता। विवरण किसी भी समय बदल सकते हैं। नेता आखिरी समय तक अपना कार्यक्रम गुप्त रखते हैं।"
- उसकी क्या उम्र है?
"लगभग पचपन वर्ष का और लंबा। दुर्भाग्य से, हमें अभी तक उसके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है।"
*

तामारू हॉल में इंतज़ार कर रहा था। आओमामे ने उसे घर की चाबी, ड्राइविंग लाइसेंस, पासपोर्ट और स्वास्थ्य बीमा का दस्तावेज़ दिया। तामारू पीछे गया और दस्तावेज़ों की प्रतियां बनाईं। उसने उन्हें जांचा और फिर मूल दस्तावेज़ आओमामे को लौटा दिए। इसके बाद वह उसे अपने कमरे में ले गया, जो मुख्य द्वार के बगल में था। यह एक छोटा, चौकोर कमरा था, जिसमें कोई सजावटी सामान नहीं था। इसमें बगीचे की ओर एक छोटी सी खिड़की थी। दीवार पर लगा एयर कंडीशनर धीमी आवाज़ में चल रहा था। तामारू ने आओमामे को लकड़ी के स्टूल पर बैठने के लिए कहा और वह अपनी मेज पर रखे स्टूल पर बैठ गया। दीवार पर चार मॉनिटर लगे हुए थे। कैमरों का कोण आवश्यकतानुसार समायोजित किया जा सकता था। उतने ही वीडियो कैमरे चल रहे दृश्यों को रिकॉर्ड कर रहे थे। स्क्रीन पर बाड़ के बाहर का इलाका दिखाया जा रहा था। सबसे दाहिनी ओर वाली स्क्रीन पर उस आश्रय का दरवाजा दिख रहा था जहां महिलाएं रहती थीं। नया कुत्ता भी जमीन पर लेटा हुआ दिखाई दे रहा था। वह पिछले कुत्ते से छोटा था।
"टेपों पर कुत्ते की मौत का कोई जिक्र नहीं है," तामारू ने आओमामे के सवाल का अनुमान लगाते हुए कहा। उस समय वह बंधा हुआ नहीं था। और चूंकि वह खुद को खोल नहीं सका, इसका मतलब है कि किसी ने उसे मारा है।
— कोई ऐसा व्यक्ति जिस पर कुत्ता नहीं भौंकेगा।
- एकदम सही।
- अजीब।
तामारू ने सिर हिलाया, लेकिन कुछ नहीं कहा। वह भी कई विकल्पों पर सोच-विचार करते-करते थक गया था। और उस समय उसके पास कहने के लिए कुछ नहीं था। फिर उसने हाथ बढ़ाकर बगल वाली अलमारी का एक दराज खोला और उसमें से एक काला प्लास्टिक का थैला निकाला। थैले में एक फीका नीला तौलिया था, जिसे उसने खोला और अंदर से काली चमक वाली एक धातु की वस्तु निकली। यह एक छोटी स्वचालित पिस्तौल थी। तामारू ने बिना कुछ कहे इसे आओमामे को दे दिया। उसने चुपचाप उसे ले लिया। उसने उसे हाथ में उठाकर देखा। वह दिखने में जितनी भारी लग रही थी, उससे कहीं

हल्की थी। यह सोचकर आश्चर्य होता है कि इतनी हल्की वस्तु किसी की जान कैसे ले सकती है।
"तुमने अभी-अभी दो बहुत बड़ी गलतियाँ की हैं। क्या तुम्हें पता है कौन सी?" तामारू ने उससे पूछा।
ओमामे ने अपने कार्यों पर पुनर्विचार किया, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसने क्या गलती की है। उसने तो बस बंदूक की नोक पर बंदूक छीनी थी।
"मुझे नहीं पता," उसने जवाब दिया।
जब आपने बंदूक उठाई, तो आपने यह नहीं देखा कि वह भरी हुई है या नहीं, और अगर भरी हुई थी, तो यह भी नहीं देखा कि उसका सेफ्टी लॉक लगा हुआ है या नहीं। दूसरा, बंदूक उठाने के बाद आपने उसे एक पल के लिए मेरी तरफ तान दिया। ये दोनों ही बातें पूरी तरह से मना हैं। और जब आपका गोली चलाने का इरादा न हो, तो ट्रिगर पर उंगली न रखना ही बेहतर है।
"मैं समझ गया। मैं इसका ध्यान रखूंगा।"
आपातकाल को छोड़कर, जब भी आप बंदूक रखें, किसी को सौंपें या अपने साथ रखें, तो उसमें गोली न भरी होनी चाहिए। फिर भी, जब आप कोई बंदूक देखें, तो उसे इस तरह रखें जैसे वह भरी हुई हो। जब तक आपको यकीन न हो जाए कि वह खाली है। बंदूकें लोगों को चोट पहुँचाने या जान से मारने के लिए बनाई जाती हैं। आप कभी भी ज़रूरत से ज़्यादा सावधान नहीं हो सकते। कुछ लोग मेरी इस सावधानी पर हँस सकते हैं। लेकिन बेवकूफी भरी दुर्घटनाएँ तो होती ही हैं, और जो लोग मरते हैं या गंभीर रूप से घायल होते हैं, वे वही लोग होते हैं जो ज़रूरत से ज़्यादा सावधान रहने वालों पर हँसते हैं।
तामारू ने अपनी कोट की जेब से एक प्लास्टिक की थैली निकाली। उसके अंदर सात एकदम नए कारतूस थे, जिन्हें उसने मेज पर रख दिया।
"जैसा कि आप देख सकते हैं, इसमें अभी गोलियां भरी नहीं हैं। मैगज़ीन भरी हुई है, लेकिन खाली है। बैरल में भी कोई गोली नहीं है।"
ओमामे ने सिर हिलाया।
"इसे मेरी तरफ से एक उपहार समझें। बस, अगर आप इसका इस्तेमाल न करें तो कृपया इसे वापस कर दें।"
"बेशक," आओमामे ने रूखे स्वर में कहा। "लेकिन इसे पाने के लिए तुम्हें कीमत चुकानी पड़ी, है ना?"
"इसकी चिंता मत करो। तुम्हें और भी चीजों की चिंता करनी होगी। लेकिन चलो देखते हैं। क्या तुमने कभी बंदूक चलाई है?"
"कभी नहीं," आओमामे ने सिर हिलाते हुए जवाब दिया।
सच तो यह है कि पिस्तौल की तुलना में रिवॉल्वर चलाना ज़्यादा आसान होता है। खासकर शौकिया निशानेबाजों के लिए। इसका मैकेनिज़्म सरल है, इसे संभालना आसान है और इसमें गलतियाँ होने की संभावना भी कम होती है। वहीं, ज़्यादा उन्नत रिवॉल्वर भारी-भरकम होती है और उसे ले जाना मुश्किल होता है। इसलिए, हमारे पास जो रिवॉल्वर है, वह बिल्कुल सही है। हेकलर एंड कोच एचके4। जर्मनी में बनी इस रिवॉल्वर का वज़न कारतूस के बिना 480 ग्राम है। यह छोटी और हल्की है, लेकिन इसका कैलिबर 9 मिलीमीटर है और यह बहुत शक्तिशाली है। इसका रिकॉइल भी कम है। इससे लंबी दूरी पर सटीक निशाना लगाने की उम्मीद न करें, लेकिन बाकी ज़रूरतों के लिए यह बिल्कुल ठीक है। हेकलर एंड कोच युद्ध के बाद स्थापित एक हथियार

कंपनी है, लेकिन यह एचके4 प्रतिष्ठित माउज़र एचएससी पर आधारित है, जो युद्ध से पहले इस्तेमाल में थी। इसका उत्पादन 1968 से हो रहा है और यह आज भी इस्तेमाल में है। इसकी मांग बनी हुई है। यह नई तो नहीं है, लेकिन इसे एक समझदार व्यक्ति ने इस्तेमाल किया है जिसने इसकी अच्छी तरह देखभाल की है। पिस्तौलें कारों की तरह होती हैं। अच्छी हालत में मौजूद सेकंड-हैंड चीज़ पर आप बिल्कुल नई चीज़ की तुलना में ज़्यादा भरोसा कर सकते हैं।
तामारू ने आओमामे से बंदूक ली और उसे इसका इस्तेमाल करना सिखाया। सेफ्टी कैच को कैसे लगाना और हटाना है, या मैगज़ीन को कैसे निकालना और लगाना है।
— मैगज़ीन निकालते समय सेफ्टी कैच लगा होना चाहिए। लैच को खींचकर निकालने के बाद, चैंबर को पीछे धकेलें और चैंबर में मौजूद कारतूस बाहर निकल आएगा। अब कुछ भी बाहर नहीं आया है क्योंकि यह लोड नहीं है। चैंबर खुला रहता है, इसलिए इसे बंद करने के लिए ट्रिगर दबाएं। इस समय यह कॉक हो जाता है। ट्रिगर को दोबारा दबाएं और फायरिंग पिन नीचे चला जाएगा। अब आप मैगज़ीन लगा सकते हैं।
तामारू ने कुशलता और तेज़ी से सारी हरकतें कीं। फिर उसने धीरे-धीरे हर हरकत को दोहराया। आओमामे उसे तल्लीन होकर देखती रही।
- कोशिश करना!
ओमामे ने सावधानीपूर्वक मैगज़ीन को हटाया, खाली कारतूस को बाहर निकाला, चैंबर को खाली किया, फायरिंग पिन को छोड़ा और मैगज़ीन को वापस लगा दिया।
"ठीक है," तमारू ने कहा, फिर उसने बंदूक उठाई, मैगज़ीन निकाली, ध्यान से सात कारतूस भरे और तेज़ धातुई आवाज़ के साथ उसे वापस लगा दिया। उसने स्लीव को खींचा, जिससे एक कारतूस चैंबर में चला गया। फिर उसने बंदूक के बाईं ओर लगे कैच को खोलकर उसे सुरक्षित कर दिया।
"जो तुमने पहले किया, वही करो, लेकिन इस बार पूरी तरह से भरी हुई बंदूक के साथ। इसमें पहले से ही एक गोली भरी हुई है। सेफ्टी लॉक लगा हुआ है, लेकिन फिर भी इसे किसी पर तानना मना है," तामारू ने कहा।
ओमामे ने भरी हुई बंदूक उठाई और महसूस किया कि अब वह पहले जितनी हल्की नहीं रही। उसमें मौत का एहसास था। उसने सोचा, यह जानबूझकर मारने के लिए बनाया गया एक औजार है, और उसे अपनी बगलों से पसीना टपकता हुआ महसूस हुआ।
ओमामे ने सुनिश्चित किया कि सेफ्टी लॉक लगा हुआ है, कुंडी दबाई, मैगज़ीन निकाली और उसे मेज पर रख दिया। फिर उसने चैंबर को खींचा और चैंबर में मौजूद गोली बाहर निकल गई। वह लकड़ी के फर्श पर ज़ोर से गिरी। उसने चैंबर को बंद करने के लिए ट्रिगर दबाया और फिर फायरिंग पिन को छोड़ने के लिए दोबारा दबाया। फिर उसने कांपते हाथों से फर्श से नौ मिलीमीटर की गोली उठाई। उसका गला सूख रहा था और हर सांस के साथ सीने में दर्द हो रहा था।
"पहली बार के लिए बुरा नहीं है," तमारू ने फर्श पर गिरी कारतूस को वापस मैगज़ीन में डालते हुए कहा। "लेकिन तुम्हें और अभ्यास करने की ज़रूरत है।" तुम्हारा हाथ काँप रहा है। दिन में कई बार मैगज़ीन निकालने और डालने का अभ्यास करो और बंदूक को छूने की आदत डालो। तुम्हें इसे तेज़ी से, जैसे मैंने तुम्हें दिखाया, अपने आप करना आना चाहिए। अंधेरे में भी इसे संभालना आना चाहिए। तुम्हारे मामले में, तुम्हें मैगज़ीन बदलने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, लेकिन बंदूक चलाते समय ये सबसे बुनियादी हरकतें हैं। तुम्हें इनकी आदत डालनी होगी।

"क्या मुझे शूटिंग का अभ्यास करने की भी जरूरत नहीं है?"
"अच्छा, तुम किसी को गोली नहीं मारोगे। सिर्फ खुद को, है ना?"
ओमामे ने सिर हिलाया।
"तो फिर आपको अभ्यास करने की ज़रूरत नहीं है। आपको बस इतना पता होना चाहिए कि कैसे लोड करना है, कैसे सेफ्टी लॉक हटाना है और ट्रिगर का वज़न कितना है। आप अभ्यास करने कहाँ जा रहे थे?"
ओमामे ने अपना सिर हिलाया। उसके मन में कोई खास जगह नहीं थी।
"वैसे, आप खुद को गोली मारने की योजना कैसे बना रहे थे? मुझे थोड़ा दिखाइए।" तामारू ने मैगज़ीन लगाई, यह सुनिश्चित किया कि सेफ्टी लॉक लगा हुआ है, और बंदूक आओमामे को सौंप दी।
उन्होंने कहा, "सेफ्टी मोड चालू है।"
ओमामे ने बंदूक की नली अपनी कनपटी पर तान दी। उसे स्टील की ठंडक महसूस हुई। तमारू ने उसकी ओर देखा, फिर कई बार अपना सिर हिलाया।
मेरी सलाह ये है। कनपटी पर गोली मत मारो। कनपटी से खुद को गोली मारना जितना तुम सोचते हो उससे कहीं ज्यादा मुश्किल है। गोली लगने के समय तुम्हारा हाथ कांप रहा होता है, और इससे गोली की दिशा बदल जाती है। खोपड़ी में छेद होने पर ही मरने से बचने का खतरा बढ़ता है। तुम ऐसा नहीं चाहोगे, है ना?
ओमामे ने चुपचाप सिर हिलाया।
युद्ध समाप्त होने के बाद, जब हिदेकी तोजो अमेरिकी सेना द्वारा पकड़े जाने वाले थे, तो उन्होंने खुद को गोली मारने की इच्छा जताई। उन्होंने गोली चलाई, लेकिन वह उनके पेट में लगी और उनकी मृत्यु नहीं हुई। आखिर आप एक उच्च पदस्थ सैन्य अधिकारी हैं, तो आप बंदूक से खुद को मारने में सक्षम नहीं हो सकते! खैर, उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाया गया, अमेरिकी डॉक्टरों ने उनका अच्छे से इलाज किया, वे ठीक हो गए, फिर उन पर मुकदमा चलाया गया और उन्हें फांसी की सजा सुनाई गई। यह एक भयानक मौत है। एक इंसान के लिए, उसकी मृत्यु का तरीका बहुत मायने रखता है। आप यह नहीं चुन सकते कि आपका जन्म कैसे हुआ, लेकिन आप यह चुन सकते हैं कि आपकी मृत्यु कैसे हुई।
आओमामे ने अपने होंठ काट लिए।
"सबसे सुरक्षित तरीका यह है कि पाइप को अपने मुंह में डालें और इंजेक्शन लगाकर अपने दिमाग को उड़ा दें। इसे देखो।"
तामारू ने उससे बंदूक ले ली और उसे दिखाई। आओमामे जानती थी कि सुरक्षा घेरा लगा हुआ है, फिर भी उसे देखकर वह घबरा गई। उसकी सांसें तेज़ हो गईं, मानो उसके गले में कुछ अटक गया हो।
लेकिन यह तरीका भी शत प्रतिशत अचूक नहीं है। मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जो मरा नहीं, लेकिन उसके साथ बहुत भयानक घटना घटी। हम दोनों सेल्फ-डिफेंस फोर्सेज में साथ थे। उसने ट्रिगर में चम्मच फंसाया, राइफल की नली अपने मुंह में डाली और अपने पैर के अंगूठे से गोली चलाई। लेकिन शायद नली हिल गई होगी। वह मरा तो नहीं, लेकिन दस साल तक अचेत अवस्था में रहा। जीवन समाप्त करना इतना आसान नहीं है। फिल्मों जैसा नहीं होता। फिल्मों में तो सब लोग बड़ी आसानी से आत्महत्या कर लेते हैं। बिना किसी दर्द के दुनिया से विदा हो जाते हैं। लेकिन असलियत में ऐसा नहीं होता। आप मरते नहीं, बिस्तर पर पड़े रहते हैं और दस साल तक कष्ट सहते हैं।

ओमामे ने चुपचाप सिर हिलाया।
तामारू ने मैगज़ीन और बंदूक से कारतूस निकाले और उन्हें वापस बैग में रख दिया। उसने बंदूक और कारतूस अलग-अलग आओमामे को सौंप दिए।
— यह लोड नहीं है।
ओमामे ने सिर हिलाया और उन्हें ले लिया।
"मेरा कहने का मतलब यह है कि जीवित रहने पर विचार करना ज्यादा बुद्धिमानी होगी। यह अधिक व्यावहारिक है। यही मेरी सलाह है।"
"मैं समझ गई," आओमामे ने रूखे स्वर में उत्तर दिया।
उसने मशीन के पुर्जे जैसी खुरदरी बंदूक उठाई और उसे एक दुपट्टे में लपेटकर अपने थैले में रख लिया। उसने कारतूस की थैली भी एक खाने में रख दी। थैले का वजन पाँच सौ ग्राम बढ़ गया, लेकिन उसका आकार नहीं बदला। बंदूक सचमुच छोटी थी। "शौकिया लोगों को इससे खिलवाड़ नहीं करना चाहिए," तामारू ने कहा। "मुझे अपने अनुभव से पता है कि यह ठीक नहीं है। लेकिन मुझे लगता है कि तुम इसे संभाल सकते हो। कई मायनों में तुम मेरे जैसे हो। मुश्किल समय में, तुम नियमों को खुद से ज़्यादा अहमियत देते हो।"
— ऐसा इसलिए है क्योंकि मेरा अपना व्यक्तित्व वास्तव में अस्तित्व में नहीं है।
तामारू कोई टिप्पणी नहीं करता।
“क्या आप आत्मरक्षा बलों में थे?” उसने पूछा।
"हां, सबसे कठिन यूनिट में। उन्होंने हमें चूहे, सांप और टिड्डे खाने को मजबूर किया। वे खाने लायक तो थे, लेकिन उनका स्वाद भी अच्छा नहीं था।"
और उसके बाद आपने क्या किया?
— तरह-तरह के काम। सुरक्षा और रखवाली, इस मामले में अंगरक्षक। या, बेहतर कहें तो, गोरिल्ला। मुझमें टीम भावना नहीं है और मैं व्यक्तिगत गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करता हूँ। थोड़े समय के लिए मुझे अंडरवर्ल्ड में शामिल होना पड़ा। मैंने वहाँ बहुत सी ऐसी चीजें देखीं जो दूसरों को जीवन भर में देखने को नहीं मिलतीं। लेकिन मैं डूबने से बच गया। मैं हमेशा सावधान रहता था कि कहीं फिसल न जाऊँ। मैं स्वभाव से बहुत सतर्क हूँ, और मुझे याकूज़ा पसंद नहीं हैं। इसीलिए, जैसा कि मैंने आपको बताया, मेरा रिकॉर्ड साफ़ है। उसके बाद मैं यहाँ आया, तमारू ने ज़मीन की ओर इशारा करते हुए कहा। और यहाँ मुझे शांति मिली। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि मेरे जीवन का लक्ष्य स्थिरता पाना है, लेकिन मैं यहाँ की अपनी आजीविका खोना नहीं चाहता, क्योंकि मनपसंद नौकरी मिलना आसान नहीं है। "बिल्कुल," आओमामे ने कहा। "क्या आप वाकई नहीं चाहते कि पैसा उस पर लगे?" "मुझे पैसों की ज़रूरत नहीं है," उसने सिर हिलाते हुए जवाब दिया। "यह दुनिया पैसों से ज़्यादा लेन-देन पर चलती है। मुझे कर्ज़ में रहना पसंद नहीं है, इसलिए मैं जितना हो सके उतना उधार देने की कोशिश करता हूँ।"
- धन्यवाद।
"अगर किसी भी तरह पुलिस आपसे पूछे कि आपको यह कहां से मिला, तो मेरा नाम मत बताना। ठीक है, अगर पुलिस आ गई, तो मैं पूरी तरह से इनकार कर दूंगा और एक शब्द भी नहीं बोलूंगा। लेकिन अगर इसमें उस महिला का हाथ लग गया, तो मेरी प्रतिष्ठा धूमिल हो जाएगी।"
— बेशक, मैं उन्हें कोई नाम नहीं देता।

तामारू ने अपनी जेब से कागज का एक मुड़ा हुआ टुकड़ा निकाला और आओमामे को दे दिया। उस पर एक आदमी का नाम लिखा हुआ था।
“4 जुलाई को, सेंडागाया स्टेशन के पास रेनॉयर कैफे में, आपने इस व्यक्ति से पचास हजार येन नकद देकर एक बंदूक और सात कारतूस लिए। आप बंदूक लेने की कोशिश कर रहे थे, और उसने यह बात सुन ली और आपसे संपर्क किया। अगर पुलिस उससे पूछताछ करती है, तो वह तुरंत सब कुछ कबूल कर लेगा। फिर उसे कुछ सालों के लिए जेल जाना पड़ेगा। आपको और कोई जानकारी देने की ज़रूरत नहीं है। अगर पुलिस यह पता लगा लेती है कि बंदूक किस रास्ते से हासिल की गई थी, तो वह बेदाग बच जाएगा। आपको शायद बंदूक और गोला-बारूद अधिनियम का उल्लंघन करने के लिए कुछ समय की निलंबित सजा मिलेगी।”
ओमामे ने कागज के टुकड़े पर लिखा नाम याद कर लिया और उसे तामारू को लौटा दिया, जिसने उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में फाड़कर कूड़ेदान में फेंक दिया।
"जैसा कि मैंने तुम्हें पहले भी बताया था," तामारू ने कहा, "मैं स्वभाव से बहुत सतर्क हूँ। मैं बहुत कम ही किसी से मदद मांगता हूँ, लेकिन उधार लेने के मामले में मैं कुछ भी उधार नहीं लेता। मैं कभी भी किस्मत के भरोसे नहीं रहता। और मेरी सबसे बड़ी इच्छा यही है कि तुम मेरी बंदूक बिना इस्तेमाल किए लौटा दो। इस तरह किसी को कोई तकलीफ नहीं होगी। कोई मरेगा नहीं, कोई घायल नहीं होगा, कोई जेल नहीं जाएगा।"
ओमामे ने सिर हिलाया।
— आपका मतलब है कि हमें चेखव की तकनीक को पूरी तरह उलट देना चाहिए?
"बिल्कुल सही। चेखव एक प्रतिभाशाली लेखक हैं, लेकिन ज़ाहिर है कि उनका तरीका ही एकमात्र विकल्प नहीं है। कहानी में दिखाई देने वाली सभी बंदूकों को चलाना ज़रूरी नहीं है," तामारू ने कहा, फिर मुंह बनाया, मानो उसे कुछ याद आ गया हो। "ओह, मैं कुछ ज़रूरी बात भूलने ही वाला था। मुझे आपको एक पेजर देना होगा।" तमारू ने दराज से एक छोटा सा उपकरण निकाला और उसे मेज पर रख दिया। इसमें एक धातु की क्लिप थी जिसे बेल्ट से जोड़ा जा सकता था। उसने रिसीवर उठाया और स्पीड डायल सूची से तीन अंकों का नंबर डायल किया। तीसरी घंटी बजने के बाद, पेजर रुक-रुक कर बजने लगा। तमारू ने आवाज़ तेज़ की, फिर एक बटन दबाकर आवाज़ बंद कर दी। उसने आंखें सिकोड़कर देखा कि कॉलर का नंबर डिस्प्ले पर दिख रहा है या नहीं, फिर उसने वह उपकरण आओमामे को दे दिया।
"मैं चाहूँगा कि आप इसे हमेशा अपने पास रखें," तामारू ने कहा। "या कम से कम, इससे ज़्यादा दूर मत जाना। जब इसकी घंटी बजे, तो समझ लेना कि मेरा कोई संदेश है। एक ज़रूरी संदेश। अगर मौसम के बारे में बात करने के लिए घंटी नहीं बजेगी, तो तुरंत डिस्प्ले पर दिख रहे नंबर पर किसी पेफोन से कॉल कर देना। और एक बात और: अगर आपके पास कोई सामान है, तो उसे शिंजुकु स्टेशन पर लॉकर में रख देना।" “शिंजुकु स्टेशन,” आओमामे ने दोहराया।
मुझे आपको यह बताने की जरूरत नहीं है कि अपने पास जितना हो सके कम चीजें रखें।
- यह।
*

घर लौटकर, आओमामे ने खिड़कियों पर पर्दे कसकर खींच दिए और अपने बैग से अपनी हेकलर एंड कोच एचके4 पिस्तौल और कारतूस निकाले। फिर वह मेज पर बैठ गई और खाली मैगज़ीन को निकालने और डालने का कई बार अभ्यास किया। हर बार अभ्यास करने से

उसकी गति बढ़ती गई। उसकी हरकतें तेज़ होने लगीं और उसका हाथ कांपना बंद हो गया। आओमामे ने पिस्तौल को एक पुरानी टी-शर्ट में लपेटकर एक जूते के डिब्बे में डाल दिया, जिसे उसने अलमारी के पीछे छिपा दिया। उसने कारतूसों का बैग हैंगर पर टंगे रेनकोट की अंदरूनी जेब में रख दिया। उसे बहुत प्यास लगी थी, इसलिए उसने फ्रिज से थोड़ी सी सीरियल टी निकाली और तीन गिलास पी ली। तनाव के कारण उसके कंधे अकड़ गए थे और बगल के पसीने की गंध सामान्य से अलग थी। उस समय उसके हाथ में बंदूक होने मात्र से ही दुनिया के प्रति उसका नजरिया थोड़ा बदल गया था। उसके आसपास का नजारा अजीब और अपरिचित सा लगने लगा था।
आओमामे ने कपड़े उतार दिए और पसीने की अप्रिय गंध से छुटकारा पाने के लिए गर्म पानी से स्नान किया।
"सभी बंदूकें चलाना ज़रूरी नहीं है," आओमामे ने नहाते हुए खुद से कहा। "बंदूक तो बस एक औज़ार है। और मैं किसी कहानी में नहीं जीती, मैं असल दुनिया में जीती हूँ, जो खामियों, विसंगतियों और निराशाजनक घटनाओं से भरी है।"
*

अगले दो सप्ताह बिना किसी घटना के बीत गए। आओमामे हमेशा की तरह स्पोर्ट्स क्लब जाती रही, जहाँ वह मार्शल आर्ट और स्ट्रेचिंग की कक्षाएं सिखाती थी। उसे अपनी जीवनशैली बदलने की अनुमति नहीं थी। उसने यथासंभव हर उस बात का पालन करने की कोशिश की जो उस महिला ने उसे बताई थी। शाम को वह घर आती, अकेले खाना खाती, फिर पर्दे खींचकर रसोई की मेज पर बैठ जाती और हेकलर एंड कोच एचके4 पिस्तौल से अभ्यास करती। उसका वजन, उसकी कठोरता, मशीन के तेल की गंध, उसकी आक्रामकता और उसकी खामोशी उसके जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी थी।
कभी-कभी वह अपने चेहरे पर स्कार्फ बांधकर अभ्यास करती थी। भले ही उसे कुछ दिखाई न देता हो, फिर भी वह जल्दी से मैगज़ीन लगा लेती, स्लाइड हटा लेती और कारतूस निकाल लेती थी। हर हरकत के साथ आने वाली लयबद्ध, साफ आवाज़ें उसके कानों को सुकून देती थीं। अंधेरे में, बंदूक की असल आवाज़ें और उसे महसूस होने वाली आवाज़ें धीरे-धीरे आपस में घुलमिल जाती थीं। उसके और उसकी हरकतों के बीच की सीमा धीरे-धीरे धुंधली होती गई, यहाँ तक कि पूरी तरह गायब हो गई। दिन में एक बार वह बाथरूम के शीशे के सामने खड़ी होकर भरी हुई बंदूक की नली अपने मुंह में डाल लेती थी। दांतों में धातु की कठोरता महसूस करते हुए वह ट्रिगर दबाने की कल्पना करती थी। बस इतना ही उसकी जिंदगी का अंत होने वाला था। अगले ही पल वह इस दुनिया से चली जाएगी। कुछ बातों का ध्यान रखना है, आओमामे शीशे में खुद से दोहराती रही। हाथ कांपने मत देना। झटके को अच्छे से संभालना। डरना मत। और सबसे बढ़कर, संकोच मत करना।
अगर मैं चाहूँ तो अभी कर सकती हूँ, उसने सोचा। मुझे बस अपनी उंगली को एक इंच अंदर की ओर खिसकाना है। ये तो मामूली बात है। और वो सच में ऐसा करना चाहती थी। लेकिन उसने अपना इरादा बदल दिया और बंदूक को अपने मुँह से निकालकर, उसमें से गोलियां निकाल दीं, सेफ्टी लॉक लगा दिया और उसे सिंक पर, हेयरब्रश और टूथपेस्ट ट्यूब के बीच में रख दिया। नहीं, अभी बहुत जल्दी है। मुझे पहले कुछ काम करने हैं।
*

वह हमेशा पेजर को अपनी बेल्ट पर बांध कर रखती थी, जैसा कि तामारू ने उसे बताया था। सोने जाते समय वह उसे अपनी अलार्म घड़ी के पास रख देती थी। अलार्म बजते ही

वह तुरंत प्रतिक्रिया देने के लिए तैयार रहती थी। लेकिन पेजर नहीं बजा। एक और हफ्ता इसी तरह बीत गया।
जूते के डिब्बे में रखी बंदूक, रेनकोट की जेब में सात कारतूस, साइलेंट पेजर, तेज और जानलेवा सुई वाली खास छेनी, यात्रा बैग में ठूंसी गई ज़रूरी चीज़ें। एक नया चेहरा जो उसका इंतज़ार कर रहा था और एक नई ज़िंदगी। शिंजुकु स्टेशन के लगेज लॉकर में बंद पैसों का गट्ठा। आओमामे ने गर्मी के दिनों में इन सभी चीज़ों के साथ समय बिताया। लोग छुट्टियों पर जा रहे थे, ज़्यादातर दुकानों के शटर बंद थे और सड़कें लगभग सुनसान थीं। गाड़ियाँ कम थीं और शहर में सन्नाटा पसरा हुआ था। कभी-कभी तो वह लगभग भूल ही जाती थी कि वह कहाँ है। क्या यही हकीकत है? वह सोचती थी। लेकिन अगर नहीं, तो उसे और कहीं देखने का भी ख्याल नहीं था। इसलिए, उसके पास इसे एकमात्र हकीकत मानकर स्वीकार करने और इससे बचने के लिए हर संभव कोशिश करने के अलावा कोई चारा नहीं था।
"मुझे मरने से डर नहीं लगता," आओमामे ने खुद को दिलासा दिया। "मुझे डर इस बात का है कि हकीकत मुझ पर हावी हो जाएगी। कि वह मुझे पीछे नहीं छोड़ेगी।"
उसने अपना सारा सामान व्यवस्थित कर लिया था। वह मानसिक रूप से भी तैयार थी। तमारू के संपर्क करते ही वह निकल सकती थी। लेकिन उसे कोई खबर नहीं मिली। अगस्त का महीना खत्म होने वाला था। जल्द ही गर्मी का मौसम समाप्त हो जाएगा और झींगुर अपना आखिरी गीत गाएंगे। हालांकि हर दिन बहुत लंबा लग रहा था, लेकिन एक महीना अविश्वसनीय रूप से जल्दी बीत गया था।
स्पोर्ट्स क्लब से लौटते हुए, आओमामे ने अपने पसीने से भीगे कपड़े लॉन्ड्री बास्केट में डाले और अब वह सिर्फ़ टैंक टॉप और शॉर्ट्स में थी। उस दोपहर बहुत तेज़ बारिश हुई थी। आसमान काला हो गया था, कंकड़ के आकार की बारिश की बूँदें ज़मीन पर धड़ाम से गिर रही थीं और बिजली कड़क रही थी। बारिश ने सड़कों को पानी से भर दिया था। सूरज फिर से निकला और उसे ज़ोर से भाप बना दिया, और शहर उमस भरी हवा से घिर गया, मानो लू चल रही हो। शाम को बादल फिर से छा गए और पूरे आसमान पर एक घना पर्दा डाल दिया। चाँद दिखाई नहीं दे रहा था।
रात का खाना बनाने से पहले, आओमामे को थोड़ा आराम करने की ज़रूरत महसूस हुई। उसने एक गिलास सीरियल टी पी और रसोई की मेज पर शाम का अखबार फैला दिया, साथ ही पहले से पकाए हुए कुछ एडामेम (एक प्रकार का मीठा व्यंजन) चबाने लगी। उसने पहले पन्ने से शुरू करके लेखों पर एक नज़र डाली, फिर एक-एक करके पन्ने पलटे। उसे कुछ भी दिलचस्प नहीं लगा। यह एक साधारण सा शाम का अखबार था। लेकिन जब उसने सामाजिक समाचारों वाला पन्ना खोला, तो अयुमी की तस्वीर उसकी नज़र में आ गई। आओमामे ने भौंहें सिकोड़ीं, उसकी सांस अटक गई।
यह नामुमकिन है, उसने मन ही मन सोचा। मैंने उसे किसी ऐसी लड़की समझ लिया जो दिखने में बिल्कुल उसके जैसी है। भला अयुमी के पास उस बड़े अखबार के लेख में अपनी तस्वीर छपवाने का क्या कारण होगा? लेकिन चाहे उसने उसे अलग नजरिए से देखने की कितनी भी कोशिश की, वह उस युवा पुलिसवाली का जाना-पहचाना चेहरा था। उसकी साथी जिसके साथ वह कभी-कभार छोटी-मोटी कामुक पार्टियाँ आयोजित करती थी। तस्वीर में वह मुस्कुरा रही थी। एक बनावटी, बनावटी मुस्कान। असल में, अयुमी अपने पूरे चेहरे से मुस्कुरा रही थी, कहीं ज्यादा स्वाभाविक और खुली हुई। ऐसा लग रहा था जैसे यह किसी आधिकारिक एल्बम के लिए खींची गई तस्वीर हो। उस बनावटीपन में कुछ चिंताजनक बात थी।

आओमामे को लेख पढ़ने का मन नहीं था, क्योंकि उसने तस्वीर के बगल में शीर्षक देखकर पहले ही अंदाजा लगा लिया था कि यह किस बारे में है। लेकिन वह इसे पढ़ने से खुद को रोक नहीं पाई। यही वास्तविकता थी। और वास्तविकता से बचा नहीं जा सकता, चाहे वह किसी भी विषय पर हो। आओमामे ने गहरी सांस ली और पढ़ना शुरू किया।
आयुमी नाकानो, 26 वर्ष। अविवाहित। टोक्यो के शिंजुकु वार्ड में रहती हैं। शिबुया के एक होटल के कमरे में उसकी हत्या कर दी गई थी, उसके बाथरोब की डोरी से गला घोंटकर उसकी जान ले ली गई थी। वह नग्न थी। उसके हाथ बिस्तर के पीछे हथकड़ी से बंधे हुए थे। उसका मुंह भी पट्टी से बांध दिया गया था ताकि वह चीख न सके। होटल का एक कर्मचारी दोपहर के भोजन से पहले कमरे की जाँच करने गया और उसने शव को देखा। महिला पिछली रात ग्यारह बजे से पहले एक पुरुष के साथ कमरे में आई थी और वह पुरुष सुबह होते ही चला गया था। कमरे का किराया पहले ही चुका दिया गया था। इतने बड़े शहर में यह कोई असामान्य बात नहीं थी। महानगरों में हर तरह के लोग इकट्ठा होते हैं और लोगों का गुस्सा भड़क उठता है। कभी-कभी यह हिंसा में बदल जाता है। अखबार हमेशा ऐसे मामलों से भरे रहते थे। लेकिन इस बार, स्थिति कुछ अलग थी। पीड़िता मेट्रोपॉलिटन पुलिस विभाग में कार्यरत एक महिला पुलिसकर्मी थी, और कामुक खेल के लिए इस्तेमाल की गई हथकड़ियां होटल द्वारा दी गई थीं। वे किसी सेक्स शॉप से खरीदी गई सस्ती हथकड़ियां नहीं थीं। स्वाभाविक रूप से, इस खबर ने पूरी दुनिया का ध्यान खींचा।

अध्याय 4 मुझे इसकी कामना नहीं करनी चाहिए

वह क्या कर रही है? क्या वह अभी भी विटनेस चर्च में है?
बेशक, हर किसी को अपनी पसंद के अनुसार विश्वास करने की स्वतंत्रता है, लेकिन टेंगो ने सोचा कि उस संप्रदाय से कोई संबंध न रखना ही बेहतर होगा। दखल देना उसका काम नहीं था, लेकिन वह लड़की साक्षी संप्रदाय का हिस्सा बनकर बिल्कुल भी खुश नहीं लग रही थी।
छात्र जीवन में, वह एक शराब की दुकान पर अंशकालिक काम करता था। तनख्वाह बुरी नहीं थी, लेकिन उसे भारी बक्से उठाने पड़ते थे और काम थका देने वाला था। दिन के अंत में, टेंगो, चाहे कितना भी मजबूत क्यों न हो, उसके पूरे शरीर के जोड़ों में दर्द होता था। संयोग से, वहाँ एक युवक भी काम करता था जो विटनेस चर्च के धर्म में पला-बढ़ा था। वह एक मिलनसार और विनम्र व्यक्ति था। वह टेंगो की ही उम्र का था और बिना शिकायत किए या कामचोरी किए कड़ी मेहनत करता था। एक बार काम के बाद, उसका एक सहकर्मी उसके साथ बीयर पीने गया। दोनों बचपन के दोस्त थे, लेकिन किसी कारणवश उन्होंने कई साल पहले अपना धर्म त्याग दिया था। दोनों ने ही वास्तविक दुनिया में कदम रख दिया था। लेकिन टेंगो को जो दिखाई दिया, उससे ऐसा लग रहा था कि उनमें से कोई भी जीवन का सामना करने के लिए तैयार नहीं था। जन्म से ही एक बंद समुदाय में पले-बढ़े होने के कारण, उन्हें बाहरी दुनिया के नियमों को स्वीकार करने और समझने में कठिनाई होती थी। कभी-कभी वे भ्रमित हो जाते थे और चीजों का सही आकलन नहीं कर पाते थे। अपने धर्म को त्यागने से उन्हें मुक्ति का अहसास हुआ, लेकिन साथ ही साथ यह संदेह भी हुआ कि शायद उन्होंने गलत चुनाव किया है।
टेंगो को उन पर तरस आया। अगर वे कम उम्र में, अपने व्यक्तित्व के पूरी तरह विकसित होने से पहले, वहाँ से भाग गए होते, तो उन्हें समाज में घुलने-मिलने के पर्याप्त अवसर मिल जाते, लेकिन वे यह मौका खो बैठे थे। उनके पास केवल दो ही विकल्प थे: या तो साक्षी चर्च के मूल्यों के अनुसार जीवन व्यतीत करें, या स्वयं को बलिदान करके अपने जीवन और सोच को अपने प्रयासों से बदलें। जब भी वह उनसे बात करता, उसे वह लड़की याद आ जाती। वह आशा करता कि उसे ऐसी कठिनाइयों का सामना न करना पड़े।
*

जब लड़की ने उसका हाथ छोड़कर पीछे मुड़े बिना ही जल्दी से कक्षा से बाहर निकल गई, तो टेंगो कुछ देर तक वहीं जम गया, कुछ भी करने में असमर्थ। लड़की ने उसे कसकर पकड़ रखा था। उसकी उंगलियों का स्पर्श उसकी हथेली पर स्पष्ट रूप से अंकित हो गया था और कई दिनों तक बना रहा। फिर, समय के साथ, वह धुंधला पड़ गया, लेकिन उसके दिल में वह हमेशा के लिए बस गया।
इस घटना के कुछ ही समय बाद, उसने पहली बार वीर्यपात किया। उसके खड़े लिंग के सिरे से पेशाब से ज़्यादा गाढ़ा तरल पदार्थ की कुछ बूँदें निकलीं। उसे एक हल्का सा दर्द भी महसूस हुआ। उस समय, टेंगो को नहीं पता था कि यह वीर्य था। उसने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा था और वह चिंतित हो गया था। शायद उसे कोई

अप्रैल में, जब वे पाँचवीं कक्षा में थे, टेंगो और वह लड़की अलग-अलग कक्षाओं में पढ़ते थे। वे कभी-कभी स्कूल के गलियारों में एक-दूसरे से मिलते या बस स्टॉप पर उनकी मुलाक़ात हो जाती। लेकिन हमेशा की तरह, वह लड़की टेंगो पर ध्यान नहीं देती थी। कम से कम, टेंगो को तो ऐसा ही लगता था। जब वह उसके पास होती, तो वह पलकें भी नहीं झपकाती और न ही अपनी नज़रें हटाती। उसकी आँखें भावहीन, बेजान और चमकहीन रहती थीं। टेंगो सोचता था कि कक्षा में क्या हुआ था। कभी-कभी उसे लगता था कि यह महज़ एक सपना था, कि यह वास्तव में हुआ ही नहीं था। दूसरी ओर, वह अब भी अपने हाथ में उसकी उंगलियों की असाधारण मज़बूती महसूस कर सकता था। टेंगो के लिए, दुनिया रहस्यों से भरी हुई थी।
कुछ समय बाद उसे एहसास हुआ कि आओमामे नाम की लड़की अब स्कूल में नहीं है। शायद वह कहीं और दाखिला ले चुकी थी, लेकिन उसे इसके बारे में कोई जानकारी नहीं थी। किसी को नहीं पता था कि वह कहाँ गई है। पूरे स्कूल में वही अकेला ऐसा व्यक्ति था जो उसके गायब होने से थोड़ा भी हैरान और दुखी था।
काफी समय से टेंगो को अपने कार्यों पर पछतावा था। या यूं कहें कि अपने निष्क्रिय कार्यों पर। अब उसे ठीक-ठीक पता था कि उसे उस लड़की से क्या कहना चाहिए था और वह क्या कहना चाहता था। अब सोचते हुए उसे एहसास हुआ कि उसे फोन करके बात करना इतना मुश्किल नहीं था। उसे बस एक उपयुक्त बहाना ढूंढना था और हिम्मत जुटानी थी। लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी। उसने अपना मौका हमेशा के लिए खो दिया था।
*

प्राथमिक विद्यालय की पढ़ाई पूरी करके माध्यमिक विद्यालय में प्रवेश करने के बाद, टेंगो अक्सर आओमामे के बारे में सोचता था। उसे बार-बार इरेक्शन होने लगे थे और कभी-कभी वह उसके बारे में सोचते हुए हस्तमैथुन भी कर लेता था। हमेशा अपने बाएं हाथ से, जिस पर अभी भी उसकी उंगलियों का स्पर्श महसूस होता था। उसके मन में, आओमामे एक दुबली-पतली लड़की ही थी जिसके स्तन अभी विकसित नहीं हुए थे। लेकिन ट्रैकसूट में उसके शरीर को याद करते ही वह स्खलित हो जाता था।
हाई स्कूल में ही उसने लड़कियों के साथ डेटिंग शुरू कर दी थी। जब कपड़ों के आर-पार से उनके उभरे हुए स्तन साफ़ दिखाई देते थे, तो तेंगो को साँस लेने में भी मुश्किल होती थी। लेकिन फिर भी, रात को जब वह सोने जाता, तो बाएँ हाथ से काम करते समय भी आओमामे की सपाट छाती की छवि ही उसे उत्तेजित करती थी। और हर बार उसे ऐसा लगता था जैसे उसने कोई बड़ा पाप कर दिया हो। ज़रूर उसमें कुछ गड़बड़ है, कुछ तो गड़बड़ है, वह खुद से कहता था।
लेकिन कॉलेज में दाखिला लेने के बाद, आओमामे की याददाश्त पहले की तुलना में बहुत कम वापस आने लगी। इसका मुख्य कारण यह था कि वह असली लड़कियों के साथ डेटिंग कर रहा था और उनके साथ शारीरिक संबंध बना रहा था। वह अब एक वयस्क पुरुष बन चुका था, और स्वाभाविक रूप से, ट्रैकसूट पहने एक छोटी लड़की की छवि अब उसकी कामुकता का केंद्र नहीं रह गई थी।
लेकिन उसने कभी भी उस पल जैसा तीव्र अनुभव नहीं किया था जब उस छोटी बच्ची ने खाली कक्षा में उसका हाथ थाम लिया था। छात्र जीवन से लेकर अब तक जिन महिलाओं के साथ वह रहा था, उनमें से किसी ने भी उस पर इतना ताजा और गहरा प्रभाव नहीं छोड़ा था। वह उनमें वह नहीं पा सका जिसकी उसे वास्तव में तलाश थी। उसके जीवन में सुंदर महिलाएं थीं, दयालु महिलाएं थीं और ऐसी महिलाएं भी थीं जिन्होंने

उससे बहुत स्नेह किया था। लेकिन अंत में, वे आईं और चली गईं, जैसे रंग-बिरंगे पक्षी किसी डाल पर बैठते हैं और कुछ ही क्षणों में उड़ जाते हैं। वे टेंगो को प्रसन्न नहीं कर सकीं, और न ही वह उन्हें प्रसन्न कर सका।
अब तीस साल की उम्र में, जब उसके पास करने को कुछ नहीं था और उसका मन जहाँ चाहे भटक रहा था, तब उसने खुद को फिर से उस दस साल की बच्ची के बारे में सोचते हुए पाया। क्लास खत्म होने के बाद खाली क्लासरूम में, उसने उसका हाथ अपने हाथ में लिया था और उसकी आँखों में गहराई से देखा था। कभी-कभी उसे याद आता था कि वह जिम क्लास में ट्रैकसूट पहने बैठी थी। या फिर रविवार की सुबह इचिकावा की भीड़ भरी सड़कों पर अपनी माँ के पीछे चल रही थी। उसके होंठ कसकर बंद थे और उसकी निगाहें कहीं खोई हुई थीं।
मैं उसे अपने दिमाग से निकाल नहीं पा रहा, टेंगो ऐसे क्षणों में खुद से कहता था। और उसे अब भी इस बात का पछतावा था कि उसने स्कूल के गलियारे में उससे बात नहीं की थी। अगर मैंने उससे बात की होती, तो शायद मेरी ज़िंदगी अलग होती।
*

अब सुपरमार्केट से हरी फलियाँ खरीदते समय उसे आओमामे की याद आ गई। फलियाँ चुनते समय स्वाभाविक रूप से उसे उसकी याद आ गई। बिना सोचे-समझे वह कुछ फलियाँ हाथ में लिए ख्यालों में खो गया। उसे नहीं पता था कि वह कितनी देर तक उसी तरह स्थिर बैठा रहा, लेकिन एक महिला की आवाज़ ने उसे वास्तविकता में वापस ला दिया।
"कृपया क्या मैं कर सकता हूँ?"
अपने विशाल शरीर के कारण टेंगो ने पूरी शेल्फ को घेर रखा था। उसने माफी मांगी, बीन्स को टोकरी में रखा और घर की ओर चल पड़ा। उसने झींगा, दूध, टोफू, सलाद पत्ता और बिस्कुट भी खरीदे थे। वह पड़ोस की गृहिणियों के साथ लाइन में लग गया। शाम ढल रही थी, जब दुकानों में भीड़ थी और कैशियर नया था, जो धीरे-धीरे काम कर रहा था। लाइन धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी, लेकिन टेंगो को इसकी परवाह नहीं थी।
अगर आओमामे इस कतार में होती, तो क्या वह उसे पहली नज़र में पहचान पाती? बीस साल से उनका कोई वास्ता नहीं था। एक-दूसरे को पहचानने की संभावना बहुत कम थी। अगर वह उसके पास से गुज़र जाता, तो क्या वह उसे रोककर उससे बात कर पाता? उसे यकीन नहीं था कि वह ऐसा कर पाता। वह अपना आपा खो बैठता और बिना कुछ कहे उसके पास से गुज़र जाता। फिर उसे उससे दोबारा बात न करने का पछतावा होता। कोमात्सु अक्सर उससे कहता था, "तुममें पहल करने की क्षमता और उत्साह की कमी है।" वह सही था। जब उसे समझ नहीं आता था कि क्या करना है, तो वह बस कंधे उचका देता और तुरंत हार मान लेता। यही उसका स्वभाव था।
लेकिन अगर संयोगवश हमारी मुलाकात हो जाए और हम एक-दूसरे को पहचान लें, तो मैं बिना किसी बनावट या छुपे उसे सब कुछ बता दूंगा। हम पास के किसी कैफे में जाकर आमने-सामने बैठकर बातें करेंगे - बेशक, अगर उसके पास समय हो और वह मेरा निमंत्रण स्वीकार करे।
मुझे आओमामे से बहुत कुछ कहना था। और अब मुझे अच्छी तरह याद है कि तुमने क्लास में मेरा हाथ कैसे पकड़ा था। मैं तुमसे दोस्ती करना चाहता था, तुम्हारे बारे में और जानना चाहता था। लेकिन कई कारणों से ऐसा नहीं हो पाया। लेकिन मुख्य कारण यह था कि मैं बहुत शर्मीला था। मुझे हमेशा इस बात का अफसोस रहा है, आज भी।

मैं अक्सर तुम्हारे बारे में सोचता हूँ। हालाँकि, मैं उसे यह नहीं बताऊँगा कि मैं उसके बारे में सोचकर हस्तमैथुन करता हूँ। यह तो ईमानदारी की एक अलग ही बात है।
शायद ऐसा सोचना ही बेहतर नहीं होगा। शायद फिर कभी न मिलना ही बेहतर होगा। कौन जाने, अगर मैं उसे अभी देखूँ तो शायद निराश हो जाऊँ। शायद उसका चेहरा थका हुआ हो और वह किसी दफ्तर में उबाऊ नौकरी करती हो। शायद वह एक असंतुष्ट माँ हो जो अपने बच्चों को ऊँची आवाज़ में डाँटती हो। बेशक, यह संभावना है। उस स्थिति में मैं हमेशा के लिए उस चीज़ को खो दूँगा जो मेरे दिल में बेहद अहमियत रखती है। लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि ऐसा नहीं है। उसकी दृढ़ आँखों और दृढ़ चेहरे में साफ दिख रहा था कि वह समय को खुद पर हावी नहीं होने देगी।
"लेकिन मैं यहाँ कैसे आ गया?" टेंगो चिंतित होकर बोला।
शायद, इसके विपरीत, अगर वे अब मिले होते, तो आओमामे निराश होती। प्राथमिक विद्यालय में, टेंगो को गणित का विलक्षण प्रतिभा वाला छात्र माना जाता था, सभी विषयों में उसके अच्छे अंक आते थे, उसके अच्छे संपर्क थे और वह खेलकूद में भी भाग लेता था। शिक्षकों ने उसे देखा था और उसके भविष्य से बहुत उम्मीदें थीं। शायद वह लड़की उसे किसी नायक की तरह देखती थी। लेकिन अब उसका एक प्रारंभिक विद्यालय के साथ अनुबंध था। इसे आप असली नौकरी भी नहीं कह सकते। हाँ, काम हल्का था और वह खुद ही सब कुछ संभाल लेता था, लेकिन वह समाज के प्रतिष्ठित लोगों में से एक होने से बहुत दूर था। अपनी पढ़ाई के अलावा, वह लिखता भी था, लेकिन उसकी कोई रचना अभी तक प्रकाशित नहीं हुई थी। वह महिलाओं की पत्रिकाओं के लिए राशिफल भी लिखता था। हाँ, उनकी सराहना होती थी, लेकिन वे गढ़े हुए झूठ के अलावा कुछ नहीं थे। उसके कोई दोस्त नहीं थे और न ही कोई प्रेमिका। उसका एकमात्र मानवीय संबंध उस विवाहित महिला के साथ सप्ताह में एक बार होने वाली गुप्त मुलाकातें थीं। अब तक वह जिस एकमात्र उपलब्धि पर गर्व कर सकता था, वह यह थी कि उसने गुप्त रूप से 'द एयर क्राइसालिस' नामक पुस्तक लिखी थी, जो एक बेस्टसेलर बन गई थी, लेकिन वह इसे पलक झपकते ही भी प्रकट नहीं कर सकता था।
कैशियर द्वारा उसकी शॉपिंग कार्ट ले जाने तक ये सारी बातें उसके दिमाग में चलती रहीं।
*

वह खरीदारी का थैला लेकर घर लौटा। उसने शॉर्ट्स पहने, फ्रिज से एक ठंडी बीयर निकाली और खड़े-खड़े ही उसे पीते हुए एक बड़े बर्तन में पानी उबालने लगा। पानी उबलने के दौरान उसने बीन्स को साफ किया और कद्दूकस पर नमक लगाकर हल्का सा घिस लिया। फिर उसने उन्हें बर्तन में डाल दिया।
वह सोच रहा था कि दुबली-पतली दस साल की बच्ची की छवि अब भी उसके मन में क्यों बसी हुई है। क्लास के बाद, वह आई और बिना कुछ कहे उसका हाथ थाम लिया। बस इतना ही। लेकिन जब वह चली गई, तो आओमामे अपने साथ उसका एक हिस्सा, उसकी आत्मा या शरीर का एक अंश ले गई। बदले में उसने अपना एक अंश उसे दे दिया। यह असाधारण घटना बहुत कम समय में घटित हुई थी।
टेंगो ने चाकू से अदरक बारीक काटा, फिर अजवाइन और मशरूम को बारीक काटा। उसने कुछ धनिया पत्ती भी बारीक काटी। उसने झींगों को साफ किया और नल के नीचे धोया।
फिर उसने उन्हें कागज़ के तौलिये पर सैनिकों की तरह कतार में खड़ा किया।

बीन्स उबालने के बाद, उसने उन्हें ठंडा होने के लिए छलनी में रख दिया। फिर उसने एक कड़ाही गरम की, उसमें थोड़ा तिल का तेल डाला और उसे समान रूप से फैला दिया। उसने कटी हुई अदरक को धीमी आंच पर भूना।
*

टेंगो ने फिर सोचा, "मैं आओमामे से मिलना चाहता हूँ। भले ही मैं उसे निराश कर दूँ, या भले ही मैं खुद थोड़ा निराश हो जाऊँ। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वह उसे फिर से देखना चाहता था। वह जानना चाहता था कि वह किस तरह का जीवन जीती है, उसे क्या खुशी देता है और क्या दुख। चाहे वे दोनों कितना भी बदल गए हों, भले ही उन्होंने साथ रहने का मौका खो दिया हो, सच्चाई यही थी कि बहुत पहले, उस खाली कक्षा में, उनके बीच कुछ महत्वपूर्ण घटित हुआ था।"
टेंगो ने अजवाइन और मशरूम को पैन में डाला और आँच तेज़ कर दी। उसने पैन को हिलाया और बाँस के चम्मच से अच्छी तरह मिलाया। उसने ऊपर से नमक और काली मिर्च छिड़की। जब सब्जियाँ हल्की भूरी होने लगीं, तो उसने पानी से निकाले हुए झींगे डाल दिए। उसने फिर से नमक और काली मिर्च डाली। उसने ऊपर से एक गिलास साके डाला और सोया सॉस छिड़का। अंत में, उसने कटा हुआ हरा धनिया डाला।
वह यह सब यंत्रवत रूप से कर रहा था, जैसे कोई विमान ऑटोपायलट पर चल रहा हो। वह अपने काम के बारे में बिल्कुल भी नहीं सोच रहा था। वह कुछ भी जटिल नहीं पका रहा था। उसके हाथ अपने आप चल रहे थे, जबकि उसका मन पूरी तरह से आओमामे पर केंद्रित था।
खाना खत्म होने पर उसने सब कुछ एक प्लेट में निकाल लिया। उसने फ्रिज से एक और बियर निकाली और मेज पर रख दी। वह धीरे-धीरे गरमागरम खाना निगलने लगा, विचारों में खोया हुआ।
पिछले कुछ महीनों में मुझमें कुछ बदलाव साफ तौर पर दिखने लगे हैं, टेंगो ने सोचा। आप कह सकते हैं कि मैं आध्यात्मिक रूप से परिपक्व हो रहा हूँ। आखिरकार, तीस साल की उम्र में... वाह, क्या बात है, उसने मन ही मन सोचा, हाथ में बीयर लिए हुए। खैर, इस रफ्तार से तो मुझे पूरी तरह परिपक्व होने में कितना समय लगेगा? बहरहाल, यह बदलाव वायु परिपथ के कारण हुआ था। फुकाएरी की कहानी को फिर से लिखने से उसके भीतर छिपी अपनी कहानियाँ लिखने की इच्छा और भी तीव्र हो गई थी। उसके भीतर एक नया उत्साह जागृत हुआ था, जो उसे आओमामे को खोजने के लिए प्रेरित कर रहा था। वह अक्सर उसके बारे में सोचने लगा था। वह हमेशा बीस साल पहले की उस कक्षा में वापस चला जाता था। मानो वह समुद्र तट पर खड़ा हो और लहरें उसे ज़ोर से अपनी ओर खींच रही हों।
उसने बीयर का केवल एक हिस्सा पिया और आधा खाना वैसे ही छोड़ दिया। उसने बीयर को सिंक में डाल दिया और बचे हुए खाने को एक छोटी प्लेट में रख दिया। उसने उसे प्लास्टिक रैप में लपेटकर फ्रिज में रख दिया।
*

रात के खाने के बाद, वह अपनी डेस्क पर बैठ गया और अपना वर्ड प्रोसेसर चालू कर दिया।
उसे लगा कि अतीत को फिर से लिखने का कोई फायदा नहीं है। ठीक वैसे ही जैसे उसके दोस्त ने उसे बताया था। आखिरकार, वह सही ही था। चाहे आप कितनी भी सावधानी और लगन से अतीत को फिर से लिखें, वर्तमान आम तौर पर वैसा ही रहता है। समय में एक के बाद एक कृत्रिम बदलावों को मिटाने की शक्ति होती है। चाहे आप उसमें कितने

ही सुधार और संशोधन कर लें, वह अंततः अपने मूल स्वरूप में लौट आता है। भले ही वह कुछ छोटे-मोटे वास्तविक बदलाव करने में कामयाब हो जाए, अंत में टेंगो, टेंगो ही रहता है, कोई और नहीं।
अब उसे बस यही करना था कि वर्तमान के चौराहे पर खड़ा होकर अतीत का ईमानदारी से विश्लेषण करे और एक ऐसा भविष्य लिखे जो अतीत को बदल दे। यही एकमात्र रास्ता था।

दर्द और दुख
मैं अपने पापी हृदय को तोड़ता हूँ
और जो आंसू वे बहाते हैं
एक शाही दुल्हन
हे यीशु, मैं इन्हें आपको अर्पित करता हूँ।

ये वही आयतें थीं जो कुछ समय पहले फुकेरी ने मैथ्यू के अनुसार यीशु के दुखभोग के बारे में गाई थीं। उत्सुक होकर, टेंगो ने रिकॉर्डिंग दोबारा सुनी और अनुवाद देखा। यह यीशु के दुखभोग की शुरुआत का वह भाग था, जिसमें बेथानी में अभिषेक का वर्णन था। यीशु बेथानी में एक कुष्ठ रोगी के घर में थे, जब एक स्त्री ने उनके सिर पर कीमती इत्र डाला। उसके आसपास के शिष्यों ने इत्र बर्बाद करने के लिए उसे फटकारा। उन्होंने कहा, “यह इत्र बहुत में बिक सकता था और पैसा गरीबों को दिया जा सकता था।” लेकिन यीशु ने क्रोधित शिष्यों को शांत किया और उनसे कहा, “उसने अच्छा किया है। उसने मेरे शरीर का अभिषेक किया है ताकि उसे दफ़नाया जा सके।”
उस स्त्री को पता था कि यीशु जल्द ही मरने वाले हैं। इसीलिए उसने उनके सिर पर कीमती इत्र लगाया, मानो वे उसके आँसू हों। यीशु भी जानते थे कि वे जल्द ही अंतिम मार्ग पर चलेंगे। उन्होंने कहा, “जहाँ कहीं भी संसार में इस सुसमाचार का प्रचार होगा, वहाँ उसके इस कार्य का वर्णन उसकी स्मृति में किया जाएगा।” वे भविष्य को नहीं बदल सकते थे।
*

टेंगो ने अपनी आँखें फिर से बंद कर लीं, गहरी साँस ली और मन ही मन सही शब्दों का चुनाव किया। उसने शब्दों का क्रम बदला और छवियों को स्पष्ट किया। उसने सही लय पा ली।
व्लादिमीर होरोविट्ज़ की तरह, जो पियानो की अस्सी-आठ कुंजियों के सामने बैठे थे, उन्होंने हवा में अपनी उंगलियां हिलाईं। फिर उन्होंने हिम्मत जुटाई और लिखना शुरू किया।
इसमें एक ऐसी दुनिया का वर्णन है जहाँ शाम ढलते ही पूर्वी आकाश में दो चंद्रमा दिखाई देते हैं। उस दुनिया के लोगों की कहानी, वहाँ समय के प्रवाह की कहानी।
"जहाँ भी दुनिया भर में इस सुसमाचार का प्रचार किया जाएगा, वहाँ उसकी याद में उसके द्वारा किए गए कार्यों का भी वर्णन किया जाएगा।"

अध्याय 5 चूहा और शाकाहारी बिल्ली

जब आओमामे ने आयुमी की मृत्यु को निश्चित मान लिया, तो उसका मन इस नई वास्तविकता को स्वीकार करने के लिए संघर्ष करने लगा। थोड़ा शांत होने के बाद, वह रोने लगी। उसने अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया और धीरे-धीरे, चुपचाप रोने लगी। केवल उसके कंधे हल्के से कांप रहे थे। मानो वह नहीं चाहती थी कि दुनिया में कोई भी उसके आंसू देखे।
पर्दों ने खिड़कियों को पूरी तरह से ढक रखा था, लेकिन आप कभी नहीं जान सकते कि कोई आपको कब और कहाँ से देख रहा है। उस शाम, आओमामे रसोई की मेज पर अखबार खोलकर बैठी लगातार रो रही थी। बीच-बीच में उसकी सिसकियाँ फूट पड़ती थीं, लेकिन अन्यथा वह बिना आवाज किए रोती रहती थी। आँसू उसके हाथों से बहकर अखबार पर गिर रहे थे।
आओमामे एक-दो बार में नहीं रोती थी। अगर कोई बात उसे परेशान करती, तो वह गुस्सा करना पसंद करती थी। किसी और पर या खुद पर। इसीलिए उसका रोना इतना अजीब था। दूसरी तरफ, एक बार आंसू शुरू हो गए तो उन्हें रोकना नामुमकिन था। उसने तमाकी की मौत के बाद से इतना नहीं रोया था, जो कई साल पहले हुई थी। इतने साल कि उसे ठीक से याद भी नहीं था। और फिर वह इतना रोई कि कई दिनों तक लगातार रोती रही। उसने कुछ खाया नहीं था और घर से बाहर भी नहीं निकली थी। बीच-बीच में, वह आंसुओं से शरीर से निकले पानी की भरपाई कर लेती या बिस्तर पर गिरकर थोड़ी देर के लिए सो जाती। इसके अलावा, वह लगातार रोती रही।
आयुमी अब इस दुनिया में नहीं थी। वह एक ठंडी लाश में बदल चुकी थी, जिसका शायद अब पोस्टमार्टम हो रहा था। पोस्टमार्टम के बाद, उसे फिर से सिला जाएगा, एक छोटी सी धार्मिक रस्म होगी, फिर उसे श्मशान ले जाकर जला दिया जाएगा। धुआँ हवा में उठेगा और बादलों में मिल जाएगा। वह बारिश में बदल जाएगा और ज़मीन पर गिरेगा, घास को पोषण देगा। ऐसी घास जिसकी कोई आवाज़ नहीं, कोई नाम नहीं। आओमामे अब कभी आयुमी को ज़िंदा नहीं देख पाएगी। यह प्रकृति के विरुद्ध था, एक बेहद अन्यायपूर्ण बात। एक अतार्किक विचार, बिल्कुल बेतुका।
तामाकी के देहांत के बाद से, आओमामे ने अयुमी के अलावा किसी के साथ भी दोस्ती जैसा कोई रिश्ता महसूस नहीं किया था। लेकिन दुर्भाग्य से, इस दोस्ती की भी एक सीमा थी। अयुमी एक सक्रिय पुलिस अधिकारी थी, और आओमामे एक सीरियल किलर थी। उसने ये काम दृढ़ विश्वास और बेफिक्री से किया, लेकिन एक हत्यारा तो हत्यारा ही होता है, और कानूनी दृष्टि से, आओमामे निःसंदेह एक अपराधी थी। वह गिरफ्तार होने वालों के पक्ष में थी, और अयुमी गिरफ्तार करने वालों के पक्ष में। हालांकि आओमामे उसके करीब आना चाहती थी, उसने अपने दिल को कठोर कर लिया था और इस इच्छा को रोकने की कोशिश कर रही थी। अगर उनका रिश्ता इतना गहरा हो जाता कि उन्हें हर दिन एक-दूसरे की ज़रूरत पड़ती, तो हर तरह के विरोधाभास और असंगतताएँ सामने आ जातीं, जो आओमामे के लिए घातक साबित हो सकती थीं। वह एक ईमानदार और सीधी-सादी इंसान थी। वह झूठ बोलकर या बातें छिपाकर किसी के साथ

*

सही, शांति का अनुभव करना। लेकिन मैं उसे यह नहीं दे पाई। आत्मरक्षा की मेरी प्रवृत्ति और तामाकी की याद को धूमिल न करने का विचार ज़्यादा प्रबल थे।
इसी तरह अयुमी रात में अकेले बाहर गई थी, आओमामे के बिना, और गला घोंटकर उसकी मौत हो गई। उसके हाथों में ठंडी हथकड़ियाँ थीं, आँखों पर पट्टी बंधी थी, और मुँह में मोजा या पैंटी ठूँसी हुई थी। जिस बात से वह हमेशा डरती थी, वही सच हो गई। अगर आओमामे उसके साथ थोड़ा अच्छा व्यवहार करती, तो वह उस रात अकेले बाहर नहीं जाती। वह उसे फोन करके साथ आने के लिए बुलाती। वह किसी सुरक्षित जगह पर जाती और पुरुषों की बाहों में खुद को सौंप देती, एक-दूसरे का ख्याल रखती। लेकिन अयुमी उसे अकेला छोड़कर चली गई थी। और आओमामे ने उसे कभी खुद फोन करके कहीं जाने के लिए नहीं बुलाया था।
सुबह करीब चार बजे, घर में अकेले रहना असहनीय हो जाने पर, आओमामे ने सैंडल पहनीं और बाहर निकल गई। वह अंधेरी गलियों में सिर्फ शॉर्ट्स और टैंक टॉप पहने भटकती रही। उसने किसी को अपना नाम पुकारते सुना, लेकिन उसने अपना सिर नहीं घुमाया। चलते-चलते उसे प्यास लगी, इसलिए वह एक किराना स्टोर में गई, संतरे के रस का एक बड़ा कार्टन खरीदा और उसे वहीं पी गई। फिर वह घर लौट आई और थोड़ी देर रोई। उसने खुद से कहा, "मैं अयुमी की परवाह करती थी। मैं उसकी परवाह अपनी समझ से कहीं ज़्यादा करती थी। मुझे उसे जितना चाहे उतना और जहाँ चाहे छूने देना चाहिए था।"
*

अगली सुबह, अखबार ने फिर से "शिबुया होटल में महिला पुलिसकर्मी की गला घोंटकर हत्या" की खबर छापी। पुलिस लापता व्यक्ति को ढूंढने के लिए हर संभव प्रयास कर रही थी। लेख में बताया गया कि उसके छात्रावास के साथी हैरान थे। अयुमी एक हंसमुख लड़की थी, जिसे सब प्यार करते थे, ऊर्जावान थी, ज़िम्मेदारी की भावना रखती थी और एक पुलिस अधिकारी के रूप में उसका रिकॉर्ड शानदार था। वह एक घनिष्ठ परिवार से थी, जहाँ उसके पिता और भाई समेत कई रिश्तेदार पुलिस सेवा में थे। किसी को समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा कैसे हो सकता है। सभी स्तब्ध थे। कोई नहीं जानता, आओमामे ने सोचा। लेकिन मैं जानती हूँ। अयुमी के भीतर एक गहरा खालीपन था। जैसे दुनिया के अंत में कोई रेगिस्तान हो। चाहे वह कितना भी पानी डाले, वह सब कुछ निगल जाता था और नमी की एक बूँद भी नहीं बचती थी। वहाँ कोई जीवन पनप नहीं सकता था। यहाँ तक कि पक्षी भी उस जगह पर नहीं उड़ते थे। उसके भीतर उस खालीपन का कारण क्या था, यह केवल अयुमी ही जानती थी। या शायद वह भी नहीं। लेकिन निश्चित रूप से इसका एक मुख्य कारण पुरुषों द्वारा उस पर थोपी गई विकृत इच्छाएँ थीं। उस घातक खालीपन को भरने के लिए, उसे खुद को एक इंसान के रूप में फिर से गढ़ना पड़ा था। अगर आप इस तरह बनाए गए उन सजावटी स्वरूपों को एक-एक करके हटा देते, तो जो बचता वह एक छेद होता, जो अपने साथ एक भयानक सूखापन लाता। और चाहे वह इसे भूलने की कितनी भी कोशिश करे, वह खालीपन बार-बार उभर आता था। बरसात की दोपहर में, अकेलेपन में डूबी हुई, या शायद सुबह, जब वह किसी बुरे सपने से जागती थी। और उन पलों में, उसे किसी के भी, किसी के भी गले लगने की ज़रूरत महसूस होती थी।
ओमामे ने जूते के डिब्बे से बंदूक निकाली, बड़ी कुशलता से उसमें मैगज़ीन भरी, स्लाइड खोली, स्लाइड को पीछे खींचा जिससे एक गोली चैंबर में चली गई और फायरिंग पिन कॉक हो गई। फिर उसने बंदूक को दोनों हाथों से मजबूती से पकड़ा और

दीवार पर एक जगह निशाना साधा। बंदूक की नली नहीं हिली। उसके हाथ अब कांप नहीं रहे थे। ओमामे ने अपनी सांस रोकी, ध्यान केंद्रित किया और फिर एक लंबी सांस छोड़ी। उसने बंदूक नीचे रखी और स्लाइड वापस लगा दी। उसने बंदूक को हाथ में थामकर उसकी हल्की चमक को देखा। उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह उसके शरीर का ही एक हिस्सा हो।
आओमामे ने मन ही मन कहा, "मुझे खुद पर काबू रखना होगा। अगर मैं उसके चाचा और भाई को सज़ा दूँगी, तो उन्हें समझ ही नहीं आएगा कि उन्हें सज़ा क्यों मिली। और वैसे भी, अयुमी वापस नहीं आएगी।" मुझे उस पर तरस आ रहा था, लेकिन ये तो होना ही था। वो धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से, एक जानलेवा भंवर के केंद्र की ओर बढ़ रही थी। भले ही मैंने उसे और ज़्यादा खुले दिल से अपनाने का फैसला कर लिया होता, फिर भी मैं बिना शर्त ऐसा नहीं कर सकती थी। रोना बंद करो! तुम्हें फिर से अपने पैरों पर खड़ा होना होगा। नियमों को खुद से ज़्यादा अहमियत देनी होगी, यही ज़रूरी है। जैसा कि तमारू ने कहा था।
*

आयुमी की मृत्यु के पाँचवें दिन की सुबह पेजर की घंटी बजी। आओमामे कॉफी के लिए पानी उबाल रही थी और रेडियो पर समाचार सुन रही थी। पेजर मेज पर पड़ा था। आओमामे ने छोटी स्क्रीन पर दिख रहे फोन नंबर को देखा। वह नंबर जानती तो नहीं थी, लेकिन उसे यकीन था कि संदेश तामारू का था। वह पास के एक मोबाइल फोन पर गई और नंबर डायल किया। तीसरी घंटी बजते ही तामारू ने फोन उठाया।
“क्या तुम तैयार हो?” उसने पूछा।
- बिल्कुल।
"मुझे उस महिला का संदेश मिला है। आज रात सात बजे ओकुरा होटल की मुख्य लॉबी में मिलें। हमेशा की तरह की गतिविधियों के लिए तैयार रहें। मुझे खेद है कि मैं आपको अचानक रोक रही हूँ, लेकिन सब कुछ आखिरी समय में तय हुआ।"
"आज रात सात बजे, ओकुरा होटल की मुख्य इमारत की लॉबी में," आओमामे ने यंत्रवत दोहराया।
मैं आपको शुभकामनाएं देता हूं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि इससे आपको कोई फायदा होगा।
क्योंकि आप भाग्य पर निर्भर नहीं रहते।
"और अगर मुझे शर्त भी लगानी हो, तो मुझे ठीक से यह भी नहीं पता कि भाग्य क्या होता है," तामारू ने कहा। "मैंने इसे कभी अपनी आँखों से नहीं देखा है।"
"तो मुझसे नफरत मत करो। इसके बजाय, मैं चाहूंगी कि तुम मेरे लिए कुछ करो। मेरे घर में गमले में एक रबर का पेड़ है, जिसकी मैं चाहती हूं कि तुम देखभाल करो। मैं उसे फेंकना नहीं चाहती थी।"
- मैं इसे ले जाऊँगा।
- धन्यवाद।
"एक रबर के पेड़ की देखभाल करना बिल्ली या कुछ मछलियों की देखभाल करने से कहीं ज्यादा आसान है। और कुछ?"
बस इतना ही। जो कुछ भी बचा है, आप उसे फेंक सकते हैं।
"अपना काम खत्म करने के बाद, शिंजुकु स्टेशन जाएं और इस नंबर पर दोबारा कॉल करें। मैं आपको आगे के निर्देश दूंगा।"

"अपना काम खत्म करने के बाद, मैं शिंजुकु स्टेशन जाऊंगी और इस नंबर पर दोबारा कॉल करूंगी," आओमामे ने दोहराया।
"मुझे लगता है कि आपको पहले से ही पता होगा कि अपना नंबर लिखकर नहीं रखना चाहिए। घर से निकलते समय पेजर को नष्ट कर दें और फेंक दें।"
"मैं समझ गया। मैं यही करूंगा।"
सब कुछ ठीक से व्यवस्थित है। चिंता मत करो। बाकी सब हम पर छोड़ दो।
- मैं नहीं।
तामारू कुछ देर तक चुप रहा।
“क्या मैं आपको अपनी सच्ची राय दे सकता हूँ?” उसने पूछा।
- कृपया।
"मैं यह नहीं कह रहा कि आप जो कर रहे हैं वह बेकार है। यह आपकी समस्या है, मेरी नहीं। लेकिन, पूरे सम्मान के साथ कहूँ तो, यह गैरजिम्मेदाराना है। और अंतहीन है।"
"ऐसा हो सकता है," आओमामे ने जवाब दिया। "लेकिन यह ऐसी चीज है जिसे बदला नहीं जा सकता।"
ठीक वैसे ही जैसे वसंत ऋतु में हिमस्खलन होता है।
- शायद।
लेकिन समझदार व्यक्ति हिमस्खलन के मौसम में खतरनाक जगहों के पास नहीं जाता। "एक समझदार व्यक्ति तो आपसे इस बारे में बात ही नहीं करेगा।"
"यह सच है," तामारू ने स्वीकार किया। "और हाँ, अगर आप हिमस्खलन में फंस जाते हैं, तो क्या आपके परिवार में कोई ऐसा व्यक्ति है जिससे हम संपर्क कर सकें?" मेरा कोई परिवार नहीं है।
— क्या आपके पास बिल्कुल भी नहीं है या आपके पास कुछ हैं लेकिन वास्तव में नहीं हैं?
— मैंने किया है, लेकिन असल में मैंने नहीं किया है।
"मैं समझ गया," तामारू ने कहा। "सबसे महत्वपूर्ण बात है स्वतंत्र रूप से घूमने-फिरने की क्षमता। वंश वृक्ष के लिए रबर का पेड़ आदर्श है।"
मैंने लेडीज़ में वो मछलियाँ देखीं और मुझे भी वैसी ही एक चाहिए थी। मैंने सोचा कि घर में ऐसी कोई चीज़ रखना अच्छा रहेगा। मछलियाँ छोटी, शांत और ज़्यादा ज़रूरतों वाली नहीं लगतीं। अगले दिन मैं रेलवे स्टेशन के पास एक पालतू जानवरों की दुकान पर गया, लेकिन जब मैंने उन्हें वहाँ एक्वेरियम में देखा, तो मुझे गुस्सा आ गया। इसलिए मैंने उसके बजाय एक गमला खरीदा जिसमें एक सूखा रबर का पेड़ था, जो न जाने कब से बिना बिका पड़ा था।
मुझे तो यह सही विकल्प लगता है।
— शायद मैं कभी खुद की मछली नहीं पाल पाऊंगा।
"शायद। लेकिन आप रबर का पेड़ भी लगा सकते हैं।"
कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा।
"आज रात सात बजे, ओकुरा होटल की मुख्य इमारत की लॉबी में," आओमामे ने फिर से पुष्टि की।
"तुम बैठ जाओ और इंतजार करो। वे तुम्हें ढूंढ लेंगे।"
वे मुझे ढूंढ लेते हैं।
तामारू ने धीरे से खांसा।

— वैसे, क्या आपको चूहे और शाकाहारी बिल्ली की कहानी पता है?
- नहीं।
"क्या आप इसे सुनना चाहते हैं?"
— बिल्कुल।
एक दिन, एक चूहे की मुलाकात अटारी में एक शाकाहारी बिल्ली से हुई। चूहा बुरी तरह फंस गया और भाग नहीं सका। कांपते हुए उसने कहा, "श्रीमान बिल्ली, कृपया मुझे मत खाइए! मुझे अपने परिवार के पास वापस जाना है। मेरे भूखे बच्चे घर पर मेरा इंतज़ार कर रहे हैं। कृपया मुझे छोड़ दीजिए!" बिल्ली ने जवाब दिया, "चिंता मत करो, मैं तुम्हें नहीं खाऊंगी। मैं नहीं चाहती कि सबको पता चले, लेकिन सच यह है कि मैं शाकाहारी हूं। मैं मांस नहीं खाती। खुद को भाग्यशाली समझो कि तुम मुझसे मिले!" "ओह, कितना बढ़िया दिन है! मैं कितना भाग्यशाली हूं कि मुझे एक शाकाहारी बिल्ली मिली!" लेकिन अगले ही पल, बिल्ली ने उस पर झपट्टा मारा, अपने पंजों से उसे ज़मीन पर गिरा दिया और अपने दांत उसकी गर्दन में गड़ा दिए। दर्द से कराहते हुए चूहे ने अपनी आखिरी सांस लेते हुए उससे पूछा, "लेकिन क्या आपने नहीं कहा था कि आप शाकाहारी हैं और मांस नहीं खाते? क्या वह झूठ था?" बिल्ली ने अपनी थूथन चाटते हुए जवाब दिया, "अच्छा, मैं मांस नहीं खाती। मैंने तुमसे झूठ नहीं बोला। मैं तुम्हें ले जाऊंगी और बदले में तुम्हें सलाद दूंगी।"
ओमामे ने कुछ पल सोचा।
और इससे क्या सीख मिलती है?
"इसमें कोई नैतिक सीख नहीं है। हमने पहले भाग्य का जिक्र किया था और मुझे यह कहानी याद आ गई। बस इतना ही। लेकिन आप अपनी मर्जी से कोई भी नैतिक सीख निकाल सकते हैं।"
— एक मनमोहक कहानी।
और एक बात और। सबसे पहले, वे आपकी तलाशी लेंगे और आपके सामान की जाँच करेंगे।
ये लोग बहुत सतर्क रहते हैं, याद रखना।
मैं इसे रख लूंगा।
"ठीक है," तामारू ने कहा। "हम कभी न कभी फिर मिलेंगे।"
"हम फिर मिलेंगे," आओमामे ने सहज भाव से दोहराया।
कॉल खत्म हो गई। आओमामे ने एक पल के लिए रिसीवर देखा, थोड़ा सा माथा सिकोड़ा और फोन काट दिया। फिर उसने पेजर स्क्रीन पर दिख रहा फोन नंबर याद कर लिया और उसे डिलीट कर दिया। हम फिर कभी मिलेंगे, उसने मन ही मन दोहराया। लेकिन वह पहले से ही जानती थी कि शायद वह तामारू को फिर कभी नहीं देख पाएगी।
*

उसने अखबार के पन्ने पलटे, लेकिन उसे अयुमी की मौत के बारे में कोई और खबर नहीं मिली। ऐसा लग रहा था कि जांच में अब तक कोई प्रगति नहीं हुई है। प्रेस शायद जल्द ही इस अजीबोगरीब मामले को पूरी तरह से छोड़ देगा। शिबुया के एक होटल में एक युवा, ड्यूटी पर तैनात पुलिस अधिकारी को हथकड़ी लगाकर यौन खेलों का प्रशिक्षण दिया जा रहा था। नग्न अवस्था में, गला घोंटकर हत्या कर दी गई। लेकिन आओमामे मनोरंजन के लिए ऐसी खबरें नहीं पढ़ना चाहती थी। उस घटना के बाद से उसने टीवी भी नहीं देखा था। वह किसी कर्कश, बनावटी आवाज वाले टीवी उद्घोषक से अयुमी की मौत के बारे में नहीं सुनना चाहती थी।

ज़ाहिर है, वह चाहती थी कि कातिल पकड़ा जाए। उसे सज़ा मिलनी ही चाहिए थी। लेकिन अगर उसे गिरफ़्तार कर लिया जाए, मुक़दमे के लिए भेज दिया जाए और हत्या के सारे राज़ खुल जाएँ, तो इसका क्या फ़ायदा? चाहे कुछ भी हो जाए, अयुमी वापस नहीं आएगी। यह बात साफ़ थी। और सज़ा तो बहुत हल्की होगी। इसे हत्या नहीं, बल्कि गैर-इरादतन हत्या माना जाएगा। ज़ाहिर है, मौत की सज़ा भी जो हुआ है उसकी भरपाई नहीं कर सकती। आओमामे ने अख़बार बंद किया, कोहनियाँ मेज़ पर टिकाईं और अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया। वह अयुमी के बारे में सोच रही थी। लेकिन आँसू सूख चुके थे। वह बस गुस्से में थी।
*

शाम सात बजे तक उसके पास काफी समय था और करने को कुछ नहीं था। स्पोर्ट्स क्लब में उसकी कोई क्लास नहीं थी। उसका छोटा डफ़ल बैग और शोल्डर बैग शिंजुकु स्टेशन के लगेज लॉकर में रखे हुए थे, जैसा कि तमारू ने उसे निर्देश दिया था। डफ़ल बैग में कुछ दिनों के लिए पैसे और खुले पैसे थे। आओमामे हर तीन दिन में मशीन में सिक्के डालती थी और फिर बैग चेक करती थी। घर की सफाई की ज़रूरत नहीं थी, और फ्रिज लगभग खाली था, इसलिए उसके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं था। रबर के पेड़ के अलावा, घर में जीवन का कोई संकेत नहीं था। उसने अपनी निजी ज़िंदगी के बारे में जानकारी देने वाली हर चीज़ हटा दी थी। सभी दराज खाली थे। मैं कल यहाँ नहीं रहूँगी, उसने सोचा। मेरा कोई निशान नहीं बचेगा।
उस रात पहनने वाले कपड़े बिस्तर पर करीने से तह करके रखे थे। उनके बगल में, एक नीले रंग का जिम बैग था जिसमें स्ट्रेचिंग के लिए ज़रूरी सामान था। आओमामे ने एक बार फिर सब कुछ देख लिया। ट्रैकसूट, योगा मैट, एक बड़ा और एक छोटा तौलिया, और छेनी रखने वाला होल्स्टर। उसके पास ज़रूरत का सारा सामान था। उसने होल्स्टर से छेनी निकाली, ढक्कन हटाया और उंगली से उसकी नोक को छूकर यह सुनिश्चित किया कि वह काफी तेज़ है। और, पूरी तरह से सुनिश्चित करने के लिए, उसने अपने पास मौजूद सबसे बारीक धार लगाने वाले यंत्र से उसे थोड़ा और तेज़ किया। उसने कल्पना की कि सुई चुपचाप त्वचा के नीचे, आदमी की गर्दन के उस खास हिस्से में चली जाएगी। हमेशा की तरह, यह सब पलक झपकते ही खत्म हो जाएगा।
न कोई कराह, न कोई खून। बस एक हल्की सी ऐंठन। आओमामे ने सुई की नोक पर लगा ढक्कन वापस लगाया और छेनी को सावधानीपूर्वक उसके म्यान में रख दिया।
फिर उसने जूते के डिब्बे से पुरानी टी-शर्ट में लिपटी बंदूक निकाली और कुशलतापूर्वक सात कारतूस मैगज़ीन में भर दिए। झट से उसने आस्तीन खींची और एक कारतूस चैंबर में डाल दिया। उसने कुंडी खोली और उसे वापस लगा दिया। उसने उसे एक सफेद रुमाल में लपेटा, एक प्लास्टिक बैग में रखा और उसे एक अंडरवियर से ढक दिया।
क्या उसे और कुछ करने की जरूरत थी?
और कुछ समझ में नहीं आया। आओमामे रसोई में गई और कॉफी के लिए पानी उबाला। फिर वह एक कप कॉफी और एक क्रोइसैन लेकर मेज पर बैठ गई।
यह मेरा आखिरी कार्य होगा, उसने सोचा। सबसे महत्वपूर्ण और सबसे कठिन। इस मिशन को पूरा करने के बाद, मुझे फिर कभी किसी को मारना नहीं पड़ेगा।
*

ओमामे को अपनी पहचान खोने का कोई दुख नहीं था। बल्कि, एक तरह से, वह इसका स्वागत करती थी। उसे अपना नाम या चेहरा खोने से कोई फर्क नहीं पड़ता, और उसके

पास पछताने के लिए कोई अतीत भी नहीं था। शायद यही वह चाहती थी, अपने जीवन को फिर से शुरू करना।
अजीब बात यह थी कि उसके शरीर में एकमात्र ऐसी चीज़ जिसे वह खोना नहीं चाहती थी, वह थे उसके छोटे स्तन। बारह साल की उम्र से ही आओमामे अपने स्तनों के आकार और बनावट से लगातार असंतुष्ट रही थी। उसे लगता था कि अगर उसके स्तन बड़े होते तो उसका जीवन अधिक सुखमय होता। लेकिन अब जब उसे उन्हें बदलने का अवसर मिला (मजबूरी के कारण लिया गया फैसला), तो उसे एहसास हुआ कि वह ऐसा कोई बदलाव नहीं चाहती। उसे उन्हें वैसे ही छोड़ने में कोई आपत्ति नहीं थी। वे जैसे थे वैसे ही ठीक थे।
ओमामे ने अपनी टैंक टॉप के ऊपर से अपने स्तनों को छुआ। वे हमेशा की तरह ही असममित थे, उनका आकार अधपके आटे जैसा था और उनका विकास असमान था। ओमामे ने अपना सिर हिलाया। उसने खुद से कहा, "मुझे अब भी इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं जैसी हूँ वैसी ही हूँ।"
इन स्तनों के अलावा, क्या मेरे पास और कुछ बचेगा?
बेशक, टेंगो की यादों के साथ। उसके स्पर्श के साथ। उसके आलिंगन की चाहत में धड़कते दिल के साथ। भले ही मैं एक अलग इंसान बन जाऊं, टेंगो के लिए जो भावनाएँ मेरे दिल में हैं, वे कभी मुझसे अलग नहीं होंगी। यही मुझमें और अयुमी में बड़ा अंतर है। मेरे भीतर कोई खालीपन नहीं है, न ही कोई उजाड़, बंजर जगह। मेरे भीतर प्रेम बसता है। मैं उस दस साल के लड़के के बारे में सोचना कभी बंद नहीं करूंगी। उसकी ताकत, उसकी बुद्धिमत्ता, उसकी दयालुता। वह अब यहाँ नहीं है। लेकिन जो शरीर नहीं है, वह नष्ट नहीं हो सकता, और जो वादे नहीं किए गए, वे कभी टूट नहीं सकते।
ओमामे के गर्भ में पल रहा तीस वर्षीय तेंगो असली नहीं था, बल्कि महज़ एक कल्पना थी। यह सब बस उसका अपना एक भ्रम था। तेंगो में अब भी शक्ति, बुद्धिमत्ता और दयालुता थी। लेकिन अब उसके पास एक परिपक्व पुरुष की तरह मजबूत भुजाएँ, चौड़ा सीना और एक शक्तिशाली लिंग था। जब ओमामे उसे चाहती, वह हमेशा उसके लिए मौजूद रहता। वह उसे अपनी बाहों में भर लेता, उसके बालों को सहलाता, उसे चूमता। जिस कमरे में वे थे, वह हमेशा अँधेरा रहता था और ओमामे उसकी आकृति को ठीक से देख नहीं पाती थी। उसे बस उसकी गर्म आँखें दिखाई देती थीं। वह उन्हें अँधेरे में भी देख सकती थी। वह उनकी आँखों में देखती और उस दुनिया की झलक देख पाती जिसे वह देख रहा था।
शायद आओमामे को समय-समय पर दूसरे पुरुषों के साथ सोने का मन इसलिए करता था ताकि वह अपने मन में बसी टेंगो की छवि को यथासंभव पवित्र बनाए रख सके। दूसरे पुरुषों के साथ संबंध बनाकर वह अपने शरीर को कामुक इच्छाओं से मुक्त करने की कोशिश कर रही थी। और इस मुक्ति के बाद मिलने वाली शांति और सुकून की दुनिया में, वह टेंगो के साथ अकेले रहना चाहती थी और बिना किसी रोक-टोक के उसके साथ अंतरंग पलों का आनंद लेना चाहती थी। शायद यही उसकी इच्छा थी।
दोपहर के कुछ घंटे आओमामे ने टेंगो के बारे में सोचते हुए बिताए। वह संकरी बालकनी में एक एल्युमिनियम की कुर्सी पर बैठी आसमान की ओर देख रही थी और गाड़ियों की गर्जना सुन रही थी, कभी-कभी अपनी उंगलियों से रबर के पेड़ की पत्ती तोड़ रही थी। चांद अभी आसमान में दिखाई नहीं दे रहा था। उसके उगने में अभी कुछ घंटे बाकी थे। कल इस समय मैं कहाँ होऊंगी? उसने सोचा। मुझे कोई

अंदाज़ा नहीं है। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। फर्क सिर्फ इस बात से पड़ता है कि टेंगो इस दुनिया में कहीं मौजूद है।
*

ओमामे ने रबर के पेड़ को आखिरी बार पानी दिया और जनाचेक की सिम्फोनीटा को एक बार फिर सुना। उसने अपने सारे रिकॉर्ड फेंक दिए थे, सिवाय इस एक के। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और संगीत सुनने लगी, बोहेमिया के मैदानों में बहती हवा की कल्पना करते हुए। उसने सोचा कि टेंगो के साथ उन जगहों पर हमेशा के लिए घूमना कितना अद्भुत होगा। बेशक, हाथ पकड़े हुए। हवा बह रही हो और कोमल हरी घास चुपचाप काँप रही हो। ओमामे उसके हाथ की गर्माहट को पूरी तरह महसूस कर सकती थी। फिर वह दृश्य धुंधला हो गया और गायब हो गया, जैसे किसी फिल्म का सुखद अंत वाला दृश्य।
ओमामे बिस्तर पर लेट गई, सिकुड़कर सो गई और आधे घंटे तक सोई रही। उसे कोई सपना नहीं आया। यह ऐसी नींद थी जिसे सपनों की ज़रूरत नहीं थी। जब वह उठी, तो घड़ी में साढ़े चार बज रहे थे। ओमामे ने फ्रिज से अंडे, बेकन और मक्खन निकाले और कुछ देर तक नज़रें मिलाईं। उसने डिब्बे से सीधे संतरे का रस पी लिया। दोपहर की झपकी के बाद की खामोशी असामान्य रूप से घुटन भरी थी। रेडियो पर पवन वाद्ययंत्रों के लिए विवाली का एक संगीत कार्यक्रम बज रहा था। पिकोलो एक चिड़िया की चहचहाहट जैसी मधुर ध्वनि बजा रहा था। ओमामे को ऐसा लगा जैसे संगीत उस वास्तविकता की अवास्तविकता को उजागर कर रहा हो जिसमें वह खुद को पा रही थी।
उसने बर्तन धोए, नहाया और उन कपड़ों को पहना जो उसने खास तौर पर उस दिन के लिए हफ़्तों पहले तैयार किए थे। कपड़े सादे और हल्के थे। नीली सूती पैंट, तीन-चौथाई आस्तीन वाली एक सादी सफेद ब्लाउज। उसने अपने बालों को ऊपर बांधा और कंघी से संवारा। उसने कोई और एक्सेसरीज़ नहीं पहनीं। उसने अपने पहने हुए कपड़ों को लॉन्ड्री बास्केट में डालने के बजाय एक काले कचरे के थैले में भर दिया। तामारू उनका ध्यान रखेगा। उसने ध्यान से अपने नाखून काटे और बड़े करीने से अपने दांत साफ किए। उसने अपने कान साफ किए। उसने कैंची से अपनी भौहें संवारीं, चेहरे पर क्रीम लगाई और गर्दन पर थोड़ा सा परफ्यूम छिड़का। उसने कई कोणों से शीशे में अपना चेहरा देखा, यह सुनिश्चित करने के लिए कि सब ठीक है। फिर उसने अपना नाइकी स्पोर्ट्स बैग उठाया और घर से निकल गई।
दहलीज से उसने एक बार फिर पीछे मुड़कर देखा, यह सोचते हुए कि वह अब कभी यहाँ नहीं लौटेगा। इस विचार से घर बेहद जर्जर लग रहा था। मानो कोई जेल कोठरी हो जिसे अंदर से ही बंद किया जा सकता हो। दीवारों पर कोई चित्र नहीं, कोई फूलदान नहीं। बालकनी में मछलीघर की जगह सिर्फ एक रबर का पेड़ रखा था, जो छूट में खरीदा गया था। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह इतने सालों तक ऐसी जगह पर बिना किसी असंतोष, बिना किसी संदेह के कैसे रहा।
"अलविदा," उसने फुसफुसाते हुए कहा।
वह घर को नहीं, बल्कि खुद को अलविदा कह रही थी।

अध्याय 6 हमारे पास लंबी भुजा है

कुछ समय तक सन्नाटा पसरा रहा। किसी ने भी तेंगो से संपर्क करने की कोशिश नहीं की। उसे कोमात्सु, प्रोफेसर एबिसुनो या फुकाएरी से कोई खबर नहीं मिली। शायद वे सब चांद पर चले गए थे और उसे पूरी तरह भूल गए थे। अगर सच में ऐसा हुआ होता, तो वह और क्या कह पाता? लेकिन मामला इतना सीधा नहीं था। वे चांद पर नहीं गए थे। बात बस इतनी थी कि सब अपने-अपने कामों में व्यस्त थे और किसी के पास उसे खबर देने का समय या जज़्बा नहीं था।
टेंगो के पास टीवी नहीं था और उसे पता नहीं था कि फुकाएरी के लापता होने की खबर अखबारों में कैसे आई। इसके बजाय, कोमात्सु की सलाह पर, उसने हर दिन अखबार पढ़ने की कोशिश की, लेकिन जहाँ तक उसकी नज़र थी, फुकाएरी के बारे में कोई और खबर नहीं आई थी। अखबारों का यही हाल होता है, वे जल्दी से बता देते हैं कि क्या हुआ, लेकिन आगे क्या हुआ, यह बताने की ज़हमत नहीं उठाते। इसीलिए खबरों का न होना उसके लिए एक मौन संदेश था कि कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं हुआ था।
अधिकांश साप्ताहिक पत्रिकाओं में इस विषय पर लेख छपे थे, लेकिन टेंगो ने उनमें से कोई भी नहीं पढ़ी थी। उसने केवल अखबारों में छपे विज्ञापन देखे थे, जिनमें सनसनीखेज शीर्षक थे, जैसे "सुंदर लेखिका के गुम होने का सच", "द एयर क्राइसालिस की लेखिका फुकाएरी कहाँ गायब हो गईं?" और "लापता लेखिका का गुप्त इतिहास"। इनमें से कई विज्ञापनों में प्रेस कॉन्फ्रेंस में फुकाएरी की तस्वीर भी छपी थी। बेशक, टेंगो को फुकाएरी के बारे में लिखी गई बातों में दिलचस्पी थी, लेकिन उसे इन सभी पत्रिकाओं को खरीदने और इकट्ठा करने का मन नहीं था। अगर इनमें से किसी में भी कोई महत्वपूर्ण खबर होती, तो कोमात्सु उससे संपर्क कर लेता। खबर न होने का मतलब सिर्फ इतना था कि कुछ हुआ ही नहीं था। दुनिया को अभी तक यह पता नहीं चला था कि "द एयर क्राइसालिस" (शायद) किसी और ने चुपके से लिखी थी।
लेखों में फुकाएरी के पिता के एक चरमपंथी समूह में कार्यकर्ता के रूप में बीते अतीत, यामानाशी के पहाड़ों में स्थित एक कम्यून में उनके एकांतवास में पले-बढ़े होने और उनके वर्तमान शिक्षक प्रोफेसर एबिसुनो (जो कभी एक प्रसिद्ध मानवविज्ञानी थे) के बारे में ही अधिक जानकारी दी गई थी। बस इतनी ही जानकारी उपलब्ध थी। साथ ही, यह भी बताया गया था कि खूबसूरत और रहस्यमयी लेखिका के लापता होने की खबर आई थी, लेकिन उनका उपन्यास 'द क्राइसालिस ऑफ एयर' अभी भी बेस्टसेलर था। फिलहाल, जनता की दिलचस्पी बनाए रखने के लिए पर्याप्त जानकारी उपलब्ध थी।
लेकिन जांच का दायरा बढ़ना तय था, खासकर अगर फुकाएरी की गैरमौजूदगी जारी रहती। तभी मुसीबतें शुरू होतीं। मान लीजिए, उदाहरण के लिए, एक रिपोर्टर उस स्कूल में जाता है जहाँ फुकाएरी पढ़ती थी। उन्हें पता चलता कि वह डिस्लेक्सिया से पीड़ित थी और इसी वजह से वह क्लास में भी नहीं जाती थी। वे उसके जापानी भाषा के ग्रेड या यहाँ तक कि उसके निबंध भी देखते - अगर उसने कभी

*

एक दिन काम से घर लौटते समय टेंगो को मेलबॉक्स में एक मोटा लिफाफा मिला। यह कोमात्सु की ओर से था और इस पर प्रकाशक का लोगो बना हुआ था। इस पर छह जगहों पर "अत्यावश्यक" की मुहर लगी हुई थी। घर पहुँचकर उसने लिफाफा खोला तो अंदर उसे 'द एयर क्राइसालिस' की समीक्षाओं का एक ढेर मिला। साथ ही कोमात्सु का एक पत्र भी था, जो उनकी हमेशा की तरह टेढ़ी-मेढ़ी लिखावट में था। उसे समझने में थोड़ा समय लगा।

पास होना,
फिलहाल कुछ खास नहीं हो रहा है। फुकाएरी का अभी तक कोई पता नहीं है। अखबार और टीवी मीडिया को मुख्य रूप से उसके अतीत में दिलचस्पी है, और सौभाग्य से, इसका हम पर कोई असर नहीं पड़ता। किताब खूब बिक रही है, लेकिन मैं तय नहीं कर पा रही कि जश्न मनाने का समय आ गया है या नहीं। दूसरी तरफ, प्रकाशन गृह बहुत खुश है। मुझे बोनस और निर्देशक की ओर से प्रशंसा पत्र मिला है। मैं यहाँ बीस साल से ज़्यादा समय से काम कर रही हूँ और मेरे बॉस ने कभी मेरी तारीफ़ नहीं की। मैं देखना चाहती हूँ कि अगर उन्हें सच्चाई पता चले तो उनके चेहरे पर क्या भाव होंगे।
मैंने आपको एयर क्राइसालिस के बारे में अब तक प्रकाशित समीक्षाओं और लेखों की प्रतियां भेज दी हैं। अगर आपके पास समय हो, तो इन्हें पढ़ लें, क्योंकि ये भविष्य में आपके लिए उपयोगी हो सकते हैं। इनमें ऐसी बातें हैं जो सीधे तौर पर आपकी रुचि की होंगी। और अगर आपको हंसी आती है, तो इनमें आपको मनोरंजन करने वाली चीजें भी मिलेंगी।
मैंने एक परिचित से न्यू जापान एसोसिएशन फॉर द प्रमोशन ऑफ आर्ट एंड साइंस के बारे में और जानकारी जुटाने को कहा। यह संगठन कुछ साल पहले स्थापित हुआ था और वास्तव में काम कर रहा है। इनके कार्यालय हैं और ये वार्षिक वित्तीय रिपोर्ट भी तैयार करते हैं। ये कुछ कलाकारों और शोधकर्ताओं को एक साल की छात्रवृत्ति देते हैं। कम से कम इनका दावा तो यही है। हालांकि, मुझे अभी तक यह पता नहीं चला है कि इनका पैसा कहां से आता है। जिस परिचित ने इनकी जांच की, उसने मुझे साफ-साफ बताया कि इनमें कुछ गड़बड़ है। यह भी संभव है कि ये कर चोरी के लिए बनाई गई एक फर्जी कंपनी हो। अगर हम और जांच करें, तो शायद हमें और भी जानकारी मिल जाए, लेकिन अभी मेरे पास इसके लिए समय नहीं है। खैर, जैसा कि मैंने आपको फोन पर बताया था, यह मानना बहुत मुश्किल है कि वे किसी ऐसे व्यक्ति को तीन मिलियन येन देना चाहते हैं जो अभी तक जनता के बीच जाना-पहचाना नहीं है। इस कहानी के पीछे कुछ छिपा हुआ है। हम इस संभावना से इनकार नहीं कर सकते कि इनके पीछे पायनियर्स का हाथ हो सकता है। अगर ऐसा है, तो उन्हें जरूर पता चल गया होगा कि आप एयर क्राइसालिस में शामिल हैं। किसी भी सूरत में, उस संगठन से कोई संबंध न रखना ही बेहतर है।

टेंगो ने चिट्ठी वापस लिफाफे में रख दी। आखिर कोमात्सु को मुझे लिखने की क्या ज़रूरत थी? चूंकि उसने मुझे समीक्षाएँ भेजी थीं, तो उसने कुछ शब्द लिखने के बारे में सोचा होगा, हालांकि वह उस तरह का आदमी नहीं है। अगर उसे कोई काम होता, तो वह मुझे सीधे फोन करके बताता। शायद यह चिट्ठी सबूत के तौर पर इस्तेमाल

"आपको परेशान करने के लिए क्षमा करें। मेरा नाम यासुदा है," उस व्यक्ति ने यथासंभव तटस्थ स्वर में कहा। न तो दोस्ताना, न ही शत्रुतापूर्ण। न ही आधिकारिक, लेकिन न ही अपरिचित।
यासुदा? उसे इस नाम का कोई व्यक्ति याद नहीं आ रहा था।
“मैंने आपको कुछ बताने के लिए फोन किया था,” उस आदमी ने कहा, मानो किताब के पन्नों के बीच एक निशान की तरह रुकते हुए। “मेरी पत्नी अब आपसे मिलने नहीं आ पाएगी। मैं आपको यही बताना चाहता था।”
फिर तेंगो को अचानक याद आया। यासुदा उसकी प्रेमिका का उपनाम था। क्योको यासुदा। उसे यह समझने में थोड़ा समय लगा, क्योंकि उसे उसका पूरा नाम सुनने के बहुत कम मौके मिले थे। तो वह जिस आदमी को ढूंढ रहा था, वह उसका पति था। उसके गले में एक गांठ सी बन गई।
"मुझे उम्मीद है कि आप समझ गए होंगे," उस आदमी ने कहा।
उसकी आवाज़ में कोई भावना नहीं थी। कम से कम टेंगो को तो नहीं मिली। बस लहजे की हल्की सी झलक थी, शायद क्यूशू या हिरोशिमा की, जिसे वह ठीक से समझ नहीं पाया।
"वह अब नहीं आ सकता," टेंगो ने दोहराया।
— जी हां, वह अब आपसे मिलने नहीं आ सकता।
हिम्मत जुटाकर टेंगो ने पूछा:
"क्या उसके साथ कुछ हुआ?"
सन्नाटा छा गया। उसका सवाल बिना जवाब के हवा में लटका रहा। आखिरकार, दूसरे ने कहा:
"तो अब से आपको मेरी पत्नी को दोबारा देखने का मौका नहीं मिलेगा। बस यही मैं आपको बताना चाहता था।"
उसे पता था कि टेंगो उसके साथ सो रहा था, और वे लगभग एक साल से हर हफ्ते मिलते आ रहे थे। फिर भी, अजीब बात यह थी कि उस आदमी की आवाज़ में कोई नाराज़गी या गुस्सा नहीं था। कुछ और ही था। उसने अपनी भावनाओं को ज़ाहिर नहीं किया, बल्कि एक वस्तुनिष्ठ छवि पेश की, जैसे कोई उजाड़ और बर्बाद बगीचा या बाढ़ के बाद नदी का किनारा।
मुझे सच में समझ नहीं आ रहा...
“तो फिर बेहतर यही होगा कि हम चीजों को यथावत छोड़ दें,” उस व्यक्ति ने बात काटते हुए कहा। उसकी आवाज़ में थकान का हल्का सा एहसास हुआ। एक बात तो स्पष्ट है। मेरी पत्नी खो गई है और किसी भी हालत में आपसे मिलने नहीं आ पाएगी।
"यह खो गया है," टेंगो ने अनमने ढंग से अपने वार्ताकार के शब्दों को दोहराया। "श्रीमान कवाना, मुझे आपसे बात करने में कोई खास आनंद नहीं आता। लेकिन बिना कुछ कहे आपको ऐसे ही छोड़ देना मेरे लिए उचित नहीं होता। क्या आपको लगता है कि मैंने आपको मजे के लिए फोन किया था?"
वह व्यक्ति कुछ क्षणों के लिए चुप रहा और रिसीवर से कोई आवाज़ नहीं आई। उसने उसे किसी ऐसी जगह से फोन किया था जो पूरी तरह सन्नाटे में डूबी हुई थी, या शायद उसकी भावनाओं ने एक ऐसा निर्वात बना दिया था जिसने उसके आसपास के सभी शोर को सोख लिया था।
टेंगो ने सोचा, मुझे उससे कुछ पूछना ही होगा। नहीं तो बात यहीं खत्म हो जाएगी, ऐसे ही उलझे हुए इशारों में उलझी हुई। मैं उसे फोन काटने नहीं दे सकता। लेकिन

दूसरी तरफ मौजूद आदमी का इरादा उसे ज़्यादा बातें बताने का नहीं था। अगर वह सच बताने को तैयार ही नहीं था तो वह उससे क्या पूछता? खालीपन से कौन से शब्द कहे जाएं जिससे वह जवाब दे? जब टेंगो सही सवाल ढूंढने की कोशिश कर रहा था, तभी अचानक बातचीत खत्म हो गई। उस आदमी ने फोन काट दिया और टेंगो की नज़रों से ओझल हो गया। शायद हमेशा के लिए।
टेंगो कुछ देर तक बंद पड़े रिसीवर को कान से लगाए बैठा रहा। अगर कोई उसकी बातचीत सुन रहा होता, तो शायद उसे कोई सुराग मिल जाता। उसने सांस रोककर ध्यान से सुना, लेकिन उसे कोई संदिग्ध आवाज़ सुनाई नहीं दी। उसे सिर्फ अपने दिल की धड़कन सुनाई दे रही थी। उस नियमित लय को सुनकर उसे ऐसा लगा मानो वह एक घिनौने चोर में बदल गया हो, जो रात में अजनबियों के घरों में घुसता है, अंधेरे में छिपता है, सांस रोककर घर के लोगों के सो जाने का इंतज़ार करता है।
खुद को शांत करने के लिए, टेंगो ने पानी उबाला और अपने लिए हरी चाय बनाई। चाय का प्याला हाथ में लिए वह मेज पर बैठ गया और अपने मन में अभी-अभी हुई बातचीत को दोहराने लगा।
“मेरी पत्नी खो गई है और अब कभी आपसे मिलने नहीं आ पाएगी,” उस आदमी ने कहा था। वह “कभी नहीं” शब्द से विशेष रूप से परेशान था। यह शब्द उसे किसी गहरे, गीले कीचड़ की तरह लग रहा था।
यासुदा शायद यह कहना चाह रहा था कि अगर उसकी पत्नी उससे दोबारा मिलना भी चाहे, तो भी यह वस्तुतः असंभव है। असंभव से उसका क्या तात्पर्य था? किस दृष्टिकोण से? और उसके खो जाने से उसका क्या मतलब था? क्या वह किसी दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गई थी? क्या वह किसी असाध्य बीमारी का शिकार हो गई थी? क्या उस पर इतनी बुरी तरह से हमला किया गया था कि उसे पहचानना भी मुश्किल था? ये सभी तस्वीरें एक के बाद एक तेंगो की आँखों के सामने कौंध गईं। उसने उसे व्हीलचेयर पर बैठे देखा, उसका कोई अंग कटा हुआ था, पट्टियाँ इतनी बुरी तरह बंधी थीं कि वह हिल भी नहीं सकती थी। या शायद उसे किसी तहखाने में कुत्ते की तरह जंजीरों से बांधकर रखा गया था। लेकिन ये सभी संभावनाएं बहुत ही काल्पनिक थीं।
क्योको यासुदा (अब जब वह उसके बारे में सोचता था तो उसका पूरा नाम इस्तेमाल करता था) ने उससे अपने पति के बारे में शायद ही कभी बात की थी। तेंगो को कोई अंदाज़ा नहीं था कि उसका पति क्या काम करता था, उसकी उम्र क्या थी, वह कैसा दिखता था या उसका स्वभाव कैसा था। उसे नहीं पता था कि वे कहाँ मिले थे या उनकी शादी कब हुई थी, वह लंबा था या छोटा, मोटा था या पतला, सुंदर था या बदसूरत। उसे यह भी नहीं पता था कि उनके बीच अच्छे संबंध थे या नहीं। वह बस इतना जानता था कि उस महिला के पास किसी चीज़ की कमी नहीं थी (वास्तव में, उसका जीवन परिपूर्ण था), लेकिन वह उनके यौन संबंधों की संख्या (या गुणवत्ता) से पूरी तरह संतुष्ट नहीं थी। लेकिन यह सब तो बस उसका अनुमान था। वे अपनी दोपहरें बिस्तर पर बिताते थे, तरह-तरह की बातें करते थे, लेकिन उसने कभी अपने पति का ज़िक्र नहीं किया था। तेंगो को भी ज़्यादा जानने की कोई खास इच्छा नहीं थी। वह यह पता लगाना नहीं चाहता था कि जिस आदमी की पत्नी को उसने चुराया था, वह किस तरह का आदमी था। यह एक तरह की शिष्टाचार की बात लगती थी। लेकिन अब, उसकी वर्तमान स्थिति में, उसे पछतावा हो रहा था कि उसने उसके पति के बारे में कभी पूछा ही क्यों (अगर पूछा होता, तो शायद उसने ईमानदारी से जवाब दिया होता)। क्या वह

ईर्ष्यालु था? क्या वह अत्यधिक अधिकार जताने वाला था? क्या उसमें हिंसक प्रवृत्ति थी?
टेंगो ने सोचा, चलो खुद को उसकी जगह रखकर देखते हैं। अगर मैं उसकी जगह होता तो मेरी क्या प्रतिक्रिया होती? अगर मेरी शादी हो चुकी होती, मेरे दो छोटे बच्चे होते और मैं एक सामान्य, शांत पारिवारिक जीवन जी रहा होता। बस एक दिन मुझे पता चलता कि मेरी पत्नी हफ्ते में एक बार किसी दूसरे आदमी के साथ सो रही है, जो उससे दस साल छोटा है, और उनका रिश्ता एक साल से ज़्यादा समय से चल रहा है। अगर मैं ऐसी स्थिति में होता तो मुझे कैसा लगता? मेरे दिल में क्या होता? तीव्र क्रोध, गहरी निराशा, अनिश्चित उदासी, या एक उदासीन मुस्कान? क्या मैं वास्तविकता से अपना संपर्क खो देता? या फिर यह भावनाओं का एक ऐसा मिश्रण होता जिसे समझना मुश्किल होता?
तेंगो ने लाख कोशिश की, लेकिन वह समझ नहीं पा रहा था कि उसे क्या महसूस हो रहा है। इसके बजाय, इस परिकल्पना से उसके मन में एक अनजान आदमी की छवि उभर आई, जो सफेद नाइटगाउन पहने उसकी माँ के स्तनों को चूम रहा था। उस औरत के स्तन भरे हुए थे, बड़े और सख्त निप्पल थे। उसके चेहरे पर एक खोई हुई, मोहक मुस्कान तैर रही थी। उसका मुँह आधा खुला था और आँखें बंद थीं। उसके नम, काँपते होंठ किसी यौन अंग की याद दिला रहे थे। उसके बगल में तेंगो शांति से सो रहा था। उसने सोचा, मानो कारण और परिणाम उलट गए हों। शायद यह रहस्यमय आदमी खुद तेंगो है, और वह औरत कोई और नहीं बल्कि क्योको यासुदा है। संरचना तो वही है, लेकिन पात्र बदल गए हैं। इसका मतलब है कि मेरा अपना जीवन मेरे भीतर गहराई में छिपी एक अव्यक्त छवि को केवल बाहरी रूप दे रहा है और उसकी रूपरेखा खींच रहा है। उसके खो जाने के लिए मैं किस हद तक ज़िम्मेदार हूँ?
*

टेंगो को नींद नहीं आ रही थी। यासुदा की आवाज़ अभी भी उसके कानों में गूंज रही थी। उसकी आवाज़ में गहरे भाव थे, उसके बोले शब्द अजीब तरह से वास्तविक लग रहे थे। वह क्योको यासुदा के बारे में सोच रहा था। उसका चेहरा और उसके शरीर की छोटी से छोटी बात। उसने उसे आखिरी बार दो शुक्रवार पहले देखा था। हमेशा की तरह, उन्होंने आराम से शारीरिक संबंध बनाए थे। उस शाम आए फोन कॉल के बाद, वह दिन अचानक बहुत दूर लगने लगा। मानो इतिहास का कोई दृश्य हो।
शेल्फ पर कुछ रिकॉर्ड रखे थे जिन्हें वो बिस्तर पर साथ में सुनने के लिए लाया था। सिर्फ़ जैज़ एल्बम, बहुत पुराने। लुई आर्मस्ट्रांग, बिली हॉलिडे (एक रिकॉर्ड जिसमें बार्नी बिगार्ड ने उनका साथ दिया था), 1940 के दशक के ड्यूक एलिंगटन। इन्हें कई बार सुना गया था, लेकिन इन्हें बहुत संभालकर रखा गया था। सालों बीतने से इनके कवर थोड़े पीले पड़ गए थे, लेकिन रिकॉर्ड बिल्कुल नए जैसे दिख रहे थे। एल्बम के कवर देखते हुए, ये बात कि वो उसे फिर कभी नहीं देख पाएगा, धीरे-धीरे हकीकत बनने लगी।
सच कहें तो, तेंगो क्योको यासुदा से प्यार नहीं करता था। उसके साथ रहने की इच्छा उसे कभी नहीं हुई थी, और उसके जाने पर उसे अलविदा कहना भी मुश्किल नहीं था। उसके ख्याल से उसे कोई फर्क नहीं पड़ता था। लेकिन वह उसकी मौजूदगी का आदी हो चुका था और क्योको उसे प्यारी थी। उसे उनकी साप्ताहिक दिनचर्या अच्छी लगती थी। वह उसके घर आने और उसके करीब रहने, उसके स्पर्श का बेसब्री से इंतजार करता था। तेंगो के लिए यह काफी असामान्य था, क्योंकि उसने बहुत कम महिलाओं के

साथ ऐसी आत्मीयता महसूस की थी। ज्यादातर महिलाएं, चाहे उनके साथ उसके यौन संबंध रहे हों या नहीं, उसे असहज महसूस कराती थीं। और इस असहजता को नियंत्रित करने के लिए, उसे अपने भीतर एक सीमा बनानी पड़ती थी। दूसरे शब्दों में, उसे अपने दिल के कुछ हिस्सों को बंद करना पड़ता था। लेकिन जब वह क्योको यासुदा के साथ होता था, तो उसे ऐसी जटिल युक्तियों की जरूरत नहीं पड़ती थी। वह समझ जाती थी कि वह क्या चाहता है और क्या नहीं चाहता। इसीलिए तेंगो खुद को उससे मिलकर बहुत भाग्यशाली मानता था।
लेकिन कुछ ऐसा हुआ था कि वह अब खो गई थी। किसी अज्ञात कारण से, वह किसी भी हालत में उससे मिलने नहीं जा सकती थी। और उसके पति की बातों से यही लगता था कि बेहतर यही होगा कि टेंगो को इसके कारणों या परिणामों के बारे में पता न चले।
*

नींद न आने के कारण, टेंगो बिस्तर पर बैठ गया और ड्यूक एलिंगटन का गाना बंद कर दिया। फोन फिर से बजा। दीवार पर लगी घड़ी में दस बजकर बीस मिनट हो रहे थे। कोमात्सु के अलावा, वह सोच भी नहीं सकता था कि इस समय उसे और कौन फोन कर रहा होगा, लेकिन फोन की घंटी से ऐसा नहीं लग रहा था कि वह कोमात्सु है। जब कोमात्सु फोन करता था, तो उसकी आवाज़ में जल्दबाजी और बेचैनी ज़्यादा होती थी। शायद यासुदा को याद आ गया था कि वह उसे कुछ बताना चाहता है। वह फोन उठाना नहीं चाहता था। उसके अनुभव में, इतनी देर रात के फोन कभी अच्छी खबर नहीं लाते थे, लेकिन उसकी स्थिति में उसके पास फोन उठाने के अलावा कोई चारा नहीं था। “श्रीमान कावाना?” एक पुरुष की आवाज सुनाई दी।
यह न तो कोमात्सु की आवाज़ थी, न ही यासुदा की। यह निश्चित रूप से उशिकावा की आवाज़ थी। वह ऐसे बोल रहा था मानो उसका मुँह पानी या किसी अजीब तरल पदार्थ से भरा हो। तेंगो की नज़र अनायास ही उस असामान्य चेहरे और ऊपर से चपटे विकृत सिर पर पड़ी।
"असुविधाजनक समय के लिए क्षमा करें। मैं उशिकावा हूँ, जिसने आपको उस दिन फोन किया था। मैं आपको पहले फोन करना चाहता था, लेकिन कुछ काम आ गया इसलिए अब कर रहा हूँ। मुझे पता है कि आप जल्दी सोते हैं और जल्दी उठते हैं। यह अच्छी बात है। देर रात तक समय बर्बाद करना ठीक नहीं है। अंधेरा होते ही सो जाना और सूर्योदय के समय उठना सबसे अच्छा होता है। लेकिन सच तो यह है, श्रीमान कावाना, मुझे अंतरात्मा ने बताया कि आप आज शाम अभी तक नहीं सोए हैं, इसलिए मैंने आपको फोन करने की हिम्मत की। आशा है मैंने आपको परेशान नहीं किया होगा।"
टेंगो को उशिकावा की बातें बिल्कुल पसंद नहीं आईं। उसे यह बात भी पसंद नहीं आई कि उसके पास उसका घर का फ़ोन नंबर था। और यह साफ़ था कि उसकी अंतरात्मा ने उसे कुछ नहीं बताया था, बल्कि वह अच्छी तरह जानता था कि वह अभी भी जागा हुआ है, इसीलिए उसने उसे फ़ोन किया था। शायद उसने देखा होगा कि उसके कमरे की बत्ती अभी भी जल रही है। क्या कोई उसे देख रहा था? उसने कल्पना की कि उनके कुशल और मेहनती जासूसों में से कोई शक्तिशाली दूरबीन से उसके अपार्टमेंट पर नज़र रख रहा होगा।
"जी हां, मैं अभी भी जागा हुआ था," उन्होंने कहा। "आपका अनुमान सही था। मुझे लगता है मैंने कुछ ज्यादा ही कड़क चाय पी ली थी।"
"जी? यह तो ठीक नहीं है। जब नींद नहीं आती, तो अक्सर मन में तरह-तरह के अप्रिय विचार आते हैं। बताइए, क्या हम किसी विषय पर चर्चा कर सकते हैं?"

"जब तक कि यह कोई ऐसी चीज न हो जो मुझे हमेशा के लिए जगाए रखे।"
उशिकावा एक अजीब सी आवाज़ में हँसा। फोन के दूसरी तरफ - दुनिया में कहीं - उसका विकृत सिर भी उसी तरह विकृत रूप से हिल रहा था।
हा हा हा, श्रीमान कावाना, आप कितनी मज़ेदार बातें करते हैं। मैं आपको लोरी तो नहीं सुनाऊँगी, लेकिन कोई इतनी गंभीर बात भी नहीं बताऊँगी कि आपकी नींद उड़ जाए। चिंता मत कीजिए। दरअसल, यह तो बस एक सवाल है जिसका जवाब आप हाँ या ना में दे सकते हैं। उह... मेरा मतलब छात्रवृत्ति के बारे में है। तीन मिलियन येन प्रति वर्ष की छात्रवृत्ति। देखिए, यह कोई अप्रिय बातचीत नहीं है। क्या आपने हमारे प्रस्ताव पर विचार किया है? हमें जल्द ही अपना अंतिम निर्णय देना होगा। मैंने पिछली बार आपको साफ-साफ बता दिया था कि मैं छात्रवृत्ति स्वीकार नहीं करूंगा। प्रस्ताव के लिए मैं आभारी हूं, लेकिन मुझे किसी चीज की कमी नहीं है।
न पैसे की, न आजादी की। मैं अपना जीवन पहले की तरह ही जीना चाहता हूं।
— बिना किसी बाध्यता के।
— हाँ, दाईं ओर।
"हाँ, यह एक सराहनीय सोच है," उशिकावा ने हल्की खांसी करते हुए कहा। "किसी संगठन से संबंध रखे बिना स्वतंत्र रहना चाहना। मैं आपकी बात अच्छी तरह समझता हूँ। लेकिन, श्रीमान कावाना, मैं यह बात आपके सम्मान में कह रहा हूँ, हम जिस दुनिया में रहते हैं, उसमें कभी कुछ भी हो सकता है। बीमा होना अच्छा है, कुछ ऐसा जिस पर आप भरोसा कर सकें, मेरा मतलब है, हवा से बचाव के लिए। इसके बिना, यह बहुत खतरनाक है। उदाहरण के लिए, श्रीमान कावाना, अब आपके पास भरोसा करने के लिए कुछ भी नहीं है। आप अपने आस-पास के लोगों पर अपनी सुरक्षा के लिए भरोसा नहीं कर सकते। जरूरत पड़ने पर, अगर हालात बिगड़ते हैं, तो आपके आस-पास के सभी लोग आपको छोड़कर भाग जाएंगे। क्या मैं गलत हूँ? कहते हैं ना, अच्छी सुरक्षा बुरे खतरे से बेहतर होती है। कुछ भी होने की स्थिति में निश्चितता होना बेहतर है। और यह सिर्फ पैसे की बात नहीं है।" पैसा तो सिर्फ एक प्रतीक है।
"मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा कि आपका क्या मतलब है," टेंगो ने जवाब दिया। उन्हें फिर से वही बेचैनी महसूस हुई जो उन्हें पहली बार उशिकावा से मिलने पर हुई थी।
— खैर, हाँ, आप अभी भी जवान और स्वस्थ हैं, आप इन बातों को नहीं समझते। देखिए, उदाहरण के लिए, एक निश्चित उम्र के बाद, जीवन अंतहीन नुकसानों की एक श्रृंखला के अलावा कुछ नहीं है। जिन चीजों से आप प्यार करते हैं और जिनकी परवाह करते हैं, वे एक-एक करके आपकी उंगलियों से फिसलने लगती हैं। वे एक पुरानी कंघी के दांतों की तरह गायब हो जाती हैं। और आपके पास केवल बेकार नकलें ही बचती हैं। जिन लोगों से आप प्यार करते हैं, वे एक-एक करके बिछड़ जाते हैं। शारीरिक शक्ति, सपने, आशाएं, आदर्श और विश्वास एक-एक करके चले जाते हैं। कुछ अपने जाने की घोषणा करते हैं, कुछ को आप एक दिन जागकर पाते हैं कि वे बस गायब हो गए हैं। और एक बार खो जाने के बाद, उन्हें खोजने या उनकी जगह लेने का कोई तरीका नहीं है। खैर, यह बिल्कुल भी सुखद नहीं है। कभी-कभी दर्द आपको तोड़ देता है। श्री कवाना, आप जल्द ही तीस के हो जाएंगे। आप धीरे-धीरे उस दौर में प्रवेश कर रहे हैं जब चीजें गिरने लगती हैं। मेरा मतलब है, साल बीतते हैं। आप धीरे-धीरे समझने लगेंगे कि चीजों को खोने का दर्द कैसा होता है। क्या मैं गलत हूँ?

टेंगो को आश्चर्य हुआ कि क्या वह क्योको यासुदा का जिक्र कर रहा था। शायद उसे पता था कि वे हफ्ते में एक बार छुपकर मिलते थे और टेंगो को अज्ञात किसी कारण से उसने उससे मिलना बंद कर दिया था।
"आप मेरी निजी जिंदगी के बारे में बहुत कुछ जानते हैं," टेंगो ने कहा।
"नहीं, बिलकुल नहीं," उशिकावा ने जवाब दिया। "मैं बस आपको इस दुनिया की असलियत बता रहा हूँ, बस इतना ही। सच में। मुझे आपकी निजी जिंदगी के बारे में कुछ भी नहीं पता।"
टेंगो चुप रहा।
"कृपया यह छात्रवृत्ति स्वीकार कर लीजिए," उशिकावा ने आह भरते हुए कहा। "सच कहूँ तो, आप बहुत ही नाजुक स्थिति में हैं। अगर, भगवान न करे, कुछ हो जाता है, तो हम आपकी रक्षा करेंगे। हम आपको सहारा दे सकते हैं। अन्यथा, आप खुद को एक निराशाजनक स्थिति में फंसा हुआ पा सकते हैं।"
“बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं?” टेंगो ने कहा।
- बिल्कुल।
— विशेष रूप से, किस प्रकार की स्थिति?
उशिकावा कुछ क्षणों के लिए रुके। फिर उन्होंने कहा:
श्री कवाना, कुछ बातें ऐसी होती हैं जिन्हें न जानना ही बेहतर होता है। जब आप बहुत कुछ जान लेते हैं, तो आपको नींद नहीं आती। मेरा मतलब ऐसी बातों से है जो बहुत तेज़ चाय से तुलना करने लायक भी नहीं हैं। वे आपकी हर तरह की शांतिपूर्ण नींद को हमेशा के लिए छीन लेंगी। मतलब... इसे ऐसे समझिए: अनजाने में आपने एक अजीब नल खोल दिया और उसमें से अजीब चीजें निकलने लगीं। और इसका असर आपके आस-पास के लोगों पर पड़ता है। और यह असर सुखद नहीं होता।
क्या इसमें बौनों का कोई हाथ है?
उन्होंने यह सवाल बड़ी सहजता से पूछा था, लेकिन उशिकावा चुप हो गए। गहरा सन्नाटा छा गया, मानो कोई काला पत्थर गहरे पानी की तलहटी में डूब गया हो। "श्री उशिकावा, मैं वास्तव में जानना चाहता हूँ कि यह सब क्या है। अटकलें लगाना बंद करें और सीधे बात करें। उसके साथ क्या हुआ?"
"कौन सा? मुझे नहीं पता आप किस बारे में बात कर रहे हैं।"
टेंगो ने आह भरी। यह बातचीत फोन पर करने के लिए बहुत ही असामान्य थी।
"कृपया मुझे क्षमा करें, श्रीमान कावाना, लेकिन मैं केवल एक मध्यस्थ हूँ। मैं अपने ग्राहक का संदेश आप तक पहुँचा रहा हूँ, और मुझे आपसे सामान्य विषयों पर यथासंभव सरल भाषा में बात करने का कार्य सौंपा गया है," उशिकावा ने सावधानी से कहा। "मुझे खेद है अगर मैं आपको चिढ़ा रहा हूँ, लेकिन मुझे आपसे यथासंभव अस्पष्ट रूप से ही बात करनी होगी। इसके अलावा, सच कहूँ तो मेरा ज्ञान अत्यंत सीमित है। वैसे भी, मुझे नहीं पता कि आप किसके बारे में बात कर रहे हैं। यदि आप मुझे और अधिक जानकारी नहीं देंगे तो—"
"ठीक है, तो मुझे बताओ कि ये छोटे लोग कौन हैं।"
— श्री कवाना, मुझे इन छोटे-छोटे जीवों के बारे में कुछ भी पता नहीं है। बेशक, मैं जानता हूँ कि ये 'द क्राइसालिस ऑफ एयर' के पात्र हैं, लेकिन इससे ज़्यादा... खैर, जहाँ तक मैं देख पा रहा हूँ, ऐसा लगता है कि आपने अनजाने में ही दुनिया पर कुछ ऐसा छोड़ दिया है जो क्या है। हालात कैसे बिगड़ते हैं, इस पर निर्भर करता है कि यह चीज़ बहुत खतरनाक हो सकती है। किस तरह से और कितना खतरनाक, यह मेरे

मुवक्किल को अच्छी तरह पता है। उनके पास इस खतरे से निपटने का ज्ञान है। इसीलिए हम आपकी मदद के लिए आगे आए हैं। और सच कहूँ तो, हमारी पहुँच बहुत दूर तक है। दूर तक और दूर तक।
"और आप जिस ग्राहक की बात कर रहे हैं, वह कौन है? क्या उसका संबंध पायनियर्स से है?"
"दुर्भाग्यवश, मुझे किसी का नाम बताने का अधिकार नहीं है," उशिकावा ने उदास स्वर में उत्तर दिया। "लेकिन जो भी हो, मैं आपको बता सकता हूँ कि उसके पास कुछ शक्ति है। एक ऐसी शक्ति जिस पर विचार करना आवश्यक है। हम आपको सुरक्षा प्रदान कर रहे हैं। देखिए, यह हमारा अंतिम प्रस्ताव है। इसे स्वीकार करना या न करना आपका निर्णय है। लेकिन एक बार जब आप निर्णय ले लेंगे, तो चीजें इतनी आसानी से नहीं बदलेंगी। इसलिए सोच-समझकर निर्णय लें। और एक बात और: यदि आप उनका साथ नहीं देते हैं, तो आपको उनके लंबे हाथ से कुछ और अप्रिय परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं, भले ही वे ऐसा न चाहें।"
"किस तरह की अप्रिय बातें?"
उशिकावा ने तुरंत सवाल का जवाब नहीं दिया। रिसीवर से एक अजीब सी आवाज़ आ रही थी, मानो जिससे वह बात कर रहा था वह अपने होठों के कोने से लार चूस रहा हो। "मुझे भी पूरी जानकारी नहीं है," उशिकावा ने कहा। "मुझे इसके बारे में ज्यादा समझाया नहीं गया था। इसलिए मैं आपको कुछ सामान्य बातें बता देता हूँ।" “मैंने किस चीज की जंजीरें खोलीं?” टेंगो ने पूछा।
"मुझे भी इस बारे में कुछ नहीं पता," उशिकावा ने कहा। "मैं फिर से दोहराता हूँ, मैं केवल एक मध्यस्थ प्रतिनिधि हूँ। मुझे स्थिति की पूरी जानकारी नहीं है। मुझे केवल सीमित जानकारी दी गई है। जब तक यह जानकारी मुझ तक पहुँची, तब तक सूचना का स्रोत लगभग खत्म हो चुका था। मुझे सीमित अधिकार दिए गए हैं, इसलिए मैं बस वही बता रहा हूँ जो मेरे मुवक्किल ने मुझे करने का निर्देश दिया है। आप सोच रहे होंगे कि उन्होंने आपसे सीधे संपर्क क्यों नहीं किया, इस तरह के एक असामान्य मध्यस्थ की क्या ज़रूरत थी? क्या उनके बिना काम ज़्यादा आसान नहीं होता? लेकिन इन सवालों का भी मेरे पास कोई जवाब नहीं है।"
उशिकावा खांसे और अगले प्रश्न की प्रतीक्षा करने लगे। लेकिन कोई प्रश्न नहीं आया, इसलिए उन्होंने बोलना जारी रखा:
"तो, आप उस चीज़ के बारे में पूछ रहे हैं जिसे आपने जंजीरों से मुक्त किया है, है ना?"
मैं सहमत हूं।
— श्री कवाना, आप जानते हैं कि मैं क्या सोचता हूँ, यह ऐसी चीज नहीं है जिसे कोई उंगली से इशारा करके कह सके, “देखो, यही है!” इसे खोजने के लिए आपको स्वयं प्रयास करना होगा। लेकिन हो सकता है कि आपकी खोज के अंत तक, जब आप इसे समझ पाएं, तब तक बहुत देर हो चुकी हो। मैंने जो देखा है, उससे लगता है कि आपमें कुछ विशेष क्षमताएं हैं, सचमुच अद्भुत, जिनके बारे में आम लोग सपने में भी नहीं सोचते। यह स्पष्ट है। यही कारण है कि आपके द्वारा उठाए गए कदम अनदेखी नहीं किए जा सकते और एक खतरा हैं। मेरे मुवक्किल आपकी इन क्षमताओं को महत्व देते हैं। इसीलिए मैंने आपको छात्रवृत्ति की पेशकश की है। लेकिन जान लें कि ये क्षमताएं आपके लिए पर्याप्त नहीं हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप समस्या को कैसे देखते हैं, लेकिन आपके लिए अपर्याप्त क्षमताएं होना, इसके

विपरीत, उन्हें न होने से कहीं अधिक खतरनाक हो सकता है। वर्तमान स्थिति के बारे में मेरी यही धारणा है।
"दूसरी ओर, आपके ग्राहक के पास पर्याप्त ज्ञान और कौशल है। क्या आपका यही मतलब है?"
नहीं, आप ऐसा नहीं कह सकते। कोई भी यह तय नहीं कर सकता कि टीके पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं या नहीं। एक नए प्रकार के संक्रामक रोग के बारे में सोचिए। उनके पास जानकारी है - टीके के बारे में क्या? यह अब साबित हो चुका है कि यह कुछ हद तक कारगर है। लेकिन रोगाणु जीवित हैं, विकसित हो रहे हैं और पल-पल अधिक प्रतिरोधी होते जा रहे हैं। वे शक्तिशाली और बुद्धिमान हैं। वे एंटीबॉडी से एक कदम आगे रहने की कोशिश करते हैं। हमें नहीं पता कि टीका कितने समय तक प्रभावी रहेगा या उपलब्ध स्टॉक पर्याप्त होगा या नहीं। इसीलिए मेरे ग्राहक इस खतरे के बारे में चेतावनी दे रहे हैं।
लेकिन उन्हें मेरी जरूरत क्यों है?
— अगर आप मुझे बीमारी के साथ तुलना जारी रखने की अनुमति दें, तो आप कह सकते हैं कि आप दोनों ही इसके मुख्य वाहक हैं।
“तुम दोनों?” टेंगो ने पूछा। “तुम्हारा मतलब मुझसे और एरिका फुकाडा से है?” उशिकावा ने कोई जवाब नहीं दिया।
"अगर आप मुझे एक शास्त्रीय मुहावरे का प्रयोग करने की अनुमति दें, तो आपने पैंडोरा का डिब्बा खोल दिया है। इससे दुनिया में तरह-तरह की चीजें सामने आ गई हैं। मेरे अनुमानों के आधार पर, मेरा मानना है कि मेरे ग्राहक की भी यही राय है। संयोग से, आप दोनों जितना सोचते हैं उससे कहीं अधिक मजबूत जोड़ी हैं। आप एक-दूसरे की कमियों को पूरा करते हैं।"
लेकिन इसमें कुछ भी गैरकानूनी नहीं है!
— बिलकुल। यह न तो कानूनी तौर पर और न ही धर्मनिरपेक्ष तौर पर कोई अपराध है। लेकिन, अगर मैं जॉर्ज ऑरवेल—एक महान विद्वान और उद्धरणों का अथाह स्रोत—के शब्दों में कहूँ, तो आपने जो किया है वह विचार-अपराध के बहुत करीब है। अजीब संयोग से, हम 1984 में हैं। ज़रूर कोई न कोई संबंध होगा। खैर, मैंने आपसे बहुत ज़्यादा बात कर ली। और मैंने जो कुछ कहा है, वह केवल मेरा निजी अनुमान है। बस इतना ही। मेरे पास इसे साबित करने के लिए कोई सबूत नहीं है। लेकिन चूंकि आपने पूछा है, इसलिए मैंने आपको मोटे तौर पर बता दिया है कि मैं क्या सोचता हूँ। उशिकावा चुप हो गया, और टेंगो सोचने लगा। क्या ये उसकी निजी धारणाएँ थीं? इस आदमी की बातों पर वह कितना विश्वास कर सकता था?
"हमें अपनी बातचीत समाप्त करनी होगी," उशिकावा ने कहा। "मैं आपको सोचने के लिए कुछ समय दूंगा, क्योंकि यह एक महत्वपूर्ण मामला है। लेकिन मैं आपको ज्यादा समय नहीं दे सकता। चाहे कुछ भी हो, समय बीतता जा रहा है। टिक-टिक, बिना रुके। मैंने जो प्रस्ताव रखा है, उस पर गंभीरता से विचार करें। मैं थोड़ी देर में आपसे फिर संपर्क करूंगा। शुभ रात्रि। आपसे बात करके अच्छा लगा। श्री कावाना, आशा है आप अच्छी नींद सो रहे होंगे!"
जवाब का इंतज़ार किए बिना, उशिकावा ने दृढ़ता से फोन काट दिया। तेंगो कुछ देर तक अपने हाथ में पकड़े हुए बंद रिसीवर को ऐसे देखता रहा, जैसे कोई किसान सूखे के दौरान खेत से सूखी सब्ज़ी उठा रहा हो। कई लोग उसके सामने ही फोन काट रहे थे।

जैसा कि उम्मीद थी, उसे एक-दो बार में नींद नहीं आई। जब तक सूरज की पहली हल्की किरणें पर्दे से छनकर अंदर नहीं आने लगीं और शहर के चहचहाते पक्षी जाग कर काम के लिए तैयार नहीं हो गए, तब तक टेंगो फर्श पर दीवार से टेक लगाकर बैठा रहा, अपनी प्रेमिका और उस लंबे, मजबूत हाथ के बारे में सोचता रहा जो कहीं से प्रकट होता था। लेकिन इससे उसे कोई फायदा नहीं हो रहा था। उसके विचार व्यर्थ ही घूम रहे थे।
टेंगो ने चारों ओर देखा और आह भरी। उसे एहसास हुआ कि वह पूरी तरह अकेला है।
ठीक वैसे ही जैसे उशिकावा ने कहा था। उसके आसपास कोई सहारा नहीं था।

अध्याय 7 वह स्थान जहाँ आप कदम रखेंगे

ओकुरा होटल के मुख्य भवन की लॉबी विशाल, अंधेरी और ऊंची छत वाली थी, जो किसी विशाल, भव्य गुफा की याद दिलाती थी। सोफे पर बैठे लोगों की बातें खोखली गूंज रही थीं, मानो किसी मृत प्राणी की आहें हों। कालीन मोटा और मुलायम था, मानो उत्तरी ध्रुव के किसी द्वीप पर बिछी प्राचीन काई की चादर हो, जो समय के साथ वहां चलने वाले सभी लोगों के पदचिह्नों को सोख लेती हो। लॉबी से गुजरने वाले पुरुष और महिलाएं भूतों की तरह लग रहे थे, मानो प्राचीन काल के किसी श्राप से बंधे हों और बार-बार अपनी भूमिका निभा रहे हों। पुरुष अपने सूट में कवच की तरह जकड़े हुए थे, पतली लड़कियां आकर्षक काली पोशाकों में, मानो स्वागत कक्ष में किसी समारोह के लिए तैयार हों। उनके छोटे लेकिन महंगे गहने चमकने के लिए प्रकाश की किरण की लालसा कर रहे थे, मानो खून के प्यासे चमगादड़ हों। एक कोने में, दो बुजुर्ग अजनबी, कद में लंबे, मानो अपनी जवानी को पीछे छोड़ चुके राजा- रानी हों, अपने थके हुए शरीर को सिंहासन पर टिकाए हुए थे।
नीली पैंट, सादा सफेद ब्लाउज, सफेद स्नीकर्स और नीले नाइकी बैग में, आओमामे उस पौराणिक परिदृश्य में बिल्कुल भी फिट नहीं बैठ रही थी। वह शायद होटल के किसी ग्राहक द्वारा बुलाई गई आया जैसी लग रही थी। यही आओमामे सोच रही थी, विशाल भुजाओं वाली कुर्सी पर बैठी समय बीतने का इंतजार कर रही थी। लेकिन बस, उसने खुद से कहा। मैं यहाँ शिष्टाचार भेंट करने नहीं आई हूँ। वहाँ बैठे-बैठे उसे एक पल के लिए ऐसा लगा जैसे कोई उसे देख रहा हो। उसने चारों ओर देखा, लेकिन किसी को नहीं देखा। यह उनका काम है, उसने खुद से कहा। उन्हें बस देखना है!
साढ़े छह बजे, आओमामे उठी और अपना बैग साथ लेकर बाथरूम में चली गई। उसने साबुन से हाथ धोए और ध्यान से अपनी शक्ल-सूरत देखी, ताकि सब ठीक रहे। फिर उसने बड़े, साफ़ शीशे में खुद को देखते हुए कई गहरी साँसें लीं। बाथरूम बहुत बड़ा था, लेकिन खाली था। शायद उसके पूरे अपार्टमेंट से भी ज़्यादा विशाल। "यह मेरा आखिरी काम है," उसने शीशे में खुद से फुसफुसाते हुए कहा। इसे अच्छे से पूरा करो और फिर गायब हो जाऊँगी। एक भूत की तरह। मैं अभी यहाँ हूँ। कल मैं यहाँ नहीं रहूँगी। कुछ दिनों में मेरा नाम और चेहरा अलग होगा।
आओमामे वापस हॉल में आई और अपनी कुर्सी पर बैठ गई। उसने अपना स्पोर्ट्स बैग बगल की मेज पर रख दिया। उसमें सात गोलियों वाली स्वचालित पिस्तौल और वह धारदार औजार था जिसे वह उस आदमी के गले में घोंपने वाली थी। उसने खुद से कहा, "मुझे अपना धैर्य नहीं खोना चाहिए। यह मेरा आखिरी मिशन है और यह बहुत महत्वपूर्ण है। मुझे वही शांत और मजबूत आओमामे बने रहना होगा।"
लेकिन उसे यह बात महसूस हुई कि उसका मूड सामान्य नहीं था। उसकी सांसें थोड़ी तेज़ चल रही थीं और उसकी तेज़ नाड़ी उसे चिंतित कर रही थी। उसकी बगलों में हल्का पसीना आ रहा था और त्वचा में खुजली हो रही थी। उसने सोचा, "मैं सिर्फ़ तनाव में नहीं हूँ। मुझे कुछ महसूस हो रहा है। यह एक पूर्वसूचना है जो मुझे चेतावनी देने की कोशिश कर रही है। यह मेरे होश में बार-बार दस्तक दे रही है। अभी भी बहुत देर नहीं हुई है। चले जाओ और सब कुछ भूल जाओ।"

ओमामे चाहती थी कि काश वह चेतावनी पर ध्यान दे पाती। वह सब कुछ छोड़कर होटल से निकल जाना चाहती थी। उस जगह में कुछ अशुभ सा था। वहाँ एक मातम जैसा माहौल था, मानो मौत धीरे-धीरे दस्तक दे रही हो। एक शांत और धीमी मौत, लेकिन अपरिहार्य। लेकिन वह दुम दबाकर भाग नहीं सकती थी। यह उसके स्वभाव में नहीं था।
दस लंबे मिनट बीत गए। समय का पता ही नहीं चला। आओमामे आरामकुर्सी पर बैठी साँसें गूँज रही थी। हॉल में भूतों की वही खोखली गूँज सुनाई दे रही थी। लोग मोटे कालीन पर चुपचाप चल रहे थे, मानो वे आत्माएँ हों जिन्हें अपना ठिकाना नहीं मिल रहा हो। बीच-बीच में उसके कानों तक पहुँचने वाली एकमात्र स्पष्ट आवाज़ वेट्रेस द्वारा ट्रे पर रखे कॉफ़ी के प्यालों की खनक थी। लेकिन उस आवाज़ में भी कुछ संदेह था। वह आवाज़ अच्छी नहीं थी। अगर वह पहले से ही इतनी तनाव में थी, तो इसका मतलब था कि उस पल वह कुछ भी नहीं कर पाएगी। आओमामे ने अपनी आँखें बंद कर लीं और लगभग सहज ही प्रार्थना की। यह वही प्रार्थना थी जो वह बचपन से हर भोजन से पहले किया करती आई थी। हालाँकि तब से बहुत समय बीत चुका था, फिर भी उसे वह शब्द-दर-शब्द याद थी।

हे स्वर्ग में विराजमान प्रभु, तेरा नाम पवित्र माना जाए, तेरा राज्य आए। हमारे पापों को क्षमा कर, हमारे मार्ग को आशीष दे। आमीन।

हिचकिचाते हुए, आओमामे को यह स्वीकार करना पड़ा कि जो प्रार्थना कभी उसके लिए पीड़ादायक थी, वही अब उसकी मुक्ति थी। उन शब्दों ने उसके मन को शांत किया, उसके डर को दूर भगाया और उसकी सांसों को स्थिर किया। उसने मन ही मन कई बार उन शब्दों को दोहराया और अपनी उंगलियों से अपनी पलकों को दबाया।
*

"आप आओमामे-सान हैं, है ना?" बगल से एक युवक की आवाज आई।
ओमामे ने अपनी आँखें खोलीं, ऊपर देखा और आवाज़ के स्रोत की ओर मुड़ी। उसके सामने दो युवक खड़े थे, दोनों ने गहरे रंग के सूट पहने हुए थे। सूट के कपड़े और बनावट से लग रहा था कि वे महंगे नहीं थे। शायद उन्होंने उन्हें किसी डिपार्टमेंटल स्टोर से खरीदा होगा। वे उन पर पूरी तरह फिट तो नहीं थे, लेकिन कम से कम उनमें सिलवटें तो नहीं थीं। शायद वे हर बार पहनने से पहले उन्हें इस्त्री करते थे। दोनों में से किसी ने भी टाई नहीं पहनी थी। एक ने सफेद कमीज़ पहनी थी जिसके सारे बटन बंद थे, और दूसरे ने गोल कॉलर वाली ग्रे कमीज़। दोनों ने काले चमड़े के जूते पहने हुए थे।
सफेद कमीज पहने व्यक्ति की लंबाई लगभग छह फुट थी और उसके बाल पोनीटेल में बंधे हुए थे। उसकी भौहें लंबी और सुंदर थीं, मानो ग्राफ पर ऊपर की ओर मुड़ी हुई वक्र रेखा हो। उसका चेहरा शांत और सुव्यवस्थित था। वह शायद एक अभिनेता ही था। दूसरा व्यक्ति भी लगभग छह फुट लंबा था और उसका सिर मुंडा हुआ था। उसकी नाक छोटी और ठूंठनुमा थी और दाढ़ी ऐसी लग रही थी मानो गलती से परछाई पड़ गई हो। उसकी दाहिनी आंख के पास एक छोटा सा कट लगा हुआ था। दोनों दुबले-पतले, थके हुए और धूप से झुलसे हुए थे। उनमें बिल्कुल भी चर्बी नहीं दिख रही थी। उनके सूट जिस तरह से कंधों पर लटके हुए थे, उससे लग रहा था कि उनके नीचे कुछ ठोस मांसपेशियां होंगी। उनकी उम्र लगभग पच्चीस या तीस वर्ष थी। उनकी आंखें भेदक

और गहरी थीं। उनकी आंखें, शिकार पर निकले जानवर की तरह, जरूरत से ज्यादा नहीं हिलती थीं।
ओमामे स्वतः ही अपनी कुर्सी से उठी और अपनी घड़ी देखी। घड़ी की सुइयाँ ठीक सात बजे का समय दिखा रही थीं। वे समय की पाबंद थीं।
"हां," उसने उत्तर दिया।
उनके चेहरों पर कोई भाव नहीं था। दोनों ने सरसरी तौर पर उसके कपड़ों पर नज़र डाली, फिर उसके बगल में रखे स्पोर्ट्स बैग को देखा।
"क्या यही सारा सामान है?" गंजे आदमी ने पूछा।
- हाँ।
"ठीक है। चलो चलते हैं। क्या तुम तैयार हो?" बाल्ड ने पूछा। हेयरी चुपचाप उसे देखती रही।
"बिल्कुल," उसने जवाब दिया, यह सोचते हुए कि उन दोनों में से छोटी वाली कुछ साल बड़ी थी और नेतृत्व की भूमिका निभा रही थी।
चेलियोस धीरे-धीरे हॉल पार करके लिफ्ट की ओर बढ़ा, और आओमामे अपने कंधे पर बैग लिए उसके पीछे-पीछे चली। बालों वाला चेलियोस उससे लगभग दो मीटर पीछे था, जिससे आओमामे उन दोनों के बीच फंसी हुई थी। उसने सोचा, "ये दोनों जानते हैं कि कैसे करना है।" दोनों सीधे खड़े होकर और दृढ़ कदमों से चल रहे थे। उस महिला ने कहा था कि वे कराटे कर रहे हैं। उन दोनों का एक साथ सामना करना और जीत हासिल करना असंभव था। इतने सालों के मार्शल आर्ट के अभ्यास के बाद, वह यह बात खुद समझ सकती थी। लेकिन उनमें तामारू जैसी भयंकर आक्रामकता नहीं थी। वे अजेय प्रतिद्वंद्वी नहीं थे। अगर आमने-सामने की लड़ाई की बात आती, तो उसे पहले छोटे चेलियोस को काबू में करना पड़ता। वह हमले का मुख्य सूत्रधार था। अब उसके साथ बालों वाला चेलियोस बचा था, शायद वह किसी तरह इसे साबित करके बच निकल सके। तीनों लिफ्ट में चढ़ गए। बालदार आदमी ने सातवीं मंजिल का बटन दबाया। गंजा आदमी आओमामे के बगल में रुक गया, और बालदार आदमी उनके ठीक सामने तिरछे कोने में खड़ा हो गया। वे पूरी खामोशी से आगे बढ़े। वे बहुत ही व्यवस्थित थे। जैसे बेसबॉल का एक खिलाड़ी सेकंड बेस पर और दूसरा आउटफील्ड में हो, उनका एकमात्र लक्ष्य डबल आउट करना था।
इन बातों पर सोचते हुए आओमामे को एहसास हुआ कि उसकी सांसें और नाड़ी सामान्य हो गई हैं। मुझे डरने की कोई ज़रूरत नहीं है, उसने खुद से कहा। मैं वही हूँ। अविचलित, मज़बूत आओमामे। सब ठीक हो जाएगा। अब मुझे कोई बुरी भावना नहीं है। लिफ्ट के दरवाजे चुपचाप खुल गए। गंजा आदमी सबसे पहले बाहर निकला, जबकि बालों वाले आदमी ने दरवाज़े को खुला रखने वाला बटन दबा दिया। आओमामे भी उसके पीछे- पीछे आई, फिर बालों वाले आदमी ने भी बटन से उंगली हटाकर बाहर कदम रखा। गंजा आदमी गलियारे में आगे बढ़ने लगा, उसके पीछे आओमामे और बालों वाला आदमी सबसे पीछे चल रहा था। विशाल गलियारे में दूर-दूर तक कोई इंसान नज़र नहीं आ रहा था। यह बिल्कुल साफ-सुथरा और एकदम शांत था। यह स्पष्ट था कि यह एक प्रथम श्रेणी का होटल था, जहाँ हर छोटी-छोटी बात का विशेष ध्यान रखा जाता था। आपको यहाँ कभी भी खाली रूम सर्विस प्लेटें लापरवाही से दरवाजे के सामने पड़ी नहीं मिलेंगी। लिफ्ट के सामने ऐशट्रे में एक भी सिगरेट का टुकड़ा नहीं था। गुलदस्तों में लगे फूल ताज़े महक रहे थे, मानो उन्हें अभी-अभी तोड़ा गया हो। तीनों कुछ देर मुड़े और अंत में एक दरवाजे के सामने रुक गए। बालों वाले आदमी ने दो बार

खटखटाया, फिर बिना किसी जवाब का इंतज़ार किए अपनी इलेक्ट्रॉनिक चाबी से दरवाजा खोल दिया। वह अंदर गया, चारों ओर देखकर सुनिश्चित किया कि सब ठीक है, फिर गंजे आदमी को जल्दी से सिर हिलाकर इशारा किया।
"अंदर आ जाओ," गंजे आदमी ने रूखे स्वर में कहा।
ओमामे अंदर आई, और उसने उसके पीछे दरवाजा बंद कर दिया और उस पर चेन लगा दी। कमरा बड़ा था। यह किसी आम होटल के कमरे जैसा नहीं लग रहा था। इसमें डाइनिंग रूम का पूरा फर्नीचर था और एक डेस्क भी थी। इनके अलावा, एक टेलीविजन और एक बड़ा फ्रिज भी था। शायद वे अभी होटल के किसी सुइट के डाइनिंग रूम में थे।
खिड़की से रात का नज़ारा दिख रहा था। और कीमत भी वाजिब रही होगी। गंजे आदमी ने अपनी घड़ी देखी, फिर ओमामे को सोफे पर बैठने का इशारा किया। ओमामे ने बात मान ली और अपना नीला स्पोर्ट्स बैग सोफे के बगल में रख दिया।
"क्या तुम बदलना चाहते हो?" गंजे आदमी ने पूछा।
"अगर आप मुझे अनुमति दें," उसने जवाब दिया। "मेरे लिए ट्रैकसूट में काम करना आसान है।"
गंजे आदमी ने सिर हिलाया।
"लेकिन पहले मुझे एक जांच करनी होगी। मुझे खेद है, लेकिन यह मेरे कर्तव्यों का हिस्सा है।"
"कोई बात नहीं। ठीक है," आओमामे ने बिना किसी तनाव के अपनी आवाज में जवाब दिया, और उनके बीच के तनाव को देखकर उसे थोड़ी सी हंसी भी आई।
गंजा आदमी आओमामे के पास आया और यह सुनिश्चित करने के लिए उसके पूरे शरीर की तलाशी ली कि उसके पास कुछ भी संदिग्ध न हो। उसने केवल पतली पैंट और ब्लाउज पहना हुआ था, जिसके नीचे वह वैसे भी कुछ छिपा नहीं सकती थी। वे बस पहले से तय गति से चल रहे थे। गंजे आदमी के हाथ तनावग्रस्त और एकदम अकड़े हुए थे। उसकी शालीनता देखकर भी यह अंदाजा नहीं लगाया जा सकता था कि उसे पता है कि वह क्या कर रहा है। शायद उसने अपने जीवन में बहुत कम महिलाओं की तलाशी ली थी। गंजा आदमी मेज से टेक लगाकर खड़ा था और गंजे आदमी को देख रहा था।
तलाशी पूरी होने के बाद, आओमामे ने अपना बैग खुद खोला। अंदर एक हल्की गर्मियों की जैकेट, एक ट्रैकसूट और दो तौलिए थे। एक छोटा सा टॉयलेट्री बैग, एक किताब और मोतियों का एक पर्स जिसमें उसका बटुआ, खुले पैसे और चाबियाँ थीं। आओमामे ने ये सब एक-एक करके निकाले और कर्ली मैन को दे दिए। आखिर में, उसने काला प्लास्टिक का बैग निकाला और ज़िप खोली। अंदर एक जोड़ी अतिरिक्त पैंटी, टैम्पोन और सैनिटरी नैपकिन थे।
"मुझे पसीना आ रहा है और मुझे कपड़े बदलने हैं," आओमामे ने कहा, फिर बेपरवाही से अपनी सफेद लेस वाली पैंटी निकाली, उसके बटन खोले और उसे दिखा दी। बालों वाले आदमी का चेहरा थोड़ा लाल हो गया और उसने कुछ बार सिर हिलाकर यह जताने की कोशिश की कि वह समझ गया है। क्या यह आदमी सच में गूंगा है? आओमामे ने हैरानी से सोचा।
उसने अंडरवियर और टैम्पोन वापस बैग में रखे, फिर ज़िप बंद करके उसे वापस बैग में डाल दिया जैसे कुछ हुआ ही न हो। उसने सोचा, वह तो नौसिखिया है। अगर अच्छे अंडरवियर और टैम्पोन देखकर शर्म आती है तो बॉडीगार्ड होना ज़रूरी नहीं। अगर तमारू को यह काम दिया जाता, तो वह स्नो व्हाइट ही होता, क्योंकि वह उसे उसके गुप्तांग तक छुपता रहा। वह इतने ब्रा, पैंटी और अंडरवियर उलट-पलट कर देता कि

पूरा स्टोररूम भर जाता और फिर भी बैग के नीचे तक पहुँच जाता। उसके लिए - और ज़ाहिर है, इसका संबंध इस बात से भी है कि वह समलैंगिक है - ये चीज़ें सिर्फ़ चिथड़े-चिथड़े होतीं। और अगर वह इतना आगे भी नहीं बढ़ता, तो कम से कम बैग निकालकर उसे हथेली पर तौल लेता। और तब उन्हें मेरी हेकलर एंड कोच एचके4 पिस्तौल (जिसका वज़न लगभग पाँच सौ ग्राम है) और छेनी का होल्स्टर ज़रूर मिल जाता।
ये दोनों नौसिखिए हैं। कराटे में माहिर तो हैं और नेता के प्रति अटूट निष्ठा की शपथ भी ले चुके हैं, पर नौसिखिए तो नौसिखिए ही होते हैं। ठीक वैसे ही जैसे उस महिला ने भविष्यवाणी की थी। आओमामे को शक था कि महिलाओं के सामान से भरे थैले की तह तक कोई नहीं देखेगा, और उसका शक सही निकला। बेशक, उसने जोखिम उठाया था और इस बात पर ध्यान नहीं दिया था कि उसका अनुमान गलत भी हो सकता है। अब उसके पास प्रार्थना करने के अलावा कोई चारा नहीं था। पर उसे पता था। उसे पता था कि प्रार्थना काम करती है।
ओमामे विशाल बाथरूम में दाखिल हुई और अपना ट्रैकसूट पहन लिया। उसने अपनी पैंट और ब्लाउज को मोड़कर अपने बैग में रख लिया। उसने यह सुनिश्चित किया कि उसके बाल बंधे हुए हैं। उसने मुंह में स्प्रे छिड़का। उसने अपनी बंदूक निकाली, शोर को दबाने के लिए टॉयलेट फ्लश किया और उसे लोड किया। अब बस ट्रिगर दबाना बाकी था। उसने छेनी वाला होल्स्टर अपने बैग में रख लिया ताकि वह आसानी से मिल सके। तैयार होने के बाद, उसने शीशे में देखा और अपने चेहरे से सारा तनाव मिटा दिया। "अच्छा है," उसने खुद से कहा। "मैं यहाँ तक शांति से पहुँच गई हूँ।"
*

जब आओमामे बाथरूम से बाहर आई, तो गंजा आदमी सीधा खड़ा था, उसकी पीठ उसकी तरफ थी और वह धीमी आवाज़ में फोन पर बात कर रहा था। जब उसने उसकी आवाज़ सुनी, तो उसने बातचीत रोक दी और चुपचाप रिसीवर रख दिया। उसने आओमामे की तरफ देखा, जो अब एडिडास ट्रैकसूट पहने हुए थी।
“क्या तुम तैयार हो?” उसने पूछा।
"हां," आओमामे ने उत्तर दिया।
सबसे पहले, मेरी एक विनती है।
ओमामे ने बहुत हल्की सी मुस्कान दी।
"मैं तुमसे अनुरोध करूंगा कि आज रात जो कुछ हुआ उसके बारे में किसी को मत बताना," उसने कहा, और संदेश को उसके दिमाग में बैठने देने के लिए कुछ देर रुका, जैसे पानी की बूंदों को जमीन में समाकर गायब होने का इंतजार किया जाता है। ओमामे ने बिना कुछ कहे उसकी ओर देखा। गंजे आदमी ने आगे कहा:
मैं असभ्य नहीं लगना चाहता, लेकिन आपको पर्याप्त इनाम मिलेगा और हमें आपकी सेवाओं की कुछ और बार आवश्यकता पड़ सकती है। इसलिए, मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि यहाँ जो कुछ भी हुआ उसे पूरी तरह से भूल जाइए। जो कुछ भी आपने देखा, जो कुछ भी आपने सुना, बिल्कुल सब कुछ।
"मेरा पेशा मानव शरीर से संबंधित है," आओमामे ने कुछ ठंडे लहजे में जवाब दिया। "इसीलिए मैं पेशेवर गोपनीयता का मतलब भली-भांति जानती हूँ। कोई भी निजी जानकारी इस कमरे से बाहर नहीं जाएगी। आपको इस बारे में चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है।"

"मैं समझता हूँ। यही हमारी विनती थी," चेलियोस ने उत्तर दिया। "हालाँकि, हम चाहते हैं कि आप इसे केवल गोपनीयता का मामला न समझें। जिस स्थान पर आप कदम रखेंगे वह पवित्र स्थान है।"
— एक पवित्र स्थान?
"यह अतिशयोक्तिपूर्ण लग सकता है, लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि ऐसा नहीं है। जिसे आप देखेंगे और स्पर्श करेंगे, वह एक पवित्र व्यक्ति है। इससे अधिक उपयुक्त कोई और अभिव्यक्ति नहीं हो सकती।"
आओमामे ने बिना जवाब दिए सिर हिलाया। उस समय कुछ भी टिप्पणी न करना ही बेहतर था।
"हमें खेद है, लेकिन हमने आपकी पृष्ठभूमि की जांच की है। हमें उम्मीद है कि आप इसे हमारे खिलाफ नहीं मानेंगे, लेकिन यह आवश्यक था। हमें सतर्क रहने का कारण है।"
उसकी बातें सुनते हुए, आओमामे ने प्लेटोस की ओर देखा कि वह क्या कर रहा है। वह दरवाजे के पास एक कुर्सी पर बैठा था, पीठ सीधी, हाथ घुटनों पर और ठुड्डी आगे की ओर निकली हुई। वह बिल्कुल स्थिर था, मानो किसी यादगार तस्वीर के लिए पोज़ दे रहा हो। उसकी निगाहें लगातार आओमामे पर टिकी हुई थीं।
गंजे आदमी ने नीचे की ओर देखा, मानो वह अपने काले चमड़े के जूतों का निरीक्षण कर रहा हो, फिर उसने वापस आओमामे की ओर देखा।
अंत में, मुझे कोई समस्या नहीं मिली है, इसलिए मैं आज आपके पास आया हूँ। ऐसा लगता है कि आप एक बहुत ही प्रभावी और उच्च सम्मानित प्रशिक्षक हैं। "धन्यवाद," आओमामे ने उत्तर दिया।
"जहां तक मुझे पता है, आप कभी विटनेस चर्च का हिस्सा थे। क्या यह सच है?" "हां। मेरे माता-पिता अनुयायी हैं, और इसलिए मैं भी जन्म से ही अनुयायी थी। यह मेरी पसंद नहीं थी, और मैंने बहुत पहले ही अनुयायी बनना छोड़ दिया था।"
जब उन्होंने मेरी जाँच की, तो क्या उन्हें यह भी पता चल गया होगा कि मैं और अयुमी रोप्पोंगी जाकर लड़कों को पटाती थीं? आओमामे ने सोचा। नहीं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अगर उन्हें इसके बारे में पता भी चल जाता, तो भी वे इसे कोई बाधा नहीं मानते। वरना मैं यहाँ नहीं होती।
— हम भी यही जानते हैं। लेकिन आप कुछ समय तक विश्वासियों के बीच रहे। और वह भी बचपन में, जो सबसे अधिक प्रभावित होने वाला समय होता है। इसीलिए आप पवित्रता का अर्थ अच्छी तरह समझते हैं, क्योंकि पवित्रता ही समस्त आस्था का मूल है। इस संसार में ऐसी कई जगहें हैं जहाँ हमें कदम रखने की अनुमति नहीं है या जहाँ हमें कदम नहीं रखना चाहिए। इसे पहचानना, स्वीकार करना और इसके प्रति पूर्ण विनम्रता दिखाना ही आस्था की ओर पहला कदम है। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं? "समझ में आता है, मैं समझती हूँ," आओमामे ने जवाब दिया। "स्वीकार करना, वो एक अलग बात है।"
"बिल्कुल। आपको सहमत होने की ज़रूरत नहीं है। यह हमारा विश्वास है, आपका नहीं। लेकिन चाहे आप विश्वास रखें या न रखें, आज आपको कुछ बहुत ही खास देखने को मिलेगा। एक असाधारण प्राणी।"
ओमामे ने कुछ नहीं कहा। एक असाधारण व्यक्तित्व।
गंजे आदमी ने अपनी आँखें सिकोड़ लीं, उसकी चुप्पी को तौलते हुए। फिर उसने कहा:

"आप जो भी देखें, उस पर चर्चा करना मना है। अगर आपने कुछ भी बताया, तो यह पवित्रता हमेशा के लिए दूषित हो जाएगी। यह एक निर्मल तालाब को प्रदूषित करने जैसा है। आम सोच या इस दुनिया के नियमों से परे, हम चीजों को इसी तरह देखते हैं। कृपया इसे समझें। अगर आप समझते हैं और अपना वादा निभाते हैं, जैसा कि मैंने आपको पहले बताया था, तो हम आपके आभारी होंगे।"
"मैं समझ गई," आओमामे ने कहा।
हम एक छोटा धार्मिक समूह हैं, लेकिन हमारी सोच दृढ़ है और हमारा प्रभाव दूर तक फैला हुआ है।
आओमामे ने सोचा, "तुम्हारी भुजा बहुत लंबी है। और मुझे जल्द ही पता चल जाएगा कि वह कितनी लंबी है।"
गंजा आदमी हाथ बांधे, मेज से टेक लगाकर बैठा था और उसे ध्यान से देख रहा था, मानो वह कोई टेढ़ी-मेढ़ी दीवार पर टंगी पेंटिंग हो। बालों वाला आदमी भी उसी मुद्रा में बैठा उसे देखता रहा। लगातार, बिना रुके।
फिर गंजे आदमी ने अपनी घड़ी देखी।
"तो चलिए चलते हैं," उसने कहा और सूखी खांसी की।
वह कमरे को पार कर गया, मानो कोई तपस्वी पानी की सतह पर चल रहा हो, और अगले कमरे के दरवाजे पर दो बार हल्की सी दस्तक दी। उसने किसी के जवाब का इंतज़ार किए बिना दरवाजा खोल दिया। फिर उसने झुककर प्रणाम किया और अंदर चला गया। आओमामे ने अपना बैग उठाया और उसके पीछे-पीछे चली गई। कालीन पर कदम रखते ही उसने सुनिश्चित किया कि उसकी साँसें सामान्य हैं। उसकी उंगली एक काल्पनिक बंदूक के ट्रिगर पर जकड़ी हुई थी। सब ठीक है, उसने खुद से कहा। सब कुछ पहले जैसा ही है। फिर भी आओमामे डरी हुई थी। ऐसा लग रहा था जैसे उसकी रीढ़ की हड्डी में बर्फ का टुकड़ा चिपका हो। ऐसी बर्फ जो पिघल नहीं रही। मैं शांत हूँ, सुकून में हूँ, लेकिन अंदर तक डरी हुई हूँ।
चेलियोस ने कहा था कि इस दुनिया में कुछ ऐसी जगहें हैं जहाँ हमें कदम रखने की अनुमति नहीं है या जहाँ हमें कदम नहीं रखना चाहिए, और आओमामे इस बात को अच्छी तरह समझती थी। वह खुद भी कभी ऐसी ही एक दुनिया में रह चुकी थी। या शायद वह वास्तव में अभी भी उसी दुनिया में रह रही थी और उसे इसका एहसास नहीं हुआ था। ओमामे ने मन ही मन प्रार्थना दोहराई, फिर गहरी सांस ली और दृढ़ता से अगले कमरे में चली गई।

अध्याय 8 बिल्लियों के प्रकट होने का समय आ गया है

अगले एक हफ्ते तक, टेंगो एक अजीब सन्नाटे में डूबा रहा। एक शाम, यासुदा ने उसे फोन किया और बताया कि उसकी पत्नी खो गई है और अब कभी उससे मिलने नहीं आएगी। एक घंटे बाद, उसे उशिकावा का फोन आया, जिसने बताया कि वह और फुकाएरी विचार-हत्या की संक्रामक बीमारी के मुख्य वाहक हैं। दोनों बातचीत में गहरे अर्थ छिपे थे (अन्यथा उनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी)। मानो कोई रोमन व्यक्ति सार्वजनिक चौक पर बने मंच पर खड़ा होकर उत्सुक नागरिकों को फरमान सुना रहा हो। दोनों ने अपनी बात कही और फिर लगभग उसके चेहरे पर रिसीवर पटक दिया।
इन फोन कॉलों के बाद, किसी ने भी उसे दोबारा फोन नहीं किया। फोन की घंटी खामोश बजती रही और उसे कोई चिट्ठी नहीं मिली। किसी ने उसके दरवाजे पर दस्तक नहीं दी और न ही उसे कबूतर की गुटरगू सुनाई दी। न कोमात्सु, न प्रोफेसर एबिसुनो, न फुकाएरी, न क्योको यासुदा, किसी ने भी तेंगो को कुछ संदेश नहीं दिया।
इसके अलावा, टेंगो इन लोगों के बारे में कुछ भी जानना नहीं चाहता था। इतना ही नहीं, उसकी हर चीज़ में रुचि खत्म हो चुकी थी। उसे अब यह जानने की कोई इच्छा नहीं थी कि एयर क्राइसालिस में बिक्री कैसी चल रही है, फुकाएरी क्या कर रहा है और कहाँ है, कोमात्सु की रणनीति का क्या हुआ, प्रोफेसर एबिसुनो की सोची-समझी योजनाएँ सफल हो रही हैं या नहीं, मीडिया को सच्चाई का कितना पता चला है, या रहस्यमयी संगठन पायनियर्स क्या कर रहे हैं। अगर उनकी नाव खाई में गिरकर पलटने वाली थी, तो बस यही था। उनके पास गिरने के अलावा कोई चारा नहीं था। अब चाहे वह कितनी भी कोशिश कर ले, वह नदी को बहने से नहीं रोक सकता था।
वह क्यौको यासुदा की परवाह करता था, यह तो ज़ाहिर सी बात है। उसे ठीक से पता नहीं था कि क्या हुआ था, लेकिन अगर वह किसी भी तरह से उसकी मदद कर सकता था, तो वह कोई कसर नहीं छोड़ना चाहता था। दुर्भाग्य से, अब वह जिन भी समस्याओं का सामना कर रही थी, टेंगो उसकी मदद नहीं कर सकता था। वह कुछ भी ठोस नहीं कर सकता था।
उसने अखबार पढ़ना छोड़ दिया था। दुनिया उसके बिना ही आगे बढ़ रही थी। उदासीनता ने उसे घने कोहरे की तरह घेर लिया था। अब वह किताबों की दुकानों में घूमना छोड़ चुका था, जहाँ उसे 'द क्राइसालिस ऑफ एयर' की प्रतियाँ रखी देखकर ऊब हो गई थी। वह घर से सीधे काम पर जाता और वापस आता, रास्ते से भटकता नहीं था। छुट्टियाँ नज़दीक आ रही थीं और गर्मियों के गहन पाठ्यक्रम शुरू होने वाले थे, इसलिए वह सामान्य से ज़्यादा व्यस्त रहेगा, लेकिन यह वह समय था जिसका टेंगो बेसब्री से इंतज़ार करता था। कम से कम, जब तक वह कुर्सी पर बैठा रहेगा, उसे गणित के सवालों के अलावा किसी और चीज़ के बारे में नहीं सोचना पड़ेगा।
वह लिखना भी बंद कर चुका था। वह अपनी डेस्क पर बैठता और वर्ड प्रोसेसर खोलता, लेकिन काम करने की कोई इच्छा नहीं होती थी। चाहे वह कितना भी सोचने की कोशिश करता, क्योको यासुदा के पति और उशिकावा के साथ हुई बातचीत के अंश बार-बार उसके दिमाग में घूमते रहते थे। वह लिखने पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाता था।
मेरी पत्नी खो गई है और किसी भी परिस्थिति में आपसे मिलने नहीं आ पाएगी।

क्योको यासुदा के पति के शब्द।
अगर मैं एक प्रचलित मुहावरे का इस्तेमाल करूं तो, आपने पैंडोरा का डिब्बा खोल दिया है। असल में, आप दोनों जितना सोचते हैं उससे कहीं ज़्यादा मज़बूत जोड़ी हैं। आप दोनों एक-दूसरे की कमियों को पूरा करते हैं।
उशिकावा के शब्द।
दोनों ने यथासंभव अस्पष्ट शब्दों में अपनी बात रखी थी। वे मुद्दे की जड़ तक जाने से बच रहे थे और उसे अस्पष्टता में छिपा रहे थे। लेकिन उनकी बातों में एक बात समान थी, और वह यह कि अनजाने में ही टेंगो ने एक विशेष शक्ति का प्रकटीकरण किया था, और यह शक्ति दुनिया पर एक बहुत ही वास्तविक प्रभाव डाल रही थी (संभवतः एक अप्रिय प्रभाव)।
उसने वर्ड प्रोसेसर बंद किया, ज़मीन पर बैठ गया और कुछ देर तक अपने फ़ोन को देखता रहा। उसे सुराग चाहिए थे। वह पहेली के कई टुकड़े ढूंढ रहा था, लेकिन कोई उसे बता नहीं रहा था। इस समय (या क्या आमतौर पर ऐसा ही होता है?) दुनिया में सद्भावना की कमी थी।
उसने किसी को फोन करने के बारे में सोचा। कोमात्सु को या शायद प्रोफेसर एबिसुनो को। उशिकावा को क्यों नहीं? लेकिन वह फोन उठाने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। वह उनके द्वारा दी जा रही अधूरी जानकारी से तंग आ चुका था। वह रहस्य सुलझाने के लिए कोई सुराग ढूंढ रहा था, और वे उसे बस एक और पहेली दे रहे थे। यह खेल हमेशा नहीं चल सकता था। तेंगो और फुकाएरी एक दमदार जोड़ी थे। अगर उन्होंने ऐसा कहा होता, तो ऐसा ही होता। तेंगो और फुकाएरी, एक असली जोड़ी, बिल्कुल सन्नी और चेर की तरह। कहानी चलती रहती है।
*

दिन बीतते गए। आखिरकार, टेंगो घर में बंद रहकर कुछ होने का इंतज़ार करते-करते थक गया। उसने अपना बटुआ और एक किताब जेब में डाली, धूप का चश्मा और टोपी पहनी और घर से निकल गया। वह दृढ़ कदमों से स्टेशन की ओर बढ़ा, प्रवेश द्वार पर अपना पास दिखाया और शहर के केंद्र की ओर जाने वाली एक्सप्रेस ट्रेन में चढ़ गया। डिब्बों में कोई भीड़ नहीं थी। टेंगो का कोई निश्चित ठिकाना नहीं था। वह बस पहली ट्रेन में चढ़ गया था जो सामने आई। उस दिन उसके पास करने को कुछ नहीं था। वह जहां चाहे जा सकता था और जो चाहे कर सकता था (या नहीं भी कर सकता था)। गर्मी की सुबह थी, हवा नहीं चल रही थी और धूप खिली हुई थी।
उसे शक था कि कहीं उशिकावा के "जांचकर्ता" उसका पीछा तो नहीं कर रहे हैं। थाने जाते समय वह अचानक रुका और पीछे मुड़कर देखा। पर उसे कोई संदिग्ध व्यक्ति नहीं दिखा। थाने पहुँचकर वह जानबूझकर दूसरे प्लेटफार्म पर गया और फिर, जैसे अचानक उसका इरादा बदल गया हो, मुड़कर विपरीत दिशा में चल पड़ा, पर उसे कोई और ऐसा करता हुआ नहीं दिखा। पीछा करने वालों से बचने के ये आम तरीके थे। उसने खुद को यकीन दिला दिया था कि कोई उसका पीछा नहीं कर रहा है। वह कोई बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति नहीं था, और उनके पास इतना समय भी नहीं था। उसे ठीक से पता नहीं था कि वह कहाँ जा रहा है या उसका इरादा क्या है। वह खुद ही चाहता था कि लोग दूर से उस पर नजर रखें।
जिस ट्रेन में वह चढ़ा था, वह शिंजुकु, योत्सुया और ओचानोमिज़ु से गुज़रते हुए लाइन के आखिरी स्टेशन, टोक्यो स्टेशन पर पहुँची। सभी यात्री उतर गए। वह

उसके जैविक पिता हों या नहीं, टेंगो को उनसे कुछ भी नहीं चाहिए था, और न ही उनका उन्हें कुछ देने का इरादा था। वे दोनों अलग-अलग जगहों से आए थे और अलग-अलग दिशाओं में जा रहे थे। उन्होंने बस कुछ ही साल साथ बिताए थे, बस इतना ही। यह दुखद था, लेकिन टेंगो क्या कर सकता था?
लेकिन अब उसके लिए उससे दोबारा मिलने का समय आ गया था। टेंगो यह बात समझ गया था। वह बिल्कुल भी उत्साहित नहीं था और अगर संभव होता तो वह वापस मुड़कर घर चला जाता। लेकिन ट्रेन के टिकट उसकी जेब में थे। यही स्थिति थी।
वह उठा, बिल चुकाया और रेस्टोरेंट से निकल गया। वह तातेयामा जाने वाली एक्सप्रेस ट्रेन का इंतज़ार करते हुए प्लेटफार्म पर खड़ा हो गया। उसने एक बार फिर सावधानी से चारों ओर देखा, लेकिन उसे कोई भी "जांचकर्ता" नज़र नहीं आया। वहाँ बस खुशहाल परिवार थे, जो समुद्र तट पर दो दिन बिताने जा रहे थे। टेंगो ने अपने धूप के चश्मे उतारे, जेब में रखे और अपनी टोपी ठीक की। खैर, मुझे क्या फर्क पड़ता है, उसने सोचा। अगर वे मेरा पीछा करना चाहते हैं, तो कर सकते हैं। मैं अपने बीमार पिता से मिलने समुद्र किनारे वाले शहर जा रहा हूँ। शायद उन्हें अभी भी याद हो कि उनका एक बेटा है। पिछली बार जब मैंने उन्हें देखा था, उनकी याददाश्त काफी कमजोर थी। इस बीच उनकी हालत और बिगड़ गई होगी। अल्जाइमर तो बस बढ़ता ही जाता है, इसका कोई इलाज नहीं है। लोग यही कहते हैं। जैसे कोई पहिया जो सिर्फ एक ही दिशा में घूमता है। अल्जाइमर के बारे में टेंगो को बस इतनी ही जानकारी थी।
*

जब ट्रेन स्टेशन से निकली, तो टेंगो ने अपनी जेब से किताब निकाली और पढ़ना शुरू कर दिया। यह लघु कथाओं का एक संकलन था, जिनका मुख्य विषय यात्रा था। उनमें से एक कहानी थी, 'बिल्लियों का शहर', एक ऐसे युवक की कल्पनात्मक कहानी जो बिल्लियों द्वारा शासित शहर में पहुँचता है। यह लघु कथा दोनों विश्व युद्धों के बीच एक जर्मन लेखक द्वारा लिखी गई थी, जिसके बारे में उसने पहले कभी नहीं सुना था।
कहानी का वह युवक अपनी गति से, अकेले, केवल एक सूटकेस के साथ यात्रा करता था। उसका कोई निश्चित गंतव्य नहीं था। वह ट्रेन में चढ़ता और जहाँ भी उसे कुछ दिलचस्प लगता, उतर जाता। वह सोने के लिए कोई जगह ढूंढता, शहर में घूमता और जितनी देर चाहता, वहाँ ठहरता। जब वह थक जाता, तो वापस ट्रेन में चढ़ जाता। वह हमेशा इसी तरह अपनी छुट्टियाँ बिताता था।
ट्रेन की खिड़की से उसे एक सुंदर नदी दिखाई दी। उसके घुमावों के किनारे हरे- भरे और मनमोहक पहाड़ियाँ थीं, और एक पहाड़ी की तलहटी में एक शांत कस्बा बसा हुआ था। नदी पर एक पुराना पत्थर का पुल बना हुआ था। इस मनमोहक दृश्य ने उस युवक को आकर्षित किया। उसने सोचा, "यहाँ ज़रूर बड़ी-बड़ी ट्राउट मछलियाँ मिलती होंगी।" जब ट्रेन स्टेशन पर रुकी, तो उसने अपना सूटकेस उठाया और उतर गया। कोई और यात्री नहीं उतरा था, और उसके तुरंत बाद ट्रेन चलने लगी।
उसे स्टेशन पर कोई कर्मचारी नहीं दिखा। पासामिते एक शांत जगह थी, जहाँ ज़्यादा लोग आते-जाते नहीं थे। युवक ने पत्थर का पुल पार किया और शहर में पहुँच गया। गलियों में सन्नाटा छाया हुआ था और दूर-दूर तक कोई इंसान नज़र नहीं आ रहा था। सभी दुकानों के शटर बंद थे। टाउन हॉल में भी कोई नहीं था और शहर के इकलौते सराय के रिसेप्शन पर भी कोई नहीं था। घंटी बजी, लेकिन कोई नहीं आया।

ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी वीरान शहर में हो। शायद सब लोग दोपहर की नींद ले रहे हों, उसने सोचा। लेकिन सुबह के साढ़े दस बज रहे थे, दोपहर के आराम के लिए बहुत जल्दी थी। वैसे भी, ट्रेन अगली सुबह तक नहीं आने वाली थी, इसलिए उसके पास रात वहीं बिताने के अलावा कोई चारा नहीं था। उसने वीरान गलियों में यूँ ही घूमते हुए समय बिताया।
लेकिन वह शहर बिल्लियों का शहर था। जब सूरज क्षितिज पर डूबा, तो पुल के ऊपर बिल्लियों की एक पूरी सेना प्रकट हुई। वे हर रंग और हर तरह के फर वाली बिल्लियाँ थीं। सामान्य से बड़ी, लेकिन फिर भी बिल्लियाँ ही थीं। जब उस युवक ने यह दृश्य देखा, तो वह डर गया, जल्दी से शहर के ठीक बीच में स्थित घंटाघर पर चढ़ गया और वहीं छिप गया। बिल्लियों ने सहज भाव से दुकानों के शटर खोल दिए। कुछ बिल्लियाँ नगर पालिका कार्यालय में बैठ गईं और काम करने लगीं। थोड़ी देर बाद, पुल के ऊपर और भी अधिक बिल्लियाँ दिखाई दीं। वे दुकानों में गईं, खरीदारी की, अपनी समस्याओं का समाधान करने के लिए नगर पालिका कार्यालय गईं और सराय के रेस्तरां में खाना खाया। उन्होंने पब में बीयर पी और खुशमिजाज, बिल्ली गीत गाए। एक बिल्ली ने उनके साथ अकॉर्डियन बजाया, तो कुछ नाचने लगीं। बिल्लियाँ अंधेरे में देख सकती हैं, इसलिए उन्हें ज्यादा रोशनी की जरूरत नहीं थी, लेकिन उस रात शहर पर पूर्णिमा का चाँद चमक रहा था, इसलिए घंटाघर में छिपा युवक यह सब देख सका। जब सुबह होने वाली थी, तो बिल्लियों ने अपनी दुकानें बंद कर दीं, हिसाब-किताब निपटाया और पुल के पार एक कतार में चली गईं।
दिन निकलने और शहर के फिर से सुनसान हो जाने के बाद ही उस युवक ने हिम्मत करके नीचे जाकर सराय में एक बिस्तर पर लेटने का फैसला किया। उसने सराय की रसोई में बचे हुए रोटी और मछली से अपनी भूख मिटाई। फिर, जब अंधेरा छाने लगा, तो वह चुपके से मीनार में घुस गया और भोर तक बिल्लियों की चहल-पहल देखता रहा। ट्रेन वहाँ से दो बार गुज़रती थी: सुबह और शाम ढलने से पहले। अगर वह सुबह वाली ट्रेन लेता, तो उसकी यात्रा जारी रहती। अगर वह दोपहर वाली ट्रेन लेता, तो वह वहीं लौट जाता जहाँ से आया था। उस स्टेशन पर कोई भी कभी चढ़ता या उतरता नहीं था, लेकिन ट्रेन हर बार पूरी ईमानदारी से रुकती और एक मिनट के लिए ठहरती थी। लड़का उस अजीबोगरीब बिल्ली-नगर को पीछे छोड़कर जा सकता था, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। वह जवान था और उसमें जिज्ञासा कूट-कूटकर भरी थी। इसके अलावा, वह महत्वाकांक्षी और साहसी भी था। वह बिल्ली-नगर के उस अद्भुत नज़ारे को और देखना चाहता था। वह जानना चाहता था कि उन्होंने उस शहर पर कब और कैसे कब्ज़ा किया, वह कैसे संगठित था और वे वहाँ क्या कर रहे थे। शायद वह अकेला ऐसा व्यक्ति था जिसने वह नज़ारा देखा था।
तीसरी रात को घंटाघर के नीचे हंगामा मच गया।
"इसमें से इंसानी मांस जैसी गंध आ रही है!" बिल्लियों में से एक ने कहा।
"हाँ, मुझे भी एक अप्राकृतिक गंध आ रही है," दूसरे ने हवा को सूंघते हुए जवाब दिया।
"मुझे भी ऐसा ही लगता है," एक और बिल्ली ने कहा।
"काफी अजीब है। इस तरफ कोई नहीं आता।"
— बिल्कुल सही। लोग हमारे शहर तक नहीं पहुंच पा रहे हैं।
"लेकिन इसमें से इंसानी मांस जैसी गंध आ रही है!"

बिल्लियाँ झुंड बनाकर शहर के हर कोने में गश्त लगाने और छानबीन करने लगीं। सच तो यह है कि बिल्लियों की नाक बहुत तेज़ होती है। उन्हें यह समझने में ज़्यादा समय नहीं लगा कि गंध घंटाघर से ही आ रही है। युवक को पहले से ही उनके कोमल पंजों की सीढ़ियाँ चढ़ने की आहट सुनाई दे रही थी। बचने का कोई रास्ता नहीं था। मनुष्य की गंध से बिल्लियाँ उत्तेजित हो गई थीं और गुस्से में लग रही थीं। उनके बड़े-बड़े पंजे और नुकीले सफेद दाँत थे। और वह ऐसी जगह आ गया था जहाँ लोगों का आना मना था। उसे नहीं पता था कि अगर वे उसे ढूंढ लेंगी तो उसके साथ क्या करेंगी, लेकिन यह तो तय था कि एक बार उनका रहस्य पता चलने पर वे उसे जाने नहीं देंगी।
तीन बिल्लियाँ सूंघते हुए पास आईं।
"हम्म, अजीब बात है!" उनमें से एक ने अपनी लंबी मूंछें लहराते हुए कहा। "यहां बदबू तो आ रही है, लेकिन कोई है ही नहीं!"
"अजीब बात है!" दूसरे ने कहा। "लेकिन यहाँ तो कोई नहीं है। चलो कहीं और देखते हैं!"
"समझ से परे," तीसरे ने म्याऊं करते हुए कहा।
बिल्लियाँ मुड़ीं और जहाँ से आई थीं वहीं चली गईं। कदमों की आहट सीढ़ियों से नीचे उतरती हुई अंधेरे में गायब हो गई। युवक ने राहत की साँस ली, यह सच है, लेकिन उसे अभी भी समझ नहीं आ रहा था कि क्या हुआ था। इतनी तंग जगह में, वह लगभग उनके सामने आ गया था। उसे अनदेखा करना नामुमकिन था। हालाँकि, बिल्लियों ने उसे देखा तक नहीं था। युवक ने अपनी आँखों पर हाथ रखकर यह सुनिश्चित किया कि वह अदृश्य तो नहीं हो गया। बहुत अजीब। खैर, उसने फैसला किया कि अगली सुबह वह स्टेशन जाएगा, ट्रेन पकड़ेगा और उस शहर को छोड़ देगा। वहाँ रहना बहुत खतरनाक था। उसे नहीं पता था कि उसका भाग्य कब तक उसका साथ देगा।
अगले दिन, सुबह की ट्रेन स्टेशन पर नहीं रुकी। वह बिना धीमे हुए उसके पास से गुज़र गई। शाम की ट्रेन भी रुकी। उसने इंजन चालक की परछाई और डिब्बों में बैठे यात्रियों के चेहरे देखे। लेकिन ट्रेन नहीं रुकी। ऐसा लग रहा था मानो किसी ने उसे वहाँ इंतज़ार करते हुए नहीं देखा, मानो उन्होंने स्टेशन को देखा ही न हो। शाम की ट्रेन के दूर चले जाने के बाद, पहले से भी ज़्यादा गहरी खामोशी छा गई। सूरज धीरे-धीरे क्षितिज में डूब रहा था। बिल्लियों के दिखने का समय हो गया था। वह समझ गया कि वह रास्ता भटक गया है। उस युवक को आखिरकार समझ आ गया: वह बिल्लियों का शहर नहीं था, बल्कि वह जगह थी जहाँ वह खो जाने वाला था। उसे इसी उद्देश्य से बनाया गया था। वह हमारी दुनिया का हिस्सा नहीं था और कोई भी ट्रेन उसे वहाँ से हमेशा के लिए ले जाने के लिए नहीं रुकेगी।
*

टेंगो ने कहानी दो बार पढ़ी। "वह जगह जहाँ वह खो जाएगा" इस वाक्य ने उसकी दिलचस्पी जगा दी थी। उसने किताब बंद की और किनारे पर बनी फैक्ट्रियों के अवास्तविक दृश्य को घूरने लगा। रिफाइनरियों से निकलती लपटें, विशाल तेल टैंक, तोपों जैसी मोटी और बड़ी चिमनियां। सड़कों पर ट्रकों और टैंकरों के काफिले। बिल्लियों के शहर से बिलकुल अलग, लेकिन उतना ही अवास्तविक दृश्य। यही वह भूमिगत दुनिया थी जो महानगर के जीवन को चलाती थी।
कुछ देर बाद उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और क्योको यासुदा की कल्पना करने लगा, जो उस जगह पर कैद थी जहाँ वह खो गई थी। एक ऐसी जगह जहाँ कोई ट्रेन नहीं रुकती

थी। वहाँ न कोई टेलीफोन था, न कोई डाक डिब्बा। दिन में तो कोई दिखाई नहीं देता था, लेकिन अंधेरा होते ही बिल्लियाँ अपनी ज़िद भरी खोज शुरू कर देती थीं। एक ऐसी खोज जो अंतहीन चलती रहती थी। तेंगो को नींद नहीं आ रही थी। वह ज़्यादा देर नहीं सोया, लेकिन गहरी नींद सोया, और जब उठा तो पसीने से भीगा हुआ था। ट्रेन मिनामिबोसो के धूप से भरे किनारे पर तेज़ी से दौड़ रही थी।
*

तातेयामा स्टेशन पर उतरकर वह चिकुरा स्टेशन पर सवार हो गया। वहाँ पहुँचते ही उसे समुद्र की पुरानी यादें ताज़ा हो गईं। सड़कों पर हर कोई धूप में तपा हुआ था। उसने स्टेशन के सामने से एक टैक्सी ली और सैनिटोरियम चला गया। रिसेप्शन पर उसने अपना परिचय दिया और अपने पिता का नाम बताया।
"क्या आपके आने की सूचना पहले से दी गई है?" अधेड़ उम्र की रिसेप्शनिस्ट ने रूखे स्वर में उससे पूछा।
वह कद में छोटी थी, धातु के फ्रेम वाला चश्मा पहनती थी और उसके बाल छोटे थे जिनमें सफेद धारियाँ थीं। उसकी गोल अनामिका उंगली पर एक अंगूठी थी जो देखने में चश्मे के साथ सेट में खरीदी गई लगती थी। उसकी छाती पर लगे बैज पर "तामुरा" लिखा था।
"नहीं, मैंने अचानक ही फैसला किया। मैं ट्रेन में चढ़ा और आ गया," टेंगो ने ईमानदारी से कहा।
नर्स ने उसे बड़े आश्चर्य से देखा। फिर उसने कहा:
जब आप मिलने आएं, तो पहले से सूचना देना अनिवार्य है। हमारे यहां कई गतिविधियां होती हैं और मरीज़ हमेशा उपलब्ध नहीं होते।
मुझे माफ़ करना। मुझे पता नहीं था!
आप पिछली बार यहां कब आए थे?
- दो वर्ष पहले।
"दो साल पहले," उसने एक हाथ में कलम लिए आगंतुकों की सूची देखते हुए दोहराया।
"क्या मतलब, तुम दो साल से यहाँ नहीं आए हो?"
"नहीं," टेंगो ने कहा।
"हमारी फाइल से पता चलता है कि आप श्री कावाना के इकलौते रिश्तेदार हैं।"
- यह सही है।
नर्स ने सूची को डेस्क पर रखा और बिना कुछ कहे टेंगो की ओर देखा। यह तिरस्कार भरी नज़र नहीं थी, बल्कि आत्मविश्वास से भरी नज़र थी। टेंगो भी अपवाद नहीं था।
"आपके पिताजी इस समय एक सामूहिक पुनर्वास गतिविधि में भाग ले रहे हैं। इसमें लगभग तीस मिनट लगेंगे। उसके बाद आप उनसे मिल सकते हैं।"
वह कैसा महसूस कर रहा है?
"शारीरिक रूप से वह स्वस्थ है। उसे कोई समस्या नहीं है। लेकिन यहाँ," नर्स ने अपनी तर्जनी उंगली से उसकी कनपटी की ओर इशारा करते हुए कहा, "वह एक कदम आगे बढ़ता है और एक कदम पीछे हटता है। आप समझ जाएँगे कि मेरा क्या मतलब है।" टेंगो ने उसे धन्यवाद दिया और प्रवेश द्वार के पास हॉल में एक पुराने सोफे पर बैठ गया। उसने अपनी जेब से किताब निकाली और पढ़ना शुरू कर दिया। बीच-बीच में हवा समुद्र की महक लाती और चीड़ के पेड़ों से ठंडी सरसराहट करती। शाखाओं पर लटके अनगिनत झींगुरों की चहचहाहट कान फाड़ देने वाली थी। यह गर्मियों का चरम

था, और ऐसा लग रहा था जैसे वे जानते हों कि यह ज़्यादा समय तक नहीं टिकेगी।
उन्होंने अपनी आवाज़ें पूरी तरह से गूंजने दीं, मानो अपने बचे हुए छोटे से जीवन के लिए आभार व्यक्त कर रहे हों।
नाक पर चश्मा लगाए नर्स को आने और यह घोषणा करने में ज्यादा समय नहीं लगा कि पुनर्वास कार्यक्रम समाप्त हो गया है और वह अपने पिता से मिल सकता है।
"मैं तुम्हारा नेतृत्व करूंगी," उसने कहा।
टेंगो सोफे से उठा और दीवार पर लगे बड़े शीशे के सामने से गुज़रते हुए उसने महसूस किया कि वह अभी-अभी यात्रा से लौटा हुआ लग रहा था। उसने जेफ बेक के जापान टूर की टी-शर्ट पहनी हुई थी, और उसके ऊपर एक फीकी डेनिम शर्ट थी जिसके बटन टेढ़े-मेढ़े लगे थे। उसकी चिनो पैंट के घुटनों पर पिज्जा सॉस का दाग था। उसने खाकी रंग के स्नीकर्स पहने हुए थे जिन्हें उसने काफी समय से धोया नहीं था, और सिर पर टोपी थी। वह दो साल बाद अपने पिता से मिलने आए किसी वयस्क व्यक्ति जैसा नहीं लग रहा था। वह कोई उपहार भी नहीं लाया था। उसकी जेब में सिर्फ एक किताब थी। इसमें कोई हैरानी की बात नहीं थी कि नर्स ने उसे हैरानी से देखा था।
वे बगीचे से होते हुए उस इमारत की ओर बढ़े जहाँ उनके पिता थे। नर्स ने उन्हें संक्षेप में उस जगह का दौरा कराया। सैनिटोरियम में तीन इमारतें थीं। मरीजों की स्थिति के अनुसार, उन्हें किसी एक इमारत में रखा जाता था। टेंगो के पिता इस समय मध्यम स्तर की बीमारी वाले मरीजों की इमारत में थे। वहाँ आने वाले अधिकांश मरीजों को पहले हल्की बीमारी वाले मरीजों के लिए आरक्षित इमारत में रखा जाता था, फिर उन्हें मध्यम और अंत में गंभीर श्रेणी में स्थानांतरित कर दिया जाता था। जैसे कोई दरवाजा केवल एक ही दिशा में खुलता है, वह कभी दूसरी दिशा में नहीं खुलता। गंभीर श्रेणी में रहने वालों के पास जाने के लिए कोई और जगह नहीं थी। बेशक, नर्स ने "कब्र के अलावा" शब्द का प्रयोग नहीं किया, लेकिन इसका अर्थ स्पष्ट था।
टेंगो के पिता के साथ एक रूममेट रहता था, लेकिन वह कुछ पढ़ाई के लिए बाहर गया हुआ था। अस्पताल में मरीजों के पुनर्वास के लिए कई तरह के कोर्स आयोजित किए जाते थे। मिट्टी के बर्तन बनाना, बागवानी, व्यायाम। बेशक, वे इसे पुनर्वास कहते थे, लेकिन मरीजों की हालत में कोई सुधार नहीं होता था। इन कोर्सों का असल मकसद बीमारी की प्रगति को धीमा करना और किसी तरह मरीजों का समय बिताना था। टेंगो के पिता खुली खिड़की के पास एक कुर्सी पर बैठे बाहर देख रहे थे। उन्होंने अपने हाथ घुटनों पर रखे हुए थे। उनके बगल वाली मेज पर एक गमला रखा था जिसमें कई फूलों की छोटी-छोटी पीली पंखुड़ियाँ फैली हुई थीं। फर्श नरम सामग्री से बना था ताकि मरीज के गिरने पर चोट न लगे। कमरे में दो लकड़ी के सिंगल बेड, दो डेस्क और कपड़े व सामान रखने के लिए एक अलमारी थी। हर डेस्क के बगल में एक छोटी सी किताबों की अलमारी थी। पर्दा धूप से फीका पड़ गया था। टेंगो को तुरंत यह एहसास नहीं हुआ कि खिड़की पर खड़ा बूढ़ा आदमी उसका पिता है। वह दुबला-पतला हो गया था। उसके छोटे बाल पाले से ढके घास के मैदान की तरह सफेद थे। उसके गाल धंसे हुए थे, जिससे उसकी आंखें टेंगो की याद से कहीं ज्यादा बड़ी लग रही थीं। उसके माथे पर तीन गहरी झुर्रियां थीं। उसका सिर पहले से ज्यादा टेढ़ा लग रहा था, लेकिन शायद यह बालों के कम होने के कारण था। उसकी भौहें लंबी और घनी थीं, और उसके कानों से सफेद बालों के दो गुच्छे निकले हुए

थे। उसके नुकीले कान अब और भी बड़े लग रहे थे, जैसे किसी चमगादड़ के पंख हों। केवल उसकी गहरी लाल नाक ही पहले की तरह गोल थी, जो उसके कानों से अलग दिख रही थी। उसके मुंह के कोने लटके हुए थे और ऐसा लग रहा था मानो किसी भी क्षण उससे लार टपक रही हो। उसके होंठ खुले हुए थे, जिससे उसके टेढ़े-मेढ़े दांत दिख रहे थे। खिड़की के पास बैठे उसकी आकृति को देखकर टेंगो को वान गॉग के बुढ़ापे के एक आत्मचित्र की याद आ गई।
जब टेंगो कमरे में दाखिल हुआ, तो उस आदमी ने एक पल के लिए उसकी तरफ देखा, फिर बाहर के नज़ारे की तरफ मुड़ गया। दूर से देखने पर वह किसी जानवर जैसा लग रहा था, चूहे और गिलहरी के बीच का कोई जीव। एक ऐसा प्राणी जो साफ-सुथरा तो नहीं था, लेकिन दृढ़ निश्चय और बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण था। पर इसमें कोई शक नहीं था, यह उसके पिता ही थे। या यूँ कहें कि उनका बचा-खुचा शरीर। पिछले दो सालों ने उन पर गहरे निशान छोड़े थे, जैसे कोई चौकीदार किसी गरीब के घर से बेरहमी से फर्नीचर चुरा ले। टेंगो को अपने पिता एक ऊर्जावान और मेहनती इंसान के रूप में याद थे। कल्पना और आत्मनिरीक्षण की कमी थी, लेकिन नैतिकता का पक्का था। सरल, लेकिन दृढ़ इच्छाशक्ति और धैर्य से भरपूर। टेंगो ने उन्हें कभी शिकायत करते या बहाने बनाते नहीं सुना था। लेकिन अब जो उसके सामने था, वह बस एक खोखला ढाँचा था। एक खाली कमरा, जिसमें कोई गर्माहट नहीं थी।
“श्रीमान कावाना,” नर्स ने बूढ़े व्यक्ति को पुकारा, शब्दों को यथासंभव स्पष्ट रूप से बोलते हुए। वह मरीजों से इसी तरह बात करने की आदी थी। “श्रीमान कावाना, मेरे पास खुशखबरी है! आपका बेटा आ गया है।”
बूढ़े व्यक्ति ने एक बार फिर उनकी ओर देखा। उसकी भावहीन आँखें छज्जे के नीचे बने दो खाली अबाबील के घोंसलों जैसी लग रही थीं।
“नमस्ते,” टेंगो ने कहा।
"श्रीमान कावाना, आपका बेटा आपसे मिलने टोक्यो से आया है," नर्स ने कहा। बूढ़ा आदमी बिना कुछ कहे टेंगो को देखता रहा। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी अनजान भाषा में लिखे शिलालेख को देख रहा हो।
"रात का खाना साढ़े छह बजे है," नर्स ने टेंगो से कहा। "तब तक आप जो चाहें कर सकते हैं।"
नर्स के जाने के बाद, टेंगो थोड़ा स्तब्ध होकर अपने पिता के पास गया और खाली कुर्सी पर बैठ गया। वह एक पुरानी कुर्सी थी, जिसकी गद्दी फीकी पड़ चुकी थी और लकड़ी के फ्रेम पर जगह-जगह खरोंचें थीं। उसके पिता ने उसे बैठते हुए देखा। “क्या तुम ठीक हो?” टेंगो ने पूछा।
"जी हां, धन्यवाद," बूढ़े व्यक्ति ने औपचारिक लहजे में उत्तर दिया।
टेंगो को अब कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। अपनी कमीज के एक बटन से खेलते हुए उसने बाहर चीड़ के जंगल पर एक नज़र डाली, फिर अपने पिता की ओर देखा।
“आप टोक्यो से आए हैं?” उस आदमी ने कहा। ऐसा लग रहा था कि वह टेंगो को नहीं जानता था।
— जी हाँ, टोक्यो से।
क्या आप एक्सप्रेस ट्रेन से आए थे?
— जी हाँ। मैं एक्सप्रेस ट्रेन से तातेयामा आया और वहाँ से कर्मचारियों के साथ चिकुरा गया।
क्या आपने कभी लोगों को नहाते देखा है?

टेंगो ने कहा:
"मैं टेंगो हूं। टेंगो कवाना, आपका बेटा।"
“टोक्यो में कहाँ?” बूढ़े आदमी ने पूछा।
- कोएंजी, सुगिनामी जिला।
उसके माथे की तीनों झुर्रियां और गहरी हो गईं।
रेडियो और टीवी टैक्स का भुगतान करने से बचने के लिए कई लोग झूठ बोलते हैं।
"पिताजी!" टेंगो रो पड़ा। यह शब्द उसने बहुत दिनों से नहीं बोला था। "मैं हूँ, टेंगो। आपका बेटा!"
"मेरे कोई बेटे नहीं हैं," उस आदमी ने संक्षेप में कहा।
"तुम्हारा कोई बॉयफ्रेंड नहीं है," टेंगो ने यंत्रवत तरीके से दोहराया।
उस आदमी ने सिर हिलाया।
"तो फिर मैं क्या हूँ?"
"तुम कुछ भी नहीं हो," उसने अपना सिर दो बार हल्के से हिलाते हुए जवाब दिया।
टेंगो अवाक रह गया। उसने गहरी सांस ली। उसके पिता भी चुप हो गए। खामोशी में डूबे हुए, दोनों अपने-अपने विचारों को सुलझाने की कोशिश कर रहे थे। केवल झींगुर ही जोर से चहचहा रहे थे, मानो उन्हें कोई शंका न हो।
टेंगो की अंतरात्मा ने उसे बताया कि वह आदमी झूठ नहीं बोल रहा था। उसकी याददाश्त कमजोर थी और उसका दिमाग भ्रमित था, लेकिन उसने जो कहा वह शायद सच था। “इसका क्या मतलब है?” उसने पूछा।
"तुम कुछ भी नहीं हो," उस व्यक्ति ने बिना किसी भावना के दोहराया। "तुम कुछ भी नहीं थे, तुम कुछ भी नहीं हो, और तुम कुछ भी नहीं रहोगे।"
बस बहुत हो गया, टेंगो ने सोचा।
वह अपनी कुर्सी से उठकर सीधे ट्रेन स्टेशन जाना चाहता था और टोक्यो लौट जाना चाहता था। उसने जो कुछ सुनना था, सुन लिया था। लेकिन वह उठ नहीं पा रहा था। वह बिल्ली वाले कस्बे के उस नौजवान जैसा था। वह जिज्ञासु था। वह जानना चाहता था कि रहस्य की तह तक क्या है। वह एक स्पष्ट उत्तर की तलाश में था। बेशक, यह खतरनाक था, लेकिन अगर उसने यह मौका गंवा दिया, तो शायद वह उस रहस्य को कभी नहीं सुलझा पाएगा जो सीधे उससे जुड़ा था। वह हमेशा के लिए गुमनामी में खो जाएगा। टेंगो अपने मन में उन शब्दों को बार-बार दोहराता रहा। आखिरकार, उसने हिम्मत जुटाई और वह सवाल पूछ ही लिया जिसे उसने बचपन में कई बार पूछने की व्यर्थ कोशिश की थी:
"क्या मतलब, तुम मेरे जैविक पिता नहीं हो? हमारे बीच कोई खून का रिश्ता नहीं है?"
वह व्यक्ति बिना कुछ कहे टेंगो को देखता रहा। उसके चेहरे के भाव से यह भी स्पष्ट नहीं था कि उसे प्रश्न का अर्थ समझ आया था या नहीं।
"रेडियो-टीवी सिग्नल चुराना गैरकानूनी है," उसने टेंगो की आँखों में सीधे देखते हुए कहा। "यह संपत्ति चुराने जैसा है। क्या आपको ऐसा नहीं लगता?" "बिल्कुल सही," टेंगो ने सहमति जताई।
उस व्यक्ति ने संतुष्टि से कई बार अपना सिर हिलाया।
उन्होंने कहा, "रेडियो-टीवी सिग्नल बारिश और बर्फ की तरह आसमान से मुफ्त में नहीं आते हैं।"

बिना कुछ कहे, टेंगो अपने पिता के हाथों को देखता रहा। उन्होंने अपने हाथों को मजबूती से अपने घुटनों पर टिका रखा था, उन्हें बिल्कुल भी हिला नहीं रहे थे। उनका बायां हाथ बाएं घुटने पर और दायां हाथ दाएं घुटने पर था। वे छोटे और काले थे। ऐसा लग रहा था जैसे वे हड्डियों तक धूप से झुलस गए हों। ऐसे हाथ जैसे किसी ने सालों-साल सड़कों पर भटकते हुए बिताए हों।
“जब मैं छोटा था तब मेरी माँ की मृत्यु तो नहीं हुई थी ना?” टेंगो ने धीरे-धीरे पूछा, हर शब्द को स्पष्ट रूप से बोलते हुए।
उस आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं बदला, उसके हाथ स्थिर रहे। उसने टेंगो को ऐसे देखा जैसे उसे पहले कभी देखा ही न हो।
"माँ तुम्हें छोड़कर चली गई। वह मुझे तुम्हारी देखभाल में छोड़कर चली गई। वह शायद किसी दूसरे आदमी के साथ चली गई। क्या यह सही है?"
उस आदमी ने सिर हिलाया:
"आप सिग्नल नहीं चुरा सकते। आप बिना सजा भुगते मनमानी नहीं कर सकते।"
वह सवाल समझ गया था, लेकिन वह इस पर खुलकर चर्चा नहीं करना चाहता था। टेंगो को ऐसा ही महसूस हुआ।
“पिताजी,” उसने कहा। “आप मेरे पिता नहीं हैं, फिर भी मैं आपको पिता ही कह रहा हूँ। मुझे नहीं पता कि आपको और क्या कहूँ। सच तो यह है कि मैंने आपको कभी पसंद नहीं किया। बल्कि, मैं आपसे नफ़रत करता रहा हूँ। आप जानते ही हैं, है ना? लेकिन अगर आप मेरे पिता नहीं हैं और हमारे बीच कोई खून का रिश्ता नहीं है, तो मुझे आपसे नफ़रत करने का कोई कारण नहीं है। मुझे नहीं पता कि मैं आपको पसंद कर पाऊँगा या नहीं, लेकिन कम से कम अब मैं आपको समझ सकता हूँ। मैं इसी की तलाश में था, सच्चाई जानने की। मैं कौन हूँ और कहाँ से आया हूँ। बस यही एक बात है जो मैं जानना चाहता हूँ। यह ऐसी बात है जो मुझे आज तक किसी ने नहीं बताई। अगर आप मुझे अभी सच्चाई बता देंगे, तो मैं आपका न्याय नहीं करूँगा और न ही आपसे नफ़रत करूँगा। आपका न्याय न करना और आपसे नफ़रत न करना मेरे लिए राहत की बात होगी!” वह आदमी चुप रहा, उसी भावहीन आँखों से टेंगो को देखता रहा। लेकिन उन खाली अबाबील के घोंसलों के तल में एक हल्की सी चमक दिखाई दी।
"मैं कुछ भी नहीं हूँ," टेंगो ने कहा। "ये तुम्हारे शब्द हैं। मैं रात में समुद्र में फेंकी गई किसी वस्तु की तरह बह रहा हूँ। मैं हाथ फैलाता हूँ, लेकिन आस-पास कोई नहीं है। मैं रोता हूँ, लेकिन कोई जवाब नहीं देता। मेरा किसी चीज़ से कोई संबंध नहीं है। तुम्हारे सिवा, मेरे पास परिवार जैसा कुछ भी नहीं है। और इस रहस्य का हल तुम्हारे पास है, लेकिन तुम इसे मेरे साथ साझा नहीं करोगे। तुम पानी के किनारे इस शहर में बैठे हो और दिन-ब-दिन, धीरे-धीरे, तुम्हारी याददाश्त कमजोर होती जा रही है। और इसके साथ ही, मेरे बारे में सच्चाई भी खो रही है। केवल यही सच्चाई मेरी मदद कर सकती है। इसके बिना, मैं कुछ भी नहीं हूँ और मैं कभी कुछ नहीं बन पाऊँगा, जैसा कि तुमने कहा था!"
"ज्ञान एक बहुत ही मूल्यवान सामाजिक पूंजी है," उस व्यक्ति ने ऐसे कहा मानो वह कोई ऐसा पाठ सुना रहा हो जिसे उसने कंठस्थ कर लिया हो।
हालांकि, उनकी आवाज पहले से धीमी थी, मानो किसी ने उनके पीछे से वॉल्यूम नॉब घुमा दिया हो। उन्होंने आगे कहा:

— इस अनमोल धरोहर को सावधानीपूर्वक संचित और उपयोग किया जाना चाहिए। ज्ञान के फल भावी पीढ़ियों तक पहुंचाए जाने चाहिए। इसीलिए रेडियो-टीवी कर आवश्यक है…
यह उसके लिए एक मंत्र के समान था। वह अपनी रक्षा के लिए इन शब्दों का जाप करता था। टेंगो को अहंकार के इस कवच को भेदना था। उसे इसके नीचे छिपे जीवित मनुष्य को बाहर निकालना था।
"मां कैसी इंसान थीं? वह कहां गईं? उनके साथ क्या हुआ?" उसने बीच में ही टोकते हुए पूछा।
वह आदमी अचानक चुप हो गया। उसने अपनी प्रार्थना रोक दी थी। टेंगो ने आगे कहा: मैं नफरत और तिरस्कार के साथ जीने से थक गया हूँ। प्यार नहीं है। मेरा कोई दोस्त नहीं है। एक भी नहीं। और सबसे बढ़कर, मैं खुद से प्यार नहीं कर सकता। क्यों? क्योंकि मैं दूसरों से भी प्यार नहीं कर सकता। खुद से प्यार करना, प्यार पाने और बदले में प्यार देने से ही सीखा जाता है। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं? अगर आप किसी से प्यार नहीं कर सकते, तो आप खुद से भी प्यार नहीं कर सकते। मैं यह नहीं कह रहा कि यह आपकी गलती है। ज़रा सोचिए, आप भी मेरी तरह ही पीड़ित हैं। शायद आपको भी खुद से प्यार करना नहीं आता। क्या मैं गलत हूँ? बूढ़ा आदमी चुप रहा, उसके होंठ कसकर बंद थे। उसके चेहरे के भावों से यह पता नहीं चल रहा था कि उसे कही गई बातें समझ आई हैं या नहीं। टेंगो भी चुप हो गया और अपनी कुर्सी पर और धंस गया। खुली खिड़की से हवा अंदर आई, मौसम की मार से फीके पड़े पर्दे को मरोड़ रही थी और गमले में लगे फूल की छोटी-छोटी पंखुड़ियों को फड़फड़ा रही थी। फिर वह खुले दरवाजे से गलियारे में घुस गई। समुद्र की गंध अब और तेज़ हो गई थी। आंगन से चीड़ की पत्तियों की हल्की सरसराहट सुनाई दे रही थी, जो झींगुरों की चहचहाहट के साथ मिल रही थी।
टेंगो ने शांत स्वर में बोलना जारी रखा:
मुझे अक्सर मतिभ्रम होता है। यह एक ऐसी छवि है जो लंबे समय से लगातार मेरे सामने आ रही है। शायद यह मतिभ्रम नहीं, बल्कि एक वास्तविक छवि है जो मेरी स्मृति में बस गई है। मैं डेढ़ साल की थी और मेरी माँ वहाँ थी। मेरी माँ एक युवक को गले लगा रही है। कोई और, आप नहीं। मैं उसे नहीं जानती, लेकिन निश्चित रूप से वह आप नहीं हैं। मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन यह छवि मेरी आँखों में इस कदर छप गई है कि मैं इसे मिटा नहीं सकती।
उस आदमी ने कुछ नहीं कहा। लेकिन उसकी नज़रें किसी और चीज़ पर टिकी थीं, ऐसी चीज़ पर जो वहाँ थी ही नहीं। दोनों कुछ देर तक चुप रहे। टेंगो अचानक तेज़ हुई हवा की आवाज़ सुनने लगा। उसके पिता क्या सुन रहे थे, यह उसे नहीं पता था। लंबे मौन के बाद बूढ़े व्यक्ति ने पूछा, "क्या आप मुझे कुछ पढ़कर सुनाएंगे? मेरी आँखों में दर्द हो रहा है और मैं पढ़ नहीं सकता। मुझे अक्षर समझ नहीं आते। वहाँ अलमारी में किताबें रखी हैं। आप अपनी पसंद की किताब चुन सकते हैं।" टेंगो ने आह भरी और कुर्सी से उठकर शेल्फ पर रखी किताबों को देखने लगा। उनमें से अधिकतर ऐतिहासिक उपन्यास थे। उसके पास 'बोधिसत्व का मार्ग' का पूरा संस्करण था। लेकिन टेंगो को किसी पुरानी भाषा में लिखे उपन्यास को जोर से पढ़ने की कोई इच्छा नहीं थी।
"अगर आप चाहें तो मैं आपको 'द सिटी ऑफ कैट्स' पढ़कर सुना सकता हूँ," उन्होंने कहा। "यह उसी किताब से है जो मैं अपने साथ लाया हूँ।"

"बिल्लियों के शहर की कहानी," उस आदमी ने कहा और कुछ देर तक इन शब्दों पर विचार किया। "अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो कृपया इसे मुझे पढ़कर सुनाइए!"
टेंगो ने अपनी घड़ी देखी।
मुझे कोई आपत्ति नहीं है। ट्रेन आने में अभी काफी समय है। यह एक अजीब कहानी है, मुझे नहीं पता कि आपको पसंद आएगी या नहीं।
टेंगो ने अपनी जेब से किताब निकाली और 'बिल्लियों का शहर' कहानी ज़ोर से पढ़ने लगा। बूढ़ा आदमी खिड़की के पास कुर्सी पर बैठा उसे सुनता रहा। टेंगो ने शब्दों को स्पष्ट और धीरे-धीरे बोला ताकि उसे समझ आ सके। दो-तीन बार वह सांस लेने के लिए रुका। इन विरामों के दौरान उसने अपने पिता की ओर देखा, लेकिन उनकी कोई प्रतिक्रिया नहीं थी। वह यह भी नहीं बता सका कि उन्हें कहानी पसंद आई या नहीं। जब उसने पढ़ना समाप्त किया, तो उसने देखा कि वह आदमी आँखें बंद करके बैठा था, लेकिन उसने अपनी मुद्रा बिल्कुल नहीं बदली थी। आपको लग सकता था कि वह सो रहा है, लेकिन वह जागा हुआ था। वह कहानी की दुनिया में पूरी तरह डूबा हुआ था और उसे वहाँ से बाहर आने में कुछ समय लगा। टेंगो धैर्यपूर्वक उसका इंतजार करता रहा। दोपहर की रोशनी फीकी पड़ने लगी थी और शाम के आभास होने लगे थे। हवा चीड़ के पेड़ों की शाखाओं को हिलाती रही।
“क्या बिल्लियों के शहर में टेलीविजन हुआ करते थे?” बूढ़े आदमी ने गंभीरता से पूछा।
— यह कहानी 1930 के दशक में जर्मनी में लिखी गई थी, जब टेलीविजन का अस्तित्व ही नहीं था। लेकिन रेडियो जरूर थे।
मैं मंचूरिया में था, लेकिन हमारे पास रेडियो नहीं था। यहाँ तक कि कोई प्रसारण स्टेशन भी नहीं था। अखबार भी पर्याप्त नहीं थे; हम आधे महीने पुराने अखबार ही पढ़ते थे। हमारे पास खाने को कुछ नहीं था, हमारे पास कोई महिला नहीं थी। कभी-कभी भेड़िये आ जाते थे। हम दुनिया के बिल्कुल आखिरी छोर पर थे।
वह कुछ देर चुप रहा और सोचता रहा। शायद उसे मंचूरिया के कठिन दिन, वहाँ एक उपनिवेशी के रूप में बिताया गया कठोर जीवन याद आ रहा था। लेकिन ये यादें धुंधली पड़ गईं और एक खालीपन में खो गईं। उसके चेहरे के भाव से ही पता चल रहा था कि उसके मन में क्या चल रहा है।
"क्या इस शहर को बिल्लियों ने बनाया था, या इसे बहुत पहले इंसानों ने बनाया था और फिर बिल्लियाँ यहाँ आकर बस गईं?" उसने खिड़की से बाहर देखते हुए खुद से बुदबुदाया। फिर भी, ऐसा लग रहा था जैसे यह सवाल टेंगो से पूछा गया हो।
"मुझे नहीं पता," उसने जवाब दिया। "लेकिन मुझे लगता है कि यह बहुत समय पहले इंसानों द्वारा बसाया गया एक शहर था, और किसी कारण से इसे छोड़ दिया गया था, और बिल्लियाँ वहाँ रहने लगीं। शायद वे सभी किसी संक्रामक बीमारी से मर गईं।" बूढ़े आदमी ने सिर हिलाया।
"अगर कोई खालीपन है, तो उसे किसी न किसी चीज से भरना ही पड़ता है। हर कोई ऐसा ही करता है।"
"क्या हर कोई ऐसा करता है?"
“जी हां!” बूढ़े व्यक्ति ने पुष्टि की।
— और आप किस कमी को पूरा कर रहे हैं?
उस आदमी ने भौंहें चढ़ा लीं। उसकी लंबी भौहें उसकी आँखों को ढक रही थीं। फिर, अपनी आवाज़ में थोड़ी सी उपहास भरी लहजे में उसने कहा:

- तो आपको नहीं पता।
"मुझे नहीं पता," टेंगो ने कहा।
उस आदमी ने अपनी नाक के नथुने फुलाए और एक भौंह को थोड़ा सा ऊपर उठाया। नाखुश होने पर वह हमेशा ऐसा ही भाव दिखाता था।
— अगर आपको समझने के लिए स्पष्टीकरण की आवश्यकता है, तो इसका मतलब है कि आप कितने भी स्पष्टीकरण प्राप्त कर लें, आपको समझ नहीं आएगा।
टेंगो ने अपनी आँखें सिकोड़कर अपने पिता को गौर से देखा, लेकिन उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं झलक रहा था। उसने उन्हें कभी इतने विचित्र और अर्थपूर्ण ढंग से बोलते नहीं सुना था। वे आमतौर पर सीधे-सीधे, बिना लाग-लपेट के अपनी बात कहते थे। वे केवल ज़रूरत पड़ने पर ही बोलते थे और संक्षेप में बोलते थे। यही बात उनकी पहचान थी।
"मैं समझता हूँ। वैसे भी, आपने एक कमी पूरी कर दी है," टेंगो ने कहा। "लेकिन आपके जाने से जो कमी आई है, उसे कौन पूरा करेगा?"
“तुम,” उस छोटे कद के आदमी ने हाथ उठाकर अपनी तर्जनी उंगली से टेंगो की ओर इशारा करते हुए कहा। “क्या यह स्पष्ट नहीं है? मैं किसी के जाने से खाली हुई जगह को भरता हूँ, और तुम मेरे जाने से खाली हुई जगह को भरोगे। हम अदला-बदली करेंगे।”
ठीक उसी तरह जैसे बिल्लियों ने उस वीरान शहर पर कब्जा कर लिया था।
"हां, यह शहर की तरह ही खो जाता है," उसने कहा, फिर अपनी फैली हुई तर्जनी उंगली को ऐसे देखा जैसे वह कोई अप्रत्याशित वस्तु हो जो वहां नहीं होनी चाहिए।
"वह शहर की तरह खो रहा है," टेंगो ने अपने पिता के शब्दों को दोहराया।
— जिस महिला ने तुम्हें जन्म दिया है, उसका कहीं पता नहीं चल रहा है।
"वह कहीं नहीं मिल रही। वह शहर की तरह खो गई है। तुम्हारा मतलब है कि वह मर गई है?"
बूढ़े व्यक्ति ने कोई जवाब नहीं दिया। टेंगो ने आह भरी।
"तो मेरे पिता कौन हैं?"
"शून्यता। तुम्हारी माँ ने शून्यता के साथ संभोग किया और तुम्हें जन्म दिया।
मैंने उस शून्यता को भरा," उसने कहा।
फिर वह चुप हो गया और उसने अपनी आंखें बंद कर लीं।
क्या उसने शून्य के साथ संबंध बनाया?
- हाँ।
"और आपने ही मुझे पाला-पोसा। तो बात कुछ ऐसी ही थी?"
“तो क्या मैंने तुम्हें बताया नहीं था?” पिता ने खाँसी के बाद जवाब दिया, जैसे कोई माता-पिता अपने बच्चे को सच्चाई समझा रहे हों जिसे समझने में कठिनाई हो रही हो। अगर तुम्हें समझने के लिए स्पष्टीकरण की ज़रूरत है, तो इसका मतलब है कि तुम चाहे कितनी भी बार समझा लो, समझ ही नहीं पाओगे।
“क्या मेरा जन्म शून्य से हुआ था?” टेंगो ने पूछा।
लेकिन उन्हें कोई जवाब नहीं मिला।
टेंगो ने अपनी उंगलियाँ घुटनों के ऊपर जोड़ लीं। उसने एक बार फिर अपने पिता की आँखों में सीधे देखा। फिर वह सोच में डूब गया। उसने खुद से कहा, यह आदमी महज़ एक खोखला ढाँचा नहीं है। यह कोई वीरान घर नहीं है। यह एक जीवित इंसान है, जो समुद्र के किनारे हिचकिचाते हुए जी रहा है, अपनी संकीर्ण, ज़िद्दी आत्मा

[illegible]

अध्याय 9 ईश्वरीय कृपा के लिए भुगतान

जैसे ही आओमामे अंदर आई, चेलियोस उसके पीछे-पीछे चलकर दरवाज़ा बंद कर दिया। कमरा घोर अंधेरा था। खिड़कियों पर मोटे पर्दे लगे थे और अंदर की सारी बत्तियाँ बंद थीं। पर्दों के बीच की दरार से हल्की सी रोशनी छनकर आ रही थी, लेकिन उससे अंधेरा और भी गहरा हो रहा था।
आओमामे की आँखें अंधेरे में बड़ी मुश्किल से अभ्यस्त हुईं, मानो वह किसी तारामंडल या सिनेमाघर में आ गई हो जहाँ पहले से ही फिल्म चल रही हो। सबसे पहले उसकी नज़र एक छोटी मेज पर रखी इलेक्ट्रॉनिक घड़ी पर पड़ी। उसके हरे अंक सात बजकर बीस मिनट बता रहे थे। थोड़ी देर बाद, उसने सामने वाली दीवार से लगा एक बड़ा सा पलंग देखा। घड़ी पलंग के सिरहाने पर रखी थी। यह कमरा बगल वाले कमरे से संकरा था, लेकिन किसी आम होटल के कमरे से ज़्यादा विशाल था।
बिस्तर पर एक काला सा ढेर पड़ा था। उसे यह समझने में थोड़ा समय लगा कि वह अनियमित आकृति एक फैली हुई आकृति थी। लेकिन उस दौरान, आकृति में कोई बदलाव नहीं आया। उसे जीवन का कोई संकेत नहीं दिखाई दिया। उसे उसकी साँसें सुनाई नहीं दे रही थीं। उसे केवल छत के पास से आती हुई एयर कंडीशनिंग की हल्की सी गंध सुनाई दे रही थी। लेकिन वह मरा हुआ नहीं हो सकता था। गंजे आदमी ने उसे संकेत दिया था कि वह एक जीवित व्यक्ति से निपट रहा है।
वह बहुत विशालकाय व्यक्ति था। शायद पुरुष ही था। आओमामे निश्चित नहीं कह सकती थी, लेकिन ऐसा लग रहा था कि वह उसकी ओर मुंह करके नहीं बैठा है। वह चादर में लिपटा हुआ नहीं था, बल्कि कंबल पर पीठ के बल लेटा हुआ था और हिल नहीं रहा था, मानो कोई विशालकाय जानवर गुफा में छिपा हो, अपनी ताकत बचाए रखने की कोशिश कर रहा हो और फिर से तरोताजा होने का इंतजार कर रहा हो।
"अब समय आ गया है," गंजे आदमी ने तनाव से भरी आवाज में परछाई को संबोधित किया। यह स्पष्ट नहीं था कि उस आदमी ने उसकी बात सुनी थी या नहीं। पलंग के सिरहाने पर पड़ा काला सा ढेर स्थिर रहा। गंजा आदमी दरवाजे के सामने अपनी मुद्रा बनाए हुए खड़ा रहा। कमरा पूरी तरह सन्नाटे में डूब गया, जिसमें किसी के कुछ निगलने की हल्की सी आवाज सुनाई दे रही थी। आओमामे को एहसास हुआ कि वह वही थी। वह अपने दाहिने हाथ में थैला लिए खड़ी थी और उस गंजे आदमी की तरह ही किसी घटना के घटित होने का इंतजार कर रही थी। घड़ी का डिस्प्ले 7:21, फिर 7:22, फिर 7:23 हो गया। अंत में, बिस्तर पर बनी आकृति में हल्की सी कंपन हुई, जिससे जीवन के संकेत मिले। वह हल्की कंपन फिर स्पष्ट हलचल में बदल गई। ऐसा लग रहा था कि वह व्यक्ति गहरी नींद में है या नींद जैसी अवस्था में है। उसकी मांसपेशियां जागृत हुईं, उसका धड़ सीधा हुआ और उसका मन धीरे-धीरे वास्तविकता में लौट आया। बिस्तर पर बनी आकृति पूरी तरह से उठ खड़ी हुई और उसने अपने पैर मोड़ लिए। यह स्पष्ट रूप से एक पुरुष था।
"अब समय आ गया है," गंजे आदमी ने दोहराया।
उस आदमी ने गहरी, फुफकार भरी आवाज़ निकाली, मानो किसी गहरे कुएँ से आ रही हो।
फिर उसने खुद को गहरी, कर्कश और बेचैन कर देने वाली साँस लेते हुए सुना, जैसे

वह आदमी कुछ देर खड़ा रहा और आओमामे को देखता रहा। आओमामे उसकी निगाहों को महसूस कर सकती थी, जो तीक्ष्ण और सटीक थीं। या यूँ कहें कि उसे ऐसा लग रहा था जैसे कोई उसे करीब से देख रहा हो। उस आदमी ने किसी तरह उसे सिर से पैर तक अच्छी तरह से परख लिया था। उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे उसने उसके सारे कपड़े उतार दिए हों और वह नग्न हो गई हो। उसकी निगाहें न केवल उसकी त्वचा पर, बल्कि उसकी मांसपेशियों, उसके अंगों और यहाँ तक कि उसके गर्भाशय पर भी पड़ीं। यह आदमी अँधेरे में भी देख सकता है, उसने सोचा। यह दिखाई देने वाली चीज़ों से परे भी देख सकता है।
"अंधेरे में चीज़ें देखना आसान होता है," उसने कहा, मानो वह उसके मन की बात पढ़ रहा हो। "लेकिन जितना ज़्यादा समय मैं अंधेरे में बिताता हूँ, ऊपर प्रकाश से भरे संसार में लौटना उतना ही मुश्किल हो जाता है। एक समय ऐसा आएगा जब मुझे रुकना ही पड़ेगा।"
उस आदमी ने कुछ देर तक आओमामे को निहारा, लेकिन बिना किसी यौन रुचि के। वह उसे मात्र एक वस्तु के रूप में देख रहा था, जैसे कोई यात्री नाव से गुजरते हुए द्वीप को देख रहा हो। लेकिन यह कोई साधारण यात्री नहीं था। वह उस द्वीप के बारे में सब कुछ जानने की कोशिश कर रहा था। उसकी तीखी और निर्मम निगाहों के नीचे, आओमामे को अपना शरीर अपर्याप्त और असुरक्षित सा लगा। और वह आमतौर पर ऐसा महसूस नहीं करती थी। अपने स्तनों के आकार को छोड़कर, उसे अपने शरीर पर गर्व था, जिसे वह रोज़ाना व्यायाम करके अच्छी तरह से बनाए रखती थी। उसकी मांसपेशियां लचीली थीं और शरीर पर जरा भी चर्बी नहीं थी। लेकिन, जब उसने उसे देखा, तो उसे लगा जैसे वह मांस का एक बेजान बोरा हो, बूढ़ी और लाचार।
उस आदमी की निगाहें अचानक नरम पड़ गईं, मानो उसे पता चल गया हो कि वह क्या सोच रही है। आओमामे ने महसूस किया कि उसकी निगाहों की तीव्रता तेज़ी से कम हो रही है, जैसे कोई पाइप से घास में पानी डाल रहा हो और कोई चुपके से नल बंद कर दे। "माफ़ कीजिए, क्या आप पर्दा थोड़ा खींच सकते हैं?" उस आदमी ने धीरे से कहा। "मुझे लगता है कि अंधेरे में काम करना आपके लिए मुश्किल होगा।"
आओमामे ने अपना बैग ज़मीन पर रखा, खिड़की के पास गई, रस्सी खींची और पर्दा हटाया, फिर सफ़ेद पर्दा। शहर का रात का नज़ारा कमरे में अपनी चमक बिखेर रहा था। टोक्यो टावर की रोशनी, राजमार्ग की स्ट्रीटलाइटें, लगातार गुज़रती कारों की हेडलाइटें, गगनचुंबी इमारतों की जगमगाती खिड़कियाँ, इमारतों की छतों पर रंग-बिरंगी नियॉन लाइटें, ये सभी रात की रोशनी मिलकर होटल के कमरे में फैल रही थीं। ये बहुत तेज़ नहीं थीं, लेकिन इतनी थीं कि आओमामे कमरे के फर्नीचर को पहचान सके। यह रोशनी उसके लिए बेहद प्यारी थी, उस दुनिया की देन जिससे वह ताल्लुक रखती थी। उसे फिर से एहसास हुआ कि उसे इसकी कितनी सख्त ज़रूरत है। लेकिन वह हल्की सी चमक भी उस आदमी की आँखों को चुभ रही थी। बिस्तर पर पैर मोड़कर बैठा, उसने अपने बड़े हाथों से अपना चेहरा ढक लिया, ताकि वह उससे खुद को बचा सके।
“क्या सब ठीक है?” आओमामे ने पूछा।
— जी हां, शांत रहें।
चलिए, मैं थोड़ा और पर्दा हटा देता हूँ।

"नहीं, कोई बात नहीं। मेरी रेटिना में कुछ समस्या है और मेरी आंख को रोशनी के अनुकूल होने में थोड़ा समय लगता है। मैं अभी वापस आता हूँ। तब तक, क्या आप बैठ कर प्रतीक्षा कर सकते हैं?"
"मुझे रेटिना की समस्या है," आओमामे ने मन ही मन दोहराया। रेटिना की समस्या वाले लोगों की दृष्टि जाने का खतरा रहता है। लेकिन यह मामला उसका नहीं था। उसे उसकी आँखों की रोशनी से निपटना नहीं था।
जब वह व्यक्ति खिड़की से छनकर आती रोशनी में अपनी आँखों को समायोजित कर रहा था और अपने चेहरे को हाथों से ढँक रहा था, तब आओमामे आरामकुर्सी पर बैठी उसे सीधे देख रही थी। अब उसे बारीकी से परखने की बारी उसकी थी।
वह आदमी बहुत बड़ा था। मोटा नहीं, बस विशालकाय। लंबा और चौड़ा। वह काफी ताकतवर भी लग रहा था। आओमामे को लेडी से पहले ही पता था कि वह एक बड़ा आदमी है, लेकिन उसने कभी कल्पना नहीं की थी कि वह इतना बड़ा हो सकता है। लेकिन एक विशालकाय आदमी किसी पंथ का नेता क्यों नहीं हो सकता, इसमें कोई बुराई नहीं थी। तभी आओमामे ने कल्पना की कि वह दस साल की बच्चियों का बलात्कार कर रहा है और अनजाने में ही उसका चेहरा सिकुड़ गया। वह उसकी आँखों के सामने नग्न अवस्था में, एक छोटी बच्ची के शरीर पर झुका हुआ प्रकट हुआ। उनके पास उसका विरोध करने का कोई तरीका नहीं था। यहाँ तक कि एक वयस्क महिला भी सफल नहीं हो सकती थी।
उस आदमी ने कमर पर इलास्टिक वाली पतली ट्रैक पैंट और लंबी आस्तीन वाली कमीज़ पहनी हुई थी। कमीज़ बिल्कुल सादी थी, उस पर कोई प्रिंट नहीं था और रेशम जैसी चमक थी। वह ढीली थी और उसके ऊपर के दो बटन खुले हुए थे। पैंट और कमीज़ दोनों सफेद या हल्के क्रीम रंग के थे। वे पजामा जैसे नहीं लग रहे थे, बल्कि कैज़ुअल कपड़ों जैसे थे, जिन्हें घर में या किसी दक्षिणी देश में पेड़ के नीचे लेटने के लिए पहना जा सकता है। उसके नंगे पैर बहुत बड़े लग रहे थे। उसके कंधे, जो पत्थर की दीवार जितने चौड़े थे, किसी बहुत अनुभवी मार्शल आर्ट अभ्यासी की छवि पेश कर रहे थे।
"आने के लिए धन्यवाद," उसने आओमामे की निगाहें कमजोर होने का इंतजार करने के बाद कहा।
“यही मेरा काम है। ज़रूरत पड़ने पर मैं अलग-अलग जगहों पर जाती हूँ,” उसने सपाट स्वर में उत्तर दिया। लेकिन ये शब्द कहते हुए उसे ऐसा लगा जैसे कोई वेश्या उसके दरवाज़े पर बुलाई गई हो। शायद कुछ देर पहले की उस तीखी निगाह की वजह से, जिसने अंधेरे में उसके सारे कपड़े उतार दिए थे।
"तुम मुझे कितना जानते हो?" उसने पूछा, उसके हाथ अभी भी उसकी आंखों को ढके हुए थे।
"मेरा मतलब है, मैं तुम्हारे बारे में क्या जानता हूँ?"
- हाँ।
"बिल्कुल नहीं," उसने सोच-समझकर शब्दों का चयन करते हुए उत्तर दिया। "मैं आपका नाम तक नहीं जानती। मैं बस इतना जानती हूँ कि आप नागानो या यामानाशी में एक धार्मिक समूह के नेता हैं, और आपको कोई स्वास्थ्य समस्या है जिसमें मैं आपकी मदद कर सकती हूँ।"
उस व्यक्ति ने कुछ बार हल्के से सिर हिलाया और अपनी आंखों से हाथ हटा लिए। फिर वह आओमामे की ओर मुड़ा।

उसके बाल लंबे थे। सीधे, घने, लगभग कंधों तक, जिनमें कई सफेद बाल थे। उसकी उम्र पैंतालीस से पचास के बीच थी। उसकी नाक बड़ी थी, जो लगभग पूरे चेहरे को ढक लेती थी, लेकिन सुंदर आकार की थी। उसे देखकर कैलेंडर की तस्वीरों में दिखने वाले आल्प्स पर्वतों की याद आती थी। पर्वत की चोटी चौड़ी और गंभीर थी। उसके चेहरे पर सबसे पहले यही बात नज़र आती थी। दूसरी ओर, उसकी आँखें गड्ढों में धँसी हुई थीं। यह बताना मुश्किल था कि वे कहाँ देख रही हैं। उसका चेहरा बड़ा और चौड़ा था, शरीर के अनुपात में। उसने दाढ़ी नहीं बनाई थी, और चेहरे पर कोई निशान या तिल नहीं थे। उसके चेहरे की बनावट नियमित थी और वह बुद्धिमान और शांत स्वभाव का था, लेकिन उसमें कुछ खास, कुछ असामान्य भी था, जो विश्वास पैदा नहीं करता था। यह उस तरह का चेहरा था जिसे पहली नज़र में देखकर लोग पीछे हट जाते हैं। शायद उसकी बहुत बड़ी नाक की वजह से, जो पूरे चेहरे का अनुपात बिगाड़ देती थी और चिंता पैदा करती थी। या शायद उसकी आँखों की वजह से, जो प्राचीन ग्लेशियरों की तरह गड्ढों की गहराई से चुपचाप चमकती थीं। या शायद उन पतले और क्रूर होंठों की वजह से, जो किसी भी क्षण कुछ बिल्कुल अप्रत्याशित शब्द बोलने के लिए तैयार रहते हैं।
“और कुछ?” उसने पूछा।
"और कुछ नहीं। मुझे बस इतना बताया गया था कि स्ट्रेचिंग सेशन के लिए तैयार होकर यहाँ आना है। मेरी विशेषज्ञता का क्षेत्र मांसपेशियां और जोड़ हैं। मुझे क्लाइंट की स्थिति या प्रकृति के बारे में ज्यादा जानने की जरूरत नहीं है।"
एक वेश्या की तरह, आओमामे ने खुद को और भी आकर्षक बना लिया।
"मैं समझ गया कि आप क्या कहना चाहते हैं," उसने धीमी आवाज़ में कहा। "लेकिन मेरे मामले में, कुछ स्पष्टीकरण आवश्यक है।"
मैं सुन रहा हूँ।
"लोग मुझे नेता कहते हैं। लेकिन मैं लगभग कभी उनके सामने नहीं आता। भले ही हम एक ही समूह का हिस्सा हैं और एक ही जगह रहते हैं, फिर भी ज्यादातर अनुयायी यह नहीं जानते कि मैं कैसा दिखता हूं।"
ओमामे ने सिर हिलाया।
"लेकिन मैं खुद को आपके सामने प्रकट कर रहा हूँ, क्योंकि आप मुझसे अंधेरे में या आँखों पर पट्टी बांधकर व्यवहार नहीं कर सकते। और यह शिष्टाचार का भी मामला है।"
"यह कोई इलाज नहीं है," आओमामे ने उसे ठंडे लहजे में चेतावनी दी। "यह तो बस मांसपेशियों को खींचना है। मेरे पास चिकित्सा करने का लाइसेंस नहीं है। मैं जो करती हूँ, वह उन मांसपेशियों को ज़ोर से खींचना है जिनका दैनिक गतिविधियों में उपयोग नहीं होता या जिन्हें हिलाना कठिन होता है, ताकि शारीरिक स्थिति में गिरावट न आए।"
वह व्यक्ति मुस्कुराता हुआ प्रतीत हो रहा था, लेकिन यह चेहरे की किसी मांसपेशी के कांपने के कारण उत्पन्न एक भ्रम मात्र हो सकता है।
"मैं यह बात अच्छी तरह जानता हूँ। मैंने 'इलाज' शब्द का प्रयोग केवल इसलिए किया क्योंकि यह मेरे मन में आया। चिंता मत करो। मेरा कहने का मतलब सिर्फ इतना था कि अभी आप कुछ ऐसा देख रहे हैं जो आम लोग नहीं देख पाते। मैं चाहता था कि आप इस बात से अवगत हों।"

"मुझे पहले ही चेतावनी दी जा चुकी है कि मैं इस बैठक के बारे में किसी से बात न करूँ," आओमामे ने अगले कमरे के दरवाजे की ओर इशारा करते हुए कहा। "लेकिन चिंता मत करो। मैं यहाँ जो कुछ भी देख और सुन रही हूँ, किसी को नहीं बताऊँगी। मेरा काम मुझे कई लोगों के शरीर को छूने की स्थिति में डालता है। हो सकता है कि आपका दर्जा खास हो, लेकिन मेरे लिए आप मांसपेशियों की समस्या वाले कई लोगों में से एक हैं। मुझे सिर्फ आपकी मांसपेशियों में दिलचस्पी है।"
मुझे पता चला है कि जब आप छोटे थे तब आप विटनेस चर्च का हिस्सा थे।
"यह मेरी पसंद नहीं थी। मुझे एक अनुयायी के रूप में पाला-पोसा गया था। इसमें बहुत बड़ा अंतर है।"
"हां, बहुत बड़ा अंतर है," उस व्यक्ति ने कहा। "लेकिन लोगों के लिए बचपन से उनके मन में बसी छवियों को भुला पाना बहुत मुश्किल होता है।"
- अच्छा या बुरा।
साक्षी चर्च का सिद्धांत मेरे समूह के सिद्धांत से काफी भिन्न है। मेरी राय में, जो धर्म परलोक विद्या पर ज़ोर देते हैं, वे लगभग पाखंडी हैं। मेरा मानना है कि अंत तो एक व्यक्तिगत मामला है। फिर भी, साक्षी चर्च एक आश्चर्यजनक रूप से सशक्त धार्मिक समूह है। इसका इतिहास लंबा नहीं है, लेकिन इसने अनगिनत कठिनाइयों का सामना किया है, और इसके अनुयायियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। हमें इससे बहुत कुछ सीखना है।
"यह साबित करता है कि वे कितने संकीर्ण मानसिकता वाले हैं। एक छोटी, संकीर्ण चीज बाहरी ताकत का बेहतर प्रतिरोध करती है।"
“आपकी बात सही है,” उस व्यक्ति ने एक पल रुककर कहा। “लेकिन हम यहाँ धर्म पर चर्चा करने के लिए नहीं हैं।”
ओमामे ने कोई जवाब नहीं दिया।
मैं चाहती हूं कि आप यह समझें कि मेरे शरीर में कई खास बातें हैं।
ओमामे चुपचाप अपनी कुर्सी पर बैठी रही और उसके बोलने का इंतजार करती रही। "जैसा कि मैंने आपको बताया, मेरी आँखें तेज़ रोशनी सहन नहीं कर पातीं। यह समस्या कुछ साल पहले शुरू हुई, हालाँकि इससे पहले मुझे कोई परेशानी नहीं थी।
यही मुख्य कारण है कि मैं अब लोगों के सामने नहीं आता। मैं पूरा दिन एक अंधेरे कमरे में बिताता हूँ।"
"मैं आपकी दृष्टि संबंधी समस्या में आपकी मदद नहीं कर सकती," आओमामे ने कहा। "जैसा कि मैं आपको बता रही थी, मेरी विशेषज्ञता का क्षेत्र मांसपेशियां हैं।" मुझे इस बात की पूरी जानकारी है। मैंने विशेषज्ञों से सलाह ली है। मैं कई नेत्र विशेषज्ञों के पास जा चुका हूँ और अनगिनत परीक्षण करवा चुका हूँ। लेकिन लगता है कुछ नहीं किया जा सकता। मेरी रेटिना प्रभावित है, लेकिन इसके कारण अज्ञात हैं। यह बीमारी धीरे-धीरे बढ़ रही है। इस गति से, शायद कुछ ही समय में मेरी दृष्टि पूरी तरह चली जाएगी। ज़ाहिर है, जैसा कि आपने सही कहा, इसका मांसपेशियों से कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन मैं अपनी सारी स्वास्थ्य समस्याओं को, ऊपर से नीचे तक, सूचीबद्ध करना चाहूँगा। फिर आप देख सकते हैं कि आप क्या कर सकते हैं और क्या नहीं कर सकते।
ओमामे ने सिर हिलाया।
“एक और बात यह है कि मेरी मांसपेशियां लगातार अकड़ जाती हैं,” उस आदमी ने कहा।
“मैं बिल्कुल हिल नहीं पाता। मैं सचमुच पत्थर बन जाता हूँ, और यह अवस्था घंटों

तक बनी रहती है। ऐसे समय में मैं बस बिस्तर पर लेटा रहता हूँ। मुझे कोई दर्द नहीं होता। बस इतना है कि मैं एक भी मांसपेशी नहीं हिला पाता। एक उंगली भी नहीं। मैं अपनी मर्जी से सिर्फ अपनी आँखें हिला पाता हूँ। ऐसा मुझे महीने में एक या दो बार होता है।”
क्या आपको ऐसे कोई लक्षण हैं जो इस स्थिति की शुरुआत का संकेत देते हों? "पहले मुझे ऐंठन होती है। मेरी पूरी बॉडी की मांसपेशियां फड़कने लगती हैं। यह करीब दस-बारह मिनट तक रहता है। फिर मेरी मांसपेशियां एकदम ढीली पड़ जाती हैं, जैसे किसी ने स्विच बंद कर दिया हो। तो पहले दस-बारह मिनट तक, जब यह चेतावनी मिलती है, मैं लेटने के लिए जगह ढूंढता हूं और फिर चुपचाप बैठकर लकवा खत्म होने का इंतजार करता हूं। मुझे ऐसा लगता है जैसे कोई जहाज किसी खाड़ी में चट्टानों से बचते हुए चल रहा हो। लकवाग्रस्त होने के बावजूद, मेरा दिमाग जागृत रहता है। असल में, यह सामान्य से भी ज्यादा जागृत रहता है।"
— और आपको कोई शारीरिक दर्द नहीं है?
"मैं अपनी चेतना पूरी तरह खो रहा हूँ। सुई चुभने पर भी मुझे कुछ महसूस नहीं होता।"
क्या आपने डॉक्टर से सलाह ली है?
मैं कई प्रतिष्ठित अस्पतालों में जा चुका हूँ और अनगिनत डॉक्टरों से मेरी जाँच हो चुकी है। उनका निष्कर्ष यही निकला कि मैं एक अभूतपूर्व बीमारी से पीड़ित हूँ और मौजूदा चिकित्सा पद्धति से मेरा इलाज नहीं हो सकता। मैंने हर संभव इलाज आजमाया है, पारंपरिक चीनी चिकित्सा से लेकर अस्थि रोग, हड्डी रोग, एक्यूपंक्चर, मालिश, बाल्नेथेरेपी तक, लेकिन किसी का भी कोई खास असर नहीं हुआ।
आओमामे ने थोड़ा सा भौंहें सिकोड़ीं।
"मैं जो करता हूं वह दैनिक जीवन में उपयोग होने वाली शारीरिक क्रियाओं को सक्रिय करना है। मेरे पास ऐसी गंभीर समस्याओं का समाधान करने का कोई तरीका नहीं है।"
"मुझे भी यही पता है। मैं बस हर तरीका आज़मा रही हूँ। अगर आपका तरीका काम नहीं करता, तो इसमें आपकी कोई गलती नहीं है। मैं बस इतना चाहती हूँ कि आप मेरे साथ वही करें जो आप आमतौर पर करते हैं। मैं देखना चाहती हूँ कि मेरा शरीर कैसी प्रतिक्रिया देता है।"
ओमामे ने कल्पना की कि यह विशालकाय व्यक्ति किसी अंधेरी जगह पर किसी जानवर की तरह शीतनिद्रा में है।
आपको आखिरी बार लकवे जैसी स्थिति कब हुई थी?
"दस दिन पहले," उस आदमी ने जवाब दिया। "और एक और बात है जिसके बारे में बात करना मेरे लिए थोड़ा मुश्किल है, लेकिन बेहतर होगा कि मैं आपको वही बताऊं।" बिना किसी झिझक के बोलें।
जब तक मांसपेशियों की यह निष्क्रियता बनी रहती है, तब तक मुझे लगातार इरेक्शन रहता है।
ओमामे का चेहरा और भी ज्यादा सिकुड़ गया।
"क्या आपका मतलब है कि आपका अंग उन घंटों के दौरान लगातार सीधा रहता है?"
- एकदम सही।
"लेकिन आपको कुछ भी महसूस नहीं होता।"

"मुझे कुछ भी महसूस नहीं होता। मुझे कोई कामुक इच्छा नहीं होती। यह बस सख्त है, बस इतना ही। यह बाकी मांसपेशियों की तरह ही एकदम कठोर रहता है।"
ओमामे ने अपना सिर थोड़ा हिलाया और अपने चेहरे के भावों को सुधारने की कोशिश की।
"मुझे नहीं लगता कि मैं इसमें भी आपकी मदद कर सकता हूँ। मेरी विशेषज्ञता का क्षेत्र काफी अलग है।"
— इन चीजों के बारे में बात करना मेरे लिए मुश्किल है, और मुझे लगता है कि आपको भी इन्हें सुनना पसंद नहीं होगा, लेकिन क्या मैं आपको कुछ और बातें बता सकता हूँ?
"जी हां, बिल्कुल। सब कुछ गोपनीय रहेगा।"
उस दौरान मेरे महिलाओं के साथ यौन संबंध होते हैं।
"औरत?"
— मेरे आस-पास कई महिलाएं हैं। जब मैं उस अवस्था में पहुँच जाता हूँ, तो वे एक-एक करके आती हैं, मेरे ऊपर चढ़ जाती हैं, मैं हिलता नहीं हूँ, और मेरे साथ यौन संबंध बनाती हैं। मुझे बिल्कुल कुछ भी महसूस नहीं होता, कोई कामुक आनंद नहीं। लेकिन मैं स्खलित हो जाता हूँ। कई बार।
ओमामे चुप रही। उस आदमी ने बोलना जारी रखा:
"कुल मिलाकर तीन हैं। सभी किशोरवय हैं। मुझे यकीन है कि आप सोच रहे होंगे कि मेरे आस-पास इतनी कम उम्र की महिलाएं क्यों हैं और मैं उनके साथ यौन संबंध क्यों बना रहा हूं।"
— अच्छा… क्या यह किसी प्रकार का धार्मिक अनुष्ठान है?
बिस्तर पर पैर मोड़कर बैठे हुए वह व्यक्ति गहरी सांस लेता है।
ऐसा माना जाता है कि मेरी लकवाग्रस्त अवस्था ईश्वर की कृपा है, पवित्रता का साकार रूप है। इसीलिए जब मैं उस अवस्था में पहुँचती हूँ तो वे आते हैं और मेरे साथ यौन संबंध बनाते हैं। वे संतान उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं। मेरी संतान को अपने गर्भ में धारण करने का।
ओमामे ने बिना कुछ कहे उसकी ओर देखा। वह आदमी भी चुप था।
"तो उनका लक्ष्य गर्भवती होना है? आपके साथ बच्चा पैदा करना है?"
- बिल्कुल।
और लकवे के उन घंटों के दौरान आप तीनों महिलाओं के साथ होते हैं और तीन बार वीर्यपात करते हैं?
- हाँ।
आओमामे को अपनी जटिल परिस्थिति का एहसास होते-होते रह गया। वह उस आदमी को मारने वाली थी। उसे दूसरी दुनिया में भेजने वाली थी। और वह अपने शरीर के बारे में कुछ विचित्र रहस्य उजागर कर रहा था।
मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा कि समस्या क्या है। महीने में एक या दो बार आप लकवाग्रस्त अवस्था में चले जाते हैं। उन पलों में, तीन जवान सहेलियाँ आती हैं और आपके साथ यौन संबंध बनाती हैं। सच कहूँ तो, यह कोई आम बात नहीं है, लेकिन... "वे मेरी प्रेमिकाएँ नहीं हैं," उसने बात काटते हुए कहा। "वे पवित्र कन्याएँ हैं, और उनका एक कर्तव्य मेरे साथ सोना है।"
— कर्ज?
— यही उनका काम है। मेरी संतान पैदा करना।

“और उन्हें यह भूमिका किसने सौंपी?” आओमामे ने पूछा।
"यह एक लंबी कहानी है," उस आदमी ने जवाब दिया। "समस्या यह है कि मेरा शरीर विनाश की ओर अग्रसर है।"
"क्या कोई गर्भवती हुई?"
"नहीं, बिल्कुल नहीं। और उनके पास कोई रास्ता भी नहीं है, क्योंकि उन्हें अभी तक मासिक धर्म नहीं हुआ है। लेकिन फिर भी, वे किसी दैवीय चमत्कार की प्रतीक्षा कर रही हैं।"
"उनमें से कोई भी गर्भवती नहीं है। उन्हें अभी तक मासिक धर्म नहीं हुआ है। और आपका शरीर विनाश की ओर अग्रसर है।"
लकवा का दौर अब लंबा और बार-बार होने लगा है। यह सात साल पहले शुरू हुआ था, लेकिन तब यह लगभग हर दो-तीन महीने में एक बार होता था। अब यह महीने में एक या दो बार होता है। जब लकवा ठीक होता है, तो मेरा शरीर थका हुआ और दर्द से व्याकुल हो जाता है। यह दर्द लगभग एक हफ्ते तक रहता है। ऐसा दर्द जैसे पूरे शरीर में मोटी सुई चुभाई जा रही हो, तेज माइग्रेन, उदासी। मैं सो भी नहीं पाती। कोई भी दवा इस दर्द से राहत नहीं दे पाती।
उस आदमी ने आह भरी, फिर बोलना जारी रखा।
दूसरे सप्ताह में, पहले सप्ताह की तुलना में मुझे बेहतर महसूस हो रहा है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि दर्द पूरी तरह से चला गया है। मुझे हर दिन दर्द के कई दौर से गुजरना पड़ता है। मैं ठीक से सांस भी नहीं ले पा रहा हूँ। मेरे आंतरिक अंग ठीक से काम नहीं कर रहे हैं। मेरे जोड़ों से ऐसी आवाज़ आती है जैसे मैं कोई बिना चिकनाई वाली मशीन हूँ। मुझे ऐसा लगता है जैसे मेरा मांस मुझे खा रहा है और मेरा खून चूस रहा है। मुझे सब कुछ बहुत स्पष्ट रूप से महसूस होता है। लेकिन जो मुझे खा रहा है वह कैंसर या कीड़े नहीं हैं। मेरी हर तरह की पूरी जांच हुई है और कोई समस्या नहीं पाई गई है। मेरा शरीर पूरी तरह से स्वस्थ है। जो मुझे पीड़ा दे रहा है, उसे दवा से समझाया नहीं जा सकता। यह उस "ईश्वरीय कृपा" का फल है जो मुझे मिली है।
आओमामे ने मन ही मन सोचा, "यह आदमी सचमुच पतन के कगार पर लग रहा है। मुझे उसमें थकावट का कोई लक्षण नहीं दिख रहा। उसका शरीर मजबूत और तंदुरुस्त लगता है, मानो वह असहनीय दर्द सहने के लिए प्रशिक्षित हो।" फिर भी आओमामे को महसूस हुआ कि उसका शरीर सचमुच विनाश की ओर बढ़ रहा है। उसने सोचा, "यह आदमी पीड़ा झेल रहा है। और पता नहीं कौन सी बीमारी है। अगर मैंने अभी कुछ नहीं किया, तो बीमारी धीरे-धीरे उसके शरीर को नष्ट कर देगी, उसे बुरी तरह तड़पाएगी, और अंततः उसकी मृत्यु निश्चित है।"
“बीमारी की प्रगति को रोका नहीं जा सकता,” उसने कहा, मानो उसे पहले से ही पता हो कि आओमामे क्या सोच रही है। “मेरा शरीर धीरे-धीरे गलता जाएगा, अंदर से खोखला होता जाएगा, और मेरी दर्दनाक मौत होगी। वे बस एक ऐसे शरीर को छोड़ रहे हैं जिसका कोई उपयोग नहीं रह गया है।”
"वे?" आओमामे ने पूछा। "तुम किनकी बात कर रही हो?"
— उसने उत्तर दिया, “जो लोग मेरा शरीर खाते हैं, उनके लिए। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं बस इतना चाहता हूँ कि तुम कम से कम इस दर्द को थोड़ा कम कर दो। मुझे यही चाहिए, भले ही यह कोई अंतिम समाधान न हो। मैं अब और दर्द सहन नहीं कर सकता। कभी-कभी, कुछ क्षणों में, यह इतना गहरा हो जाता है, मानो मैं

[illegible]
[illegible]
[illegible]

अध्याय 10 आप हमारा प्रस्ताव अस्वीकार करते हैं

छह बजने से पहले, टेंगो ने अपने पिता को अलविदा कहा। टैक्सी आने तक, दोनों खिड़की के पास आमने-सामने बैठे रहे, बिना कुछ बोले। टेंगो अपने ही विचारों में खोया हुआ था, और उसके पिता खिड़की से बाहर देख रहे थे। सूरज ढलने वाला था और आसमान का हल्का नीला रंग धीरे-धीरे गहरा होता जा रहा था।
टेंगो के मन में और भी कई सवाल थे, लेकिन अगर वह उन्हें पूछता भी तो शायद उसे कोई जवाब नहीं मिलता। उसके पिता के होंठों की बनावट से ही उसे यह समझ आ गया था। ऐसा लग रहा था मानो वह दोबारा मुंह न खोलना चाहते हों, इसलिए टेंगो ने और सवाल पूछना छोड़ दिया। अगर समझने के लिए स्पष्टीकरण की ज़रूरत हो, तो चाहे कितने भी स्पष्टीकरण मिल जाएं, समझ नहीं आएगा। जैसा कि उसके पिता ने कहा था। जैसे-जैसे उनके जाने का समय नजदीक आया, टेंगो ने कहा:
"आज तुमने मुझे बहुत सी बातें बताईं। समझना मुश्किल था और घुमा-फिराकर बताईं, लेकिन तुमने शायद मुझे यथासंभव ईमानदारी से बताया।"
उसने उसकी आंखों में देखा, लेकिन उसके चेहरे के भाव में कोई बदलाव नहीं देखा। "मैं आपसे कुछ और सवाल पूछना चाहती हूँ, लेकिन मुझे पता है कि उनसे आपको तकलीफ हो रही है। इसलिए मैं आपके बताए अनुसार ही जवाबों का अनुमान लगा सकती हूँ। शायद आप मेरे जैविक पिता नहीं हैं। मेरा यही अनुमान है। मुझे पूरी जानकारी नहीं है, लेकिन मैं यही मान सकती हूँ। अगर मैं गलत हूँ, तो मुझे बता दीजिए।" पिता ने कोई जवाब नहीं दिया। टेंगो ने आगे कहा:
अगर मेरा शक सही निकला तो मुझे राहत मिली है। लेकिन इसलिए नहीं कि मैं तुमसे नफरत करता हूँ, बल्कि इसलिए कि जैसा मैंने तुम्हें पहले बताया था, अब मेरे पास तुमसे नफरत करने का कोई कारण ही नहीं है। हालाँकि हम खून के रिश्ते से जुड़े नहीं हैं, फिर भी तुमने मुझे अपनाया और पाला-पोसा। इस लिहाज से मैं तुम्हारा आभारी ही रहूँगा। अफसोस की बात है कि पिता-पुत्र का हमारा रिश्ता उतना अच्छा नहीं रहा, लेकिन ये एक अलग बात है।
वह आदमी चुप रहा, उसकी निगाहें खिड़की से दिख रहे नज़ारे पर टिकी थीं, मानो कोई संतरी दूर पहाड़ी पर बसे किसी कबीले के इशारे का इंतज़ार कर रहा हो। टेंगो ने उसकी निगाहों का पीछा करने की कोशिश की, लेकिन उसे कोई संकेत नहीं मिला। उसे बस चीड़ के पेड़ों का झुंड दिखाई दे रहा था, जो रात के सन्नाटे से काला पड़ गया था।
मुझे खेद है, लेकिन मैं आपके लिए कुछ नहीं कर सकती। मैं बस यही आशा कर सकती हूँ कि आपके भीतर जो खालीपन पनप रहा है, वह यथासंभव कम कष्टदायी हो। आप अब तक बहुत कुछ सह चुकी हैं। मुझे लगता है, अपने तरीके से, आप अपनी माँ से बहुत प्यार करती थीं। मुझे ऐसा ही लगता है। लेकिन वह चली गईं। मुझे नहीं पता कि वह मेरे जैविक पिता के साथ गईं या किसी और के साथ। ऐसा लगता है कि आप मुझे यह जानकारी देना नहीं चाहतीं। खैर, यह स्पष्ट है कि वह आपको छोड़कर चली गईं और मुझे आपकी देखभाल में छोड़ गईं। शायद आपने सोचा होगा कि अगर आप मुझे पालेंगी, अगर आप मुझे अपने करीब रखेंगी, तो वह किसी दिन वापस आ जाएँगी। लेकिन अंत में वह वापस

नहीं आईं, न आपके पास और न मेरे पास। यह आपके लिए बहुत कठिन रहा होगा। ऐसा लग रहा था जैसे आप किसी वीरान शहर में रह रही हों। खैर, उसी वीरान शहर में आपने मुझे पाला-पोसा। उस खालीपन को भरने के लिए।
बूढ़े आदमी के चेहरे पर कोई भाव नहीं बदला। टेंगो को समझ नहीं आ रहा था कि क्या वह उसकी बात समझ रहा है या उसने उसे सुना भी है या नहीं।
"हो सकता है मेरी धारणाएँ गलत हों। और हो सकता है कि अगर वे गलत हों तो हम दोनों के लिए बेहतर हो। लेकिन इस नजरिए से चीजों को देखने से मुझे काफी शांति मिलती है और कई शंकाएँ दूर हो जाती हैं।"
कुछ कौवे कांव-कांव करते हुए आकाश में उड़ गए। टेंगो ने अपनी घड़ी देखी। उसे जाना था। वह अपनी कुर्सी से उठा, अपने पिता के पास गया और उनके कंधे पर हाथ रख दिया।
"बाय पापा। मैं जल्दी वापस आऊंगा।"
दरवाजे की मूठ पर हाथ रखे हुए उसने एक बार फिर पीछे मुड़कर देखा। अपने पिता के गालों पर कुछ आंसू देखकर वह हैरान रह गया। छत से आती फ्लोरोसेंट लाइट में वे चांदी की तरह चमक रहे थे। वह अपनी बची हुई आखिरी भावनाओं की पूरी ताकत से रो रहे थे। आंसू धीरे-धीरे उनके गालों से लुढ़कते हुए उनके घुटनों पर गिरे। टेंगो ने दरवाजा खोला और कमरे से बाहर निकल गया। वह स्टेशन जाने के लिए टैक्सी में बैठा और फिर ट्रेन से घर चला गया।
*

तातेयामा से उसने जो एक्सप्रेस ट्रेन ली, वह सामान्य ट्रेन से कहीं ज़्यादा भीड़भाड़ वाली और शोरगुल भरी थी। ज़्यादातर यात्री समुद्र तट से आने वाले परिवार थे। उन्हें देखकर तेंगो को अपना बचपन याद आ गया। वह अपने परिवार के साथ कभी यात्रा पर नहीं गया था। ओ-बोन और नए साल की छुट्टियों में उसके पिता घर पर बस सोते रहते थे। वे किसी बेकार पड़े बिजली के उपकरण की तरह दिखते थे। बेंच पर बैठे-बैठे टेंगो पढ़ना जारी रखना चाहता था, लेकिन उसे याद आया कि वह अपनी किताब अपने पिता के कमरे में ही छोड़ आया है। उसने आह भरी, लेकिन फिर सोचा कि शायद यही बेहतर है। वैसे भी अब वह शायद पढ़ नहीं पाएगा। और 'सिटी ऑफ कैट्स' एक ऐसी कहानी थी जो उसके पिता के पास होनी चाहिए थी, उसके पास नहीं। बाहर का नज़ारा उस सड़क से बिलकुल उलट था जिस पर वे आए थे। पहाड़ों की तलहटी तक फैला हुआ अंधेरा और सुनसान समुद्र तट जल्द ही खुल गया और किनारे पर बनी फैक्ट्रियां नज़र आने लगीं। हालांकि रात हो चुकी थी, फिर भी कई फैक्ट्रियां काम कर रही थीं। अंधेरे में उठती चिमनियों के जंगल से लाल लपटें लंबी सांप की जीभ की तरह निकल रही थीं। ट्रकों की हेडलाइट्स से सड़क लगातार रोशन हो रही थी। उनके आगे समुद्र कीचड़ की तरह काला था।
वह दस बजे से कुछ पहले घर पहुँचा। डाकपेटी में कुछ नहीं था। जब उसने दरवाज़ा खोला, तो घर हमेशा की तरह खाली लग रहा था। अंदर वही खालीपन था जो उसने उस सुबह छोड़ा था। उसकी कमीज़ ज़मीन पर पड़ी थी, उसका वर्ड प्रोसेसर बंद था, उसकी कुर्सी, जिस पर उसके शरीर के निशान थे, और डेस्क पर बिखरे हुए उसके इरेज़र के टुकड़े। उसने दो गिलास पानी पिया, कपड़े उतारे और सीधे बिस्तर पर चला गया। उसे जल्दी और गहरी नींद आ गई, जैसी उसे काफ़ी समय से नहीं आई थी।
*

अगली सुबह आठ बजे के बाद जब वह उठा, तो उसे लगा जैसे वह एक नया इंसान बन गया हो। उसका मूड अच्छा था, मांसपेशियां शिथिल थीं और वह उत्साह से काम पर जाने के लिए तैयार था। उसकी शारीरिक थकान गायब हो गई थी। उसका मूड ठीक वैसा ही था जैसा स्कूल वर्ष की शुरुआत में नई पाठ्यपुस्तकें खोलते समय था। उसे अभी तक उनकी विषयवस्तु समझ नहीं आई थी, लेकिन उसे उनमें नए ज्ञान की उम्मीद दिख रही थी। उसने दाढ़ी बनाई, तौलिए से चेहरा सुखाया, आफ्टरशेव लगाया और फिर से आईने में खुद को देखा। उसे पूरा यकीन था कि वह सचमुच एक नया इंसान बन गया है।
कल की सारी घटनाएँ उसे सपने जैसी लग रही थीं। मानो वे सचमुच घटी ही न हों। हालाँकि यादें उसके मन में ताज़ा थीं, फिर भी उनकी रूपरेखा में एक अवास्तविकता का भाव था। वह ट्रेन में चढ़ा, बिल्लियों के शहर गया और वापस आ गया। सौभाग्य से, कहानी के पात्र के विपरीत, वह ट्रेन से वापस आने में कामयाब रहा। और वहाँ के अनुभव ने उसमें एक बड़ा बदलाव ला दिया था।
बेशक, उसके आसपास की वास्तविकता में कोई बदलाव नहीं आया था। वह अपनी इच्छा के विरुद्ध, मुसीबतों और खतरनाक रहस्यों से भरी दुनिया में कदम रख रहा था। उसे यह अंदाज़ा नहीं था कि उसके साथ क्या होने वाला है। लेकिन अब उसे यह विश्वास था कि वह बाधाओं को पार कर लेगा।
आखिरकार, मैं शुरुआत में खड़ा हूँ, उसने सोचा। सब कुछ पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हुआ था, लेकिन उसके पिता के शब्दों और व्यवहार से कुछ ऐसा उभरने लगा था जो सच प्रतीत होता था। वे तस्वीरें जिन्होंने टेंगो को इतना परेशान और विचलित किया था, महज़ एक अर्थहीन मतिभ्रम नहीं थीं। वह ठीक से नहीं जानता था कि वे वास्तविकता को कितना दर्शाती हैं, लेकिन यही एकमात्र जानकारी थी जो उसे अपनी माँ से मिली थी और चाहे अच्छा हो या बुरा, यही उसके अस्तित्व का आधार थी। एक बार यह स्पष्ट हो जाने पर, टेंगो को लगा जैसे उसके दिल से एक बोझ उतर गया हो। अब, इस बोझ से मुक्त होकर ही, वह समझ पाया कि यह कितना दमनकारी था।
*

दो सप्ताह असामान्य रूप से शांति से बीत गए। दो सप्ताह शांत सागर की तरह। गर्मियों की छुट्टियों के दौरान, टेंगो सप्ताह में चार दिन स्कूल जाता था और बाकी समय लेखन में बिताता था। किसी ने उससे संपर्क नहीं किया। टेंगो को फुकाएरी के लापता होने की जांच की प्रगति या एयर क्राइसालिस की बिक्री के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। उसे इसमें ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी। लोगों को अपना काम करने दो। अगर उनका मुझसे कोई लेना-देना होता, तो वे मुझे ज़रूर बताते।
इस प्रकार अगस्त का महीना समाप्त हुआ और सितंबर का महीना शुरू हो गया।
कॉफी बनाते हुए टेंगो सोचने लगा कि ये शांत दिन कब तक चलेंगे। हालांकि, वह ये बात ज़ोर से कहने से डर रहा था, कहीं कोई दानव उसे सुन न ले। इसलिए उसने चुपचाप प्रार्थना की कि ये शांति बनी रहे। लेकिन, हमेशा की तरह, चीज़ें हमेशा मनचाही नहीं होतीं। और ब्रह्मांड जानता था कि टेंगो क्या नहीं चाहता था।
उस सुबह करीब दस बजे फोन की घंटी बजी। टेंगो ने सात बार बजने दिया, फिर हार मानकर रिसीवर उठा लिया।
"मैं अभी आपके पास आ सकता हूँ," फोन के दूसरी तरफ से फुसफुसाती हुई आवाज आई।

पृष्ठभूमि में रिकॉर्ड की गई घोषणाओं और कारों के इंजनों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। टेंगो दुनिया में केवल एक ही ऐसे व्यक्ति को जानता था जो बिना किसी प्रश्नवाचक स्वर के प्रश्न पूछता था।
“तुम कहाँ हो?” उसने पूछा।
— मारुशो के प्रवेश द्वार पर।
सुपरमार्केट उसके घर से दो सौ मीटर से भी कम दूरी पर था। वह वहाँ के सार्वजनिक फोन से फोन कर रहा था। सहज ही, टेंगो ने चारों ओर देखा।
"लेकिन क्या यहाँ आना जोखिम भरा नहीं है? मुझ पर नज़र रखी जा रही होगी। और तुम लापता हो।"
"हो सकता है कि आप निगरानी में हों," फुकेरी ने टेंगो के शब्दों को हूबहू दोहराया।
"हां," उसने कहा। "मेरे आस-पास और घर के आस-पास तरह-तरह की अजीबोगरीब चीजें हो रही हैं। इनका संबंध निश्चित रूप से एयर क्राइसालिस से है।"
— वे लोग जो क्रोधित हो गए।
"शायद। वे आपसे नाराज़ थे, और इस बार ऐसा लगता है कि वे मुझसे भी थोड़ा नाराज़ थे। किताब को दोबारा लिखने वाला मैं ही था।"
"मुझे कोई आपत्ति नहीं है," फुकेरी ने कहा।
"कोई बात नहीं," टेंगो ने भी यही बात दोहराई। यह निस्संदेह एक संक्रामक आदत थी। फिर उसने पूछा, "क्या बात है?"
"अगर वे हमें देख लें।"
कुछ देर तक वह कुछ बोल नहीं सका।
"लेकिन शायद यह बात मुझे परेशान करती है," उसने अंत में कहा।
"साथ मिलकर बेहतर होगा," फुकेरी ने कहा। "आइए मिलकर काम करें।"
"सॉनी और चेर की तरह," टेंगो ने जवाब दिया। "वह अजेय जोड़ी।"
— कितना अजेय!
"कुछ नहीं, मैं यही तो कह रहा था," टेंगो ने जवाब दिया।
— विन.
टेंगो कुछ कहने ही वाला था कि रिसीवर वापस हुक पर रखने की आवाज़ आई। बातचीत के बीच में ही सब लोग उसके मुँह पर फ़ोन काट देते थे। मानो वे कुल्हाड़ी के एक ही वार से झूलते पुल को काट रहे हों।
*

दस मिनट बाद, फुकाएरी दोनों हाथों में सुपरमार्केट का जाल लिए हुए दिखाई दी। उसने नीली धारीदार लंबी आस्तीन वाली कमीज और तंग जींस पहनी हुई थी। कमीज इस्त्री नहीं की गई थी, बल्कि सूखने के कारण उसमें सिलवटें पड़ गई थीं। उसके कंधे पर एक कैनवास का थैला था। अपना चेहरा छिपाने के लिए उसने नाक पर बड़े- बड़े धूप के चश्मे लगा रखे थे, लेकिन इससे उसने लोगों का ध्यान अपनी ओर और भी आकर्षित कर लिया।
"मैंने सोचा कि पर्याप्त भोजन होना अच्छा रहेगा," फुकेरी ने कहा।
उसने थैलों को खाली किया और किराने का सामान फ्रिज में रख दिया। उसने लगभग केवल तैयार खाना ही लिया था जिसे माइक्रोवेव में जल्दी से गर्म किया जा सकता था। बाकी बिस्कुट, पनीर, सेब, टमाटर और कुछ डिब्बाबंद सामान थे।
"माइक्रोवेव कहाँ है?" उसने संकरी रसोई में चारों ओर देखते हुए पूछा।

"मैंने नहीं किया है," टेंगो ने उत्तर दिया।
फुकेरी ने भौंहें चढ़ाईं और कुछ देर सोचा, लेकिन अपने विचार किसी से साझा नहीं किए। वह माइक्रोवेव के बिना दुनिया की कल्पना भी नहीं कर पा रहा था।
"मैं तुम्हारे साथ ही रहूंगी," उसने उससे कहा, मानो यह एक निश्चित तथ्य हो।
“कब तक?” टेंगो ने पूछा।
फुकेरी ने अपना सिर हिलाया। उसे नहीं पता था।
- आप कहाँ छुप रहे थे?
अगर कुछ हो जाता है तो मैं अकेला नहीं रहना चाहता।
"तुम्हें क्या लगता है कि क्या हो रहा है?"
फुकेरी ने कोई जवाब नहीं दिया।
"मैं फिर से दोहराता हूँ, आप यहाँ सुरक्षित नहीं हैं," टेंगो ने कहा। "मुझे ऐसा लग रहा है कि कुछ लोग मुझ पर नज़र रख रहे हैं। मुझे अभी तक यह नहीं पता कि वे किस तरह के लोग हैं।"
"कोई सुरक्षित जगह नहीं है," फुकेरी ने कहा। फिर उसने अपनी आँखें सिकोड़कर अर्थपूर्ण ढंग से अपने कान के निचले हिस्से को उंगलियों से दबाया। तेंगो को उसके इशारों का मतलब समझ नहीं आया। शायद कुछ भी नहीं।
"हर जगह एक जैसा ही होता है, क्या आपका यही मतलब है?"
"कोई सुरक्षित जगह नहीं है," फुकेरी ने दोहराया।
"ठीक है," टेंगो ने हार मानकर कहा। "एक सीमा पार करने के बाद खतरा उतना ही बना रहता है। लेकिन खैर, मुझे जल्द ही काम पर जाना है।"
- स्कूल में।
- हाँ।
"मैं यहीं रुकूंगी," फुकेरी ने कहा।
"तुम यहीं रहो," टेंगो ने दोहराया। "यही बेहतर है। कहीं बाहर मत जाना, और अगर कोई दरवाजा खटखटाए तो मत खोलना। फोन का जवाब भी मत देना।"
फुकेरी ने चुपचाप सिर हिलाया।
"वैसे, प्रोफेसर एबिसुनो कैसे हैं?"
उन्होंने कल पायनियर्स की तलाश की।
"तो क्या पुलिस ने आपके लापता होने के संबंध में पायनियर्स से पूछताछ की?" टेंगो ने आश्चर्य से पूछा।
आप अखबार नहीं पढ़ते।
"मैं अखबार नहीं पढ़ता," टेंगो ने दोहराया। "मुझे आजकल उन्हें पढ़ने का मन नहीं करता। इसलिए मेरे पास विस्तृत जानकारी नहीं है। इसका मतलब है कि पायनियर्स किसी मुसीबत में हैं।"
फुकेरी ने सिर हिलाया। तेंगो ने गहरी सांस ली।
"वे शायद पहले से ज्यादा गुस्से में हैं। ठीक वैसे ही जैसे ततैया जिनका घोंसला आपने डंडे से कुरेदकर बर्बाद कर दिया हो।"
फुकेरी ने अपनी आँखें सिकोड़ीं और कुछ देर तक चुप रहा। शायद उसने कल्पना की कि गुस्से में भरी ततैयों का झुंड अपने घोंसले से निकल रहा है।
"शायद," उसने धीमी आवाज़ में कहा।
"और क्या उन्हें आपके माता-पिता मिले?"
फुकेरी ने अपना सिर हिलाया। उसे अभी कुछ भी पता नहीं था।

वैसे भी, पंथ के लोग घबराए हुए हैं। और अगर यह पता चलता है कि तुम्हारा गायब होना जानबूझकर किया गया था, तो पुलिस तुमसे थोड़ी नाराज़ होगी। और मुझसे भी, उसी वजह से, क्योंकि मैंने तुम्हें शरण दी थी।"
"इसीलिए हमें मिलकर काम करने की जरूरत है," फुकेरी ने कहा।
— क्या आपने कहा "इसीलिए"?
फुकेरी ने सिर हिलाया।
"क्या मैंने शब्दों का गलत उच्चारण किया?" उसने पूछा।
टेंगो ने अपना सिर हिलाया।
"नहीं, ऐसा नहीं है। मुझे आपके शब्दों में ताजगी का एहसास हुआ।"
"अगर मैं आपको परेशान करूँगी, तो मैं कहीं और चली जाऊँगी।"
"तुम मुझे परेशान नहीं कर रहे हो," टेंगो ने कहा। "तुम्हारे पास जाने के लिए और कोई जगह नहीं होगी, है ना?"
फुकेरी ने संक्षिप्त रूप से सिर हिलाया।
टेंगो ने फ्रिज से थोड़ी ठंडी सीरियल टी निकाली।
मैं गुस्से में भरी ततैयों के झुंड का खुले हाथों से स्वागत तो नहीं कर सकता, लेकिन कम से कम मैं तुम्हारी देखभाल तो कर सकता हूँ।
फुकेरी ने टेंगो को घूरते हुए कहा:
— तुम बदल गए हो।
- किस तरह से?
फुकेरी के होंठ एक पल के लिए अजीब से कोण पर मुड़ गए, फिर सामान्य हो गए। वह स्पष्ट नहीं कर सका।
"मुझे समझाने की ज़रूरत नहीं है," टेंगो ने कहा। अगर उसे समझाने की ज़रूरत होती, तो चाहे कितना भी समझाया जाए, वह उसे समझ ही नहीं पाता।
जब वह काम पर जाने लगा, तो टेंगो ने फुकेरी से कहा:
"अगर मैं आपको कॉल करूं, तो मैं तीन बार रिंग बजने दूंगा और फिर काट दूंगा। फिर मैं आपको एक बार और कॉल करूंगा। तब आप जवाब देना। क्या आप समझ रहे हैं?"
"मैं समझ गई," फुकेरी ने कहा, और फिर दोहराया: "तीन बार घंटी बजने दो और फिर काट दो। फिर दोबारा कॉल करो। तब मैं जवाब दूंगी।"
ऐसा लग रहा था मानो वह किसी प्राचीन स्मारक पर खुदे हुए शिलालेख का अनुवाद कर रहा हो।
— यह महत्वपूर्ण है, इसे मत भूलना!
फुकेरी ने दो बार सिर हिलाया।
*

दो क्लास खत्म होने के बाद, टेंगो ऑफिस गया और घर लौटने की तैयारी कर रहा था कि तभी रिसेप्शनिस्ट ने आकर उसे बताया कि उशिकावा उससे मिलना चाह रही है। मानो उसे पहले से ही पता था कि वह बुरी खबर ला रही है, लड़की ने माफी भरे लहजे में उसे खबर दी। टेंगो ने मुस्कुराते हुए उसे धन्यवाद दिया। भला खबर देने वाले को दोष देने का क्या फायदा?
प्रवेश हॉल के पास कैफेटेरिया में उशिकावा उसका इंतज़ार कर रहा था और कैफ़े औ ले (एक तरह की कॉफी) पी रहा था। यह पेय उसे बिल्कुल भी शोभा नहीं देता था। युवा छात्रों से भरे भोजन कक्ष में उसकी विचित्र उपस्थिति और भी अधिक ध्यान खींचने वाली थी। जहाँ वह बैठा था, वहाँ गुरुत्वाकर्षण बल, हवा का घनत्व और

प्रकाश का अपवर्तनांक बदल गया था। दूर से देखने पर वह किसी बुरी खबर जैसा लग रहा था। हालाँकि अवकाश का समय था, फिर भी जिस छह सीटों वाली मेज पर वह बैठा था, वहाँ कोई नहीं बैठा था। छात्र सहज रूप से उशिकावा से दूर रहने की कोशिश कर रहे थे, जैसे हिरण भेड़िये से बचता है।
टेंगो ने अपने लिए एक कॉफी खरीदी और उसके सामने बैठ गया। उसने अभी-अभी क्रीम के साथ एक क्रोइसैन खाकर खत्म किया था और उसके मुंह के कोने में कुछ टुकड़े फंसे हुए थे। क्रोइसैन का रैपर मेज पर पड़ा हुआ था। क्रोइसैन भी उसे पसंद नहीं आया था।
"आपको दोबारा देखकर अच्छा लगा, श्रीमान कावाना," उशिकावा ने अपनी कुर्सी से थोड़ा उठते हुए कहा। "बिना सूचना दिए आने के लिए मैं क्षमा चाहता हूँ।"
बिना अभिवादन किए, टेंगो ने कहा:
"आप जवाब जानने आए थे, है ना? उस प्रस्ताव के बारे में जो आपने मुझे दिया था।" — जी हां, बिना देर किए, बात यही है।
"श्री उशिकावा, मुझे उम्मीद है कि आज हम और अधिक स्पष्ट और ईमानदारी से बात कर सकते हैं। आप मुझसे वास्तव में क्या चाहते हैं? मेरा मतलब है, इस 'छात्रवृत्ति' के बदले में?"
उशिकावा ने सावधानी से चारों ओर देखा, लेकिन वहाँ केवल वे दोनों ही थे। कैफ़ेटेरिया में इतना शोर था कि उनकी बातचीत किसी और के लिए आसानी से सुनाई नहीं दे सकती थी। वह मेज पर झुक गया और अपनी आवाज़ धीमी कर ली।
ठीक है। एक बड़े एहसान के तौर पर, मैं आपको सीधे-सीधे बता देता हूँ। पैसा तो बस एक बहाना है। वैसे भी, यह कोई बहुत बड़ी रकम नहीं है। मेरे ग्राहक आपको मुख्य रूप से सुरक्षा देना चाहते हैं। संक्षेप में, आपको कोई नुकसान नहीं होगा। हम इसकी गारंटी देते हैं।
“और बदले में?” टेंगो ने कहा।
"और बदले में, मेरे मुवक्किल चाहते हैं कि आप पूरी कहानी को भूल जाएं और चुप रहें। आप इस कहानी में शामिल थे, लेकिन अनजाने में और आवश्यक जानकारी के बिना। आप बस आदेशों का पालन करने वाले एक सैनिक थे। इसके लिए कोई आपको जिम्मेदार नहीं ठहरा रहा है। इसलिए पूरी कहानी को भूल जाइए और सब ठीक हो जाएगा। हिसाब बराबर हो जाएगा। किसी को पता नहीं चलेगा कि आपने चुपके से 'द एयर क्राइसालिस' लिखी थी। उस किताब से आपका कोई लेना-देना नहीं था, और न कभी होगा। हम यही चाहते हैं कि आप ऐसा करें। अगर आप ऐसा करते हैं, तो आपको कुछ फायदा होगा।"
"मेरा मतलब है, मुझे चोट नहीं लगेगी," टेंगो ने कहा। "लेकिन क्या इसमें शामिल अन्य लोगों को चोट लगेगी?"
"उह... यह हर मामले में अलग-अलग होता है," उशिकावा ने मुश्किल से जवाब दिया। "मैं इन चीजों का फैसला नहीं करता। मैं आपको कुछ भी निश्चित रूप से नहीं बता सकता, लेकिन मुझे लगता है कि कुछ उपाय करने पड़ेंगे।"
और आपकी भुजा लंबी और मजबूत है।
"बिल्कुल सही। जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया था, बहुत लंबा और बहुत मजबूत।
तो आपका जवाब क्या है?"
सबसे पहले तो, मैं किसी भी हालत में आपसे पैसे नहीं लूंगा।

बिना कोई जवाब दिए, उशिकावा ने अपना चश्मा उतारा और रुमाल से लेंस को सावधानीपूर्वक पोंछा। फिर उन्होंने उसे वापस अपनी नाक पर लगा लिया। मानो यह जताना चाह रहे हों कि उनकी दृष्टि और उनसे कहे गए शब्दों के बीच सीधा संबंध है।
"आपका मतलब है, आप हमारे प्रस्ताव को अस्वीकार कर रहे हैं?"
- बिल्कुल।
अपने चश्मे के पीछे से, उशिकावा ने टेंगो को एक असामान्य आकार के बादल की तरह देखा।
"लेकिन क्यों? हमारे साधारण दृष्टिकोण से देखें तो यह कोई बुरा सौदा नहीं है।"
"हालात चाहे जैसे भी हों, मैं दूसरों के साथ मिलकर इस मुश्किल का सामना कर रहा हूं। हम सब एक ही नाव में सवार हैं, और मैं अकेले इस सफर पर नहीं चल सकता," टेंगो ने कहा।
"कितनी अजीब बात है," उशिकावा ने हैरानी से कहा। "मुझे समझ नहीं आ रहा। मैं क्या कहूँ, जो लोग अभी भी इस मामले में शामिल हैं, उन्हें दूसरों की इतनी चिंता क्यों है? सच में। वे तुम्हारा इस्तेमाल कर रहे हैं और तुम्हें बस थोड़ी सी रकम दे रहे हैं। और इसीलिए तुम इतना परेशान हो रहे हो। क्या यह स्वाभाविक नहीं है कि तुम्हें गुस्सा आए कि वे तुम्हारा मज़ाक उड़ा रहे हैं? मुझे तो गुस्सा आता। इसके बजाय, तुम उनका बचाव करने की कोशिश कर रहे हो। तुम कहते हो कि तुम अपना ख्याल नहीं रख सकते, कि तुम बुरी स्थिति में हो। मुझे समझ नहीं आ रहा। क्यों?"
— इसका एक कारण क्योको यासुदा हैं।
उशिकावा ने कॉफी ली और बिना भूख लगे उसे पी लिया। फिर उसने पूछा:
— क्योको यसुदा?
क्या आप उसके बारे में कुछ जानते हैं?
उशिकावा मुंह खुला रखकर खड़ा था, मानो उसे एक भी शब्द समझ नहीं आया हो।
"नहीं, मैं सच कहता हूँ, मैं इस महिला के बारे में बिल्कुल कुछ नहीं जानता। कसम से! आप किसके बारे में बात कर रहे हैं?"
टेंगो चुपचाप उशिकावा को देखता रहा, लेकिन वह उसके चेहरे के भावों को समझ नहीं पाया।
— मेरा एक परिचित।
"किसी तरह से बहुत करीबी परिचित?"
टेंगो ने सवाल का जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, उन्होंने कहा:
मैं यह जानना चाहता हूं कि तुमने उसके साथ क्या किया।
"मैंने उसके साथ क्या किया? लेकिन मैंने यह कहाँ किया? मैंने उसके साथ कुछ नहीं किया," उशिकावा ने कहा। "मैं तुमसे झूठ नहीं बोल रहा हूँ। मैंने तुम्हें बताया था, मैं इस औरत के बारे में कुछ नहीं जानता। हम किसी ऐसे आदमी के साथ क्या कर सकते हैं जिसे हम जानते तक नहीं?"
"आपने कहा था कि आपके पास कुशल लोग थे जिन्होंने मेरी गहन जांच की। आपको यह भी पता चला कि मैंने एरिका फुकाडा के उपन्यास को पुनर्लिखित किया था। आप मेरे निजी जीवन के बारे में बहुत कुछ जानते हैं। अगर आपके जांचकर्ताओं को मेरे और क्योको यासुदा के बीच के संबंध का पता नहीं चला हो तो यह आश्चर्यजनक होगा।"

"जी हां, हमारे पास कुशल कर्मचारी हैं जिन्होंने आपके मामले का विस्तार से अध्ययन किया है। शायद उन्हें श्रीमती यासुदा के साथ आपके संबंध के बारे में पता चल गया हो, जैसा कि आपने कहा। लेकिन अगर उन्हें पता भी चला हो, तो वह जानकारी मुझ तक नहीं पहुंची।"
"मैं क्योको यासुदा से मिल रहा था," टेंगो ने कहा। "हम हफ्ते में एक बार छुपकर मिलते थे। क्योंकि उसका परिवार है। लेकिन एक दिन वह बिना कुछ कहे गायब हो गई।" उशिकावा ने उसी रूमाल से अपनी नाक की नोक से पसीना पोंछा जिससे उसने अपने चश्मे साफ किए थे।
"तो, श्रीमान कावाना, वह विवाहित महिला गायब हो गई है, और आपको पूरा यकीन है कि इसमें हमारी संलिप्तता है। क्या आपका यही मतलब है?"
"शायद आपने उसके पति को बता दिया होगा कि हम एक-दूसरे से मिल रहे हैं।" उशिकावा असमंजस में अपने होंठ सिकोड़ लेता है।
हम ऐसा क्यों करेंगे?
टेंगो ने अपने हाथों को कस लिया, जिन्हें उसने अपने घुटनों पर रखा हुआ था। आपको पता होना चाहिए कि फोन पर आपने मुझसे जो कुछ भी कहा, वह मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं आया।
लेकिन मैंने तुमसे क्या कहा था?
एक उम्र के बाद, जीवन निरंतर हानि की प्रक्रिया मात्र रह जाता है। महत्वपूर्ण चीजें एक-एक करके दूर होती जाती हैं, जैसे पुरानी कंघी के दांत, प्रियजन एक-एक करके बिछड़ते जाते हैं। यही तुमने कहा था। मुझे लगता है कि मैं अब भी तुम्हारे साथ हूँ।
"जी हां, मुझे याद है। मैंने आपको यही बताया था। लेकिन, श्री कवाना, मैं सामान्य शब्दों में बात कर रही थी। मैं आपको बता रही थी कि समय बीतने के साथ यह कितना मुश्किल होता जाता है। मेरा इरादा श्रीमती यासुदा का विशेष रूप से जिक्र करने का नहीं था।"
लेकिन इसने एक चेतावनी का संकेत दिया।
उशिकावा ने कई बार जोर से अपना सिर हिलाया।
"भगवान न करे!" कोई चेतावनी नहीं दी गई थी। यह महज़ मेरी निजी राय थी। कसम से, मुझे श्रीमती यासुदा के बारे में ज़रा भी जानकारी नहीं है। तो आप कह रहे हैं कि वह गायब हो गईं?
टेंगो आगे कहते हैं:
— तब तुमने मुझसे यह कहा था: अगर मैं तुम्हारी बात नहीं मानूंगा, तो हो सकता है कि मेरे आस-पास के लोगों को इसका खामियाजा भुगतना पड़े।
— हाँ, मैंने यही कहा था।
"और क्या यह भी एक चेतावनी नहीं है?"
उशिकावा ने अपना रुमाल जेब में रखा और आह भरी।
"हाँ, यह चेतावनी जैसा लगता है, लेकिन आपको पता होना चाहिए कि मैं अभी भी सामान्य शब्दों में बात कर रहा था। श्रीमान कावाना, मैं इस यासुदा के बारे में कुछ नहीं जानता। मैंने उसका नाम भी पहले कभी नहीं सुना। मैं सभी देवताओं की कसम खाता हूँ!"
टेंगो ने उशिकावा को फिर से ध्यान से देखा। शायद वह वाकई क्योको यासुदा के बारे में कुछ नहीं जानता था। उसके चेहरे पर दिख रही हैरानी स्वाभाविक लग रही

थी। लेकिन अगर वह कुछ नहीं भी जानता था, तो इसका मतलब यह नहीं था कि उन्होंने उसके साथ कुछ नहीं किया था। हो सकता है उन्होंने उशिकावा को बताया ही न हो। "श्री कावाना, मैं आपको यह नहीं बताना चाहता कि आपको क्या करना चाहिए, लेकिन विवाहित महिलाओं के साथ संबंध रखना खतरनाक है। आप युवा हैं, स्वस्थ हैं और आप पर कोई दायित्व नहीं है। आपको ऐसे जोखिम उठाने की ज़रूरत नहीं है, आप जितनी चाहें उतनी अविवाहित युवतियाँ पा सकते हैं," उशिकावा ने अपने मुँह के कोने से टुकड़ों को चाटते हुए कहा।
टेंगो ने उसकी ओर देखा, लेकिन कुछ नहीं बोला। उशिकावा ने आगे कहा:
"बेशक, पुरुषों और महिलाओं के बीच के रिश्ते हमेशा तर्क पर आधारित नहीं होते। एकपत्नीत्व में कई समस्याएं होती हैं। मैं यह बात आपकी भलाई के लिए कह रहा हूँ, अगर इस महिला ने आपको छोड़ दिया है, तो बेहतर होगा कि आप इस बात को यहीं छोड़ दें। मेरा मतलब यह है कि दुनिया में कुछ बातें ऐसी होती हैं जिन्हें न जानना ही बेहतर होता है। उदाहरण के लिए, आपकी माँ के बारे में। सच जानने से आपको केवल दुख ही होगा। एक बार सच पता चल जाए, तो आपको उसकी ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए।"
टेंगो कुछ क्षणों के लिए भौंहें सिकोड़ता रहा, उसकी सांस गले में अटक गई। क्या आप मेरी मां के बारे में कुछ जानते हैं?
उशिकावा ने अपनी जीभ अपने होठों पर फिराई।
"हां, कुछ हद तक। हमारे लोगों ने इस मामले की गहन जांच की है। इसलिए अगर आप और जानना चाहें, तो हम आपको यह जानकारी दे सकते हैं। जहां तक मुझे पता है, आपको अपनी मां के बारे में कुछ भी जाने बिना पाला-पोसा गया है। लेकिन हो सकता है कि कुछ अप्रिय जानकारी भी हो।"
"श्री उशिकावा," तेंगो ने कहा और कुर्सी खींचते हुए खड़ा हो गया। "कृपया अब चले जाइए। मैं आपसे और बात नहीं करना चाहता, और कृपया फिर कभी मुझसे मिलने मत आना। मैं किसी भी खतरे में पड़ना पसंद करूंगा, लेकिन आपसे कोई वास्ता नहीं रखना चाहता। मुझे छात्रवृत्ति या सुरक्षा की ज़रूरत नहीं है, मुझे बस एक ही चीज़ चाहिए: आपसे फिर कभी न मिलना।"
उशिकावा ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। शायद अन्य अवसरों पर उन्हें इससे भी कठोर शब्दों का सामना करना पड़ा होगा। उनकी आँखों की गहराई में एक हल्की सी चमक, मानो कोई मुस्कान हो, दिखाई दी।
“बहुत खूब,” उसने कहा। “कम से कम आपने मुझे जवाब तो दे दिया। तो नहीं। आप हमारा प्रस्ताव ठुकरा रहे हैं। आपका जवाब स्पष्ट और साफ है। मैं इसे आगे पहुंचा दूंगा। क्योंकि मैं तो बस एक मामूली संदेशवाहक हूं। आपके मना करने का मतलब यह नहीं है कि आपको कोई नुकसान होगा। मैंने आपको बताया था, यह सिर्फ एक संभावना है। हो सकता है सब कुछ बिना किसी घटना के समाप्त हो जाए। यह अच्छा होगा। नहीं, मैं आपसे झूठ नहीं बोल रहा, मुझे सच में यही विश्वास है। आपको पता होना चाहिए, श्रीमान कावाना, कि आप मुझे पसंद करते हैं। आप मुझे पसंद नहीं करना चाहते, लेकिन यही सच्चाई है। मैं बस एक अजनबी हूं जो आपके पास एक उतनी ही अजीब कहानी लेकर आया हूं। और मैं बदसूरत दिखता हूं। लेकिन मैं कभी भी ऐसा आदमी नहीं रहा जो लोगों के नापसंद करने पर परेशान हो जाए। लेकिन मुझे उम्मीद है कि आपको बुरा नहीं लगेगा अगर मैं कहूं कि मैं आपको पसंद करता हूं। मैं कामना करता हूं कि आप तरक्की करें और सफल हों।”

इतना कहकर उशिकावा ने अपने दोनों हाथों की उंगलियों को देखा। वे छोटी और मोटी थीं। उसने अपनी हथेलियों को कुछ बार घुमाया, फिर खड़ा हो गया।
"अब मेरे जाने का समय हो गया है। हाँ, शायद यह आखिरी बार होगा जब आप मुझे देखेंगे। मैं आपकी इच्छाओं का सम्मान करने की कोशिश कर रहा हूँ। आशा है आपके लिए सब कुछ अच्छा हो। अलविदा!"
उशिकावा ने बगल वाली सीट से अपना पुराना चमड़े का थैला उठाया और भीड़भाड़ वाली कैंटीन में आगे बढ़ गया। सहज रूप से, उसके रास्ते में आने वाले छात्र तुरंत एक तरफ हट गए, मानो देहाती बच्चे किसी खूंखार गुलाम व्यापारी से भाग रहे हों।
*

टेंगो ने स्कूल के गलियारे में लगे सार्वजनिक फोन से घर पर फोन किया। वह तीन बार घंटी बजने के बाद फोन काट देना चाहता था, लेकिन दूसरी घंटी बजते ही फुकाएरी ने फोन उठा लिया।
"मैंने तुम्हारे लिए यह व्यवस्था की थी कि तुम तीन बार घंटी बजने दो और जवाब मत देना," टेंगो ने कमजोर आवाज में कहा।
"मैं भूल गई थी," फुकेरी ने बिना किसी पछतावे के कहा।
मैंने तुमसे कहा था कि भूलना मत!
"फिर से फोन करना," उसने पूछा।
"नहीं, इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। आपने पहले ही जवाब दे दिया है। मेरे जाने के दौरान क्या कुछ असामान्य हुआ?"
फोन की घंटी नहीं बजी। कोई नहीं आया।
"बहुत अच्छा। मेरा काम खत्म हो गया है, इसलिए मैं जल्द ही घर वापस आ जाऊंगा।" "थोड़ी देर पहले एक बड़ा कौआ आया था। वह खिड़की पर कांव-कांव कर रहा था," फुकेरी ने कहा।
"वह हमेशा शाम को आता है। चिंता मत करो। वह बस मिलने आया है। मुझे लगता है मैं सात बजे तक घर आ जाऊंगी।"
आपको जल्दी करनी चाहिए।
“क्यों?” टेंगो ने पूछा।
— छोटे लोग बेचैन हैं।
"छोटे लोग बेचैन हैं," टेंगो ने ये शब्द दोहराए। "क्या वे मेरे घर में बेचैन हैं?"
नहीं। कहीं और।
— कहीं और।
- बहुत दूर।
लेकिन आप उन्हें सुन सकते हैं।
मैं उन्हें सुन रहा हूँ।
“और इसका क्या मतलब है?” टेंगो ने पूछा।
— कुछ नाटकीय घटित हो रहा है।
— नाटकीय।
टेंगो को "नाटकीय" शब्द का अर्थ समझने में कुछ क्षण लगे। फिर उन्होंने आगे कहा:
— किस तरह की नाटकीय घटना घटित होने वाली है?

मुझे यह नहीं पता।
"क्या यह बौने लोगों के कारण हुआ है?"
फुकेरी ने अपना सिर हिलाया। पता नहीं कैसे उसका इशारा रिसीवर तक पहुँच गया। "तुम्हें वापस चले जाना चाहिए। इससे पहले कि बिजली कड़कने लगे।"
- गड़गड़ाहट?
अगर ट्रेनें रुक गईं तो हम अलग ही रहेंगे।
टेंगो ने मुड़कर खिड़की से बाहर देखा। यह एक शांत गर्मी की शाम थी, आसमान में एक भी बादल नहीं था।
उन्होंने कहा, "उसे बिजली कड़कना बिल्कुल पसंद नहीं है।"
— दिखावे से पता नहीं चलता।
— तो मैं जल्दी करता हूँ।
"यह अच्छा रहेगा," फुकेरी ने कहा और फोन काट दिया।
स्कूल के गेट से बाहर निकलते ही, टेंगो ने एक बार फिर साफ आसमान पर नजर डाली, फिर योयोगी स्टेशन की ओर तेजी से चल पड़ा। उशिकावा के साथ हुई बातचीत उसके दिमाग में बार-बार चल रही थी, मानो कोई टेप लूप में चल रहा हो।
मेरा कहने का मतलब यह है कि दुनिया में कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें न जानना ही बेहतर है। उदाहरण के लिए, आपकी माँ के बारे में। सच जानने से आपको केवल दुख ही होगा। एक बार सच पता चल जाए, तो उसकी ज़िम्मेदारी आपको ही लेनी चाहिए।
और कहीं न कहीं, छोटे लोग हलचल मचा रहे थे। वे उस नाटकीय घटना में शामिल थे जो घटित होने वाली थी। आसमान अब साफ और सुंदर था, लेकिन दिखावे से किसी चीज का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। शायद बिजली कड़केगी, बारिश होगी, ट्रेनें रुक जाएंगी। उन्हें जल्दी घर पहुंचना था। फुकाएरी की आवाज में असाधारण रूप से विश्वास झलक रहा था।
उन्होंने कहा था, "हमें मिलकर काम करने की जरूरत है।"
कहीं से एक लंबी भुजा प्रकट होती है। हमें मिलकर काम करना होगा। आखिर, हम धरती पर सबसे शक्तिशाली जोड़ी हैं। संगीत चलता रहता है।

अध्याय 11 संतुलन अपने आप में एक अच्छी बात है

ओमामे ने फर्श पर बिछे कालीन पर अपनी नीली योगा मैट बिछाई और फिर उस आदमी को कमर से ऊपर के कपड़े उतारने को कहा। वह आदमी बिस्तर से उठा और अपनी कमीज़ उतार दी। कमीज़ के बिना उसका धड़ कमीज़ पहने हुए से भी ज़्यादा बड़ा लग रहा था। उसकी छाती चौड़ी थी लेकिन उस पर चर्बी नहीं थी, और उसकी मांसपेशियां उभरी हुई थीं। पहली नज़र में उसका शरीर एकदम स्वस्थ लग रहा था।
ओमामे के निर्देश पर, वह व्यक्ति गद्दे पर पेट के बल लेट गया। ओमामे ने सबसे पहले उसकी कलाई को छुआ और उसकी नब्ज़ जाँची। धड़कनें गहरी और तेज़ थीं।
“क्या आप रोजाना कोई व्यायाम करते हैं?” उसने उससे पूछा।
"कुछ खास नहीं। बस सांस ले रहा हूँ।"
"क्या तुम बस सांस ले रहे हो?"
— यह सांस लेने का थोड़ा असामान्य तरीका है।
"आप अंधेरे में जो कर रहे थे, उसी की बात कर रहे हैं, है ना? गहरी सांस लेना, अपने शरीर की हर मांसपेशी का इस्तेमाल करना।"
पेट के बल लेटे हुए उस व्यक्ति ने संक्षिप्त रूप से सिर हिलाया।
आओमामे को समझ नहीं आ रहा था। इतनी ज़ोर से सांस लेने के लिए बहुत शारीरिक शक्ति चाहिए होती है, लेकिन वह सिर्फ सांस लेकर अपने शरीर को इतना मजबूत कैसे रख सकती है?
"मैं जो करने जा रही हूँ उससे तुम्हें कम या ज्यादा दर्द होगा," आओमामे ने सपाट स्वर में कहा। "अगर दर्द नहीं हुआ तो कोई फायदा नहीं। लेकिन मैं दर्द की तीव्रता को नियंत्रित कर सकती हूँ, इसलिए संकोच मत करना और मुझे बताना जब दर्द बहुत ज्यादा हो जाए।"
उस आदमी ने एक पल इंतजार किया, फिर कहा:
— अगर कोई ऐसा दर्द है जिसका स्वाद मैंने अभी तक नहीं चखा है, तो मैं उसे जानने के लिए बहुत उत्सुक हूं।
उनकी आवाज में व्यंग्य का हल्का सा पुट आ गया था।
किसी को भी दर्द पसंद नहीं होता।
"लेकिन दर्दनाक प्रक्रियाओं से बेहतर परिणाम मिलते हैं, है ना? अगर दर्द सार्थक हो तो मैं उसे सहन कर सकता हूँ।"
पतले अंधेरे में डूबे आओमामे के चेहरे पर एक क्षणिक भाव प्रकट हुआ।
"मैं समझ गई," उसने कहा। "अभी देखते हैं आगे क्या होता है।"
हमेशा की तरह, आओमामे ने उसके कंधों से शुरुआत की। छूते ही सबसे पहले उसने महसूस किया कि उसकी मांसपेशियां कितनी लचीली थीं। मजबूत, स्वस्थ मांसपेशियां, जिनकी संरचना उन थके-हारे, अकड़े हुए शहरी लोगों से बिल्कुल अलग थी जो आमतौर पर स्पोर्ट्स क्लब में आते थे। लेकिन साथ ही, उसे यह भी एहसास हुआ कि उनकी स्वाभाविक लचक किसी चीज से बाधित थी, जैसे कोई नदी जिसका प्रवाह कचरे या पानी के साथ बहकर आई टहनियों और सूखे पत्तों के कारण रुक गया हो।

ओमामे ने अपनी कोहनी को लीवर की तरह इस्तेमाल किया और उसके कंधे को दबाना शुरू कर दिया। पहले धीरे से, फिर ज़ोर से। उसे पता चल गया था कि उस आदमी को दर्द महसूस हो रहा है। यह एक तेज़ दर्द था जिससे कोई और होता तो कराह उठता, लेकिन वह ज़रा भी नहीं हिला। उसकी साँसों में कोई बदलाव नहीं आया था, और उसने माथे पर शिकन भी नहीं डाली। उसने मन ही मन सोचा, वह बहुत सहनशील है, और उसने यह देखने का फैसला किया कि वह कब तक सहन कर सकता है। उसने ज़ोर से दबाया, और ज़्यादा ज़ोर से, जब तक कि आखिरकार उसके कंधे की हड्डी का जोड़ धीरे से चरमराया, जैसे रेल की पटरी पर स्विच बदल रहा हो। उस आदमी की साँस एक पल के लिए रुक गई, फिर वह चुपचाप फिर से बोलने लगा।
उन्होंने समझाया, "आपकी कंधे की हड्डी बहुत अकड़ी हुई थी। लेकिन अब यह ठीक हो गई है। इसने अपनी लचीलापन वापस पा लिया है।"
ओमामे ने अपनी उंगलियाँ अपने कंधे के पीछे वाले दूसरे जोड़ तक पहुँचाईं।
वैसे भी वह मांसपेशी लचीली थी, और अगर वह कसी हुई जगहों को ढीला कर पाती, तो वह तुरंत सामान्य हो जाती।
"मुझे बहुत अधिक स्वतंत्रता महसूस हो रही है," उस व्यक्ति ने धीरे से कहा।
मुझे लगता है कि दर्द भी काफी था।
लेकिन असहनीय नहीं।
मैं भी काफी सहनशील व्यक्ति हूं, लेकिन अगर मेरे साथ ऐसा कुछ हुआ होता, तो मैं निश्चित रूप से आह भरता।
"कई मामलों में, दर्द अन्य दर्द से कम हो जाता है और संतुलित हो जाता है।
आखिरकार, अनुभूति सापेक्ष होती है।"
ओमामे ने उसके बाएं कंधे के ब्लेड को छुआ, अपनी उंगलियों से मांसपेशी को महसूस किया और तुरंत समझ गई कि यह दाहिने कंधे के ब्लेड जैसी ही स्थिति में है। चलो देखते हैं कि यह कितना मिलता-जुलता है, उसने सोचा।
"अब मैं बाईं ओर जा रहा हूँ। दर्द लगभग दाईं ओर जितना ही होगा।"
मैं खुद को आपके भरोसे छोड़ता हूँ। मेरी चिंता मत करो।
"क्या तुम्हारा मतलब है कि मुझे तुम्हें नहीं छोड़ना चाहिए?"
— यह आवश्यक नहीं है।
ओमामे ने अपने बाएं कंधे के जोड़ और उसके आसपास की मांसपेशियों की स्थिति को ठीक करने के लिए उसी प्रक्रिया का पालन किया। उसने निर्देशानुसार काम किया था और उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाया था। जब उसने अपनी ताकत का इस्तेमाल न करने का फैसला कर लिया, तो उसने बिना किसी झिझक के सबसे छोटा रास्ता चुना। लेकिन इस बार, उस आदमी की प्रतिक्रिया और भी शांत थी। उसने केवल अपने गले से एक दबी हुई आवाज़ निकाली और दर्द को पूरी तरह से स्वाभाविक मान लिया। ठीक है, देखते हैं तुम कब तक सहन कर सकते हो, ओमामे ने सोचा।
उसने अपने शरीर की हर मांसपेशी को एक-एक करके आराम दिया, मानो वह अपनी मानसिक सूची में मौजूद सभी बिंदुओं को पूरा कर रही हो। उसे बस उस रास्ते पर क्रम से चलना था, बिल्कुल एक कुशल और निडर रात के चौकीदार की तरह, जो हाथ में टॉर्च लिए इमारत के चारों ओर चक्कर लगा रहा हो।
जोड़ों में जकड़न के कारण वह किसी भयानक आपदा से त्रस्त भूमि के टुकड़े की तरह लग रहा था। जलमार्ग अवरुद्ध हो गए थे और किनारे टूट गए थे। अगर किसी आम आदमी के साथ ऐसा होता तो वह खड़ा भी नहीं हो पाता। वह सांस भी नहीं ले पाता। इस

*

"मैंने आधा काम पूरा कर लिया है। अब मैं बाकी का काम कर लूंगी। क्या आप आराम से बैठ सकते हैं?" उसने कहा।
वह आदमी धीरे-धीरे मुड़ा, मानो कोई विशालकाय समुद्री जीव जमीन पर फंस गया हो। लंबी सांस छोड़ते हुए उन्होंने कहा, "दर्द कम हो गया है। बाकी किसी भी इलाज का इतना असर नहीं हुआ।"
"आपकी मांसपेशियों में चोट लगी है," आओमामे ने कहा। मुझे कारण तो नहीं पता, लेकिन चोट गंभीर है। मैं प्रभावित हिस्सों को यथासंभव सामान्य स्थिति में लाने की कोशिश कर रही हूँ। यह आसान नहीं है और दर्दनाक भी है। लेकिन मैं कुछ हद तक मदद कर सकती हूँ। मांसपेशियां तो ठीक हैं और आप दर्द सहन कर सकते हैं। लेकिन यह सिर्फ लक्षणों का इलाज है, स्थायी समाधान नहीं। जब तक कारण का पता नहीं चलता, आपको बार-बार यही समस्या होती रहेगी।
मुझे पता है। इससे कुछ हल नहीं होगा। यह बार-बार होगा, और हर बार मेरी हालत और बिगड़ती जाएगी। लेकिन अगर यह सिर्फ़ अस्थायी इलाज ही है, तो भी अगर दर्द थोड़ा सा भी कम हो जाए तो मैं बहुत आभारी हूँ। आप अंदाज़ा नहीं लगा सकते कि मैं कितना आभारी हूँ। मैंने मॉर्फिन लेने के बारे में भी सोचा था, लेकिन मैं जितना हो सके दवाओं से दूर रहना पसंद करता हूँ। लंबे समय तक दवा लेने से दिमाग़ी क्रिया शक्ति कमज़ोर हो जाती है।
"मैं आगे बढ़ जाऊंगी," आओमामे ने कहा। "क्या यह पहले जैसा ही है, बिना किसी दया के?"
- बिल्कुल।
ओमामे ने सारे विचार मन से निकाल दिए और काम में जुट गई। मानव शरीर की प्रत्येक मांसपेशी की संरचना उसके मस्तिष्क में भली-भांति अंकित थी। प्रत्येक मांसपेशी का कार्य, वह किन हड्डियों से जुड़ी होती है, उनकी क्या विशेषताएं होती हैं, वे क्या संवेदनाएं व्यक्त करती हैं। ओमामे ने एक-एक करके मांसपेशियों और जोड़ों की जांच की, उन्हें जोर से हिलाया और मरोड़ा, मानो कोई जिज्ञासु जांचकर्ता मानव शरीर के हर दर्द बिंदु की बारीकी से जांच कर रहा हो। आधे घंटे बाद, दोनों पसीने से तरबतर और हांफ रहे थे, मानो प्रेमी-प्रेमिकाओं ने अभी-अभी बेहद तीव्र यौन संबंध समाप्त किया हो। वह आदमी कुछ देर चुप रहा, और आओमामे को भी कुछ कहने लायक नहीं सूझा।
अंत में उस व्यक्ति ने कहा, "मैं अतिशयोक्ति नहीं करना चाहता, लेकिन मुझे ऐसा लगता है जैसे मेरे शरीर का हर अंग बदल दिया गया हो।"
"आज रात कुछ दुष्परिणाम हो सकते हैं। रात के दौरान आपकी मांसपेशियां इतनी अकड़ सकती हैं कि आप चीखना चाहें। लेकिन चिंता न करें। सुबह तक यह ठीक हो जाएगा।"
उसने मन ही मन सोचा, अगर तुम सुबह आ सको तो।
वह व्यक्ति योग मैट पर पालथी मारकर बैठ गया और अपनी स्थिति का बेहतर आकलन करने के लिए कुछ गहरी सांसें लीं।
उन्होंने कहा, "आपमें वाकई एक बहुत ही खास प्रतिभा है।"
"मैं जो करती हूँ, वह बहुत व्यावहारिक है," आओमामे ने तौलिए से अपना चेहरा पोंछते हुए कहा। मैंने कॉलेज में मांसपेशियों की संरचना और कार्यों के बारे में सीखा और अभ्यास करके इस ज्ञान को और विकसित किया। मैंने अपनी तकनीक को निपुण बनाया और अपनी खुद की प्रणाली विकसित की। मैं केवल वही करती हूँ जो

स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। मेरे काम में सच्चाई प्रत्यक्ष और सिद्ध है।
बेशक, दर्द भी उसी अनुपात में होता है।
उस आदमी ने अपनी आंखें खोलीं और दिलचस्पी से उसकी ओर देखा।
- तो आप यह सोचते है।
- आपका क्या संदर्भ है?
— आप मानते हैं कि सत्य कुछ ऐसा है जिसे देखा और सिद्ध किया जा सकता है।
ओमामे ने अपने होंठ सिकोड़ लिए।
मैं यह नहीं कह रहा कि सभी सत्य ऐसे ही होते हैं, लेकिन मेरे कार्यक्षेत्र में ऐसा ही होता है। बेशक, अगर यह सभी क्षेत्रों के लिए सत्य होता, तो चीजों को समझना आसान होता।
- बिलकुल नहीं।
- क्यों?
"अधिकांश लोग सिद्ध किए जा सकने वाले सत्यों की खोज नहीं करते। जैसा कि आपने कहा, अधिकतर मामलों में सत्य अपने साथ बहुत पीड़ा लेकर आता है। और लोग ऐसी कोई चीज़ नहीं चाहते जो उन्हें पीड़ा पहुँचाए। उन्हें सुंदर कहानियों की आवश्यकता होती है जो उनके अस्तित्व को गहरा अर्थ प्रदान करें। इसी प्रकार धर्म का जन्म हुआ।"
उस व्यक्ति ने अपनी गर्दन को कुछ बार घुमाया, फिर आगे बोला:
अगर सिद्धांत X उनके जीवन को अधिक अर्थपूर्ण बनाता है, तो वही उनके लिए सत्य है, और अगर सिद्धांत Y उन्हें छोटा और असहाय महसूस कराता है, तो वह असत्य है। यह बिल्कुल स्पष्ट है। अगर कोई इस बात पर ज़ोर देता है कि सिद्धांत Y ही सत्य है, तो लोग उससे नफ़रत करेंगे, उसे नज़रअंदाज़ करेंगे या उस पर हमला भी कर सकते हैं। उनके लिए तर्क या प्रमाण का कोई महत्व नहीं है। कई लोग अपनी मानसिक शांति बनाए रखने के लिए इस विचार को नकार देते हैं और खारिज कर देते हैं कि वे छोटे और असहाय हैं।
लेकिन मानव शरीर, वास्तव में सभी शरीर, थोड़े-बहुत अंतर के साथ, छोटे और असहाय होते हैं। क्या यह स्वतः स्पष्ट नहीं है?
— यह सच है। हर शरीर, थोड़े-बहुत अंतर के साथ, छोटा और असहाय होता है। और वैसे भी, यह जल्दी ही नष्ट होकर लुप्त हो जाता है। यह एक निर्विवाद सत्य है। लेकिन आत्मा का क्या?
मैं मन ही मन यथासंभव इसके बारे में न सोचने की कोशिश करता हूँ।
- क्यों?
क्योंकि इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।
— आपको अपनी आत्मा के बारे में क्यों नहीं सोचना चाहिए? चाहे इससे कोई परिणाम निकले या न निकले, जीवन में अपनी आत्मा के बारे में सोचना अपरिहार्य है।
"मेरे पास प्यार है," आओमामे ने सीधे-सीधे कहा।
मैं ये क्या कर रही हूँ? आओमामे चिल्लाई। मैंने उस आदमी से प्यार की बातें करना शुरू कर दिया जिसे मैं अभी मारने वाली हूँ?
उस व्यक्ति के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई, मानो हवा से पानी की सतह पर उठने वाली लहर हो। यह स्वाभाविक थी और इसमें सहानुभूति भी झलक रही थी।
"क्या सिर्फ प्यार होना ही काफी है?" उसने उससे पूछा।

- एकदम सही।
क्या आप जिस प्रेम की बात कर रहे हैं वह किसी विशेष व्यक्ति के प्रति निर्देशित है?
— जी हाँ। एक खास आदमी।
"एक छोटा, असहाय शरीर, जिसमें पूर्ण, शुद्ध प्रेम समाहित है," उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा, फिर रुक गए। "ऐसा लगता है कि आपको धर्म की आवश्यकता नहीं है।" — शायद मैं नहीं करता।
— ऐसा इसलिए है क्योंकि आपका जीने का तरीका ही अपने आप में एक धर्म है।
आपने कहा कि धर्म एक ऐसा सिद्धांत प्रस्तुत करता है जो सत्य से कहीं अधिक सुंदर है। आपके संप्रदाय के मामले में यह बात किस प्रकार लागू होती है?
सच कहूँ तो, मैं अपने काम को धार्मिक कार्य नहीं मानता। मैं बस ईश्वर की वाणी सुनता हूँ और उसे लोगों तक पहुँचाता हूँ। मैं अकेला हूँ जो उसे सुन सकता हूँ, और यह एक निर्विवाद सत्य है। लेकिन मैं यह साबित नहीं कर सकता कि उसका संदेश सत्य है। मैं बस उन छोटी-छोटी दिव्य कृपाओं को मूर्त रूप दे सकता हूँ जो मुझे प्राप्त हुई हैं।
ओमामे ने हल्के से अपने होंठ दबाए और तौलिया नीचे रख दिया। वह उससे पूछना चाहती थी कि वह किन कृपाओं की बात कर रहा है, लेकिन उसने अपना इरादा बदल दिया। कहानी बहुत लंबी खिंच जाती। उसे एक बहुत ज़रूरी काम पूरा करना था।
"क्या तुम फिर से पेट के बल लेटोगे? मुझे अभी भी गर्दन की मांसपेशियों पर काम करना है।"
उस व्यक्ति ने अपने विशाल शरीर को एक बार फिर योगा मैट पर फैला दिया, जिससे उसकी गर्दन का पिछला हिस्सा दिखाई देने लगा।
"वैसे भी, आपमें जादूई स्पर्श है," उन्होंने कहा।
— जादुई स्पर्श?
असाधारण शक्ति से परिपूर्ण उंगलियां। शरीर के किसी विशिष्ट बिंदु को महसूस करने की तीव्र क्षमता। यह एक विशेष प्रतिभा है, जो बहुत कम लोगों में पाई जाती है। यह अध्ययन या प्रशिक्षण से प्राप्त नहीं की जा सकती। मुझमें भी कुछ इसी तरह की क्षमता है, भले ही वह भिन्न श्रेणी की हो। लेकिन कृपा की तरह, मनुष्य को प्राप्त उपहारों के लिए किसी न किसी बिंदु पर कीमत चुकानी पड़ती है।
"मैंने इसे कभी उस तरह से नहीं लिया। मैंने तो बस अध्ययन और प्रशिक्षण के माध्यम से एक तकनीक हासिल की। मुझे यह किसी से नहीं मिली।"
मैं कोई गरमागरम बहस शुरू नहीं करना चाहता। लेकिन एक बात याद रखना: देवता ही देते हैं, देवता ही ले लेते हैं। भले ही तुम्हें इसका एहसास न हो, लेकिन यह मत भूलना कि तुम्हारा वरदान देवताओं से मिला है। और वे कुछ भी नहीं भूलते। तुम्हें जो प्रतिभा मिली है, उसका सदुपयोग करना।
आओमामे ने अपने हाथों की दस उंगलियों को देखा। फिर उसने उस आदमी की गर्दन के पिछले हिस्से को छुआ। उसने अपना ध्यान उंगलियों के सिरों पर केंद्रित किया।
देवता देते हैं, देवता लेते हैं।
"बस थोड़ा और, और काम खत्म। आज की यही आखिरी प्रक्रिया है," उसने उस आदमी की पीठ की ओर देखते हुए रूखे स्वर में कहा।

उसे दूर से गरजने की आवाज़ सुनाई दी। उसने ऊपर खिड़की से बाहर देखा। कुछ भी दिखाई नहीं दिया। केवल अंधेरा आसमान था, लेकिन तुरंत ही उसे वही आवाज़ फिर से सुनाई दी, जो शांत कमरे में सूखी सी गूंज रही थी।
"बारिश शुरू हो रही है," उस आदमी ने सपाट स्वर में कहा।
*

ओमामे ने उसके सिर के पिछले हिस्से को छुआ और उस खास जगह को खोजने लगी। इसके लिए एक विशेष एकाग्रता की आवश्यकता थी। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, साँस रोक ली और रक्त प्रवाह को सुनने लगी। उसकी उंगलियाँ त्वचा की लोच और तापमान से यथासंभव जानकारी प्राप्त करने का प्रयास कर रही थीं। वह जगह एक ही थी और बहुत सूक्ष्म थी। कुछ लोग इसे तुरंत पा लेते हैं, दूसरों को इसमें कठिनाई होती है, और लीडर स्पष्ट रूप से बाद वाली श्रेणी में आती थी। यह एक अंधेरे कमरे में सिक्का खोजने जैसा था, जिसमें शोर न करने का पूरा ध्यान रखना पड़ता था। लेकिन अंततः उसने उसे ढूंढ लिया। उसने अपनी उंगली उस पर रखी और उसकी सटीक स्थिति को याद कर लिया, जैसे मानचित्र पर किसी स्थान को चिह्नित करना। यह एक विशेष क्षमता थी जो उसे वरदान के रूप में प्राप्त हुई थी।
"कृपया हिलना मत," उसने पेट के बल लेटे हुए आदमी से कहा, फिर अपने बगल में रखे बैग में हाथ डालकर छेनी का डिब्बा निकाला।
"मेरी गर्दन के पिछले हिस्से में बस एक जगह थोड़ी जकड़न रह गई है," उसने शांत भाव से कहा। "उसे मैं सिर्फ उंगलियों से नहीं खोल पा रही हूँ। अगर मैं उसे ढीला कर दूं, तो दर्द काफी कम हो जाएगा। मैं उसमें सुई लगाना चाहती हूँ। यह थोड़ा नाजुक ऑपरेशन है, लेकिन मैंने इसे पहले भी कई बार किया है और यह कभी असफल नहीं हुआ। क्या मैं लगा सकती हूँ?"
उस आदमी ने गहरी सांस ली।
मैं स्वयं को पूरी तरह से आपके हाथों में सौंपता हूँ। मैं वह सब कुछ स्वीकार करता हूँ जिससे मुझे दर्द से राहत मिल सके।
ओमामे ने छेनी को म्यान से निकाला और उसमें फंसा हुआ कॉर्क हटा दिया। उसकी नोक तेज़ और घातक थी। उसने उसे अपने बाएं हाथ में लिया और अपने दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली से उस जगह को खोजने लगी जिसे उसने पहले खोजा था। कोई संदेह नहीं। वही जगह थी। ओमामे ने सुई की नोक से उस जगह को छुआ और गहरी सांस ली। अब बस इतना ही बचा था कि वह अपने हाथ को हथौड़े की तरह छेनी के हैंडल पर रखे और नोक को उस जगह में घुसा दे। और बस, काम पूरा हो गया।
लेकिन किसी चीज़ ने उसे रोक रखा था। हवा में उठी उसकी दाहिनी मुट्ठी नीचे आने से इनकार कर रही थी। बस, अब सब खत्म! एक ही वार में मैं इस आदमी को परलोक भेज सकती हूँ। फिर मैं बेपरवाह होकर यहाँ से निकल जाऊँगी, अपना रूप-रंग और नाम बदल लूँगी और एक नई पहचान अपना लूँगी। मैं यह कर सकती हूँ। मुझे डर नहीं है, न ही मेरा कोई ज़मीर है। निःसंदेह, इस आदमी ने भयानक काम किए हैं और वह उनके लिए मौत का हकदार है। लेकिन आओमामे ऐसा नहीं कर सकी। एक अस्पष्ट लेकिन लगातार बनी रहने वाली शंका ने उसके दाहिने हाथ को हिचकिचाने पर मजबूर कर दिया।
सब कुछ बहुत आसानी से हो रहा है, उसकी अंतरात्मा ने फुसफुसाया।
कोई तर्क नहीं था, कुछ भी नहीं। उसे बस ऐसा महसूस हुआ। कुछ अजीब था, अस्वाभाविक। हर तरह की शक्तियाँ आपस में टकरा रही थीं और लड़ रही थीं। अर्ध-अंधेरे में आओमामे ने गहरी भौंहें चढ़ाईं।

"क्या हुआ?" उस आदमी ने पूछा। "मैं इंतज़ार कर रहा हूँ। मैं आखिरी प्रक्रिया का इंतज़ार कर रहा हूँ।"
ये शब्द सुनकर, आओमामे को आखिरकार अपनी झिझक का कारण समझ आ गया। यह आदमी जानता है, वह जानता है कि मैं उसके साथ क्या करने वाली हूँ।
"संकोच करने की कोई ज़रूरत नहीं है," उसने शांत स्वर में उससे आग्रह किया। "सब ठीक है। जो तुम चाहती हो, वही मैं चाहता हूँ।"
गरज जारी रही, लेकिन बिजली दिखाई नहीं दी। केवल दूर से तोपों की गड़गड़ाहट जैसी आवाजें सुनाई दे रही थीं। युद्धक्षेत्र अभी भी बहुत दूर था।
"यह एकदम सही इलाज है। आपने बहुत अच्छा काम किया है, और मैं इसके लिए आपका बहुत सम्मान करता हूँ। लेकिन, जैसा कि आपने कहा, यह केवल लक्षणों का उपचार है। मेरा दर्द पहले से ही इतना बढ़ चुका है कि इसे जड़ से खत्म किए बिना पूरी तरह से ठीक नहीं किया जा सकता। बस तहखाने में जाकर स्विच बंद कर दो। आप मेरे लिए यही करने वाले हैं।"
ओमामे के बाएं हाथ में छेनी थी, गर्दन पर सुई चुभी हुई थी और दाहिना हाथ हवा में उठा हुआ था। वह न तो आगे बढ़ सकती थी और न ही पीछे हट सकती थी।
"अगर मैं तुम्हें रोकना चाहूँ तो अनगिनत तरीके अपना सकता हूँ। यह तो बहुत मामूली बात है," उस आदमी ने कहा। "अपना दाहिना हाथ नीचे करने की कोशिश करो।" ओमामे ने बात मान ली और अपना दाहिना हाथ नीचे करने की कोशिश की। लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ। वह पत्थर की शिला की तरह हवा में जमा रहा।
"यह एक ऐसी शक्ति है जो मुझे दी गई है, हालांकि मैंने इसकी इच्छा नहीं की थी। आह, अब आप अपना हाथ हिलाने के लिए स्वतंत्र हैं। अब आप मेरी जान दोबारा ले सकते हैं।"
आओमामे ने गौर किया कि वह अपना हाथ फिर से आसानी से हिला सकती है। उसने मुट्ठी बंद की और खोली। कोई दिक्कत नहीं थी। क्या यह किसी तरह का सम्मोहन था? लेकिन कितनी ताकत थी!
मुझे एक विशेष शक्ति दी गई थी। लेकिन बदले में, उन्होंने मुझसे तरह-तरह की चीजें माँगीं। उनकी इच्छाएँ मेरी इच्छाएँ बन गईं। उनकी माँगें कठोर थीं और उन्हें ठुकराना असंभव था।
"क्या आपका मतलब 'छोटे लोगों' से है?" आओमामे ने पूछा।
"तो आपको उनके बारे में पता है। बहुत बढ़िया। इससे बातचीत और भी आसानी से आगे बढ़ती है।"
मुझे सिर्फ यह नाम पता है, लेकिन मैं क्या हूं यह नहीं पता।
"लोग केवल इतना ही जान सकते हैं कि उनका अस्तित्व है। क्या आपने कभी फ्रेज़र की रचना 'द गोल्डन बॉघ' पढ़ी है?"
- नहीं।
यह एक बहुत ही रोचक पुस्तक है, जिससे हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। प्राचीन काल में, दुनिया के कई हिस्सों में, जब किसी राजा का शासनकाल समाप्त होता था, तो उसे स्वतः ही मार दिया जाता था। उसका शासनकाल दस से बीस वर्ष तक चल सकता था। शासनकाल के अंत में, लोग एकत्रित होकर उसका नरसंहार करते थे। यह समुदाय के लिए एक आवश्यक कार्य था और राजा भी इसे स्वीकार करता था। उसकी मृत्यु रक्तरंजित और क्रूर होनी ही थी। इसी प्रकार उसे महान सम्मान प्राप्त होता था। और उसे क्यों मारा जाना आवश्यक था? क्योंकि राजा जनता का प्रतिनिधि

था, "वह जो ईश्वर की वाणी सुनता है।" यही वह कड़ी थी जो हमें उनसे जोड़ती थी। और एक निश्चित समय के बाद, ईश्वर की वाणी सुनने वाले को मारना समुदाय के लिए एक अनिवार्य कार्य बन जाता था। इसका उद्देश्य पृथ्वी पर जनता की चेतना और लघु जनों द्वारा प्रकट की गई शक्ति के बीच संतुलन बनाए रखना था। प्राचीन काल में, राज्य का नेतृत्व करना देवताओं की वाणी सुनने के समान था। लेकिन, निश्चित रूप से, इस प्रकार की व्यवस्था एक समय पर लुप्त हो गई, राजाओं को मारना बंद हो गया, और सिंहासन एक धर्मनिरपेक्ष वस्तु बन गया, जो वंशानुगत रूप से प्राप्त होता था। और इसलिए लोगों ने उस आवाज को सुनने की उम्मीद छोड़ दी।
ओमामे उसकी बातें सुन रही थी, और अनजाने में ही हवा में उठी अपनी दाहिनी हथेली को बार-बार मुट्ठी बना रही थी और खोल रही थी।
उस आदमी ने आगे कहा, "इन्हें कई अलग-अलग नामों से पुकारा गया है, और कई मामलों में तो इनका कोई नाम भी नहीं रखा गया है। ये बस मौजूद हैं। 'छोटे लोग' बस एक सुविधाजनक नाम है। मेरी बेटी, जो उस समय छोटी बच्ची थी, इन्हें 'बौने' कहती थी। वही इन्हें लेकर आई थी। मैंने इनका नाम बदलकर 'छोटे लोग' रख दिया क्योंकि यह ज़्यादा उपयुक्त लगा।"
और तुम राजा बन गए।
उस आदमी ने नाक से जोर से सांस ली और उसे कुछ देर तक फेफड़ों में रोके रखा। फिर उसने धीरे-धीरे सांस छोड़ी।
मैं राजा नहीं हूँ। मैं तो वह हूँ जो उस आवाज़ को सुनता है।
"और अब तुम अपना नरसंहार करवाना चाहते हो।"
"यह नरसंहार होना जरूरी नहीं है। यह 1984 की बात है, एक महानगर के बीचोंबीच। यह खूनी होना जरूरी नहीं है। बस मेरी जान ले लो।"
ओमामे ने अपना सिर हिलाया और शांत हो गई। सुई की नोक अभी भी उसी जगह पर थी, लेकिन उसे उस आदमी को मारने की कोई इच्छा नहीं हुई।
"तुम पहले भी कई छोटी बच्चियों का बलात्कार कर चुके हो," उसने कहा। ऐसी बच्चियां जिनकी उम्र दस साल भी नहीं थी।
"बिल्कुल सही। आम धारणा के अनुसार, हर चीज़ को इसी तरह समझा जाता है। सांसारिक नियमों के अनुसार, मैं अपराधी हूँ। मैंने उन महिलाओं के साथ शारीरिक संबंध बनाए जो अभी परिपक्व नहीं थीं। जबकि मैं ऐसा नहीं चाहता था।"
ओमामे ने गहरी सांस ली। उसे समझ नहीं आ रहा था कि अपने अंदर उमड़ रही भावनाओं को कैसे शांत करे। उसका चेहरा भावविभोर था, और उसके बाएं और दाएं हाथ अलग-अलग चीजें चाह रहे थे।
“काश तुम मुझे मार डालते,” उस आदमी ने कहा। “अगर मैं इस दुनिया में किसी भी रूप में न होता तो बेहतर होता। मैं वह आदमी हूँ जिसे दुनिया का संतुलन बनाए रखने के लिए मरना होगा।”
"और तुम्हें मारने के बाद क्या होगा?"
"छोटे लोग उस व्यक्ति को खो देते हैं जो आवाज़ सुनता है। और मेरी कोई संतान नहीं है।"
"मैं ऐसी बात पर क्यों विश्वास करूं?" आओमामे भड़क उठी। शायद तुम सिर्फ एक विकृत मानसिकता वाले व्यक्ति हो जिसने अपने घिनौने कृत्यों को सही ठहराने के लिए एक मनगढ़ंत सिद्धांत बना लिया है। बौने लोग कभी अस्तित्व में ही नहीं थे, तुम्हें ईश्वरीय वाणी सुनाई नहीं देती, और तुममें कोई कृपा नहीं है। शायद तुम

सिर्फ एक बर्बाद धोखेबाज हो जो पैगंबर या आध्यात्मिक नेता होने का ढोंग करता है।
"दाईं ओर साइडबोर्ड पर एक घड़ी है," उस आदमी ने सिर उठाए बिना कहा।
ओमामे ने अपनी दाहिनी ओर देखा और उसे कमर जितनी ऊँची एक लंबी साइडबोर्ड दिखाई दी, जिस पर संगमरमर की घड़ी रखी थी। वह बहुत भारी लग रही थी।
"उसे देखो! उससे अपनी नजरें मत हटाओ।"
ओमामे ने बात मान ली और अपना सिर दूसरी तरफ घुमाकर घड़ी पर टकटकी लगाए खड़ी रही। उसने महसूस किया कि उस आदमी के शरीर की हर मांसपेशी तन गई और पत्थर की तरह सख्त हो गई। इसके लिए उसे अविश्वसनीय रूप से बड़ी ताकत की ज़रूरत थी। मानो इस ताकत का जवाब देते हुए, घड़ी साइडबोर्ड की सतह से अलग होकर हवा में उठ गई। यह लगभग दो इंच ऊपर उठी और दस सेकंड तक हवा में थोड़ी कांपती हुई, हिचकिचाती हुई रुकी रही। फिर उस आदमी की मांसपेशियां ढीली पड़ गईं, और घड़ी एक धीमी सी आवाज़ के साथ साइडबोर्ड पर गिर पड़ी, मानो उसे अचानक याद आ गया हो कि पृथ्वी में गुरुत्वाकर्षण है।
उस आदमी ने लंबी, थकी हुई सांस छोड़ी।
"इतनी छोटी सी बात के लिए भी बहुत ताकत चाहिए," उसने अपने फेफड़ों से सारी हवा निकाल देने के बाद कहा। "इतनी ताकत कि मेरी सांस ही फूल गई। लेकिन शायद आप सोचेंगे कि मैं कोई बर्बाद धोखेबाज नहीं हूँ।"
ओमामे ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने उसे गहरी सांस लेने और अपनी ताकत वापस पाने का मौका दिया। साइडबोर्ड पर रखी घड़ी ऐसे धीरे-धीरे चल रही थी मानो कुछ हुआ ही न हो। वह बस थोड़ी सी एक तरफ हटी हुई थी। ओमामे ने देखा कि दूसरे कमांडर ने पूरा चक्कर लगा लिया।
"तुम्हारे पास विशेष क्षमताएं हैं," उसने रूखे स्वर में कहा।
- जैसा कि आप देख रहे हैं।
— 'द ब्रदर्स करामाज़ोव' में ईसा मसीह और शैतान की कहानी है। ईसा मसीह रेगिस्तान में प्रार्थना कर रहे होते हैं, और शैतान उनसे एक चमत्कार करने को कहता है। पत्थर को रोटी में बदलने को। लेकिन ईसा मसीह उसकी बात नहीं मानते, क्योंकि चमत्कार शैतान को लुभाने का एक तरीका है।
"मुझे पता है। मैंने भी 'द ब्रदर्स करामाज़ोव' पढ़ी है। और हाँ, आप सही कह रहे हैं। इस तरह का प्रदर्शन किसी समस्या का समाधान नहीं करता, लेकिन मेरे पास आपको समझाने के लिए सीमित समय है। और मैंने आपको दिखाना बेहतर समझा।"
ओमामे चुप रही।
— यदि संसार में पूर्ण अच्छाई नहीं है, तो पूर्ण बुराई भी नहीं है, वे आगे कहते हैं। अच्छाई और बुराई स्थिर और अटल चीजें नहीं हैं, बल्कि निरंतर अपना स्थान और स्थिति बदलती रहती हैं। एक पल में अच्छाई बुराई में बदल सकती है। और इसका उल्टा भी हो सकता है। दोस्तोवस्की ने भी 'द ब्रदर्स करामाज़ोव' में यही बात कही है। महत्वपूर्ण बात है इन दोनों के बीच संतुलन बनाए रखना। यदि संतुलन एक तरफ बहुत अधिक झुक जाता है, तो नैतिकता को बनाए रखना मुश्किल हो जाता है। संतुलन अपने आप में एक अच्छी बात है। और इसी अर्थ में मुझे मरना होगा, ताकि संतुलन बना रहे।
"मुझे तुम्हें मारने की कोई ज़रूरत नहीं दिखती," आओमामे ने सीधे-सीधे कहा।
"जैसा कि तुम भली-भांति जानते हो, मैं तुम्हें मारने ही आई थी, क्योंकि मैं

सोचती थी कि ऐसे आदमी को ज़िंदा नहीं रहने दे सकती। मेरा इरादा तुम्हें हर हाल में इस दुनिया से मिटा देना था। लेकिन अब मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं है। तुम बहुत कष्ट सह रहे हो, और मैं तुम्हारा कष्ट समझती हूँ। तुम्हें इसी तरह दर्द से तड़पते हुए मरना होगा। मैं तुम्हें अपने हाथों से आसान मौत देना नहीं चाहती।"
पेट के बल लेटे हुए उस व्यक्ति ने संक्षिप्त रूप से सिर हिलाया।
"अगर तुम मुझे मारोगे, तो मेरे लोग तुम्हें हमेशा के लिए ढूंढ निकालेंगे। वे कट्टरपंथी हैं और बहुत शक्तिशाली हैं। अगर मैं गायब हो जाऊं, तो मेरा संप्रदाय वह शक्ति खो देगा जो सबको एक साथ बांधे रखती है। लेकिन एक बार कोई व्यवस्था बन जाए, तो वह अपने आप चलने लगती है।"
ओमामे बिना कुछ कहे उसकी बातें सुनती रही।
"मैंने तुम्हारे दोस्त को चोट पहुंचाई," उस आदमी ने कहा।
- मेरा दोस्त?
"हां, हथकड़ी वाली। उसका नाम क्या था?"
ओमामे का मन अचानक पूरी तरह शांत हो गया। अब कोई लड़ाई नहीं हो रही थी। बस सन्नाटा छाया हुआ था।
“आयुमी नाकानो,” उसने कहा।
— उसे बहुत बड़ा दुर्भाग्य झेलना पड़ा।
"क्या तुमने उसके साथ ऐसा किया?" आओमामे ने ठंडे स्वर में पूछा। "क्या तुमने अयुमी को मार डाला?"
नहीं, मैंने उसे नहीं मारा।
"लेकिन आप जानते हैं कि उसकी हत्या की गई थी।"
"मेरे जांचकर्ताओं ने यह पता लगा लिया। लेकिन हमें यह पता नहीं चला कि उसकी हत्या किसने की। मुझे बस इतना पता है कि आपके पुलिस मित्र का होटल के कमरे में गला घोंटकर हत्या कर दी गई।"
ओमामे का दाहिना हाथ फिर से तन गया।
"लेकिन आपने कहा था कि आपने उसे चोट पहुंचाई है।"
"मैं उसकी मौत को रोक नहीं सका। हत्यारा चाहे जो भी हो, सबसे कमजोर हिस्सा ही सबसे पहले निशाना बनता है। भेड़िये हमेशा झुंड की सबसे कमजोर भेड़ को घेर लेते हैं।"
"तो अयुमी मेरी कमजोरी थी?"
उस आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया। आओमामे ने अपनी आँखें बंद कर लीं।
"लेकिन उसे मरना ही क्यों पड़ा? वह बेहद अच्छी लड़की थी। उसने कभी किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। क्या मेरी संलिप्तता के कारण? तो फिर मुझे सीधे क्यों नहीं मारा गया?"
वे तुम्हें नष्ट नहीं कर सकते।
"क्यों? वे मुझे नष्ट क्यों नहीं कर सकते?"
— क्योंकि आप पहले से ही एक खास इंसान हैं।
"खास इंसान," आओमामे ने दोहराया। "कितना खास?"
आपको जल्द ही पता चल जाएगा।
"जल्द ही?"
जब समय आएगा।

ओमामे ने फिर से भौंहें चढ़ाईं।
मुझे आपकी बात समझ नहीं आ रही है।
आपको कभी न कभी समझ आ जाएगा।
ओमामे ने अपना सिर हिलाया।
"तो अभी वे मुझ पर हमला नहीं कर सकते, इसीलिए उन्होंने मेरे आस-पास के सबसे कमजोर व्यक्ति को चुना। ताकि तुम्हें जान से न मारने की चेतावनी दी जा सके।" वह व्यक्ति चुप रहा। उसकी चुप्पी एक सहमति का प्रतीक थी।
"यह बहुत बुरा है," आओमामे ने फिर से सिर हिलाते हुए कहा। "उन्होंने उसे बेवजह मार डाला, क्योंकि असल में कुछ भी नहीं बदला है।"
नहीं, वे हत्यारे नहीं हैं। वे अपने हाथों से किसी को नष्ट नहीं करते। तुम्हारी सहेली की मौत उसके भीतर की बुराई के कारण हुई। यह त्रासदी तो होनी ही थी। उसका जीवन जोखिमों से भरा था, और उन्होंने उसे एक प्रोत्साहन दिया, बस इतना ही। उन्होंने खतरे की घंटी का समय बदल दिया।
अलार्म का समय?
"आयुमी कोई अलार्म घड़ी नहीं थी! वह एक इंसान थी। चाहे उसका जीवन जोखिमों से भरा रहा हो या नहीं, वह मेरी बहुत प्यारी दोस्त थी। और तुमने पलक झपकाए उसे मुझसे छीन लिया। संवेदनहीन, क्रूर।"
"तुम्हारा गुस्सा जायज़ है," उस आदमी ने कहा। "बेहतर होगा कि तुम अपना गुस्सा मुझ पर निकालो।"
"तुम्हारी मौत से अयुमी वापस नहीं आएगी," आओमामे ने सिर हिलाते हुए कहा। "लेकिन तुम छोटे लोगों को उसी तरह सबक सिखा सकते हो। तुम उनसे बदला ले सकते हो। वे अभी मुझे मरा हुआ नहीं देखना चाहते। अगर मैं अभी मर जाऊं, तो एक खालीपन पैदा हो जाएगा। एक अस्थायी खालीपन, जब तक कोई उत्तराधिकारी सामने नहीं आता। यह उनके लिए एक बड़ा झटका होगा, और तुम इसका फायदा उठा सकते हो।"
किसी ने एक बार कहा था कि बदला लेने से ज्यादा महंगा और उससे ज्यादा बेकार कुछ नहीं होता।
— विंस्टन चर्चिल। लेकिन, जहाँ तक मुझे याद है, उन्होंने यह बात ब्रिटेन के बजट घाटे को जायज़ ठहराने के लिए कही थी। बिना किसी नैतिक आधार के।
"नैतिक हो या न हो, मुझे परवाह नहीं। मुझे अब हाथ नीचे करने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि तुम वैसे भी दर्दनाक मौत मरोगे, पता नहीं कौन तुम्हें खा जाएगा। मुझे तुम पर दया करने का कोई कारण नहीं है। अगर दुनिया अपनी नैतिकता खोकर टुकड़े- टुकड़े हो जाती है, तो यह मेरी गलती नहीं होगी।"
उस आदमी ने एक और गहरी सांस ली।
"अहा। मैं समझ गया। तो फिर, हम इसे ऐसे करते हैं। हम एक समझौता करते हैं। अगर तुम मुझे अभी मार दोगे, तो मैं टेंगो कावाना की जान बचा लूंगा। कम से कम इतनी शक्ति तो मुझमें बची रहेगी।"
"टेंगो," आओमामे ने कहा, मानो उसके शरीर से सारी शक्ति निकल रही हो। और तुम्हें यह पता है?
"मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ जानता हूँ। मैंने तुम्हें बताया था ना? मतलब, मैं लगभग सब कुछ जानता हूँ।"
"लेकिन तुम मुझे इतनी अच्छी तरह से नहीं समझ सकते थे। मैंने कभी टेंगो का नाम अपने दिमाग से निकलने नहीं दिया।"

"आओमामे," उस आदमी ने आह भरते हुए कहा। "इस दुनिया में कुछ चीजें ऐसी होती हैं जिन्हें आप खो नहीं सकते। और संयोग से, इस समय, टेंगो कावाना हमारे लिए विशेष महत्व का व्यक्ति है।"
ओमामे के पास कहने के लिए शब्द नहीं थे।
"सच कहूँ तो, यह महज एक संयोग नहीं है," उस व्यक्ति ने आगे कहा। "आपकी नियति आपको यहाँ संयोग से नहीं लाई। आपको इस दुनिया में आना ही था। और चाहे आपको पसंद हो या न हो, एक बार यहाँ आने के बाद, आपमें से प्रत्येक को अपनी भूमिका मिल गई।"
"क्या मैं इस दुनिया में प्रवेश कर चुका हूँ?"
— जी हाँ, वर्ष 1Q84 में।
“1Q84?” आओमामे ने कहा, उसका चेहरा फिर से विकृत हो गया।
यह शब्द मैंने खुद बनाया है!
"हाँ, तुमने ही इसका आविष्कार किया था," उस आदमी ने ऐसे कहा मानो उसने उसके मन की बात पढ़ ली हो। "लेकिन मैंने खुद भी इसका इस्तेमाल किया था।"
1Q84, आओमामे ने धीरे से कहा।
"इस दुनिया में ऐसी कोई चीज नहीं है जिसकी आपको कमी महसूस न हो," नेता ने शांत स्वर में दोहराया।

अध्याय 12 उंगलियों पर नहीं गिन सकते

बारिश शुरू होने से पहले ही टेंगो लौट आया। वह स्टेशन से अपने घर तक तेज़ी से चलकर आया था। शाम के आसमान में अभी तक एक भी बादल नहीं था। बारिश या गरज का कोई आभास नहीं था। राहगीरों में से किसी के पास भी छाता नहीं था। यह एक सुहावनी गर्मी की शाम थी, बेसबॉल मैच देखने और बीयर पीने के लिए एकदम सही। लेकिन कुछ समय से वह फुकाएरी की बातों पर आँख बंद करके विश्वास करने को तैयार था। उस पर शक करने के बजाय उस पर विश्वास करना बेहतर लग रहा था, इसलिए नहीं कि उसके पास कोई तर्क था, बल्कि इसलिए कि अनुभव ने उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया था। मेलबॉक्स में देखने पर उसे एक आधिकारिक दिखने वाला लिफाफा मिला, लेकिन उस पर भेजने वाले का पता नहीं था। उसने तुरंत उसे खोला। अंदर एक सूचना थी जिसमें बताया गया था कि उसके बैंक खाते में 1,627,534 येन ट्रांसफर किए गए हैं। यह पैसा ईआरआई ऑफिस से आया था। यह निस्संदेह कोमात्सु द्वारा स्थापित फर्जी कंपनी थी। या शायद यह प्रोफेसर एबिसुनो की ओर से था। कोमात्सु ने उसे बहुत पहले बताया था कि वह उसे 'द एयर क्राइसालिस' की रॉयल्टी का एक हिस्सा देगा। शायद यही बात रही होगी। भुगतान का कारण शायद "परामर्श" या "अनुसंधान" जैसा कुछ बताया गया होगा। टेंगो ने एक बार फिर रकम की जाँच की, फिर कागज को वापस लिफाफे में रखा और लिफाफे को अपनी जेब में रख लिया।
टेंगो के लिए सोलह लाख येन एक बड़ी रकम थी (सच तो यह था कि उसके पास एक साथ इतनी बड़ी रकम कभी नहीं आई थी), लेकिन उसे न तो आश्चर्य हुआ और न ही खुशी। फिलहाल, आर्थिक समस्याएं उसकी चिंता का विषय नहीं थीं। उसके पास एक स्थिर आमदनी थी और वह एक सम्मानजनक जीवन जी रहा था। कम से कम अभी के लिए, उसे भविष्य की कोई चिंता नहीं थी। फिर भी, हर कोई उसे पैसे देना चाहता था। कितनी अजीब दुनिया है! दूसरी ओर, 'द एयर क्राइसालिस' के पुनर्लेखन के लिए एक मिलियन छह लाख येन की रकम उसे कम लग रही थी, खासकर उसके द्वारा किए गए खर्च को देखते हुए। सच है, अगर कोई उससे पूछता कि उसके हिसाब से उचित रकम क्या होनी चाहिए, तो उसे जवाब देना नहीं आता। सबसे पहले तो, उसे यह नहीं पता था कि मुसीबतों की कोई उचित कीमत हो सकती है या नहीं। दुनिया में ऐसी कई मुसीबतें हैं जिन्हें पैसों से नहीं खरीदा जा सकता। 'द एयर क्राइसालिस' की बिक्री अभी भी अच्छी चल रही थी और शायद भविष्य में और भी भुगतान होंगे, लेकिन जैसे-जैसे उसके बैंक खाते में रकम बढ़ती गई, वैसे-वैसे उसकी मुसीबतें भी बढ़ती गईं। उसे मिलने वाली फीस जितनी ज़्यादा होती गई, इस पूरे मामले में उसकी भागीदारी उतनी ही बढ़ती गई।
उसने सोचा कि अगर वह अगली सुबह सबसे पहले कोमात्सु को पैसे लौटा दे तो कैसा रहेगा। इस तरह वह कुछ हद तक ज़िम्मेदारी से बच सकता था और शायद उसे और भी राहत मिलती। कम से कम उसके पास यह सबूत तो होता कि उसने पैसे देने से इनकार कर दिया था। लेकिन इससे उसकी नैतिक ज़िम्मेदारी खत्म नहीं होती। इससे उसका किया हुआ दोष सुधरता नहीं, बल्कि उसे कुछ हद तक राहत मिलती। या शायद, इसके विपरीत, इससे उसके कार्यों पर और भी संदेह पैदा हो जाता। कि उसने अपराधबोध के कारण पैसे लौटाए थे।

इन सब बातों को लेकर परेशान होते-होते उसके सिर में दर्द होने लगा। उसने सोलह लाख येन के बारे में सोचना छोड़ दिया। समय आने पर सोच लेगा। पैसा तो जीवित नहीं होता, उसे वहीं छोड़ दो, वो कहीं भाग नहीं जाएगा। शायद।
*

दूसरी मंजिल पर स्थित अपने अपार्टमेंट की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए टेंगो सोच रहा था कि अब समस्या यह है कि वह अपने जीवन को फिर से पटरी पर कैसे लाए। बोसो प्रायद्वीप के दक्षिण में अपने पिता से मिलने के बाद, उसे कुछ हद तक यकीन हो गया था कि वह उसका असली पिता नहीं था। अब वह एक नई शुरुआत कर सकता था। शायद यह उसके लिए अपने जीवन की सारी परेशानियों से छुटकारा पाने और अपने जीवन को फिर से संवारने का एक अच्छा अवसर था। एक नई नौकरी, एक नया घर, नए लोग। वह पूरी तरह से आश्वस्त नहीं था, लेकिन उसे यह आभास था कि वह पहले की तुलना में अधिक व्यवस्थित जीवन जी सकता है।
लेकिन इससे पहले कि वह यह कदम उठाता, उसे कुछ चीज़ें ठीक करनी थीं। वह यूँ ही गायब नहीं हो सकता था और फुकाएरी, कोमात्सु और प्रोफेसर एबिसुनो को पीछे नहीं छोड़ सकता था। ज़ाहिर है, उन पर उसका कोई दायित्व नहीं था, कोई नैतिक ज़िम्मेदारी नहीं थी। जैसा कि उशिकावा ने कहा था, इस पूरे मामले में मुसीबत में वही फँसा था। लेकिन भले ही उसे लगभग अपनी मर्ज़ी के खिलाफ इस स्थिति में घसीटा गया हो, और भले ही उसे इसके पीछे की साज़िशों की जानकारी न हो, फिर भी वह इस षड्यंत्र का हिस्सा था। वह उन्हें यह कहकर अकेला नहीं छोड़ सकता था कि अब उसकी कोई दिलचस्पी नहीं है और उन्हें अपने हाल पर छोड़ दे। अब से वह जो भी करने का फैसला करे, जहाँ भी जाए, उसे पहले अपने आस-पास की व्यवस्था ठीक करनी होगी। वरना, उसका नया जीवन शुरू से ही दागदार हो सकता था।
“अपवित्र” शब्द सुनते ही उसे उशिकावा की याद आ गई। और वो? तेंगो ने आह भरी। उसने दावा किया कि उशिकावा के पास उसकी माँ के बारे में जानकारी थी और वो उसे देने को तैयार था।
यदि आप और अधिक जानना चाहते हैं, तो हम आपको यह जानकारी दे सकते हैं। लेकिन इसमें कुछ अप्रिय जानकारी भी हो सकती है।
टेंगो ने कोई जवाब नहीं दिया। उसे उशिकावा से अपनी माँ के बारे में कुछ भी सुनने की इच्छा नहीं थी। उसके मुँह से मिली जानकारी चाहे जो भी हो, दूषित ही होती। वास्तव में, टेंगो किसी से भी यह सुनना नहीं चाहता था। यदि उसे अपनी माँ के बारे में जानकारी मिलनी थी, तो वह पूरी तरह से मिलनी चाहिए थी, टुकड़ों में नहीं, किसी रहस्योद्घाटन के रूप में नहीं। यह एक विस्तृत और स्पष्ट दृश्य होना चाहिए था, जिसे पल भर में समझा जा सके।
उसे पता नहीं था कि उसे कभी ऐसा कोई नाटकीय रहस्योद्घाटन होगा या नहीं। शायद ऐसा कभी न हो। लेकिन उसे कुछ भव्य, कुछ ऐसा चाहिए था जो उसे अभिभूत कर दे, कुछ ऐसा जो उस भयावह मतिभ्रम को टक्कर दे और उससे भी कहीं बढ़कर हो जिसने उसे इतने वर्षों तक इतना कष्ट दिया और परेशान किया था। उसे कुछ ऐसा चाहिए था जो उसे शुद्ध कर दे। चम्मच से दी गई अधूरी जानकारी उसके किसी काम की नहीं थी।
दूसरी मंजिल की सीढ़ियाँ चढ़ते समय टेंगो के मन में ये विचार आए।
*

फुकेरी ने अपना सिर हिलाया। उसे नहीं पता था।
"और तुम उसे यह बात नहीं बताओगे?"
फुकेरी ने फिर से अपना सिर हिलाया।
मैं उससे संपर्क नहीं कर पा रहा हूँ।
— क्यों, क्योंकि यह खतरनाक है?
हो सकता है कि फोन टैप किया जा रहा हो और हो सकता है कि चिट्ठियां पहुंच ही न पाएं।
"तो सिर्फ मुझे ही पता है कि तुम यहां हो।"
फुकेरी ने सिर हिलाया।
"क्या आपके पास बदलने के लिए कपड़े हैं?"
"कुछ ही हैं," फुकेरी ने अपने लाए हुए कैनवास बैग को देखते हुए कहा। "इसमें ज़्यादा कपड़े तो नहीं थे। लेकिन मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता," लड़की ने आगे कहा।
"अगर इससे आपको कोई परेशानी नहीं है, तो मुझे भी कोई परेशानी नहीं है," टेंगो ने कहा।
टेंगो रसोई में गया और केतली में पानी उबालने के लिए रख दिया, फिर उसने कुछ काली चाय की पत्तियां लीं और उन्हें अलग से एक केतली में उबालने लगा।
"क्या तुम्हारा दोस्त यहाँ आ रहा है?" फुकेरी ने पूछा।
"वह अब नहीं आ रहा है," टेंगो ने थोड़ी सी मुस्कान के साथ कहा।
फुकेरी ने चुपचाप उसकी ओर देखा।
उन्होंने आगे कहा, "फिलहाल के लिए।"
"मेरी वजह से?" फुकेरी ने पूछा।
टेंगो ने अपना सिर हिलाया।
मुझे नहीं पता कि इसमें किसकी गलती है। लेकिन तुम्हारी गलती तो नहीं है। शायद मेरी गलती है। और हो सकता है कि इसमें उसका भी थोड़ा-बहुत हाथ हो।
"वैसे भी, वह अब यहां नहीं आता।"
"नहीं, वह अब नहीं आ रहा है। शायद। इसलिए आप जितनी देर चाहें उतनी देर रुक सकते हैं।"
फुकेरी ने कुछ देर सोचा।
"क्या वह शादीशुदा है?" उसने पूछा।
— जी हाँ, वह शादीशुदा है और उसके दो बच्चे हैं।
वे आपके बच्चे नहीं हैं।
"बेशक ये मेरे नहीं हैं। ये तो उनके पास तब से हैं जब वे हमें जानते भी नहीं थे।"
— तुम्हें वो पसंद थी।
"शायद," टेंगो ने कहा। "सीमा के भीतर," उसने मन ही मन कहा।
"वह भी तुम्हें पसंद करती थी।"
"शायद। कुछ हद तक।"
तुम उसके साथ यौन संबंध बना रहे थे।
टेंगो को यह समझने में कुछ सेकंड लगे कि फुकाएरी ने 'सेक्स' शब्द का इस्तेमाल किया था। उसके लिए यह कल्पना करना मुश्किल था कि वह यह शब्द बोल सकती है। "बिल्कुल। बस हम हर हफ्ते मोनोपोली खेलने के लिए नहीं मिलते थे।"

“मोनोपॉली?” उसने पूछा।
"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता," टेंगो ने कहा।
लेकिन अब वह यहां नहीं आता।
"कम से कम मुझे तो यही बताया गया है। कि वह दोबारा नहीं आएगा।"
"उसने तुम्हें बताया?" फुकेरी ने पूछा।
"नहीं, उसने मुझे सीधे तौर पर नहीं बताया। उसके पति ने मुझे बताया। उसने कहा कि वह रास्ता भटक गई है और अब मुझसे मिलने नहीं आएगी।"
- वह खो गई है।
मुझे भी समझ नहीं आया कि उसका क्या मतलब है। और मैंने व्यर्थ ही पूछा, क्योंकि वह मुझे समझाना ही नहीं चाहता था। मैंने बहुत कुछ पूछा, लेकिन उसने बहुत कम जवाब दिए। यह अनुचित व्यवहार है। क्या आप चाय पीना चाहेंगे?
फुकेरी ने सिर हिलाया।
टेंगो ने केतली में गर्म पानी डाला, ढक्कन लगाया और इंतजार करने लगा।
"आप कुछ नहीं कर सकते," फुकेरी ने कहा।
"किस बारे में? कि उसने मेरे सवालों का जवाब नहीं दिया या कि वह रास्ता भटक गई है?"
फुकेरी ने कोई जवाब नहीं दिया।
टेंगो ने हार मान ली और दो कपों में चाय डाल दी।
- चीनी?
"एक चम्मच, बहुत ज्यादा नहीं," फुकेरी ने कहा।
— आपको नींबू चाहिए या दूध?
फुकेरी ने सिर हिलाया। टेंगो ने एक चम्मच चीनी डाली, उसे मिलाया और चाय का प्याला उसके सामने रख दिया। उसने अपनी काली चाय ली और मेज के दूसरी तरफ बैठ गया।
"क्या तुम्हें सेक्स करना पसंद है?" उसने पूछा।
"क्या मुझे अपनी प्रेमिका के साथ यौन संबंध बनाना चाहिए?" टेंगो ने प्रश्न को कुछ अस्पष्ट ढंग से दोहराया।
फुकेरी ने सिर हिलाया।
"हाँ, बिल्कुल," उसने कहा। "आप विपरीत लिंग के किसी ऐसे व्यक्ति के साथ सोते हैं जिससे आपको स्नेह महसूस होता है। लोग आमतौर पर ऐसा करना पसंद करते हैं।" और वो इसमें बहुत माहिर थी, टेंगो ने मन ही मन सोचा। जैसे हर गाँव में कोई न कोई किसान सिंचाई में माहिर होता है, वैसे ही वो यौन संबंध में माहिर थी। उसे हर तरह की नई-नई चीजें आजमाना पसंद था।
"क्या तुम्हें इस बात का दुख है कि वह अब नहीं आता?" फुकेरी ने पूछा।
"शायद," टेंगो ने जवाब दिया और थोड़ी चाय पी ली।
— क्योंकि अब आप सेक्स नहीं कर सकते।
— बेशक, यह भी सच है।
फुकेरी ने सीधे उसकी आँखों में देखा। ऐसा लग रहा था कि वह किसी कामुक विचार के बारे में सोच रही है, लेकिन ज़ाहिर है कि कोई नहीं जान सकता था कि वास्तव में उसके मन में क्या चल रहा था।
“क्या तुम्हें भूख लगी है?” टेंगो ने पूछा।
फुकेरी ने सिर हिलाया।

मैंने सुबह से लगभग कुछ भी नहीं खाया है।
"तो चलिए कुछ तैयारी करते हैं," टेंगो ने कहा।
उसने नाश्ते के बाद से कुछ नहीं खाया था और उसे भूख लग रही थी। इसके अलावा, उसे खाना पकाने के अलावा और कुछ करने का भी कोई विचार नहीं था।
*

टेंगो ने चावल को पानी में धोया, उसे इलेक्ट्रिक पॉट में डाला और जब वह पक रहा था, उसने समुद्री शैवाल और हरे प्याज के साथ मिसो सूप बनाया। उसने कुछ सूखी मैकेरल मछली तली, फ्रिज से टोफू निकाला और उसमें थोड़ा सा अदरक मिलाया। उसने कुछ सफेद मूली कद्दूकस की। उसने बची हुई सब्जी की ग्रेवी को गर्म किया। उसने उसमें कुछ अचार वाले शलजम और बेर मिलाए। विशालकाय व्यक्ति के इधर-उधर घूमने से छोटी रसोई और भी तंग लगने लगी। लेकिन उसकी हरकतें बेढंगी नहीं थीं। वह लंबे समय से उपलब्ध चीजों से संतुष्ट रहने का आदी था।
"मुझे खेद है, लेकिन मैं आपको केवल एक बहुत ही साधारण भोजन ही दे सकता हूँ," टेंगो ने कहा।
फुकेरी उनकी सटीक गतिविधियों का बारीकी से अवलोकन करता है, और फिर मेज पर खूबसूरती से सजे उनके काम के परिणाम को देखता है।
आपको खाना बनाने की आदत है।
"क्योंकि मैं लंबे समय से अकेले रह रहा हूं। मैं जल्दी से कुछ बनाता हूं और जल्दी से खा लेता हूं। मुझे इसकी आदत हो गई है।"
— तुम हमेशा अकेले ही खाना खाते हो।
हां। मैं शायद ही कभी किसी के साथ रात का खाना खाता हूं। मेरी गर्लफ्रेंड और मैं हफ्ते में एक बार साथ में लंच करते हैं। लेकिन रात के खाने की बात करें तो मुझे याद भी नहीं कि आखिरी बार हमारे घर मेहमान कब आए थे।
"क्या तुम तनाव में हो?" फुकेरी ने पूछा।
टेंगो ने अपना सिर हिलाया।
"नहीं, मैं तनाव में नहीं हूँ। यह तो बस रात का खाना है। मेरे लिए यह थोड़ा असामान्य है।"
मैं हमेशा बहुत से लोगों के साथ खाना खाती हूँ। जब मैं छोटी थी तब से हम सब साथ रहते थे। और जब मैं प्रोफेसर के घर गई, तो बहुत से लोग आए और हमने साथ में खाना खाया। प्रोफेसर के यहाँ बहुत सारे मेहमान आते रहते हैं।
यह पहली बार था जब उसने उसे एक साथ इतने सारे वाक्य बोलते हुए सुना था।
“लेकिन जब तुम छिप रहे थे, तो तुम हमेशा अकेले ही खाना खाते थे, है ना?” टेंगो ने पूछा।
फुकेरी ने सिर हिलाया।
“तुम कहाँ छिपे हुए थे?” टेंगो ने पूछा।
"बहुत दूर। शिक्षक ने छिपने की जगह का इंतजाम कर दिया है।"
और आप वहां अकेले क्या खा रहे थे?
"तुरंत बनने वाली चीज़ें। तैयार खाना," फुकेरी ने कहा। "मैंने बहुत दिनों से ठीक से खाना नहीं खाया है।"
फुकेरी ने बड़ी धीमी गति से चॉपस्टिक से मैकेरल मछली का मांस हड्डियों से अलग किया, उसे अपने मुंह में डाला और आराम से चबाया। ऐसा लग रहा था मानो वह कोई

अनोखी चीज़ खा रहा हो। उसने मिसो सूप का एक घूंट लिया और मानो उसके स्वाद का मूल्यांकन कर रहा हो। फिर उसने चॉपस्टिक मेज पर रख दी और सोच में डूब गया।
*

नौ बजने से कुछ ही देर पहले, उन्हें दूर से गरजने की आवाज़ सुनाई दी। उन्होंने पर्दा थोड़ा सा हटाया और बाहर देखा। घोर अंधेरे आकाश में, खतरनाक बादल एक के बाद एक सरकते जा रहे थे।
"जैसा आपने कहा। यहाँ कुछ बेहद अशांत बादल हैं," टेंगो ने पर्दा हटाते हुए कहा।
"छोटे लोग बेचैन हैं," फुकेरी ने गंभीरता से कहा।
जब छोटे लोग उत्तेजित होते हैं, तो क्या ये असामान्य वायुमंडलीय घटनाएं घटित होती हैं?
"यह निर्भर करता है। समय तो बस धारणा का मामला है।"
— क्या यह धारणा का मामला है?
फुकेरी ने अपना सिर हिलाया।
मुझे भी ठीक से समझ नहीं आता।
टेंगो को इतना भी समझ नहीं आया। उसके लिए, वायुमंडलीय घटनाएँ केवल वस्तुनिष्ठ, स्वतंत्र घटनाएँ थीं। लेकिन इस समस्या की आगे जाँच करने का शायद कोई फायदा नहीं था, क्योंकि इससे कुछ भी हासिल नहीं होता। इसलिए उसने एक और सवाल पूछने का फैसला किया।
"क्या छोटे लोग किसी कारण से नाराज थे?"
"कुछ तो होने वाला है," लड़की ने कहा।
— सी?
फुकेरी ने अपना सिर हिलाया।
हमें जल्द ही पता चल जाएगा।
बर्तन धोने और सुखाने के बाद, वे आमने-सामने बैठकर चाय पीने के लिए मेज पर बैठ गए। टेंगो को बीयर पीना ज़्यादा पसंद होता, लेकिन उसने सोचा कि आज शराब से परहेज़ करना ही बेहतर होगा। माहौल में गंभीर खतरे मंडरा रहे थे, और किसी अप्रिय घटना की आशंका में वह अपना दिमाग़ साफ़ रखना चाहता था।
"हमें जल्दी सो जाना चाहिए," फुकेरी ने कहा। फिर उसने अपने चेहरे को हाथों से ऐसे ढक लिया जैसे मुंच की उस मशहूर पेंटिंग में पुल पर चिल्लाते हुए आदमी को दिखाया गया है। लेकिन वह चिल्ला नहीं रही थी। उसे नींद आ रही थी।
"ठीक है। तुम बिस्तर पर सो जाओ। मैं पिछली बार की तरह सोफे पर सो जाऊंगा," टेंगो ने कहा। "तुम्हें चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, मैं कहीं भी सो जाऊंगा।"
वह सच कह रहा था। टेंगो कहीं भी सो सकता था, यह उसकी एक अद्भुत प्रतिभा थी। फुकेरी ने सिर हिलाया। बिना कोई राय व्यक्त किए, उसने टेंगो के चेहरे को गौर से देखा। फिर उसने अपने सुंदर कानों पर हाथ रखे, मानो यह सुनिश्चित कर रही हो कि वे अभी भी वहीं हैं।
"आपने मुझे पजामा नहीं दिया। मैं बिना पजामा के ही आया था।"
टेंगो बेडरूम में गया और दराज से नीले रंग का सूती पजामा निकाला। ये वही पजामा था जो उसने पिछली बार उसके घर रात बिताने के दौरान उसे दिया था। तब से ये धुल कर तह करके रखे जा चुके थे। टेंगो ने पजामा सूंघा, लेकिन उसे कोई गंध

नहीं आई। फुकाएरी ने पजामा लिया और कपड़े बदलने के लिए बाथरूम में चली गई, फिर मेज पर लौट आई। उसने अपने बाल खुले रखे थे। पिछली बार की तरह, उसने अपनी पैंट की आस्तीन और कफ ऊपर मोड़ लिए थे।
"अभी तो नौ बजे भी नहीं हैं," टेंगो ने दीवार पर लगी घड़ी की ओर देखते हुए कहा।
"क्या तुम हमेशा इतनी जल्दी सो जाते हो?"
फुकेरी ने अपना सिर हिलाया।
आज का दिन खास है।
"क्योंकि बाहर छोटे लोग हलचल मचा रहे हैं?"
मुझे नहीं पता। मुझे अभी नींद आ रही है।
"तुम नींद में लग रहे हो," टेंगो ने पुष्टि की।
"जब मैं सोने जाऊंगी तो क्या तुम मुझे कुछ पढ़कर सुनाओगे या कुछ बताओगे?" फुकेरी ने पूछा।
"ज़रूर," टेंगो ने कहा। "वैसे भी मेरे पास करने के लिए और कुछ नहीं है।"
वह एक गर्म और उमस भरी शाम थी, लेकिन जब फुकाएरी बिस्तर पर लेटी, तो उसने अपना कंबल गर्दन तक खींच लिया, मानो खुद को दुनिया से अलग करना चाहती हो। बिस्तर पर वह एक नन्ही बच्ची जैसी लग रही थी, जिसकी उम्र बारह साल से ज़्यादा नहीं थी। बाहर गरज तेज़ हो गई थी। जल्द ही वह पास तक पहुँचने वाली थी। हर बार गरजने पर खिड़कियाँ हिल जाती थीं। हैरानी की बात यह थी कि बिजली नहीं चमक रही थी। केवल तेज़ गड़गड़ाहट ही काले आसमान को चीर रही थी। बारिश का कोई नामोनिशान नहीं था। कुछ तो पूरी तरह से असंतुलित था।
"वे हमारी तरफ देख रहे हैं," फुकेरी ने कहा।
— छोटे लोग?
फुकेरी ने कोई जवाब नहीं दिया।
“क्या उन्हें पता है कि हम यहाँ हैं?” टेंगो ने पूछा।
"बेशक मुझे पता है," फुकेरी ने जवाब दिया।
वे हमारे साथ क्या करने वाले हैं?
वे हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।
"बहुत बढ़िया," टेंगो ने कहा।
— फिलहाल के लिए।
"फिलहाल वे हमें नुकसान नहीं पहुंचा सकते," टेंगो ने कमजोर आवाज में कहा।
"लेकिन हमें नहीं पता कि कब तक।"
"किसी को नहीं पता," फुकेरी ने दृढ़ता से कहा।
"लेकिन भले ही वे हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते, क्या वे हमारे आस-पास के लोगों को प्रभावित कर सकते हैं?" टेंगो ने यह जानने की कोशिश की।
— सब कुछ संभव है।
"हो सकता है उसके साथ कुछ भयानक घटित हो जाए।"
फुकेरी ने गंभीर भाव से अपनी आँखें सिकोड़ीं, मानो कोई नाविक समुद्री आत्मा का गीत सुनने की कोशिश कर रहा हो। फिर उसने कहा:
— यह निर्भर करता है।
"हो सकता है कि छोटे लोगों ने मेरे दोस्त के खिलाफ अपनी शक्ति का इस्तेमाल किया हो। मुझे चेतावनी देने के लिए।"

फुकेरी ने कंबल के नीचे से एक हाथ बाहर निकाला और कुछ बार अपना कान खुजाया।
फिर उसने आज्ञाकारी भाव से अपना हाथ वापस कंबल के नीचे रख लिया।
— छोटे लोगों की शक्तियां सीमित हैं।
टेंगो ने अपने होंठ काट लिए।
वे वास्तव में क्या कर सकते हैं?
फुकेरी कुछ कहने ही वाली थी कि उसने अपना इरादा बदल दिया। उसके विचार अनसुने रह गए और वापस वहीं लौट गए जहाँ से आए थे। कहाँ, यह कोई नहीं जानता, लेकिन एक गहरी और अंधेरी जगह में।
"आपने कहा था कि छोटे लोगों के पास शक्ति और ज्ञान होता है।"
फुकेरी ने सिर हिलाया।
लेकिन उनकी भी कुछ सीमाएं हैं।
फुकेरी ने सिर हिलाया।
"क्योंकि वे घने जंगल में रहते हैं और जब वे वहां से बाहर निकलते हैं तो वे अपनी शक्ति को उतनी अच्छी तरह से प्रकट नहीं कर पाते। और दुनिया में कुछ ऐसे मूल्य हैं जो उनकी शक्ति और ज्ञान का विरोध कर सकते हैं। कुछ ऐसा ही?"
फुकेरी ने कोई जवाब नहीं दिया। शायद सवाल बहुत लंबा था।
“क्या तुम बौने लोगों से मिले हो?” टेंगो ने कहा।
फुकाएरी ने अनमने ढंग से टेंगो की ओर देखा। ऐसा लग रहा था कि उसे प्रश्न का अर्थ समझ नहीं आया था।
“तुमने उन्हें सचमुच देखा था, है ना?” टेंगो ने दोहराया।
- मैंने उन्हें देखा था।
आपने कितने देखे?
मुझे नहीं पता। मैं उन्हें उंगलियों पर गिन भी नहीं सकता।
लेकिन एक से अधिक।
"कभी ज़्यादा, कभी कम। लेकिन कभी भी सिर्फ़ एक नहीं।"
— जैसा कि आपने 'द एयर क्राइसालिस' में वर्णित किया है।
फुकेरी ने सिर हिलाया।
टेंगो ने हिम्मत जुटाकर वह सवाल पूछा जो उसे लंबे समय से परेशान कर रहा था:
— 'द एयर क्राइसालिस' में से कितना हिस्सा सचमुच घटित हुआ था?
"सच का क्या मतलब है?" फुकेरी ने बिना किसी सवालिया लहजे के कहा।
टेंगो के पास इसका कोई जवाब नहीं था।
*

बिजली कड़कने की आवाज़ तेज़ हो गई और खिड़कियाँ खड़खड़ाने लगीं। लेकिन अभी भी बिजली नहीं चमकी थी, और बारिश की कोई आवाज़ नहीं थी। टेंगो को बहुत पहले देखी एक पनडुब्बी वाली फिल्म याद आई। पनडुब्बी डेप्थ चार्ज के फटने से काँप उठी थी। चालक दल उस धातु के पिंजरे में बंद था, अँधेरे में डूबा हुआ, बाहर कुछ भी देखने में असमर्थ। बस लगातार धमाके और लगातार धमाकों की आवाज़ ही सुनाई दे रही थी।
"क्या तुम मुझे कहानी पढ़कर सुना रहे हो या पढ़ कर सुना रहे हो?" फुकेरी ने कहा।

"हाँ," टेंगो ने उत्तर दिया। "लेकिन मुझे कोई ऐसी किताब याद नहीं आ रही जिसे ज़ोर से पढ़कर सुनाया जा सके। मेरे पास अभी वह किताब नहीं है, लेकिन अगर आप चाहें तो मैं आपको बिल्लियों के शहर की कहानी सुना सकता हूँ।"
बिल्लियों का शहर।
— बिल्लियों द्वारा शासित एक शहर।
- मुझे बताओ।
— यह थोड़ा डरावना हो सकता है और सोने से पहले ऐसा करना ठीक नहीं होगा। "इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं किसी भी चीज के साथ सो सकता हूँ।"
टेंगो ने पलंग के पास एक कुर्सी खींची और बैठ गया। उसने अपनी उंगलियाँ घुटनों पर आपस में जोड़ लीं और गरज की आवाज़ के बीच फुकाएरी को कैट टाउन की कहानी सुनाने लगा। उसने इसे ट्रेन में दो बार और अपने पिता को एक बार पढ़कर सुनाया था, इसलिए उसे यह कहानी अच्छी तरह याद थी। यह कोई छोटी कहानी नहीं थी जिसमें बारीकियाँ हों या परिष्कृत शैली में लिखी गई हो, इसलिए टेंगो को इसे कहानी में बदलने में कोई परेशानी नहीं हुई। कहानी सुनाते हुए, उसने उबाऊ हिस्सों को छोड़ दिया और अपनी ओर से कुछ ऐसी घटनाएँ जोड़ दीं जो उसे उपयुक्त लगीं। कहानी बहुत लंबी नहीं थी, लेकिन जब उसने इसे पूरा किया, तो उसने महसूस किया कि जितना समय उसने सोचा था उससे कहीं अधिक बीत चुका था। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि फुकाएरी ने उसे कई बार टोककर तरह-तरह के सवाल पूछे थे। तेंगो ने शांति से उसके सवालों के जवाब दिए। शहर के बारे में, बिल्लियों के कामों के बारे में, किरदार के व्यक्तित्व के बारे में। जब उसके सवालों के जवाब मूल कहानी में नहीं होते थे - जो कि ज्यादातर मामलों में होता था - तो वह मौके पर ही एक उपयुक्त जवाब गढ़ लेता था। जैसे कि जब वह 'द एयर क्राइसालिस' पर काम कर रही थी। फुकाएरी बिल्लियों के शहर की कहानी में पूरी तरह से मग्न थी और अब उसे नींद नहीं आ रही थी। वह बीच-बीच में अपनी पलकें बंद कर लेती ताकि वह अपने मन में बिल्लियों के शहर के दृश्य देख सके। फिर वह पलकें खोलकर तेंगो से एक और सवाल पूछती।
कहानी खत्म करने के बाद, फुकाएरी ने अपनी आँखें चौड़ी कर लीं और कुछ देर तक टेंगो को घूरता रहा। जैसे कोई बिल्ली अपनी पुतलियों को फैलाकर अंधेरे में किसी चीज़ को घूर रही हो।
"तुम कैट टाउन में थे," उसने ऐसे कहा मानो वह उसे इसके लिए जिम्मेदार ठहरा रही हो।
- यूरोपीय संघ?
"तुम वहां थे, बिल्लियों के शहर में। और तुम ट्रेन से वापस आए।"
"क्या आपको ऐसा महसूस होता है?"
फुकेरी ने अपनी ठुड्डी तक खींचे हुए पतले ग्रीष्मकालीन कंबल के नीचे से सिर हिलाया।
"बिल्कुल सही," टेंगो ने कहा। "मैं बिल्लियों के शहर गया, ट्रेन में चढ़ा और वापस आ गया।"
और उसके बाद आपने स्वयं को शुद्ध किया।
"शुद्ध हो गया?" टेंगो ने कहा। नहीं, अभी नहीं।
- मुझे करना होगा।
और मैं यह कैसे कर सकता था?
फुकेरी ने कोई जवाब नहीं दिया।

इसके बजाय उसने कहा, "अगर आप कैट टाउन जा चुके हैं, तो इस तरह रहना अच्छा नहीं है।"
इतनी ज़ोरदार बिजली कड़की कि मानो आसमान फट जाएगा। आवाज़ लगातार तेज़ होती गई। फुकाएरी सिकुड़कर बिस्तर में दुबक गई।
"आओ और मुझे गले लगाओ," उसने कहा। "हमें साथ मिलकर बिल्लियों के शहर जाना चाहिए।"
- क्यों?
मुझे लगता है कि छोटे लोग प्रवेश द्वार ढूंढ लेंगे।
"क्योंकि मैंने स्वयं को शुद्ध नहीं किया है?"
क्योंकि हम दोनों एक हैं।

अध्याय 13 तुम्हारे प्यार के बिना

"1Q84," आओमामे ने कहा। "मैं जिस साल में हूँ वह 1Q84 है, असली 1984 नहीं। ठीक है?"
"यह कहना मुश्किल है कि कौन सी दुनिया असली है," नेता पेट के बल लेटे हुए बोले। "यह तत्वमीमांसा का विषय है। लेकिन यहाँ की दुनिया असली है। इसमें कोई शक नहीं। यहाँ जो दर्द होता है, वह असली दर्द है। यहाँ जो मौत होती है, वह असली मौत है। और जो खून बहता है, वह भी असली है। यह दुनिया कोई नकल नहीं है। यह काल्पनिक नहीं है, न ही यह तत्वमीमांसा पर आधारित है। मैं इसकी गारंटी देता हूँ। लेकिन यह वह 1984 नहीं है जिसे आप जानते हैं।"
क्या यह किसी प्रकार की समानांतर दुनिया है?
उस आदमी ने हल्के से हंसते हुए अपने कंधे उचका दिए।
— आप बहुत ज़्यादा विज्ञान कथा की किताबें पढ़ते हैं। नहीं, हम किसी समानांतर दुनिया में नहीं हैं। हमारे पास एक तरफ 1984 और दूसरी तरफ 1Q84 जैसी दो समानांतर दुनियाएँ नहीं हैं। 1984 कहीं है ही नहीं। न मेरे लिए और न आपके लिए, 1Q84 के अलावा कोई दूसरा समय नहीं है।
— मैंने एक अलग ही कालखंड में प्रवेश किया।
"बिल्कुल सही। हम यहाँ आए हैं। या यूँ कहें कि क्षणभंगुरता हमारे अंदर प्रवेश कर गई है। और जहाँ तक मुझे पता है, यह दरवाज़ा सिर्फ़ एक ही दिशा में खुलता है। अब पीछे मुड़ने का कोई रास्ता नहीं है।"
"यह तब हुआ जब मैं आपातकालीन सीढ़ियों से मेट्रोपॉलिटन एक्सप्रेसवे से उतर रहा था," आओमामे ने कहा।
— मेट्रोपॉलिटन हाईवे?
"संगेंजय पर।"
"यह कोई भी जगह हो सकती है। आपके लिए, यह संगेंजय था। लेकिन समस्या विशिष्ट स्थान नहीं है, बल्कि समय है। स्थिति बदल गई है और दुनिया 1Q84 में प्रवेश कर चुकी है।"
आओमामे ने कल्पना की कि कुछ बौने लोग आधी रात को, हल्की चांदनी में, जबरदस्ती एक स्विच बदल रहे हैं।
“और इस 1Q84 में आकाश में दो चंद्रमा हैं?” उसने पूछा।
हां, दो महीने हो गए हैं। यही संकेत है कि स्थिति बदल गई है। इसी से दोनों दुनियाओं में अंतर किया जा सकता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यहां मौजूद हर कोई दोनों को देख सकता है। इसके विपरीत, अधिकांश लोग तो इस बात पर ध्यान भी नहीं देते। दूसरे शब्दों में, बहुत कम लोग जानते हैं कि हम अब 1Q84 में हैं।
क्या इस दुनिया के अधिकांश लोगों ने यह महसूस नहीं किया है कि समय की अवधारणा बदल गई है?
नहीं। उनमें से अधिकांश के लिए, हम हमेशा, हर दिन की दुनिया में हैं। इस अर्थ में, मैं कहता हूं कि "यही वास्तविक दुनिया है।"

"तो स्थिति बदल गई है," आओमामे ने कहा। "लेकिन अगर ऐसा नहीं होता, तो हम यहां नहीं होते। कुछ ऐसा ही?"
"यह कोई नहीं जान सकता। यह संभावना का मामला है। हालांकि मुझे ऐसा ही लगता है।"
— आप जो कह रहे हैं वह एक सटीक तथ्य है या सिर्फ एक सिद्धांत?
“अच्छा सवाल है। दोनों में फर्क करना लगभग नामुमकिन है। देखो, पुराने गाने में कहा गया है, ‘तुम्हारे प्यार के बिना, ये एक बेतुकी टोली है,’” आदमी गुनगुनाता है। “तुम्हारे प्यार के बिना, ये तो बस तबाही का तमाशा है। क्या तुम्हें वो गाना याद है?”
— ये तो सिर्फ कागज़ का चाँद है।
— बिलकुल सही। 1984 और 1Q84 की सैद्धांतिक संरचना एक जैसी है। अगर आप इस दुनिया में विश्वास नहीं करते और आपके अंदर प्रेम नहीं होता, तो सब कुछ महज़ एक दिखावा होता। किसी भी दुनिया में, किसी भी तरह की दुनिया में, ज़्यादातर समय तथ्य और सिद्धांत के बीच की रेखा आँखों से नहीं, बल्कि दिल से पहचानी जाती है।
किसने स्विच बदला?
"कौन?" और यह एक कठिन प्रश्न है। कारण और परिणाम का नियम यहाँ ज्यादा मायने नहीं रखता।
"खैर, एक खास इच्छाशक्ति मुझे इस 1Q84 तक ले आई," आओमामे ने कहा। "एक ऐसी इच्छाशक्ति जो मेरी नहीं है।"
"बिल्कुल सही। स्विच बदल गया, और जिस ट्रेन में आप सवार थे, वह आपको इस दुनिया में ले आई।"
"और क्या बौनों का इससे कोई लेना-देना है?"
"इस दुनिया में तथाकथित छोटे लोग रहते हैं। कम से कम यहाँ तो उन्हें यही कहा जाता है। लेकिन उनका हमेशा कोई रूप या नाम नहीं होता।"
ओमामे ने अपने होंठ काटते हुए सोचा। फिर उसने कहा:
"आप जो कह रहे हैं, वह विरोधाभासी लगता है। मान लेते हैं कि छोटे लोगों ने ही स्विच बदला और मुझे 1Q84 पर ले आए। तो अगर वे नहीं चाहते कि मैं तुम्हारे साथ वो करूं जो मैं करने वाला हूं, तो वे मुझे यहां क्यों लाए? मुझे रास्ते से हटाकर उन्हें ज़्यादा फ़ायदा होगा।"
"समझाना मुश्किल है," उस आदमी ने तटस्थ स्वर में कहा। लेकिन मुझे लगता है कि आपका दिमाग ठीक से काम कर रहा है, इसलिए आप शायद मेरी बात समझ जाएँगे, भले ही मैं इसे थोड़ा अस्पष्ट तरीके से समझाऊँ। जैसा कि मैं कह रहा था, दुनिया में सबसे ज़रूरी चीज़ है अच्छाई और बुराई के बीच संतुलन। तथाकथित छोटे लोग या वो लोग बहुत शक्तिशाली होंगे। लेकिन जितना ज़्यादा वे इसका इस्तेमाल करेंगे, उतना ही ज़्यादा प्रतिरोध की शक्ति अपने आप बढ़ती जाएगी। इसी तरह दुनिया अपना नाज़ुक संतुलन बनाए रखती है। यह सिद्धांत हर दुनिया पर लागू होता है। यही बात 1Q84 के बारे में भी कही जा सकती है, जहाँ हम अभी हैं। जैसे ही छोटे लोग अपनी अपार शक्ति का इस्तेमाल करना शुरू करते हैं, उनके खिलाफ एक शक्ति अपने आप पैदा हो जाती है। और यही प्रति-प्रेरणा आपको 1Q84 तक ले आई है। समुद्र तट पर पड़ी व्हेल की तरह नीली योगा मैट पर गिरते हुए उस व्यक्ति ने गहरी सांस ली।

रेलगाड़ी के उदाहरण को जारी रखते हुए, वे दिशा बदल सकते हैं और परिणामस्वरूप ट्रेन इस लाइन पर आ जाती है। लाइन 1Q84 पर। लेकिन वे उस ट्रेन में सवार यात्रियों को एक-एक करके पहचान या चुन नहीं सकते। दूसरे शब्दों में, ट्रेन में ऐसे लोग भी हो सकते हैं जिन्हें वे पसंद नहीं करते।
— बिन बुलाए यात्री।
- एकदम सही।
गरज की आवाज़ तेज़ हो गई थी, लेकिन बिजली नहीं चमक रही थी। सिर्फ़ गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी। अजीब बात है, आओमामे ने सोचा। गरज इतनी पास है, लेकिन बिजली नहीं चमक रही। और बारिश भी नहीं हो रही।
— क्या आपको अब तक समझ आ गया है?
मैं सुनता रहूंगा।
ओमामे ने उसकी गर्दन के पिछले हिस्से से सुई निकाल ली थी और उसे सावधानीपूर्वक हवा में पकड़े हुए थी। वह उस आदमी के शब्दों को ध्यान से सुनने की कोशिश कर रही थी।
जहां प्रकाश है, वहां छाया है, और जहां छाया है, वहां प्रकाश है। प्रकाश के बिना छाया नहीं होती, और छाया के बिना प्रकाश नहीं होता। कार्ल जंग अपनी एक पुस्तक में कहते हैं: “चूंकि हम मनुष्य सकारात्मक प्राणी हैं, इसलिए छाया बुराई का प्रतीक है। जितना अधिक हम अच्छा, पूर्ण और परिपूर्ण बनने का प्रयास करते हैं, छाया उतनी ही गहरी, बुरी और विनाशकारी प्रतीत होती है। जब मनुष्य प्राकृतिक सीमा से परे परिपूर्ण होने का प्रयास करता है, तो छाया नरक में उतरकर शैतान में परिवर्तित हो जाती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्राकृतिक जगत में, अपनी क्षमता से अधिक होना उतना ही बड़ा पाप है जितना कि अपनी क्षमता से कम होना।” हम नहीं जानते कि लघु प्राणी अच्छे हैं या बुरे। एक तरह से, यह हमारी समझ या परिभाषाओं से परे है। हम प्राचीन काल से उनके साथ रहते आए हैं, जब अच्छाई और बुराई का अस्तित्व ही नहीं था, और मनुष्यों में विवेक भी नहीं था। चाहे वे अच्छे हों या बुरे, अंधेरे हों या प्रकाश, महत्वपूर्ण बात यह है कि जब वे अपनी शक्ति का प्रयोग करते हैं, तो अनिवार्य रूप से एक प्रतिपूरक क्रिया होती है। इस मामले में, जब मैं छोटे कद के लोगों का प्रतिनिधि बना, तो मेरी बेटी छोटे कद के लोगों के खिलाफ आंदोलन की प्रतिनिधि बन गई। इस तरह संतुलन बना रहा।
"अपनी बेटी?"
"हाँ। वही तो उन्हें यहाँ लेकर आई थी। तब वह दस साल की थी। अब वह सत्रह साल की है। वे अंधेरे से निकलकर उसके ज़रिए यहाँ आए। और उन्होंने मुझे अपना प्रतिनिधि बनाया। वह 'प्रेक्षक' बनी और मैं 'ग्रहणकर्ता'। संयोग से हम दोनों में ये गुण थे। खैर, उन्होंने हमें ढूँढा, हमने उन्हें नहीं।"
और तुमने अपनी ही बेटी का बलात्कार किया।
“हम एक साथ आ गए हैं,” उस व्यक्ति ने कहा। यह अधिक उपयुक्त शब्द है। और जिसके साथ मैं एक साथ आया हूँ, वह मेरी वैचारिक पुत्री है। “एक साथ आना” एक ऐसा शब्द है जिसके अनेक अर्थ हैं। लेकिन मूल बात यह है कि दो से हम एक हो गए हैं।
बोधकर्ता और ग्रहणकर्ता के रूप में।
ओमामे ने अपना सिर हिलाया।

मुझे आपकी बात समझ नहीं आ रही है। क्या आपने अपनी बेटी के साथ यौन संबंध बनाए थे या नहीं?
इस प्रश्न का उत्तर हां और ना दोनों है।
क्या त्सुबासा के साथ भी ऐसा ही हुआ था?
— सिद्धांत रूप में, हाँ।
"लेकिन उसका गर्भाशय वास्तव में नष्ट हो चुका है।"
व्यक्ति ने अपना सिर हिलाया।
— आपने जो देखा वह वैचारिक शरीर था, न कि उसका वास्तविक शरीर, एक भौतिक इकाई के रूप में।
आओमामे बातचीत की गति के साथ तालमेल नहीं बिठा पा रही थी। वह रुकी और गहरी सांस ली। फिर उसने कहा:
तो क्या एक अवधारणा ने व्यक्ति का रूप धारण किया और पैदल चलकर हमारे पास आई? — सीधे शब्दों में कहें तो, हाँ।
"जिसे मैंने देखा वह कोई भौतिक इकाई नहीं थी?"
— इसीलिए तो इसे बरामद किया गया था।
— ठीक हो गए?
"वह ठीक हो गई हैं। उन्हें आवश्यक उपचार मिला।"
"मैं किसी बात पर विश्वास नहीं करती," आओमामे ने स्पष्ट रूप से कहा।
"मैं आपको दोष नहीं दे सकता," उस व्यक्ति ने तटस्थ स्वर में उत्तर दिया। ओमामे अवाक रह गई। थोड़ी देर बाद उसने पूछा:
— अपनी बेटी का वैचारिक और अनेक मायनों में बलात्कार करके, आप छोटे लोगों के प्रतिनिधि बन गए। लेकिन साथ ही, एक प्रतिफल के रूप में, उसने आपको छोड़ दिया और आपके प्रति शत्रुतापूर्ण हो गई। क्या यही आपका दावा है?
"बिल्कुल सही। और इसी वजह से उसने अपने वंश को त्याग दिया," उस आदमी ने कहा। "हालांकि मुझे नहीं पता कि आप इसका मतलब समझ सकते हैं या नहीं।"
- बेटी?
"यह एक तरह की जीवित परछाई है। और इसमें कोई और भी शामिल है। मेरा एक पुराना दोस्त। एक ऐसा व्यक्ति जिस पर पूरा भरोसा किया जा सकता है। मैंने अपनी बेटी को उसके भरोसे छोड़ा था। और कुछ समय पहले ही, टेंगो कावाना, जिसे आप अच्छी तरह जानते हैं, ने फिर से यहाँ हस्तक्षेप किया। टेंगो और मेरी बेटी की मुलाकात संयोग से हुई और उन्होंने एक टीम बनाई।"
अचानक, मानो समय थम गया। आओमामे के पास कहने के लिए शब्द नहीं थे। वह तनाव में खड़ी रही, समय के फिर से धीमा होने का इंतजार करती रही।
"उनमें ऐसे गुण थे जो एक दूसरे के पूरक थे। एरिका के पास वह था जिसकी टेंगो में कमी थी, और टेंगो के पास वह था जिसकी एरिका में कमी थी। दोनों ने मिलकर कुछ ऐसा किया, जिसका परिणाम छोटे लोगों के खिलाफ उस आंदोलन को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।"
क्या उन्होंने कोई टीम बनाई थी?
"चिंता मत करो, अगर तुम यही सोच रहे हो तो बता दूं कि उनका कोई रोमांटिक या शारीरिक संबंध नहीं है। एरिका किसी के साथ रोमांटिक रिश्ते में नहीं पड़ती। वह इन सब चीजों से ऊपर है।"
— अधिक स्पष्ट रूप से कहें तो, उनकी संयुक्त गतिविधि में क्या शामिल है?

इसे समझाने के लिए मुझे एक और उदाहरण देना पड़ेगा। उन्होंने एक वायरस के लिए एक प्रकार की एंटीबॉडी बनाईं। अगर छोटे लोगों की हरकतें वायरस हैं, तो उन्होंने एंटीबॉडी बनाईं और फैलाईं। बेशक, यह हमारे नज़रिए से है, क्योंकि छोटे लोगों के नज़रिए से वे वायरस के वाहक हैं। हर चीज़ आईने में ही दिखती है। "और यही वह क्षतिपूर्ति अधिनियम है जिसके बारे में आप बात कर रहे थे?"
"हाँ। जिस आदमी से तुम प्यार करती हो, उसने मेरी बेटी के साथ मिलकर यह कर दिखाया। और तुम और टेंगो सचमुच एक दूसरे के रास्ते में आ रहे हो।"
"लेकिन आपने कहा था कि यह कोई संयोग नहीं था। मैं एक दृढ़ इच्छाशक्ति से प्रेरित होकर इस दुनिया में आया था। है ना?"
"बिल्कुल सही। आप 1Q84 में एक उद्देश्य और दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ यहां आए थे। अब आपके और टेंगो के बीच जो भी संबंध है, चाहे वह किसी भी प्रकार का हो, उसे संयोग नहीं माना जा सकता।"
"लेकिन यह इच्छा क्या है? और इसका उद्देश्य क्या है?"
"मैं आपको यह समझाने की स्थिति में नहीं हूं," उस व्यक्ति ने कहा। "मुझे खेद है।"
"क्यों नहीं?"
— ऐसा नहीं है कि मैं आपको इसका अर्थ समझा नहीं सकता, बल्कि बात यह है कि शब्दों में समझाने के क्षण ही इसका अर्थ खो जाता है।
"तो मैं आपसे एक और सवाल पूछूंगी," आओमामे ने कहा। "क्यों मैं?"
"तो आपको अभी भी नहीं पता कि क्यों।"
ओमामे ने दृढ़ता से कई बार अपना सिर हिलाया।
- मुझे कोई जानकारी नहीं है की क्यों।
"यह बेहद सरल है। क्योंकि आप और टेंगो एक दूसरे के प्रति बेहद आकर्षित हैं।" ओमामे काफी देर तक चुप रही। उसे अपने माथे पर पसीना आने लगा। उसका पूरा चेहरा मानो एक पतली, अदृश्य परत से ढका हुआ महसूस हो रहा था।
हम एक दूसरे के प्रति आकर्षित हैं।
— एक दूसरे को मजबूत करें।
अचानक उसके भीतर क्रोध की भावना उत्पन्न हुई, साथ ही मतली की लहर भी दौड़ गई।
"मुझे विश्वास नहीं हो रहा!" टेंगो मुझे अब पहचान नहीं पा रहा है।
इसके विपरीत, टेंगो इस बात से भली-भांति परिचित है कि तुम्हारा अस्तित्व है और वह तुम्हें चाहता है। अब तक उसने तुम्हारे अलावा किसी और महिला से कभी प्रेम नहीं किया है।
आओमामे को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे। ज़ोरदार बिजली कड़कती रही, रुक-रुक कर। इसी बीच बारिश शुरू हो गई। बड़ी-बड़ी बूँदें खिड़की पर ज़ोर से पड़ रही थीं, लेकिन आओमामे को उनकी आवाज़ सुनाई तक नहीं दी।
उस आदमी ने कहा, "आप मेरी बात पर विश्वास न करने के लिए स्वतंत्र हैं। लेकिन बेहतर होगा कि आप इस पर विश्वास कर लें, क्योंकि यह एक निर्विवाद सत्य है।" "क्या मतलब, बीस साल से हम एक-दूसरे से नहीं मिले हैं, फिर भी वह मुझे याद रखता है? बिना कभी दो शब्द भी बोले?"
"तुम प्राथमिक विद्यालय में थे, एक खाली कक्षा में, और तुमने उसका हाथ कसकर पकड़ लिया था। तुम्हारी उम्र दस साल थी। मुझे लगता है कि इसके लिए तुम्हें दुनिया भर का साहस चाहिए था।"

ओमामे ने भौंहें चढ़ाईं।
"लेकिन आपको यह कैसे पता चला?"
उस व्यक्ति ने प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।
"टेंगो यह बात कभी नहीं भूला। और वह हमेशा तुम्हारे बारे में सोचता था। अभी भी सोचता है। यकीन मानो, मुझे बहुत कुछ पता है। उदाहरण के लिए, अभी भी जब तुम हस्तमैथुन करती हो, तो उसके बारे में सोचती हो। तुम्हें वह अपनी आँखों के सामने दिखाई देता है। है ना?"
ओमामे का मुंह थोड़ा खुला हुआ था और वह पूरी तरह से अवाक थी। वह बस धीरे-धीरे सांस ले रही थी।
"तुम्हें शर्मिंदा होने की कोई ज़रूरत नहीं है," उस आदमी ने आगे कहा। "यह स्वाभाविक है। और वह भी ऐसा ही करता है। वह उन पलों में तुम्हारे बारे में सोचता है। अभी भी।"
आपको ये सब कैसे पता चला...?
मुझे ये बातें कैसे पता चलती हैं? कान खड़े करके। मेरा काम ही आवाज सुनना है। ओमामे जोर से हंसना और रोना चाहती थी, लेकिन वह दोनों में से कुछ भी नहीं कर सकी। वह अपनी जगह पर जम सी गई, न इधर झुकी न उधर, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे।
"तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है," उस आदमी ने कहा।
"क्या मुझे डरना चाहिए?"
हां। आप डरे हुए हैं। ठीक वैसे ही जैसे अतीत में वेटिकन सूर्यकेंद्रीय सिद्धांत को स्वीकार करने से डरता था। वे भूकेंद्रीय सिद्धांत की अचूकता में पूरी तरह विश्वास नहीं करते थे, बल्कि इसे स्वीकार करने से उत्पन्न होने वाली नई स्थिति से भयभीत थे। उन्हें डर था कि यह नया सिद्धांत उन्हें अपने चिंतन को पुनर्गठित करने के लिए विवश कर देगा। सच्चाई यह है कि कैथोलिक चर्च ने अभी तक इसे आधिकारिक रूप से स्वीकार नहीं किया है। और आप भी वही कर रहे हैं। आप डरे हुए हैं कि आपको उस सुरक्षा कवच को उतार फेंकना पड़ेगा जिसमें आपने इतने लंबे समय से खुद को सुरक्षित रखा हुआ है।
आओमामे ने अपने चेहरे को हाथों में छिपाते हुए कई बार आह भरी। वह ऐसा करना नहीं चाहती थी, लेकिन खुद को रोक नहीं पाई। वह हंसने का दिखावा करना चाहती थी, लेकिन यह नामुमकिन था।
"स्पष्ट शब्दों में कहें तो, तुम दोनों एक ही ट्रेन से इस दुनिया में आए हो," उस व्यक्ति ने शांत स्वर में कहा। "मेरी बेटी के साथ संबंध बनाकर, टेंगो ने बौनों के खिलाफ एक नकारात्मक प्रभाव पैदा किया, और तुम, अन्य कारणों से, मुझे मारना चाहते हो। दूसरे शब्दों में, तुम दोनों ही बहुत खतरनाक स्थिति में हो और बहुत खतरनाक काम कर रहे हो।"
— और किसी विशेष इच्छाशक्ति ने हमें ऐसा करने के लिए प्रेरित किया?
- शायद।
"लेकिन किसलिए?" आओमामे ने पूछा, और उसी क्षण उसे एहसास हुआ कि उसकी बात व्यर्थ थी। यह एक ऐसा प्रश्न था जिसका उत्तर मिलने की उसे उम्मीद नहीं थी। “सबसे सुखद समाधान यही होगा कि तुम दोनों मिलो, हाथ पकड़ो और इस दुनिया से विदा हो जाओ,” उस आदमी ने बिना जवाब दिए कहा। “लेकिन यह आसान नहीं है।”
"लेकिन यह आसान नहीं है," आओमामे ने अनजाने में दोहराया।

"दुर्भाग्य से, यह बिल्कुल भी आसान नहीं है। वास्तव में, ईमानदारी से कहें तो, यह लगभग असंभव है। हमारे विरोधी, चाहे उनका नाम कुछ भी हो, बेहद ताकतवर हैं।" "और इसलिए..." आओमामे ने कहा और खांसने लगी।
वह अपने सदमे से बाहर आ चुकी थी। उसने खुद से कहा, यह रोने का समय नहीं है।
"तो अब हम आपके प्रस्ताव पर आते हैं। दर्द रहित मृत्यु के बदले में, आप मुझे कुछ दे सकते हैं। एक विकल्प।" "आप बहुत जल्दी समझ गए," वह आदमी पेट के बल लेटा हुआ बोला। "बिल्कुल सही। मेरा प्रस्ताव एक विकल्प है जिसमें आप और टेंगो शामिल हैं। यह सुखद नहीं है, लेकिन कम से कम इसमें चुनाव की गुंजाइश तो है।"
*

“छोटे लोग मुझे खोने से बहुत डरे हुए हैं,” उस आदमी ने कहा, “क्योंकि उन्हें अभी भी मेरी ज़रूरत है। उनके प्रतिनिधि के रूप में, मैं उनके लिए बहुत उपयोगी व्यक्ति हूँ। मेरा स्थान लेने वाला कोई और मिलना आसान नहीं है, और फिलहाल मेरा कोई वंशज नहीं है। उनका प्रतिनिधि बनने के लिए कई कठिन शर्तें पूरी करनी पड़ती हैं, और मैं उन सभी शर्तों को पूरा करने वाला अकेला व्यक्ति हूँ। वे मुझे खोने से डरते हैं। अगर वे मुझे अभी खो देते हैं, तो एक अस्थायी खालीपन आ जाएगा। इसलिए वे आपको मेरी जान लेने से रोकने की कोशिश कर रहे हैं। वे चाहते हैं कि मैं कुछ और समय तक जीवित रहूँ। बाहर जो गरज रही है, वह उनके गुस्से का संकेत है। लेकिन वे आपको सीधे छू नहीं सकते। वे केवल आपको चेतावनी भेज सकते हैं कि वे क्रोधित हैं। इसी कारण से उन्होंने आपकी सहेली को मौत के घाट उतारने की चाल चली, और इसी कारण से वे टेंगो को नुकसान पहुँचाने की कोशिश करेंगे।”
"उसे चोट पहुँचाने के लिए?"
— टेंगो ने छोटे लोगों और उनके कारनामों के बारे में एक कहानी लिखी। एरिका ने उन्हें विषय दिया और उन्होंने उसे खूबसूरती से लिखा। यह उनका संयुक्त प्रयास था। कहानी ने उनकी सहज प्रवृत्ति को नियंत्रित करने का काम किया। किताब प्रकाशित हुई और उसे ज़बरदस्त सफलता मिली। और इसके परिणामस्वरूप, भले ही अस्थायी रूप से, छोटे लोगों की कुछ गतिविधियाँ सीमित हो गईं और उनकी कुछ संभावनाएँ खो गईं। क्या आपने कभी वायु परिपथ के बारे में सुना है?
ओमामे ने सिर हिलाया।
मैंने अखबार में इसके बारे में कुछ लेख और प्रकाशक का विज्ञापन देखा था। मैंने किताब नहीं पढ़ी है।
— असल में 'द एयर क्राइसालिस' को टेंगो ने लिखा है। और अब वो अपनी कहानी लिख रहा है, जिसे उसने वहीं खोजा है, यानी दो चंद्रमाओं वाली दुनिया में। एरिका एक विलक्षण बुद्धि वाली है, उसने इस कहानी को अपने भीतर एक एंटीबॉडी की तरह जन्म दिया, और टेंगो एक कुशल ग्रहणकर्ता के रूप में अपनी प्रतिभा दिखाता है। शायद जो चीज़ आपको यहाँ लाई है, या दूसरे शब्दों में, जो चीज़ आपको इस यात्रा पर ले आई है, वो उसकी यही प्रतिभा है।
मंद अंधेरे में आओमामे ने गहरी भौंहें चढ़ा लीं। उसे किसी भी तरह बातचीत में शामिल रहना था।
तो क्या टेंगो की लेखन प्रतिभा, या जैसा कि आप कहते हैं, एक रिसीवर के रूप में उनकी क्षमता ही वह चीज़ थी जिसने मुझे 1Q84 में एक दूसरी दुनिया में पहुँचा दिया?

— कम से कम मुझे तो यही लगता है।
आओमामे ने अपने हाथों को देखा। उसकी उंगलियां आंसुओं से भीगी हुई थीं।
"अगर हालात ऐसे ही रहे तो टेंगो के मारे जाने की पूरी संभावना है। फिलहाल वो छोटे लोगों के लिए सबसे खतरनाक शख्स है। और यही असली दुनिया है। यहाँ खून-खराबा होता है, और मौत भी असली है। और हां, मौत हमेशा के लिए होती है।"
आओमामे ने अपने होंठ काट लिए।
“मैं चाहता हूँ कि तुम इस बारे में सोचो,” उस आदमी ने कहा। “अगर तुम मुझे अभी मार दो और मैं इस दुनिया से गायब हो जाऊँ, तो बौनों के पास टेंगो को नुकसान पहुँचाने का कोई कारण नहीं रहेगा। और ऐसा इसलिए क्योंकि अगर यह नहर गायब हो जाती है, यानी मैं, टेंगो और मेरी बेटी, तो हम इसे रोकने की कोशिश नहीं करेंगे, और फिर यह उनके लिए कोई खतरा नहीं रहेगी। बौने सब कुछ छोड़कर कहीं और जाकर एक अलग तरह की नहर की तलाश करेंगे। यही उनकी सबसे बड़ी प्राथमिकता है। क्या तुम समझते हो?”
— तार्किक रूप से, हाँ।
लेकिन दूसरी तरफ, अगर तुम मुझे मार देते हो, तो मेरे द्वारा स्थापित संगठन तुम्हें भागने नहीं देगा। तुम्हें ढूंढने में शायद बहुत समय लगेगा। तुम अपना नाम, पता, शायद अपना हुलिया भी बदल लोगे। लेकिन एक दिन वे तुम्हें घेर लेंगे और कड़ी सजा देंगे। यह सख्त, हिंसक और अपरिवर्तनीय व्यवस्था हमने ही बनाई है। यह भी एक विकल्प हो सकता है।
ओमामे ने सुनी हुई बातों को समझने की कोशिश की। वह आदमी उसके शब्दों के तर्क को ठीक से समझने का इंतजार करता रहा।
“अब मान लो कि तुम मुझे नहीं मारते,” उसने आगे कहा। “तुम शान से पीछे हट जाते हो और मैं ज़िंदा रहता हूँ। ऐसे में, छोटे लोग मेरी रक्षा के लिए टेंगो को खत्म करने की हर मुमकिन कोशिश करेंगे। उसका ताबीज़ अभी इतना मज़बूत नहीं है। वे उसकी कमज़ोरी ढूँढ़ लेंगे और शायद किसी न किसी तरीके से उसे खत्म करने की कोशिश करेंगे, क्योंकि वे अब एंटीबॉडीज़ को फैलने नहीं दे सकते। इस तरह, टेंगो से होने वाला खतरा टल जाएगा और इसलिए उनके पास तुम्हें सज़ा देने का कोई कारण नहीं रहेगा। यह भी एक विकल्प हो सकता है।”
"उस स्थिति में, टेंगो मर जाएगा और मैं जीवित रहूंगा। 1Q84 में," आओमामे ने अपने शब्दों का सारांश प्रस्तुत किया।
- शायद।
लेकिन मेरी जिंदगी का कोई मतलब नहीं है उस दुनिया में जहां टेंगो का अस्तित्व ही नहीं है, क्योंकि हमारे फिर से मिलने की संभावना हमेशा के लिए खत्म हो जाती है।
— आपके दृष्टिकोण से, मुझे लगता है ऐसा ही है।
ओमामे ने अपने होंठों को कसकर दबाया और उस परिदृश्य की कल्पना की।
"लेकिन ये तो सिर्फ आपकी कही बात है," उसने कहा। "क्या आपके पास कोई सबूत या प्रमाण है जिससे मैं इस पर विश्वास कर सकूँ?"
“बिल्कुल,” उस आदमी ने सिर हिलाते हुए कहा। “इसका कोई सबूत नहीं है। यह सिर्फ मेरी बात है। लेकिन तुमने अपनी आँखों से मेरी शक्ति देखी है। तुम जानते हो कि वह घड़ी किसी धागे से बंधी नहीं है। और वह बहुत भारी है। तुम जाकर देख सकते हो। तुम मेरी बात मानो या न मानो। हमारे पास ज्यादा समय नहीं बचा है।”

आओमामे ने साइडबोर्ड पर रखी घड़ी पर एक नज़र डाली। उसमें नौ बजने में कुछ ही मिनट बाकी थे। घड़ी थोड़ी टेढ़ी-मेढ़ी, अजीब से कोण पर झुकी हुई थी, मानो हवा में उठी और फिर नीचे गिर गई हो।
"अभी, 1Q84 में, आप दोनों का बचना नामुमकिन है। दो विकल्प हैं। एक यह कि आप मर जाएं और टेंगो जीवित रहे। और दूसरा यह कि वह मर जाए और आप जीवित रहें। आपको इन दोनों में से एक चुनना होगा। मैंने शुरू से ही आपको चेतावनी दी थी कि ये सुखद विकल्प नहीं हैं।"
लेकिन इनके अलावा कोई और नहीं है।
व्यक्ति ने अपना सिर हिलाया।
— फिलहाल आपको दो चीजों में से एक को चुनना होगा।
ओमामे ने अपने फेफड़ों में हवा भरी और धीरे-धीरे उसे बाहर निकाला।
"मुझे बहुत अफ़सोस है," उस आदमी ने कहा। "अगर तुम 1984 में ही रुक जातीं, तो तुम्हें ऐसा फ़ैसला लेने के लिए मजबूर नहीं होना पड़ता। हालांकि, दूसरी तरफ, तुम्हें यह भी पता नहीं चलता कि टेंगो हर समय तुम्हारे बारे में सोचता रहता था। 1984 में आने की वजह से ही तुम्हें पता चला कि एक तरह से तुम्हारे दिल जुड़े हुए हैं।"
ओमामे ने अपनी आँखें बंद कर लीं और खुद को रोने से रोकने की कोशिश की। अभी आँसू बहाने का समय नहीं आया था।
"क्या टेंगो सचमुच मुझे चाहता है? क्या आप मुझसे झूठ बोले बिना इस बात को साबित कर सकते हैं?"
"अब तक, टेंगो ने तुम्हारे सिवा किसी और स्त्री से सच्चे दिल से प्रेम नहीं किया है। यह एक ऐसा सत्य है जिसमें कोई संदेह नहीं है।"
"फिर भी उसने मुझे नहीं ढूंढा।"
"आपने भी उसे ढूंढने की कोशिश नहीं की। है ना?"
ओमामे ने अपनी आँखें बंद कर लीं और एक पल में उन सभी वर्षों को देख लिया, मानो वह किसी ऊँची चट्टान से नीचे जलडमरूमध्य को निहार रही हो। उसे अपनी नाक में समुद्र की गंध और हवा की गर्जना सुनाई दे रही थी।
"हमें पहले ही हिम्मत जुटाकर एक-दूसरे से मिल लेना चाहिए था। इस तरह हम साथ हो सकते थे।"
"सैद्धांतिक रूप से, हाँ। लेकिन 1984 में, आपने इसके बारे में सोचा भी नहीं होगा। कारण और परिणाम आपस में जटिल रूप से जुड़े हुए हैं। और इस जटिलता को खत्म नहीं किया जा सकता, चाहे आप कितनी ही दुनियाओं को एक दूसरे के ऊपर रख दें।"
आओमामे की आँखों से आँसू बहने लगे। वह अपने खोए हुए और भविष्य में खोने वाले हर चीज़ के लिए रो रही थी। और आखिरकार—कितने समय बाद?—वह क्षण आया जब उसे लगा कि वह अब और नहीं रो सकती। आँसू रुक गए, मानो उसकी सारी भावनाएँ एक अदृश्य दीवार से टकरा गई हों।
"मैं समझता हूँ। आपके पास कोई ठोस सबूत नहीं है। मुझे कुछ भी नहीं दिखाया गया है, और मैं सारी बातें नहीं समझता। लेकिन मुझे आपका प्रस्ताव स्वीकार करना ही होगा। मैं आपको इस दुनिया से, ठीक आपकी इच्छा के अनुसार, विदा कर दूँगा। यह एक पल में, दर्द रहित मृत्यु होगी। ताकि टेंगो जीवित रहे।"
"तो आप मुझसे सौदा कर रहे हैं।"

— जी हाँ। हम सौदा कर रहे हैं।
"आपको यह पता होना चाहिए कि आपकी मृत्यु होना बहुत संभव है। किसी न किसी समय आपको घेर लिया जाएगा और दंडित किया जाएगा। और वह दंड क्रूर होगा। हम यहाँ कट्टरपंथियों की बात कर रहे हैं।"
- कोई बात नहीं।
— क्योंकि तुम्हारे पास प्रेम है।
ओमामे ने सिर हिलाया।
"प्यार के बिना, सब कुछ महज़ एक दिखावा है," उस आदमी ने कहा। ठीक वैसे ही जैसे गाने के बोल में है।
"अगर मैं तुम्हें मार दूं, तो क्या टेंगो बच पाएगा?"
वह व्यक्ति कुछ देर चुप रहा, फिर बोला:
"टेंगो बच जाएगा। मेरी बात मानिए। मैं अपनी जान की कीमत पर इसकी गारंटी देता हूं।"
- मेरा भी।
कुछ चीजें ऐसी होती हैं जिन्हें जीवन के बदले ही प्राप्त किया जा सकता है।
ओमामे ने अपनी मुट्ठी कसकर भींच ली।
सच कहूं तो, मुझे टेंगो के साथ रहना और उसके साथ समय बिताना अच्छा लगता।
कुछ देर के लिए कमरे में सन्नाटा छा गया। बिजली की कड़कड़ाहट भी सुनाई नहीं दे रही थी। सब कुछ शांत था।
"अगर मैं कर सकता, तो मैं आपको वह पेशकश करता," उस व्यक्ति ने शांत भाव से कहा। "मैं करता। लेकिन दुर्भाग्य से, वह विकल्प मौजूद नहीं है। यह 1984 में या 1984 की पहली तिमाही में भी मौजूद नहीं था। अलग-अलग मायनों में।"
"1984 में, हम दोनों, टेंगो और मैं, कभी एक-दूसरे से मिले भी नहीं होते। क्या यही मकसद था?"
हां। आप दोनों अकेले ही बूढ़े हो जाते, एक-दूसरे के बारे में सोचते रहते, बिना किसी रिश्ते के।
लेकिन कम से कम 1Q84 में मुझे पता है कि मैं उसके लिए मर सकती हूँ।
उस आदमी ने गहरी सांस ली, लेकिन कुछ नहीं बोला।
"मैं चाहती हूं कि आप मुझे कुछ बताएं," आओमामे ने कहा।
पेट के बल लेटे हुए व्यक्ति ने उत्तर दिया, "अगर मुझे पता होगा तो मैं तुम्हें बता दूंगा।"
"क्या टेंगो को पता चलेगा कि मैं उसके लिए मरा था? या फिर सब कुछ उसके बिना जाने ही खत्म हो जाएगा?"
उस आदमी ने कुछ देर तक उसके सवाल पर सोचा।
"यह आप पर निर्भर करता है," उसने जवाब दिया।
"यह मुझ पर निर्भर करता है," आओमामे ने थोड़ा मुंह बनाते हुए कहा। तुम्हारा क्या मतलब है?
“तुम्हारी कड़ी परीक्षा होगी,” उस आदमी ने सिर हिलाते हुए कहा। “जब तुम इस परीक्षा के अंत तक पहुँचोगे, तब तुम्हें वास्तविकता का पता चलेगा। इससे ज़्यादा मैं तुम्हें कुछ नहीं बता सकता। मृत्यु क्या होती है, यह कोई भी तब तक ठीक से नहीं जान सकता जब तक वह स्वयं मर न जाए।”
*

अध्याय 14 वितरित किया गया पैकेज

"आओ और मुझे गले लगाओ," फुकेरी ने कहा। "हमें साथ मिलकर बिल्लियों के शहर जाना चाहिए।"
“क्या मैं तुम्हें पकड़ लूँ?” टेंगो ने कहा।
"क्या तुम नहीं चाहते?" उसने पूछा।
— ओह, ऐसी बात नहीं है, बात बस इतनी है कि… मुझे सच में समझ नहीं आ रहा कि ऐसा क्यों है।
"शुद्धिकरण के लिए," फुकेरी ने सपाट स्वर में कहा। "आओ और मुझे गले लगाओ। अपने पजामा पहन लो और लाइट बंद कर दो।"
टेंगो ने आदेश का पालन किया और बेडरूम की लाइट बंद कर दी। उसने कपड़े उतारे और पजामा पहन लिया। उसने याद करने की कोशिश की कि उसने आखिरी बार पजामा कब धोया था, लेकिन उसे याद नहीं आया, जिसका मतलब था कि काफी समय हो गया था। सौभाग्य से, उसके शरीर से पसीने की बदबू नहीं आ रही थी। टेंगो को थोड़ा पसीना आया था, लेकिन उससे तेज़ बदबू नहीं आ रही थी। उसने खुद से कहा कि उसे अपने कपड़े ज़्यादा बार धोने चाहिए। उसकी अनिश्चित जीवनशैली में, उसे कभी पता नहीं होता था कि आगे क्या होगा। कम से कम उसका पजामा तो साफ रहेगा।
वह बिस्तर पर चढ़ गई और धीरे से फुकेरी को बाहों में भर लिया। लड़की ने अपना सिर उसकी दाहिनी बांह पर टिका दिया और वहीं चुपचाप लेट गई, जैसे कोई जानवर शीतनिद्रा में जाने की तैयारी कर रहा हो। वह इतनी गर्म और कोमल थी कि मानो असहाय लग रही थी। उसके शरीर पर पसीने की एक बूंद भी नहीं थी।
गरज और भी तेज़ हो गई थी। इसी बीच बारिश शुरू हो गई थी और तेज़ बूँदें खिड़की पर ज़ोर से पड़ रही थीं। हवा में नमी छा गई थी और उसमें ऐसे संकेत तैर रहे थे कि दुनिया बिना किसी हिचकिचाहट के अपने अंधकारमय अंत की ओर बढ़ रही है। नूह के समय में जब बाढ़ आई थी, तब भी ऐसा ही रहा होगा। तंग नाव में, इतने भयंकर तूफान में, दो गैंडों, शेरों या अजगरों के साथ यात्रा करना बहुत ही निराशाजनक रहा होगा। हर किसी की अपनी अलग आदतें थीं, संवाद करने के सीमित तरीके थे, और इसके अलावा, वहाँ बदबू भी बहुत अप्रिय रही होगी।
"जोड़ा" शब्द सुनते ही टेंगो को सन्नी और चेर की याद आ गई। लेकिन सन्नी और चेर को नाव में रखना सबसे अच्छा विकल्प नहीं था। वे बुरे भी नहीं थे, लेकिन इस काम के लिए उनसे बेहतर जोड़े ज़रूर मिल सकते थे।
पजामा पहने फुकेरी को बाहों में लिए हुए, टेंगो को एक अजीब सी अनुभूति हुई। मानो वह खुद को गले लगा रहा हो, मानो अपने ही शरीर के टुकड़े को थामे हो, एक ही शारीरिक गंध साझा कर रहा हो और एक ही चेतना का अनुभव कर रहा हो।
टेंगो ने कल्पना की कि सन्नी और चेर की जगह उन्हें नूह के जहाज़ पर सवार होने के लिए चुना गया था। लेकिन वे मानवता का प्रतिनिधित्व करने के लिए भी बिल्कुल सही जोड़ी नहीं थे। टेंगो ने सोचा कि यहाँ तक कि हमारा एक साथ बिस्तर पर होना और एक-दूसरे को गले लगाना भी उचित नहीं था, और इस विचार ने उसे बेचैन कर दिया। उसने अपना ध्यान कहीं और लगाने की कोशिश की और सन्नी और चेर को जहाज़ पर

अजगरों की जोड़ी से दोस्ती करते हुए कल्पना की। यह एक अर्थहीन कल्पना थी, लेकिन कम से कम इससे उसके तनावग्रस्त शरीर को थोड़ा आराम मिला।
फुकेरी उसकी बाहों में चुपचाप और बेसुध पड़ी थी। दोनों में से किसी ने कुछ नहीं कहा। उसे सीने से लगाए होने के बावजूद तेंगो को कोई यौन इच्छा महसूस नहीं हुई। उसके लिए, कामुक आवेग संवाद का ही एक विस्तार था। जहाँ संवाद की कोई वास्तविक संभावना न हो, वहाँ यौन संबंध बनाना उसे अनुचित और अकल्पनीय लगा। और वह यह भी समझता था कि फुकेरी भी उससे यही उम्मीद नहीं करती थी। वह उसमें कुछ और खोज रही थी, लेकिन तेंगो को ठीक से पता नहीं था कि वह क्या था।
लेकिन चाहे जो भी वजह हो कि वे अब बिस्तर पर हैं, सत्रह साल की खूबसूरत लड़की को अपनी बाहों में पाकर उसे कुछ बुरा नहीं लग रहा था। कभी-कभी उसका कान उसके गाल को छू जाता था। वह अपनी गर्दन पर उसकी गर्म सांसें महसूस कर सकता था। उसके पतले शरीर के हिसाब से उसके स्तन आश्चर्यजनक रूप से बड़े थे। वह उन्हें अपने पेट के पास महसूस कर सकता था। उसकी त्वचा से एक अद्भुत खुशबू आ रही थी, जैसी किसी युवा शरीर से आ सकती है, जैसे गर्मियों के बीच में ओस से लदे फूल से आती है। यह वही खुशबू थी जो उसने बचपन में अक्सर सूँघी थी, जब वह सुबह जल्दी उठकर व्यायाम करने जाता था।
टेंगो ने सोचा, अच्छा होता अगर मुझे इरेक्शन न होता। जहाँ हम खड़े थे, वहाँ से उसे तुरंत पता चल जाता, और इससे स्थिति थोड़ी अजीब हो जाती। मैं सत्रह साल की लड़की को कैसे समझाता कि कभी-कभी बिना यौन उत्तेजना के भी इरेक्शन हो सकता है? सौभाग्य से, उसे अभी तक इरेक्शन नहीं हुआ था, और ऐसा कोई संकेत भी नहीं था कि उसे इरेक्शन होने वाला है। उसने सोचा, मुझे उसकी गंध के बारे में नहीं सोचना चाहिए। असल में, मुझे उन चीजों के बारे में सोचना चाहिए जिनका सेक्स से कोई लेना-देना नहीं है।
उसने सोचा कि कैसे सन्नी और चेर ने अजगरों के उस जोड़े से दोस्ती की थी। क्या उनमें कुछ समानता थी? और अगर थी, तो वे किस बारे में बात कर रहे थे? क्या वे गाते थे? अंत में, बाढ़ के बीच फंसी नाव के बारे में उसे कुछ भी नया नहीं सूझा, इसलिए उसने मन ही मन तीन अंकों की संख्याओं को गुणा करना शुरू कर दिया। यह एक तरकीब थी जिसका इस्तेमाल वह अक्सर अपनी प्रेमिका के साथ सेक्स करते समय करता था। इससे उसे स्खलन में देरी करने में मदद मिलती थी (वह इस मामले में बहुत सख्त थी)। उसे नहीं पता था कि यह तकनीक अनचाहे इरेक्शन को भी रोक पाएगी या नहीं, लेकिन कुछ न करने से बेहतर था कोशिश करना। वह चुपचाप नहीं बैठ सकता था। "अगर तुम उत्तेजित हो जाओ तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है," फुकेरी ने ऐसे कहा मानो उसने उसके मन की बात पढ़ ली हो।
क्या इससे आपको कोई परेशानी नहीं होती?
— इसमें कुछ भी बुरा नहीं है।
"इसमें कुछ भी बुरा नहीं है," टेंगो ने दोहराया।
जैसे किसी बच्चे को यौन शिक्षा दी जा रही हो, उसने सोचा। इरेक्शन होने पर शर्म नहीं करनी चाहिए। इसमें कुछ भी गलत नहीं है। लेकिन इसके लिए सही जगह और सही समय चुनना पड़ता है।
“तो क्या हमने शुद्धिकरण शुरू कर दिया है?” टेंगो ने विषय बदलने की कोशिश की। फुकेरी ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने अपने प्यारे से छोटे कान खड़े कर लिए थे, मानो गरजती बिजली में कुछ छिपा हुआ सुनने की कोशिश कर रही हो। तेंगो यह समझ

गया, इसलिए उसने कुछ और न कहने का फैसला किया। उसने तीन अंकों की संख्याओं को मन ही मन गुणा करना छोड़ दिया। अगर फुकेरी ने कहा होता कि उसे कोई आपत्ति नहीं है, तो शायद उसे उत्तेजना हो जाती। वैसे भी, उसके लिंग में कोई हलचल नहीं दिख रही थी। फिलहाल, वह गर्म मिट्टी में डूबा हुआ शांति से सो रहा था।
*

"मुझे तुम्हारी योनि पसंद है," उसकी प्रेमिका ने उससे कहा था। "मुझे इसका आकार, इसका रंग और इसका आकार पसंद है।"
"मुझे यह ज्यादा पसंद नहीं है," टेंगो ने जवाब दिया था।
"क्यों?" उसने पूछा, मानो वह किसी सोते हुए पालतू जानवर को पकड़े हुए हो, और उसने अपने हाथ की हथेली में उसके शिथिल लिंग का वजन महसूस किया।
मुझे नहीं पता। शायद इसलिए क्योंकि मैंने इसे खुद नहीं चुना था।
"तुम अजीब हो," उसने कहा था। "तुम्हारे पास भी विचार हैं!"
यह घटना बाढ़ से बहुत पहले घटी थी। संभवतः।
*

टेंगो को अपनी गर्दन पर फुकाएरी की गर्म, स्थिर साँसें महसूस हो रही थीं। घड़ी के डायल की हल्की हरी रोशनी और आसमान में चमकती बिजली की झिलमिलाहट में उसे फुकाएरी के कान दिखाई दे रहे थे। उसके कान किसी रहस्यमयी, कोमल गुफा जैसे लग रहे थे। अगर मैं उससे प्यार करता, तो मैं उन्हें बार-बार चूमता, टेंगो ने सोचा। जब हम प्रेम कर रहे होते, तो मैं उन्हें चूमता, काटता, चाटता, उन पर गर्म साँसें छोड़ता और उन्हें सूंघता। नहीं, मैं अभी ऐसा नहीं करूँगा, नहीं, नहीं, केवल उस काल्पनिक स्थिति में जब वह मेरी प्रेमिका होती। यह बस एक अनुमान है, बस। मैं बस कल्पना कर रहा हूँ कि चीजें कैसी होतीं। मुझे शर्मिंदा होने की ज़रूरत नहीं है, इसमें कुछ भी अनैतिक नहीं है। मुझे ऐसा लगता है।
लेकिन, नैतिक रूप से सही हो या गलत, टेंगो को इन बातों के बारे में नहीं सोचना चाहिए था। उसका लिंग, जिस कीचड़ में वह शांति से सो रहा था, अचानक जाग उठा, मानो किसी ने उसकी पीठ में गुदगुदी की हो। उसने जम्हाई ली, सिर उठाया और धीरे- धीरे कड़ा होने लगा। अंत में, वह पूरी तरह से खड़ा हो गया, बिना किसी रोक-टोक के, जैसे किसी नौका पर पाल लगा हो जिसे उत्तर-पश्चिम की अनुकूल हवा मिल गई हो। स्वाभाविक रूप से, उसका कड़ा लिंग फुकाएरी के कूल्हे में चुभ रहा था। टेंगो ने गहरी साँस ली। उसकी प्रेमिका के गायब होने के बाद से उसने सेक्स नहीं किया था, और तब से एक महीने से ज़्यादा समय बीत चुका था। शायद इसीलिए ऐसा हुआ था। उसे गुणा-गुणा करना जारी रखना चाहिए था।
"आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है। ऐसा होना सामान्य बात है," फुकेरी ने उससे कहा।
"धन्यवाद," टेंगो ने कहा। "लेकिन छोटे लोग शायद कहीं से हमें देख रहे होंगे।" वे हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते, वे बस देख रहे हैं।
"यह अच्छी बात है," टेंगो ने राहत की सांस ली। "लेकिन यह जानकर मुझे अभी भी परेशानी होती है कि मुझ पर नज़र रखी जा रही है।"
बिजली की एक कड़क ने आसमान को ऐसे चीर दिया मानो कोई पुराना पर्दा फट गया हो, और गड़गड़ाहट से खिड़कियाँ हिलने लगीं। ऐसा लग रहा था मानो वो खिड़कियाँ तोड़ देंगी। शायद अंत में वो सचमुच चकनाचूर हो जाएँगी। एल्युमीनियम के फ्रेम से बनी खिड़कियाँ मज़बूत तो थीं, लेकिन अगर ये तेज़ गड़गड़ाहट नहीं रुकी तो

ज़्यादा देर तक टिक नहीं पाएँगी। बारिश की बड़ी-बड़ी बूँदें खिड़कियों पर ऐसे ज़ोर से पड़ रही थीं जैसे गोलियाँ किसी हिरण को मार रही हों।
"गरज अभी तक थम नहीं पाई है," टेंगो ने कहा। "आमतौर पर यह इतनी देर तक नहीं रहती।"
फुकेरी ने छत की ओर देखा।
वह कुछ समय तक कहीं नहीं जाएगा।
"कुछ समय के लिए, मेरा मतलब है कब तक?"
फुकेरी ने कोई जवाब नहीं दिया। तेंगो उसे अपनी बाहों में पकड़े रहा, शरमाते हुए, अपने सवालों के जवाब न मिलने के बावजूद, और उसका उत्तेजित मन कहीं नहीं जा रहा था।
"हम एक बार फिर बिल्लियों के शहर जा रहे हैं," फुकेरी ने कहा। "इसलिए हमें सोने की ज़रूरत है।"
"मुझे नहीं पता कि मैं इस गड़गड़ाहट के साथ सो पाऊंगा या नहीं। और अभी तो सिर्फ नौ बजे हैं," टेंगो ने संदेह से कहा।
उसने अपने मन में कुछ गणितीय सूत्र तैयार किए। यह एक लंबी और जटिल समस्या थी, जिसका उत्तर उसे पहले से ही पता था। चुनौती थी हल तक सबसे कम समय में और सबसे तेज़ तरीके से पहुँचना। वह तेज़ी से सोच रहा था और अपने दिमाग का पूरा इस्तेमाल कर रहा था। लेकिन फिर भी, उसका इरेक्शन कम होने का कोई संकेत नहीं दिखा रहा था। इसके विपरीत, उसे ऐसा लग रहा था कि यह और भी मजबूत हो रहा है। "तुम सो सकते हो," फुकेरी ने कहा।
वह सही था। बिना एहसास किए, टेंगो भारी बारिश की गर्जना के बीच सो गया, घर को हिला देने वाली गरज से घिरा हुआ, तनावग्रस्त और उत्तेजित लिंग के साथ। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि ऐसा संभव हो सकता है...
सोने से ठीक पहले उसने मन ही मन कहा, सब कुछ अस्त-व्यस्त है। मुझे हल तक पहुँचने का सबसे छोटा रास्ता खोजना होगा। समय सीमित है और उत्तर पुस्तिका पर लिखने के लिए पर्याप्त जगह नहीं है। टिक-टिक-टिक, घड़ी समय बीतने की आवाज़ कर रही थी।
*

जब उसे एहसास हुआ कि उसके साथ क्या हो रहा है, तो वह पूरी तरह नग्न था। फुकाएरी भी पूरी तरह नग्न थी। उसके शरीर पर कुछ भी नहीं था। उसके स्तन दो पूर्ण गोलार्धों की तरह थे। दो गोलार्ध जिनमें कोई कमी नहीं थी। उसके निप्पल, जो बहुत बड़े नहीं थे और अभी भी कोमल थे, चुपचाप उस परिपूर्ण आकार की तलाश में थे जो जल्द ही प्रकट होने वाला था। केवल उसके स्तन ही बड़े और परिपक्व थे। वे गुरुत्वाकर्षण को चुनौती देते प्रतीत होते थे। दोनों निप्पल खूबसूरती से ऊपर की ओर उठे हुए थे, जैसे सूरज की तलाश में लताओं की ताज़ी कोंपलें। तेंगो ने तब देखा कि फुकाएरी के गुप्तांगों पर बाल नहीं थे। जहाँ बाल होने चाहिए थे, वहाँ केवल चिकनी, चमकदार त्वचा थी। उसकी त्वचा की सफेदी ने उसे और भी असहाय बना दिया था। उसने अपने पैर फैला रखे थे, ताकि वह उसके गुप्तांग को देख सके। उसके कानों की तरह, वे भी नए बने प्रतीत होते थे। शायद यह वास्तव में ऐसा ही था, शायद यह अभी-अभी पैदा हुआ था। तेंगो ने सोचा कि कान और गुप्तांग, दोनों नए बने हुए, बहुत समान दिखते थे। ऊपर की ओर उठे हुए, चौकस, वे एक संकेत को समझने की कोशिश कर रहे थे। शायद दूर कहीं घंटी बजने की आवाज़ आ रही हो...

अंततः, लड़की ने उसका हाथ छोड़ दिया और बिना कुछ कहे, मुड़कर कक्षा से बाहर चली गई। टेंगो उस विशाल कमरे में अकेला रह गया। खुली खिड़की से बाहर बच्चों की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं।
अगले ही पल टेंगो को एहसास हुआ कि वह वीर्यपात कर रहा है। लंबा, ज़ोरदार, भरपूर। मैं कहाँ से आया? उसने सोचा। खाली कक्षा में ऐसा करना ठीक नहीं है। अगर किसी ने उसे देख लिया तो वह मुसीबत में पड़ जाएगा। लेकिन वह कक्षा में नहीं था। वह फुकाएरी के भीतर था और उसने उसके गर्भाशय में वीर्यपात कर दिया था। वह ऐसा करना नहीं चाहता था, लेकिन खुद को रोक नहीं पाया। जो कुछ हुआ उस पर उसका कोई नियंत्रण नहीं था।
*

कुछ देर बाद उसने अपने हमेशा के सपाट स्वर में कहा, "चिंता मत करो। मैं गर्भवती नहीं हो रही हूँ क्योंकि मुझे मासिक धर्म नहीं हो रहा है।"
टेंगो ने अपनी आँखें खोलीं और फुकाएरी की ओर देखा। वह अब भी उसके ऊपर थी और उसे नीचे देख रही थी। उसे उसके सुडौल स्तन दिखाई दे रहे थे, जो उसकी साँसों के साथ धीरे-धीरे ऊपर-नीचे हो रहे थे।
टेंगो यह पूछना चाहता था कि क्या यह बिल्लियों के शहर की यात्रा थी और वह शहर किस तरह का था। उसने अपना मुंह खोलकर बोलने की कोशिश की, लेकिन उसकी मांसपेशियां उसकी बात नहीं मान रही थीं और हिलने से इनकार कर रही थीं।
"यह कुछ आवश्यक था," फुकेरी ने उसके विचारों को पढ़ते हुए कहा।
संक्षिप्त जवाब, जिससे वास्तव में कुछ भी स्पष्ट नहीं हुआ। हमेशा की तरह। टेंगो ने अपनी आँखें फिर से बंद कर लीं। वह वहाँ था, उसने वीर्यपात किया था, और अब वह वापस यहाँ आ गया था। यह सचमुच का वीर्यपात था, असली वीर्य के साथ। और अगर फुकाएरी ने कहा था कि यह ज़रूरी था, तो शायद यह ज़रूरी ही था। टेंगो का शरीर अभी भी सुन्न और बेजान था। साथ ही, उसके चरम सुख की कोमलता उसके ऊपर एक पतली परत की तरह छाई हुई थी।
फुकाएरी काफी देर तक एक ही स्थिति में स्थिर रही, जैसे मधुमक्खी अमृत चूसती है, वैसे ही वह टेंगो के वीर्य को चूसती रही, जब तक कि एक बूंद भी बाकी नहीं रह गई। फिर उसने धीरे से उसका लिंग बाहर निकाला और बिना कुछ कहे बिस्तर से उठकर बाथरूम चली गई। इसी बीच, गरज बंद हो गई थी और भयानक बारिश थम गई थी। घर के ऊपर छाए जिद्दी बादल जल्दी ही छंट गए थे। चारों ओर एक अजीब सी खामोशी छा गई थी। बाथरूम में शॉवर की हल्की सी आवाज ही सुनाई दे रही थी। छत पर नजरें गड़ाए टेंगो अपने शरीर में फिर से जान आने का इंतजार कर रहा था। स्खलन के बाद भी उसका लिंग खड़ा था, लेकिन पहले जैसा तीव्र नहीं रहा था।
उसका एक हिस्सा अब भी खाली प्राथमिक विद्यालय के कक्षाकक्ष में था, लड़की की उंगलियों का स्पर्श उसकी हथेली में अभी भी महसूस हो रहा था। वह हथेली उठाकर उसे देख नहीं सकता था, लेकिन शायद उसे उसके नाखूनों के लाल निशान दिख रहे थे। उसकी नब्ज़ में अभी भी थोड़ी उत्तेजना थी। उसके सीने में छाया घना कोहरा छंट गया था, लेकिन उसकी जगह, उसके दिल के पास एक काल्पनिक जगह में, एक हल्की, सुखद सी टीस रह गई थी।
आओमामे, टेंगो ने सोचा।
मुझे उससे मिलना है। मुझे उसे ढूंढना है। यह बात मुझे पहले क्यों नहीं सूझी, जबकि यह इतनी स्पष्ट थी? उसने ही मुझे वह ज़रूरी पैकेज दिया था। मैंने उसे

खोलकर एक तरफ क्यों नहीं रख दिया? उसने अपना सिर हिलाया—या कम से कम कोशिश तो की, क्योंकि उसकी मांसपेशियां अभी भी उसकी बात नहीं मान रही थीं। उसका शरीर अभी तक लकवे से उबर नहीं पाया था।
*

कुछ देर बाद, फुकाएरी तौलिए में लिपटी हुई बेडरूम में लौटी। वह बिस्तर के किनारे बैठ गई।
"आम लोग अब उत्तेजित नहीं हैं," उसने कहा, मानो कोई गश्ती दल मोर्चे से शांत और कुशलतापूर्वक रिपोर्ट कर रहा हो।
फिर उसने अपनी उंगली से हवा में एक वृत्त बनाया, ठीक वैसे ही जैसे पुनर्जागरण काल का कोई महान इतालवी कलाकार किसी गिरजाघर की दीवारों पर चित्र बनाता था।
एक परिपूर्ण और सुंदर वृत्त, जिसका न कोई आरंभ था और न कोई अंत, जो कुछ देर तक हवा में तैरता रहा।
"यह खत्म हो गया है," फुकेरी ने आगे कहा।
उसने अपने ऊपर लिपटा तौलिया उतार दिया और कुछ क्षणों के लिए नग्न अवस्था में वहीं खड़ी रही। शांत हवा में, वह धैर्यपूर्वक अपने थोड़े नम शरीर के सूखने का इंतजार कर रही थी। यह एक अद्भुत दृश्य था। उसके चिकने स्तन और बिना बालों वाली योनि।
फिर वह झुकी और फर्श पर पड़े अपने पजामे उठाए। उसने बिना पैंटी पहने ही पजामा पहन लिया। उसने पजामे के बटन बंद किए और पैंट की डोरी बाँधी। तेंगो अर्ध-अंधेरे में उसे अनमने ढंग से देखता रहा। उसे ऐसा लगा जैसे वह किसी कीड़े के रूपांतरण की प्रक्रिया देख रहा हो। उसका पजामा फुकाएरी के लिए बड़ा था, लेकिन फुकाएरी को उसके आकार की आदत हो गई थी। लड़की संकरे बिस्तर पर लेट गई, एक आरामदायक स्थिति पाई और अपना सिर तेंगो के कंधे पर रख दिया। वह अपने नंगे कंधे पर तेंगो का छोटा सा कान और गर्दन के निचले हिस्से पर उसकी गर्म साँस महसूस कर सकती थी। धीरे-धीरे, जैसे ज्वार उतरता है, उसके शरीर से सुन्नपन दूर होने लगा।
हवा में अभी भी नमी थी, लेकिन अब वह चिपचिपी और अप्रिय नहीं थी। बाहर, कीड़े चहचहाना शुरू कर चुके थे। टेंगो का लिंग पूरी तरह से शांत हो चुका था और एक बार फिर गर्म मिट्टी में धंस गया था। सब कुछ अपने स्वाभाविक क्रम में लौट आया था, और ऐसा लग रहा था मानो एक चक्र आखिरकार समाप्त हो रहा हो। हवा में एक पूर्ण वृत्त बना हुआ था। जानवर नाव से उतर रहे थे और उस सूखी ज़मीन पर कदम रख रहे थे जिसे वे बहुत याद कर रहे थे। जानवरों के सभी जोड़े अपनी-अपनी जगह लौट रहे थे। "तुम्हें थोड़ी नींद ले लेनी चाहिए," उसने कहा। "जाओ।"
टेंगो ने सोचा, "मुझे सोने दो। मुझे सोने दो, फिर जागने दो। पता नहीं कल सुबह दुनिया कैसी होगी?"
"यह बात किसी को नहीं पता," फुकेरी ने उसके मन की बात पढ़ते हुए कहा।

अध्याय 15 भूत प्रकट होते हैं

ओमामे ने अलमारी से एक कंबल निकाला और उस आदमी के विशाल शरीर को उससे ढक दिया। उसने अपनी उंगली से उसकी गर्दन को फिर से छुआ, यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसकी नब्ज़ न चल रही हो। नेता कहलाने वाला वह व्यक्ति पहले ही दूसरी दुनिया में जा चुका था। कौन सी दुनिया, यह कोई नहीं जानता था, लेकिन यह निश्चित रूप से 1Q84 नहीं थी। इस दुनिया में, उसे पहले ही "मृत" का नाम मिल चुका था। उसने जीवन और मृत्यु के बीच की सीमा को एक छोटे से कंपन के साथ पार कर लिया था, जैसे ठंड से कंपकंपी, बिना कोई आवाज़ किए। खून की एक बूँद भी नहीं बही थी। अब वह मृत था, नीली योगा मैट पर पेट के बल लेटा हुआ, सभी दर्द से मुक्त। ओमामे हमेशा की तरह तेज़ी और सटीकता से आगे बढ़ी।
उसने सुई की नोक में कॉर्क लगाया, छेनी को वापस उसके म्यान में रखा और म्यान को अपने जिम बैग में डाल दिया। उसने बंदूक को उसके प्लास्टिक पाउच से निकाला और अपनी ट्रैक पैंट की इलास्टिक में फंसा लिया। उसमें सेफ्टी लॉक लगा हुआ था और बैरल में एक गोली थी। उसकी रीढ़ की हड्डी पर उसके कठोर, धातुई स्पर्श ने उसे कुछ हद तक सहज महसूस कराया। उसने पर्दे खींच दिए ताकि कमरा फिर से अंधेरा हो जाए।
फिर आओमामे ने अपना थैला उठाया और दरवाजे की ओर चल पड़ी। दरवाजे की मूठ पर हाथ रखकर उसने अंधेरे में पीछे मुड़कर फर्श पर लेटे हुए आदमी की आकृति को देखा।
वह गहरी नींद में सो रहा था, ठीक वैसे ही जैसे उसने उसे पहली बार देखा था।
आओमामे ही दुनिया में अकेली ऐसी इंसान थी जिसे पता था कि वह अब जीवित नहीं है।
नहीं, शायद छोटे लोग भी जानते थे, और इसीलिए उन्होंने गरजना बंद कर दिया था।
उन्हें एहसास हो गया था कि अब चेतावनियों का कोई फायदा नहीं है। जिस आदमी को उन्होंने अपना प्रतिनिधि चुना था, वह पहले ही अपनी जान गंवा चुका था।
ओमामे ने दरवाजा खोला और अपनी आंखों को ढँकते हुए रोशन कमरे में प्रवेश किया। उसने धीरे से दरवाजा बंद कर दिया ताकि कोई आवाज़ न हो। गंजा आदमी सोफे पर बैठा कॉफी पी रहा था। मेज पर एक बड़ी ट्रे में कॉफी का बर्तन और सैंडविच रखे थे, जो रूम सर्विस से मंगवाए गए थे और जिनमें से आधे ही बचे थे। उसके बगल में दो बिना इस्तेमाल किए हुए कॉफी के कप रखे थे। बालों वाला आदमी दरवाजे के पास रखी रोकोको शैली की कुर्सी पर पहले की तरह ही पीठ सीधी करके बैठा था। ऐसा लग रहा था जैसे वे काफी देर से एक ही स्थिति में बिना कुछ बोले बैठे हों। कमरे का यही माहौल था।
जब आओमामे कमरे में दाखिल हुई, तो गंजे आदमी ने कप को तश्तरी पर रखा और चुपचाप खड़ा हो गया।
"मेरा काम हो गया," उसने घोषणा की। "वह अब सो रहा है। इसमें काफी समय लगा क्योंकि उसकी मांसपेशियों की समस्या भी गंभीर थी। कृपया उसे आराम करने दें।" "वह सो रहा है?"
- इसलिए।

गंजे आदमी ने उसकी आँखों में सीधे देखा, मानो उनकी गहराई तक पहुँचने की कोशिश कर रहा हो। फिर उसने धीरे से अपनी नज़र उसके जूतों के अगले हिस्से पर डाली, मानो यह जाँच रहा हो कि कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं है, और फिर अपनी नज़र उसके चेहरे पर वापस उठा ली।
क्या यह सामान्य है?
"मांसपेशियों का तनाव कम होने के बाद कई लोग गहरी नींद सो जाते हैं। यह कोई असामान्य बात नहीं है।"
गंजे आदमी ने बैठक और शयनकक्ष को अलग करने वाले दरवाजे के पास जाकर धीरे से हैंडल घुमाया, दरवाजा थोड़ा सा खोला और अंदर झाँका। आओमामे ने अपना दाहिना हाथ पीठ पीछे रखा हुआ था, ताकि किसी भी अप्रिय घटना होने पर बंदूक उठा सके। उसने लगभग दस सेकंड तक अंदर झाँका, फिर पीछे हटकर दरवाजा बंद कर दिया।
“वह कितनी देर सोएगा?” उसने पूछा। “हम उसे ज्यादा देर तक फर्श पर लेटा हुआ नहीं छोड़ सकते।”
"उसे दो घंटे में जाग जाना चाहिए। तब तक, उसे इसी स्थिति में छोड़ देना ही सबसे अच्छा होगा।"
गंजे आदमी ने समय देखने के लिए अपनी घड़ी पर एक नजर डाली। फिर उसने संक्षिप्त रूप से सिर हिलाया।
"मैं समझ गया। हम इसे कुछ देर के लिए ऐसे ही छोड़ देते हैं," उसने कहा। "क्या आप नहाना चाहते हैं?"
"कोई ज़रूरत नहीं। लेकिन मैं फिर से बदलना चाहूंगा।"
"ज़रूर। बाथरूम में आ जाओ।"
ओमामे कपड़े बदलने की चिंता छोड़ कर जितनी जल्दी हो सके वहाँ से निकलना चाहती थी, लेकिन शक पैदा न करना ही बेहतर था। जब वह आई थी तब उसने कपड़े बदले थे, इसलिए जाते समय भी उसे ऐसा ही करना पड़ा। वह बाथरूम में गई और अपनी ट्रैक पैंट उतार दी। उसने पसीने से भीगी हुई अपनी पैंटी भी उतार दी, तौलिए से खुद को अच्छी तरह सुखाया और फिर एक साफ पैंटी पहन ली। फिर उसने वही सूती पैंट और सफेद ब्लाउज पहन लिया जो वह पहनकर आई थी। उसने बंदूक को अपनी बेल्ट में इस तरह रख लिया कि वह दिखाई न दे। उसने अलग-अलग मुद्राओं में घूमकर यह सुनिश्चित किया कि कोई भी हरकत अप्राकृतिक न लगे। उसने साबुन से अपना चेहरा धोया और बालों में कंघी की। फिर वह शीशे के सामने बैठ गई और अपनी तनावग्रस्त मांसपेशियों को आराम देने के लिए तरह-तरह के आसन किए। थोड़ी देर बाद, उसका चेहरा सामान्य हो गया। इतनी देर तक frowning करने के कारण, उसे लगभग याद ही नहीं था कि उसका सामान्य चेहरा कैसा दिखता है। लेकिन कई असफल प्रयासों के बाद, उसके चेहरे पर एक शांत भाव आ गया। ओमामे ने शीशे में अपना चेहरा ध्यान से देखा। सब ठीक है, उसने खुद से कहा। ये मेरा सामान्य चेहरा है। मैं मुस्कुरा भी सकती हूँ। मेरे हाथ नहीं काँपते। मेरी निगाहें स्थिर हैं। मैं अब भी वही शांत और स्थिर आओमामे हूँ।
लेकिन, कुछ मिनट पहले, जब वह बेडरूम से बाहर आई थी, तो गंजे आदमी ने उसे ध्यान से देखा था। उसने शायद गौर किया होगा कि वह रो रही थी। वह बहुत रोई थी, इसलिए आँसुओं के निशान ज़रूर थे। यह सोचकर आओमामे बेचैन हो गया। स्ट्रेचिंग सेशन के बाद उसे इस हालत में देखना उसे अजीब लगा होगा। उसे शक हुआ होगा कि कुछ हुआ

है। और उसने बेडरूम का दरवाज़ा खोला, यह देखने गया कि लीडर क्या कर रहा है, और पाया कि उसका दिल धड़कना बंद हो गया था…
ओमामे ने पीछे हाथ बढ़ाकर बंदूक फिर से उठा ली। खुद को शांत करो, उसने कहा। डरो मत। डर चेहरे पर दिख जाएगा और उन्हें शक हो जाएगा।
सबसे बुरे हालात के लिए तैयार, आओमामे ने अपने बाएं हाथ में बैग लिया और सावधानी से बाथरूम से बाहर निकली। उसका दाहिना हाथ बंदूक उठाने के लिए तैयार था। लेकिन कमरे में कुछ भी असामान्य नहीं लग रहा था। गंजा आदमी कमरे के बीच में बाहें मोड़े बैठा था और आधी बंद आँखों से सोच रहा था। बालों वाला आदमी अभी भी प्रवेश द्वार के पास कुर्सी पर बैठा था और शांत भाव से कमरे का जायजा ले रहा था। उसका चेहरा शांत था, मानो किसी बमवर्षक विमान में बैठा मशीन गनर हो, अकेला और हमेशा आसमान को देखता हुआ। आसमान का नीला रंग उसकी आँखों में झलक रहा था।
"मुझे लगता है आप थक गए हैं," गंजे आदमी ने कहा। "कॉफी कैसी रहेगी? हमारे पास सैंडविच भी हैं।"
"नहीं, धन्यवाद। काम खत्म करने के तुरंत बाद मैं खाना नहीं खा सकता। मेरी भूख लगभग एक घंटे बाद वापस आती है।"
गंजे आदमी ने सिर हिलाया, अपनी जेब से एक मोटा लिफाफा निकाला, उसे हाथ में तौला और आओमामे को सौंप दिया।
उन्होंने कहा, "आपको यहां बताई गई मात्रा से कहीं अधिक मात्रा मिलेगी। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, कृपया किसी को भी कुछ न बताएं।"
"क्या यह किसी तरह की रिश्वत है?" उसने मजाक में कहा।
"यह आपकी मेहनत के लिए धन्यवाद है," उस व्यक्ति ने बिना मुस्कुराए जवाब दिया। "मैं इसे गुप्त रखती हूँ, चाहे रकम कितनी भी हो। यह मेरे काम का हिस्सा है। मैं कभी भी गोपनीय जानकारी का खुलासा नहीं करती," आओमामे ने कहा और लिफाफा सीधे अपने बैग में रख लिया। "क्या आपको रसीद चाहिए?"
गंजे आदमी ने अपना सिर हिलाया।
"नहीं। सब कुछ हमारे बीच ही रहेगा। आपको इस पैसे की घोषणा करने की आवश्यकता नहीं है।"
ओमामे ने चुपचाप सिर हिलाया।
"उसने आपसे काफी सवाल पूछे होंगे?" गंजे शोधकर्ता ने पूछा।
सामान्य से अधिक।
क्योंकि वह एक असाधारण व्यक्ति हैं।
- हाँ।
"वह एक अद्वितीय व्यक्ति हैं। और वह लंबे समय से भयानक पीड़ा झेल रहे हैं।
उन्होंने हमारे सभी दुख-दर्द अपने ऊपर ले लिए हैं। हमें उम्मीद है कि अब वे कम हो गए होंगे।"
"मुझे इसके कारणों का पता नहीं है, इसलिए मैं इस पर टिप्पणी नहीं कर सकती," आओमामे ने सोच-समझकर शब्दों का चयन करते हुए कहा, "लेकिन मुझे लगता है कि दर्द थोड़ा कम हो गया है।"
"तुम भी काफी थके हुए लग रहे हो।"
मैं सचमुच ऐसा ही हूँ।

जब वे बातें कर रहे थे, तब बालों वाला आदमी दरवाजे के पास कुर्सी पर बैठा चुपचाप कमरे का जायजा ले रहा था। उसका सिर हिल नहीं रहा था, केवल उसकी आँखें ही टिकी थीं। उसके चेहरे के भाव अपरिवर्तित थे। आओमामे को नहीं पता था कि उसने उनकी बातचीत सुनी या नहीं। वह अकेला, कम बोलने वाला और बेहद चौकस था। वह दुश्मन के लड़ाकू विमानों के बादलों से निकलने का इंतजार कर रहा था, जो पहले खसखस के दानों जैसे दिख रहे थे।
कुछ क्षणों की झिझक के बाद, आओमामे ने चेलियोस से पूछा:
"मुझे पता है कि यह मेरा मामला नहीं है, लेकिन अगर आप कॉफी पीते हैं और हैम सैंडविच खाते हैं तो क्या आप संप्रदाय के सिद्धांतों से भटक नहीं रहे हैं?" गंजे आदमी ने मुड़कर कॉफी और सैंडविच की ट्रे पर एक नजर डाली। उसके होठों पर हल्की सी मुस्कान झलक गई।
हमारे समूह में इतने सख्त नियम नहीं हैं। शराब और तंबाकू वर्जित हैं, और यौन संबंध पर भी कुछ पाबंदियां हैं। लेकिन खाने-पीने की काफी छूट है। हम आमतौर पर कम खाते हैं, लेकिन कॉफी और हैम सैंडविच पर कोई रोक नहीं है।
ओमामे ने अपनी राय व्यक्त किए बिना केवल सिर हिलाया।
क्योंकि हम बहुत से लोग एक साथ एकत्रित हुए हैं, इसलिए कुछ अनुशासन आवश्यक है। लेकिन यदि हम निश्चित स्वरूप पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हम मूल उद्देश्य से भटक जाते हैं। आख़िरकार, नियम और सिद्धांत सुविधा के लिए ही होते हैं। महत्वपूर्ण ढांचा नहीं, बल्कि उसके भीतर निहित तत्व हैं।
और नेतृत्वकर्ता ही वह व्यक्ति होता है जो सामग्री प्रदान करता है।
"हाँ। वह ऐसी आवाज़ सुनता है जो हम नहीं सुन पाते। वह बहुत खास इंसान है," गंजे आदमी ने आओमामे की ओर दोबारा देखते हुए कहा। "आज के लिए धन्यवाद। लगता है बारिश रुक गई है।"
— भयंकर गड़गड़ाहट हुई।
"हां," गंजे आदमी ने जवाब दिया, बारिश या गरज में उसकी कोई खास दिलचस्पी नहीं दिख रही थी।
ओमामे ने संक्षेप में सिर हिलाया, अपना बैग उठाया और बाहर निकलने की ओर चल पड़ी।
"एक मिनट रुको," दूसरे ने ऊंची आवाज में चिल्लाकर कहा।
आओमामे कमरे के बीच में रुक गई और उसकी ओर मुड़ गई।
उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था, सूखी आवाज़ों के साथ। उसने बेपरवाही से अपना हाथ अपनी पीठ के पीछे रख लिया।
"योगा मैट," उस आदमी ने कहा। "तुम उसे लेना भूल गए। वह बेडरूम में फर्श पर ही पड़ी है।"
"वह इस पर सो रहा है और हम इसे हटाकर ले नहीं जा सकते," आओमामे ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "अगर आपको कोई आपत्ति नहीं है, तो मैं इसे यहीं छोड़ देती हूँ। यह कोई महंगी चीज़ नहीं है और काफी इस्तेमाल हो चुकी है। अगर आपको इसकी ज़रूरत नहीं है, तो आप इसे फेंक सकते हैं।"
गंजे आदमी ने थोड़ी देर सोचा, फिर सिर हिलाया।
उन्होंने कहा, "धन्यवाद।"

जब आओमामे दरवाजे पर पहुँची, तो बालों वाले आदमी ने अपनी कुर्सी से उठकर उसके लिए दरवाजा खोल दिया। फिर उसने हल्के से सिर हिलाया। आओमामे ने सोचा, आखिर ये आदमी कभी बोलता ही नहीं। उसने भी अभिवादन किया और उसके पास से निकलने लगी। लेकिन उसी क्षण, एक आक्रामक आवेग बिजली के झटके की तरह उसके शरीर में दौड़ गया। उसने महसूस किया कि उस बालदार व्यक्ति ने उसकी दाहिनी बांह पकड़ ली। यह एक अत्यंत तेज़ और सटीक हरकत थी, मानो वह हवा में उड़ती किसी मक्खी को पकड़ना चाहता हो। यह तीव्र अनुभूति एक पल के लिए हवा में तैरती रही। आओमामे के शरीर की हर मांसपेशी तन गई। उसके रोंगटे खड़े हो गए, उसका दिल रुक गया। उसकी सांस गले में अटक गई और उसकी रीढ़ की हड्डी में बर्फीली सिहरन दौड़ गई। उसका दिमाग एक तेज़, चमकदार रोशनी से भर गया। उसने सोचा, अगर यह आदमी अब मेरी दाहिनी बांह पकड़ लेता है, तो मैं अपनी बंदूक तक नहीं पहुँच पाऊँगी। और फिर मेरे पास भागने का कोई मौका नहीं होगा। उसे लगता है कि मैंने कुछ किया है। उसे अंतर्ज्ञान से पता है कि यहाँ कुछ हुआ है। उसे ठीक से नहीं पता कि क्या हुआ है, बस इतना पता है कि कुछ बुरा हुआ है। उसकी अंतरात्मा कहती है कि उसे मुझे पकड़ना होगा। वह उसे आदेश देता है कि मुझे नीचे गिरा दे, ज़मीन पर दबा दे और मेरा कंधा उखाड़ दे। लेकिन यह सिर्फ एक अनुमान है, कोई ठोस सबूत नहीं। अगर वह गलत है, तो वह बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ जाएगा। वह आदमी हिचकिचाता है और अंततः हार मान लेता है। आखिर, फैसला करने और आदेश देने का अधिकार तो चेलियोस के पास था, उसके पास नहीं। वह अपने दाहिने हाथ की आवेग को दबाने की कोशिश करता है और अपने कंधे को ढीला छोड़ देता है। आओमामे ने उन दो सेकंड में उसके दिमाग में चल रही पूरी प्रक्रिया को यथासंभव स्पष्ट रूप से महसूस किया था।
ओमामे कालीन बिछे गलियारे में कदम रखा। पीछे मुड़े बिना, वह सीधे और बेफिक्र होकर लिफ्ट की ओर चल पड़ी। बालों वाले आदमी ने दरवाज़े से अपना सिर बाहर निकाला हुआ था और उसकी हर हरकत पर नज़र रख रहा था। वह अपनी पीठ पर उसकी तीखी, चाकू जैसी निगाहों को महसूस कर सकती थी। उसके शरीर की हर मांसपेशी में दर्द हो रहा था, लेकिन वह पीछे मुड़ने से खुद को रोक नहीं पाई। वह पीछे नहीं हट सकती थी। जब तक वह गलियारे के कोने पर नहीं मुड़ी, तब तक वह अपनी तनावग्रस्त मांसपेशियों को आराम नहीं दे पाई। लेकिन फिर भी उसे राहत की सांस नहीं मिली। उसे नहीं पता था कि आगे क्या होगा। ओमामे ने लिफ्ट को बुलाया और बंदूक पर हाथ रखे उसके आने का इंतज़ार किया (और इसमें बहुत देर लगी), ताकि अगर बालों वाला आदमी अपना इरादा बदल ले और उसके पीछे आए तो वह उसे तुरंत मार सके। उसे बिना किसी झिझक के उसे गोली मारनी थी, इससे पहले कि वह उसे अपने मजबूत हाथों से पकड़ ले। या बिना किसी झिझक के खुद को गोली मार लेनी थी। ओमामे को समझ नहीं आ रहा था कि कौन सा विकल्प चुने। शायद वह आखिरी पल तक फैसला नहीं कर पाती।
*

लेकिन उसके पीछे कोई नहीं आया। होटल की लॉबी में सन्नाटा पसरा हुआ था। लिफ्ट के दरवाजे खटखट से खुले और आओमामे अंदर चढ़ गई। उसने भूतल का बटन दबाया और उसके बंद होने का इंतज़ार किया। फिर उसने होंठ चबाते हुए मंजिल के साइनबोर्ड को देखा। वह लिफ्ट से बाहर निकली, विशाल लॉबी पार की और होटल के सामने ग्राहकों का इंतज़ार कर रही टैक्सियों में से एक में बैठ गई। बारिश पूरी तरह रुक चुकी थी, लेकिन कार से बड़ी-बड़ी बूँदें टपक रही थीं, मानो वह पानी के पर्दे से गुज़री हो। उसने ड्राइवर को बताया, "शिंजुकु स्टेशन, पश्चिमी प्रवेश

क्या बिजली कड़की?
ऐसा लग रहा था मानो वह किसी बहुत पुरानी घटना के बारे में बात कर रहा हो, जबकि वह घटना केवल आधे घंटे पहले ही घटी थी। वह सही था, उसने गरजते हुए कहा था। "हां, बहुत तेज बिजली कड़की थी," उसने कहा।
"हालांकि मौसम रिपोर्ट में इसके बारे में कुछ नहीं कहा गया था। उन्होंने कहा था कि दिन भर मौसम सुहावना रहेगा।"
ओमामे कुछ कहने के लिए बहुत सोच रही थी, लेकिन उसे कुछ सूझ नहीं रहा था। उसका सिर दर्द से बेहाल था।
उन्होंने कहा, "मौसम का पूर्वानुमान हमेशा उन पर लागू नहीं होता।"
ड्राइवर ने रियरव्यू मिरर में उसकी तरफ देखा। उसके बोलने का तरीका स्वाभाविक नहीं रहा होगा।
"सड़कें जलमग्न हो गईं, पानी अकासाका-मित्सुके मेट्रो स्टेशन में घुस गया और पटरियों को ढक लिया। केवल एक छोटे से हिस्से में बारिश हुई। गिन्ज़ा लाइन और मारुनोची पर ट्रेनें रुक गईं। रेडियो समाचारों में पहले ही इसकी जानकारी दी जा चुकी है।"
तेज़ बारिश के कारण मेट्रो रुक गई थी। क्या इससे मुझ पर कोई असर पड़ेगा? आओमामे सोचने लगी। मुझे सच में अपना दिमाग लगाना होगा। मैं शिंजुकु स्टेशन जाऊंगी और लगेज लॉकर से दोनों बैग ले आऊंगी। फिर मैं तमारू को फोन करके रास्ता पूछूंगी। अगर उसने मुझे मारुनोची लाइन लेने को कहा, तो मामला पेचीदा हो जाएगा। मेरे पास खुद को अदृश्य करने के लिए सिर्फ दो घंटे हैं। दो घंटे बाद, जब वे देखेंगे कि लीडर नहीं जाग रहा है, तो उन्हें शक होगा, वे अगले कमरे में जाकर देखेंगे कि क्या हो रहा है, और उन्हें पता चलेगा कि वह सांस नहीं ले रहा है। वे तुरंत कार्रवाई करेंगे।
"क्या मारुनोची पर अभी तक ट्रैफिक नहीं है?" उसने ड्राइवर से पूछा।
मुझे नहीं पता। क्या मुझे रेडियो चालू करना चाहिए?
- जी कहिये।
नेता के अनुसार, छोटे लोगों ने ही तूफान पैदा किया है। उन्होंने अकासाका इलाके के एक छोटे से क्षेत्र में बारिश केंद्रित कर दी, इसीलिए मेट्रो सेवा ठप हो गई है। आओमामे ने सिर हिलाया। शायद यह सब किसी योजना का हिस्सा था। चीजें इतनी आसानी से कभी नहीं होतीं।
ड्राइवर ने रेडियो पर एनएचके चैनल लगाया, जिस पर एक संगीत कार्यक्रम प्रसारित हो रहा था। यह 1960 के दशक के उत्तरार्ध में लोकप्रिय जापानी गायकों द्वारा गाए गए लोकगीतों का संग्रह था। आओमामे को बचपन में रेडियो पर इन्हें सुनने की धुंधली सी याद थी, लेकिन उसे कोई पुरानी यादें नहीं ताजा हुईं। इसके विपरीत, इन गीतों ने उसके सीने में एक बेचैनी पैदा कर दी। ये गीत उसे उन चीजों की याद दिला रहे थे जिन्हें वह याद नहीं करना चाहती थी। उसने कुछ देर तक कार्यक्रम को बर्दाश्त किया, लेकिन उसने देखा कि चाहे वह कितनी भी देर इंतजार करे, मेट्रो की स्थिति के बारे में कोई खबर प्रसारित नहीं हो रही थी। "कृपया रेडियो बंद कर दीजिए," उसने कहा। "वैसे भी, मैं अभी शिंजुकु स्टेशन जा रही हूँ और वहाँ की स्थिति का पता लगाऊंगी।"
"शिंजुकु में काफी भीड़भाड़ होगी," ड्राइवर ने रेडियो बंद करते हुए कहा।
*

जैसा कि उन्होंने सही कहा था, शिंजुकु स्टेशन पर अत्यधिक भीड़ थी। मारुनोची लाइन पर यातायात ठीक उसी स्टेशन पर रुका हुआ था जहाँ वह राष्ट्रीय रेलवे लाइन से मिलती थी, जिससे लोग दिशाहीन हो गए और भगदड़ मच गई। लोगों के घर लौटने का व्यस्त समय बीत चुका था, लेकिन फिर भी भीड़ में से रास्ता बनाना बेहद मुश्किल था।
आखिरकार आओमामे सामान रखने वाले लॉकर तक पहुँच गई और अपना शोल्डर बैग और काले रंग का नकली चमड़े का ट्रैवल बैग निकाला, जिसमें तिजोरी रखी थी। उसने अपने जिम बैग से सामान निकालकर बाकी दोनों बैगों में रख दिया। चेलियोस से मिला पैसों का लिफाफा, बंदूक वाला प्लास्टिक बैग, छेनी वाला होल्स्टर। अब उसकी ज़रूरत नहीं थी, इसलिए उसने नाइकी जिम बैग को पास के एक लॉकर में रख दिया, उसमें सौ येन का सिक्का डाला और लॉक कर दिया। उसका उसे वापस लेने का कोई इरादा नहीं था। उसमें ऐसा कुछ भी नहीं था जिसका पता लगाया जा सके।
ओमामे स्टेशन पर इधर-उधर घूम रही थी, पे फोन ढूंढ रही थी। सभी पे फोन भरे हुए थे। जो लोग ट्रेन न चलने के कारण घर जाने में देर कर रहे थे, उन्होंने लंबी कतार बनाकर अपनी बारी का इंतजार किया था। ओमामे ने मुंह बनाया। उसने सोचा, मुझे लगता है कि छोटे लोग मुझे आसानी से नहीं छोड़ेंगे। नेता ने जो कहा, उससे तो यही लगता है कि वे सीधे तौर पर मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते, लेकिन मेरे रास्ते में रुकावटें जरूर डाल सकते हैं।
लाइन में इंतजार करने से तंग आकर, आओमामे स्टेशन से बाहर निकली, सामने दिख रहे पहले कैफे में गई और एक आइस्ड कॉफी ऑर्डर की। वहां भी फोन व्यस्त था, लेकिन लाइन में इंतजार नहीं करना पड़ा। वह उस महिला के पीछे खड़ी हो गई और उसकी लंबी बातचीत खत्म होने का धैर्यपूर्वक इंतजार करने लगी। वह उसे लगातार नाराज़गी भरी निगाहों से देखती रही, लेकिन उसने पांच मिनट बाद ही फोन रखा।
आओमामे ने अपने पास मौजूद सारे सिक्के फोन में डाले और याद किया हुआ नंबर डायल किया। तीन बार घंटी बजने के बाद, टेप पर एक मशीनी आवाज़ आई: "हम इस समय घर पर नहीं हैं। कृपया बीप के बाद संदेश छोड़ दें।"
"तामारू-सान?" ओमामे ने संकेत सुनकर कहा। "अगर आप वहां हैं तो कृपया जवाब दें।"
उन्होंने कहा, "मैं यहीं हूँ।"
- कितना बढ़िया!
तामारू को उसकी आवाज में तनाव का हल्का सा आभास हुआ।
"क्या तुम ठीक हो?" उसने उससे पूछा।
- अभी के लिए हाँ।
"क्या सब ठीक रहा?"
"वह सो रहा है। इससे ज्यादा गहरी नींद में वह हो ही नहीं सकता।"
"आह," तामारू ने राहत की सांस लेते हुए कहा, जो उसके लिए एक अजीब बात थी, क्योंकि वह कभी अपनी भावनाओं को ज़ाहिर नहीं करता था। "मैं उसे बता देता हूँ, ताकि वह शांत हो सके।"
— यह आसान नहीं था।
मुझे आप पर विश्वास है। लेकिन आपने काम पूरा कर दिया।
"हां," आओमामे ने जवाब दिया। "क्या यह फोन सुरक्षित है?"
— यह एक विशेष लाइन है, चिंता मत करो।

मैंने शिंजुकु स्टेशन पर अपना सामान ले लिया। अब आगे क्या?
- आपके पास कितना समय है?
"डेढ़ घंटा," उसने कहा और संक्षेप में स्थिति समझाई। डेढ़ घंटे में, दोनों अंगरक्षक अगले कमरे में प्रवेश करेंगे और नेता को बेदम पाएंगे।
- बस काफी है।
"जैसे ही उन्हें वह मिलेगा, वे शायद पुलिस को फोन करेंगे।"
"मुझे नहीं पता। पुलिस ने कल ही उस पंथ के मुख्यालय पर छापा मारा था। वे अभी भी लोगों से पूछताछ कर रहे हैं और उन्होंने अभी तक कोई वास्तविक जांच शुरू नहीं की है, लेकिन अभी यह पता चलना अच्छा नहीं होगा कि संगठन के नेता की मौत अप्राकृतिक कारणों से हुई है।"
तो क्या यह संभव है कि वे इसे सार्वजनिक न करें और समस्या का समाधान स्वयं ही करें?
"वे बिना किसी दबाव के ऐसा कर देंगे। कल अखबारों से पता चलेगा कि उन्होंने पुलिस को सूचित किया है या नहीं। वे जोखिम लेना पसंद नहीं करते। लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि वे कुछ नहीं कहेंगे।"
हो सकता है वे इसे एक प्राकृतिक घटना मान लें।
"वे बाहरी दिखावे के आधार पर कोई निष्कर्ष नहीं निकाल सकते। जब तक पूरी तरह से पोस्टमार्टम नहीं हो जाता, तब तक यह पता लगाना असंभव है कि उसकी हत्या हुई है या उसकी मृत्यु प्राकृतिक कारणों से हुई है। लेकिन वे लोग सबसे पहले आपसे संपर्क करने की कोशिश करेंगे, क्योंकि आप ही आखिरी व्यक्ति हैं जिन्होंने उसे जीवित देखा था। और जब उन्हें पता चलेगा कि आपने अपना अपार्टमेंट खाली कर दिया और गायब हो गईं, तो वे अपने आप मान लेंगे कि यह स्वाभाविक मृत्यु नहीं थी।"
और वे मेरी तलाश शुरू कर देंगे। वे हर संभव कोशिश करेंगे।
- वह पक्का है।
मैं खुद को पूरी तरह से अदृश्य कैसे बना सकता हूँ?
"हमारे पास एक योजना है। एक बेहद सुनियोजित योजना। अगर हम इसका सावधानीपूर्वक और धैर्यपूर्वक पालन करें, तो कोई भी आपको नहीं ढूंढ पाएगा। डरना सबसे बुरी बात है।"
- मैं प्रयासरत हूं।
"ऐसा ही करते रहो। जल्दी करो और समय का सदुपयोग करो। तुम सावधान और धैर्यवान व्यक्ति हो। वही करो जो तुम आमतौर पर करते हो।"
अकासाका क्षेत्र में भारी बारिश हुई और मेट्रो यातायात ठप हो गया।
"मुझे पता है। लेकिन चिंता मत करो। इस योजना में मेट्रो शामिल नहीं है। मैं चाहता हूं कि तुम टैक्सी लो और शहर में किसी आश्रय स्थल पर जाओ।"
"शहर से? क्या यह कहीं दूर जाने के बारे में नहीं था?"
"हाँ, तुम कहीं दूर जा रहे हो," तामारू ने शांत भाव से उससे कहा। "लेकिन उससे पहले कुछ तैयारियाँ ज़रूरी हैं। तुम्हें अपना नाम और रूप बदलना होगा। और वैसे भी, यह काम बहुत कठिन था। तुम ज़रूर उत्तेजित भी होगे। ऐसे समय में घबराना ठीक नहीं है। तुम कुछ देर उस आश्रय में छिप जाओगे। शांत रहो, हम हर तरह से तुम्हारा साथ देंगे।"
"यह ठीक कहाँ है?"

- कोएंजी में।
कोएंजी, आओमामे ने अपने दांतों पर हल्के से नाखून थपथपाते हुए सोचा। मुझे इस इलाके के बारे में बिल्कुल भी जानकारी नहीं है।
तामारू उसे पता और इमारत का नाम बताता है। हमेशा की तरह, आओमामे बिना कुछ लिखे सब कुछ याद कर लेती है।
कोएंजी के दक्षिणी निकास द्वार पर, कन्नाना के पास। अपार्टमेंट संख्या 303।
भवन का प्रवेश कोड 2831 है।
तामारू रुक गई। आओमामे ने मन ही मन संख्याओं को दोहराया।
चाबी डोरमैट के पीछे टेप से चिपकी हुई है। अपार्टमेंट में आपकी ज़रूरत की सभी चीज़ें मौजूद हैं, इसलिए आपको कुछ समय के लिए घर से बाहर जाने की ज़रूरत नहीं है। मैं आपसे संपर्क करूँगा। मैं तीन बार घंटी बजाऊँगा, फिर काट दूँगा और बीस सेकंड बाद दोबारा कॉल करूँगा। कृपया मुझसे संपर्क करने की कोशिश न करें।
- मैं समझता हूँ।
“क्या वे लोग सख्त थे?” तामारू ने पूछा।
मेरे साथ बैठे दोनों लड़के काफी कुशल लग रहे थे। मुझे एक पल के लिए डर भी लगा।
लेकिन वे पेशेवर नहीं थे। वे आपसे बिलकुल अलग स्तर के थे।
मेरे जैसे लोग बहुत कम हैं।
अगर उनकी संख्या बहुत ज्यादा हो तो यह अच्छा नहीं होगा।
- यह सही है।
*

ओमामे ने अपना सामान उठाया और स्टेशन पर टैक्सी स्टैंड की ओर चल पड़ी। वहाँ लंबी कतार लगी हुई थी। ऐसा लग रहा था कि मेट्रो अभी तक शुरू नहीं हुई है। लेकिन उसे कतार में लगकर धैर्यपूर्वक अपनी बारी का इंतजार करना ही था। उसके पास कोई और विकल्प नहीं था।
झुंझलाहट भरे चेहरों वाले यात्रियों की भीड़ में इंतज़ार करते हुए, आओमामे मन ही मन आश्रय स्थल का पता, इमारत का नाम, अपार्टमेंट नंबर, प्रवेश कोड और तामारू का फ़ोन नंबर दोहरा रही थी, मानो कोई तपस्वी पहाड़ की चोटी पर चट्टान पर बैठकर किसी महत्वपूर्ण मंत्र का जाप कर रहा हो। आओमामे को अपनी याददाश्त पर पूरा भरोसा था। वह ऐसी जानकारी आसानी से याद रख सकती थी, लेकिन उस समय, वे नंबर उसके लिए जीवन रेखा के समान थे। अगर वह एक भी नंबर भूल जाती या उसमें कोई गलती कर देती, तो उसका बचना मुश्किल हो जाता। उसे उन्हें याद रखना ही था।
जब वह आखिरकार टैक्सी में बैठी, तब तक नेता के बेसुध पड़े कमरे से निकले हुए लगभग एक घंटा बीत चुका था। उसे अनुमान से दोगुना समय लग गया था। शायद छोटे लोगों ने ही उसे इतना समय दिया था। उन्होंने अकासाका में बारिश करवा दी थी, सब-ट्रेनें रुकवा दी थीं, लोगों को घर जाने से रोक दिया था, शिंजुकु स्टेशन पर भीड़ बढ़ा दी थी, टैक्सियाँ कम पड़ गई थीं और आओमामे को देर हो गई थी। इससे वह तनाव में आ गई थी और उसका धैर्य टूटने का खतरा था। लेकिन शायद यह सब महज़ एक संयोग था। शायद चीज़ें बस इसी तरह घटित हुईं, और वह उन प्राणियों की परछाई से डर रही थी जिनका अस्तित्व ही नहीं था।
ओमामे ने ड्राइवर को पता बताया, सीट पर पीछे झुक गई और अपनी आँखें बंद कर लीं। गहरे रंग के सूट पहने दोनों आदमी शायद अब घड़ी देख रहे थे, नेता के जागने का इंतज़ार कर रहे थे। ओमामे ने कल्पना की कि चेलियोस कॉफ़ी पी रहा होगा और तरह-

तरह की बातें सोच रहा होगा। सोचना और फ़ैसले लेना उसका काम था। शायद वह इस बात से बेचैन हो रहा था कि नेता इतनी शांति से सो रहा है। वैसे भी वह गहरी नींद में सो रहा था, बिना कोई आवाज़ किए। बिना खर्राटे लिए और बिना किसी को उसकी साँसें सुनाई दिए। लेकिन हवा में कुछ तो था। उस औरत ने कहा था कि वह दो घंटे सोएगा और उसे आराम करने देना चाहिए, ताकि उसकी मांसपेशियों को आराम मिल सके। अभी सिर्फ़ एक घंटा ही बीता था। लेकिन कुछ उसे परेशान कर रहा था। शायद जाकर देखना बेहतर होगा कि क्या हो रहा है। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे।
लेकिन असली खतरा तो उस बालों वाले आदमी से था। आओमामे को वह आक्रामक आवेग साफ याद था जो उसके कमरे से निकलते ही उसके मन में आया था। वह शांत स्वभाव का था, लेकिन उसकी सूझबूझ बहुत तेज थी। शायद वह कई तरह की युद्ध तकनीकों में भी माहिर था। वह उसकी उम्मीद से कहीं ज्यादा कुशल लग रहा था। मार्शल आर्ट के मामले में उसका ज्ञान उसके मुकाबले कहीं कम था। वह उसे बंदूक निकालने के लिए पीछे हाथ बढ़ाने का भी समय नहीं देता। लेकिन, सौभाग्य से, वह पेशेवर नहीं था। वह अपनी सूझबूझ का इस्तेमाल करने से पहले सोच-समझकर फैसला लेता था। उसे निर्देश लेने की आदत थी। तामारू ऐसा नहीं था। वह सबसे पहले अपने प्रतिद्वंदी को काबू में करता, उसे निष्क्रिय करता, और उसके बाद ही सोचता। वह पहले कार्रवाई करता। वह अपनी सूझबूझ पर भरोसा करता और फिर तर्क का इस्तेमाल करता। वह जानता था कि एक पल की भी हिचकिचाहट जानलेवा साबित हो सकती है।
इन बातों को याद करते हुए, आओमामे को अपनी बगलों में पसीना आने लगा। उसने चुपचाप अपना सिर हिलाया। मैं भाग्यशाली थी, उसने मन ही मन कहा। कम से कम उन्होंने मुझे मौके पर ही गिरफ्तार तो नहीं किया। अब से मुझे बहुत सावधान रहना होगा। बिल्कुल तमारू की तरह। सबसे ज़रूरी है सावधान और धैर्यवान रहना। जैसे ही आप अपनी सतर्कता कम करते हैं, खतरा सामने आ जाता है।
*

टैक्सी चालक एक विनम्र, अधेड़ उम्र का आदमी था। उसने गाड़ी रोकी और मीटर बंद करके नक्शा देखा और आओमामे की अपार्टमेंट बिल्डिंग ढूंढ ली। आओमामे ने उसे धन्यवाद दिया और टैक्सी से उतर गई। यह एक रिहायशी इलाके के बीचोंबीच बनी एक नई, शानदार, पांच मंजिला इमारत थी। प्रवेश द्वार पर कोई नज़र नहीं आ रहा था। आओमामे ने कोड डाला, स्वचालित दरवाजा खोला और साफ-सुथरी लेकिन तंग लिफ्ट से तीसरी मंजिल पर गई। लिफ्ट से उतरते ही उसने सबसे पहले आग से बचने वाली सीढ़ी ढूंढी, फिर डोरमैट के पीछे चिपकी चाबी निकाली, दरवाजा खोला और अपार्टमेंट में प्रवेश किया। सामने का दरवाजा खुलते ही हॉलवे की लाइट अपने आप जल गई। अंदर, एक नई इमारत की अलग ही खुशबू थी। फर्नीचर और उपकरण भी बिल्कुल नए लग रहे थे, इस्तेमाल का कोई निशान नहीं था। शायद उन्हें अभी-अभी डिब्बों से निकाला गया था। ऐसा लग रहा था जैसे किसी इंटीरियर डिजाइनर ने एक मॉडल अपार्टमेंट को सजाने के लिए इन्हें थोक में खरीदा हो। उनका डिजाइन सरल और कार्यात्मक था और उन्हें देखकर ऐसा नहीं लगता था कि अपार्टमेंट में कोई रहता है।
प्रवेश द्वार के बाईं ओर बैठक कक्ष था। एक गलियारा, एक स्नानघर और एक शौचालय था, और अंत में दो शयनकक्ष थे। उनमें से एक में एक बड़ा, सजा हुआ पलंग था। खिड़कियों पर पर्दे लगे हुए थे। अगर आप सड़क की ओर वाली खिड़की खोलते, तो कन्नाना-दोरी पर यातायात का शोर कमरे में दूर समुद्र की गर्जना की तरह गूंजता। खिड़की बंद होने पर लगभग कुछ भी सुनाई नहीं देता था। बैठक कक्ष एक

छोटी बालकनी में खुलता था, जहाँ से सड़क के पार एक पार्क दिखाई देता था। उसमें झूले, एक स्लाइड, एक रेत का गड्ढा और एक सार्वजनिक शौचालय था। एक ऊँची लालटेन आसपास के वातावरण को असामान्य रूप से तेज रोशनी से जगमगा रही थी। उसके चारों ओर एक विशाल एल्म का पेड़ अपनी शाखाएँ फैलाए खड़ा था। अपार्टमेंट तीसरी मंजिल पर था, लेकिन आसपास कोई बड़ी इमारत नहीं थी, इसलिए उसे लोगों के घूरने की चिंता नहीं थी।
ओमामे को जियुगाओका में अपना वो घर याद आ गया, जिसे उसने अभी-अभी छोड़ा था। इमारत पुरानी थी और ज़्यादा साफ़ नहीं थी, कभी-कभी उसमें तिलचट्टे भी होते थे और दीवारें पतली थीं। वो ये तो नहीं कह सकती थी कि उसे उस जगह से कोई लगाव था। लेकिन अब उसे उसकी याद आ रही थी। इस बिल्कुल नए घर में, उसे ऐसा लग रहा था जैसे वो एक गुमनाम इंसान हो, जिसकी कोई यादें न हों और कोई पहचान न हो।
फ्रिज के दरवाजे में उसे हाइनेकेन बियर के चार कैन मिले। आओमामे ने एक कैन खोला और एक घूंट पिया। उसने इक्कीस इंच का टेलीविजन चालू किया, उसके सामने बैठ गई और समाचार देखने लगी। वह मूसलाधार बारिश और बिजली गिरने की खबर देख रही थी। मुख्य समाचार अकासाका-मित्सुके स्टेशन में भरे पानी और मारुनोची और गिन्ज़ा लाइनों पर यातायात ठप होने के बारे में था। सीढ़ियों से पानी तेज़ी से बह रहा था। रेनकोट पहने स्टेशन कर्मचारी प्रवेश द्वार पर रेत की बोरियाँ जमा कर रहे थे, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। यातायात पूरी तरह रुक चुका था और उसके दोबारा शुरू होने के कोई आसार नहीं थे। रिपोर्टर हाथ में माइक्रोफोन लिए घूम रहा था और उन लोगों की राय पूछ रहा था जिनके पास घर ले जाने के लिए कुछ नहीं था। उनमें से कुछ ने शिकायत की कि: "आज सुबह मौसम रिपोर्ट में तो सिर्फ साफ मौसम की बात कही गई थी।"
ओमामे ने समाचार अंत तक देखा, लेकिन ज़ाहिर सी बात है कि पायनियर नेता की मृत्यु के संबंध में कुछ भी होने की कोई उम्मीद नहीं थी। दोनों व्यक्ति दो घंटे बीतने का इंतज़ार कर रहे थे। अंत में, उन्हें सच्चाई पता चल जाएगी। ओमामे ने अपने यात्रा बैग से बैग निकाला, बंदूक निकाली और उसे मेज पर रख दिया। मेज पर रखी जर्मन निर्मित स्वचालित पिस्तौल बहुत ही शांत और मजबूत लग रही थी। और चारों ओर घना अंधेरा था। लेकिन इसकी बदौलत, उस बेजान घर में अब एक दिलचस्प चीज़ उभर आई थी। एक स्वचालित पिस्तौल के साथ एक दृश्य, ओमामे ने बुदबुदाया।
यह सचमुच किसी पेंटिंग के विषय जैसा दिखता है। खैर, अब से मुझे इसे हर समय अपने साथ रखना होगा, हमेशा हाथ में रखना होगा। चाहे मैं किसी को गोली मारूँ या खुद को।
फ्रिज में आधे महीने तक चलने लायक पर्याप्त सामान था। सब्जियां, फल, और तरह-तरह के तैयार खाने के पैकेट जो तुरंत तैयार हो सकते थे। फ्रीजर मांस, मछली और ब्रेड से भरा हुआ था। आइसक्रीम भी थी। खाने के सामान की अलमारियों पर उसे इंस्टेंट मील, डिब्बाबंद सामान और मसाले मिले। चावल और पास्ता भी था। पर्याप्त मात्रा में सादा पानी। सफेद वाइन की दो बोतलें और लाल वाइन की दो बोतलें। यह तो पता नहीं था कि यह सब किसने तैयार किया था, लेकिन इसे बहुत ही सावधानी से किया गया था। आओमामे को किसी भी चीज की कमी नहीं मिली।
इसी बीच उसे भूख लग गई, इसलिए उसने फ्रिज से कैमेम्बर्ट चीज़ निकाला, उसके कुछ टुकड़े काटे और क्रैकर्स के साथ खा लिए। आधा चीज़ खत्म करने के बाद उसने अजवाइन की एक डंडी धोई और उस पर मेयोनेज़ लगाकर चबाने लगा।

फिर उसने बेडरूम की अलमारी के दराज एक-एक करके खोले। सबसे ऊपर वाले दराज में उसे एक जोड़ी पजामा और एक पतला बाथरोब मिला, बिल्कुल नया, पैकेजिंग से अभी तक खोला नहीं गया था। सब कुछ ठीक से तैयार था। अगले दराज में तीन टी-शर्ट, तीन जोड़ी मोजे, टाइट्स और अंडरवियर थे। सभी सफेद और सादे थे, मानो फर्नीचर से मेल खाते हों, और सभी अभी भी अपनी मूल पैकेजिंग में थे। आश्रय गृह में रहने वाली महिलाओं को शायद यही चीजें मिली होंगी। कपड़ा अच्छा था, लेकिन उनमें राहत कर्मियों द्वारा दी गई चीजों की झलक थी।
बाथरूम में उसे शैम्पू, कंडीशनर, क्रीम और इत्र मिला। उसके पास ज़रूरत की हर चीज़ थी। आओमामे शायद ही कभी मेकअप करती थी, इसलिए उसे ज़्यादा मेकअप की ज़रूरत नहीं थी। उसके पास टूथब्रश, इंटरडेंटल ब्रश और टूथपेस्ट की ट्यूब भी थी। हेयरब्रश, कॉटन बड्स, रेज़र, कैंची और टैम्पोन, सब कुछ करीने से तैयार रखा था। उसके पास टॉयलेट पेपर और पेपर टॉवल के डिब्बे भी पर्याप्त मात्रा में थे। बॉडी और फेस टॉवल करीने से तह करके शेल्फ पर रखे थे। हर चीज़ बड़े ध्यान से व्यवस्थित की गई थी।
ओमामे ने अलमारी खोली। कौन जाने, शायद उसे अपने नाप के कपड़े और जूते मिल जाएं। और अगर वे अरमानी या फेरागामो के होते, तो वह कुछ भी नहीं कहती। लेकिन उसकी उम्मीदों के विपरीत, अलमारी खाली थी। उन्होंने इतना भी नहीं किया। वे बारीकी से काम करने और बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने का मतलब जानते थे। जैसे जे गैट्सबी की लाइब्रेरी। उसमें असली किताबें थीं, लेकिन उसने पन्ने नहीं उतारे थे। इसके अलावा, जब तक वह वहाँ रह रही थी, उसे बाहर पहनने वाले कपड़ों की ज़रूरत नहीं थी। उन्होंने फालतू चीज़ें नहीं दीं। हाँ, हैंगर ज़रूर दिए। ओमामे ने अपने डफ़ल बैग से कपड़े निकाले, उनमें सिलवटें देखीं और उन्हें हैंगर पर टांग दिया। वह जानती थी कि भागते हुए किसी व्यक्ति के लिए कपड़ों को बैग में ही रखना सबसे अच्छा होता है। लेकिन ओमामे को सिलवटों वाले कपड़े दुनिया में सबसे ज़्यादा नापसंद थे।
उसने मन ही मन सोचा, "मेरे पास एक निर्मम पेशेवर हत्यारा बनने का कोई मौका नहीं है। मैं अब क्या सोच रही हूँ?" उसी क्षण उसे अयुमी के साथ हुई एक बातचीत याद आई।
मैं अपने गद्दे के नीचे पैसों का एक बंडल छिपाकर रखता हूँ और अगर हालात बिगड़ जाते हैं, तो मैं उसे उठाता हूँ और खिड़की से बाहर भाग जाता हूँ।
"बिल्कुल!" आयुमी ने उंगलियां चटकाते हुए कहा। "स्टीव मैकक्वीन की फिल्म 'द हिट' की तरह। पैसों का ढेर और बंदूक। मुझे ये बहुत पसंद है!"
"काश ज़िंदगी इतनी आसान होती!" आओमामे ने दीवार की ओर देखते हुए कहा।
*

इसके बाद आओमामे बाथरूम में गई, कपड़े उतारे और शॉवर में चली गई। गर्म पानी ने उसके शरीर से पसीने की बदबू को धो दिया। शॉवर से बाहर आने के बाद, वह रसोई के काउंटर पर बैठ गई और बीयर का एक और घूंट लेते हुए तौलिए से अपने बाल सुखा लिए। आज तो वाकई बहुत तरक्की हुई है, उसने सोचा। पहिया घूम चुका है! और घूमता ही जा रहा है। और एक बार घूम जाए तो वापस नहीं घूम सकता। यही दुनिया के नियम हैं। ओमामे ने बंदूक हाथ में ली, उसे पलटा और नली अपने मुंह में डाल ली। उसे अपने दांतों पर उसकी कठोर, ठंडी छुअन महसूस हुई। उसमें हल्की-सी चिकनाई की गंध आ रही थी। इस तरह वह खुद को गोली मार सकती थी। वह बंदूक लोड करके ट्रिगर दबाती

अध्याय 16 एक भूतिया जहाज की तरह

कल सुबह दुनिया कैसी होगी?
"यह बात किसी को नहीं पता," फुकेरी ने कहा।
*

लेकिन जब वह सुबह उठा, तो दुनिया वैसी ही लग रही थी जैसी उसने पिछली रात छोड़ी थी। पलंग के पास लगी घड़ी में छह बज रहे थे और बाहर पूरी तरह उजाला था। हवा साफ थी और रोशनी पर्दों से सुई की तरह छनकर आ रही थी। गर्मी का मौसम आखिरकार खत्म हो रहा था। पक्षियों की चहचहाहट ताज़ा और तीखी सुनाई दे रही थी। पिछली रात का भयानक तूफान मानो किसी कल्पना या इतिहास की बात लग रहा था, जो बहुत पहले किसी अनजान जगह पर घटा था।
सबसे पहले टेंगो ने सिर उठाकर देखा कि क्या फुकाएरी रात भर में गायब हो गई थी। लेकिन वह उसके बगल में ही सो रही थी, जैसे कोई छोटा जानवर शीतनिद्रा में चला गया हो। सोते समय वह बेहद खूबसूरत लग रही थी, और उसके पतले काले बाल उसके गोरे गालों पर फैले हुए थे, मानो जटिल आकृतियाँ बना रहे हों। उसके कान बालों से ढके हुए थे और दिखाई नहीं दे रहे थे। उसकी धीमी साँसें सुनाई दे रही थीं। छत की ओर देखते हुए, टेंगो कुछ देर तक उस साँस को सुनता रहा जो किसी छोटी सी धौंकनी जैसी थी।
उसे पिछली रात के चरम सुख का एहसास अभी भी अच्छी तरह याद था। उसके मन में ये विचार तेज़ी से दौड़ रहे थे कि वह सचमुच उस लड़की के साथ चरम सुख का अनुभव कर चुका है, और उससे भी कहीं ज़्यादा। सुबह की रोशनी में, ये सब कुछ तूफ़ान की तरह अवास्तविक लग रहा था। मानो किसी सपने में हो रहा हो। किशोरावस्था में उसे अक्सर बेहोशी के दौरे पड़ते थे। उसे कामुक सपने आते थे जिनमें वो वीर्यपात करता और फिर जाग जाता। ये सब सपने में होता था, लेकिन वीर्य असली होता था। अब उसे ठीक वैसा ही एहसास हो रहा था।
लेकिन यह सपना नहीं था। उसने निस्संदेह फुकेरी के भीतर वीर्यपात किया था। फुकेरी ने कमान संभाली और तेंगो के लिंग को अपने भीतर ग्रहण किया। उसने कुशलता से वीर्य को निचोड़कर बाहर निकाल दिया। तेंगो ने बस आज्ञा का पालन किया। उसका शरीर पूरी तरह से सुन्न हो गया था और वह एक उंगली भी नहीं हिला पा रहा था। तेंगो के लिए, चरम सुख प्राथमिक विद्यालय के कक्षा कक्ष में हुआ था। "चिंता मत करो, मुझे मासिक धर्म नहीं होता और मैं गर्भवती नहीं हो सकती," फुकेरी ने उससे कहा था। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि ये सब सच में हुआ है। और फिर भी, यह हुआ था। असल दुनिया में। शायद।
वह बिस्तर से उठा, कपड़े पहने और रसोई में चला गया। सुबह की कॉफ़ी के लिए पानी उबालते हुए, उसने अपने विचारों को व्यवस्थित करने की कोशिश की, मानो किसी दराज में रखी वस्तुओं को व्यवस्थित कर रहा हो। लेकिन वह इसमें पूरी तरह सफल नहीं हो पाया। वह बस कुछ ही चीज़ों को इधर-उधर कर पाया। जहाँ इरेज़र था, वहाँ उसने पेपर क्लिप रख दिए और उनकी जगह शार्पनर रख दिया। जहाँ शार्पनर था, वहाँ उसने इरेज़र रख दिया, लेकिन नतीजा वही अव्यवस्था थी, बस पहले से अलग आकार की।

उसने अपनी कॉफ़ी पी, फिर बाथरूम गया। रेडियो पर बारोक संगीत का कार्यक्रम सुनते हुए उसने शेव की। टेलीमैन द्वारा विभिन्न एकल वाद्ययंत्रों के लिए रचित एक संगीतमय धुन। यह एक आम सुबह थी। उसने रसोई में अपनी कॉफ़ी पी, फिर रेडियो पर "बैरोक फॉर यू" कार्यक्रम सुनते हुए शेव की। बस संगीत हर दिन अलग होता था। कल रामेउ द्वारा रचित हार्पसीकोर्ड की एक रचना थी।
प्रस्तुतकर्ता समझाते हैं:

18 वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में, टेलीमैन को पूरे यूरोप में बहुत सम्मान प्राप्त था, लेकिन 19 वीं शताब्दी से ही उनकी रचनाओं की विशाल संख्या ने कई लोगों की उपेक्षा को जन्म दिया। बेशक, इसके लिए टेलीमैन को दोष नहीं दिया जा सकता। यूरोप में सामाजिक परिवर्तनों के साथ, संगीत के उद्देश्य के प्रति दृष्टिकोण में भी आमूलचूल परिवर्तन आया, जिसने इस संगीतकार के बारे में लोगों की राय में बदलाव लाने में योगदान दिया।

“क्या यही नई दुनिया है?” टेंगो ने सोचा।
उसने फिर चारों ओर देखा। कुछ भी बदला हुआ नहीं लग रहा था। किसी ने भी उसे तिरस्कार भरी नजरों से नहीं देखा। उसे दाढ़ी बनानी ही थी। चाहे दुनिया बदल गई हो, चाहे न बदली हो, कोई उसकी दाढ़ी बनाने नहीं आएगा। उसे खुद ही बनानी पड़ेगी।
खाना खत्म करने के बाद उसने मक्खन लगा हुआ टोस्ट का एक टुकड़ा खाया और एक और कप कॉफी पी। वह यह देखने के लिए बेडरूम में गया कि फुकाएरी क्या कर रही है, लेकिन लड़की अभी भी गहरी नींद में सो रही थी, हिल भी नहीं रही थी। उसके बिखरे हुए बाल उसके गालों पर जटिल पैटर्न बना रहे थे। उसकी सांसें भी उतनी ही शांत थीं।
फिलहाल उनका कोई तय कार्यक्रम नहीं था। उन्हें कोई क्लास नहीं पढ़ानी थी और न ही वे किसी का इंतज़ार कर रहे थे। न ही उनका किसी से मिलने का कोई इरादा था। वे जो चाहें करने के लिए पूरी तरह आज़ाद थे। रसोई की मेज़ पर बैठे-बैठे वे अपने उपन्यास पर काम करते रहे। वे कागज़ पर कलम से लिखते रहे। हमेशा की तरह, उनका सारा ध्यान तुरंत काम पर केंद्रित हो जाता था। वे अपने मन को एक अलग दिशा में ले जाते और उनके आसपास की सारी चीज़ें उनकी नज़रों से ओझल हो जातीं।
*

फुकाएरी नौ बजे से पहले जाग गई। उसने अपने पजामा उतारे और टेंगो की टी-शर्ट पहन ली, वही टी-शर्ट जो उसने जेफ बेक के जापान दौरे के दौरान पहनी थी, जब वह चिकुरा गया था। पतले कपड़े से उसके स्तन उभरे हुए दिख रहे थे, जिससे टेंगो को पिछली शाम के चरम सुख की याद आ गई। ठीक वैसे ही जैसे किसी युग का नाम आपको ऐतिहासिक घटनाओं की याद दिलाता है।
रेडियो पर मार्सेल डुप्र्रे की ऑर्गन की धुन बज रही थी। टेंगो ने लिखना बंद किया और लड़की के लिए नाश्ता बनाया। अर्ल ग्रे चाय और स्ट्रॉबेरी जैम के साथ टोस्ट। फुकेरी ने उसी सावधानी और आराम से ब्रेड पर जैम लगाया, जैसे रेम्ब्रांट अपने कोट की तह को चित्रित करते थे।
“आपने अपनी किताब की कितनी और प्रतियां बेची हैं?” टेंगो ने पूछा।
"हवा का प्यूपा?" फुकेरी ने पूछा।

- हाँ।
"मुझे नहीं पता," उसने थोड़ा भौंहें चढ़ाते हुए जवाब दिया। "काफी हद तक।" टेंगो ने मन ही मन सोचा कि संख्याएँ उसके लिए कोई बड़ा कारक नहीं थीं। उसके शब्द, "बहुत कुछ," ने उसे तिपतिया घास से भरे एक विशाल खेत की याद दिला दी, जो दूर-दूर तक फैला हुआ था।
तिपतिया घास, जिसे कोई गिन नहीं सकता, "अनेक" की अवधारणा का प्रतीक थी। उन्होंने कहा, "बहुत से लोगों ने 'द क्राइसालिस' पढ़ी है।"
फुकेरी ने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन उसने ध्यान से यह जांच की कि ब्रेड के टुकड़े पर जैम ठीक से फैला हुआ है या नहीं।
"हमें कोमात्सु-सान से जल्द से जल्द मिलना होगा," तेंगो ने मेज के उस पार फुकाएरी की ओर देखते हुए कहा। "तुम उनसे मिल चुके हो ना?"
— प्रेस कॉन्फ्रेंस में।
— क्या आपने बात की?
फुकेरी ने संक्षेप में अपना सिर हिलाया। उसका मतलब था, लगभग नगण्य।
वह अच्छी तरह समझ सकता था कि क्या हुआ होगा। कोमात्सु ने हमेशा की तरह, जो कुछ भी उसके दिमाग में आया, यहाँ तक कि जो नहीं आया, सब कुछ जल्दी से बता दिया था, और फुकाएरी, लगभग चुप, ने उसकी बात सुनी तक नहीं थी। लेकिन कोमात्सु को इसकी परवाह नहीं थी। अगर किसी ने ऐसे लोगों का उदाहरण मांगा होता जो आपस में बिल्कुल मेल नहीं खाते, तो फुकाएरी और कोमात्सु एकदम सही उदाहरण थे।
"मैंने उसे बहुत दिनों से नहीं देखा है," टेंगो ने कहा। "मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानता। मुझे लगता है कि वह इन दिनों बहुत व्यस्त है। 'द क्राइसालिस' के बेस्टसेलर बनने के बाद से वह बहुत व्यस्त है। लेकिन अब समय आ गया है कि हम आमने-सामने मिलें और कुछ मुद्दों पर गंभीरता से चर्चा करें। और अब जब आप यहां हैं, तो यह एक अच्छा अवसर है। क्या आप उससे मिलना चाहेंगे?"
तीनों।
हां। इससे चीजें आसान हो जाएंगी।
फुकेरी ने कुछ पल सोचा, या शायद वह कुछ कल्पना कर रहा था। फिर उसने कहा:
"ठीक है। अगर संभव हो तो।"
यदि संभव हो तो, टेंगो ने उसके शब्दों को मन ही मन दोहराया। उसके शब्दों में एक भविष्यवाणी छिपी थी।
“क्या आपको लगता है कि यह असंभव है?” टेंगो ने डरते हुए पूछा।
फुकेरी ने कोई जवाब नहीं दिया।
"तो, अगर हो सका तो हम उनसे मिलेंगे। कोई आपत्ति नहीं है।"
और हम क्या करें?
— अब हम क्या करें? टेंगो ने सवाल दोहराया। सबसे पहले, मैं उसे उसके पैसे वापस कर दूंगा। उसने मुझे 'द एयर क्राइसालिस' के लिए पैसे भेजे थे। मैं उन्हें स्वीकार नहीं करना चाहता। मुझे किताब को दोबारा लिखने का कोई अफसोस नहीं है। यह एक ऐसा अनुभव था जिसने मुझे प्रेरित किया और सही दिशा दिखाई। मुझे लगता है कि नतीजा अच्छा रहा, और सच तो यह है कि उपन्यास बिक रहा है और बहुत लोकप्रिय है। मुझे नहीं लगता कि इस प्रस्ताव को स्वीकार करना कोई गलती थी। लेकिन मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि बात इतनी आगे बढ़ जाएगी। बेशक, मैंने इसके लिए सहमति

दी थी, और मुझे अभी भी जिम्मेदारी लेनी होगी। लेकिन इसके लिए मुझे कोई भुगतान नहीं मिलेगा।
फुकेरी ने कंधे उचका दिए।
"बिल्कुल सही," टेंगो ने आगे कहा। "अगर मैं मना भी कर दूं, तो भी कुछ नहीं बदलेगा। लेकिन मैं अपना रुख स्पष्ट करना चाहता हूं।"
- किसके लिए?
"मुख्यतः खुद से," टेंगो ने थोड़ी धीमी आवाज़ में कहा।
फुकेरी ने जैम के जार का ढक्कन हटाया और उसे इस तरह देखा मानो वह कोई चमत्कार हो।
"शायद अब इसके लिए बहुत देर हो चुकी है," टेंगो ने आगे कहा।
फुकेरी ने कुछ नहीं कहा।
*

एक बजे के बाद उसने दफ्तर में कोमात्सु को फोन किया (दोपहर से पहले उससे मिलना नामुमकिन था)। फोन उठाने वाली लड़की ने बताया कि उसने कुछ दिनों की छुट्टी ली है। उसे इससे ज़्यादा कुछ नहीं पता था। या, अगर पता भी होता, तो वह टेंगो को बताना नहीं चाहती थी। उसके कहने पर, उसने उसे एक दूसरे संपादक से बात करवा दी, जिससे वह कुछ बार मिल चुका था। टेंगो ने उस मासिक पत्रिका में छद्म नाम से कुछ लेख लिखे थे जिसका वह संपादन करता था। वह उससे दो-तीन साल बड़ा था और दोनों ने एक ही विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी। कोमात्सु को टेंगो पसंद था।
“कोमात्सु-सान एक हफ्ते की छुट्टी पर गए थे,” उसने उससे कहा। तीन दिन बाद उन्होंने फोन किया और बताया कि उनकी तबीयत ठीक नहीं है और उन्हें घर पर ही रहना पड़ेगा। तब से वे काम पर नहीं आए हैं। ऑफिस में सब लोग परेशान हैं। वे क्राइसालिस डी एयरो के मुख्य संपादक थे और किताब से जुड़ी हर चीज़ का ध्यान रखते थे। वे पत्रिका के संपादक भी हैं, लेकिन उन्होंने अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर दिया और किसी और को किताब छूने भी नहीं दी। और अब जब वे चले गए हैं, तो कोई और नहीं है जो इसे संभाल सके। खैर, अब कुछ नहीं किया जा सकता, अगर उनकी तबीयत ठीक नहीं है, तो ठीक नहीं है, बस!
"लेकिन असल में हुआ क्या था?"
मुझे नहीं पता। उसने बस इतना कहा कि उसकी तबीयत ठीक नहीं है। बस इतना कहकर उसने फोन काट दिया। उसके बाद से उससे कोई बात नहीं हुई। मुझे उससे कुछ पूछना था इसलिए मैंने उसे घर पर फोन किया, लेकिन उसने फोन नहीं उठाया। फोन पर आंसरिंग मशीन चल रही है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या हो रहा है।
— क्या कोमात्सु-सान और उनका परिवार भी वहीं हैं?
"वह अकेले रहते हैं। उनकी शादी हुई थी और एक बच्चा भी है, लेकिन लगता है कि उनका तलाक बहुत पहले हो गया था। वह कभी कुछ नहीं कहते, इसलिए मुझे पूरी जानकारी नहीं है। ये सब बस अफवाहें हैं।"
वैसे भी, यह अजीब बात है कि वह एक हफ्ते से काम पर नहीं आया है और उसने आपसे केवल एक बार ही संपर्क किया है।
— खैर, आप जानते हैं कि वह ऐसा आदमी नहीं है जो बाकी सब लोगों की तरह काम करता हो।
रिसीवर हाथ में लिए हुए टेंगो कुछ देर सोच में डूबा। फिर उसने कहा:

"हाँ, सही कहा, पता नहीं वो क्या कर रहा है। वो सामाजिक रीति-रिवाजों का पालन नहीं करता और उसमें स्वार्थ की भी कोई कमी नहीं है। लेकिन जहाँ तक मुझे पता है, काम के मामले में वो बहुत ज़िम्मेदार है। अब जब एयर क्राइसालिस की बिक्री इतनी अच्छी हो रही है, तो मुझे नहीं लगता कि वो अपना काम छोड़ देगा, भले ही उसकी तबीयत ठीक न हो, और आपसे संपर्क करना बंद कर देगा। वो इतना भी बुरा नहीं है।"
“हाँ, बिल्कुल,” संपादक ने सहमति जताते हुए कहा। “शायद किसी को उसके घर जाकर देखना चाहिए कि क्या चल रहा है। फुकाएरी के गायब होने के बारे में वो ‘पायनियर्स’ वाली बात तो हुई ही थी, और वो अभी तक लापता है। मुमकिन है कुछ हुआ हो। क्या कोमात्सु-सान ने घर पर रहने के लिए बीमार होने का बहाना बनाया और असल में फुकाएरी को छिपा रखा हो? मैं तो इसके बारे में सोचना भी नहीं चाहता।” टेंगो चुप हो गया। उसे इस बात का एहसास ही नहीं था कि फुकाएरी ठीक उसकी आँखों के सामने थी और कॉटन स्वैब से अपने कान पोंछ रही थी।
और बात यहीं खत्म नहीं होती। इस किताब के बारे में कई संदिग्ध बातें हैं। यह सच है कि इसकी बिक्री अच्छी हो रही है, लेकिन कुछ तो गड़बड़ है। और ऐसा लगता नहीं कि सिर्फ मुझे ही ऐसा लग रहा है, संपादकीय टीम में हममें से कई लोगों को यही महसूस हो रहा है। खैर... लेकिन ज़रा सोचिए, क्या आपका कोमात्सु से कोई लेना-देना था?
"नहीं, कुछ खास नहीं। मैंने उनसे काफी समय से बात नहीं की थी और मैंने सोचा कि उन्हें एक बार फोन कर लूं, बस इतना ही।"
— इस बार भी वो काफी व्यस्त रहे हैं। शायद तनाव ने भी इसमें योगदान दिया है। खैर, 'द एयर क्राइसालिस' मेरी अब तक की सबसे ज्यादा बिकने वाली उपन्यास है।
देखो इस साल कितने सारे बोनस मिलने वाले हैं! क्या तुमने इसे पढ़ा है?
— बिल्कुल, मैंने इसे तब पढ़ा था जब इसे प्रतियोगिता के लिए जमा किया गया था।
— ओह, जी हाँ, बिल्कुल सही। पांडुलिपियों का प्रारंभिक चयन आप ही करते हैं।
— एक रोचक और अच्छी तरह से लिखी गई पुस्तक।
— जी हाँ, विषयवस्तु बहुत अच्छी है। इसे पढ़ना सार्थक है।
टेंगो को उसके शब्दों में एक अशुभ संकेत का आभास हुआ।
"लेकिन क्या कुछ गड़बड़ लग रही है?"
इसे संपादक का अंतर्ज्ञान कह लीजिए। यह बहुत अच्छी तरह से लिखी गई है। इसमें कोई शक नहीं। लेकिन किसी तरह यह सत्रह साल की लड़की के लिए कुछ ज़्यादा ही अच्छी तरह से लिखी हुई लगती है। इसके अलावा, लेखिका फिलहाल लापता हैं और मुख्य संपादक का भी कोई पता नहीं है। यह किताब अपने आप ही बेस्टसेलर बनने की राह पर चल रही है, जैसे कोई बिना चालक दल का भूतिया जहाज़, पूरी रफ्तार से पानी में तैर रहा हो।
टेंगो ने एक अस्पष्ट सी आवाज निकाली।
दूसरा जारी है:
कहानी बेहद दिलचस्प, रहस्यमय और विचित्र है। यह बात हम दोनों के बीच ही रहेगी, लेकिन कंपनी में लोग सोच रहे हैं कि क्या कोमात्सु ने पांडुलिपि में कुछ बदलाव किए हैं? यानी, संपादक के रूप में अपनी ज़िम्मेदारी से ज़्यादा बदलाव किए हैं। मुझे इस पर यकीन नहीं है, लेकिन अगर ऐसा है, तो इसका मतलब है कि हमारे हाथ में एक ऐसा बम है जो कभी भी फट सकता है।

"हो सकता है कि यह महज सुखद संयोगों की एक श्रृंखला हो।"
"फिर भी, ये चीजें हमेशा के लिए नहीं चल सकतीं," संपादक ने कहा।
टेंगो ने उसे धन्यवाद दिया और फोन काट दिया।
*

रिसीवर रखने के बाद, टेंगो ने फुकाएरी से कहा:
वह करीब एक हफ्ते से काम पर नहीं आया है और उसका कहीं पता नहीं चल रहा है।
फुकेरी किसी भी बात पर टिप्पणी नहीं करती।
"ऐसा लगता है कि मेरे आस-पास के बहुत से लोग गायब हो रहे हैं," टेंगो ने कहा। इस बार भी फुकाएरी के पास कहने के लिए कुछ नहीं था।
टेंगो को अचानक याद आया कि एक व्यक्ति की त्वचा से प्रतिदिन चालीस मिलियन कोशिकाएँ मर जाती हैं। वे मरती हैं, गिर जाती हैं और अदृश्य कचरे में बदल जाती हैं जो हवा में गायब हो जाता है। शायद हम भी इस दुनिया की उपकला कोशिकाएँ ही हैं। ऐसे में, किसी व्यक्ति का एक दिन यूँ ही गायब हो जाना कोई असामान्य बात नहीं है।
"शायद मैं भी उनके पीछे चलूंगा," टेंगो ने कहा।
फुकेरी ने दृढ़ता से अपना सिर हिलाया।
आप रास्ता नहीं भटक सकते।
- क्यों?
क्योंकि तुमने स्वयं को शुद्ध कर लिया है।
टेंगो ने कुछ पल तक उसके शब्दों पर विचार किया, लेकिन वह किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सका। वह जितना चाहे सोच ले, उसे शुरू से ही पता था कि यह व्यर्थ है।
लेकिन उसे इस पर गंभीरता से विचार करना ही था।
"खैर, अब हम कोमात्सु से नहीं मिल सकते," उसने कहा। "मैं उसे पैसे वापस नहीं दे सकता।"
"पैसा समस्या नहीं है," फुकेरी ने कहा।
“तो फिर समस्या क्या है?” टेंगो ने पूछा, लेकिन ज़ाहिर है उसे कोई जवाब नहीं मिला।
*

जैसा कि उसने पिछली रात तय किया था, टेंगो ने आओमामे को ढूंढने की कोशिश की। उसे उम्मीद थी कि पूरे दिन में कुछ न कुछ मिल ही जाएगा, लेकिन असल में चीजें उसकी सोच से कहीं ज्यादा मुश्किल साबित हो रही थीं। उसने फुकाएरी को घर में अकेला छोड़ दिया (उसने उसे कई बार हिदायत दी थी कि अगर कोई आए तो दरवाजा मत खोलना) और टेलीफोन कंपनी के मुख्यालय चला गया। वहां पूरे जापान की टेलीफोन डायरेक्टरी उपलब्ध थीं, जिनका इस्तेमाल किया जा सकता था। उसने टोक्यो के तेईस वार्डों से शुरुआत की। अगर वह उसे ढूंढ भी नहीं पाता, तो उसे उम्मीद थी कि कम से कम उसका कोई रिश्तेदार मिल जाएगा जो उसे कुछ जानकारी दे सके।
लेकिन उसे किसी भी फोनबुक में आओमामे नाम नहीं मिला। तेंगो ने अपनी खोज का दायरा पूरे महानगर क्षेत्र तक बढ़ा दिया, लेकिन फिर भी कुछ नहीं मिला। फिर उसने पूरे कांटो प्रांत में खोज की। चिबा, कानागावा, सैतामा प्रान्त... लेकिन उसकी सारी ऊर्जा व्यर्थ ही चली गई और वह गिड़गिड़ाने लगा। फोनबुक में छोटे- छोटे अक्षर पढ़ते-पढ़ते उसकी आँखों में दर्द होने लगा था।
कुछ संभावनाएं थीं:

1. वह होक्काइडो में उताशिनाई शहर के बाहरी इलाके में रहता था।{18}
2. उसकी शादी हो चुकी थी और अब उसका नाम इतो था।
3. उन्होंने अपना नंबर गुप्त रखा था।
4. दो साल पहले, वसंत ऋतु में, एक भयंकर फ्लू से उनकी मृत्यु हो गई थी।
इनके अलावा और भी कई विकल्प थे। सिर्फ़ फ़ोन बुक पर निर्भर रहना बेकार था, और वह जापान की हर फ़ोन बुक में खोज नहीं सकता था। होक्काइडो पहुँचने में उसे एक महीना लग जाता। उसे कोई दूसरा तरीका ढूंढना ही था।
उसने एक फोन कार्ड खरीदा, एक बूथ में गया और इचिकावा के उस प्राथमिक विद्यालय में फोन किया जहाँ वह खुद पढ़ा करता था। अपने पुराने सहपाठियों से मिलने का बहाना बनाकर उसने आओमामे का पता पूछा। फोन उठाने वाली सचिव मिलनसार लग रही थी और उसके पास काफी खाली समय था। उसने पूर्व छात्रों की सूची देखी। लेकिन आओमामे पाँचवीं कक्षा में स्थानांतरित हो गई थी और उसका नाम सूची में नहीं था, इसलिए उनके पास उसका वर्तमान पता नहीं था।
“शायद जिस पते पर वह गया है, वहां के लोग आपकी मदद कर सकें। क्या आप चाहते हैं कि मैं आपको बताऊं कि वह कहां है?” सचिव ने पूछा।
"मैं चाहता हूँ," टेंगो ने उत्तर दिया।
उसने अपना पता और फ़ोन नंबर लिख लिया। यह अदाची में रहने वाले कोजी तासाकी का पता था। ज़ाहिर है, तब तक आओमामे अपने माता-पिता का घर छोड़ चुकी थी। ज़रूर कुछ हुआ था। तेंगो ने नंबर डायल किया, हालाँकि उसे ज़्यादा उम्मीद नहीं थी। जैसा उसने सोचा था, नंबर अब मान्य नहीं था। आख़िरकार, तब से बीस साल बीत चुके थे। उसने सूचना केंद्र पर फ़ोन किया और उन्हें कोजी तासाकी का पता और नाम बताया, लेकिन उसे बताया गया कि यह सूची में नहीं है।
फिर टेंगो ने चर्च ऑफ द विटनेसेस के मुख्यालय का नंबर ढूंढा, लेकिन वह भी फोन बुक में नहीं मिला। न तो एंटे-प्लुगो, न चर्च ऑफ द विटनेसेस, न ही इनसे मिलता- जुलता कोई और नाम। उसने येलो पेजेस में धार्मिक संगठनों वाले सेक्शन में भी ढूंढा, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। वह काफी देर तक सोचता रहा कि शायद वे संपर्क नहीं करना चाहते।
यह काफी अजीब था। वे जब मन करता, आपके दरवाजे पर आ जाते। आप सुबह उठते, तो वे बिना मेज़ सजाए, बिना इस बात की परवाह किए कि आप अपने मन को कष्ट दे रहे हैं, ट्रांजिस्टर जोड़ रहे हैं, बाल धो रहे हैं, माउस को ट्रेनिंग दे रहे हैं या मामूली नौकरियों के बारे में सोच रहे हैं, आपके दरवाजे पर खड़े होते। वे आपके दरवाजे पर दस्तक देते, मुस्कुराते और आपको अपने साथ बाइबल पढ़ने के लिए आमंत्रित करते। दूसरी ओर, जब आप उन्हें ढूंढना चाहते (अगर आप उनमें से एक नहीं थे), तो आप उनसे एक साधारण सा सवाल पूछने के लिए भी संपर्क नहीं कर पाते। बहुत अजीब लगता था।
अगर उसे किसी तरह संपर्क नंबर मिल भी जाता, तो जिस तरह से वे अपनी सुरक्षा करते थे, उसे देखते हुए उसे उम्मीद नहीं थी कि वे उसकी विनती मानेंगे और उसे विनम्रता से वह जानकारी देंगे जो वह चाहता था। उनके नज़रिए से, शायद इस तरह से अपनी सुरक्षा करने का उनके पास कोई ठोस कारण था। उनकी कट्टरता और अतिवादी व असामान्य विचारधारा के कारण, बहुत से लोग उन्हें पसंद नहीं करते थे या नापसंद भी करते थे। उन्होंने कुछ सामाजिक समस्याएं भी खड़ी की थीं, जिसके कारण लगभग

उन पर अत्याचार होने वाला था। अपने समुदाय को बाहरी दुनिया से बचाना शायद उनके खून में ही था, जिसे वे बिल्कुल पसंद नहीं करते थे।
बहरहाल, यहीं पर आओमामे की खोज रुक गई। तेंगो को फिलहाल उसे ढूंढने का कोई और तरीका सूझ नहीं रहा था। आओमामे नाम काफी अनोखा था, और एक बार सुन लेने पर इसे कभी भुलाया नहीं जा सकता था। लेकिन जब आपने इसके मालिक को ढूंढने की कोशिश की, तो आपको एक बड़ी बाधा का सामना करना पड़ा।
शायद विटनेस चर्च के किसी सदस्य से सीधे संपर्क करना ज़्यादा आसान और तेज़ होता। मुख्यालय में पूछने के बजाय, जहाँ शायद शक की नज़र से देखा जाता और कोई जवाब नहीं मिलता, चर्च के किसी सदस्य से सीधे पूछने पर शायद जवाब मिलने की ज़्यादा संभावना होती। लेकिन टेंगो विटनेस चर्च के किसी भी सदस्य को नहीं जानता था। उसे एहसास हुआ कि पिछले दस सालों में उन्होंने कभी उसके घर की घंटी नहीं बजाई थी। जब आप उन्हें देखना नहीं चाहते, तो वे दरवाज़े पर मिलते हैं, लेकिन जब आपको उनकी ज़रूरत होती है, तो उन्हें वहाँ से भगा दो!
वह अखबार में एक छोटा सा विज्ञापन दे सकता था। "आओमामे-सान, मुझसे तुरंत संपर्क करें, मैं कावाना हूँ।" कितना बेवकूफी भरा संदेश! उसने सोचा। अगर उसने इसे देख भी लिया होता, तो भी वह उससे संपर्क करने की कोशिश नहीं करती। इससे वह सतर्क हो जाती। कावाना कोई बहुत आम नाम भी नहीं है, लेकिन तेंगो को यकीन नहीं था कि वह उसका नाम जानती है। कावाना? और कौन हो सकता है? उसने सोचा। वैसे भी, वह उसे ढूंढने की कोशिश नहीं करती। और अखबारों में ऐसे विज्ञापन कौन पढ़ता है?
एक और विकल्प यह हो सकता था कि किसी निजी जासूस एजेंसी को बुलाया जाए। वे लोगों को ढूंढने में माहिर होते हैं और उनके पास हर तरह के संपर्क और तरीके होते हैं। उसके पास जो जानकारी थी, उससे वे शायद उसे पल भर में ढूंढ लेते और इस काम के लिए उससे मोटी रकम भी नहीं मांगते। लेकिन शायद इस रास्ते को अंतिम उपाय के रूप में ही चुनना बेहतर था। पहले, खुद ही उसे ढूंढने की कोशिश करना। यह देखना कि वह अकेले कितना कर सकता है और पूरी लगन से काम कर सकता है।
*

अंधेरा होते-होते वह घर लौटा। उसने फुकेरी को फर्श पर बैठकर संगीत सुनते हुए पाया। उसकी प्रेमिका के पुराने रिकॉर्ड में से एक। ड्यूक एलिंगटन, बेनी गुडमैन और बिली हॉलिडे के एल्बम कवर फर्श पर बिखरे पड़े थे। रिकॉर्ड प्लेयर के टर्नटेबल पर आर्मस्ट्रांग का रिकॉर्ड चल रहा था, जिस पर 'चैंटेज़ लेस बास' गाना बज रहा था। यह एक दमदार गाना था। इसे सुनकर टेंगो को अपनी प्रेमिका की याद आ गई। वे अक्सर शारीरिक संबंध बनाते समय इस रिकॉर्ड को सुनते थे। गाने के अंत में, ट्रम्मी यंग का एक जोशीला ट्रॉम्बोन सोलो था, जिसमें वह सही समय पर रुकना भूल गया और आठ अतिरिक्त बार बजा दिए। "ध्यान दो!" उसने कहा। जब रिकॉर्ड खत्म हुआ, तो टेंगो का फर्ज था कि वह नग्न अवस्था में बिस्तर से उठे, दूसरे कमरे में जाए और रिकॉर्ड को फिर से चालू करे। उसे ये सब याद करके बहुत दुख हुआ। उसने कभी नहीं सोचा था कि उनका रिश्ता हमेशा के लिए चलेगा, लेकिन उसने यह भी नहीं सोचा था कि यह इतनी अचानक खत्म हो जाएगा।
फुकेरी को संगीत में मग्न देखकर उसे एक अजीब सी अनुभूति हुई। वह भौंहें चढ़ाए, एकाग्रचित्त थी, मानो उस पुराने संगीत में कुछ और खोजने की कोशिश कर रही हो। या मानो उन गूँजों से कोई परछाई निकालने का भरसक प्रयास कर रही हो।

— क्या आपको यह रिकॉर्ड पसंद आया?
"मैंने उसे अनगिनत बार सुना है," फुकेरी ने जवाब दिया। "तुम गुस्से में हो।" "बिल्कुल नहीं! लेकिन क्या आपको अकेले रहने से बोरियत नहीं होती?"
फुकेरी ने अपना सिर थोड़ा सा हिलाया।
मुझे इस बारे में सोचना है।
टेंगो फुकाएरी से पूछना चाहता था कि पिछली रात, तूफ़ान के दौरान, उनके बीच क्या हुआ था। वह जानना चाहता था कि उसने ऐसा क्यों किया। उसे नहीं लगता था कि फुकाएरी को उसके प्रति कोई शारीरिक आकर्षण था। उनके बीच जो कुछ भी हुआ था, वह कामुकता के अलावा किसी और चीज़ पर आधारित था। वह जानना चाहता था कि इसका क्या मतलब है।
लेकिन वह उससे सीधे तौर पर नहीं पूछ सकता था, क्योंकि शायद उसे संतोषजनक जवाब नहीं मिलता। और वह इतना झिझक रहा था कि सितंबर की एक सुहावनी, शांत शाम में इस विषय को खुलकर उठाने में हिचकिचा रहा था। जो कुछ हुआ था, वह गुप्त रूप से, अंधेरे में और गरज की आवाज़ के बीच हुआ था। इसके बारे में खुलेआम बात करने का मतलब होता इसका अर्थ बदल देना।
"तो आपको मासिक धर्म नहीं होता?" उसने बात को दूसरे दृष्टिकोण से शुरू करने की कोशिश की। बेहतर यही था कि ऐसे प्रश्न से शुरुआत की जाए जिसका उत्तर स्पष्ट रूप से हां या ना में दिया जा सके।
"नहीं," उसने संक्षिप्त उत्तर दिया।
"तुमने तो एक भी नहीं खाया?"
- इतना भी नहीं।
"मुझे पता है कि यह मेरा मामला नहीं है, लेकिन तुम सत्रह साल की हो, मासिक धर्म न होना काफी अजीब लगता है।"
फुकेरी ने हल्के से कंधे उचकाए।
"और आप डॉक्टर के पास नहीं गए?"
फुकेरी ने अपना सिर हिलाया।
- इसका कोई उपयोग नहीं है।
"यह निरर्थक क्यों नहीं होगा?"
फुकेरी ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने यह जताने का भी कोई संकेत नहीं दिया कि उसने उसका सवाल सुना है। शायद उसके पास सायरन जैसी कोई ऐसी संवेदी नली थी जो उचित और अनुचित सवालों को भांप लेती थी और जरूरत पड़ने पर वाल्व की तरह खुलती और बंद होती थी।
“क्या इसमें बौनों का कोई हाथ है?” टेंगो ने पूछा।
लेकिन इस बार भी उन्हें कोई जवाब नहीं मिला।
टेंगो ने आह भरी। उसे अब कोई ऐसा सवाल नहीं सूझ रहा था जो पिछली रात की घटना का सटीक स्पष्टीकरण दे सके। अनिश्चित और संकरा रास्ता अचानक टूट गया और सामने घना जंगल दिखाई देने लगा। उसने देखा कि वह कहाँ जा रहा है, चारों ओर नज़र डाली और आसमान की ओर सिर उठाया। फुकाएरी से बात करते समय यही समस्या आती थी।
सभी रास्ते कहीं न कहीं जाकर खत्म होते थे। अगर रास्ता न भी होता, तो भी एक पिशाच आगे बढ़ता रहता। लेकिन टेंगो के लिए यह नामुमकिन था।
"मैं किसी की तलाश में हूँ," वह विषय बदलते हुए कहता है। "एक महिला की।"

फुकेरी से इस बारे में बात करने का कोई फायदा नहीं था, और वह यह बात अच्छी तरह जानता था। लेकिन वह किसी को, किसी को भी बताना चाहता था। वह आओमामे के बारे में किसी से बात करना चाहता था। उसे लग रहा था कि अगर उसने ऐसा नहीं किया, तो आओमामे उससे और भी दूर हो जाएगी।
"मैंने उसे बीस साल से नहीं देखा है। आखिरी बार जब मैंने उसे देखा था, तब हम दोनों दस साल के थे। हम प्राथमिक विद्यालय में सहपाठी थे। मैंने कई तरीके आजमाए हैं, लेकिन मुझे नहीं पता कि उससे कैसे संपर्क करूं।"
संगीत बंद हो गया। फुकाएरी ने टर्नटेबल से रिकॉर्ड उठाया और आंखें सिकोड़ते हुए विनाइल को कुछ बार सूंघा। फिर उसने उसे कागज़ के रैपर और कवर में वापस रख दिया, इस बात का खास ध्यान रखते हुए कि उस पर उंगलियों के निशान न पड़ें। उसने यह सब बड़े प्यार और देखभाल से किया, मानो किसी सोए हुए बिल्ली के बच्चे को उसके पालने में रख रहा हो।
"क्या तुम उसे देखना चाहते हो?" फुकेरी ने हमेशा की तरह भावहीन स्वर में पूछा।
वह मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं।
"तुम उसे बीस साल से ढूंढ रहे हो," लड़की ने पूछा।
"नहीं, ऐसा नहीं है," टेंगो ने कहा और मेज पर अपनी उंगलियों को आपस में दबाते हुए सोच-समझकर बोला, "सच तो यह है कि मैंने आज से ही उसे ढूंढना शुरू किया है।" फुकेरी के चेहरे पर हैरानी के भाव दिखाई दिए।
उन्होंने कहा, "आज।"
“अगर यह इतना महत्वपूर्ण है, तो हमने पहले इसकी तलाश क्यों नहीं की?” टेंगो ने उसकी ओर से कहा। यह एक अच्छा सवाल है।
फुकेरी चुपचाप उसे देखती रही।
टेंगो ने अपने विचारों को समेटा। फिर उसने कहा:
"शायद मैंने हद पार कर दी। मैं आपको कैसे बताऊं, आओमामे नाम की यह लड़की हमेशा मेरे दिल में बसी रही है। उसने मेरे जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। और इसके बावजूद, या शायद इसलिए कि वह बहुत करीब थी, मैं उसके असली मतलब को नहीं समझ पाया।"
फुकाएरी उसे घूर रही थी। उसके चेहरे के भाव से यह भी पता नहीं चल रहा था कि उसे समझ आ रहा है या नहीं। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। तेंगो ये सब बातें ज्यादातर खुद से ही कह रहा था।
— आखिरकार मुझे समझ आ गया। वह कोई अवधारणा, प्रतीक या रूपक नहीं है। वह एक वास्तविक अस्तित्व है, जिसकी आत्मा है और रगों में गर्म खून बहता है। और मुझे इस अस्तित्व को कभी नहीं भूलना चाहिए। इतनी स्पष्ट बात को समझने में मुझे बीस साल लग गए। यह सच है कि मुझे समझने में ज़्यादा कठिनाई होती है, लेकिन मुझ जैसे व्यक्ति के लिए भी यह काफ़ी लंबा समय था। शायद अब बहुत देर हो चुकी है। लेकिन मुझे परवाह नहीं, मैं अब भी उसे ढूंढना चाहता हूँ, भले ही अब बहुत देर हो चुकी हो।
ज़मीन पर घुटने टेककर फुकाएरी ने अपनी पीठ सीधी की। उसकी जेफ बेक टी-शर्ट से उसके निपल्स साफ़ दिखाई दे रहे थे।
“आओमामे,” उसने कहा।
"हां। यह एक अजीब नाम है।"

"□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□?" □□□□ □□□□□
"□□□□□□□□," □□□□□ □□ □□□□
□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□
□□□□ □□ □□□-□□□□□ □□□□ □□□ □□□:
— □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□

अध्याय 17 चूहों का पर्दाफाश

सुबह सात बजे के समाचार में अकासाका-मित्सुके स्टेशन पर आई बाढ़ को विस्तार से दिखाया गया था, लेकिन ओकुरा होटल के एक अपार्टमेंट में पायनियर नेता की मृत्यु का कोई जिक्र नहीं था। एनएचके समाचार समाप्त होने पर, आओमामे ने चैनल बदल दिया और कई अन्य स्टेशनों पर समाचार देखे। लेकिन किसी भी कार्यक्रम में उस विशालकाय व्यक्ति के निधन की खबर नहीं थी।
आओमामे ने माथे पर शिकन डालते हुए सोचा, "उन्होंने उसका शव छिपा दिया होगा।" तमारू ने कहा था कि ऐसा मुमकिन है। वे किसी तरह उसे होटल से बाहर निकालने में कामयाब हुए, कार में बिठाया और चले गए। इतने भारी-भरकम आदमी को ले जाना बहुत मुश्किल रहा होगा। होटल ग्राहकों और कर्मचारियों से भरा रहता है, और हर तरफ कैमरे लगे रहते हैं। वे उसे बिना किसी की नज़र में आए अंडरग्राउंड पार्किंग तक कैसे ले गए होंगे?
खैर, उन्होंने शायद उसे आधी रात को यामानाशी पहाड़ों में स्थित संप्रदाय के मुख्यालय में पहुँचाया होगा, और वहाँ उन्होंने उसके अवशेषों के बारे में चर्चा की होगी। कम से कम वे पुलिस को उसकी मौत की सूचना तो नहीं देंगे। एक बार कोई बात छुपा दी जाए तो वो हमेशा के लिए छुपा ही रहता है।
शायद स्थानीय तूफान और उससे मची अफरा-तफरी ने उन्हें कार्रवाई करने में आसानी दी। हालांकि, उन्होंने इस पूरे मामले को सार्वजनिक करने से परहेज किया। सौभाग्य से, नेता जनता के सामने प्रकट नहीं हुए और उनका पूरा अस्तित्व रहस्य में डूबा रहा। इसलिए, अगर वे अचानक गायब भी हो जाते, तो भी लंबे समय तक किसी का ध्यान उन पर नहीं जाता। उनकी मृत्यु - या हत्या - का रहस्य केवल कुछ ही लोगों तक सीमित रहता।
ओमामे को यह पता नहीं था कि नेता की मृत्यु से उत्पन्न खालीपन को कैसे भरा जाएगा। लेकिन वे संगठन को बरकरार रखने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। जैसा कि उन्होंने कहा था, यह व्यवस्था नेता के बिना भी चलती रहती है। नेता का उत्तराधिकारी कौन होगा? लेकिन यह ओमामे का काम नहीं था। उनका काम उन्हें मारना था, न कि पूरे संप्रदाय को नष्ट करना।
उसने काले सूट पहने दो अंगरक्षकों, बाल्ड और हेयरी के बारे में सोचा। संप्रदाय में लौटने के बाद, क्या उन्होंने नेता की हत्या का दोष अपने ऊपर ले लिया था, जो उनकी नाक के नीचे हुई थी? आओमामे ने कल्पना की कि उन्हें उसे ढूंढकर खत्म करने या पकड़ने का आदेश दिया गया होगा। “जो कुछ भी कर सको, बस उसे ढूंढो! तब तक वापस मत आना!” शायद ऐसा ही हुआ होगा। उन्होंने उसका चेहरा करीब से देखा था। वे सक्षम थे और बदला लेने की तीव्र इच्छा से भरे हुए थे। शिकारी की भूमिका उन्हें पूरी तरह से रास आती थी। और संप्रदाय के नेतृत्व को हर हाल में यह पता लगाना था कि उसके पीछे कौन था।
आओमामे ने नाश्ते में एक सेब का टुकड़ा खाया। उसे बिल्कुल भूख नहीं थी। आदमी की गर्दन में सुई चुभने का दर्द अब भी उसके हाथ पर महसूस हो रहा था। चाकू से सेब छीलते हुए उसे अपने अंदर एक हल्की सी कंपकंपी महसूस हुई। ऐसी कंपकंपी जो

उसने पहले कभी महसूस नहीं की थी। किसी को मारने के बाद, अच्छी नींद के बाद सारी यादें लगभग मिट जाती हैं। बेशक, किसी की जान लेना कभी सुखद नहीं होता, लेकिन ये वो लोग थे जो जीने के लायक नहीं थे। क्रूरता दया से ऊपर थी। लेकिन इस बार, हालात अलग थे। तथ्यों को निष्पक्ष रूप से देखें तो, उस व्यक्ति ने अमानवीय व्यवहार किया था। फिर भी, कई मायनों में, वह एक असाधारण व्यक्ति था, और उसका यह गुण कम से कम आंशिक रूप से अच्छे और बुरे की अवधारणा से परे लगता था। यहां तक कि हत्या में भी कुछ असामान्य था। इसने उसे एक बहुत ही अजीब, असाधारण एहसास दिया था।
वह अपने पीछे एक वादा छोड़ गया था। बहुत सोच-विचार के बाद आओमामे इसी निष्कर्ष पर पहुँची। उसे वह वादा अपनी हथेली में एक संकेत की तरह महसूस हुआ। अब वह उसे समझ गई थी। एक ऐसा संकेत जो शायद कभी मिटेगा नहीं।
*

सुबह नौ बजे के कुछ देर बाद फोन की घंटी बजी। यह तामारू का फोन था। उसने तीन बार घंटी बजाई, फोन काट दिया और बीस सेकंड बाद वापस आया।
उन्होंने कहा, "उन्होंने पुलिस को नहीं बुलाया। यह खबर न तो टीवी पर आई है और न ही अखबारों में।"
लेकिन आप जानते हैं, अगर वह मर गया है, तो वह मर चुका है।
— बिलकुल, ऐसा ही है। नेता तो निश्चित रूप से मर चुका है। कुछ हलचल हुई थी। वे होटल से निकल चुके हैं। शहर की एक शाखा से कुछ लोगों को आधी रात को बुलाया गया था, शायद शव को ठिकाने लगाने के लिए ताकि उसे कोई देख न सके। यह उनका काम है। फिर सुबह करीब एक बजे वे होटल की पार्किंग से एक मर्सिडीज-बेंज एस-क्लास (रंगीन शीशों वाली) और एक हाईएस (काली शीशों वाली) में निकले, दोनों पर यामानाशी नंबर प्लेट लगी थीं। वे शायद भोर होते-होते पायनियर मुख्यालय पहुँच गए होंगे। पुलिस परसों उस जगह की तलाशी लेने आई थी, लेकिन कुछ खास नहीं था और वैसे भी पुलिस अपना काम खत्म करके बहुत पहले ही जा चुकी थी। उनके संगठन की सीमा पर एक भस्मक है और अगर आप उसमें कोई शव फेंक दें, तो हड्डियाँ भी नहीं बचतीं। वह धुएँ में बदल जाता है।
— भयावह।
— खैर, ये लोग वाकई बेहद भयानक हैं। और नेता की मृत्यु के बाद भी यह संगठन कुछ समय तक चलता रहेगा। ठीक वैसे ही जैसे बिना सिर का सांप हिलता-डुलता रहता है।
बिना सिर के भी उसे रास्ता मिल जाता है। उसके बाद क्या होगा, ये कहना मुश्किल है। शायद वो मर जाए, शायद उसका दूसरा सिर उग आए।
— वह एक असाधारण व्यक्ति थे।
तामारू कोई टिप्पणी नहीं करता।
बाकियों से बिलकुल अलग।
तामारू ने अपने शब्दों के सूक्ष्म अर्थ को समझते हुए कहा:
मुझे लगता है कि यह बाकी सबसे अलग था। लेकिन अब हमें आगे क्या होगा, इस बारे में सोचना चाहिए। यथार्थवादी बनें। नहीं तो हम जीवित नहीं रह पाएंगे।
आओमामे कुछ कहना चाहती थी, लेकिन शब्द उसके मुंह से नहीं निकल रहे थे। उसे अब भी अपने अंदर कंपन महसूस हो रही थी।
"मैडम आपसे बात करना चाहती हैं," तामारू ने कहा। "क्या आप बात कर सकते हैं?"
- बिल्कुल।

महिला ने फोन उठाया। उसकी आवाज में राहत की झलक थी।
मैं आपका बहुत आभारी हूं। शब्दों में इसे व्यक्त नहीं किया जा सकता। आपने एक बार फिर अपना काम बखूबी निभाया।
"धन्यवाद। लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैं इसे दूसरी बार कर पाऊँगी।"
मुझे पता है। मैंने तुमसे बहुत कुछ माँगा था। मुझे बहुत खुशी है कि तुम सुरक्षित वापस आ गए हो। मैं अब तुमसे कभी ऐसा कुछ नहीं माँगूँगा। बात यहीं खत्म होती है। मैंने तुम्हारे आराम के लिए जगह तैयार कर ली है। चिंता मत करो। अभी तुम जहाँ हो वहीं रुको। इस बीच, हम तुम्हारे नए जीवन में आगे बढ़ने की व्यवस्था कर रहे हैं।
ओमामे ने उन्हें धन्यवाद दिया।
"क्या आपको अभी किसी चीज की कमी महसूस हो रही है? यदि हां, तो कृपया मुझे बताएं और तमारू तुरंत इसका ध्यान रखेगा।"
नहीं। जहाँ तक मुझे दिख रहा है, मेरे पास वह सब कुछ है जिसकी मुझे ज़रूरत है। महिला को हल्की खांसी आई।
"कृपया एक बात याद रखें। हमने वही किया जो हमें करना था। हमने उसे उसके किए गए अपराधों के लिए दंडित किया और होने वाले अपराधों को रोका। अब से कोई पीड़ित नहीं होगा। आपको चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है।"
"उन्होंने भी यही बात कही।"
- वह?
"नेता। वही आदमी जिसे मैंने कल रात नियुक्त किया था।"
महिला पांच सेकंड तक चुप रही, फिर बोली:
क्या उसे पता था?
हां, वह जानता था कि मैं वहां क्यों गया था। उसने मुझे सहज भाव से स्वीकार किया। वह वास्तव में इसी का इंतजार कर रहा था, मृत्यु का। वह पहले से ही बहुत पीड़ा झेल रहा था और धीरे-धीरे निश्चित मृत्यु की ओर बढ़ रहा था। मैंने बस उसके इस समय को कुछ कम किया और उसके पीड़ा से व्याकुल शरीर को विश्राम दिया। उन शब्दों को सुनकर वह महिला सचमुच आश्चर्यचकित हो गई। कुछ देर तक उसे समझ नहीं आया कि क्या कहे, जो उसके लिए बहुत अजीब बात थी।
"क्या आप यह कह रहे हैं कि यह व्यक्ति..." उसने अपने शब्दों को ढूंढते हुए कहा, अपने कार्यों के लिए दंडित होना चाहता था?
वह बस यही चाहता था कि दुखों से भरे जीवन से जितनी जल्दी हो सके छुटकारा पा ले।
और वह खुद को मारे जाने के लिए तैयार था।
आओमामे ने सौदे के बारे में कुछ नहीं कहा। उनका समझौता, जिसके अनुसार टेंगो जीवित रहेगा और वह मर जाएगी, उन दोनों के बीच ही रहा। उसने किसी को नहीं बताया।
"उसके कृत्य असामान्य और अनैतिक थे, और उसकी हत्या अपरिहार्य थी। लेकिन वह एक असाधारण व्यक्ति था। या कम से कम उसमें कुछ असाधारण बात तो थी ही। इतना तो निश्चित है।"
"कुछ खास है क्या?"
"मुझे नहीं पता कि इसे कैसे समझाऊं। एक विशेष क्षमता या स्वभाव, जो साथ ही साथ उस पर एक भारी बोझ भी था। और यह उसके शरीर को अंदर से खोखला कर रहा था।"

"और क्या यही कोई खास बात थी जो उसे उन असामान्य कामों को करने के लिए प्रेरित कर रही थी?"
- शायद।
लेकिन किसी भी हालत में, आपने उनका अंत कर दिया।
"बिल्कुल सही," आओमामे ने रूखे स्वर में कहा।
अपने बाएं हाथ में रिसीवर लिए, आओमामे ने अपनी दाहिनी हथेली खोली, जिसमें उसे अभी भी मृत्यु का रोमांच महसूस हो रहा था, और उसे देखा। वह समझ नहीं पा रही थी कि वह कई मायनों में लड़कियों के साथ यौन संबंध क्यों बना रहा है। और, ज़ाहिर है, वह इसे लेडी को भी नहीं समझा सकती थी।
"हमेशा की तरह, मौत स्वाभाविक लग रही है, लेकिन वे इसे स्वाभाविक नहीं मानेंगे। जिस तरह से सब कुछ हुआ है, वे शायद सोचेंगे कि मैं किसी न किसी तरह से इसमें शामिल था। और, जैसा कि आप जानते हैं, उन्होंने अभी तक पुलिस को उसकी मौत की सूचना नहीं दी है।"
"वे आगे जो भी करें, हम आपकी रक्षा के लिए हर संभव प्रयास करेंगे," उस महिला ने कहा। "उनका अपना संगठन है, लेकिन हमारे भी ड्यूयम से मज़बूत संबंध और धन हैं। और आप एक बुद्धिमान और सावधान व्यक्ति हैं। हम उन्हें उनकी योजना को पूरा नहीं करने देंगे।"
“तुम्हें अभी तक त्सुबासा नहीं मिली है, है ना?” आओमामे ने पूछा।
"हमें अभी तक पता नहीं है कि वह कहाँ है, लेकिन मुझे लगता है कि वह संप्रदाय में है। उसके पास जाने के लिए और कोई जगह नहीं थी। अभी तक हमें उसे वापस लाने का कोई रास्ता नहीं मिला है। लेकिन मुझे लगता है कि नेता की मृत्यु ने अफरा- तफरी का माहौल बना दिया है, और शायद हम इसका किसी तरह इस्तेमाल करके उसे वहाँ से बचा सकते हैं। बच्ची की रक्षा करनी होगी।"
नेता ने उसे समझाया था कि आश्रय में मौजूद त्सुबासा कोई भौतिक रूप नहीं थी, बल्कि केवल एक अवधारणा थी। और उसे वापस लाया जा चुका था। लेकिन वह ये बातें उस महिला को नहीं बता सकी। उसे खुद भी इनका मतलब ठीक से समझ नहीं आया था। लेकिन उसे हवा में उठी संगमरमर की घड़ी याद थी। यह सब सचमुच उसकी आँखों के सामने हुआ था।
“मैं यहाँ लगभग कितने दिन रहूँगी?” उसने पूछा।
— चार दिन से लेकर एक हफ्ते तक। फिर आपको एक नई पहचान दी जाएगी और किसी दूर जगह पर भेज दिया जाएगा। वहाँ बसने के बाद, सुरक्षा कारणों से, हमें कुछ समय के लिए एक-दूसरे से संपर्क तोड़ना होगा। हम कुछ समय तक एक-दूसरे को देख नहीं पाएंगे। और मेरी उम्र को देखते हुए, यह संभव है कि हम फिर कभी एक-दूसरे को न देख पाएं। शायद आपको ऐसी जटिल स्थिति में न डालना ही बेहतर होता। मैंने इस बारे में कई बार सोचा है। क्योंकि इस तरह मैं आपको खोता नहीं। लेकिन…
कुछ क्षणों के लिए महिला की आवाज़ बंद हो गई। आओमामे चुपचाप उसके बोलने का इंतज़ार करती रही।
"लेकिन मुझे इसका कोई अफसोस नहीं है। यही हमारी नियति थी। मैं तुम्हें इसमें शामिल किए बिना रह नहीं सका। मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। एक महान शक्ति ने अपना आदेश दिया और मेरे कार्यों को निर्देशित किया। मुझे तुम्हारे प्रति बहुत अपराधबोध है कि बात यहाँ तक पहुँच गई।"

लेकिन इसके बजाय, अब हमारे बीच कुछ साझा है। कुछ बहुत महत्वपूर्ण, जिसे किसी और के साथ साझा नहीं किया जा सकता है और जिसे किसी अन्य तरीके से प्राप्त नहीं किया जा सकता है।
- यह सही है।
और मुझे इसकी जरूरत थी।
"धन्यवाद। यह सुनकर मुझे अच्छा लगा।"
और आओमामे के लिए उसे न देख पाना बहुत मुश्किल था। वह उसके कुछ गिने-चुने संपर्कों में से एक थी, ऐसे संपर्क जो उसे बाहरी दुनिया से बमुश्किल जोड़े रखते थे।
"अलविदा," आओमामे ने कहा।
आप भी सुरक्षित रहें। और खुश रहने की कोशिश करें।
"अगर संभव हो तो, हाँ," आओमामे ने उत्तर दिया। खुशी उसके लिए सबसे दूर की चीजों में से एक थी।
तामारू वापस फोन की ओर लौट गया।
“आपने अभी तक इसका इस्तेमाल नहीं किया है, है ना?” उसने पूछा।
- नहीं।
"मैं तो यही चाहूंगा कि आप इसका बिल्कुल भी इस्तेमाल न करें।"
मैं आपको प्रसन्न करने का प्रयास करूंगा।
कुछ देर रुकने के बाद, तामारू ने कहा:
मैंने हाल ही में आपको बताया था कि मेरा पालन-पोषण होक्काइडो में, पहाड़ों के बीच स्थित एक अनाथालय में हुआ था।
— तुम्हें तुम्हारे माता-पिता से अलग कर दिया गया, सखालिन से लाया गया और वहीं छोड़ दिया गया।
"अनाथालय में मुझसे दो साल छोटा एक लड़का था। उसके पिता अश्वेत थे। मुझे लगता है कि वह मिसावा बेस पर सैनिक रहे होंगे। उसकी माँ के बारे में किसी को कुछ नहीं पता था, लेकिन शायद वह वेश्या या बारटेंडर वगैरह थीं। उन्होंने जन्म के तुरंत बाद उसे छोड़ दिया था और उसे वहाँ ले आई थीं। वह मुझसे लंबा था, लेकिन उसका दिमाग सुस्त था। ज़ाहिर है, सब लोग उसे चिढ़ाते थे, खासकर इसलिए कि उसका रंग अलग था। आप समझ रहे हैं ना मैं क्या कह रहा हूँ?"
— म्दा.
— चूंकि मैं भी जापानी नहीं था, इसलिए मैंने उसकी रक्षा करने का दायित्व उठा लिया। हम दोनों की स्थिति लगभग एक जैसी थी। एक कोरियाई जो सखालिन से लाया गया था और एक मिश्रित नस्ल की महिला जो एक अश्वेत पुरुष और एक वेश्या के मिलन से पैदा हुई थी। मैं जाति व्यवस्था में सबसे निचले पायदान पर था। लेकिन इसने मुझे मजबूत बनाया। इसने मुझे ताकतवर बना दिया। लेकिन वह बिल्कुल भी मजबूत नहीं हुआ। अगर मैं उसे ऐसे ही छोड़ देता, तो वह निश्चित रूप से मर जाता। जिस माहौल में मैं था, उसमें आप तभी बच सकते थे जब आप या तो बुद्धिमान हों या फिर आपको मुक्केबाजी आती हो। इन दोनों में से एक बात तो होनी ही चाहिए।
ओमामे चुपचाप उसकी बातें सुनती रही।
"वह लड़का किसी काम का नहीं था। वह कुछ भी ठीक से नहीं कर पाता था। वह अपने बटन तक नहीं बांध सकता था और न ही अपना मल-मूत्र साफ कर सकता था। लेकिन वह मूर्तिकला में माहिर था। अगर उसके पास कुछ छेनी और लकड़ी का एक टुकड़ा होता,

तो वह पल भर में एक सुंदर मूर्ति बना देता। न किसी मॉडल की, न किसी और चीज़ की। उसके दिमाग में एक छवि होती, और वह उसे हूबहू तीन आयामों में बना देता। एकदम सटीक और वास्तविक। वह एक तरह का प्रतिभाशाली था। यह अपने आप में एक बड़ी बात है।"
— विद्वान मूर्ख, ज़िसे आओमामे.
— हाँ, सही है। अब मुझे विलक्षण प्रतिभा के बारे में पता चला। ऐसे लोग होते हैं, जिन्हें असाधारण प्रतिभा प्राप्त होती है। लेकिन उस समय इन चीजों के बारे में किसी को पता नहीं था। उन्हें मानसिक रूप से मंदबुद्धि समझा जाता था। एक बच्चा था जिसका दिमाग धीमा था, लेकिन हाथ बहुत कुशल थे, वह मूर्तिकला में माहिर था। वह सिर्फ चूहे बनाता था, लेकिन वे बहुत ही शानदार बनते थे। वे सब ऐसे लगते थे मानो जीवित हों। वह और कुछ नहीं बनाता था। सब उससे दूसरे जानवरों की मूर्तियाँ बनाने को कहते थे। घोड़ा, भालू। इसके लिए उसे चिड़ियाघर भी ले गए। लेकिन उसे दूसरे जानवरों में कोई दिलचस्पी नहीं थी, यहाँ तक कि उसके नाखून के नीचे लगे काले धब्बे में भी नहीं। इसलिए सबने उसे उसके चूहों के साथ अकेला छोड़ दिया। उसे जो चाहे करने दिया। और उसने उन्हें हर आकार, हर कद और हर मुद्रा में बनाया। और सबसे अजीब बात यह है कि अनाथालय में चूहे का एक भी पैर नहीं था। बहुत ठंड थी और उसे खाने को कुछ नहीं मिलता। हम इतने गरीब थे कि चूहे भी नहीं रख सकते थे। वह चूहों के प्रति इतना जुनूनी क्यों था, यह कोई नहीं समझ पाया। आखिरकार, उनकी मूर्तियों के बारे में बात फैल गई, यहाँ तक कि अखबार में भी उनका ज़िक्र हुआ, और लोग उन्हें खरीदने में दिलचस्पी दिखाने लगे। फिर अनाथालय के निदेशक, जो एक कैथोलिक पादरी थे, ने मूर्तियों को एक गैलरी में रख दिया और आगंतुकों को बेचने लगे। मुझे लगता है कि उन्होंने उनसे कुछ पैसे कमाए होंगे, लेकिन ज़ाहिर है, उन्हें एक पैसा भी नहीं मिला। मुझे नहीं पता कि उनका क्या हो रहा था, लेकिन मुझे लगता है कि निदेशक उनका किसी न किसी काम में इस्तेमाल कर रहे थे। वे छेनी और लकड़ी लाते, खुद को कार्यशाला में बंद कर लेते, और कन्वेयर बेल्ट पर चूहों को बाहर निकालते। दूसरी ओर, उन्हें खेतों में काम करने से छुटकारा मिल गया, और वैसे भी उन्हें अकेले बैठकर काम करना पसंद था, इसलिए वे खुद को भाग्यशाली मान सकते थे।
और उसका क्या हुआ?
मुझे नहीं पता। जब मैं चौदह साल की थी, तब मैं वहाँ से भाग गई और तब से अकेली ही हूँ। मैं तुरंत एक नौका पर सवार हुई, यहाँ आई और फिर कभी होक्काइडो में कदम नहीं रखा। आखिरी बार जब मैंने उसे देखा था, तब भी वह अपनी काम की मेज पर झुका हुआ था और पूरी लगन से मूर्तियाँ बना रहा था। उस समय वह आपकी कोई बात नहीं सुन पाता था। इसलिए मैंने उसे अलविदा भी नहीं कहा। अगर वह अभी भी जीवित है, तो मुझे लगता है कि वह अभी भी चूहे बना रहा होगा। क्योंकि वह सचमुच इसके अलावा कुछ और करने में असमर्थ है।
आओमामे चुपचाप अपनी कहानी जारी रखने का इंतजार करती रही।
मैं आज भी उनके बारे में बहुत सोचता हूँ। अनाथालय में जीवन बहुत दयनीय था। हमें बहुत कम खाना मिलता था और हम हमेशा भूखे रहते थे, और सर्दियों में तो ठंड से काँपते रहते थे। काम बहुत कठिन था, और बड़े बच्चे हमें डराते भी थे। लेकिन उन्हें यह जीवन कठिन नहीं लगता था। अगर वे अपनी छेनी लेकर अकेले बैठकर चूहे तराशते, तो वे खुश रहते। जब उनके हाथ में छेनी होती, तो उनसे बात करना मुश्किल

होता था, लेकिन बाकी समय वे बहुत अच्छे इंसान थे। वे किसी को परेशान नहीं करते थे। वे बस चुपचाप बैठकर तराशते रहते थे। वे लकड़ी का एक टुकड़ा हाथ में लेते, फिर बैठकर उसे देर तक देखते रहते, जब तक कि उन्हें यह न दिख जाए कि उसके अंदर कौन सा चूहा छिपा है और किस रूप में। उसे देखने में थोड़ा समय लगता था, लेकिन एक बार देख लेने के बाद, वे अपनी छेनी से तब तक खेलते रहते जब तक कि उसे लकड़ी के टुकड़े से बाहर न निकाल लें। वे हमेशा यही कहते थे, "चूहे को बाहर निकालो।" और एक बार जब वह दिख जाता, तो आप कहते कि अब वह हिलने ही वाला है। वह लकड़ी के टुकड़े के अंदर फंसे एक काल्पनिक चूहे को बाहर निकाल देता था, वह यही करता था। और तुम उसकी रक्षा कर रहे थे।
— ऐसा इसलिए नहीं कि मैं चाहता था, बल्कि इसलिए कि मैं उस स्थिति में था। और एक बार जब आप कोई पद ग्रहण कर लेते हैं, तो आपको उसे हर कीमत पर बनाए रखना होता है। यही उस जगह के नियम थे। मैंने उनका पालन किया। उदाहरण के लिए, अगर कोई आकर मुझसे छेनी छीन लेता, तो मैं उसके पीछे जाता और उसे पीटता। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि वह मुझसे बड़ा था, लंबा था या संख्या में ज़्यादा थे। मैं उसे पीटता था। बेशक, मुझे भी मार पड़ती थी। कई बार तो मार भी पड़ी। लेकिन यह सवाल नहीं था कि कौन जीता और कौन हारा। चाहे मैं किसी को पीटूँ या पिटूँ, मैं छेनी उसे वापस दे देता था। यह बहुत महत्वपूर्ण बात थी। समझे?
"मैं समझती हूँ," आओमामे ने कहा। "लेकिन अंत में तुमने उसे छोड़ दिया।"
मुझे अपना ख्याल रखना था, और मैं हमेशा उसके साथ रहकर उसकी देखभाल नहीं कर सकती थी। मैं ऐसा नहीं कर सकती थी। बिल्कुल।"
ओमामे ने अपना दाहिना हाथ फिर से खोला और उसे देखा।
"मैंने तुम्हें कई बार हाथ में लकड़ी का चूहा लिए देखा है। क्या मुझे यह समझना चाहिए कि इसे उस लड़के ने बनाया था?"
"हां। मेरे पास भी एक छोटी सी मूर्ति है। मैं इसे अनाथालय छोड़ते समय अपने साथ ले आई थी और इसे संभाल कर रखा है।"
"तामारू-सान, आप मुझे ये सब बातें क्यों बता रहे हैं? आप तो बिना वजह उसके बारे में बात करने वाले व्यक्ति नहीं हैं।"
मेरा कहने का मतलब यह है कि एक बात तो पक्की है कि मैं आज भी उनके बारे में अक्सर सोचता हूँ। ऐसा नहीं है कि मैं अब उनसे मिलना चाहता हूँ। सच कहूँ तो, मैं अब उनसे मिलना बिल्कुल नहीं चाहता। अगर हम अभी मिल भी जाएँ तो हमारे पास बात करने के लिए कुछ होगा ही नहीं। लेकिन लकड़ी के टुकड़े से चूहे को निकालने के लिए पूरी एकाग्रता से काम करते हुए उनकी छवि आज भी मेरे मन में ताज़ा है। यह एक ऐसी छवि है जिसे मैं बहुत संजोकर रखता हूँ, जो मुझे कुछ सिखाती है, या सिखाने की कोशिश करती है। लोगों को जीने के लिए ऐसी ही चीज़ों की ज़रूरत होती है। ऐसी छवियाँ जिनका अर्थ शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। लेकिन हम अपना जीवन उनमें अर्थ खोजने की कोशिश में बिताते हैं। मुझे ऐसा ही लगता है।
"क्या वे किसी प्रकार की नींव की तरह हैं?"
- ऐसा कुछ।
मेरे मन में भी ऐसी ही एक छवि है।
— इसे सही ढंग से संजोना।
- यही मैं करता हुँ।

"इसका दूसरा मतलब यह है कि मैं तुम्हारी यथासंभव रक्षा करूंगा। अगर मुझे किसी को भी हराना पड़े, चाहे वह कोई भी हो, मैं जाकर उसे हराऊंगा। चाहे कोई भी जीते, मैं तुम्हें बीच रास्ते में नहीं छोड़ूंगा।"
- धन्यवाद।
कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया।
कुछ समय के लिए घर से बाहर मत निकलो। अगर तुमने एक कदम भी बाहर रखा तो तुम जंगल में पहुँच जाओगे। इस बारे में ऐसे सोचो, ठीक है?
- मैं समझता हूँ।
बातचीत यहीं समाप्त होती है। रिसीवर रखते ही आओमामे को एहसास हुआ कि उसका हाथ रिसीवर पर कसकर जकड़ा हुआ था।
*

आओमामे ने सोचा कि तामारू मुझे यह संदेश देना चाह रहा था कि मैं उनके परिवार का एक अभिन्न अंग हूँ और एक बार बने रिश्ते कभी टूट नहीं सकते। ये नाममात्र के रक्त संबंध थे। आओमामे तामारू के इस संदेश के लिए आभारी थी। वह जानता था कि वह कठिन समय से गुज़र रही है, और इसीलिए वह उसे परिवार का सदस्य मानता था, इसलिए वह अपने कुछ रहस्य उसके साथ साझा कर रहा था।
यह सोचकर कि हिंसा के ज़रिए ही इतने गहरे रिश्ते बन सकते हैं, आओमामे उदास हो गई। मेरा कानून से सामना हुआ है, मैंने कई लोगों को मारा है, अब मेरा पीछा किया जा रहा है और शायद मुझे मार भी दिया जाएगा, और यही बात हमें एक-दूसरे के करीब ला रही है। लेकिन अगर हमारे बीच ये अपराध न हुए होते, तो क्या ऐसा रिश्ता बन पाता? अगर हम कानून की राह से भटकते न, तो क्या हम भरोसे का रिश्ता निभा पाते? शायद यह बहुत मुश्किल होता।
आओमामे चाय की चुस्की लेते हुए समाचार देख रही थी। अकासाका-मित्सुके स्टेशन पर आई बाढ़ की कोई चर्चा नहीं थी। रात भर में पानी उतर गया था, मेट्रो यातायात सामान्य हो गया था, सब कुछ बीत चुका था। इसके अलावा, पायनियर नेता की मृत्यु की खबर अभी तक दुनिया को नहीं मिली थी। केवल कुछ ही लोगों को इस बात की जानकारी थी। आओमामे ने शव को भट्टी में जलते हुए कल्पना की। तमारू ने कहा था कि उसकी हड्डियाँ भी नहीं बचेंगी। सब कुछ धुएँ में बदल गया और शरद ऋतु की हवा में ऊपर उठ गया, दैवीय कृपा या पीड़ा की परवाह किए बिना। आओमामे की आँखों के सामने आकाश और धुएँ का निशान दिखाई दिया।
टेलीविजन पर सत्रह वर्षीय युवती के लापता होने की खबर चल रही थी, जो बेस्टसेलर किताब 'द क्राइसालिस ऑफ एयर' की लेखिका थीं। एरिका फुकाडा नाम की फुकाएरी दो महीने से अधिक समय से लापता थीं। उनके अभिभावक ने पुलिस को सूचना दी थी और गहन जांच शुरू कर दी थी, लेकिन अभी तक मामला सुलझा नहीं था, ऐसा प्रस्तोता ने बताया। खबर के साथ एक किताबों की दुकान की तस्वीरें भी दिखाई गईं, जिसके प्रवेश द्वार पर 'द क्राइसालिस ऑफ एयर' की किताबें रखी थीं। दीवार पर उस खूबसूरत युवती का पोस्टर लगा था। दुकान के एक कर्मचारी ने टेलीविजन के माइक्रोफोन पर कहा, "किताब की बिक्री अभी भी बहुत अच्छी हो रही है। मैंने भी इसे खरीदा और पढ़ा है। यह एक बहुत ही रोचक उपन्यास है, जो समृद्ध कल्पनाशीलता को दर्शाता है। मैं चाहता हूं कि फुकाएरी-सान को जल्द से जल्द ढूंढ लिया जाए।" खबर में एरिका फुकाडा के पायनियर्स धार्मिक समूह से संबंध का कोई जिक्र नहीं था। अगर कोई पंथ सामने आता, तो मीडिया अचानक अधिक सतर्क हो जाता।

खैर, एरिका फुकाडा गायब हो गई थी। जब वह दस साल की थी, तब उसके पिता ने उसके साथ बलात्कार किया था। अगर वह उसके शब्दों को अक्षरशः ले, तो कई मायनों में वे एक हो गए थे। और इसी ने उसके भीतर के छोटे लोगों को निर्देशित किया था। उसने इसे कैसे कहा था? हाँ, बोधकर्ता और ग्रहणकर्ता। वह "बोधकर्ता" थी, और उसका पिता "ग्रहणकर्ता"। और उसे एक खास आवाज़ सुनाई देने लगी थी। वह छोटे लोगों का प्रतिनिधि और पायनियर्स नामक धार्मिक समूह का नेता बन गया था। फिर उसने संप्रदाय छोड़ दिया, छोटे लोगों के खिलाफ अभियान चलाया, टेंगो के साथ एक टीम बनाई, और साथ मिलकर उन्होंने उपन्यास 'द एयर क्राइसालिस' लिखा, जो बेस्टसेलर बन गया। और अब, किसी अज्ञात कारण से, वह गायब हो गई थी। पुलिस उसकी तलाश कर रही थी।
*

दूसरी ओर, कल रात मैंने एरिका के पिता, जो पायनियर्स के नेता थे, को अपनी छेनी से मार डाला, आओमामे ने सोचा। पंथ के सदस्यों ने उनके शव को होटल के कमरे से निकाला और चुपके से ठिकाने लगा दिया। आओमामे कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि एरिका ने अपने पिता की मृत्यु के बारे में सुनकर कैसी प्रतिक्रिया दी होगी। भले ही वह मरना चाहते थे और मैंने उन्हें दयापूर्वक मारकर उनकी पीड़ा को बख्श दिया, फिर भी मैंने अपने हाथों से एक इंसान की जान ले ली। जीवन अकेलापन से भरा है, लेकिन अलगाव नहीं। दूसरे जीवन एक जीवन से जुड़े होते हैं। और इसके लिए मुझे जिम्मेदारी लेनी होगी।
और टेंगो इन सब चीज़ों में गहराई से शामिल है। हमें जोड़ने वाली कड़ी एरिका है। देखने वाली और ग्रहण करने वाली। टेंगो कहाँ है और आजकल क्या कर रहा है? क्या एरिका के गायब होने में उसका कोई हाथ हो सकता है? क्या वे अभी भी साथ काम कर रहे हैं? ज़ाहिर है, टेंगो के भाग्य के बारे में टीवी पर कुछ भी नहीं बताया गया है। कोई नहीं जानता कि एयर क्राइसालिस का असली रचयिता वही है। लेकिन मैं जानता हूँ।
ऐसा लगता है कि हमारे बीच की दूरी कम होने लगी है। किसी कारणवश, टेंगो और मैं इस दुनिया में आए हैं और एक-दूसरे के बहुत करीब आ रहे हैं, मानो किसी घातक भंवर में खिंचे चले जा रहे हों। लेकिन, जैसा कि लीडर ने स्पष्ट किया है, अगर यह जीवन और मृत्यु का मामला न होता, तो हमें मिलने का मौका भी न मिलता। ठीक वैसे ही जैसे हिंसा ही सच्चे बंधन बनाती है।
ओमामे ने गहरी सांस ली, फिर मेज पर रखी बंदूक की ओर हाथ बढ़ाया और उसके कठोर स्पर्श को महसूस किया। उसने कल्पना की कि वह उसे अपने मुंह में डालकर ट्रिगर दबा रही है।
अचानक एक विशाल कौआ बालकनी पर प्रकट हुआ, रेलिंग पर बैठ गया और कुछ बार कांव-कांव किया, उसकी आवाज़ छोटी और तीखी थी। आओमामे और कौए ने खिड़की से एक-दूसरे को देखा। कौए ने अपना सिर एक तरफ घुमा लिया था और अपनी बड़ी, चमकदार आँखों से कमरे में चारों ओर देख रहा था, मानो आओमामे क्या कर रही है। ऐसा लग रहा था जैसे वह उसके हाथ में मौजूद बंदूक के महत्व को समझ रहा हो। कौए बुद्धिमान पक्षी होते हैं, वे समझते हैं कि उस लोहे के टुकड़े का कोई खास महत्व है। कोई नहीं जानता क्यों, लेकिन वे समझते हैं।

*

अध्याय 18 एक मूक उपग्रह

कुछ देर गंभीरता से सोचने के बाद, फुकेरी ने अपने निचले होंठ को काटते हुए कहा, "यह करीबी मामला हो सकता है।"
टेंगो ने मेज के ऊपर अपनी उंगलियों को फिर से आपस में जोड़ा और उसकी आंखों में देखा।
"आस-पास? आपका मतलब यहीं आसपास, कोएंजी के आसपास?"
आप पैदल चलकर भी वहां पहुंच सकते हैं।
टेंगो उससे पूछना चाहता था कि उसे यह कैसे पता चला। लेकिन उसे निश्चित रूप से कोई जवाब नहीं मिलता। वह इतना तो सोच ही सकता था। वह कुछ ऐसे ठोस सवाल ढूंढने की कोशिश कर रहा था जिनका जवाब हां या ना में दिया जा सके।
“मेरा मतलब है, अगर मैं इधर-उधर खोजूं, तो क्या मुझे आओमामे मिल सकती है?” उसने कहा।
फुकेरी ने अपना सिर हिलाया।
— यह आपको सड़कों पर चलते-फिरते नहीं मिल जाता।
मैं यहां से पैदल जा सकता हूं, लेकिन आस-पड़ोस में घूमकर मैं उसे नहीं ढूंढ पाऊंगा। इसलिए।"
क्योंकि वह छिपा हुआ है।
क्या वह छिप रहा है?
— जैसे कोई घायल बिल्ली।
टेंगो ने कल्पना की कि आओमामे किसी ऐसी बालकनी के नीचे दुबकी हुई है जहाँ फफूंद की गंध आ रही हो।
“क्यों? वह किससे छिप रहा है?” उसने पूछा।
बेशक, उन्हें कोई जवाब नहीं मिला।
"लेकिन अगर वह छिप रहा है, तो इसका मतलब है कि वह खतरनाक स्थिति में है," टेंगो ने कहा।
"खतरनाक स्थिति," फुकेरी ने दोहराया, उसका चेहरा उस बच्चे जैसा था जिसे कोई कड़वी दवा खानी पड़ी हो। उसे ये शब्द सुनना अच्छा नहीं लग रहा था।
"उदाहरण के लिए, कोई उसका पीछा कर रहा है," टेंगो ने कहा।
फुकेरी ने अपना सिर थोड़ा झुकाया। उसे समझ नहीं आया।
"लेकिन यह वहां हमेशा के लिए नहीं रहेगा।"
समय सीमित है।
— सीमित।
— तो वो किसी घायल बिल्ली की तरह छिपी हुई है, इसीलिए मैं उससे सड़क पर अचानक नहीं मिल सकता?
"वह बाहर नहीं आ रहा है," लड़की ने स्पष्ट रूप से कहा।
मेरा मतलब है, मुझे इसे एक खास जगह पर ढूंढना होगा।
फुकेरी ने सिर हिलाया।
“और यह किस तरह की जगह है?” टेंगो ने पूछा।

जैसा कि उम्मीद थी, फुकाएरी ने कोई जवाब नहीं दिया।
कुछ क्षणों की चुप्पी के बाद फुकेरी ने कहा, "उसके बारे में कुछ बातें याद रखना। वे तुम्हारे लिए उपयोगी हो सकती हैं।"
"इस्तेमाल करने के लिए। अगर मुझे उसके बारे में कुछ बातें याद आ जाएं, तो क्या इससे मुझे यह पता लगाने में कुछ सुराग मिल सकते हैं कि वह कहां छिपी है?" बिना जवाब दिए, फुकेरी ने हल्के से कंधे उचकाए, लेकिन उसके हावभाव में एक अस्पष्ट सकारात्मक स्वर पढ़ा जा सकता था।
"धन्यवाद," टेंगो ने कहा।
फुकेरी ने संतुष्ट बिल्ली के बच्चे की तरह अपना सिर थोड़ा सा हिलाया।
*

रसोई में, टेंगो रात का खाना बना रहा था। फुकेरी ध्यान से शेल्फ से एक रिकॉर्ड चुन रही थी। ज़्यादा एल्बम नहीं थे, फिर भी उसे चुनने में काफ़ी समय लग गया। काफ़ी देर सोचने के बाद, उसने रोलिंग स्टोन्स का एक पुराना रिकॉर्ड निकाला, उसे रिकॉर्ड प्लेयर के टर्नटेबल पर रखा और सुई वहीं छोड़ दी। यह वही रिकॉर्ड था जो टेंगो ने हाई स्कूल में किसी से उधार लिया था और लौटाना भूल गया था। उसने इसे काफ़ी समय से शेल्फ से नहीं उतारा था। 'मदर्स लिटिल हेल्पर' और 'लेडी जेन' सुनते हुए, टेंगो ने भूरे चावल, मशरूम और हैम से पुलाव बनाया। उसने टोफू और समुद्री शैवाल से मिसो सूप भी बनाया। उसने कुछ फूलगोभी उबाली और उस पर फ्रिज में रखी करी सॉस डाल दी। उसने हरी बीन्स और प्याज़ का सलाद बनाया। खाना बनाना उसके लिए बिल्कुल भी मुश्किल नहीं था, और वह आमतौर पर उस समय तरह-तरह की बातों के बारे में सोचती रहती थी। रोज़मर्रा की परेशानियों से लेकर गणित के सवालों तक, उपन्यासों से लेकर दार्शनिक प्रश्नों तक। रसोई में काम करते समय वह अपने विचारों को खाली बैठे रहने की तुलना में अधिक व्यवस्थित ढंग से संगठित कर पाता था। लेकिन चाहे वह समस्या को कितना भी घुमा-फिराकर देखे, वह फिर भी यह नहीं समझ पा रहा था कि वह "विशेष स्थान" आखिर क्या था। जहाँ कोई व्यवस्था ही न हो, वहाँ व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास व्यर्थ था। इसका परिणाम न जाने क्या हो सकता था।
वे दोनों आमने-सामने बैठकर मेज पर बैठ गए और बिना कुछ बोले खाना खाने लगे। मानो दो थके हुए पति चुपचाप चबा रहे हों, हर कोई अपने काम में मग्न हो। या यूं कहें कि कुछ सोच ही नहीं रहा हो। खासकर फुकाएरी के मामले में, यह कहना मुश्किल था। खाना खत्म करने के बाद, टेंगो ने थोड़ी कॉफी पी और फुकाएरी ने फ्रिज से एक ठंडी पुडिंग निकाली। वह जो भी खाती, उसके चेहरे पर हमेशा एक ही भाव रहता था।
ऐसा लगता था मानो वह सिर्फ चबाने पर ही ध्यान दे रही हो।
टेंगो डेस्क पर बैठ गया और लड़की की सलाह मानते हुए, आओमामे के बारे में विवरण याद करने की कोशिश करने लगा।
उसके बारे में कुछ बातें याद रखें। वे आपके लिए उपयोगी हो सकती हैं।
लेकिन वह ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा था। वे अब रोलिंग स्टोन्स का एक और एल्बम सुन रहे थे, और मिक जैगर पूरे जोश में लिटिल रेड रूस्टर ब्लूज़ गा रहे थे। यह बुरा नहीं था, लेकिन यह उस तरह का संगीत नहीं था जिसके बारे में आप सोचना और याद करना चाहें। रोलिंग स्टोन्स इस तरह की प्यारी-प्यारी चीज़ों तक ही सीमित नहीं रहते। मुझे अकेले रहने के लिए एक शांत जगह चाहिए, टेंगो ने सोचा।

उन्होंने कहा, "मैं थोड़ी देर के लिए बाहर जा रहा हूँ।"
एल्बम का कवर हाथ में लिए हुए, फुकाएरी ने बिना किसी खास रुचि के सिर हिलाया। “अगर कोई आए तो दरवाजा मत खोलना!” टेंगो ने कहा।
*

नेवी ब्लू रंग की लंबी बाजू की कमीज़, फीकी चिनो पैंट और स्नीकर्स पहने टेंगो ट्रेन स्टेशन की ओर चल पड़ा। पास ही स्थित "द व्हीट ईयर" नाम के एक बार में जाकर उसने एक बियर का ऑर्डर दिया। यह एक ऐसी जगह थी जहाँ ड्रिंक और हल्का- फुल्का खाना मिल जाता था। जगह काफी छोटी थी और एक बार में सिर्फ बीस लोग ही बैठ सकते थे। वह यहाँ कई बार आ चुका था। दिन में बाद में यह शोर मचाते युवाओं से भरा रहता था, लेकिन शाम सात से आठ बजे के बीच अपेक्षाकृत शांत और सुकून भरा रहता था। कोने में बैठकर बियर पीते हुए पढ़ने के लिए यह एक बढ़िया जगह थी। कुर्सियाँ आरामदायक थीं। उसे इस बार के नाम की उत्पत्ति या इसके अर्थ के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। बेशक, वह मालिक से पूछ सकता था, लेकिन अजनबियों से बातचीत करने में वह अच्छा नहीं था। वैसे भी, नाम की उत्पत्ति न जानने से उसे कोई फर्क नहीं पड़ता था। खैर, "द व्हीट ईयर" नाम का यह छोटा सा पब एक सुखद जगह थी।
सौभाग्य से, अंदर कोई संगीत नहीं बज रहा था। टेंगो खिड़की के पास एक मेज पर बैठ गया और कार्ल्सबर्ग का एक गिलास पीते हुए और अपने सामने रखे मेवों के कटोरे को कुतरते हुए आओमामे के बारे में सोचने लगा। उसे याद करते हुए, वह भी दस साल का बच्चा बन गया। वह अपने जीवन के उस महत्वपूर्ण मोड़ को फिर से जी रहा था। आओमामे द्वारा उसका हाथ थामने के बाद, उसने रेडियो और टीवी लाइसेंस शुल्क के लिए अपने पिता के साथ जाने से इनकार कर दिया था। उसे जल्द ही पता चल गया था कि उत्तेजना और प्रदूषण का क्या अर्थ होता है। ये उसके जीवन में एक बड़ा बदलाव थे। बेशक, देर-सवेर उसे इन अनुभवों से गुजरना ही पड़ता, भले ही आओमामे ने उसका हाथ न थामा होता। लेकिन उसने इन बदलावों को तेज कर दिया और उसे प्रोत्साहित किया। मानो उसने उसे पीछे से धक्का दिया हो।
वह काफी देर तक अपनी बाईं हथेली को देखता रहा। उस दस साल की बच्ची ने उसका हाथ पकड़ा था और उसके अंदर कुछ बदल दिया था। वह तार्किक रूप से यह नहीं समझा सकता था कि यह कैसे हुआ, लेकिन उस पल में वे दोनों एक-दूसरे को सबसे स्वाभाविक तरीके से समझ गए थे। उन्होंने एक-दूसरे को स्वीकार कर लिया था। लगभग चमत्कारिक रूप से, पूरी तरह से। ऐसा जीवन में अक्सर नहीं होता। इसके विपरीत, कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिनके जीवन में ऐसा अनुभव कभी नहीं होता। लेकिन उस पल में टेंगो उस घटना के गहरे महत्व को नहीं समझ पाया था। वास्तव में, हाल तक, वह उस घटना में छिपे अर्थ को नहीं समझ पाया था। उसके मन में बस उस बच्ची की धुंधली सी छवि थी।
अब वह तीस साल की हो चुकी थी, और उसमें बहुत बदलाव आ गया होगा। उसकी लंबाई बढ़ गई थी, स्तन बड़े हो गए थे, बाल भी अलग तरह के थे। वह मेकअप करती थी—ज़ाहिर है, अगर वह अब साक्षी चर्च की सदस्य नहीं रही होती तो। शायद अब वह सिर्फ़ महंगे कपड़े पहनती हो। टेंगो कल्पना भी नहीं कर सकता था कि कैल्विन क्लेन के सूट और ऊँची एड़ी के जूते पहनकर, फुटपाथ पर शान से चलते हुए वह कैसी दिखती होगी। लेकिन ज़ाहिर है, यह सब मुमकिन था। लोग बढ़ते हैं और बदलते हैं। शायद वह अब भी उसी जगह पर हो और उसने ध्यान ही न दिया हो।

किया होगा? नहीं, पुलिस तो नहीं हो सकती। कोई और उसका पीछा कर रहा है, और चाहे जो भी हो, उसका कानून से कोई लेना-देना नहीं है।
क्या फुकाएरी भी इसी चीज़ से छिप रही है? उसने अचानक सोचा। छोटे लोग? लेकिन वे आओमामे को क्यों ढूंढ रहे होंगे?
अगर मान लें कि छोटे लोग सचमुच उसके पीछे पड़े थे, तो इसका मतलब था कि असल में मुख्य मोहरा वह खुद ही था। बेशक, उसे इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि वह पूरी कहानी का अहम हिस्सा कैसे बन गया। लेकिन अगर फुकाएरी और आओमामे किसी एक मकसद से जुड़े थे, तो वह सिर्फ वही हो सकता था। शायद अनजाने में ही मैंने कोई ऐसी शक्ति का इस्तेमाल किया जिससे आओमामे मेरे करीब आ गई, उसने सोचा।
क्या कोई ताकत है?
उसने अपने हाथों की ओर देखा। मुझे समझ नहीं आ रहा। मेरे पास कौन सी शक्ति है? वेटर उसके लिए बर्फ के साथ बर्बन और मूंगफली का एक और कटोरा लाया। टेंगो ने फोर रोज़ेज़ का एक घूंट लिया और मूंगफली को हथेली में पासे की तरह घुमाने लगा।
खैर, आओमामे आस-पास ही है। इतनी पास कि मैं चलकर उसके पास जा सकता हूँ। फुकाएरी ने मुझे यही बताया था और मुझे उसकी बात पर यकीन है। पता नहीं क्यों, पर यकीन है। लेकिन अगर वो छिप रही है तो मैं उसे कैसे ढूँढूँ? सामाजिक जीवन जीने वाले को ढूँढना भी आसान नहीं होता। और अगर वो छिपने की कोशिश कर रही है, तो और भी मुश्किल। मैं क्या करूँ, मेगाफोन लेकर गलियों में घूमूँ और उसका नाम चिल्लाऊँ? अच्छा है, इस तरह तो वो सामने नहीं आएगी। अगर आई तो आस-पास के लोगों का ध्यान उसकी तरफ़ जाएगा और वो और भी ज़्यादा खतरे में पड़ जाएगी।
मुझे उसके बारे में और भी कई बातें याद रखनी होंगी।
उसके बारे में कुछ बातें याद रखना। फुकेरी ने कहा था, शायद ये काम आ जाए। लेकिन फुकेरी के ये सलाह देने से पहले भी, तेंगो को ये एहसास सता रहा था कि उसे आओमामे के बारे में एक-दो अहम बातें पता नहीं हैं। ये एहसास उसे कभी-कभी परेशान करता था, जैसे जूते में कोई कंकड़ फंसा हो। अस्पष्ट रूप से, लेकिन दर्दनाक तरीके से।
*

टेंगो ने मानो ब्लैकबोर्ड मिटा रहा हो, अपने दिमाग से सारे विचार मिटा दिए और अपनी यादों को फिर से खंगालने लगा। आओमामे के बारे में, अपने बारे में, अपने आस-पास के लोगों और चीज़ों के बारे में। ठीक वैसे ही जैसे कोई मछुआरा पानी की तलहटी में नरम कीचड़ में अपना जाल खींचता है। उसने बड़ी सावधानी से एक-एक करके चीज़ों को क्रम में लगाया। हालाँकि विवरण बहुत सारे और स्पष्ट थे, फिर भी उसकी यादें अंततः काफी सीमित थीं।
उसे अभी भी वहाँ कुछ ढूंढना था, कुछ ऐसा जिसे उसने अब तक नज़रअंदाज़ कर दिया था। और उसे यह जल्दी करना था। नहीं तो, वह आओमामे को नहीं ढूंढ पाएगा, जो अब पास ही कहीं छिपी हुई थी। अगर फुकाएरी की बात मानें तो उसके पास ज़्यादा समय नहीं था, और उसका पीछा किया जा रहा था।
उसने कक्षा में देखी गई चीज़ों के बारे में सोचने की कोशिश की। वह क्या देख रही थी? उसे समय में पीछे जाकर उसकी नज़र पर ध्यान देना था।
जब उसने उसका हाथ थामा हुआ था, तब लड़की ने बिना नज़रें हटाए सीधे उसकी आँखों में देखा था। तेंगो भी अचंभित होकर उसकी ओर देखने लगा, मानो उससे स्पष्टीकरण

चली गई हो। फिर उसने साँस ली और छोड़ी। अब उसे आओमामे दिखाई नहीं दे रही थी।
वह मुड़कर कक्षा से बाहर चली गई थी। फिर पूरी तरह से उसके जीवन से गायब हो गई।
तब से बीस साल बीत चुके थे।
टेंगो ने सोचा, चांद।
तभी मैंने चाँद देखा। आओमामे ने भी उसे देखा। वह चमकीले आकाश में तैर रहा था, हालाँकि उस समय केवल साढ़े तीन बज रहे थे। एक धूसर चट्टान। एक शांत उपग्रह। हम दोनों उसे देखते रहे। लेकिन इसका क्या अर्थ है? क्या चाँद मुझे उस जगह ले जा रहा है जहाँ आओमामे है?
टेंगो को अचानक एहसास हुआ कि शायद आओमामे ने चुपके से अपने दिल का एक हिस्सा चांद को सौंप दिया था। उनके बीच एक गुप्त वादा हुआ था। उसकी असाधारण गंभीरता भरी निगाहों से उसने अनुमान लगाया कि ऐसा ही हुआ था।
बेशक, उसे यह जानने का कोई तरीका नहीं था कि उसने उस समय चंद्रमा को क्या दिया था, लेकिन वह कल्पना कर सकता था कि बदले में उसे क्या मिला होगा। शांति और पूर्ण एकांत। यही सबसे अनमोल उपहार है जो चंद्रमा आपको दे सकता है।
*

टेंगो ने अपने पेय का भुगतान किया और बार से बाहर निकल गया। उसने चाँद देखने के लिए ऊपर देखा, लेकिन वह दिखाई नहीं दिया। आसमान साफ था और चाँद को अब तक निकल आना चाहिए था, लेकिन वह इमारतों के बीच छिपा हुआ था। अपने हाथों को जेब में डाले वह गलियों में घूमने लगा, चाँद को देखने के लिए कोई खुली जगह ढूंढने की कोशिश कर रहा था। लेकिन कोएंजी में ऐसी जगह ढूंढना आसान नहीं था। ज़मीन ताड़ के पेड़ की तरह सपाट थी और वहाँ एक भी पहाड़ी नहीं थी। कोई पहाड़ी नहीं। टेंगो ने किसी इमारत की छत पर चढ़ने के बारे में सोचा जहाँ से वह आसमान का विस्तार देख सके, लेकिन उसे चढ़ने के लिए कोई इमारत दिखाई नहीं दी।
गलियों में यूं ही भटकते हुए उसे याद आया कि पास ही एक बच्चों का खेल का मैदान था, जिसके पास से वह कई बार गुजर चुका था। वह कोई बड़ा पार्क तो नहीं था, लेकिन वहां एक स्लाइड थी। शायद अगर वह उस पर चढ़ जाए तो उसे आसमान का थोड़ा और हिस्सा दिख जाए। वह बहुत लंबा नहीं था, लेकिन अगर वह थोड़ा और ऊपर चढ़ जाए, तो आसमान देखने का उसका मौका बेहतर हो जाएगा। वह उसी जगह की ओर चल पड़ा। उसकी घड़ी की सुइयां लगभग आठ बज रही थीं।
पार्क सुनसान था। ठीक बीचोंबीच एक ऊँची लालटेन पूरे पार्क को रोशन कर रही थी। वहाँ एक एल्म का पेड़ भी था, जिस पर अब भी घने पत्ते थे। कुछ छोटी झाड़ियाँ, एक फव्वारा, बेंच, एक झूला और एक स्लाइड भी थी। एक सार्वजनिक शौचालय भी था, लेकिन ज़िला परिषद का एक कर्मचारी हर रात उसे बंद कर देता था, शायद इसलिए ताकि कोई वहाँ रात न बिताए। दिन के समय, छोटे बच्चों वाली माताएँ वहाँ आतीं और बातें करतीं। टेंगो ने यह नज़ारा कई बार देखा था। लेकिन अंधेरा होने के बाद, वहाँ कोई नहीं आता था।
टेंगो स्लाइड पर चढ़ा और आसमान की ओर देखा। उत्तर दिशा में, हाल ही में एक पाँच मंज़िला इमारत बनी थी। वह हाल ही में वहाँ गया था, इमारत का निर्माण अभी- अभी पूरा हुआ था। इमारत उत्तरी आकाश के सामने एक दीवार की तरह खड़ी थी। हालाँकि, अन्य दिशाओं में केवल छोटे-छोटे मकान थे। टेंगो ने चारों ओर देखा और दक्षिण-पश्चिम में चाँद की परछाई देखी। यह एक पुरानी, दो मंज़िला इमारत की छत

फिर उसने अपनी आँखें खोलीं और एक बार फिर आकाश की ओर देखा। शांत और ध्यानपूर्वक। लेकिन अभी भी दो चंद्रमा दिखाई दे रहे थे।
यह कोई भ्रम नहीं था। उसने सचमुच दो देखे। उसने अपनी दाहिनी मुट्ठी भींच ली और काफी देर तक उसी स्थिति में रहा।
चांद अब भी शांत था। लेकिन वह अब अकेली नहीं थी।

अध्याय 19 जब बेटी जागती है

एयर क्राइसालिस एक शानदार कहानी थी, जिसे पढ़ना बेहद आसान था। इसे दस साल की बच्ची की भाषा में लिखा गया था। न कोई कठिन शब्द, न कोई ज़ोरदार तर्क, न उबाऊ व्याख्याएँ, न ही जटिल भाव-भंगिमाएँ। कहानी शुरू से अंत तक उस छोटी बच्ची ने ही सुनाई। उसके शब्द सरल, स्पष्ट और सुनने में मधुर थे, लेकिन उनमें कोई स्पष्टीकरण नहीं था। उसने बस वही बताया जो उसने अपनी आँखों से देखा, जैसा घटित हुआ। उसने यह नहीं पूछा, "लेकिन यहाँ असल में क्या हुआ?" या "इसका क्या मतलब है?" वह धीरे-धीरे, लेकिन उचित कदमों से आगे बढ़ती रही। पाठक बड़ी सहजता से उसके कदमों का अनुसरण करता रहा, उसकी आँखों से देखता रहा, और अचानक खुद को एक अलग ही दुनिया में पाया। एक ऐसी दुनिया, जहाँ छोटे लोग हवा में क्राइसालिस बनाते थे।
पहले दस पन्नों से ही आओमामे लेखन शैली से बेहद प्रभावित हुई। अगर टेंगो ने सचमुच ये पंक्तियाँ लिखी थीं, तो लेखन में उसकी प्रतिभा वाकई अद्भुत थी। आओमामे उसे गणित में विलक्षण प्रतिभा वाला बच्चा मानती थी। उसे बाल प्रतिभा कहा जाता था। वह गणित की उन समस्याओं को आसानी से हल कर लेता था जिन्हें वयस्क भी मुश्किल से हल कर पाते थे। अन्य विषयों में भी उसके उत्कृष्ट अंक थे और कोई भी बच्चा उसे दिए गए किसी भी काम में उसकी बराबरी नहीं कर सकता था। वह लंबा था और एक सफल एथलीट भी था। लेकिन आओमामे को याद नहीं था कि वह लेखन में विशेष रूप से अच्छा था। शायद उस समय गणित की छाया में उसकी यह प्रतिभा छिपी रही और किसी का ध्यान उस पर नहीं गया।
या शायद टेंगो ने उसके बोले हुए शब्दों को वैसे ही लिख लिया था, और उसकी मौलिकता का शैली से कोई लेना-देना नहीं था। लेकिन उसके मन में कहीं न कहीं यह बात थी कि मामला पूरी तरह से सही नहीं था। पहली नज़र में लेखन सरल और सहज लग रहा था, लेकिन गौर से देखने पर पता चलता था कि यह वास्तव में बहुत सोच-समझकर और सुव्यवस्थित ढंग से लिखा गया था। कुछ भी बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कहा गया था, फिर भी इसमें वह सब कुछ समाहित था जो आवश्यक था। हालाँकि अलंकारिक भाषा का प्रयोग कम था, वर्णन सटीक और सूक्ष्म अर्थों से भरपूर थे। लेकिन सबसे बढ़कर, लेखन का लहजा प्रभावशाली था। पाठक शब्दों की शक्तिशाली गूंज को बिना बोले ही महसूस कर सकता था। सत्रह साल की लड़की इतनी सहजता से नहीं लिख सकती थी।
इन निष्कर्षों के साथ, आओमामे ने अत्यंत ध्यान से पढ़ना जारी रखा।
*

कहानी की नायिका एक दस वर्षीय लड़की थी जो पहाड़ों में रहती थी और एक छोटे से "समूह" का हिस्सा थी। उसके माता-पिता भी बाकी लोगों के साथ उसी समूह में रहते थे। उसका कोई भाई-बहन नहीं था। जन्म के कुछ समय बाद ही उसे वहाँ लाया गया था, इसलिए वह बाहरी दुनिया के बारे में कुछ नहीं जानती थी। परिवार के तीनों सदस्य अपने-अपने दैनिक कामों में व्यस्त रहते थे और उन्हें शायद ही कभी मिलने और खुलकर बात करने का मौका मिलता था। फिर भी वे आपस में अच्छे से घुल-मिल जाते थे। दिन के समय, छोटी लड़की पास के प्राथमिक विद्यालय जाती थी और उसके माता-

चाहे कोई उसकी देखभाल करता या न करता, वह ठीक नहीं हो पाती। उसकी मृत्यु तो निश्चित थी, लेकिन इससे उस छोटी बच्ची का दोष बरी नहीं हो जाता। समस्या केवल बकरी की मृत्यु ही नहीं थी, बल्कि यह भी थी कि उसने अपना सौंपा हुआ काम ठीक से नहीं किया था। एकांतवास ही सबसे कठोर दंड हो सकता था।
उस छोटी बच्ची को एक अंधे बकरे के शव के साथ एक छोटे, पुराने शेड में बंद कर दिया गया था, जिसे "चिंतन कक्ष" कहा जाता था। समूह के नियमों को तोड़ने वालों को वहाँ अपने कार्यों पर चिंतन करने का मौका दिया जाता था। जब उसे सज़ा दी जा रही थी, तब उससे किसी ने बात नहीं की थी। उसने वे दस दिन पूरी तरह खामोशी में बिताए थे। उसे बहुत कम पानी और खाना मिलता था, लेकिन शेड अँधेरा, ठंडा और गंदा था। और बकरे के शव से बदबू आती थी। दरवाज़ा बाहर से बंद था, और एक कोने में एक बाल्टी रखी थी जिसमें वह शौच करती थी। एक दीवार पर ऊपर एक छोटी खिड़की थी जिससे सूरज और चाँद की किरणें अंदर आती थीं। जब बादल नहीं होते थे, तो वह कुछ तारे देख पाती थी। उसके पास रोशनी का कोई और स्रोत नहीं था। वह अपनी रातें ज़मीन पर रखे सख्त गद्दे पर दो पुराने कंबलों के नीचे काँपते हुए बिताती थी। अप्रैल का महीना था, लेकिन पहाड़ों में रातें अभी भी ठंडी थीं। जब अँधेरा हो जाता था, तो मरी हुई बकरे की आँखें तारों की रोशनी में चमक उठती थीं। उनके डर से वह छोटी बच्ची मुश्किल से सो पाती थी।
तीसरी रात को बकरी का मुँह अंदर से चौड़ा होकर खुलने लगा। और अंदर से एक-एक करके छोटे-छोटे आदमी बाहर आने लगे। कुल मिलाकर छह। वे लगभग चार इंच लंबे थे, लेकिन ज़मीन पर पहुँचते ही वे बारिश के बाद उगने वाले मशरूम की तरह तेज़ी से बढ़ने लगे। वे लगभग दो फुट लंबे हो गए। और उन्होंने कहा कि वे "छोटे आदमी" हैं।
छोटी बच्ची ने सोचा, स्नो व्हाइट और सात बौनों की कहानी की तरह। उसके पिता ने उसे बचपन में यह कहानी सुनाई थी। लेकिन इसमें एक चीज़ गायब थी।
"अगर आप सात पसंद करते हैं, तो हम सात हो सकते हैं," दूसरे ने धीमी आवाज में कहा।
ऐसा लग रहा था मानो वे छोटे लोग उसके मन की बात पढ़ रहे हों। और जब उसने उन्हें दोबारा गिना, तो देखा कि वे छह नहीं बल्कि सात थे। लेकिन उस छोटी बच्ची को इसमें ज़रा भी हैरानी नहीं हुई। जिस क्षण वे बकरी के मुँह से निकले थे, उसी क्षण से दुनिया के नियम बदल चुके थे। उसके बाद जो कुछ भी हुआ, वह अब अजीब नहीं रहा।
"तुम मरी हुई बकरी के मुंह से क्यों निकली?" छोटी बच्ची ने पूछा, यह महसूस करते हुए कि उसकी आवाज़ अजीब लग रही थी। वह अलग तरह से बोल रही थी, शायद इसलिए कि उसने तीन दिनों से एक शब्द भी नहीं बोला था।
कर्कश आवाज वाले ने कहा, "क्योंकि बकरी का मुंह ही रास्ता था। जब तक हम इस तरफ नहीं पहुंचे, तब तक हमें भी नहीं पता था कि यह मरी हुई बकरी है।"
"इससे हमें ज़रा भी फ़र्क नहीं पड़ता," पतली आवाज़ वाले ने कहा। "जब तक रास्ता है, चाहे वह बकरी हो, व्हेल हो या मटर।"
"तुमने यह रास्ता बनाया," धीमी आवाज़ में दूसरे ने कहा। "और हमने इसे आज़माया, यह देखने के लिए कि यह हमें कहाँ ले जाता है।"
"मैंने यह रास्ता बनाया," छोटी बच्ची ने कहा, उसे अपनी ही आवाज पहचान में नहीं आ रही थी।

"आपने हम पर एहसान किया," दूसरे ने दबी आवाज में कहा।
उनमें से कुछ ने सहमति में धीमी आवाज में प्रतिक्रिया दी।
"क्या तुम हमारे साथ खेलना नहीं चाहते, चलो एक हवाई कोकून बनाते हैं?" सुरीली आवाज वाले ने पूछा।
"जब तक हम यहां हैं," भारी स्वर वाले गायक ने कहा।
"हवा का प्यूपा?" छोटी बच्ची ने पूछा।
"हम हवा से धागे खींचते हैं और उनसे घोंसला बनाते हैं। और हम उस घोंसले को बड़ा से बड़ा बनाते जाते हैं," उनमें से एक ने धीमी आवाज में समझाया।
यह घोंसला किसके लिए है?
"तुम देखोगे," उस भारी स्वर वाले गायक ने कहा।
"जब यह रिलीज़ होगा तब आपको पता चल जाएगा," आवाज़ ने धीरे से कहा।
— हो हो, एक और उसके साथ आ गया।
मैं आपकी भी मदद कर सकता हूँ।
“क्या तुम फिर से पूछ रहे हो?” कर्कश आवाज ने जवाब दिया।
"आपने हम पर एक उपकार किया है। चलिए इसे एक साथ बुनते हैं!" गायक ने कहा।
एक बार आदत पड़ जाने पर, हवा से धागा खींचना ज़्यादा मुश्किल नहीं था। छोटी बच्ची की उंगलियाँ बहुत कुशल थीं और काम बहुत जल्दी हो जाता था। अगर आप ध्यान से देखते, तो आपको हवा में तैरते हुए कई धागे दिखाई देते। अगर आप उन्हें देखना चाहते, तो देख सकते थे।
"बिल्कुल सही। यह बहुत अच्छा है," आवाज ने धीमी आवाज़ में कहा।
"तुम बहुत समझदार बच्ची हो। तुम जल्दी सीख जाती हो," पतली आवाज़ ने आगे कहा। वे सभी एक जैसे कपड़े पहने हुए थे और दिखने में भी एक जैसे थे, लेकिन उनकी आवाज़ें अलग-अलग थीं।
छोटे कद के लोगों के कपड़े बेहद साधारण थे। उनके बारे में और कुछ कहा नहीं जा सकता था। अगर आप उनसे नज़र हटाते, तो अगले ही पल आपको याद नहीं रहता कि उन्होंने क्या पहना है। उनके चेहरों के बारे में भी यही कहा जा सकता था। वे न तो बुरे थे, न अच्छे, बस साधारण थे। और अगर आप उनसे नज़र हटाते, तो अगले ही पल आपको याद नहीं रहता कि वे कैसे दिखते हैं। उनके बाल भी वैसे ही थे। न लंबे, न छोटे, बस बाल। और उनमें कोई गंध भी नहीं थी।
भोर होते ही, जब मुर्गों ने बांग दी और पूर्व दिशा में आकाश हल्का होने लगा, तो सातों छोटे लोगों ने अपना काम रोक दिया और लेट गए। फिर उन्होंने खरगोश के आकार के उस हवाई कोकून को कमरे के एक कोने में छिपा दिया, शायद इसलिए ताकि खाना लाने वाला व्यक्ति उसे न ढूंढ पाए।
"सुबह हो गई है," आवाज ने धीमी आवाज़ में कहा।
"रात बीत गई," धीमी आवाज ने कहा।
इतनी सारी आवाजों से किस तरह का गायन समूह बनेगा, उस छोटी लड़की ने सोचा।
"हमारे पास कोई गाने नहीं हैं," गायक ने कहा।
"हो, हो," संगतकार ने कहा।
वे छोटे लोग सिकुड़कर दस सेंटीमीटर के आकार के हो गए, मानो वे आए हों, कतार में खड़े हुए हों और मृत बकरी के मुंह में प्रवेश कर गए हों।
"हम आज रात आ रहे हैं," फोन रखने से पहले बकरी के मुंह से धीमी आवाज़ में कहा गया। "तुम्हें हमारे बारे में किसी को भी बताने की इजाज़त नहीं है।"

"अगर तुमने किसी को बताया तो बहुत बुरा होगा," कर्कश आवाज ने आगे कहा।
"हो, हो," संगतकार ने कहा।
मैं किसी को नहीं बताऊंगा।
और अगर मैं बता भी देती, तो कोई मेरी बात पर यकीन नहीं करता। छोटी बच्ची को अक्सर बड़ों से डांट पड़ती थी जब वह अपने मन की बात कह देती थी। उसे वास्तविकता और कल्पना में फर्क न कर पाने के लिए फटकारा जाता था। उसके सोचने का तरीका दूसरों से रूप और बारीकियों में बहुत अलग था। उसे खुद भी समझ नहीं आता था कि वह कहाँ गलत है। लेकिन, किसी भी हालत में, छोटे लोगों के बारे में किसी को न बताना ही बेहतर था।
*

छोटे लोगों के गायब हो जाने और बकरी का मुँह फिर से बंद हो जाने के बाद, छोटी लड़की ने उस जगह को बहुत देर तक खोजा जहाँ उन्होंने हवा के कोकून को फंसाया था, लेकिन उसे वह कहीं नहीं मिला। वह बहुत अच्छी तरह से छिपा हुआ था। हालाँकि जगह बहुत तंग थी, फिर भी उसका कोई आभास नहीं हुआ। वह कहाँ हो सकता है?
फिर उसने खुद को कंबल में लपेट लिया और सो गई। उसे ऐसी गहरी नींद आई, जैसी उसे लंबे समय से नहीं आई थी। बिना सपनों के, बिना किसी रुकावट के। उस छोटी बच्ची ने इस गहरी नींद का भरपूर आनंद लिया।
दिन के समय बकरी मृत पड़ी थी। उसका शरीर अकड़ा हुआ था और उसकी धुंधली आँखें दो कांच के मोतियों जैसी लग रही थीं। लेकिन जब शाम हुई और खलिहान में अंधेरा छा गया, तो उसकी आँखें तारों की रोशनी में चमकने लगीं। और उसके मुँह से छोटे-छोटे लोग निकले, मानो उसी रोशनी से निर्देशित हो रहे हों। इस बार शुरुआत में वे सात थे।
"चलिए, जो हमने कल रात शुरू किया था, उसे जारी रखते हैं," कर्कश आवाज ने कहा। बाकी छह लोगों ने सहमति में धीमी आवाज़ में कहा।
छोटी बच्ची और सात छोटे लोग प्यूपा के चारों ओर घेरा बनाकर बैठ गए और काम में जुट गए। उन्होंने हवा से एक सफेद धागा निकाला और उससे प्यूपा बुनना शुरू किया। वे चुपचाप, बिना एक शब्द बोले, अपना काम करते रहे। जोश से काम करते हुए उन्हें रात की ठंड का एहसास भी नहीं हुआ। समय का पता ही नहीं चला। उन्हें न तो ऊब हुई और न ही नींद आई। उनकी आँखों के सामने प्यूपा धीरे-धीरे बढ़ता गया। भोर होते ही छोटी लड़की ने पूछा, "हम इसे कितना बड़ा बनाएं?" वह जानना चाहती थी कि क्या वह उन दस दिनों में इसे पूरा कर पाएगी, जब उसे शेड में बंद रहना होगा।
"जितना बड़ा हो सके," पतली आवाज ने जवाब दिया।
"जब यह एक निश्चित आकार तक पहुँच जाता है, तो यह अपने आप टूट जाता है," हंसमुख गायक ने कहा।
"और इससे कुछ न कुछ नतीजा निकलता है," उस भारी स्वर वाले गायक ने बुलंद आवाज में कहा।
"क्या मतलब?" छोटी बच्ची ने पूछा।
“क्या हालचाल है?” आवाज ने धीमी आवाज़ में कहा।
"तुम देखोगे," धीमी आवाज ने कहा।
“हो, हो,” संगतकार ने कहा।
"हो, हो," बाकी छह ने एक साथ कहा।

*

उपन्यास की लेखन शैली में कुछ उदासी झलक रही थी। इस विचित्र भाव को भांपते हुए आओमामे ने माथे पर शिकन डाली। यह एक तरह की बच्चों की परीकथा थी। लेकिन इसके भीतर एक अदृश्य, अंधकारमय और उथल-पुथल भरी धारा बह रही थी। सरल, सादे शब्दों में आओमामे को एक अशुभ संकेत मिला, एक प्रकार का अंधकार जो किसी बीमारी के आने का संकेत देता है। एक घातक बीमारी, जो धीरे-धीरे मन को भीतर से खा जाती है। और उस बीमारी को लाने वाले सात नन्हे लोगों का समूह था। आओमामे ने सोचा, इसमें निस्संदेह कुछ अस्वस्थता है, उनकी आवाज़ों में उसे अपने से बहुत मिलती-जुलती कोई खतरनाक बात महसूस हुई।
ओमामे ने अपनी किताब से नाक उठाई और नेता के मरने से पहले कहे गए शब्दों के बारे में सोचने लगी: "हम प्राचीन काल से उनके साथ रहते आए हैं, जब अच्छाई और बुराई का कोई अस्तित्व ही नहीं था, और लोगों में अभी भी कोई विवेक नहीं था।" थोड़ी देर बाद, उन्होंने फिर से पढ़ना शुरू कर दिया।
*

छोटी बच्ची और छोटे लोग काम करते रहे, और कुछ दिनों बाद, हवा का कोकून एक बड़े कुत्ते के आकार का हो गया।
भोर होते ही छोटी बच्ची ने उनसे कहा, "कल मेरी सजा खत्म हो जाएगी और मैं यहां से चली जाऊंगी।"
वे चुपचाप उसकी बात सुनते रहे।
— इसलिए मैं अब आपके साथ वायु परिपथ पर काम नहीं कर सकता।
"कितनी अफसोस की बात है," गायक ने खेद भरे स्वर में कहा।
"आपने हमारी बहुत मदद की है," उस भारी स्वर वाले गायक ने आगे कहा।
"प्यूपा लगभग तैयार है," पतली आवाज़ ने कहा। "बस थोड़ा और मिलाना है, और काम हो जाएगा।"
उसके चारों ओर कतार बनाकर, छोटे लोग उस प्यूपा को देख रहे थे, और अपनी आंखों से उसके आकार का अंदाजा लगा रहे थे।
"हर चीज़ थोड़ी और चाहिए," कर्कश आवाज़ ने कहा, मानो किसी नीरस नाविक गीत के लिए स्वर निर्धारित कर रहा हो।
“हो, हो,” संगतकार ने कहा।
"हो, हो," बाकी छह ने एक साथ कहा।
*

दस दिनों के एकांतवास के बाद, छोटी बच्ची समूह में लौट आई। उसने अपने नियमों से भरी दिनचर्या फिर से शुरू कर दी और अब उसके पास अकेले रहने का समय नहीं था।
ज़ाहिर है, अब वह छोटे लोगों के साथ हवा में कोकून नहीं बुन सकती थी। हर रात, सोने से पहले, वह कल्पना करती कि सात छोटे लोग उसके चारों ओर बैठे हैं और उसे बड़ा से बड़ा बनाने में लगे हैं। वह इसके अलावा कुछ और सोच ही नहीं पाती थी। उसे ऐसा भी लगता था मानो कोकून उसके दिमाग में घुस गया हो।
छोटी बच्ची यह जानने के लिए बेताब थी कि कोकून के अंदर क्या बन रहा है और उसके फटने पर उसमें से क्या निकलेगा। उसे बहुत दुख था कि वह उस पल की साक्षी नहीं बन सकती थी। उसने मन ही मन सोचा, मैंने इतनी मदद की थी, तो मुझे वहाँ रहने का पूरा हक होना चाहिए था। उसने तो यहाँ तक सोच लिया था कि वह एक और गलती करके दोबारा सज़ा भुगत ले, ताकि वह वापस झोपड़ी में जा सके। लेकिन शायद उसकी

कोशिशों के बावजूद, नन्हे लोग फिर कभी प्रकट न हों। मरी हुई बकरी को कहीं ले जाकर दफना दिया गया था। उसकी आँखें अब तारों की रोशनी में नहीं चमक सकती थीं। कहानी में उस छोटी बच्ची के समुदाय में बिताए दैनिक जीवन का वर्णन है। उसकी नियमित दिनचर्या, तयशुदा काम। सबसे बड़ी होने के नाते, वह छोटों का मार्गदर्शन करती और उनकी देखभाल करती थी। सादा भोजन, सोने से पहले माता-पिता द्वारा सुनाई जाने वाली कहानियाँ, और खाली समय में सुनी जाने वाली शास्त्रीय संगीत। उसका जीवन एक पवित्र और निर्मल जीवन था।
छोटे-छोटे लोग उसके सपनों में आते थे। वे जब चाहें लोगों के सपनों में प्रवेश कर सकते थे। उन्होंने उसे आमंत्रित किया, "जल्द ही हवा का कोकून फूटेगा, क्या तुम भी उसे देखने नहीं आओगी?" उन्होंने आगे कहा, "एक मोमबत्ती लेकर शाम ढलते ही झोपड़ी में आना, ताकि कोई तुम्हें देख न सके।"
छोटी बच्ची अपनी जिज्ञासा पर काबू नहीं रख पाई। वह कमरे से बाहर निकली, पहले से तैयार रखी मोमबत्ती उठाई और चुपचाप शेड में चली गई। वहाँ उसे कोई नहीं मिला। केवल हवा का कोकून ज़मीन पर चुपचाप पड़ा था। पिछली बार जब उसने उसे देखा था, तब की तुलना में वह बहुत बड़ा हो गया था। उसकी लंबाई लगभग एक मीटर तीस-चालीस सेंटीमीटर थी। और उससे हल्की रोशनी निकल रही थी। उसकी आकृति एक सुंदर धनुषाकार रेखा बना रही थी, जो बीच में पतली होती जा रही थी। जब वह छोटा था, तब ऐसा नहीं दिखता था। यह स्पष्ट था कि नन्हे लोगों ने उस पर कड़ी मेहनत की थी। कोकून में दरारें पड़नी शुरू हो गई थीं। उस पर एक सुंदर निशान बना हुआ था। छोटी बच्ची नीचे बैठ गई और अंदर झाँका।
उसी क्षण, उसे पता चला कि कोकून के अंदर वह स्वयं थी। उसने अपने ही नग्न शरीर को देखा। उसकी हमशक्ल पीठ के बल लेटी हुई थी, आँखें बंद थीं। वह अचेत लग रही थी। वह साँस भी नहीं ले रही थी। वह किसी गुड़िया जैसी दिख रही थी।
"यह आपकी बेटी है," कर्कश आवाज ने कहा और एक बार खांसा।
छोटी बच्ची ने पीछे मुड़कर देखा तो उसे अपने पीछे पंखे में बैठे सात नन्हे- मुन्ने लोग दिखाई दिए।
“फिलिया,” उसने अनायास ही दोहराया।
"और तुम्हें माता कहा जाता है," धीमी आवाज़ में कहा गया।
“माता और पुत्री,” उसने दोहराया।
“फिलिया माता का प्रतिनिधित्व करती है,” पतली आवाज ने समझाया।
"मैं दो हिस्सों में बंट गई?" छोटी बच्ची ने पूछा।
"नहीं," गायक ने उत्तर दिया। "तुम दो भागों में नहीं बंटीं। तुम वही रहीं, पूरी तरह से एक ही। चिंता मत करो। एक बेटी तो अपनी माँ के हृदय की परछाई मात्र होती है, जिसने आकार ले लिया है।"
जब वह जागेगा।
"जल्द ही। जब समय आएगा," उस भारी स्वर वाले गायक ने कहा।
"और मेरी आत्मा की परछाई क्या करती है?" छोटी बच्ची ने पूछा।
"वह एक संग्राहक के रूप में काम करता है," धीमी आवाज ने धीरे से कहा।
“बोधक,” छोटी लड़की ने दोहराया।
"कोई ऐसा व्यक्ति जो समझ सके," कर्कश आवाज ने समझाया।
"और जो कुछ यह समझता है, उसे प्राप्तकर्ता तक पहुंचा देता है," पतली आवाज ने आगे कहा।

"इसका मतलब है कि संतान ही हमारा मार्ग बन जाती है," गायक ने कहा।
"बकरी के बजाय?" छोटी लड़की ने पूछा।
"मृत बकरी तो बस एक अस्थायी पड़ाव थी," धीमी आवाज़ ने समझाया। "हमें यहाँ से अपने निवास स्थान को जोड़ने के लिए एक जीवित वंश की आवश्यकता है। एक प्राप्तकर्ता के रूप में।"
और वह क्या करता है?
"वह अपनी बेटी के बगल में बैठा है," पतली आवाज ने जवाब दिया।
"वह कब जागता है?" छोटी बच्ची ने पूछा।
"दो या तीन दिनों में," गायक ने कहा।
"दो में से एक," आवाज ने धीमी आवाज़ में कहा।
"उसका अच्छे से ख्याल रखना," उस भारी स्वर वाले गायक ने उसे सलाह दी। "क्योंकि वह तुम्हारी बेटी है।"
"मां की देखभाल के बिना संतान अधूरी है। वह लंबे समय तक जीवित नहीं रह सकती," पतली आवाज ने समझाया।
"यदि किसी माँ के पास संतान न हो, तो वह अपने दिल की परछाई भी खो देती है," गायक ने कहा।
"और एक माँ अपने दिल की परछाई के बिना क्या कर सकती है?" छोटी बच्ची ने पूछा।
छोटे कद के लोगों ने एक-दूसरे को देखा। किसी ने जवाब नहीं दिया।
"जब बेटी जागती है, तो आकाश में दो चंद्रमा दिखाई देते हैं," कर्कश आवाज ने कहा।
"दोनों चंद्रमा हृदय की छाया डालते हैं," उस भारी स्वर वाले गायक ने कहा।
"दो महीने में मेरी उम्र पूरी हो जाएगी," छोटी बच्ची ने स्वतः ही दोहराया।
"यही संकेत है। आकाश को ध्यान से देखो," धीमी आवाज़ में फुसफुसाया गया। "ध्यान से देखो। और महीनों को गिनो।"
“हो, हो,” संगतकार ने कहा।
"हो, हो," बाकी छह ने एक साथ कहा।
*

छोटी बच्ची ने भाग जाने का फैसला किया।
कुछ गड़बड़ थी, कुछ विकृत था। यह अस्वाभाविक था। और छोटी बच्ची यह जानती थी।
उसे नहीं पता था कि वे बौने लोग क्या चाहते थे, लेकिन हवा में लिपटे कोकून में अपनी ही छवि को देखकर वह कांप उठी। वह अपनी परछाई के साथ नहीं रह सकती थी। उसे वहां से निकलना ही था, जितनी जल्दी हो सके। अपनी बेटी के जागने से पहले, आकाश में दो चांद दिखाई देने से पहले।
समूह में पैसे रखना मना था। लेकिन उसके पिता ने पहले ही उसे दस हज़ार येन का नोट और कुछ खुले पैसे दे दिए थे। उन्होंने उसे सलाह दी, "इन्हें छुपा दो ताकि कोई इन्हें ढूंढ न सके," और उसे एक कागज़ का टुकड़ा दिया जिस पर पता, नाम और फ़ोन नंबर लिखा था। "अगर तुम्हें यहाँ से भागना पड़े, तो इस पैसे से ट्रेन का टिकट खरीदकर इस पते पर चले जाना।"
उसके पिता को शायद आभास हो गया था कि भविष्य में समूह के साथ कुछ बुरा हो सकता है। और वह छोटी बच्ची बिना सोचे-समझे तेज़ी से आगे बढ़ी। उसे अपने माता-पिता को अलविदा कहने का भी समय नहीं मिला।

उसने ज़मीन में गड़े एक जार से दस हज़ार येन का नोट, कुछ खुले पैसे और एक कागज़ का टुकड़ा निकाला। स्कूल में, क्लास के दौरान, उसने डॉक्टर के पास जाने की अनुमति माँगी और कहा कि उसकी तबीयत ठीक नहीं है। वह क्लासरूम से निकलकर स्कूल से चली गई। वह बस में चढ़ी, स्टेशन गई और ताकाओ के लिए टिकट खरीदा। उसने खुले पैसे ले लिए। यह उसके जीवन में पहली बार था जब उसने टिकट खरीदा, खुले पैसे लिए और ट्रेन में सफ़र किया, लेकिन उसने अपने पिता से यह सब करना सीख लिया था। उसे ठीक-ठीक पता था कि उसे क्या करना है।
उसने पर्ची पर लिखे अनुसार चूओ लाइन की ट्रेन पकड़ी, ताकाओ स्टेशन पर उतरा और एक पेफोन से नंबर डायल किया। फोन करने वाला एक चित्रकार था, जो उसके पिता का पुराना दोस्त था। वह उससे दस साल बड़ा था और अपनी बेटी के साथ माउंट ताकाओ के पास रहता था। उसकी पत्नी का बहुत पहले निधन हो चुका था और उसकी बेटी कुरुमी उससे एक साल छोटी थी। फोन आते ही वह स्टेशन पर आया और भागे हुए व्यक्ति का खुले दिल से स्वागत किया।
चित्रकार के घर पहुँचने के एक दिन बाद, छोटी बच्ची ने खिड़की से बाहर देखा तो आकाश में दो चाँद दिखाई दिए। सामान्य चाँद के बगल में एक छोटा और झुर्रीदार चाँद दिखाई दिया, जो किसी फली जैसा लग रहा था। बच्ची को एहसास हुआ कि वह जाग गई है। और उन चाँदों की छाया उसके दिल पर पड़ी। उसका दिल काँप उठा। दुनिया बदल गई थी। और कुछ घटित होने वाला था।
*

छोटी बच्ची को अपने माता-पिता से कोई खबर नहीं मिल रही थी। शायद उस समूह के लोगों ने ध्यान ही नहीं दिया कि वह लापता हो गई है, क्योंकि उसकी हमशक्ल को पीछे छोड़ दिया गया था। उसने जो देखा था, वह बिल्कुल उसकी हमशक्ल जैसी दिखती थी, इसीलिए दुनिया के लिए उनमें फर्क करना नामुमकिन था। लेकिन उसके माता-पिता को यह ज़रूर पता था कि वह खुद नहीं, बल्कि उसकी हमशक्ल है। वह समूह से भाग गई थी और उन्होंने उसे उसकी जगह छोड़ दिया था। और उसके पास जाने के लिए सिर्फ एक ही जगह थी। लेकिन उसके माता-पिता ने उससे कभी संपर्क नहीं किया। शायद यह एक मौन संदेश था जो उसे लापता रहने के लिए उकसा रहा था।
वह छोटी बच्ची स्कूल जा भी रही थी और नहीं भी। बाहरी दुनिया उसके लिए बिल्कुल नई थी और उस समूह से बहुत अलग थी जिसमें वह पली-बढ़ी थी। उसके नियम अलग थे, उद्देश्य अलग थे और शब्द भी अलग थे। परिणामस्वरूप, उसे दोस्त बनाने या स्कूल के माहौल में ढलने में कोई कठिनाई नहीं हुई।
लेकिन मिडिल स्कूल में उसकी एक लड़के से दोस्ती हो गई। उसका नाम तोरू था। तोरू छोटा और पतला था, और उसका चेहरा बंदर की तरह गहरी झुर्रियों से भरा हुआ था। ऐसा लगता है कि बचपन में वह गंभीर रूप से बीमार था और इसलिए ज़्यादा शारीरिक मेहनत नहीं कर पाता था। उसकी रीढ़ की हड्डी टेढ़ी थी। छुट्टी के समय वह एकांत में बैठकर पढ़ता था। उसके भी कोई दोस्त नहीं थे। वह बहुत छोटा और बदसूरत था। दोपहर के भोजन के समय, वह छोटी लड़की उसके बगल में बैठ गई और वे बातें करने लगे। उसने उससे पूछा कि वह क्या पढ़ रहा है। लड़के ने भी उसे किताब से पढ़कर सुनाया। उस छोटी लड़की को उसकी आवाज़ अच्छी लगी। आवाज़ थोड़ी कर्कश और धीमी थी, लेकिन वह उसे साफ़ सुन सकती थी। उस आवाज़ में सुनाई गई कहानियाँ उसे मंत्रमुग्ध कर देती थीं। तोरू बहुत सुंदर पढ़ता था, मानो कविता सुना रहा

हो। आखिरकार, वह अपने सारे दोपहर के भोजन के समय उसके साथ बिताने लगी और ध्यान से उसकी बातें सुनती रही।
लेकिन जल्द ही उसने तोरू को खो दिया। छोटे लोगों ने उसे उससे चुरा लिया।
एक रात, तोरू के कमरे में हवा का एक कोकून प्रकट हुआ। छोटे लोग उसके सोते समय उस पर काम करते थे, और हर रात वे छोटी बच्ची को उसके सपनों में दिखाते थे कि क्या हो रहा है। लेकिन वह उन्हें रोक नहीं सकती थी। कोकून सही आकार का हो गया और फट गया, बिल्कुल उसके कोकून की तरह। लेकिन उसके अंदर तीन विशाल काले सांप थे। वे एक-दूसरे से कसकर लिपटे हुए थे, और कोई भी - यहाँ तक कि वे खुद भी - उन्हें खोल नहीं सकते थे। वे एक अनंत, चमकदार उलझन की तरह दिख रहे थे। सांप बहुत क्रोधित थे क्योंकि वे खुद को मुक्त नहीं कर पा रहे थे। वे खुद को सुलझाने की बेताब कोशिश कर रहे थे, लेकिन संघर्ष करने से उन्हें और नुकसान हो रहा था। छोटे लोगों ने छोटी बच्ची को ये जीव दिखाए। तोरू उनके बगल में शांति से सो रही थी, उसे कुछ भी पता नहीं था। केवल वही उन्हें देख सकती थी।
कुछ दिनों बाद, लड़का अचानक बीमार पड़ गया और उसे दूर के एक मानसिक अस्पताल में भेज दिया गया। उसकी बीमारी का खुलासा नहीं किया गया। खैर, तोरू फिर कभी स्कूल नहीं लौटा। वह पूरी तरह खो गया था।
छोटी बच्ची समझ गई कि यह बौने लोगों का संदेश है। ऐसा लगता है कि वे पदार्थ को सीधे छू नहीं सकते थे, लेकिन वे उसके आसपास के लोगों को नुकसान पहुंचा सकते थे, उन्हें नष्ट कर सकते थे। लेकिन किसी को भी नहीं।
सबूत के तौर पर, वे चित्रकार, उसके संरक्षक और उसकी बेटी कुरुमी का कुछ नहीं बिगाड़ सके। उन्होंने सबसे कमज़ोर हिस्से को अपना शिकार बनाया। उन्होंने लड़के के अवचेतन मन से तीनों साँपों को बाहर निकाला और उन्हें उनकी नींद से जगा दिया। लड़के को नष्ट करके, वे उसे चेतावनी दे रहे थे, ताकि वह अपनी बेटी के पास लौट आए। दरअसल, यह सब तुम्हारी गलती है, उन्होंने उससे कहा।
वह छोटी बच्ची फिर अकेली पड़ गई थी। वह स्कूल भी नहीं जा रही थी। वह जिससे भी दोस्ती करती, उसे खतरे में डाल देती। इसका मतलब था दो महीने से भी कम समय तक जीवित रहना। और वह यह बात जानती थी।
*

आखिरकार, छोटी बच्ची ने अपना खुद का वायु कोकून बुनना शुरू कर दिया। वह कर सकती थी। छोटे लोगों ने उसे बताया था कि वे अपने निवास स्थान से इसी मार्ग से होकर आए थे। अगर ऐसा था, तो वह भी विपरीत दिशा में मार्ग पार करके वहाँ जा सकती थी। इससे कई रहस्य सुलझ जाते, जैसे कि वह वहाँ क्यों थी, या माता और पुत्री का क्या अर्थ था। शायद वह तोरू को भी बचा सकती थी। छोटी बच्ची ने अपना मार्ग बनाना शुरू किया। उसने बस हवा से धागे खींचे और उन्हें आपस में बुनना शुरू कर दिया। इसमें काफी समय लगा, लेकिन यह संभव था।
फिर भी कभी-कभी वह उलझन में पड़ जाती थी। उसे समझ नहीं आता था कि किस पर विश्वास करे। क्या वह सचमुच अपनी माँ थी, या किसी समय उसकी जगह किसी संतान ने ले ली थी? जितना ज़्यादा वह इसके बारे में सोचती, उतना ही उसका विश्वास कम होता जाता। वह खुद को कैसे साबित कर सकती थी कि वह खुद है या नहीं?
*

में परिवर्तित हो गईं और उन्हें पवित्र कन्याओं की भूमिका दी गई। और त्सुबासा उनमें से एक थी। यदि आप सोचते हैं कि नेता के साथ यौन संबंध असली लड़कियों के नहीं, बल्कि उनकी प्रतिरूपों के थे, तो नेता के इस कथन, "कई मायनों में एक साथ", का एक विशेष अर्थ निकलता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि त्सुबासा की आँखें धंसी हुई क्यों थीं और वह मुश्किल से ही बोलती थी। त्सुबासा-संता संप्रदाय से कैसे और क्यों भाग निकली, यह अज्ञात है, लेकिन संभवतः उसे एक वायु कोकून में रखा गया और त्सुबासा-माता के पास वापस ले जाया गया। कुत्ते की रक्तरंजित हत्या छोटे लोगों की ओर से एक चेतावनी थी। जैसा कि तोरू के मामले में हुआ था।
वे सभी पत्नियाँ नेता की संतान को गर्भ धारण करने की कोशिश कर रही थीं, लेकिन शारीरिक रूप से स्वस्थ न होने के कारण उन्हें मासिक धर्म भी नहीं होता था। फिर भी, वे गर्भधारण करने का प्रयास करती रहीं। क्यों?
ओमामे ने अपना सिर हिलाया। अभी भी बहुत सी चीजें थीं जो उसे समझ में नहीं आई थीं।
*

ओमामे तुरंत ही उस महिला को ये बातें बताना चाहती थी। कि शायद जिन लड़कियों का नेता ने बलात्कार किया था, वे सचमुच सिर्फ़ परछाइयाँ थीं। कि शायद उस आदमी को मारने की कोई ज़रूरत ही नहीं थी।
लेकिन लेडी को यह स्पष्टीकरण आसानी से समझ नहीं आया। आओमामे समझ गई। न केवल वह, बल्कि कोई भी समझदार व्यक्ति यह बात तुरंत स्वीकार नहीं करेगा कि छोटे लोग, माता, संतान, हवा में उड़ने वाले कोकून वास्तव में मौजूद हैं। कोई भी समझदार व्यक्ति इन सभी चीजों को केवल उपन्यास में दिखाई देने वाली काल्पनिक रचनाएँ ही मानेगा, बस इतना ही। ठीक वैसे ही जैसे कोई भी एलिस इन वंडरलैंड में कपों की रानी या घड़ी से चलने वाले खरगोश के अस्तित्व पर विश्वास नहीं करेगा। लेकिन आओमामे सचमुच आकाश में दो चंद्रमा देख सकती थी और उनकी रोशनी में अपना जीवन जी सकती थी। उसे उनका विकृत गुरुत्वाकर्षण बल भी महसूस होने लगा था। और उसने एक अंधेरे होटल के कमरे में अपने नंगे हाथों से उस आदमी को मार डाला था जिसे लीडर कहा जाता था। उसे आज भी वह तीव्र अनुभूति याद थी जब उसने नुकीली सुई से उसके सिर के पिछले हिस्से में चुभोया था। वह अनुभूति आज भी उसे कंपकंपा देती है। और उससे ठीक पहले उसने लीडर को उस भारी घड़ी को लगभग दो इंच ऊपर उठाते हुए देखा था। यह कोई भ्रम या चाल नहीं थी। यह एक कड़वी, सच्ची वास्तविकता थी जिसे वह केवल उसी रूप में स्वीकार कर सकती थी।
इसी तरह छोटे लोग व्यावहारिक रूप से पायनियर्स नामक समुदाय पर शासन करने लगे थे। आओमामे नहीं जानती थी कि संगठन पर कब्ज़ा करके वे क्या चाहते थे। शायद यह कुछ ऐसा था जो अच्छाई और बुराई की अवधारणा से परे था। लेकिन 'द एयर क्राइसेंथेमम' की नायिका ने सहज रूप से महसूस किया था कि कुछ गड़बड़ है और उसने यथासंभव इसका विरोध करने की कोशिश की थी। उसने अपने परिवार को त्याग दिया, अपने समुदाय से भाग गई, और नेता के शब्दों में कहें तो, दुनिया का संतुलन बनाए रखने के लिए उसने "छोटे लोगों के खिलाफ एक आंदोलन" खड़ा कर दिया था। वह उस रास्ते को उलटने की कोशिश कर रही थी जिससे छोटे लोग आए थे और उस जगह में प्रवेश करना चाहती थी जहाँ से वे आए थे। कहानी उसका ज़रिया थी। और टेंगो उसका

अध्याय 20 वालरस और पागल हैटर

इसमें कोई शक नहीं कि आकाश में दो चंद्रमा थे।
*

एक तो हमेशा की तरह सामान्य था, और दूसरा, हरा-भरा और बहुत छोटा चाँद। वह विकृत था और उसकी रोशनी बहुत कम थी। मानो किसी दूर के रिश्तेदार का बेचारा और बदसूरत बच्चा हो, जिसका कोई खुशी से स्वागत नहीं करता और जिसके साथ आप सिर के बल जागते हैं, और मना नहीं कर सकते। लेकिन वह वहाँ था और आप उससे बच नहीं सकते थे। यह कोई भ्रम या मतिभ्रम नहीं था। आकाश में एक तारा प्रकट हुआ था, जिसका आकार और रूपरेखा स्पष्ट थी। यह न तो हवाई जहाज था, न गुब्बारा, न कृत्रिम उपग्रह। यहाँ तक कि किसी ने इसे क्रेप पेपर से मज़ाक में भी नहीं बनाया था। निःसंदेह, यह एक चट्टान थी। यह आकाश में अपने हिस्से पर स्थिर, बिना हिले- डुले, ऐसे था जैसे बहुत सोच-विचार के बाद लगाया गया कोई विराम चिह्न हो या जैसे भाग्य ने आपके शरीर पर कोई मस्सा बो दिया हो।
टेंगो ने उसे लंबे समय तक चुनौती भरे अंदाज़ में देखा। उसने अपनी नज़रें उससे नहीं हटाईं। उसने पलकें भी नहीं झपकाईं। लेकिन चाहे वह कितना भी देखता रहा, वह अपनी जगह से हिली नहीं। वह आकाश में स्थिर रही, ठंडी और मौन।
टेंगो ने अपनी मुट्ठी खोली और लगभग अनजाने में ही अपना सिर हिलाया। उसने सोचा, यह तो वायु के कोकून जैसा है। वह दुनिया जहाँ आकाश में दो चंद्रमा होते हैं। जब बेटी का जन्म होता है, तो दो चंद्रमा प्रकट होते हैं।
"यही संकेत है। आकाश को ध्यान से देखो," धीमी आवाज फुसफुसाई।
ये शब्द उन्होंने अकेले ही लिखे थे। कोमात्सु की सलाह पर उन्होंने दूसरे चंद्रमा का विस्तृत वर्णन किया था। यही वह हिस्सा था जिस पर उन्होंने सबसे अधिक काम किया था। और नए चंद्रमा के स्वरूप की रचना भी उन्होंने ही की थी। कोमात्सु ने उससे कहा था:
"टेंगो, इस बारे में इस तरह सोचो: पाठकों ने आकाश में चंद्रमा को अनगिनत बार देखा है। है ना? लेकिन किसी ने दो चंद्रमा नहीं देखे हैं। जब उपन्यास में कोई ऐसी चीज दिखाई देती है जिसे किसी ने कभी नहीं देखा हो, तो उसका विस्तृत और सटीक वर्णन आवश्यक होता है।"
यह एक बिल्कुल सही राय है।
आकाश की ओर देखते हुए, टेंगो ने फिर से अपना सिर हिलाया। नया तारा बिल्कुल वैसा ही था जैसा उसने वर्णन किया था, आकार और आकृति दोनों में। लाक्षणिक रूप से भी वह हूबहू एक जैसा था।
ऐसा होना असंभव है, उसने सोचा। यह रूपक किस प्रकार की वास्तविकता का अनुकरण करता है? उसने इसे ज़ोर से बोलने की कोशिश की:
"यह असंभव है!"
वह आवाज़ उसकी बात नहीं सुन रही थी। उसका गला लंबी दौड़ के बाद की तरह सूख गया था। चाहे वह किसी भी तरह से स्थिति को देखे, ऐसा होना असंभव था। वह एक

"यह पास ही हो सकता है," फुकेरी ने कहा था। "आप पैदल चलकर वहां पहुंच सकते हैं।"
और अगर यह इतना करीब है, तो क्या उसे दोनों चंद्रमा भी दिखाई देते हैं?
टेंगो ने मन ही मन कहा, "ज़रूर," हालाँकि उसके पास कोई सबूत नहीं था। फिर भी उसे अचानक यह पक्का यकीन हो गया था कि वह सही है। इसमें कोई शक नहीं कि आओमामे ने भी वही देखा होगा जो वह अब देख रहा था। टेंगो ने अपना बायाँ हाथ कसकर पकड़ा और उसे स्लाइड पर कई बार पटका, जिससे उसके हाथ के पिछले हिस्से में दर्द होने लगा।
इसीलिए तो हमें एक-दूसरे से मिलना होगा, उसने सोचा। कहीं आस-पास, पैदल दूरी के भीतर। आओमामे का शायद कोई पीछा कर रहा होगा और वह घायल बिल्ली की तरह छिपी होगी। उसे ढूंढने के लिए मेरे पास ज्यादा समय नहीं है।
लेकिन टेंगो को नहीं पता था कि उसे कहाँ ढूँढना है।
“हो, हो,” संगतकार ने कहा।
"हो, हो," बाकी छह ने एक साथ कहा।

अध्याय 21 मुझे क्या करना चाहिए?

उस शाम, आओमामे ग्रे रंग के ट्रैकसूट और चप्पलों में सजी-धजी बालकनी में आकाश देखने निकली। उसके हाथ में दूध से भरा कोको का मग था। उसे काफी समय से कोको पीने की इच्छा नहीं हुई थी। उसे अलमारी में वैन हाउटेन कोको का एक डिब्बा मिला था, और उसे देखते ही उसे अचानक भूख लग गई। दक्षिण-पश्चिम के साफ आसमान में दो चाँद साफ दिखाई दे रहे थे। एक बड़ा और एक छोटा। आह भरने के बजाय, आओमामे ने अपने गले से एक गुर्राहट निकाली। फिलिया अपने वायु कोकून से बाहर आ चुकी थी, और आकाश में दो चाँद दिखाई दिए थे। और 1984, 1Q84 बन गया था। पुरानी दुनिया खत्म हो गई थी और कभी वापस नहीं आएगी।
बालकनी में लॉन की कुर्सी पर बैठी, गर्म कोको के मग से धीरे-धीरे घूंट लेते हुए और दो चांदों को देखते हुए, आओमामे पुरानी दुनिया को याद करने की कोशिश कर रही थी। लेकिन उस पल, उसके दिमाग में सिर्फ वही रबर का पेड़ आया जिसे उसने अपार्टमेंट में छोड़ा था। अब वह कहाँ होगा? उसने सोचा। क्या तमारू उसकी देखभाल कर रहा होगा, जैसा उसने वादा किया था? कोई बात नहीं। मुझे चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। तमारू उस तरह का आदमी है जो अपना वादा निभाता है। मेरा मतलब है, वह तुम्हें पलक झपकाए बिना मार सकता है, लेकिन फिर भी वह तुम्हारे फूलदान का ख्याल रखेगा।
लेकिन मुझे रबर के पेड़ की इतनी चिंता क्यों है?
अपार्टमेंट से निकलने तक आओमामे ने इस पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया था। यह बिल्कुल भी खास नहीं था। इसका रंग भद्दा था और यह देखने में भी स्वस्थ नहीं लग रहा था। इसकी कीमत अठारह सौ येन थी, लेकिन जब वह इसे कैश काउंटर पर ले गई, तो उन्होंने बिना किसी कारण बताए इसे पंद्रह सौ येन कर दिया। अगर वह थोड़ी मोलभाव करती, तो उसे यह और भी सस्ता मिल सकता था। शायद यह काफी समय से बिना बिका पड़ा था। घर लौटते समय, जब वह बर्तन को गोद में लिए चल रही थी, तो उसे बार-बार उस क्षणिक आवेग में आकर इसे खरीदने का पछतावा हो रहा था। क्योंकि, यह न केवल बिल्कुल साधारण था, बल्कि बड़ा और भारी भी था, और उससे भी बड़ी बात यह थी कि यह जीवित था।
ओमामे के लिए, यह पहली बार था जब उसने किसी जीवित प्राणी को अपना बनाया था। चाहे वह पालतू जानवर हो या पौधा, उसने कभी भी सड़क से कुछ खरीदा, प्राप्त किया या इकट्ठा नहीं किया था। यह उसका पहला अनुभव था किसी जीवित प्राणी के साथ रहने का।
जब आओमामे ने लेडी के लिविंग रूम में रात्रि बाज़ार से त्सुबासा के लिए खरीदी गई लाल मछलियाँ देखीं, तो उसका भी उन्हें पाने का मन हुआ। वह उन्हें इतनी शिद्दत से चाहती थी कि उसकी नज़रें उन पर से हट ही नहीं रही थीं। क्यों? शायद उसे त्सुबासा से ईर्ष्या हो रही थी। रात्रि बाज़ार में किसी ने उसके लिए कुछ नहीं खरीदा था। वह कभी गई भी नहीं थी। उसके माता-पिता, जो चर्च ऑफ द विटनेसेस के कट्टर अनुयायी थे और बाइबल का अक्षरशः पालन करते थे, सभी सांसारिक त्योहारों से घृणा करते थे और उनसे दूर रहते थे।

इसीलिए आओमामे ने जियुगाओका स्टेशन के पास वाली दुकान से कुछ मछलियाँ खरीदने का फैसला किया था। अगर कोई उसे मछलीघर नहीं दिलाएगा, तो वह खुद जाकर ले आएगी। है ना? उसने सोचा। मैं एक वयस्क हूँ, तीस साल की हो चुकी हूँ और अपने घर में अकेली रहती हूँ। मेरे बैंक में काफी पैसा है। मुझे मछलियाँ खरीदने से कोई नहीं रोक सकता।
लेकिन जब वह दुकान पर पहुँची और मछलीघर में इधर-उधर घूमती मछलियों को देखा, जो अपने पंख इतने कोमल फड़फड़ा रही थीं मानो कोई जाली हो, तो वह उन्हें खरीद नहीं सकी। वे छोटे जीव थे, जिनमें विवेक, बुद्धि, आत्म-जागरूकता जैसी कोई चीज नहीं थी, लेकिन फिर भी वे जीवित प्राणी थे। उसे लगा कि पैसे से किसी का जीवन खरीदना और उसे अपना बनाना अस्वाभाविक है। वे उसे अपने बचपन की याद दिला रहे थे। एक असहाय जीव, एक छोटे से कांच के कटोरे में बंद, कहीं भी जाने में असमर्थ। छोटी मछलियों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। और शायद उन्हें फर्क पड़ता भी नहीं था। शायद वे कहीं जाना भी नहीं चाहती थीं। लेकिन इससे आओमामे को शांति नहीं मिली।
जब उसने मालकिन के बैठक कक्ष में उन मछलियों को देखा था, तो उसने कभी ऐसी कल्पना भी नहीं की थी। छोटी मछलियाँ कांच के कटोरे में तेज़ी से और खूबसूरती से तैर रही थीं। गर्मी की धूप पानी में चमक रही थी। इन जीवों के साथ जीवन बिताना उसे बहुत अच्छा लगा था। इससे उसे अतिरिक्त गर्माहट मिलती। लेकिन दुकान में उन मछलियों को देखते ही आओमामे को घुटन महसूस हुई। कुछ देर तक एक्वेरियम को देखने के बाद उसने अपने होंठ सिकोड़ लिए। मैं नहीं कर सकती, उसने खुद से कहा। मैं इन छोटी मछलियों को नहीं पाल सकती।
उसी क्षण, उसकी नज़र दुकान के एक कोने में छिपे रबर के पेड़ पर पड़ी, जो सबसे कम दिखाई देने वाली जगह पर था। वह पेड़ किसी अनाथ, परित्यक्त बच्चे की तरह झुका हुआ था। या कम से कम आओमामे ने उसे ऐसा ही देखा था। उसमें कोई चमक या रंग नहीं था और वह थोड़ा बेढंगा था, लेकिन उसने बिना सोचे समझे उसे खरीद लिया था। इसलिए नहीं कि उसे वह पसंद था, बल्कि इसलिए कि उसे खरीदना ही था। वास्तव में, वह उसे घर ले आई, एक कोने में रख दिया और कभी-कभार पानी देती रही, लेकिन इसके अलावा उसने उसे देखा तक नहीं।
लेकिन अब जब उसने उसे छोड़ दिया था, तो आओमामे को उसे फिर कभी न देख पाने के ख्याल से बहुत चिंता होने लगी। उसने हमेशा की तरह गहरी भौंहें चढ़ा लीं, जब वह उलझन में होती और चीखना चाहती थी। उसके चेहरे की मांसपेशियां हद से ज़्यादा सिकुड़ गईं, और ऐसा लगा जैसे उसका चेहरा किसी और का हो। जब उसकी मांसपेशियों का सिकुड़ना और भी मुश्किल हो गया, तो उसे अपने चेहरे को सामान्य स्थिति में लाने के लिए हर संभव कोशिश करनी पड़ी।
मुझे रबर के पेड़ की इतनी चिंता क्यों है?
*

खैर, तामारू को उसका बहुत ख्याल रखना होगा, उसने मन ही मन सोचा। उसे मुझसे भी ज़्यादा देखभाल और ज़िम्मेदारी से उसकी देखभाल करनी होगी। उसे सभी जीवित प्राणियों की रक्षा करने और उनसे प्यार करने की आदत है। मेरी नहीं। वह कुत्तों को अपने बच्चों की तरह मानता है। जब भी उसे समय मिलता है, वह लेडी के बगीचे में घूमता है और सभी पौधों का ध्यान से निरीक्षण करता है। जब वह अनाथालय में था, उसने उस बेचारे छोटे लड़के की रक्षा के लिए हर संभव प्रयास

किया। मैं ऐसा नहीं कर सकती। मैं किसी और की जान की ज़िम्मेदारी नहीं ले सकती। मैं तो अपने जीवन के बोझ, अपने अकेलेपन को भी मुश्किल से सहन कर पाती हूँ।
"अकेलापन" शब्द सुनते ही आओमामे को अयुमी की याद आ गई।
आयुमी को एक होटल के कमरे में हथकड़ी पहनाई गई, उसके साथ बेरहमी से बलात्कार किया गया और फिर एक व्यक्ति ने अपने लबादे की रस्सी से उसका गला घोंट दिया। जहां तक मुझे पता है, हत्यारा अभी तक पकड़ा नहीं गया है। अयुमी के पास परिवार, सहकर्मी थे, फिर भी वह अकेलापन महसूस करती थी। इतना अकेलापन कि उसे मरना पड़ा। और मैं उसे वह नहीं दे सका जो वह चाहती थी। वह मुझसे कुछ तो चाहती ही थी। लेकिन मेरा अपना एक राज़ था जिसे मुझे छुपाना था, मेरा अकेलापन। एक राज़ और एक अकेलापन जिसे मैं उससे कभी साझा नहीं कर सका। वह मेरे करीब क्यों आना चाहती थी? इस दुनिया में कितने सारे लोग हैं!
ओमामे ने अपनी आंखें बंद कर लीं और खाली अपार्टमेंट में पड़ा रबर का पेड़ उसके मन में आ गया।
मुझे रबर के पेड़ की इतनी चिंता क्यों है?
*

आओमामे कुछ देर तक रोती रही। उसने सिर हिलाते हुए, खुद को शांत करने की कोशिश करते हुए सोचा, "आखिर मुझे क्या हो गया है कि मैं आजकल इतना रो रही हूँ? उस टूटे हुए गमले के बारे में सोचकर मुझे क्यों रोना चाहिए?" लेकिन वह अपने आँसुओं को रोक नहीं पाई। वे लगातार बहते रहे और उसके कंधे हल्के से काँपने लगे। उसने विलाप करते हुए कहा, "मेरे पास कुछ नहीं बचा। एक कड़वा रबर का पेड़ भी नहीं। जो चीजें मेरे लिए मायने रखती थीं, वे एक-एक करके गायब हो गईं। वे सब मुझसे दूर चली गईं। सिवाय तेंगो की प्यारी याद के।"
रोना बंद करो! उसने खुद को समझाया। देखो, अब मैं टेंगो के अंदर हूँ। फैंटास्टिक वॉयज के वैज्ञानिकों की तरह – यही उसका नाम था। शीर्षक याद आते ही आओमामे थोड़ी संभली और शांत हो गई। आँसुओं से कुछ हल नहीं होगा। उसे फिर से वही शांत और स्थिर आओमामे बनना होगा।
लेकिन भला ऐसा कौन चाहेगा?
मैं यह चाहता हूँ।
उसने फिर चारों ओर देखा। आकाश में अभी भी दो चंद्रमा दिखाई दे रहे थे।
"यही संकेत है। आकाश को ध्यान से देखो," धीमी आवाज फुसफुसाई।
“हो, हो,” संगतकार ने कहा।
*

उसी क्षण, आओमामे ने देखा कि वह अकेली नहीं थी जो आकाश की ओर देख रही थी। सड़क के उस पार पार्क में, एक युवक स्लाइड पर बैठा था और उसी दिशा में देख रहा था जहाँ वह देख रही थी। आओमामे सहज रूप से समझ गई कि वह दो चंद्रमाओं को देख रहा था। इसमें कोई संदेह नहीं था। वह भी उन्हीं चीजों को देख रहा था जिन्हें वह देख रही थी। उसने उन्हें देखा था। नेता ने उसे बताया था कि जिस दुनिया में वे अभी हैं, वहाँ दो चंद्रमा हैं, लेकिन सभी लोग उन्हें नहीं देख सकते।
लेकिन इसमें कोई शक नहीं था कि लंबा-चौड़ा युवक आकाश में दोनों चंद्रमाओं को देख सकता था। आओमामे किसी भी बात पर शर्त लगा सकता था। वह वहाँ बैठा, बड़े पीले चंद्रमा को देख रहा था, जो छोटे, बदसूरत चंद्रमा के बगल में था, जो देखने

उसे सबसे ज़्यादा आश्चर्य इस बात पर हुआ कि वह बिल्कुल वैसा ही दिखता था जैसा दस साल की उम्र में दिखता था। मानो दस साल का बच्चा तीस साल का हो गया हो, ठीक वैसा ही जैसा वह था। ऐसा नहीं था कि वह बच्चे जैसा दिखता था। हाँ, उसका शरीर काफ़ी बढ़ गया था, गर्दन मोटी हो गई थी और चेहरे पर वयस्कता के भाव आ गए थे। उसके भावों में गहराई आ गई थी। उसके घुटनों पर रखे हाथ बड़े और मज़बूत थे। उस हाथ से बिलकुल अलग जिसे उसने दस साल की उम्र में प्राथमिक विद्यालय में पकड़ा था। फिर भी उसके शरीर से निकलने वाली ऊर्जा वैसी ही थी जैसी तब थी। उस मज़बूत शरीर ने उसे शांति और गर्माहट का गहरा एहसास दिलाया। वह अपना गाल उसकी छाती से लगाना चाहती थी। वह बहुत चाहती थी। आओमामे ने इस बारे में सोचकर आनंद लिया। वह पार्क की स्लाइड के सबसे ऊपर खड़ा था, उसकी निगाहें ऊपर की ओर टिकी थीं, और वह उस चीज़ को हवस भरी निगाहों से देख रहा था जिसे वह भी देख सकती थी: दो चाँद। वे दोनों एक ही चीज़ देख सकते थे।
क्या करें?
*

ओमामे को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। उसने दूरबीन को अपने घुटनों पर रख लिया और अपने हाथों को मलने लगी, क्योंकि उसके नाखून उसकी त्वचा में चुभ रहे थे। उसकी मुट्ठियाँ थोड़ी काँप रही थीं।
क्या करें?
ओमामे को अपनी साँसें अटकती सुनाई दे रही थीं। वह दो हिस्सों में बँटी हुई महसूस कर रही थी। एक हिस्सा इस बात को स्वीकार करने की कोशिश कर रहा था कि तेंगो उसकी आँखों के सामने है, और दूसरा हिस्सा इस बात को नकार रहा था और इसे कहीं दबाने की कोशिश कर रहा था, उसे यह यकीन दिलाने की कोशिश कर रहा था कि यह सच नहीं है। दो विपरीत दिशाओं में जा रही ये दोनों शक्तियाँ उसके अंदर भयंकर युद्ध लड़ रही थीं। हर एक उसे अपनी ओर खींच रही थी, उसे अपनी मर्ज़ी से धकेलने की कोशिश कर रही थी। ओमामे को ऐसा लग रहा था जैसे उसका मांस उसके शरीर से अलग हो रहा हो, उसके जोड़ खुल रहे हों, उसकी हड्डियाँ टूट रही हों।
वह पार्क में दौड़कर जाना चाहता था, स्लाइड पर चढ़ना चाहता था और उससे बातें करना चाहता था। लेकिन वह क्या कहता? उसे तो अब अपना मुंह हिलाना भी नहीं आता था। लेकिन वह किसी तरह कुछ शब्द जोड़ लेती। मेरा नाम आओमामे है, और बीस साल पहले, इचिकावा के प्राथमिक विद्यालय में, मैंने तुम्हारा हाथ पकड़ा था। क्या तुम्हें मैं याद हूँ?
क्या यह वही चीज है?
यह निश्चित रूप से इससे बेहतर हो सकता था।
दूसरे साथी ने उसे बालकनी में छिपने का आदेश दिया। "अब तुम्हारे लिए कुछ करने को नहीं बचा है!" उसने उससे कहा। "अच्छा, है ना? कल रात तुमने लीडर के साथ एक सौदा किया था। तुमने टेंगो को बचाने के लिए अपनी जान दे दी। इस तरह, वह इस दुनिया में जीवित रहेगा। यही सौदा था। तुमने अनुबंध पर हस्ताक्षर कर दिए हैं। तुमने लीडर को दूसरी दुनिया में भेजने और अपनी जान देने पर सहमति जताई थी। अगर तुम टेंगो से बातें करने लगो और पुरानी कहानियाँ याद करने लगो, तो तुम क्या करोगी? और अगर वह तुम्हें बिल्कुल भी याद न करे या सिर्फ "अजीब प्रार्थनाओं वाली वह अटपटी लड़की" के रूप में याद रखे, तो तुम क्या करोगी? अगर ऐसा हुआ, तो मरने के समय तुम्हारे दिल में क्या होगा?"

इन विचारों से उसका शरीर एकदम अकड़ गया और वह कांपने लगी। आओमामे खुद पर काबू नहीं रख पाई। ऐसा लग रहा था जैसे उसे ज़ुकाम हो गया हो और वह कांप रही हो। उसे अंदर तक ठंड लग रही थी। उसने खुद को कसकर गले लगा लिया और कुछ देर तक कांपती रही, लेकिन इस दौरान उसकी नज़रें उस स्लाइड से हट ही नहीं रही थीं जहाँ टेंगो बैठा आसमान की ओर देख रहा था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे नज़र हटाते ही वह गायब हो जाएगा।
मैं चाहती हूँ कि वह मुझे गले लगाए, उसने सोचा। मैं चाहती हूँ कि वह अपने बड़े हाथों से मुझे सहलाए। मैं चाहती हूँ कि उसकी गर्माहट मेरे पूरे शरीर पर महसूस हो। मैं चाहती हूँ कि वह मेरे हर अंग को सहलाए। मुझे गर्म करे, मेरी हड्डियों से ठंड निकाल दे। मैं चाहती हूँ कि वह मेरे अंदर प्रवेश करे और मुझे हिलाए। धीरे-धीरे, गहराई से, जैसे चम्मच से कोको का कप हिलाते हैं। अगर वह ऐसा करे, तो मैं यहीं, अभी मर सकती हूँ, क्योंकि वह मुझे परेशान नहीं करेगा। सचमुच!
*

सचमुच? आओमामे ने हैरानी से सोचा। अगर ऐसी नौबत आई, तो शायद मैं मरना नहीं चाहूँगी। मैं हमेशा उसके साथ रहना चाहूँगी। मरने का मेरा इरादा सुबह की ओस की तरह पिघल जाएगा। या शायद मुझे उसे मार डालने का मन करे। अपनी बंदूक उठाऊँ, उसे गोली मारूँ, फिर खुद को भी गोली मार लूँ। पता नहीं क्या होगा या मैं क्या बेवकूफी भरी हरकतें करूँगी।
क्या करें?
आओमामे फैसला नहीं कर पा रही थी। उसकी सांसें तेज़ होती जा रही थीं। उसके मन में विचार लहरों की तरह आ रहे थे, एक के बाद एक गुज़र रहे थे। वह ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रही थी। क्या सही था और क्या गलत? उसे बस एक बात पता थी, और वो ये कि वो चाहती थी कि तेंगो उसे उसी पल अपनी मज़बूत बाहों में थाम ले। वो उसी पल देखना चाहती थी कि आगे क्या होगा। भगवान हो या शैतान, ये तो वो तय करे कि कौन क्या चाहता है और कौन क्या चाहता है।
*

ओमामे ने मन बना लिया। वह बाथरूम गई और तौलिए से अपने आंसू पोंछे। उसने जल्दी से शीशे में देखकर अपने बाल ठीक किए। उसका चेहरा बिखरा हुआ था, आंखें लाल थीं और उसने भद्दे कपड़े पहने थे। उसने एक फीका ट्रैकसूट पहना था और पैंट की कमर में एक नौ-मिलीमीटर की स्वचालित पिस्तौल रखी थी, जिससे उसकी पीठ पर एक अजीब सा उभार दिख रहा था। यह उस तरह का पहनावा नहीं था जिसे वह उस लड़के के सामने पहनती जिससे मिलने का सपना उसने बीस साल से देखा था। उसने कुछ और शालीन कपड़े क्यों नहीं पहने? लेकिन अब उसके पास कोई चारा नहीं था। उसके पास कपड़े बदलने का समय नहीं था। ओमामे ने बिना मोजे के अपने स्नीकर्स पहने और दरवाजा बंद किए बिना ही आग से बचने वाली सीढ़ी पर तीन-तीन सीढ़ियां कूदते हुए दौड़ पड़ी। उसने सड़क पार की, सुनसान पार्क में प्रवेश किया और सीधे स्लाइड की ओर चल पड़ी। लेकिन टेंगो वहां नहीं था। स्लाइड के ऊपर, लालटेन की कृत्रिम रोशनी में, कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था। यह चंद्रमा के दूर वाले हिस्से की तुलना में अधिक अंधेरा, अधिक ठंडा और अधिक सुनसान था।
क्या यह सिर्फ मेरी कल्पना हो सकती है?
नहीं, यह कोई भ्रम नहीं था, उसने गहरी सांस लेते हुए खुद से कहा। टेंगो अभी यहीं था। इसमें कोई शक नहीं। आओमामे स्लाइड पर चढ़ी और चारों ओर देखा। एक भी

इंसान नज़र नहीं आया। लेकिन वह ज़्यादा दूर नहीं गया होगा। वह पहले भी यहाँ आया था। चार-पाँच मिनट से ज़्यादा नहीं बीते थे। अगर वह दौड़ती, तो उसे पकड़ लेती।
लेकिन आओमामे ने अपना इरादा बदल लिया। उसने अपनी पूरी ताकत से खुद को रोका। नहीं, उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था। उसे यह भी नहीं पता था कि वह कहाँ चली गई है। वह रात में सड़कों पर तेंगो को ढूंढने नहीं जा रही थी। उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था। जब वह बालकनी पर हिचकिचा रही थी, तभी तेंगो स्लाइड से नीचे आया और चला गया। आखिरकार, यही मेरी नियति है, उसने खुद से कहा। मैं हिचकिचाती रही, बार-बार हिचकिचाती रही, मैं फैसला नहीं कर पा रही थी, और इसी बीच तेंगो चला गया। यही हुआ।
और शायद यही बेहतर था, उसने खुद को समझाने की कोशिश की। शायद यही सही था। कम से कम मैं टेंगो को ढूंढने में कामयाब तो हो गई। मैंने उसे अपने से बस एक गली दूर देखा और इस सोच से ही मैं सिहर उठी कि शायद वो मुझे अपनी बाहों में भर ले। मैंने उस अपार खुशी, उस उम्मीद को अपने पूरे शरीर में महसूस किया, भले ही कुछ मिनटों के लिए ही सही। आओमामे ने अपनी आँखें बंद कर लीं, स्लाइड बार को कसकर पकड़ लिया और अपने होंठ काट लिए।
वह टेंगो की ही तरह बैठी और दक्षिण-पश्चिम दिशा की ओर देखने लगी। आकाश में दो चाँद तैर रहे थे, एक बड़ा और एक छोटा। फिर उसने अपार्टमेंट बिल्डिंग की तीसरी मंजिल की बालकनी की ओर देखा। वहाँ बत्ती जल रही थी। अभी तक वह वहीं से टेंगो को देख रही थी। उसकी झिझक के निशान अभी भी बालकनी पर दिखाई दे रहे थे।
1Q84, इस दुनिया को यही नाम दिया गया था, उसने सोचा। मैं छह महीने पहले यहाँ आई थी, और अब जा रही हूँ। मैं बिना इच्छा के आई थी, लेकिन अब जानबूझकर जा रही हूँ। मेरे जाने के बाद टेंगो यहीं रहेगा। मुझे नहीं पता कि उसके लिए यह दुनिया कैसी होगी, और मुझे जानने की कोशिश भी नहीं करनी चाहिए। लेकिन मुझे परवाह नहीं। मैं उसके लिए मर जाऊँगी। मैं अपने लिए नहीं जी सकती थी। वह संभावना तो मुझसे पहले ही छीन ली गई है। लेकिन इसके बजाय, मैं उसके लिए मर सकती हूँ। यह अच्छा है। मैं चेहरे पर मुस्कान के साथ मर सकती हूँ।
मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ।
*

ओमामे ने तेंगो की मौजूदगी को महसूस करने की कोशिश की, चाहे वह कितनी भी धुंधली क्यों न रही हो। लेकिन गर्माहट का कोई निशान नहीं बचा था। पतझड़ की खुशबू लिए सजी रात की हवा एल्म के पत्तों से गुज़रते हुए हर निशान को मिटा चुकी थी। लेकिन ओमामे काफी देर तक वहीं खड़ी रही, दो चांदों को देखती रही, जो अपनी अजीब और बेपरवाह रोशनी में लिपटे हुए थे। शहर की आवाज़ें आपस में घुलमिल गईं और एक धीमी लय में उसे घेर लिया—उसे वह छोटी मकड़ी याद आई जिसने मेट्रोपॉलिटन एक्सप्रेसवे की आपातकालीन सीढ़ियों पर अपना जाला बुना था। क्या वह अभी भी ज़िंदा थी? क्या वह अभी भी अपना जाला बुन रही थी?
Aomame zâmbi.
मैं तैयार हूँ, उसने खुद से कहा।
लेकिन पहले मुझे कहीं जाना है।

अध्याय 22 जब तक आकाश में दो चंद्रमा हैं

टेंगो स्लाइड से उतरा और पार्क से बाहर निकल गया। फिर वह शहर में बेतरतीब ढंग से घूमने लगा। वह एक गली से दूसरी गली भटकता रहा, इस बात पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहा था कि वह कहाँ जा रहा है। चलते-चलते उसने अपने मन में उमड़ रहे विचारों को स्पष्ट रूप देने की कोशिश की। लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद वह उन्हें आकार नहीं दे सका। स्लाइड पर बैठे-बैठे उसने बहुत कुछ सोच लिया था। दो महीने, खून के रिश्ते, जीवन में नई शुरुआत, उसे परेशान करने वाले भूत, फुकाएरी और वायु परकोटे, और आओमामे का कहीं आस-पास छिपे होने की बात। सब कुछ उसके दिमाग में उमड़ रहा था और उसकी एकाग्रता चरम सीमा पर पहुँच गई थी। वह बिस्तर पर जाकर चैन से सोना चाहता था। कल सुबह उठकर वह और सोच सकता था। अब उसका सोचना व्यर्थ था, क्योंकि उसे कोई निष्कर्ष नहीं मिल रहा था।
जब वह घर लौटा, तो उसने फुकेरी को अपनी मेज पर बैठे हुए, कलम के चाकू से पेंसिलें तेज करते हुए पाया। तेंगो के पेंसिल बॉक्स में हमेशा लगभग दस पेंसिलें होती थीं, लेकिन अब बीस थीं। उसने उन्हें बहुत खूबसूरती से, शानदार ढंग से तेज किया था। तेंगो ने इतनी अच्छी तरह से तेज की हुई पेंसिलें पहले कभी नहीं देखी थीं। उनकी नोकें सुई जैसी थीं।
"फोन की घंटी बजी," फुकेरी ने अपनी उंगली की नोक से पेंसिल की धार की जांच करते हुए कहा। चिकुरा का फोन था।
"तुम्हें पता है कि तुम्हें जवाब देने की जरूरत नहीं है।"
दान देना महत्वपूर्ण था।
शायद फोन की घंटी बजने के बाद उन्हें इस बात का एहसास हुआ।
“यह किस बारे में है?” टेंगो ने पूछा।
उन्होंने मुझे नहीं बताया।
"क्या उन्होंने चिकुरा सैनिटोरियम से फोन किया था?" उन्हें फोन करो।
क्या उन्होंने मुझे उन्हें फोन करने के लिए कहा था?
आज, भले ही देर हो रही हो।
टेंगो ने आह भरी।
लेकिन मुझे उनका नंबर नहीं पता!
- उसे पहचानती हूँ।
उसे फ़ोन नंबर याद था। टेंगो ने उसे एक कागज़ पर लिख लिया। फिर उसने अपनी घड़ी देखी। साढ़े आठ बज रहे थे।
“उन्होंने किस समय फोन किया था?” उसने पूछा।
- एक छोटे से पहले।
टेंगो रसोई में गया और एक गिलास पानी पिया। उसने अपने हाथ सिंक पर रखे, आँखें बंद कीं और यह सुनिश्चित किया कि उसका दिमाग कुछ हद तक सामान्य रूप से काम कर रहा है। फिर उसने रिसीवर उठाया और नंबर डायल किया। शायद उसके पिता की मृत्यु हो गई थी। किसी भी हालत में, यह जीवन और मृत्यु का मामला होने की पूरी संभावना थी। अगर कोई गंभीर बात नहीं होती, तो वह इस समय उन्हें फोन नहीं करता।

एक महिला ने फोन उठाया। टेंगो ने अपना परिचय दिया और कहा कि उसने इसलिए फोन किया था क्योंकि लोग पहले से ही उसकी तलाश कर रहे थे।
“आप श्री कवाना के बेटे हैं, है ना?” महिला ने कहा।
- हाँ।
आप कुछ समय पहले यहां आए थे।
उन्हें धातु के फ्रेम वाले चश्मे पहने अधेड़ उम्र की नर्स याद आई। उन्हें उसका नाम याद नहीं आ रहा था। उन्होंने कुछ विनम्र शब्द कहे।
मुझे थोड़ी देर पहले आपका फोन आया था।
"जी हां। मैं आपको इस मामले के प्रभारी डॉक्टर से संपर्क करा दूंगा, आप उनसे सीधे बात कर सकते हैं।"
टेंगो रिसीवर कान से लगाए इंतज़ार करता रहा, लेकिन डॉक्टर ने जवाब नहीं दिया। दूसरी तरफ से लगातार 'होम ऑन द रेंज' की नीरस धुन सुनाई दे रही थी। टेंगो ने अपनी आँखें बंद कर लीं और बोसो के समुद्रतटीय सैनिटोरियम को याद करने लगा। चीड़ के पेड़ों की घनी कतारें और उनमें से गुज़रती हवा। प्रशांत महासागर की लहरें जो लगातार किनारे से टकराती रहती थीं। सुनसान प्रवेश कक्ष, जहाँ कोई आगंतुक नहीं था। गलियारे में ले जाए जा रहे मोबाइल बेड के पहियों की आवाज़।
धूप से पीले पड़ चुके पर्दे। नर्सों के सफ़ेद, करीने से इस्त्री किए हुए गाउन। कैफ़ेटेरिया की कमज़ोर, बेस्वाद कॉफ़ी।
अंततः डॉक्टर ने उत्तर दिया।
क्षमा कीजिए, मुझे एक मरीज को देखने के लिए अत्यावश्यक बुलावा आया था।
"कोई बात नहीं," टेंगो ने कहा।
उसने उसका चेहरा याद करने की कोशिश की, लेकिन फिर उसे एहसास हुआ कि वह उससे कभी मिली ही नहीं थी। उसका सिर अभी भी चकरा रहा था।
“क्या पिताजी को कुछ हो गया?” उसने पूछा।
डॉक्टर कुछ सेकंड के लिए हिचकिचाया।
"आज तो कुछ नहीं हुआ, लेकिन उनकी हालत कुछ समय से बिगड़ती जा रही है। यह बताना मेरे लिए मुश्किल है, लेकिन वे कोमा में हैं।"
"बेहोशी!" टेंगो चिल्लाया।
— ऐसा लगता है जैसे आप गहरी नींद में हैं।
"क्या आपका मतलब है कि वह बेहोश है?"
- नहीं।
टेंगो ने सोचा। उसे अपना दिमाग लगाना ही होगा।
क्या वह बीमार पड़ गया और कोमा में चला गया?
"यह बात सच नहीं है," प्रोफेसर ने चिढ़कर कहा।
टेंगो ने इंतजार किया।
— फ़ोन पर आपको समझाना मेरे लिए मुश्किल है, लेकिन यह कोई विशिष्ट समस्या नहीं है, न ही कैंसर, निमोनिया या कोई और बीमारी। चिकित्सकीय दृष्टि से, यह एक ऐसी स्थिति है जिसकी पहचान भी नहीं हो सकती। मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन आपके पिताजी की प्राकृतिक जीवन शक्ति स्पष्ट रूप से कम होती जा रही है। कारण जाने बिना हम उनका कोई इलाज नहीं कर सकते। हमने उन्हें आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करने के लिए IV लगाए हैं, लेकिन यह केवल लक्षणों का उपचार है, जो वास्तविक कारण का समाधान नहीं करता।

“क्या आप मेरे एक सवाल का ईमानदारी से जवाब दे सकते हैं?” टेंगो ने कहा।
- बिल्कुल।
"क्या उसके पास जीने के लिए ज्यादा समय नहीं बचा है?"
अगर यही स्थिति बनी रही तो इसकी संभावना वाकई काफी अधिक है।
क्या उनकी मृत्यु बुढ़ापे के कारण हो रही है?
डॉक्टर ने एक अस्पष्ट सी आवाज निकाली।
"आपके पिता साठ वर्ष के हैं। वे बहुत बूढ़े नहीं हैं। शारीरिक रूप से वे स्वस्थ हैं। अल्जाइमर के अलावा उन्हें कोई बीमारी नहीं है। हमारे द्वारा किए जाने वाले नियमित परीक्षणों में उनके परिणाम हमेशा अच्छे रहे हैं। हमें कोई समस्या नहीं मिली है।"
डॉक्टर कुछ क्षण चुप रहे। फिर उन्होंने बोलना शुरू किया:
लेकिन... सचमुच, पिछले कुछ दिनों में उनसे परामर्श करने पर ऐसा लगता है कि वे बुढ़ापे के कारण मर रहे हैं, जैसा कि आपने कहा। शरीर के सभी कार्य धीमे हो रहे हैं और जीने की इच्छा समाप्त हो गई है। यह एक ऐसी स्थिति है जो आमतौर पर पचासी वर्ष की आयु के आसपास होती है। उस उम्र में, कुछ लोग बस जीवित रहने से थक जाते हैं और आगे कोई प्रयास करना छोड़ देते हैं। लेकिन मुझे यह समझना मुश्किल लगता है कि श्री कावाना जैसे साठ वर्ष के व्यक्ति की यह स्थिति क्यों हो सकती है। टेंगो ने अपने होंठ काटते हुए सोचा।
“वह कोमा में कब गई?” उसने पूछा।
"तीन दिन पहले," डॉक्टर ने कहा।
"उसने तीन दिनों से अपनी आंखें बिल्कुल नहीं खोली हैं?"
— एक बार भी नहीं।
"और आपके स्वास्थ्य के संकेत कमजोर होते जा रहे हैं?"
डॉक्टर ने कहा, "यह कोई बहुत तेज़ प्रक्रिया नहीं है। जैसा कि मैंने आपको बताया, उसकी जीवन शक्ति धीरे-धीरे लेकिन स्पष्ट रूप से कम होती जा रही है। जैसे कोई ट्रेन धीरे-धीरे रुक रही हो।"
- कब तक यह चलेगा?
"मैं आपको निश्चित रूप से नहीं बता सकता। लेकिन अगर वह इसी हालत में रहता है, तो सबसे खराब स्थिति में, लगभग एक सप्ताह तक जीवित रह सकता है," डॉक्टर ने जवाब दिया।
टेंगो ने रिसीवर को दूसरे हाथ में ले लिया। उसने फिर से अपने होंठ काटे। उन्होंने कहा, "मैं कल वहाँ आ जाऊँगा। अगर आप मुझे ढूँढ़ने नहीं भी आते, तब भी मैं जल्द ही आना चाहता था। मुझे बताने के लिए धन्यवाद।"
ये शब्द सुनकर डॉक्टर ने राहत की सांस ली।
"मैं आपसे सचमुच विनती करता हूँ कि आप आएँ। अगर आप उनसे जल्द से जल्द मिल सकें तो अच्छा होगा। भले ही वे बोल न सकें, फिर भी उन्हें आपसे मिलकर खुशी होगी।" "लेकिन आप कह रहे हैं कि वह होश में नहीं है?"
वह बेहोश है।
क्या उसे दर्द हो रहा है?
"अभी नहीं। शायद नहीं। इस स्थिति में यही एक अच्छी बात है। मैंने तुमसे कहा था, यह गहरी नींद की तरह है।"
“धन्यवाद,” टेंगो ने कहा।

डॉक्टर ने आगे कहा, "श्री कवाना, आपके पिता की देखभाल करना, मैं कैसे कहूँ, बहुत आसान था। उन्होंने किसी को कोई परेशानी नहीं दी।"
"यह हमेशा से ऐसा ही रहा है," टेंगो ने कहा। फिर उसने डॉक्टर को एक बार फिर धन्यवाद दिया और फोन काट दिया।
*

उसने कॉफी गर्म की और फुकेरी के सामने वाली मेज पर बैठकर उसे पिया।
"क्या तुम कल जा रहे हो?" उसने पूछा।
मैं सहमत हूं।
— कल सुबह मुझे ट्रेन में बैठकर एक बार फिर बिल्लियों के शहर जाना है।
"तुम बिल्लियों के शहर जा रहे हो," फुकेरी ने लहजे में कहा।
"क्या तुम यहाँ मेरा इंतज़ार कर रही हो?" टेंगो ने पूछा। फुकेरी के साथ रहने के कारण, उसे उसी की तरह बोलने की आदत हो गई थी, बस सवालिया लहजा नहीं रहता था।
- मैं यहाँ आप के लिए इंतजार करूंगा।
"मैं बिल्लियों के शहर अकेले जा रहा हूँ," उसने कहा और कॉफी का एक घूंट लिया।
फिर उसे एहसास हुआ और उसने उससे पूछा, "क्या आप कुछ पीना चाहेंगी?"
— अगर आपके पास थोड़ी सफेद वाइन हो।
टेंगो ने फ्रिज खोला और शराब की बोतल ढूंढने लगा। उसे थोड़ी सी शैम्पेन मिली जो उसने पहले छूट पर खरीदी थी। बोतल के लेबल पर एक जंगली सूअर बना हुआ था। उसने बोतल का ढक्कन खोला, उसे गिलास में डाला और फुकेरी के सामने रख दिया। फिर थोड़ी देर हिचकिचाने के बाद उसने खुद के लिए भी एक गिलास डाला। इस समय उसे कॉफी की बजाय शराब पीना ज़्यादा अच्छा लग रहा था। थोड़ी ठंडी और मीठी थी, लेकिन उसे शराब से सुकून मिल रहा था।
"कल तुम बिल्ली वाले शहर जाओगे," फुकेरी ने दोहराया।
"मैं सुबह की ट्रेन ले रहा हूँ," टेंगो ने कहा।
शराब पीते हुए टेंगो को याद आया कि उसने अपने सामने खड़ी उस खूबसूरत सत्रह वर्षीय लड़की के भीतर वीर्यपात किया था। यह घटना पिछली रात ही घटी थी, लेकिन मानो सदियों पहले की बात हो। इतिहास में कभी घटी एक घटना। फिर भी, उस समय का एहसास उसके भीतर अभी भी बना हुआ था।
"एक और चाँद दिखाई दिया है," उसने धीरे-धीरे हाथ में गिलास घुमाते हुए कहा। "मैंने थोड़ी देर पहले आकाश की ओर देखा तो वहाँ दो चाँद थे। एक बड़ा और पीला और दूसरा छोटा और हरा। शायद वह बहुत समय से वहाँ था, लेकिन मैंने उसे देखा नहीं। मैंने उसे अभी देखा है।"
फुकेरी के पास कहने के लिए कुछ नहीं था। ऐसा बिल्कुल नहीं लग रहा था कि उसे यह खबर सुनकर हैरानी हुई हो। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं बदला। उसने कंधे भी हल्के से नहीं उचकाए। मानो यह उसके लिए कोई नई बात ही न हो।
"मुझे आपको बताने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन एयर क्राइसालिस में यही होता है," टेंगो ने कहा। "और नया चाँद बिल्कुल वैसा ही दिखता है जैसा मैंने किताब में वर्णन किया है। रंग और आकार।"
फुकेरी चुप रही। जब उसे लगा कि जवाब देना जरूरी नहीं है, तो उसने जवाब नहीं दिया।
"ऐसा क्यों हुआ? यह कैसे संभव है?"
फिर भी, कोई जवाब नहीं मिला।

टेंगो ने खुले तौर पर पूछा:
— आपका मतलब है कि हम उसी दुनिया में प्रवेश कर गए जिसे हमने 'द एयर क्राइसालिस' में चित्रित किया था?
कुछ देर तक फुकेरी ने अपने नाखूनों को गौर से देखा।
उन्होंने कहा, "क्योंकि हमने साथ मिलकर एक किताब लिखी थी।"
टेंगो ने अपना गिलास मेज पर रखा और कहा:
हम दोनों ने मिलकर 'द एयर क्राइसालिस' लिखा और वह किताब प्रकाशित हुई। यह एक टीम वर्क था। हमारा उपन्यास बेस्टसेलर बन गया और हर किसी को 'लिटिल पीपल' के बारे में, माता और पुत्री के बारे में पता चला। और इसका नतीजा यह हुआ कि हम सब एक साथ एक बदली हुई दुनिया में प्रवेश कर गए। क्या यही हुआ था?
आप एक रिसीवर के रूप में कार्य करते हैं।
"मैं एक रिसीवर की भूमिका निभाती हूँ," टेंगो ने उसे समझाते हुए कहा। "मैंने 'द एयर क्राइसालिस' में इसके बारे में लिखा था। लेकिन मुझे नहीं पता कि यह किस बारे में है। मुझे ठीक से नहीं पता कि एक रिसीवर की क्या भूमिका होती है।" फुकेरी ने धीरे से अपना सिर हिलाया। वह इसका कारण नहीं बता सका।
अगर तुम्हें समझने के लिए स्पष्टीकरण की जरूरत पड़ती है, तो इसका मतलब है कि तुम चाहे कितने भी स्पष्टीकरण पा लो, कभी नहीं समझ पाओगे, उसके पिता ने एक बार उससे कहा था।
"जब तक तुम उसे ढूंढ नहीं लेते, तब तक हमें साथ रहना चाहिए," फुकेरी ने कहा। "जब तक तुम उसे ढूंढ नहीं लेते, तब तक हम साथ रहेंगे।"
टेंगो कुछ पल चुपचाप उसे देखता रहा, उसके चेहरे पर कोई भाव ढूंढने की कोशिश करता रहा, पर उसे कुछ नहीं मिला। हमेशा की तरह। फिर, अनायास ही उसने अपना सिर घुमाया और खिड़की से बाहर देखा। लेकिन कहीं चाँद दिखाई नहीं दे रहा था। केवल टेलीफोन के खंभे थे, जिन पर बदसूरत, उलझे हुए तार लटके थे।
रिसीवर की भूमिका पाने के लिए क्या किसी विशेष गुण की आवश्यकता होती है? फुकेरी ने अपनी ठुड्डी को थोड़ा ऊपर-नीचे किया। हाँ, यह ज़रूरी था।
लेकिन 'द एयर क्राइसालिस' आपकी कहानी है। आपने इसे बिल्कुल शुरुआत से लिखा है।
यह कहानी आपकी ही देन है। मुझे तो बस इसका स्वरूप तय करने को कहा गया था। मैं तो बस एक साधारण तकनीशियन था।
"क्योंकि हमने मिलकर एक किताब लिखी थी," फुकेरी ने अपने पहले कहे शब्दों को दोहराया।
टेंगो ने अपनी उंगली अपनी कनपटी पर दबाई।
— तब से मैं अनजाने में ही एक प्राप्तकर्ता की भूमिका निभा रहा हूँ?
"पहले," फुकेरी ने कहा।
उसने पहले अपनी तर्जनी उंगली अपनी ओर, फिर टेंगो की ओर इशारा किया।
मैं एक बोधकर्ता हूँ, आप एक ग्रहणकर्ता हैं।
"अनुभूतिदाता और ग्रहणकर्ता," टेंगो ने कहा। "मेरा मतलब है, आप महसूस करने वाले हैं और मैं ग्रहण करने वाला। है ना?"
फुकेरी ने हल्के से सिर हिलाकर सहमति दी।
टेंगो ने थोड़ा भौंहें चढ़ाकर कहा:
— तो आपको पता था कि मैं एक ग्रहणकर्ता हूँ, या कम से कम मुझमें ग्रहणकर्ता बनने के लिए आवश्यक गुण हैं, और इसीलिए आपने मुझे 'द एयर क्राइसालिस' को फिर से

लिखने की अनुमति दी। आपने जो महसूस किया, उसे मेरे माध्यम से पुस्तक में उतारा। क्या मैं सही कह रहा हूँ?
कोई जवाब नहीं।
टेंगो ने अपना माथा ढीला छोड़ा और फुकेरी की आँखों में देखते हुए कहा:
मैं अभी तक ठीक-ठीक समय तो नहीं बता सकता, लेकिन मुझे लगता है कि उसी समय मैंने दो चंद्रमाओं की दुनिया में प्रवेश किया। मुझे अब तक इसका एहसास नहीं था। मैंने पहले कभी रात के आकाश की ओर देखकर ध्यान नहीं दिया था कि एक और चंद्रमा प्रकट हो गया है। क्या यह सही है?
फुकेरी चुप रही। उसकी चुप्पी हवा में ऐसे तैर रही थी मानो कोई बारीक, अदृश्य पाउडर हो। ऐसा पाउडर जिसे कीड़ों के झुंड ने अचानक बिखेर दिया हो। तेंगो कुछ देर तक उन आकृतियों को देखता रहा जो ये कण हवा में बना रहे थे। उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह दो दिन पुराना अखबार हो। जानकारी लगातार बदल रही थी, पर वह उसके साथ तालमेल नहीं बिठा पा रहा था।
थोड़ा संभलकर उन्होंने कहा, "मुझे लगता है कि उन्होंने कारण और परिणाम को उलट दिया है। मुझे नहीं पता कि पहले क्या आता है और बाद में क्या। खैर, हम इस नई दुनिया में हैं।"
फुकेरी ने ऊपर देखा और टेंगो की आँखों में देखा। शायद यह महज़ एक भ्रम था, लेकिन उसे लगा कि उसकी आँखों की पुतलियों में कोमलता की एक हल्की सी झलक दिखाई दी।
उन्होंने कहा, "वैसे भी, पहले वाली दुनिया अब अस्तित्व में नहीं है।"
फुकेरी ने हल्के से कंधे उचकाए।
- हमारा निवास यहां है।
"दो महीने वाली दुनिया में?"
फुकेरी ने कोई जवाब नहीं दिया। सत्रह साल की खूबसूरत लड़की ने अपने होंठ कसकर बंद रखे और तेंगो को घूरती रही। ठीक वैसे ही जैसे दस साल की उम्र में, सुनसान कक्षा में, आओमामे ने उसकी आँखों में देखा था। उसकी निगाहों में एक गहरी एकाग्रता थी। तेंगो को लगा मानो वह उस तीव्र निगाहों के नीचे पत्थर बन जाएगा। एक बार पत्थर बन जाने पर, वह एक नए चाँद में बदल जाएगा। एक छोटा, बदसूरत सा चाँद। थोड़ी देर बाद, फुकेरी ने अपनी निगाहें थोड़ी ढीली कीं, अपना दाहिना हाथ उठाया और अपनी कनपटी पर एक उंगली रखी, मानो उसमें छिपे गुप्त विचारों को जानने की कोशिश कर रही हो।
"तुमने उसे ढूंढा?" उसने पूछा।
- हाँ।
"लेकिन आपको वह नहीं मिला।"
"मुझे वह नहीं मिला," टेंगो ने कहा।
उसे आओमामे नहीं मिली थी। इसके बजाय, उसने पाया कि आकाश में दो चंद्रमा थे।
फुकाएरी के सुझाव पर, उसने अपनी यादों को खंगाला और परिणामस्वरूप, आकाश की ओर देखकर चंद्रमा को देखा।
लड़की ने अपनी निगाहें थोड़ी ढीली कीं और शराब का गिलास उठाया। उसने एक घूंट लिया और उसे बड़ी सावधानी से पिया, जैसे कोई कीड़ा ओस की बूंद चूसता है।
"तुमने कहा कि वह छिपी हुई है। इसका मतलब है कि मैं उसे इतनी आसानी से नहीं ढूंढ पाऊंगा," टेंगो ने कहा।

"चिंता मत करो," लड़की ने जवाब दिया।
"चिंता मत करो," टेंगो ने दोहराया।
फुकेरी ने एक व्यापक भावपूर्ण इशारे के साथ सिर हिलाया।
"मेरा मतलब है, क्या मैं उसे ढूंढ सकता हूँ?"
"तुम्हें वो मिल जाएगी," लड़की ने धीरे से कहा। उसकी आवाज़ ऐसी थी मानो मुलायम घास के मैदान पर हल्की हवा बह रही हो।
"यहाँ, कोएंजी में?"
फुकेरी ने अपना सिर झुकाया। वह कहना चाहता था कि उसे नहीं पता।
“कहीं न कहीं,” उसने कहा।
"इस दुनिया में कहीं?"
फुकेरी ने सिर हिलाया।
जब तक आकाश में दो चंद्रमा मौजूद हैं।
कुछ क्षण सोचने के बाद, टेंगो ने हताशा भरे स्वर में कहा, "मुझे लगता है कि मैं केवल आपकी बात पर ही विश्वास कर सकता हूँ।"
"मैं महसूस करता हूँ, और तुम ग्रहण करते हो," फुकेरी ने सोच-समझकर कहा।
"तुम महसूस करते हो, और मैं ग्रहण करता हूँ," टेंगो ने सर्वनामों को उलटते हुए कहा।
फुकेरी ने फिर से सिर हिलाया।
वह उससे पूछना चाहता था कि क्या यही वजह थी कि वे पिछली रात, भयंकर तूफान के दौरान, एक साथ आए थे? इसका क्या मतलब था? लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। शायद यह एक अनुचित सवाल था, और उसे एहसास था कि उसे कोई जवाब नहीं मिलेगा।
अगर तुम्हें समझने के लिए स्पष्टीकरण की जरूरत पड़ती है, तो इसका मतलब है कि तुम चाहे कितने भी स्पष्टीकरण पा लो, कभी नहीं समझ पाओगे, उसके पिता ने एक बार उससे कहा था।
"तुम महसूस करते हो और मैं ग्रहण करता हूँ," टेंगो ने एक बार फिर कहा। "बिल्कुल वैसे ही जैसे मैंने 'द एयर क्राइसालिस' को दोबारा लिखा था।"
फुकेरी ने अपना सिर हिलाया। फिर उसने अपने बालों को पीछे किया और अपने छोटे, सुंदर कान दिखाए। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी ट्रांसमीटर का एंटीना उठा रही हो।
"यह पहले जैसा नहीं है," उसने कहा। "तुम बदल गए हो।"
“मैं बदल गया हूँ,” उसने दोहराया।
फुकेरी ने सिर हिलाया।
— मुझमें क्या बदलाव आया है?
फुकेरी ने काफी देर तक शराब के गिलास में देखा। ऐसा लग रहा था मानो उसे उसमें कुछ बहुत महत्वपूर्ण दिखाई दे रहा हो।
"अगर तुम बिल्लियों के शहर जाओगे तो समझ जाओगे," लड़की ने कहा। फिर, अपने कान खोलकर, उसने शराब का एक घूंट लिया।

अध्याय 23 आपके टैंक में एक बाघ

आओमामे सुबह छह बजे के कुछ देर बाद उठी। सुबह बहुत सुहावनी और धूप खिली हुई थी। उसने फिल्टर कॉफी बनाई, ब्रेड टोस्ट की और अंडे उबाले। फिर उसने समाचार देखा ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि पायनियर नेता की मृत्यु की खबर अभी तक प्रसारित न हुई हो। शायद उन्होंने पुलिस को बुलाए बिना या किसी को बताए बिना शव को ठिकाने लगा दिया होगा। बहुत अच्छा। कोई बड़ी बात नहीं थी। एक मृत व्यक्ति चाहे कुछ भी कर लो, वह मर चुका होता है। मृत्यु अपरिवर्तनीय है।
आठ बजे उसने स्नान किया, बाथरूम के शीशे में देखकर अपने बालों को अच्छे से संवारा और होठों पर लगभग अदृश्य सी लिपस्टिक लगाई। उसने टाइट्स पहनीं, अलमारी में हैंगर पर टंगी सफेद रेशमी कमीज पहनी और शानदार जुन्को शिमाडा सूट पहना। वह कुछ देर इधर-उधर घूमी और पैडेड ब्रा को ठीक करते हुए फिर से सोचने लगी कि काश उसके स्तन थोड़े बड़े होते। उसने शीशे के सामने शायद बहत्तर हज़ार बार यही सोचा होगा। तो क्या हुआ? मैं क्या सोचती हूँ, इससे मुझे क्या लेना- देना? अगर यह बहत्तर हज़ारवीं बार है तो क्या हुआ? जब तक मैं जीवित हूँ, मैं जो चाहूँ, जब चाहूँ और जितनी देर चाहूँ सोच सकती हूँ। किसी को कुछ कहने का अधिकार नहीं है, उसने खुद से कहा और चार्ल्स जॉर्डन की ऊँची एड़ी के जूते पहन लिए। आओमामे गलियारे में लगे बड़े शीशे के सामने खड़ी होकर अपने पहनावे को देखती है। वह अपना दाहिना कंधा थोड़ा ऊपर उठाती है, मानो वह 'द थॉमस क्राउन अफेयर' में फेय डुनावे की नकल कर रही हो। फिल्म में फेय एक बीमा एजेंट की भूमिका निभाती है, जो बेहद शांत और आत्मविश्वास से भरी है। वह सहज, आकर्षक और सूट में बेहद खूबसूरत लगती है। ज़ाहिर है, आओमामे फेय डुनावे जैसी तो नहीं दिखती थी, लेकिन उसमें कुछ वैसी ही अदा थी। या कम से कम पूरी तरह से गायब नहीं थी। वह एक खास अदा थी, वैसी जो सिर्फ शीर्ष पेशेवर ही दिखा सकते हैं। और उसके बैग में एक दमदार हथियार भी था।
*

ओमामे ने अपने रे-बैन सनग्लासेस पहने और घर से निकल पड़ी। वह सड़क के उस पार पार्क की ओर चली, उस स्लाइड के सामने रुकी जहाँ पिछली रात टेंगो खड़ा था, और उस दृश्य को अपने मन में दोहराने लगी। उसने सोचा, "महज़ बारह घंटे पहले, टेंगो यहीं मेरे सामने, मुझसे बस एक ब्लॉक दूर था। वह यहाँ अकेला बैठा चुपचाप चाँद देख रहा था। वही दो चाँद जिन्हें मैं भी देखती हूँ।"
ओमामे को लगा मानो टेंगो से मिलना किसी चमत्कार से कम नहीं था। यह एक अद्भुत अनुभव था। किसी चीज़ ने उसे उसके पास खींच लाया था और उसके भीतर सब कुछ बदल दिया था। उस सुबह जब से वह उठी थी, उसे अपने शरीर के हर जोड़ में अजीब सी झनझनाहट महसूस हो रही थी। वह मेरे सामने प्रकट हुआ और फिर गायब हो गया, उसने सोचा। हम न तो बोल पाए और न ही एक-दूसरे को छू पाए। लेकिन उस थोड़े से समय में ही उसने मेरे भीतर बहुत कुछ बदल दिया था। उसने मेरे दिल और पूरे शरीर को इस कदर झकझोर दिया था, मानो उसने चम्मच से दूध मिले कोको के प्याले को हिला दिया हो। गहराई तक, मेरे अंतर्मन तक, मेरे गर्भ तक।

ओमामे कुछ मिनटों तक वहीं रुकी रही, एक हाथ से स्लाइड की सीढ़ियों पर झुकी हुई, थोड़ा सा भौंहें चढ़ाए हुए और अपनी नुकीली एड़ी से ज़मीन को हल्के से थपथपाती हुई। उसे याद था कि इसने उसके शरीर और दिल में कितनी हलचल मचा दी थी, और उसने उस अनुभूति का भरपूर आनंद लिया। फिर वह पार्क से निकलकर मुख्य सड़क पर गई और एक टैक्सी पकड़ ली।
*

"हम पहले योगा जाएंगे, फिर मेट्रोपॉलिटन हाईवे नंबर 3 पर इकेजिरी एग्जिट से पहले तक जाएंगे," उसने ड्राइवर से कहा।
जैसा कि उम्मीद थी, ड्राइवर असमंजस में दिख रहा था।
"और अंतिम गंतव्य क्या है?" उसने काफी सहज स्वर में पूछा।
— इकेजिरी से प्रस्थान। फिलहाल के लिए।
"हम सीधे इकेजिरी जा सकते थे, क्योंकि यह यहाँ से बहुत पास है। हम योगा जाने के लिए लंबा चक्कर लगा रहे हैं, और इस समय केंद्र की ओर जाने वाला राजमार्ग बुरी तरह जाम है। यहाँ तो लगभग कोई वाहन नहीं है। मुझे इस बात का उतना ही यकीन है जितना कि आज बुधवार है।"
"भीड़भाड़ हो तो कोई बात नहीं। आज गुरुवार, शुक्रवार या सम्राट का जन्मदिन होता तो भी मुझे कोई आपत्ति नहीं होती। कृपया योगा सेंटर से हाईवे पर आ जाइए। मेरे पास काफी समय है।"
टैक्सी चालक की उम्र तीस के आसपास थी। वह दुबला-पतला, गोरा और पतला, लंबा चेहरा लिए हुए था। वह किसी बेहद सतर्क शाकाहारी जानवर जैसा दिखता था। उसकी ठुड्डी उभरी हुई थी, जैसे ईस्टर द्वीप पर बनी पत्थर की मूर्तियों की होती है। उसने आईने में आओमामे को देखा और उसके चेहरे के भावों से यह जानने की कोशिश की कि क्या वह बस थोड़ी डरपोक है या फिर एक सामान्य इंसान है जो तरह-तरह की बेतुकी बातों में दिलचस्पी रखती है। लेकिन वह पूरी तरह से समझ नहीं पाया। कम से कम उस छोटे से आईने में जो दिख रहा था, उससे तो बिल्कुल नहीं।
ओमामे ने अपने बैग से अपना बटुआ निकाला, उसमें से एक बिल्कुल नया दस हजार येन का नोट निकाला, मानो वह अभी-अभी छपकर आया हो, और उसे उसकी नाक के नीचे कर दिया। "मुझे उससे खुले पैसे नहीं चाहिए। और न ही रसीद," उसने संक्षिप्त में कहा। "मैं चाहती हूँ कि तुम ठीक वैसा ही करो जैसा मैं कहती हूँ। हम पहले योगा क्लास जाएँगे, फिर हाईवे पर चढ़कर इकेजिरी के लिए निकलेंगे। चाहे कितनी भी भीड़ हो, ये पैसे काफी हैं, है ना?"
“बिल्कुल पर्याप्त हैं, लेकिन...” ड्राइवर ने संदेह भरे लहजे में जवाब दिया। “क्या आपको राजमार्ग पर कोई विशेष काम है?”
ओमामे ने दस हजार येन का नोट लहराया।
अगर आप मुझे नहीं ले जाना चाहते, तो मैं उतरकर दूसरी टैक्सी ढूंढ लूंगा, इसलिए जल्दी फैसला कर लीजिए।
ड्राइवर ने दस सेकंड तक बिल को घूरकर देखा। आखिरकार उसने मन बना लिया और बिल ले लिया। उसने रोशनी में बिल को ध्यान से देखा ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यह नकली तो नहीं है, फिर उसे अपने पैसों के थैले में डाल दिया।
— मैं समझ गया। ठीक है, हम मेट्रोपॉलिटन हाईवे नंबर 3 पर जा रहे हैं। लेकिन ध्यान रखें कि यह बहुत व्यस्त रहेगा। और योगा और इकेजिरी के बीच कोई निकास

नहीं है। और कोई सार्वजनिक शौचालय भी नहीं है। अगर आपको ज़रूरत हो, तो अभी चले जाइए।
"नहीं, धन्यवाद। हम सीधे जाएंगे।"
*

टैक्सी मोहल्ले की घुमावदार गलियों से निकलकर व्यस्त रिंग रोड नंबर 8 पर आ गई और योगा की ओर चल पड़ी। किसी ने कुछ नहीं कहा। ड्राइवर रेडियो पर खबरें सुन रहा था और आओमामे सोच में डूबी बैठी थी। हाईवे पर पहुंचने से ठीक पहले उसने आवाज़ धीमी कर दी और कहा,
— पूछने के लिए क्षमा करें, लेकिन क्या आपका कोई विशेष पेशा है?
"मैं एक बीमा एजेंट हूँ," आओमामे ने बिना किसी झिझक के जवाब दिया।
"बीमा एजेंट," ड्राइवर ने शब्दों को सावधानीपूर्वक दोहराया, मानो वह किसी ऐसे व्यंजन का स्वाद ले रहा हो जिसे उसने पहले कभी नहीं चखा हो।
उन्होंने बताया, "मैं धोखाधड़ी के मामले के लिए सबूत इकट्ठा कर रही हूं।" "आह," ड्राइवर ने प्रशंसा भरे लहजे में कहा। "और क्या इस राजमार्ग का इस धोखाधड़ी मामले से कोई संबंध है?"
- हाँ।
— ठीक उस फिल्म की तरह।
- कौनसी फिल्म?
"स्टीव मैकक्वीन वाली वो पुरानी फिल्म... उह... मुझे नाम याद नहीं आ रहा।"
— थॉमस क्राउन का मामला।
— जी हाँ, बिल्कुल सही। फेय डुनावे एक बीमा एजेंट हैं, जो चोरी के बीमा में विशेषज्ञता रखती हैं। स्टीव मैकक्वीन एक अमीर आदमी है जो मजे के लिए डकैती की योजना बनाता है। बहुत ही दिलचस्प फिल्म है। मैंने इसे हाई स्कूल में देखा था।
और मुझे इसका संगीत भी पसंद आया। बहुत बढ़िया।
— मिशेल लेग्रैंड।
ड्राइवर पहले चार छंद गुनगुनाता है, फिर रियरव्यू मिरर से दोबारा आओमामे की ओर देखता है।
— आपको पता है, मुझे तो ऐसा लगता है कि आपका अंदाज़ कुछ-कुछ फेय डुनावे की याद दिलाता है, जिस तरह से वह उस ज़माने में थीं।
"धन्यवाद," आओमामे ने जवाब दिया, अपने होठों पर खिल रही मुस्कान को छिपाने की कोशिश करते हुए।
*

जैसा कि ड्राइवर ने अनुमान लगाया था, मेट्रोपॉलिटन हाईवे नंबर 3 पर शहर के केंद्र की ओर जाने वाला रास्ता बुरी तरह जाम से भरा हुआ था। प्रवेश द्वार से सौ मीटर की दूरी पर ही जाम शुरू हो गया था। यह एक खूबसूरत जाम था, फोटोग्राफी के लिए एकदम सही और संग्रह में जोड़ने के लिए उपयुक्त। और यही तो आओमामे चाहती थी। वही कपड़े, वही सड़क, वही जाम। दुर्भाग्य से, रेडियो पर जनाचेक का सिम्फोनीटा नहीं बज रहा था, और रेडियो भी उस टोयोटा क्राउन रॉयल सैलून के रेडियो जितना अच्छा नहीं था। लेकिन इससे ज़्यादा उम्मीद करना भी बेकार था। दो ट्रकों के बीच फंसी कार कछुए की तरह धीमी गति से आगे बढ़ रही थी। कुछ देर रुकी रही, फिर थोड़ी आगे बढ़ी। जब कार रुकी थी, बगल वाली लेन में रेफ्रिजरेटर ट्रक का चालक एक कॉमिक बुक को बड़े चाव से पढ़ रहा था। एक हल्के भूरे रंग की

टोयोटा कोरोना मार्क II में एक अधेड़ उम्र का जोड़ा बैठा था। दोनों सीधे आगे देख रहे थे, माथे पर शिकन लिए चुपचाप। शायद उनके पास बात करने के लिए कुछ नहीं था। या शायद वे जानबूझकर ऐसे बैठे थे क्योंकि उन्होंने कुछ बात की थी। आओमामे सीट पर बैठी सोच में डूबी हुई थी और चालक रेडियो सुन रहा था।
खड़खड़ाहट के साथ वे कोमाज़ावा के साइनपोस्ट पर पहुँचे और घोंघे की तरह रेंगते हुए संगेजाया की ओर चल पड़े। बीच-बीच में आओमामे खिड़की से बाहर देखती रहती। उसने सोचा, मैं इस शहर को भी अलविदा कह रही हूँ। मैं कहीं दूर जा रही हूँ। लेकिन इस विचार के बावजूद, आओमामे को महानगर से लगाव महसूस हो रहा था। राजमार्ग के किनारे बनी इमारतें बदसूरत थीं और धुएं से काली पड़ चुकी थीं, और हर जगह चकाचौंध भरे विज्ञापन लगे थे। यह एक उजाड़ दृश्य था। लोगों को ऐसी निराशाजनक जगह क्यों बनानी पड़ी? मैं यह नहीं कह रही कि दुनिया को एक छोर से दूसरे छोर तक खूबसूरत होना चाहिए, लेकिन क्या इसे इतना बदसूरत होना ज़रूरी है?
इसी बीच, उसकी नज़र के सामने एक जानी-पहचानी जगह दिखाई दी। यह वही जगह थी जहाँ वह टैक्सी से उतरी थी। उस ड्राइवर ने उसे कानाफूसी में आपातकालीन सीढ़ियों के बारे में बताया था। सामने एस्सो पेट्रोल पंप का विशाल बिलबोर्ड था। एक मुस्कुराता हुआ बाघ पेट्रोल पंप पकड़े हुए था। यह बिल्कुल वही बिलबोर्ड था। आपके टैंक में एक बाघ।
ओमामे को एहसास हुआ कि उसका गला सूख रहा है। उसने एक बार खांसा और अपने बैग से कुछ नींबू पानी की गोलियां निकालीं। एक गोली खाकर उसने डिब्बा वापस रख दिया।
फिर उसने अपने बैग में रखी बंदूक का हैंडल कसकर पकड़ा। उसने हाथ में उसका वजन और मजबूती महसूस की। ठीक है, उसने सोचा। तभी गाड़ी थोड़ी आगे बढ़ी।
"बाईं लेन में चले जाओ," उसने ड्राइवर से कहा।
"लेकिन आप अभी भी दाईं ओर जा सकते हैं," उसने धीरे से विरोध किया। "और इकेजिरी से बाहर निकलने का रास्ता दाईं ओर है। अगर हम अभी बाईं ओर मुड़ेंगे, तो हमें बहुत मुश्किल होगी।"
आओमामे उनके विरोध को स्वीकार नहीं करता है।
बाईं ओर चलें।
"जैसी आपकी इच्छा," ड्राइवर ने हताशा से कहा।
उसने खिड़की से हाथ बाहर निकालकर अपने पीछे आ रहे रेफ्रिजरेटेड ट्रक को इशारा किया, और यह सुनिश्चित करने के बाद कि उसे देख लिया गया है, वह उसके आगे बाईं लेन में चला गया। पचास गज आगे जाकर कार फिर रुक गई।
मैं नीचे आ रहा हूँ। दरवाजा खोलो।
टैक्सी चालक ने हैरानी से कहा, "उतरना है? आपका क्या मतलब है? यहाँ?"
"हां, यहीं। मुझे यहां काम करना है।"
"लेकिन हम महानगर के बीचोंबीच हैं! यह खतरनाक है! आप कहाँ जा रहे हैं?"
— चिंता मत करो, थोड़ी दूर आगे एक आपातकालीन सीढ़ी है।
"क्या वहाँ कोई आपातकालीन सीढ़ी है?" ड्राइवर ने सिर हिलाते हुए कहा। "मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता। अगर यह बात फैल गई कि मैंने किसी ग्राहक को ऐसी जगह पर गाड़ी से उतरने दिया, तो मैं बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ जाऊँगा। मेट्रोपोलिटाना का प्रबंधन करने वाली कंपनी मुझे नज़र न रखने के लिए डांट रही है! इसलिए कृपया मेरी बात समझिए।"

"लेकिन मुझे काम करना है और मुझे यहाँ उतरना ही होगा," आओमामे ने अपने बटुए से एक और दस हज़ार येन का नोट निकालते हुए, उसे उंगलियों के बीच दबाकर ड्राइवर को देते हुए कहा। "ज़िद करने के लिए माफ़ी चाहती हूँ, लेकिन असुविधा के लिए क्षमा करें। कृपया मुझे उतरने दें।"
ड्राइवर ने बिल नहीं लिया। उसने हताशा से लीवर खींचा और बायां पिछला दरवाजा अपने आप खुल गया।
"मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है। मेरे पास पहले से ही काफ़ी है। लेकिन कृपया सावधान रहें। मेट्रो में आपातकालीन लेन नहीं है और चाहे ट्रैफ़िक कितना भी व्यस्त क्यों न हो, पैदल चलना खतरनाक है।"
"धन्यवाद," आओमामे ने उत्तर दिया।
कार से बाहर निकलने के बाद, उसने ड्राइवर की बाईं खिड़की पर दस्तक दी, और उसने खिड़की नीचे कर दी। आओमामे झुकी और नोट उसके हाथ में थमा दिया।
"इसे ले लीजिए, कृपया। चिंता मत कीजिए। मेरे पास बहुत पैसा है।"
ड्राइवर ने पहले आओमामे को देखा और फिर बिल को।
"अगर पुलिस या कंपनी मेरे बारे में कुछ भी कहें, तो उनसे कहना कि मैंने तुम्हें बंदूक से धमकाया था और तुम्हारे पास कोई विकल्प नहीं था। इस तरह उनके पास तुमसे बात करने के लिए कुछ नहीं बचेगा।"
ड्राइवर को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या सुन रहा है। क्या बहुत ज़्यादा पैसे मांगे जा रहे हैं? क्या उसे बंदूक से धमकाया जा रहा है? फिर भी, उसने दस हज़ार येन का नोट ले लिया, शायद इस डर से कि अगर उसने मना किया तो कुछ बुरा हो जाएगा।
*

पहले की तरह, आओमामे रेलिंग और बाईं लेन के किनारे के बीच से निकलकर शिबुया की ओर चल पड़ी। उसे अभी भी लगभग पचास मीटर चलना था। गाड़ियों में बैठे लोग उसे हैरानी से देख रहे थे। लेकिन आओमामे बेफिक्र, गर्व से, लंबे-लंबे कदमों से और सीधी कमर के साथ चलती रही, मानो पेरिस फैशन वीक में कोई मॉडल हो। हवा से उसके बाल बिखर रहे थे। दूसरी तरफ खाली लेन में तेज़ रफ़्तार से दौड़ते ट्रकों से सड़क बुरी तरह हिल रही थी। एस्सो का बिलबोर्ड बड़ा होता चला गया, जब तक कि आओमामे आखिरकार उस जानी-पहचानी आपातकालीन पार्किंग जगह पर नहीं पहुँच गई।
*

सब कुछ पिछली बार जैसा ही दिख रहा था। लोहे की जाली, और उसके बगल में आपातकालीन कॉल के लिए पीला टेलीफोन बूथ।
ओमामे ने सोचा कि यह 1Q84 का शुरुआती बिंदु था।
जैसे ही मैं सीढ़ियों से उतरकर नेशनल रोड 246 पर आई, दुनिया बदल गई। तो चलिए, एक बार फिर नीचे चलते हैं! पिछली बार अप्रैल की शुरुआत थी और मैंने बेज रंग का ओवरकोट पहना था। अब सितंबर की शुरुआत है और ओवरकोट पहनने के लिए बहुत गर्मी है। लेकिन इसके अलावा, मैंने बिल्कुल वही कपड़े पहने हैं जो तब पहने थे। ये वही कपड़े हैं जो मैंने शिबुया के होटल में उस तेल तस्कर को मारते समय पहने थे। जुनको शिमाडा का सूट, चार्ल्स जॉर्डन की हील्स, सफेद शर्ट, टाइट्स और सफेद पैडेड ब्रा। मैंने अपनी स्कर्ट उठाई, रेलिंग के ऊपर से छलांग लगाई और सीढ़ियों से नीचे उतर गई।
मैं वही काम दोबारा कर रहा हूँ, बस जिज्ञासावश। मैं जानना चाहता हूँ कि अगर मैं वही सब दोहराऊँ, उसी जगह पर, उसी पोशाक में, तो क्या होगा। मैं खुद को

बचाने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। मुझे मौत से डर नहीं लगता। जब समय आएगा, तो मैं ज़रा भी नहीं हिचकिचाऊँगा। मैं मुस्कुराते हुए मर सकता हूँ। लेकिन मैं अज्ञानी होकर, बिना यह समझे कि चीजें कैसी होती हैं, मरना नहीं चाहता। मैं हर वो चीज़ आज़माना चाहता हूँ जो आज़माई जा सकती है। अगर मैं सफल नहीं हुआ, तो कोई बात नहीं। मैं आखिरी पल तक अपनी पूरी कोशिश करूँगा। यही मेरा जीने का तरीका है।
ओमामे ने रेलिंग पर झुककर आपातकालीन सीढ़ी को ढूंढा। लेकिन सीढ़ी गायब थी। उसने कई बार देखा, लेकिन नतीजा वही रहा। सीढ़ी गायब हो चुकी थी।
आओमामे ने अपने होंठ काटे और भौंहें चढ़ाईं।
वह गलत जगह पर नहीं था। वह आपातकालीन पार्किंग स्थल था। उसके चारों ओर का नज़ारा वही था, और उसकी आँखों के सामने एस्सो का बिलबोर्ड था। 1984 की दुनिया में, सीढ़ी वहीं थी। आओमामे ने उस अजीब टैक्सी ड्राइवर के निर्देशों का पालन करते हुए उसे बड़ी आसानी से ढूंढ लिया था। फिर वह रेलिंग के ऊपर से कूदकर नीचे उतर गया था। लेकिन 1Q84 में, सीढ़ी गायब थी।
निकास द्वार अवरुद्ध था।
ओमामे ने अपना चेहरा शांत किया, चारों ओर ध्यान से देखा, फिर बिलबोर्ड की ओर देखा। बाघ बगल में देख रहा था, खुशी से मुस्कुरा रहा था, उसके हाथ में पेट्रोल पंप था और उसकी पूंछ हवा में उठी हुई थी। वह बेहद खुश और संतुष्ट था।
जाहिर है, आओमामे ने सोचा।
वह यह बात शुरू से जानती थी। नेता ने ओकुरा होटल के सुइट में उसके हाथों मरने से पहले उसे यह बात साफ-साफ कह दी थी। 1Q84 से 1984 में वापस जाना संभव नहीं है। दोनों दुनियाओं के बीच का दरवाजा केवल एक ही दिशा में खुलता है।
लेकिन आओमामे इसे अपनी आँखों से देखना चाहती थी। यही उसका स्वभाव था। और उसने देख भी लिया। समाप्त। जो सिद्ध करना था। Q.E.D.
*

आओमामे रेलिंग से टेक लगाकर आसमान की ओर देखने लगी। मौसम एकदम सुहावना था। नीले आसमान में कुछ लंबे, पतले बादल छाया हुआ था। दूर-दूर तक सब कुछ दिखाई दे रहा था। ऐसा लग रहा था मानो शहर के ऊपर आसमान है ही नहीं। लेकिन चांद कहीं नज़र नहीं आ रहा था। आखिर वो कहां गायब हो गया? आओमामे सोचने लगी। खैर, चांद तो चांद है, मैं तो मैं हूं। हम सबकी अपनी-अपनी जिंदगी और अपने-अपने काम हैं। फेय डुनावे अब सिगरेट निकालती और बेपरवाही से लाइटर से जला लेती। वो बड़े ही सलीके से आंखें सिकोड़ती। लेकिन आओमामे न तो सिगरेट पीती थी और न ही उसके पास सिगरेट या लाइटर था। उसके बैग में सिर्फ कुछ नींबू के स्वाद वाली खांसी की गोलियां थीं। साथ ही एक नौ मिलीमीटर की स्टील की ऑटोमैटिक पिस्टल और एक छेनी, जिसे उसने कई आदमियों की पीठ में घुसा दिया था। ये दोनों चीजें शायद तंबाकू से भी ज्यादा घातक थीं।
आओमामे ने ट्रैफिक में फंसी गाड़ियों की कतार पर नज़र डाली। लोग अपनी-अपनी गाड़ियों में बैठे उत्सुकता से उसे देख रहे थे। यह स्वाभाविक भी था। आम नागरिक को मेट्रोपॉलिटन एक्सप्रेसवे पर चलते देखना आम बात नहीं थी। खासकर तब, जब वह एक युवती हो, जिसने छोटी स्कर्ट, ऊंची हील और हरे लेंस वाला चश्मा पहना हो और मुस्कुरा रही हो। अगर लोग उसे न देख रहे होते, तो यह और भी अजीब लगता।

बिना भूले उन्हें दोहराती थी। अकेले में, लेकिन ज़ोर से। वह अपने आसपास की जिज्ञासु निगाहों और हंसी पर ध्यान नहीं देती थी। महत्वपूर्ण बात यह है कि भगवान आपको देख रहे हैं। कोई भी उनकी निगाह से बच नहीं सकता।

बडा भाई आपको देख रहा है।

हे स्वर्ग में विराजमान प्रभु, तेरा नाम पवित्र माना जाए, तेरा राज्य आए। हमारे पापों को क्षमा कर, हमारे मार्ग को आशीष दे। आमीन।

नई मर्सिडीज की स्टीयरिंग व्हील को कसकर पकड़े हुए खूबसूरत महिला अब भी उसे घूर रही थी। उसे ठीक से समझ नहीं आ रहा था - ठीक वैसे ही जैसे उसके आसपास के सभी लोगों को - कि आओमामे के हाथों में बंदूक का क्या मतलब है। अगर उसे समझ आ जाता, तो वह मुझसे नज़रें हटा लेती, आओमामे ने सोचा। अगर उसने मेरे दिमाग के टुकड़े- टुकड़े होते देखे, तो वह फिर कभी दोपहर का खाना या रात का खाना नहीं खाएगी। इसलिए मेरी सलाह है, उसने खुद से कहा। अपना सिर आराम से घुमा लो! तुम्हें पता है मैं अपने दांत साफ नहीं करती। मेरे मुंह में जर्मनी में बनी हेकलर एंड कोच पिस्तौल है। मैंने प्रार्थना भी की है। मुझे यकीन है कि तुम जानती हो इसका क्या मतलब है।
मेरी सलाह सुनो, यह बहुत ज़रूरी है। अपना सिर घुमाओ, अपनी चांदी की मर्सिडीज़ स्टार्ट करो और बिना कुछ देखे घर जाओ। अपने पति और बच्चों के पास जाओ जो तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं और अपनी शांत ज़िंदगी जियो। यह नज़ारा तुम्हारे जैसे किसी के लिए नहीं है। मेरे हाथ में एक असली बंदूक है, अपनी पूरी कुरूपता के साथ। इसमें सात बदसूरत कारतूस भरे हुए हैं। और, जैसा कि एंटोन चेखव ने कहा था, अगर कहानी में बंदूक दिखाई देती है, तो उसे चलाना ही होगा। यही तो कहानी है।
लेकिन उस महिला ने उससे अपनी निगाहें नहीं हटाईं। आओमामे ने हार मानकर धीरे से सिर हिलाया। मुझे माफ करना, लेकिन मैं अब और इंतजार नहीं कर सकती। समय समाप्त हो गया है। शो शुरू हो रहा है।
आपके टैंक में एक बाघ।
“हो, हो,” संगतकार ने कहा।
"हो, हो," बाकी छह ने एक साथ कहा।
“टेंगो!” आओमामे ने कहा और ट्रिगर पर अपनी उंगली कस ली।

अध्याय 24 ऊष्मा कितने समय तक बनी रहती है

दोपहर से पहले टोक्यो स्टेशन से निकलने वाली एक्सप्रेस ट्रेन में तेंगो सवार हो गया। यह ट्रेन तातेयामा जा रही थी। वहाँ उसने एक निजी ट्रेन पकड़ी और चिकुरा की ओर चल पड़ा। सुबह का मौसम साफ़ और हवा रहित था। समुद्र शांत था, लगभग लहरें नहीं थीं। गर्मी का मौसम खत्म हो चुका था और उसने अपनी आधी बाजू की कमीज़ के ऊपर एक पतली सूती जैकेट पहन रखी थी, जिसमें उसे आराम महसूस हो रहा था। समुद्र किनारे बसा यह शहर छुट्टियों पर आए लोगों से खाली हो चुका था और सड़कें आश्चर्यजनक रूप से सुनसान थीं। तेंगो ने सोचा, यह सचमुच बिल्लियों का शहर बन गया था।
उसने स्टेशन के सामने एक रेस्तरां में कुछ खाया और फिर टैक्सी में बैठ गया। वह एक बजे के बाद अस्पताल पहुँचा। स्वागत द्वार पर उसी अधेड़ उम्र की नर्स ने उसका स्वागत किया। वही नर्स थी जिसने पिछली रात फोन उठाया था। नर्स तामुरा।
उसने तेंगो को पहचान लिया और इस बार वह उसके प्रति थोड़ी ज़्यादा दोस्ताना थी। उसने मुस्कुरा भी दिया। शायद इसका एक कारण यह भी था कि वह ज़्यादा साफ-सुथरे कपड़े पहने हुए था।
वह उसे कैफेटेरिया ले गया और उसे कॉफी की पेशकश की।
"आप यहीं इंतजार कीजिए। डॉक्टर अभी आएंगे," उसने कहा।
दस मिनट बाद, डॉक्टर तौलिए से हाथ पोंछते हुए प्रकट हुए। वे लगभग पचास वर्ष के थे, जिनके बाल मोटे और थोड़े भूरे हो रहे थे। ऐसा लग रहा था कि वे काम में व्यस्त थे और उन्होंने गाउन नहीं पहना था। उन्होंने ग्रे रंग का ट्रैकसूट और फटे हुए स्नीकर्स पहने हुए थे। अपने पहनावे और हाव-भाव से वे किसी सैनिटोरियम के डॉक्टर से ज़्यादा डिवीजन बी से भागने में नाकाम रहे किसी प्रशिक्षक की तरह लग रहे थे।
उन्होंने लगभग वही बात दोहराई जो उन्होंने पिछली रात फोन पर कही थी। उन्होंने खेद व्यक्त करते हुए बताया कि दुर्भाग्यवश, इस समय दवा से और कुछ नहीं किया जा सकता। उनके हावभाव और शब्दों से खेद वास्तविक प्रतीत हो रहा था।
— उनके बेटे के प्रोत्साहन के अलावा, हमारे पास उन्हें लड़ने के लिए प्रोत्साहित करने का कोई और तरीका नहीं है।
“क्या वह लोगों की बातें सुन सकता है?” टेंगो ने पूछा।
डॉक्टर ने अपनी ठंडी हो चुकी हरी चाय की चुस्की लेते हुए माथे पर शिकन डाली।
सच कहूँ तो, मुझे भी नहीं पता। आपके पिता कोमा में हैं। अगर आप उनसे बात भी करें, तो भी वे कोई प्रतिक्रिया नहीं देते। कुछ मरीज़, गहरे कोमा में भी, कही गई बातें सुनते और समझते हैं।
"लेकिन आप यह नहीं बता सकते कि वह सुनता है या नहीं।"
- बिल्कुल।
"मैं आज रात साढ़े छह बजे तक रुक सकता हूँ," टेंगो ने कहा। "मैं तब तक उसके साथ रहूँगा और उससे बात करूँगा।"

"अगर आपको कोई भी प्रतिक्रिया दिखे तो मुझे जरूर बताएं। मैं यहीं रहूंगा," डॉक्टर ने कहा।
एक युवा नर्स, जिसके बैज पर अदाची लिखा था, उसे उसके पिता के कमरे में ले गई। उन्हें अकेले ही गहन चिकित्सा वार्ड में ले जाया गया था। स्थिति बदल चुकी थी। उन्हें यहाँ से कहीं और ले जाना संभव नहीं था। वह कमरा लंबा और संकरा था, जो आरामदायक नहीं था। बिस्तर ने लगभग आधी जगह घेर रखी थी। खिड़की के बाहर चीड़ के पेड़ों का एक झुंड था, जिसे हवा से बचाने के लिए लगाया गया था। वह घना जंगल मानो बाहर की जीवंत दुनिया और इस जगह के बीच एक दीवार बना रहा था। नर्स चली गई, और तेंगो अपने पिता के साथ अकेला रह गया, जो पीठ के बल लेटे हुए थे। वह बिस्तर के बगल में रखे लकड़ी के स्टूल पर बैठ गया और बूढ़े व्यक्ति को देखने लगा। बिस्तर के बगल में एक IV पोल लगा था, और प्लास्टिक की थैली से एक ट्यूब उसके पिता की बांह की नस में जा रही थी। दूसरी ट्यूब मूत्रमार्ग में मूत्र इकट्ठा करने के लिए थी, लेकिन हैरानी की बात यह थी कि बहुत कम मूत्र इकट्ठा हुआ था। वह आदमी एक महीने पहले की तुलना में और भी कमजोर दिख रहा था, जब उसने उसे आखिरी बार देखा था। उसके दुबले-पतले गालों पर दो दिन की सफेद दाढ़ी दिखाई दे रही थी। उसकी धंसी हुई आंखें अब और भी ज्यादा धंसी हुई थीं। इतनी ज्यादा कि ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें किसी खास औजार से निकाला गया हो। उसकी पलकें शटर की तरह कसकर झुकी हुई थीं। उसका मुंह थोड़ा खुला हुआ था। उसकी सांसें सुनाई नहीं दे रही थीं, लेकिन अगर आप अपना चेहरा उसके पास ले जाते, तो आप एक हल्की सी फुसफुसाहट महसूस कर सकते थे जो उसके शरीर में बची हुई थोड़ी सी जान का संकेत दे रही थी। फोन पर डॉक्टर के चेहरे के भाव को टेंगो ने बड़ी स्पष्ट रूप से समझ लिया। "जैसे कोई ट्रेन धीरे-धीरे रुकती जा रही हो।" यह एक ऐसी ट्रेन थी जिसकी गति धीरे-धीरे कम होती गई, केवल जड़त्व के बल पर चलती रही, और अंत में एक सुनसान बंजर भूमि के बीचोंबीच आकर रुक गई। अच्छी बात सिर्फ यह थी कि डिब्बों में कोई यात्री नहीं था। रेगिस्तान के बीचोंबीच ट्रेन के रुकने से किसी को कोई असुविधा नहीं हुई।
टेंगो ने सोचा, मुझे उससे बात करनी होगी, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि कैसे और किस लहजे में कहे। उसके दिमाग में बस निरर्थक शब्द ही आ रहे थे।
"पिताजी," उसने कमजोर, लगभग बुदबुदाती हुई आवाज में कहा। लेकिन फिर उसने कुछ नहीं कहा।
वह अपनी कुर्सी से उठा, खिड़की के पास गया और करीने से सजे लॉन और चीड़ के पेड़ों के झुरमुट को देखने लगा। एक कौआ एंटीना पर बैठा धूप सेंक रहा था और नीचे की दुनिया को समझदारी से और कुछ हद तक तिरस्कार भरी निगाहों से देख रहा था। पलंग के सिरहाने पर अलार्म घड़ी वाला एक रेडियो रखा था, लेकिन बूढ़े आदमी को अब न तो घड़ी की ज़रूरत थी और न ही रेडियो की।
"मैं टेंगो हूँ। मैं अभी टोक्यो से आया हूँ। क्या आप मुझे सुन रहे हैं?" उसने खिड़की पर खड़े बूढ़े आदमी से कहा। कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। उसके शब्द ठंडी हवा में हल्के से कांपे और बिना कोई निशान छोड़े शून्य में विलीन हो गए। टेंगो ने सोचा, यह आदमी मरने के कगार पर है। उसकी धँसी हुई आँखों से यह साफ़ पता चल रहा था। उसने जीवन से विमुख होने का निश्चय कर लिया था। उसने अपनी आँखें बंद कर ली थीं और गहरी नींद में सो गया था। कोई उससे कुछ भी कहे, उसे कितना भी प्रोत्साहन मिले, उसका निर्णय नहीं बदल सकता था। चिकित्सकीय रूप से

वह अभी भी जीवित था। लेकिन उसके लिए जीवन समाप्त हो चुका था। अब उसे जीने की कोई इच्छा या कारण नहीं बचा था।
टेंगो के पास यही एकमात्र उपाय था कि वह उनकी इच्छा का सम्मान करे और उन्हें शांतिपूर्वक मृत्यु को प्राप्त होने दे। उनका चेहरा अत्यंत शांत था। उन्हें अब कोई कष्ट नहीं था। जैसा कि डॉक्टर ने फोन पर कहा था, यही एकमात्र राहत थी। फिर भी, टेंगो को उनसे बात करनी ही थी। पहली बात तो यह कि उन्होंने उस डॉक्टर से वादा किया था जो उनके पिता के प्रति इतने समर्पित थे। दूसरी बात यह थी— उन्हें ठीक से समझ नहीं आ रहा था कि इसे कैसे कहें—कि यह शिष्टाचार की बात थी। उनके पिता से हुए काफी समय से कोई वास्तविक बातचीत नहीं हुई थी। वे मामूली बातें भी नहीं करते थे। आखिरी बार जब उनके बीच बातचीत हुई थी, तब टेंगो मिडिल स्कूल में थे। तब से टेंगो शायद ही कभी घर आए थे, और जब उन्हें कोई काम होता था, तो वे अपने पिता से मिलने से बचने की पूरी कोशिश करते थे।
लेकिन गहरी बेहोशी में पड़ा यह व्यक्ति चुपचाप मौत की ओर बढ़ रहा था। जब से उसे पता चला था कि वह उसका असली पिता नहीं है, टेंगो के कंधों से एक बड़ा बोझ उतर गया था और वह कुछ हद तक शांत हो गया था। अंत में, हर कोई अपने बोझ से मुक्त हो गया था।
भले ही उनके बीच कोई वास्तविक रक्त संबंध नहीं था, कम से कम कागज़ पर तो नहीं, लेकिन टेंगो उनका बेटा था और उन्होंने ही उसे तब तक पाला-पोसा था जब तक वह खुद की देखभाल करने लायक नहीं हो गया। कम से कम यह उनका नैतिक कर्तव्य था। उन्हें उसे अपने अब तक के जीवन और अपने विश्वासों के बारे में बताना अनिवार्य था। नहीं, यह कोई बाध्यता नहीं थी, बल्कि शिष्टाचार की बात थी। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि वह आदमी उनकी बात सुन सकता है या नहीं, या इससे कोई फायदा होता है या नहीं।
*

टेंगो बिस्तर के बगल में रखे स्टूल पर फिर से बैठ गया और अपने पिता को अपने जीवन के बारे में बताने लगा, उस साल से जब उसने हाई स्कूल में दाखिला लिया और जूडो क्लब के छात्रावास में रहने लगा। तब से, उनके जीवन में लगभग हर समानता खत्म हो गई थी, और न ही किसी को दूसरे की गतिविधियों में कोई दिलचस्पी थी। शायद अब उनके बीच पैदा हुई दूरी को पाटने का समय आ गया था।
टेंगो को अपने हाई स्कूल के दिनों के बारे में ज़्यादा कुछ कहना नहीं था। उसका दाखिला चिबा प्रांत के एक निजी हाई स्कूल में हो गया था, जो अपने बेहतरीन जूडो क्लब के लिए मशहूर था। वह आसानी से किसी बेहतर स्कूल में दाखिला ले सकता था, लेकिन उस हाई स्कूल की सुविधाएं उसे रास आईं। उसे ट्यूशन फीस से छूट थी, वह छात्रावास में रह सकता था, और साथ ही उसे दिन में तीन बार खाना मिलता था। टेंगो क्लब का मुख्य फाइटर बन गया था। ट्रेनिंग सेशन के बीच वह अपनी पढ़ाई भी करता था (और उस स्कूल में उसे अपनी कक्षा में सर्वश्रेष्ठ बनने के लिए ज़्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती थी), और छुट्टियों के दौरान वह अपने क्लब के साथियों के साथ मिलकर ऐसे काम ढूंढता था जिनमें शारीरिक मेहनत करनी पड़ती थी। इस तरह वह कुछ पॉकेट मनी कमा लेता था। करने को बहुत कुछ था और वह सुबह से शाम तक व्यस्त रहता था। हाई स्कूल के अपने तीन सालों में वह बेहद व्यस्त रहा था, इसके अलावा उसके पास कहने को ज़्यादा कुछ नहीं था। वह समय बहुत सुखद नहीं था, और उसने कोई दोस्त भी नहीं बनाए थे। स्कूल में बहुत सारे नियम थे और उसे

नहीं हुई। लेकिन वह उनमें से किसी के भी प्यार में पागल नहीं हुआ था। वे बस साथ थीं और वह उनके साथ सोता था। वे एक-दूसरे के खालीपन को भरती थीं। यह वाकई काफी असामान्य था, लेकिन जिन लड़कियों ने उससे प्यार किया, उनसे उसे कभी प्यार नहीं हुआ।
टेंगो ने अपने बेहोश पिता को यह सब बताया। पहले तो वह धीरे-धीरे, सोच-समझकर शब्दों का चुनाव करते हुए बोला, लेकिन फिर उसने खुलकर बोलना शुरू कर दिया और अंत तक उसकी आवाज़ में एक अलग ही जोश आ गया था। उसने यौनिकता के बारे में खुलकर बात की। अब शर्माने का समय नहीं था। उसके पिता गहरी नींद में, बिना हिले-डुले, चेहरा ऊपर की ओर किए हुए, उसी अवस्था में सो रहे थे। उनकी साँसों में भी कोई बदलाव नहीं आया था।
तीन बजे से पहले नर्स आई, उसने उसकी IV और मूत्र संग्रह पात्र बदला और उसका तापमान लिया। वह लगभग पैंतीस वर्ष की एक मजबूत नर्स थी, जिसका सीना चौड़ा था। उसके बैज पर ओमुरा लिखा था। उसने अपने कसकर बंधे बालों में एक कलम पकड़ रखी थी।
"क्या आपने कोई बदलाव देखा है?" उसने अपने बालों से निकाली हुई कलम से कागज के एक टुकड़े पर लिखते हुए पूछा।
"कुछ नहीं। यह उसी हालत में है," टेंगो ने जवाब दिया।
“अगर आपको कुछ भी दिखे तो इस बटन को दबा देना,” उसने बिस्तर के सिरहाने पर लगे एक बटन की ओर इशारा करते हुए कहा। फिर उसने पेन को वापस अपने बालों में रख लिया।
- मैं समझता हूँ।
उसके जाने के कुछ ही देर बाद दरवाजे पर हल्की सी दस्तक हुई और चश्मा पहने हुए नर्स, जिसका नाम तामुरा था, सामने आई।
"क्या आप कुछ खाना नहीं चाहते? आप कैंटीन में खा सकते हैं।"
"धन्यवाद, लेकिन मुझे अभी भूख नहीं लगी है," टेंगो ने जवाब दिया।
- आपके पिता कैसे हैं?
मैं उससे लगातार बात करता रहता था। मुझे यह भी नहीं पता कि वह मुझे सुन पाता है या नहीं।
"चलो, उससे बात करना अच्छा रहेगा," उसने हौसला बढ़ाने वाली मुस्कान के साथ कहा। "चिंता मत करो, वह तुम्हारी बात ज़रूर सुनेगा!"
महिला ने धीरे से दरवाजा बंद कर दिया और टेंगो एक बार फिर अपने पिता के साथ अकेला रह गया।
*

टेंगो अपनी कहानी जारी रखता है।
कॉलेज से स्नातक होने के बाद, उन्होंने शहर के एक प्रारंभिक विद्यालय में गणित पढ़ाने की नौकरी कर ली। अब वे न तो वो प्रतिभाशाली गणितज्ञ थे जिनसे उज्ज्वल भविष्य की उम्मीद की जाती थी, न ही वो होनहार जूडो खिलाड़ी। वे बस एक साधारण विद्यालय में एक साधारण शिक्षक थे। लेकिन वे इस स्थिति में खुश थे। आखिरकार उन्हें चैन की सांस मिली। जब से उन्होंने जन्म लिया था, तब से वे आखिरकार बंधनों से मुक्त हो गए थे और अपनी मनचाही जिंदगी जी सकते थे। उन्होंने कथा लेखन शुरू किया था। उन्होंने कुछ रचनाएँ लिखीं और एक पत्रिका द्वारा आयोजित साहित्यिक प्रतियोगिता में भाग लिया। इसी दौरान उनकी मुलाकात

कोमात्सु नामक एक विलक्षण संपादक से हुई और उन्होंने सत्रह वर्षीय फुकाएरी (एरिको फुकाडा) की पुस्तक 'द क्राइसालिस ऑफ एयर' का पुनर्लेखन करने पर सहमति जताई। फुकाएरी ने कहानी तो रची थी, लेकिन उनमें साहित्यिक अभिव्यक्ति की प्रतिभा नहीं थी, इसलिए टेंगो ने यह भूमिका निभाई। रचना सफल रही और उपन्यास ने पत्रिका का साहित्यिक नवोदित पुरस्कार जीता। अब यह बेस्टसेलर बन चुका था। इसे अकुतागावा पुरस्कार नहीं मिल सका क्योंकि इसके बारे में इतनी चर्चा हुई थी कि निर्णायक मंडल उनका नाम तक सुनना नहीं चाहता था। फिर भी, इसकी बिक्री इतनी अच्छी हो रही थी कि, जैसा कि कोमात्सु ने स्वयं स्पष्ट रूप से कहा, उन्हें इसकी आवश्यकता ही नहीं थी।
टेंगो को यकीन नहीं था कि उसकी बातें उसके पिता तक पहुँच रही हैं या नहीं। और अगर उन्होंने सुन भी लिया था, तो उसे यह नहीं पता था कि उन्हें कुछ समझ आया या नहीं। उन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। और अगर उन्हें समझ भी आ रहा था, तो शायद उन्हें कहानी में कोई दिलचस्पी ही नहीं थी। शायद उन्हें यह बात परेशान कर रही थी और वे किसी और की जीवन कहानी सुनना नहीं चाहते थे। शायद वे अकेले रहना चाहते थे, अकेले सोना चाहते थे। लेकिन टेंगो उन्हें वह सब कुछ बताता रहा जो उसके मन में आ रहा था। उस छोटे से कमरे में उनके साथ अकेले, उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह और क्या करे।
उसके पिता वहीं स्थिर खड़े रहे। उनकी आँखें गहरी, काली गड्ढों की तरह कसकर बंद थीं। अगर उन पर बर्फ गिरती, तो भी वे तब तक उसी अवस्था में रहते जब तक बर्फ उनकी आँखों में भर न जाती।
*

अभी तो मैं ये नहीं कह सकता कि सब कुछ बहुत अच्छा चल रहा है, लेकिन मैं लिखना जारी रखना चाहता हूँ। दूसरों की लिखी हुई चीज़ों को दोहराने के लिए नहीं, बल्कि अपनी कहानियों को कागज़ पर उतारने के लिए। ये मुझे भाता है। कुछ ऐसा करना अच्छा लगता है जो आप करना चाहते हों। आखिरकार मेरे अंदर ये जुनून पैदा हो गया है। अभी तक मेरी कोई रचना प्रकाशित नहीं हुई है, लेकिन जल्द ही हो जाएगी। मैं शेखी नहीं बघार रहा, लेकिन आपको पता होना चाहिए कि मैं लिखने में काफी अच्छा हूँ। और कुछ संपादक मेरी लेखन शैली की सराहना भी करते हैं। इसलिए मुझे इसकी चिंता नहीं है।
लगता है मुझमें रिसीवर बनने की क्षमता है, उन्हें यह जोड़ना चाहिए था। और मैं उन्हीं काल्पनिक दुनियाओं में से एक में खिंचा चला गया जिनके बारे में मैंने लिखा था। लेकिन अब ऐसे जटिल मामलों पर चर्चा करने का कोई मतलब नहीं था। वह तो बिलकुल अलग कहानी थी। उन्होंने विषय बदलने का फैसला किया।
"मेरे लिए एक बहुत बड़ी समस्या यह है कि मैंने कभी किसी से सच्चा प्यार नहीं किया। जन्म से लेकर अब तक ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिला जिससे मैंने बिना शर्त प्यार किया हो। इतना कि मैं उसके लिए खुद को कुर्बान कर दूं। एक बार भी नहीं।" ये शब्द कहते हुए, टेंगो ने अपने सामने मौजूद दुनिया की तरह दुखी दिख रहे उस बूढ़े व्यक्ति को देखा और सोचा कि क्या उसने कभी अपने जीवन में किसी से सच्चा प्रेम किया था। शायद उसने टेंगो की माँ से सच्चा प्रेम किया था और इसीलिए उसने उसे पाला-पोसा और अपना बच्चा मान लिया, यह जानते हुए भी कि वह उसका बेटा नहीं था। अगर ऐसा था, तो उस व्यक्ति का जीवन टेंगो की तुलना में कहीं अधिक आध्यात्मिक रूप से परिपूर्ण रहा होगा।

*

शाम पांच बजे के कुछ देर बाद, नर्स ओमुरा अपने बालों में पेन लगाए हुए फिर से प्रकट हुईं और उन्होंने आईवी चेक किया। इस बार उन्होंने उनका तापमान नहीं लिया।
क्या आपने कोई बदलाव देखा है?
"नहीं, कुछ खास नहीं। वह बस सो रहा है," टेंगो ने जवाब दिया।
“डॉक्टर जल्द ही आ जाएंगे,” नर्स ने सिर हिलाते हुए कहा। “श्रीमान कावाना, आप आज कितने बजे तक रुकेंगे?”
टेंगो ने अपनी घड़ी देखी।
आज रात सात बजे से पहले मेरी ट्रेन है, इसलिए मैं लगभग साढ़े छह बजे तक रुकूंगा।
नर्स ने चार्ट पर लिखना समाप्त किया और फिर पेन को अपने बालों में वापस रख लिया।
"मैं दोपहर के भोजन के बाद से उससे बात कर रहा हूं, लेकिन ऐसा लगता है कि वह कुछ सुन ही नहीं रहा है," टेंगो ने कहा।
"मैंने नर्सिंग स्कूल में एक बात सीखी," उन्होंने कहा। "खुशी भरे शब्द हमारे कानों को आनंद से भर देते हैं। चाहे सामने वाला उन्हें समझ पाए या न समझ पाए, शारीरिक रूप से हमारे कान खुशी से झनझना उठते हैं। इसलिए, चाहे मरीज़ सुन पाए या न सुन पाए, हमें उससे ज़ोर से और खुशी से बात करनी चाहिए। पता नहीं इसका कोई मतलब हो या न हो, लेकिन इससे ज़रूर फ़ायदा होता है। मैं यह अपने अनुभव से कह रही हूँ।"
कुछ क्षण सोचने के बाद टेंगो ने कहा, "धन्यवाद।" नर्स ने हल्के से सिर हिलाया और जल्दी से कमरे से बाहर चली गई।
टेंगो और उसके पिता काफी देर तक चुप रहे। टेंगो के पास उससे कहने के लिए कुछ और नहीं था। लेकिन यह चुप्पी असहज नहीं थी। दोपहर की रोशनी धीरे-धीरे कम होती गई और चारों ओर शाम के संकेत दिखाई देने लगे। कमरे में प्रकाश की अंतिम किरणें खामोशी में विलीन हो गईं।
क्या मैंने उसे दो चंद्रमाओं के बारे में बताया था? टेंगो को अचानक आश्चर्य हुआ। उसे लग रहा था कि उसने नहीं बताया था। वह ऐसी दुनिया में रहता था जहाँ आकाश में दो चंद्रमा थे। "चाहे मैं इसे कितना भी देख लूँ, यह अब भी एक अजीब नज़ारा लगता है," वह अपने पिता से कहना चाहता था। लेकिन उसके मन में कहीं न कहीं यह बात थी कि अब इस विषय पर बात करने का कोई फायदा नहीं होगा। उसके पिता को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि आकाश में कितने चंद्रमा हैं। यह एक ऐसा मुद्दा था जिससे टेंगो को अब खुद ही निपटना था।
इसके अलावा, चाहे इस दुनिया में (या उस दुनिया में) एक, दो या तीन महीने ही क्यों न हों, तेंगो अंततः अकेला ही था। वह बस एक इंसान था, जिसकी अपनी समस्याएं और अपना स्वभाव था। महत्वपूर्ण बात महीनों की संख्या नहीं, बल्कि वह स्वयं था।
*

आधे घंटे बाद नर्स ओमुरा फिर से प्रकट हुईं। इस बार उनके बालों में कलम नहीं फंसी थी। उन्हें क्या हुआ था? तेंगो ने चिंता से सोचा। उनके साथ दो और सहायक

आए, जो एक चलता-फिरता बिस्तर लाए थे। दोनों हट्टे-कट्टे और सांवले चेहरे वाले थे। उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा। वे अजनबी लग रहे थे।
“श्रीमान कावाना, हम आपके पिताजी को जांच के लिए ले जा रहे हैं। क्या आप यहां इंतजार कर सकते हैं?” नर्स ने पूछा।
“कोई समस्या है क्या?” टेंगो ने अपनी घड़ी देखते हुए पूछा।
"नहीं," उसने सिर हिलाते हुए जवाब दिया। "हमारे पास यहाँ आवश्यक उपकरण नहीं हैं, इसलिए हमें उसे कहीं और ले जाना होगा। इसमें कोई असामान्य बात नहीं है। डॉक्टर आपसे बाद में बात करेंगे।"
"मैं समझ गया। मैं यहीं इंतजार करूंगा।"
"आप कैफेटेरिया जाकर गर्म चाय पी सकते हैं। आपको थोड़ा आराम करना चाहिए।"
- धन्यवाद।
दोनों व्यक्तियों ने उसके पिता के बेजान शरीर को, जिसमें IV लगा हुआ था, स्ट्रेचर पर उठाया। फिर वे IV स्टैंड को बगल में पकड़े हुए उसे हॉल में ले गए। वे बहुत कुशल थे। और बिल्कुल चुप थे।
"ज्यादा समय नहीं लगेगा," नर्स ने कहा।
हालांकि, काफी समय बीत जाने के बाद भी उसके पिता वापस नहीं लौटे थे। खिड़की से आने वाली रोशनी धीरे-धीरे कम होती जा रही थी। लेकिन टेंगो ने कमरे की बत्ती नहीं जलाई। उसे ऐसा लग रहा था मानो उसने कुछ बहुत महत्वपूर्ण चीज़ खो दी हो। उसके पिता ने पलंग पर एक निशान छोड़ दिया था। हालाँकि उनका शरीर ज़्यादा भारी नहीं था, फिर भी एक स्पष्ट निशान बन गया था। उस निशान को देखकर टेंगो को लगा जैसे वह दुनिया में अकेला है। उसे ऐसा महसूस हुआ कि सूरज डूबने के बाद फिर कभी नहीं उगेगा।
गोधूलि बेला के रंगों से सराबोर कमरे में, टेंगो काफी देर तक अपनी कुर्सी पर स्थिर बैठा रहा, विचारों में डूबा हुआ। एक क्षण उसे एहसास हुआ कि वास्तव में वह किसी भी चीज़ के बारे में नहीं सोच रहा था। वह बस एक अर्थहीन शून्य में डूबा हुआ था। वह धीरे से कुर्सी से उठा और शौचालय गया। फिर उसने ठंडे पानी से अपना चेहरा धोया। उसने रुमाल से खुद को सुखाया और दर्पण में खुद को देखा। उसे नर्स की कही बात याद आई और वह गर्म चाय पीने के लिए नीचे कैफेटेरिया चला गया।
*

बीस मिनट बाद वह कमरे में लौटा, लेकिन उसके पिता को अभी तक वापस नहीं लाया गया था। इसके बजाय, बिस्तर में उनके शरीर के खाली स्थान में एक अज्ञात सफेद वस्तु पड़ी थी।
यह लगभग एक मीटर और पैंतालीस सेंटीमीटर लंबा था और बेहद खूबसूरत ढंग से घुमावदार था। पहली नज़र में, ऐसा लगता मानो यह मूंगफली का छिलका हो, जो मुलायम, महीन रुई से ढका हो। और उस रुई से हल्की, लेकिन एकसमान, रेशमी चमक निकल रही थी। कमरे में, जो धीरे-धीरे अंधेरे में डूबता जा रहा था, एक हल्की नीली रोशनी उस वस्तु को घेरे हुए थी। वह बिस्तर पर शांति से पड़ा था, मानो अपने पिता के चले जाने से खाली हुए अस्थायी स्थान को भरने की कोशिश कर रहा हो। टेंगो दरवाजे पर रुक गया, उसका हाथ दरवाज़े की मूठ पर था, और उसने कुछ देर उस अजीब वस्तु को देखा। उसके होंठ हल्के से कांप रहे थे, लेकिन उसने एक शब्द भी नहीं कहा।

यह क्या है? उसने आंखें सिकोड़कर, एक ही जगह पर टकटकी लगाए हुए सोचा। मेरे पिता के घर में यह क्या कर रही है? उसने एक नज़र में ही समझ लिया था कि उसे कोई डॉक्टर या नर्स यहाँ नहीं लाई थी, उसके आस-पास एक अजीब सा माहौल था, मानो वह वास्तविकता से बिल्कुल अलग हो।
और फिर टेंगो को समझ आ गया। यह हवा का एक कोकून था।
ऐसा कुछ उसने पहली बार देखा था। उसने 'द एयर क्राइसालिस' में इनका विस्तृत वर्णन किया था, लेकिन ज़ाहिर है उसने इन्हें कभी असल में नहीं देखा था, न ही उसने कभी कल्पना की थी कि ये सचमुच मौजूद हो सकते हैं। लेकिन अब उसके सामने एक क्राइसालिस था, बिल्कुल वैसा ही जैसा उसने कल्पना की थी और किताब में चित्रित किया था। एक अजीब सा एहसास उसके पेट में जकड़ गया। फिर भी टेंगो कमरे में गया और दरवाज़ा बंद कर लिया। बेहतर था कि कोई उसे न देखे। फिर उसने अपने मुंह में जमा लार को निगल लिया, उसके गले से एक अजीब सी आवाज़ निकली।
टेंगो धीरे-धीरे बिस्तर के पास पहुँचा और लगभग एक मीटर की दूरी से वायु कोकून का ध्यानपूर्वक निरीक्षण किया। उसे पूरा यकीन था कि यह ठीक वैसा ही है जैसा उसने किताब में वर्णन किया था। इसके बारे में लिखना शुरू करने से पहले, उसने एक साधारण पेंसिल स्केच बनाया था, जिसमें उसने अपने भीतर बनी छवि को दृश्य रूप दिया था। उपन्यास पर काम करते समय, उसने उस स्केच को अपनी डेस्क के सामने दीवार पर टांग रखा था। यह देखने में कोकून जैसा लग रहा था, लेकिन फुकेरी और वह दोनों ही इसे "वायु कोकून" के अलावा कुछ और नहीं कह सकते थे।
अधिकांश बाहरी विवरण उन्होंने ही जोड़े थे। उदाहरण के लिए, मध्य में सुंदर वक्र या दोनों सिरों पर गोल उभार। ये सब टेंगो ने ही बनाए थे। फुकाएरी की मूल कहानी में ऐसी किसी बात का कोई ज़िक्र नहीं था। उनके लिए, वायु का कोकून बस एक वायु का कोकून था, अमूर्त और मूर्त के बीच की कोई चीज़, जिसे उन्होंने शब्दों में बयान करना ज़रूरी नहीं समझा था। इसलिए, टेंगो को ही इसे अधिक विस्तृत आकार देना पड़ा था। और उस समय उनकी आँखों के सामने जो कोकून था, वह मध्य में धनुषाकार और दोनों सिरों पर सुंदर रूप से गोल था।
टेंगो ने सोचा, "यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा मैंने बनाया था, जैसा मैंने वर्णन किया था। ठीक वैसे ही जैसे आकाश में दो चंद्रमाओं के साथ हुआ था। उसने जिन आकृतियों का मॉडल बनाया था, वे छोटी से छोटी बारीकी तक वास्तविकता बन गई थीं। कारण और परिणाम आपस में मिल गए थे।"
उसके हाथों और पैरों की हर नस फड़कने लगी और रोंगटे खड़े हो गए। वह अब यह नहीं बता पा रहा था कि उसके आसपास की दुनिया में कितना सच है और कितना झूठ। कितना फुकाएरी का है और कितना उसका। और कितना "हमारा" है।
प्यूपा के ऊपरी हिस्से में एक दरार थी। वह दो हिस्सों में बंटने ही वाला था। दरार लगभग दो सेंटीमीटर की थी। अगर वह झुककर उसमें से देखता, तो उसे अंदर का नजारा दिख जाता। लेकिन टेंगो में हिम्मत नहीं थी। बिस्तर के बगल वाली कुर्सी पर बैठा, वह अपनी सांसों को नियंत्रित करने की कोशिश कर रहा था, उसके कंधे हल्के से कांप रहे थे और उसकी निगाहें उस पर टिकी हुई थीं। सफेद प्यूपा स्थिर खड़ा था, हल्की सी चमक बिखेर रहा था। वह चुपचाप उसके पास आने का इंतजार कर रहा था, मानो किसी गणितीय कथन की तरह खुद को उसके सामने प्रस्तुत कर रहा हो।
उसके अंदर क्या था?
वह उसे क्या दिखाने वाला था?

किताब की नायिका ने अपने भीतर अपना ही दूसरा रूप खोज लिया था। अपनी संतान को। फिर वह अपने समुदाय से भाग गई, अपनी संतान को त्यागकर। लेकिन उसके कोकून में (और टेंगो सहज रूप से जानता था कि यह उसका ही है) क्या छिपा था? कुछ अच्छा या कुछ बुरा? कुछ ऐसा जो उसे कहीं ले जाए या उसकी रक्षा करे? और उसे यहाँ कौन लाया था?
टेंगो को भी पता था कि उसे कुछ करना होगा, लेकिन उसमें उठकर अंदर देखने की हिम्मत नहीं थी। वह डरा हुआ था। शायद उस कोकून में जो छिपा था, वह उसे नुकसान पहुंचा सकता था या उसकी जिंदगी पूरी तरह बदल सकता था। इस सोच के साथ ही टेंगो उस छोटी सी कुर्सी पर जम गया, मानो उसके पास भागने के लिए कोई और जगह न हो। यही डर था जिसने उसे पारिवारिक रजिस्टर देखने या आओमामे को ढूंढने से रोक रखा था। वह बस यह जानना नहीं चाहता था कि उसके लिए तैयार किए गए कोकून में क्या है। वह चाहता था, अगर मुमकिन हो तो, बिना जाने आगे बढ़ जाए। उस कमरे से भाग जाए, ट्रेन में बैठे और टोक्यो लौट जाए। अपनी आंखें बंद कर ले, कान ढक ले और अपनी ही छोटी सी दुनिया में पनाह ले।
लेकिन टेंगो अच्छी तरह जानता था कि वह ऐसा नहीं कर सकता। उसने मन ही मन कहा, "अगर मैं अंदर छिपी चीज़ देखे बिना यहाँ से चला गया, तो मुझे ज़िंदगी भर पछतावा होगा। अगर मैंने उस चीज़ से नज़रें हटा लीं, तो मैं खुद को कभी माफ़ नहीं कर पाऊँगा।"
*

टेंगो काफी देर तक कुर्सी पर बैठा रहा, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। वह न तो आगे बढ़ पा रहा था और न ही पीछे हट पा रहा था। वह घुटनों पर हाथ रखकर बैठा था और उसकी निगाहें बिस्तर पर पड़े कोकून पर टिकी हुई थीं। बीच-बीच में उसकी नज़र खिड़की से बाहर चली जाती। सूरज डूब चुका था और धीरे-धीरे चीड़ के जंगल में शाम छा रही थी। हवा बिल्कुल नहीं चल रही थी और लहरों की आवाज़ भी सुनाई नहीं दे रही थी। अजीब सी शांति छाई हुई थी। जैसे-जैसे कमरे में अंधेरा छाने लगा, कोकून की सफेद रोशनी और तेज़ होती गई। टेंगो को लगा मानो वह जीवित हो। उसमें जीवन की एक कोमल चमक थी। उससे अपनी ही गर्माहट और एक हल्की सी गूंज निकल रही थी।
अंततः उसने मन बना लिया, कुर्सी से उठा और बिस्तर पर झुक गया। वह भाग नहीं सकता था। वह डरे हुए बच्चे की तरह हमेशा आँखें फेरकर नहीं जी सकता था। सत्य का ज्ञान ही मनुष्य को सही शक्ति प्रदान करता है, चाहे वह सत्य कुछ भी हो। प्यूपा में पड़ी दरार में कोई बदलाव नहीं दिख रहा था। वह न तो बड़ी हुई थी और न ही छोटी। टेंगो ने उसमें से झाँकने की कोशिश की, लेकिन उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। अंदर अँधेरा था और ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी पतली झिल्ली में लिपटा हो। टेंगो ने अपनी साँसों को शांत किया और यह सुनिश्चित किया कि उसके हाथ काँप नहीं रहे हैं, फिर उसने अपनी उंगलियाँ दो सेंटीमीटर की दरार में डालीं और धीरे से खींचा, मानो कोई दोहरा दरवाज़ा खोलने की कोशिश कर रहा हो। वह आसानी से खुल गया, बिना किसी आवाज़ या रुकावट के, मानो वह उसके खुलने का इंतज़ार कर रहा हो।
प्यूपा से निकलने वाली हल्की रोशनी ने इसे भीतर से धीरे-धीरे रोशन किया, जिससे यह बर्फ जैसी चमक बिखेर रहा था। चमक हल्की थी, लेकिन आप देख सकते थे कि इसके अंदर क्या छिपा है।

टेंगो को वहां एक खूबसूरत दस साल की लड़की मिली।
छोटी बच्ची सो रही थी। उसने एक साधारण सफेद पोशाक पहनी हुई थी, जैसे नाइटगाउन, और उसके छोटे हाथ उसकी सपाट छाती पर आपस में जुड़े हुए थे। टेंगो ने उसे देखते ही पहचान लिया। उसका चेहरा लंबा था, और उसके होंठ एक सीधी रेखा में थे, मानो किसी स्केल से खींचे गए हों।
उसके सीधे कटे हुए बाल उसके चिकने, सुंदर आकार के माथे पर बिखरे हुए थे। उसकी छोटी, ऊपर उठी हुई नाक मानो कुछ खोज रही हो। उसके गालों की हड्डियाँ किनारों से थोड़ी उभरी हुई थीं। उसकी पलकें बंद थीं, लेकिन टेंगो पहले से ही जानता था कि उनके नीचे छिपी आँखें कैसी दिखती हैं। भला वह उन्हें कैसे न जान पाता? वह बीस साल से इस चेहरे को अपने भीतर सँजोए हुए था।
Aomame, zise Tengo.
छोटी बच्ची गहरी नींद में सो रही थी। एक स्वाभाविक, गहरी नींद। उसकी साँसें बहुत धीमी चल रही थीं। उसका दिल इतनी धीमी गति से धड़क रहा था कि सुनाई भी नहीं दे रहा था। उसमें आँखें खोलने की भी ताकत नहीं थी। अभी समय नहीं आया था। उसका मन कहीं दूर था। लेकिन उसके बोले हुए शब्द ने उसके कानों को झकझोर दिया था। वह उसका नाम था।
ओमामे ने दूर से उसकी फुसफुसाहट सुनी। टेंगो, उसने सोचा। उसने साफ-साफ, ज़ोर से कहा। लेकिन हवा में लिपटी उस नन्ही बच्ची के होंठ नहीं हिले, और वह शब्द उसके कानों तक नहीं पहुँचा।
टेंगो उसे निहार रहा था, उसकी सांसें बस हल्की-हल्की चल रही थीं, मानो कोई आत्माहीन व्यक्ति हो। उसका चेहरा बेहद शांत था। उस पर उदासी, पीड़ा या चिंता का कोई निशान नहीं था। उसके छोटे और पतले होंठ मानो गहरे अर्थपूर्ण शब्द बोलने को तैयार थे। उसकी आंखें खुलने ही वाली थीं। टेंगो ने पूरे मन से प्रार्थना की कि वह खुल जाए। उसके हृदय में एक अनकही प्रार्थना उठ रही थी, लेकिन नन्ही बच्ची के जागने का कोई संकेत नहीं दिख रहा था।
"आओमामे," टेंगो ने फिर से पुकारा।
उसे उससे बहुत कुछ कहना था। बहुत कुछ साझा करना था। ऐसी बातें जो उसने सालों से अपने अंदर दबा रखी थीं। लेकिन अब वह सिर्फ उसका नाम ही ले पा रहा था। "आओमामे," उसने पुकारा।
टेंगो ने अचानक हाथ बढ़ाकर कोकून में लेटी नन्ही बच्ची के हाथ को छुआ। उसने अपनी बड़ी हथेली उस पर रख दी। ये वही नन्ही उंगलियां थीं जिन्होंने दस साल की उम्र में उसे कसकर गले लगाया था, जिन्होंने बिना किसी झिझक के उसे ढूंढा था और उसका हौसला बढ़ाया था। उस धुंधली रोशनी में सो रही नन्ही बच्ची के हाथ से निस्संदेह एक जीवित शरीर की गर्माहट निकल रही थी। आओमामे अपनी गर्माहट उसे देने के लिए इतनी दूर आई थी। बीस साल पहले कक्षा में उसने जो पैकेट उसे दिया था, उसका यही अर्थ था। आखिरकार, वह उसे खोलकर अंदर देख सकता था।
"आओमामे," टेंगो ने कहा। "मैं तुम्हें हर कीमत पर ढूंढ निकालूंगा।"
*

यहां तक कि जब धीरे-धीरे उसकी चमक फीकी पड़ गई और वह अंधेरे में समा जाने की तरह गायब हो गया, और बच्ची आओमामे भी उसके साथ गायब हो गई, जब टेंगो को यह भी नहीं पता था कि वास्तव में वह घटना घटी भी थी या नहीं, तब भी उसकी उंगलियों में उस नन्हे हाथ का स्पर्श और गर्माहट बरकरार थी।

HARUKI MURAKAMI

Volumul III din III

Traducere din limba japoneză şi note de
Iuliana Oprina şi Florin Oprina

POLIROM
2011

अक्टूबर – [illegible]

अध्याय 1 कुछ उसे परेशान कर रहा था

"कृपया धूम्रपान न करें, श्रीमान उशिकावा," उस छोटे कद के व्यक्ति ने कहा। उशिकावा ने डेस्क के दूसरी तरफ बैठे व्यक्ति पर एक संक्षिप्त नज़र डाली, फिर अपनी उंगलियों के बीच पकड़ी हुई बिना जली सेवन स्टार्स सिगरेट को देखा। "गुस्सा मत होइए," उस व्यक्ति ने विनम्रता से कहा।
उशिकावा के चेहरे पर हैरानी का भाव था, मानो उन्हें समझ ही न आ रहा हो कि सिगरेट उनकी उंगलियों के बीच कैसे आ गई।
"अरे, माफ कीजिए! बिलकुल नहीं। मैं इसे जला नहीं रहा था। मुझे तो पता भी नहीं चला कि मैं क्या कर रहा था, मेरे हाथ अपने आप ही चलने लगे।"
उशिकावा से अपनी निगाहें हटाए बिना, उस व्यक्ति ने लगभग अदृश्य भाव से सिर हिलाया। उशिकावा ने सिगरेट वापस दराज में रख दी।
दूसरा आदमी, लंबा और बालों की चोटी बांधे हुए, दरवाजे के पास खड़ा था, फ्रेम पर हल्के से टिका हुआ। वह उशिकावा को ऐसे देख रहा था जैसे दीवार पर लगे किसी दाग को देख रहा हो। उशिकावा ने सोचा, दोनों ही बड़े संदिग्ध हैं। यह तीसरी बार था जब उसने उन्हें देखा था, लेकिन चाहे कितनी भी बार देख लिया हो, उसकी घबराहट कभी कम नहीं हुई।
वे उशिकावा के अध्ययन कक्ष में थे, जो बहुत बड़ा नहीं था। मेज के दूसरी ओर छोटा, गंजा आदमी बैठा था। बोलने वाला वही था। बालों वाला आदमी एक शब्द भी नहीं बोला। मंदिर के प्रवेश द्वार पर पहरा देने वाली मूर्तियों की तरह, वह एकदम स्थिर खड़ा था, उशिकावा को घूर रहा था।
"तीन हफ्ते हो गए हैं," गंजे आदमी ने कहा।
उशिकावा ने डेस्क पर रखा कैलेंडर उठाया और उस पर लिखी तारीख देखी, फिर सिर हिलाया।
— जी हाँ। आज से ठीक तीन हफ्ते पहले हमारी मुलाकात हुई थी।
"इतने समय में मुझे आपकी ओर से कोई रिपोर्ट नहीं मिली है। मुझे लगता है मैंने पिछली बार भी आपसे कहा था कि हमारे पास समय बहुत कम है। हम एक पल भी बर्बाद नहीं कर सकते, लॉर्ड उशिकावा।"
"मैं अच्छी तरह समझता हूँ," उशिकावा ने कहा, जो सिगरेट की जगह अपने हाथ में सुनहरे लाइटर से खेल रहा था। "देरी करने का समय नहीं है, मैं पूरी तरह समझ गया हूँ।"
गंजे आदमी ने उशिकावा के बोलने का इंतजार किया।
"लेकिन मैं आपको अधूरी जानकारी नहीं देना चाहता। मैं यहाँ थोड़ा, वहाँ थोड़ा- थोड़ा कहना पसंद नहीं करता," उशिकावा ने कहा। "मैं एक पूरी तस्वीर पेश करना पसंद करता हूँ, जहाँ चीज़ें आपस में जुड़ी हों और स्पष्ट सबूतों पर आधारित हों। अगर कहानी अधूरी होगी, तो हो सकता है कि इससे हमें अनचाही परेशानी हो जाए। श्री ओंडा, शायद आपको मेरी बात पसंद न आए, लेकिन मैं इसी तरह काम करता हूँ।"
ओंडा नाम के गंजे आदमी ने उशिकावा को ठंडी निगाहों से देखा। यह साफ़ था कि वह उसे बिल्कुल पसंद नहीं करता था, लेकिन इससे उशिकावा को कोई खास फ़र्क नहीं पड़ा। क्योंकि वह ज़िंदगी जीना जानता था, उसे याद नहीं था कि उसने कभी किसी पर

अच्छा प्रभाव डाला हो। यह उसके लिए एक आम बात थी। घर पर न तो उसके माता-पिता और न ही भाई-बहन उसे पसंद करते थे, और स्कूल में न तो उसके शिक्षक और न ही सहपाठी। न ही उसकी पत्नी और न ही उसके बच्चे उससे प्यार करते थे। इसके विपरीत, अगर किसी के मन में उसके लिए स्नेह होता, तो उसे असहज महसूस होता। लेकिन इसके विपरीत होना उसके लिए सामान्य था।
"श्री उशिकावा, हम आपके कार्य करने के तरीकों का सम्मान करना चाहते हैं। और सच तो यह है कि हमने अब तक उनका सम्मान किया है। लेकिन इस बार परिस्थितियाँ अलग हैं। दुर्भाग्यवश, हम आपके द्वारा सभी जानकारी एकत्र करने तक प्रतीक्षा नहीं कर सकते।"
"भले ही आप ऐसा कहें, श्रीमान ओंडा, लेकिन आप चुपचाप मेरे संपर्क करने का इंतज़ार नहीं कर रहे थे, निष्क्रिय नहीं बैठे थे," उशिकावा ने कहा। "मेरी जांच के समानांतर, आपने भी कई तरह की कार्रवाइयां की हैं। क्या मैं सही कह रहा हूँ?"
ओंडा ने कोई जवाब नहीं दिया। उसके होंठ एक सीधी रेखा में जमे रहे और उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं बदला, लेकिन उशिकावा को लगा कि उसने सही निशाना साधा है। पिछले तीन हफ्तों से उनका पूरा संगठन उस महिला को ढूंढने की कोशिश कर रहा था, शायद उशिकावा के अलावा अन्य तरीकों से भी। लेकिन उन्हें कोई ठोस नतीजा नहीं मिला था। इसीलिए अब उसका सामना इन दो घिनौने लोगों से हुआ था।
“आप जानते ही हैं कि लोग क्या कहते हैं, कि साँपों के रास्ते में साँप ही मिलते हैं,” उशिकावा ने अपनी हथेलियाँ चौड़ी करते हुए कहा, मानो कोई दिलचस्प रहस्य उजागर कर रहा हो। और अपनी उंगलियों के पीछे मत छिपिए, मैं ही वह साँप हूँ। आप देख सकते हैं कि मैं देखने में अच्छा नहीं हूँ, लेकिन आपको यह जानना चाहिए कि मेरी सूंघने की शक्ति बहुत अच्छी है। मैं किसी भी सुराग का पता लगा सकता हूँ और उसका अंत तक पीछा कर सकता हूँ। लेकिन बस, एक साँप होने के नाते, मैं केवल अपने तरीके से और अपनी गति से काम कर सकता हूँ। मैं समझता हूँ कि समय कम है, लेकिन कृपया थोड़ा और इंतज़ार कीजिए। अगर आप थोड़ा और धैर्य नहीं दिखाएंगे, तो हम खाली हाथ रह सकते हैं।”
ओंडा धैर्यपूर्वक उशिकावा को अपने हाथों में लाइटर घुमाते हुए देखता रहा। फिर उसने ऊपर देखा और कहा:
"क्या आप हमें अब तक मिली जानकारी नहीं दे सकते? मैं आपकी स्थिति समझता हूँ, लेकिन अगर हम कुछ ठोस नतीजे लेकर नहीं आए, तो ऊपर वाले संतुष्ट नहीं होंगे। हम भी मुश्किल में हैं। इसके अलावा, आपकी स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं है।" उशिकावा ने सोचा कि उनकी भी पिटाई हो रही थी। वे युद्ध कौशल में असाधारण रूप से निपुण थे, इसीलिए उन्हें नेता के निजी अंगरक्षक के पद पर पदोन्नत किया गया था। फिर भी नेता की हत्या उनकी आँखों के सामने कर दी गई थी। यह सच था कि उनकी हत्या का कोई सबूत नहीं था। संप्रदाय के कई डॉक्टरों ने शव की जाँच की थी, लेकिन उन्हें कोई घाव नहीं मिला। लेकिन संप्रदाय के भीतर उनके पास केवल बुनियादी उपकरण और बहुत कम समय था। शायद पूर्ण फोरेंसिक पोस्टमार्टम से कुछ पता चल जाता, लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी। उन्होंने पहले ही संप्रदाय के भीतर बड़ी गोपनीयता से शव को ठिकाने लगा दिया था।
किसी भी हालत में, नेता की रक्षा करने में नाकाम रहने के कारण, वे दोनों एक नाजुक स्थिति में थे। उन्हें लापता महिला को खोजने का काम सौंपा गया था।

उन्हें आदेश था कि उसे सांपों के बिल से बाहर निकालें, लेकिन वे अभी तक उसका पता नहीं लगा पाए थे। वे सुरक्षा और बचाव में कुशल थे, लेकिन लापता व्यक्ति को खोजने का ज्ञान उनमें नहीं था।
"मैं समझ गया," उशिकावा ने कहा। "तो चलिए मैं आपको बताता हूँ कि मुझे अब तक क्या-क्या जानकारी मिली है। यह अभी पूरी नहीं है, लेकिन मैं आपको कुछ अधूरी जानकारी दे सकता हूँ।"
ओंडा कुछ देर तक उसे ध्यान से देखती रही। फिर उसने सिर हिलाया:
"कोई बात नहीं। हमारे पास कुछ और जानकारी है जो शायद आपको पहले से पता हो या न हो। हम एक-दूसरे की जानकारी को पूरा कर सकते हैं।"
उशिकावा ने लाइटर नीचे रख दिया और मेज पर अपनी उंगलियों को आपस में जोड़ लिया।
— ओकुरा होटल के अपार्टमेंट में, ओमामे नाम की युवती को लीडर के साथ स्ट्रेचिंग सेशन के लिए बुलाया गया था। यह घटना सितंबर की शुरुआत में, उसी रात हुई जब शहर में भयंकर तूफान आया था। उसने एक अलग कमरे में एक घंटे तक अभ्यास किया और फिर लीडर को सोते हुए छोड़कर चली गई। उसने लीडर को लगभग दो घंटे आराम करने देने का अनुरोध किया, और आपने वैसा ही किया। लेकिन लीडर सो नहीं रहे थे, बल्कि उनकी मृत्यु हो चुकी थी। उनके शरीर पर कोई चोट के निशान नहीं थे। ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें दिल का दौरा पड़ा हो। लेकिन इस घटना के तुरंत बाद, वह युवती गायब हो गई। उसने अपना अपार्टमेंट खाली कर दिया था और चली गई थी। अगले दिन, उसका इस्तीफा स्पोर्ट्स क्लब में पहुंचा। सब कुछ सुनियोजित था। इस स्थिति में, इसे एक साधारण दुर्घटना नहीं कहा जा सकता। हम केवल यही निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि ओमामे ने सोची-समझी साजिश के तहत लीडर की हत्या की थी।
ओंडा ने सिर हिलाया। अब तक उसे कोई आपत्ति नहीं थी।
आपका मिशन सच्चाई को सामने लाना है, और इसके लिए आपको इस महिला को ढूंढना होगा।
"हमें यह पता लगाना होगा कि क्या वाकई आओमामे ने उसकी मौत का कारण बनाया, और अगर हां, तो किस कारण से।"
उशिकावा ने मेज पर आपस में जुड़ी अपनी दस उंगलियों को ऐसे देखा मानो वह कुछ बिल्कुल असामान्य देख रहा हो। फिर उसने अपनी नज़र वक्ता की ओर उठाई।
“आपने उसके पारिवारिक संबंधों की जाँच कर ली है, है ना? उसके परिवार के सभी सदस्य साक्षी चर्च के कट्टर अनुयायी हैं। उसके माता-पिता अभी भी सक्रिय रूप से धर्म प्रचार कर रहे हैं। आओमामे का चौंतीस वर्षीय बड़ा भाई ओडावारा स्थित मुख्यालय में काम करता है। वह विवाहित है और उसके दो बच्चे हैं। उसकी पत्नी भी साक्षी चर्च की सदस्य है। उसके पूरे परिवार में, केवल आओमामे ने ही इस संप्रदाय से नाता तोड़ा है। लोग कहते हैं कि उसने अपना धर्म त्याग दिया है और अपने परिवार से सारे संपर्क तोड़ दिए हैं। लगभग बीस वर्षों से उसका अपने परिवार से कोई संपर्क नहीं है। यह सोचना भी असंभव है कि उसका परिवार किसी भगोड़े को छिपाएगा। ग्यारह वर्ष की आयु से ही इस महिला ने अपने परिवार से संपर्क तोड़ दिया है और वह अकेली रह रही है। कुछ समय तक उसके चाचा ने उसकी देखभाल की, लेकिन हाई स्कूल में प्रवेश करने के बाद से वह लगभग आत्मनिर्भर हो गई है। यह बहुत बड़ी बात है। वह दृढ़ निश्चयी महिला है।”

गंजे आदमी ने कुछ नहीं कहा। शायद उन्हें पहले से ही यह जानकारी थी।
"यह मानना मुश्किल है कि इस घटना में चर्च ऑफ द विटनेसेस का हाथ होगा। चर्च ऑफ द विटनेसेस अपने शांतिवाद और अहिंसा के लिए जाना जाता है। उनके संगठन के लिए नेता की हत्या का प्रयास करना असंभव है। मुझे लगता है आप सहमत होंगे।"
ओंडा ने सिर हिलाया:
"विटनेस चर्च का इससे कोई लेना-देना नहीं है। हम यह भी जानते हैं। हमने उसके बड़े भाई से बात की। बस यह सुनिश्चित करने के लिए। लेकिन उसे कुछ भी पता नहीं था।"
"और एहतियात के तौर पर, क्या आपने किसी तरह उसके नाखून निकाल दिए?" उशिकावा ने कहा।
ओंडा ने सवाल को नजरअंदाज कर दिया।
"यह एक मज़ाक था। एक घटिया मज़ाक, मुझे इतनी गुस्से से मत देखो। वैसे भी, उस आदमी को उसके कारनामों या आओमामे के छिपने के बारे में कुछ भी पता नहीं था," उशिकावा ने कहा। "मैं दिल से शांतिप्रिय हूँ, इसलिए मैं कोई क्रूरता नहीं करता, लेकिन मुझे भी इसके बारे में पता चला। आओमामे का विटनेस चर्च या उसके परिवार से कोई संबंध नहीं है। हालांकि, हम यह नहीं मान सकते कि उसने जो किया वह अकेले किया।"
इतना कठिन काम एक व्यक्ति के लिए संभव नहीं है। सब कुछ बड़ी कुशलता से व्यवस्थित किया गया था, और उसने निर्ममता से पूर्वनिर्धारित कदमों का पालन किया। यहाँ तक कि जिस तरह से उसने खुद को अदृश्य किया, वह भी किसी चमत्कार से कम नहीं है। ऐसे काम के लिए पैसे और बाहरी मदद की ज़रूरत होती है। आओमामे के पीछे कोई व्यक्ति या संगठन है जो किसी खास वजह से नेता की हत्या करवाना चाहता था। उसने इसी उद्देश्य के लिए सारी तैयारी की थी। लगता है हम इस बात से सहमत हैं?
"ज्यादातर," ओंडा ने सहमति जताई।
"लेकिन हमें इस बात का कोई अंदाजा नहीं है कि यह किस तरह का संगठन हो सकता है," उशिकावा ने कहा। "बेशक, आपने उसके व्यक्तिगत संबंधों की भी जांच की होगी?" ओंडा ने चुपचाप सिर हिलाया।
"लेकिन उसके कोई खास रिश्ते नहीं हैं," उशिकावा ने कहा। ऐसा लगता है कि उसके कोई दोस्त नहीं हैं, यहाँ तक कि कोई बॉयफ्रेंड भी नहीं है। हाँ, उसके सहकर्मी ज़रूर हैं, लेकिन काम खत्म होते ही, उससे कोई व्यक्तिगत संबंध नहीं रहता। कम से कम, मुझे तो ऐसा कोई सबूत नहीं मिला जिससे पता चले कि आओमामे का किसी के साथ कोई करीबी रिश्ता है। ऐसा कैसे हो सकता है? वह जवान और सेहतमंद है, और देखने में भी बुरी नहीं लगती।
उशिकावा ने दरवाजे के पास खड़े प्लेटोस की ओर देखा। उसके हावभाव या चेहरे पर कोई बदलाव नहीं आया था। शुरू से ही उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था, और ऐसा लग नहीं रहा था कि आगे भी कुछ बदलेगा। उशिकावा सोच रहा था कि क्या उस आदमी का कोई नाम है। अगर उसका कोई नाम न हो तो उसे आश्चर्य नहीं होगा।
"तुम ही हो जिसने आओमामे का चेहरा देखा है," उशिकावा ने कहा। "तुम क्या सोचते हो? क्या तुमने उसमें कुछ खास देखा?"
ओंडा ने अपना सिर हल्के से हिलाया।

"जैसा कि आपने कहा, वह एक आकर्षक युवती है। लेकिन वह इतनी सुंदर नहीं है कि लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच ले। वह शांत और सौम्य स्वभाव की है। मैं कहूंगा कि उसे अपनी प्रतिभा पर पूरा भरोसा है। हालांकि, इसके अलावा, मुझे उसमें ऐसा कुछ भी नज़र नहीं आया जो मेरा ध्यान आकर्षित करे। उसकी सूरत कोई छाप नहीं छोड़ती। मुझे तो उसके चेहरे की बारीकियां भी याद नहीं हैं। वाकई अजीब बात है।"
उशिकावा ने दरवाजे पर खड़े उस बालदार व्यक्ति की ओर देखा। शायद वह कुछ कहना चाहता था। लेकिन उस बालदार व्यक्ति ने मुंह खोलने का कोई संकेत नहीं दिया। उशिकावा ने चेलियोस की ओर देखा।
— बेशक, आपने यह भी जांच की होगी कि हाल के महीनों में आओमामे ने फोन पर किससे बात की है, है ना?
ओंडा ने अपना सिर हिलाया।
— हम अभी तक वहां नहीं पहुंचे हैं।
"मैं आपको यही सलाह देता हूँ। आपको इसे ज़रूर आज़माना चाहिए," उशिकावा ने मुस्कुराते हुए कहा। लोग तरह-तरह के फ़ोन कॉल करते और रिसीव करते हैं। बस यह देख लीजिए कि कोई किससे बात कर रहा है, इससे तुरंत पता चल जाता है कि वह किस तरह की ज़िंदगी जी रहा है। और आओमामे भी इसका अपवाद नहीं है। किसी के कॉल रिकॉर्डर को हासिल करना आसान नहीं है, लेकिन नामुमकिन भी नहीं है। और ऐसा इसलिए है क्योंकि, आखिर, साँपों के रास्ते पर, चाहे आप कुछ भी कह लें, साँप ही मिलते हैं।
ओंडा चुपचाप आगे की कहानी का इंतजार करती रही।
खैर, मैंने उसकी फ़ोन कॉल लॉग से कुछ बातें सीखीं। एक महिला के लिए यह थोड़ा अजीब है, लेकिन लगता है कि आओमामे को फ़ोन पर बात करना ज़्यादा पसंद नहीं है। लिस्ट में कुछ ही कॉल थीं, और वो भी छोटी-छोटी। कभी-कभार वो लंबी बातचीत करती थी, लेकिन ऐसा कभी-कभार ही होता था। ज़्यादातर वो ऑफिस के लोगों से बात करती थी, लेकिन उसका काम ज़्यादातर फ्रीलांस था, इसलिए उसके कुछ निजी क्लाइंट भी थे। वो फिटनेस क्लब के रिसेप्शन पर जाए बिना ही उनसे बातचीत करके अपॉइंटमेंट तय कर लेती थी। उसकी कई कॉल इसी तरह की थीं। इसमें कुछ भी संदिग्ध नहीं है। उशिकावा ने निकोटीन से सनी अपनी उंगलियों को अलग-अलग कोणों से देखा और सिगरेट के बारे में सोचने लगा। मन ही मन उसने एक सिगरेट जलाई और एक कश लिया। फिर उसने धुआं बाहर निकाला।
लेकिन मुझे दो अपवाद मिले। पहला, उसने दो बार पुलिस को फोन किया। लेकिन 110 पर नहीं, बल्कि शिंजुकु पुलिस स्टेशन के ट्रैफिक ऑफिस में। उसे बदले में वहां से कई बार फोन आए। आओमामे गाड़ी नहीं चलाती, और पुलिस अधिकारी किसी महंगे क्लब में प्राइवेट ट्रेनिंग नहीं लेते। तो यह स्टेशन का कोई निजी परिचित ही होगा। मुझे नहीं पता कौन। एक और बात जिसने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया - अब यह कुछ और है: उसे एक अनजान नंबर से कई फोन आए और उससे लंबी बातचीत हुई। उसने कभी फोन नहीं किया। मुझे वह नंबर कहीं नहीं मिला। बेशक, ऐसे लोग होते हैं जिनके फोन नंबर छिपे होते हैं, जिनके नाम रजिस्टर्ड नहीं होते। लेकिन अगर आप ठान लें तो उन्हें ढूंढा जा सकता है। लेकिन इस मामले में, मैंने कितनी भी कोशिश की, मुझे कोई नाम नहीं मिला। यह एक बंद दरवाजा है। आम लोग ऐसा नहीं कर सकते।

मेरा मतलब है, यह एक ऐसे व्यक्ति के बारे में है जिसके पास असाधारण चीजें करने के साधन हैं।
"बिल्कुल सही। इसमें कोई शक नहीं कि कोई पेशेवर शामिल है।"
"एक और सांप," ओंडा ने कहा।
उशिकावा ने अपने गंजे, बेडौल सिर को हथेली से रगड़ा और मुस्कुराया।
"बिल्कुल सही। एक और सांप। और वह भी काफी ताकतवर।"
"कम से कम हमें यह तो पता चल गया कि इस कहानी में पेशेवर लोग शामिल हैं," ओंडा ने कहा।
"बिल्कुल सही। आओमामे एक संगठन से जुड़ा हुआ है। और यह महज एक शौकिया संगठन नहीं है जो अपने खाली समय में ये सब काम करता है।"
ओंडा ने अपनी आँखें आधी बंद कीं और पलकों के नीचे से कुछ देर तक उशिकावा को देखा। फिर वह मुड़ी और बालों वाले व्यक्ति से नज़रें मिलाईं। उशिकावा ने संक्षेप में सिर हिलाकर संकेत दिया कि वह चर्चा को समझ रहा है। इसके बाद ओंडा वापस उशिकावा की ओर मुड़ गई।
"और उन्होंनें कहा।
"और," उशिकावा ने जवाब दिया, "अब मेरी बारी है आपसे सवाल पूछने की। क्या आपको कोई अंदाज़ा है कि यह कौन हो सकता है? कोई ऐसा समूह या संगठन जो नेता को खत्म करने की क्षमता रखता हो?"
ओंडा की भौहें गुस्से से सिकुड़ गईं। उसकी नाक के ऊपर तीन झुर्रियाँ दिखाई दीं।
— श्री उशिकावा, कृपया सोच-समझकर निर्णय लें। हम एक धार्मिक समूह हैं। हम मन की शांति और आध्यात्मिक मूल्यों की तलाश करते हैं। हम प्रकृति के बीच रहते हैं और प्रतिदिन कृषि और अपने रीति-रिवाजों में लगे रहते हैं। भला कौन हमें शत्रु मान सकता है? और इससे उन्हें क्या लाभ होगा?
उशिकावा के होंठों के कोने पर एक अस्पष्ट मुस्कान थी।
"हर जगह कट्टरपंथी मौजूद हैं। और कोई नहीं जानता कि इन कट्टरपंथियों के क्या विचार हैं। क्या मैं गलत हूँ?"
"हमें ऐसे किसी समूह के बारे में कोई जानकारी नहीं है," ओंडा ने उशिकावा के प्रश्न में छिपी विडंबना को नजरअंदाज करते हुए रूखेपन से उत्तर दिया।
"डॉन का क्या हुआ? संगठन के भंग होने के बाद जो भटकते लोग रह गए थे उनका क्या हुआ?"
ओंडा ने दृढ़ता से एक बार फिर अपना सिर हिलाया। यह असंभव था। उन्हें पूरी तरह से कुचल दिया गया था, ताकि वे फिर कभी कोई परेशानी न खड़ी कर सकें। शायद उनका कुछ भी शेष नहीं बचा था।
"ठीक है। तो आपको कोई अंदाज़ा नहीं है कि यह कौन हो सकता है, लेकिन असली समस्या यह है कि एक खास समूह ने नेता की जान ले ली। बड़ी कुशलता और चतुराई से। फिर वह धुएं के बादल की तरह गायब हो गया। यह ऐसी बात है जिसे छिपाया नहीं जा सकता।" और हमें स्थिति स्पष्ट करने की आवश्यकता है।
— पुलिस को शामिल किए बिना।
ओंडा ने सिर हिलाया।
यह हमारी समस्या है, न्याय व्यवस्था की नहीं।

"ठीक है। यह आपकी समस्या है, न्याय व्यवस्था की नहीं। सब कुछ स्पष्ट और समझने में आसान है," उशिकावा ने कहा। "लेकिन मैं आपसे एक और बात पूछना चाहता हूँ।" "कृपया," ओंडा ने कहा।
समूह में कितने लोगों को पता है कि नेता अब जीवित नहीं है?
“हम दोनों जानते हैं,” ओंडा ने कहा। फिर दो और लोग जिन्होंने शव को ले जाने में मदद की। वे मेरे अधीनस्थ हैं। समूह के नेतृत्व में पाँच और लोग जानते हैं। हम कुल नौ लोग हैं। मैंने अभी तक तीनों वेस्टल्स को नहीं बताया है, लेकिन उन्हें देर-सवेर पता चल ही जाएगा, क्योंकि उन्होंने नेता के साथ मिलकर काम किया था। हम उनसे सच्चाई ज़्यादा देर तक नहीं छिपा सकते। फिर, ज़ाहिर है, श्री उशिकावा, आप तो जानते ही हैं।”
कुल तेरह लोग।
ओंडा ने कुछ नहीं कहा।
“क्या मैं आपको अपनी सच्ची राय बता सकता हूँ?” उशिकावा ने गहरी साँस लेते हुए पूछा।
"कृपया," ओंडा ने उत्तर दिया।
अब तो कोई फायदा नहीं, लेकिन मुझे लगता है कि जैसे ही आपको पता चला कि नेता अब जीवित नहीं हैं, आपको पुलिस से संपर्क कर लेना चाहिए था। किसी भी हालत में, उनकी मृत्यु की सूचना सार्वजनिक कर देनी चाहिए थी। ऐसी घटना को अनिश्चित काल तक छिपाया नहीं जा सकता, और दस से अधिक लोगों को पता चलने पर वह रहस्य नहीं रह जाता। आप खुद को एक बड़ी मुसीबत में फंसा हुआ पा सकते थे।
चेलियोस के चेहरे के भाव में कोई बदलाव नहीं आता।
"ऐसे फैसले लेना मेरा काम नहीं है। मैं तो बस मुझे दिए गए आदेशों का पालन कर रहा हूं।"
"तो फिर यह फैसला किसने लिया?"
कोई जवाब नहीं।
— वह कौन है जो नेता का पदभार संभालेगा?
गंजा आदमी चुप रहा।
"ठीक है," उशिकावा ने कहा। "तुम्हें किसी उच्च अधिकारी का आदेश मिला था और तुमने शव को गुप्त रूप से ठिकाने लगा दिया। तुम्हारे संगठन में ऊपर से मिले आदेश सर्वोपरि होते हैं। लेकिन कानूनी तौर पर, तुम शव का अपमान करने के दोषी हो, और यह एक गंभीर अपराध है। लेकिन तुम यह बात तो जानते ही हो।"
ओंडा ने सिर हिलाया। उशिकावा ने फिर से आह भरी, और फिर आगे कहा:
मैंने आपको पहले ही बताया था, अगर पुलिस इसमें शामिल होती है, तो मैं खुद नेता की मौत के बारे में बिल्कुल कुछ नहीं जानता। मैं खुद को किसी आपराधिक मामले में फंसाना नहीं चाहता।
"हमने आपको नेता की मृत्यु के बारे में कुछ नहीं बताया, श्री उशिकावा। हमने आपको केवल आओमामे को खोजने के उद्देश्य से अपने समूह के बाहर से एक अन्वेषक के रूप में नियुक्त किया है। आप कोई कानून नहीं तोड़ रहे हैं," ओंडा ने कहा। "ठीक है। मैंने कुछ नहीं सुना!"
"हम नहीं चाहते थे कि आपको, एक बाहरी व्यक्ति को, नेता की हत्या के बारे में पता चले। लेकिन आपने पहले आओमामे की जांच की थी और अपनी सहमति दी थी, इसलिए आप

पहले से ही इस कहानी में शामिल थे। इसलिए हमें इस खोज में आपकी मदद लेनी पड़ी। और आप इसे गोपनीय रखना जानते हैं।"
"मेरे काम में चुप रहना बेहद जरूरी है। आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है। मुझसे कुछ भी पता नहीं चलेगा।"
"अगर कोई बात बाहर लीक हो जाती है और हमें पता चलता है कि यह आपसे आई है, तो बहुत अप्रिय चीजें होंगी।"
उशिकावा ने आश्चर्य के भाव से मेज पर रखी अपनी उंगलियों को फिर से देखा, मानो उसने गलती से यह पता लगा लिया हो कि वे उसकी अपनी उंगलियां हैं।
"बहुत ही अप्रिय बातें," उसने ऊपर देखते हुए दूसरे के शब्दों को दोहराया। ओंडा ने अपनी आंखें थोड़ी सिकोड़ीं।
हमें इस तथ्य को छिपाना होगा कि नेता की मृत्यु हो चुकी है, और ऐसा करने के लिए हम अपने साधनों का चुनाव नहीं कर सकते।
"मैं राज़ रखूंगा। इस लिहाज़ से आप निश्चिंत रहें," उशिकावा ने कहा। "अब तक हमने साथ मिलकर बहुत अच्छा काम किया है। मैंने कुछ ऐसे काम छुपकर किए हैं जो खुलेआम करना मुश्किल है। कई बार मेरा काम अप्रिय भी रहा है, लेकिन मुझे उसका फल भी मिला है। मेरा मुंह एक नहीं, बल्कि दो ज़िप से बंद है। मेरे मन में कोई धार्मिक भावना नहीं है, लेकिन लीडर ने व्यक्तिगत रूप से मेरी मदद की थी। इसीलिए मैं अपनी सारी ऊर्जा आओमामे को ढूंढने में लगा रहा हूं। मैं इस कहानी से पर्दा उठाने की कोशिश कर रहा हूं। और मुझे लगता है कि नतीजे जल्द ही सामने आने लगेंगे। इसलिए कृपया थोड़ा और धैर्य रखें। मैं आपको जल्द ही खुशखबरी दूंगा।"
ओंडा कुर्सी पर अपनी स्थिति में नगण्य रूप से हिलती है। इसके जवाब में, दरवाजे के पास खड़ा बालों वाला आदमी अपना भार एक पैर से दूसरे पैर पर स्थानांतरित करता है।
"क्या अभी आप हमें बस इतनी ही जानकारी दे सकते हैं?" ओंडा ने पूछा।
उशिकावा ने एक पल सोचा, फिर कहा:
जैसा कि मैंने आपको पहले बताया था, आओमामे ने शिंजुकु पुलिस स्टेशन के ट्रैफिक ब्यूरो में दो बार फोन किया था। उसे वहाँ से कुछ कॉल भी आए थे। मुझे नहीं पता उसने किससे बात की। आखिर वो पुलिस है, मैं उनके पास जाकर उनसे सवाल तो नहीं कर सकता। लेकिन मेरे बेवकूफ दिमाग में अचानक एक बात आई। मुझे शिंजुकु पुलिस ट्रैफिक ब्यूरो के बारे में कुछ याद आ रहा था। मैं याद करने की कोशिश करता रहा। वह बात मेरे दिमाग में कहीं थी, लेकिन मुझे याद नहीं आ रही थी। मुझे समझने में थोड़ा समय लग गया। मुझे बूढ़ा होना बिल्कुल पसंद नहीं। जैसे-जैसे साल बीतते हैं, यादों के पिटारे खोलना और भी मुश्किल होता जाता है। पहले मुझे सब कुछ तुरंत याद आ जाता था। खैर, करीब एक हफ्ते पहले आखिरकार मुझे याद आ गया कि वह किस बारे में था।
उशिकावा चुप हो गया और चेलियोस की ओर देखते हुए एक नाटकीय मुस्कान बिखेरी। चेलियोस धैर्यपूर्वक आगे की बात सुनने के लिए प्रतीक्षा करता रहा।
— इसी साल अगस्त में, शिंजुकु पुलिस स्टेशन के यातायात कार्यालय की एक युवा महिला पुलिसकर्मी की शिबुया जिले के मारुयामा स्ट्रीट स्थित एक होटल में गला घोंटकर हत्या कर दी गई। वह नग्न अवस्था में थी और उसके हाथों में हथकड़ी लगी हुई थी। इस घटना को लेकर काफी हंगामा हुआ था। इसके अलावा, आओमामे ने पुलिस को

जो कुछ फोन किए थे, वे सभी इस घटना से पहले के महीनों में नहीं किए गए थे। जाहिर है, घटना के बाद उसने कोई फोन नहीं किया। क्या आपको नहीं लगता कि यह महज एक संयोग हो सकता है?
ओंडा कुछ देर चुप रही, फिर बोली:
"तो क्या आओमामे उस महिला पुलिसकर्मी के संपर्क में थी जिसकी हत्या कर दी गई थी?"
"उसका नाम आयुमी नाकानो था। वह छब्बीस साल की थी और बेहद खूबसूरत थी। वह पुलिस अधिकारियों के परिवार से थी, उसके पिता और बड़े भाई दोनों पुलिस अधिकारी थे। उसका रिकॉर्ड शानदार था। पुलिस इस मामले की गहन जांच कर रही है, लेकिन अपराधी अभी तक अज्ञात है। मुझे उम्मीद है कि यह अनुचित नहीं होगा, लेकिन मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि क्या आपको इस बारे में कुछ पता है?"
ओंडा ने उशिकावा को ठंडी निगाहों से देखा, मानो वह किसी हिमनद से तराशी गई हो। "मुझे आपकी बात ठीक से समझ नहीं आ रही है," उन्होंने कहा। "क्या आपको लगता है कि हम उस घटना में शामिल थे, श्री उशिकावा? क्या आप यह कहना चाह रहे हैं कि हममें से किसी ने उस महिला पुलिसकर्मी को एक संदिग्ध होटल में हथकड़ी पहनाकर गला घोंट दिया?"
उशिकावा ने अपने होंठ सिकोड़े और सिर हिलाया।
— बिलकुल नहीं! ऐसा कैसे हो सकता है! यह बात तो मेरे दिमाग में कभी आई ही नहीं। मैं बस यह पूछना चाहता था कि क्या आपके पास इस मामले से जुड़ी कोई जानकारी है? बस इतना ही। हर छोटी से छोटी बात मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मैंने लाख कोशिश की, लेकिन मुझे महिला पुलिसकर्मी की मौत और नेता की हत्या के बीच कोई संबंध नहीं मिला।
ओंडा ने उशिकावा को निगाहों से देखा।
“समझ गया। मैं जानकारी आगे पहुंचा दूंगा,” उसने कहा और फिर गहरी सांस ली। उसने एक नोटबुक निकाली और उसमें लिखा: आयुमी नाकानो, 26 वर्ष, यातायात अधिकारी, शिंजुकु वार्ड। आओमामे से संभावित संबंध।
- बिल्कुल।
- और कुछ?
— एक और बात है जो मैं जानना चाहता हूँ। समूह में किसी ने आओमामे का नाम लिया। उसने बताया कि वह टोक्यो की एक स्पोर्ट्स इंस्ट्रक्टर है और स्ट्रेचिंग में माहिर है। जैसा कि आपने बताया, मुझे आओमामे के बारे में और उसकी कहानी जानने का काम सौंपा गया था। आप जानते हैं, मैं माफी नहीं मांगना चाहता, मैंने हमेशा की तरह पूरी लगन से यह काम किया। लेकिन हैरानी की बात है कि मुझे कुछ भी नहीं मिला। मुझे कुछ भी संदिग्ध नहीं लगा, वह सिर से पैर तक साफ-सुथरी थी। और आपने उसे ओकुरा होटल के लग्जरी सुइट में बुलाया था, जैसा कि आप अच्छी तरह जानते हैं। मैं यह जानना चाहता हूँ कि सबसे पहले आपको उसके बारे में किसने बताया था?
- मुझें नहीं पता।
"तुम्हें नहीं पता?" उशिकावा ने एक ऐसे बच्चे की तरह मुंह बनाते हुए कहा जिसे कुछ समझ नहीं आ रहा हो। "तुम्हारा मतलब है कि तुम्हें याद नहीं कि समूह में किसने उसका नाम लिया था? क्या तुम यही कहना चाह रहे हो?"
"बिल्कुल सही," ओंडा ने बिना पलक झपकाए जवाब दिया।

"कितनी अजीब कहानी है," उशिकावा ने आश्चर्य से कहा।
ओंडा चुप रही।
"यह एक जटिल स्थिति है। खैर, किसी न किसी बिंदु पर किसी ने उसका नाम लिया और मामले को आगे बढ़ाया। है ना?"
“सच तो यह है कि नेता ने खुद इस कहानी पर ज़ोर दिया था,” ओंडा ने सोच-समझकर शब्दों का चयन करते हुए जवाब दिया। नेतृत्व में कई लोगों को लगा कि किसी ऐसे व्यक्ति के हाथों में खुद को छोड़ना खतरनाक है जिसके बारे में हम ज्यादा नहीं जानते। बेशक, अंगरक्षकों के रूप में यही हमारी भूमिका थी। लेकिन उन्हें इसकी परवाह नहीं थी। बल्कि, उन्होंने मामले को और आगे बढ़ाने पर ज़ोर दिया। उशिकावा ने दोबारा लाइटर उठाया, ढक्कन खोला और उसे जलाकर सुनिश्चित किया कि वह जल रहा है। फिर उसने ढक्कन बंद कर दिया।
उन्होंने कहा, "मुझे पता है कि नेता काफी सतर्क व्यक्ति थे।"
"बिल्कुल सही। बेहद सतर्क और सावधान।"
इसके बाद कुछ क्षणों तक गहरी खामोशी छाई रही।
"मैं आपसे एक और बात पूछना चाहता हूँ," उशिकावा ने कहा। तेंगो कावाना के बारे में। उसका क्योको यासुदा नाम की एक उम्रदराज, शादीशुदा महिला के साथ अफेयर चल रहा था। वह हफ्ते में एक बार उसके घर आती और वे कुछ घंटे साथ बिताते। खैर, जवानी में ऐसा ही होता है। लेकिन एक दिन उसे उसके पति का फोन आया, जिसने उससे कहा कि अब वह उस महिला से नहीं मिलेगा। और इसी के साथ, सारा संपर्क टूट गया। ओंडा ने भौंहें चढ़ाईं।
"मुझे आपकी बात समझ नहीं आ रही है। क्या टेंगो कावाना किसी तरह उस घटना में शामिल है जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं?"
— आह, मुझे भी इसके बारे में कुछ नहीं पता। लेकिन यह बात मुझे काफी समय से परेशान कर रही है। चाहे कुछ भी हुआ हो, चाहे हालात कैसे भी रहे हों, यही उम्मीद थी कि वह महिला कम से कम उसे फोन तो करेगी। लेकिन वह बिना कुछ कहे और बिना कोई निशान छोड़े गायब हो गई। मैं बस आपसे पूछना चाहता था, क्योंकि मुझे किसी बात से परेशान होना अच्छा नहीं लगता। क्या आपको इस कहानी के बारे में कुछ पता है? "मैं तो इस महिला के बारे में कुछ नहीं जानता," ओंडा ने सपाट लहजे में कहा।
क्योको यासुदा, टेंगो कावाना की प्रेमिका।
— जी हाँ, एक विवाहित महिला, जो मुझसे दस साल बड़ी है।
ओंडा ने नोटबुक में अपना नाम लिखा।
मैं यह बात अपने वरिष्ठों को भी बता दूंगा।
"ठीक है," उशिकावा ने कहा। "वैसे, क्या आपने एरिका फुकाडा के बारे में कुछ और सुना है, वो कहाँ हो सकती है?"
ओंडा ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और उशिकावा को ऐसे देखा मानो वह किसी टेढ़ी- मेढ़ी आकृति को देख रहा हो।
हमें यह क्यों पता होगा कि एरिका फुकाडा कहां है?
"क्या आपको इस बात में दिलचस्पी नहीं है कि वह कहाँ है?"
ओंडा ने अपना सिर हिलाया।
"उसके कामों या उसके आने-जाने से हमारा कोई लेना-देना नहीं है। यह उसका निजी मामला है।"
"अब आपको टेंगो कावाना में कोई दिलचस्पी नहीं है?"

— वह एक ऐसा व्यक्ति है जिससे हमारा कोई संबंध नहीं है।
"कुछ समय तक दोनों के बीच घनिष्ठ संबंध थे," उशिकावा ने कहा।
ओंडा ने अपनी आंखें सिकोड़ लीं।
उन्होंने कहा, "फिलहाल, हमारी दिलचस्पी आओमामे पर केंद्रित है।"
क्या आपकी रुचियां दिन-प्रतिदिन बदलती रहती हैं?
ओंडा ने अपने होंठों के कोनों को बहुत हल्के से मोड़ा, लेकिन कोई जवाब नहीं दिया।
— श्री ओंडा, क्या आपने एरिका फुकाडा द्वारा लिखित उपन्यास, द एयर क्राइसालिस पढ़ा है?
नहीं। हमारे समूह में उन सामग्रियों को पढ़ना मना है जिनका सिद्धांत से कोई संबंध नहीं है। हमारे पास उन्हें प्राप्त करने का कोई साधन भी नहीं है। लेकिन क्या आपने बौने लोगों के बारे में सुना है?
"नहीं," ओंडा ने बिना किसी झिझक के उत्तर दिया।
"ठीक है," उशिकावा ने कहा।
चर्चा यहीं समाप्त होती है। ओंडा धीरे से अपनी कुर्सी से उठी और अपनी जैकेट की आस्तीनें ठीक कीं। लंबे बालों वाला आदमी दीवार से दूर हटकर एक कदम आगे बढ़ा।
“श्री उशिकावा, जैसा कि मैंने आपको पहले ही बताया है, इस स्थिति में समय अत्यंत महत्वपूर्ण है,” ओंडा ने बैठे हुए उशिकावा की ओर देखते हुए कहा। “हमें जल्द से जल्द आओमामे का पता लगाना होगा। बेशक, हम अपनी पूरी कोशिश कर रहे हैं, लेकिन हमें इस स्थिति को अन्य तरीकों से संभालने के लिए आपकी मदद की आवश्यकता है। अगर हम आओमामे को नहीं ढूंढ पाए, तो यह हमारे और आपके लिए अच्छा नहीं होगा। क्योंकि चाहे कुछ भी हो जाए, आप एक बहुत ही महत्वपूर्ण रहस्य जानते हैं।”
महत्वपूर्ण ज्ञान के साथ महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां भी आती हैं।
"बिल्कुल सही," ओंडा ने भावहीन स्वर में उत्तर दिया।
फिर वह मुड़ा और पीछे देखे बिना कमरे से बाहर चला गया। बालों वाला आदमी भी उसके पीछे-पीछे चुपचाप दरवाजा बंद करते हुए बाहर चला गया।
*

उन दोनों के जाने के बाद, उशिकावा ने डेस्क की दराज खोली और टेप रिकॉर्डर बंद कर दिया। उसने ढक्कन उठाया, टेप निकाला और पेन से उस पर रिकॉर्डिंग की तारीख और समय लिख दिया। उसकी लिखावट बहुत साफ-सुथरी थी, जो उसके रूप-रंग के हिसाब से आश्चर्यजनक थी। उसने दराज से सेवन स्टार्स सिगरेट का पैकेट निकाला, एक सिगरेट निकाली और उसे जलाया। उसने एक गहरी सांस ली और धुआं छत की ओर उड़ा दिया। चेहरा ऊपर उठाए हुए ही उसने अपनी आंखें बंद कर लीं। थोड़ी देर बाद उसने दीवार पर लगी घड़ी देखी, जिसमें ढाई बज रहे थे। उशिकावा ने फिर सोचा, ये लोग कितने संदिग्ध हैं!
अगर हमें आओमामे नहीं मिली, तो यह न तो हमारे लिए अच्छा होगा और न ही आपके लिए, गंजे आदमी ने कहा था।
उशिकावा यामानाशी स्थित पायनियर मुख्यालय में दो बार जा चुका था और उसने झाड़ियों के पीछे एक बड़ा भस्मक देखा था। इसका इस्तेमाल कचरे के लिए किया जाता था, लेकिन यह इतनी तेज़ गर्मी पैदा करता था कि लाश की हड्डियाँ भी नहीं

होगी। चाहे वे कितने भी सुरक्षित क्यों न हों, उसे अंदर झाँकने का कोई न कोई रास्ता निकालना ही था। इसके विपरीत, वे जितने अधिक बंद और सुरक्षित होते, उतना ही उसे यह जानने की उत्सुकता होती कि वहाँ क्या छिपा है। लेकिन उसे एक उपयुक्त तरीका ढूंढना ही था। सूखे पत्थर से भी जानकारी निकालने का।
उन्हें ओंडा के साथ बौने लोगों के बारे में हुई बातचीत याद आ गई।
लेकिन क्या आपने बौने लोगों के बारे में सुना है?
- नहीं।
जवाब कुछ ज़्यादा ही जल्दी आ गया था। अगर उसने वह नाम पहले न सुना होता, तो आप उम्मीद करते कि वह तुरंत जवाब नहीं देता। वह थोड़ा सोच-विचार करता। छोटे लोग? तभी वह जवाब देता। यही किसी भी आम इंसान की प्रतिक्रिया होती।
उसने छोटे लोगों के बारे में सुना था। हो सकता है कि वह ठीक से यह न जानता हो कि वे क्या थे या उनका क्या मतलब था, लेकिन यह नाम उसके लिए अनजान नहीं था। उशिकावा ने अपनी सिगरेट बुझाई, कुछ देर गहरी सोच में डूबे रहे, फिर शांत होकर दूसरी सिगरेट जलाई। उन्होंने बहुत पहले ही तय कर लिया था कि फेफड़ों के कैंसर की आशंका अब उन्हें परेशान नहीं करेगी। उन्हें एकाग्रता के लिए निकोटीन की ज़रूरत थी। उन्हें नहीं पता था कि दो-तीन दिन बाद उनका क्या होगा, क्या उन्हें वाकई पंद्रह साल बाद बीमार पड़ने की चिंता करनी चाहिए?
तीसरी सिगरेट पीते ही उशिकावा के मन में एक विचार आया। हम्म, शायद यह काम कर जाए, उसने सोचा।

अध्याय 2 अकेला, लेकिन अकेलापन नहीं

शाम ढलते ही, आओमामे बालकनी की कुर्सी पर बैठकर सड़क के उस पार स्थित छोटे से पार्क को देखती रहती थी। यह अब उसका सबसे महत्वपूर्ण काम बन गया था, उसके जीवन का केंद्र। चाहे आसमान साफ हो, बादल छाए हों या बारिश हो रही हो, वह लगातार पार्क को देखती रहती थी। अक्टूबर के आते ही हवा ठंडी हो गई। सर्द शामों में, वह खुद को अच्छे से ढक लेती, पैरों पर कंबल ओढ़ लेती और गर्म कोको पीती। वह साढ़े दस बजे तक स्लाइड देखती, फिर नहाकर खुद को गर्म करती और सो जाती।
बेशक, यह मुमकिन था कि टेंगो दिन में आ जाए, लेकिन शायद वह नहीं आएगा। अगर वह पार्क में आएगा भी, तो अंधेरा होने के बाद ही आएगा, जब लालटेन जल रही होंगी और आसमान में चाँद साफ़ दिखाई दे रहा होगा। आओमामे ने जल्दी से अपना खाना खाया, कपड़े बदले ताकि वह किसी भी पल दरवाज़े से बाहर निकल सके, अपने बाल संवारे, लॉन की कुर्सी पर बैठ गई और पार्क की स्लाइड पर नज़र गड़ा दी। उसके पास हमेशा उसकी स्वचालित पिस्तौल और छोटा निकॉन दूरबीन रहता था। इस डर से कि टेंगो बाथरूम में उसके सामने न आ जाए, उसने दूध वाले कोको के अलावा कुछ भी नहीं पिया।
ओमामे दिन-रात निगरानी करती रही। वह बैठी रहती, आसपास की आवाज़ों पर कान लगाए, बिना पढ़े या संगीत सुने, पार्क को देखती रहती। वह अपनी जगह से हिलती भी नहीं थी। कभी-कभी वह ऊपर देखती और अगर रात साफ़ होती तो उसे लगता कि आसमान में दो चाँद अभी भी तैर रहे हैं। फिर वह तुरंत अपनी नज़र पार्क की ओर मोड़ लेती। ओमामे पार्क पर नज़र रखती, और चाँद उस पर।
लेकिन टेंगो नहीं आया।
शाम के समय पार्क में ज़्यादा लोग नहीं आते थे। कभी-कभार कुछ युवा प्रेमी जोड़े आते, जो बेंच पर बैठकर एक-दूसरे का हाथ थाम लेते, मानो दो कबूतरों की तरह छुप-छुप कर एक छोटा सा चुंबन करते। लेकिन पार्क बहुत छोटा और बहुत ज़्यादा रोशनी वाला था। वे दोनों कुछ देर तक वहाँ बैठे रहते, शांति नहीं पाते, फिर हार मानकर कहीं और चले जाते। कुछ लोग सार्वजनिक शौचालय इस्तेमाल करने के इरादे से आते, लेकिन उसे बंद पाकर निराश या नाराज़ होकर लौट जाते। कभी-कभी काम से लौटता कोई आदमी आता, जो बेंच पर अकेला सिर झुकाए बैठा रहता, शायद सहकर्मियों के साथ शराब पीने के बाद होश में आने के लिए। या शायद वह सीधे घर नहीं जाना चाहता था। कभी-कभी एक बूढ़ा आदमी भी अपने कुत्ते को टहलाने के लिए आता। बूढ़ा आदमी और कुत्ता दोनों ही चुपचाप और निराश दिखते थे।
लेकिन ज़्यादातर समय पार्क में कोई नहीं होता था। यहाँ तक कि एक बिल्ली भी नहीं गुज़रती थी। बस लालटेन की रोशनी झूलों, स्लाइड, रेत के गड्ढे और बंद शौचालय को एक बेजान रोशनी से नहलाती रहती थी। उस नज़ारे को इतनी देर तक देखते- देखते, आओमामे को कभी-कभी ऐसा लगता था जैसे वह किसी वीरान ग्रह पर अकेली रह गई हो। मानो वह उस फ़िल्म में हो जिसमें परमाणु युद्ध के बाद दुनिया कैसी दिखेगी, यह दिखाया गया था। उसका नाम क्या था? द लास्ट शोर।
हालांकि, आओमामे पार्क की निगरानी पर ध्यान केंद्रित किए रही, ठीक वैसे ही जैसे कोई नाविक ऊंचे मस्तूल की चोटी से विशाल समुद्री विस्तार को मछलियों के

झुंड या पनडुब्बी की भयावह छाया की तलाश में देखता है। उसकी चौकस निगाहें सिर्फ एक ही चीज़ की तलाश में थीं: टेंगो कावाना की आकृति।
शायद टेंगो किसी दूसरे शहर में रहता था और उस शाम बस यहाँ से गुज़र रहा था। अगर ऐसा था, तो उसके उस पार्क में दोबारा आने की संभावना लगभग न के बराबर थी।
लेकिन आओमामे को ऐसा नहीं लगता था। उसके कपड़ों और उसके हाव-भाव में, स्लाइड पर बैठे हुए, कुछ ऐसा था जिससे लग रहा था कि वह शाम को मोहल्ले में टहलने निकला है। वह पार्क से गुज़रा और स्लाइड पर चढ़ा, शायद चाँद देखने के लिए। और इसका मतलब था कि वह वहाँ से पैदल घर जा सकता था।
कोएंजी में चांद देखने के लिए कोई जगह ढूंढना आसान नहीं था। यह ज्यादातर समतल इलाका था, जहां चढ़ने के लिए कोई ऊंची इमारत नहीं थी। और पार्क की स्लाइड इसके लिए एकदम सही थी। वहां शांति थी और कोई परेशान नहीं करता था। आओमामे ने सोचा कि अगर उसे दोबारा चांद देखना होगा, तो वह ज़रूर यहीं आएगी। लेकिन फिर उसने मन ही मन सोचा कि शायद सब कुछ इतना अच्छा नहीं चल रहा है और हो सकता है कि तेंगो ने चांद को बेहतर ढंग से देखने के लिए किसी इमारत की छत जैसी कोई दूसरी जगह ढूंढ ली हो।
आओमामे ने सिर हिलाया। चलो इसके बारे में सोचना बंद कर देती हूँ! मैं बस यही उम्मीद कर सकती हूँ कि टेंगो वापस आएगा और धैर्यपूर्वक इंतज़ार करूँगी। मैं यहाँ से नहीं जा सकती, क्योंकि यह पार्क ही हम दोनों के बीच का एकमात्र संपर्क है।
*

ओमामे ने गोली नहीं चलाई थी।
सितंबर की शुरुआत में, वह व्यस्त मेट्रोपॉलिटन हाईवे नंबर 3 पर आपातकालीन पार्किंग स्थल पर खड़ी थी, चकाचौंध भरी सुबह की रोशनी में, उसके मुंह में हेकलर एंड कोच पिस्तौल की नली ठूंसी हुई थी। उसने जुन्को शिमाडा का सूट और चार्ल्स जॉर्डन की ऊंची हील पहनी हुई थी।
उसके आस-पास के लोग अपनी कारों से उसे देख रहे थे, उन्हें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि वह क्या छिपा रही है। चांदी की मर्सिडीज़ कूप में बैठी महिला। माल से लदे ट्रकों की ऊंची सीटों से धूप में झुलसे हुए पुरुष उसे नीचे देख रहे थे। उनकी आँखों के सामने, आओमामे ने नौ मिलीमीटर की गोली से खुद को उड़ाने का इरादा किया था। 1Q84 से गायब होने का उसके पास अपनी जान देने के अलावा कोई और रास्ता नहीं था। इस तरह वह टेंगो को बचा सकती थी। या कम से कम लीडर ने उससे यही वादा किया था। जब उसने उसे मारने के लिए कहा था, तब उसने अपना वचन दिया था। आओमामे को मरने का उतना बुरा नहीं लगा। उसने सोचा, शायद सब कुछ उसी क्षण तय हो गया था जब मुझे 1Q84 में लाया गया था। और मैंने बस पूर्वनिर्धारित मार्ग का अनुसरण किया। एक ऐसी बेतुकी दुनिया में अकेले जीने का क्या मतलब होगा जहाँ आकाश में दो चाँद हों और भाग्य का निर्धारण बौने लोग करते हों?
लेकिन अंत में, आओमामे ने ट्रिगर नहीं दबाया। आखिरी क्षण में, उसने अपने दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली को ढीला छोड़ा और बंदूक की नली को अपने मुंह से हटा लिया। फिर उसने गहरी सांस ली, मानो कोई समुद्र की गहराई से बाहर आ रहा हो, और लंबी सांस छोड़ी, मानो वह अपने पूरे शरीर को अंदर से हवा देने की कोशिश कर रही हो।

ओमामे रुक गई थी क्योंकि उसे दूर से एक आवाज़ सुनाई दी थी। उस पल, वह पूरी तरह सन्नाटे में डूब गई थी। जैसे ही उसने ट्रिगर पर अपनी उंगली कसी, आसपास की सारी आवाज़ें गायब हो गईं। वह एक गहरे सन्नाटे से घिरी हुई थी, मानो किसी तालाब की तलहटी में हो। उसके भीतर, मृत्यु कोई अंधकारमय या डरावनी चीज़ नहीं थी। यह एक स्वाभाविक और सहज चीज़ थी, जैसे गर्भस्थ भ्रूण के लिए गर्भनाल द्रव। बुरा नहीं, उसने खुद से कहा और मुस्कुरा भी दी। तभी उसे वह आवाज़ सुनाई दी।
यह एक दूर देश और दूर समय की आवाज़ थी, जिसे वह पहचान नहीं पाई। यह अनगिनत घुमावदार रास्तों से गुज़री थी और अपनी असली ध्वनि और विशेषता खो चुकी थी। अब बस एक खोखली गूंज बची थी, अर्थहीन। फिर भी, उस गूंज में, आओमामे को बहुत पहले की गर्माहट महसूस हुई। और ऐसा लगा जैसे वह आवाज़ उसका नाम पुकार रही हो। उसने ट्रिगर से अपनी उंगली हटा ली और ध्यान से सुनने लगी, आँखें सिकोड़कर वह समझने की कोशिश कर रही थी कि वह क्या कह रहा है। लेकिन वह केवल अपना नाम ही समझ पाई, या कम से कम उसे लगा कि वह सुन पा रही है। बाकी सब गुफा में बहती हवा की सरसराहट थी। अंत में, आवाज़ धीमी हो गई, शब्दों का अर्थ और भी अस्पष्ट हो गया, फिर खामोशी में समा गया। उसके चारों ओर छाया खालीपन छंट गया, और आवाज़ें अचानक फिर से गूंजने लगीं, मानो किसी ने ढक्कन खोल दिया हो। और तब आओमामे को एहसास हुआ कि मरने का उसका दृढ़ संकल्प भी उसकी आत्मा से गायब हो गया था। उसने मन ही मन कहा, "हो सकता है कि मैं पार्क में फिर से टेंगो से मिलूँ। अगर मैं मर भी जाऊँ, तो बाद में मर सकती हूँ। इस मौके को एक बार फिर से लेना चाहती हूँ। जीना—मरना नहीं—मतलब टेंगो को फिर से देखने की संभावना है। मैं जीना चाहती हूँ," उसने दृढ़ निश्चय के साथ खुद से कहा। यह एक बहुत ही अजीब एहसास था, जैसा उसने पहले कभी महसूस नहीं किया था।
ओमामे ने ब्रेक लगाया और बंदूक अपने बैग में रख ली। फिर उसने अपनी कमर सीधी की, धूप का चश्मा लगाया और विपरीत दिशा में, जिस टैक्सी से वह आई थी, उसकी ओर चल पड़ी। ऊँची एड़ी के जूते पहने हुए जब वह राजमार्ग पर तेज़ी से आगे बढ़ी तो सभी लोग उसे चुपचाप देखते रहे। उसे ज़्यादा दूर नहीं जाना था। भयंकर ट्रैफिक में फंसी टैक्सी बहुत धीमी गति से चल रही थी और अब उसके बहुत करीब आ गई थी। ओमामे ने खिड़की पर दस्तक दी और ड्राइवर बाहर निकल आया।
"क्या तुम अब भी मुझे ले जाओगे?"
ड्राइवर हिचकिचाता है।
"क्या तुमने बंदूक की नली अपने मुंह में डाली थी?"
- हाँ।
"एक असली वाला?"
"अरे नहीं!" उसने होंठ सिकोड़ते हुए कहा।
ड्राइवर ने दरवाजा खोला और आओमामे पीछे की सीट पर बैठ गई। उसने अपना बैग कंधे से उतारकर एक तरफ रख दिया और फिर रुमाल से अपना मुंह पोंछा। उसके मुंह में धातु जैसा स्वाद था, जैसे कार के तेल का।
— तो, क्या आपको आपातकालीन सीढ़ी मिल गई?
ओमामे ने अपना सिर हिलाया।
"देखा आपने? मैंने यहाँ किसी आपातकालीन सीढ़ी के बारे में नहीं सुना है," ड्राइवर ने कहा। "तो हम इकेजिरी में उतरेंगे, जैसा कि हमने शुरुआत में बात की थी?"

"हां," आओमामे ने उत्तर दिया।
ड्राइवर ने खिड़की नीचे की, हाथ उठाकर इशारा किया और बस के आगे दाहिनी लेन में चला गया। टोल मशीन पर वही राशि दिखाई दे रही थी जो उतरते समय थी।
ओमामे आराम से पीछे झुक गई और जानी-पहचानी एस्सो की बत्ती को देखने लगी, उसकी सांसें थम सी गईं। बाघ मुस्कुरा रहा था, एक तरफ से दिख रहा था और पेट्रोल पंप पकड़े हुए था। बोर्ड पर लिखा था, "आपकी टंकी में एक बाघ।"
"तुम्हारे टैंक में एक बाघ है," आओमामे ने धीरे से कहा।
"तुमने क्या कहा?" ड्राइवर ने रियरव्यू मिरर में उसकी ओर देखते हुए पूछा।
— कुछ नहीं, मैं खुद से बात कर रहा था।
मैं थोड़ा और जी लूँगा, देखता हूँ क्या होता है। अगर मेरी मृत्यु बाद में भी हो जाए तो कोई बात नहीं। शायद।
*

आत्महत्या का प्रयास छोड़ने के एक दिन बाद, आओमामे को तामारू का फोन आया, जिसने उसे बताया कि योजना बदल गई है। उसने वहाँ से न जाने का फैसला किया है। उसने अपना नाम नहीं बदलने और कॉस्मेटिक सर्जरी न करवाने का भी फैसला किया है। फोन के दूसरी तरफ, तमारू कुछ देर चुप रहा। वह मन ही मन कई तरह के सिद्धांतों पर विचार कर रहा था।
"आपका मतलब है कि आप कहीं और जाना नहीं चाहते?"
"बिल्कुल," आओमामे ने सरलता से उत्तर दिया। "मैं यहाँ कुछ और समय तक रहना चाहती हूँ।"
"जिस जगह पर आप अभी हैं, वह किसी भगोड़े को लंबे समय तक शरण देने के लिए तैयार नहीं है।"
अगर मैं घर में बंद रहूँ और कहीं बाहर न जाऊँ, तो वे मुझे ढूंढ नहीं पाएंगे। "इन लोगों को कम मत समझना," तामारू ने जवाब दिया। "ये तुम्हारे बारे में सब कुछ पता लगाने और तुम्हें ढूंढ निकालने के लिए हर संभव कोशिश करेंगे। और तुम अकेले खतरे में नहीं पड़ोगे, बल्कि तुम्हारे आस-पास के लोग भी खतरे में होंगे। और मैं खुद को एक नाजुक स्थिति में पाऊंगा।"
"इसके लिए मैं माफी मांगता हूं। लेकिन मुझे थोड़ा और समय चाहिए।"
— "'कुछ समय' थोड़ा अस्पष्ट लगता है," तामारू ने कहा।
मुझे खेद है, लेकिन मैं इसे किसी और तरीके से नहीं कह सकता।
तामारू कुछ पल चुपचाप सोचता रहा। वह उसकी आवाज़ से उसके दृढ़ संकल्प को समझ गया था।
उन्होंने कहा, "मैं एक ऐसा व्यक्ति हूं जो अपने पद को हर चीज से ऊपर रखता है।
हर चीज से ऊपर। आप यह जानते ही हैं, है ना?"
- मुझे पता है।
तामारू फिर चुप हो गया, फिर बोला:
"ठीक है। मैं बस यह सुनिश्चित करना चाहता था कि कोई गलतफहमी न हो। लेकिन क्या आप मुझे बता सकते हैं कि क्या आपके पास कोई अच्छा कारण है?"
"मेरे पास है," आओमामे ने उत्तर दिया।
तामारू ने रिसीवर में थोड़ी देर के लिए खांसा।
"जैसा कि मैंने आपको बताया, हमने एक योजना बना ली है और आवश्यक तैयारियाँ कर ली हैं। आपको बहुत दूर, एक सुरक्षित स्थान पर ले जाने की योजना, आपको गायब

करने की, आपका नाम और रूप बदलने की। शायद पूरी तरह से एक अलग व्यक्ति बनने की नहीं, लेकिन कम से कम लगभग अलग बनने की। हम इस पर सहमत हो गए हैं।"
"बिल्कुल। ऐसा नहीं है कि मुझे योजना से कोई आपत्ति है। बस कुछ अप्रत्याशित घटना हो गई है और मुझे यहां थोड़ा और रुकना पड़ेगा।"
"मेरे पास हां या ना कहने का अधिकार नहीं है," तामारू ने धीमी, कर्कश आवाज निकालते हुए कहा। "आपको जवाब देने में थोड़ा समय लगेगा।"
- आप मुझे यहाँ ढूंढ सकते हैं।
"यह अच्छा है," तामारू ने कहा और फोन काट दिया।
*

अगली सुबह, नौ बजे से पहले, फोन तीन बार बजा, बंद हुआ, फिर बजा। यह केवल तमारू ही हो सकता था।
“और मेरी पत्नी को आपके वहाँ ज़्यादा देर रहने पर चिंता है,” उसने बिना अभिवादन किए ही कहना शुरू कर दिया। “वहाँ सुरक्षा के पर्याप्त इंतज़ाम नहीं हैं। यह महज़ एक ट्रांज़िट पॉइंट है। हम दोनों को लगता है कि आपको जल्द से जल्द किसी सुरक्षित जगह पर ले जाना ही बेहतर होगा। क्या आप इतना समझ पा रही हैं?”
- मैं ठीक से समझता हूं।
"लेकिन आप एक संयमित और सतर्क व्यक्ति हैं। आप मूर्खतापूर्ण गलतियाँ नहीं करते और आपमें साहस है। हमें वास्तव में आप पर पूरा भरोसा है।"
- धन्यवाद।
"अगर आप वहां 'कुछ समय' बिताने पर जोर देते हैं, तो इसका मतलब है कि आपके पास कोई निजी कारण है। हमें नहीं पता कि वह क्या है, लेकिन यह निश्चित रूप से महज़ एक मनमर्जी नहीं है। वह महिला आपको यथासंभव खुश करना चाहती है।"
ओमामे ने बिना कुछ कहे ध्यान से सुना। तमारू ने आगे कहा:
"आप इस साल वहां रह सकते हैं। लेकिन इससे ज्यादा नहीं।"
— इसलिए जब नया साल आएगा, तो मैं कहीं और शिफ्ट हो जाऊंगा।
फिर भी, हम आपकी इच्छा का सम्मान करने के लिए भरपूर प्रयास कर रहे हैं।
"मैं समझ गई," आओमामे ने जवाब दिया। "मैं इस साल यहीं रहूंगी, फिर मैं कहीं और चली जाऊंगी।"
लेकिन वह ऐसा नहीं सोच रही थी। उसका इरादा टेंगो से मिलने तक जाने का नहीं था। लेकिन अगर उसने इस बारे में कुछ कहा तो बातचीत अप्रिय मोड़ ले लेगी। उसके पास साल के अंत तक का समय था। आगे क्या होगा, वह उस समय सोचेगी।
— ठीक है, तमारू ने कहा। अब से आपको हर हफ्ते भोजन और आवश्यक वस्तुएँ पहुँचाई जाएँगी। हर मंगलवार को दोपहर एक बजे, आपूर्ति करने वाले लोग आएँगे। उनके पास चाबी है, इसलिए वे अपार्टमेंट में प्रवेश कर सकते हैं। लेकिन वे केवल रसोई में ही जाएँगे। इस दौरान, आप पीछे वाले कमरे में दरवाज़ा बंद करके रहें। आपको बाहर निकलने की अनुमति नहीं है। आपको बात करने की भी अनुमति नहीं है। जब आप बाहर निकलेंगे, तो वे गलियारे में जाकर एक बार घंटी बजाएँगे। उसके बाद आपको कमरे से बाहर निकलने की अनुमति होगी। यदि आपको किसी विशेष चीज़ की आवश्यकता हो, तो मुझे अभी बताएँ और मैं अगली किस्त के लिए उन्हें तैयार कर दूँगा। उन्होंने कहा, "मुझे एक फिटनेस मशीन की जरूरत है।" मशीन के बिना जिम्नास्टिक और स्ट्रेचिंग की भी अपनी सीमाएं हैं।

मैं आपको जिम में मिलने वाली महंगी मशीनों जैसी मशीन तो नहीं दिला सकता, लेकिन अगर आप घर के लिए ऐसी मशीन से संतुष्ट हैं जो ज्यादा जगह न घेरे, तो उसका इंतजाम किया जा सकता है।
— यह एक अच्छा और सरल तरीका है।
"एक साइकिल और कुछ मांसपेशियों को मजबूत करने वाले उपकरण। क्या यह ठीक रहेगा?"
"यह अच्छा है। और, यदि संभव हो तो, एक धातु का सॉफ्टबॉल बैट।"
तामारू कुछ क्षणों के लिए चुप रहा।
"बैट कई कामों में उपयोगी है," आओमामे ने कहा। "इसे पास रखने से मुझे ज़्यादा सुकून मिलता है। मैं बचपन से ही इसके साथ पली-बढ़ी हूँ।"
"मैं समझ गया। मैं इसका इंतज़ाम कर दूंगा," तामारू ने जवाब दिया। "अगर आपको और कुछ चाहिए, तो उसे एक कागज़ पर लिखकर रसोई की मेज़ पर रख दीजिए। मैं अगली किस्त में उन्हें ले आऊंगा।"
— धन्यवाद, लेकिन फिलहाल मुझे नहीं लगता कि मुझसे कुछ छूट रहा है।
— किताबें, वीडियोटेप?
मुझे कोई खास विचार नहीं आ रहा है।
"क्या आपने प्रॉस्ट की 'इन सर्च ऑफ लॉस्ट टाइम' पढ़ी है?" तामारू ने पूछा। "अगर नहीं, तो इसे शुरू से अंत तक पढ़ने का यह एक अच्छा अवसर होगा।"
— क्या आपने इसे पढ़ा?
नहीं। मैं न तो शूटिंग रेंज में गया हूँ और न ही लंबे समय से कहीं छिपा हुआ हूँ। लोग कहते हैं कि अगर मैं ऐसा करता हूँ तो इस पूरी किताब को पढ़ना थोड़ा मुश्किल हो जाएगा।
क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसने इसे पढ़ा हो?
मैं यह नहीं कह रहा हूं कि मैं कुछ ऐसे लोगों को नहीं जानता जिन्होंने कुछ समय नजरबंदी शिविरों में बिताया है, लेकिन वे उस तरह के लोग नहीं हैं जिन्हें प्रॉस्ट में दिलचस्पी होगी।
मैं कोशिश करूंगा। जब आपको सामान मिल जाए तो इसे मुझे भेज देना।
सच कहूं तो, मेरे पास यह पहले से ही है।
*

मंगलवार को ठीक एक बजे, खाना पहुंचाने वाले लोग आ गए। जैसा कि उसे बताया गया था, आओमामे पीछे के कमरे में चली गई और खुद को अंदर बंद कर लिया, चुपचाप सांसें लेती रही। सामने का दरवाजा खुलने की आवाज आई और लोग अपार्टमेंट में दाखिल हुए। आओमामे को पता नहीं था कि तमारू जिन लोगों के बारे में बात कर रहा था, वे किस तरह के लोग थे। आवाजों और हलचल से उसे पता चला कि दो लोग थे, लेकिन उनकी आवाज बिल्कुल सुनाई नहीं दी। वे कई पैकेट अंदर लाए और चुपचाप उन्हें व्यवस्थित किया। सिंक में खाना धोने और उसे फ्रिज में रखने की आवाज सुनाई दी। उन्होंने पहले से ही तय कर लिया होगा कि कौन क्या करेगा। पैकेट खोलने और फिर कागज और डिब्बे समेटने की आवाज सुनाई दी। उन्होंने रसोई से कचरा भी बाहर निकाला। आओमामे कचरे के थैले नीचे भंडारण कक्ष तक नहीं ले जा सकती थी। किसी और को उन्हें ले जाना होगा।
वे तेज़ी और कुशलता से आगे बढ़े। उन्होंने ज़रूरत से ज़्यादा शोर नहीं किया और चुपचाप चलते रहे। बीस मिनट में उन्होंने काम पूरा कर लिया और फिर दरवाज़े

से बाहर निकल गए। ताले में चाबी की आवाज़ आई, उसके बाद घंटी बजी जो एक संकेत था। पूरी तरह आश्वस्त होने के लिए, आओमामे ने पंद्रह मिनट और इंतज़ार किया, फिर बेडरूम से बाहर निकली, यह सुनिश्चित किया कि अंदर कोई नहीं है, और दरवाज़ा बंद कर दिया।
बड़ा फ्रिज एक हफ्ते के खाने से भरा हुआ था। इस बार ये रेडी-टू-कुक खाना नहीं था जिसे माइक्रोवेव में आसानी से पकाया जा सके, बल्कि ताजा, सामान्य खाना था। तरह-तरह की सब्जियां और फल, मांस और मछली। टोफू, समुद्री शैवाल, नाटो {19}। दूध, पनीर और संतरे का रस। एक दर्जन अंडे। बर्बादी से बचने के लिए, उन्होंने इन्हें पैकेजिंग से निकालकर प्लास्टिक में लपेट दिया था। उन्हें ठीक-ठीक पता था कि आओमामे को किस खाने की जरूरत है। लेकिन उन्हें यह कैसे पता चला? खिड़की के बगल में एक फिटनेस बाइक लगाई गई थी। छोटी, लेकिन अच्छी गुणवत्ता की। डिस्प्ले पर गति, तय की गई दूरी और खर्च की गई ऊर्जा दिखाई देती थी। प्रति मिनट पैडल मारने की संख्या और नाड़ी की गति भी मापी जा सकती थी। उसे पेट, पीठ और कंधे की मांसपेशियों को मजबूत करने के लिए एक प्रेस भी मिली थी। इसके सहायक उपकरण आसानी से मोड़े और खोले जा सकते थे। आओमामे को इनका उपयोग करना अच्छी तरह आता था। ये नए मॉडल थे, सरल सुविधाओं वाले, लेकिन काफी प्रभावी। इन दोनों मशीनों की मदद से वह अपनी आवश्यक कसरत कर सकती थी।
वहाँ एक धातु का सॉफ्टबॉल बैट भी था, जो एक केस में लिपटा हुआ था। आओमामे ने उसे बाहर निकाला और हाथ में कुछ बार घुमाया। एकदम नया चांदी का बैट हवा में सरसराहट की आवाज़ के साथ लहराया। उसका जाना-पहचाना वज़न आओमामे को सुकून दे रहा था। उसका स्पर्श उसे तामाकी के साथ बिताए अपने किशोरावस्था के दिनों की याद दिला रहा था।
मेज पर प्रॉस्ट की किताब 'इन सर्च ऑफ लॉस्ट टाइम' की कई प्रतियां रखी थीं। वे नई तो नहीं थीं, लेकिन देखने में भी ऐसा नहीं लग रहा था कि उन्हें पढ़ा गया हो। आओमामे ने एक-एक करके पांचों प्रतियां उठाईं और उनके पन्ने पलटने लगी। उनके बगल में कुछ पत्रिकाएं रखी थीं। साप्ताहिक और मासिक। पांच नई वीडियो कैसेट भी थीं, जो अभी भी अपनी मूल पैकेजिंग में थीं। पता नहीं किसने इन्हें चुना था, लेकिन ये सभी हाल ही में रिलीज़ हुई फिल्में थीं जिन्हें उसने नहीं देखा था। आओमामे आमतौर पर सिनेमा नहीं जाती थी, इसलिए उसके पास न देखी गई फिल्मों की कोई कमी नहीं थी।
एक बड़े कागज़ के थैले में मोटे से पतले तक तीन नए स्वेटर थे। दो गर्म फलालैन शर्ट और चार लंबी बाजू की ब्लाउज़ थीं। सभी सादे थे, बिना किसी प्रिंट के। उनका साइज़ एकदम सही था। उन्हें मोटे मोज़े और टाइट्स भी मिले थे। चूंकि उन्हें दिसंबर तक वहीं रहना था, इसलिए उन्हें इन चीज़ों की ज़रूरत थी। सब कुछ ठीक से तैयार किया गया था।
ओमामे कपड़े बेडरूम में ले गई, उन्हें दराजों में रखा और अलमारी में हैंगर पर टांग दिया। वह रसोई में लौटी और जब वह एक कप कॉफी पी रही थी, तभी फोन की घंटी बजी। तीन बार घंटी बजी, फिर बंद हुई और दोबारा बजी।
“क्या सामान आ गया है?” तामारू ने पूछा।
"धन्यवाद, मुझे ज़रूरत की सारी चीज़ें मिल गईं। और फिटनेस उपकरण भी पर्याप्त हैं। अब मुझे बस प्रॉस्ट को पढ़ना बाकी है।"
अगर हमसे कुछ छूट गया हो तो कृपया हमें बताने में संकोच न करें।

"मैं यही करूंगी," आओमामे ने जवाब दिया। "हालांकि मुझे नहीं लगता कि यह आसान है, लेकिन मैं इसका कोई न कोई रास्ता निकाल लूंगी।"
तामारू को खांसी आ गई।
"माफ़ कीजिए, मैं बीच में दखल दे रहा हूँ, लेकिन मुझे आपको कुछ सलाह देने दीजिए।"
"क्या वास्तव में?"
"किसी से मिले बिना और बात किए बिना, अकेले एक छोटी सी जगह में बंद रहना आसान काम नहीं है। कोई भी गलती कर सकता है, चाहे वह कितना भी जोर से बोले। खासकर तब जब कोई उसका पीछा कर रहा हो।"
— मैं इससे पहले कभी इतने विशाल स्थान में नहीं रहा हूँ।
"यह एक मजबूत पक्ष है," तामारू ने कहा। "लेकिन आपको सावधान रहना चाहिए। अगर आप लंबे समय तक तनाव में रहते हैं, तो अनजाने में ही आपकी नसें एक लोचदार पट्टी की तरह अपनी सीमा तक खिंच जाती हैं। और एक बार खिंच जाने के बाद, उन्हें वापस सामान्य स्थिति में आने में बहुत मुश्किल होती है।"
"मैं इसका ख्याल रखूंगी," आओमामे ने जवाब दिया।
मैंने तुम्हें पहले भी बताया था, तुम बहुत सतर्क व्यक्ति हो। धैर्यवान, ज़मीन से जुड़े हुए। खुद को ज़रूरत से ज़्यादा मत समझो। लेकिन चाहे तुम कितने भी सतर्क क्यों न रहो, एकाग्रता खोने पर कोई भी एक-दो गलतियाँ कर सकता है। अकेलापन एक ऐसे तेजाब की तरह है जो तुम्हें अंदर से खा जाता है।
"लेकिन मुझे अकेलापन महसूस नहीं होता," आओमामे ने तमारू से आधी बात करते हुए, और खुद से आधी बात करते हुए कहा। "मैं अकेली हूँ, लेकिन मुझे अकेलापन महसूस नहीं होता।"
फोन के दूसरी तरफ कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा। तामारू एकांत और अकेलेपन के बीच के अंतर को समझने की कोशिश कर रहा था।
"खैर, मैं और भी ज्यादा सावधान रहूंगी। सलाह के लिए धन्यवाद," आओमामे ने कहा। "मैं चाहता हूँ कि तुम एक बात समझ लो," तामारू ने कहा। "हम तुम्हारी यथासंभव मदद करेंगे। लेकिन अगर कोई आपात स्थिति आ जाए, चाहे कैसी भी हो, तुम्हें उससे खुद ही निपटना पड़ सकता है। चाहे मैं कितनी भी दौड़ूँ या जल्दी करूँ, शायद समय पर न पहुँच पाऊँ। या, स्थिति के अनुसार, शायद मैं तुम्हारे पास दौड़कर भी न पहुँच पाऊँ। उदाहरण के लिए, अगर यह तय हो जाए कि अब तुमसे कोई वास्ता रखना ठीक नहीं है।"
"मैं अच्छी तरह समझता हूँ। मैं यहाँ अकेला हूँ, इसलिए मैं अपना बचाव खुद करूँगा। बल्ले से और जो तुमने मुझे दिया है, उससे।"
यह दुनिया बहुत कठिन है।
"अगर आप कुछ चाहते हैं, तो आपको उसके लिए लड़ना होगा," आओमामे ने कहा।
तामारू कुछ देर चुप रहा, फिर बोला:
क्या आप जानते हैं कि स्टालिन के समय में गुप्त सेवा के जांचकर्ता के लिए अंतिम परीक्षा क्या होती थी?
- नहीं।
उसे एक आयताकार कमरे में बंद कर दिया गया। उसमें एक छोटी, बिल्कुल साधारण लकड़ी की कुर्सी थी। एक वरिष्ठ अधिकारी ने उसे आदेश दिया: कुर्सी से कबूल करवाओ और उसका बयान लिखो! तब तक वह कमरे से बाहर नहीं निकला।

— एक कुछ हद तक अवास्तविक कहानी।
नहीं, यह बिलकुल भी अवास्तविक नहीं है। यह शुरू से अंत तक यथार्थवादी है।
स्टालिन ने वास्तव में एक सनकी व्यवस्था बनाई और सत्ता में रहते हुए उसने लगभग दस मिलियन लोगों को मौत के मुंह में धकेल दिया। उनमें से अधिकतर उसके अपने ही देशवासी थे। यही वह दुनिया है जिसमें हम रहते हैं। आपको यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए।
आपको कई मार्मिक कहानियाँ पता हैं।
— नहीं, ऐसा नहीं है। मेरे बैग में कुछ चीज़ें हैं, जिन्हें ज़रूरत पड़ने पर निकाल लेती हूँ। मुझे कोई व्यवस्थित शिक्षा नहीं मिली, इसलिए मुझे बस एक-एक करके वही चीज़ें हासिल करनी हैं जो मेरे लिए वाकई उपयोगी साबित हों। अगर आप कुछ पाना चाहते हैं, तो उसके लिए संघर्ष करना पड़ता है। जैसा आपने कहा, बिल्कुल सही। लेकिन इच्छाएँ कम और कुछ हद तक अमूर्त होती हैं, जबकि दंड असहनीय रूप से असंख्य और ठोस होते हैं। यह एक ऐसी बात है जो मैंने बहुत मुश्किल से सीखी है।
और क्या जांचकर्ता पद के उम्मीदवारों को अंततः लकड़ी की कुर्सी से गवाही प्राप्त करने में सफलता मिली?
"यह एक विचारणीय प्रश्न है," तामारू ने उत्तर दिया। मानो यह कोई ज़ेन कहावत हो।
- ज़ेन स्टालिनवादी, श्री आओमे।
तामारू ने एक पल इंतजार किया, फिर फोन काट दिया।
*

उस दोपहर, आओमामे ने एक्सरसाइज बाइक और प्रेस पर कसरत की। लंबे समय बाद फिर से इनसे मिलने वाले सुखद प्रतिरोध को महसूस करके उन्हें बहुत अच्छा लगा। फिर उन्होंने पसीना पोंछने के लिए स्नान किया और रेडियो सुनते हुए एक साधारण भोजन तैयार किया। उन्होंने शाम की खबरें देखीं (कोई ऐसी खबर नहीं थी जिसमें उनकी दिलचस्पी हो)। और सूर्यास्त के समय, वह पार्क का जायजा लेने के लिए बालकनी में गईं। कंबल, दूरबीन और बंदूक के साथ। और अपने नए, बेहद चमकदार धातु के बल्ले के साथ।
अगर इस बीच टेंगो नहीं आया, तो इस रहस्यमय 1Q84 के अंत तक, मैं कोएंजी के एक कोने में नीरस जीवन बिताऊँगी। मैं पार्क में टेंगो के आने का इंतज़ार करूँगी, और इस बीच मैं खाना बनाऊँगी, व्यायाम करूँगी, समाचार देखूँगी और प्रॉस्ट की किताबें पढ़ूँगी। उसका इंतज़ार ही मेरे जीवन का मूलमंत्र होगा। यही कमज़ोर धागा है जो मुझे हर हाल में ज़िंदा रखे हुए है। मैं उस मकड़ी जैसी हूँ जिसे मैंने राजमार्ग पर आपातकालीन सीढ़ियों से नीचे उतरते समय देखा था। एक छोटी सी काली मकड़ी, एक गंदे कोने में अपना टूटा हुआ जाला बुन रही थी और वहाँ बेदम खड़ी थी। एक गंदा, फटा हुआ जाला, पुल के खंभों के बीच से बहती हवा से लहरा रहा था। जब मैंने उसे देखा, तो वह मुझे दया के पात्र लगी। लेकिन अब मैं उसी मकड़ी जैसी स्थिति में हूँ।
आओमामे ने सोचा, मुझे जनाचेक की सिम्फोनीटा की एक कैसेट चाहिए। मुझे अभ्यास करते समय इसकी ज़रूरत पड़ती है। यह संगीत मुझे किसी जगह से जोड़ता है - एक ऐसी जगह जिसे मैं पहचान नहीं सकती। यह मुझे कहीं ले जाता है। मैं इसे तमारू के लिए अपनी अगली सामान की सूची में ज़रूर शामिल करूँगी।

*

अब अक्टूबर का महीना था और मोहलत की अवधि में तीन महीने से भी कम समय बचा था। घड़ी बिना रुके टिक-टिक कर रही थी। आओमामे बगीचे की कुर्सी पर बैठी हुई थी और बालकनी की प्लास्टिक की टाइलों से पार्क को देखती जा रही थी। लालटेन की रोशनी से छोटा सा पार्क पारदर्शी प्रकाश से जगमगा रहा था। यह नज़ारा उसे रात में किसी मछलीघर के सुनसान गलियारों की याद दिलाता था। काल्पनिक, अदृश्य मछलियाँ पेड़ों के बीच चुपचाप तैर रही थीं, उनकी शांत लहरें कभी नहीं रुकती थीं। दो चाँद आकाश में तैर रहे थे, मानो उसकी सहमति का इंतज़ार कर रहे हों।
"टेंगो," उसने फुसफुसाते हुए कहा। "तुम कहाँ हो?"

अध्याय 3 वे सभी सजे-धजे जानवर थे

दोपहर में, टेंगो अपने पिता के कमरे में गया, बिस्तर के पास बैठ गया और एक किताब ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने लगा। लगभग पाँच पन्ने पढ़ने के बाद, वह रुका, फिर अगले पाँच पन्ने पढ़े। वह वही किताब थी जो उस समय उसके पास थी। चाहे वह उपन्यास हो, जीवनी हो या विज्ञान की किताब, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। बूढ़े पिता के लिए, विषयवस्तु महत्वपूर्ण नहीं थी, बल्कि किसी की आवाज़ में वाक्यों को ज़ोर से सुनना महत्वपूर्ण था।
टेंगो को नहीं पता था कि उसके पिता उसे सुन पा रहे हैं या नहीं। उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं था। दुबला-पतला, जर्जर सा दिखने वाला बूढ़ा आदमी आँखें बंद करके सो रहा था। वह हिल-डुल नहीं रहा था, और उसकी साँसें भी सुनाई नहीं दे रही थीं। बेशक वह साँस ले रहा था, लेकिन जब तक आप अपना कान उसके पास न ले जाएँ या उसकी नाक के नीचे दर्पण न रखें, तब तक पता नहीं चलता था। उसके शरीर में IV लगा हुआ था, और कैथेटर से थोड़ा-बहुत स्राव निकल रहा था। ये धीमी गति से होने वाला प्रवाह ही इस बात का एकमात्र संकेत था कि वह अभी भी जीवित है। बीच-बीच में एक नर्स बिजली के रेज़र से उसकी दाढ़ी बनाती और गोल नोक वाली कैंची से उसकी नाक और कानों पर उगने वाले बालों को काटती रहती। वह उसकी भौहें भी काटती। बेहोश होने के बावजूद, उसके बाल बढ़ते ही जा रहे थे। उसे देखकर टेंगो को जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर समझ नहीं आ रहा था। वह सोच रहा था कि क्या वास्तव में कोई अंतर है और क्या हम जो अंतर करते हैं वह केवल सुविधा के लिए है।
तीन बजे डॉक्टर आए और उन्होंने पिता की हालत के बारे में बताया। डॉक्टर की सलाह आमतौर पर संक्षिप्त होती थी और उसका सार लगभग एक जैसा ही होता था। हालत में कोई सुधार नहीं हो रहा था। बुजुर्ग व्यक्ति कोमा में थे, लेकिन धीरे-धीरे उनकी जीवन शक्ति कम होती जा रही थी। दूसरे शब्दों में, वे धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से मृत्यु की ओर बढ़ रहे थे। दवा से उनका कोई इलाज नहीं था। वे बस उन्हें उसी हालत में छोड़ सकते थे। डॉक्टर ने बस इतना ही कहा।
शाम को दो नर्सें आईं और बूढ़े आदमी को जांच के लिए ले गईं। हर बार नर्सें अलग-अलग थीं, लेकिन वे सभी चुप थीं। शायद चेहरे पर लगे मेडिकल मास्क की वजह से उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा। उनमें से एक नर्स अजनबी जैसी लग रही थी। वह सांवली और कद में छोटी थी। उसकी आंखों से तेंगो समझ गया कि वह मास्क के पीछे से उसे देखकर मुस्कुरा रही है। तेंगो ने भी मुस्कुराकर सिर हिलाया।
तीस मिनट बाद, ज़्यादा से ज़्यादा एक घंटे के भीतर, उसके पिता को कमरे में वापस लाया गया। टेंगो को नहीं पता था कि उन पर किस तरह के परीक्षण किए जा रहे हैं। जब उन्हें ले जाया जाता, तो टेंगो नीचे कैंटीन में जाकर गर्म चाय पीता। फिर, पंद्रह मिनट बाद, वह बैठक में लौट आता, इस उम्मीद में कि उसे खाली पलंग में फिर से हवा का एक झोंका मिलेगा, जिस पर छोटी बच्ची आओमामे लेट सकेगी। लेकिन कुछ नहीं हुआ। अर्ध-अंधेरे कमरे में, जिसमें बीमारी की गंध आ रही थी, खाली पलंग वैसे ही पड़ा रहा।
टेंगो खड़ा हुआ और खिड़की से बाहर देखने लगा। लॉन के अंत में चीड़ के पेड़ों की घनी कतारें थीं, जिन्हें हवा से बचाव के लिए लगाया गया था, और उनके पार उसे लहरों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। ये प्रशांत महासागर की उबड़-खाबड़ लहरें

थीं, जिनमें गहरी और भारी गूंज थी, जिनमें कई आत्माओं को सिमटा हुआ महसूस किया जा सकता था, हर कोई अपनी कहानी बुदबुदा रहा था। वे और आत्माओं और कहानियों को आकर्षित करने की कोशिश कर रही थीं।
*

अक्टूबर में, तेंगो अपनी छुट्टियों के दिनों में दो बार चिकुरा के सैनिटोरियम आया था। वह सुबह की एक्सप्रेस ट्रेन से अपने पिता के पास जाकर उनसे बातें करता था। लेकिन पिता की ओर से उसे कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। बूढ़ा व्यक्ति गहरी नींद में सो रहा था, चेहरा ऊपर की ओर था। तेंगो ज़्यादातर समय खिड़की से बाहर देखता रहता था। फिर, शाम होते ही, वह कुछ होने का इंतज़ार करता। लेकिन कुछ नहीं होता था। सूरज धीरे से डूब जाता और कमरा अर्ध-अंधेरे में डूब जाता। आखिरकार वह उठता और आखिरी एक्सप्रेस ट्रेन से टोक्यो लौट जाता।
एक समय टेंगो ने सोचा था, "शायद मुझे वहां और ज़्यादा रुककर उससे बात करनी चाहिए। शायद ये एक दिन की मुलाक़ातें काफ़ी नहीं हैं और मुझे वास्तव में और ज़्यादा समर्पण की ज़रूरत है।" यह किसी ठोस आधार पर नहीं था, लेकिन उसे ऐसा ही महसूस हो रहा था।
तो, नवंबर के मध्य के बाद, उन्होंने छुट्टी ले ली। उन्होंने तैयारी विद्यालय के लोगों को बताया कि उन्हें अपने पिता की देखभाल करनी है, जिनकी हालत गंभीर थी। यह झूठ नहीं था। उन्होंने अपने एक पुराने कॉलेज के सहपाठी से कहा कि जब तक वह अनुपस्थित हैं, तब तक वह उनकी कक्षाएं संभाल लें। वह उन गिने-चुने लोगों में से एक थे जिनसे टेंगो का अब भी संपर्क बना हुआ था। स्नातक होने के बाद भी वे साल में एक-दो बार बात करते रहे। गणित जैसे क्षेत्र में, जहाँ बहुत से अजीबोगरीब लोग देखने को मिलते हैं, वह सबसे अजीब थे, लेकिन उनका दिमाग बहुत तेज़ था। हालाँकि, कॉलेज से स्नातक होने के बाद, उन्होंने न तो कोई नौकरी की और न ही शोध कार्य में लगे रहे; इसके बजाय, जब उनका मन करता, तो वह अपने एक मित्र द्वारा चलाए जा रहे माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिए एक अतिरिक्त कक्षा में गणित पढ़ाते थे। इसके अलावा, वह तरह-तरह की किताबें पढ़ते, पहाड़ी नदियों में मछली पकड़ते और आम तौर पर अपना समय अपनी मर्जी से बिताते थे। टेंगो को पता था कि वह भी एक सक्षम शिक्षक थे, लेकिन वह अपनी क्षमताओं से तंग आ चुके थे। इसके अलावा, वह एक धनी परिवार से थे और उन्हें वास्तव में काम करने की ज़रूरत नहीं थी। टेंगो ने पहले भी उसे अपनी जगह पढ़ाने के लिए कहा था, और छात्र उसे पसंद करते थे। उसने उसे फोन किया और स्थिति समझाई, और उसका दोस्त तुरंत मान गया।
फुकाएरी की समस्या अभी भी बनी हुई थी, जो उसके साथ रह रही थी। तेंगो को समझ नहीं आ रहा था कि वास्तविकता से कटी हुई इस लड़की को लंबे समय तक अपने अपार्टमेंट में अकेला छोड़ना सही होगा या नहीं। इसके अलावा, वह दुनिया से छिपने के लिए वहाँ रह रही थी। बेहतर होगा कि उससे खुद ही पूछ लिया जाए। क्या वह उसकी अनुपस्थिति में वहाँ रहना चाहती है, या वह अस्थायी रूप से कहीं और रहना पसंद करेगी?
"तुम कहाँ जा रहे हो?" फुकेरी ने गंभीर भाव से उससे पूछा।

"बिल्लियों के शहर में," टेंगो ने जवाब दिया। "मेरे पिता को होश नहीं आ रहा है। वे काफी समय से कोमा में हैं। डॉक्टरों ने मुझे बताया है कि शायद वे ज्यादा दिन जीवित न रहें।"
उसने उसे यह नहीं बताया कि एक रात अस्पताल के बिस्तर पर हवा का एक कोकून प्रकट हुआ था, जिसके अंदर छोटी बच्ची आओमामे सो रही थी, और वह हवा का कोकून बिल्कुल वैसा ही था जैसा फुकेरी ने उपन्यास में वर्णित किया था। उसने उससे यह बात भी छिपा ली कि वह मन ही मन आशा करती थी कि वह उसे फिर से दिखाई दे।
अपने होंठ कसकर दबाए और आंखें सिकोड़कर, फुकाएरी उसे काफी देर तक घूरता रहा, मानो उसके चेहरे पर लिखे किसी छोटे से संदेश को पढ़ने की कोशिश कर रहा हो। अनजाने में ही टेंगो ने अपना हाथ अपने चेहरे पर रख दिया, लेकिन उसे वहां कुछ भी लिखा हुआ महसूस नहीं हुआ।
“यह अच्छी बात है,” फुकेरी ने सिर हिलाते हुए कहा। “मेरी चिंता मत करो। मैं यहीं रहूंगा।” फिर उसने कुछ पल सोचा और बोला, “अब कोई खतरा नहीं है।”
“अभी कोई खतरा नहीं है,” टेंगो ने दोहराया।
"मेरी चिंता मत करो," उसने दोहराया।
मैं आपको हर रोज फोन करूंगा।
— बिल्लियों के शहर में खो मत जाना।
"मैं इसका ख्याल रखूंगा," टेंगो ने कहा।
टेंगो सुपरमार्केट गया और इतना खाना खरीद लाया कि फुकाएरी को लंबे समय तक घर से बाहर न जाना पड़े। उसने सिर्फ वही चीजें खरीदीं जिन्हें बनाना आसान था, क्योंकि वह अच्छी तरह जानता था कि फुकाएरी को न तो खाना बनाने की इच्छा थी और न ही हुनर। वह यह भी नहीं चाहता था कि दो हफ्ते बाद फ्रिज में सड़ा हुआ और फफूंदी लगा खाना मिले।
उसने कपड़े बदलने के लिए कुछ सामान, कुछ ज़रूरी चीज़ें, किताबें, कागज़ और लिखने का सामान एक विनाइल बैग में पैक किया। टोक्यो स्टेशन पर, वह हमेशा की तरह तातेयामा एक्सप्रेस में चढ़ा, जहाँ उसने एक कर्मचारी को साथ लिया। दूसरे स्टॉप पर, वह चिकुरा में उतर गया। उसने स्टेशन के सामने स्थित पर्यटक सूचना कार्यालय में रहने के लिए अपेक्षाकृत सस्ता स्थान ढूँढा। चूंकि यह ऑफ-सीज़न था, इसलिए उसे खाली कमरा मिलने में कोई परेशानी नहीं हुई। उसने एक साधारण सराय में चेक-इन किया, जहाँ ज़्यादातर मछुआरे आते थे। कमरा छोटा था लेकिन साफ़ था, और फर्श पर बिछी चटाई से नई खुशबू आ रही थी। यह दूसरी मंज़िल पर था, और खिड़की से मछली पकड़ने का बंदरगाह दिखाई देता था। नाश्ते सहित प्रति रात का किराया तेंगो की उम्मीद से कहीं कम था।
उसने मकान मालकिन को बताया कि उसे नहीं पता कि वह वहाँ कितने दिन रहेगा, इसलिए वह शुरू में तीन रातों का किराया देना चाहता है। महिला को कोई आपत्ति नहीं थी। उसने उसे बताया कि रात ग्यारह बजे गेट बंद हो जाएगा और घुमा-फिराकर यह भी कहा कि उसे कमरे में महिलाओं को लाने की अनुमति नहीं है। टेंगो को भी कोई आपत्ति नहीं थी। अपने कमरे में पहुँचने के बाद उसने सैनिटोरियम को फोन किया। एक नर्स ने जवाब दिया (हमेशा की तरह, वही अधेड़ उम्र की महिला)। उसने पूछा कि क्या वह उस दिन दोपहर लगभग तीन बजे अपने पिता से मिलने जा सकता है। उसे बताया गया, बिल्कुल।
“श्री कावाना अभी भी बेहोश हैं,” उसने उन्हें सूचित किया।

*

मौजूद रहती थी। उसे लगता था कि कहीं न कहीं उस दुनिया में वह भी है। कि वह भी शायद उसे ढूंढ रही है। इसी वजह से उस शाम उसने उससे मिलने का एक बहुत ही खास तरीका चुना था। ओमामे उसे भूली नहीं थी।
जब तक कि उसने जो देखा वह किसी तरह का मतिभ्रम न हो।
कभी-कभी उसे अपनी पूर्व प्रेमिका की याद आ जाती थी। वह अब क्या कर रही होगी? उसके पति ने फोन पर उससे कहा था कि वह खो गई है। कि वे अब कभी दोबारा नहीं मिल पाएंगे। वह खो गई है। यह भाव अभी भी टेंगो को बेचैन कर देता था। उसे उसमें, बिना किसी संदेह के, अशुभ संकेत की झलक दिखाई देती थी।
लेकिन अंत में, उसका अस्तित्व उससे दूर होता जा रहा था। उसे साथ बिताई दोपहरें अब बस अतीत की बातें बनकर रह गई थीं, और उसे इस बात का अपराधबोध होता था। लेकिन धीरे-धीरे, परिस्थितियाँ बदल चुकी थीं और अब हालात पहले जैसे नहीं रह सकते थे।
*

अपने पिता के कमरे में प्रवेश करते ही, टेंगो बिस्तर के बगल वाली कुर्सी पर बैठ गया और संक्षेप में बूढ़े व्यक्ति को नमस्कार किया। फिर वह उन्हें बताता कि पिछली शाम से उसने क्या किया था। ज़ाहिर है, बताने के लिए ज़्यादा कुछ नहीं था। वह बस से शहर वापस जाता, किसी कैफे में कुछ सादा खाना खाता, एक बियर पीता, फिर सराय लौटकर पढ़ता। रात दस बजे सो जाता। सुबह टहलने जाता, खाना खाता और लगभग दो घंटे लिखता। हर दिन वह यही दोहराता था। हालाँकि, वह ये सब बातें रोज़ाना और विस्तार से अपने सामने लेटे हुए बेसुध बूढ़े व्यक्ति को बताता था। ज़ाहिर है, उसके पिता की कोई प्रतिक्रिया नहीं होती थी। ऐसा लगता था जैसे वह दीवारों से बात कर रहा हो। यह महज़ एक आदत बन चुकी रस्म थी। लेकिन कभी-कभी साधारण दोहराव का भी अपना अर्थ होता है।
फिर टेंगो अपनी लाई हुई किताब से उन्हें पढ़कर सुनाता। कोई खास किताब नहीं होती थी, वह जो भी किताब उनके पास होती, वहीं से पढ़ना शुरू कर देते जहाँ से उन्होंने पढ़ना छोड़ा था। अगर उनके पास लॉनमूवर होता, तो वे उसे भी पढ़कर सुना देते। वे शब्दों को साफ और धीरे-धीरे बोलते ताकि बूढ़ा आदमी उन्हें समझ सके। बस यही उनकी चिंता थी।

बिजली की चमक तेज़ होती जा रही थी और सड़क उसकी नीली रोशनी से जगमगा रही थी, लेकिन गरज की कोई आवाज़ नहीं थी। शायद गरज हो रही थी, पर उसके धुंधले दिमाग ने उसे महसूस नहीं किया। सड़क पर बारिश की बूँदें बह रही थीं। इन धाराओं के बीच से गुज़रते हुए, ग्राहक बिना रुके एक-एक करके अंदर आ रहे थे। उसके साथ आया दोस्त उन्हें हैरानी से देख रहा था, लेकिन काफी देर तक कुछ नहीं बोला। चारों तरफ से धक्के लगने से उन्हें साँस लेने में भी मुश्किल हो रही थी। किसी ने खाँसी की या शायद खाना गले में अटक गया था। उसे एक अजीब सी आवाज़ सुनाई दी, जैसे कोई कुत्ता सूंघ रहा हो।
अचानक, बिजली की एक भयानक चमक से कमरा नीली रोशनी से जगमगा उठा और फर्श पर बैठे ग्राहक रोशन हो गए। उसी क्षण, गरज की ऐसी गड़गड़ाहट हुई मानो छत फट गई हो। भयभीत होकर वह उछल पड़ा और फर्श पर बैठे सभी लोगों के चेहरे उसकी ओर मुड़ गए। वे सभी जानवरों के वेश में थे, शायद कुत्ते या शायद लोमड़ी, और उनमें से कुछ अपनी लंबी जीभ से होंठ चाट रहे थे।

ठीक होने की कोई उम्मीद न रखने वाले बूढ़े, दुर्बल रोगियों की देखभाल करते हुए उसे कैसा महसूस होता होगा। लड़की युवा और स्वस्थ दिख रही थी। उसके कड़क सफेद गाउन के नीचे, उसके कूल्हे और स्तन दिखाई दे रहे थे, नाजुक लेकिन बिल्कुल सही आकार के। उसकी कोमल गर्दन पर लगे रोएँ सुनहरे रंग के चमक रहे थे। उसकी छाती पर लगे बैज पर "अदाची" लिखा था।
आखिर किस बात ने उसे इतनी दूर, मृत्यु और सुस्ती से घिरी जगह पर ला खड़ा किया था? टेंगो को एहसास हुआ कि वह एक कुशल और मेहनती नर्स थी। वह अभी जवान थी और उसमें निपुणता थी। अगर वह चाहती तो किसी दूसरे अस्पताल में काम कर सकती थी। किसी ऐसी जगह पर जो ज़्यादा जीवंत और दिलचस्प हो। उसने इस उदास जगह को क्यों चुना? टेंगो जानना चाहता था कि किन कारणों और किस कहानी ने उसे यहाँ खींचा था। अगर उसने उससे सीधे पूछा होता तो वह जवाब दे देती, क्योंकि ऐसा लग रहा था कि वह उससे बात करने के लिए बेताब थी। लेकिन टेंगो ने सोचा कि ऐसी बातों में न पड़ना ही बेहतर होगा। आखिर वह बिल्लियों के शहर में था और किसी न किसी समय उसे ट्रेन पकड़कर अपनी दुनिया में लौटना ही था।
अपने निर्धारित कार्यों को पूरा करने के बाद, नर्स ने फाइल को वापस उसकी जगह पर रख दिया और टेंगो की ओर देखकर अजीब सी मुस्कान दी।
"कोई बदलाव नहीं हुआ है। सब कुछ पहले की तरह ही चल रहा है।"
उन्होंने यथासंभव उत्साह से जवाब दिया, "यह स्थिर है। यही सबसे आशावादी दृष्टिकोण है।"
महिला ने थोड़ी माफी मांगते हुए मुस्कुराया और अपना सिर थोड़ा झुकाया। फिर उसने उस बंद किताब की ओर देखा जो टेंगो की गोद में रखी थी।
— क्या आप इसे पढ़ रहे हैं?
मैं सहमत हूं।
लेकिन यह एक रहस्य ही बना हुआ है कि वह मेरी बात सुनता है या नहीं।
"लेकिन फिर भी, यह अच्छा है," नर्स ने कहा।
चाहे अच्छा हो या बुरा, यही एक चीज है जो मैं कर सकता हूँ।
— बहुत कम लोग अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का प्रयास करते हैं!
"मेरे विपरीत, अधिकांश लोग व्यस्त हैं," टेंगो ने कहा।
नर्स कुछ कहने लगी, हिचकिचाई, लेकिन अंत में चुप हो गई। उसने बिस्तर पर लेटे बूढ़े आदमी को देखा, फिर टेंगो को।
“मुझे उम्मीद है कि वह ठीक हो जाएगा!” उसने कहा।
“धन्यवाद,” टेंगो ने उत्तर दिया।
नर्स अदाची के कमरे से चले जाने के बाद, टेंगो थोड़ी देर बैठा रहा, फिर पढ़ने में वापस लग गया।
*

उस शाम, जब उसके पिता को जांच के लिए स्ट्रेचर पर ले जाया जा रहा था, तो टेंगो कैफेटेरिया में गया, कुछ चाय पी और एक सार्वजनिक फोन से फुकाएरी को फोन किया। "क्या कुछ और भी हुआ?" उसने उससे पूछा।
"कुछ खास नहीं," फुकेरी ने जवाब दिया। "हमेशा की तरह।"
"मेरे साथ भी ऐसा ही है। मैं हर दिन वही काम करता हूं।"
लेकिन समय कभी स्थिर नहीं रहता।
— बिलकुल सही। समय निरंतर, दिन-प्रतिदिन आगे बढ़ता रहता है।

और आप इसे वापस नहीं ला सकते।
फुकेरी ने कहा, "कौआ थोड़ी देर पहले फिर आया था। यह एक बड़ा कौआ है।"
वह शाम को हमेशा खिड़की पर आता है।
वह हर रोज वही काम करता है।
"बिल्कुल सही," टेंगो ने कहा। "मेरी तरह!"
लेकिन वह समय के बारे में नहीं सोचता।
"खैर, कौवे समय के बारे में नहीं सोचते। मनुष्य ही शायद एकमात्र ऐसे प्राणी हैं जिन्हें समय की अवधारणा होती है।"
- क्यों।
— लोग समय को एक सीधी रेखा के रूप में देखते हैं। जैसे एक लंबी, सीधी, मापी हुई छड़ी हो। एक तरफ अतीत है, दूसरी तरफ भविष्य है, और यह बिंदु वर्तमान है। कुछ ऐसा ही। क्या आप समझ रहे हैं?
- शायद।
लेकिन सच्चाई यह है कि समय एक सीधी रेखा नहीं है। इसका कोई आकार नहीं है। आप इसे किसी भी अर्थ में लें, यह निराकार है। लेकिन हम निराकार की कल्पना नहीं कर सकते, इसलिए सुविधा के लिए हम इसे रेखीय मानते हैं। फिलहाल, केवल मनुष्य ही अवधारणाओं को इस तरह से प्रतिस्थापित करने में सक्षम हैं।
लेकिन शायद हम गलत हैं।
टेंगो ने उसकी कही बात पर एक पल के लिए सोचा।
— मेरा मतलब है, शायद समय को रैखिक रूप में समझने में हम गलत हैं?
कोई जवाब नहीं।
"बिल्कुल मुमकिन है। हो सकता है हम गलत हों और कौवे सही हों। हो सकता है समय एक सीधी रेखा न होकर एक घुमावदार डोनट की तरह हो," टेंगो ने कहा। "लेकिन हज़ारों सालों से लोग इसे इसी तरह समझते आए हैं, एक सीधी रेखा जो अनंत तक चलती रहती है। हमने अब तक इसी अवधारणा के आधार पर काम किया है। और अब तक इससे कोई विरोधाभास या असुविधा नहीं हुई है। इसलिए अनुभव के आधार पर यह सही है।"
"अनुभवजन्य दृष्टिकोण से," फुकेरी ने कहा।
यानी, बार-बार परीक्षण करने के बाद, किसी परिकल्पना को सत्य माना जाता है।
फुकेरी कुछ क्षणों के लिए चुप रहा। तेंगो को पता नहीं था कि वह समझ पाया या नहीं।
"हैलो," उसने उसकी उपस्थिति को स्वीकार करने की कोशिश की।
"आप कब से यहां रह रहे हैं?" उसने बिना किसी भाव-भंगिमा के पूछा।
मैं चिकुरा में कितने दिन रुकूंगा?
- हाँ।
"मुझे नहीं पता," टेंगो ने ईमानदारी से जवाब दिया। "अभी के लिए, मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि जब तक मैं संतुष्ट नहीं हो जाता, तब तक मैं यहीं रहूँगा। अभी भी कुछ चीजें हैं जिनसे मैं खुश नहीं हूँ। मैं कुछ समय इंतजार करके देखूंगा कि आगे क्या होता है।"
फुकेरी ने रिसीवर पर फिर से चुप्पी साध ली। उसके चुप होने पर कुछ भी सुनाई नहीं दिया।
"हैलो," टेंगो ने फिर कहा।
"ट्रेन मत छूटने देना," फुकेरी ने कहा।

"मैं सावधान रहूंगा," टेंगो ने जवाब दिया। "मैं ट्रेन न छूटने का ध्यान रखूंगा। क्या वहां सब ठीक है?"
— कोई पहले ही आ गया था।
— सिनेमा?
— एन-आई-एच-आई से।
— एनएचके का कर संग्रहकर्ता?
"कर संग्रहकर्ता?" फुकेरी ने बिना किसी भाव के फिर पूछा।
"क्या तुमने उससे बात की?"
मुझे उसकी बात समझ नहीं आई।
उन्हें तो यह भी नहीं पता था कि एनएचके क्या है। जिस दुनिया में वे रहते थे, उसके बारे में उन्हें कुछ बुनियादी जानकारी का अभाव था।
"इसे समझाने में काफी समय लगेगा, इसलिए मैं आपको फोन पर सारी जानकारी नहीं दूंगा, लेकिन संक्षेप में, यह एक बड़ा संगठन है, जिसमें बहुत सारे लोग काम करते हैं। वे हर महीने जापानी लोगों के घरों में जाकर पैसे इकट्ठा करते हैं। लेकिन आपको और मुझे भुगतान करने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि हमें कुछ नहीं मिलता। वैसे, मुझे उम्मीद है कि आपने दरवाज़ा नहीं खोला होगा, है ना?"
"मैंने इसे अनलॉक नहीं किया। जैसा आपने मुझे बताया था।"
- बहुत अच्छा।
लेकिन उसने कहा कि हम चोर हैं।
"चिंता मत करो," टेंगो ने कहा।
हम कुछ भी नहीं चुराते।
"बिल्कुल। हम कुछ भी गलत नहीं कर रहे हैं।"
फुकेरी फिर चुप हो गई।
— हेलो! मुझे मिल गया।
फुकेरी ने कोई जवाब नहीं दिया, शायद उसने फोन काट दिया था। हालांकि, रिसीवर रखने की कोई आवाज नहीं आई।
“हैलो!” टेंगो ने इस बार थोड़ी ऊंची आवाज में फिर कहा।
फुकेरी ने धीरे से खांसा।
वह आपको अच्छी तरह जानता था।
— कर संग्रहकर्ता?
- हाँ यह सही है।
"और उसने तुम्हें चोर कहा?"
"वह मेरे बारे में बात नहीं कर रहा था।"
"क्या वह मेरे बारे में बात कर रहा था?"
फुकेरी ने कोई जवाब नहीं दिया।
वैसे भी, मेरे पास टीवी नहीं है और मैं एनएचके से कुछ भी नहीं चुराता।
— वह इस बात पर गुस्सा हो गया कि मैंने उसके लिए दरवाजा नहीं खोला।
"यह उसका निजी मामला है। उसे गुस्सा होने दो। वह कुछ भी कहे, पहली बार में दरवाजा मत खोलो।"
— अनलॉक न करें।
ये कहते हुए फुकाएरी ने अचानक फोन काट दिया। या शायद यह अचानक नहीं था। शायद उसके लिए फोन काटने का तार्किक और स्वाभाविक समय आ गया था। लेकिन टेंगो को

*

क्या समय वास्तव में रैखिक है?
"मैं असमंजस में हूँ," उसने दीवारों से कहा। "बहुत सारी अनिश्चितताएं हैं। मैं भले ही बाल प्रतिभा का धनी हूँ, लेकिन फिर भी मुझे समाधान नहीं मिल रहा है।"
दीवारों ने उसे कोई जवाब नहीं दिया, ज़ाहिर है। उन्होंने अपनी राय साझा नहीं की। वे बस चुपचाप सूर्यास्त के रंग को प्रतिबिंबित करती रहीं।

अध्याय 4 ओकैम का रेज़र

उशिकावा को यह आशंका सता रही थी कि अज़ाबू में रहने वाली वह बुढ़िया शायद अग्रणी नेता की हत्या से किसी न किसी तरह जुड़ी हो सकती है। उन्होंने उसके बारे में मोटे तौर पर छानबीन की थी। सामाजिक प्रतिष्ठा वाली एक जानी-मानी हस्ती होने के कारण, उनके लिए उसकी जांच करना मुश्किल नहीं था। उसके पति युद्धोत्तर काल के महान उद्योगपतियों में से एक थे। वे मुख्य रूप से पूंजी और भूमि निवेश में लगे हुए थे, लेकिन डिपार्टमेंट स्टोर और परिवहन जैसे अन्य विकासशील क्षेत्रों में भी उनका हाथ था। 1950 के दशक के अंत में, जब उनके पति दिवालिया हो गए, तो उनकी पत्नी ने उनका कारोबार संभाल लिया। उस महिला में व्यापार की प्रतिभा थी और सबसे बढ़कर, खतरे को भांपने की तीव्र क्षमता थी। 1960 के दशक के उत्तरार्ध में, उन्हें लगा कि कारोबार बहुत अधिक बढ़ गया है और उन्होंने स्टॉक एक्सचेंज में मूल्य अधिक होने के दौरान ही व्यवस्थित रूप से उसका कुछ हिस्सा बेच दिया। इस प्रकार, उन्होंने धीरे-धीरे अपने संगठन को छोटा किया और बचे हुए हिस्से को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया। इस कदम की बदौलत, वह कुछ समय बाद आए तेल संकट से न्यूनतम नुकसान के साथ बच निकली और उसने काफी पूंजी जमा कर ली। उसमें दूसरों के लिए खतरनाक स्थिति को अपने लिए अवसर में बदलने की प्रतिभा थी।
अब उनकी उम्र सत्तर वर्ष से अधिक हो चुकी थी और वे व्यापार से सेवानिवृत्त हो चुकी थीं। उनके पास काफी संपत्ति थी और वे अपने विशाल निवास में शांतिपूर्ण और निर्मल जीवन व्यतीत करती थीं। उनका जन्म एक धनी परिवार में हुआ था, उन्होंने एक धनी व्यक्ति से विवाह किया था और उनकी मृत्यु के बाद उनकी संपत्ति और भी बढ़ गई थी। ऐसी महिला हत्या की योजना क्यों बनाएगी?
फिर भी, उशिकावा ने उस बूढ़ी औरत की जाँच जारी रखने का फैसला किया। एक कारण तो यह था कि उनके पास कोई और सुराग नहीं था, लेकिन दूसरा कारण यह था कि वह उस आश्रय गृह की कहानी से संतुष्ट नहीं थे जिसे वह चला रही थीं। घरेलू हिंसा से पीड़ित महिलाओं को मुफ्त आश्रय प्रदान करना अपने आप में कोई असामान्य बात नहीं थी। यह समाज के लिए एक अच्छी और कारगर सेवा थी। इसके पास आवश्यक संसाधन मौजूद थे, और इससे लाभान्वित होने वाली महिलाएं शायद इसकी आभारी भी थीं। हालांकि, उनके द्वारा अपनाए गए सुरक्षा उपाय कई मायनों में संदिग्ध थे: मजबूत गेट, ताले, जर्मन शेफर्ड कुत्ता, वीडियो कैमरे। उशिकावा को लगा कि पूरी कहानी कुछ ज्यादा ही जटिल है।
सबसे पहले, उशिकावा नगर पालिका कार्यालय गई ताकि उस ज़मीन और घर का नाम पता कर सके जहाँ वह बुढ़िया रहती थी। चूंकि यह सार्वजनिक जानकारी थी, इसलिए उसे बस नगर पालिका कार्यालय जाना था। ज़मीन और घर दोनों उसके नाम पर ही पंजीकृत थे। उस पर कोई गिरवी नहीं थी। सब कुछ स्पष्ट और सरल था। निजी संपत्ति होने के कारण वार्षिक कर काफी अधिक था, लेकिन शायद उसे हर साल इतना भुगतान करना कोई बड़ी बात नहीं लगती थी। विरासत कर भी काफी अधिक था, लेकिन वह इसकी भी चिंता नहीं करती दिख रही थी। धनवान व्यक्ति के लिए यह असामान्य था। उशिकावा के ज्ञान के अनुसार, ऐसा कोई धनी व्यक्ति नहीं था जो करों और शुल्कों की शिकायत न करता हो।

जब वह लगभग हताश हो चुका था, तब उसका ध्यान एक छोटी रियल एस्टेट एजेंसी की ओर गया जो लंबे समय से उस इलाके में काम कर रही थी।
अंदर उसे एक पीला-सा बूढ़ा आदमी मिला, जिसने घर के बारे में सुनकर सहमति में सिर हिलाया। वह किसी असफल ममी जैसा दिखता था, लेकिन उसे इलाके की हर बात की जानकारी थी और वह लोगों से बात करने के लिए इतना उत्सुक था कि किसी से भी बात करने को तैयार था।
“वह घर ओगाटा की पत्नी का है। पहले उसे किराए पर दिया जाता था। मुझे भी नहीं पता कि ओगाटा के पास ऐसा घर क्यों था। वह किराए से पैसे कमाने वाला आदमी नहीं था। मुझे लगता है कि उसके यहाँ काम करने वाले लोग वहाँ रहते थे। अब मुझे ठीक से याद नहीं, लेकिन लगता है कि उन्होंने उसे पुरुषों द्वारा पीटी गई महिलाओं के लिए आश्रय स्थल बना दिया था। खैर, अब हमें उससे एक पैसा भी नहीं मिलता,” बूढ़े आदमी ने कहा और मुँह बंद करके, कठफोड़वा जैसी आवाज़ में हँस पड़ा। “क्या? महिलाओं का आश्रय?” उशिकावा ने बूढ़े व्यक्ति को सेवन स्टार्स देते हुए कहा।
उसने सिगरेट ले ली, उशिकावा को उसे जलाने दिया और बड़े आनंद से धुआँ अंदर खींच लिया। उशिकावा ने सोचा, सिगरेट का यही तो परम आनंद होता होगा, इतने उत्साह से उसे पीना।
"महिलाएं मकान मालिक से इसे लेने के लिए वहां दौड़ती हैं और सूजे हुए चेहरे लेकर भाग जाती हैं। वह उनसे किराया भी नहीं लेता।"
“यह एक तरह की सामाजिक सेवा है, है ना?” उशिकावा ने कहा।
कुछ ऐसा ही। चूंकि उसके पास मुफ्त का घर है, इसलिए वह उन गरीब लोगों की मदद करती है। वैसे तो वह बहुत अमीर है, वह जो चाहे करती है, उसे पैसे की परवाह नहीं है। हम जैसे आम लोगों की तरह नहीं।
"लेकिन श्रीमती ओगाटा ऐसा क्यों करेंगी? मुझे लगता है कि शुरुआत में उनके पास कोई कारण जरूर रहा होगा।"
"क्या तुमने नहीं सुना कि वह अमीर है? वह इसे ऐसे ही शौक के तौर पर करती है।" "लेकिन भले ही वह इसे मजे के लिए करता हो, यह उन महिलाओं के लिए अच्छी बात है जो तकलीफ झेल रही हैं," उशिकावा ने मुस्कुराते हुए कहा। "आखिरकार, सभी अमीर लोग ऐसा नहीं करते।"
"हाँ, बिल्कुल सही, तो यह अच्छी बात है। मैं क्या कहूँ, मैं तो अपनी पत्नी को हमेशा पीटता रहता था," बूढ़े आदमी ने अपना टेढ़ा मुँह चौड़ा करके ज़ोर से हँसते हुए कहा, मानो कभी-कभार पत्नी को पीटना जीवन के उन सुखों में से एक हो जिनका ज़िक्र करना ज़रूरी हो।
"और अब वहां कितने लोग रहते हैं?" उशिकावा ने सवाल पूछने की कोशिश की।
"मैं हर सुबह टहलने जाते समय वहां से गुजरता हूं, लेकिन बाहर से देखकर आपको पता नहीं चलेगा। लेकिन वहां हमेशा कोई न कोई होता है। दुनिया में ऐसे बहुत से पुरुष हैं जो अपनी पत्नियों को पीटते हैं।"
— हाँ, क्योंकि दुनिया में अच्छाई से ज्यादा बुराई है।
बूढ़ा आदमी फिर से मुंह खोलकर हंस पड़ा।
— जैसा कि आपने कहा, बूढ़े आदमी, इस दुनिया में अच्छे काम करने वालों की तुलना में निकम्मे लोगों की संख्या कहीं अधिक है।
बूढ़े व्यक्ति को वह पसंद आया, और इससे उशिकावा असहज हो गया।

"लेकिन, वैसे, श्रीमती ओगाटा किस तरह की इंसान हैं?" उसने मानो यूं ही बेतरतीब ढंग से पूछ लिया।
"ओह, श्री ओगाटा की पत्नी, उह, मुझे नहीं पता," बूढ़े आदमी ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, उनका चेहरा किसी सूखे पेड़ के भूत जैसा लग रहा था। "वह बहुत एकांतप्रिय हैं। मैं यहाँ लंबे समय से काम कर रहा हूँ और मैंने उन्हें कुछ ही बार दूर से देखा है। जब वह बाहर जाती हैं, तो कार से जाती हैं, उनके पास ड्राइवर होता है, और उनकी नौकरानियाँ उनकी खरीदारी करती हैं। उनके पास कोई सहायक भी है, और वह लगभग सब कुछ खुद ही संभालती हैं। वह पढ़ी-लिखी और बेहद अमीर हैं, वह हम जैसे कड़वे लोगों से बात करना भी पसंद नहीं करतीं," बूढ़े आदमी ने अचानक भौंहें चढ़ाते हुए अपनी झुर्रियों के बीच से उशिकावा को आँख मारी।
"हम जैसे कड़वे लोग" इस वाक्यांश में पीले चेहरे वाले बूढ़े व्यक्ति और उशिकावा दोनों को शामिल करते प्रतीत होते थे।
"तो क्या श्री ओगाटा की पत्नी लंबे समय से घरेलू हिंसा से पीड़ित महिलाओं के लिए यह आश्रय चला रही हैं?" उशिकावा ने पूछा।
हम्म, मुझे भी ठीक से नहीं पता। मैंने इस शरणस्थल के बारे में यह कहानी दूसरों से सुनी है। मुझे भी पता है, मैं कब से कहूँ कि यह ऐसा कर रहा है? मैं आपको बस इतना बता सकता हूँ कि लोग लगभग चार साल पहले से वहाँ आने लगे थे। लगभग चार या पाँच साल पहले।
बूढ़े आदमी ने अपना प्याला उठाया और ठंडी चाय की एक घूंट ली। फिर उसने आगे कहा:
— उसी समय उन्होंने एक नया गेट लगा दिया और सुरक्षा व्यवस्था से छेड़छाड़ शुरू कर दी। आखिर यह एक आश्रय स्थल है, अगर कोई भी अंदर घुस सकता है, तो अंदर रहने वाले लोग चैन से नहीं रह सकते।
फिर अचानक बूढ़ा आदमी होश में आया और उसने उशिकावा को खोजी निगाहों से देखा। तो, क्या आप यहाँ घर किराए पर लेना चाहते हैं?
- हाँ।
"कहीं और चले जाओ। यह तो अमीरों का इलाका है, और अगर किराए पर कुछ मिल भी जाए तो वो सिर्फ दूतावासों में काम करने वाले विदेशियों के लिए महंगे मकान हैं। अरे, यहाँ पहले बहुत से आम लोग रहते थे, सिर्फ अमीर लोग नहीं। मेरा धंधा भी ऐसे ही चलता था, लेकिन अब वैसा कुछ कहीं नहीं मिलता। मैं तो अभी से धंधा बंद करने की सोच रहा हूँ। टोक्यो में कीमतें आसमान छू रही हैं, और मेरे जैसा छोटा-मोटा रियल एस्टेट एजेंट इसे संभाल नहीं सकता। कहीं और देखो, वरना वे तुम्हें घर से निकाल देंगे।"
"मैं यही करूंगा," उशिकावा ने कहा। "सच तो यह है कि मेरे पास अतिरिक्त पैसे नहीं हैं। मुझे कहीं और नौकरी ढूंढनी पड़ेगी।"
बूढ़े व्यक्ति ने आह भरते हुए सिगरेट का धुआं बाहर निकाला।
लेकिन अगर श्री ओगाटा की पत्नी का निधन हो जाता है, तो वह घर पल भर में गिरा दिया जाएगा। उनका बेटा इस काम के लिए पूरी तरह तैयार है; वह महंगे इलाके में इतनी बड़ी ज़मीन को यूं ही खाली नहीं छोड़ेगा। वह इसे तुरंत ध्वस्त कर देगा और वहां एक आलीशान अपार्टमेंट इमारत बना देगा। कौन जाने, शायद उसने अपनी योजना पहले से ही बना ली हो।
इसका मतलब है कि यह शांत इलाका थोड़ा बदलने वाला है, है ना?

और कैसे!
उसका बेटा क्या करता है?
— रियल एस्टेट के साथ। संक्षेप में, लगभग वही जो मैं करता हूँ, बस फर्क इतना है कि मुझमें और उसमें ज़मीन-आसमान का फर्क है, जैसे रोल्स रॉयस और साइकिल में होता है। वह पूंजी निवेश करता है और बड़ी-बड़ी इमारतें बनाता है। यह एक सुस्थापित व्यवस्था है और इससे हर एक बूंद मुनाफा निचोड़ लिया जाता है। मेरे लिए कुछ भी काफी नहीं है, इसलिए मुझे किसी तरह गुज़ारा करना ही पड़ेगा। आखिर कर क्या सकते हैं, यही तो दुनिया है!
मैंने आस-पास के इलाके में भी घूमकर वह घर देखा। मैं क्या कहूँ, मुझे वह बहुत पसंद आया, वाकई वह एक अद्भुत जगह है।
“हाँ, हाँ, यह इस इलाके की सबसे अच्छी जगह है। यह सोचकर ही दिल दुखता है कि वे उन खूबसूरत पेड़ों को काट देंगे,” बूढ़े आदमी ने कड़वाहट से सिर हिलाते हुए कहा। “सबसे ज़रूरी बात यह है कि श्रीमती ओगाटा जीवित रहें,” उन्होंने आगे कहा।
"बिल्कुल सही," उशिकावा ने सहमति जताई।
*

उशिकावा ने घरेलू हिंसा पीड़ित परामर्श कार्यालय को फोन किया। उन्हें आश्चर्य हुआ कि फोन बुक में यही नाम दिखाई दिया। यह एक गैर-लाभकारी संस्था थी जिसे कुछ स्वयंसेवी वकीलों द्वारा चलाया जाता था। महिला आश्रय गृह इस संस्था के सहयोग से उन महिलाओं को आश्रय प्रदान करता था जिन्होंने घर छोड़ दिया था और जिनके पास रहने के लिए कोई और जगह नहीं थी। उशिकावा ने अपने कार्यालय का नाम बताते हुए एक बैठक का अनुरोध किया। यह वही न्यू जापान एसोसिएशन फॉर द प्रमोशन ऑफ साइंस एंड आर्ट था। उन्होंने संकेत दिया कि शायद कोई छात्रवृत्ति उपलब्ध हो, और उन्होंने वहां के एक वकील से मिलने की तारीख तय कर ली।
उशिकावा ने उन्हें अपना बिजनेस कार्ड दिया (वही कार्ड जो उन्होंने टेंगो को दिया था) और बताया कि उनके संगठन का एक उद्देश्य हर साल समाज के लिए योगदान देने वाले एक गैर-लाभकारी संगठन का चयन करना और उसे वित्तीय सहायता प्रदान करना है। उम्मीदवारों में घरेलू हिंसा पीड़ितों के लिए परामर्श कार्यालय भी शामिल था। उन्होंने प्रायोजक का नाम नहीं बताया, लेकिन वे छात्रवृत्ति का उपयोग अपनी इच्छानुसार कर सकते थे और वर्ष के अंत में एक साधारण रिपोर्ट प्रस्तुत करने के अलावा उन पर कोई दायित्व नहीं था।
उशिकावा की जांच करने के बाद, वकील ने उस पर कोई खास अच्छा प्रभाव नहीं डाला। उशिकावा की शक्ल-सूरत कभी भी पहली मुलाकात में लोगों का भरोसा या सद्भावना जीतने में कामयाब नहीं हुई। हालांकि, संगठन लगातार पैसों की कमी से जूझ रहा था और किसी भी तरह की आर्थिक मदद का सहर्ष स्वागत करता था। इसलिए वकील ने फिलहाल उशिकावा की बात मान ली, हालांकि उसे अभी भी कुछ शंकाएं थीं।
उशिकावा ने उनसे अपने काम के बारे में और विस्तार से बताने को कहा। वकील ने उन्हें बताया कि परामर्श कार्यालय की स्थापना कैसे हुई और उन्होंने इस संगठन को क्यों शुरू किया। उशिकावा को इसमें ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन उन्होंने ध्यान से सुनने का नाटक किया। ज़रूरत पड़ने पर उन्होंने सिर हिलाया और उत्सुकता भरी नज़रों से उन्हें देखा। धीरे-धीरे, सुनने वाला उनसे अभ्यस्त होने लगा और सोचने लगा कि कहीं वह ठीक तो नहीं है, या सिर्फ़ उसका रूप-रंग ही

संदिग्ध लग रहा है। उशिकावा एक कुशल श्रोता थे और उन्होंने सामने वाले की कहानी में जो दिलचस्पी दिखाई, उससे ज़्यादातर मामलों में बातचीत करने वाले को तसल्ली मिल जाती थी।
सहज भाव से, उसने बातचीत का रुख आश्रय स्थल की ओर मोड़ने का अवसर लिया। उसने पूछा कि घर से भागकर आई बेसहारा औरतें क्या कर सकती हैं, अगर उन्हें कुछ न मिले तो वे कहाँ जाएँगी। उसके चेहरे पर उन औरतों के लिए गहरी चिंता थी जिन्हें उनके भाग्य के भरोसे छोड़ दिया गया था, मानो वे तेज हवा में उड़ते पत्तों की तरह थीं।
"ऐसे मामलों में हमारे पास कुछ आश्रय स्थल हैं जो हम उन्हें उपलब्ध कराते हैं," युवा वकील ने जवाब दिया।
"किस तरह के आश्रय स्थल?"
"एक ऐसी जगह जहां वे अस्थायी रूप से शरण ले सकें। ऐसी जगहें बहुत कम हैं, लेकिन कुछ परोपकारी लोग हैं जो हमें ऐसी जगहें उपलब्ध कराते हैं। किसी ने तो हमारे लिए पूरी इमारत ही उपलब्ध करा दी।"
"पूरी इमारत?" उशिकावा ने हैरानी से पूछा। "क्या दुनिया में अब भी ऐसे लोग हैं?"
जी हां। हमने अखबारों और पत्रिकाओं में अपने कार्यों का प्रचार किया है और कई लोगों ने हमसे संपर्क किया है जो किसी न किसी रूप में योगदान देना चाहते हैं। उनके बिना हम अपना कार्य नहीं कर सकते। हम लगभग पूरी तरह से शुभचिंतकों द्वारा दिए गए इन दान पर ही निर्भर हैं।
"और यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण गतिविधि है," उशिकावा ने कहा।
वकील ने खुलकर मुस्कुराया। उशिकावा ने फिर सोचा कि किसी को भी धोखा देना उससे आसान नहीं होता जो इस बात से आश्वस्त हो कि वह कुछ सही कर रहा है।
"और अब उस घर में कितनी महिलाएं रहती हैं?"
"यह समय के अनुसार बदलता रहता है, लेकिन आमतौर पर लगभग चार या पांच लोग होते हैं," वकील ने जवाब दिया।
उशिकावा ने कहा, "क्या मैं पूछ सकता हूँ कि जिस व्यक्ति ने आपको यह जगह उपलब्ध कराई, वह इस गतिविधि में कैसे शामिल हुआ? मेरा मानना है कि कोई ऐसी घटना जरूर हुई होगी जिसने इन सब की शुरुआत की।"
वकील ने अपना सिर झुका लिया।
मुझे भी इन विवरणों की जानकारी नहीं है, लेकिन मैं इतना जानता हूँ कि इससे पहले वह व्यक्तिगत स्तर पर इसी तरह की गतिविधियों में शामिल था। खैर, हम उसके इस उपकार के लिए आभारी ही हो सकते हैं। अगर हमें कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया जाता, तो हम उससे कारण नहीं पूछते।
"बिल्कुल," उशिकावा ने सहमति जताते हुए कहा। "और मुझे लगता है कि यह आश्रय स्थल किसी गुप्त स्थान पर है।"
"हां, हमें इन महिलाओं की रक्षा करनी होगी, और इसके अलावा, हमारे कई दानदाता गुमनाम रहना चाहते हैं। आखिरकार, यह हिंसा से जुड़ा मामला है।"
उन्होंने कुछ देर तक चर्चा जारी रखी, लेकिन वकील से उन्हें कोई ठोस जानकारी नहीं मिली। हालांकि, उन्हें निम्नलिखित बातें पता चलीं: परामर्श कार्यालय वास्तव में चार साल पहले ही शुरू हो चुका था, और उसके कुछ ही समय बाद "परोपकारी व्यक्ति" ने उनसे संपर्क किया था और उन्हें वह इमारत दी थी जिसका उपयोग अब

आश्रय स्थल के रूप में किया जा रहा था। कार्यालय की गतिविधियों का विज्ञापन समाचार पत्रों में दिया गया था, और "परोपकारी व्यक्ति" ने उनसे संपर्क किया था। सहायता देने की उनकी शर्त यह थी कि उनका नाम पूरी तरह गुप्त रखा जाए। हालांकि, जो कुछ उन्होंने जाना था, उससे इसमें कोई संदेह नहीं था कि यह व्यक्ति वास्तव में अज़ाबू की महिला थी, और आश्रय स्थल वही लकड़ी का मकान था जो उसी की मिल्कियत था।
"आपके समय के लिए धन्यवाद," उशिकावा ने आदर्शवादी वकील का अत्यंत विनम्रतापूर्वक अभिवादन किया। "आप बहुत अच्छा और महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं। मैं आपकी कहानी अगली बैठक में बोर्ड के सामने प्रस्तुत करूंगा। मैं आपसे जल्द ही संपर्क करूंगा। आपको शुभकामनाएं।"
*

उशिकावा ने फिर मृत महिला की बेटी के बारे में कुछ पता लगाने की कोशिश की। उसकी शादी परिवहन मंत्रालय के एक उच्च पदस्थ अधिकारी से हुई थी और मृत्यु के समय वह केवल छत्तीस वर्ष की थी। वह उसकी मृत्यु का कारण पता नहीं लगा सका। कुछ समय बाद ही उसके पति ने मंत्रालय छोड़ दिया था। बस इतना ही वह पता लगा सका। उसे नहीं पता था कि उस व्यक्ति ने मंत्रालय क्यों छोड़ा या उसके बाद उसने क्या रास्ता अपनाया। शायद उसके इस्तीफे का उसकी पत्नी की मृत्यु से कुछ संबंध था, या शायद नहीं। परिवहन मंत्रालय ऐसी संस्था नहीं है जो आम नागरिकों को अंदरूनी जानकारी देने की जहमत उठाए। लेकिन उशिकावा की सूंघने की शक्ति बहुत तेज थी। उसे इस कहानी में कुछ गड़बड़ लग रही थी। वह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि इस व्यक्ति ने अपनी पत्नी की मृत्यु के शोक के कारण अपना करियर, अपनी नौकरी छोड़ दी और दुनिया से छिप गया।
लेकिन यह निश्चित है कि दुनिया में ऐसी छत्तीस वर्षीय महिलाओं की संख्या बहुत कम है जिनकी मृत्यु बीमारी से होती है। बेशक, ऐसे मामले होते हैं। लोग किसी भी उम्र में और चाहे उनका स्वास्थ्य कैसा भी हो, मरते हैं। कैंसर, ब्रेन ट्यूमर, पेरिटोनिटिस, निमोनिया जैसी बीमारियां होती हैं। लेकिन इस बात की संभावना कहीं अधिक है कि एक धनी छत्तीस वर्षीय महिला की मृत्यु प्राकृतिक कारणों से नहीं, बल्कि किसी दुर्घटना या आत्महत्या से होगी।
चलिए देखते हैं, उशिकावा ने सोचा। अगर हमें ओकम के प्रसिद्ध सिद्धांत का पालन करना है, तो हमें सबसे सरल परिकल्पना बनानी होगी। आइए, अभी के लिए उन तत्वों को हटाकर स्थिति का विश्लेषण करें जो उपयोगी नहीं हैं और तार्किक रेखा को यथासंभव सरल रखें।
मान लीजिए कि उस महिला की बेटी की मृत्यु किसी बीमारी से नहीं, बल्कि आत्महत्या से हुई। उशिकावा ने हाथ जोड़कर इस परिकल्पना पर विचार किया। दुनिया के लिए आत्महत्या को स्वाभाविक मृत्यु के रूप में छुपाना इतना मुश्किल नहीं है। खासकर धन और प्रभाव वाले व्यक्ति के लिए। इससे भी आगे, मैं यह मान सकता हूँ कि उसे पीटा गया था और अंत में, हताशा में, उसने अपनी जान दे दी। यह भी असंभव नहीं है। यह सर्वविदित तथ्य है कि धनवानों में से काफी संख्या में लोगों का चरित्र घृणित और आदतें विकृत होती हैं, मानो वे अपनी क्षमता से अधिक पाने की कोशिश कर रहे हों।
अगर सचमुच ऐसा हुआ होता, तो उसकी माँ, वह महिला, क्या करती? क्या वह बस भाग्य के भरोसे हार मान लेती? नहीं, बिलकुल नहीं। वह उस आदमी से उचित बदला लेने की

[illegible]

अध्याय 5 आप चाहे कितना भी छिपा लें

ओमामे को एक ही जगह पर बंद रहकर नीरस और एकाकी जीवन जीना मुश्किल नहीं लगता था। वह सुबह साढ़े छह बजे उठती, सादा नाश्ता करती, फिर एक घंटा कपड़े धोने, इस्त्री करने और सफाई करने में बिताती। दोपहर के भोजन से पहले वह डेढ़ घंटा तमारू द्वारा भेजे गए फिटनेस उपकरणों से अपने शरीर को सही ढंग से सक्रिय करने में लगाती। एक पेशेवर प्रशिक्षक होने के नाते, वह उन मांसपेशियों को भली- भांति जानती थी जिन्हें प्रतिदिन व्यायाम की आवश्यकता होती है और उन उत्तेजनाओं को भी जानती थी जिन्हें लागू करना आवश्यक होता है। वह जानती थी कि कितना प्रयास उसके लिए लाभदायक है और कितना हानिकारक।
दोपहर के भोजन में उन्होंने सलाद और फल खाए। दोपहर बाद वे सोफे पर बैठकर पढ़ते थे, फिर थोड़ी देर सो जाते थे। शाम को वे लगभग एक घंटा खाना बनाने में लगाते और छह बजे से पहले खाना तैयार कर लेते थे। रात होते ही वे बालकनी में जाते, बगीचे की कुर्सी पर बैठते और पार्क को देखते। साढ़े दस बजे वे सो जाते थे। वे यही दिनचर्या बार-बार दोहराते थे, लेकिन उन्हें ऐसा जीवन उबाऊ नहीं लगता था।
ओमामे वैसे भी मिलनसार नहीं थी। उसे किसी से मिले या बात किए बिना लंबे समय तक रहने में कोई आपत्ति नहीं थी। प्राथमिक विद्यालय में, वह अपने सहपाठियों से दो शब्द भी नहीं बोलती थी। सच तो यह था कि जब तक बहुत ज़रूरी न हो, कोई उससे बात नहीं करता था। वह कक्षा में एक अजनबी और "अजीब" सी बच्ची थी, जिसे या तो अलग-थलग कर दिया जाता था या नज़रअंदाज़ कर दिया जाता था। ओमामे को यह अन्यायपूर्ण लगता था। अगर उसमें कोई कमी होती, कोई खामी होती, तो वह समझ सकती थी कि उसे क्यों अलग-थलग किया गया था। लेकिन ऐसा नहीं था। जीवित रहने के लिए, एक छोटी बच्ची को चुप रहना और अपने माता-पिता की बात मानना पड़ता था। इसीलिए वह भोजन से पहले प्रार्थना करती थी, हमेशा ज़ोर से, रविवार को अपनी माँ के साथ श्रद्धालुओं के घर जाती थी, धार्मिक कारणों से मंदिरों में जाने से इनकार करती थी, क्रिसमस पार्टी के विचार को ठुकरा देती थी, और पुराने, फटे-पुराने कपड़े पहनने पर भी कोई विरोध नहीं करती थी। लेकिन उसके आसपास के बच्चे इन बातों को नहीं जानते थे और उसे समझने की कोशिश भी नहीं करते थे। वे बस उसे नापसंद करते थे। यह स्पष्ट था कि शिक्षक भी उसे एक उपद्रव मानते थे।
बेशक, आओमामे अपने माता-पिता से झूठ बोल सकती थी। वह उन्हें बता सकती थी कि वह हर दिन खाना खाने से पहले प्रार्थना करती है, जबकि असल में वह प्रार्थना करती ही नहीं थी। लेकिन वह ऐसा नहीं करना चाहती थी। एक तो उसे भगवान से झूठ नहीं बोलना था—चाहे वह सच में हो या न हो—और दूसरा उसे अपने सहपाठियों पर गुस्सा करना था। अगर वे मुझसे इतनी नफरत करना चाहते हैं, तो कर सकते हैं, उसने खुद से कहा। और उसने उन्हें चुनौती देने के लिए अपनी प्रार्थना जारी रखी। न्याय उसके पक्ष में था।
आओमामे के लिए सुबह उठना और स्कूल के कपड़े पहनना एक संघर्ष था। अक्सर तनाव के कारण उसका पेट खराब हो जाता था और उसे उल्टी हो जाती थी। कभी-कभी उसे बुखार, सिरदर्द होता था या उसके हाथ-पैर सुन्न हो जाते थे। फिर भी उसने कभी स्कूल जाना नहीं छोड़ा। अगर वह एक बार भी नहीं जाती, तो वह कई दिनों तक स्कूल नहीं

जाना चाहती। और अगर ऐसा ही चलता रहा, तो वह फिर कभी स्कूल नहीं जाएगी। इसका मतलब होगा कि उसके सहपाठियों और शिक्षकों ने उसे हरा दिया है। यकीनन, अगर वह कक्षा से गायब हो जाती, तो सभी राहत की सांस लेते, और आओमामे नहीं चाहती थी कि उन्हें पता चले कि वे राहत की सांस ले रहे हैं। इसलिए, चाहे उसे कितना भी बुरा लगे, वह खुद को घसीटते हुए स्कूल जाती थी, और जाती ही थी। वह दांत पीसकर खामोशी को सहन करती थी।
उस समय की कठिन परिस्थितियों की तुलना में, आओमामे के लिए एक आलीशान अपार्टमेंट बिल्डिंग में बंद रहना और एक शब्द भी न बोलना कोई बड़ी बात नहीं थी। अकेलेपन में चुप रहना उसके लिए उन लोगों से घिरे रहने से कहीं ज़्यादा आसान और स्वाभाविक था जो खुशी-खुशी बातें कर रहे थे। उसके पास पढ़ने के लिए किताबें भी थीं; उसने तमारू द्वारा भेजा गया प्रॉस्ट का उपन्यास पढ़ना शुरू कर दिया था, लेकिन वह एक दिन में बीस पन्नों से ज़्यादा नहीं पढ़ती थी। वह खुद को बीस पन्नों तक सीमित रखती थी, उन्हें ध्यान से, धीरे-धीरे, एक-एक शब्द करके पढ़ती थी। जब वह पढ़ लेती, तो दूसरी किताब उठा लेती। फिर, सोने से पहले, वह 'द क्राइसालिस ऑफ एयर' के कुछ पन्ने ज़रूर पढ़ती थी। क्योंकि यह टेंगो द्वारा लिखा गया था और क्योंकि, एक तरह से, यह वर्ष 1Q84 के लिए एक जीवन-रक्षक मार्गदर्शिका का काम करता था।
वह संगीत भी सुनता था। उस महिला ने उसे शास्त्रीय संगीत की कैसेटों से भरा एक गत्ते का डिब्बा भेजा था। उनमें जनाचेक की सिम्फोनीटा भी थी, जिसकी उसने अनुरोध किया था और जिसे वह अपने गहन, मौन प्रशिक्षण के दौरान दिन में एक बार सुनती थी।
शरद ऋतु धीरे-धीरे गहरी होती जा रही थी। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, उसे महसूस हुआ कि उसका शरीर धीरे-धीरे पारदर्शी होता जा रहा है। आओमामे ने कई बातों के बारे में न सोचने की पूरी कोशिश की। लेकिन, ज़ाहिर है, वह कुछ भी न सोचने से खुद को रोक नहीं पाई। अगर कोई खालीपन था, तो उसे भरने के लिए कुछ न कुछ ज़रूर था। लेकिन अब कम से कम उसे नफ़रत करने की ज़रूरत महसूस नहीं होती थी। उसके पास अपने सहपाठियों या शिक्षकों से नफ़रत करने का कोई कारण नहीं था। वह अब असहाय बच्ची नहीं थी, और धर्म अब उस पर थोपा नहीं जाता था। और अब उसे उन पुरुषों से नफ़रत करने की ज़रूरत नहीं थी जो महिलाओं को पीटते थे। उसके अंदर उबलता हुआ और लहरों की तरह उठता हुआ गुस्सा—वह तीव्र उथल-पुथल जो उसे अंदर से महसूस होती थी, दीवार पर मुक्का मारने की इच्छा—पूरी तरह गायब हो गई थी। उसे खुद भी नहीं पता था कि ऐसा क्यों हुआ, लेकिन वह कभी वापस नहीं आएगी। और आओमामे इस बात से खुश थी। अगर मुमकिन हो, तो वह अब से किसी को चोट नहीं पहुँचाना चाहेगी। ठीक वैसे ही जैसे वह खुद भी चोट नहीं खाना चाहती थी।
*

जब रातों को उसे नींद नहीं आती थी, तो वह तामाकी और अयुमी के बारे में सोचता था। वह अपनी आँखें बंद कर लेता और उनकी यादें, उन्हें अपनी बाहों में लिए हुए, फिर से जीवंत हो उठतीं। दोनों के शरीर गर्म, कोमल और आकर्षक थे, हर एक अपने तरीके से। नाजुक और जीवंत शरीर। उनकी नसों में ताजा खून बहता था, और उनके दिल नियमित रूप से और मजबूती से धड़कते थे। वे धीरे से आहें भरतीं या धीरे से हँसतीं। उनकी कोमल उंगलियाँ, उनके उभरे हुए स्तन, उनकी रेशमी जांघें... लेकिन अब वे इस दुनिया में नहीं थीं।

ओमामे ने अपने मुंह से खुरदुरा पाइप निकाला और धीरे-धीरे अपना सिर हिलाया। मैं मर नहीं सकती। जब तक मेरी बालकनी के उस पार एक पार्क है, और उस पार्क में एक स्लाइड है, और मुझे अब भी उम्मीद है कि टेंगो वहाँ वापस आएगा, मैं ट्रिगर नहीं दबा सकती। इस संभावना ने आओमामे को उस नाजुक मोड़ पर ला खड़ा किया। उसे ऐसा लगा जैसे उसके दिल में एक दरवाजा बंद हो गया हो और दूसरा खुल गया हो। धीरे- धीरे, बिना किसी आवाज के। उसने कारतूस को चैंबर से निकालने के लिए आस्तीन खींची, सेफ्टी कैच लगाया और बंदूक को मेज पर रख दिया। उसने अपनी आँखें बंद कीं और महसूस किया कि उस अंधेरे में कुछ बहुत छोटा, धुंधला सा, पल-पल बुझ रहा है। कुछ बेहद छोटा, प्रकाश की एक किरण जैसा। लेकिन वह समझ नहीं पा रही थी कि वह क्या था।
ओमामे सोफे पर वापस मुड़ी और स्वान की किताब के पन्नों पर ध्यान केंद्रित करने लगी। उसने किताब में वर्णित दृश्यों की कल्पना करने की कोशिश की और अन्य विचारों को मन में आने से रोकने का प्रयास किया। बाहर ठंडी बारिश शुरू हो गई थी। रेडियो पर मौसम पूर्वानुमान में अगली सुबह तक हल्की बारिश होने की बात कही गई थी। प्रशांत महासागर में शरद ऋतु की बारिश का मोर्चा जम गया था और उसके हिलने का कोई आसार नहीं दिख रहा था। मानो कोई व्यक्ति एकांत में खोया हुआ हो, समय को भूलकर।
टेंगो शायद नहीं आएगा। आसमान घने बादलों से पूरी तरह ढका हुआ था और चाँद कहीं नज़र नहीं आ रहा था। फिर भी आओमामे बालकनी में जाकर पार्क को देखती और दूध के साथ गर्म कोको पीती। वह दूरबीन और बंदूक पास रखती और बारिश से भीगी हुई स्लाइड पर नज़र रखती, मानो किसी भी क्षण घर से निकलने के लिए तैयार हो। क्योंकि यही एक काम था जो उसे सार्थक लगता था।
*

दोपहर तीन बजे इंटरकॉम की घंटी बजी। कोई इमारत में आना चाहता था। ज़ाहिर है, आओमामे ने इसे नज़रअंदाज़ कर दिया। किसी के उसके पास आने की कोई संभावना नहीं थी। उसने चाय बनाने के लिए पानी उबालने के लिए रखा था, लेकिन एहतियात के तौर पर उसने चूल्हा बंद कर दिया और इंतज़ार करने लगी कि क्या होता है। इंटरकॉम तीन-चार बार बजा और फिर शांत हो गया।
पांच मिनट बाद फिर घंटी बजी। लेकिन इस बार यह दरवाज़े की घंटी थी। कोई इमारत में, उसके दरवाज़े के सामने खड़ा था। शायद वह किसी के पीछे छिपकर ब्लॉक में घुस आया था। या उसने किसी दूसरे अपार्टमेंट में कोशिश की होगी, कुछ भरोसेमंद बात कही होगी और दरवाज़ा खुल गया होगा। आओमामे चुप रही। तामारू ने उसे सिखाया था कि किसी भी हालत में, चाहे कोई भी आए, दरवाज़ा अंदर से बंद करके, कोई आवाज़ न करे, किसी भी हालत में जवाब न दे।
दरवाजे की घंटी करीब दस बार बजी। किसी सेल्समैन के लिए यह कुछ ज़्यादा ही था। वे तीन बार से ज़्यादा घंटी नहीं बजाते। आओमामे चुप रही, और वह आदमी दरवाज़ा खटखटाने लगा। उसने ज़ोर से नहीं खटखटाया, लेकिन उसकी आवाज़ में झुंझलाहट और गुस्सा झलक रहा था।
"ताकाई-सान!" कमरे से एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति की भारी, थोड़ी कर्कश आवाज आई।
"नमस्कार, ताकाई-सान! क्या आप मेरे लिए दरवाजा खोल सकते हैं?"
तकाई वह फर्जी नाम था जो अपार्टमेंट के मेलबॉक्स पर प्रदर्शित था।
— ताकाई-सान, आपको परेशान करने के लिए क्षमा करें, लेकिन कृपया दरवाजा खोलें!

वह आदमी कुछ पल जवाब का इंतजार करता रहा। कोई जवाब न मिलने पर उसने फिर से दरवाजा खटखटाना शुरू कर दिया। इस बार पहले से थोड़ा ज़ोर से।
"ताकाई-सान, मुझे पता है आप अंदर हैं। तो कृपया ये बेवकूफी करना बंद कीजिए और दरवाजा खोलिए! आप अंदर हैं और आप मुझे सुन सकते हैं।"
ओमामे ने मेज से बंदूक उठाई और ट्रिगर दबा दिया। उसने बंदूक को तौलिये में लपेटकर अपने हाथ में कसकर पकड़ लिया।
उसे इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि यह आदमी कौन है या वह क्या चाहता है। लेकिन किसी कारणवश, वह उसके प्रति शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर रहा था और उसे दरवाजा खोलने के लिए मजबूर करने पर तुला हुआ था। जाहिर है, यह स्थिति उसके लिए सुखद नहीं थी।
अंततः, पिटाई बंद हो गई और उस आदमी की आवाज फिर से गलियारे में गूंजने लगी।
— ताकाई-सान, मैं रेडियो और टीवी का शुल्क लेने आया हूँ। जी हाँ, मैं एनएचके से आपको ही ढूँढ रहा हूँ। मुझे पता है आप अंदर ही हैं। चाहे आप कितने भी चुप रहें, मुझे पता चल ही जाता है। मैं सालों से यही काम कर रहा हूँ और मुझे पता है कि कौन घर पर नहीं है और कौन सिर्फ़ होने का नाटक कर रहा है। आप चाहे कितनी भी कोशिश कर लें कि कोई आवाज़ न करें, इंसान की मौजूदगी महसूस हो ही जाती है। लोग साँस लेते हैं, उनके दिल धड़कते हैं, उनके पेट में खाना पचता है। ताकाई-सान, अब आप अंदर हैं और मेरे हार मानकर चले जाने का इंतज़ार कर रहे हैं। आप न तो दरवाज़ा खोलेंगे और न ही जवाब देंगे। और ऐसा इसलिए है क्योंकि आप रेडियो और टीवी का शुल्क नहीं देना चाहते।
वह आदमी ज़रूरत से ज़्यादा ज़ोर से बोल रहा था, और उसकी आवाज़ अपार्टमेंट बिल्डिंग के गलियारे में गूंज रही थी। लेकिन उसका यही इरादा था। उस व्यक्ति का नाम ज़ोर से चिल्लाना, उसका मज़ाक उड़ाना और उसे शर्मिंदा करना। और इससे पड़ोसियों को भी सबक मिलता। ज़ाहिर है, आओमामे चुप रही। उसके लिए उस पर ध्यान देना भी नामुमकिन था। उसने बंदूक वापस मेज़ पर रख दी, लेकिन उसका सेफ्टी लॉक अभी भी खुला रखा था। हो सकता है कोई एनएचके कैशियर बनकर आया हो। वह रसोई की कुर्सी पर बैठी रही, उसकी नज़र दरवाज़े पर टिकी हुई थी।
उसे लगा कि चुपके से जाकर कैमरे के व्यूफाइंडर से देख ले कि वह आदमी कैसा दिखता है। लेकिन वह अपनी सीट से हिला नहीं। उसे कोई बेवकूफी भरा काम नहीं करना था। आखिरकार, उसे हार मानकर वहां से चले जाना ही था।
लेकिन वह व्यक्ति अपना पूरा भाषण उसके दरवाजे के सामने देने के लिए दृढ़ संकल्पित था।
— ताकाई-सान, ये सब बकवास बंद करो! मैं भी ये सब मजे के लिए नहीं कर रहा। मैं भी व्यस्त हूँ। ताकाई-सान, आप टीवी देखते हैं ना? टीवी देखने वाले हर किसी को एनएचके का शुल्क देना पड़ता है। आपको शायद पसंद न आए, लेकिन यही नियम है। शुल्क न देना चोरी के बराबर है। ताकाई-सान, आप नहीं चाहेंगे कि इन सब बातों के लिए आपको चोर कहा जाए! अगर आप इतनी नई और खूबसूरत इमारत में रहते हैं, तो इसका मतलब है कि आप शुल्क देने में सक्षम हैं। है ना? और मुझे नहीं लगता कि मुझे ये बात सबको सुनाने के लिए जोर-जोर से चिल्लाना चाहिए।
आम तौर पर, आओमामे को एनएचके के कैशियर की बातों की ज़्यादा परवाह नहीं होती। लेकिन अब वह छिप रही थी, लोगों की नज़रों से बच रही थी और नहीं चाहती थी कि

उसके अपार्टमेंट पर किसी का ध्यान जाए। पर वह कुछ कर भी नहीं सकती थी। वह बस चुप रहकर उस आदमी के जाने का इंतज़ार कर सकती थी।
"ताकाई-सान," मैंने ज़ोर देकर कहा, "लेकिन मुझे पता है आप अंदर हैं, सुन रहे हैं। और आप सोच रहे होंगे कि वह मेरे दरवाज़े पर इतना हंगामा क्यों कर रहा है? तो, क्यों, ताकाई-सान? क्योंकि मुझे अच्छा नहीं लगता जब लोग दिखावा करते हैं कि वे घर पर नहीं हैं। क्या आपको नहीं लगता कि यह सिर्फ़ एक अस्थायी उपाय है? अगर आप भुगतान नहीं करना चाहते, तो दरवाज़ा खोलिए और मुझे सीधे बता दीजिए! आपको अच्छा लगेगा। और मुझे भी अच्छा लगेगा। कम से कम इस तरह हमारे बीच बातचीत की गुंजाइश तो रहेगी। यह दिखावा करना अच्छा नहीं है कि आप वहाँ नहीं हैं। आप एक कंजूस चूहे की तरह किसी अंधेरे कोने में छिप जाते हैं और सबके चले जाने पर चुपके से निकल आते हैं। कितनी घटिया ज़िंदगी है!"
आओमामे ने मन ही मन सोचा, वह झूठ बोल रहा है। वह कहता है कि उसे घर में किसी की मौजूदगी का एहसास हो जाता है। मैंने तो कोई आवाज़ नहीं की, मैं धीरे-धीरे सांस ले रही हूँ। उसका असली मकसद किसी दरवाजे पर ज़ोरदार आवाज़ करना है, ताकि आस-पास के निवासियों को डरा सके और उन्हें समझा सके कि अगर वे भी उसी अंजाम से बचना चाहते हैं तो बेहतर होगा कि वे टैक्स चुका दें। वह शायद हर जगह ऐसा ही करता है और उसे कुछ अच्छे नतीजे भी मिले हैं।
"ताकाई-सान, शायद आपको मैं परेशान करने वाला लगता हूँ। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि आप क्या सोच रहे हैं। हाँ, मैं परेशान करने वाला इंसान हूँ। मुझे भी पता है। लेकिन अच्छे लोग टैक्स नहीं वसूल सकते। क्यों? क्योंकि इस दुनिया में बहुत से लोग ऐसे हैं जो रेडियो और टीवी का लाइसेंस शुल्क नहीं देना चाहते। और जब आप ऐसे लोगों से पैसे वसूलने की कोशिश करते हैं, तो आप हर समय अच्छे नहीं रह सकते। मैं कहना चाहूँगा, 'ओह, मैं समझता हूँ। आप रेडियो और टीवी का लाइसेंस शुल्क नहीं देना चाहते। असुविधा के लिए क्षमा चाहता हूँ,' और विनम्रता से चला जाऊँ, लेकिन ऐसा नहीं होता। मेरा काम एनएचके के लिए लाइसेंस शुल्क वसूलना है, और इसके अलावा, मुझे व्यक्तिगत रूप से यह पसंद नहीं है जब लोग घर पर न होने का नाटक करते हैं।"
वह आदमी चुप हो गया और कुछ पल बीतने दिए। फिर दरवाजे पर दस बार दस्तक हुई। "ताकाई-सान, क्या आपको अपनी मूर्खता का एहसास नहीं होता? क्या आप खुद को असली चोर समझते हैं? ज़रा सोचिए। हम जिस रकम की बात कर रहे हैं, वह ज़्यादा नहीं है। यह तो उतनी ही है जितनी आप किसी स्थानीय रेस्तरां में एक साधारण मेज के लिए चुकाते हैं। आपको बस इतना ही चुकाना है और कोई आपको चोर नहीं समझेगा। कोई आप पर चिल्लाएगा नहीं, कोई आपके दरवाजे पर ज़िद करके दस्तक नहीं देगा। ताकाई-सान, मुझे पता है आप दरवाजे के पीछे छिपे हुए हैं। आपको लगता है कि अगर आप हमेशा के लिए छिपे रहेंगे, तो आप बच जाएंगे। ठीक है, आपको बस छिपना है। लेकिन आप चाहे जितना भी छिपें, कोई न कोई आपको ढूंढ ही लेगा। कोई भी छल हमेशा के लिए नहीं टिकता। ज़रा सोचिए! पूरे जापान में ऐसे लोग हैं जो आपसे कहीं ज़्यादा गरीब हैं, फिर भी वे हर महीने ईमानदारी से अपना कर चुकाते हैं। यह अन्याय है।" दरवाजे पर पंद्रह बार और दस्तक हुई। आओमामे ने उन्हें गिना।
— ठीक है, तकाई-सान, मैं समझ गया। आप बड़े जिद्दी हैं। बहुत खूब। मैं अभी जा रहा हूँ। मैं अकेले आपकी देखभाल नहीं कर सकता। लेकिन आप जानते हैं कि मैं वापस आऊंगा। मैं तो एक बार मन बना लेने पर आसानी से हार नहीं मानता। और मुझे

ये बिल्कुल पसंद नहीं जब लोग घर पर न होने का नाटक करते हैं। मैं फिर आऊंगा और दरवाजा खटखटाऊंगा। मैं तब तक खटखटाऊंगा जब तक पूरी दुनिया सुन न ले। वादा करता हूँ। हमारे बीच एक वादा है। ठीक है, तो अलविदा और फिर मिलेंगे!
कदमों की कोई आहट नहीं सुनाई दी। उसने ज़रूर रबर के तले वाले जूते पहने होंगे। आओमामे पाँच मिनट तक साँस रोककर दरवाज़े की ओर देखती रही। हॉल में सन्नाटा पसरा हुआ था। कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। वह दबे पांव दरवाज़े तक गई और झाँककर देखा। कोई नज़र नहीं आया।
ओमामे ने बंदूक की सुरक्षा लॉक लगाई, फिर अपने धड़कते दिल को शांत करने के लिए कुछ गहरी साँसें लीं। उसने पानी उबाला और अपने लिए हरी चाय बनाई। उसने खुद को समझाया कि वह आदमी एनएचके में सिर्फ एक कैशियर था। लेकिन उस आदमी की आवाज़ में कुछ बुराई और भयावहता थी। वह समझ नहीं पा रही थी कि वह उससे सीधे बात कर रहा है या ताकाई नाम के किसी काल्पनिक किरदार से। लेकिन कर्कश आवाज़ और लगातार टैपिंग ने उसे एक अप्रिय अनुभूति दी, जैसे त्वचा के किसी खुले हिस्से पर कुछ चिपचिपा चिपक गया हो।
ओमामे ने कपड़े उतारे और शॉवर में चली गई। उसने गर्म पानी और साबुन से अच्छी तरह नहाया। बाथरूम से बाहर आकर साफ कपड़े पहनने के बाद उसे थोड़ा बेहतर महसूस हुआ। उसकी त्वचा पर हो रही अप्रिय सनसनी भी गायब हो गई थी। वह सोफे पर बैठ गई और अपनी चाय खत्म की। उसने और पढ़ने की कोशिश की, लेकिन उसका ध्यान नहीं लग रहा था। उस आदमी की आवाज़ उसके कानों में गूंजती रही।
"आपको लगता है कि अगर आप हमेशा के लिए छिपते रहेंगे, तो आप बच जाएंगे। ठीक है, आपको बस छिपना है। लेकिन आप कितना भी छिप जाएं, कोई न कोई आपको ढूंढ ही लेगा।" ओमामे ने सिर हिलाया। नहीं, वह आदमी बस यूं ही कुछ भी बोल रहा था, उसने खुद से कहा। वह बस कुछ ऐसी बातें चिल्ला रहा था जो उसे पता होने का दावा था, लोगों को डराने की कोशिश कर रहा था। वह मेरे बारे में कुछ नहीं जानता। वह नहीं जानता कि मैंने क्या किया है या मैं यहां क्यों हूं। और फिर भी उसका दिल धड़क रहा था। आप चाहे जितना भी छिप जाएं, कोई न कोई आपको ढूंढ ही लेगा।
कैशियर के शब्द कुछ हद तक संकेतपूर्ण थे। शायद यह महज एक संयोग था, लेकिन ऐसा लग रहा था कि वह उसे परेशान करने के लिए ठीक-ठीक जानता था कि क्या कहना है।
आओमामे ने किताब छोड़ दी और अपनी आँखें बंद कर लीं।
टेंगो, तुम कहाँ हो? उसने खुद से पूछा। उसने ज़ोर से कहा भी: टेंगो, तुम कहाँ हो? मुझे जल्दी ढूंढो, प्लीज़! इससे पहले कि कोई और मुझे ढूंढ ले।

अध्याय 6 जब उंगलियाँ मुझे चुटकी काटती हैं

समुद्रतटीय कस्बे में टेंगो अपना दिन एक सख्त दिनचर्या के अनुसार बिताता था। एक बार जब उसने अपने जीवन की एक लय बना ली, तो उसने यथासंभव उसका पालन करने की कोशिश की। उसे पता नहीं क्यों, लेकिन यह उसके लिए किसी भी अन्य चीज़ से ज़्यादा महत्वपूर्ण प्रतीत होता था। सुबह वह टहलने जाता, लिखता, अपने कोमा में पड़े पिता से मिलने जाता और उन्हें पढ़कर सुनाता, फिर सराय लौटकर सो जाता। दिन उसी तरह दोहराए जाते थे जैसे धान बोते किसानों का नीरस गीत।
कई रातों तक मौसम सुहाना रहा, फिर अचानक रात में अप्रत्याशित रूप से ठंड पड़ने लगी। लेकिन तेंगो ने मौसम के बदलाव की परवाह किए बिना, पिछले दिन की तरह ही काम करने की कोशिश की। उसने यथासंभव खुद को एक निर्मल, रंगहीन दर्शक में बदलने का प्रयास किया। अपनी साँसों को छिपाकर, बिना हिले-डुले, चुपचाप उस पल का इंतज़ार करता रहा। एक दिन और दूसरे दिन के बीच का अंतर कम होता चला गया। एक हफ़्ता बीत गया, दस दिन बीत गए। फिर भी, जीवन का कोई नया रूप नहीं दिखा। दोपहर ढलते-ढलते, उसके पिता को जाँच के लिए ले जाया गया, लेकिन खाली बिस्तर पर केवल एक ऐसे दुबले-पतले शरीर का निशान था जिसे देखकर दया आती थी।
क्या वह सिर्फ एक बार ही प्रकट हुआ था? ढलते सूरज की रोशनी से जगमगाते संकरे अस्पताल वार्ड में, होंठ चबाते हुए, तेंगो ने सोचा। क्या वह कोई विशेष अनुभव था, जिसे वह फिर कभी नहीं देख पाएगा? या फिर वह सिर्फ एक भ्रम था? लेकिन किसी ने उसके सवालों का जवाब नहीं दिया। उसे सिर्फ दूर से आती लहरों की गर्जना और चीड़ के पेड़ों की कतारों से होकर गुजरती हवा की सरसराहट सुनाई दे रही थी। उसे यकीन नहीं था कि वह सही कर रहा है। टोक्यो से इस समुद्रतटीय शहर में आना, शायद वास्तविकता से कटे इस एकांत में अपना समय बर्बाद कर रहा था। लेकिन अगर ऐसा था भी, तो भी टेंगो उस जगह को पीछे नहीं छोड़ सकता था। एक बार उसने उस कमरे में हवा के कोकून को देखा था और उसकी हल्की रोशनी में छोटी बच्ची आओमामे की सोई हुई आकृति को। उसने उसका हाथ छुआ था। भले ही ऐसा दोबारा न हुआ हो, भले ही यह सिर्फ एक निर्मम कल्पना ही क्यों न रही हो, जब तक उसे अनुमति थी, वह वहीं रहना चाहता था और उस छवि के साथ अपने मन में खेलना चाहता था।
*

यह देखकर कि वह टोक्यो वापस नहीं जा रहे थे और शहर में ही रह रहे थे, नर्सों ने तेंगो के साथ अधिक स्नेहपूर्ण व्यवहार करना शुरू कर दिया। वे अपने काम से थोड़ा समय निकालकर उनसे बातचीत करतीं। कभी-कभी, जब वे थोड़ी व्यस्त होतीं, तो उनसे मिलने उनके कमरे में भी आ जातीं। उनके पिता की देखभाल बारी-बारी से ओमुरा, लगभग तीस साल की नर्स, जिनके बाल जूड़े में बंधे थे और बालों में एक पेन लगा रहता था, और अदाची, शरमाती हुई युवती, जिनके बाल पोनीटेल में बंधे थे, करती थीं। अधिकांश समय, तार के फ्रेम वाले चश्मे पहने अधेड़ उम्र की नर्स तामुरा रिसेप्शन डेस्क पर काम करती थीं, लेकिन जब पर्याप्त लोग नहीं होते थे, तो वह बूढ़े व्यक्ति की देखभाल करने के लिए अंदर आ जाती थीं। तीनों नर्सें तेंगो में व्यक्तिगत रुचि रखती हुई प्रतीत होती थीं।
और जब भी उसे समय मिलता, वह उनसे बातें करता, शाम से पहले के उन बहुप्रतीक्षित पलों के अलावा। या यूँ कहें कि वह उनके सवालों का ईमानदारी से जवाब देता।

उसने उन्हें बताया कि वह एक प्रारंभिक विद्यालय में गणित पढ़ाता है और इसके अलावा पत्रिकाओं के लिए लेख लिखकर कुछ पैसे कमाता है। उसके पिता लंबे समय तक एनएचके में कर संग्रहकर्ता रहे थे। वह बचपन से जूडो करता आ रहा है और हाई स्कूल में काउंटी प्रतियोगिता के फाइनल तक पहुँचा था। लेकिन उसने अपने और अपने पिता के बीच लंबे समय से चल रहे विवाद के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा। उसने इस बात का ज़िक्र भी नहीं किया कि उसकी माँ, जिसके बारे में उसे बताया गया था कि वह मर चुकी है, शायद वास्तव में अपने पति और बच्चे को छोड़कर किसी दूसरे आदमी के साथ भाग गई थी। ऐसी कहानियाँ केवल मामले को और जटिल बना देतीं। बेशक, उसके पास उन्हें यह बताने की कोई गुंजाइश नहीं थी कि उसने चुपके से बेस्टसेलर 'द एयर क्राइसालिस' लिखी थी। और न ही यह कि वह आकाश में दो चाँद देख सकता था।
बदले में, उन्होंने उसे अपने जीवन के बारे में बताया। तीनों इसी इलाके की रहने वाली थीं और हाई स्कूल से स्नातक होने के बाद व्यावसायिक प्रशिक्षण लेकर नर्स बन गई थीं। सैनिटोरियम में काम ज्यादातर नीरस और उबाऊ था, और कार्यसूची लंबी और अनियमित थी, लेकिन वे अपने गृहनगर में नौकरी पाकर खुश थीं और उन्हें हर दिन जीवन और मृत्यु के बीच की सीमा का सामना करने के तनाव से मुक्ति मिल गई थी, जैसा कि आपातकालीन अस्पताल में काम करने पर होता। वहां के बुजुर्ग धीरे-धीरे अपनी याददाश्त खो देते थे और स्थिति को समझे बिना ही अंतिम सांस लेते थे। उन्हें शायद ही कभी खून दिखाई देता था, और दर्द को यथासंभव सीमित रखा जाता था। वहां ऐसे कोई मरीज नहीं थे जिन्हें आधी रात को एम्बुलेंस से लाना पड़े, और सैनिटोरियम के गलियारों में रोने-धोने के लिए कोई रिश्तेदार नहीं थे। जीवन सस्ता था और कम वेतन के बावजूद वे बिना किसी कठिनाई के अपना गुजारा कर लेती थीं। तामुरा ने पांच साल पहले एक दुर्घटना में अपने पति को खो दिया था और अब पास के एक कस्बे में अपनी मां के साथ रहती थी। हष्ट-पुष्ट नर्स ओमुरा के दो बच्चे थे और उसका पति टैक्सी चालक था। युवा अदाची शहर के बाहरी इलाके में अपनी तीन साल बड़ी बहन के साथ रहती थी, जो एक हेयरड्रेसर थी।
"आप बहुत अच्छे हैं," ओमुरा ने IV बदलते हुए कहा। "हर दिन कोई कोमा में पड़े रिश्तेदारों को पढ़कर सुनाने नहीं आता।"
टेंगो को ऐसे शब्दों से शर्मिंदगी महसूस हुई।
मुझे कुछ समय की छुट्टी मिल गई है। लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैं ज्यादा समय तक रुक पाऊंगा।
उन्होंने कहा, "चाहे उनके पास कितना भी खाली समय हो, लोग यहां मनोरंजन के लिए नहीं आते। शायद मुझे यह नहीं कहना चाहिए, लेकिन यह एक ऐसी बीमारी है जिसका इलाज लगभग असंभव है। समय बीतने के साथ-साथ हर कोई और अधिक अवसादग्रस्त होता जाता है।"
"मेरे पिता ने मुझसे कहा था कि चाहे कुछ भी हो जाए, मैं उन्हें पढ़कर सुनाऊं। उस समय की बात है जब वे बेहोश नहीं थे। और वैसे भी, मेरे पास करने के लिए और कुछ नहीं होता।"
आप उसे क्या पढ़कर सुना रहे हैं?
"हर तरह की चीज़ें। जो भी मेरे पास होता है। मैं उन्हें जहाँ से भी प्राप्त करता हूँ, वहीं से ज़ोर से पढ़ डालता हूँ।"
— और आप अभी क्या पढ़ रहे हैं?

— फ्रॉम द हार्ट ऑफ अफ्रीका, इसाक डाइनसेन द्वारा।
नर्स ने अपना सिर हिलाया।
मैंने उसके बारे में नहीं सुना है।
— यह पुस्तक 1937 में एक डेनिश लेखिका द्वारा लिखी गई थी। उन्होंने एक स्वीडिश कुलीन व्यक्ति से विवाह किया और प्रथम विश्व युद्ध से पहले वे अफ्रीका चले गए। वहाँ उन्होंने बागानों की देखभाल की। कुछ समय बाद उनका तलाक हो गया और उन्होंने अकेले ही बागानों की देखभाल जारी रखी। पुस्तक में उस दौरान के उनके अनुभवों का वर्णन है।
नर्स ने बूढ़े आदमी का तापमान लिया, चार्ट पर कुछ संख्याएँ लिखीं और कलम को फिर से अपने बालों में फंसा लिया। फिर उसने अपने माथे से बालों की लटें पीछे हटाईं।
"जब आप जोर से पढ़ेंगे तो क्या आप मुझे सुनने देंगे?"
"मुझे नहीं पता कि आपको यह पसंद आएगा या नहीं," टेंगो ने कहा।
वह महिला कुर्सी पर पालथी मारकर बैठी थी। उसके पैर सुडौल और सुंदर थे, लेकिन उन पर थोड़ी चर्बी जमा होने लगी थी।
खैर, तुम कोशिश करो।
टेंगो धीरे-धीरे पढ़ने लगा। यह एक ऐसी किताब थी जिसे धीरे-धीरे पढ़ना ही पड़ता था। अफ्रीका में समय इसी तरह बीतता है।

अफ्रीका में चार महीने के गर्म और शुष्क मौसम के बाद जब मार्च की लंबी बारिश शुरू होती है, तो वनस्पति की समृद्धि, उसकी ताजगी और सुगंध, जो हर तरफ से आपका स्वागत करती है, मन मोह लेती है। लेकिन किसान अपनी खुशी को संयमित रखता है और प्रकृति की इस उदारता पर भरोसा करने का साहस नहीं करता, बल्कि सावधानीपूर्वक सुनता है, इस डर से कि कहीं आकाश से लगातार बरस रही बारिश की गर्जना कम न हो जाए। धरती द्वारा अब तक अवशोषित किया गया पानी अगले चार महीनों तक बिना बारिश के खेत तक पहुंचना चाहिए, जिसमें सभी पेड़-पौधे, पशु और मानव जीवन व्याप्त हैं। यह एक स्वप्निल दृश्य होता है जब खेत की सड़कें बहते पानी की धाराओं में बदल जाती हैं, और किसान गीत से भरे दिल से कीचड़ में छप-छप करते हुए, खिले हुए और पानी से भीगे हुए कॉफी बागान की ओर चलता है। लेकिन कभी-कभी, बरसात के मौसम के बीच, शाम के आकाश में बादलों के पतले आवरण से तारे निकलते हैं; फिर वह घर के सामने खड़ा होकर ध्यान से ऊपर देखता है, मानो वह खुद आकाश से लिपटकर उससे जितना हो सके उतनी बारिश निचोड़ लेना चाहता हो। फिर वह उससे पुकारता है: "अभी जितनी बारिश हो सके उतनी बरसाओ, और जितनी बरसाई है उससे भी कहीं अधिक। मेरी आत्मा तुम्हारे सामने नंगी है, और जब तक तुम मुझे आशीर्वाद नहीं दोगे, मैं तुम्हें नहीं छोडूंगा। अगर चाहो तो मुझे डुबो दो, लेकिन अपनी मनमानी से मुझे मत मारो। हे स्वर्ग, कृपया संभोग में बाधा मत डालो!"

“क्या संभोग बाधित होता है?” नर्स ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा।
"वह गोलमोल बातें करने वाला आदमी नहीं है।"
फिर भी, देवताओं को संबोधित करने के लिए ये शब्द वास्तव में उपयुक्त नहीं हैं।
"ज़रूर!" टेंगो सहमत हो गया।

बरसात के बाद के महीनों में कभी-कभी एक ठंडा, बेरंग दिन आपको 'मार्का मबाया' (बुरा साल, भीषण सूखे का साल) के दिनों की याद दिला देता है। तब किकुयू आदिवासी अपने मवेशियों को मेरे घर के पास चराने के लिए भेजते थे, साथ में एक छोटा लड़का सीटी बजाता हुआ आता था, जो बीच-बीच में अचानक एक छोटा सा गीत गाने लगता था। जब भी मैं वह गीत फिर से सुनता, वह तुरंत हमारे अतीत के सभी भय और निराशा को याद दिला देता। उस गीत का स्वाद आंसुओं की तरह नमकीन था। लेकिन साथ ही, मुझे उसमें आश्चर्यजनक और अप्रत्याशित रूप से एक शक्ति, एक अजीब मिठास, एक परिपूर्ण सामंजस्य दिखाई देता था। क्या सच में उसमें इतने सारे गुण समाहित हो सकते थे? हम तब युवा थे, और हमारी असीम आशाएँ थीं। उन लंबे दिनों में भी हम सब एकता में विलीन हो गए थे, ताकि किसी दूसरे ग्रह पर हम एक-दूसरे को पहचान सकें और जब हम कोयल वाली घड़ी, किताबों, लॉन में चरती दुबली-पतली गायों और शोकग्रस्त किकुयू बुजुर्गों के बीच मिलें तो एक-दूसरे को पुकार सकें: “हाँ, मुझे पता है, तुम भी वहाँ थे। तुम भी न्गोंग फार्म का हिस्सा थे।” वे पल हम सभी के लिए आशीर्वाद थे, फिर वे बीत गए।{20}

“कितने सजीव शब्द हैं!” नर्स ने कहा। “ऐसा लगता है जैसे दृश्य आँखों के सामने आ गया हो। इसाक डाइनसेन की ‘फ्रॉम द हार्ट ऑफ अफ्रीका’,” उसने यह सुनिश्चित करने के लिए दोहराया कि उसे सही से याद है।
- एकदम सही।
"आप बहुत ही सुंदर पढ़ते हैं। आपकी आवाज़ गहरी और लयबद्ध है। ज़ोर से पढ़ने के लिए एकदम सही!"
- धन्यवाद।
कुर्सी पर बैठी नर्स ने अपनी आँखें बंद कर लीं और धीरे-धीरे साँसें लीं, मानो वाक्यों की गूंज उसके शरीर में समा रही हो। उसके सफेद गाउन के नीचे, उसके स्तन उसकी साँसों की लय के साथ ऊपर-नीचे हो रहे थे। उन्हें देखते हुए, टेंगो को अपनी प्रेमिका की याद आ गई। उसे याद आया कि कैसे शुक्रवार की दोपहर को वह उसे निर्वस्त्र करता था और अपनी उंगलियों से उसके सख्त निप्पल्स को छूता था। उसकी गहरी साँसें और गीला संभोग। पर्दे वाली खिड़की के बाहर, उसे हल्की बारिश की आवाज़ सुनाई दे रही थी। उसने अपनी हथेली में उसके अंडकोषों का वजन महसूस किया। लेकिन इन यादों ने उसकी कामेच्छा को नहीं जगाया। सभी संवेदनाएँ और छवियाँ दूर और धुंधली थीं, मानो किसी पतली परत में लिपटी हों।
कुछ क्षण बाद नर्स ने अपनी आँखें खोलीं और टेंगो की ओर देखा, मानो वह उसके हर विचार को पढ़ सकती हो। लेकिन उसकी निगाहों में कोई निंदा नहीं थी। वह मुस्कुराते हुए अपनी कुर्सी से उठी और उसे नीचे देखते हुए बोली:
- मुजे जाना है।
उसने यह सुनिश्चित करने के लिए अपने बालों में हाथ फेरा कि कलम अपनी जगह पर है, फिर मुड़ा और कमरे से बाहर चला गया।
*

आम तौर पर, शाम को वह फुकेरी को फोन करता था, और वह उसे बताती थी कि कुछ खास नहीं हुआ है, उसने कई बार फोन किया लेकिन उसने जवाब नहीं दिया, जैसा कि उसने उसे निर्देश दिया था। ठीक है, तेंगो उससे कहता। उसे फोन करने दो।

जब उसने उन्हें फोन किया, तो उन्होंने उसे तीन बार घंटी बजाने, फिर फोन काट देने और दोबारा फोन करने की अनुमति दी थी, लेकिन फुकेरी अक्सर नियम तोड़ देता था और पहली बार में ही फोन उठा लेता था।
"तुम्हें वही करना होगा जो मैंने तय किया है!" टेंगो ने उसे डांटते हुए कहा।
"कोई बात नहीं, मुझे पता था," उसने जवाब दिया।
"क्या आपको पता था कि यह मैं ही था?"
मैं दूसरों के प्रति जवाबदेह नहीं हूं।
तो ऐसा ही होगा, टेंगो ने सोचा। आखिर, उसे पता था कि कोमात्सु कब फोन कर रहा है। उसकी आवाज में जल्दबाजी और घबराहट झलकती थी, मानो वह लगातार अपनी उंगली से डेस्क पर थपथपा रहा हो। लेकिन अंत में यह सिर्फ एक शक ही था। उसे पक्का पता नहीं था कि कोमात्सु ही फोन कर रहा है, इसलिए उसने फोन नहीं उठाया।
फुकेरी के दिन भी टेंगो की तरह ही नीरस थे। वह घर से बाहर निकले बिना बस अकेली बैठी रहती थी। उसके पास टेलीविजन नहीं था और वह पढ़ती भी नहीं थी। वह खाने- पीने की भी परवाह नहीं करती थी, इसलिए उसे खरीदारी करने जाने की कोई ज़रूरत ही नहीं थी।
"मैं हिलती-डुलती नहीं हूँ, इसलिए मुझे ज्यादा खाने की जरूरत नहीं है," फुकेरी ने कहा।
आप दिन भर अकेले क्या करते हैं?
- मैं सोच रहा हूँ।
- किसका?
फुकेरी ने प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।
कौआ आ रहा है।
— कौआ हर रोज आता है।
"एक बार नहीं, कई बार," लड़की ने कहा।
— वही कौआ?
- हाँ।
क्या कोई और भी आ रहा है?
- nî-hî-cî का आदमी फिर से प्रकट हुआ है।
"पिछली बार की तरह ही?"
उसने जोर से चिल्लाकर कहा कि श्री कवाना चोर हैं।
"क्या उसने दरवाजे के सामने चिल्लाकर ऐसा कहा था?"
ताकि सभी लोग इसे सुन सकें।
टेंगो ने कुछ देर सोचा।
"चिंता मत करो। इसका तुमसे कोई लेना-देना नहीं है और इससे कोई नुकसान भी नहीं होता।"
"उसने कहा कि उसे पता था कि मैं यहां छिपा हुआ हूं।"
"उसकी बातों पर ध्यान मत दो," टेंगो ने कहा। "उसे कुछ पता नहीं चलेगा। वह बस बकवास कर रहा था, धमकी दे रहा था। कभी-कभी एनएचके के लोग ऐसा करते हैं।"
उसने अपने पिता की चालबाज़ियाँ कई बार देखी थीं। रविवार दोपहर को किसी अपार्टमेंट बिल्डिंग के गलियारे में गूंजती हुई शत्रुतापूर्ण आवाज़। उत्पीड़न और धमकियाँ। टेंगो ने अपनी कनपटी पर हल्की सी उंगली रखी। पुरानी यादें लौट आईं, अपने साथ भारी बोझ लेकर।

मानो उसकी चुप्पी में कुछ भांपते हुए, फुकेरी ने पूछा:
- तुम ठीक हो?
— हाँ। एनएचके वाले आदमी को भूल जाओ।
— कौवे ने यही कहा था।
"बहुत बढ़िया," टेंगो ने कहा।
जब से तेंगो ने आकाश में दो चाँद देखे थे और अपने पिता के अस्पताल के बिस्तर पर हवा का एक कोकून देखा था, तब से उसे किसी भी बात पर आश्चर्य होना बंद हो गया था। फुकाएरी का हर दिन खिड़की पर बैठे कौवे से अपने विचार साझा करना उसके लिए कोई गलत बात नहीं थी।
मैं कुछ समय यहीं रुकूंगा। मैं अभी टोक्यो वापस नहीं जा रहा हूँ। क्या आपको कोई आपत्ति है?
"जितना चाहो इंतजार करो," फुकेरी ने जवाब दिया और बिना और इंतजार किए फोन काट दिया।
बातचीत पल भर में ही रुक गई, मानो किसी ने तेज कुल्हाड़ी गिराकर टेलीफोन की लाइनें काट दी हों।
इसके बाद, टेंगो ने उस प्रकाशन गृह का नंबर डायल किया जहाँ कोमात्सु काम करता था, लेकिन वह वहाँ नहीं था। वह लगभग एक बजे काम पर आया था, लेकिन तुरंत चला गया था, और उन्हें नहीं पता था कि वह उस समय कहाँ था या क्या वह कार्यालय लौटेगा। इसमें कुछ भी असामान्य नहीं था। टेंगो ने उन्हें मानसिक अस्पताल का फ़ोन नंबर दिया और उनसे कहा कि वे उन्हें बता दें कि वह दिन में वहाँ मिल सकता है और उन्होंने उनसे उसे ढूंढने के लिए कहा है। उसने उन्हें सराय का नंबर नहीं दिया, ताकि कोमात्सु के फ़ोन करने पर वह आधी रात को जाग न जाए।
*

कोमात्सु से उनकी आखिरी बातचीत सितंबर के अंत में हुई थी। दोनों के बीच संक्षिप्त बातचीत हुई थी, और उसके बाद न तो उन्होंने और न ही टेंगो ने उन्हें ढूंढने की कोशिश की। लगभग तीन सप्ताह तक, अगस्त के अंत के आसपास, वह गायब रहे। उन्होंने काम पर फोन किया और एक अस्पष्ट बहाना दिया कि उनकी तबीयत ठीक नहीं है और वह कुछ दिनों की छुट्टी लेना चाहते हैं, और फिर वह गायब हो गए। वह सचमुच गायब हो गए थे। बेशक, उन्होंने टेंगो को चिंतित किया था, लेकिन उन्होंने कोई परेशानी नहीं खड़ी की थी। कोमात्सु एक मनमौजी व्यक्ति थे, और वह जो कुछ भी करते थे, वह अपनी मर्जी से ही करते थे। वह शायद फिर से शांति से काम पर आ जाएंगे, जैसे कुछ हुआ ही न हो।
ज़ाहिर है, प्रकाशन गृह ऐसे स्वार्थी कृत्यों को स्वीकार नहीं कर सकता था। हालाँकि, उनके मामले में, कुछ सहकर्मी ऐसे थे जो कोई तर्कसंगत बहाना बनाकर अप्रिय स्थिति को टाल सकते थे। वे बहुत लोकप्रिय व्यक्ति नहीं थे, लेकिन किसी न किसी तरह हमेशा कोई न कोई अच्छा व्यक्ति मिल ही जाता था, जो उनकी गलतियों को सुधारने के लिए तैयार रहता था। प्रबंधन ने भी कुछ बातों को नज़रअंदाज़ कर दिया। वे स्वार्थी, टीम भावना से रहित और उद्दंड व्यक्ति थे, लेकिन उन्होंने अच्छा काम किया और अकेले ही एयर क्राइसालिस का प्रबंधन किया, जिसकी खूब बिक्री हुई। उन्हें एक-दो बार में नौकरी से नहीं निकाला जा सकता था।
जैसा कि टेंगो ने कल्पना की थी, एक दिन कोमात्सु बिना किसी चेतावनी, बिना किसी स्पष्टीकरण, बिना किसी माफी के काम पर वापस आ गया। उसे इस बारे में एक परिचित

ने बताया था, जो उसी प्रकाशन गृह में संपादक था और जिसने काम से संबंधित किसी मामले के बारे में उसे फोन किया था।
“क्या कोमात्सु-सान अब बेहतर महसूस कर रहे हैं?” टेंगो ने पूछा था।
"हां, वह ठीक है, स्वस्थ है," संपादक ने कहा था। "बस पहले से थोड़ा शांत लग रहा है।"
"शांत?" टेंगो को आश्चर्य हुआ।
— जी हाँ, मैं आपको कैसे बताऊँ, वह कम मिलनसार है।
"लेकिन क्या वह सचमुच बीमार था?"
"मुझे नहीं पता," संपादक ने झल्लाकर कहा। "यह तो वही कहता है। आप सिर्फ उसी पर विश्वास कर सकते हैं। लेकिन यह अच्छी बात है कि वह वापस आ गया है, क्योंकि इसी तरह से सारी समस्याएं हल हुईं। उसके अनुपस्थित रहने के दौरान, एयर क्राइसालिस से संबंधित कई तरह की बातें सामने आईं और हमारे लिए यह सब आसान नहीं था।"
एयर क्राइसालिस की बात करें तो, फुकेरी के लापता होने के बारे में और क्या जानकारी मिली है?
"कुछ नहीं, सब कुछ रुका हुआ है। प्रगति का कोई संकेत नहीं है और किसी को भी पता नहीं है कि लेखक कहाँ है। इसमें शामिल हर कोई असमंजस में है।"
मैंने अखबारों में देखा है, लेकिन मुझे हाल ही में इसके बारे में कुछ भी नहीं मिला है।
प्रेस ने इस विषय को छोड़ दिया है या शायद वे जानबूझकर इससे दूर रहने की कोशिश कर रहे हैं। पुलिस ने भी कुछ खास नहीं किया है। कोमात्सु-सान से विस्तार से पूछिए। लेकिन, जैसा कि मैंने आपको बताया, वह भी कुछ चुप हो गए हैं। आप कहते हैं कि वह पहले जैसे नहीं रहे। उनका आत्मविश्वास गायब हो गया है और वे अपने आप में सिमट गए हैं, गहरी सोच में डूबे रहते हैं। वे काफी चिड़चिड़े हो गए हैं। कभी- कभी ऐसा लगता है जैसे वे भूल गए हों कि उनके आसपास लोग हैं, जैसे वे किसी गड्ढे में अकेले हों।
"वह अपने आप में सिमट गया," टेंगो ने कहा।
"जब आप उससे बात करेंगे तो आपको मेरी बात समझ आ जाएगी।"
टेंगो ने उसे धन्यवाद दिया और फोन काट दिया।
*

कुछ दिनों बाद, शाम को, टेंगो ने कोमात्सु को फोन किया। वह उसे काम पर मिला।
जैसा कि उसके परिचित ने उसे बताया था, कोमात्सु के बोलने का तरीका बदल गया था। आमतौर पर वह बिना रुके और लगातार बोलता रहता था, लेकिन अब वह बोझिल सा लग रहा था और ऐसा लग रहा था कि टेंगो से बात करते समय वह लगातार किसी और बात के बारे में सोच रहा है। टेंगो को समझ नहीं आ रहा था कि उसे क्या परेशान कर रहा है। खैर, वह अब पहले जैसा शांत स्वभाव वाला कोमात्सु नहीं रहा था। चाहे वह किसी बात को लेकर चिंतित हो या किसी मुश्किल समस्या का हल निकालना हो, वह आमतौर पर अपने चेहरे पर कुछ भी नहीं दिखाता था और न ही अपनी बोलने की लय और व्यवहार को बिगड़ने देता था।
“क्या तुम ठीक हो गए?” टेंगो ने पूछा।
— ठीक होने के लिए?
— खैर, आप काफी समय से छुट्टी पर थे क्योंकि आपकी तबीयत ठीक नहीं थी।

"ओह, हाँ," कोमात्सु ने कहा, मानो उसे अभी-अभी याद आया हो। थोड़ी देर की चुप्पी के बाद उसने कहा, "हाँ, मैं ठीक हूँ। हम इस बारे में थोड़ी देर में फिर बात करेंगे। मैं अभी आपको पूरी जानकारी नहीं दे सकता।"
"जल्द ही," टेंगो ने मन ही मन सोचा। उसे कोमात्सु की आवाज़ में एक अजीब सा लहजा सुनाई दिया। उसमें आत्मीयता का कोई संकेत नहीं था और उसके शब्द सपाट, गहराईहीन लग रहे थे।
टेंगो ने बातचीत खत्म करने का एक तरीका ढूंढ लिया और फोन काट दिया। उसने फुकाएरी और एयर क्राइसालिस का ज़िक्र करने की हिम्मत नहीं की। कोमात्सु के लहजे से उसे समझ आ गया था कि वह इस विषय से बचना चाहता है। क्या कभी कोमात्सु अपनी बात कहने में असमर्थ रहा था?
*

खैर, सितंबर के अंत में उनकी आखिरी बातचीत हुई थी। तब से दो महीने बीत चुके थे। कोमात्सु को फोन करके खूब बातें करना पसंद था। बेशक, वह हर किसी से ऐसा नहीं करता था, लेकिन उसकी आदत थी कि वह बिना सोचे-समझे बहुत बातें करता था, अपने विचारों को ठीक से व्यवस्थित नहीं कर पाता था। और टेंगो उसके लिए एक दीवार की तरह था, जिस पर वह टेनिस सर्व का अभ्यास करता था। जब वह फोन करता था, चाहे उसे कुछ भी महत्वपूर्ण न कहना हो, वह टेंगो को फोन करता था। अक्सर ऐसे समय पर जब फोन करना नामुमकिन होता था। हालांकि, जब उसका मन नहीं होता था, तो वह लंबे समय तक कोई संकेत नहीं देता था, लेकिन दो महीने की चुप्पी असामान्य थी। टेंगो ने सोचा, शायद उसका मूड खराब था। हर किसी के साथ ऐसा होता है, यहाँ तक कि कोमात्सु के साथ भी। वैसे भी, टेंगो को उससे कोई ज़रूरी बात नहीं करनी थी। 'द एयर क्राइसालिस' की बिक्री ठप पड़ी थी, किताब के बारे में अब कोई चर्चा नहीं होती थी, और वह जानता था कि फुकाएरी असल में कहाँ है। अगर कोमात्सु को उससे कुछ बात करनी होती, तो वह खुद उससे मिलने जाता, और चूंकि वह उससे मिलने नहीं आया था, इसका मतलब था कि उसका उससे कोई काम नहीं था।
फिर भी, उसे लगा कि अब उसे फोन करने का समय आ गया है। उसके मन के किसी कोने में, उसके शब्द अजीब तरह से अटक गए थे: "हम इस बारे में जल्द ही फिर बात करेंगे।" उसने प्रीप स्कूल में अपनी जगह ले रहे अपने दोस्त को फोन किया और उससे पूछा कि सब कैसा चल रहा है। उसने बताया कि कोई खास समस्या नहीं थी।
आपके पिताजी कैसे हैं?
"वह अभी भी कोमा में है," टेंगो ने जवाब दिया। "वह सामान्य रूप से सांस ले रहा है, उसका तापमान और रक्तचाप कम है, और उसकी हालत स्थिर है। लेकिन वह होश में नहीं है। शायद उसे दर्द भी नहीं हो रहा है। ऐसा लग रहा है जैसे वह किसी स्वप्नलोक में है।"
दूसरे व्यक्ति ने बिना किसी भावना के कहा, "यह कोई बुरी मौत नहीं होगी।"
असल में उनका मतलब था: "हो सकता है मैं असंवेदनशील लगूँ, लेकिन अगर आप सोचें तो, एक तरह से, यह इतनी बुरी मौत भी नहीं होगी।" लेकिन उन्होंने पहला हिस्सा छोड़ दिया था। जब आप कुछ सालों तक विश्वविद्यालय के गणित विभाग में काम करते हैं, तो आपको बोलने के इस संक्षिप्त तरीके की आदत हो जाती है। अब यह असामान्य नहीं लगता।
"क्या तुमने हाल ही में चांद देखा है?" टेंगो को अचानक यह पूछने का विचार आया।

वह शायद इकलौता ऐसा व्यक्ति था जिसे अगर आप अचानक उससे चांद के बारे में पूछ लें तो आश्चर्य नहीं होगा।
दूसरे ने एक पल के लिए सोचा।
मुझे याद नहीं है। लेकिन क्या चांद के बारे में कुछ खास है?
"जब आपके पास समय हो, तो कृपया इसे देखें। मैं आपकी राय जानना चाहता हूँ।"
— क्या विचार हैं? किस दृष्टिकोण से?
"किसी भी दृष्टिकोण से। मुझे बताएं कि जब आपने उसे देखा तो आपके मन में क्या विचार आए।"
कुछ देर का विराम रहा।
— मैं जो सोच रहा हूँ उसे शब्दों में व्यक्त करना शायद काफी मुश्किल होगा। "नहीं, आपको उस बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि आप किन विशिष्टताओं पर ध्यान देते हैं।"
क्या मुझे चांद को देखकर उसकी विशेषताओं के बारे में बताना चाहिए?
"हां," टेंगो ने जवाब दिया। "अगर आपको कुछ भी नज़र नहीं आता, तो ठीक है।"
आज बादल छाए हुए हैं, मुझे नहीं लगता कि आप इसे देख पाएंगे, लेकिन आसमान साफ होते ही मैं इसे देख लूंगा। मतलब, अगर मुझे याद रहा तो।
टेंगो ने उसे नमस्कार किया और फोन काट दिया। अगर उसे याद हो तो। गणितज्ञों के साथ यही समस्या है: जब बात उन चीजों की आती है जिनमें उनकी सीधी दिलचस्पी नहीं होती, तो उनकी याददाश्त आश्चर्यजनक रूप से कमजोर हो जाती है।
मिलने का समय समाप्त हो चुका था और टेंगो सैनिटोरियम से निकल गया। नर्स तामुरा अभी भी रिसेप्शन डेस्क पर थी और उसने उसका अभिवादन किया।
“धन्यवाद। शुभ रात्रि!” उसने उत्तर दिया।
“टेंगो, तुम यहाँ और कितने दिन रुकने वाले हो?” उसने अपने चश्मे के पुल को दबाते हुए पूछा।
ऐसा लग रहा था कि उसने अपना कार्यक्रम पूरा कर लिया है, क्योंकि उसने अब अपना गाउन नहीं पहना था। उसने भूरे रंग की प्लीटेड स्कर्ट, सफेद ब्लाउज और ग्रे रंग का कार्डिगन पहना हुआ था। टेंगो रुका और सोचने लगा।
मैंने अभी तक फैसला नहीं किया है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि चीजें कैसी चलती हैं।
क्या आप अभी भी छुट्टी पर हैं?
— कोई और मेरी क्लास ले रहा है, इसलिए फिलहाल कोई बात नहीं।
“आप आमतौर पर कहाँ खाना खाते हैं?” नर्स ने पूछा।
शहर में, एक स्थानीय रेस्तरां में। सराय में तो सिर्फ नाश्ता मिलता है, इसलिए मैं एक छोटा सा पब ढूंढता हूँ और सेट मेनू या चावल की एक कटोरी लेता हूँ जिसके ऊपर कुछ और भी हो।
और क्या यह अच्छा है?
— यह बहुत अच्छा नहीं है, लेकिन मुझे इसकी परवाह भी नहीं है।
"यह तो नामुमकिन है!" नर्स ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। "आपको कुछ पौष्टिक खाना चाहिए। आजकल आप ऐसे लग रहे हैं जैसे कोई घोड़ा खड़े-खड़े सो गया हो।"
"जैसे कोई घोड़ा खड़े-खड़े सो गया हो?" टेंगो ने सोचा।
"हां, घोड़े इसी तरह सोते हैं। क्या आपने कभी नहीं देखा?"
टेंगो ने अपना सिर हिलाया।

- नहीं।
"अब ये बिल्कुल तुम्हारे जैसे दिखते हैं," अधेड़ उम्र की नर्स ने कहा। "तुम बाथरूम जा सकती हो, आईने में देख सकती हो। पहले तो तुम्हें पता भी नहीं चलेगा कि ये सो रहे हैं, लेकिन अगर तुम ध्यान से देखोगी तो तुम्हें पता चल जाएगा। ये आंखें खोलकर बैठे हैं, लेकिन किसी चीज को नहीं देख रहे हैं।"
क्या मैं आंखें खुली रखकर सोता हूँ?
सहायक ने सिर हिलाकर सहमति जताई।
- आप की तरह।
एक पल के लिए, टेंगो बाथरूम में जाकर आईने में देखना चाहता था, लेकिन उसने अपना इरादा बदल दिया।
"मैं समझ गया। मैं बेहतर खाना खाऊंगा।"
"सुनो, क्या तुम आकर स्टेक नहीं खाना चाहते?"
— एक स्टेक?
टेंगो को मांस खाने की कोई खास इच्छा नहीं थी। उसे मांस नापसंद भी नहीं था, लेकिन आमतौर पर उसका मन नहीं करता था। हालांकि, नर्स के सुझाव पर उसने सोचा कि काफी समय बाद एक स्टेक खा ही लेना चाहिए। शायद उसका शरीर कुछ पौष्टिक भोजन मांग रहा था।
"हमने आज रात बारबेक्यू खाने के लिए बाहर जाने का फैसला किया है। तुम भी आओ!" "उन सभी को?"
"हम शाम साढ़े छह बजे मिलेंगे, जब कार्यक्रम समाप्त हो जाएगा, और हम समुद्र तट पर जाएंगे। आपका क्या कहना है?"
बालों में कलम लगाए ओमुरा और दुबली-पतली अदाची भी आ रही थीं। काम के बाहर वे दोनों अच्छी तरह घुल-मिल जाती थीं। तेंगो सोच रहा था कि उनके साथ जाए या नहीं। वह अपनी सरल दिनचर्या को बदलना नहीं चाहता था, लेकिन उसे कोई उचित बहाना नहीं मिल रहा था। सब जानते थे कि उस कस्बे में उसके पास करने के लिए कुछ बेहतर नहीं था।
"अगर आपको कोई आपत्ति न हो," उन्होंने कहा।
“बिल्कुल, हमें कोई आपत्ति नहीं है,” नर्स ने जवाब दिया। “अगर होती, तो हम आपको सिर्फ़ मजबूरी में आमंत्रित नहीं करते। इसलिए संकोच न करें, आ जाइए। हमारे बीच एक और स्वस्थ युवक के होने से कोई नुकसान नहीं होगा।”
"स्वस्थ, हाँ, मैं स्वस्थ हूँ," टेंगो ने असहजता से जवाब दिया।
"खैर, यही तो सबसे महत्वपूर्ण बात है," नर्स ने पेशेवर दृष्टिकोण से जवाब दिया।
*

तीनों महिलाओं के लिए एक ही समय पर अपनी शिफ्ट खत्म करना काफी मुश्किल था, लेकिन महीने में एक बार वे कोशिश करतीं और बाहर घूमने जातीं। वे अच्छा खाना खाने जातीं, साके पीतीं, कराओके गातीं और अपनी अतिरिक्त ऊर्जा निकालने के लिए कुछ हल्का-फुल्का काम करतीं। उन्हें आराम के उन पलों की बहुत ज़रूरत थी। उस छोटे से प्रांतीय कस्बे में जीवन नीरस था, और काम पर उन्हें केवल डॉक्टर, दूसरी नर्सें और बुज़ुर्ग, निर्जीव लोग ही नज़र आते थे।
तीनों नर्सों ने पेट भरकर खाना खाया और खूब शराब पी। टेंगो उनके साथ मुकाबला नहीं कर पाता, इसलिए वह चुपचाप बैठा रहा और धीरे-धीरे अपना स्टेक खाता रहा,

साथ ही एक पाइंट बियर पीता रहा, इस बात का ध्यान रखते हुए कि उसे ज्यादा नशा न हो जाए। रेस्टोरेंट से निकलने के बाद, उन्होंने पास के एक बार में जाने का फैसला किया। उन्होंने व्हिस्की की एक बोतल खरीदी और कराओके गाया। नर्सों ने बारी-बारी से अपने पसंदीदा गाने गाए, फिर एक साथ मिलकर, कोरियोग्राफ किए गए डांस स्टेप्स के साथ, कैंडिज़ का एक गाना गाया। उन्होंने कई बार अभ्यास किया होगा, क्योंकि वे कराओके में काफी अच्छी थीं। टेंगो कराओके में अच्छा नहीं था, लेकिन उसने योसुई इनौए का एक गाना गाने की कोशिश की जो उसे धुंधला सा याद था।
आमतौर पर कम बोलने वाली युवा अदाची भी शराब के नशे में ज़्यादा हंसमुख और बेबाक हो गई थी। शराब ने उसके पहले से ही लाल गालों को और भी लाल कर दिया था और उसे एक स्वस्थ कांस्य रंग दे दिया था। वह बचकाने चुटकुलों पर हंस रही थी और अपने बगल में बैठे तेंगो के कंधे पर ऐसे झुक रही थी मानो यह दुनिया की सबसे स्वाभाविक बात हो। ओमुरा ने अपने लंबे बालों को, जिनमें वह अक्सर कलम रखती थी, खोल दिया था और उन्हें खुला छोड़ दिया था। उसने हल्के नीले रंग की पोशाक पहन ली थी। खुले बालों में वह तीन-चार साल छोटी लग रही थी और उसकी आवाज़ थोड़ी भारी हो गई थी। अस्पताल में उसके जो पेशेवर हाव-भाव थे, वे गायब हो गए थे और अब वह ज़्यादा कोमल ढंग से चल रही थी, मानो उसका व्यक्तित्व ही बदल गया हो। केवल तामुरा ही हमेशा की तरह व्यवहार कर रहा था और दिख रहा था।
"क्या आज रात बच्चों की देखभाल कोई करेगा?" ओमुरा ने टेंगो से पूछा। "मेरे पति घर पर नहीं हैं क्योंकि वे रात की शिफ्ट में काम करते हैं। यही एक तरीका है जिससे मैं अपनी चिंताओं को भूलकर आराम कर सकती हूँ। आराम करना ज़रूरी है, है ना टेंगो?"
उनके लिए, वह अब कावाना-सान या तेंगो-सान नहीं, बल्कि सिर्फ तेंगो थे। आमतौर पर ऐसा ही होता था, पता नहीं क्यों, हर कोई उन्हें उनके पहले नाम से ही बुलाना चाहता था। यहां तक कि प्रारंभिक विद्यालय के छात्र भी उन्हें इसी नाम से बुलाते थे, लेकिन जाहिर है, उनके सामने नहीं।
"बिल्कुल सही, इसमें कोई शक नहीं," टेंगो ने सहमति जताई।
"हमें समय-समय पर इन चीजों की जरूरत पड़ती है," तामुरा ने पानी में मिलाकर पी गई सनटोरी ओल्ड व्हिस्की का एक घूंट लेते हुए कहा। "हम भी इंसान हैं।"
"अगर हम अपनी वर्दी उतार दें, तो हम सिर्फ साधारण महिलाएं हैं," अदाची ने खुद ही हंसते हुए कहा, मानो वह मजाक कर रही हो।
ओमुरा ने कहा, "तेंगो, क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ?"
"क्या वास्तव में?"
क्या आपके पास कोई है?
"हां, हम इसे सुनना चाहते हैं," अदाची ने अपने बड़े सफेद दांतों से आइसक्रीम कोन को कुतरते हुए कहा।
"यह और भी जटिल है," टेंगो ने कहा।
"अच्छा, अगर यह ज़्यादा जटिल हो तो क्या हुआ?" थोड़ा अधिक अनुभव रखने वाले तामुरा ने कहा। "हमारे पास काफ़ी समय है और हमें ऐसी कहानियाँ पसंद हैं। आखिर इतनी जटिल बात क्या हो सकती है?"
“बोलो, बोलो!” अदाची ने ताली बजाते हुए और हंसते हुए कहा।

"इसमें कुछ खास दिलचस्प नहीं है," टेंगो ने कहा। "यह कुछ साधारण और थोड़ा अस्त-व्यस्त सा है।"
"तो चलिए निष्कर्ष सुनते हैं," ओमुरा ने कहा। "क्या आप किसी के साथ डेटिंग कर रहे हैं या नहीं?"
पराजित होकर, टेंगो ने उनसे कहा:
कुल मिलाकर बात यह है कि फिलहाल ऐसा लगता है कि मैं किसी के साथ डेटिंग नहीं कर रहा हूँ।
"हम्म," तामुरा ने अपनी उंगली से गिलास में जमी बर्फ को हिलाते हुए कहा। फिर उसने अपनी उंगली चाटी और बोला, "यह अच्छा नहीं है। तुम्हारे जैसे तंदुरुस्त नौजवान का अकेला रहना ठीक नहीं है। यह बहुत दुख की बात है।"
"यह शरीर के लिए भी अच्छा नहीं है," ओमुरा ने कहा। "अगर आप लंबे समय तक अकेले रहते हैं, तो आपका दिमाग सुस्त हो जाता है।"
अदाची फिर से खिलखिलाकर हंस पड़ा।
"तुम्हारा सिर चकरा रहा है," उसने कहा और उंगली से अपनी कनपटी को छुआ।
"हाल तक मेरा किसी के साथ रिश्ता था," टेंगो ने लगभग माफी मांगते हुए कहा।
"तुम्हारा मतलब है कि तुम काफी समय से सिंगल नहीं रहे हो?" तामुरा ने अपनी नाक पर चश्मा ठीक करते हुए पूछा।
मैं सहमत हूं।
“क्या उसने तुम्हें छोड़ दिया?” ओमुरा ने पूछा।
"मुझे नहीं पता," टेंगो ने सिर हिलाते हुए कहा। "शायद ऐसा ही हो। शायद वह मुझे छोड़कर चली गई हो।"
"क्या वह तुमसे काफी बड़ा था?" तामुरा ने पलकों के बीच से उसकी ओर देखते हुए पूछा।
"हां, बिल्कुल सही," उसने जवाब दिया, यह सोचते हुए कि उसे यह बात कैसे समझ में आई।
"अच्छा, मैंने तुमसे कहा था," तामुरा ने बाकी दोनों से कहा, जिन्होंने सिर हिलाकर सहमति जताई। फिर वह टेंगो की ओर मुड़ा, "मैंने लड़कियों से कहा था कि तुम किसी बड़ी उम्र की महिला से मिल रही हो। औरतें ऐसी चीजों को भांप लेती हैं।"
अदाची ने कुत्ते के सूंघने की नकल करते हुए एक इशारा किया।
“और वैसे भी, वो शादीशुदा है,” ओमुरा ने धीमी आवाज़ में कहा। क्या यह सच है?” टेंगो एक पल के लिए हिचकिचाया, लेकिन फिर सिर हिलाया। अब झूठ बोलने का कोई फायदा नहीं था।
"कितना शरारती लड़का है!" अदाची ने कहा और उंगली से उसकी जांघ में गुदगुदी की।
वह कितने साल बड़ा है?
"दस," टेंगो ने उत्तर दिया।
“ओह!” तामुरा ने कहा।
"तो टेंगो को शादीशुदा, उम्रदराज और अनुभवी महिलाएं पसंद हैं," ओमुरा ने कहा। "मुझे भी प्यारे और अकेले टेंगो को खुश करने की कोशिश करनी चाहिए। शायद आपको ऐसा न लगे, लेकिन मेरा शरीर बुरा नहीं है।"
उसने टेंगो का हाथ पकड़ा और उसे अपनी छाती पर रखने की कोशिश की, लेकिन बाकी लोगों ने किसी तरह उसे समय रहते रोक लिया। हालांकि उन्हें चक्कर आ रहे थे, फिर

भी उन्हें मरीजों के परिवारों से दूरी बनाए रखनी पड़ी। या शायद उन्हें डर था कि कोई उन्हें देख न ले। यह एक छोटा सा कस्बा था और अफवाहें जंगल की आग की तरह फैल जाती थीं। यह भी संभव था कि ओमुरा का पति बहुत ईर्ष्यालु व्यक्ति हो। टेंगो भी किसी और मुसीबत में नहीं पड़ना चाहती थी।
"खैर, टेंगो बहुत अच्छा है," तामुरा ने बात बदलने की कोशिश की। "वह बहुत दूर से आया है और हर दिन न जाने कितने घंटे अपने पिता को पढ़कर सुनाता है... यह वाकई खास है।"
"हां, मैं भी यही कहता हूं," अदाची ने अपना सिर थोड़ा झुकाते हुए कहा। "यह सम्मान के योग्य है।"
"हम हमेशा आपकी प्रशंसा करते हैं, टेंगो," तामुरा ने आगे कहा।
टेंगो अचानक शर्म से लाल हो गया। वह यहाँ अपने पिता की देखभाल करने नहीं आया था। वह तो बस एक बार फिर उस धुंधली सी चमकती हुई वायु कोकून को और उसके अंदर लेटी हुई आओमामे को देखने आया था। इस कस्बे में आने का उसका यही एकमात्र कारण था। अपने पिता की देखभाल करना तो बस एक बहाना था, पर वह किसी को बता नहीं सकता था। सबसे पहले तो उससे यही पूछा जाता कि वायु कोकून क्या होता है।
"अब तक मैं उसके लिए कुछ भी नहीं कर पाया हूँ," उसने बड़ी मुश्किल से अपने भारी-भरकम शरीर को लकड़ी की कुर्सी में बिठाते हुए कहा।
हालांकि, नर्सों को उनका यह हावभाव विनम्रता का संकेत लगा।
टेंगो उन्हें बताना चाहता था कि वह थक गया है, मेज से उठकर वापस सराय में जाना चाहता था, लेकिन उसे सही समय नहीं मिल रहा था। वह ऐसा व्यक्ति नहीं था जो अपनी इच्छा को बलपूर्वक थोपे।
"तुम्हें पता है," ओमुरा ने कहा और खांसा। "पहले वाली कहानी पर वापस आते हुए, तुमने उस औरत से रिश्ता क्यों तोड़ा? तुम दोनों की आपस में अच्छी बनती थी, है ना? क्या उसके पति को पता चल गया?"
"मुझे भी नहीं पता कि क्या हुआ," टेंगो ने कहा। "एक समय के बाद, उसने मुझे बिल्कुल भी नहीं ढूंढा। बस इतना ही था।"
"हम्म," अदाची ने कहा। "शायद वह तुमसे ऊब गया है?"
ओमुरा ने अपना सिर हिलाया, फिर अपनी तर्जनी उंगली हवा में उठाई और नर्सों से कहा:
— आपको अब भी हमारी दुनिया समझ नहीं आती। आपको बिल्कुल भी समझ नहीं आती। चालीस साल की शादीशुदा औरत, अगर उसे ऐसा प्यारा, जवान और जोशीला आदमी मिल जाए, तो वह उसे आसानी से जाने नहीं देती और न ही "शुक्रिया, अच्छा लगा, अलविदा" कहती है। भले ही कभी-कभी इसका उल्टा ही होता है।
"शायद यही बात है," अदाची ने अपना सिर थोड़ा झुकाते हुए कहा। "मुझे इन चीजों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है।"
“हाँ, बिल्कुल,” ओमुरा ने कहा। उन्होंने तेंगो की ओर ऐसे देखा मानो वे कुछ कदम पीछे हटकर किसी समाधि पर लिखे शिलालेख को पढ़ रहे हों। फिर उन्होंने सिर हिलाकर कहा, “जब तुम उस उम्र के हो जाओगे, तब समझ जाओगे।”
"ओह, कितना समय बीत गया है," तामुरा ने अपनी कुर्सी पर पीछे झुकते हुए कहा। उसके बाद, तीनों नर्सें शायद किसी सहकर्मी के यौन कारनामों के बारे में गपशप करने लगीं। टेंगो अपने हाथ में व्हिस्की का गिलास लिए उन्हें देखता रहा और उसे मैकबेथ की तीन चुड़ैलें याद आ गईं। वे चुड़ैलें जिन्होंने मैकबेथ की

कुटिल महत्वाकांक्षाओं को जगाया था, जब वह "मेरी वेश्या क्या है, मेरी सुंदरता क्या है" गुनगुना रहा था। बेशक, टेंगो उन तीनों नर्सों को बुरी औरतें नहीं मानता था। वे ईमानदार और दयालु महिलाएं थीं। वे अपने काम के प्रति समर्पित थीं और उसके पिता की देखभाल करती थीं। उन्हें अस्पताल में बहुत काम करना पड़ता था और वे एक ऐसे मछली पकड़ने वाले कस्बे में रहती थीं जहाँ जीवन उतना दिलचस्प नहीं था। महीने में एक बार वे तनाव से राहत पाने की कोशिश करती थीं। लेकिन अलग-अलग उम्र की उन तीनों महिलाओं को, मानो उनकी आत्माएं एक हो गई हों, देखकर स्वाभाविक रूप से उसके मन में स्कॉटलैंड के बंजर इलाकों की छवि उभर आई। बादलों से घिरा आकाश, ठंडी हवा जो बारिश की बौछारें लाती थी और झाड़ियों से सीटी बजाती हुई गुज़रती थी।
कॉलेज में उन्होंने अंग्रेजी की कक्षा के लिए मैकबेथ पढ़ा था और उसका एक अंश उनके मन में बस गया था:

जब उंगलियां मुझे चुटकी काटती हैं
कोई मूर्तिपूजक यहाँ आकर बस रहा है:
Sus, lăcate,
जो भी दस्तक दे!{21}

यह अंश उसके मन में इतनी स्पष्टता से क्यों बैठ गया? उसे यह भी नहीं पता था कि ये शब्द कौन बोल रहा है। इस उद्धरण ने उसे एनएचके के उस कर संग्रहकर्ता की याद दिला दी, जिसने कोएंजी स्थित उसके अपार्टमेंट का दरवाजा बार-बार खटखटाया था। तेंगो ने अपने अंगूठे की ओर देखा। उसने उसे चुटकी नहीं ली। लेकिन शेक्सपियर के शब्दों के लहजे में कुछ अशुभ संकेत छिपा था।
इस तरह से कुछ न कुछ बुरा होता है।
टेंगो ने सोचा, "उम्मीद है कि फुकाएरी इसे अनलॉक नहीं करेगी।"

अध्याय 7 मैं तुम्हारी ओर आ रहा हूँ

उशिकावा को अज़ाबू की महिला के बारे में अपनी जांच रोकनी पड़ी। उसके आसपास सुरक्षा बहुत कड़ी थी, और वह चाहे जिस भी दिशा में जाने की कोशिश करता, उसे हर बार एक ऊंची दीवार का सामना करना पड़ता। वह उस आश्रय स्थल के बारे में और अधिक जानना चाहता था, लेकिन उस इलाके में घूमना बहुत खतरनाक हो गया था। इमारत में निगरानी कैमरे लगे हुए थे, और उशिकावा के आने से तुरंत ही सबका ध्यान आकर्षित हो जाता। एक बार शक पैदा हो जाने पर उसके लिए कुछ भी करना मुश्किल हो जाता। सबसे पहले, उसे विलो विला से निकलकर कोई दूसरा रास्ता खोजना था।
उसके दिमाग में बस एक ही बात आ रही थी कि आओमामे के जीवन की फिर से छानबीन की जाए। उसने पहले भी एक जासूस फर्म से जानकारी मांगी थी, जिसके साथ उसने काम किया था, लेकिन उसने खुद भी छानबीन की थी। उसके पास आओमामे की एक विस्तृत फाइल थी और हर संभव कोण से जांच करने के बाद उसने फैसला किया था कि वह कोई खतरा नहीं है। एक प्रशिक्षक के रूप में, वह कुशल थी और उसके स्पोर्ट्स क्लब में उसकी सराहना की जाती थी। बचपन में, वह विटनेस चर्च की सदस्य थी, लेकिन दस साल की उम्र तक उसने उनसे सारे संबंध तोड़ लिए थे। उसने स्पोर्ट्स कॉलेज से बहुत अच्छे अंकों के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी और एक ऐसी कंपनी में नौकरी कर ली थी जो मुख्य रूप से स्पोर्ट्स ड्रिंक्स और हेल्थ फूड बेचती थी। वहां, वह सबसे सक्रिय सॉफ्टबॉल खिलाड़ियों में से एक थी। उसके सहकर्मी कहते थे कि वह अपने काम और अपनी क्लब टीम दोनों के प्रति समर्पित थी। वह उत्साही और बुद्धिमान थी। उसके आसपास के लोग उसे पसंद करते थे। लेकिन वह शांत और अंतर्मुखी स्वभाव की थी।
कुछ साल पहले, उसने अचानक सॉफ्टबॉल क्लब छोड़ दिया और अपनी कंपनी से इस्तीफा दे दिया। उसने हिरोओ के एक शानदार फिटनेस क्लब में नौकरी कर ली, जहाँ उसकी कमाई पहले से तीस प्रतिशत अधिक थी। वह अकेली रहती थी और उसका कोई प्रेमी भी नहीं था। वैसे भी, उसे उसके अतीत के बारे में कुछ भी अस्पष्ट या संदिग्ध नहीं मिला था। उशिकावा ने माथे पर शिकन डाली और गहरी साँस ली। उसने जिस फाइल को दोबारा पढ़ रहा था, उसे मेज पर पटक दिया। उसने सोचा, मुझसे कुछ छूट गया है। कुछ महत्वपूर्ण, कुछ ऐसा जिसे मुझे नहीं छोड़ना चाहिए।
*

उशिकावा ने दराज से एक फोनबुक निकाली और एक नंबर डायल किया। जब भी उसे कानून के दायरे से बाहर कोई जानकारी चाहिए होती, वह हमेशा उसी नंबर पर कॉल करता था। वह किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में था जो उसकी अपनी दुनिया से भी कहीं ज़्यादा अंधेरी दुनिया में रहता हो। अगर आप उसे पर्याप्त पैसे देते, तो वह आपकी ज़रूरत की लगभग हर जानकारी निकाल देता। बेशक, जानकारी जितनी मुश्किल होती, कीमत उतनी ही ज़्यादा होती।
उशिकावा दो बातें जानना चाहता था। पहली, वह आओमामे के माता-पिता के बारे में और अधिक जानना चाहता था, जो साक्षी संप्रदाय के कट्टर अनुयायी थे। उसे पूरा विश्वास था कि यह संप्रदाय अपने सदस्यों से संबंधित जानकारी राष्ट्रीय स्तर पर एकत्रित करता है। जापान में इस संप्रदाय के कई अनुयायी थे और उन्हें प्रांतीय मुख्यालय में सामग्री वितरित की जाती थी, जिसका अर्थ था कि केंद्र

में बैठे लोगों को इस तरह का डेटा एकत्र करना पड़ता था, अन्यथा यह प्रणाली ठीक से काम नहीं करती। साक्षी संप्रदाय का मुख्यालय ओडावारा के बाहरी इलाके में था। एक विशाल भूखंड पर बनी एक सुंदर इमारत। वहाँ उन्होंने अपने खर्च पर एक मुद्रण गृह भी बनवाया था जहाँ वे अपने ब्रोशर छापते थे, एक सम्मेलन कक्ष और देश भर से आने वाले अनुयायियों के लिए आवास की व्यवस्था थी। निश्चित रूप से, सारी जानकारी वहीं एकत्रित और व्यवस्थित रूप से प्रबंधित की जाती थी। दूसरा, वह स्पोर्ट्स क्लब में आओमामे की फाइल हासिल करना चाहता था, ताकि पता चल सके कि वह वहां कौन-कौन सी गतिविधियां करती थी, किसके साथ और कब निजी सबक लेती थी। यह जानकारी शायद विटनेस चर्च की तरह गुप्त नहीं रखी जाती थी। हालांकि, वह सीधे फिटनेस क्लब जाकर यह नहीं कह सकता था, "माफ़ कीजिए, क्या आप मुझे सुश्री आओमामे की गतिविधि रिपोर्ट दिखा सकते हैं?" वे निश्चित रूप से उसे अच्छी नज़र से नहीं देखते।
फोन का जवाब आंसरिंग मशीन ने दिया। उशिकावा ने अपना नाम और नंबर छोड़ दिया।
तीस मिनट बाद उन्हें एक कॉल आया।
“श्री उशिकावा?” एक कर्कश आवाज ने पुकारा।
उशिकावा ने बताया कि उसे किस तरह की जानकारी चाहिए। वह इस आदमी से कभी मिला नहीं था, उनकी सिर्फ़ फ़ोन पर बात होती थी और उसकी रिपोर्ट एक्सप्रेस कूरियर से भेजी जाती थीं। उस आदमी की आवाज़ भारी थी और वह कभी-कभी खांसता था। शायद उसका गला खराब था। जब भी वह उससे बात करता, तो आसपास कोई शोर नहीं होता था, मानो वह किसी पूरी तरह से ध्वनिरोधक कमरे में बैठा हो। सिर्फ़ उसकी आवाज़ और उसकी तेज़ साँसें सुनाई देती थीं। और कुछ नहीं, लेकिन आवाज़ कुछ ज़्यादा तेज़ सुनाई देती थी। उशिकावा हमेशा खुद से कहता था, "एक संदिग्ध आदमी।" दुनिया संदिग्ध लोगों से भरी पड़ी है (शायद बाहर से, मुझे तो ऐसा ही लगता है)। चुपके से वह उस आदमी को "चमगादड़" कहता था।
"खैर, आप आओमामे नाम के एक व्यक्ति के बारे में जानकारी में रुचि रखते हैं," चमगादड़ ने कहा और खांसा।
"हां। यह एक काफी असामान्य नाम है।"
— और आपको विस्तृत जानकारी चाहिए, है ना?
"आओमामे से जुड़ी कोई भी चीज़। अगर संभव हो तो, मुझे एक ऐसी तस्वीर भी चाहिए जिसमें मैं उसे पहचान सकूँ।"
जिम में तो यह आसान है, उन्हें उम्मीद नहीं होती कि कोई इस तरह की जानकारी चुराएगा। लेकिन विटनेस चर्च के मामले में यह थोड़ा मुश्किल है। यह एक बड़ा संगठन है जिसके पास काफी धन है। वे शायद अपनी सुरक्षा का पूरा ध्यान रखते हैं। धार्मिक समूहों के साथ व्यक्तिगत रूप से मिलना-जुलना आसान नहीं होता, क्योंकि वे निजी जानकारी की सुरक्षा करते हैं, लेकिन करों का भी मामला है। क्या आपको लगता है कि यह संभव है?
"यह संभव होना ही चाहिए। मेरे पास दरवाजे खोलने के तरीके हैं। एक बार खुल जाने पर उन्हें बंद करना मुश्किल होता है। क्योंकि अन्यथा हमें अपने पीछे मिसाइल का सामना करना पड़ सकता है।"
— जैसे युद्ध में होता है।
"यह युद्ध है! इसके बुरे परिणाम हो सकते हैं," उस व्यक्ति ने कर्कश आवाज में कहा।

उनके लहजे से पता चलता था कि उन्हें वह लड़ाई पसंद आई थी।
"तो क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं?"
हल्की खांसी की आवाज सुनाई दी।
मैं कोशिश करूंगा। लेकिन इसमें पैसे लग सकते हैं।
लगभग कितना?
उस आदमी ने उसे एक कीमत बताई। उशिकावा ने बड़ी मुश्किल से अपनी बात मानी, लेकिन मान ली। उसके पास मांगी गई रकम मौजूद थी, और अगर उसे नतीजे मिलते, तो वह उसे भुगतान करने के लिए कह सकता था।
क्या इसमें लंबा समय लगता है?
- क्या आप जल्दी में हैं?
— हाँ, मुझे जल्दी है।
मैं आपको कोई सटीक तारीख नहीं बता सकता, लेकिन मुझे एक सप्ताह या दस दिन चाहिए।
"कोई बात नहीं," उशिकावा ने कहा।
उसे बस अपनी गति से आगे बढ़ना था।
"जानकारी मिलते ही मैं आपको फोन करूंगा। मैं ज़्यादा से ज़्यादा दस दिनों में आपसे मिलने आऊंगा।"
"जब तक कि हम पर कोई मिसाइल हमला न कर दे," उशिकावा ने कहा।
"बिल्कुल सही," चमगादड़ ने अप्रभावित होकर कहा।
*

फोन रखने के बाद, उशिकावा अपनी कुर्सी पर पीठ झुकाए, सोच में डूबे बैठे रहे। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि बैटमैन वह जानकारी कैसे जुटा रहा है जिसकी उन्हें तलाश थी, और उन्हें पता था कि उससे पूछना बेकार होगा, क्योंकि उन्हें कोई जवाब नहीं मिलेगा। वैसे भी, यह स्पष्ट था कि वह कुछ ऐसे तरीके अपना रहा था जो पूरी तरह सही नहीं थे। शायद वह संगठन के किसी सदस्य को रिश्वत देने की कोशिश करेगा। अगर यह काम नहीं आया, तो वह घुसपैठ करने की कोशिश कर सकता है, और अगर इसमें कंप्यूटर का इस्तेमाल हुआ, तो मामला और भी पेचीदा हो जाएगा।
बहुत कम संगठन और कंपनियाँ अपनी जानकारी कंप्यूटर पर प्रबंधित करती थीं, क्योंकि यह मुश्किल और खर्चीला था। हालाँकि, राष्ट्रव्यापी पहुँच वाला कोई धार्मिक संगठन शायद ऐसा कर सकता था। उशिकावा को कंप्यूटर के बारे में कुछ भी नहीं पता था, लेकिन वह समझते थे कि सूचना जुटाने के लिए कंप्यूटर एक अनिवार्य उपकरण बनता जा रहा है। जल्द ही वह युग आएगा जब आप पूरा दिन पुस्तकालय में बिताएंगे, अपनी मेज पर वार्षिक पुस्तकें रखेंगे और जानकारी की तलाश में संक्षिप्त समाचार पत्र पढ़ेंगे। दुनिया सूचना के मालिकों और उसे चुराने वालों के बीच एक युद्धक्षेत्र बन जाएगी, एक ऐसा युद्धक्षेत्र जहाँ खून की गंध आएगी। नहीं, यह एक लड़ाई होगी, इसलिए खून होगा, लेकिन आपको उसकी गंध नहीं आएगी। एक बहुत ही विचित्र दुनिया। उशिकावा को ऐसी दुनिया पसंद थी जहाँ गंध और दर्द हो, भले ही कभी-कभी इसे सहना मुश्किल हो। लेकिन निश्चित रूप से, उनके जैसे लोग जल्द ही पुराने जमाने की चीज बन जाएंगे।
लेकिन इस संभावना ने उन्हें हतोत्साहित नहीं किया। वे जानते थे कि उनमें एक सहज अंतर्ज्ञान शक्ति है। वे अपनी असाधारण सूंघने की क्षमता से आसपास की स्थिति को भांप लेते थे। वे अपनी त्वचा पर होने वाले दर्द से जान जाते थे कि

हवा किस दिशा में बह रही है। यह एक ऐसा काम था जो कंप्यूटर नहीं कर सकता था। क्योंकि ये ऐसी क्षमताएं थीं जिन्हें डिजिटाइज़ या व्यवस्थित नहीं किया जा सकता था। कड़ी सुरक्षा वाले कंप्यूटरों में सेंध लगाकर जानकारी चुराना चोरों का काम था। लेकिन केवल एक सच्चा आदमी ही यह तय कर सकता था कि कौन सी जानकारी महत्वपूर्ण है और क्या चुराना उचित है।
शायद मैं अधेड़ उम्र का आदमी हूँ, हास्यास्पद और पुराने ख्यालों वाला। नहीं, "शायद" के बिना, क्योंकि इसमें संदेह की कोई गुंजाइश नहीं है। मैं अधेड़ उम्र का आदमी हूँ, हास्यास्पद और पुराने ख्यालों वाला। लेकिन मुझमें कुछ ऐसी खूबियाँ हैं जो दूसरों में आसानी से नहीं मिलतीं। मेरी सूंघने की शक्ति बहुत अच्छी है और मैं जिद्दी हूँ। अगर मुझे कोई चीज दिख जाए, तो मैं उसे आसानी से नहीं छोड़ता। अब तक, इन प्रतिभाओं ने मुझे जीविका कमाने में मदद की है। और जब तक ये मेरे पास हैं, चाहे दुनिया कितनी भी विचित्र क्यों न हो जाए, मैं किसी न किसी तरह से जीविका कमाता रहूँगा।
आओमामे, मैं तुम्हारा पीछा कर रहा हूँ। तुम होशियार हो, चालाक हो और सावधान भी हो, पर मैं तुम्हारा पीछा कर रहा हूँ। बस देखते रहो। मैं तुम्हारी तरफ आ रहा हूँ। क्या तुम्हें मेरे कदमों की आहट सुनाई दे रही है? नहीं, नहीं, क्योंकि मैं कछुए की तरह चुपचाप चलता हूँ। पर मैं तुम्हारी तरफ धीरे-धीरे आ रहा हूँ। लेकिन उशिकावा के पीछे एक और चीज़ थी: समय। वह आओमामे को ढूंढने की कोशिश कर रहा था, लेकिन साथ ही उसे समय के दबाव से भी बचना था। आओमामे को जल्दी से ढूंढना, स्थिति पर प्रकाश डालना और यह जानकारी पंथ के सदस्यों को सौंपना: लीजिए, लीजिए! उसके पास समय बहुत सीमित था। अगर उसने तीन महीनों में ही स्थिति स्पष्ट की, तो शायद बहुत देर हो चुकी होगी। अब तक, उशिकावा उनके लिए उपयोगी साबित हुआ था। वह सक्षम और अनुकूलनीय था, कानूनी मामलों में पारंगत और विवेकशील था। वह सिस्टम से दूर रहकर स्वतंत्र रूप से अपना काम करना जानता था। लेकिन अंततः, वह सिर्फ एक ऐसा व्यक्ति था जिसे अपना काम करने के लिए वेतन मिलता था। वे न तो रिश्तेदार थे, न दोस्त, और न ही उनका कोई एक ही पंथ था। वे एक धार्मिक संगठन थे, लेकिन जैसे ही वह खतरनाक साबित होता, वे बिना किसी झिझक के उसे खत्म कर देते।
*

बैट के संपर्क करने का इंतज़ार करते हुए, उशिकावा पुस्तकालय गए और साक्षी चर्च की गतिविधियों और इतिहास का विस्तार से अध्ययन किया। उन्होंने नोट्स बनाए और महत्वपूर्ण पन्नों की फोटोकॉपी करवाई। उन्हें पुस्तकालय जाकर जानकारी ढूंढने में कोई आपत्ति नहीं थी। उन्हें वह अनुभूति अच्छी लगती थी जब उनके मन में ज्ञान का संचय होता था। यह एक ऐसी आदत थी जो उन्होंने बचपन से विकसित की थी।
पुस्तकालय का काम खत्म करने के बाद, वह जियुगाओका गया, जहाँ आओमामे का घर था, यह सुनिश्चित करने के लिए कि अब वहाँ कोई नहीं रहता। मेलबॉक्स पर उसका नाम अभी भी लिखा था, लेकिन वहाँ किसी और के रहने का कोई संकेत नहीं था। उसने उस संपत्ति का काम संभालने वाली रियल एस्टेट एजेंसी से भी इस बहाने से संपर्क किया कि उसने सुना है कि वहाँ कुछ खाली अपार्टमेंट हैं और वह किरायानामा पर हस्ताक्षर करना चाहता है।

"जी हां, हमारे पास एक खाली अपार्टमेंट है, लेकिन आप अगले साल फरवरी की शुरुआत के बाद ही उसमें रहने आ सकते हैं," रियल एस्टेट एजेंट ने उसे बताया। पिछले किराएदार का अनुबंध जनवरी में समाप्त हो रहा है, और तब तक किराया महीने-दर-महीने चुकाया जाता है। उसने अपना सारा सामान ले लिया और बिजली, पानी और गैस कनेक्शन बंद कर दिए। लेकिन किरायानामा अभी भी वैध है।
"क्या आपका मतलब है कि उसने जनवरी तक एक खाली घर का किराया दिया?"
"बिल्कुल सही," रियल एस्टेट एजेंट ने जवाब दिया। "वह अनुबंध की पूरी राशि का भुगतान कर रहा है और उसने हमसे कहा है कि हम उसके अपार्टमेंट को जैसा है वैसा ही रखें। ज़ाहिर है, अगर हमें हमारा पैसा मिल जाता है, तो हमें शिकायत करने का कोई कारण नहीं है।"
"कितनी अजीब कहानी है। यूं ही बैठे मत रहो और पैसे यूं ही लुटा मत दो।"
"मुझे भी यह अजीब लगा, इसलिए मैं मालिक के साथ वहाँ गया। आप जानते हैं, मैं नहीं चाहता था कि मुझे किसी अलमारी में ठूंसा हुआ कोई शव मिले। लेकिन वहाँ कुछ भी गड़बड़ नहीं थी। अंदर से बहुत साफ था। बस खाली था। मुझे नहीं पता कि वह क्या था।"
बेशक, आओमामे अब वहाँ नहीं रहती थी। लेकिन किसी कारणवश, वह नाममात्र के लिए ही सही, उस अपार्टमेंट में किराए पर रह रही थी और इसके लिए वह अगले तीन महीनों का किराया भी दे रही थी। इसका मतलब है कि वे लोग बहुत सतर्क थे और उनके पास पैसों की कमी भी नहीं थी।
ठीक दस दिन बाद, उशिकावा को कोजिमाची स्थित उनके कार्यालय में लिलियाक का फोन आया।
“श्री उशिकावा?” उनकी आवाज कर्कश हो गई।
हमेशा की तरह, पृष्ठभूमि में कोई आवाज नहीं थी।
- यह मैं हूं।
- क्या आप बात कर सकते हैं?
"हां," उशिकावा ने उत्तर दिया।
"विटनेस चर्च की सुरक्षा बहुत कड़ी है। लेकिन मुझे इसकी उम्मीद थी। मैंने आपको आओमामे के बारे में वह जानकारी दे दी है जो आप चाहते थे।"
"और क्या मेरे पीछे कोई मिसाइल आ रही है?"
फिलहाल तो कुछ भी नहीं आ रहा है।
- बहुत अच्छा।
"श्री उशिकावा," दूसरे ने कहा, फिर खांसा। "माफ़ कीजिए, लेकिन क्या आपको बुरा लगेगा अगर मैं आपकी सिगरेट बुझा दूं?"
"सिगरेट?" उशिकावा ने अपनी उंगलियों के बीच सात सितारों को देखते हुए कहा। धुआं धीरे-धीरे छत की ओर उठ रहा था। "जी हां, मैं सिगरेट पीता हूं," उसने कहा, "लेकिन हम फोन पर बात कर रहे हैं। आपको कैसे पता?"
"बेशक मुझे इसकी गंध नहीं आती। लेकिन जब मैं रिसीवर पर आपकी सिगरेट पीने की आवाज़ सुनता हूँ, तभी मेरी साँसें तेज़ होने लगती हैं। मुझे बहुत ज़्यादा एलर्जी है।"
"मैं समझ गया। मुझे पता नहीं था। क्षमा कीजिए।"
दूसरे ने कुछ बार खांसा।

"इसमें आपकी कोई गलती नहीं है। आपको यह जानने का कोई तरीका नहीं था कि इससे मुझे परेशानी हो रही है।"
उशिकावा ने ऐशट्रे में अपनी सिगरेट बुझाई और उस पर थोड़ी सी चाय डाली। वह खड़ा हुआ और खिड़की खोल दी।
मैंने सिगरेट बुझाई और ताजी हवा अंदर आने देने के लिए खिड़की खोल दी। खैर, यह तो नहीं कहा जा सकता कि बाहर से आने वाली हवा बहुत साफ है।
मैं एक बार फिर माफी मांगता हूं।
लगभग दस सेकंड तक सन्नाटा छाया रहा। बिल्कुल सन्नाटा पसरा हुआ।
“तो, क्या आपने विटनेस चर्च के बारे में कुछ सीखा है?” उशिकावा ने पूछा।
"जी हां। काफी जानकारी है। आओमामे का परिवार लंबे समय से इस संप्रदाय का हिस्सा रहा है, इसलिए उनके बारे में बहुत सारी सामग्री उपलब्ध है। बेहतर होगा कि आप खुद तय करें कि आपको क्या चाहिए और क्या नहीं।"
उशिकावा ने सिर हिलाया। यह बिल्कुल वही था जो वह चाहता था।
फिटनेस क्लब में मुझे कोई परेशानी नहीं हुई। मैंने दरवाजा खोला, अंदर गया, अपना काम किया और दरवाजा बंद कर दिया। लेकिन समय की कमी के कारण मैंने बहुत सारी जानकारी इकट्ठा कर ली। खैर, मैं आपको दोनों फाइलें सौंप दूंगा। हमेशा की तरह, मेरी फीस के बदले।
उशिकावा ने बैट द्वारा दी गई राशि लिख ली। यह मूल अनुमान से लगभग बीस प्रतिशत अधिक थी, लेकिन उशिकावा के पास बिल स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।
"मैं इस बार इन्हें डाक से नहीं भेजना चाहता। कल इसी समय कोई आकर इन्हें आपको दे देगा। कृपया नकद भुगतान तैयार रखें। हमेशा की तरह, मुझे रसीद की आवश्यकता नहीं है।"
"मैं समझ गया," उशिकावा ने कहा।
मैंने आपको पिछली बार भी बताया था, लेकिन मैं फिर से दोहरा रहा हूँ क्योंकि मैं पूरी तरह आश्वस्त होना चाहता हूँ। जिस विषय में आपकी रुचि थी, उसके बारे में मैंने हर संभव जानकारी जुटा ली है। इसलिए, यदि आप इसकी सामग्री से संतुष्ट नहीं हैं, तो मैं कोई ज़िम्मेदारी नहीं लेता। तकनीकी रूप से, मैंने अपनी पूरी कोशिश की है। शुल्क किए गए कार्य पर आधारित है, परिणाम पर नहीं। यह मत कहिए कि मुझे आपकी ज़रूरत की जानकारी नहीं मिली और आप अपना पैसा वापस चाहते हैं। मुझे उम्मीद है कि आप यह बात समझेंगे।
"बिल्कुल, मैं करता हूँ," उशिकावा ने कहा।
"तो आपको पता होना चाहिए कि मुझे आओमामे की कोई भी तस्वीर नहीं मिल पाई है," बैट ने कहा। उसकी तस्वीरें हर जगह से सावधानीपूर्वक हटा दी गई हैं।
"मैं समझ गया। कोई बात नहीं," उशिकावा ने कहा।
"शायद उसने अपना शारीरिक रूप-रंग बदल लिया है," बैट ने आगे कहा।
— सब कुछ संभव है।
चमगादड़ ने कुछ बार खांसा, फिर अलविदा कहा और फोन काट दिया।
उशिकावा ने रिसीवर वापस रखा, आह भरी और सिगरेट जलाई। फिर उसने धीरे से फोन में धुआं उड़ाया।
*

अगली दोपहर, एक युवती उशिकावा से उनके कार्यालय में मिलने आई। वह बीस वर्ष से अधिक उम्र की नहीं लग रही थी। उसने एक छोटी, सफेद पोशाक पहनी थी जो उसके सुडौल शरीर को उभार रही थी। उसने सुरुचिपूर्ण सफेद ऊँची एड़ी के जूते और मोती की बालियाँ पहनी थीं। वह कद में छोटी थी, लेकिन उसके कान अपेक्षाकृत बड़े थे। उसकी लंबाई शायद पाँच फीट से थोड़ी अधिक थी, उसके बाल लंबे और सीधे थे और आँखें स्पष्ट थीं। उसे देखकर ऐसा लग रहा था मानो वह कोई परी हो जो प्रशिक्षण ले रही हो। उसने उशिकावा को देखकर एक प्यारी और दोस्ताना मुस्कान दी, मानो उसने कोई बहुत ही अनमोल, अविस्मरणीय चीज़ देख ली हो। उसके होंठों के बीच उसके सफेद, सीधे दाँत दिखाई दे रहे थे। बेशक, यह केवल एक पेशेवर मुस्कान थी, लेकिन उशिकावा का पहली बार देखने पर लोगों को चौंकाए बिना रहना दुर्लभ था।
"मैं आपके द्वारा मांगे गए डेटा लेकर आई हूं," उसने कहा और अपने कंधे पर लटके हुए कैनवास बैग से दो भारी फाइलें निकालीं, जिन्हें उसने दोनों हाथों से मेज पर रख दिया, जैसे कोई पवित्र कन्या बहुत महत्वपूर्ण दस्तावेजों को संभाल रही हो।
उशिकावा ने दराज से अपना तैयार किया हुआ लिफाफा निकाला और महिला को दे दिया। उसने दस हजार येन के नोटों का गट्ठा निकाला और खड़े होकर उन्हें गिना। वह पैसे गिनने में माहिर थी और उसकी सुंदर उंगलियां तेजी से चल रही थीं। उसने पैसे वापस लिफाफे में रखे और लिफाफा अपने बैग में रख लिया। फिर वह उशिकावा की ओर मुड़ी और पहले से भी ज्यादा मुस्कुराई। मानो उसे उशिकावा को देखकर सबसे ज्यादा खुशी मिलती हो।
उशिकावा यह कल्पना करने की कोशिश कर रहा था कि बैट और इस लड़की के बीच किस तरह का संबंध था, लेकिन ज़ाहिर है, यह उसका काम नहीं था। शायद वह युवती महज़ एक संदेशवाहक थी जो "डेटा" पहुँचाती थी और शुल्क वसूलती थी। संभवतः यही उसका एकमात्र कर्तव्य था।
लड़की के कमरे से चले जाने के बाद, उशिकावा काफी देर तक हिचकिचाता रहा, उस दरवाजे को देखता रहा जिसे उस युवती ने अपने पीछे बंद कर दिया था। उसकी मौजूदगी अब भी दफ्तर में महसूस हो रही थी। शायद अपनी इस मौजूदगी के बदले में वह उशिकावा की आत्मा का एक हिस्सा अपने साथ ले गई थी। उसे अपने दिल में एक नया खालीपन महसूस हुआ। ऐसा क्यों हुआ? उसने सोचा। और इसका क्या मतलब हो सकता है? लगभग दस मिनट बाद, उशिकावा को होश आया और उसने स्कॉच टेप से मज़बूती से सील किए हुए दोनों फोल्डर खोले। अंदर ज़ेरॉक्स कॉपी, मूल दस्तावेज़ और छपे हुए पन्ने थे। उसे नहीं पता था कि ये सब उसे कैसे मिले, लेकिन उसने इतने कम समय में काफ़ी जानकारी इकट्ठा कर ली थी। हमेशा की तरह, वह बैट की कार्यकुशलता से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। लेकिन साथ ही, अपने सामने कागज़ों के ढेर को देखकर वह बेबसी से भर गया। चाहे मैं इन्हें कितना भी देख लूँ, क्या इनमें कुछ भी काम की चीज़ मिलेगी? शायद मैंने पैसों का एक थैला बेकार कागज़ों के ढेर के लिए दे दिया हो। बेबसी इतनी गहरी थी कि लाख कोशिश करने पर भी उसे इसका हल नहीं मिल रहा था। सारी चीज़ें, जिन्हें वह मुश्किल से देख पा रहा था, सूर्यास्त की गहरी छाया में डूबी हुई थीं, जो मृत्यु का संकेत दे रही थी। शायद ऐसा उस औरत की वजह से था जो पीछे छूट गई थी, उसने सोचा। या जो वह अपने साथ ले गई थी।
उशिकावा ने किसी तरह हिम्मत जुटाई। शाम तक वह उत्सुकता से प्राप्त दस्तावेजों को देखता रहा और एक-एक करके उन तथ्यों को लिखता रहा जिनकी उसे

जरूरत पड़ सकती थी। अपने काम पर ध्यान केंद्रित करके, वह अंततः उस रहस्यमयी लाचारी की भावना को दूर करने में कामयाब रहा। जब अंधेरा हो गया और उसने डेस्क लैंप जलाया, तब तक वह यह सोचने लगा था कि उस जानकारी पर इतना पैसा खर्च करना सार्थक था।
*

सबसे पहले, उसने फिटनेस क्लब के रिकॉर्ड देखे। आओमामे चार साल पहले क्लब में शामिल हुई थी और मुख्य रूप से शक्ति प्रशिक्षण और मार्शल आर्ट कार्यक्रमों की ज़िम्मेदारी उसी की थी। उसने कुछ कक्षाएं आयोजित की थीं। एक प्रशिक्षक के रूप में वह बहुत कुशल थी, और रिकॉर्ड से पता चलता था कि वह अपने ग्राहकों के बीच लोकप्रिय थी। सार्वजनिक कक्षाओं के अलावा, वह निजी सत्र भी आयोजित करती थी। बेशक, निजी सत्र अधिक महंगे थे, लेकिन ऐसे कई शौकिया लोग थे जो या तो सार्वजनिक कक्षाओं में नहीं आ पाते थे या निजी प्रशिक्षक को प्राथमिकता देते थे। आओमामे के पास ऐसे कई निजी ग्राहक थे।
उसके पास उसकी दिनचर्या की एक प्रति थी, जिससे वह पता लगा सकता था कि वह किसके साथ और कब निजी पाठ लेती थी। कभी-कभी वह ये सत्र क्लब में आयोजित करती थी, कभी- कभी ग्राहक के घर पर। उसके ग्राहकों में प्रसिद्ध कलाकार और राजनेता दोनों शामिल थे। सबसे उम्रदराज ग्राहक विलोज़ हाउस की शिज़ुए ओगाटा थीं।
शिज़ुए ओगाटा के साथ संबंध आओमामे के खेल क्लब में शामिल होने के कुछ ही समय बाद शुरू हुआ था और उसके लापता होने तक जारी रहा। यानी, लगभग उसी समय जब विलो विला के बगल वाली दो मंजिला इमारत का इस्तेमाल परामर्श कार्यालय द्वारा आश्रय स्थल के रूप में किया जाने लगा था। शायद यह महज़ एक संयोग था, शायद नहीं। किसी भी मामले में, उसके पास मौजूद जानकारी के अनुसार, समय के साथ उनका रिश्ता काफी गहरा हो गया था।
संभव था कि आओमामे और इस महिला के बीच कोई व्यक्तिगत संबंध विकसित हो गया हो। कम से कम उशिकावा की अंतरात्मा तो यही कह रही थी। शुरुआत में वे निजी प्रशिक्षक और ग्राहक थे, लेकिन किसी मोड़ पर हालात बदल गए। आधिकारिक रिकॉर्ड खंगालते हुए उशिकावा यह पता लगाने की कोशिश कर रहा था कि वह क्षण कब आया था। कुछ हुआ था या कुछ खुलासा हुआ था, और उसके बाद से वे दोनों सिर्फ प्रशिक्षक और ग्राहक नहीं रह गए थे। पद और उम्र के अंतर से परे एक व्यक्तिगत संबंध पनप गया था। शायद उनके बीच कोई गुप्त समझौता हुआ था, और इसी समझौते ने अपना स्वाभाविक रूप लिया और अंततः ओकुरा होटल के कमरे में नेता की हत्या का कारण बना। उशिकावा की नाक उसे यही बता रही थी।
किस प्रकार का समझौता था? और उसका स्वरूप क्या था?
उशिकावा के मन में एक विचार आया।
किसी भी सूरत में, यह घरेलू हिंसा से ही संबंधित रहा होगा। उसे जो जानकारी मिली थी, उससे स्पष्ट था कि यह उस महिला के लिए बहुत महत्वपूर्ण विषय था। उसके पास मौजूद जानकारी से ऐसा प्रतीत होता था कि शिज़ुए ओगाटा और आओमामे की मुलाकात आत्मरक्षा की उस कक्षा में हुई थी जिसे वह पढ़ा रही थी। सत्तर वर्ष से अधिक आयु की किसी महिला का ऐसी कक्षा में आना आम बात नहीं थी। इसका मतलब था कि दोनों महिलाओं के बीच का संबंध हिंसा से जुड़ा हुआ था।
यह भी संभावना थी कि आओमामे घरेलू हिंसा की शिकार रही हो। और शायद नेता भी हिंसक स्वभाव का हो। दोनों को यह बात पता चल गई थी और उन्होंने उसका मज़ाक

उड़ाने का फैसला किया। लेकिन यह महज़ एक अनुमान था, जिसमें कई सवालिया निशान थे, और उससे भी बढ़कर, यह अनुमान उशिकावा के नेता की छवि के बारे में जो कुछ भी जानती थी, उससे बिल्कुल मेल नहीं खाता था। ज़ाहिर है, किसी के भी दिल की गहराई में झाँका नहीं जा सकता, चाहे वह कोई भी हो, और नेता तो उससे भी कहीं ज़्यादा रहस्यमयी इंसान था। आख़िरकार, वह एक संप्रदाय का नेता था। वह बुद्धिमान और सुसंस्कृत था, लेकिन उसके कुछ रहस्यमय पहलू भी थे। लेकिन अगर मान भी लें कि नेता में ऐसी हिंसक प्रवृत्ति थी, तो फिर उन दोनों महिलाओं के लिए इतनी सुनियोजित योजना बनाना, अपनी पहचान बदलना और समाज में अपनी जगह को दांव पर लगाना इतना ज़रूरी क्यों था?
बहरहाल, नेता की हत्या भावनाओं के आवेश में आकर या जल्दबाजी में नहीं की गई थी। इसके पीछे दृढ़ इच्छाशक्ति, स्पष्ट इरादे और एक सुस्थापित व्यवस्था थी। इस व्यवस्था को काफी समय और धन लगाकर सावधानीपूर्वक संगठित किया गया था। हालांकि, उसके अनुमानों को किसी ठोस सबूत का समर्थन नहीं मिला। ये सब सिर्फ परिस्थितिजन्य साक्ष्यों पर आधारित परिकल्पनाएँ थीं, जिन्हें वह ओकम के रेज़र से आसानी से खारिज कर सकता था। इस स्तर पर वह इसकी सूचना पायनियर्स को भी नहीं दे सकता था। लेकिन वह जानता था। उसकी सूझबूझ और अंतर्ज्ञान ने उसे यही बताया था। सभी तत्व उसे एक ही दिशा में इशारा कर रहे थे। घरेलू हिंसा से संबंधित किसी कारणवश, उस महिला ने आओमामे को नेता की हत्या करने का काम सौंपा था और फिर उसे एक सुरक्षित स्थान पर छिपा दिया था। बैट द्वारा उसके लिए जुटाई गई सामग्री अप्रत्यक्ष रूप से इस परिकल्पना का समर्थन करती थी।
*

विटनेस चर्च से संबंधित सामग्री को छांटने में उसे काफी समय लगा, क्योंकि उनमें से अधिकांश उशिकावा के किसी काम की नहीं थीं। उसके पास मौजूद आधे से अधिक दस्तावेज़ आओमामे के परिवार द्वारा विटनेस चर्च को दिए गए योगदान के आंकड़े थे। जो उसने पढ़ा, उससे स्पष्ट था कि यह परिवार तन-मन से धर्म के प्रति समर्पित था। उन्होंने अपने जीवन का आधा से अधिक समय धर्म प्रचार में व्यतीत किया था। उसके माता-पिता चिबा के इचिकावा शहर में रहते थे। पैंतीस वर्षों में वे दो बार स्थानांतरित हुए, लेकिन हर बार उसी शहर में रहे। उसके पिता, ताकायुकी आओमामे (58 वर्ष), एक इंजीनियरिंग फर्म में काम करते थे, और उसकी माता, केइको आओमामे (56 वर्ष), बेरोजगार थीं। सबसे बड़े बेटे, केइची आओमामे (34), ने इचिकावा में हाई स्कूल से स्नातक होने के बाद टोक्यो में एक छोटे प्रिंटिंग प्रेस में नौकरी की, लेकिन तीन साल बाद उसने नौकरी छोड़ दी और ओडावारा में विटनेस चर्च के मुख्यालय में काम करने चला गया। वहाँ वे संप्रदाय के पर्चे छापने का काम करते थे, लेकिन अब प्रशासनिक पद पर कार्यरत थे। उनकी शादी पाँच साल पहले हुई थी और अब उनके दो बच्चे थे। वे ओडावारा में एक किराए के मकान में रहते थे।
मासामी आओमामे नाम की लड़की के बारे में जानकारी उसके ग्यारह साल की उम्र तक ही सीमित थी, क्योंकि उसी उम्र में उसने अपना धर्म त्याग दिया था। विटनेस चर्च को धर्म त्यागने वालों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उनके लिए, ऐसा था मानो आओमामे ग्यारह साल की उम्र में ही मर गई हो। उसके बाद उसने क्या किया, इसके बारे में एक भी जानकारी नहीं थी, यहाँ तक कि यह भी नहीं बताया गया कि वह जीवित है या नहीं।

ऐसे में, मैं बस उसके माता-पिता या भाई से बात करने की कोशिश कर सकता हूँ, उशिकावा ने सोचा। शायद उनसे कुछ सुराग मिल जाएँ। हालाँकि, उनके बारे में जो कुछ उसने पढ़ा था, उससे उसे समझ आ गया था कि वे शायद उसके सवालों का जवाब देने में खुश नहीं होंगे। आओमामे परिवार—कम से कम उशिकावा का यही मानना था— संकीर्ण सोच वाला और सीमित जीवन जीने वाला परिवार था। उनका मानना था कि ऐसा जीवन जीने से उन्हें स्वर्ग में जगह मिल जाएगी। उनके लिए, जिसने अपना धर्म त्याग दिया था, वह गलत और अपवित्र मार्ग पर चल पड़ा था, चाहे वह करीबी रिश्तेदार ही क्यों न हो। वास्तव में, शायद वे अब उसे रिश्तेदार भी नहीं मानते थे।
क्या आओमामे घरेलू हिंसा की शिकार थी?
शायद हाँ, शायद ना। लेकिन अगर जवाब हाँ होता, तो उसके परिवार ने इसे हिंसा नहीं माना होता। उशिकावा जानती थी कि साक्षी अपने बच्चों का बहुत सख्ती से पालन-पोषण करते थे, और इसमें अक्सर शारीरिक दंड भी शामिल होता था।
इसके अलावा, क्या इसका मतलब यह था कि बचपन के किसी अनुभव ने उसे इतना गहरा आघात पहुँचाया था कि वह बड़ी होकर किसी की हत्या कर दे? बेशक, यह असंभव नहीं था, लेकिन उशिकावा को यह एक अतिवादी परिकल्पना लगी। जानबूझकर किसी की हत्या करना एक बहुत गंभीर अपराध है, जिसमें खतरे और आध्यात्मिक ज़िम्मेदारी शामिल होती है। पकड़े जाने पर आपको कड़ी सज़ा भुगतनी पड़ती है। ऐसा करने के लिए आपको बेहद मज़बूत कारणों की ज़रूरत होती है।
उशिकावा ने कागज़ फिर से उठाए और ग्यारह साल की उम्र तक आओमामे के बारे में लिखी जानकारी पढ़ी। जब वह मुश्किल से चलना सीख रही थी, तभी उसकी माँ उसे अपने साथ धर्म प्रचार के लिए ले गई। वे घर-घर जाकर पर्चे बाँटती थीं, लोगों को आने वाले अंत की चेतावनी देती थीं और उन्हें अपनी सभाओं में बुलाती थीं। उनका कहना था कि अगर आप उनके साथ जुड़ जाएँगे, तो आप प्रलय से बच जाएँगे। फिर सुख का राज्य आएगा। उशिकावा को कई बार ऐसी मुलाक़ातें देखने को मिली थीं। वे आम तौर पर अधेड़ उम्र की महिलाएँ होती थीं, जो टोपी या छाता लिए खड़ी होती थीं। उनमें से कई चश्मा पहने होती थीं, जिसके पीछे से वे मछली जैसी बुद्धिमान आँखों से घूरती थीं। वे अक्सर अपने बच्चों के साथ आती थीं। उशिकावा कल्पना कर सकती थी कि छोटी आओमामे अपनी माँ के पीछे-पीछे घर-घर घूम रही होगी।
वह बालवाड़ी में नहीं गई थी, उसे सीधे पास के एक प्राथमिक विद्यालय में भेज दिया गया था। पाँचवीं कक्षा में, लड़की ने साक्षी चर्च छोड़ दिया, लेकिन इसके कारण स्पष्ट नहीं थे। यह संप्रदाय धर्म छोड़ने के कारणों को दर्ज नहीं करता था। जो लोग पाप में पड़ गए थे, उनके पास वहीं रहने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। वे स्वर्ग और वहाँ तक ले जाने वाले मार्ग की कहानियों में व्यस्त रहते थे। अच्छे लोग अच्छे काम करते हैं, और शैतान अपने शैतानी काम करते हैं। काम का बंटवारा होता है।
उशिकावा के मन में, मानो कोई पतली सी दीवार पर दस्तक दे रहा हो। "उशिकावा-सान, उशिकावा-सान," आवाज़ उसे पुकार रही थी। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और उस आवाज़ पर ध्यान केंद्रित किया। आवाज़ धीमी थी, लेकिन लगातार आ रही थी। "मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है, पर मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि क्या, और यह दस्तक देने वाला मुझे उसी ओर इशारा करने की कोशिश कर रहा है।"

क्या वे वास्तव में एक ही कक्षा में थे। किसी भी स्थिति में, उन दोनों के एक-दूसरे को जानने की संभावना बहुत अधिक थी।
उशिकावा ने सात तारे जलाए। उसे लगा जैसे चीज़ें आपस में जुड़ने लगी हैं। वह पहले से अलग-थलग बिंदुओं के बीच रेखाएँ खींचने में सक्षम था। उसे अभी यह नहीं पता था कि किस तरह का पैटर्न उभरेगा, लेकिन उसे जल्द ही पता चल जाएगा। आओमामे, क्या तुम्हें मेरे कदमों की आहट सुनाई दे रही है? शायद नहीं। क्योंकि मैं बहुत धीरे-धीरे चल रहा हूँ। लेकिन मैं धीरे-धीरे करीब आ रहा हूँ, कदम दर कदम। कछुए की तरह धीरे-धीरे, लेकिन मैं बिना किसी शक के आगे बढ़ रहा हूँ। जल्द ही मैं खरगोश को पकड़ लूँगा। तुम बस मेरा इंतज़ार करो!
अपनी कुर्सी पर बैठे हुए, उशिकावा ने अपनी पीठ सीधी की और छत की ओर देखते हुए आलस्यपूर्वक सिगरेट का धुआं ऊपर की ओर उड़ाया।

अध्याय 8 यह दरवाजा बिल्कुल भी बुरा नहीं है

दो हफ़्तों तक, मंगलवार दोपहर को सामान पहुँचाने वालों को छोड़कर, कोई भी उसके घर नहीं आया। एनएचके के कैशियर के रूप में अपना परिचय देने वाले उस व्यक्ति ने उससे कहा था कि वह ज़रूर दोबारा आएगा। उसकी आवाज़ में दृढ़ निश्चय था। या कम से कम आओमामे को तो ऐसा ही लगा था। हालाँकि, उसके बाद से उसने दरवाज़ा नहीं खटखटाया। शायद वह दूसरे कामों में व्यस्त था।
वे दिन देखने में शांत लग रहे थे। कुछ नहीं हुआ, कोई नहीं आया, फोन की घंटी नहीं बजी। सुरक्षा के लिहाज से, तमारू ने फोन पर बातचीत को यथासंभव सीमित कर दिया था। आओमामे का जीवन गुप्त रूप से, पर्दे गिराकर, किसी को अपनी मौजूदगी का एहसास न कराने और किसी का ध्यान आकर्षित न करने की कोशिश में बीत रहा था। अंधेरा होने पर, वह यथासंभव कम से कम बत्तियाँ जलाती थी।
वह अपना ज़ोरदार शारीरिक प्रशिक्षण जारी रखती थी, कोशिश करती थी कि कोई शोर न हो। वह रोज़ाना कपड़े से फर्श साफ़ करती थी और आराम से खाना बनाती थी। वह ऑडियो कैसेट की मदद से बोलचाल की स्पैनिश का अभ्यास करती थी (जो तमारू ने उसके कहने पर सामान के साथ भेजे थे)। लंबे समय तक न बोलने के कारण उसे अपने मुँह के आसपास की मांसपेशियाँ कमज़ोर महसूस होने लगी थीं। उसे मुँह हिलाने के लिए जानबूझकर ज़ोर लगाना पड़ता था, और यहीं पर विदेशी भाषा में बातचीत के अभ्यास काम आते थे। इसके अलावा, आओमामे हमेशा से दक्षिण अमेरिका को एक रोमांटिक नज़रिए से देखती थी। अगर उसे कहीं भी जाने की आज़ादी होती, तो वह कोस्टा रिका जैसे किसी शांत दक्षिण अमेरिकी देश में रहना पसंद करती। समुद्र किनारे एक छोटा सा विला किराए पर लेकर तैरते और पढ़ते हुए अपना जीवन बिताना चाहती। अगर उसने ज़रूरत से ज़्यादा खर्च न किया होता, तो उसके बैग में रखा पैसा लगभग दस साल तक चलता। और वे लोग भी उसका इतनी दूर तक पीछा नहीं करते।
स्पैनिश में बातचीत का अभ्यास करते हुए, आओमामे ने कोस्टा रिका में समुद्र के किनारे एक शांत, सुखमय जीवन की कल्पना की। क्या उसमें टेंगो भी शामिल था? उसने अपनी आँखें बंद कीं और खुद को कैरिबियाई समुद्र तट पर उसके साथ धूप में लेटे हुए कल्पना की। उसने एक छोटा सा काला स्विमसूट, धूप का चश्मा पहना हुआ था और टेंगो का हाथ पकड़े हुए थी। लेकिन यह एक ऐसी छवि थी जिसमें कोई भावना नहीं झलक रही थी। यह बस एक साधारण विज्ञापन तस्वीर जैसी लग रही थी।
जब उसे कुछ और समझ नहीं आता था, तो वह अपनी बंदूक को किताब की तरह साफ करती थी। वह हेकलर एंड कोच पिस्तौल को खोलकर, कपड़े और ब्रश से साफ करती, तेल लगाती और फिर से जोड़ देती। वह सुनिश्चित करती कि सब कुछ ठीक से काम कर रहा हो। वह इसमें माहिर थी। इस समय तक, बंदूक उसके शरीर का ही एक हिस्सा बन चुकी थी। लगभग दस बजे वह बिस्तर पर जाती, कुछ पन्ने पढ़ती और फिर सो जाती। उसे बचपन से लेकर अब तक सोने में कभी कोई परेशानी नहीं हुई थी। पन्ने पलटते-पलटते उसे अपने आप नींद आ जाती। वह बिस्तर के पास वाला लैंप बंद कर देती, तकिए पर सिर रखती और आंखें बंद कर लेती। अगर कुछ असामान्य न होता, तो आंखें खोलते-खोलते सुबह हो चुकी होती।
वह अपने तरीके से ज़्यादा सपने नहीं देखती थी। और अगर देखती भी, तो जागने पर उसे कुछ याद नहीं रहता था। कभी-कभी उसके दिमाग में धुंधले-धुंधले टुकड़े अटक

जाते थे, लेकिन वह उन्हें किसी तार्किक सूत्र से जोड़ नहीं पाती थी। वे बस बिखरे हुए टुकड़े ही रह जाते थे। आओमामे बहुत गहरी नींद सोती थी। उसके सपने गहराई में ही पनपते थे और समुद्र की तलहटी में रहने वाली मछलियों की तरह, वे कभी सतह तक नहीं पहुँचते थे। और अगर पहुँच भी जाते, तो दबाव के अंतर से सब कुछ विकृत हो जाता था।
लेकिन जब से वह वहाँ छिपी हुई थी, उसे लगभग हर रात सपने आते थे। और वे सपने साफ़ और वास्तविक होते थे। वह सपनों के दौरान जाग जाती थी और कुछ देर के लिए उसे पता ही नहीं चलता था कि वह असल दुनिया में है या सपनों की दुनिया में। आओमामे के लिए यह एक नया अनुभव था। वह पलंग के सिरहाने लगी डिजिटल घड़ी पर नज़र डालती, जिसमें 1:15, 2:37, 4:07 बज रहे होते थे। वह अपनी आँखें बंद कर लेती और दोबारा सोने की कोशिश करती, लेकिन नींद आसानी से नहीं आती थी। दो अलग-अलग दुनियाएँ चुपचाप उसकी चेतना के लिए लड़ रही थीं, जैसे एक विशाल मुहाने पर नदी समुद्र से लड़ रही हो।
आओमामे ने सोचा, मैं कुछ नहीं कर सकती। यह कहना मुश्किल है कि मैं जिस दुनिया में रहती हूँ, जहाँ आकाश में दो चाँद हैं, वह सचमुच सच है या नहीं। और फिर यह और भी अजीब है कि मैं ऐसी दुनिया में सो जाऊँ, सपना देखूँ और मुझे पता ही न चले कि वह सपना था या हकीकत? ऊपर से मैंने अपने हाथों से कुछ लोगों को मारा है, कट्टरपंथी मेरा पीछा कर रहे हैं और मैं एक गुप्त स्थान पर छिपी हुई हूँ। ज़ाहिर है मैं तनाव में हूँ और डरी हुई हूँ। मुझे अब भी लगता है कि मैंने किसी को मारा है। हो सकता है कि अब से मुझे रात को तकिए पर सिर रखकर चैन से सोने का मतलब ही न पता हो। लेकिन शायद यही वह ज़िम्मेदारी है जिसे मुझे निभाना है, वह कीमत है जो मुझे चुकानी है।
*

मोटे तौर पर कहें तो, उसके सपने तीन प्रकार के थे। या कम से कम जितने सपने उसे याद थे, वे सभी तीन पैटर्न का पालन करते थे।
उनमें से एक में, गरज सुनाई देती है। वह एक ऐसे कमरे में है जो पूरी तरह अंधेरे में डूबा हुआ है और लगातार गरज सुनाई दे रही है। लेकिन बिजली नहीं चमक रही है, ठीक उसी रात की तरह जब उसने नेता को मारा था। कमरे में कुछ है। आओमामे बिस्तर पर नग्न अवस्था में लेटी है, और वह कुछ उसके चारों ओर घूम रहा है। वह धीरे-धीरे और सावधानी से हिलती है। कालीन मोटा है, और कमरे की हवा घुटन भरी है। तेज गरज से खिड़कियाँ हल्की-हल्की काँप रही हैं। आओमामे डरी हुई है। उसे नहीं पता कि उसके साथ क्या है। यह कोई इंसान हो सकता है, कोई जानवर हो सकता है। या न तो इंसान और न ही जानवर। लेकिन अंत में, वह कुछ कमरे से चला जाता है। लेकिन दरवाजे से नहीं, न ही खिड़की से। वह उसकी उपस्थिति को धीरे-धीरे कम होते हुए महसूस करती है, और अंत में, वह पूरी तरह गायब हो जाता है। कमरे में उसके साथ कोई और नहीं है।
वह टटोलती है और बिस्तर के पास रखा लैंप जलाती है। वह नग्न अवस्था में बिस्तर से उठती है और चारों ओर देखती है। बिस्तर के सामने की दीवार में एक छेद है, जो मुश्किल से एक आदमी के निकलने लायक है। लेकिन यह स्थिर नहीं है। यह एक ऐसा छेद है जो आकार और स्थिति बदलता रहता है। यह कांपता है, हिलता है, बढ़ता या सिकुड़ता है। ऐसा लगता है जैसे यह जीवित है। और इसमें से कुछ निकला है। आओमामे उसमें देखती है। ऐसा लगता है कि यह कहीं जाता है, लेकिन इसके आगे केवल

उसकी हड्डियाँ, उसके अंग, उसका गर्भाशय अब दिखाई दे रहे थे। अगर वह ऐसा करती रही, तो शायद वह पूरी तरह गायब हो जाए। आओमामे सोच रही थी कि पूरी तरह अदृश्य हो जाने के बाद क्या होगा। लेकिन उसके पास इसका कोई जवाब नहीं था।
*

दोपहर के दो बजे फोन की घंटी बजी और आओमामे सोफे से उछल पड़ी, जहां वह ऊंघ रही थी।
"कोई परिवर्तन नहीं होता है?" तमारू ने पूछा।
"कुछ खास नहीं," उसने जवाब दिया।
— एनएचके का कैशियर?
"वह वापस नहीं आया। उसने कहा था कि वह वापस आएगा, लेकिन शायद यह सिर्फ एक धमकी थी।"
"शायद। रेडियो और टीवी का शुल्क सीधे आपके बैंक खाते में जमा होता है और आपके दरवाजे पर इसका प्रमाण पत्र लगा हुआ है। कैशियर इसे तुरंत देख लेगा। मैंने एनएचके से पूछा तो उन्होंने कहा कि ज़रूर कोई गड़बड़ी हुई होगी।"
जब तक मुझे इसका एहसास नहीं होता, तब तक कोई समस्या नहीं है।
"नहीं, ऐसा नहीं है। मैं किसी भी तरह से पड़ोसियों का ध्यान आकर्षित नहीं करना चाहता। और स्वभाव से ही मुझे परेशानी का डर रहता है।"
दुनिया छोटी-छोटी गड़बड़ियों से भरी पड़ी है।
"यह दुनिया तो दुनिया है, और मैं मैं हूँ," तामारू ने उत्तर दिया। "अगर कोई बात आपको परेशान करती है, चाहे वह कितनी भी छोटी क्यों न हो, कृपया मुझे बताएं।" — क्या पायनियर्स में कोई हलचल हुई है?
"यहां एकदम शांति और सुकून है। ऐसा लगता है जैसे कुछ हुआ ही नहीं हो। कुछ न कुछ तो गुप्त रूप से चल रहा होगा, लेकिन बाहर से देखकर ठीक-ठीक पता नहीं चल सकता कि कैसे।"
मुझे पता है कि संप्रदाय के भीतर सूचना का एक स्रोत मौजूद है।
"हमें जानकारी मिल रही है, लेकिन वह बहुत ही कम और अधूरी है। आंतरिक प्रतिबंध बेहद सख्त हैं। स्थिति बहुत गंभीर है।"
"लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि वे मेरा पीछा कर रहे हैं।"
— निःसंदेह, नेता की मृत्यु से संप्रदाय में एक गहरा शून्य उत्पन्न हो गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि अभी तक कोई उत्तराधिकारी नियुक्त नहीं किया गया है और न ही कोई ऐसी नीति है जिसके तहत संप्रदाय का संचालन जारी रह सके। लेकिन आपके उद्देश्य के संबंध में, उनके विचार पूरी तरह एकमत हैं। हमारे पास यही ठोस जानकारी है।
मैं वास्तव में दयालु नहीं हूँ।
"यहां महत्वपूर्ण चीजें उनका गुरुत्वाकर्षण और सटीकता हैं। तापमान उनके बाद आता है।"
"वैसे भी," आओमामे ने कहा, "अगर मैं पकड़ी गई और सब कुछ सामने आ गया, तो तुम्हें भी भुगतना पड़ेगा।"
और इसीलिए मैं आपसे जल्द से जल्द ऐसी जगह पर मिलना चाहता हूं जहां वे आपको ढूंढ न सकें।
मुझे पता है। लेकिन कृपया थोड़ी देर और प्रतीक्षा करें।

उन्होंने कहा कि हम साल के अंत तक इंतजार कर सकते हैं। इसलिए, जाहिर है, मैं भी इंतजार कर रहा हूं।
- धन्यवाद।
आपको मुझे धन्यवाद देने की आवश्यकता नहीं है।
"खैर," आओमामे ने कहा, "आने वाली आपूर्ति सूची में कुछ और जोड़ना है। मेरे लिए इस बारे में किसी पुरुष से बात करना थोड़ा मुश्किल है, लेकिन..."
"मैं पत्थर की दीवार की तरह हूं," तामारू ने जवाब दिया। "साथ ही, मैं एक कट्टर समलैंगिक हूं।"
मुझे गर्भावस्था परीक्षण करवाना है।
सन्नाटा छा गया। अंत में, तामारू ने कहा:
क्या आप इस तरह के परीक्षण को आवश्यक समझते हैं?
यह कोई सवाल नहीं था, इसलिए आओमामे ने जवाब नहीं दिया।
"क्या कोई ऐसी बात है जिससे आपको लगता है कि आप गर्भवती हैं?" तामारू ने पूछा।
- आवश्यक रूप से नहीं।
तामारू के दिमाग में कुछ तेज़ी से घूम रहा था। अगर वह ध्यान से सुनता, तो उसे वह आवाज़ सुनाई देती।
"यह सोचना ठीक है कि आप गर्भवती हैं, लेकिन आपको एक परीक्षण कराने की आवश्यकता है।"
- हाँ।
— यह तो मुझे पहेली जैसा लग रहा है।
मुझे खेद है, लेकिन मैं अभी आपको इससे अधिक जानकारी नहीं दे सकती। एक साधारण परीक्षण, जैसा कि आपको किसी भी फार्मेसी में मिल जाएगा, पर्याप्त होगा। और मुझे महिला शरीर रचना और शरीर क्रिया विज्ञान पर एक किताब की आवश्यकता है।
तामारू फिर चुप हो गया। चारों ओर घना सन्नाटा छा गया।
उन्होंने कहा, "मुझे लगता है कि मुझे फोन करके जवाब देना चाहिए। क्या यह ठीक रहेगा?"
- ज़रूर।
तामारू ने गले से एक अस्पष्ट सी आवाज निकाली और फोन काट दिया।
*

पंद्रह मिनट बाद, फोन फिर बजा। उसने अज़ाबू की महिला की आवाज़ बहुत समय से नहीं सुनी थी। उसे ऐसा लगा जैसे वह वापस ग्रीनहाउस में आ गया हो, उस गर्म जगह में जहाँ अनोखी तितलियाँ उड़ती थीं और समय धीरे-धीरे बीतता था।
— क्या आप ठीक हैं, स्वस्थ हैं?
ओमामे ने जवाब दिया कि वह एक नियमित जीवनशैली अपनाती है। चूंकि महिला जानना चाहती थी, इसलिए उसने उससे उसकी दैनिक दिनचर्या, व्यायाम के तरीके और खान-पान के बारे में विस्तार से बात की।
"मैं जानती हूँ कि घर से बाहर न निकलना आपके लिए मुश्किल है, लेकिन आपमें दृढ़ इच्छाशक्ति है, इसलिए मुझे चिंता नहीं है," महिला ने कहा। "आप सब कुछ ठीक से संभाल लेंगे। मैं चाहती हूँ कि आप जितनी जल्दी हो सके वहाँ से निकलकर किसी सुरक्षित स्थान पर चले जाएँ, लेकिन अगर आपको रुकना ही पड़े, तो मैं आपकी इच्छा का यथासंभव सम्मान करूँगी, भले ही मुझे आपके कारण न पता हों।"
- मैं तो चरण कमल पर वारी।

"नहीं, मैं आभारी हूं। आपने बहुत अच्छा काम किया।"
कुछ क्षणों की खामोशी छा गई, फिर महिला ने बोलना जारी रखा:
आपने कहा था कि आपको गर्भावस्था परीक्षण की आवश्यकता है।
मेरा मासिक धर्म तीन सप्ताह से विलंबित है।
क्या आपके साथ भी ऐसा ही होता है?
"यह तब शुरू हुआ जब मैं दस साल का था, और तब से यह हर उनतीस दिन में आता है, एक दिन भी आगे या पीछे नहीं। घड़ी की तरह समय का पाबंद, बिल्कुल चंद्रमा के चरणों की तरह। यह कभी देर नहीं हुआ।"
आपकी वर्तमान स्थिति बिल्कुल भी सामान्य नहीं है। ऐसे समय में मानसिक और शारीरिक असंतुलन उत्पन्न होते हैं। यह संभव है कि यह चक्र विलंबित हो जाए या बुरी तरह बाधित हो जाए।
— मेरे साथ तो ऐसा कभी नहीं हुआ, लेकिन मैं इसकी संभावना को स्वीकार करता हूं।
और तामारू की बातों से तो ऐसा कोई कारण नहीं है जिससे यह माना जा सके कि आप गर्भवती हो सकती हैं।
"मैंने आखिरी बार किसी पुरुष के साथ जून के मध्य में यौन संबंध बनाए थे। उसके बाद से कुछ नहीं हुआ है।"
"और फिर भी आपको लगता है कि आप गर्भवती हो सकती हैं। क्या आप इसे किसी खास वजह से मान रही हैं? सिर्फ इसलिए नहीं कि आपका मासिक धर्म देर से आया है।"
मुझे बस ऐसा महसूस होता है।
"आप उसे महसूस करते हैं?"
मुझे ऐसा महसूस हो रहा है।
— क्या आप गर्भवती हैं?
ओमामे ने सिर हिलाया।
"एक समय आप अंडों के बारे में बात कर रहे थे। जिस रात हम त्सुबासा को देखने गए थे। आपने कहा था कि महिलाएं पहले से तय संख्या में अंडों के साथ पैदा होती हैं।"
"मुझे याद है। एक महिला अपने गर्भ में लगभग चार सौ अंडे रखती है, जिन्हें वह हर महीने एक-एक करके छोड़ती है। हां, मैं यही कह रहा था।"
"मुझे पक्का यकीन है कि इन अंडों में से एक निषेचित हो गया है। मुझे नहीं पता कि 'महसूस होना' सही शब्द है या नहीं।"
उस महिला ने कुछ क्षण तक अपने शब्दों पर विचार किया।
"मेरे दो बच्चे हैं, और मैं समझ सकती हूँ कि आप कैसा महसूस कर रही हैं। लेकिन इसका मतलब है कि इतने समय में किसी पुरुष के साथ यौन संबंध बनाए बिना ही आप गर्भवती हो गईं। इस बात पर विश्वास करना थोड़ा मुश्किल होगा।"
मुझे भी इस पर विश्वास करना मुश्किल लगता है।
— ऐसा सवाल पूछने के लिए क्षमा करें, लेकिन क्या यह संभव है कि आप बेहोशी की हालत में यौन संबंध बना रहे हों?
नहीं। मेरा दिमाग हमेशा से ही स्पष्ट रहा है।
उस महिला ने अपने शब्दों का चुनाव बहुत सावधानी से किया।
मैंने आपको शुरू से ही एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा है जिसके निर्णय तर्कसंगत और स्पष्ट होते हैं।

"मैं ऐसा ही बनना चाहती हूँ," आओमामे ने जवाब दिया।
हालांकि, आपका दावा है कि आप बिना यौन संबंध बनाए ही गर्भवती हो गईं।
"अधिक सटीक रूप से, मेरा मानना है कि यह संभावना मौजूद है। बेशक, इस संभावना के अस्तित्व में होने का विचार ही अतार्किक है।"
"समझ गया। फिलहाल, नतीजों का इंतजार करते हैं। आपको कल प्रेगनेंसी टेस्ट किट मिल जाएगी। यह तय समय पर, सभी जरूरी सामान के साथ आ जाएगी। मैं कई तरह की किट तैयार रखूंगी, ताकि कोई चिंता न हो।"
- धन्यवाद।
"मान लीजिए कि आप गर्भवती हो गईं, तो आपके विचार से यह कब हुआ?"
— उस तूफानी शाम जब मैं ओकुरा होटल में था।
महिला ने एक छोटी सी आह भरी।
क्या आप उस क्षण को इतनी सटीकता से पहचान सकते हैं?
— जी हाँ। संयोगवश वही मेरा सबसे उपजाऊ दिन था।
और इसका मतलब यह होगा कि आप दो महीने में होंगे।
- हाँ।
"क्या आपको मॉर्निंग सिकनेस है?" आमतौर पर, यही सबसे मुश्किल समय होता है।
"नहीं, बिलकुल नहीं। मुझे समझ नहीं आता क्यों।"
उस महिला ने फिर से बिना जल्दबाजी किए, सोच-समझकर अपने शब्दों का चयन किया।
— अगर टेस्ट से पुष्टि हो जाती है कि आप गर्भवती हैं, तो आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी?
सबसे पहले तो मैं यह पूछूंगा कि बच्चे का जैविक पिता कौन है। मेरे लिए यह बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा होगा।
और आपको इस बात का कोई अंदाजा नहीं है कि वह कौन हो सकता है।
— मेरे पास अभी तक यह नहीं है।
"मैं समझ गई," महिला ने शांत स्वर में कहा। "वैसे भी, चाहे कुछ भी हो जाए, मैं हमेशा आपके साथ हूँ। मैं आपकी रक्षा के लिए अपनी पूरी कोशिश करूंगी। कृपया इसे मत भूलना।"
मुझे खेद है कि मैं इस समय आपको इस बारे में परेशान कर रहा हूँ।
"कोई बात नहीं। यह हर महिला के लिए बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा है। पहले हम जांच का नतीजा देख लेते हैं और फिर मिलकर सोचेंगे कि आगे क्या करना है," उस महिला ने कहा।
यह बातचीत यहीं समाप्त होती है।
*

दरवाजे पर दस्तक हुई। आओमामे बेडरूम के फर्श पर योगाभ्यास कर रही थी, लेकिन वह रुक गई और कान खड़े कर लिए। तेज़ और लगातार दस्तक जानी-पहचानी सी लग रही थी।
ओमामे ने अलमारी के दराज से बंदूक निकाली और उसका ढक्कन हटाया। उसने कारतूस का खोल खींचा और कारतूस झट से कमरे में फैल गया। उसने बंदूक को अपनी ट्रैक पैंट के पीछे छिपा लिया और चुपके से रसोई में चली गई। उसने धातु के सॉफ्टबॉल बैट को दोनों हाथों से पकड़ा और दरवाजे की ओर देखने लगी।

"ताकाई-सान!" एक भारी, कर्कश पुरुष आवाज ने पुकारा। "ताकाई-सान, क्या आप घर पर हैं? मैं एनएचके से आया हूँ और आपसे मिलना चाहता हूँ। मैं रेडियो-टीवी का शुल्क देने आया हूँ।"
बल्ले के हैंडल को फिसलने से बचाने के लिए उस पर प्लास्टिक टेप लपेटा गया था। "क्या आप मुझे सुन सकते हैं, तकाई-सान? मैं फिर से दोहराता हूँ, मुझे पता है कि आप अंदर हैं। आइए, लुका-छिपी खेलना बंद कीजिए! आप घर पर हैं और आप मुझे सुन सकते हैं।"
वह व्यक्ति अपने बोले हुए शब्दों को लगभग हूबहू दोहरा रहा था। ऐसा लग रहा था मानो उसने कोई रिकॉर्ड बना लिया हो।
मैंने तुमसे कहा था कि मैं वापस आऊंगा, तुमने क्या सोचा था, क्या यह सिर्फ एक धमकी थी? नहीं, नहीं, तुम्हें पता होना चाहिए कि मैं अपना वादा निभाता हूं। और जो पैसा मुझे वसूलना होता है, मैं वसूल लेता हूं। ताकाई-सान, तुम अंदर हो और मेरी बातें सुन रहे हो। और तुम सोच रहे हो: मैं कोई कदम नहीं उठाऊंगा, क्योंकि अंत में वह हार मानकर चला जाएगा।
फिर ज़ोर-ज़ोर से कई बार दरवाज़े खटखटाए गए। लगभग बीस-तीस बार। लेकिन इस आदमी के हाथ कैसे हैं? आओमामे सोचने लगी। और यह घंटी क्यों नहीं बजाता?
"और तुम अब भी यही सोच रहे हो," कैशियर ने मानो तुम्हारे मन की बात पढ़ ली हो, कहा। "इस आदमी के हाथ कितने मजबूत हैं! क्या बार-बार खटखटाने से उसके हाथों में दर्द नहीं होता?" और तुम अब भी यही सोच रहे हो: यह क्यों खटखटा रहा है? यहाँ घंटी है, फिर भी क्यों नहीं बज रही?"
अनायास ही, आओमामे ने गहरी भौंहें चढ़ा लीं।
"नहीं, मैं कोई घंटी नहीं बजाना चाहता," कैशियर ने आगे कहा। आप बटन दबाते हैं और बस एक हल्की सी आवाज़ आती है। यह बिल्कुल हानिरहित आवाज़ है, चाहे कोई भी बटन दबाए, आवाज़ एक जैसी ही रहती है। लेकिन खटखटाने की अपनी एक अलग ही खासियत है। यह एक आदमी द्वारा अपने शरीर के किसी हिस्से से किसी वस्तु पर प्रहार करने से उत्पन्न होती है, और फिर आपको लगता है कि वह वस्तु जीवंत हो उठी है। बेशक मेरा हाथ भी दुखता है, मैं पत्थर का तो नहीं बना हूँ। लेकिन मेरे पास कोई विकल्प नहीं है। यही मेरा काम है। और हर काम का सम्मान होना चाहिए, चाहे पद कुछ भी हो। है ना, तकाई-सान?"
फिर से पिटाई शुरू हो गई। कुल मिलाकर सत्ताईस जोरदार कोड़े, नियमित अंतराल पर। धातु के डंडे पर जकड़ी उसकी हथेली पसीने से तर थी।
"ताकाई-सान, कानून कहता है कि एनएचके प्रसारण देखने वालों को शुल्क देना ही होगा। आपके पास कोई विकल्प नहीं है। यह दुनिया का नियम है। प्लीज़, थोड़ी दया दिखाइए और शुल्क चुका दीजिए! मुझे आपके दरवाजे पर दस्तक देना अच्छा नहीं लगता, और आप भी हमेशा के लिए इस झंझट को सहना नहीं चाहेंगे। यकीनन आपको भी यह सब झेलना अच्छा नहीं लगता होगा। तो फिर, शुल्क चुका दीजिए और अपनी मानसिक शांति वापस पा लीजिए!"
गलियारे में उस आदमी की आवाज़ गूंज उठी। आओमामे ने सोचा, इस आदमी को अपनी बातें सुनना बहुत पसंद है। इसे कर न चुकाने वालों का मज़ाक उड़ाना, उन्हें चिढ़ाना और उनकी धज्जियां उड़ाना अच्छा लगता है। इसमें एक अजीब तरह का विकृत आनंद छिपा है।

"ताकाई-सान, आप भी बड़े जिद्दी हैं। मैं आपसे बहुत प्रभावित हूँ। आप एकदम शांत रहते हैं, जैसे समुद्र की गहराई में पड़ा कोई शंख। लेकिन मुझे पता है कि आप अंदर हैं। आप दरवाजे के बाहर खड़े होकर मुझे घूर रहे हैं। तनाव के मारे आपके बगल से पसीना टपक रहा है। क्या मैं सही हूँ या गलत?"
तेरह बार दस्तक हुई, फिर सन्नाटा छा गया। आओमामे ने देखा कि उसकी बगल में पसीना आ रहा था।
ठीक है। आज के लिए बस इतना ही। लेकिन जान लीजिए कि मैं जल्द ही वापस आऊंगा। मुझे लगता है कि मुझे यह दरवाजा पसंद आने लगा है। कई तरह के दरवाजे होते हैं, लेकिन यह दरवाजा बिल्कुल भी बुरा नहीं है। मुझे इसे हाथ में पकड़ने का एहसास अच्छा लगता है। मैं तो यह भी कहूंगा कि अगर मैं अब से नियमित रूप से आकर इस पर दस्तक न दूं तो मुझे चैन नहीं मिलेगा। अलविदा, तकाई-सान, और जल्द ही मिलते हैं! इन शब्दों के बाद सन्नाटा छा गया। ऐसा लगा जैसे कलेक्टर चला गया हो। लेकिन उसके कदमों की आहट सुनाई नहीं दी। शायद उसने जाने का नाटक किया हो और वास्तव में दरवाजे के सामने ही खड़ा रहा हो। आओमामे ने बल्ले पर अपनी पकड़ मजबूत की और लगभग दो मिनट तक इंतजार किया।
"मैं अभी भी यहीं हूँ!" कैशियर की आवाज़ सुनाई दी। हा हा हा, आपको लगा था कि मैं चला गया हूँ, है ना? और जब मैं यहाँ था, तब भी मैं यहीं था। मैंने आपसे झूठ बोला, मुझे माफ़ करना, तकाई-सान। लेकिन मैं ऐसा ही हूँ।"
उस आदमी ने खांसा। ऐसा लगा जैसे वह जबरदस्ती खांस रहा हो।
"मैं यह काम बहुत लंबे समय से कर रहा हूँ। और इसी तरह मैं लोगों को दरवाजे के पीछे से देखता आया हूँ। यह बिल्कुल झूठ नहीं है। लोग दरवाजे के पीछे छिपकर टैक्स देने से बचते हैं। मैं दशकों से ऐसे लोगों से निपट रहा हूँ। और आप जानते हैं, तकाई-सान?"
तीन बार खटखटाने की आवाज़ सुनाई दी, जो पहले से कहीं ज़्यादा तेज़ थी।
— जानते हो क्या? तुम बड़ी कुशलता से छिपे हो, जैसे कोई मछली समुद्र की तलहटी में रेत में छिपती है। इसे छलावरण कहते हैं। लेकिन तुम बच नहीं सकते। कोई न कोई आएगा और यह दरवाजा खोल देगा। मैं सच कह रहा हूँ। एनएचके का एक अनुभवी कैशियर इसकी गारंटी देता है। चाहे तुम कितनी भी कुशलता से छिप जाओ, छलावरण सिर्फ एक चाल है। इससे कुछ हल नहीं होता। सच में, तकाई-सान। बस, अब मैं जा रहा हूँ। घबराओ मत, इस बार झूठ नहीं है। मैं सचमुच जा रहा हूँ। लेकिन जान लो कि मैं जल्द ही वापस आऊँगा। अगर तुम्हें दरवाजे पर किसी की दस्तक सुनाई दे, तो समझ लेना कि मैं ही हूँ। शुभकामनाएँ!
कोई आहट नहीं सुनाई दी। आओमामे ने पाँच मिनट इंतज़ार किया, फिर पास जाकर ध्यान से सुना। उसने झाँककर देखा, लेकिन गलियारे में कोई नहीं था। ऐसा लग रहा था कि कैशियर जा चुका है।
ओमामे ने धातु के बल्ले को रसोई के काउंटर पर टिका दिया। उसने कारतूस को चैंबर से निकाला, ढक्कन वापस लगाया, उसे मोटी पैंट में लपेटा और दराज में वापस रख दिया। फिर वह सोफे पर लेट गई और अपनी आँखें बंद कर लीं। उस आदमी की आवाज़ अभी भी उसके कानों में गूँज रही थी।
लेकिन बचने का कोई रास्ता नहीं है। कोई न कोई आएगा और इस दरवाजे को खोलेगा ही।
मैं सच कह रहा हूँ।

कम से कम वो आदमी पायनियर्स में से तो नहीं था। वे बहुत चुपचाप काम करते थे और सबसे छोटा रास्ता अपनाते थे। वे इमारत के गलियारे में ज़ोर से नहीं चिल्लाते थे, न ही चक्कर लगाते थे और न ही अपने दुश्मन को सतर्क करते थे। उनका तरीका ऐसा नहीं था। आओमामे को चेलियोस और प्लेटोस की याद आ गई। वे चुपके से, बिना कोई आवाज़ किए, पास आते थे। आपको पता भी नहीं चलता था कि आप उनके पीछे पहुँच गए हैं।
ओमामे ने अपना सिर हिलाया और धीरे से सांस ली।
शायद वह एनएचके का कैशियर था। लेकिन यह अजीब था कि उसने उस स्टिकर पर ध्यान नहीं दिया जिससे साबित होता था कि फीस उसके बैंक खाते से अपने आप कट गई थी। आओमामे ने खुद को यकीन दिला दिया था कि वह दरवाजे के फ्रेम पर चिपका हुआ था। या शायद वह किसी तरह का पागल था। फिर भी, उसकी बातें अजीब तरह से सच्ची लग रही थीं। यह आदमी सचमुच दरवाजे के पीछे मेरी मौजूदगी महसूस कर सकता है, उसने सोचा। उसने मेरे राज़ सूंघ लिए हैं, या कम से कम उनमें से कुछ। लेकिन वह खुद दरवाजा खोलकर अंदर नहीं आ सकता। दरवाजा अंदर से ही खुलना चाहिए। और मेरा ऐसा करने का कोई इरादा नहीं है, चाहे कुछ भी हो जाए।
नहीं, मुझे पता नहीं है। शायद एक दिन मैं इसे खोलूँगी। अगर टेंगो फिर से पार्क में आ गया, तो मैं बिना सोचे समझे इसे दीवार पर फेंक दूँगी और उसकी तरफ दौड़ पड़ूँगी। चाहे वहाँ मेरा कुछ भी इंतज़ार कर रहा हो।
*

ओमामे बालकनी की कुर्सी पर बैठ गई और हमेशा की तरह अपारदर्शी टाइलों के बीच बने छोटे से पार्क को देखने लगी। एल्म के पेड़ के नीचे बेंच पर वर्दी पहने हाई स्कूल के दो छात्र गंभीर चेहरों के साथ बातें कर रहे थे। दो युवा माताएँ अपने बच्चों को देख रही थीं, जो किंडरगार्टन जाने के लिए बहुत छोटे थे और रेत के गड्ढे में खेल रहे थे। वे खड़ी होकर गरमागरम बातें कर रही थीं, लेकिन अपनी नज़रें बच्चों से नहीं हटा रही थीं। पार्क का दोपहर का नज़ारा, जैसा कि आप कहीं भी देख सकते हैं। ओमामे काफी देर तक सुनसान स्लाइड के ऊपरी हिस्से पर टकटकी लगाए देखती रही।
फिर उसने अपना हाथ अपने पेट पर रखा। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, कान लगाकर सुनने की कोशिश की और किसी आवाज़ को पहचानने का प्रयास किया। वहाँ कुछ तो था, इसमें कोई शक नहीं था। वह कोई छोटी सी, सजीव चीज़ थी। वह जानता था।
"फिलिया," उसने फुसफुसाते हुए कहा।
माँ, उसे जवाब मिला।

अध्याय 9 जब तक निकास अवरुद्ध न हो जाए

चारों ने खाना खाया, फिर एक बार में गए और व्हिस्की की एक बोतल पीते हुए कराओके गाया। उनकी अंतरंग लेकिन जीवंत पार्टी रात दस बजे से कुछ पहले समाप्त हुई। वे बार से निकले और टेंगो युवा अदाची को घर तक छोड़ने गया। उसे रेलवे स्टेशन ले जाने वाली बस पास ही रुकी, और बाकी दो नर्सों ने बेपरवाही से उसे बस में बैठने के लिए प्रोत्साहित किया। वे दोनों लगभग पंद्रह मिनट तक सुनसान सड़क पर चलते रहे।
"टेंगो, टेंगो, टेंगो," अदाची ने गीत गुनगुनाते हुए कहा। "यह एक अच्छा नाम है। इसका उच्चारण आसान है।"
अदाची ने काफी शराब पी रखी थी, लेकिन उसके चेहरे को देखकर यह बताना मुश्किल था कि वह कितनी नशे में थी, क्योंकि उसके गाल पहले से ही लाल थे। वह साफ-साफ बोल रही थी और बिना हिचकिचाए चल रही थी। वह बिल्कुल भी नशे में नहीं लग रही थी। वैसे, नशे में धुत होने के कई तरीके होते हैं।
"मुझे हमेशा लगता था कि मेरा नाम असामान्य है," टेंगो ने कहा।
"यह बिलकुल भी असामान्य नहीं है। टेंगो। यह सुनने में अच्छा लगता है और याद रखने में आसान है। यह एक शानदार नाम है।"
"वैसे, मुझे अभी भी तुम्हारा नाम नहीं पता। सब तुम्हें कू कहकर बुलाते हैं।" "यह तो उपनाम है। मेरा असली नाम कुमी अदाची है। यह कोई बहुत अच्छा नाम नहीं है।"
"कुमी अदाची," तेंगो ने दोहराया। "बिल्कुल भी बुरा नहीं है। यह सरल और संक्षिप्त है।"
"धन्यवाद," कुमी ने कहा। "तुम मुझे होंडा सिविक जैसी फीलिंग देते हो।"
लेकिन मैंने यह बात अच्छे अर्थ में कही थी।
"मुझे पता है। और ईंधन की खपत भी अच्छी है," उसने कहा और फिर टेंगो का हाथ पकड़ लिया। "क्या मैं आपका हाथ पकड़ सकती हूँ? इस तरह साथ चलना ज़्यादा सुखद है और इससे मुझे सुकून मिलता है।"
"बिल्कुल," टेंगो ने कहा।
उसके हाथ के स्पर्श ने उसे सुनसान कक्षा में आओमामे के साथ हुई घटना की याद दिला दी। अनुभूति अलग थी, लेकिन फिर भी उनमें कुछ समानता थी।
"मैंने थोड़ी शराब पी ली थी," कुमी ने कहा।
- गंभीरता से?
- गंभीरता से।
टेंगो ने एक बार फिर नर्स के चेहरे की ओर देखा।
— तुम नशे में नहीं लग रहे हो।
"आप बता नहीं सकते, ये तो बस मैं ही हूँ। लेकिन मुझे लगता है कि मैंने थोड़ी शराब पी ली थी।"
सच तो यह है कि आपने काफी शराब पी ली है।
"हाँ, बिल्कुल सही। मैंने इतने लंबे समय से इतनी शराब नहीं पी थी।"
"हमें समय-समय पर इस चीज की जरूरत पड़ती है," टेंगो ने तामुरा के शब्दों को हूबहू दोहराया।

"बिल्कुल," कुमी ने सिर हिलाते हुए कहा। लोगों को कभी-कभी इसकी ज़रूरत होती है। अच्छा खाना और पेट भरना, पीना, ज़ोर से गाना, बेतुकी बातें करना। तेंगो, क्या तुम भी यही करते हो? क्या तुम अपने दिमाग से सब कुछ निकाल देते हो? तुम तो बहुत ही संयमित और शांतिपूर्ण जीवन जीते हुए लगते हो।
टेंगो ने उसकी कही बातों पर गौर किया। क्या उसने वाकई हाल ही में आराम किया था? उसे याद नहीं आ रहा था, जिसका मतलब था कि शायद उसने आराम नहीं किया था। ऐसा लग रहा था मानो वह अपने दिमाग से सारी समस्याओं को दूर करने का विचार ही भूल गया हो।
"मुझे ऐसा नहीं लगता," उन्होंने स्वीकार किया।
— लोग और लोग।
— हर किसी की अपनी-अपनी सोच और भावनाएँ होती हैं।
"जैसे हर किसी का नशा करने का अपना तरीका होता है," नर्स हंसते हुए बोली।
"लेकिन टेंगो, तुम्हें कुछ इसी तरह की चीज़ की ज़रूरत है।"
— सब कुछ संभव है।
कुछ देर तक वे चुपचाप रात के अंधेरे में चलते रहे। टेंगो को उसकी आवाज़ में आए बदलाव से थोड़ी चिंता हुई। जब वह गाउन में थी, तब तो वह काफी विनम्रता से बोल रही थी। लेकिन अब, नशे में और अस्पताल के कपड़ों से बाहर, वह अचानक बहुत अधिक सीधी हो गई थी। उसकी बेबाक आवाज़ ने टेंगो को किसी की याद दिला दी। कोई ऐसा जो उसी तरह बोलता था, कोई ऐसा जिससे वह कुछ समय पहले ही मिला था।
— सुनो, टेंगो, क्या तुमने कभी हशीश पी है?
— हैश-हैश?
हशीश, भांग का राल।
टेंगो ने रात की तेज हवा में सांस ली और एक गहरी सांस ली।
- नहीं, कभी नहीं।
"क्या कहते हो, इसे आजमाना चाहोगे?" कुमी ने पूछा। "चलो सिगरेट पीते हैं, मेरे पास घर पर है।"
क्या आपके घर में हशीश है?
"जी हां। आपने ऐसा सोचा भी नहीं होगा, है ना?"
"बिल्कुल नहीं," टेंगो ने अनिश्चित स्वर में उत्तर दिया।
एक छोटे से समुद्रतटीय कस्बे में, गुलाबी गालों वाली एक युवा, स्वस्थ नर्स बोसो अपने अपार्टमेंट में भांग छिपा रही थी। और उसने उसे अपने साथ धूम्रपान करने के लिए आमंत्रित किया।
“लेकिन तुम्हें ऐसी चीज़ कहाँ से मिली?” उसने पूछा।
"हाई स्कूल की एक दोस्त ने पिछले महीने मेरे जन्मदिन पर मुझे यह तोहफा दिया था। वह भारत गई थी और वहां से इसे लेकर आई थी," कुमी ने उसका हाथ थोड़ा और कसकर पकड़ते हुए कहा।
अगर कोई आपको अवैध रूप से देश में हशीश लाते हुए पकड़ लेता है, तो यह बहुत गंभीर मामला है। पुलिस इस मामले में सख्त है और हवाई अड्डों पर उनके पास ऐसे कुत्ते होते हैं जो तुरंत इसका पता लगा लेते हैं।
"वो हर बात पर ध्यान देने वाली लड़की नहीं है," कुमी ने जवाब दिया। लेकिन फिर भी वो उसके साथ शामिल हो गई। चलो, इसे आज़माते हैं? ये बहुत शुद्ध है और इसका असर भी बहुत अच्छा है। तुम्हें पता है, मैंने इसके बारे में जानकारी जुटाई है

और चिकित्सकीय दृष्टि से देखा जाए तो इसमें लगभग कोई खतरा नहीं है। बेशक इसकी लत लग सकती है, लेकिन तंबाकू, शराब या कोकीन के मुकाबले कुछ भी नहीं। अधिकारी दावा करते हैं कि इसकी लत लगती है और इसीलिए ये खतरनाक है, लेकिन ये बकवास है। अगर हम इस नज़रिए से देखें तो पचिनको कहीं ज़्यादा खतरनाक है। इससे अगले दिन तबीयत भी खराब नहीं होती और इससे आराम मिलता है।"
- तुमने कोशिश की?
"बिल्कुल। यह बहुत अच्छा है।"
"अच्छा," टेंगो ने कहा।
"कोशिश करोगे तो समझ जाओगे," कुमी ने हंसते हुए कहा। "क्या तुम्हें पता है कि महारानी विक्टोरिया को जब मासिक धर्म में दर्द होता था, तो वे दर्द निवारक दवा लेने के बजाय मारिजुआना पीती थीं? उनके निजी डॉक्टर ने उन्हें यही सलाह दी थी।"
"वास्तव में?"
"बिल्कुल गंभीरता से। मैंने इसे कहीं पढ़ा था।"
टेंगो ने पूछना शुरू किया कि उसने यह कहाँ पढ़ा था, लेकिन फिर अपना इरादा बदल दिया। वह महारानी विक्टोरिया के मासिक धर्म के कष्ट से पीड़ित होने की छवि पर ज्यादा देर तक विचार नहीं करना चाहता था।
"पिछले महीने आपकी उम्र कितनी थी, जब आप कहते हैं कि आपका जन्मदिन था?" टेंगो ने विषय बदल दिया।
"तेईस। मैं पहले से ही एक बड़ा आदमी हूँ।"
"बिल्कुल," टेंगो ने कहा।
वह इकत्तीस वर्ष का था, लेकिन उसे कभी इस बात का एहसास नहीं हुआ कि वह वयस्क हो चुका है। वह केवल इतना जानता था कि उसने इस दुनिया में तीन दशक बिताए हैं। "मेरी बड़ी बहन घर पर नहीं होगी, वह अपने बॉयफ्रेंड के घर रात बिताने जा रही है। इसलिए आपको परेशान करने की ज़रूरत नहीं है, मेरे घर आ जाइए। कल मेरी छुट्टी है, इसलिए हम जितनी देर चाहें रुक सकते हैं।"
टेंगो को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। वह उस युवती की ओर आकर्षित था, और जितना उसने देखा था, वह भी उसे पसंद करती थी। और अब वह उसे अपने घर बुला रही थी। टेंगो ने आकाश की ओर देखा, लेकिन वह घने, भूरे बादलों से ढका हुआ था, इसलिए चाँद दिखाई नहीं दे रहा था।
"जब मैंने अपने एक दोस्त के साथ धूम्रपान किया," कुमी ने कहा, "यह मेरा पहला अनुभव था। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं उड़ रहा हूँ। बहुत ऊँचा नहीं, लगभग दो या तीन इंच। लेकिन इतनी ऊँचाई तक उड़ना वाकई बहुत अच्छा लगा, एकदम सही था।"
— बस इतना कि गिरने पर आपको चोट न लगे।
हां, बस इतना ही काफी था कि मैं शांत रह सकूं। मुझे सुरक्षित महसूस हुआ। ऐसा लगा जैसे मैं हवा के एक कोकून में लिपटी हुई हूं। मैं बेटी थी, पूरी तरह से हवा के कोकून में लिपटी हुई, और कहीं बाहर मुझे मां की आकृति दिखाई दी। "पुत्रवत," टेंगो ने कहा, उसकी आवाज़ आश्चर्यजनक रूप से कठोर और धीमी थी। "माता?"
युवा नर्स ने गुनगुनाते हुए टेंगो का हाथ और कसकर पकड़ लिया। वे सुनसान सड़क पर चलने लगे। दोनों की लंबाई में काफी अंतर था, लेकिन कुमी को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। खाली सड़क पर कभी-कभार कोई कार गुजर जाती थी।

"माता और संतान। वे 'द क्राइसालिस ऑफ एयर' नामक पुस्तक में दिखाई देते हैं, क्या आप नहीं जानते?"
- मुझे पता है।
— क्या आपने इसे पढ़ा?
टेंगो ने चुपचाप सिर हिलाया।
— वाह! आपको समझाना आसान है। मुझे वो किताब बहुत पसंद आई। मैंने उसे इस गर्मी में खरीदा और तीन बार पढ़ा। मैं अक्सर कोई किताब तीन बार नहीं पढ़ता। और जब मैंने पहली बार हशीश पी, तो मुझे ऐसा लगा जैसे मैं हवा के एक कोकून के बीच में हूँ। ऐसा लगा जैसे मैं किसी चीज़ में लिपटा हुआ हूँ और जन्म लेने का इंतज़ार कर रहा हूँ, और माँ मेरी रक्षा कर रही है।
“क्या तुम माताजी से मिल रहे थे?” टेंगो ने पूछा।
हां, मैं उसे देख सकती थी। कोकून के अंदर से थोड़ा-बहुत बाहर का नजारा दिखता है, लेकिन बाहर से अंदर का नहीं। उसकी बनावट ही ऐसी है। बेशक, मैं उसका चेहरा साफ-साफ नहीं देख पा रही थी, बस एक धुंधली सी आकृति। लेकिन मुझे पता था कि वह मां है, मुझे यह बात साफ महसूस हो रही थी।
— इसलिए वायु प्यूपा एक प्रकार का गर्भ है।
"आप ऐसा कह सकते हैं। बेशक, मुझे अपनी मां के गर्भ से कुछ भी याद नहीं है, इसलिए मैं सटीक तुलना नहीं कर सकती," कुमी ने कहा और फिर हंस पड़ी।
*

वह एक जर्जर दो मंजिला इमारत में रहता था, जैसी कि अक्सर ग्रामीण कस्बों के बाहरी इलाकों में देखने को मिलती हैं। यह इमारत अपेक्षाकृत हाल ही में बनी थी, लेकिन समय बीतने के निशान अभी से दिखने लगे थे। बाहर की सीढ़ियाँ चरमराती थीं और दरवाज़ा ठीक से बंद नहीं होता था। जब सड़क पर कोई बड़ा ट्रक गुजरता था, तो खिड़कियाँ खड़खड़ाती थीं। दीवारें इतनी पतली थीं कि अगर कोई किसी अपार्टमेंट में बेस गिटार बजाता, तो उसकी आवाज़ पूरी इमारत में गूंजती थी। टेंगो को हशीश पीने का ख्याल कुछ खास पसंद नहीं आया। उसका दिमाग तो साफ था, लेकिन वो एक ऐसी दुनिया में जी रहा था जहाँ आसमान में दो चाँद थे। भला वास्तविकता को और क्यों बिगाड़ना? वैसे भी, उसे कुमी के लिए कोई यौन इच्छा नहीं थी। उसे तेईस साल की नर्स कुमी पसंद तो थी। लेकिन किसी को पसंद करना और किसी के प्रति यौन आकर्षण होना दो अलग-अलग बातें थीं। कम से कम टेंगो के मामले में तो यही था। अगर कुमी ने उससे माँ-बेटी के बारे में बात न की होती, तो वो कोई बहाना बनाकर उसका न्योता ठुकरा देता। वो बस पकड़ लेता, या अगर बसें न मिलतीं, तो टैक्सी बुलाकर सराय लौट जाता। आखिर वो बिल्लियों के शहर में था, और खतरनाक जगहों से जितना हो सके दूर रहना ही बेहतर था। लेकिन जब से उसने कुमी को माँ- बेटी कहते सुना था, तब से वो उसका न्योता ठुकरा नहीं सका। शायद कुमी उसे कोई संकेत दे रही थी कि छोटी बच्ची आओमामे उसके अस्पताल के कमरे में हवा के कोकून में क्यों प्रकट हुई थी।
अपार्टमेंट बिल्कुल वैसा ही दिख रहा था जैसा आप बीस साल की दो लड़कियों के अपार्टमेंट से उम्मीद करेंगे। इसमें दो छोटे बेडरूम थे, और डाइनिंग रूम और किचन एक ही कमरे में बने थे जो एक छोटे से लिविंग रूम में खुलता था। फर्नीचर बेतरतीब ढंग से रखा हुआ लग रहा था, जिसमें कोई खास अंदाज़ या एकरूपता नहीं थी। मेलामाइन की मेज पर एक दागदार नकली टिफ़नी लैंप रखा था जो साफ तौर पर वहाँ

बेमेल लग रहा था। अगर आप फूलों के पैटर्न वाले पर्दे हटाते, तो खिड़की के बाहर एक खेती किया हुआ खेत और उसके आगे एक घना जंगल दिखाई देता। नज़ारा दूर तक फैला हुआ था और कुछ भी आपकी दृष्टि को बाधित नहीं कर रहा था। हालाँकि, आपको ऐसा कुछ भी नहीं दिख रहा था जो आपके मन को सुकून दे सके।
कुमी ने तेंगो को सामने रखे टेलीविजन वाले चमकीले लाल सोफे पर बैठने का इशारा किया। फिर उसने फ्रिज से सैपोरो बियर का एक कैन निकाला और उसे गिलासों में डाला।
"एक मिनट रुकिए, मैं कुछ आरामदायक कपड़े पहन लेता हूँ। मैं अभी वापस आता हूँ।" लेकिन वह सचमुच पीछे नहीं मुड़ी। संकरे गलियारे के दूसरे छोर पर स्थित दरवाजे के पीछे से कभी-कभार कुछ आवाज़ें आ रही थीं। दराजें जो ठीक से सरक नहीं पा रही थीं, खुलती-बंद होती रहीं। कुछ गिरने की आवाज़। टेंगो खुद को रोक नहीं पाया और उस दिशा में देखने लगा। वह जितनी दिख रही थी उससे कहीं ज़्यादा नशे में थी। पतली दीवारों के पार से टीवी की आवाज़ सुनाई दे रही थी। यह ठीक से समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहा जा रहा है, लेकिन यह एक कॉमेडी कार्यक्रम था, क्योंकि हर दस-पंद्रह सेकंड में दर्शकों के हंसने की आवाज़ आ रही थी। टेंगो को अब नर्स के निमंत्रण को ठुकराने का पछतावा हो रहा था, लेकिन मन ही मन उसे लग रहा था कि वह इस स्थिति से बच नहीं सकता था और उसे यहाँ लाया गया था।
जिस सोफे पर वह बैठा था, वह सस्ता था और उसकी गद्दी छूने में खुरदरी थी। सोफे का आकार भी ठीक नहीं लग रहा था, क्योंकि चाहे वह कितना भी करवट बदल ले, टेंगो को आरामदेह स्थिति नहीं मिल पा रही थी, जिससे उसकी बेचैनी और बढ़ रही थी। उसने कुछ बीयर पी, फिर मेज से रिमोट कंट्रोल उठाया और उसे कुछ देर तक ऐसे देखता रहा जैसे उसने उसे पहले कभी न देखा हो। आखिरकार, उसने बटन दबाया और टेलीविजन चालू कर दिया। उसने कुछ बार चैनल बदले, जब तक कि वह एनएचके द्वारा निर्मित एक यात्रा वृत्तचित्र पर नहीं रुका, जिसमें ऑस्ट्रेलिया की रेलवे दिखाई जा रही थी। उसने चैनल इसलिए छोड़ा क्योंकि अन्य चैनलों की तुलना में यह कार्यक्रम सबसे कम शोर वाला था। ओबो की मधुर धुन के बीच, कमेंटेटर की शांत आवाज महाद्वीप को पार करने वाली आलीशान स्लीपिंग कारों का परिचय दे रही थी।
असुविधाजनक सोफे पर बैठे, स्क्रीन पर बिना रुचि दिखाए तस्वीरें देखते हुए, टेंगो 'द एयर क्राइसालिस' के बारे में सोच रहा था। कुमी को नहीं पता था कि उसने ये वाक्य बनाए हैं। लेकिन उसे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। समस्या यह थी कि उसने क्राइसालिस का विस्तार से वर्णन तो कर दिया था, लेकिन वास्तव में उसे इसके बारे में कुछ भी पता नहीं था। उपन्यास पर काम करते समय उसे यह नहीं पता था कि एयर क्राइसालिस क्या होता है, माता और संतान का क्या अर्थ होता है, और अब भी उसे इसका पता नहीं चला था।
लेकिन कुमी को वह किताब पसंद आई थी और उसने उसे तीन बार पढ़ा था। भला ऐसा कैसे हो सकता है?
जब कुमी वापस आई और उसके बगल में बैठ गई, तब टीवी पर डाइनिंग कार का मेन्यू चल रहा था। सोफ़ा संकरा था और उनके कंधे एक-दूसरे से छू रहे थे। लड़की ने लंबी आस्तीन वाली ब्लाउज़ और हल्के रंग की सूती पैंट पहन रखी थी। ब्लाउज़ पर एक बड़ा सा स्माइली चेहरा छपा हुआ था। तेंगो ने आखिरी बार यह निशान 1970 के दशक की शुरुआत में देखा था, लगभग उसी समय जब सभी ज्यूकबॉक्स अचानक ग्रैंड फंक

रेलरोड के शोरगुल भरे गानों से बजने लगे थे। हालांकि, ब्लाउज़ इतना पुराना नहीं लग रहा था। क्या आज भी कोई स्माइली चेहरे वाले कपड़े बनाता है?
कुमी ने फ्रिज से बीयर का एक और कैन निकाला, उसे ज़ोर से खोला और अपने गिलास में डाल लिया। उसने एक ही घूंट में लगभग एक तिहाई पी लिया और संतुष्ट बिल्ली की तरह अपनी आँखें बंद कर लीं। फिर उसने टेलीविजन की ओर इशारा किया। स्क्रीन पर, ट्रेन लाल रंग के पहाड़ों की कतारों के बीच से गुज़र रही थी, पटरियाँ मानो अनंत तक फैली हुई थीं, सीधी आगे।
"यह कहां है?"
— मैं ऑस्ट्रेलिया जा चुका हूँ।
"ऑस्ट्रेलिया?" कुमी ने अपनी यादों को खंगालने की कोशिश की। दक्षिणी गोलार्ध वाला?
— हाँ। जहाँ कंगारू हों।
"मेरा एक दोस्त वहाँ था," कुमी ने अपनी आँख के किनारे को खुजाते हुए कहा।
संयोग से वह कंगारुओं के प्रजनन के मौसम में था और एक शहर में हर जगह कंगारू थे जो मौज-मस्ती कर रहे थे। पार्क में, सड़क पर, बिना किसी परवाह के।
टेंगो को लगा कि उसे इस बारे में कुछ कहना चाहिए, पर उसके दिमाग में कुछ नहीं आया। उसने रिमोट कंट्रोल उठाया और टीवी बंद कर दिया। कमरा अचानक शांत हो गया। पड़ोसियों ने भी टीवी बंद कर दिया था, और गली में कभी-कभार कोई गाड़ी गुजर रही थी, लेकिन इसके अलावा रात एकदम शांत थी। अगर ध्यान से सुनते तो दूर से हल्की सी आवाज़ सुनाई देती। उसे पता नहीं था कि वह कैसी आवाज़ थी, लेकिन वह एक लयबद्ध दोहराव थी। कभी-कभी वह रुक जाती, फिर कुछ पल बाद दोबारा शुरू हो जाती। "यह एक उल्लू है। यह पास के एक छोटे से जंगल में रहता है और रात में चीखता है," लड़की ने कहा।
"उल्लू," टेंगो ने अनमने ढंग से दोहराया।
कुमी ने अपना सिर टेंगो के कंधे पर टिका दिया। बिना कुछ कहे, उसने उसका हाथ थाम लिया। उसके बाल टेंगो की गर्दन पर चुभ रहे थे। सोफा अभी भी आरामदायक नहीं था, उल्लू अभी भी जंगल में एक छिपे अर्थ के साथ पुकार रहा था। वह पुकार टेंगो को प्रोत्साहन जैसी लगी, लेकिन साथ ही एक चेतावनी जैसी भी। और एक प्रोत्साहन भरी चेतावनी जैसी। उसके कई अर्थ थे।
"क्या आपको लगता है कि मैं कुछ ज्यादा ही दबाव डाल रही हूँ?" कुमी ने पूछा। टेंगो ने कोई जवाब नहीं दिया।
- क्या आपका कोई बॉयफ्रेंड है?
"यह तो एक जटिल समस्या है," कुमी ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। "समझदार लड़के हाई स्कूल खत्म करने के बाद टोक्यो चले जाते हैं, क्योंकि यहाँ अच्छे स्कूल और अच्छी नौकरियाँ ज़्यादा नहीं हैं। आप इसके बारे में क्या कर सकते हैं, यही सच्चाई है।"
"लेकिन तुम यहीं रुके रहे।"
हां। मेरी आमदनी ज्यादा नहीं है और काम भी काफी मेहनत वाला है, लेकिन मुझे यहां रहना अच्छा लगता है। बस एक ही दिक्कत है कि मुझे दोस्त बनाने में मुश्किल होती है। जब भी मौका मिलता है, मैं लोगों से मिलने की कोशिश करती हूं, लेकिन मुझे कोई ऐसा दोस्त नहीं मिल पाता जो मेरे लिए सही हो।

दीवार पर लगी घड़ी में लगभग ग्यारह बज रहे थे। अगर ग्यारह बज चुके होते, तो टेंगो सराय में वापस नहीं जा सकता था, लेकिन वह उस असुविधाजनक सोफे से उठ भी नहीं पा रहा था। वह अपनी इच्छा अनुसार ताकत नहीं जुटा पा रहा था। शायद यह उसकी बैठने की गलत स्थिति के कारण था, या शायद वह जितना सोच रहा था उससे कहीं ज़्यादा नशे में था। कुमी के बाल उसकी गर्दन को चुभ रहे थे, लेकिन वह उल्लू की आवाज़ में खोया हुआ था और नकली टिफ़नी लैंप की रोशनी को देख रहा था।
*

एक खुशनुमा गीत गुनगुनाते हुए, कुमी ने हशीश तैयार की। उसने रेज़र से राल के काले टुकड़े को छीलकर एक छोटी, चपटी पाइप में भरा, जो खास इसी काम के लिए बनाई गई थी। गंभीर चेहरे के साथ उसने माचिस जलाई और पाइप को जलाया। शांत कमरे में एक अनोखी मिठास फैल गई। कुमी ने पहले धूम्रपान किया। उसने गहरी सांस ली, उसे काफी देर तक रोके रखा और फिर धीरे-धीरे बाहर निकाला। उसने इशारों से टेंगो को भी ऐसा ही करने का इशारा किया। उसने पाइप ली और टेंगो की नकल की। उसने धुएं को अपने फेफड़ों में यथासंभव देर तक रोके रखा, फिर धीरे-धीरे बाहर निकाला। उन्होंने एक-दूसरे को पाइप थपथपाए, मानो कोई भाव नहीं था। दोनों में से किसी ने कुछ नहीं कहा। पड़ोसियों ने फिर से टेलीविजन चालू किया, और कॉमेडी शो की हंसी दीवारों में गूंज उठी। यह पहले से थोड़ी तेज़ थी। स्टूडियो में बैठे दर्शक ज़ोर से हंस पड़े और विज्ञापन ब्रेक के दौरान ही चुप रहे।
लगभग पाँच मिनट तक सिगरेट पीने के बाद भी कुछ नहीं बदला। उसके आसपास की दुनिया में कोई बदलाव नहीं आया था। रंग, आकार और गंध सब पहले जैसे ही थे। जंगल में उल्लू बोल रहा था, कुमी के बाल उसकी गर्दन में चुभ रहे थे। सोफा अभी भी उतना ही असुविधाजनक था। समय उसी गति से बीत रहा था, और पड़ोसियों के टीवी पर लोग अभी भी चुटकुलों पर हंस रहे थे। उनकी आवाज़ से पता चलता था कि चाहे वे कितना भी हंस लें, उन्हें खुशी नहीं मिलेगी।
"कुछ नहीं हो रहा है," टेंगो ने कहा। "शायद यह मुझ पर काम नहीं करता।"
कुमी ने उसके घुटने पर हल्के से थपथपाया।
धैर्य रखें, इसमें थोड़ा समय लगेगा।
वह सही था। जल्द ही उसे इसका असर महसूस होने लगा। उसे एक ऐसी आवाज़ सुनाई दी जैसे किसी गुप्त स्विच को चालू कर दिया गया हो, और फिर उसके सिर के अंदर कुछ अजीब तरह से हिलने लगा, जैसे दलिया का कटोरा एक तरफ झुका दिया गया हो। मेरा दिमाग हिल रहा है, टेंगो ने सोचा। ऐसा पहली बार हुआ था जब उसने अपने दिमाग को एक ठोस पदार्थ के रूप में महसूस किया था और उसकी चिपचिपाहट को महसूस किया था। उल्लू की भारी चीखें उसके कानों में घुस गईं, दलिया के साथ मिल गईं और पूरी तरह उसमें घुल गईं।
"मेरे अंदर उल्लू बसा हुआ है," टेंगो ने कहा।
उल्लू टेंगो की चेतना का एक हिस्सा बन गया था, एक महत्वपूर्ण और अलग करना मुश्किल हिस्सा।
कुमी ने कहा, "उल्लू जंगल की रक्षक आत्माएं हैं, और चूंकि वे सब कुछ जानते हैं, इसलिए वे हमारे साथ रात के ज्ञान को साझा करते हैं।"
लेकिन ज्ञान की तलाश कैसे और कहाँ की जाए? उल्लू हर जगह था और कहीं नहीं था।
"मुझे नहीं पता कि उससे क्या पूछूं," टेंगो ने कहा।
कुमी ने उसका हाथ पकड़ लिया।

आपको उससे कुछ भी पूछने की जरूरत नहीं है। बस खुद जंगल में चले जाइए। इससे बहुत आसानी होगी।
बगल वाले अपार्टमेंट से टेलीविजन की आवाज़ फिर सुनाई दी। ज़ोरदार तालियाँ बज रही थीं। कैमरों से छिपा हुआ कोई स्टूडियो सहायक दर्शकों को "तालियाँ" या "हँसी" लिखे संकेत दिखा रहा था। टेंगो ने अपनी आँखें बंद कर लीं और जंगल के बारे में सोचने लगा। उसे जंगल में जाना था। लेकिन वह तो नन्हे लोगों का इलाका था। पर जंगल में उल्लू भी होते हैं। उल्लू बहुत कुछ जानते हैं और रात के ज्ञान को हमारे साथ साझा करते हैं।
अचानक सारी आवाज़ें शांत हो गईं। कोई पीछे से आया और उसके कानों में इयरप्लग ठूंस दिए। कहीं कोई ढक्कन बंद हुआ, लेकिन उसी समय कहीं और किसी ने दूसरा ढक्कन उठा दिया। प्रवेश और निकास द्वार अपनी जगह बदल चुके थे।
उसे एहसास हुआ कि वह कक्षा में है।
खिड़कियाँ खुली हुई थीं और आँगन से बच्चों की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। बीच-बीच में हवा का एक झोंका सफ़ेद पर्दों को फड़फड़ा देता था। उसके बगल में आओमामे उसका हाथ कसकर पकड़े बैठी थी। हमेशा की तरह, फिर भी कुछ अलग था। सब कुछ इतना साफ़ और जीवंत था कि वह उन्हें पहचान ही नहीं पा रहा था। चीज़ों की आकृतियाँ छोटी से छोटी बारीकी तक स्पष्ट दिखाई दे रही थीं। अगर वह हाथ बढ़ाता, तो उसे लगता कि वह उन्हें छू सकता है। शुरुआती सर्दियों की दोपहर की गंध उसकी नाक में घुस गई, मानो अब तक उसे ढके हुए कंबल को ज़बरदस्ती हटा दिया गया हो। यह असली गंध थी, जिससे वह मौसम को पहचानता था: तख़्ते पर स्पंज की गंध, फ़र्श धोने के लिए इस्तेमाल किए गए डिटर्जेंट की गंध, आँगन के एक कोने में भट्टी से जले हुए पत्तों की गंध, सब कुछ इस तरह मिला हुआ था कि अलग नहीं किया जा सकता था। उस सुगंध की गहरी साँस लेते हुए, उसने महसूस किया कि उसका दिल खुल रहा है। उसके पूरे शरीर की संरचना चुपचाप बदल रही थी। उसकी धड़कन अब सिर्फ़ एक धड़कन नहीं थी।
एक पल के लिए, समय का द्वार भीतर की ओर खुल गया। पुराना प्रकाश नए प्रकाश से मिल गया। पुरानी हवा नई हवा से मिल गई। यही प्रकाश है और यही हवा है, टेंगो ने सोचा। वह पूरी तरह संतुष्ट था। लगभग पूरी तरह। मुझे यह गंध पहले क्यों याद नहीं आई? यह कितनी सरल थी। यह कितनी प्राकृतिक दुनिया है!
“मैं तुमसे मिलना चाहता था,” टेंगो ने आओमामे से कहा। उसकी आवाज़ धीमी और झिझक भरी थी, लेकिन निश्चित रूप से वह उसी की आवाज़ थी।
"मैं भी तुमसे मिलना चाहती थी," लड़की ने जवाब दिया। उसकी आवाज़ कुमी जैसी लग रही थी। वास्तविकता और कल्पना के बीच की रेखा धुंधली हो गई थी। अगर वह उन्हें अलग करने की कोशिश करता, तो उसके दिमाग में दलिया का कटोरा फिर से हिल जाता और उसका मस्तिष्क बुरी तरह कांप उठता।
"मुझे बहुत पहले ही तुम्हारी तलाश शुरू कर देनी चाहिए थी," टेंगो ने कहा। "लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सका।"
"अभी देर नहीं हुई है। तुम मुझे ढूंढ सकते हो।"
- मैं यह कैसे करूं?
कोई जवाब नहीं। जवाब शब्दों में नहीं दिया गया।
"लेकिन मैं तुम्हें ढूंढ सकता हूँ," टेंगो ने कहा।
"मैंने तुम्हें ढूंढ लिया," लड़की ने जवाब दिया।

"तुम को मेरा पता चला?"
मुझे ढूंढो! अभी भी समय है!
पर्दा ऐसे लहराया, मानो कोई भूत इस दुनिया में बहुत देर तक मंडराता रहा हो। यही आखिरी चीज थी जो टेंगो ने देखी।
*

जब उसे होश आया, तो वह एक संकरे बिस्तर पर था। लैंप बंद था, लेकिन गली की लाइटें पर्दों से छनकर अंदर आ रही थीं। टेंगो ने टी-शर्ट और बॉक्सर शॉर्ट्स पहने हुए थे। कुमी ने सिर्फ स्माइली-फेस वाला ब्लाउज पहना था और पैंटी नहीं पहनी थी। उसके कोमल स्तन टेंगो की बांह पर टिके हुए थे। उल्लू की आवाज अभी भी उसके दिमाग में गूंज रही थी। वह छोटा सा जंगल अब उसके मन का हिस्सा बन चुका था।
युवा नर्स के साथ बिस्तर पर लेटे हुए भी, टेंगो को कामुक इच्छाएं नहीं हो रही थीं, और कुमी भी किसी बात के लिए उत्सुक नहीं लग रही थी। उसने अपनी बाहें उसके चारों ओर लपेट रखी थीं और खिलखिला रही थी। टेंगो को समझ नहीं आ रहा था कि उसे इतनी हंसी क्यों आ रही है। कहीं न कहीं, किसी ने तो "हंसी" का संकेत दिया होगा। समय क्या हुआ है? उसने सोचा। उसने देखने के लिए अपना सिर ऊपर उठाया, लेकिन वहाँ कोई घड़ी नहीं थी। कुमी अचानक हँसना बंद कर दिया और उसने अपनी बाहें उसके गले में डाल दीं।
"मैं जीवित हूँ," उसने भावुक होकर उसके कान में कहा।
"तुम जीवित हो," टेंगो ने कहा।
— क्योंकि मैं एक बार मर चुका हूँ।
"तुम एक बार मर चुके हो," टेंगो ने दोहराया।
“एक ठंडी, बरसात वाली रात में,” उसने कहा।
"तुम्हारी मृत्यु क्यों हुई?"
अब दोबारा जीवन में लौटना है।
— तुम जीवित हो।
"कमोबेश, अलग-अलग रूपों में," उसने फुसफुसाते हुए उससे कहा।
टेंगो ने उसकी कही बातों पर विचार किया। अलग-अलग रूपों में, कमोबेश, जीवन में वापस आने का क्या अर्थ था? उसका मस्तिष्क भारी और चिपचिपा था, आदिम सूप की तरह जीवन की कलियों से भरा हुआ। लेकिन वे उसे कहीं नहीं ले जा रही थीं।
— वायु परिपथ कहाँ से आता है?
"गलत सवाल!" कुमी ने कहा। हा हा!
वह उसके ऊपर लुढ़क गई। टेंगो को उसकी जांघों पर घने और खुरदुरे बाल महसूस हुए। ऐसा लग रहा था मानो वे उसके विचारों का हिस्सा हों।
“तुम्हें दोबारा जीवित होने के लिए क्या चाहिए?” टेंगो ने पूछा। "पुनरुत्थान होने की सबसे बड़ी समस्या यह है," उस युवती ने एक रहस्य बताते हुए कहा। "कि आप अपने लिए पुनर्जीवित नहीं हो सकते। आप केवल दूसरों के लिए पुनर्जीवित हो सकते हैं।"
— तो इसका मतलब है "कमोबेश, अलग-अलग रूपों में।"
"जब उजाला हो जाए, तो यहाँ से निकल जाना। इससे पहले कि निकास मार्ग अवरुद्ध हो जाए।"
"जब सुबह हो जाएगी, मैं यहां से चला जाऊंगा," टेंगो ने इन शब्दों को दोहराया।

लड़की ने अपने गुप्तांग के बालों को फिर से उसकी जांघ पर रगड़ा, मानो वह वहां एक निशान छोड़ना चाहती हो।
"हवा का प्यूपा कहीं से भी प्रकट नहीं होता। आप चाहे कितनी भी देर तक उसका इंतजार करें, वह प्रकट नहीं होगा।"
"क्या इसी तरह आपको पता चला?"
"क्योंकि मैं एक बार मर चुकी हूँ," उसने कहा। "मरना दर्दनाक होता है। जितना तुम सोच भी नहीं सकते, उससे कहीं ज़्यादा दर्दनाक। और तुम बहुत अकेले हो जाते हो। इतना अकेलापन कि तुम सोचते हो कि लोग इतने अकेले कैसे हो सकते हैं। यह याद रखना। तुम्हें पता है, टेंगो, जब तक तुम एक बार मर नहीं जाते, तब तक तुम दोबारा ज़िंदा नहीं हो सकते।"
"मृत्यु के बिना पुनरुत्थान नहीं है," टेंगो ने पुष्टि की।
लेकिन यह दुनिया मौत से घिरी हुई है।
"वह मौत से घिरी हुई जीती है," टेंगो ने शब्दों का अर्थ समझे बिना दोहराया। सफेद पर्दे हवा में लहरा रहे हैं। हवा में ब्लैकबोर्ड स्पंज और डिटर्जेंट की महक है। जले हुए पत्तों की गंध भी। कोई बांसुरी बजाने का अभ्यास कर रहा है। छोटी बच्ची उसका हाथ कसकर पकड़े हुए है। उसे अपने गुप्तांग में एक मीठी सी सुन्नता महसूस हो रही है, लेकिन उसे कोई उत्तेजना नहीं है। वह बहुत बाद में आएगी। "बाद में" शब्द उसे अनंत काल का वादा करता है। अनंत काल एक सीधी रेखा है जो अनंत तक चलती रहती है। दलिया का कटोरा फिर से झुकता है और उसका दिमाग कांप उठता है।
*

जब वह जागा, तो उसे तुरंत समझ नहीं आया कि वह कहाँ है। पिछली शाम की घटनाओं को याद करने में उसे कुछ समय लगा। बाहर पक्षी चहचहा रहे थे और सुबह की धूप फूलों वाले पर्दों से छनकर चमक रही थी। वह उस संकरे बिस्तर पर ठूंस-ठूंस कर सोया था, लेकिन गहरी नींद सो गया था। उसके बगल में एक महिला सो रही थी, उसका सिर तकिए पर था। उसके बाल उसके गालों को ताज़ी, ओस से भीगी घास की तरह ढके हुए थे। कुमी अदाची, तेंगो ने सोचा। एक नर्स जो अभी-अभी तेईस साल की हुई थी। बिस्तर के पास, उसे अपनी घड़ी ज़मीन पर पड़ी मिली। उसमें सात बजकर बीस मिनट हो रहे थे।
कुमी को जगाए बिना वह धीरे से बिस्तर से उठा और पर्दों के पीछे से खिड़की से बाहर देखा। बाहर काली मिट्टी पर कतारों में पत्तागोभी के खेत थे। पीछे छोटा सा बाग था। तेंगो को उल्लू की चीखें याद आईं। रात की समझदारी। जब वे उसकी चीखें सुन रहे थे, तेंगो और नर्स ने हशीश पी थी। उसे अब भी अपनी जांघों पर उसके खुरदुरे बाल महसूस हो रहे थे।
वह रसोई में गया और हाथों को कप की तरह बनाकर सिंक से पानी पिया। उसका गला इतना सूखा था कि ऐसा लग रहा था मानो कितना भी पानी पी ले, प्यास नहीं बुझेगी। लेकिन बाकी सब ठीक था। सिर में दर्द नहीं था और शरीर सुस्त नहीं था। दिमाग एकदम साफ़ था। बस उसे हल्कापन महसूस हो रहा था। जैसे कोई साफ़-सुथरा पाइपलाइन सिस्टम हो। टी-शर्ट और बॉक्सर पहने हुए ही वह शौचालय गया और खूब पेशाब किया। आईने में एक अनजान चेहरा उसे घूर रहा था। जगह-जगह बाल उगे हुए थे और अब दाढ़ी बनाने का समय आ गया था।
वह बेडरूम में वापस गया और अपने कपड़े समेटे, जो कुमी के कपड़ों के साथ फर्श पर बिखरे पड़े थे। उसे याद नहीं था कि उसने कपड़े कब उतारे थे। उसने अपने

मोज़े ढूंढे, जींस पहनी और कमीज़ पहनी। कपड़े समेटते समय उसका पैर एक बड़ी, सस्ती अंगूठी पर पड़ा। उसने उसे फर्श से उठाया और बेडसाइड टेबल पर रख दिया। उसने स्वेटर पहना और जैकेट उतारी। उसने यह सुनिश्चित किया कि उसकी चाबियां और बटुआ उसकी जेब में हैं। वह औरत गहरी नींद में सो रही थी, कंबल उसके कानों तक था। वह उसकी सांसें भी नहीं सुन पा रही थी। क्या उसे उसे जगाना चाहिए? उसे नहीं लगता था कि उन्होंने कुछ किया था, लेकिन वे रात भर एक ही बिस्तर पर सोए थे। बिना अलविदा कहे चले जाना थोड़ा असभ्य लगता, लेकिन वह बहुत गहरी नींद में सो रही थी और उसने उसे बताया था कि आज उसकी छुट्टी है। अगर वह उसे जगाता, तो वे दोनों क्या करते?
उसे फोन के पास कागज और कलम मिली। "कल रात के लिए धन्यवाद। बहुत अच्छा था। मैं वापस सराय में आ रहा हूँ। टेंगो।" उसने नोट के बगल में समय लिख लिया। उसने वह नोट बेडसाइड टेबल पर, उस अंगूठी के नीचे रख दिया जो उसे पहले मिली थी। फिर उसने अपने घिसे हुए स्नीकर्स पहने और बाहर चला गया।
बस स्टॉप तक उसे ज़्यादा दूर नहीं चलना था। उसने ट्रेन स्टेशन जाने वाली बस का पाँच मिनट तक इंतज़ार किया। शोर मचाते हाई स्कूल के छात्रों के साथ वह बस स्टॉप तक पैदल चला। जब वह रात आठ बजे के बाद सराय लौटा, तो बिना दाढ़ी बढ़ाए उसके गालों पर हल्की धूप पड़ रही थी, लेकिन किसी ने उससे कुछ नहीं कहा। सराय के मालिक शायद इस बात के आदी हो चुके थे। उन्होंने बिना कुछ कहे उसे नाश्ता परोस दिया।
खाना खाते और चाय पीते हुए टेंगो पिछली शाम के बारे में सोचने लगा। वह तीन नर्सों के साथ खाना खाने बाहर गया था। फिर वे एक बार में गए, जहाँ उन्होंने कराओके गाया। वह कुमी के घर गया, और उल्लू की चीखें सुनते हुए उन्होंने भारत से लाई हुई हशीश पी। उसका दिमाग गाढ़े, गर्म दलिया जैसा लग रहा था। उसने खुद को कक्षा में पाया, वहाँ की गंधों को महसूस किया और आओमामे से बात की। फिर, नर्स के साथ बिस्तर पर, उन्होंने मृत्यु और पुनरुत्थान पर चर्चा की। उसने गलत सवाल पूछा और उसे अस्पष्ट जवाब मिले। जंगल में उल्लू चीखता रहा, और टेलीविजन पर सब लोग हंस रहे थे।
उसकी यादें जगह-जगह से अधूरी थीं। वह सभी पलों को जोड़ नहीं पा रहा था, लेकिन जो कुछ उसे याद था, वह असाधारण रूप से स्पष्ट था। उसे अपने कहे हुए हर शब्द याद थे। उसने सोचा कि कुमी ने अंत में उससे क्या कहा था। वह सलाह थी, एक चेतावनी भी।
"जब उजाला हो जाए, तो यहाँ से निकल जाना। इससे पहले कि निकास मार्ग अवरुद्ध हो जाए।"
शायद अब उसके जाने का समय आ गया था। उसने छुट्टी ली थी और यहाँ इस उम्मीद से आया था कि वह दस साल की उम्र में, आकाश के कोकून में, आओमामे को फिर से देख पाएगा। वह लगभग दो सप्ताह तक यहाँ रुका रहा और हर दिन अपने पिता को पढ़कर सुनाता रहा। लेकिन कोकून प्रकट नहीं हुआ। इसके बजाय, जब वह लगभग हार मानने ही वाला था, कुमी ने उसे एक बिल्कुल अलग दृश्य दिखाया, जिसके माध्यम से वह आओमामे से फिर से मिला और उससे बात कर पाया। "मुझे ढूंढो, जब तक समय है," उसने उससे कहा था। शायद ये शब्द कुमी ने ही कहे थे। शब्दों को समझना मुश्किल था, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। कुमी मरकर फिर से जीवित हो उठी थी। अपने लिए नहीं, बल्कि

अध्याय 10 स्पष्ट साक्ष्य एकत्र करना

उशिकावा ने इचिकावा जाने का फैसला किया। यह एक लंबी यात्रा लग रही थी, लेकिन यह शहर चिबा प्रान्त के प्रवेश द्वार पर, नदी के ठीक उस पार स्थित था, और मध्य टोक्यो से वहाँ पहुँचने में ज़्यादा समय नहीं लगता था। उन्होंने स्टेशन से एक टैक्सी ली और ड्राइवर को स्कूल का नाम बताया। वे दोपहर एक बजे के कुछ देर बाद वहाँ पहुँचे। दोपहर का भोजन समाप्त हो चुका था और दोपहर की कक्षाएँ शुरू हो चुकी थीं। संगीत कक्ष से कई आवाज़ें आ रही थीं, और शारीरिक शिक्षा की कक्षा के हिस्से के रूप में स्कूल के मैदान में एक फ़ुटबॉल मैच खेला जा रहा था। बच्चे गेंद के पीछे दौड़ रहे थे और ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहे थे।
उशिकावा को प्राथमिक विद्यालय की कोई सुखद यादें नहीं थीं। वह खेलों में, खासकर गेंद वाले खेलों में, अच्छा नहीं था। वह कद में छोटा और धीमा था, और उसे दृष्टि दोष था। इसके अलावा, उसमें शारीरिक समन्वय की कमी थी। शारीरिक शिक्षा की कक्षाएं उसके लिए किसी बुरे सपने से कम नहीं थीं। हालांकि, अन्य विषयों में उसके अंक बहुत अच्छे आते थे! उसका दिमाग बिल्कुल भी खराब नहीं था और वह खूब पढ़ाई करता था (इसीलिए उसने मात्र पच्चीस वर्ष की आयु में बार परीक्षा पास कर ली थी)। लेकिन कोई भी उसे पसंद नहीं करता था और न ही उसका सम्मान करता था। इसका एक कारण यह था कि वह खेलों में अच्छा नहीं था। बेशक, उसकी शक्ल-सूरत भी कुछ समस्याएं पैदा करती थी। बचपन में उसका चेहरा चौड़ा, चेहरे पर शरारती भाव और सिर बेढंगा था। उसके होंठों के कोने नीचे की ओर मुड़े हुए थे, जिससे ऐसा लगता था मानो उनसे लार टपकने वाली हो (वह दिखने में ऐसा ही था, उसके मुंह में कभी लार नहीं थी)। उसके बाल घुंघराले और लहरदार थे। उसकी शक्ल-सूरत ऐसी नहीं थी जो लोगों को सहानुभूति दिला सके।
प्राथमिक विद्यालय में वह लगभग बिल्कुल नहीं बोलता था। जब उसे बोलना पड़ता था, तो वह जानता था कि वह एक अच्छा वक्ता है। लेकिन उसके पास बात करने के लिए कोई नहीं था और न ही अपनी भाषण कला का प्रदर्शन करने का कोई अवसर था। इसलिए वह चुप ही रहता था। लेकिन उसने दूसरों की बातों को बहुत ध्यान से सुनने की आदत बना ली थी - चाहे विषय कुछ भी हो। वह उससे कुछ सीखने की कोशिश करता था। यह आदत उसके लिए एक बहुत उपयोगी साधन बन गई। इसकी मदद से उसने कई महत्वपूर्ण सत्य खोजे। इस तरह उसने जो एक महत्वपूर्ण सत्य खोजा, वह यह था कि अधिकांश लोग अपने दिमाग का इस्तेमाल करके सोचने में सक्षम नहीं होते। और जो लोग सोचते ही नहीं, वे दूसरों की बातें सुनते तक नहीं।
बहरहाल, प्राथमिक विद्यालय में बिताए दिन उनके जीवन का वो पन्ना नहीं थे जिन्हें वो सुखद रूप से याद रख सकें। ऐसे किसी संस्थान में दोबारा कदम रखने के ख्याल मात्र से ही वो उदास हो जाते थे। साइतामा प्रांत चिबा प्रांत से भले ही अलग हो, लेकिन प्राथमिक विद्यालय पूरे देश में एक जैसे ही होते हैं। वे दिखने में एक जैसे होते हैं और एक ही सिद्धांतों पर चलते हैं। फिर भी, उशिकावा विशेष रूप से इचिकावा स्थित प्राथमिक विद्यालय में गए थे। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण मामला था, जिसे वो किसी और पर नहीं छोड़ सकते थे। उन्होंने सचिवालय को फोन करके डेढ़ बजे का समय तय कर लिया था।
*

उप-प्रधानाचार्य एक छोटी कद की महिला थीं, जिनकी उम्र लगभग पैंतालीस वर्ष लग रही थी। वे दुबली-पतली थीं, उनका चेहरा सुंदर था और वे सलीके से रहती थीं। उप-प्रधानाचार्य? उशिकावा ने सोचा। उन्होंने यह शब्द पहले कभी नहीं सुना था। हालांकि, उन्होंने प्राथमिक शिक्षा तो बहुत पहले ही पूरी कर ली थी। इस बीच चीजें जरूर बदल गई होंगी। ऐसा लग रहा था कि महिला ने हर तरह के लोगों से बहुत कुछ सीखा है, क्योंकि उशिकावा को देखकर, जो आमतौर पर वहां मौजूद नहीं रहते थे, उन्होंने जरा भी हैरानी नहीं दिखाई। या शायद वे सिर्फ शिष्टाचार निभा रही थीं। वे उन्हें एक बहुत ही साफ-सुथरे स्वागत कक्ष में ले गईं और बैठने के लिए कहा। वे उनके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गईं और मुस्कुराईं, मानो वे दोनों के बीच होने वाली सुखद बातचीत का बेसब्री से इंतजार कर रही हों।
वह महिला उसे प्राथमिक विद्यालय की एक सहपाठी की याद दिलाती थी। वह सुंदर, दयालु, अच्छे अंकों वाली और ज़िम्मेदारी की भावना रखने वाली थी। वह शिष्ट थी और पियानो भी अच्छा बजाती थी। शिक्षक उसे बहुत पसंद करते थे। उशिकावा कक्षा के दौरान अक्सर उसे देखता रहता था। ज़्यादातर वह उसकी पीठ देखता रहता था। लेकिन उसने उससे कभी बात नहीं की थी।
“क्या आप हमारे स्कूल के किसी स्नातक के संबंध में यहां आए हैं?” सहायक प्रधानाचार्य ने पूछा।
"माफ़ कीजिए, मैं अपना परिचय देना भूल गया," उशिकावा ने अपना बिजनेस कार्ड देते हुए कहा।
वही बिजनेस कार्ड जो उन्होंने टेंगो को दिया था, जिस पर लिखा था, "स्थायी प्रबंधक, विज्ञान और कला संवर्धन हेतु नव जापान संघ।" उशिकावा ने उन्हें वही कहानी सुनाई जो उन्होंने पहले टेंगो को सुनाई थी, यानी कि एक लेखक के रूप में, उस स्कूल का पूर्व छात्र उनके संघ द्वारा दी जाने वाली वित्तीय सहायता के उम्मीदवारों में से एक था। वह उनके बारे में सरसरी तौर पर जानकारी जुटा रहे थे।
"बहुत बढ़िया!" निर्देशक ने मुस्कुराते हुए कहा। "यह हमारे लिए भी सम्मान की बात है। मैं पूरी खुशी के साथ आपकी हर संभव मदद करूंगा।"
"मैं सोच रहा था कि क्या उनके शिक्षक से सीधे बात करना संभव होगा," उशिकावा ने कहा।
मैं इस बारे में पता लगाऊंगा। लेकिन तब से बीस साल बीत चुके हैं और हो सकता है कि वह सेवानिवृत्त हो गए हों।
"धन्यवाद। और एक और बात है जो मैं आपसे पूछना चाहता हूँ।"
- यह किस बारे में है?
"मसामी आओमामे नाम की एक लड़की श्री कावाना के ही बैच में पढ़ती थी। क्या आप पता लगा सकते हैं कि वे सहपाठी थे या नहीं?"
प्रधानाध्यापिका के चेहरे पर संदेह की छाया दिखाई दी।
"क्या सुश्री आओमामे का श्री कावाना को दी गई छात्रवृत्ति से कोई संबंध है?" नहीं, बात यह नहीं है। श्री कवाना द्वारा लिखित एक रचना में एक ऐसे व्यक्ति का चित्रण किया गया है जो अपने साथ कुछ बातें लेकर आता है। और यहाँ कुछ बातें हैं जिन्हें हम स्पष्ट करना चाहेंगे। यह कोई जटिल बात नहीं है। दरअसल, यह महज़ एक औपचारिकता है।

"आहा," उप निदेशक ने अपने होंठों के कोनों को हल्के से ऊपर उठाते हुए जवाब दिया। "लेकिन कृपया समझें कि हम आपको व्यक्तिगत जानकारी नहीं दे सकते। उदाहरण के लिए, आपका स्कूल रिकॉर्ड या आपके पारिवारिक पृष्ठभूमि से संबंधित जानकारी।"
"हमें इसकी पूरी जानकारी है। हम यह जानना चाहते हैं कि क्या वह वाकई श्री कावाना की सहपाठी थीं। यदि आप हमें उस शिक्षिका का नाम और उनसे संपर्क करने का तरीका बता सकें तो हम आपके आभारी होंगे।"
"मैं समझ गया। अगर बस इतनी सी बात है तो कोई दिक्कत नहीं है। आओमामे, क्या तुमने यही कहा?"
— जी हाँ। इसे "हरा" के लिए ao और "बीन्स" के लिए mame अक्षरों से लिखा जाता है। यह नाम बहुत प्रचलित नहीं है।
उशिकावा ने एक नोटबुक में पेन से "मासामी आओमामे" लिखा और वह कागज़ निर्देशक को दे दिया। निर्देशक ने कुछ देर तक उसे देखा, फिर उसे अपनी मेज पर रखी एक फाइल में रख दिया।
"कृपया यहीं प्रतीक्षा करें। मैं अभी अभिलेखागार में जाकर देखूंगा। मैं किसी से सार्वजनिक की जा सकने वाली जानकारी की कुछ प्रतियां बनाने के लिए कहूंगा।" "मैं तहे दिल से आपका धन्यवाद करता हूं और हुई असुविधा के लिए क्षमा चाहता हूं," उशिकावा ने कहा।
उप निदेशक कमरे से बाहर निकलीं, उनकी बेल-बॉटम स्कर्ट का किनारा खूबसूरती से लहरा रहा था। उनका कद-काठी और चाल दोनों ही बेहद आकर्षक थे। उनके बाल करीने से संवारे हुए थे। उम्र के साथ उनकी खूबसूरती और भी निखर गई थी। उशिकावा अपनी कुर्सी पर आराम से बैठ गए और अपने साथ रखी किताब पढ़ते हुए समय बीतने का इंतजार करने लगे।
*

पंद्रह मिनट बाद, प्रधानाचार्या वापस लौटीं। उन्होंने अपने सीने से एक बड़ा, भूरा लिफाफा लगा रखा था।
ऐसा लगता है कि श्री कवाना एक प्रतिभाशाली छात्र थे। कक्षा में उनके सबसे अच्छे अंक थे, साथ ही एक एथलीट के रूप में भी उनके उत्कृष्ट परिणाम थे। वे विशेष रूप से अंकगणित और गणित में निपुण थे और प्राथमिक विद्यालय में ही उच्च विद्यालय के प्रश्न हल कर लेते थे। उन्होंने एक ओलंपियाड भी जीता था और अखबारों ने तो उन्हें बाल प्रतिभा तक कह दिया था।
"असाधारण," उशिकावा ने कहा।
“लेकिन एक बात मुझे आश्चर्यचकित करती है,” प्रधानाध्यापिका ने आगे कहा। “उस समय उन्हें गणित में बाल प्रतिभा के रूप में पहचाना जाता था, लेकिन वयस्क होने पर उन्हें साहित्यिक जगत में सराहना मिली...”
"विशाल प्रतिभा, एक समृद्ध जलभंडार की तरह, विभिन्न स्थानों पर सतह पर आ जाती है। वह वर्तमान में गणित पढ़ाते हैं और उपन्यास लिखते हैं।"
“आह,” प्रधानाचार्य ने अपनी भौहें सलीके से उठाते हुए उत्तर दिया। उनकी तुलना में, मैं मसामी आओमामे के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं जुटा पाई हूँ। पाँचवीं कक्षा में उनका दूसरे स्कूल में दाखिला हो गया। टोक्यो के अदाची वार्ड में एक रिश्तेदार ने उनकी देखभाल की और उन्हें वहीं के स्कूल में दाखिला दिलाया। वह तीसरी और चौथी कक्षा में श्री कावाना की सहपाठी थीं।

जैसा मैंने सोचा था, उशिकावा ने मन ही मन सोचा। दोनों के बीच कोई न कोई संबंध जरूर था।
— शिक्षिका का नाम ओटा है। श्रीमती तोशी ओटा। वह वर्तमान में त्सुदानुमा नगर प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत हैं।
— तो अगर मैं स्कूल से संपर्क करूं तो मैं उससे मिल सकता हूं।
उप निदेशक ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "मैंने उनसे पहले ही संपर्क कर लिया है। उन्होंने कहा कि अगर ऐसी कोई बात है, तो उन्हें आपसे बात करके खुशी होगी।" “बहुत-बहुत धन्यवाद,” उशिकावा ने कहा।
वह महिला न केवल खूबसूरत थी, बल्कि उसने अपना काम भी जल्दी से कर लिया। प्रधानाचार्य ने शिक्षिका का नाम और त्सुदानुमा प्राथमिक विद्यालय का फोन नंबर अपने बिजनेस कार्ड के पीछे लिखा और फिर उसे उशिकावा को दे दिया। उसने उसे सावधानीपूर्वक अपने बटुए में रख लिया।
"मुझे पता है कि श्रीमती आओमामे धार्मिक पृष्ठभूमि से आती हैं," उशिकावा ने कहा। "यह एक ऐसा मुद्दा है जो हमें कुछ हद तक चिंतित करता है।"
निर्देशक ने भौंहें चढ़ाईं और उनकी आंखों के कोनों पर हल्की झुर्रियां पड़ गईं। केवल एक परिपक्व और आत्म-अनुशासन वाली महिला ही इतनी बुद्धिमान और आकर्षक, नाजुक अर्थ वाली झुर्रियां प्राप्त कर सकती थी।
"मुझे खेद है, लेकिन यह उन विषयों में से एक है जिन पर हम चर्चा नहीं कर सकते," उसने जवाब दिया।
“क्या यह कोई निजी मामला है?” उशिकावा ने पूछा।
— बिलकुल सही। खासकर जब बात धर्म की हो।
लेकिन अगर मैं श्रीमती ओटा से मिलूं, तो शायद मुझे कुछ बातें पता चल जाएं।
उप निदेशक ने अपनी नाजुक ठुड्डी को थोड़ा बाईं ओर झुकाया, उनके होठों पर एक संयमित मुस्कान झलक रही थी।
श्रीमती ओटा जो कहती हैं वह पूरी तरह से निजी मामला है और इससे हमारा कोई लेना-देना नहीं है।
उशिकावा खड़े हुए और विनम्रतापूर्वक उन्हें धन्यवाद दिया। निर्देशक ने उन्हें दस्तावेजों वाला लिफाफा सौंप दिया।
"मैंने यहां उन आंकड़ों की प्रतियां रखी हैं जो हम आपको दे सकते हैं। ये श्री कावाना के बारे में हैं, लेकिन इसमें श्रीमती आओमामे के बारे में भी कुछ जानकारी है। मुझे उम्मीद है कि यह आपके लिए उपयोगी होगी।"
आपने मेरी बहुत मदद की है। आपकी दयालुता के लिए मैं तहे दिल से आभारी हूं।
— कृपया मुझे उस छात्रवृत्ति से संबंधित कोई भी परिणाम मिलने पर सूचित करें, क्योंकि यह हमारे लिए भी सम्मान की बात है।
"मुझे पूरा विश्वास है कि परिणाम सकारात्मक होगा," उशिकावा ने उत्तर दिया। "मैं उनसे अब तक कई बार मिल चुका हूं और मैं उन्हें निर्विवाद प्रतिभा वाला एक होनहार युवक मानता हूं।"
*

उशिकावा इचिकावा स्टेशन के सामने एक कैफे में गए और हल्का भोजन किया, साथ ही लिफाफे में रखे दस्तावेजों की समीक्षा भी की। उनमें तेंगो और आओमामे के कुछ स्कूल रिकॉर्ड और तेंगो के शैक्षणिक और खेल पुरस्कारों का विवरण था। वह वास्तव में एक असाधारण रूप से प्रतिभाशाली छात्र थे। स्कूल शायद उनके लिए

उशिकावा को तेंगो पसंद था। वह एक सीधा-सादा, ईमानदार नौजवान था। वह दूसरों पर नहीं, खुद पर भरोसा करता था। लंबे कद के पुरुषों की तरह, वह बातों को जल्दी समझ लेता था, लेकिन वह बिल्कुल भी गुप्त या धूर्त नहीं था। वह ऐसा व्यक्ति था जो एक बार मन बना लेने पर उस पर अडिग रहता था। वह कभी अच्छा वकील या स्टॉकब्रोकर नहीं बन सकता था। अगर कोई उसके रास्ते में आता, तो वह दुनिया के सबसे अच्छे दौर में भी ढेर हो जाता। लेकिन वह गणित का शिक्षक या लेखक बहुत अच्छा बन सकता था। वह मिलनसार या ज्यादा बातूनी नहीं था, लेकिन कुछ महिलाएं उसे पसंद करती थीं। संक्षेप में, वह उशिकावा का बिल्कुल विपरीत था।
लेकिन उसकी तुलना में, आओमामे के बारे में उसे लगभग कुछ भी नहीं पता था। उसे बस इतना पता था कि वह साक्षी चर्च के कट्टर अनुयायियों के परिवार में पैदा हुई थी और बचपन में ही उसे धर्म प्रचार के लिए ले जाया गया था। पाँचवीं कक्षा में उसने अपना धर्म त्याग दिया और अदाची वार्ड में रहने वाले रिश्तेदारों ने उसे अपने पास रख लिया। शायद वह इसे और सहन नहीं कर पाई। सौभाग्य से, वह शारीरिक रूप से बहुत चुस्त थी और प्राथमिक विद्यालय से लेकर उच्च विद्यालय तक एक शानदार सॉफ्टबॉल खिलाड़ी रही थी। उसने लोगों का ध्यान आकर्षित किया। इसी वजह से उसे छात्रवृत्ति मिली और उसने शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय में दाखिला लिया। ये वे तथ्य थे जो उशिकावा को पता थे। लेकिन उसके व्यक्तित्व, उसकी सोच, उसके गुण और दोष, उसके निजी जीवन के बारे में उसे ज़रा भी जानकारी नहीं थी। उसे बस उसकी जीवनी से कुछ विवरण ही मिले थे।
लेकिन जब उसने तेंगो और आओमामे के अतीत को एक साथ देखा, तो उसे कुछ समानताएँ नज़र आने लगीं। एक बात तो यह थी कि दोनों का बचपन सुखमय नहीं था। आओमामे को उसकी माँ धर्म प्रचार के लिए पूरे शहर में घसीटती रहती थी। वे घर-घर जाकर घंटी बजाती थीं। साक्षी चर्च के सभी बच्चों के लिए ऐसा करना अनिवार्य था। और तेंगो के पिता एनएचके में कैशियर थे। और इसका मतलब था घर-घर जाना। क्या वह अपने बेटे को अपने साथ ले जाते, जैसे साक्षी चर्च की माताएँ ले जाती थीं? शायद। अगर वह तेंगो के पिता होते, तो ज़रूर ले जाते। जब आपके साथ बच्चा होता है, तो पैसे बचाना आसान होता है और आपको दाई का खर्च नहीं उठाना पड़ता। एक तीर से दो निशाने। लेकिन तेंगो के लिए यह अनुभव बिल्कुल भी सुखद नहीं था। और कौन जानता है, शायद दोनों बच्चे सचमुच इचिकावा की गलियों में मिले हों।
टेंगो और आओमामे दोनों ने खेल छात्रवृत्ति पाने और जल्द से जल्द अपने माता- पिता से दूर जाने के लिए कड़ी मेहनत की थी। दोनों ही प्रतिभाशाली खिलाड़ी थे। वे शारीरिक रूप से तो मजबूत थे ही, साथ ही उन्हें प्रतिभा भी दिखानी थी। आत्मनिर्भर बनने का उनका एकमात्र रास्ता था लोगों की नज़र में आना और अच्छा प्रदर्शन करना। यही उनके आत्मरक्षा का अनमोल ज़रिया था। उनकी सोच उनकी उम्र के आम लड़कों और लड़कियों से अलग थी, और दुनिया के प्रति उनका नज़रिया भी अनोखा था।
सच कहूँ तो, उशिकावा भी कुछ ऐसी ही स्थिति में था। उसके मामले में, उसका परिवार धनी था और उसे कभी छात्रवृत्ति की ज़रूरत नहीं पड़ी, न ही कभी जेब खर्च की कमी हुई। लेकिन एक शीर्ष विश्वविद्यालय में दाखिला पाने और बार परीक्षा पास करने के लिए उसे कड़ी मेहनत करनी पड़ी थी। उसने भी तेंगो और आओमामे की तरह ही संघर्ष किया था। अपने सहपाठियों की तरह उसे मौज-मस्ती करने का समय नहीं मिला था। उसने छोटी-छोटी खुशियों का त्याग किया था—जो करना आसान नहीं था—और

अपना पूरा ध्यान पढ़ाई पर लगाया था। उसका मन हमेशा हीनता और श्रेष्ठता की भावनाओं के बीच झूलता रहता था। वह अक्सर खुद से कहता था, "मैं एक रास्कोलनिकोव हूँ जो सोनिया से कभी नहीं मिला।"
अच्छा, मुझे अकेला छोड़ दो। अभी इन सब बातों के बारे में सोचने का कोई फायदा नहीं है। मुझे टेंगो और आओमामे के पास वापस जाना चाहिए।
अगर बीस साल से भी ज़्यादा समय बाद दोनों की अचानक मुलाकात होती, तो उन्हें यह जानकर हैरानी होती कि उनमें कितनी समानताएँ हैं। उनके पास बात करने के लिए बहुत कुछ होता। और फिर वे एक-दूसरे के प्रति तीव्र आकर्षण महसूस करते। उशिकावा इस तरह के परिदृश्य की कल्पना बड़ी स्पष्टता से कर सकती थीं। भाग्य द्वारा तय की गई एक आकस्मिक मुलाकात। एक आदर्श प्रेम कहानी।
क्या यह संयोगवश मुलाकात सचमुच हुई थी? क्या एक प्रेम कहानी का जन्म हुआ था? बेशक, उशिकावा को इसका पक्का पता नहीं था। लेकिन यह मान लेना ज़्यादा तर्कसंगत था कि उनकी मुलाकात हुई थी। इसी तरह तो वे एकजुट हुए थे और पायनियर्स पर हमला किया था। अलग-अलग मोर्चों से, हर कोई अपने-अपने तरीके से। तेंगो अपनी कलम से, और आओमामे किसी खास तकनीक से। लेकिन उशिकावा इस अनुमान से पूरी तरह संतुष्ट नहीं थे। यह तर्कसंगत तो था, लेकिन उन्हें पूरी तरह आश्वस्त नहीं कर पाया।
अगर उन दोनों के बीच इतना गहरा रिश्ता बन गया था, तो इसका खुलासा होना तय था। एक दुर्भाग्यपूर्ण मुलाकात के उतने ही घातक परिणाम होते, और उसकी पैनी नज़रें ऐसी किसी बात को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती थीं। शायद आओमामे इसे गुप्त रखने में कामयाब हो जाती। लेकिन तेंगो के लिए यह नामुमकिन था।
उशिकावा एक ऐसा व्यक्ति था जो जीवन में तर्क पर भरोसा करता था। पुख्ता सबूत के बिना वह आगे नहीं बढ़ता था। लेकिन साथ ही, वह अपनी सहज प्रवृत्ति पर भी भरोसा करता था। और अब उसकी यह प्रवृत्ति इस विचार पर संदेह जता रही थी कि तेंगो और आओमामे मिलकर साजिश रच रहे हैं। यह संदेह धीरे-धीरे लेकिन दृढ़ता से बढ़ रहा था। क्या पता वे दोनों एक-दूसरे के अस्तित्व से अनभिज्ञ हों? क्या पता पायनियर्स के साथ उनका एक साथ जुड़ाव महज एक संयोग हो?
हालांकि यह एक ऐसा संयोग था जिसकी कल्पना करना कठिन था, फिर भी उनकी अंतरात्मा ने साजिश की संभावना के बजाय इस परिकल्पना का समर्थन किया। अलग-अलग कारणों से, अलग-अलग लक्ष्यों से और अलग-अलग दृष्टिकोणों से, दोनों ने अनजाने में एक ही समय पर पायनियर्स को हिलाकर रख दिया था। दो अलग-अलग कथा सूत्र समानांतर चल रहे थे।
लेकिन क्या पायनियर्स के लोग इतनी आसानी से इस सुविधाजनक सिद्धांत को मान लेंगे? बिलकुल नहीं, उशिकावा ने सोचा। वे बिना सोचे-समझे सीधे साजिश की परिकल्पना पर पहुँच जाएँगे। वे ऐसे लोग थे जिन्हें स्वाभाविक रूप से साजिशों में मज़ा आता था। उन्हें कच्ची जानकारी देने से पहले, उसे और भी पुख्ता सबूत जुटाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ी। अन्यथा, उन्हें गुमराह करने का जोखिम था, और बदले में, इसका मतलब खुद उसके लिए मुसीबत मोल लेना हो सकता था। इचिकावा से त्सुदानुमा जाने वाली ट्रेन में उशिकावा इन्हीं बातों के बारे में सोचता रहा। शायद अनजाने में ही उसने मुंह बनाया होगा, आह भरी होगी या खाली जगह को घूरा होगा। उसके सामने वाली सीट पर बैठी एक स्कूली छात्रा उसे अजीब नज़रों से देख रही थी। उशिकावा ने अपने हाव-भाव बदलकर और अपने टेढ़े-मेढ़े,

गंजे सिर पर हाथ फेरकर इन हरकतों को छिपाने की कोशिश की। लेकिन इन हरकतों से वह लड़की और भी डर गई। निशी-फुनाबाशी स्टेशन के सामने अचानक वह लड़की खड़ी हुई और तेज़ी से चलते हुए गायब हो गई।
*

क्लास खत्म होने के बाद वह तोशी ओटा नाम की शिक्षिका के साथ कक्षा में रुका रहा। वह पचास वर्ष की थीं और इचिकावा स्कूल की शालीन उप-प्रधानाचार्य से बिलकुल विपरीत थीं। उनका कद छोटा और शरीर गठीला था, और पीछे से देखने पर उनकी चाल किसी समुद्री जीव जैसी अजीब लगती थी। नाक पर उन्होंने धातु के फ्रेम वाला छोटा सा चश्मा पहना था, लेकिन उनकी भौहों के बीच का हिस्सा चौड़ा, चपटा और छोटे-छोटे बालों से ढका हुआ था। उन्होंने ऊन का बना हुआ सूट पहना था, जो देखने में तो अज्ञात समय का था, लेकिन निश्चित रूप से लगभग फैशन से बाहर हो चुका था, और उससे कपूर की हल्की सी गंध आ रही थी। सूट का रंग गुलाबी था, लेकिन एक अजीब सा गुलाबी रंग, जो किसी दूसरे गलत रंग के साथ मिला हुआ प्रतीत होता था। शायद एक संयमित और परिष्कृत रंग देने का इरादा था, लेकिन वह लक्ष्य हासिल नहीं हो सका, और वह गुलाबी रंग अब निराशा, आत्म-हीनता और त्याग के सागर में डूब गया था। इसी वजह से, उसके कोट के कॉलर के नीचे से झांकता हुआ एकदम नया सफेद ब्लाउज, किसी मातम में चुपके से घुस आए बेशर्म मेहमान जैसा लग रहा था। उसके सूखे, सफेद बालों की लकीरों वाले बाल प्लास्टिक की क्लिपों से जल्दबाजी में बांधे हुए लग रहे थे। उसके हाथ-पैर मोटे थे, और उसकी छोटी उंगलियों में कोई अंगूठी नहीं थी। उसकी गर्दन पर तीन पतली लेकिन गहरी झुर्रियां थीं, जो मानो बीते सालों का निशान थीं। या शायद ये इस बात का संकेत थीं कि उसकी तीन मनोकामनाएं पूरी हो गई थीं। हालांकि, उशिकावा का मानना था कि शायद ऐसा नहीं था।
वह तीसरी कक्षा से लेकर प्राथमिक विद्यालय के अंत तक टेंगो की शिक्षिका थीं। हर दो साल में कक्षाएं बदलती थीं, लेकिन किस्मत की बात है कि वह टेंगो के साथ चार साल तक रहीं। उन्होंने आओमामे को केवल दो साल, तीसरी और चौथी कक्षा में पढ़ाया था।
उन्होंने कहा, "मुझे श्री कवाना अच्छी तरह याद हैं।"
उनकी गंभीर सूरत के विपरीत, उनकी आवाज़ आश्चर्यजनक रूप से युवा और स्पष्ट थी। ऐसी आवाज़ जो शोरगुल भरे कक्षाकक्ष के हर कोने तक पहुँच सकती थी। उशिकावा ने प्रशंसा करते हुए सोचा, पेशा ही इंसान को बनाता है। वे निश्चित रूप से एक कुशल शिक्षक थे।
श्री कवाना हर तरह से एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे। पच्चीस वर्षों में मैंने विभिन्न विद्यालयों में अनगिनत विद्यार्थियों को पढ़ाया है, लेकिन उनके जैसा प्रतिभाशाली विद्यार्थी मैंने पहले कभी नहीं देखा। उन्होंने हर काम में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। उनका व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक था और उनमें नेतृत्व क्षमता थी। वे ऐसे व्यक्ति थे जो किसी भी क्षेत्र में अपनी पहचान बना सकते थे। प्राथमिक विद्यालय में वे अंकगणित और गणित में अपनी प्रतिभा के लिए विशेष रूप से जाने जाते थे, लेकिन साहित्य के क्षेत्र में उनका चयन होना मुझे आश्चर्य की बात नहीं है।
— उनके पिता एनएचके में कैशियर थे, है ना?
"बिल्कुल सही," शिक्षक ने उत्तर दिया।

"मैंने उनसे खुद ही समझा था कि वह बहुत सख्त पिता थे," उशिकावा ने कहा, जो पूरी तरह से गलत था।
"बिल्कुल," उसने बिना किसी झिझक के जवाब दिया। वह बहुत सख्त पिता थे। उन्हें अपने काम पर बहुत गर्व था, और बेशक यह एक अच्छी बात है, लेकिन टेंगो के लिए यह एक बहुत बड़ा बोझ था।
उशिकावा ने विषयों को इस तरह से जोड़ा कि वह उससे हर तरह की जानकारी निकलवा सके। लोगों से बात निकलवाना ही उसकी सबसे बड़ी खूबी थी। शिक्षिका ने उसे बताया कि तेंगो पांचवीं कक्षा में घर से भाग गया था, क्योंकि वह सप्ताहांत में अपने पिता द्वारा उसे स्कूल की फीस लेने ले जाने से तंग आ गया था।
"या यूं कहें कि उसे घर से निकाल दिया गया था, वह भागा नहीं था," उसने कहा।
उशिकावा ने सोचा कि उसके पिता सचमुच पैसे इकट्ठा करते समय तेंगो को अपने साथ ले जाते थे। और कम उम्र में तेंगो के लिए यह काफी तनावपूर्ण अनुभव रहा था।
बिलकुल वैसा ही जैसा उसने अनुमान लगाया था।
कहीं और जाने की जगह न होने के कारण, शिक्षिका ने उसे रात भर अपने पास रखा।
उन्होंने उसे कंबल ओढ़ाया और नाश्ता बनाकर खिलाया। अगली शाम वह उसके पिता के घर गईं और उन्हें अपना इरादा बदलने के लिए मना लिया। उन्होंने उशिकावा को यह पूरी घटना अपने जीवन के सबसे गौरवशाली पलों में से एक बताते हुए सुनाई। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे उनकी मुलाकात उससे संयोगवश एक संगीत कार्यक्रम में हुई थी जब तेंगो हाई स्कूल में था, और उस समय वह टिम्पानी कितनी खूबसूरती से बजाता था।
— जनाचेक की सिम्फोनीटा। यह कोई आसान रचना नहीं है। कुछ सप्ताह पहले तक टेंगो ने इस वाद्य यंत्र को छुआ तक नहीं था, लेकिन उन्होंने एक सच्चे पेशेवर की तरह मंच पर कदम रखा और अपने हिस्से को शानदार ढंग से प्रस्तुत किया। हर मायने में एक चमत्कार।
उशिकावा ने प्रभावित होकर सोचा, "यह महिला सचमुच तेंगो से दिल से प्यार करती थी। वह उसकी बिना शर्त देखभाल करती थी। कोई किसी से इतना प्यार कैसे कर सकता है?"
"क्या आपको मसामी आओमामे याद है?" उशीकावा ने पूछा।
"मुझे बहुत अच्छी तरह याद है," शिक्षक ने जवाब दिया, लेकिन एक अलग स्वर में, जिसमें खुशी का कोई भाव नहीं था।
उनकी आवाज में明顯बदलाव आया।
— यह एक असामान्य नाम भी है।
— हाँ, यह बहुत ही असामान्य है। लेकिन मुझे यह नाम की वजह से याद नहीं है।
कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा।
मुझे पता चला है कि वह साक्षी चर्च के धर्मनिष्ठ अनुयायियों के परिवार से आते थे।
“क्या यह चर्चा सिर्फ हमारे बीच है?” शिक्षक ने पूछा।
"बिल्कुल, मैं करता हूँ। मैं किसी को नहीं बताऊंगा।"
शिक्षक सहमत हो गए।
इचिकावा में विटनेस चर्च की एक बड़ी शाखा है। और इसीलिए मैंने उनके कई बच्चों को अपने मार्गदर्शन में पढ़ाया है। एक शिक्षक के रूप में, मैं आपको बता सकता हूँ कि समस्याएँ हमेशा उत्पन्न होती हैं और प्रत्येक छात्र पर व्यक्तिगत रूप

से ध्यान देना आवश्यक है। लेकिन उनके माता-पिता से अधिक उत्साही विश्वासी कोई नहीं था।
दूसरे शब्दों में कहें तो, वे लोग जिन्होंने किसी भी प्रकार के समझौते की अनुमति नहीं दी।
उन बातों को याद करके शिक्षिका ने हल्के से अपने होंठ काट लिए।
"बिल्कुल सही। वे सिद्धांतों के मामले में बेहद सख्त थे, और बच्चों से भी उतनी ही सख्ती की उम्मीद करते थे। इसी वजह से उसके पास कक्षा के बाकी बच्चों से खुद को अलग करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।"
— तो, आप कह सकते हैं कि एक तरह से वह एक विशेष बच्चा था।
"हां, एक विशेष बच्चा," शिक्षक ने स्वीकार किया। "लेकिन इसमें बच्चों की कोई गलती नहीं है। अगर हमें कहीं गलती ढूंढनी है, तो वह लोगों के दिलों में बसी असहिष्णुता में ही मिलेगी।"
शिक्षक लगातार आओमामे के बारे में बात करते रहे। ज़्यादातर बच्चे उसे नज़रअंदाज़ करते रहे। वे उससे यथासंभव ऐसा व्यवहार करते रहे मानो उसका कोई अस्तित्व ही न हो। वह एक बाहरी व्यक्ति थी, एक ऐसी लड़की जिसके अजीबोगरीब सिद्धांत थे और जो दूसरों को परेशान करती थी। कक्षा में यही सर्वसम्मत राय थी। और आओमामे ने अपनी उपस्थिति को यथासंभव कम महसूस कराने की कोशिश करके अपना बचाव किया।
मैंने अपनी पूरी कोशिश की, लेकिन बच्चों का एकजुट होना अप्रत्याशित रूप से मजबूत था, और वह एक तरह से प्रेत जैसी उपस्थिति बन गई थी। आजकल, ऐसी समस्याओं का समाधान विशेषज्ञ परामर्शदाता की मदद से किया जा सकता है। लेकिन उस समय ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी। मैं तब छोटी थी और कक्षा को संभाले रखने की कोशिश में मेरा सिर भी मुश्किल से दिखाई देता था। मेरी ये बातें शायद आपको बहाना लग रही होंगी।
उशिकावा उसकी बात समझ गया। शिक्षक होना कठिन परिश्रम का काम था। कुछ हद तक, बच्चों के बीच जो बातें होती हैं, उन्हें बच्चों पर ही छोड़ देना चाहिए। "आस्था की गहराई और असहिष्णुता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। और इससे हमारा कोई लेना-देना नहीं है," उशिकावा ने कहा।
“आप सही कह रहे हैं,” शिक्षक ने उत्तर दिया। “लेकिन एक और स्तर पर, मैं कुछ कर सकता था। मैंने उससे कई बार बात करने की कोशिश की, लेकिन वह कुछ भी नहीं बोल पाई। वह जिद्दी थी और एक बार मन बना लेने पर उसे बदलती नहीं थी। उसका दिमाग बहुत तेज था। वह जल्दी समझ जाती थी और सीखने के लिए उत्सुक थी। लेकिन उसने खुद को नियंत्रित और संयमित रखा ताकि ये बातें किसी को पता न चलें। सबसे अलग न दिखना उसके लिए आत्मरक्षा का एक तरीका था। अगर वह सामान्य वातावरण में होती, तो वह एक बेहतरीन छात्रा होती। जब मैं इसके बारे में सोचता हूँ तो मुझे बहुत दुख होता है!”
क्या आपने कभी उसके माता-पिता से बात की है?
शिक्षक सहमत हो गए।
कई बार। वे बार-बार स्कूल आकर धार्मिक उत्पीड़न की शिकायत करते थे। मैंने उनसे कहा कि वे आओमामे को समूह में घुलने-मिलने में मदद करने की कोशिश करें। सिद्धांतों से थोड़ा भी हटकर सोचें। लेकिन व्यर्थ। उसके माता-पिता के लिए, अपने धर्म के नियमों का कड़ाई से पालन करना सर्वोपरि था। उनके लिए, खुशी का

स्कूल के गेट के पास त्सुदानुमा स्टेशन जाने वाली बस का इंतज़ार करते हुए उशिकावा अपने स्कूल के शिक्षकों के बारे में सोचने लगा। क्या उन्हें अब भी वह याद था? लेकिन अगर उन्हें याद भी था, तो उसे याद करते हुए उनकी आँखों में दया की कोई झलक नहीं रही होगी।
जो कुछ उसने पता लगाया था, वह उसकी परिकल्पना के बहुत करीब था। टेंगो कक्षा का सबसे होशियार छात्र था। वह बहुत लोकप्रिय भी था। आओमामे बाकी कक्षा से अलग-थलग और उपेक्षित था। उन दोनों के बीच नज़दीकी की कोई संभावना नहीं थी। उनकी परिस्थितियाँ बिल्कुल अलग थीं। और आओमामे ने इचिकावा स्कूल में पाँचवीं कक्षा में दाखिला ले लिया था। यहीं से उन दोनों के बीच का रिश्ता टूट गया। स्कूल के दिनों में अगर उनमें कोई एक बात समान थी, तो वह यह थी कि उन्हें अपने माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध उनकी बात माननी पड़ती थी। हालाँकि उनके कारण अलग-अलग थे, एक को अनुयायी बनाने के लिए, दूसरे को कर वसूलने के लिए, दोनों को उनके माता-पिता पूरे शहर में घसीटते थे। कक्षा में उनकी स्थिति बिल्कुल अलग थी। लेकिन वे दोनों निश्चित रूप से उतना ही अकेलापन महसूस करते थे और उनकी चाहत भी उतनी ही प्रबल थी - बिना शर्त स्वीकार किया जाना, उनकी बाहों में समा जाना। उशिकावा उनकी आत्मा में छिपी भावनाओं की कल्पना कर सकता था।
*

उशिकावा ने त्सुदानुमा से टोक्यो जाने वाली एक्सप्रेस ट्रेन में अपनी सीट पर बाहें मोड़े बैठे-बैठे मन ही मन सोचा, "अब आगे क्या करूं? मुझे तेंगो और आओमामे के बीच कुछ संबंध मिले हैं। बहुत दिलचस्प संबंध हैं, लेकिन दुर्भाग्य से, फिलहाल इनसे कोई ठोस सबूत नहीं मिलता।"
मेरे सामने एक पत्थर की दीवार खड़ी है। इसमें तीन दरवाजे हैं, और मुझे उनमें से एक चुनना है। हर दरवाजे पर एक नामपट्टिका लगी है। एक पर "टेंगो", दूसरे पर "आओमामे" और तीसरे पर "अज़ाबू की महिला" लिखा है। आओमामे एक भूत की तरह गायब हो गई है, उसका कोई निशान नहीं बचा है। अज़ाबू में विलो विला की सुरक्षा किसी बैंक की तिजोरी की तरह है, और मैं उसे छू भी नहीं सकती। और फिर बस एक ही दरवाजा बचा है।
उशिकावा ने सोचा, लगता है मुझे कुछ समय के लिए टेंगो के साथ ही रहना पड़ेगा। मेरे पास कोई और चारा नहीं है। यह तो छंटनी प्रक्रिया का एकदम सही उदाहरण है। राहगीरों को बांटने के लिए इससे कुछ बढ़िया ब्रोशर बनवाए जा सकते हैं। अरे वाह, देखो तो सही, वे इसे छंटनी विधि से करते हैं!
टेंगो, तुम कितने अच्छे लड़के हो! गणितज्ञ होने के साथ-साथ लेखक भी। जूडो चैंपियन होने के साथ-साथ शिक्षकों के चहेते भी। फिलहाल, मैं बस तुम्हें आधार बनाकर इस स्थिति को सुलझाने की कोशिश कर सकता हूँ। और यह वाकई एक भयानक उलझन है। जितना ज़्यादा मैं इसके बारे में सोचता हूँ, उतना ही कम समझ पाता हूँ। मेरा दिमाग बासी टोफू के टुकड़े जैसा हो गया है।
लेकिन टेंगो? उशिकावा ने सोचा। क्या उसे पूरी बात समझ आ रही थी? शायद नहीं। जहाँ तक वह देख पा रहा था, टेंगो एक-एक करके कई परिकल्पनाओं की जाँच कर रहा था, इधर-उधर भटक रहा था, घुमावदार रास्ते अपना रहा था। क्या वह भी कई बातों से उलझन में नहीं था और अपने मन में तरह-तरह के सिद्धांत नहीं गढ़ रहा था? फिर भी, टेंगो जन्मजात गणितज्ञ था। वह टुकड़ों को जोड़कर पहेली सुलझाने में माहिर

था, और प्रत्यक्ष रूप से शामिल होने के नाते, उसने निश्चित रूप से उससे कहीं अधिक टुकड़े इकट्ठा कर लिए थे।
उशिकावा ने फैसला किया, "मैं कुछ देर तक टेंगो की हरकतों पर नज़र रखूंगा। वो मुझे कहीं न कहीं ज़रूर ले जाएगा। अगर किस्मत अच्छी रही, तो शायद आओमामे के छिपने की जगह तक भी।" किसी चीज़ से चिपकना उशिकावा की एक और खूबी थी। अगर वो ठान लेता, तो कोई उससे पीछा नहीं छुड़ा सकता था।
मन बना लेने के बाद, उशिकावा ने अपनी आँखें बंद कर लीं और विचारों का चक्र बंद कर दिया। उसे थोड़ी नींद ले लेनी चाहिए थी। उस दिन उसने चिबा के दो प्राथमिक विद्यालयों का दौरा किया था और दो अधेड़ उम्र की शिक्षिकाओं से बात की थी। एक खूबसूरत उप-प्रधानाचार्य और एक कर्कश चाल वाली शिक्षिका। उसे अपने दिमाग को आराम देने की ज़रूरत थी। जल्द ही उसका बड़ा, बेढंगा सिर ट्रेन की गति के साथ थोड़ा हिलने लगा। मानो कोई विशालकाय गुड़िया बुरी खबर उगलने वाली हो।
ट्रेन खाली नहीं थी, लेकिन किसी भी यात्री ने उशिकावा के बगल में बैठने की हिम्मत नहीं की।

अध्याय 11 यह दुनिया न केवल अतार्किक है, बल्कि इसमें दया का भी अभाव है।

मंगलवार की सुबह, आओमामे ने तामारू को एक पत्र लिखकर बताया कि एनएचके का कैशियर होने का दावा करने वाला आदमी फिर से आया था। वह लगातार दरवाज़ा खटखटा रहा था, उसे (या वहाँ रहने वाले तकाई को) उकसा रहा था और लगातार उसका मज़ाक उड़ा रहा था। उसकी हरकतें कुछ ज़्यादा ही अजीब और अस्वाभाविक लग रही थीं। शायद उसे वाकई सतर्क हो जाना चाहिए था।
ओमामे ने उस नोट को एक लिफाफे में डालकर रसोई की मेज पर रख दिया। उसने उस पर T अक्षर लिखा। जो लोग उसका सामान लाने आते थे, उन्हें वह नोट तामारू को देना था। एक बजने से कुछ पहले, आओमामे बेडरूम में गई, दरवाजा बंद किया, बिस्तर पर लेट गई और प्रॉस्ट का उपन्यास पढ़ना जारी रखा। ठीक एक बजे, दरवाजे की घंटी एक बार बजी। कुछ ही क्षणों बाद डिलीवरी टीम ने दरवाजा खोला और अपार्टमेंट में प्रवेश किया। हमेशा की तरह, उन्होंने जल्दी से फ्रिज भर दिया, कचरा बाहर निकाला और खाने-पीने की चीजों की अलमारियों का निरीक्षण किया। पंद्रह मिनट बाद, उन्होंने अपना काम खत्म किया, बाहर गए और दरवाजे को बाहर से बंद कर दिया। फिर उन्होंने संकेत के तौर पर दोबारा घंटी बजाई। उन्होंने हमेशा की तरह वही किया।
ओमामे ने घड़ी की सुई के डेढ़ बजने तक इंतज़ार किया, फिर बेडरूम से निकलकर रसोई में गई। तामारू के नाम का लिफाफा गायब था, और मेज पर एक फार्मेसी के नाम का पेपर बैग पड़ा था। उसके बगल में महिलाओं के लिए मानव शरीर का विश्वकोश नामक एक मोटी किताब थी। बैग में उसे तीन अलग-अलग गर्भावस्था परीक्षण किट मिलीं। उसने हर किट खोली और एक-एक करके निर्देश पढ़े। सभी में एक ही बात लिखी थी। अगर मासिक धर्म एक हफ्ते से ज़्यादा लेट हो गया है, तो वह गर्भावस्था परीक्षण कर सकती है। इसकी सटीकता पंचानवे प्रतिशत है, लेकिन अगर परिणाम सकारात्मक आता है, तो जल्द से जल्द किसी विशेषज्ञ से परामर्श लेना चाहिए। केवल परीक्षण के आधार पर कोई निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए। यह केवल गर्भावस्था की संभावना बताता है।
प्रक्रिया सरल थी। मूत्र को एक साफ पात्र में एकत्र किया जाता था और उसमें कागज की पट्टी रखी जाती थी या सीधे परीक्षण पट्टी पर मूत्र त्यागा जाता था। कुछ मिनट प्रतीक्षा की जाती थी। नीला रंग गर्भावस्था का संकेत देता था। यदि रंग में कोई परिवर्तन नहीं होता था, तो परिणाम नकारात्मक होता था। या, गोलाकार चतुर्भुज में दो ऊर्ध्वाधर रेखाएँ गर्भावस्था का संकेत देती थीं, जबकि एक रेखा गर्भावस्था की अनुपस्थिति को दर्शाती थी। डिज़ाइन में कुछ अंतर होने के बावजूद, सिद्धांत समान था। मूत्र में hCG (ह्यूमन कोरियोनिक गोनाडोट्रोपिन) हार्मोन की उपस्थिति से गर्भावस्था की पुष्टि की जाती थी। ह्यूमन कोरियोनिक गोनाडोट्रोपिन? आओमामे ने भौंहें चढ़ाईं। वह एक महिला थी, लेकिन तीस साल की उम्र में उसने यह नाम पहले कभी नहीं सुना था। आपका मतलब है कि यह चीज़ मेरे अंडाशयों को प्रभावित कर रही थी और मुझे पता ही नहीं चला? महिलाओं के लिए मानव शरीर पर आओमामे विश्वकोश खोलें।
“ह्यूमन कोरियोनिक गोनाडोट्रोपिन गर्भावस्था के दौरान स्रावित होने वाला एक हार्मोन है जो कॉर्पस ल्यूटियम के कार्य को बनाए रखता है,” पुस्तक में बताया गया है। “कॉर्पस ल्यूटियम प्रोजेस्टेरोन और एस्ट्रोजन स्रावित करता है,

गर्भाशय की परत की रक्षा करता है और मासिक धर्म को रोकता है। इस तरह, गर्भाशय में धीरे-धीरे प्लेसेंटा बनता है। सात से नौ सप्ताह के बाद, प्लेसेंटा बनने के बाद, कॉर्पस ल्यूटियम की भूमिका समाप्त हो जाती है, और इसके साथ ही हार्मोन एचसीजी की भूमिका भी समाप्त हो जाती है।”
दूसरे शब्दों में कहें तो, गर्भाशय की दीवार से जुड़ने के बाद यह सात से नौ सप्ताह तक स्रावित होता है। जहाँ तक अवधि की बात है, यह थोड़ा अनिश्चित था, लेकिन किसी तरह मेल खाता था। वह बस इतना ही कह सकती थी कि अगर परीक्षण का परिणाम सकारात्मक आता है, तो वह निश्चित रूप से गर्भवती है। अगर परिणाम नकारात्मक आता है, तो निष्कर्ष इतना स्पष्ट नहीं था। यह भी संभव था कि हार्मोन स्राव की अवधि पहले ही समाप्त हो चुकी हो।
ओमामे को पेशाब करने की ज़रूरत महसूस नहीं हुई। उसने फ्रिज से सादे पानी की बोतल निकाली और दो गिलास पी लिए। लेकिन फिर भी उसे बाथरूम जाने की इच्छा नहीं हुई। बिना किसी जल्दी के, उसने प्रेगनेंसी टेस्ट किट एक तरफ रख दी और सोफे पर लेटकर अपनी किताब पर ध्यान केंद्रित करने लगी।
*

तीन बजे के बाद ही पेशाब करने की इच्छा हुई। आओमामे ने एक बर्तन में पेशाब इकट्ठा किया और उसमें कागज की पट्टी डाल दी। देखते ही देखते उसका रंग बदल गया और वह गहरे नीले रंग की हो गई। एक बेहद खूबसूरत रंग, कार के रंग के लिए बिल्कुल सही। एक छोटी नीली कन्वर्टिबल कार, जो बेज रंग के हुड के साथ खूब जंचेगी। समुद्र तट पर ऐसी कार चलाना कितना शानदार होगा, जब गर्मियों की ठंडी हवा चेहरे पर लगे। लेकिन शहर के बीचोंबीच एक फ्लैट के बाथरूम में, पतझड़ की एक दोपहर में, उस नीले रंग ने उसे यह यकीन दिला दिया कि वह गर्भवती है - एक ऐसी संभावना जिसकी सटीकता पंचानवे प्रतिशत थी। आईने के सामने खड़ी होकर आओमामे कुछ देर तक उस नीले रंग की कागज की पट्टी को देखती रही। लेकिन चाहे वह उसे कितना भी देखती, उसका रंग नहीं बदला।
पूरी तरह से आश्वस्त होने के लिए, उसने एक दूसरी कंपनी द्वारा बनाया गया एक टेस्ट आजमाया। निर्देशों में लिखा था कि सीधे स्टिक के सिरे पर पेशाब करें। लेकिन चूंकि वह अभी पेशाब नहीं कर सकती थी, इसलिए उसने उसे कंटेनर में मौजूद पेशाब में डुबोने का फैसला किया। पेशाब अभी ताजा था, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि वह उसे अपने अंदर डुबोती है या अपने ऊपर डालती है। नतीजा एक ही था। गोल प्लास्टिक डायल पर दो सीधी खड़ी रेखाएं दिखाई दीं, जो आओमामे को एक ही बात बता रही थीं: "गर्भावस्था की संभावना है।"
ओमामे ने पेशाब को टॉयलेट में बहा दिया और फ्लश कर दिया। उसने नीले रंग की कागज़ की पट्टी को टिशू में लपेटकर कूड़ेदान में फेंक दिया, फिर उस डिब्बे को गर्म पानी से धोया। वह रसोई में गई और दो गिलास पानी और पिया। उसने अगले दिन तीसरा परीक्षण करने की योजना बनाई। तीन एक बहुत अच्छी संख्या है। एक शॉट, दो शॉट। आप अपनी सांस रोककर तीसरी गेंद का इंतज़ार करते हैं।
ओमामे ने पानी उबाला, अपने लिए हरी चाय बनाई, फिर सोफे पर बैठ गई और पढ़ना शुरू कर दिया। उसके पास एक छोटी प्लेट में पाँच चीज़ क्रैकर्स रखे थे, जिन्हें वह चाय की चुस्की लेते हुए चबा रही थी। दोपहर का समय शांत था। पढ़ने के लिए एकदम सही। लेकिन उसकी आँखें व्यर्थ ही लिखे हुए को पढ़ रही थीं, क्योंकि उसे कुछ भी याद नहीं आ रहा था। उसे एक ही पैराग्राफ को कई बार पढ़ना पड़ा। आखिरकार उसने

हार मान ली, आँखें बंद कर लीं और कल्पना की कि वह नीली कन्वर्टिबल कार के पहिए के पीछे बैठी है, समुद्र तट के किनारे गाड़ी चला रही है, कार का बोनट खुला हुआ है। समुद्र की ठंडी हवा उसके बालों को छू रही थी। सड़क के किनारे एक बोर्ड लगा था जिस पर दो खड़ी लाइनें थीं और लिखा था, "चेतावनी, आप गर्भवती हो सकती हैं!" ओमामे ने आह भरी और किताब को सोफे पर गिरा दिया।
उसे अच्छी तरह पता था कि तीसरा परीक्षण करने की कोई ज़रूरत नहीं है। उसने खुद से कहा कि नतीजा सौ बार एक जैसा ही आएगा। यह तो बस समय की बर्बादी है। मेरे एचसीजी हार्मोन का मेरे गर्भाशय के प्रति बिल्कुल वही रवैया रहेगा। वे कॉर्पस ल्यूटियम की रक्षा करते हैं, मासिक धर्म को शुरू होने से रोकते हैं और गर्भनाल के निर्माण में मदद करते हैं। मैं गर्भवती हूँ। और एचसीजी हार्मोन यह जानते हैं। मैं भी जानती हूँ। मैं इसे अपने गर्भ में महसूस कर सकती हूँ। अभी यह छोटा है। यह सिर्फ एक प्रतीक है। लेकिन एक दिन इसका गर्भनाल बनेगा और यह विकसित होगा। इसे मुझसे पोषण मिलेगा और यह धीरे-धीरे लेकिन लगातार, बिना रुके, उस गहरे और गाढ़े तरल में बढ़ता रहेगा।
यह उसका पहला गर्भधारण था। आओमामे स्वभाव से बहुत सतर्क थी और केवल वही मानती थी जो वह अपनी आँखों से देखती थी। जब वह यौन संबंध बनाती, तो यह सुनिश्चित करती कि उसका साथी कंडोम पहने। चाहे वह कितना भी पी ले, वह जाँच करना कभी नहीं भूलती थी। जैसा कि उसने महिला को बताया था, जब वह दस साल की थी और उसे पहली बार मासिक धर्म हुआ था, तब से यह कभी रुका नहीं था। यह कभी अनियमित भी नहीं हुआ था। मासिक धर्म का दर्द हल्का होता था। उसे बस कुछ दिनों तक रक्तस्राव होता था और बस इतना ही। इसने उसे व्यायाम करने से कभी नहीं रोका था।
प्राथमिक विद्यालय की कक्षा में टेंगो का हाथ पकड़ने के कुछ महीनों बाद ही उसे पहली बार मासिक धर्म हुआ था। इन दोनों घटनाओं के बीच एक स्पष्ट संबंध प्रतीत होता था। टेंगो के हाथ के स्पर्श ने उसके भीतर हलचल मचा दी होगी। जब उसने अपनी माँ को बताया कि उसे मासिक धर्म हो गया है, तो उसकी माँ ने मुँह बनाया, मानो उसे अचानक कोई अनावश्यक परेशानी हो गई हो। उसने कहा, "अभी थोड़ा जल्दी है।" लेकिन आओमामे ने इस पर ध्यान ही नहीं दिया। यह उसकी अपनी समस्या थी, उसकी माँ या किसी और की नहीं। उसने एक नई दुनिया में अपना पहला कदम अकेले ही रखा था।
और अब वह गर्भवती थी।
ओमामे अंडों के बारे में सोच रही थी। उसके गर्भ में तैयार हुए चार सौ अंडों में से एक (शायद बीच में ही कोई एक) निषेचित हो गया था। संभवतः उस तूफानी सितंबर की रात को, जब ज़ोरदार गरज हो रही थी। फिर, उस अंधेरे कमरे में, उसने एक आदमी को मार डाला था। उसने उसके सिर के पिछले हिस्से में एक नुकीली सुई चुभो दी थी, जिसका निशाना उसके मस्तिष्क का निचला हिस्सा था। लेकिन यह आदमी उन सभी से बिल्कुल अलग था जिन्हें उसने अब तक मारा था। न केवल उसे पता था कि उसे मारा जाएगा, बल्कि वह खुद भी यही चाहता था। अंत में, उसने उसे वही दिया जो वह चाहता था। सज़ा के तौर पर नहीं, बल्कि दया के रूप में। और बदले में, उसने उसे वही दिया जो वह चाहती थी। एक सौदा जो घोर अंधेरे में हुआ था। वही रात थी जब वह गर्भवती हुई थी। वह जानती थी।
मैंने अपने हाथों से एक आदमी की जान ली, और उसी समय मेरे भीतर एक जीवन का जन्म हुआ। क्या यह सौदे का हिस्सा था?

ओमामे ने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपने विचारों को बेकाबू होने दिया। जैसे- जैसे उसका मन शांत हुआ, उसके भीतर कुछ धीरे-धीरे प्रवेश करने लगा।

हे स्वर्ग में विराजमान प्रभु, तेरा नाम पवित्र माना जाए, तेरा राज्य आए। हमारे पापों को क्षमा कर। और हमारे मार्ग को आशीष दे। आमीन।

उसे अब प्रार्थना करने की इच्छा क्यों हुई? वह तो स्वर्ग, स्वर्ग या ईश्वर में भी विश्वास नहीं करती थी। लेकिन ये शब्द उसके मन में बसे हुए थे। उसे तीन-चार साल की उम्र से ही इन्हें दोहराने के लिए कहा जाता था, जब वह इनका अर्थ भी ठीक से नहीं समझती थी। अगर वह एक भी शब्द गलत बोल देती, तो उसके हाथों पर स्केल से ज़ोर से मार पड़ती थी। प्रार्थना तब निकलती थी जब भी कुछ होता था, चाहे वह आँखों से दिखाई न दे। मानो कोई गुप्त टैटू हो।
अगर मैं अपनी माँ को बताऊँ कि मैं बिना शारीरिक संबंध बनाए गर्भवती हो गई हूँ, तो वो क्या कहेंगी? वो सोचती हैं। शायद वो इसे घोर पाप समझेंगी। आख़िरकार, ये एक तरह का पवित्र गर्भाधान है—हालाँकि, ज़ाहिर है, मैं अब कुंवारी नहीं हूँ। लेकिन हो सकता है कि वो मेरी बात पर ध्यान ही न दें। वो मेरी बात सुनेंगी तक नहीं। मैं तो उनके लिए एक ऐसी नीच औरत हूँ जो बहुत पहले ही उनकी दुनिया से निकल चुकी है।
लेकिन आओमामे ने सुझाव दिया, "आइए चीजों के बारे में अलग तरह से सोचें। आइए, जहां कोई स्पष्टीकरण नहीं है, वहां स्पष्टीकरण खोजने की कोशिश करना बंद करें, बल्कि इस रहस्य को रहस्य ही रहने दें और इस घटना को विपरीत दृष्टिकोण से देखें।"
क्या मैं इस कार्य को खुशी और स्वागत के योग्य मानता हूँ? या फिर अप्रिय और असुविधाजनक मानता हूँ?
चाहे वह कितना भी सोचती, आओमामे किसी नतीजे पर नहीं पहुँच पा रही थी। उसने खुद से कहा, "मैं अब भी सदमे में हूँ। मैं उलझन में हूँ और दिशाहीन महसूस कर रही हूँ। एक तरफ, मैं दो हिस्सों में बँटी हुई महसूस कर रही हूँ। मैं एक ऐसी नई स्थिति का सामना कर रही हूँ जिसे स्वाभाविक रूप से मैं स्वीकार नहीं कर सकती।" लेकिन साथ ही, आओमामे ने महसूस किया कि वह अपने अंदर पनप रही उस छोटी सी गर्माहट को बचा रही थी, एक गहरी जिज्ञासा से प्रेरित होकर। उसे अपने अंदर पल रहे उस भाव के साथ अंत तक रहने की ज़रूरत महसूस हो रही थी, चाहे वह कुछ भी हो। ज़ाहिर है, वह बेचैन और डरी हुई थी। शायद यह उसकी कल्पना से परे कुछ था। शायद यह कोई ऐसा भयानक जीव था जो उसे अंदर से खा जाएगा। कई निराशाजनक विकल्प उसके मन में आए। हालाँकि, आओमामे के स्वभाव में जिज्ञासा की कोई कमी नहीं थी। अचानक, उसके मन में एक विचार कौंधा, जैसे अंधेरे को चीरती हुई प्रकाश की किरण। शायद मेरे गर्भ में पल रहा बच्चा टेंगो का ही हो।
आओमामे ने थोड़ा भौंहें चढ़ाईं और कुछ देर इस विकल्प पर विचार किया। लेकिन मैं टेंगो के बच्चे से गर्भवती क्यों होऊंगी?
इसे ऐसे समझिए: उस उथल-पुथल भरी रात में जब एक के बाद एक कई घटनाएँ घटीं, इस दुनिया में कुछ ऐसा हुआ कि टेंगो ने किसी तरह अपना शुक्राणु मेरे गर्भाशय में डाल दिया। मुझे नहीं पता कैसे, लेकिन कोई खास रास्ता प्रकट हुआ, मानो गड़गड़ाहट, बाढ़, अंधेरा और हत्या के बीच के खालीपन को भरने के लिए बना हो।

शायद सिर्फ़ अस्थायी रूप से। और हमने उस रास्ते का इस्तेमाल किया। मेरे शरीर ने इस अवसर का लाभ उठाया, उसने टेंगो का बेसब्री से स्वागत किया और इस तरह मैं गर्भवती हो गई। मेरे 201 वें या 202 वें अंडे ने अपने लाखों शुक्राणुओं में से एक को पकड़ लिया। एक स्वस्थ, बुद्धिमान और ईमानदार शुक्राणु, बिल्कुल अपने मालिक की तरह।
यह एक बेहद बेतुका विचार है। इसका कोई मतलब नहीं बनता। चाहे मैं कितनी भी सफाई दे दूं, इस दुनिया में कोई भी इसे स्वीकार नहीं करेगा। लेकिन मेरा गर्भवती होना ही अपने आप में अतार्किक है। हालांकि, आखिर यह 1Q84 है। यह एक ऐसी दुनिया है जहां मुझे अब किसी भी बात से आश्चर्य नहीं होता।
"क्या होगा अगर यह सचमुच टेंगो का बच्चा हो?" आओमामे ने सोचा।
उस सुबह, जब मैं मेट्रोपॉलिटन हाईवे नंबर 3 के पार्किंग स्थल पर थी, मैंने ट्रिगर नहीं दबाया। मैं वहाँ मरने के लिए तैयार होकर गई थी और बंदूक की नली अपने मुँह में रखने को तैयार थी। मुझे मौत से ज़रा भी डर नहीं था, क्योंकि मैं यह सब टेंगो को बचाने के लिए कर रही थी। लेकिन एक शक्ति ने मुझे रोक दिया। मुझे दूर से किसी की आवाज़ सुनाई दी जो मेरा नाम पुकार रही थी। क्या यह इसलिए था क्योंकि मैं गर्भवती थी? क्या कोई मुझे यह बताने की कोशिश कर रहा था कि इस जीवन का जन्म हो चुका है?
आओमामे को अपने सपने में आई उस सभ्य महिला की याद आई, जिसने उसे अपने कोट से ढक दिया था। वह अपनी चांदी की मर्सिडीज से उतरी और मुझे अपना पीला, मुलायम और हल्का ओवरकोट दिया। वह जानती थी। वह जानती थी कि मैं गर्भवती हूँ, और उसने मुझे ताक-झांक करने वाली नज़रों, ठंडी हवा और कई अन्य बुराइयों से बचाया।
यह एक अच्छा संकेत था।
आओमामे ने अपने चेहरे पर सामान्य भाव लाते हुए उसे शांत किया। उसने सोचा, कोई मेरी रक्षा कर रहा है, मुझे बचा रहा है। भले ही मैं 1Q84 की दुनिया में हूँ, मैं पूरी तरह अकेली नहीं हूँ। शायद।
*

ओमामे ने अपनी ठंडी हो चुकी चाय ली और खिड़की के पास चली गई। वह बालकनी में गई, बगीचे की कुर्सी पर बैठ गई ताकि कोई उसे देख न सके, और अपारदर्शी टाइलों के बीच से छोटे से पार्क को देखने लगी। उसने टेंगो के बारे में सोचने की कोशिश की, लेकिन उस दिन वह ऐसा कर नहीं पाई। अयुमी का चेहरा उसकी आँखों के सामने आ गया। वह स्वाभाविक रूप से, बिना कुछ छिपाए, गर्मजोशी से मुस्कुराई। वे रेस्तरां की मेज पर आमने-सामने बैठी थीं और अपने-अपने वाइन के गिलास होठों तक उठा रही थीं। दोनों ही शराब के नशे में चूर थीं। परिष्कृत बरगंडी वाइन उनके खून में घुल गई थी, उनके शरीर में धीरे-धीरे प्रवाहित हो रही थी, और उनके आसपास की दुनिया को अंगूर के रंग में रंग रही थी।
"जानती हो मैं क्या सोचती हूँ?" आयुमी ने अपने वाइन ग्लास पर उंगली फेरते हुए कहा। "यह दुनिया न केवल अतार्किक है, बल्कि इसमें दया का भी अभाव है।"
"यही सच है। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह दुनिया पलक झपकते ही खत्म हो जाएगी," आओमामे जवाब देती है। "और फिर राज्य आ जाएगा।"
"मैं बेसब्री से इंतजार कर रही हूँ!" आयुमी ने उत्साह से कहा।
*

"तो फिर मैंने उससे राज्य के बारे में बात क्यों की?" आओमामे ने हैरानी से सोचा। "मैंने उस बात का ज़िक्र क्यों किया जिस पर मुझे विश्वास नहीं है?" और उसके कुछ ही समय बाद, अयुमी की मृत्यु हो गई।
जब मैंने इस बारे में बात की, तो निश्चित रूप से मेरे मन में एक अलग तरह के "राज्य" की छवि थी, जो साक्षी जिस राज्य में विश्वास करते हैं उससे भिन्न थी। एक कहीं अधिक व्यक्तिगत राज्य। और यही कारण है कि मुझे वे शब्द कहने की आवश्यकता महसूस हुई। लेकिन मैं किस प्रकार के राज्य में विश्वास करता हूँ? मैं किस प्रकार के "राज्य" की कल्पना करता हूँ जो संसार के अंत के बाद आएगा? ओमामे ने अपना हाथ हल्के से अपने पेट पर रखा और ध्यान से सुनने लगी। लेकिन ज़ाहिर है, चाहे वह कितनी भी ध्यान से सुने, कुछ भी सुनाई नहीं दिया।
बहरहाल, अयुमी इस दुनिया से चली गई। शिबुया के एक होटल के कमरे में उसकी हत्या कर दी गई, उसके हाथ ठंडी हथकड़ियों से बंधे थे और उसका गला रस्सी से घोंट दिया गया था। (जहाँ तक उसे पता था, हत्यारा अभी तक पकड़ा नहीं गया था।) उसका पोस्टमार्टम किया गया, शरीर को फिर से जोड़ा गया, श्मशान घाट ले जाया गया और जला दिया गया। अयुमी नाम की वह शख्सियत अब इस दुनिया में नहीं है। उसका शरीर और खून अब नहीं रहे। वह सिर्फ दस्तावेजों और यादों में मौजूद है।
नहीं, शायद नहीं। शायद वो 1984 में भी ज़िंदा और तंदुरुस्त हो। वो बंदूक रखने की इजाज़त न होने पर बड़बड़ाता रहे और अवैध रूप से खड़ी गाड़ियों के विंडशील्ड वाइपर के नीचे चालान रखता रहे। वो हाई स्कूल की लड़कियों को गर्भनिरोधक के बारे में सिखाता रहे। मेरी प्यारी बच्चियों, बिना कंडोम के शारीरिक संबंध नहीं।
मैं अयुमी को फिर से देखना चाहता हूँ। अगर मैं मेट्रोपॉलिटन ट्रेन की आपातकालीन सीढ़ियों से वापस 1984 में चला जाऊँ, तो शायद उससे दोबारा मिल जाऊँ। अयुमी तब भी ज़िंदा होगी, और पायनियर्स मेरा पीछा नहीं कर रहे होंगे। हम नोगिज़का के उस छोटे से रेस्टोरेंट में जाकर बरगंडी वाइन पिएंगे। या... क्या मुझे मेट्रोपॉलिटन ट्रेन की आपातकालीन सीढ़ियों से वापस ऊपर जाना चाहिए?
ओमामे ने इस विचार में ऐसे खो गई जैसे कोई टेप रिवाइंड कर रही हो। मैंने फिर से नीचे जाने की कोशिश की, पर प्रवेश द्वार नहीं मिला। एस्सो के साइन के पास जो सीढ़ी होनी चाहिए थी, वह गायब हो गई थी। लेकिन दूसरी दिशा से शायद मैं पहुँच सकती थी। मुझे सीढ़ी से नीचे नहीं जाना चाहिए था, मुझे ऊपर जाना चाहिए था। मुझे नीचे बने गोदाम में वापस घुसकर वहाँ से ऊपर चढ़ना चाहिए था। मुझे विपरीत दिशा से गलियारे को पार करना चाहिए था। शायद मुझे यही करना चाहिए था। आओमामे का मन किया कि वह उसी वक्त दरवाजे से बाहर भाग जाए, संगेनजाया के पास दौड़कर जाए और इस विकल्प को आजमाए। शायद यह काम करे, शायद न करे। लेकिन कोशिश करने में क्या हर्ज था। उसी सूट और उसी ऊँची एड़ी के जूते पहने उस मकड़ी के जाले वाली सीढ़ी पर चढ़ना।
लेकिन आओमामे ने उस आवेग को रोक लिया।
नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकती। क्या मैं 1Q84 में यहाँ आने पर टेंगो से नहीं मिली थी? और मैं उसके बच्चे को अपने गर्भ में लिए हुए हूँ। चाहे कुछ भी हो जाए, मुझे उससे इस नई दुनिया में फिर से मिलना ही होगा। मुझे उससे मिलना ही है। और तब तक, मैं यहाँ से नहीं जा सकती। चाहे कुछ भी हो जाए।

*

अगली दोपहर, उन्हें तामारू का फोन आया।
“सबसे पहले, एनएचके के कलेक्टर के बारे में,” उन्होंने कहा। मैंने एनएचके को फोन करके पूछा। कोएंजी के उस इलाके के प्रभारी कलेक्टर का कहना है कि उन्हें याद नहीं कि उन्होंने दरवाजा नंबर 303 पर दस्तक दी थी। उन्होंने पहले ही जाँच कर ली है कि दरवाजे के फ्रेम पर एक स्टिकर लगा है जो इस बात का प्रमाण है कि कर स्वचालित रूप से खाते में जमा हो जाता है। उनका कहना है कि अगर घंटी लगी हो तो वे वैसे भी दरवाजा नहीं खटखटाते। अगर वे ऐसा करते तो उनके हाथ में दर्द हो जाता। और जिस दिन कलेक्टर आपसे मिलने आए थे, वे कहीं और फील्ड में थे। जहाँ तक मुझे समझ आता है, उन पर झूठ बोलने का शक नहीं किया जा सकता। वे वहाँ पंद्रह साल से काम कर रहे हैं और एक धैर्यवान और दयालु व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं। “तो?” आओमामे ने पूछा।
— तो ज़्यादा संभावना यही है कि जो आदमी आपके पास आया था, वो असली कलेक्टर नहीं था। कोई आपके दरवाजे पर आया और खुद को एनएचके का बताकर आया। और जिस व्यक्ति से मैंने फोन पर बात की, वो भी यही सोच रहा था। जब कोई नकली आदमी बिल वसूलने आता है, तो उनके लिए परेशानी होती है। उन्होंने कहा कि वे मुझसे मिलकर इस बारे में विस्तार से बात करना चाहेंगे। ज़ाहिर है, मैंने मना कर दिया। मैंने उनसे कहा कि कोई नुकसान नहीं हुआ है और मैं इस घटना को ज़्यादा तूल नहीं देना चाहता।
"इसका मतलब है कि वह आदमी मानसिक रूप से बीमार था या मेरा पीछा कर रहा था, है ना?"
"मुझे नहीं लगता कि जो लोग आपके पीछे पड़े हैं वे ऐसा कुछ करेंगे। इससे कोई फायदा नहीं होगा, बल्कि इसके विपरीत, यह आपको और भी सतर्क कर देगा।"
"लेकिन अगर वह मानसिक रूप से बीमार है, तो उसने यही दरवाज़ा क्यों चुना? और भी कई दरवाज़े हैं! मैं इस बात का भी ध्यान रखती हूँ कि बाहर से कोई रोशनी न आए और मैं कोई शोर भी नहीं करती। मैं आमतौर पर पर्दे बंद रखती हूँ और कपड़े सुखाने के लिए बालकनी में नहीं डालती। फिर भी उस आदमी ने जानबूझकर यही दरवाज़ा खटखटाया। उसे पता था कि मैं अंदर हूँ। या कम से कम उसने यही दावा किया कि उसे पता है। और वह किसी तरह मुझे दरवाज़ा खोलने के लिए मनाने की कोशिश कर रहा था।" — क्या आपको लगता है कि वह दोबारा आएगा?
"मुझे नहीं पता। लेकिन अगर वह मुझे दरवाजा खुलवाने के लिए दृढ़ संकल्पित है, तो क्या आपको नहीं लगता कि वह तब तक आता रहेगा जब तक उसे यह दरवाजा खुला हुआ नहीं दिख जाता?"
और यह विचार आपको बेचैन कर देता है।
"इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। बस मुझे यह पसंद नहीं है।"
मुझे भी ये बिल्कुल पसंद नहीं है। मुझे ये बिलकुल भी पसंद नहीं है। लेकिन अगर वो धोखेबाज फिर से आया, तो हम एनएचके या पुलिस को नहीं बुला सकते। और अगर आप मुझसे संपर्क करें और मैं सीधे आपके पास आ जाऊं, तब तक शायद वो जा चुका होगा। "मुझे लगता है मैं इसे खुद संभाल सकती हूँ," आओमामे ने जवाब दिया। "मैं बस इतना कर सकती हूँ कि चाहे वे मुझे कितना भी उकसाएँ, मैं दरवाजा नहीं खोलूँगी।" "मुझे लगता है कि वह आपको उकसाने के लिए कुछ भी करेगा, है ना?"
— मुझे भी ऐसा ही लगता है।

तामारू ने थोड़ी देर खांसा और विषय बदल दिया।
"आपने टेस्ट करवा लिए हैं, है ना?"
"नतीजा सकारात्मक रहा," आओमामे ने सीधे-सादे शब्दों में जवाब दिया।
— आपका मतलब है कि आप हैं?
— जी हाँ। मैंने दो टेस्ट करवाए और परिणाम एक ही आया।
वहाँ सन्नाटा छाया हुआ था। ऐसा सन्नाटा जैसे किसी लिथोग्राफ पर अभी अक्षर उकेरे ही न गए हों।
"निस्संदेह?" तामारू ने पूछा।
"मुझे यह शुरू से ही पता था। परीक्षण तो बस इसकी पुष्टि थे।"
तामारू अपनी उंगलियों से मौन के लिथोग्राफ को धीरे से सहलाता है।
उन्होंने कहा, "मैं आपसे सीधे-सीधे एक सवाल पूछने जा रहा हूं। क्या आप गर्भावस्था को जारी रखना चाहती हैं या उसकी देखभाल करना चाहती हैं?"
मुझे उसकी परवाह नहीं है।
— तो आप बच्चे को जन्म देने वाली हैं।
अगर सब कुछ ठीक रहा तो मैं अगले साल जून-जुलाई के आसपास बच्चे को जन्म दूंगी।
तामारू ने मन ही मन गणना की।
"इसका मतलब है कि हमें अपनी योजनाओं में कुछ बदलाव करने होंगे।"
- मुझे माफ़ करें।
आपको किसी भी बात के लिए माफी मांगने की जरूरत नहीं है। सभी महिलाओं को, उनकी पृष्ठभूमि चाहे जो भी हो, बच्चे को जन्म देने का अधिकार है, और इस अधिकार का पवित्र सम्मान के साथ पालन किया जाना चाहिए।
— ऐसा लग रहा है जैसे आप मुझे मानवाधिकारों की घोषणा पढ़कर सुना रहे हों।
मुझे पता है मैं ज़िद कर रहा हूँ, लेकिन क्या आपको कोई अंदाज़ा है कि पिता कौन हो सकता है?
मैंने जून से किसी के साथ यौन संबंध नहीं बनाए हैं।
— तो यह एक प्रकार का पवित्र गर्भाधान है।
ये शब्द धार्मिक लोगों को नाराज कर सकते हैं।
"कोई भी असामान्य बात किसी न किसी को गुस्सा दिला सकती है," तामारू ने जवाब दिया। "लेकिन अगर आप गर्भवती हैं, तो आपको जल्द से जल्द किसी विशेषज्ञ के पास जाना चाहिए। वहां आप अपनी गर्भावस्था को पूरा नहीं कर पाएंगी।"
ओमामे ने आह भरी।
"मुझे साल के अंत तक यहीं रहने दीजिए! मैं आपको कोई परेशानी नहीं दूंगा।" तामारू कुछ देर चुप रहा, फिर बोला:
"आप साल के अंत तक वहीं रह सकते हैं, जैसा कि मैंने आपसे पहले ही वादा किया था। लेकिन उसके बाद आप हमें तुरंत आपको किसी कम खतरनाक जगह पर ले जाने दें, जहां आपको चिकित्सा सेवाएं आसानी से मिल सकेंगी। आप समझ गए होंगे, है ना?"
"मैं समझ गई," आओमामे ने जवाब दिया।
लेकिन उसे यकीन नहीं हुआ। क्या मैं टेंगो से मिले बिना यहाँ से निकल सकती हूँ? उसने सोचा।
"मैंने एक बार एक महिला को गर्भवती कर दिया था," तामारू ने कहा।
ओमामे कुछ क्षणों तक चुप रही।
"तुम? लेकिन तुम..."

"बिल्कुल सही। मैं समलैंगिक हूँ। शुरू से ही समलैंगिक। मैं हमेशा से ऐसा ही रहा हूँ, अभी भी हूँ और हमेशा ऐसा ही रहूँगा।"
"लेकिन तुमने एक गर्भवती महिला को छोड़ दिया।"
"गलतियाँ तो हर कोई करता है," उन्होंने कहा, लेकिन उनकी आवाज़ में हंसी का कोई भाव नहीं था। मैं इन सब बातों को विस्तार से बताना नहीं चाहता, पर ये मेरे बचपन में हुआ था। बस एक बार और बस! एकदम निशाने पर।
और उसने क्या किया?
- मुझें नहीं पता।
- नहीं बूझते हो?
मुझे केवल छठे महीने तक की जानकारी है। इससे आगे की नहीं।
— छह महीने बाद गर्भावस्था को समाप्त नहीं किया जा सकता है।
- हाँ मुझे पता है।
— इसलिए इस बात की बहुत अधिक संभावना है कि बच्चे का जन्म हुआ था।
- हाँ।
और अगर मान लें कि उनका जन्म हुआ है, तो क्या आप उनसे मिलना नहीं चाहेंगे? "मुझे इसमें कोई खास दिलचस्पी नहीं है," तामारू ने बिना किसी झिझक के जवाब दिया। "मैंने पहले कभी इस तरह का जीवन नहीं जिया है। आपका क्या ख्याल है? क्या आप अपने बच्चे से मिलना चाहते हैं?"
ओमामे ने कुछ पल सोचा।
मुझे भी बचपन में मेरे माता-पिता ने छोड़ दिया था और मैं यह कल्पना भी नहीं कर सकती कि बच्चा होने का क्या मतलब होता है। मुझे सही आदर्श नहीं मिला।
"हर हाल में, आप इस बच्चे को इस दुनिया में लाना चाहते हैं। इस हिंसक और विरोधाभासी दुनिया में।"
"क्योंकि मुझे प्यार चाहिए," आओमामे ने जवाब दिया। "लेकिन मेरा मतलब माँ और बच्चे के बीच के प्यार से नहीं है। मैं अभी उस स्तर तक नहीं पहुँची हूँ।"
और बच्चा भी इस प्रेम का हिस्सा है।
— हाँ। किसी न किसी रूप में।
लेकिन अगर यह पता चलता है कि आप गलत थे और बच्चे का उस तरह के प्यार से कोई लेना-देना नहीं है जिसकी आप तलाश कर रहे हैं, तो उसे कष्ट होगा, है ना? बिल्कुल वैसे ही जैसे हमें हुआ था।
"ऐसी संभावना तो है। लेकिन मुझे लगता है कि ऐसा नहीं होगा। मुझे यह सहज रूप से महसूस होता है।"
"मैं सहज प्रवृत्ति का बहुत सम्मान करता हूँ," तामारू ने कहा। "लेकिन एक बार आत्म-जागरूकता आ जाए, तो आप केवल नैतिकता के वाहक के रूप में ही जी सकते हैं। यह बात याद रखना।"
"यह किसने कहा?"
— विटजेनस्टाइन।
"मैं याद रखूंगी," आओमामे ने कहा। "अगर तुम्हारा बच्चा पैदा हुआ होता, तो अब उसकी उम्र कितनी होती?"
तामारू ने मन ही मन हिसाब लगाया।
- सत्रह साल की उम्र।

"सत्रह वर्ष की आयु," आओमामे ने दोहराया, उस आयु के एक युवक या युवती की कल्पना करते हुए जिसे नैतिकता का प्रतीक माना जाता है।
"मैं आपकी बात उन तक पहुंचा दूंगा। वह आपसे सीधे बात करना चाहते हैं, लेकिन जैसा कि मैंने कई बार कहा है, सुरक्षा कारणों से मैं इसके लिए सहमत नहीं हूं। मैं सभी तकनीकी सावधानियां बरतता हूं, लेकिन टेलीफोन फिर भी संचार का एक खतरनाक माध्यम है।"
- मुझे पता है।
"लेकिन वह इस बात से बहुत चिंतित है कि चीजें किस तरह से घटित हुई हैं और वह आपके बारे में भी चिंतित है।"
मुझे भी यही पता है। बहुत-बहुत धन्यवाद।
"उस पर भरोसा करना और उसकी सलाह मानना अच्छा है। वह बहुत बुद्धिमान व्यक्ति है।"
"बिल्कुल," आओमामे ने जवाब दिया।
लेकिन इसके अलावा, मुझे अपनी बुद्धि को तेज करना होगा और खुद को बचाना होगा। वह महिला निस्संदेह बहुत बुद्धिमान है। और वह बहुत यथार्थवादी भी है। लेकिन कुछ बातें ऐसी हैं जिनके बारे में उसे भी जानकारी नहीं है। उसे 1Q84 के काम करने के सिद्धांतों का ज्ञान नहीं है। उसने तो यह भी नहीं देखा कि आकाश में दो चंद्रमा होते हैं।
*

फोन रखने के बाद, आओमामे सोफे पर लेट गई और आधे घंटे सो गई। उसे गहरी नींद आ गई। उसने सपना देखा, लेकिन एक ऐसी जगह का सपना जहाँ कुछ भी नहीं था। उस जगह पर वह बैठी सोचती रही। उसने अपने विचारों को अदृश्य स्याही से एक सफेद कागज पर लिखा। वह एक अस्पष्ट छवि के साथ जागी, लेकिन अजीब तरह से स्पष्ट। मैं इस बच्चे को जन्म दूंगी। एक नन्हा प्राणी सुरक्षित रूप से इस दुनिया में आएगा। तामारू की परिभाषा के अनुसार, नैतिकता के अनिवार्य वाहक के रूप में।
उसने अपना हाथ अपने पेट पर रखा और सुनने लगा। अभी भी कुछ नहीं। फिलहाल के लिए।

अध्याय 12 दुनिया के नियम कमजोर पड़ने लगते हैं

नाश्ता करने के बाद, टेंगो ने स्नान किया, बाल धोए और दाढ़ी बनाई। उसने धुले हुए कपड़े पहने जिन्हें उसने सूखने के लिए बाहर रखा था। फिर वह बाहर निकला, रेलवे स्टेशन तक पैदल गया, अखबार खरीदा और पास के एक कैफे में जाकर गरमागरम काली कॉफी पी।
अखबार में ऐसा कुछ भी नहीं था जिसने उसका ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया हो। कम से कम जो उसने पढ़ा, उससे तो यही लगा कि दुनिया काफी नीरस और उबाऊ जगह है। हालांकि यह उस दिन का अखबार था, लेकिन उसे ऐसा लगा जैसे वह पिछले सप्ताह का ही अंक दोबारा पढ़ रहा हो। उसने अखबार को मोड़ा और अपनी घड़ी देखी। साढ़े नौ बज रहे थे, और अस्पताल के दौरे दस बजे शुरू होने थे।
प्रस्थान की तैयारियाँ सरल थीं। उसके पास ज़्यादा सामान नहीं था: कुछ जोड़ी कपड़े, कुछ ज़रूरी सामान, कुछ किताबें और लिखने का कागज़, बस इतना ही। सब कुछ उसके कंधे के बैग में समा गया। सामान लेकर उसने अपने कमरे का किराया चुकाया और रेलवे स्टेशन से सैनिटोरियम के लिए बस पकड़ी। सर्दी का मौसम आ चुका था। सुबह के समय कोई भी समुद्र किनारे घूमने नहीं जाता था। सैनिटोरियम के बस स्टॉप पर, टेंगो अकेला यात्री था जो बस से उतरा।
अस्पताल में प्रवेश करते ही उसने हमेशा की तरह रजिस्टर में अपना नाम और समय लिख दिया। रिसेप्शन डेस्क पर एक युवा नर्स बैठी थी, जिसे वह पहले भी कई बार देख चुका था। उसके हाथ-पैर असामान्य रूप से लंबे और पतले थे। उसके होठों पर एक मुस्कान तैर रही थी और वह किसी दयालु मकड़ी की तरह लग रही थी जो जंगल में आपका मार्गदर्शन कर रही हो। आमतौर पर चश्मा पहने अधेड़ उम्र की महिला रिसेप्शन डेस्क पर होती थी, लेकिन उस दिन वह गायब थी। तेंगो ने राहत की सांस ली। उसे यह बताने में डर लग रहा था कि उसने कुमी को पिछली रात घर छोड़ा था। उसे ओमुरा भी नहीं दिखी, जिसके बालों में कलम फंसी हुई थी। वे सब गायब हो गए थे, मानो धरती ने उन्हें निगल लिया हो। मैकबेथ की तीन चुड़ैलों की तरह।
बेशक, असल में ऐसा नहीं हुआ था। कुमी की उस दिन छुट्टी थी, लेकिन बाकी दोनों ने कहा था कि वे काम कर रही हैं। शायद वे उस समय कहीं और थीं।
टेंगो ऊपर गया, जहाँ उसके पिता की दवाइयाँ रखी थीं। उसने दो बार खटखटाया और दरवाज़ा खोला। बूढ़ा आदमी बिस्तर पर लेटा हुआ था, अभी भी बेहोश था। उसकी बांह में IV का इंजेक्शन लगा था और मूत्रमार्ग में कैथेटर था। कल से कोई बदलाव नहीं था। खिड़कियाँ बंद थीं और पर्दे लगे हुए थे। कमरे में हवा भारी थी। उसमें दवाइयों, फूलों, बीमार साँसों, मल-मूत्र और रोज़मर्रा की ज़िंदगी से आने वाली तरह-तरह की गंधें मिली हुई थीं। हालाँकि उसका जीवन कमज़ोर हो चुका था, वह बहुत पहले बेहोश हो चुका था, फिर भी उसकी बुनियादी चयापचय क्रियाएँ अपरिवर्तित थीं। वह अभी भी इस दुनिया में था और जब तक जीवित था, उससे अलग-अलग तरह की गंधें आती रहीं।
टेंगो ने सबसे पहले पर्दे हटाए और खिड़कियाँ पूरी तरह खोल दीं। सुबह सुहावनी थी और उसे ताज़ी हवा की ज़रूरत थी। बाहर हल्की ठंड थी, पर ज़्यादा सर्दी नहीं थी। सूरज की किरणें खिड़कियों से अंदर आ रही थीं और समुद्र की हवा पर्दों को फड़फड़ा रही थी। एक सीगल चीड़ के पेड़ों की कतार के ऊपर हवा के झोंकों के साथ

उड़ रही थी, उसके पैर आपस में जुड़े हुए थे। बिजली की तारों पर अव्यवस्थित ढंग से बैठी अबाबीलों का एक झुंड लगातार अपनी जगह बदल रहा था, मानो कोई संगीत की धुनें फिर से लिख रहा हो। एक विशाल चोंच वाला कौआ एक स्ट्रीट लैंप पर बैठा था और सोच रहा था कि कहाँ जाए, वह सावधानी से आसपास का जायज़ा ले रहा था। आसमान में बादल के कुछ टुकड़े तैर रहे थे, इतने ऊँचे और इतने दूर कि वे किसी ऐसी अमूर्त चीज़ की तरह लग रहे थे जिसका इंसानी मामलों से कोई लेना-देना नहीं था। अपने पिता की ओर पीठ करके, टेंगो कुछ देर खिड़की से बाहर सजीव और निर्जीव वस्तुओं को देखता रहा। जो चल रही थीं और जो स्थिर थीं। यह एक सामान्य दृश्य था, कुछ नया नहीं। क्योंकि दुनिया को आगे बढ़ना था, इसलिए वह आगे बढ़ रही थी। एक साधारण अलार्म घड़ी की तरह, वह हानिरहित रूप से अपना निर्धारित कार्य पूरा कर रही थी। टेंगो इस दुनिया को अनमने ढंग से देख रहा था, अपने पिता के चेहरे को देखने से बचने की कोशिश कर रहा था, लेकिन ज़ाहिर है, वह इसे हमेशा के लिए टाल नहीं सकता था।
अंततः उसने मन बना लिया और पलंग के बगल में रखी धातु की कुर्सी पर बैठ गया। बूढ़ा आदमी आँखें बंद किए बैठा था, उसका चेहरा ऊपर की ओर था। गर्दन तक खींचा हुआ कंबल बिल्कुल भी अस्त-व्यस्त नहीं था। उसकी आँखें धँसी हुई थीं, मानो उनका कोई हिस्सा गायब हो और वे पूरी तरह से अंदर गिर गई हों। अगर वह आँखें खोलता भी, तो उसे दुनिया किसी गड्ढे की गहराई से दिखाई देती।
“पिताजी,” टेंगो ने कहना शुरू किया।
उस आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया। अचानक हवा रुक गई और पर्दे थम से गए, मानो काम करते-करते किसी को अचानक कोई ज़रूरी बात याद आ गई हो। फिर कुछ पल बाद, वे संभल गए और धीरे-धीरे फड़फड़ाने लगे।
"मैं टोक्यो वापस जा रहा हूँ," टेंगो ने कहा। "मैं यहाँ हमेशा के लिए नहीं रह सकता, और मुझे काम की कमी अब और बर्दाश्त नहीं हो रही है। मेरी ज़िंदगी बहुत अच्छी नहीं है, लेकिन यही मेरी ज़िंदगी है।"
बूढ़े आदमी के गालों पर दो-तीन दिन की दाढ़ी के हल्के निशान थे। एक नर्स उन्हें बिजली के रेज़र से शेव करती थी, लेकिन हर दिन नहीं। सफेद बाल काले बालों के साथ मिले हुए थे। उनकी उम्र केवल चौंसठ वर्ष थी, लेकिन वे बहुत बूढ़े दिखते थे, मानो किसी ने गलती से उनके जीवन की फिल्म को अंत तक घुमा दिया हो। "मेरे यहाँ रहने के दौरान आप पूरी तरह से ठीक नहीं हुए। लेकिन डॉक्टर का कहना है कि आपका शरीर उतना कमजोर नहीं है। वास्तव में, आश्चर्यजनक रूप से, यह लगभग स्वस्थ है।"
टेंगो कुछ देर रुका, ताकि उस व्यक्ति को उसकी बात समझने का समय मिल सके।
मुझे नहीं पता कि आप मुझे सुन पा रहे हैं या नहीं। शायद मेरी आवाज़ आपके कानों तक पहुँचती है, लेकिन वहाँ से संचार रुक जाता है। या शायद मेरे शब्द आपकी चेतना तक पहुँचते हैं, लेकिन आप उन पर प्रतिक्रिया नहीं दे पाते। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा। अब तक मैंने आपसे बात की है और आपको पढ़कर सुनाया है, यह मानकर कि आप मुझे सुन सकते हैं। अन्यथा ऐसा करने का कोई मतलब नहीं था, और अगर मैं आपसे बात नहीं कर रहा होता तो मेरे यहाँ होने का भी कोई मतलब नहीं होता। और मैं इसका कारण नहीं बता सकता, लेकिन मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि आपने मुझ पर कोई प्रतिक्रिया दी है। मेरे शब्द आप तक पहुँचे हैं, भले ही पूरी तरह से नहीं, लेकिन कम से कम उनका सार तो ज़रूर।

कोई प्रतिक्रिया नहीं।
"हो सकता है कि जो मैं अब आपको बताने जा रहा हूँ, वह आपको बेतुका लगे। लेकिन मैं टोक्यो वापस जा रहा हूँ और मुझे नहीं पता कि मैं यहाँ कब दोबारा आ पाऊँगा। इसलिए मैं अभी आपको अपनी बात बता देता हूँ। अगर आपको यह बेतुका लगे, तो आप बेझिझक मुझ पर हंस सकते हैं। बेशक, यह तभी संभव है जब आप हंसने में सक्षम हों।" टेंगो ने गहरी सांस ली और अपने पिता की ओर देखा। उनके चेहरे पर अभी भी कोई प्रतिक्रिया नहीं थी।
— आपका शरीर कोमा में है। आपने अपनी इंद्रियाँ और चेतना खो दी है और आप एक मशीन की तरह काम कर रहे हैं, केवल उन बुनियादी प्रणालियों के सहारे जो आपके जीवन को सहारा देती हैं। आप एक जीवित लाश हैं, डॉक्टर ने यही कहा, बेशक थोड़ा घुमा-फिराकर। चिकित्सकीय दृष्टि से, शायद स्थिति ऐसी ही है, लेकिन यह केवल एक आभास है। शायद आपने वास्तव में अपनी चेतना नहीं खोई है, बल्कि वह कहीं और चली गई है और जीवित है, भले ही आपका शरीर कोमा में है। मुझे यही लगता रहा है कि मैं इतने समय से यही महसूस कर रहा हूँ। बेशक, यह निराधार संदेह मात्र है।
मौन।
"मैं भली-भांति जानता हूँ कि यह एक अतिरंजित अनुमान है। अगर मैं किसी को यह बताऊँ, तो वे कहेंगे कि यह कोरी कल्पना है। लेकिन मैं इसके अलावा कुछ और सोच ही नहीं सकता। आपने इस दुनिया में अपनी सारी रुचि खो दी होगी। हताश और निराश होकर, आपने रुचि खो दी है, और इसलिए आपने अपना वास्तविक शरीर त्याग दिया है और किसी दूसरी जगह चले गए हैं, जहाँ आप एक अलग जीवन जी रहे हैं। शायद एक ऐसी दुनिया में जो आपके भीतर ही है।"
सन्नाटा छाया हुआ है।
"मैंने नौकरी छोड़कर इस शहर में आने का फैसला किया और तब से मैं आपसे मिलने और बात करने के लिए हर रोज आता-जाता रहता हूँ। लगभग दो हफ्ते हो गए हैं। लेकिन सच तो यह है कि मैं यहाँ सिर्फ आपकी देखभाल करने के लिए नहीं आया हूँ। मैं यह जानना चाहता था कि मैं कहाँ से आया हूँ और मेरे खून में किस तरह का खून बहता है। लेकिन अब मुझे इन बातों की परवाह नहीं है। चाहे आपका मुझसे खून का रिश्ता हो या न हो, मैं मैं हूँ। और आप मेरे पिता हैं। मैंने सोचा, ठीक है। मुझे नहीं पता कि यह हमारे बीच सुलह है या शायद मैंने खुद से समझौता कर लिया है, शायद यही सब कुछ है।"
टेंगो ने गहरी सांस ली। उसकी आवाज थोड़ी धीमी हो गई।
"गर्मियों में तुम होश में थे। तुम्हारा दिमाग काफी उलझन में था, लेकिन काम कर रहा था। तब इसी कमरे में मेरी मुलाकात एक लड़की से हुई थी। तुम्हारे परीक्षण के बाद, वह यहाँ आई थी। शायद वह उसकी ही कोई दूसरी परछाई थी। मैं इतने लंबे समय तक इस शहर में इसलिए रुका रहा क्योंकि मुझे उससे दोबारा मिलने की उम्मीद थी। यही असली वजह है कि मैं यहाँ हूँ।"
टेंगो ने आह भरी और अपने हाथ घुटनों पर रख लिए।
"लेकिन वह फिर कभी प्रकट नहीं हुई। उसे यहाँ एक वायु परकोटे नामक वस्तु में लाया गया था, एक कैप्सूल जिसमें उसे रखा जाता है। इसे विस्तार से समझाना बहुत लंबा होगा, लेकिन वायु परकोटा एक काल्पनिक वस्तु है, कल्पना की उपज है। लेकिन अब यह काल्पनिक नहीं रह गया है। वास्तविक और काल्पनिक दुनिया के बीच की

सीमाएँ धुंधली होने लगी हैं। आकाश में दो चंद्रमा हैं। और यह भी कल्पना की दुनिया से आया है।"
टेंगो ने बूढ़े आदमी की ओर देखा। क्या वह उसका पीछा कर सकता था?
— तो, इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, मुझे ज़रा भी आश्चर्य नहीं होता कि आप अपना शरीर त्यागकर किसी दूसरी दुनिया में चले गए, जहाँ आप आज़ादी से घूम सकते हैं। आप कह सकते हैं कि दुनिया के नियम ढीले पड़ने लगे हैं। जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया था, मुझे अजीब सा एहसास हो रहा है कि आपने सचमुच ऐसा किया है। उदाहरण के लिए, आप कोएंजी में मेरे घर गए और दरवाज़ा खटखटाया। आप जानते ही हैं ना? एनएचके के टोल वसूलने वाले ज़ोर-ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाते हैं और सीढ़ियों पर खड़े होकर तरह-तरह की धमकियाँ देते हैं। ठीक वैसे ही जैसे हम पुराने ज़माने में इचिकावा की टोल सड़कों पर पैदल चलते समय किया करते थे। कमरे में हवा का दबाव थोड़ा बदल गया था। खिड़कियाँ खुली थीं, लेकिन बाहर से कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। कभी-कभार केवल गौरैयों की चहचहाहट सुनाई दे रही थी। टोक्यो में मेरे घर पर एक लड़की है। वो मेरी प्रेमिका नहीं है। कुछ हुआ है और वो कुछ दिनों से वहाँ छिपी हुई है। कुछ दिन पहले उसने मुझे फोन पर एनएचके के एक कैशियर के बारे में बताया। उसने कैसे दरवाजा खटखटाया, क्या कहा और क्या किया। ये सब कुछ तुम्हारे किए-कहे तरीकों से अजीब तरह से मिलता-जुलता था। उसने जो सुना, वो बिल्कुल वही था जो मुझे याद है कि तुम कहते थे। वही शब्द जिन्हें मैं भूलना चाहता हूँ। मुझे हैरानी होती है कि क्या तुमने उनके दरवाजे पर दस्तक दी थी। क्या मैं गलत हूँ?
टेंगो आधे मिनट के लिए रुका। लेकिन बूढ़े आदमी ने पलक भी नहीं झपकाई।
मैं बस इतना चाहती हूँ कि तुम फिर कभी मेरे दरवाजे पर दस्तक मत देना। मेरे पास टीवी नहीं है। और वो दिन भी बीत गए जब हम सड़कों पर घूम-घूमकर टैक्स वसूलते थे। मुझे उम्मीद है कि अब तक हम इस बात पर सहमत हो गए होंगे। जब तुमने उस टीचर से बात की थी... मुझे उसका नाम याद नहीं आ रहा, वो चश्मा पहनने वाली छोटी सी टीचर। तुम्हें याद है ना? तो कृपया मेरे दरवाजे पर दस्तक मत देना। और सिर्फ मेरे ही नहीं। लोगों के दरवाजे खटखटाना बंद करो। तुम टैक्स वसूलने वाले नहीं हो और तुम्हें लोगों को डराने का कोई हक नहीं है।
टेंगो अपनी कुर्सी से उठा, खिड़की के पास गया और बाहर देखने लगा। एक बूढ़ा आदमी छड़ी और मोटे स्वेटर के सहारे चीड़ के पेड़ों के बीच से गुजर रहा था। वह चल रहा होगा। उसके बाल सफेद थे, वह लंबा था और सीधा खड़ा था, लेकिन उसके पैर मुश्किल से चल रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे वह चलना भूल गया हो, और वह हर कदम ऐसे उठा रहा था जैसे याद करने की कोशिश कर रहा हो। टेंगो कुछ देर तक उसे देखता रहा। बूढ़ा आदमी आंगन पार करके इमारत के कोने में गायब हो गया, लेकिन उसे चलना याद नहीं आ रहा था। तब टेंगो अपने पिता की ओर मुड़ा।
मैं आपको किसी बात के लिए दोषी नहीं ठहराता। आपको अपनी आत्मा के साथ जो चाहें करने का, उसे जहाँ चाहें भेजने का पूरा अधिकार है। यह आपका जीवन है, यह आपकी आत्मा है। जो आपको सही लगे, वही करें। शायद मुझे आपको ये बातें बताने का अधिकार नहीं है। लेकिन अब आप एनएचके में कर संग्रहकर्ता नहीं हैं। इसलिए दिखावा करना बंद करें, क्योंकि इससे आपको कोई फायदा नहीं होगा।
टेंगो खिड़की की चौखट पर बैठा था, अस्पताल के शांत वातावरण में अपने शब्दों को खोजने की कोशिश कर रहा था।

मुझे ठीक से नहीं पता कि आपने कैसा जीवन जिया है, किस तरह के दुख और किस तरह के सुख देखे हैं। लेकिन अगर आपके मन में कुछ कमियां हैं, तो जान लीजिए कि लोगों के दरवाजे खटखटाने से उनका समाधान नहीं होगा। भले ही यह आपके लिए कोई जानी- पहचानी जगह हो, भले ही यह आपका सबसे अच्छा काम हो।
टेंगो चुप हो गया और अपने पिता की ओर देखने लगा।
"किसी के दरवाजे पर दस्तक देना बंद करो। बस यही मेरी गुजारिश है। मुझे जाना होगा। मैं हर दिन तुम्हारे पास आता था, तुमसे बातें करता था और तुम्हें पढ़कर सुनाता था। और कुछ हद तक, हमारे बीच सुलह भी हो गई थी। ये सब यहीं, इस दुनिया में हुआ है। तुम्हें शायद ये पसंद न आए, लेकिन बेहतर होगा अगर तुम यहीं वापस आ जाओ। यही तुम्हारी असली जगह है।"
टेंगो ने अपना बैग उठाया और उसे अपने कंधे पर टांग लिया।
- मैं जा रहा हूं।
वह व्यक्ति हमेशा की तरह आंखें बंद करके, बिना हिले-डुले चुपचाप बैठा रहा। हालांकि, ऐसा लग रहा था कि वह कुछ सोच रहा है। टेंगो ने अपनी सांस रोक ली और उसकी हर हरकत पर पूरा ध्यान देने की कोशिश की। उसे ऐसा लग रहा था कि उसके पिता अचानक आंखें खोलकर खड़े हो जाएंगे। लेकिन कुछ नहीं हुआ।
मकड़ी जैसे पतले हाथों और पैरों वाली नर्स अभी भी रिसेप्शन पर बैठी थी। उसकी छाती पर लगे प्लास्टिक के बैज पर तमाकी लिखा था।
"मैं टोक्यो वापस जा रहा हूँ," टेंगो ने घोषणा की।
"यह बहुत दुख की बात है कि आपके पिता आपके यहाँ रहते हुए ठीक नहीं हो पाए," उसने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा। "लेकिन मुझे यकीन है कि उन्हें खुशी हुई होगी कि आपने उनके साथ इतना समय बिताया।"
टेंगो को समझ नहीं आ रहा कि क्या जवाब दे।
"बाकी नर्सों को मेरा प्रणाम कहना। आपकी मदद के लिए धन्यवाद।"
अंत में, वह तामुरा या ओमुरा से नहीं मिला, वह ओमुरा जिसके बड़े स्तन थे और जिसके बालों में कलम फंसी हुई थी। उसे उस पर दया आई। वे योग्य नर्सें थीं और उसके साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया था। लेकिन शायद जाने से पहले उनसे न मिलना ही बेहतर था, क्योंकि आखिरकार, अब वह जो करने की कोशिश कर रहा था, वह था बिल्लियों के शहर से अकेले भाग निकलना।
*

जैसे ही ट्रेन चिकुरा स्टेशन से निकली, तेंगो को कुमी के घर बिताई रात याद आ गई। पिछली रात जो हुआ था, वो सब कुछ था। असुविधाजनक सोफा, टिफ़नी का लैंप, बगल वाले अपार्टमेंट से आती टीवी की हंसी। उल्लू की चीखें, गांजे का धुआं, मुस्कुराती हुई ब्लाउज, और उसके पैर से चिपके गुप्तांग के बाल। हालांकि तब से एक दिन भी नहीं बीता था, फिर भी सब कुछ दूर अतीत की बातें लग रही थीं। उसके मन में दूर और पास का अंतर अब स्पष्ट नहीं रह गया था। एक अस्थिर तराजू की तरह, उन घटनाओं का सार संतुलन नहीं पा पा रहा था।
अचानक तेंगो को बेचैनी महसूस हुई और उसने चारों ओर देखा। क्या यह सचमुच असली दुनिया थी? क्या वह किसी गलत दुनिया में आ गया था? उसने एक दूसरे यात्री से पूछा कि क्या वे सही ट्रेन में हैं। कोई बात नहीं, उसे चिंता करने की ज़रूरत नहीं थी। तातेयामा से वह टोक्यो जाने वाली एक्सप्रेस ट्रेन पकड़ेगा। वह बिल्लियों के शहर को पीछे छोड़ रहा था।

दूसरी ट्रेन में चढ़कर वह बैठ गया और एक ऐसी नींद में डूब गया जिसका उसे लंबे समय से इंतज़ार था, मानो वह किसी अंधेरे, अथाह गड्ढे में गिर गया हो। उसकी पलकें अपने आप बंद हो गईं और अगले ही पल वह बेहोश हो गया। जब उसकी नींद खुली, तब तक वे मकुहारी को पार कर चुके थे। डिब्बे में ज़्यादा गर्मी नहीं थी, लेकिन तेंगो के बगल से पसीना बह रहा था। उसकी सांसों से एक अप्रिय गंध आ रही थी, जैसे उसके पिता के अस्पताल के कमरे की सीलन भरी बदबू। उसने अपनी जेब से च्युइंग गम का एक टुकड़ा निकाला और उसे अपने मुंह में डाल लिया।
टेंगो ने सोचा, "शायद मैं उन जगहों पर वापस नहीं जाऊँगा। कम से कम जब तक मेरे पिता जीवित हैं, तब तक तो नहीं। बेशक, दुनिया में कुछ भी सौ प्रतिशत सुरक्षित नहीं है, लेकिन उस समुद्रतटीय शहर में वह कुछ नहीं कर सकते थे।"
*

जब वह घर पहुँचा, तो फुकाएरी वहाँ नहीं थी। उसने दरवाज़े पर तीन बार दस्तक दी, थोड़ी देर रुका और फिर दो बार दस्तक दी। फिर उसने ताला खोला। अंदर सन्नाटा था और आश्चर्यजनक रूप से साफ़-सुथरा था। बर्तन अलमारी में रखे थे, मेज और डेस्क व्यवस्थित थे, कूड़ेदान खाली था। कमरे में वैक्यूम क्लीनर से सफाई की गई थी और बिस्तर लगा हुआ था। कोई किताबें या रिकॉर्ड इधर-उधर नहीं पड़े थे। धुले हुए कपड़े करीने से तह करके बिस्तर पर रखे थे।
फुकेरी के पास जो इकलौती चीज़ थी, उसका बड़ा सा कैनवास का थैला, वो कहीं नज़र नहीं आ रहा था। लेकिन ऐसा कोई संकेत नहीं था कि वो अचानक चली गई हो, या कोई घटना घटी हो और उसे जल्दी में जाना पड़ा हो। और ऐसा भी नहीं लग रहा था कि वो कुछ समय के लिए गायब हुई है। उसने जाने का फैसला किया, धीरे-धीरे सफाई की, और फिर बड़ी मुश्किल से वापस लौटी। तेंगो ने फुकेरी को अकेले, वैक्यूम क्लीनर से सफाई और कपड़े से धूल झाड़ते हुए कल्पना की। ये मुद्रा उस पर बिल्कुल भी जंचती नहीं थी।
मेलबॉक्स में उसे अतिरिक्त चाबी मिली। मेलबॉक्स में मौजूद ढेरों चिट्ठियों को देखकर टेंगो ने अनुमान लगाया कि लड़की एक-दो दिन पहले चली गई थी। उनकी आखिरी फोन पर बात परसों सुबह हुई थी और वह तब भी उसके साथ ही थी। वह पिछली रात नर्सों के साथ बाहर गई थी, कुमी के घर पर उसे बुलाया गया था और फुकाएरी को फोन करने का समय नहीं मिला था।
ऐसी स्थितियों में, फुकाएरी अपनी वर्गाकार, कीलाकार लिपि में एक नोट छोड़ जाती थी, लेकिन तेंगो को कहीं कुछ नहीं मिलता था। वह चुपचाप चली गई थी। लेकिन तेंगो को ज़्यादा आश्चर्य होने की ज़रूरत नहीं थी। कोई भी यह अनुमान नहीं लगा सकता था कि फुकाएरी क्या सोच रही है या क्या करेगी। जब वह आना चाहती, तो वह मिल जाती, और जब वह जाना चाहती, तो गायब हो जाती। वह एक चंचल और स्वतंत्र बिल्ली की तरह थी। इसके विपरीत, यह अजीब था कि वह इतने लंबे समय तक एक ही जगह पर रुकी रही।
उसे फ्रिज में उम्मीद से ज़्यादा खाना मिला। इसमें कोई शक नहीं कि फुकाएरी कुछ दिन पहले खरीदारी करने गया था। उसे उबली हुई फूलगोभी का ढेर मिला। देखने से लग रहा था कि इसे ज़्यादा देर तक पकाया नहीं गया था। क्या उसे पता था कि तेंगो जल्द ही टोक्यो लौट रहा है? तेंगो को भूख लगी थी, इसलिए उसने कुछ अंडे तले और फूलगोभी के साथ खा लिए। उसने टोस्ट का एक टुकड़ा बनाया और दो कप कॉफी पी।

फिर उन्होंने उस दोस्त को फोन किया जो कक्षाओं में उनकी जगह ले रहा था और उसे बताया कि वह सप्ताह की शुरुआत से काम पर लौट सकता है। दूसरे दोस्त ने उन्हें बताया कि शिक्षण में वह कहाँ तक पहुँचा है।
"आपने मेरी बहुत मदद की, मैं आपका ऋणी रहूंगा," टेंगो ने उन्हें धन्यवाद दिया।
मुझे पढ़ाना नापसंद नहीं है। कभी-कभी मुझे यह बहुत दिलचस्प लगता है, लेकिन अगर मैं इसे बहुत ज्यादा करने लगूं, तो मैं खुद को पहचानने में असमर्थ होने लगती हूं, ऐसा लगता है जैसे मैं एक अलग ही इंसान में बदल रही हूं।
और टेंगो को भी लगभग हर दिन यही महसूस होता था।
"क्या मेरे अनुपस्थित रहने के दौरान कुछ खास हुआ?"
"नहीं, कुछ नहीं। ओह, आपके लिए एक पत्र आया था, मैंने उसे ले लिया। मैंने उसे डेस्क की दराज में रख दिया है।"
"पत्र?" टेंगो ने पूछा। किसका?
"सीधे, कंधे तक लंबे बालों वाली एक दुबली-पतली लड़की ने मुझसे संपर्क किया और कहा कि मैं तुम्हें यह पत्र दे दूं। उसकी बोलने का तरीका कुछ अजीब था, शायद वह विदेशी थी।"
क्या उसके पास एक बड़ा कंधे वाला बैग था?
"हां, एक हरा वाला। बिल्कुल भरा हुआ।"
इसका मतलब है कि वह घर पर नोट छोड़ने से डर रहा था, कहीं कोई उसे पढ़ न ले या ले न ले। इसलिए वह तैयारी स्कूल गया और सीधे अपने दोस्त को नोट सौंप दिया। टेंगो ने उसे फिर से धन्यवाद दिया और फोन रख दिया। काफी देर हो चुकी थी और अब उसे योयोगी जाकर अपना पत्र लेने के लिए ट्रेन से जाने का मन नहीं था। वह यह काम कल कर सकता था।
फिर उसे याद आया कि वह अपने दोस्त से चाँद के बारे में पूछना भूल गया था। वह उसे दोबारा फोन करने ही वाला था, लेकिन फिर उसने अपना इरादा बदल दिया। शायद वह इस कहानी के बारे में भूल ही गया था। आखिर यह तो उसे खुद ही सुलझाना था।
*

टेंगो घर से निकलकर गलियों में बेतरतीब ढंग से घूमने लगा। फुकाएरी के बिना अपार्टमेंट बहुत शांत लग रहा था और उसे चैन नहीं मिल रहा था। जब तक वह उसके साथ रहती थी, टेंगो को कोई फर्क महसूस नहीं हुआ था। वह अपनी जिंदगी पहले की तरह जी रहा था और फुकाएरी अपने काम में लगी हुई थी। लेकिन अब जब वह चली गई थी, टेंगो ने महसूस किया कि वह अपने पीछे एक बड़ा खालीपन छोड़ गई है।
फुकेरी की तरफ उसका कोई आकर्षण नहीं था। वह बेशक खूबसूरत और मोहक लड़की थी, लेकिन उससे मिलने के बाद से उसे उसके प्रति कोई यौन आकर्षण महसूस नहीं हुआ था। एक ही छत के नीचे इतना समय बिताने के बाद भी उसे कुछ खास महसूस नहीं हुआ था। तो आखिर बात क्या थी? फुकेरी की तरफ मेरा आकर्षण क्यों नहीं हो रहा था? तेंगो सोच रहा था। यह सच था कि उस तूफानी रात में वे एक-दूसरे के करीब आए थे, लेकिन यह उसकी इच्छा नहीं थी, बल्कि फुकेरी की इच्छा थी।
"साथ" शब्द बिल्कुल सही था। वह लकवाग्रस्त और बेबस था, और फुकेरी उसके ऊपर चढ़ गई और उसके खड़े लिंग को अपने अंदर डाल लिया। ऐसा लग रहा था मानो उसने खुद को पूरी तरह से उसके हवाले कर दिया हो। वह किसी सपने की परी जैसी लग रही थी।
उस रात के बाद, वे उस छोटे से अपार्टमेंट में ऐसे ही अपनी ज़िंदगी जीने लगे जैसे कुछ हुआ ही न हो, मानो फुकाएरी तूफान थमते ही और आसमान साफ होते ही सब कुछ

भूल गया हो। तेंगो को इस विषय पर बात करने की कोई इच्छा नहीं थी। शायद बेहतर होता अगर वह भी भूल गया होता। लेकिन ज़ाहिर है उसके मन में अभी भी कुछ सवाल थे। फुकाएरी ने अचानक ऐसा क्यों किया? क्या उसका कोई खास मकसद था, या यह महज़ कुछ समय के लिए पागलपन का नतीजा था?
टेंगो को बस इतना समझ आया कि यह प्रेम का कृत्य नहीं था। वह फुकाएरी को पसंद करता था, उसे इस बात का पूरा यकीन था। लेकिन यह प्रेम, यौन आकर्षण या ऐसा कुछ भी नहीं हो सकता था। फुकाएरी को किसी के लिए कोई चाहत नहीं होती थी। लोगों को परखने की अपनी क्षमता पर टेंगो को ज्यादा भरोसा नहीं था, लेकिन वह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि फुकाएरी किसी पुरुष के साथ भावुक प्रेम करे और उसके कान में गर्म सांसें फूंकती रहे। वह तो उसके लिए एक सभ्य यौन क्रिया करने की कल्पना भी नहीं कर सकता था। उसमें इतनी क्षमता ही नहीं थी।
टेंगो कोएंजी में घूमते हुए इन बातों पर बार-बार विचार कर रहा था। शाम ढल रही थी और ठंडी हवा चलने लगी थी, लेकिन उसे इससे ज़्यादा फ़र्क नहीं पड़ा। वह अक्सर अपने विचारों में खोया हुआ घूमता रहता था। फिर घर पहुँचकर अपनी मेज़ पर बैठता और इन विचारों को आकार देता। यह उसकी नियमित आदत बन गई थी, इसलिए वह अक्सर घूमता रहता था, चाहे बारिश हो या तेज़ हवा। चलते-चलते वह "ईयर ऑफ़ व्हीट" पब के पास पहुँचा। उसके पास करने को कुछ और नहीं था, इसलिए वह अंदर गया और कार्ल्सबर्ग का एक पिंट ऑर्डर किया। पब अभी-अभी खुला था और अंदर कोई ग्राहक नहीं था। टेंगो ने अपने मन से सारी चिंताएँ दूर कर लीं और आराम से अपनी बियर का घूंट लिया।
लेकिन वह अपने विचारों को ज़्यादा देर तक नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता था। जैसे प्रकृति को खालीपन पसंद नहीं होता, वैसे ही उसका मन बार-बार फुकेरी की ओर मुड़ता रहता था। सपनों के टुकड़ों की तरह, वह बार-बार उसके विचारों में आ जाती थी।
वह शायद आस-पास ही हो। तुम पैदल चलकर वहाँ जा सकते हो, फुकेरी ने उससे कहा था। इसीलिए वह उसे ढूंढने शहर गया था। फिर वह उस जगह पर आ गया। फुकेरी ने उसे और क्या बताया था?
चिंता मत करो। वह तुम्हें ढूंढ लेगी।
जब वह आओमामे को ढूंढ रहा था, तब वह टेंगो को ढूंढ रही थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि यह सब कैसे होता है। वह आओमामे को ढूंढने में इतना मग्न था कि उसे कभी यह ख्याल ही नहीं आया कि वह भी ऐसा ही कर सकती है।
मैं देखने वाली हूँ, तुम ग्रहण करने वाले हो, उसने उससे कहा था। वह देखती थी, और टेंगो ग्रहण करता था। लेकिन फुकाएरी केवल तभी अपनी देखी हुई बातें प्रकट करती थी जब उसका मन करता था। टेंगो को यह नहीं पता था कि फुकाएरी कुछ नियमों का पालन कर रही थी जो केवल उसे ही पता थे या वह बस मनमौजी थी।
*

उसे फिर से उनके बीच का यौन संबंध याद आ गया। सत्रह साल की वह खूबसूरत लड़की उसके ऊपर चढ़ गई थी और उसने उसके कड़े लिंग को पूरी तरह अंदर तक डाल दिया था। उसके बड़े स्तन पके फलों की तरह हवा में धीरे-धीरे कांप रहे थे। खोई हुई सी, उसने अपनी आँखें बंद कर ली थीं और उसकी नाक के नथुने फड़क रहे थे। उसके होठों पर ऐसे शब्द बन रहे थे जो शब्द नहीं थे। उसके सफेद दांत और कभी-कभी उसकी गुलाबी जीभ दिखाई दे रही थी। टेंगो को ये दृश्य स्पष्ट रूप से याद थे। उसका

[illegible]

अध्याय 13 क्या शून्य पर वापस जाने का यही अर्थ है?

उशिकावा की शक्ल-सूरत ने सबका ध्यान खींचा। वह निगरानी या जासूसी के लिए बिलकुल भी उपयुक्त नहीं था। चाहे वह भीड़ में घुलमिल जाने की कितनी भी कोशिश करता, वह दही के कप में रखे तीतर जैसा दिखता था।
उनका परिवार ऐसा नहीं था। उशिकावा के माता-पिता, दो भाई और एक बहन थी। उनके पिता एक मेडिकल क्लिनिक चलाते थे और उनकी माता लेखा-जोखा रखती थीं। दोनों भाइयों ने चिकित्सा क्षेत्र में असाधारण सफलता प्राप्त की और डॉक्टर बन गए। बड़ा भाई टोक्यो के एक अस्पताल में काम करता था और छोटा भाई विश्वविद्यालय में शोध कार्य करने के लिए रुका रहा। जब उनके पिता सेवानिवृत्त हुए, तो बड़े भाई ने उरावा स्थित क्लिनिक का प्रबंधन संभाल लिया। दोनों विवाहित थे और दोनों के एक-एक बच्चा था। उनकी छोटी बहन अमेरिका में पढ़ाई करने गई थी और अब वह देश लौट आई थी और एक साथ अनुवादक के रूप में काम कर रही थी। वह पैंतीस वर्ष की थी, लेकिन अभी भी अविवाहित थी। वे सभी लंबे, पतले और अंडाकार चेहरे वाले थे, जिनमें नियमित नैन-नक्श थे।
हर तरह से, और विशेष रूप से दिखावट में, उशिकावा अपवाद था। वह कद में छोटा था, उसका सिर बड़ा और बेढंगा था, और बाल बिखरे हुए थे। उसकी टांगें छोटी और खीरे जैसी टेढ़ी थीं। उसकी आँखें मानो डरी हुई हों, जैसे सॉकेट से बाहर निकली हुई हों, और उसकी गर्दन के चारों ओर चर्बी की एक असामान्य परत थी। उसकी बड़ी, घनी भौहें मानो आपस में टकराने वाली थीं। वे दो मोटे इल्लियों की तरह दिखती थीं जो एक-दूसरे को खींच रही हों। स्कूल में उसके आम तौर पर अच्छे अंक आते थे, लेकिन कुछ विषयों में वह अनियमित था, और शारीरिक शिक्षा में तो उसका प्रदर्शन बिल्कुल भी अच्छा नहीं था।
उस संभ्रांत, धनी और आत्ममुग्ध परिवार में वह एक अजनबी था। वह एक ऐसा बेमेल स्वर था जिसने सामंजस्य को भंग कर दिया और असामंजस्य पैदा कर दिया। पारिवारिक तस्वीरों में वह अकेला ऐसा व्यक्ति था जिसका वहाँ कोई स्थान नहीं था। वह एक लापरवाह अजनबी जैसा दिखता था जो गलती से दूसरों के बीच आ गया हो और अनायास ही तस्वीर में कैद हो गया हो।
परिवार के बाकी सदस्य एक पल के लिए भी यह नहीं समझ पाए कि उनसे बिल्कुल अलग दिखने वाला एक व्यक्ति उनके बीच कैसे आ गया। लेकिन वह निस्संदेह वही बच्चा था जिसे उसकी माँ ने प्रसव पीड़ा सहते हुए जन्म दिया था (जैसा कि उसे याद था, वह असहनीय पीड़ा थी)। किसी ने उसे टोकरी में डालकर उनके दरवाजे पर नहीं छोड़ा था। हालांकि, किसी समय किसी को याद आया कि उसके पिता के रिश्तेदारों में एक और व्यक्ति था जिसका सिर विकृत था। वह उसके दादा का चचेरा भाई था। वह टोक्यो के कोटो क्षेत्र में एक धातु कारखाने में काम करता था, लेकिन 1945 की वसंत ऋतु में हुए भीषण हवाई हमले में युद्ध के दौरान उसकी मृत्यु हो गई थी। उसके पिता उसे नहीं जानते थे, लेकिन उनके पास एक पुराने पारिवारिक एल्बम में उसकी तस्वीर थी। उस तस्वीर को देखकर पूरा परिवार एक साथ चिल्लाया: "अहा!" उनके पिता का वह चाचा आश्चर्यजनक रूप से उशिकावा जैसा दिखता था। वे दो बूंदों की तरह थे, मानो उनका पुनर्जन्म हुआ हो। शायद वही आनुवंशिक कारक अचानक फिर से प्रकट हो गए थे, न जाने किस कारण से।

अगर वह न होता, तो सैतामा प्रांत के उरावा शहर में रहने वाला उशिकावा परिवार, दिखावट और पढ़ाई दोनों में बेदाग होता। एक ऐसा परिवार जो देखने में आकर्षक और प्रतिभाशाली था, जिस पर हर कोई ईर्ष्या करता। लेकिन उशिकावा के परिवार में होने से लोग भौंहें चढ़ाते और सिर हिलाते थे। लोगों को शक होता था कि कहीं इस परिवार में कोई ऐसा धोखेबाज तो नहीं है जो सुंदरता की देवी को रोक रहा हो। या कम से कम माता-पिता को यही लगता था कि दुनिया यही सोचती है। इसीलिए उन्होंने उशिकावा को लोगों की नजरों से दूर रखने की हर संभव कोशिश की। जब उनके पास कोई चारा नहीं बचा, तो उन्होंने खुद पर ध्यान आकर्षित न करने का भी पूरा ध्यान रखा (जो कि ज़ाहिर है, एक बेकार कोशिश थी)।
फिर भी, उशिकावा को इस स्थिति में होने से ज़रा भी दुख नहीं हुआ, न ही उसे उदासी या अकेलापन महसूस हुआ। इसके विपरीत, वह लोगों के सामने दिखावा भी नहीं करना चाहता था और यहाँ तक कि इसी तरह का व्यवहार पसंद करता था। उसके भाई-बहन उससे ऐसे पेश आते थे मानो उसका कोई अस्तित्व ही न हो, लेकिन उसे इसकी भी परवाह नहीं थी, क्योंकि ज़रूरी नहीं कि वह उन्हें पसंद भी करता हो। वे सुंदर थे, पढ़ाई में अच्छे थे, खेलों में माहिर थे और उनके बहुत सारे दोस्त थे। लेकिन उसकी नज़र में, वे बेहद सतही थे। उनकी सोच संकीर्ण और कल्पनाहीन थी और उन्हें सिर्फ़ इस बात की फ़िक्र थी कि दुनिया उन्हें कैसे देखती है। उनमें वह स्वस्थ संशयवाद नहीं था जो बुद्धि को विकसित करने में सहायक होता है।
एक चिकित्सक के रूप में, उनके पिता इलाके के शीर्ष चिकित्सकों में गिने जाते थे, लेकिन वे बेहद उबाऊ व्यक्ति थे। उस पौराणिक राजा की तरह जो हर चीज़ को सोने में बदल देता था, उनके होंठों से निकला हर शब्द सूखी रेत के कण में तब्दील हो जाता था, लेकिन कम बोलने की कोशिश करके, हालांकि शायद उन्होंने जानबूझकर ऐसा नहीं किया, वे अपनी उबाऊपन और संकीर्णता को बड़ी कुशलता से छिपा लेते थे। उनके विपरीत, उनकी माँ बातूनी और बेहद घमंडी थीं। उन्हें पैसे की बहुत परवाह थी, वे स्वार्थी और अभिमानी थीं, दिखावे की शौकीन थीं और अपनी तीखी आवाज़ में किसी की बुराई करने का कोई मौका नहीं छोड़ती थीं। बड़े भाई को अपने पिता का स्वभाव विरासत में मिला था, और छोटे भाई को अपनी माँ का। बहन बहुत स्वतंत्र थी, लेकिन गैर-जिम्मेदार, उसमें दया का कोई नामोनिशान नहीं था और वह केवल अपने हितों के बारे में सोचती थी। परिवार में सबसे छोटी होने के कारण, उसे उसके माता-पिता ने बहुत लाड़-प्यार दिया था।
इसीलिए उशिकावा ने अपना अधिकांश किशोरावस्था अकेले ही बिताया। स्कूल से घर आने पर वे अपने कमरे में बंद होकर पढ़ते थे। अपने कुत्ते के अलावा उनका कोई दोस्त नहीं था, इसलिए उन्हें किसी से बहस करने या अपना ज्ञान साझा करने का अवसर नहीं मिला, लेकिन वे भली-भांति जानते थे कि उनमें तार्किक और स्पष्ट सोच की क्षमता है और भाषण देने की प्रतिभा भी है। उन्होंने धैर्यपूर्वक अकेले ही इन प्रतिभाओं को निखारा। उदाहरण के लिए, वे एक कथन प्रस्तावित करते और उस विषय पर स्वयं ही बहस करते, दोनों भूमिकाएँ निभाते। एक ओर वे कथन का बचाव करते, उसके पक्ष में प्रभावशाली ढंग से बोलते, और दूसरी ओर वे उस पर आक्रमण करते और उतनी ही दृढ़ता से उसका विरोध करते। वे दोनों पक्षों पर समान शक्ति और ईमानदारी के साथ खड़े होने और समान रूप से शामिल होने में सफल रहे। इस प्रकार उन्होंने धीरे-धीरे स्वयं पर संदेह करने की क्षमता विकसित की। और इस प्रकार वे समझ गए कि अधिकतर मामलों में जिसे आमतौर पर सत्य माना जाता है, वह

केवल सापेक्ष होता है। उशिकावा का सीखना जारी रहा। उन्होंने यह सीखा कि व्यक्तिपरकता और वस्तुनिष्ठता में उतना स्पष्ट अंतर नहीं है जितना कि अधिकांश लोग मानते हैं, और यदि सीमा रेखा धुंधली हो जाती है, तो इसे किसी भी दिशा में धकेलना बहुत मुश्किल नहीं होता है।
अधिक स्पष्ट और प्रभावी तर्क और वाक्पटुता प्राप्त करने के लिए, वह अपने दिमाग में हर संभव जानकारी भर लेता था। उपयोगी और कम उपयोगी, दोनों ही तरह की जानकारी। वह जानकारी जिससे वह सहमत था और वह भी जिससे वह उस समय पूरी तरह सहमत नहीं था। उसका लक्ष्य सामान्य अर्थों में शिक्षा प्राप्त करना नहीं था, बल्कि ऐसी ठोस जानकारी प्राप्त करना था जिसे वह सीधे अपने हाथ में लेकर, उसके स्वरूप का अध्ययन कर सके और उसका विश्लेषण कर सके।
उसका वह बेढंगा सा सिर अनमोल जानकारियों का भंडार बन चुका था। देखने में सुंदर तो नहीं था, लेकिन काम का ज़रूर था। इसी वजह से वह अपनी उम्र के बाकी लड़कों से कहीं ज़्यादा ज्ञानी हो गया था। अगर वह ठान लेता, तो किसी से भी बहस आसानी से जीत सकता था। सिर्फ़ अपने भाइयों या सहपाठियों से ही नहीं, बल्कि अपने शिक्षकों और माता-पिता से भी। लेकिन वह अपनी इस काबिलियत का ज़्यादा दिखावा नहीं करता था। उसे लोगों का ध्यान खींचना पसंद नहीं था, चाहे वह किसी भी तरह से करे। आखिर ज्ञान और हुनर तो सिर्फ़ औज़ार हैं, दिखावा करने की चीज़ें नहीं।
उशिकावा खुद को जंगल के अंधेरे में शिकार के प्रकट होने का इंतजार करने वाले एक रात्रिचर जानवर की तरह देखता था। वह धैर्यपूर्वक अपने अवसर की प्रतीक्षा करता था, और जब वह आता था, तो बिना किसी झिझक के झपट्टा मारता था। पहले, उसे अपनी उपस्थिति का एहसास नहीं होने देता था। छिपकर शिकार को अचानक पकड़ना उसके लिए महत्वपूर्ण था। उसने प्राथमिक विद्यालय से ही ऐसा सोचना शुरू कर दिया था। वह न तो खुद को किसी के भरोसे छोड़ता था और न ही अपनी भावनाओं को प्रकट करता था।
कभी-कभी वह सोचता था कि अगर उसका रूप-रंग सामान्य होता तो कैसा होता। उसे सुंदर होने की ज़रूरत नहीं थी। उसे किसी को प्रभावित करने की ज़रूरत नहीं थी। उसे बस सामान्य होना था। या कम से कम इतना तो ठीक-ठाक दिखना था कि राहगीरों की नज़रें उस पर न पड़तीं। अगर वह ऐसा ही पैदा हुआ होता, तो उसका जीवन कैसा होता? लेकिन यह एक ऐसा "अगर" था जो उसकी कल्पना से परे था। उशिकावा तो उशिकावा ही था, और इसमें किसी और परिकल्पना की कोई गुंजाइश नहीं थी। उसका बड़ा, बेढंगा सिर, उभरी हुई आँखें और छोटे, टेढ़े पैर ही उसे उशिकावा बनाते थे। एक सतर्क लड़का, ज्ञान का भूखा, शांत और वाक्पटु।
*

साल बीतते गए और वह बदसूरत लड़का एक बदसूरत नौजवान बन गया। जीवन के किसी भी पड़ाव पर, सड़क पर चलते हुए लोग उसे मुड़कर देखते थे और बच्चे बिना किसी झिझक के उसे घूरते थे। उशिकावा कभी-कभी सोचता था कि शायद जब वह एक बदसूरत बूढ़ा हो जाएगा, तो लोगों का ध्यान उस पर इतना नहीं जाएगा। बुढ़ापा तो वैसे भी बदसूरती का ही नाम है, तो शायद उसकी बदसूरती उतनी अलग न दिखे जितनी जवानी में दिखती थी। लेकिन यह बात उसे बुढ़ापे तक पता नहीं चलेगी। कौन जाने, शायद वह एक बेहद बदसूरत बूढ़ा बन जाए।

*

रास्ता नहीं खोएगा, क्योंकि उसकी याददाश्त बहुत अच्छी थी। और सिर का वह विकृत निशान भविष्य में कभी न कभी फिर से दिखाई देगा। किसी अप्रत्याशित समय पर, किसी अप्रत्याशित स्थान पर। और तब दुनिया ज़रूर आह भरते हुए उशिकावा को याद करेगी।
शायद उशिकावा उस ज्वालामुखी विस्फोट को अपनी आँखों से देख पाए। या शायद नहीं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वह इस बात से पूरी तरह संतुष्ट था कि ऐसा संभव था।
यह बदला लेने की बात नहीं थी, बल्कि एक प्रकार की संतुष्टि थी जो इस बात को स्वीकार करने से मिलती थी कि वह अपरिवर्तनीय रूप से इस दुनिया का एक अभिन्न अंग है।
उशिकावा सोफे पर बैठ गया, फिर अपने छोटे-छोटे पैर फैलाकर मेज पर रख दिए। बीयर का कैन पीते हुए उसके मन में एक विचार आया। शायद यह कारगर न हो, लेकिन कोशिश करने में क्या हर्ज है। उसने सोचा, इतनी सरल बात उसके दिमाग में क्यों नहीं आई? सरल चीजों को नज़रअंदाज़ करना सबसे आसान होता है। कहते हैं ना कि स्ट्रीटलाइट के ठीक नीचे अंधेरा होता है?
*

अगली सुबह, उशिकावा कोएंजी वापस गया, एक रियल एस्टेट कार्यालय में गया और पूछा कि क्या उस इमारत में कोई अपार्टमेंट किराए पर उपलब्ध है जहाँ टेंगो रहता था। उनके पास कोई अपार्टमेंट नहीं था। स्टेशन के सामने वाली एजेंसी उस इमारत के सभी अपार्टमेंट का प्रबंधन करती थी।
"लेकिन आप जानते हैं कि वहां कोई खाली जगह नहीं मिलेगी। किराया उचित है, स्थान अच्छा है, इसलिए कोई भी वहां से जाना नहीं चाहता।"
"मैं फिर भी अपनी किस्मत आजमाने जा रहा हूँ," उशिकावा ने जवाब दिया।
वह थाने के सामने वाली एजेंसी में गया, जहाँ लगभग पच्चीस साल के एक युवक ने उसका स्वागत किया। उसके घने काले बाल थे, जो जेल से चिड़िया के घोंसले की तरह जमे हुए थे। उसने दूधिया सफेद कमीज और एकदम नई टाई पहनी हुई थी। शायद उसने वहाँ ज़्यादा समय तक काम नहीं किया था। उसके गालों पर अभी भी मुँहासों के निशान थे। उशिकावा को देखकर वह थोड़ा सहम गया, लेकिन जल्दी ही संभल गया और उसने पेशेवर मुस्कान बिखेरी।
— प्रिय ग्राहक, आपकी किस्मत अच्छी है, उस युवक ने घोषणा की। पारिवारिक कारणों से भूतल पर रहने वाले एक दंपत्ति को घर खाली करना पड़ा और अपार्टमेंट एक सप्ताह पहले ही खाली हुआ है। इसकी सफाई कल ही हुई है और अभी तक इसे बाज़ार में बेचने के लिए विज्ञापन देने का समय नहीं मिला है। भूतल पर होने के कारण बाहर से थोड़ी आवाज़ आ सकती है और रोशनी भी कम होगी, लेकिन स्थान बहुत अच्छा है। एकमात्र समस्या यह है कि इमारत के मालिक की योजना पाँच या छह वर्षों में पुनर्निर्माण करने की है, और अनुबंध में यह शर्त है कि नोटिस मिलते ही अपार्टमेंट खाली करना होगा, यानी छह महीने पहले। और पार्किंग की सुविधा भी नहीं है।
उशिकावा ने जवाब दिया कि इसमें कोई समस्या नहीं है। उनका वहां इतने लंबे समय तक रुकने का इरादा नहीं था, और उनके पास कार भी नहीं थी।
"ठीक है। अगर आप इन शर्तों से सहमत हैं, तो आप कल से रहने आ सकते हैं। लेकिन ज़ाहिर है, आप आगे की योजना बनाना चाहेंगे, है ना?"

"जी हां, बिल्कुल," उशिकावा ने जवाब दिया। उस युवक ने दराज से एक चाबी निकाली और उसे सौंप दी।
मुझे माफ़ करना, लेकिन मैं अभी थोड़ा व्यस्त हूँ। क्या आप खुद जाकर अपार्टमेंट देख सकते हैं? यह खाली है, बस वापस आने पर मुझे चाबी दे देना। "ठीक है," उशिकावा ने कहा। "लेकिन अगर मैं खलनायक निकला और चाबी वापस नहीं लाया, या मैंने उसकी एक प्रति बना ली और फिर चुपके से अंदर घुस गया तो क्या होगा?"
ये शब्द सुनकर युवक कुछ क्षणों के लिए आश्चर्य से उशिकावा की ओर देखने लगा। — ओह, हाँ। तो क्या आप कृपया मुझे अपना बिजनेस कार्ड दे देंगे?
उशिकावा ने अपने बटुए से विज्ञान और कला संवर्धन हेतु नव जापान संघ का एक बिजनेस कार्ड निकाला।
"श्री उशिकावा," उन्होंने भौंहें चढ़ाते हुए नाम लिया, फिर उनके चेहरे के भाव बदल गए। "आप तो ऐसे व्यक्ति नहीं लगते जो किसी बुरे काम में लिप्त हों।" "धन्यवाद," उशिकावा ने जवाब दिया, उसके होंठों पर एक ऐसी मुस्कान थी जो उसके बिजनेस कार्ड पर लिखे पदनाम की तरह ही खोखली थी।
उसे पहली बार ऐसी बात बताई गई थी। उशिकावा उसकी बातों से समझ गया कि वह शायद इतना भोला था कि कोई नुकसान नहीं कर सकता था। उसका वर्णन करना बेहद आसान था। उसका चित्र भी बनाया जा सकता था। अगर उसका पीछा किया जाता, तो उसे तीन दिनों में पकड़ लिया जाता।
अपार्टमेंट उतना बुरा नहीं था जितना उसने सोचा था। टेंगो दूसरी मंजिल पर, ठीक ऊपर रहता था, इसलिए वहाँ से सीधे उसके घर पर नज़र रखना नामुमकिन था, लेकिन खिड़की अपार्टमेंट बिल्डिंग के प्रवेश द्वार की ओर खुलती थी। इस तरह वह टेंगो के आने-जाने पर नज़र रख सकता था और यह भी जान सकता था कि उससे मिलने कौन आ रहा है। अगर वह टेलीफ़ोटो लेंस वाला कैमरा लगाकर उसे अच्छी तरह छिपा देता, तो वह उसकी पोर्ट्रेट तस्वीरें भी खींच सकता था।
अपार्टमेंट पाने के लिए उसे दो महीने की जमा राशि, एक महीने का किराया और दो महीने के किराए के बराबर शुल्क देना पड़ा। किराया ज़्यादा नहीं था और जमा राशि भी अपार्टमेंट खाली करते समय वापस मिल जानी थी, फिर भी यह एक बड़ी रकम थी। उसने लिलियाक को भी भुगतान कर दिया था, इसलिए उसके खाते में बची रकम कम हो गई थी। लेकिन अपनी स्थिति को देखते हुए, उसे वह अपार्टमेंट किराए पर लेना ही पड़ा। उसके पास कोई विकल्प नहीं था। उशिकावा एजेंसी लौटा, लिफाफे से पहले से तैयार की गई रकम निकाली और अनुबंध पर हस्ताक्षर कर दिए। उसने विज्ञान और कला संवर्धन के लिए नई जापान एसोसिएशन के नाम से अनुबंध पर हस्ताक्षर किए और कहा कि वह पंजीकरण प्रमाण पत्र की एक प्रति बाद में डाक से भेज देगा। उस युवक ने ऐसा करने की ज़हमत भी नहीं उठाई। अनुबंध पर हस्ताक्षर होते ही उसने चाबी उशिकावा को वापस सौंप दी।
— श्री उशिकावा, आप आज से वहां रह सकते हैं। बिजली और पानी की सुविधा उपलब्ध है, लेकिन गैस के लिए, जब इसे चालू किया जाए तब घर पर किसी का मौजूद होना ज़रूरी है, और इसके लिए आपको टोक्यो गैस से संपर्क करना होगा। आप फोन का इस्तेमाल कैसे करते हैं?
"मैं वही कर रहा हूँ," उशिकावा ने उत्तर दिया।

परिवार के साथ रहते हुए भी, उशिकावा को अकेलापन महसूस होता था। उसने कभी किसी से अपने दिल की बात नहीं कही थी, और वह साधारण जीवन उसे क्षणभंगुर ही लगता था। उसे अपने दिल में यकीन था कि एक दिन सब कुछ अचानक बिखर जाएगा। एक वकील की भागदौड़ भरी जिंदगी, अच्छी आमदनी, चूओ-रिंकन में घर, खूबसूरत पत्नी, निजी प्राथमिक विद्यालय में पढ़ने वाली दो प्यारी छोटी बेटियां, और पालतू कुत्ता। इसलिए, जब धीरे-धीरे सब कुछ खत्म हो गया और वह अकेला रह गया, तो उशिकावा को राहत महसूस हुई। अरे वाह, बस! अब मुझे चिंता करने की कोई जरूरत नहीं! मैं वहीं लौट आया हूं जहां से शुरू किया था।
क्या हम फिर से शून्य पर पहुँच गए हैं?
उशिकावा टिड्डे के लार्वा की तरह अपने स्लीपिंग बैग में सिकुड़कर लेटा हुआ था और अंधेरी छत को घूर रहा था। वह काफी देर से इसी स्थिति में था और अब उसके सारे जोड़ों में दर्द हो रहा था। ठंड से कांपते हुए उसने रात के खाने में सिर्फ एक ठंडा बन और बीन जैम खाया था, एक जर्जर इमारत के गलियारे में देखता रहा था जिसे गिराया जाने वाला था, कुछ बदसूरत लोगों की चुपके से तस्वीरें खींची थीं और एक बाल्टी में पेशाब किया था। क्या इसका मतलब था कि सब कुछ फिर से शून्य पर आ गया था? उसे अचानक याद आया कि वह कुछ करना भूल गया था। वह अपने स्लीपिंग बैग से बाहर निकला, बाल्टी का पानी शौचालय में खाली किया और फ्लश कर दिया। उसे अपने हल्के गर्म बिस्तर से उठने की कोई इच्छा नहीं थी और उसने सुबह तक उसे वहीं छोड़ने के बारे में गंभीरता से सोचा था, लेकिन अंधेरे में उससे ठोकर लगने का डर था। वह वापस अपने स्लीपिंग बैग में घुस गया और फिर से कांपने लगा।
क्या इसका मतलब शून्य से शुरुआत करना है?
शायद ऐसा ही हो, उसने सोचा। मेरे पास खोने के लिए कुछ नहीं बचा है। सिवाय मेरी जान के। बात बहुत सीधी है। अंधेरे में, उशिकावा के होठों पर एक पतली सी चाकू की धार जैसी मुस्कान उभर आई।

अध्याय 14 मेरा छोटा प्राणी

ओमामे असमंजस और अनिश्चितता की स्थिति में जी रही थी। वह 1Q84 में थी, एक ऐसी दुनिया में जहाँ तर्क और पारंपरिक ज्ञान का कोई महत्व नहीं था, और उसे यह स्पष्ट नहीं था कि उसके साथ क्या होने वाला है। फिर भी उसे लगता था कि वह कुछ और महीनों तक जीवित रहेगी, फिर बच्चे को जन्म देगी। यह महज़ एक आभास था, लेकिन निश्चितता के बहुत करीब का आभास। और ऐसा इसलिए था क्योंकि अब सब कुछ इस आधार पर टिका था कि वह एक बच्चे को जन्म देगी।
ओमामे को अग्रणी नेता के अंतिम शब्द अच्छी तरह याद थे: "तुम्हारी एक कठिन परीक्षा होगी। अंत में, तुम्हें वास्तविकता का पता चल जाएगा।"
उन्हें कुछ पता था। कुछ बहुत महत्वपूर्ण, जिसे वे अस्पष्ट शब्दों के माध्यम से, कई अर्थों वाले शब्दों में समझाने की कोशिश कर रहे थे। शायद उनकी यह कोशिश इस तथ्य में छिपी थी कि मैं मौत के कगार पर पहुँच गई थी। मैं हाथ में बंदूक लिए एस्सो के साइनबोर्ड के पास गई थी, आत्महत्या करने के इरादे से। लेकिन मैं मरी नहीं, मैं वापस यहाँ आ गई। फिर मुझे पता चला कि मैं गर्भवती हूँ। शायद यह भी पहले से तय था।
दिसंबर की शुरुआत में, लगातार कई शामों तक तेज़ हवा चली। एल्म के पेड़ से सूखे पत्ते गिरे और बालकनी की प्लास्टिक की टाइलों पर एक कर्कश, सूखी आवाज़ के साथ टकराए। ठंडी हवा नंगी शाखाओं से खतरनाक सीटी बजाती हुई गुज़री। कौवों की कर्कश आवाज़ और भी तीखी लगने लगी। सर्दी आ रही थी।
टेंगो के गर्भ में पल रहे बच्चे के विचार की गंभीरता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी, यहाँ तक कि यह एक निश्चितता का रूप ले चुका था। वह अब भी किसी तीसरे व्यक्ति को समझाने के लिए कोई तर्क नहीं ढूंढ पा रही थी। वह इसे स्वयं को यथासंभव स्पष्ट रूप से समझा सकती थी। यह एक स्पष्ट मामला था।
अगर मैं बिना सेक्स किए गर्भवती हो जाती हूं, तो टेंगो के अलावा और कौन पिता हो सकता है?
नवंबर से उसका वज़न बढ़ने लगा था। वह बाहर नहीं जा सकती थी, लेकिन वह हर दिन पर्याप्त व्यायाम करती थी और अपने खान-पान पर कड़ा नियंत्रण रखती थी। बीस साल की उम्र से उसका वज़न कभी भी बावन किलोग्राम से ज़्यादा नहीं हुआ था। लेकिन एक दिन तराजू की सुई चौवन किलोग्राम पर पहुँच गई और तब से उसका वज़न कम नहीं हुआ था। उसका चेहरा और भी गोल लगने लगा था। वह नन्ही बच्ची अपनी माँ के शरीर को और वज़न बढ़ाने के लिए उकसा रही थी।
उस नन्हे बच्चे के बगल में बैठी, आओमामे हर शाम पार्क को देखती रहती थी। वह जवानी के उस हट्टे-कट्टे आदमी को स्लाइड के शिखर पर चढ़ते देखना चाहती थी। आओमामे सर्दियों के आसमान में दो चाँद देखती और कंबल के ऊपर अपने पेट पर हाथ फेरती। कभी-कभी, बिना किसी कारण के, उसकी आँखों से आँसू बहने लगते। वह जागती तो देखती कि वे उसके गालों से बहकर उस कंबल पर गिर रहे हैं जिसे उसने अपने चारों ओर लपेटा हुआ था। शायद अकेलेपन से, शायद चिंता से। शायद इसलिए कि गर्भवती होने के कारण वह ज़्यादा भावुक हो गई थी। या शायद बस इसलिए कि ठंडी हवा उसकी आँसू ग्रंथियों को उत्तेजित कर रही थी। किसी भी हालत में, आओमामे उन्हें पोंछती नहीं, बल्कि उन्हें बेरोक-टोक बहने देती।

*

ओमामे को कभी-कभी नेता के मरने से ठीक पहले कहे गए शब्द याद आ जाते थे। वह उनकी गहरी, भारी आवाज़ को नहीं भूल सकती थी। ठीक वैसे ही जैसे वह उनके सिर के पिछले हिस्से में चुभी सुई के दर्द को नहीं भूल सकती थी।

जहां प्रकाश होता है वहां छाया होती है, और जहां छाया होती है वहां प्रकाश होता है। बिना प्रकाश के छाया नहीं होती, और बिना छाया के प्रकाश नहीं होता। हम नहीं जानते कि ये छोटे लोग अच्छे हैं या बुरे। एक तरह से, यह हमारी समझ या परिभाषाओं से परे है। हम प्राचीन काल से उनके साथ रहे हैं, जब अच्छाई और बुराई का अस्तित्व ही नहीं था, और मनुष्यों में विवेक भी नहीं था।

क्या ईश्वर और मनुष्य एक दूसरे के विरोधी अस्तित्व हैं? या वे एक ही चीज के दो पहलू हैं?
ओमामे को कुछ पता नहीं था। उसे बस इतना पता था कि उसे अपने भीतर पल रहे नन्हे जीव की रक्षा करनी है और इसके लिए उसे किसी न किसी तरह ईश्वर में विश्वास करना होगा। या फिर अपने विश्वास को स्वीकार करना होगा।
ओमामे ने ईश्वर के बारे में सोचा। उनका कोई रूप नहीं है, फिर भी वे कोई भी रूप धारण कर सकते हैं। उनके मन में एक खूबसूरत मर्सिडीज बेंज कूपे की छवि उभरी। एकदम नई कार, अभी-अभी डीलरशिप से आई थी। और उसमें से एक सजी-धजी महिला उतर रही थी। मेट्रोपॉलिटन हाईवे पर, वह महिला नग्न अवस्था में खड़ी ओमामे को अपना खूबसूरत कोट देती है। यह कोट उसे ठंडी हवा और लोगों की ताक-झांक से बचाता है। फिर वह बिना कुछ कहे अपनी चांदी जैसी मर्सिडीज में लौट जाती है। वह जानती है। वह जानती है कि ओमामे गर्भ में गर्भवती है। और उसकी रक्षा करना जरूरी है।
*

आओमामे को एक नया सपना आने लगा। इस सपने में वह एक सफेद, घनाकार कमरे में बंद है, जिसमें कोई खिड़की नहीं है। कमरे में सिर्फ एक दरवाजा है। अंदर एक साधारण सा पलंग है, जिस पर वह पीठ के बल लेटी हुई है। पलंग के ऊपर लगा बल्ब उसके पहाड़ जैसे विशाल फूले हुए पेट को रोशन कर रहा है। देखने में तो वह उसका शरीर नहीं लगता। लेकिन निःसंदेह, वह उसके शरीर का ही एक हिस्सा है। उसका समय आ रहा है। कमरे की रखवाली चेलियोस और प्लेटोस कर रहे हैं। उन्हें आदेश दिया गया है कि वे अब कोई गलती न करें। वे एक बार असफल हो चुके थे और उन्हें अपना पद पुनः प्राप्त करना था। उनका काम है उसे वहीं रखना और किसी को भी अंदर न आने देना। वे उस नन्हे जीव के जन्म का इंतजार कर रहे हैं। जैसे ही वह पैदा होगा, वे उसे आओमामे से दूर ले जाएंगे।
आओमामे चीखने की कोशिश करती है, मदद के लिए बेताब होकर पुकारती है, लेकिन कमरा एक खास तरह की सामग्री से बना है। दीवारें, फर्श, छत, सब कुछ पल भर में आवाज़ को सोख लेते हैं। उसकी चीख उसके अपने कानों तक भी नहीं पहुँचती। आओमामे चाहती है कि मर्सिडीज वाली वह औरत आकर उसे बचाए। उसे और उसके नन्हे बच्चे को। लेकिन व्यर्थ। उसकी आवाज़ कमरे की सफेद दीवारों में खो जाती है।
उसका नन्हा सा जीव गर्भनाल के ज़रिए पोषण पाता है और पल-पल बढ़ता है। वह गर्भ में लात मारता है, उस पीड़ादायक अंधेरे से बचने की कोशिश करता है। उसे प्रकाश और आज़ादी चाहिए।

दरवाजे के पास लंबे बालों वाला व्यक्ति बैठा है। वह घुटनों पर हाथ रखे बैठा है और उसकी निगाहें हवा में किसी बिंदु पर टिकी हैं। शायद वहां कोई छोटा, घना बादल तैर रहा है। गंजा व्यक्ति बिस्तर के किनारे खड़ा है। दोनों ने एक जैसे गहरे रंग के सूट पहने हैं। गंजा व्यक्ति बीच-बीच में हाथ उठाकर अपनी घड़ी देखता है, मानो कोई स्टेशन पर किसी महत्वपूर्ण ट्रेन के आने का इंतजार कर रहा हो।
आओमामे अपने हाथ-पैर हिला नहीं पा रही है। ऐसा नहीं लगता कि उन्हें किसी रस्सी से बांधा गया है, फिर भी वह उन्हें हिला नहीं पा रही है। उसे अपनी उंगलियों के पोर भी महसूस नहीं हो रहे हैं। उसे प्रसव पीड़ा होने वाली है। यह निश्चित रूप से आ रही है, जैसे कोई ट्रेन स्टेशन पर आती है, बिना एक पल की भी देरी के। उसे पटरियों की हल्की सी कंपन सुनाई दे रही है।
उसी क्षण वह जाग उठा।
वह पसीना पोंछने के लिए नहाती और साफ कपड़े पहनती। पसीने से भीगे हुए कपड़े वह वाशिंग मशीन में डाल देती। वह इस तरह का सपना देखना बिल्कुल नहीं चाहती थी, लेकिन सपना फिर भी आ जाता था। विवरण थोड़ा बदल जाता, लेकिन जगह और नतीजा वही रहता। घन के समान सफेद कमरा। प्रसव पीड़ा शुरू होने वाली थी। वे दोनों गहरे रंग के, बेजान सूट पहने हुए थे।
उन्हें पता था कि आओमामे के गर्भ में एक नन्हा जीव पल रहा है। या फिर उन्हें जल्द ही पता चल जाएगा। आओमामे तैयार थी। ज़रूरत पड़ने पर वह प्लेटोस और चेलियोस को नौ मिलीमीटर की गोलियों से छलनी कर देती। उसका ईश्वर कभी-कभी रक्त से लथपथ ईश्वर होता था।
*

दरवाजे पर दस्तक हुई। आओमामे रसोई में थी, उसके दाहिने हाथ में स्वचालित पिस्तौल थी, जिसका सेफ्टी लॉक खुला हुआ था। सुबह से ही ठंडी बारिश हो रही थी। सर्दियों की बारिश की महक पूरी दुनिया में फैल चुकी थी।
दरवाजे पर खड़े आदमी ने दस्तक रोकते हुए कहा, "नमस्कार, तकाई-सान! मैं एनएचके से आपका पुराना परिचित हूँ। आपको परेशान करने के लिए क्षमा करें, लेकिन मैं बिल लेने आया हूँ। तकाई-सान, आप घर पर हैं!"
आओमामे दरवाजे की ओर धीरे से बोलने लगी, लेकिन ज़ोर से नहीं। मैंने एनएचके को फोन किया था, तुम्हें पता है! तुम एक ढोंगी हो। आखिर तुम हो कौन? और तुम्हें क्या चाहिए?
"लोगों को जो मिलता है, उसकी कीमत चुकानी पड़ती है। यही समाज का नियम है। आपको एक संकेत दिया जाता है और आपको उसका भुगतान करना पड़ता है। बिना कुछ दिए बस ले लेना सही नहीं है। यह चोरी है।"
उनकी आवाज पूरे गलियारे में गूंज उठी। हालांकि आवाज थोड़ी कर्कश थी, फिर भी उसमें एक अलग ही तीव्रता थी।
"मुझे आपसे कोई व्यक्तिगत दुश्मनी नहीं है। मैं आपसे नफरत नहीं करता, न ही आपको दंडित करने की कोशिश कर रहा हूँ। ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। बस, मैं स्वभाव से अन्याय बर्दाश्त नहीं कर सकता। जो लेता है, उसे चुकाना ही पड़ता है। तकाई-सान, जब तक आप दरवाजा नहीं खोलेंगे, मैं आता रहूँगा और दस्तक देता रहूँगा। आप ऐसा नहीं चाहते, है ना? और मैं कोई बूढ़ा आदमी नहीं हूँ जिसे कुछ समझ न हो। अगर हम बात करें तो समझौता हो सकता है। आइए, तकाई-सान, दरवाजा खोलिए!"

मारपीट की एक नई आवाज सुनाई दी।
ओमामे ने दोनों हाथों से बंदूक को कसकर पकड़ लिया। पसीने से तरबतर होकर, उसके बगल और नाक की नोक पर पसीना आ रहा था। उसने सोचा, "इस आदमी को ज़रूर पता होगा कि मैं गर्भवती हूँ। मैं कुछ भी नहीं खोलूँगी! और अगर उसने अतिरिक्त चाबी से खोलने की कोशिश की, या किसी औज़ार या किसी अन्य तरीके से दरवाज़ा तोड़ने की कोशिश की, चाहे वह एनएचके का कैशियर ही क्यों न हो, मैं इस बंदूक की सारी गोलियाँ उसके पेट में खाली कर दूँगी!"
लेकिन ऐसा होने वाला नहीं था। आओमामे जानती थी कि वह दरवाज़ा नहीं खोल सकता। उसमें एक ऐसी व्यवस्था थी कि जब तक वह अंदर से ताला नहीं खोलेगी, दरवाज़ा नहीं खुलेगा। इसीलिए वह आदमी इतना चिड़चिड़ा था और इतनी बातें कर रहा था। वह अपने गुस्से और शब्दों से उसे बर्बाद करने की कोशिश कर रहा था।
दस मिनट बाद, वह आदमी उसे धमकाने और अपमानित करने के बाद, उसे फुसलाने की चतुराई से कोशिश करने के बाद, उसके साथ हिंसक दुर्व्यवहार करने और उसे चेतावनी देने के बाद चला गया कि वह फिर आएगा।
"तकाई-सान, आप बच नहीं सकते! जैसे ही आपको कोई संकेत मिलेगा, मैं वापस आता रहूंगा। बिल्कुल सही, मैं आसानी से हार नहीं मानता। यही मेरा स्वभाव है। तो फिर अलविदा, जल्द ही मिलते हैं!"
उसके कदमों की आहट सुनाई नहीं दी, लेकिन वह अब दरवाजे के सामने नहीं थी। आओमामे ने राइफल के व्यूफाइंडर से देखकर इसकी पुष्टि की। उसने अपनी बंदूक का सेफ्टी लॉक लगाया, बाथरूम में गई और अपना चेहरा धोया। उसकी ब्लाउज पसीने से भीगी हुई थी। कपड़े बदलने के बाद वह नग्न अवस्था में दर्पण के सामने खड़ी हो गई। उसका पेट अभी तक स्पष्ट रूप से फूला हुआ नहीं था। लेकिन उसके अंदर एक बहुत ही महत्वपूर्ण रहस्य छिपा था।
*

आओमामे ने महिला से फोन पर बात की। कुछ बातों पर चर्चा करने के बाद, तमारू ने बिना कुछ कहे फोन महिला को सौंप दिया। बातचीत यथासंभव सीधे संदर्भों से बचते हुए, अस्पष्ट भावों का प्रयोग करते हुए आगे बढ़ी। या कम से कम शुरुआत में तो ऐसा ही हुआ।
“हमने आपके लिए एक नई जगह तैयार कर ली है,” उस महिला ने उससे कहा। “वहाँ आप अपनी योजनाबद्ध गतिविधि को अंजाम देंगे। यह एक सुरक्षित जगह है, जहाँ आपकी नियमित रूप से विशेष जाँचें हो सकती हैं। यदि आप सहमत हैं, तो आप तुरंत वहाँ जा सकते हैं।”
क्या उसे उस महिला को बताना चाहिए कि वे लोग उसके नन्हे बच्चे के पीछे पड़े थे? कि पायनियर्स के लोगों ने उसके सपने में उसके बच्चे को चुराने की कोशिश की थी? कि एनएचके के कैशियर बनकर उसे किसी भी तरह दरवाजा खोलने के लिए मनाने वाला व्यक्ति भी उसी चीज़ के पीछे पड़ा था? लेकिन आओमामे ने ऐसा नहीं किया। उसे उस महिला पर पूरा भरोसा था और वह उसकी बहुत परवाह करती थी। लेकिन समस्या यह नहीं थी। अब असली सवाल यह था कि वह किस दुनिया में जी रही थी।
"आपकी शारीरिक स्थिति कैसी है?" महिला ने उससे पूछा।
ओमामे ने जवाब दिया कि सब कुछ सुचारू रूप से चल रहा है।
"यही सबसे ज़रूरी बात है। लेकिन आपकी आवाज़ थोड़ी अलग लग रही है। शायद मुझे ही ऐसा लग रहा है, पर ऐसा लग रहा है कि आप ज़्यादा तनाव में हैं और सतर्क हैं। अगर

कोई भी बात आपको परेशान कर रही है, चाहे वो कितनी भी छोटी क्यों न हो, तो मुझे बताने में बिल्कुल भी संकोच न करें। शायद हम कोई हल निकाल सकें।"
उसकी आवाज के उतार-चढ़ाव पर ध्यान देते हुए, आओमामे ने उत्तर दिया:
"एक ही जगह पर लंबे समय तक रहने से शायद अनजाने में ही मेरी नसें तनावग्रस्त हो गईं। मैं अपनी शारीरिक स्थिति का ख्याल रखता हूँ। आखिरकार, यही तो मेरा काम है।"
"बिल्कुल," महिला ने कहा और कुछ पल चुप रही। "कुछ समय पहले, एक संदिग्ध व्यक्ति यहाँ कई दिनों तक आता-जाता रहा। वह आश्रय स्थल के आसपास मंडराता रहता था। फिलहाल वहाँ रहने वाली तीनों महिलाओं ने निगरानी फुटेज देखी है, लेकिन उनमें से किसी को भी वह दिखाई नहीं दिया। हो सकता है वह आपके पीछे पड़ा हो।"
आओमामे ने थोड़ा सा भौंहें सिकोड़ीं।
"क्या आप कह रहे हैं कि हमारे बीच का संबंध उजागर हो गया है?"
"मुझे नहीं पता। लेकिन यह एक संभावना है जिस पर हमें विचार करना होगा। इस आदमी का रूप-रंग बहुत अजीब है। उसका सिर बहुत बड़ा और बेढंगा है, ऊपर से चपटा है और लगभग पूरी तरह से गंजा है। वह गठीला है और उसके हाथ-पैर छोटे हैं। क्या यह नाम जाना-पहचाना लगता है?"
सिर चपटा और गंजा?
मैं अक्सर बालकनी में बैठकर सड़क पर लोगों को आते-जाते देखता हूँ, लेकिन मैंने आज तक किसी को इस तरह का नहीं देखा। यह वाकई चौंकाने वाला नज़ारा है, है ना?
"बिल्कुल। एक शोर मचाने वाले सर्कस के विदूषक की तरह। अगर उन्हें उनके द्वारा चुना गया है और स्थिति का जायजा लेने के लिए यहां भेजा गया है, तो मुझे मानना पड़ेगा कि यह एक बहुत ही अजीब चुनाव है।"
ओमामे मान गई। उन्होंने पायनियर्स को ऐसे व्यक्ति के साथ जासूसी मिशन पर नहीं भेजा होगा जिसका रूप-रंग इतना विचित्र था। उनके पास ऐसे लोगों की कमी तो हो ही नहीं सकती थी। दूसरे शब्दों में, उस व्यक्ति का शायद संप्रदाय से कोई संबंध नहीं था, और उसके और लेडी के बीच का संबंध अभी तक उजागर नहीं हुआ था। लेकिन फिर वह कौन हो सकता था, और आश्रय स्थल के आसपास ताक-झांक करने का उसका उद्देश्य क्या था? क्या वह वही व्यक्ति तो नहीं था जो एनएचके कैशियर होने का नाटक करके उससे मिलने पर बार-बार ज़ोर देता था? बेशक, दोनों को जोड़ने वाला कोई सबूत नहीं था। वह केवल उस नकली कैशियर के सनकी व्यवहार को उस व्यक्ति के विचित्र रूप-रंग से जोड़ सकती थी जिसका वर्णन किया गया था।
"अगर आप उसे देखें तो कृपया हमसे संपर्क करें। हमें कार्रवाई करनी पड़ सकती है।"
ओमामे ने जवाब दिया कि वह निश्चित रूप से उससे तुरंत संपर्क करेगी।
वह महिला फिर चुप हो गई। यह अजीब था, क्योंकि फोन पर बात करते समय वह आमतौर पर बहुत व्यावहारिक होती थी और एक पल भी बर्बाद नहीं करती थी।
"क्या तुम ठीक हो, स्वस्थ हो?" आओमामे ने सहज भाव से पूछा।
"हमेशा की तरह, सब ठीक है," महिला ने जवाब दिया, लेकिन उनकी आवाज में थोड़ी हिचकिचाहट थी।
एक और अजीब बात। आओमामे ने उसके बोलने का इंतजार किया।

अंत में उसने हताशा भरे स्वर में कहा, "बस बात यह है कि आजकल मुझे अक्सर ऐसा लगता है कि मैं बूढ़ी हो गई हूँ। खासकर तुम्हारे जाने के बाद से।"
"मैं कहीं नहीं गई हूँ। मैं यहीं हूँ," आओमामे ने हंसमुख भाव से उत्तर दिया। "बिल्कुल। आप वहां हैं, और देखिए, हम फोन पर बात कर सकते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि जब हम नियमित रूप से मिलते थे और साथ में स्ट्रेचिंग करते थे, तो मुझे आपसे ऊर्जा मिलती थी।"
"आपमें स्वाभाविक ऊर्जा तो है ही। मैं बस उस ऊर्जा को व्यवस्थित तरीके से सामने ला रहा था, आपकी मदद कर रहा था। आप इसे बिना किसी परेशानी के खुद ही संभाल सकते हैं, मेरे बिना भी।"
"सच कहूँ तो, हाल तक मैं भी यही सोचती थी," उस महिला ने हल्की लेकिन व्यंग्यात्मक हंसी के साथ कहा। मुझे खुद को एक खास इंसान होने पर बहुत गर्व था। लेकिन उम्र धीरे-धीरे सबकी जिंदगी छीन लेती है। लोग अपने समय पर नहीं मरते। वे धीरे-धीरे अंदर ही अंदर मरते जाते हैं, जब तक कि आखिरकार हिसाब-किताब का आखिरी दिन नहीं आ जाता। कोई बच नहीं सकता। लोगों को अपने कर्मों का फल भुगतना ही पड़ता है। यह सच्चाई मुझे अब जाकर समझ आ रही है।
लोगों को अपनी ज़रूरत की चीज़ों के लिए कीमत चुकानी पड़ती है। आओमामे ने भौंहें चढ़ाईं। यह बिलकुल वही बात थी जो एनएचके के कैशियर ने कही थी। "सितंबर की उस तूफानी शाम को, जब बिजली लगातार चमक रही थी, मुझे अचानक यह एहसास हुआ," महिला ने कहा। "मैं यहाँ बैठक कक्ष में अकेली बैठी बिजली देख रही थी और तुम्हारे बारे में सोच रही थी। और फिर मैंने सच्चाई को अपनी आँखों के सामने देखा, जो बिजली की रोशनी में प्रकट हुई। उस शाम मैंने तुम्हें खो दिया और उसी समय मैंने अपने भीतर सब कुछ खो दिया। या कम से कम बहुत सी चीजें। वे चीजें जो तब तक मेरे अस्तित्व के मूल में थीं और एक इंसान के रूप में मुझे सहारा देती थीं।"
"क्या क्रोध भी उनमें से एक था?" आओमामे ने अचानक पूछा।
वहाँ सूखे हुए झील की तलहटी जैसी खामोशी छा गई। फिर उस महिला ने कहा:
"क्या आप मुझसे यह पूछ रहे हैं कि जिन चीजों को मैंने तब खोया था उनमें मेरा क्रोध भी शामिल था?"
- हाँ।
महिला ने धीरे से सांस ली।
— आपके प्रश्न का उत्तर है हाँ। आप सही हैं। मेरे भीतर का तीव्र क्रोध भी उन अंतहीन बिजली की चमक में खो गया। या कम से कम दूर चला गया। अब मेरे भीतर पहले जैसा उग्र क्रोध नहीं बचा है। यह एक फीकी उदासी में बदल गया है। और मैं, जिसने यह माना था कि ऐसा क्रोध कभी कमज़ोर नहीं होगा… लेकिन आपको कैसे पता?
— क्योंकि ठीक यही घटना उस तूफानी शाम को मेरे साथ भी घटी थी।
"आपका मतलब अपने गुस्से से है, है ना?"
हां। मेरे भीतर जो तीव्र, शुद्ध क्रोध था, वह अब शांत हो गया है। मैं यह नहीं कह रहा कि वह पूरी तरह से शांत हो गया है, लेकिन जैसा कि आपने कहा, वह कुछ समय के लिए थम सा गया है। मैं उस क्रोध की बात कर रहा हूं जिसने वर्षों तक मेरी आत्मा में गहरा स्थान बना रखा था और जिसने मुझे शक्ति से प्रेरित किया था। "एक निर्दयी और अथक कोचवान की तरह," महिला ने कहा। "लेकिन अब इसकी तीव्रता कम हो गई है और तुम गर्भवती हो। या यूँ कहें कि बदले में।"

"हां," आओमामे ने अपनी सांसों को शांत करते हुए जवाब दिया। "लेकिन मेरे अंदर एक छोटा सा जीव है। जिसका क्रोध से कोई लेना-देना नहीं है।"
और जो मुझमें दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाता है।
"मुझे नहीं लगता कि अब इसे कहने की ज़रूरत है, लेकिन आपको उसका बहुत ध्यान रखना होगा," महिला ने कहा। "और इसके लिए आपको जितनी जल्दी हो सके किसी ऐसी जगह पर जाना होगा जहाँ आपको कोई परेशान न करे।"
— आप सही कह रहे हैं, लेकिन पहले मुझे वास्तव में कुछ काम खत्म करना है।
*

फोन रखने के बाद, आओमामे बालकनी में गई और प्लास्टिक की टाइलों के बीच से सड़क और पार्क को देखने लगी। काफी रात हो चुकी थी। मुझे 1Q84 खत्म होने से पहले और उनके मुझे ढूंढने से पहले टेंगो को ढूंढना ही होगा।

अध्याय 15 एक रहस्य जो वह बता नहीं सका

वह "गेहूं के चील" को छोड़कर गलियों में भटकने लगा, विचारों में खोया हुआ। एक क्षण में, उसने उस छोटे से पार्क की ओर जाने का निश्चय किया जहाँ उसने पहली बार आकाश में दो चंद्रमा देखे थे। उसका इरादा था कि वह स्लाइड पर वापस जाकर आकाश की ओर देखे। शायद उसे फिर से दो चंद्रमा दिखाई दें। शायद वे उसे कुछ बताने की कोशिश कर रहे हों।
वह आखिरी बार पार्क कब आया था? टेंगो ने सोचा, पर उसे याद नहीं आ रहा था। समय का प्रवाह अनियमित था और दूरियाँ अस्थिर। लेकिन उसे याद था कि वह शरद ऋतु की शुरुआत में ज़रूर आया होगा, क्योंकि उसने लंबी आस्तीन वाली कमीज़ पहनी हुई थी। अब दिसंबर का महीना था।
ठंडी हवा बादलों को टोक्यो खाड़ी की ओर ले जा रही थी। अनियमित आकार के ये बादल प्लास्टिक के बने प्रतीत हो रहे थे। उनके पीछे से दो चंद्रमा समय-समय पर दिखाई दे रहे थे। एक पुराना, पीला चंद्रमा और दूसरा, नया प्रकट हुआ, छोटा और हरा चंद्रमा। दोनों घटते जा रहे थे, दूसरे चरण की ओर बढ़ रहे थे। छोटा चंद्रमा ऐसा लग रहा था जैसे कोई बच्चा अपनी माँ के आँचल में छिपने की कोशिश कर रहा हो। वे लगभग उसी स्थान पर थे जहाँ उसने उन्हें पहली बार देखा था, मानो वे आज्ञाकारी रूप से उसके लौटने की प्रतीक्षा कर रहे हों।
पार्क में सन्नाटा नहीं था। स्ट्रीट लैंप की रोशनी पिछली बार से भी ज़्यादा सफ़ेद और ठंडी लग रही थी। पत्तों से रहित एल्म के पेड़ की डालियाँ बारिश और हवा से सफ़ेद हो चुकी हड्डियों की याद दिला रही थीं। उल्लुओं की चीखें सुनने के लिए यह एक आदर्श रात थी, लेकिन ज़ाहिर है, महानगर के बीचोंबीच ऐसे पक्षी तो थे ही नहीं। टेंगो ने अपनी स्वेटशर्ट का हुड अपने सिर पर खींच लिया और अपने हाथ चमड़े की जैकेट की जेबों में डाल लिए। वह स्लाइड पर चढ़ गया और रेलिंग पर झुककर बादलों के पीछे छिपे दो चाँद को देखने लगा। तारे चुपचाप टिमटिमा रहे थे। शहर पर छाई रहने वाली बेतरतीब गंदगी हवा से उड़ गई थी और आसमान साफ़ और निर्मल था।
टेंगो सोच रहा था कि उस समय उसके अलावा और कौन उन दो चांदों को देख रहा होगा। फुकाएरी को तो पता ही होगा। उसने ही तो ये सारी कहानी शुरू की थी। शायद। लेकिन फुकाएरी के अलावा, टेंगो के जानने वालों में से किसी को भी इस बात की चिंता नहीं थी कि आसमान में एक और चांद दिखाई दिया है। या तो किसी ने अभी तक ध्यान ही नहीं दिया था, या फिर ये बात इतनी मशहूर हो चुकी थी कि इस पर बात करना भी बेकार था।
वैसे भी, स्कूल में पढ़ाने वाले अपने दोस्त के अलावा, टेंगो ने कभी किसी से चाँद के बारे में बात नहीं की थी। इसके विपरीत, वह इस विषय से बचने में सावधानी बरतता था, मानो यह कोई अनैतिक चर्चा हो।
उसने ऐसा क्यों किया था?
शायद चंद्रमाओं की यही इच्छा थी, टेंगो ने सोचा। वे दोनों चंद्रमा उसके लिए एक संदेश थे, जिसे वह किसी और के साथ साझा नहीं कर सकता था।
हालाँकि, चीजों को देखने का यह एक अजीब तरीका था। आखिर दो महीने कोई संदेश क्यों हो सकते हैं? वे उसे क्या बता सकते हैं? वह उन्हें एक जटिल पहेली के रूप

में आसानी से समझ सकता था। लेकिन यह पहेली किसने बनाई थी? कौन उसे इसे साझा नहीं करने दे रहा था?
तेज सीटी की आवाज के साथ हवा एल्म के पेड़ की शाखाओं से गुजरी। मानो किसी निराश व्यक्ति के दांतों के बीच से निकलती हुई बेकाबू सांस हो। टेंगो वहीं बैठा रहा, उसकी निगाहें आसमान पर टिकी थीं, हवा की आवाज को बिना सुने ही सुन रहा था, जब तक कि ठंड उसकी हड्डियों तक नहीं पहुंच गई। वह लगभग पंद्रह मिनट या शायद थोड़ा ज्यादा समय तक वहीं खड़ा रहा। उसे समय का पता ही नहीं चला। बोरबन से गर्म हुआ उसका शरीर अब जम चुका था और समुद्र की गहराई में पड़े किसी अकेले पत्थर की तरह ठंडा था।
हवा के झोंकों से बादल तेज़ी से दक्षिण की ओर बढ़ रहे थे, लेकिन दूसरे बादल भी उनका पीछा कर रहे थे। सुदूर उत्तर में बादलों का एक अटूट स्रोत था। मोटी, धूसर वर्दी पहने, चुपचाप और लगन से काम करने वाले श्रमिकों की टीमें सुबह से रात तक वहाँ बादल बना रही थीं। ठीक वैसे ही जैसे मधुमक्खियाँ शहद बनाती हैं, मकड़ियाँ जाले बनाती हैं और जंगली सूअर विधवा पत्नियाँ बनाते हैं।
टेंगो ने अपनी घड़ी देखी। आठ बजने वाले थे। पार्क अभी भी सुनसान था। बीच-बीच में कोई न कोई पार्क के सामने वाली सड़क से जल्दी-जल्दी कदमों से गुजरता। काम से घर लौट रहे सभी लोग एक ही रास्ते से जा रहे थे। सड़क के दूसरी ओर बनी छह मंजिला इमारत की लगभग आधी खिड़कियाँ रोशन थीं। सर्द हवा वाली रात में खिड़कियों की रोशनी में एक खास गर्माहट और कोमलता झलक रही थी। टेंगो एक-एक करके रोशन खिड़कियों को ऐसे देख रहा था जैसे कोई नाविक छोटी मछली पकड़ने वाली नाव पर बैठा हो और रात में अचानक दिखाई देने वाले किसी आलीशान क्रूज जहाज को देख रहा हो। मानो सभी निवासी आपस में बातें कर रहे हों, सभी खिड़कियों पर पर्दे लगे हुए थे। पार्क में जमी हुई स्लाइड से देखने पर ऐसा लग रहा था मानो वह कोई दूसरी ही दुनिया हो, अलग सिद्धांतों पर बनी हो और अलग नियमों के अनुसार चल रही हो। उन पर्दों के पीछे लोग थे जो बिल्कुल सामान्य जीवन जी रहे थे, शायद शांतिपूर्ण और खुशहाल।
एक बिल्कुल सामान्य जीवन?
जब टेंगो ने इस बारे में सोचा, तो उसके मन में बस एक नीरस और सतही दृश्य ही आया। एक पति-पत्नी, शायद दो बच्चे। औरत ने रसोई का एप्रन पहना हुआ है। चूल्हे से भाप निकलती हुई एक पतीली है, और चारों मेज पर बैठकर बातें कर रहे हैं। यहीं पर टेंगो की कल्पना रुक गई। आम परिवार खाना खाते समय किस बारे में बात करते हैं? उसे याद नहीं था कि उसने कभी अपने पिता से मेज पर बैठकर बात की हो। वे दोनों चुपचाप बैठकर खाना खाते थे। और जो वे खा रहे थे, उसे देखकर तो यह कहना भी मुश्किल था कि यह रात का खाना था।
खिड़कियों का निरीक्षण करने के बाद, उसने अपनी दृष्टि वापस दोनों चंद्रमाओं पर डाली। लेकिन चाहे वह कितनी भी देर प्रतीक्षा करता, उनमें से किसी ने भी उससे कुछ नहीं कहा। वे आकाश में भावहीन होकर तैर रहे थे, मानो कोई असमान और अव्यवस्थित दोहा हो। आज हमारे पास कोई संदेश नहीं है। बस यही एक बात वे उसे बता रहे थे।
बिना किसी थकान के, बादल दक्षिण की ओर आकाश में बढ़ते रहे। उन्होंने अलग-अलग आकार और रूप धारण किए, फिर वे गायब हो गए। उनमें से कुछ काफी दिलचस्प आकृतियाँ दिखाई दे रही थीं। ऐसा लग रहा था मानो उनके अपने विचार हों। छोटे, मजबूत,

स्पष्ट विचार। लेकिन टेंगो को बादलों के विचारों में नहीं, बल्कि चंद्रमाओं में रुचि थी।
आखिरकार, टेंगो ने हार मान ली, उठा, अंगड़ाई ली और स्लाइड से नीचे उतर गया। वह कुछ नहीं कर सकता था। फिलहाल, उसे इस बात से संतुष्ट रहना था कि महीनों की संख्या में कोई बदलाव नहीं हुआ था। अपने हाथों को जेब में डाले, वह पार्क से निकला और बड़े-बड़े कदमों से घर की ओर चल पड़ा। चलते-चलते उसे फुकाएरी और कोमात्सु की याद आ गई। कोमात्सु को फोन करने का समय आ गया था, उसे उनके बीच जो कुछ हुआ था उसे सुलझाना था। और कोमात्सु ने भी उसे बताया था कि उसे उससे थोड़ी देर में कुछ बात करनी है। उसने उसे चिकुरा सैनिटोरियम का फोन नंबर दिया था, लेकिन उसने फोन नहीं किया था। टेंगो ने अगले दिन उसे फोन करने का फैसला किया, लेकिन उससे पहले वह स्कूल जाकर फुकाएरी का छोड़ा हुआ पत्र पढ़ना चाहता था।
*

फुकेरी का पत्र डेस्क की दराज में बिना खुला पड़ा था। सीलबंद लिफाफे के अंदर एक छोटा सा पत्र था, जो नोटबुक के आधे पन्ने पर नीले रंग की कलम से लिखा गया था। कीलाकार लिपि जैसे ये निशान कागज की बजाय मिट्टी की पट्टिका पर ज्यादा उपयुक्त लगते। तेंगो को अच्छी तरह पता था कि फुकेरी को इन्हें लिखने में काफी समय लगा होगा।
उसने इसे कई बार पढ़ा। फुकेरी उसे चेतावनी दे रहा था कि उसे अपना घर छोड़ना होगा। उसने तुरंत लिखा था। कारण यह था कि उन पर नज़र रखी जा रही थी। अपनी बात को और ज़ोरदार ढंग से कहने के लिए उसने पेंसिल से तीन जगहों पर मोटी रेखा खींची थी। उसने यह नहीं बताया कि उसे कैसे पता चला कि उन पर नज़र रखी जा रही है। फुकेरी की दुनिया में, बातें सीधे-सीधे नहीं कही जा सकती थीं। ठीक वैसे ही जैसे किसी समुद्री डाकू के खजाने का नक्शा, हर चीज़ एक पहेली और संकेत होती है। या शायद बातें अनुपस्थिति और बदलावों के ज़रिए ही कही जानी थीं। ठीक वैसे ही जैसे 'द एयर क्राइसालिस' के मूल संस्करण में था।
लेकिन फुकाएरी का इरादा शायद पहेलियाँ पूछने या अस्पष्ट संकेत देने का नहीं था। उनके लिए, यह खुद को व्यक्त करने का स्वाभाविक तरीका था। वह केवल उसी व्याकरण और शब्दावली का उपयोग करके अपने विचारों और छवियों को व्यक्त कर सकती थीं। फुकाएरी के साथ अपने विचार साझा करने के लिए, आपको उस व्याकरण से परिचित होना पड़ता था। उनके संदेशों को समझने के लिए, आपको अपनी सभी क्षमताओं और प्रतिभाओं का उपयोग करना पड़ता था और धीरे-धीरे, जो कुछ भी बदलने की आवश्यकता होती थी, उसे बदलना और जो कुछ भी जोड़ने की आवश्यकता होती थी, उसे जोड़ना पड़ता था ताकि आप समझ सकें कि वह क्या कहना चाहती हैं।
लेकिन अक्सर टेंगो उसकी कही हर बात को सीधे-सीधे मान लेता था। अगर वह कहती कि उन पर नज़र रखी जा रही है, तो शायद सच में रखी जा रही होती। अगर उसे लगता कि उसे जाना ही है, तो वाकई उस जगह को छोड़ देने का समय आ गया था। पहले, इन सामान्य सच्चाइयों को स्वीकार कर लो। जहाँ तक मकसद और बारीकियों की बात है, तो वह या तो बाद में खुद ही पता लगा सकता था या उन पर शक कर सकता था। या फिर शुरू से ही इस मामले को छोड़ दे।
हम पर नजर रखी जा रही है।
क्या इसका मतलब यह था कि पायनियर्स ने उसका पता लगा लिया था? वे फुकाएरी से उसके संबंध के बारे में जानते थे। उन्हें पता चला था कि कोमात्सु के कहने पर

टेंगो ने 'द एयर क्राइसालिस' को दोबारा लिखा था। इसीलिए उशिकावा ने उससे संपर्क करने की कोशिश की थी। इस तरह (हालाँकि उसे अभी भी समझ नहीं आया था कि क्यों), उन्होंने टेंगो को अपने प्रभाव में रखने की कोशिश की थी। इसका मतलब यह था कि पायनियर्स का उसके अपार्टमेंट पर नज़र रखना बिलकुल भी असंभव नहीं था। अगर ऐसा था भी, तो उन्हें ज़रा भी जल्दी नहीं थी। फुकेरी लगभग तीन महीने पहले उसके पास आई थी। ये लोग संगठित और शक्तिशाली थे। अगर वे सचमुच उसे पकड़ना चाहते, तो कभी भी पकड़ सकते थे। उसके अपार्टमेंट पर लंबे समय तक नज़र रखने की कोई ज़रूरत नहीं थी। न ही वे उसे अपनी मर्ज़ी से जाने देते। फिर भी फुकेरी ने बड़े करीने से अपना सामान पैक किया, घर छोड़ा, योयोगी के उस स्कूल में गई जहाँ उसने उसका पत्र छोड़ा था, और फिर न जाने कहाँ गायब हो गई।
जैसे-जैसे वह इसे समझने की कोशिश करता गया, वैसे-वैसे वह और भी उलझन में पड़ता गया। वह बस यही निष्कर्ष निकाल सका कि पायनियर्स उसे पकड़ने की कोशिश नहीं कर रहे थे। कौन जाने, कहीं उन्होंने किसी समय फुकाएरी से अपना ध्यान हटा तो नहीं लिया? यह उससे जुड़ा हुआ था, लेकिन कोई और था। किसी कारणवश, फुकाएरी अब कोई खतरा नहीं थी। लेकिन फिर उसके अपार्टमेंट पर निगरानी क्यों रखी जा रही थी?
*

स्कूल के पेफोन से, टेंगो ने उस प्रकाशन गृह में फोन किया जहाँ कोमात्सु काम करता था। रविवार था, लेकिन उसे छुट्टी के दिनों में भी काम पर जाना अच्छा लगता था, और टेंगो यह जानता था। वह अक्सर कहता था, "जब ऑफिस में कोई न हो तो वहाँ रहना कितना अच्छा लगता है।" लेकिन अब फोन का जवाब किसी ने नहीं दिया। टेंगो ने अपनी घड़ी देखी। अभी ग्यारह बजे थे, कोमात्सु कभी इतनी जल्दी काम पर नहीं आता था। सप्ताह का कोई भी दिन हो, वह सूरज डूबने के बाद ही काम शुरू करता था। टेंगो कैंटीन गया, बैठ गया और एक कप कॉफी पीते हुए उसने फुकाएरी का पत्र दोबारा पढ़ा। वह उसकी लिखावट का आदी हो चुका था, जिसमें बहुत कम चित्रलिपि होती थी और पैराग्राफ व विराम चिह्न नहीं होते थे।

टेंगो-सान, आप चिट्ठी पढ़ रहे हैं क्योंकि आप बिल्लियों के शहर से लौट आए हैं, बहुत बढ़िया! हम पर नज़र रखी जा रही है, इसलिए मुझे आपको छोड़कर जाना होगा। मेरी चिंता मत कीजिए, लेकिन मैं अब यहाँ नहीं रह सकता। मैंने आपको बताया था, जिसे आप ढूंढ रहे हैं वह पास ही है, आप पैदल जा सकते हैं, लेकिन सावधान रहें क्योंकि हम पर नज़र रखी जा रही है।

टेंगो ने उन संक्षिप्त वाक्यों को तीन बार पढ़ा, फिर पत्र को मोड़कर अपनी जेब में रख लिया। हमेशा की तरह, फुकाएरी ने उसे जो लिखा था, उसे वह जितना अधिक पढ़ता गया, उसकी बातें उतनी ही विश्वसनीय होती गईं।
कोई उसे देख रहा था। टेंगो ने इसे स्वाभाविक मान लिया। उसने कैफ़ेटेरिया में ऊपर और चारों ओर देखा। क्लास चल रही थी और जगह लगभग सुनसान थी। कुछ छात्र अपनी पाठ्यपुस्तकों से पढ़ रहे थे या अपनी नोटबुक में कुछ लिख रहे थे। उसे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं दिखा जो छुपकर उसका पीछा कर रहा हो।
यह एक बुनियादी समस्या थी। अगर वे फुकाएरी के पीछे नहीं थे, तो फिर वे असल में क्या चाहते थे? क्या वे टेंगो को चाहते थे या उस घर को जिसमें वह रहता था? चाहे वह कितना भी सोच ले, टेंगो सिर्फ अनुमान ही लगा सकता था। उसे अब भी यही लग रहा

उसने अपने विचारों को त्याग दिया और घर लौटते समय रेलवे स्टेशन के पास से खरीदे अखबार पर एक नज़र डाली। उस पतझड़ में, दोबारा राष्ट्रपति चुने गए रोनाल्ड रीगन और प्रधानमंत्री यासुहिरो नाकासोन के बीच इतनी अच्छी दोस्ती हो गई थी कि वे एक-दूसरे को "यासु" और "रॉन" कहकर पुकारते थे। बेशक, तस्वीर की गुणवत्ता भी कुछ हद तक खराब थी, लेकिन वे दो ऐसे बिल्डरों की तरह लग रहे थे जो सस्ते और घटिया निर्माण सामग्री से बदलने के बारे में चर्चा कर रहे हों। भारत में इंदिरा गांधी की हत्या के कारण नागरिक अशांति जारी थी और कई सिखों का नरसंहार हो रहा था। जापान में उस वर्ष सेब की फसल असाधारण रूप से अच्छी हुई थी। लेकिन तेंगो को पूरे अखबार में एक भी ऐसा लेख नहीं मिला जो उसे व्यक्तिगत रूप से रुचिकर लगे।
उसने घड़ी में दो बजने का इंतजार किया और फिर कोमात्सु को फोन किया।
*

हमेशा की तरह, कोमात्सु के फोन उठाने से पहले बारह बार घंटी बजी। पता नहीं क्यों, कोमात्सु कभी भी तुरंत फोन नहीं उठाता था।
“टेंगो, तुम कैसे हो?” उसने कहा।
उनकी आवाज में पहले जैसी लय लौट आई थी। थोड़ी नाटकीय, अस्पष्ट, और समझने में मुश्किल।
मैंने दो हफ्ते की छुट्टी ली और चिबा में रुका। मैं कल रात ही वापस आया हूँ।
"आपने मुझे बताया था कि आपके पिता की तबीयत ठीक नहीं है। मुझे लगता है कि यह आपके लिए बिल्कुल भी आसान नहीं था।"
"कोई बात नहीं। पिताजी कोमा में हैं, मैंने बस उन्हें देखा और समय बिताया।
बाकी, मैं सराय में रुका रहा और एक उपन्यास पर काम करता रहा।"
— हां, लेकिन एक आदमी की जान दांव पर लगी थी, मुझे यकीन है कि यह आपके लिए आसान नहीं था।
टेंगो ने विषय बदल दिया।
"पिछली बार जब हमारी बात हुई थी, तो आपने कहा था कि आप किसी बात पर चर्चा करना चाहते हैं। काफी समय हो गया है।"
"हां, वही कहानी," कोमात्सु ने कहा। "मैं आपसे मिलकर विस्तार से बात करना चाहूंगा। आपके पास कब समय है?"
अगर यह कोई महत्वपूर्ण बात है, तो हमें इस पर जल्द से जल्द चर्चा करनी चाहिए, है ना?
— जी हाँ, जितनी जल्दी हो उतना अच्छा।
मैं आज रात ऐसा कर सकता हूँ।
"वाह, बहुत बढ़िया। आज मेरे पास भी समय है। सात बजे कैसा रहेगा?"
"यह एकदम सही है," टेंगो ने कहा।
कोमात्सु ने उसे प्रकाशन गृह के पास एक बार का नाम बताया। टेंगो वहां कई बार जा चुका था।
मैंने कहा, चलो वहीं चलते हैं, वह रविवार को खुला रहता है और वहां ज्यादा भीड़ नहीं होती। हम शांति से बातें कर सकते हैं।
क्या इसमें लंबा समय लगता है?
कोमात्सु ने एक पल सोचा।

— क्या मुझे पता है? जब तक हम खुलकर बात नहीं करते, मुझे नहीं पता कि यह रिश्ता लंबा चलेगा या छोटा।
"कोई बात नहीं। हम जितनी देर चाहें बात कर सकते हैं, मैं यहीं रहूंगा। हम दोनों एक ही नाव में हैं, है ना? या फिर इस बीच आप किसी दूसरी नाव में सवार हो गए हैं?"
"नहीं, नहीं," कोमात्सु ने असामान्य रूप से विनम्र स्वर में उत्तर दिया। "अब हम दोनों एक ही नाव में हैं। खैर, मैं तुमसे सात बजे मिलूंगा। मैं तुम्हें तब सारी जानकारी दूंगा।"
*

फोन रखने के बाद, टेंगो अपनी डेस्क पर बैठ गया और अपना वर्ड प्रोसेसर चालू किया। उसने चिकुरा सराय में किए गए अपने सारे काम को टाइप करना शुरू कर दिया। जैसे ही उसने अपने वाक्यों को दोबारा पढ़ा, उसे शहर, अस्पताल और तीनों नर्सों के चेहरे याद आ गए। चीड़ के पेड़ों से होकर बहती समुद्री हवा और हवा में उड़ते सफेद सीगल भी उसके दिमाग में छा गए। टेंगो खड़ा हुआ, पर्दे हटाए और खिड़की खोल दी। फिर उसने बाहर की ठंडी हवा में गहरी सांस ली।
टेंगो-सान, आप बिल्ली वाले शहर से वापस आ गए हैं इसलिए पत्र पढ़ रहे हैं, यह बहुत अच्छी बात है।
वह सचमुच लौट आया था, लेकिन उसके घर पर नज़र रखी जा रही थी। उसे नहीं पता था कि कौन और कहाँ से। शायद उसके अपार्टमेंट में कैमरे लगाए गए थे। इस सोच से बेचैन होकर, टेंगो ने अपने घर के कोने-कोने की तलाशी ली, लेकिन ज़ाहिर है उसे कोई छिपा हुआ कैमरा या माइक्रोफ़ोन नहीं मिला। यह बस एक छोटा सा पुराना अपार्टमेंट था, ऐसी कोई भी चीज़ उसे तुरंत नज़र आ जाती।
टेंगो अंधेरा होने तक उपन्यास पर काम करता रहा। वह केवल नकल ही नहीं करता था, बल्कि उसमें जगह-जगह बदलाव भी करता था। उसे अनुमान से ज़्यादा समय लग गया। जब उसने काम रोककर अपनी मेज पर रखा लैंप जलाया, तो उसे एहसास हुआ कि कौआ उस दिन उसके पास नहीं आया था। उसे कौए के आने की आहट सुनाई दे रही थी, जब वह अपने बड़े पंखों को खिड़की से रगड़ रहा था। शीशे पर चिकनाई के निशान थे, मानो कोई गुप्त गूढ़ रहस्य हो जिसे सुलझाना बाकी हो।
लगभग साढ़े पाँच बजे उसने अपने लिए कुछ खाने को बनाया। उसे भूख नहीं थी, लेकिन उसने दोपहर के खाने में भी ज़्यादा कुछ नहीं खाया था। कुछ खा लेने में कोई हर्ज़ नहीं था। उसने टमाटर और समुद्री शैवाल का सलाद बनाया और उसे टोस्ट के एक टुकड़े के साथ खाया। सवा छह बजे उसने अपने गले में लिपटे काले स्वेटर के ऊपर जैतून के रंग का कॉरडरॉय कोट पहना और घर से निकल गया। इमारत के दरवाज़े पर वह रुका और फिर चारों ओर देखा, लेकिन उसे कुछ भी ऐसा नहीं दिखा जिसने उसका ध्यान खींचा हो। बिजली के खंभों के पीछे कोई नहीं छिपा था। कोई संदिग्ध कार खड़ी नहीं थी। कौआ भी नहीं आया था। लेकिन टेंगो और भी ज़्यादा बेचैन हो गया। उसके आस-पास की सभी साधारण चीज़ें उसे देख रही थीं। और खरीदारी के थैले लिए खड़ी गृहिणी, अपने कुत्ते को टहलाता हुआ चुपचाप बूढ़ा आदमी, और कंधे पर टेनिस बैग लिए साइकिल पर बिना उसकी ओर देखे गुज़रा हाई स्कूल का छात्र, क्या ये सभी पायनियर्स के आदमी चुपके से उस पर नज़र नहीं रख रहे थे?
मुझे डर लगने लगा, उसने सोचा। बेशक मुझे सावधान रहना चाहिए, लेकिन ज़रूरत से ज़्यादा सावधान रहने की भी ज़रूरत नहीं है। वह तेज़ी से स्टेशन की ओर बढ़ा।

बीच-बीच में वह पीछे मुड़कर देखता रहा ताकि यह सुनिश्चित कर सके कि कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा है। अगर कोई उसका पीछा कर रहा होता, तो टेंगो को ज़रूर पता चल जाता। उसकी दृष्टि असाधारण रूप से व्यापक थी और उसकी नज़रें तेज़ थीं। तीन बार पीछे मुड़कर देखने के बाद, यह स्पष्ट हो गया कि उसके पीछे कोई नहीं था।
*

वह पौने सात बजे बैठक स्थल पर पहुँचा। कोमात्सु अभी तक नहीं आया था, और चूंकि बार अभी-अभी खुला था, इसलिए टेंगो पहला ग्राहक था। काउंटर पर ताज़े फूलों की सजावट थी, और ताज़े कटे फूलों की महक हवा में फैली हुई थी। टेंगो पीछे की ओर एक बूथ में बैठ गया और एक ड्राफ्ट बियर का ऑर्डर दिया। फिर उसने अपनी जेब से किताब निकाली।
कोमात्सु सवा सात बजे प्रकट हुए। अपनी ट्वीड जैकेट के नीचे उन्होंने एक पतला कश्मीरी स्वेटर पहना हुआ था। उनके पास एक कश्मीरी स्कार्फ और ऊनी पतलून भी थी। पैरों में हमेशा की तरह साबर के जूते थे। हालांकि वे सुरुचिपूर्ण और उच्च गुणवत्ता वाले थे, उनके कपड़े थोड़े पुराने थे। जब भी वे कुछ पहनते, हर कपड़ा ऐसा लगता था मानो वे उसे हमेशा से पहनते आ रहे हों। टेंगो को याद नहीं था कि उन्होंने उन्हें कभी कुछ नया पहने देखा हो। शायद जब उन्होंने कोई कोट खरीदा होगा, तो पहले उसे पहनकर सोए होंगे, उस पर पैर रखे होंगे, अनगिनत बार धोया होगा और सूखने के लिए छांव में छोड़ दिया होगा। उसके बाद ही, जब उसका रंग फीका पड़ गया और वह जर्जर दिखने लगा, तब उन्होंने उसे पहनकर बाहर निकलने की हिम्मत की, कपड़ों के प्रति पूर्ण उदासीनता का भाव दिखाते हुए। किसी भी तरह से, वे एक अनुभवी संपादक की तरह दिखते थे। यानी, वे एक अनुभवी संपादक के अलावा और कुछ नहीं थे।
वह टेंगो के सामने बैठ गया और उसने भी एक पाइंट बियर मंगवाई।
उन्होंने कहा, "तुम बिल्कुल भी नहीं बदले हो। तुम्हारा नया उपन्यास कैसा चल रहा है?"
— काफी धीरे-धीरे, लेकिन काम चल रहा है।
"यह बहुत अच्छी बात है। नियमित काम के बिना लेखक का विकास नहीं होता। ठीक वैसे ही जैसे एक इल्ली पेड़ों की पत्तियाँ खाती रहती है। जैसा कि मैंने आपको बताया, 'द एयर क्राइसालिस' को दोबारा लिखने का आप पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। क्या मैं सही कह रहा हूँ?"
मैं सहमत हूं।
"बिल्कुल सही। मैंने उस अनुभव से कुछ महत्वपूर्ण बातें सीखीं। मुझे कुछ ऐसे पहलू देखने को मिले जो मैंने पहले कभी नहीं देखे थे।"
"मैं शेखी नहीं मारना चाहता, लेकिन मुझे अच्छी तरह पता है कि ये सब कैसे होता है। आपको ऐसे ही मौके की जरूरत थी।"
लेकिन जैसा कि आप जानते हैं, इसकी वजह से मुझे काफी परेशानी भी उठानी पड़ी। कोमात्सु ने कड़ाके की ठंड में एक नए राजा की तरह मुस्कुराया। एक ऐसी मुस्कान जिसे समझना मुश्किल था।
"किसी महत्वपूर्ण चीज को पाने के लिए कीमत चुकानी पड़ती है। यही दुनिया के नियम हैं।"

— यह बात सच हो सकती है, लेकिन महत्वपूर्ण क्या है और उसकी कीमत क्या चुकानी पड़ती है, इन दोनों में अंतर करना आसान नहीं है। ये दोनों आपस में मिल जाते हैं, पता नहीं चलता कि कौन सा क्या है।
"मामले उलझ रहे हैं, मेरा मतलब यही है। जैसे टेलीफोन की तारें उलझ जाती हैं," कोमात्सु ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। "क्या आपको पता है फुकाएरी कहाँ है?" "मुझे नहीं पता कि वह इस समय कहां है," टेंगो ने सोच-समझकर कहा।
"अभी इसी वक्त," कोमात्सु ने अर्थपूर्ण लहजे में दोहराया।
टेंगो ने कोई जवाब नहीं दिया।
"लेकिन वह तुम्हारे साथ रहता था," कोमात्सु ने कहा। "मैंने यही सुना है।"
"जी हां," टेंगो ने सहमति जताते हुए कहा। "वह लगभग तीन महीने तक मेरे साथ रहा।" "तीन महीने बहुत लंबा समय होता है। और तुमने किसी को बताया भी नहीं है।" "मैंने किसी को नहीं बताया, यहां तक कि आपको भी नहीं, क्योंकि उसने मुझे ऐसा करने के लिए कहा था।"
और आप कहते हैं कि यह अभी आपके पास नहीं है।
"नहीं। उसने मुझे एक पत्र छोड़ा और जब मैं चिकुरा में थी तब वह चला गया। मुझे नहीं पता कि उसने उसके बाद क्या किया।"
कोमात्सु ने एक सिगरेट निकाली, उसे अपने मुंह में रखा और माचिस से जलाया। उसने पलकों के बीच से टेंगो को देखा।
“वह फ़ुतमाताओ की पहाड़ी पर स्थित प्रोफ़ेसर एबिसुनो के पास वापस चली गई,” उन्होंने कहा। प्रोफ़ेसर ने पुलिस से अपना अनुरोध वापस ले लिया और उन्हें बताया कि लड़की बस कहीं गई थी, उसका अपहरण नहीं हुआ था। पुलिस को शायद फ़ुकाएरी से कुछ सवाल पूछने थे, जैसे कि वह कहाँ गई थी, क्यों गायब हुई थी। आख़िरकार, वह नाबालिग है। अख़बारों में जल्द ही यह खबर छपेगी कि युवा लेखिका सुरक्षित लौट आई है। खैर, इससे कोई खास हलचल नहीं मचेगी, खासकर इसलिए क्योंकि इसमें कोई अपराध शामिल नहीं है।
"क्या यह पता चलेगा कि वह मेरे साथ छिपा था?"
कोमात्सु ने अपना सिर हिलाया।
"नहीं, फुकेरी ने तुम्हारा नाम नहीं लिया। वो उस तरह का आदमी है कि अगर वो चुप रहने का फैसला कर ले, तो चुप ही रहता है। तुम पुलिस, सेना, मदर टेरेसा, जिसे चाहो, बुला सकते हो। इसलिए चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है।"
मैंने इसके बारे में सोचा भी नहीं था। मैं बस यह जानना चाहता हूं कि अब आगे क्या होने वाला है।
"खैर, चिंता मत करो, तुम्हारा नाम कहीं नहीं आएगा," कोमात्सु ने कहा, फिर अचानक गंभीरता से उसकी ओर देखा। "लेकिन छोड़ो, मुझे तुमसे कुछ पूछना है और यह मेरे लिए काफी मुश्किल है।"
"काफी कठिन?"
"लगभग ऐसा ही। कुछ निजी मामला।"
टेंगो ने बीयर का एक घूंट लिया। फिर उसने गिलास वापस मेज पर रख दिया।
कोई बात नहीं, अगर मैं आपको जवाब दे सकता हूँ, तो मैं दूंगा।
"क्या तुम्हारे फुकेरी के साथ यौन संबंध थे? मेरा मतलब है, जब वह तुम्हारे घर पर रुका था। बस हां या ना में जवाब दो, मुझे और किसी बात से कोई लेना-देना नहीं है।"

टेंगो ने कुछ पल इंतजार किया, फिर धीरे से अपना सिर हिलाया।
— इसका जवाब है नहीं। मेरा उससे ऐसा कोई रिश्ता नहीं था।
टेंगो को लगा कि जो कुछ भी हुआ हो, उस तूफानी रात में जो कुछ भी हुआ था, उसके बारे में वह बात नहीं कर सकता था। यह एक ऐसा रहस्य था जिसे वह बता नहीं सकता था। उसे इसके बारे में बात करने की अनुमति नहीं थी। इसके अलावा, उस समय जो कुछ हुआ था, उसे वास्तव में यौन संबंध नहीं कहा जा सकता था। यह वैसा नहीं था जैसा आमतौर पर यौन संबंध समझा जाता है। न तो उसकी तरफ से, न ही उसकी तरफ से।
— तो आपके बीच यौन संबंध नहीं थे।
"नहीं," टेंगो ने रूखेपन से जवाब दिया।
कोमात्सु की नाक कुछ बार सिकुड़ने लगी।
"टेंगो, मुझे तुम्हारी बात पर कोई शक नहीं है। लेकिन मुझे ऐसा लगा कि एक पल के लिए तुम हिचकिचाए। क्या कुछ ऐसा हुआ जो यौन संबंध के करीब था? मैं तुम्हें किसी बात के लिए दोषी नहीं ठहरा रहा, मैं बस यह जानने की कोशिश कर रहा हूँ कि मामला क्या है।"
टेंगो ने कोमात्सु की आंखों में सीधे देखा।
"मैंने ज़रा भी संकोच नहीं किया। मुझे बस थोड़ा अजीब लगा। मुझे समझ नहीं आता कि अगर मेरे और फुकाएरी के बीच ऐसी बातें होतीं तो तुम्हें क्या फ़र्क पड़ता। खासकर तब जब तुम दूसरों की निजी ज़िंदगी में दखल देने वाले इंसान नहीं हो। बल्कि, मैं तो यही कहूंगी कि तुम ऐसी बातों से दूर रहो।"
— हे भगवान, कोमात्सु।
"तो फिर हम इस बारे में अभी चर्चा क्यों कर रहे हैं?"
"आम तौर पर, मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम किसके साथ सोते हो या फुकाएरी क्या करती है और किसके साथ करती है," कोमात्सु ने अपनी नाक खुजाते हुए कहा। जैसा कि तुमने कहा था। लेकिन जैसा कि तुम अच्छी तरह जानते हो, फुकाएरी बाकी लड़कियों जैसी नहीं है। मैं तुम्हें कैसे बताऊं, उसके काम समझ में आते हैं।"
- समझ आया?
कोमात्सु ने कहा, "सैद्धांतिक रूप से, हर किसी के कार्यों का अंततः कोई न कोई अर्थ होता है। लेकिन फुकाएरी के मामले में, इसका अर्थ कहीं अधिक गहरा है। उसके व्यक्तित्व में कुछ असाधारण तत्व हैं। इसीलिए हमें उन घटनाओं के बारे में निश्चितता होनी चाहिए जिनमें वह शामिल है।"
आप कहते हैं कि यह "जरूरी" है। भला कौन जानना चाहेगा?
कोमात्सु असामान्य रूप से भ्रमित दिख रहा था।
"सच तो यह है कि यह मैं नहीं था जो जानना चाहता था कि तुमने फुकेरी के साथ संबंध बनाए थे या नहीं, बल्कि यह प्रोफेसर एबिसुनो थे।"
"क्या उसे पता है कि फुकेरी मेरे साथ रुकी थी?"
"बिल्कुल। उसे उसी दिन पता चल गया था जब वह तुम्हारे साथ रहने आई थी। फुकेरी हमेशा उसे बताती थी कि वह कहाँ जाती है।"
"मुझे नहीं पता था," टेंगो ने आश्चर्य व्यक्त किया।
उसने उससे कहा था कि अब किसी को नहीं पता कि वह कहाँ है। लेकिन अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

"मुझे अब भी समझ नहीं आ रहा। प्रोफेसर एबिसुनो फुकाएरी के वास्तविक संरक्षक हैं और सामान्य तौर पर उन्हें ऐसी चीजों का ध्यान रखना चाहिए। लेकिन हम एक बहुत ही जटिल स्थिति में हैं और आप उम्मीद करेंगे कि उनकी सबसे बड़ी चिंता फुकाएरी की सुरक्षा और हिफाज़त होगी। मुझे यह मानना मुश्किल लगता है कि फुकाएरी की पवित्रता उनकी प्राथमिकताओं की सूची में इतनी ऊपर होगी।" कोमात्सु ने अपने होंठों के एक कोने को हल्का सा मोड़ा।
"मुझे नहीं पता कि मामला क्या है। प्रोफेसर ने मुझे यही करने को कहा था, आपसे मिलने और यह पता लगाने के लिए कि क्या आपके फुकेरी के साथ शारीरिक संबंध थे। इसलिए मैंने आपसे पूछा, और आपका जवाब 'नहीं' था।"
"हाँ, बिल्कुल सही। मेरा फुकेरी के साथ कोई शारीरिक संबंध नहीं था," तेंगो ने अपने वार्ताकार की आँखों में देखते हुए दृढ़ता से कहा।
उसे बिल्कुल भी ऐसा महसूस नहीं हुआ कि वह झूठ बोल रहा है।
"तो फिर यह अच्छी बात है," कोमात्सु ने माचिस से मार्लबोरो सिगरेट जलाते हुए कहा। "मैं यही जानना चाहता था।"
"फुकेरी बेशक एक खूबसूरत लड़की है जो लोगों का ध्यान आकर्षित करती है। लेकिन जैसा कि आप जानते हैं, मैं पहले से ही मुसीबत में हूँ। और यह मेरी इच्छा के विरुद्ध है। मैं खुद को और अधिक मुसीबत में नहीं डालना चाहता। इसके अलावा, मेरा पहले से ही एक यौन साथी है।"
"मैं समझ गया," कोमात्सु ने कहा। "ऐसे मामलों में आप काफी समझदार हैं और आपका दिमाग भी सही काम करता है। मैं यह बात प्रोफेसर को बता दूंगा। इतना संवेदनशील सवाल पूछने के लिए क्षमा चाहता हूं। उम्मीद है आपको बुरा नहीं लगेगा।"
"मुझे गुस्सा नहीं है। मुझे बस यह अजीब लगा कि आपने इस विषय को उठाया," टेंगो ने थोड़ी देर रुककर कहा। "लेकिन आप मुझे असल में क्या बताना चाहते थे?" कोमात्सु ने अपनी बियर खत्म की और बारटेंडर से हाईबॉल मांगी।
“तुम क्या ले रहे हो?” उसने टेंगो से पूछा।
- जो उसी।
बारटेंडर ने पेय के दो लंबे गिलास उनके सामने रख दिए।
"सबसे पहले," कोमात्सु ने लंबी चुप्पी के बाद कहा, "हमें उस उलझी हुई स्थिति को जितना हो सके सुलझाना होगा जिसमें हम फंसे हुए हैं। आखिरकार, हम सब एक ही नाव में हैं। हम चारों, यानी तुम, मैं, फुकाएरी और प्रोफेसर एबिसुनो।"
"एक बेहद दिलचस्प समूह," टेंगो ने कहा, लेकिन उनके लहजे में निहित व्यंग्य कोमात्सु तक नहीं पहुंचा।
ऐसा लग रहा था कि वह अपनी बात पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।
हम चारों ने इस कहानी में अपनी-अपनी अपेक्षाओं के साथ प्रवेश किया, जो अलग-अलग स्तर की थीं, और हम किसी भी तरह से एक ही दिशा में नहीं बढ़ रहे थे। दूसरे शब्दों में, हम सभी एक ही गति और एक ही कोण पर नाव नहीं चला रहे थे।
— हम एक ऐसा समूह हैं जो शुरू से ही टीम वर्क के लिए उपयुक्त नहीं था।
- आप कह सकते हैं कि।
और नाव तेजी से झरने की ओर बढ़ गई।
कोमात्सु ने स्वीकार किया, "नाव तेज़ी से झरने की ओर बढ़ रही थी। लेकिन आप जानते हैं, और मैं इसके लिए माफ़ी नहीं माँगना चाहता, हमारी योजना शुरू में बेहद सरल थी। आप 'द एयर क्राइसालिस' को दोबारा लिखकर इनाम जीतेंगे। किताब खूब

बिकेगी। हम सबको बेवकूफ़ बनाएंगे और अच्छी-खासी रकम इकट्ठा करेंगे। आधा धोखा, आधा मुनाफ़ा। यही हमारा विचार था। लेकिन जब से प्रोफ़ेसर एबिसुनो इसमें शामिल हुए, साज़िश और पेचीदा हो गई। कुछ साज़िशें गुप्त रूप से रची जाने लगीं, और धारा हमें तेज़ी से आगे ले जाने लगी। आपने जो किताब दोबारा लिखी, वह मेरी उम्मीद से कहीं बेहतर निकली, इसलिए जनता ने उसे खूब सराहा और वह खूब बिकी। नतीजतन, जिस नाव में हम हैं, वह हमें ऐसी जगहों पर ले गई है जहाँ किसी ने सोचा भी नहीं था कि हम पहुँचेंगे। कुछ बेहद असुरक्षित जगहें।"
टेंगो ने अपना सिर हल्के से हिलाया।
"यह सिर्फ थोड़ा असुरक्षित नहीं है। यह बेहद खतरनाक है।"
- आप कह सकते हैं कि।
"इसे ऐसा मामला मत समझो जिसका तुमसे कोई लेना-देना नहीं है। यह योजना तुमने ही शुरू से बनाई थी।"
— मैं आपसे सहमत हूँ। यह विचार मेरा था और मैंने ही शुरुआत की। शुरू में सब ठीक चल रहा था, लेकिन दुर्भाग्यवश बीच में मेरा नियंत्रण बिगड़ गया। ज़ाहिर है, मैं खुद को ज़िम्मेदार मानता हूँ। खासकर इसलिए कि मैंने आपको भी इसमें शामिल कर लिया। एक तरह से मैंने आपको इस कहानी में जबरदस्ती घसीटा। खैर, अब हमें रुककर अपने रुख पर पुनर्विचार करना होगा। आइए अनावश्यक बातों को हटाकर कथानक को जितना हो सके सरल बनाएं। आइए यह तय करें कि हम अभी कहाँ हैं और अब आगे किस दिशा में जाना चाहते हैं।
कोमात्सु ने बोलना बंद कर दिया, गहरी सांस ली और अपनी हाईबॉल ड्रिंक पी ली। फिर उसने कांच की ऐशट्रे उठाई और अंधे की तरह उसे टटोलने लगा।
“सच तो ये है कि मेरा करीब सत्रह-अठारह दिनों तक अपहरण रहा,” उन्होंने तब कहा।
अगस्त के अंत से सितंबर के मध्य तक। एक दिन दोपहर के करीब मैं काम पर जा रहा था। मैं गोटोकुजी मंदिर के पास सड़क पर था। एक काली वैन से किसी ने खिड़की नीचे की और मुझे पुकारा: “क्या आप कोमात्सु-सान हैं?” मैं देखने गया कि कौन है और दो लोग कार से उतरे और मुझे अंदर खींच लिया। वे दोनों बहुत ताकतवर थे। उन्होंने मेरे हाथ पीछे की ओर पकड़ रखे थे और दूसरे ने मेरी नाक पर क्लोरोफॉर्म या कुछ और छिड़क दिया। ये क्या बकवास है, बिल्कुल फिल्मों की तरह। लेकिन आप जानते हैं, ये सच में काम करता है। जब मुझे होश आया, तो मैं एक संकरे कमरे में बंद था, जिसमें कोई खिड़की नहीं थी। मैं सफेद दीवारों वाले एक घननुमा कमरे में था। मेरे पास एक संकरा बिस्तर और एक छोटी मेज थी, लेकिन कोई कुर्सी नहीं थी। उन्होंने मुझे बिस्तर पर लिटा दिया था।
“क्या तुम्हारा अपहरण हुआ था?” टेंगो ने पूछा।
अच्छी तरह से जांच करने के बाद, कोमात्सु ने ऐशट्रे को वापस मेज पर रख दिया, ऊपर देखा और टेंगो की ओर देखा।
हां, मेरा अपहरण हो गया था। बिल्कुल उस पुरानी फिल्म 'द कलेक्टर' की तरह। ज़्यादातर लोग कभी अपहरण होने के बारे में सोचते भी नहीं। उनके दिमाग में यह ख्याल भी नहीं आता। है ना? लेकिन अगर होना है तो होकर रहेगा। सुबह उठकर खुद को अपहरणशुदा पाना, यह एक अजीब सा एहसास है। यकीन मानिए!
कोमात्सु ने तेंगो की ओर देखा, मानो उससे जवाब मांग रहा हो। लेकिन यह महज़ एक सवाल था, और तेंगो चुपचाप कहानी के आगे बढ़ने का इंतज़ार करता रहा। जिस गिलास

[illegible]

अध्याय 16 एक कुशल, धैर्यवान और असंवेदनशील मशीन

अगली सुबह, उशिकावा फिर से खिड़की के पास फर्श पर खड़ा हो गया और पर्दे की दरार से निगरानी जारी रखी। वही चेहरे, या कम से कम उनसे मिलते-जुलते चेहरे, जो पिछली शाम को दिखे थे, अब उस ब्लॉक से बाहर निकल रहे थे। काले चेहरे वाले लोग, जो झुके हुए चल रहे थे। नया दिन अभी शुरू भी नहीं हुआ था और वे पहले से ही थके और परेशान लग रहे थे। तेंगो उनमें से नहीं था। लेकिन उशिकावा ने बटन दबाया और हर उस चेहरे को कैमरे में कैद कर लिया जो उसकी नज़र के सामने से गुज़रा। उसके पास काफ़ी फ़िल्म थी और उसे कुशलता से तस्वीरें खींचने के लिए अभ्यास की ज़रूरत थी।
भीड़भाड़ का समय बीत जाने और सभी के निकल जाने के बाद, उशिकावा घर से निकला और पास के एक पे फोन की ओर चल पड़ा। उसने बूथ में प्रवेश किया, योयोगी प्रिपरेटरी स्कूल का नंबर डायल किया और टेंगो से बात करने को कहा।
फोन पर मौजूद महिला ने घोषणा की, "प्रोफेसर कावाना दस दिन पहले छुट्टी पर चले गए थे।"
"क्या वह बीमार है?"
नहीं। परिवार में किसी की तबीयत ठीक नहीं है और उन्हें चिबा प्रांत जाना पड़ा है।
"क्या आपको पता है कि वह कब वापस आएगा?"
"मुझे बताया नहीं गया था," महिला ने जवाब दिया।
उशिकावा ने उन्हें धन्यवाद दिया और फोन काट दिया।
टेंगो के परिवार में केवल एक ही सदस्य था। उसके पिता, जो एनएचके में कैशियर थे। टेंगो को अपनी माँ के बारे में अभी तक कुछ भी पता नहीं था। और जहाँ तक उशिकावा को पता था, पिता-पुत्र के बीच संबंध कभी अच्छे नहीं रहे थे। फिर भी, उसने अपने बीमार पिता की देखभाल के लिए दस दिनों से अधिक की छुट्टी ली थी। यह एक समझ से परे बात थी। टेंगो की उसके प्रति नफरत इतनी जल्दी कैसे कम हो गई? उसे कौन सी बीमारी थी और चिबा के किस अस्पताल में उसका इलाज चल रहा था? यह पता लगाना उसके लिए असंभव नहीं था, लेकिन इसके लिए उसे आधा दिन गंवाना पड़ता और अपनी निगरानी में बाधा डालनी पड़ती।
उशिकावा को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। अगर तेंगो टोक्यो छोड़कर चला गया था, तो इमारत के प्रवेश द्वार पर नज़र रखने का कोई मतलब नहीं था। शायद बेहतर यही होगा कि अभी निगरानी बंद कर दी जाए और दूसरी दिशा में खोजबीन की जाए। एक विकल्प यह था कि पता लगाया जाए कि तेंगो के पिता का इलाज कहाँ हो रहा है। या फिर आओमामे की जाँच को थोड़ा और आगे बढ़ाया जाए। हो सकता है कि वह कंपनी में काम करने के दौरान उसके पुराने कॉलेज या छात्रावास के साथियों से मिले और उनसे बात करे। क्या पता उसे कुछ नए सुराग मिल जाएँ?
लेकिन काफी सोच-विचार के बाद, उशिकावा ने वहीं रुकने और अपनी निगरानी जारी रखने का फैसला किया। पहली बात तो यह कि अगर उसने अभी इसमें दखल देने की कोशिश की, तो उसकी नई जिंदगी की लय पहले ही उलट-पुलट हो जाएगी। उसे सब कुछ नए सिरे से शुरू करना पड़ेगा। दूसरी बात, तेंगो के पिता या आओमामे के परिचितों को ढूंढने में जो मेहनत लगेगी, उससे उसे कुछ खास हासिल नहीं होगा? एक हद तक भागदौड़ वाली

साम्सा किसी कीड़े में बदल जाता है, वैसे ही वे अपने गोल-मटोल, बेढंगे शरीर को ज़मीन पर रखते और अपनी मांसपेशियों को जितना हो सके आराम देते।
ऊब से बचने के लिए, वह हेडफ़ोन लगाकर एएम रेडियो सुनता था। दोपहर के भोजन के कार्यक्रम विशेष रूप से गृहिणियों और बुजुर्गों के लिए बनाए जाते थे। उनमें घटिया चुटकुले सुनाए जाते थे, बेवकूफी भरी हंसी आती थी, तुच्छ और मूर्खतापूर्ण राय व्यक्त की जाती थी, और ऐसा संगीत बजाया जाता था जिसे सुनकर कान बंद करने का मन करता था। और वे उन उत्पादों का ज़ोर-शोर से विज्ञापन करते थे जिन्हें कोई नहीं चाहता था। कम से कम, उशिकावा को तो यही लगता था। फिर भी, चाहे कुछ भी हो, उसे किसी की बात सुनने की इच्छा होती थी। इसलिए उसने दांत पीसकर कार्यक्रम सुने। आखिर उन्हें ऐसे बेवकूफी भरे कार्यक्रम बनाने और फिर रेडियो तरंगों का इस्तेमाल करके उन्हें इतने बड़े क्षेत्र में फैलाने की क्या ज़रूरत थी?
लेकिन उशिकावा भी किसी परिष्कृत और उत्पादक गतिविधि में संलग्न होने का दावा नहीं कर सकते थे। वे एक गरीब से फ्लैट में बने एक कमरे में बंद थे, पर्दे के पीछे छिपे हुए थे और चुपके से दुनिया की तस्वीरें खींचते थे। उनके पास दूसरों को नीचा दिखाने और उनके कामों का मूल्यांकन करने की कोई स्थिति नहीं थी।
और यह सिर्फ उनकी मौजूदा स्थिति तक सीमित नहीं था। वकील रहते हुए भी वे इसी तरह के कामों में शामिल रहे थे। उन्हें याद नहीं था कि उन्होंने कभी मानवता की भलाई के लिए कुछ किया हो। उनके सबसे महत्वपूर्ण मुवक्किल संगठित अपराध से जुड़े छोटे और मध्यम आकार की वित्तीय कंपनियां थीं। उशिकावा ने उनकी कमाई को सबसे कुशल तरीके से बांटने के तरीके खोजे और आवश्यक व्यवस्थाएं कीं। संक्षेप में, वे धन शोधन करते थे। वे भूमि सट्टेबाजी में भी शामिल थे। एक विशेष भूखंड के लंबे समय से रह रहे किरायेदारों को बेदखल कर दिया गया, जमीन को पूरी तरह से समतल कर दिया गया और फिर रियल एस्टेट डेवलपर्स को बेच दिया गया। इससे भारी मात्रा में धन प्राप्त हुआ। और इसमें भी वैसे ही लोग शामिल थे। वे कर चोरी के आरोपियों की पैरवी करने में भी माहिर थे। अधिकांश अनुरोध साधारण वकीलों से आते थे जो इस घोटाले को नजरअंदाज कर देते थे। जब तक उनकी मांग बनी रही (और पैसा आता रहा), उशिकावा ने अपनी क्षमता साबित की और संबंधित व्यक्ति के प्रति उन्हें कोई हिचक नहीं थी। उन्होंने शानदार परिणाम दिए और इसीलिए उनके पास कभी काम की कमी नहीं रही। लगभग उसी समय उनका संपर्क पायनियर्स से हुआ था। किसी कारणवश नेता उसे व्यक्तिगत रूप से पसंद करते थे।
अगर उशिकावा किसी अन्य वकील की तरह अपना काम करते, तो उनका गुजारा नहीं चल पाता। कॉलेज से स्नातक होने, बार परीक्षा पास करने और वकील का लाइसेंस प्राप्त करने के बावजूद, उनके पास कोई जान-पहचान या समर्थन नहीं था। अपने रूप-रंग के कारण, उन्हें किसी भी बड़ी लॉ फर्म में नौकरी नहीं मिली। अगर वे अपनी खुद की लॉ फर्म खोलते और एक आम वकील के तौर पर काम करते, तो शायद उनके पास कोई क्लाइंट भी नहीं होता। दुनिया में बहुत कम लोग ऐसे थे जो किसी असाधारण दिखने वाले वकील की सेवाओं के लिए मोटी रकम देने को तैयार हों। शायद टीवी सीरियल की वजह से, सभी की यह धारणा बन गई थी कि एक प्रतिभाशाली वकील का चेहरा बुद्धिमान और आकर्षक होना चाहिए।
नतीजतन, वह खुद को अंडरवर्ल्ड की दुनिया में खिंचा हुआ पाया। अंडरवर्ल्ड को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि कोई कैसा दिखता है। इसके विपरीत, उसकी

खास शक्ल-सूरत ही उन मुख्य कारणों में से एक थी जिसकी वजह से उन्होंने उसे स्वीकार किया और उस पर भरोसा किया, और ऐसा इसलिए था क्योंकि वे और उशिकावा दोनों ही समाज द्वारा अस्वीकृत थे। वे उसकी तेज सोच, उसकी शानदार व्यावहारिक कुशलता और उसकी चुप्पी की सराहना करते थे। उन्होंने उसे बड़ी रकम से जुड़े काम सौंपे (लेकिन जिन्हें सार्वजनिक नहीं किया जा सकता था) और नतीजों के आधार पर उसे उदारतापूर्वक पुरस्कृत किया। उशिकावा ने जल्दी ही अधिकारियों से बचने के तरीकों को समझ लिया और उनमें महारत हासिल कर ली, जबकि वह कानून की सीमा पर ही रहता था। उसकी अंतर्ज्ञान शक्ति अच्छी थी और वह बहुत सावधान था। हालांकि, किसी समय, मानो किसी बुरी शक्ति के उकसावे पर, वह अपने हिसाब-किताब में लालची हो गया और उस सीमा रेखा को पार कर गया। हालांकि वह सजा से बच गया, लेकिन उसे बार से निकाल दिया गया।
उशिकावा ने रेडियो बंद किया और सेवन स्टार्स सिगरेट जलाई। उसने धुएं को फेफड़ों तक खींचा और धीरे-धीरे बाहर निकाला। वह ऐशट्रे के रूप में एक खाली आड़ू के डिब्बे का इस्तेमाल कर रहा था। अगर वह इस तरह से ज़्यादा समय तक जीता रहा, तो शायद मौत भी उतनी ही व्यर्थ होगी। जल्द ही वह ठोकर खाकर अकेले अंधेरे में गिरने का जोखिम उठाएगा। उसने खुद से कहा, "अगर मैं अभी दुनिया से गायब हो जाऊं, तो किसी को पता भी नहीं चलेगा। मैं अंधेरे में जितना चाहूं चीख सकता हूं, और कोई मुझे नहीं सुनेगा। लेकिन जब तक मैं मर नहीं जाता, मुझे बस जीना है, और मैं इसे अपने तरीके से जीऊंगा। यह शायद बहुत प्रशंसनीय न हो, लेकिन जीने का यही एकमात्र तरीका था जो मुझे पता था।" और उशिकावा उन चीजों में सबसे माहिर था जो बहुत प्रशंसनीय नहीं होतीं।
*

ढाई बजे, बेसबॉल कैप पहने और बिना किसी बैग या सामान के एक युवती अपार्टमेंट बिल्डिंग से बाहर निकली। वह जल्दी से उसकी नज़रों के सामने से गुज़री। उशिकावा ने झटपट रिमोट कंट्रोल का बटन दबाकर तीन तस्वीरें खींचीं। यह पहली बार था जब उसने उसे देखा था। वह दुबली-पतली युवती थी, लंबी भुजाओं और टांगों वाली और आकर्षक चेहरे वाली। उसका शरीर बैले डांसर की तरह सुंदर था। वह लगभग सोलह या सत्रह वर्ष की लग रही थी। उसने फीकी जींस, सफेद स्नीकर्स और एक पुरुष का चमड़े का जैकेट पहना हुआ था। उसके बाल जैकेट के कॉलर के नीचे दबे हुए थे। वह दरवाजे से बाहर निकली, कुछ कदम चली और रुक गई। वह कुछ देर तक अपने सामने एक बिजली के खंभे के शीर्ष को टकटकी लगाकर देखती रही, उसकी आँखें तनावग्रस्त थीं। फिर उसने अपना कैमरा नीचे रखा और अपने रास्ते पर आगे बढ़ गई। वह बाईं ओर मुड़ी और उसकी नज़रों से ओझल हो गई।
वह लड़की जानी-पहचानी लग रही थी। किसी परिचित जैसी। किसी को उसने हाल ही में देखा था। उसके हाव-भाव से लग रहा था कि वह कोई टीवी स्टार हो सकती है, लेकिन उशिकावा सिर्फ़ टीवी पर खबरें देखता था और उसे याद नहीं था कि कभी किसी खूबसूरत स्टार ने उसका ध्यान खींचा हो।
उशिकावा ने अपनी याददाश्त के एक्सीलरेटर पैडल को पूरी तरह दबा दिया और अपने दिमाग को पूरी रफ्तार में लगा दिया। उसने अपनी आँखें गड़ा दीं और दिमाग को बुरी तरह निचोड़ लिया। उसकी नसें दर्द से फड़क रही थीं। अचानक उसे एहसास हुआ कि वह एरिका फुकादा थी। उसने उसे कभी आमने-सामने नहीं देखा था, सिर्फ अखबार के साहित्यिक पृष्ठ पर उसकी तस्वीर देखी थी। लेकिन उसके चारों ओर लिपटी वह अपार

स्पष्टता ठीक उसी तरह प्रकट हुई जैसे उस छोटी सी काली-सफेद तस्वीर में थी। टेंगो ने 'क्राइसालिस ऑफ एयर' को फिर से लिखा था, इसलिए यह स्वाभाविक था कि वे दोनों संपर्क में रहे होंगे। यह भी संभव था कि वह उससे संपर्क करके उसके घर में छिपी हो।
यह सोचते ही उशिकावा ने सहज भाव से अपनी बुनी हुई टोपी, गहरे नीले रंग का ऊनी कोट पहना और अपने गले में स्कार्फ लपेट लिया। वह अपार्टमेंट की इमारत से बाहर निकला और उस दिशा में चल पड़ा जहाँ वह गायब हुई थी।
लड़की बहुत तेज़ी से चल रही थी और शायद वह उसे पकड़ न पाए। लेकिन उसके पास कुछ भी नहीं था, जिसका मतलब था कि वह ज़्यादा दूर जाने का इरादा नहीं रखती थी। उसके पीछे जाने और पकड़े जाने का जोखिम उठाने से बेहतर होता कि वह वहीं रुककर उसके लौटने का इंतज़ार करे। हालाँकि उसने ऐसा सोचा, फिर भी उशिकावा खुद को उसके पीछे जाने से रोक नहीं पाया। उस लड़की में कुछ ऐसा था जो उसे अजीब तरह से बेचैन कर देता था, जैसे शाम के समय कोई रहस्यमयी रोशनी, जो आत्मा में एक बहुत ही खास याद जगा देती है।
थोड़ी दूर आगे जाकर उशिकावा की नज़र फिर उस लड़की पर पड़ी। फुकाएरी सड़क के किनारे खड़ी थी और स्टेशनरी की दुकान की खिड़की में टकटकी लगाए देख रही थी। उसे ज़रूर कोई ऐसी चीज़ मिल गई होगी जिसमें उसकी दिलचस्पी थी। उशिकावा एक वेंडिंग मशीन के सामने रुक गया, उसकी पीठ फुकाएरी की तरफ थी। उसने अपनी जेब से कुछ सिक्के निकाले और एक डिब्बे से अपने लिए एक गर्म कॉफी खरीदी।
आखिरकार, लड़की चलने लगी। उशिकावा ने आधी पी हुई कॉफ़ी का कैन नीचे रखा और उसके पीछे-पीछे चलने लगा, दोनों के बीच उचित दूरी बनाए रखते हुए। जहाँ तक वह देख सकता था, वह पूरी तरह से चलने पर ध्यान केंद्रित कर रही थी। वह ऐसे चल रही थी मानो किसी शांत झील को पार कर रही हो। अपनी उस खास चाल से वह पानी की सतह पर बिना डूबे या अपने जूते गीले किए चल सकती थी। ऐसा लग रहा था जैसे उसे चलने का रहस्य पता हो।
उशिकावा को लगा कि इस लड़की में वाकई कुछ खास है। कुछ ऐसा विशेष, जो आम लोगों को नसीब नहीं होता। वह एरिका फुकाडा के बारे में ज्यादा नहीं जानता था। उसे बस इतना पता था कि वह नेता की इकलौती बेटी है, दस साल की उम्र में अकेले ही पायनियर्स से भाग गई थी, एक मशहूर विद्वान एबिसुनो के घर में शरण ली थी, जहाँ वह पली-बढ़ी और फिर तेंगो कावाना की मदद से 'द एयर क्राइसालिस' लिखी, जो बेस्टसेलर बन गई। फिलहाल उसके लापता होने की खबर है और इसी वजह से पुलिस ने हाल ही में पायनियर्स के मुख्यालय पर छापा मारा था।
ऐसा लगता था कि उपन्यास 'द एयर क्राइसालिस' ने पायनियर्स को कुछ असहज कर दिया था। उशिकावा ने भी इसे खरीदा था और बहुत ध्यान से पढ़ा था, लेकिन वह समझ नहीं पा रहा था कि इसमें क्या असहज करने वाली बातें हो सकती हैं। किताब दिलचस्प और बहुत अच्छी तरह से लिखी गई थी। पढ़ने में आसान, सुंदर संरचना वाली और कुछ जगहों पर तो बेहद आकर्षक। लेकिन, आखिरकार, यह बच्चों के लिए एक हानिरहित परी कथा ही थी। उसने इसे इसी तरह समझा था और निश्चित रूप से दुनिया की यही आम राय थी। एक मरी हुई बकरी के मुंह से छोटे लोग निकलते हैं जो एक वायु कोकून बुनते हैं, नायिका दो भागों में बंट जाती है, माता और पुत्री में, और आकाश में दो चंद्रमा दिखाई देते हैं। उस अद्भुत कहानी में कौन सी संवेदनशील जानकारी छिपी थी, जिसे उजागर नहीं किया जाना चाहिए? लेकिन संप्रदाय के लोग इस बारे में कुछ

करने के लिए दृढ़ संकल्पित लग रहे थे। या, कम से कम, उन्होंने कुछ समय के लिए यही सोचा था।
फिर भी, जब पूरी दुनिया की निगाहें एरिका फुकाडा पर टिकी थीं, तब उनसे किसी भी तरह से संपर्क करना बेहद खतरनाक होता। यही कारण था कि उन्होंने उस व्यक्ति से, जो अंदरूनी सूत्र नहीं था, किसी तरह टेंगो से संपर्क करने और उससे संबंध स्थापित करने के लिए कहा था।
इस सारी अफरा-तफरी में, उशिकावा को टेंगो महज एक मामूली सहायक अभिनेता ही लगा। संपादक के कहने पर, उन्होंने 'द क्राइसालिस ऑफ एयर' को अधिक पठनीय और सुसंगत रूप में दोबारा लिखा था। उनका पेशेवर आचरण बेदाग था, लेकिन भूमिका तो बस एक सहायक भूमिका ही थी। उशिकावा अब भी इस बात से सहमत नहीं थे कि वे टेंगो में इतनी दिलचस्पी क्यों ले रहे थे। लेकिन वह तो बस उनके अधीन एक सिपाही था। वह कहता, "मैं समझ गया, दीर्घायु हो!" और जैसा कहा जाता, वैसा ही करता।
लेकिन उनके उस उदार प्रस्ताव को, जिसे तैयार करने में उन्होंने काफी दिमाग खपाया था, टेंगो ने सिरे से खारिज कर दिया, और उनसे संबंध बनाने की उनकी योजना धराशायी हो गई। जब वे आगे क्या करना है, इस पर विचार कर ही रहे थे कि लीडर, एरिका फुकाडा के पिता का निधन हो गया। और फिर सब कुछ अधर में लटक गया।
अब पायनियर्स किस दिशा में जा रहे थे और उनकी क्या इच्छाएँ थीं, इससे उशिकावा को कोई लेना-देना नहीं था। उसे यह भी नहीं पता था कि नेता की मृत्यु के बाद समूह का नेतृत्व किसने संभाला है। लेकिन किसी भी हालत में, वे आओमामे को ढूँढ़ना चाहते थे, नेता की हत्या का कारण जानना चाहते थे और यह पता लगाना चाहते थे कि इसके पीछे कौन है। निश्चित रूप से बदला लेने और उन्हें कड़ी सजा देने के लिए। और उन्होंने ठान लिया था कि वे कानून को इसमें शामिल नहीं होने देंगे।
एरिका फुकाडा का क्या हुआ? अब संप्रदाय एयर क्राइसालिस के बारे में क्या सोचता था? क्या वह अब भी उनके लिए खतरा थी?
*

एरिका फुकाडा बिना रुके, बिना पीछे मुड़े, सीधे कहीं जा रही थी, मानो कोई कबूतर अपने घोंसले में लौट रहा हो। जल्द ही पता चला कि वह जगह मारुशो नाम का एक छोटा सा सुपरमार्केट था। फुकाडा हाथ में टोकरी लिए अलमारियों के बीच घूम रही थी और तरह-तरह के डिब्बाबंद और ताज़े खाद्य पदार्थ चुन रही थी। सलाद चुनने के लिए, उसने पहले उसे उठाया और हर कोण से ध्यान से देखा। उशिकावा को लगा कि इसमें काफी समय लगेगा, इसलिए वह फिलहाल दुकान से निकलकर सामने वाले बस स्टॉप पर गई और वहाँ प्रवेश द्वार पर खड़ी होकर बस का इंतज़ार करने का नाटक करने लगी।
लेकिन लड़की बाहर नहीं आई। उशिकावा को चिंता होने लगी। शायद वह किसी दूसरे रास्ते से निकल गई हो। लेकिन जहाँ तक वह देख सकता था, सुपरमार्केट का केवल एक ही प्रवेश द्वार था, सड़क वाला। शायद सामान लाने में उन्हें बहुत देर लग रही थी। उशिकावा को याद आया कि जब वह सलाद हाथ में लिए सोच में डूबी बैठी थी, तो उसकी नज़रें गंभीर थीं, लेकिन भावहीन थीं। इसलिए उसने धैर्यपूर्वक इंतज़ार करने का फैसला किया। तीन बसें आईं और चली गईं। हर बार वह स्टेशन पर अकेला रह जाता था। अब उसे अफ़सोस हो रहा था कि काश वह अपने साथ कोई अखबार लाया होता, जिसके पीछे वह अपना चेहरा छिपा सकता। किसी का पीछा करते समय अखबार या पत्रिका

बहुत ज़रूरी चीज़ें होती हैं। लेकिन बस, अब और कुछ नहीं। वह घर से भाग निकला, जो कुछ भी हाथ लगा, उसे लेकर।
जब फुकाएरी आखिरकार दुकान से बाहर निकला, तो उसकी घड़ी में तीन बजकर पैंतीस मिनट हो रहे थे। लड़की जल्दी से उसी रास्ते वापस चली गई, उसने स्टेशन की तरफ देखा तक नहीं। उशिकावा एक पल रुका और उसके पीछे-पीछे गया। उसके पास दो भारी- भरकम शॉपिंग बैग थे, लेकिन फुकाएरी ने उन्हें बड़ी आसानी से अपनी बाहों में उठा रखा था और पानी में तैरती मकड़ी की तरह सहजता से चल रहा था।
उशिकावा ने पीछे से उसे देखते हुए फिर सोचा, "कितनी अजीब लड़की है! वह एक अनोखी, अनूठी तितली जैसी थी। आप उसे देख तो सकते हैं, लेकिन छू नहीं सकते। जैसे ही आप उस पर हाथ रखते हैं, वह अपनी जान गंवा देती है, उसकी आंतरिक चमक गायब हो जाती है। और फिर आपका वह अनोखा सपना भी टूट जाता है।"
उशिकावा ने तुरंत विचार किया कि क्या वह पायनियर्स को फुकाएरी के ठिकाने का पता चलने की बात बताए या नहीं। यह एक कठिन निर्णय था। अगर वह फुकाएरी को तुरंत उनके हवाले कर देता, तो उसे उनसे कुछ सम्मान मिलता। या कम से कम यह नकारात्मक नहीं लगता। इससे उन्हें पता चलता कि वह प्रगति कर रहा है और अच्छे परिणाम प्राप्त कर रहा है। लेकिन अगर वह फुकाएरी को ले जाता, तो वह अपने मूल लक्ष्य आओमामे को खोजने का मौका खो देता। और फिर उसके पास कोई विकल्प नहीं बचता। वह क्या कर सकता था? उशिकावा ने अपने हाथ कोट की जेबों में डाले, अपने स्कार्फ को नाक तक खींचा और फुकाएरी के पीछे-पीछे चल पड़ा, उस रास्ते से लंबा रास्ता अपनाते हुए जिससे वह निकला था।
उशिकावा को अचानक ख्याल आया, शायद मैं बस उसे देखने के लिए उसके पीछे-पीछे गया था। उसे हाथों में शॉपिंग बैग लिए चलते हुए देखकर ही उसके सीने में एक अजीब सी जकड़न महसूस हुई। वह न आगे बढ़ पा रहा था, न पीछे हट पा रहा था, मानो दो दीवारों के बीच फंसा हो। उसकी सांसें अनियमित और रुक-रुक कर चल रही थीं, और उसे घुटन महसूस हो रही थी, जैसे गर्म हवा का एक झोंका उसे घेर लिया हो। यह एक अजीब सी अनुभूति थी, जैसी उसने पहले कभी महसूस नहीं की थी।
कम से कम, अभी के लिए इस लड़की को छोड़ देता हूँ, उसने फैसला किया। चलो, पहले की योजना के अनुसार, आओमामे पर ही ध्यान केंद्रित करते हैं। आओमामे एक हत्यारी है। उसके इरादे चाहे जो भी हों, उसे अपने किए की सज़ा मिलनी ही चाहिए। उशिकावा को उसे पायनियर्स के हवाले करने के विचार से ज़रा भी पछतावा नहीं हुआ। लेकिन यह युवती जंगल की गहराई में रहने वाली एक शांत, सौम्य प्राणी जैसी थी। पारदर्शी पंखों वाली एक प्राणी, मानो किसी आत्मा की परछाई हो। दूर से ही उस पर नज़र रखना बेहतर है, उसने तय किया।
*

फुकाएरी जब शॉपिंग बैग लिए अपार्टमेंट बिल्डिंग में चली गई, तो उशिकावा ने कुछ देर इंतजार किया और उसके पीछे गया। कमरे में लौटकर उसने अपनी टोपी और स्कार्फ उतारा और फिर कैमरे के सामने बैठ गया। ठंडी हवा से उसके गाल ठंडे पड़ गए थे। उसने एक सिगरेट पी और थोड़ा पानी पिया। उसे बहुत प्यास लगी थी, मानो उसने कुछ नमकीन खा लिया हो।
अंधेरा छा रहा था। स्ट्रीटलाइट्स जलने लगी थीं और लोगों के घर जाने का समय नज़दीक आ रहा था। उशिकावा ऊनी कोट पहने, हाथ में रिमोट कंट्रोल लिए, अपार्टमेंट बिल्डिंग के प्रवेश द्वार पर नज़र गड़ाए खड़ा था। दोपहर की रोशनी

उशिकावा को कुछ पीने की तीव्र इच्छा हुई। अगर संभव होता, तो वह एक गिलास व्हिस्की भरकर एक ही घूंट में पी जाता। उसने बाहर जाकर व्हिस्की खरीदने का भी सोचा। बगल में ही एक शराब की दुकान थी। लेकिन अंत में उसने यह विचार छोड़ दिया। शराब से कुछ नहीं बदलता। उसने सोचा, वह मुझे कैमरे के लेंस के दूसरी तरफ से देख रहा था। उस खूबसूरत लड़की ने मुझे यहाँ छिपकर तस्वीरें लेते हुए देखा। उसने मेरा टेढ़ा सिर और मेरी गंदी आत्मा देखी। यह एक ऐसा तथ्य था जिसे बदला नहीं जा सकता था।
उशिकावा कैमरे से दूर हट गए, दीवार से टिक गए और काली, दागदार छत को देखने लगे। उन्हें लगा मानो सब कुछ व्यर्थ हो गया हो। उन्होंने कभी इतना अकेलापन महसूस नहीं किया था। अंधेरा कभी इतना गहरा नहीं लगा था। उन्हें चूओ-रिंकन में अपना घर, लॉन और कुत्ता, अपनी पत्नी और दो बेटियाँ याद आईं। उन्हें उन पर पड़ने वाली धूप याद आई। फिर उन्हें अपनी बेटियों को मिले जीन याद आए। ऐसे जीन जिनमें एक विकृत, बदसूरत सिर और एक कुटिल आत्मा समाई हुई थी।
उसे ऐसा लग रहा था कि उसने जो कुछ भी किया, सब व्यर्थ था। उसे जो भी पत्ते मिले थे, उसने सब इस्तेमाल कर लिए थे। वैसे भी उसके पास अच्छे पत्ते नहीं थे। लेकिन उसने कोशिश करके उन अपर्याप्त पत्तों का भी पूरा फायदा उठा लिया था। उसने सोच-समझकर दांव लगाया था। कुछ देर तक तो ऐसा लग रहा था कि वह अच्छा खेल रहा है। लेकिन अब उसके हाथ में एक भी पत्ता नहीं बचा था। बत्ती बुझ गई थी और मेज के चारों ओर जमा लोग इधर-उधर भाग गए थे।
अंत में, उस रात उसने और कोई तस्वीर नहीं ली। वह दीवार से टिककर, आँखें बंद करके, कुछ सिगरेट पी और आड़ू का एक और डिब्बा खोला। नौ बजे वह बाथरूम गया, दांत साफ किए, फिर कपड़े उतारे, स्लीपिंग बैग में घुसा और कांपते हुए सोने की कोशिश करने लगा। रात बहुत ठंडी थी, लेकिन ये कंपकंपी सिर्फ रात की ठंड के कारण नहीं थी। ऐसा लग रहा था जैसे ठंडी हवा उसके शरीर से निकल रही हो। मैं कहाँ जा रहा हूँ? उशिकावा अंधेरे में डूबा हुआ सोच रहा था। और ये कहाँ से आई?
उसकी तीखी निगाहों से सीने में जो दर्द हो रहा था, वो अब भी उसके मन में महसूस हो रहा था। शायद ये दर्द कभी दूर न हो। या शायद ये दर्द हमेशा से था और उसने अब तक इस पर ध्यान ही नहीं दिया था।
*

अगली सुबह, पनीर के बिस्कुट और इंस्टेंट कॉफी का नाश्ता खत्म करने के बाद, उशिकावा को होश आया और वह कैमरे के सामने फिर से बैठ गया। पिछले दिन की तरह, उसने अपार्टमेंट बिल्डिंग से बाहर निकल रहे लोगों के चेहरों पर नजर डाली और कुछ तस्वीरें खींचीं। लेकिन उनमें न तो टेंगो और न ही एरिका फुकाडा दिखाई दिए। वहाँ केवल झुके हुए लोग थे, जो सुस्ती से नए दिन की ओर बढ़ रहे थे। सुबह साफ और हवादार थी। लोग अपने मुंह से सफेद धुआं छोड़ रहे थे, जो हवा से जल्दी ही बिखर रहा था।
बस करो ये सब बकवास, उशिकावा ने खुद से कहा। अपनी त्वचा को अच्छे से तरोताज़ा करो, अपने दिल को मज़बूत करो और दिनों को एक-एक करके नियमित रूप से बीतने दो। मैं तो बस एक मशीन हूँ। एक कुशल, धैर्यवान और भावनाहीन मशीन। मैं एक तरफ से नया समय सोखता हूँ और दूसरी तरफ से उसे पुराने समय में बदल कर बाहर निकाल देता हूँ। मशीन का अस्तित्व बस अस्तित्व में रहना है। मुझे इस शुद्ध, बेदाग चक्र में लौटना होगा—एक निरंतर गति जो अंततः समाप्त हो जाएगी। अपनी इच्छाशक्ति

या शायद एरिका फुकाडा ने किसी को अपने काम के बारे में बता दिया था, और वह व्यक्ति यहाँ आ गया था। उदाहरण के लिए, रियल एस्टेट एजेंसी का प्रभारी या कोई पुलिसकर्मी। अगर ऐसा होता, तो मामला पेचीदा हो जाता। लेकिन एजेंसी के पास एक अतिरिक्त चाबी थी, और पुलिसकर्मी ने शुरू से ही अपनी पहचान बता दी होती। और उसने घंटी बजाई होती, न कि दरवाज़ा खटखटाया होता।
"कोज़ू-सान," एक पुरुष आवाज़ ने पुकारा। "कोज़ु-सान!"
उशिकावा को याद आया कि यह पिछले किरायेदार का नाम था। लेटरबॉक्स पर यह नाम अपरिवर्तित था। यह उसे ज़्यादा अच्छा लगा। उस व्यक्ति का मानना था कि यह कोज़ू अभी भी वहीं रहता है।
"कोज़ू-सान," आवाज़ फिर आई। "मुझे पता है आप घर पर हैं। इस तरह घर में बंद रहना और सांस रोके रखना आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है!"
यह एक अधेड़ उम्र के आदमी की आवाज़ थी, थोड़ी कर्कश। आवाज़ बहुत तीखी नहीं थी। लेकिन उसमें एक तरह की दृढ़ता थी। एक अच्छी तरह से पकी और सूखी ईंट जैसी दृढ़ता। और शायद इसीलिए वह पूरी गली में गूंजती हुई प्रतीत हो रही थी। "कोज़ू-सान, मैं एनएचके से हूँ। मैं अपनी मासिक फीस अदा करने आया हूँ। तो कृपया मेरे लिए दरवाजा खोल दीजिए!"
ज़ाहिर है, उशिकावा एनएचके का कोई शुल्क नहीं देना चाहता था। उसे कमरा दिखाकर यह समझाना ज़्यादा आसान होता कि उसके पास टीवी नहीं है। लेकिन अगर बिल वसूलने वाले ने उसे, उसकी अजीब शक्ल-सूरत के साथ, दिन दहाड़े उस बिल्कुल खाली घर में बंद देखा होता, तो उसे शक हो जाता।
कोज़ू-सान, कानून कहता है कि जिसके पास भी टीवी है उसे रिसेप्शन शुल्क देना होगा। कई लोग कहते हैं कि वे भुगतान नहीं करना चाहते क्योंकि वे एनएचके नहीं देखते, लेकिन इसका कोई मतलब नहीं है। अगर आपके पास टीवी है, तो आपको भुगतान करना ही होगा।
उशिकावा ने सोचा, ये तो बस एनएचके का कैशियर है। उसे जो कहना है कहने दो। अगर वो उसे नज़रअंदाज़ करेगा तो चला जाएगा। लेकिन उसे इतना यकीन क्यों था कि घर में कोई है? लौटने के बाद से एक घंटा बीत चुका था, उशिकावा न तो बाहर आया था, न कोई आवाज़ की थी और पर्दे खींचकर बैठा था।
"कोज़ू-सान, मुझे पक्का पता है कि आप घर पर हैं," उस आदमी ने कहा, मानो उसने उशिकावा के मन की बात सुन ली हो। "आपको यह अजीब लग रहा होगा कि मुझे कैसे पता चला, है ना? लेकिन मुझे पता है। आप वहाँ चुपचाप बैठे हैं क्योंकि आप पैसे नहीं देना चाहते। यह बात मुझे दिन के उजाले की तरह साफ है।"
कुछ देर तक धड़कन उसी लय में चलती रही। बीच-बीच में छोटे-छोटे विराम आते, जैसे वाद्य यंत्र बजाते समय सांस लेने के लिए विराम होता है, फिर हथौड़े की थाप अपनी लय में लौट आती थी।
— मैं समझ गया, कोज़ू-सान। आप कठपुतली शो में मरने का नाटक करने पर तुले हुए हैं। ठीक है, आज के लिए इतना ही काफी है, मैं जा रहा हूँ। मुझे और भी काम हैं। लेकिन जान लीजिए कि मैं वापस आऊँगा। मैं आपसे झूठ नहीं बोल रहा हूँ! अगर मैंने कहा है कि मैं आऊँगा, तो मैं ज़रूर आऊँगा! इस अध्याय में मैं बाकी संग्राहकों जैसा नहीं हूँ। मैं तब तक खुद को धोखा नहीं खाने दूँगा जब तक मुझे वह नहीं मिल जाता जो मैं चाहता हूँ। यह पक्का है। जैसे चाँद घटता-बढ़ता है, जैसे मनुष्य जीता है और मरता है। आप इससे बच नहीं सकते!

काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। जब उसे लगा कि वह जा चुका है, तभी कैशियर ने दोबारा बोलना शुरू किया।
"जल्द ही मिलते हैं, कोज़ू-सान! मेरा इंतज़ार करना! आपको ठीक उसी समय दरवाजे पर दस्तक सुनाई देगी जब आपको इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं होगी। खटखट। मैं ही हूँगा।"
यहाँ मार-पीट रुक गई। उशिकावा ने कान खड़े कर लिए। उसे नहीं लगता था कि उसने गलियारे में कदमों की आहट सुनी थी। वह कैमरे के पास लेट गया और पर्दे की दरार से इमारत के प्रवेश द्वार की ओर देखने लगा। बिल वसूलने वाला किसी भी क्षण इमारत में अपना काम खत्म करके निकल रहा होगा। उसे पता लगाना था कि वह आदमी कैसा दिखता है। वह उसे उसकी वर्दी से तुरंत पहचान लेगा। या शायद वह असली एनएचके बिल वसूलने वाला नहीं था। शायद वह कोई भेस बदला हुआ व्यक्ति था, जो उसे दरवाजा खोलने के लिए कह रहा था। किसी भी हालत में, वह कोई ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था। उशिकावा ने अपने दाहिने हाथ में रिमोट कंट्रोल कसकर पकड़ लिया और उसके आने का इंतजार करने लगा।
लेकिन अगले तीस मिनट तक अपार्टमेंट बिल्डिंग के सामने वाले दरवाजे से कोई नहीं आया। आखिरकार, एक महिला जिसे उसने कुछ बार देखा था, दिखाई दी, अपनी साइकिल पर बैठी और चली गई। उशिकावा उसे "फैटी" कहता था, क्योंकि उसकी त्वचा उसकी ठुड्डी के नीचे लटकती थी। आधे घंटे बाद, फैटी अपनी टोकरी में खरीदारी के बैग लेकर लौटी। उसने अपनी साइकिल साइकिल पार्किंग में छोड़ी और अपने बैग हाथों में लिए अपार्टमेंट बिल्डिंग में प्रवेश किया। फिर एक प्राथमिक विद्यालय का छात्र घर लौटा। उशिकावा ने उसे "फॉक्स" उपनाम दिया था, क्योंकि उसकी आंखें बहुत लंबी और लोमड़ी जैसी थीं। लेकिन कोई भी कैशियर जैसा दिखने वाला व्यक्ति दिखाई नहीं दिया। उशिकावा असमंजस में था। अपार्टमेंट बिल्डिंग का केवल एक ही प्रवेश द्वार था, और उसने एक पल के लिए भी दरवाजे से अपनी नज़र नहीं हटाई थी। अगर वह बाहर नहीं आया, तो इसका मतलब केवल यही हो सकता था कि वह अभी भी अंदर ही है।
उशिकावा बिना रुके हॉल को देखता रहा। वह बाथरूम तक नहीं गया। सूरज डूब गया और प्रवेश द्वार की बत्ती जल गई, लेकिन कैशियर फिर भी नहीं आया। जब छह बज गए, तो उसने हार मान ली। वह बाथरूम गया और उसने पेशाब कर दिया। वह शायद अभी भी इमारत में ही था। क्यों, उसे नहीं पता था। यह समझ से परे था। लेकिन यह स्पष्ट था कि इस अजीब कैशियर ने इमारत में ही रुकने का फैसला कर लिया था।
ठंडी हवा जमी हुई बिजली की तारों से सीटी बजाती हुई तेज़ी से बह रही थी। उशिकावा ने इलेक्ट्रिक स्टोव चालू किया और एक सिगरेट पी। फिर वह उस रहस्यमय कैशियर के बारे में सोचने लगा। उसने उससे इतनी उत्तेजक बातें क्यों की थीं? उसे इतना यकीन क्यों था कि घर में कोई है? और वह अपार्टमेंट बिल्डिंग से बाहर क्यों नहीं निकला? अगर वह नहीं निकला, तो अब वह कहाँ होगा?
उशिकावा कैमरे से दूर चली गईं, दीवार से टिक गईं और कुछ देर तक इलेक्ट्रिक स्टोव से निकलने वाली नारंगी किरणों को देखती रहीं।

अध्याय 17 मेरी केवल दो आँखें हैं

तेज़ हवा वाली शनिवार रात, लगभग आठ बजे, फ़ोन की घंटी बजी। आओमामे बालकनी की कुर्सी पर बैठी थी, जैकेट और गोद में कंबल ओढ़े, प्लास्टिक की टाइलों के बीच लालटेन की रोशनी से जगमगाती स्लाइड को देख रही थी। उसने अपने हाथों को कंबल के नीचे रखा हुआ था ताकि वे जम न जाएँ। सुनसान स्लाइड किसी विशालकाय जानवर के कंकाल जैसी लग रही थी जो हिमयुग के दौरान गायब हो गया हो।
आओमामे ने सोचा, शायद ठंडी शामों में भ्रूण का बाहर रहना उसके लिए अच्छा न हो, लेकिन मुझे इतनी ठंड नहीं लग रही कि कोई समस्या हो। मेरा शरीर ऊपर से कितना भी ठंडा क्यों न हो, गर्भनाल का द्रव मेरे रक्त के तापमान के लगभग बराबर ही रहता है। इस दुनिया में कई ऐसी जगहें हैं जो इससे कहीं ज़्यादा ठंडी और बदतर हैं। और वहाँ भी औरतें बच्चे को जन्म देती हैं। और अगर मुझे तेंगो से मिलना है तो मुझे यह ठंड सहनी ही पड़ेगी।
सर्दी की हवा में हमेशा की तरह दो चाँद तैर रहे थे, एक बड़ा और पीला, दूसरा छोटा और हरा। अलग-अलग आकार और प्रकार के बादल तेज़ी से आकाश में तैर रहे थे। वे सफ़ेद और सघन थे, उनकी रूपरेखा स्पष्ट थी, और वे किसी शांत नदी द्वारा समुद्र में बहाए गए बर्फ़ के टुकड़ों जैसे दिख रहे थे। उन बादलों को अचानक प्रकट होते और शून्य में विलीन होते देखकर, आओमामे को लगा जैसे वह दुनिया के छोर पर पहुँच गई हो। मैं तर्क के उत्तरी ध्रुव पर हूँ, उसने स्वयं से कहा। यहाँ से उत्तर की ओर कुछ भी नहीं है। यहाँ से आगे केवल शून्यता का एक आवरण है। उसने बालकनी का दरवाज़ा थोड़ा खुला छोड़ दिया था, इसलिए फ़ोन की आवाज़ धीमी सुनाई दी। आओमामे सोच में डूबी हुई थी। फिर भी, आवाज़ उसके कानों तक नहीं पहुँची। फ़ोन तीन बार बजा और बंद हो गया, फिर बीस सेकंड बाद दोबारा बजने लगा।
यह तमारू का फ़ोन था। आओमामे ने अपनी गोद से कंबल हटाया, भाप से भीगे शीशे वाला दरवाज़ा खोला और कमरे में चली गई। अंदर अँधेरा था और हीटर चल रहा था। उसने ठंड से सुन्न हो चुकी उंगलियों से रिसीवर उठाया।
क्या आप प्रॉस्ट पढ़ते हैं?
"मुझे कोई खास प्रगति नहीं दिख रही है," आओमामे ने जवाब दिया, मानो वह कोई पासवर्ड बोल रही हो।
क्या आपको यह पसंद नहीं आया?
हां। लेकिन मुझे नहीं पता कि इसे कैसे व्यक्त करूं, मैं इसे एक बिल्कुल अलग दुनिया की कहानी के रूप में देखता हूं।
तामारू चुप हो गया और उसके बोलने का इंतज़ार करने लगा। उसे कोई जल्दी नहीं थी।
— एक अलग ही दुनिया — यानी, मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं अपने ग्रह से हज़ारों प्रकाश वर्ष दूर स्थित किसी छोटे ग्रह के बारे में विस्तृत रिपोर्ट पढ़ रहा हूँ। मैं वर्णित प्रत्येक दृश्य को अलग-अलग देख और समझ सकता हूँ। उनका वर्णन स्पष्टता और सटीकता से किया गया है, लेकिन मैं यहाँ के दृश्यों को वहाँ के दृश्यों से जोड़ नहीं पा रहा हूँ, क्योंकि वे भौतिक रूप से बहुत दूर हैं। इसलिए, थोड़ा पढ़ने के बाद, मुझे वापस जाकर दोबारा पढ़ना पड़ता है।

आओमामे आगे बोलने के लिए सही शब्द ढूंढने लगी। तामारू फिर से इंतजार करने लगा।
लेकिन मुझे यह उबाऊ नहीं लगता। इसे बड़ी ही कोमल सुंदरता से लिखा गया है, और मैं अपने तरीके से उस छोटे, अकेले ग्रह की संरचना को समझ भी सकता हूँ। बस मैं इसमें आगे नहीं बढ़ पाता। यह धारा के विपरीत दिशा में नाव चलाने जैसा है। मैं पूरी ताकत से खींचता हूँ, और जब मैं अपने हाथ आराम देता हूँ और किसी चीज़ के बारे में सोचता हूँ, तो पाता हूँ कि नाव वहीं पहुँच गई है जहाँ से आई थी। लेकिन शायद अब पढ़ने का यही तरीका मुझे ज़्यादा पसंद है, बजाय इसके कि मैं कहानी के धागे का अनुसरण करते हुए लगातार आगे बढ़ता रहूँ। इसे कैसे कहूँ, इससे मुझे ऐसा लगता है कि समय अनियमित रूप से डगमगा रहा है। मानो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि पहले क्या आता है और बाद में क्या आता है।
आओमामे ने अधिक उपयुक्त अभिव्यक्ति की तलाश की।
— मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं किसी और का सपना देख रहा हूँ। मानो हम एक ही समय में एक जैसी संवेदनाएँ साझा कर रहे हों। लेकिन मैं यह नहीं समझ पा रहा हूँ कि एक साथ होने का क्या अर्थ है। संवेदनाएँ बहुत करीब हैं, लेकिन वास्तव में हमारे बीच बहुत बड़ी दूरी है।
— क्या आपको लगता है कि प्रॉस्ट ने जानबूझकर यह प्रभाव पैदा करना चाहा था? जाहिर है, आओमामे को इस बात का पता नहीं था।
"वैसे भी, दूसरी ओर," तामारू ने कहा, "इस वास्तविक दुनिया में समय निश्चित रूप से आगे बढ़ता है। यह न तो रुकता है और न ही पीछे जाता है।"
"बिल्कुल, मैं करता हूँ। असल दुनिया में समय आगे बढ़ता रहता है।"
ओमामे ने ये शब्द कहे और बालकनी के दरवाजे की ओर देखा। क्या सच में ऐसा हो सकता है? क्या समय वाकई आगे बढ़ रहा है?
"मौसम बदलते हैं, और 1984 जल्द ही समाप्त होने वाला है," तामारू ने कहा।
मुझे नहीं लगता कि मैं साल के अंत तक 'इन सर्च ऑफ लॉस्ट टाइम' को पूरा कर पाऊंगा।
"यह कुछ भी नहीं है। जितना समय चाहो ले लो। यह पचास साल से भी पहले लिखा गया उपन्यास है। यह इंतजार कर सकता है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा।"
शायद, आओमामे ने सोचा। या शायद नहीं। वह तो समय पर बिल्कुल भी भरोसा नहीं कर सकती थी।
"क्या तुम्हारे अंदर जो कुछ भी है, वह सब ठीक चल रहा है?" तामारू ने पूछा।
अब तक तो कोई समस्या नहीं है।
"यही तो मायने रखता है। वैसे, क्या आप उस छोटे गंजे अजनबी के बारे में जानते हैं जो विला के आसपास घूमता रहता था?"
"हाँ। क्या वह अभी भी वहीं आसपास घूम रहा है?"
नहीं, मैंने उसे यहाँ आसपास नहीं देखा। वह कुछ दिनों तक यहाँ घूमता रहा, फिर गायब हो गया। लेकिन उसने स्थानीय रियल एस्टेट एजेंसियों से संपर्क किया, किराए पर मकान ढूंढने का बहाना बनाकर और आश्रय स्थलों के बारे में जानकारी इकट्ठा की। आखिर, उसका रूप-रंग काफी आकर्षक है। साथ ही, वह बड़े ही भड़कीले कपड़े पहनता है। मैंने जिनसे भी बात की है, वे उसे अच्छी तरह से जानते हैं। उसे ढूंढना आसान था।
वह जांच-पड़ताल या जासूसी में अच्छा नहीं है।

बिल्कुल सही। देखने से तो लगता है कि यह नौकरी उसे रास नहीं आती। उसका दिमाग बहुत तेज़ है, थोड़ा घमंडी। लेकिन लगता है वो काफी समझदार है। वो बड़ी कुशलता से जानकारी इकट्ठा करता है और आराम से बैठता है। उसे पता है कि कहाँ जाना है और किससे बात करनी है। उसका दिमाग खूब काम करता है। वो कोई भी ज़रूरी काम नहीं छोड़ता और न ही कोई फालतू काम करता है।
"इस तरह वह आश्रय स्थल के बारे में कुछ जानकारी जुटाने में कामयाब रहा।"
"उसे पता है कि यह उन महिलाओं के लिए एक आश्रय स्थल है जिनका उनके घरों में शोषण हुआ है और यह सुविधा महिला द्वारा निःशुल्क प्रदान की जाती है। उसे शायद यह भी पता चल गया होगा कि महिला उस स्पोर्ट्स क्लब की सदस्य है जहाँ आप काम करती थीं और आप अक्सर यहाँ निजी ट्यूशन के लिए आती थीं। अगर मैं उसकी जगह होता तो मैं भी यह सब पता लगा लेता।"
"तुम्हारा मतलब है कि वह तुम्हारे जितना ही चतुर है?"
— कोई भी इन चीजों का पता लगा सकता है यदि वह वास्तव में प्रयास करे, जानकारी जुटाने के लिए आवश्यक तरकीबें जानता हो और चीजों को तार्किक रूप से सोचने का अभ्यास करे।
मुझे नहीं लगता कि दुनिया में ऐसे बहुत से लोग हैं।
"कुछ लोग हैं। उन्हें आमतौर पर पेशेवर कहा जाता है।"
ओमामे कुर्सी पर बैठ गया और अपनी उंगली से अपनी नाक की नोक को छुआ। बाहर की ठंड अभी भी उस पर महसूस हो रही थी।
“तो क्या उस व्यक्ति को फिर कभी विला के आसपास नहीं देखा गया?” उसने पूछा। "उसे इस बात का भी एहसास है कि वह बहुत ज्यादा ध्यान खींच रहा है। और उसे यह भी पता है कि वहां कैमरे लगे हुए हैं। इसलिए उसने कम समय में जितनी जानकारी जुटा सकता था, जुटाई और फिर अपना शिकार करने का स्थान बदल दिया।"
दूसरे शब्दों में कहें तो, उन्होंने महसूस किया कि मेरे और उस महिला के बीच कोई संबंध था। यानी, यह सिर्फ एक स्पोर्ट्स क्लब प्रशिक्षक और एक धनी ग्राहक के बीच का संबंध नहीं था, बल्कि आश्रय गृह का भी इस पूरी कहानी से कुछ लेना- देना था। साथ ही, हम एक विशेष परियोजना पर साथ काम कर रहे थे।
"बिल्कुल संभव है," तामारू ने जवाब दिया। "जहां तक मैं देख पा रहा हूं, वह आदमी धीरे-धीरे मामले की तह तक पहुंच रहा है।"
लेकिन आपकी बातों से मुझे ऐसा लगता है कि वह किसी बड़े संगठन का सदस्य नहीं है, बल्कि वह अपने दम पर काम करता है।
"मुझे भी ऐसा ही लगता है। जब तक यह कोई जटिल योजना न हो, किसी बड़े संगठन के लिए इतने आकर्षक दिखने वाले व्यक्ति को गुप्त जांच के लिए नियुक्त करना असंभव है।"
"तो फिर वह यह सब किसके लिए और किसलिए कर रहा होगा?"
"क्या मुझे पता है? मुझे बस इतना पता है कि वह आदमी कुशल और खतरनाक है। इससे ज्यादा मैं सिर्फ अनुमान लगा सकता हूं। पायनियर्स का इसमें किसी तरह का हाथ होना सिर्फ मेरा एक मामूली अनुमान है।"
ओमामे ने कुछ क्षणों के लिए इस मामूली धारणा के बारे में सोचा।
— तो उस व्यक्ति ने अपना शिकार करने का क्षेत्र बदल दिया।

— हाँ। यह कहाँ गया, मुझे नहीं पता, लेकिन तार्किक रूप से देखा जाए तो, जिस दिशा में यह बढ़ने की प्रवृत्ति रखता है या जिस दिशा में इसका लक्ष्य है, वही वह जगह है जहाँ आप अभी छिपे हुए हैं।
"लेकिन आपने कहा था कि उसके लिए इस जगह का पता लगाना व्यावहारिक रूप से असंभव था।"
"बिल्कुल सही। चाहे वह कितनी भी खोजबीन कर ले, उसे उस महिला और उस इमारत के बीच कोई संबंध नहीं मिल रहा। हर तरह का संबंध पूरी तरह मिट चुका है। लेकिन यह बात सिर्फ़ थोड़े समय के लिए ही लागू होती है। अगर घेराबंदी बहुत लंबे समय तक चलती है, तो आखिरकार दरारें दिखने लगती हैं, यहाँ तक कि उन जगहों पर भी जहाँ आप इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं करते। उदाहरण के लिए, हो सकता है आप अपने घर से बाहर निकल रहे हों और तभी कोई आपको देख ले। ऐसा भी हो सकता है।"
"मैं घर से बाहर नहीं जा रही," आओमामे ने दृढ़ता से जवाब दिया।
लेकिन ज़ाहिर है, यह सच नहीं था। आओमामे दो बार अपार्टमेंट से बाहर जा चुकी थी। एक बार जब वह टेंगो के पीछे सड़क के उस पार पार्क तक भागी थी, और दूसरी बार जब उसने संगेनजाया के पास मेट्रोपॉलिटन हाईवे नंबर 3 पर आपातकालीन स्टॉप तक टैक्सी ली थी, ताकि बाहर निकलने का रास्ता ढूंढ सके। लेकिन वह ये बातें तामारू को नहीं बता सकती थी।
"तो फिर उसे यह जगह कैसे मिली होगी?"
अगर मैं उसकी जगह होता, तो मैं फिर से मामूली रकम के बदले तुम्हारी निजी जानकारी ले लेता। तुम किस तरह के इंसान हो, कहाँ से आए हो, अब तक क्या किया है, तुम्हारे क्या विश्वास हैं, तुम्हारी क्या इच्छाएँ हैं, क्या नहीं हैं। मैं जितनी हो सके उतनी जानकारी इकट्ठा करता, उसे करीने से मेज पर रखता और हर छोटी से छोटी बात की बारीकी से जाँच-परख करता।
"क्या तुम्हारा मतलब है कि तुम मुझे नंगा कर दोगे?"
"हाँ। मैं तुम्हें नंगा कर दूँगा और तुम्हें तेज़, ठंडी रोशनी में नहलाऊँगा। फिर मैं चिमटी और आवर्धक लेंस लेकर तुम्हारे हर अंग की बारीकी से जाँच करूँगा, जब तक कि मैं तुम्हारे सोचने और चलने के तरीकों में छिपे पैटर्न को पहचान न लूँ।"
मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा है, लेकिन क्या इन व्यक्तिगत आदतों का विश्लेषण करने से अंततः यह पता चल सकता है कि मैं अभी कहाँ हूँ?
"मुझे नहीं पता," तामारू ने जवाब दिया। "शायद, शायद नहीं। हर मामले में अलग-अलग होता है। मैं बस इतना कह रहा हूँ कि मैं यही करता। मुझे और कुछ करने को नहीं मिलता। हर किसी का सोचने और व्यवहार करने का अपना तरीका होता है, और जब तक कोई पैटर्न होता है, तब तक उसमें कमज़ोरियाँ भी होती हैं।"
— मानो हम वैज्ञानिक अनुसंधान के बारे में बात कर रहे हों।
मनुष्य निश्चित स्वरूपों के बिना नहीं रह सकता। संगीत में, यह एक मधुर धुन के समतुल्य होगा। लेकिन साथ ही, यह कुछ ऐसा है जो सोच और व्यवहार को जकड़ता है, स्वतंत्रता को सीमित करता है। यह प्राथमिकताओं को बदलता है और कुछ मामलों में तर्क को विकृत करता है। वर्तमान स्थिति के बारे में, आप कहते हैं कि आप जहाँ हैं वहाँ से हिलना नहीं चाहते। कम से कम साल के अंत तक आप किसी सुरक्षित स्थान पर जाने से इनकार करते हैं। और ऐसा इसलिए है क्योंकि आप वहाँ कुछ खोज

रहे हैं। जब तक आपको वह खोज नहीं मिल जाती, आप वहाँ से नहीं जा सकते। या आप जाना नहीं चाहते।
ओमामे चुप रही।
"आप वास्तव में क्या ढूंढ रहे हैं और आपको इसकी कितनी ज़रूरत है, यह मुझे नहीं पता और न ही मैं इसका पता लगाना चाहता हूँ। लेकिन जहाँ तक मैं देख सकता हूँ, फिलहाल यही आपकी कमज़ोरी है।"
"संभवतः," आओमामे ने स्वीकार किया।
और वो अहंकारी व्यक्ति इसी बात का लगातार पीछा करेगा, उस व्यक्तिगत पहलू का जो आपको सीमित करता है। और वो इसे उल्लंघन समझेगा। खैर, यह तब होगा जब वो व्यक्ति उतना ही चालाक हो जितना मैं सोचता हूँ और अधूरी जानकारियों का सहारा लेकर यहाँ तक पहुँच जाए।
"मुझे नहीं लगता कि यह वहां तक पहुंच सकता है," आओमामे ने कहा। "शुरू से ही, यह मुझे उस चीज़ से जोड़ने वाला रास्ता नहीं खोज सकता। और ऐसा इसलिए है क्योंकि यह मेरे दिल में बंद है।"
क्या आप यह बात सौ प्रतिशत निश्चितता के साथ कह सकते हैं?
कुछ क्षण सोचने के बाद उसने उत्तर दिया, "बिल्कुल सौ प्रतिशत नहीं। लगभग अट्ठानवे प्रतिशत।"
"तो फिर हमें उस दो प्रतिशत के बारे में गंभीरता से चिंता करने की जरूरत है। मैंने आपको बताया था, जहाँ तक मैं देख सकता हूँ, वह व्यक्ति पेशेवर है। वह कुशल और दृढ़ निश्चयी है।"
आओमामे ने कुछ नहीं कहा।
— तामारू ने आगे कहा, “एक पेशेवर शिकारी कुत्ते की तरह होता है। वह उन गंधों को सूंघ लेता है जिन्हें आम लोग नहीं पहचान पाते और उन आवाजों को सुन लेता है जिन्हें आम लोग नहीं सुन पाते। अगर उसे ठीक वही काम करने पड़ते जो आम लोग करते हैं और उसी तरीके से, तो वह खुद को पेशेवर नहीं कह सकता। वह ज्यादा समय तक टिक नहीं पाएगा, चाहे वह कितना भी अनुभवी क्यों न हो। इसलिए आपको सावधान रहना होगा। आप बहुत सावधान व्यक्ति हैं। मैं यह अच्छी तरह जानता हूं। लेकिन आपको पहले से भी ज्यादा सावधान रहना होगा। सबसे महत्वपूर्ण चीजें प्रतिशत में तय नहीं होतीं।”
"मेरा एक सवाल है," आओमामे ने कहा।
- यह किस बारे में है?
अगर Căpățăna फिर से वहाँ आ जाए तो आप क्या करेंगे?
तामारू कुछ क्षणों के लिए चुप रहा। ऐसा लग रहा था कि उसे इस प्रश्न की उम्मीद नहीं थी।
"शायद कुछ नहीं। मैं उसे अकेला छोड़ दूंगा। उसका यहाँ कोई खास काम नहीं है।" "अगर वह कुछ परेशान करने वाला काम करने लगे तो क्या होगा?"
"कैसा?"
मुझे नहीं पता। शायद कोई ऐसी बात हो जिससे आपको गुस्सा आए।
तामारू ने एक छोटी सी कर्कश ध्वनि निकाली।
मैं शायद उसे एक संदेश भेजूंगा।
— पेशेवरों के बीच होने वाले संदेश की तरह?

"हाँ," तामारू ने जवाब दिया। "लेकिन कोई ठोस कदम उठाने से पहले, मुझे यह पता लगाना होगा कि वह वास्तव में किसके साथ काम कर रहा है। अगर मुझे पता चला कि उसके पास अतिरिक्त सैनिक आ रहे हैं, तो मैं एक जोखिम भरी स्थिति में पड़ जाऊँगा। जब तक मुझे इस बात की पूरी पुष्टि नहीं हो जाती, मैं कुछ भी नहीं करूँगा।"
पूल में उतरने से पहले पानी की गहराई की जांच कर लें।
- इतनी बात करने के लिए।
"लेकिन आपको शक है कि वह अकेले ही काम कर रहा है। उसके पास कोई सहायक नहीं है।" "हाँ, मुझे ऐसा ही लगता है। लेकिन मुझे अनुभव से पता है कि कभी-कभी मेरी अंतरात्मा मुझे धोखा दे देती है। और, दुर्भाग्य से, मेरे पास पीछे देखने के लिए आँखें नहीं हैं। फिर भी, कृपया अपने आस-पास होने वाली हर चीज़ पर ध्यान दें। अगर कोई संदिग्ध व्यक्ति दिखाई दे, अगर आपको कोई बदलाव नज़र आए, अगर कुछ भी असामान्य हो, तो मुझे ज़रूर बताएं, चाहे वह बदलाव कितना भी छोटा क्यों न हो।"
"मैं समझ गई। मैं सावधान रहूंगी," आओमामे ने जवाब दिया।
मुझे बताने की कोई ज़रूरत नहीं थी, उसने सोचा। मैं वैसे भी टेंगो पर नज़र रखती हूँ और छोटी से छोटी बात भी नज़रअंदाज़ नहीं करती। लेकिन मेरे पास तो सिर्फ़ दो ही आँखें हैं। ये तामारू के शब्द थे।
— मैं भी आपको यही बताने वाला था।
“क्या महिला ठीक है?” आओमामे ने पूछा।
“हां,” उसने जवाब दिया और तुरंत जोड़ा, “बस बात यह है कि वह थोड़ी शांत हो गई है।”
"वैसे भी वह ज्यादा बात नहीं करता था।"
तामारू ने अपने गले के पिछले हिस्से से धीमी सी गुर्राहट की। ऐसा लगता था मानो उसके गले में कोई ऐसा अंग हो जो विशेष भावनाओं को व्यक्त करने के लिए बना हो।
मेरा मतलब है, यह और भी शांत है।
ओमामे ने कल्पना की कि वह ग्रीनहाउस में कैनवास की कुर्सी पर बैठी है और चुपचाप तितलियों को फड़फड़ाते हुए देख रही है। उसके बगल में एक बड़ा स्प्रिंकलर था। ओमामे उसकी सांसों की शांति को जानती थी।
"अगली किस्त में मैं आपको मेडेलिन का एक बॉक्स भेजूंगा," तामारू ने आगे कहा। "शायद इससे आपका समय आसानी से कट जाएगा।"
"धन्यवाद," आओमामे ने उत्तर दिया।
*

ओमामे रसोई में गई और अपने लिए दूध के साथ एक कप कोको बनाया। बालकनी में वापस जाकर निगरानी का काम शुरू करने से पहले उसे थोड़ा शांत होना था। उसने केतली में दूध गर्म किया और उसमें कोको घोला। उसने उसे एक बड़े मग में डाला और उसमें पहले से तैयार की हुई थोड़ी सी व्हिप्ड क्रीम मिलाई। वह मेज पर बैठ गई और उसे पीते हुए, तामारू के साथ हुई अपनी बातचीत को एक-एक करके याद करने लगी। कैपाटाना एक तेज़ और ठंडी स्पॉटलाइट की रोशनी में उसे नग्न अवस्था में निर्वस्त्र करने की कोशिश कर रहा था। वह एक कुशल और सबसे बढ़कर, खतरनाक पेशेवर था।

ओमामे अपनी जैकेट में लिपटी, गले में स्कार्फ़ लपेटे और हाथ में आधा खाली कोको का मग लिए बालकनी में लौटी। वह लॉन की कुर्सी पर बैठ गई और कंबल अपने घुटनों पर डाल लिया। स्लाइड अभी भी खाली थी, लेकिन तभी उसने एक बच्चे को पार्क से निकलते देखा। उस समय पार्क में अकेला बच्चा क्या कर रहा था? उसने बुनी हुई टोपी पहन रखी थी जो थोड़ी तंग थी। लेकिन ओमामे ने उसे केवल ऊपर से, एक तीखे कोण से, बालकनी की टाइलों के बीच से देखा, और वह तेज़ी से उसकी नज़रों से ओझल हो गया और इमारतों की छाया में गायब हो गया। उसका सिर एक बच्चे के हिसाब से थोड़ा बड़ा था, लेकिन शायद यह सिर्फ़ उसकी शक्ल-सूरत का ही असर था।
खैर, वो टेंगो तो नहीं था। इसलिए आओमामे ने लापरवाही से अपनी नज़र स्लाइड और आसमान में तैरते बादलों पर डाली। उसने कोको की चुस्की ली और मग पर अपनी हथेलियों को गर्म किया।
*

बेशक, जिसे आओमामे ने एक पल के लिए देखा था, वह कोई बच्चा नहीं, बल्कि उशिकावा था। अगर थोड़ी और रोशनी होती और वह उसे ज़्यादा देर तक देख पाती, तो वह ज़रूर समझ जाती कि वह सिर्फ़ एक बड़े सिर वाला लड़का नहीं है और उसे ठीक उसी मुखिया के रूप में पहचान लेती, जिसका ज़िक्र तमारू ने किया था। लेकिन आओमामे ने उसे कुछ ही सेकंड के लिए और एक खराब कोण से देखा था। लेकिन, इसी वजह से, किस्मत ने ऐसा किया कि उशिकावा ने भी आओमामे को बालकनी पर नहीं देखा।
यहां कई तरह के सवाल मन में आते हैं। अगर तमारू ने बातचीत बीच में ही रोक दी होती, अगर आओमामे सोच में डूबी हुई कोको न बना रही होती, तो वह स्लाइड के ऊपर से आसमान को देखते हुए तेंगो को देख लेती। वह दौड़कर दरवाजे से अंदर जाती और बीस साल बाद उससे दोबारा मिलती।
लेकिन साथ ही, अगर ऐसा हुआ होता, तो टेंगो का पीछा कर रहे उशिकावा उसे तुरंत पहचान लेते, पता लगा लेते कि वह कहाँ रहती है, और तुरंत पायनियर्स के दोनों सदस्यों को सूचित कर देते।
इसलिए, यह कहना मुश्किल है कि आओमामे का तेंगो को न देख पाना दुर्भाग्य था या सौभाग्यपूर्ण संयोग। खैर, तेंगो पहले की तरह ही स्लाइड पर चढ़ गया था और कुछ देर तक आसमान में दो चांद और उनके ऊपर से गुजरते बादलों को देखता रहा। उशिकावा दूर से, छुपकर तेंगो को देख रहा था। इसी बीच, आओमामे बालकनी से नीचे उतरकर तमारू से फोन पर बात करने लगी, फिर उसने अपने लिए दूध वाला कोको बनाया। इस तरह पच्चीस मिनट बीत गए। पच्चीस निर्णायक मिनट। जब आओमामे अपनी जैकेट में लिपटी बालकनी में लौटी, तब तक तेंगो पार्क से जा चुका था। उशिकावा तुरंत उसके पीछे नहीं गया। वह कुछ जाँचने के लिए पार्क में अकेला रुक गया था। जाँच पूरी होने के बाद वह जल्दी से चला गया। आओमामे ने आखिरी कुछ सेकंड के लिए ही बालकनी से उसे देखा था।
बादल एक ही गति से आकाश को पार कर रहे थे। वे दक्षिण की ओर बढ़ते हुए टोक्यो खाड़ी और उससे आगे प्रशांत महासागर की विशालता की ओर जा रहे थे। वहाँ से उनका क्या हश्र होगा, यह कोई नहीं जानता। ठीक वैसे ही जैसे मृत्यु के बाद आत्मा का क्या होता है, यह भी कोई नहीं जानता।
बहरहाल, घेरा तेज़ी से सिकुड़ता जा रहा था। लेकिन न तो आओमामे और न ही टेंगो ने इस बात पर ध्यान दिया कि उनके चारों ओर यह घेरा बन चुका है। उशिकावा को इस हलचल का कुछ हद तक एहसास हुआ, क्योंकि वह खुद भी इस घेरे को सिकुड़ने में मदद

*

*

ओमामे पसीने से तरबतर होकर उठी। कड़ाके की ठंड और असहनीय पसीना। उसने अपने गीले पजामे उतारे, तौलिए से खुद को सुखाया और एक साफ टी-शर्ट पहन ली। वह कुछ देर तक बिस्तर पर सिर उठाकर लेटी रही।
शायद कुछ बुरा होने वाला था। कोई उसके नन्हे से जीव पर नज़र रख रहा था। और शायद वह जल्द ही आने वाला था। उसे टेंगो को जल्द से जल्द ढूंढना था। लेकिन उसके पास रात-रात भर पार्क को देखने के अलावा कोई चारा नहीं था। दुनिया को विशेष ध्यान से, धैर्य और लगन से देखना। दुनिया के एक छोटे से हिस्से पर अपनी नज़र टिकाए रखना। स्लाइड पर एक बिंदु पर। लेकिन फिर भी, कुछ उसकी नज़र से छूट सकता था, क्योंकि उसके पास केवल दो आँखें थीं।
आओमामे को रोने का मन कर रहा था, लेकिन आंसू आने में देर लग रही थी। वह पेट पर हाथ रखकर बिस्तर पर लेट गई और चुपचाप नींद के आने का इंतजार करने लगी।

अध्याय 18 वह स्थान जहाँ सुई चुभोने पर खून निकलता है

"तीन दिन तक कुछ नहीं हुआ," कोमात्सु ने कहा। मुझे जो दिया गया, मैंने वही खाया, रात को मैं अपने छोटे से पलंग पर सोया, सुबह उठकर कमरे के कोने में बने छोटे से शौचालय में गया। शौचालय में दरवाजा तो था, लेकिन उसमें ताला नहीं लगता था। गर्मी अभी भी भीषण थी, लेकिन मुझे लगता है कि वेंटिलेशन किसी एयर कंडीशनिंग सिस्टम से जुड़ा था, क्योंकि मुझे बिल्कुल भी गर्मी नहीं लग रही थी।
टेंगो बिना कुछ कहे उसकी बात सुनता रहा।
— वे मुझे दिन में तीन बार खाना देते थे। मुझे समय का पता नहीं था। उन्होंने मेरी कलाई से घड़ी उतार ली थी और कमरे में खिड़कियाँ नहीं थीं, इसलिए मुझे पता नहीं चल रहा था कि दिन है या रात। मैंने कान लगाकर सुना, लेकिन कोई आवाज़ नहीं थी। शायद मुझसे भी कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। मुझे बिल्कुल पता नहीं था कि वे मुझे कहाँ ले गए हैं। मुझे बस इतना सा एहसास था कि मैं किसी सुनसान जगह पर हूँ। खैर, मैं वहाँ तीन दिन रहा, इस दौरान कुछ भी नहीं हुआ। मुझे यह भी पक्का नहीं पता कि तीन दिन ही हुए थे। मुझे बस इतना पता है कि वे मेरे लिए नौ बार खाना लाए और मैंने उसे एक-एक करके खाया। तीन बार बत्ती गुल हुई और तीन बार मैं सोने चला गया। मेरी नींद बहुत हल्की और अनियमित है, लेकिन फिर, पता नहीं कैसे, मैं बिना किसी कोशिश के गहरी नींद सो गया। क्या कहूँ, यह एक अजीब सी कहानी है। क्या आपको यहाँ तक समझ आया?
टेंगो ने चुपचाप सिर हिलाया।
इन तीन दिनों में मैंने एक शब्द भी नहीं बोला। मेरा खाना एक नौजवान लड़का लाता था। दुबला-पतला, सिर पर बेसबॉल कैप और चेहरे पर सफेद मास्क लगाए। उसने किसी तरह का जिम ट्रैकसूट और गंदे स्नीकर्स पहने हुए थे। वह खाने की ट्रे लाता और मेरे खत्म होने पर वापस ले जाता। मैं डिस्पोजेबल कागज़ के कटोरे में खाना खाता था, और मेरे पास टूटे हुए प्लास्टिक के कांटे, चाकू और चम्मच थे। मुझे सिर्फ इंस्टेंट फूड मिलता था, जो अच्छा तो नहीं था, पर खाने लायक भी था। मात्रा में बहुत कम होता था और मुझे जल्दी भूख लग जाती थी, इसलिए मैं लगातार कुछ न कुछ खाता रहता था। और एक अजीब बात यह है कि वैसे तो मुझे भूख नहीं लगती, मैं तो खाना खाना भी भूल जाता हूँ। मुझे पीने के लिए दूध और सादा पानी दिया जाता था। मुझे कॉफी या चाय नहीं मिलती थी। न व्हिस्की, न बीयर। सिगरेट भी नहीं। बस इतना ही। मैं रिसॉर्ट में आराम करने नहीं गया था।
याद करते हुए, कोमात्सु ने मार्लबोरो रेड्स के पैकेट से एक सिगरेट निकाली, उसे अपने मुंह से लगाया और माचिस से जलाया। उसने धीरे-धीरे धुएं को अपने फेफड़ों में खींचा और बाहर निकाला। फिर उसने माथे पर शिकन डाली।
"जो आदमी मेरे लिए खाना लाया, उसने पूरे समय एक शब्द भी नहीं बोला। लगता है उसे ऊपर के अधिकारियों ने कुछ भी बोलने से मना किया था। वह एक आम आदमी था, हर काम में माहिर। लेकिन उसे मार्शल आर्ट का कुछ तो ज्ञान होना ही चाहिए था। उसकी फुर्तीली चाल से यह अंदाजा लग जाता था।"
"और तुमने भी उससे कुछ नहीं पूछा?"

नहीं, क्योंकि मुझे साफ पता था कि वह मुझे जवाब नहीं देगा। मैंने उसे चुप रहने के लिए अकेला छोड़ दिया। जो खाना लाया जाता, मैं वही खाती, दूध पीती, बत्ती बुझते ही सो जाती और बत्ती जलने पर उठ जाती। सुबह वह आदमी इलेक्ट्रिक रेज़र और टूथब्रश लेकर आता। मैं शेव करती और ब्रश करती, और काम खत्म होते ही वह सामान ले जाता। उस कमरे में मेरे पास सिर्फ टॉयलेट पेपर का एक रोल था। मैं नहाती या कपड़े नहीं बदलती, लेकिन मुझे इसकी ज़रूरत भी महसूस नहीं होती थी। मेरे पास शीशा नहीं था, लेकिन मुझे उसकी कमी भी महसूस नहीं हुई। सबसे बुरी बात थी बोरियत। अगर आप एक घनाकार, सफेद कमरे में, बिल्कुल अकेले, बिना कुछ बोले, सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक बैठे रहें, तो आप हद से ज़्यादा बोर हो जाते हैं। मुझे किताबें पढ़ने की लत है और अगर मेरे पास कुछ छपा हुआ न हो, रूम सर्विस का मेन्यू न हो, कुछ भी न हो, तो मुझे चैन नहीं मिलता। और वहाँ मेरे पास न किताबें थीं, न अखबार, न पत्रिकाएँ। न टीवी, न रेडियो, न खेल। और न ही बात करने वाला कोई। मैं बस अपनी जगह पर बैठा फर्श, दीवारों या छत को घूरता रहता था। जानते हो, ये बहुत अजीब बात है। सोचो ज़रा! तुम चुपचाप सड़क पर चल रहे हो और अचानक कुछ लोग तुम्हें पकड़ लेते हैं, तुम्हें क्लोरोफॉर्म सुंघाते हैं, फिर तुम्हें ले जाकर बिना खिड़कियों वाले एक संदिग्ध कमरे में बंद कर देते हैं। ये कोई सामान्य स्थिति नहीं है, है ना? और फिर भी, तुम बुरी तरह ऊब चुके हो।
कोमात्सु ने कुछ देर तक अपनी उंगलियों के बीच रखी सिगरेट को ध्यान से देखा, जिससे धुएं की एक लकीर उठ रही थी, फिर उसने उसे ऐशट्रे में झाड़ दिया।
मुझे लगता है कि उन्होंने मुझे तीन दिन तक उस छोटे से कमरे में बिना कुछ किए बंद रखा, बस मेरी नसों के साथ खेलने के लिए। बहुत सोची-समझी योजना थी। वे जानते हैं कि किसी व्यक्ति की नसों को कैसे कमजोर किया जाता है, उसे मानसिक रूप से कैसे खत्म किया जाता है। चौथे दिन, यानी चौथे नाश्ते के बाद, दो लोग आए। मुझे लगता है कि वे वही लोग थे जिन्होंने मेरा अपहरण किया था। उन्होंने मुझ पर अचानक हमला किया और मुझे यह समझने का समय नहीं मिला कि क्या हो रहा है, इसलिए मैं उनके चेहरे ठीक से नहीं देख पाई। लेकिन जब मैंने उन्हें देखा, तो मुझे कुछ-कुछ याद आ गया कि क्या हुआ था। उन्होंने मुझे कार में खींच लिया, मेरे हाथों को पीछे की ओर इस तरह मोड़ दिया कि मुझे लगा कि वे उन्हें कुचल देंगे, और मेरी नाक और मुंह को किसी पदार्थ में भीगे हुए कपड़े से ढक दिया। उस दौरान उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा। यह सब पलक झपकते ही हो गया।
उन पलों को याद करके कोमात्सु ने मुंह बनाया।
एक कद में छोटा, गठीला और छोटे बालों वाला था। उसका चेहरा चौकोर और धूप से झुलसा हुआ था। दूसरा लंबा, लंबी भुजाओं और टांगों वाला, पिचके गालों वाला और बालों को पोनीटेल में बांधे हुए था। साथ-साथ खड़े होकर वे एक हास्यास्पद जोड़ी लग रहे थे। एक पतला और दुबला-पतला, दूसरा गठीला और दाढ़ी वाला। लेकिन एक नज़र में ही मैं समझ गया कि वे बेहद खतरनाक लोग थे। ऐसे लोग जो ज़रूरत पड़ने पर बिना किसी झिझक के कुछ भी कर सकते थे, लेकिन वे दिखावा नहीं करते थे। उनका व्यवहार शांत था, और इसी वजह से वे ज़रूरत से ज़्यादा खूंखार नहीं दिखते थे। उनकी आँखें बेहद ठंडी लगती थीं। दोनों ने काले सूती पतलून और सफेद छोटी आस्तीन वाली कमीज़ पहनी हुई थी। उनकी उम्र पच्चीस से तीस के बीच थी, और गंजा

वाला दूसरे से थोड़ा बड़ा लग रहा था। दोनों में से किसी ने भी घड़ी नहीं पहनी थी।
टेंगो चुपचाप उसके बोलने का इंतजार करता रहा।
— इसी सिलसिले में, मैंने गंजे आदमी से बात की। बालों वाला, पतला-दुबला आदमी दरवाजे के पास खड़ा था, बिना हिले-डुले, पीठ सीधी किए, एक शब्द भी नहीं बोल रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे वह हमारी बातचीत सुन रहा हो, हालांकि मानो उसने कुछ सुना ही न हो। गंजा आदमी अपने साथ लाई हुई तह वाली कुर्सी पर मेरे सामने बैठ गया और मुझसे बात करने लगा। कोई दूसरी कुर्सी नहीं थी, इसलिए मैं बिस्तर पर बैठ गया। उस आदमी के चेहरे पर कोई भाव नहीं था। बोलते समय उसका मुंह ज़रूर हिलता था, लेकिन उसके अलावा उसका चेहरा एकदम सख्त था। देखकर लगता था जैसे वह किसी कठपुतली का पुतला हो।
पहली बार, गंजे आदमी ने उससे पूछा कि क्या उसे कोई अंदाज़ा है कि उसे यहाँ क्यों लाया गया है और वे कौन हैं। कोमात्सु ने जवाब दिया कि उसे कोई अंदाज़ा नहीं है। गंजे आदमी ने उसकी आँखों में सीधे देखते हुए, बेजान आँखों से पूछा कि अगर उसे अपनी राय देनी हो तो वह क्या अनुमान लगाएगा। उसने विनम्रता से, लेकिन अधिकारपूर्ण लहजे में बात की। उसकी आवाज़ कठोर और ठंडी थी, जैसे किसी धातु के स्केल को लंबे समय तक फ्रिज में रखा गया हो।
कुछ क्षणों की झिझक के बाद, कोमात्सु ने ईमानदारी से उत्तर दिया कि वह अनुमान लगाता है कि इसका संबंध वायु परासैलिस से है। इसके अलावा उसके दिमाग में कुछ और नहीं आ रहा था। इसका अर्थ यह था कि वे पायनियर्स से जुड़े हुए थे और संप्रदाय के भीतर कहीं न कहीं मौजूद थे, लेकिन यह सब केवल एक परिकल्पना थी। गंजे आदमी ने कोमात्सु की बातों की न तो पुष्टि की और न ही खंडन किया। वह बस बिना कुछ कहे उसे देखता रहा। कोमात्सु भी चुप रहा।
"तो चलिए, इस परिकल्पना के आधार पर इस पर चर्चा करते हैं," गंजे आदमी ने शांत भाव से कहा। "हमारी बातचीत आपकी परिकल्पना का ही विस्तार होगी। हम इस आधार से शुरू करते हैं कि चीजें ऐसी ही हैं। सहमत हैं?"
"सहमत हूँ," कोमात्सु ने उत्तर दिया।
उन्होंने सोचा, वे इसे जितना हो सके अप्रत्यक्ष रखना चाहते हैं। यह कोई बुरी बात नहीं है। अगर वे मुझे जिंदा वापस नहीं ले जाना चाहते तो इतनी मेहनत क्यों करते?
— एक प्रकाशन गृह में संपादक के रूप में, आपने एरिका फुकाडा द्वारा लिखित उपन्यास 'द एयर क्राइसालिस' को प्रकाशित करवाया था। क्या यह सच है?
कोमात्सु ने इसे खुलकर स्वीकार किया। यह एक ऐसा तथ्य था जो सभी को ज्ञात था। — हमारी जानकारी के अनुसार, साहित्यिक पत्रिका का पहला पुरस्कार प्राप्त करने के लिए इस उपन्यास के संबंध में कुछ अनियमितताएं की गईं। समिति तक पहुंचने से पहले, आपकी हिदायतों पर किसी तीसरे व्यक्ति द्वारा पांडुलिपि में काफी बदलाव किए गए। गुप्त रूप से संशोधित इस कृति ने पुरस्कार जीता, हलचल मचाई, प्रकाशित हुई और बेस्टसेलर बन गई। क्या यह सही है?
"यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप इसे किस नजरिए से देखते हैं," कोमात्सु ने जवाब दिया। "संपादक की सलाह के आधार पर पांडुलिपि में बदलाव करना कोई असामान्य बात नहीं है और—"
गंजे आदमी ने हाथ उठाकर उसे बीच में ही रोक दिया।

— किसी लेखक द्वारा संपादक की सलाह पर अपने काम में कुछ बदलाव करने में कोई बुराई नहीं है। मैं पूरी तरह सहमत हूँ। लेकिन जब कोई तीसरा पक्ष पुरस्कार जीतने के लिए हस्तक्षेप करता है, तो इसे किसी भी तरह से ईमानदारी का काम नहीं माना जा सकता। साथ ही, एक फर्जी कंपनी बनाई गई और रॉयल्टी बाँटी गई। मुझे नहीं पता कि कानून इसकी व्याख्या कैसे करता है, लेकिन आपका यह काम निश्चित रूप से जनता की निंदा का पात्र बनेगा। आपके पास कोई बहाना नहीं होगा। अखबारों और पत्रिकाओं में इसकी खूब चर्चा होगी और आपके प्रकाशन गृह की विश्वसनीयता धूमिल हो जाएगी। आप इस बात से भलीभांति परिचित हैं। हम तथ्यों को विस्तार से जानते हैं और स्पष्ट सबूतों के साथ सब कुछ उजागर कर सकते हैं। इसलिए छोटी- मोटी बातों से बचना ही बेहतर है। हमें इन बातों से कोई लेना-देना नहीं है। यह हम दोनों के लिए समय की बर्बादी है।
कोमात्सु ने चुपचाप सिर हिलाया।
"अगर ऐसी नौबत आई, तो आपको न सिर्फ इस्तीफा देना होगा, बल्कि आपको गिल्ड से निकाल दिया जाएगा। वापस अंदर आने का कोई रास्ता नहीं होगा। कम से कम ऊपरी तौर पर तो नहीं।"
"शायद," कोमात्सु ने स्वीकार किया।
"लेकिन अब इस सच्चाई को सिर्फ कुछ ही लोग जानते हैं," गंजे आदमी ने कहा। "आप, एरिका फुकाडा, श्री एबिसुनो, और टेंगो कावाना, जिन्होंने इसे दोबारा लिखा था। साथ ही कुछ और लोग।"
कोमात्सु ने सोच-समझकर शब्दों का चयन किया।
— परिकल्पना के आधार पर, क्या वे "कुछ लोग" "पायनियर्स" समूह के सदस्यों को संदर्भित करते हैं?
गंजे आदमी ने लगभग न के बराबर ही सिर हिलाया।
परिकल्पना के अनुसार, हाँ। लेकिन वास्तविकता क्या है, यह हम नहीं जानते। गंजे आदमी ने रुककर कोमात्सु के दिमाग में उस बात के बैठने का इंतज़ार किया। फिर उसने आगे कहा:
"अगर यह अनुमान सही है, तो वे आपके साथ कुछ भी कर सकते हैं। वे आपको एक सम्मानित अतिथि की तरह मान सकते हैं और जब तक चाहें आपको इस कमरे में रख सकते हैं। इससे उन्हें कोई खास परेशानी नहीं होगी। या अगर वे आपका ठहरना कम करना चाहें, तो उनके पास कई विकल्प हैं। एक विकल्प ऐसा भी है जो दोनों पक्षों के लिए अप्रिय होगा। किसी भी स्थिति में, उनके पास शक्ति और साधन दोनों हैं। क्या आपको अब तक सब समझ आ गया है?"
"मैं समझ गया," कोमात्सु ने जवाब दिया।
- अच्छी बात है।
बिना कुछ कहे, गंजे आदमी ने उंगली उठाई और बालों वाला आदमी कमरे से बाहर चला गया। थोड़ी देर बाद वह एक टेलीफोन लेकर लौटा। उसने उसे फर्श में लगे सॉकेट में लगाया और रिसीवर कोमात्सु को थमा दिया। गंजे आदमी ने कोमात्सु से प्रकाशन गृह को फोन करने को कहा।
मुझे ज़ुकाम हो गया है, तेज़ बुखार है और मैं कुछ दिनों से बिस्तर पर हूँ। मुझे नहीं लगता कि मैं जल्द ही काम पर आ पाऊँगा। बस इतना कहकर फ़ोन काट दो। कोमात्सु ने एक सहकर्मी को फोन किया, बस जो संदेश भेजना था उसे भेजा और बिना किसी सवाल का जवाब दिए फोन काट दिया। गंजे आदमी के इशारे पर, बालों वाले आदमी

ने तार निकाला और फोन लेकर कमरे से बाहर चला गया। गंजे आदमी ने कुछ देर तक अपने हाथों के पिछले हिस्से को देखा, फिर कोमात्सु से ऐसी आवाज़ में बात की जिसमें थोड़ी सी दयालुता भी झलक रही थी:
"हम अभी यहीं रुकेंगे। हम इस बारे में किसी और दिन बात करेंगे। तब तक, कृपया आज हमने जो चर्चा की है, उस पर ध्यानपूर्वक विचार करें।"
फिर वे दोनों कमरे से चले गए। कोमात्सु ने अगले दस दिन उस छोटे से कमरे में चुपचाप बंद रहकर बिताए। दिन में तीन बार, नकाबपोश युवक उसके लिए वही सादा खाना लाता था। चौथे दिन, उसे किसी तरह का सूती पजामा पहनने को दिया गया, लेकिन उसने बिल्कुल भी स्नान नहीं किया। वह शौचालय के बगल में बने छोटे से सिंक में मुश्किल से अपना चेहरा धो पाता था। कोमात्सु को समय का पता ही नहीं चल रहा था। उसने कल्पना की कि वे उसे यामानाशी में संप्रदाय के मुख्यालय ले गए हैं। उसने समाचारों और टेलीविजन पर उसकी तस्वीरें देखी थीं। वह पहाड़ों के बीचोंबीच स्थित एक तरह का अलग-थलग इलाका था, जो एक ऊँची दीवार से घिरा हुआ था। उसके पास भागने का कोई रास्ता नहीं था, मदद मांगने के लिए कोई नहीं था। अगर वे उसे मार देते (और उसका मतलब बिल्कुल यही था कि "दोनों पक्षों के लिए एक अप्रिय विकल्प"), तो उनका शव कभी नहीं मिलेगा। यह उसके जीवन में पहली बार था जब वह सचमुच मौत के इतने करीब आ गया था।
प्रकाशन गृह को फोन करने के लिए कहे जाने के दसवें दिन (शायद दसवां ही, वह निश्चित नहीं था) वे दोनों आखिरकार आ गए। गंजा आदमी पिछली बार से ज़्यादा पतला लग रहा था, और इसीलिए उसकी गाल की हड्डियाँ इतनी उभरी हुई थीं। उसकी बेहद ठंडी आँखें अब लाल थीं। वह अपने साथ लाई हुई तह वाली कुर्सी पर फिर से बैठ गया, मेज पर कोमात्सु के सामने। काफी देर तक वह कुछ नहीं बोला, बस अपनी उन लाल आँखों से उसे घूरता रहा।
बालदार व्यक्ति का रूप-रंग अपरिवर्तित था। पहले की तरह, वह दरवाजे के सामने सीधा खड़ा था, पीठ सीधी और आँखों में खालीपन लिए एक बिंदु पर टकटकी लगाए हुए। दोनों ने अभी भी काली पैंट और सफेद कमीज पहन रखी थी। संभवतः यह किसी प्रकार की वर्दी थी।
अंत में गंजे आदमी ने कहा, "चलिए अपनी चर्चा जारी रखें। मैंने कहा था ना कि हम आपके यहाँ रहते हुए जो चाहें कर सकते हैं?"
कोमात्सु ने सिर हिलाया।
— एक ऐसा विकल्प भी है जो दोनों पक्षों के लिए अप्रिय है।
"तुम्हारी याददाश्त कितनी अच्छी है!" गंजे आदमी ने कहा। "बिल्कुल सही। एक अप्रिय अंत भी हमारी आँखों के सामने प्रकट हो रहा है।"
कोमात्सु ने कुछ नहीं कहा। गंजे आदमी ने बोलना जारी रखा:
लेकिन यह तो सिर्फ सैद्धांतिक बात है। असलियत में, वे यथासंभव कोई भी कड़ा कदम नहीं उठाना चाहते। अगर आप अचानक, अभी और यहीं, गायब हो जाते हैं, तो इससे एक और मुश्किल स्थिति पैदा हो जाएगी। जैसे एरिका फुकाडा के गायब होने पर हुआ था। शायद बहुत से लोग आपको याद न करें, लेकिन आप उद्योग में एक सम्मानित और जाने-माने संपादक हैं। और जिस पत्नी से आपका तलाक हुआ है, अगर उसकी गुजारा भत्ता राशि काट दी जाती है, तो उसे भी आपत्ति होगी। यह कहना गलत नहीं होगा कि यह उनके लिए बहुत सुखद बदलाव होगा।
कोमात्सु ने सूखी खांसी की और निगल लिया।

— इसके अलावा, वे आपकी व्यक्तिगत रूप से आलोचना नहीं करते और न ही आपको दंडित करने की कोशिश करते हैं। मैं समझता हूँ कि 'द क्राइसालिस ऑफ एयर' प्रकाशित करके आपका इरादा किसी विशेष धार्मिक समूह पर हमला करने का नहीं था। शुरुआत में तो आपको यह भी नहीं पता था कि पुस्तक और उस समूह के बीच कोई संबंध है। आपने यह धोखाधड़ी की योजना खेल-खेल में और महत्वाकांक्षा के चलते बनाई थी। एक समय पर इसमें काफी बड़ी रकम शामिल थी। एक गरीब साधारण सरकारी कर्मचारी के लिए बच्चे और पत्नी का गुजारा भत्ता देना मुश्किल होता है। इसलिए आपने टेंगो कावाना को इस योजना में शामिल किया, जो एक और अज्ञानी व्यक्ति था, एक प्रारंभिक विद्यालय में शिक्षक और एक महत्वाकांक्षी लेखक। योजना अपने आप में चतुराई भरी और हास्यास्पद थी, लेकिन आपने काम और व्यक्ति का चुनाव गलत किया। साथ ही, कहानी आपके शुरुआती इरादे से कहीं अधिक विस्तृत हो गई है। आप मोर्चे पर भटक गए हैं, ठीक वैसे ही जैसे आम नागरिक बारूदी सुरंगों में फंस जाते हैं। आप न तो आगे जा सकते हैं और न ही पीछे हट सकते हैं। क्या मैं सही कह रहा हूँ, श्रीमान कोमात्सु?
“मैं क्या कहूँ?” कोमात्सु ने अस्पष्ट रूप से उत्तर दिया।
"तुम्हें अभी भी कई बातें ठीक से समझ नहीं आई हैं," गंजे आदमी ने थोड़ी तनाव भरी निगाहों से कहा। "अगर समझ आती तो इतनी बेपरवाही से बात नहीं करते। चलो, बात साफ कर लेते हैं। तुम सचमुच एक खतरनाक जाल में फंसे हो।"
कोमात्सु ने चुपचाप सिर हिलाया। गंजे आदमी ने अपनी आँखें बंद कर लीं और दस सेकंड बाद फिर खोल दीं।
इस स्थिति में फंसे होने के कारण शायद आपके लिए यह आसान नहीं है, लेकिन उनकी वजह से उन्हें और भी बदतर समस्याओं का सामना करना पड़ा है।
“क्या मैं कुछ पूछ सकता हूँ?” कोमात्सु ने पूछा।
मैं जवाब देने का वादा नहीं करता।
"द एयर क्राइसालिस को प्रकाशित करके, हमने अंततः इस धार्मिक समूह को कुछ असुविधा पहुँचाई। आख़िरकार, बात यही तो है?"
"कोई असुविधा नहीं है," गंजे आदमी ने जवाब दिया, और उसका चेहरा थोड़ा विकृत हो गया। आवाज़ ने उनसे बात करना बंद कर दिया। क्या आप जानते हैं इसका क्या मतलब है?
"मुझे नहीं पता," कोमात्सु ने रूखे स्वर में उत्तर दिया।
"कुछ नहीं। मैं इससे ज़्यादा विस्तार से समझा भी नहीं सकता, और वैसे भी, बेहतर यही है कि आप न जानें। वह आवाज़ अब उनसे बात नहीं कर रही है। मैं बस इतना ही बता सकता हूँ," गंजे आदमी ने कहा और थोड़ी देर रुका। और यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति उपन्यास 'द एयर क्राइसालिस' के मुद्रित रूप में प्रकाशित होने के कारण उत्पन्न हुई थी।
कोमात्सु ने पूछा, "क्या एरिका फुकाडा और प्रोफेसर एबिसुनो ने यह अनुमान लगाया था कि एयर क्राइसालिस के प्रकाशन से ऐसी 'अफसोसजनक स्थिति' उत्पन्न होगी?"
"नहीं, श्री एबिसुनो को इतनी जानकारी नहीं है," गंजे आदमी ने सिर हिलाते हुए जवाब दिया। यह स्पष्ट नहीं है कि एरिका फुकाडा क्या कर रही थी। लेकिन हम मानते हैं कि यह जानबूझकर नहीं किया गया था। अगर कोई इरादा था भी, तो वह उसका नहीं था।"

दुनिया 'द क्राइसालिस ऑफ एयर' को एक साधारण काल्पनिक उपन्यास मानती है। एक हाई स्कूल की छात्रा द्वारा लिखी गई एक काल्पनिक, हानिरहित कहानी। और सच्चाई यह है कि वास्तविकता से अत्यधिक विमुख होने के कारण इसकी बहुत आलोचना हुई है। किसी को भी यह ख्याल नहीं आएगा कि इसमें कोई बड़ा रहस्य या ठोस जानकारी उजागर की गई है।
"तुम सही कह रहे हो," गंजे आदमी ने कहा। "ज़्यादातर लोग इस बात पर ध्यान भी नहीं देते। लेकिन बात ये नहीं है। किसी भी हालत में ये राज़ सार्वजनिक नहीं होना चाहिए था।"
बालों वाला वह आदमी दरवाजे के पास खड़ा रहा, उसकी निगाहें सामने की दीवार पर टिकी थीं, वह उसके पीछे के उस परिदृश्य की प्रशंसा कर रहा था जिसे कोई और नहीं देख सकता था।
"वे अपनी आवाज़ वापस पाना चाहते हैं," गंजे व्यक्ति ने सोच-समझकर शब्दों का चुनाव करते हुए कहा। "जलभंडार सूखा नहीं है। यह बस गहराई में, एक अदृश्य स्थान पर चला गया है। इसे पुनर्जीवित करना बेहद मुश्किल है, लेकिन नामुमकिन नहीं।" गंजे आदमी ने कोमात्सु की आँखों में गहराई से देखा। ऐसा लग रहा था मानो वह उनकी आँखों में एक विशेष गहराई का आकलन कर रहा हो, जैसे कि वह अपनी आँखों से यह देख रहा हो कि कमरे में किसी विशेष स्थान पर फर्नीचर का कोई विशेष टुकड़ा उपयुक्त होगा या नहीं।
"जैसा कि मैंने कहा, आप एक खतरनाक स्थिति में फंस गए हैं। आप न आगे जा सकते हैं, न पीछे। वे बस आपको वहां से सुरक्षित निकलने का रास्ता दिखा सकते हैं। इस तरह आप बच निकलेंगे और वे कुछ परेशान करने वाले घुसपैठियों से छुटकारा पा सकेंगे।"
गंजा आदमी पालथी मारकर बैठा था।
"मैं आपसे चुपचाप पीछे हटने का अनुरोध करूंगा। उन्हें इस बात की परवाह नहीं है कि आपके टुकड़े-टुकड़े हो जाएं या आपका क्या हो। लेकिन अगर आपने शोर मचाना शुरू किया, तो मामला पेचीदा हो जाएगा। इसलिए, श्रीमान कोमात्सु, मैं आपको बाहर निकलने का रास्ता दिखाऊंगा। मैं पीछे से आपका मार्गदर्शन करते हुए आपको एक सुरक्षित स्थान पर ले जाऊंगा। बदले में आपसे बस इतना ही अनुरोध है कि आप 'द एयर क्राइसालिस' का प्रकाशन बंद कर दें। इसकी और प्रतियां छापना बंद कर दें और इसे पेपरबैक में प्रकाशित करना भी बंद कर दें। बेशक, इसका विज्ञापन भी बंद कर दें। एरिका फुकाडा से सभी संपर्क तोड़ दें। आपको क्या लगता है, आप ऐसा कर सकते हैं, है ना?"
कोमात्सु ने कहा, "यह आसान नहीं है, लेकिन शायद संभव है।"
"श्रीमान कोमात्सु, मैं आपको यहाँ संभाव्यता संबंधी शर्तों पर चर्चा करने के लिए नहीं लाया हूँ," गंजे आदमी ने और भी लाल और तीखी आँखों से कहा। "मैंने आपको बाज़ार में आ चुकी सभी किताबें वापस लेने का सुझाव नहीं दिया। ऐसा करने से मीडिया में हंगामा मच जाएगा। इसके अलावा, मैं जानता हूँ कि आपके पास इतनी शक्ति नहीं है। आपसे बस इतना करने को कहा गया है कि मामले को यथासंभव चुपचाप समाप्त करें। जो हो चुका है, उसके लिए हम कुछ नहीं कर सकते। जो नष्ट हो चुका है, उसे बहाल नहीं किया जा सकता। वे बस यही चाहते हैं कि जनता का ध्यान इस ओर न जाए। क्या आप समझते हैं?"
कोमात्सु ने सिर हिलाकर यह संकेत दिया कि वह समझ गया है।

"श्री कोमात्सु, जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया था, आपके पास भी कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें आप सार्वजनिक नहीं करना चाहते। अगर वे बातें सबको पता चल गईं, तो समाज द्वारा इसमें शामिल सभी लोगों को दंडित किया जाएगा। इसलिए युद्धविराम करना सभी के हित में होगा। इसके अलावा, उनका आपको जवाबदेह ठहराने का कोई इरादा नहीं है। हम आपकी सुरक्षा की गारंटी देते हैं। और एयर क्राइसालिस से आपका कोई लेना-देना नहीं रहेगा। मुझे नहीं लगता कि यह कोई बुरा सौदा है।"
कोमात्सु ने सुनी हुई बातों पर विचार किया।
ठीक है। मैं एयर क्राइसालिस को बंद करवाने का इंतज़ाम कर दूँगा। इसमें थोड़ा समय लग सकता है, लेकिन मैं कोई उचित समाधान निकाल लूँगा। और मैं तो इस पूरी कहानी को पूरी तरह से भूल सकता हूँ। तेंगो कावाना भी। वह शुरू से ही इससे खुश नहीं थे। मैंने उन्हें इसके लिए मजबूर किया था। उनका काम तो पहले ही पूरा हो चुका है। और एरिको फुकाडा से भी कोई समस्या नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा था कि उनका कोई और उपन्यास लिखने का इरादा नहीं है। मुझे बस यह नहीं पता कि प्रोफेसर एबिसुनो के साथ क्या होगा। वह असल में यह जानना चाहते थे कि उनके दोस्त तमोत्सु फुकाडा ठीक हैं, स्वस्थ हैं, कहाँ हैं और क्या कर रहे हैं। मुझे डर है कि जब तक उन्हें उनके बारे में कोई खबर नहीं मिलेगी, वह चैन से नहीं बैठेंगे।
"श्री तमोत्सु फुकाडा का निधन हो गया है," गंजे आदमी ने एकरस और शांत आवाज में कहा, लेकिन उस आवाज में कुछ बहुत ही दमनकारी सा भाव था।
"क्या वह मर गया?"
"हाल ही में," चेलियोस ने गहरी सांस लेते हुए और फिर धीरे-धीरे छोड़ते हुए कहा। मृत्यु का कारण हृदयाघात था। पल भर में, सभी कष्ट समाप्त हो गए। कुछ परिस्थितियों के कारण, मृत्यु की सूचना दिए बिना, समूह के भीतर ही गुप्त रूप से अंतिम संस्कार किया गया। धार्मिक कारणों से, उनके शरीर का दाह संस्कार किया गया और उनकी हड्डियों को तोड़कर पहाड़ों में बिखेर दिया गया। कानूनी दृष्टि से, इसे शव का अपमान कहा जाता है, लेकिन मुकदमा चलाना मुश्किल होगा।
लेकिन यही सच है। हम किसी के जीवन या मृत्यु के बारे में झूठ नहीं बोलते।
कृपया किसी तरह यह बात श्री एबिसुनो तक पहुंचा दें।
उनकी मृत्यु प्राकृतिक कारणों से हुई।
गंजे आदमी ने सहमति में सिर हिलाया।
श्री फुकाडा हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। नहीं, उनका वर्णन इन साधारण शब्दों में नहीं किया जा सकता। वे सचमुच एक महान व्यक्तित्व थे। उनकी मृत्यु की खबर केवल कुछ ही लोगों को है, लेकिन सभी को गहरा शोक है। उनकी पत्नी, यानी एरिका फुकाडा की माता, कुछ वर्ष पहले पेट के कैंसर से चल बसीं। उन्होंने कीमोथेरेपी करवाने से इनकार कर दिया और समूह के क्लिनिक में ही उनका निधन हो गया। उनके पति अंतिम समय में उनके साथ थे।
"लेकिन मौत की सूचना नहीं दी गई?" कोमात्सु ने पूछा।
अस्वीकृति का एक भी शब्द सुनने को नहीं मिला।
और श्री फुकाडा का हाल ही में निधन हो गया।
"बिल्कुल सही," गंजे आदमी ने कहा।
— उपन्यास प्रकाशित होने के बाद?

गंजे आदमी ने मेज की ओर देखा, फिर कोमात्सु की ओर देखा।
— जी हाँ। श्री फुकाडा का निधन 'द एयर क्राइसालिस' के प्रकाशन के बाद हुआ था।
"क्या इन दोनों घटनाओं के बीच कारण और प्रभाव का संबंध है?" कोमात्सु ने साहसपूर्वक पूछा।
गंजे आदमी ने कुछ देर तक चुप रहकर सोचा कि क्या जवाब दे। फिर उसने दृढ़ता से कहा:
ठीक है। श्री एबिसुनो को समझाने के लिए, शायद तथ्यों को स्पष्ट करना उपयोगी होगा। सच्चाई यह है कि श्री फुकाडा स्वयं उस समूह के नेता थे, "वह व्यक्ति जो आवाज़ सुनता है"। जब उनकी बेटी एरिका ने 'द एयर क्राइसालिस' प्रकाशित की, तो आवाज़ ने उससे बात करना बंद कर दिया, और श्री फुकाडा ने आत्महत्या कर ली। यह एक स्वाभाविक मृत्यु थी। या अधिक सटीक रूप से कहें तो, उन्होंने स्वाभाविक रूप से अपनी जान ले ली।
"एरिको फुकाडा नेता की बेटी थी," कोमात्सु ने बुदबुदाते हुए कहा।
गंजे आदमी ने संक्षिप्त रूप से सिर हिलाया।
"और अंत में उसने अपने पिता को धक्का देकर उनकी मौत को गले लगा लिया," कोमात्सु ने आगे कहा।
गंजे आदमी ने फिर सिर हिलाया।
- बिल्कुल।
लेकिन समूह अभी भी अड़ा हुआ है।
"समूह डटा हुआ है," गंजे आदमी ने कोमात्सु को घूरते हुए जवाब दिया, उसकी आँखें किसी ग्लेशियर में धंसे दो प्राचीन पत्थरों जैसी थीं। "श्री कोमात्सु, 'एयर क्राइसालिस' के प्रकाशन ने समूह पर बहुत विपत्ति ला दी है। लेकिन वे इसके लिए आपको दंडित नहीं करना चाहते। उन्हें इससे कुछ भी लाभ नहीं होगा। उन्हें एक मिशन पूरा करना है, और इसके लिए उन्हें एकांत की आवश्यकता है।"
"तो चलिए एक कदम पीछे हटते हैं और इस कहानी को भूल जाते हैं।"
— सीधे शब्दों में कहें तो, हाँ।
"और क्या यह बात मुझे बताने के लिए आपको मेरा अपहरण करना जरूरी था?"
पहली बार, चेलियोस के चेहरे पर भावों की एक झलक दिखाई दी। एक अस्पष्ट भावना, जो मनोरंजन और करुणा के बीच कहीं थी।
"आपको यहां लाने के लिए हमने बहुत मेहनत की, क्योंकि हम आपको दिखाना चाहते थे कि वे गंभीर हैं। वे कोई भी अतिवादी कदम नहीं उठाना चाहते, लेकिन अगर कहा गया तो वे हिचकिचाएंगे नहीं। मैं चाहता था कि आप खुद इसका अनुभव करें। अगर आपने अपना वादा नहीं निभाया, तो इसके परिणाम अच्छे नहीं होंगे। क्या मैं समझ गया?" "हां," कोमात्सु ने उत्तर दिया।
श्री कोमात्सु, सच कहूँ तो, आप बहुत भाग्यशाली थे। घना कोहरा था और कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन वास्तव में आप खाई के किनारे से बस कुछ सेंटीमीटर दूर रह गए। यह याद रखिएगा। अभी उनके पास आपकी चिंता करने का समय नहीं है। उनके पास अन्य, अधिक महत्वपूर्ण समस्याएं हैं। और इस लिहाज से आप बहुत भाग्यशाली थे। और इसीलिए, जब तक आपका भाग्य साथ देता है...
गंजे आदमी ने अपने दोनों हाथ हथेलियों को ऊपर की ओर करके ऐसे देखा जैसे बारिश हो रही हो। कोमात्सु उसके बोलने का इंतज़ार करता रहा, पर उसने कुछ नहीं कहा। बोलते-बोलते उसके चेहरे पर थकान की एक लहर दौड़ गई। वह धीरे से कुर्सी से उठा,

*

—

"

"

"

—

प्रोफेसर एबिसुनो सोच में डूब गए। ये आदमी बहुत सोचते हैं और बहुत गहराई से सोचते हैं। फिर वे बिना कुछ कहे उठ गए और काफी देर बाद कमरे में लौटे। मुझे लगता है कि वे दोनों की मृत्यु को एक हद तक अपरिहार्य मानने की कोशिश कर रहे थे। शायद उन्होंने यह उम्मीद भी की थी और अपने दिल में इसके लिए तैयार भी थे कि वे अब इस दुनिया में नहीं हैं। लेकिन फिर भी, जब आपको अपने किसी करीबी की मृत्यु के बारे में पक्के तौर पर पता चलता है, तो यह एक गहरा सदमा होता है। टेंगो को वह खाली बैठक कक्ष याद आया, जो सजावट से रहित था, गहरी, ठंडी खामोशी और पक्षियों की तीखी चहचहाहट जो कभी-कभी खिड़की से सुनाई देती थी।
“और क्या हम आखिरकार बारूदी सुरंगों वाले क्षेत्र से पीछे हटने और निकलने में कामयाब हो गए?” उन्होंने पूछा।
एक नया हाईबॉल आया। कोमात्सु ने उससे अपने होंठ गीले किए।
प्रोफेसर एबिसुनो ने तुरंत कोई फैसला नहीं लिया। उन्होंने कहा कि उन्हें सोचने के लिए समय चाहिए। लेकिन हम उनकी बात मानने के अलावा और क्या कर सकते थे? मैंने तुरंत कार्रवाई की। मैंने छपाई रोकने के लिए हर संभव कोशिश की और अब यह किताब छपनी बंद हो चुकी है। हम इसे पेपरबैक में भी नहीं छाप रहे हैं। वैसे भी अब तक इसकी खूब बिक्री हुई है और कंपनी ने काफी मुनाफा कमा लिया है। खोने के लिए कुछ नहीं है। बेशक, कंपनी होने के नाते बैठकों और निदेशक की मंजूरी में आसानी नहीं थी, लेकिन जब मैंने उनके सामने एक संदिग्ध लेखक से जुड़े घोटाले की संभावना रखी, तो सभी बॉस कांपने लगे और अंत में उन्होंने मेरी बात मान ली। बेशक, अब से वे मुझे ठंडे चावल परोसेंगे, लेकिन मैं तो ऐसी बातों का आदी हो चुका हूं।
"क्या प्रोफेसर एबिसुनो ने उनकी बात मान ली कि फुकाएरी के माता-पिता मर चुके हैं?"
“मुझे भी ऐसा ही लगता है,” कोमात्सु ने जवाब दिया। बस उसे इस बात को सच मानकर स्वीकार करने और इस विचार को समझने में थोड़ा समय लगा। और मैंने जो देखा, उससे तो यही लगता है कि वे लोग गंभीर थे। ऐसा लग रहा था कि वे सचमुच आगे की परेशानी से बचना चाहते थे, भले ही उन्हें कुछ समझौते करने पड़ें। इसीलिए उन्होंने अपहरण जैसा कदम उठाया। वे हमें सही संदेश देना चाहते थे। और अगर उन्होंने अपने संप्रदाय के फुकाडा सदस्यों के शवों को गुपचुप तरीके से जलाने की योजना बनाई थी, तो उन्होंने बिना कुछ कहे ही ऐसा कर दिया। हालाँकि अब इसे साबित करना मुश्किल है, क्योंकि शव का अपमान करना एक गंभीर अपराध है। फिर भी उन्होंने मुझे बता दिया। उन्होंने अपने सारे पत्ते इतने खुलेआम खोल दिए थे। इसीलिए मुझे लगता है कि गंजे आदमी ने जो मुझे बताया वह सच है। छोटी-छोटी बातों तक तो नहीं, लेकिन मूल रूप से, हाँ।
टेंगो ने कोमात्सु की कही बातों को व्यवस्थित करने की कोशिश की।
फुकेरी के पिता "आवाज सुनने वाले" थे। यानी, उन्होंने पैगंबर की भूमिका निभाई। लेकिन उनकी बेटी फुकेरी ने 'द एयर क्राइसालिस' लिखा और वह उपन्यास बेस्टसेलर बन गया, जिसके बाद उन्हें आवाज सुनाई देना बंद हो गया और परिणामस्वरूप, उनकी प्राकृतिक कारणों से मृत्यु हो गई।
या फिर उन्होंने स्वाभाविक रूप से अपनी जान ले ली।
"और अब इस संप्रदाय का मुख्य उद्देश्य एक नए पैगंबर की खोज करना है। अगर उन्हें ईश्वर की वाणी सुनाई देना बंद हो जाए, तो उनका समुदाय अपनी नींव खो

देगा। इसलिए वे हमारे साथ समय बर्बाद नहीं कर सकते। संक्षेप में, यही तो सब कुछ है, है ना?"
- हाँ।
— वायु के कोकून में उनके लिए अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारी निहित है। इसे मुद्रित करके विश्वभर में फैलाने के कारण आवाज शांत हो गई और जलस्तर गहराई में चला गया। यह महत्वपूर्ण जानकारी वास्तव में क्या दर्शाती है?
कोमात्सु ने कहा, "पिछले चार दिनों से जब से मैं कैद में हूँ, मैं इस बारे में बहुत सोच रही हूँ।" 'द एयर क्राइसालिस' कोई बहुत लंबी किताब नहीं है। यह एक ऐसी दुनिया का वर्णन करती है जहाँ छोटे लोग बहुतायत में रहते हैं। नायिका एक दस साल की लड़की है जो एक एकांत समुदाय में रहती है। छोटे लोग रात में चुपके से आते हैं और हवा का एक कोकून बुनते हैं। कोकून के अंदर उस छोटी लड़की की हमशक्ल होती है, और इस तरह माता और संतान के बीच का बंधन जन्म लेता है। उस दुनिया में, आकाश में दो चंद्रमा हैं। एक बड़ा और एक छोटा, जो शायद माता और संतान का प्रतीक हैं। उपन्यास में, नायिका—संभवतः फुकाएरी पर आधारित—को पता चलता है कि वह माता है और वह अपनी संतान को छोड़कर समुदाय से भाग जाती है। हमें यह नहीं बताया गया है कि संतान का बाद में क्या होता है।
टेंगो कुछ देर तक गिलास में बर्फ को पिघलते हुए देखता रहा।
"शायद 'आवाज सुनने वाले' को फिलिया की ज़रूरत मध्यस्थ के रूप में होती है," टेंगो ने कहा। वह केवल उसके माध्यम से ही आवाज सुन सकता है। या शायद सांसारिक भाषा में शब्दों का यही अर्थ उसे समझ आता है। आवाज द्वारा दिए गए संदेश को सही रूप लेने के लिए दोनों पक्षों का अस्तित्व होना आवश्यक है। या, फुकेरी के शब्दों में कहें तो, एक प्राप्तकर्ता और एक बोधकर्ता। इसके लिए, पहले वायु के एक कोकून की आवश्यकता होती है, क्योंकि यही वह माध्यम है जिसके द्वारा फिलिया का जन्म होता है। और फिलिया के निर्माण के लिए एक उपयुक्त पदार्थ की आवश्यकता होती है।
- कि आपकी राय।
टेंगो ने अपना सिर हिलाया।
— ये तो बहुत सारी राय है। ये बस वही है जो आपके द्वारा कहानी के विषय का सारांश प्रस्तुत करने के दौरान मेरे मन में आया।
किताब को दोबारा लिखते समय और उसके बाद भी, टेंगो माता और पुत्री के अर्थ के बारे में सोच रहा था, लेकिन उसे कोई स्पष्ट विचार नहीं आ पा रहा था। लेकिन कोमात्सु से बात करने पर कुछ बातें समझ में आने लगीं। फिर भी कुछ सवाल बाकी थे। उसके पिता के अस्पताल के बिस्तर पर हवा का कोकून क्यों प्रकट हुआ था, और उसके अंदर छोटी बच्ची आओमामे क्यों थी?
कोमात्सु ने कहा, "यह एक बहुत ही दिलचस्प प्रणाली है। लेकिन अगर मां बेटी से अलग हो जाए तो क्या यह समस्या नहीं बन जाती?"
— अपनी संतान के बिना, माता अधूरी रहती है। जैसा कि हम फुकाएरी के मामले में देखते हैं, कुछ तत्व, जिन्हें मैं स्पष्ट रूप से पहचान नहीं सकता, गायब हैं। वह उस व्यक्ति के समान है जिसने अपनी परछाई खो दी हो। माता के बिना संतान का क्या होता है, यह मैं नहीं जानता। शायद वह भी एक पूर्ण प्राणी नहीं है। आखिरकार, वह केवल एक प्रतिरूप है। लेकिन फुकाएरी के मामले में, संतान ने

संभवतः माता के बिना भी एक पवित्र कन्या के रूप में अपनी भूमिका को पूरा किया।
कोमात्सु ने अपने होंठ सिकोड़े और उन्हें थोड़ा सा मोड़कर एक विकृत चेहरा बनाया। फिर उसने कहा:
क्या आपको किसी तरह यह विश्वास है कि 'द एयर क्राइसालिस' में लिखी हर बात सचमुच घटी थी?
"मेरा मतलब यह नहीं था। मैं तो बस अनुमान लगा रहा था। मैंने यह मानकर शुरुआत करने की कोशिश की कि सब कुछ सचमुच हुआ था और फिर देखा कि इसका क्या नतीजा निकलता है।"
"ठीक है," कोमात्सु ने कहा। दूसरे शब्दों में, फुकाएरी का हमशक्ल उससे दूर होने के बावजूद एक देवी की तरह काम करने में कामयाब रहा।
"इसीलिए संप्रदाय ने उसे वापस लाने की जहमत नहीं उठाई, जबकि उन्हें पता था कि वह कहाँ भाग गई है। क्योंकि बेटी अपनी जिम्मेदारियों को माँ की अनुपस्थिति में भी निभा सकती थी। शायद दूर होने के बावजूद भी उनके बीच का बंधन बहुत मजबूत बना रहा।"
— आह।
टेंगो ने आगे कहा, "मेरी कल्पना यह है कि उनके कई तंतु होते हैं। मुझे लगता है कि छोटे लोग हर अवसर का लाभ उठाकर ज़्यादा से ज़्यादा वायु कोकून बनाने की कोशिश करते होंगे, क्योंकि एक ही बोधकर्ता होने पर वे बेचैन हो जाते। साथ ही, संभवतः कुछ ही तंतु ठीक से काम करते होंगे। वे शायद एक समूह बनाते होंगे जिसमें एक केंद्रीय, शक्तिशाली तंतु और अन्य कम शक्तिशाली सहायक तंतु शामिल होंगे।"
— क्या आप यह कह रहे हैं कि फुकेरी द्वारा छोड़ी गई शाखा केंद्रीय शाखा थी, जो ठीक से काम कर रही है?
"मुझे तो ऐसा ही लगता है। फुकाएरी पूरी कहानी के केंद्र में है। यह तूफान का केंद्र बिंदु है।"
कोमात्सु ने अपनी आँखें सिकोड़ीं और मेज पर उंगलियाँ क्रॉस कर लीं। जब वह चाहता था, तो वह चीजों का जल्दी और सटीक आकलन कर सकता था।
"मैं यह सोच रहा हूँ। क्या होगा अगर जिसे हम फुकाएरी के रूप में देखते हैं वह वास्तव में फिलिया हो और जो संप्रदाय के साथ रही वह मैटर हो? क्या यह सिद्धांत आपको तर्कसंगत नहीं लगता?"
कोमात्सु की बातों से तेंगो चौंक गया। उसने पहले कभी ऐसी बात सोची भी नहीं थी। उसके लिए तो फुकाएरी ही असली थी। लेकिन हाँ, यह भी एक संभावना थी। "मैं गर्भवती नहीं होती क्योंकि मुझे मासिक धर्म नहीं होता," उसने उस रात उस अजीबोगरीब यौन खेल के बाद उससे कहा था, जिसमें उसकी भूमिका इतनी निष्क्रिय थी। अगर वह सिर्फ एक हमशक्ल थी, तो शायद यह स्वाभाविक था। हमशक्ल बच्चे पैदा नहीं कर सकतीं। सिर्फ एक माँ ही ऐसा कर सकती है। लेकिन तेंगो इस सिद्धांत को किसी भी तरह स्वीकार नहीं कर सकता था, यानी इस संभावना को कि उसने फुकाएरी के साथ नहीं, बल्कि उसकी हमशक्ल के साथ यौन संबंध बनाए थे।
उन्होंने कहा, "फुकेरी का व्यक्तित्व विशिष्ट है। उनके अपने आचार संहिता हैं। एक स्टंट डबल के पास ऐसा नहीं होगा।"

"यह सच है," कोमात्सु ने सहमति जताते हुए कहा। "बिल्कुल सही। उसमें कुछ कमियां हो सकती हैं, लेकिन उसमें व्यक्तित्व और आचरण संहिता अवश्य है। मैं इससे सहमत हूं।"
फिर भी फुकाएरी के मन में कई रहस्य छिपे थे। तेंगो को लगा कि उस खूबसूरत चेहरे में कोई गहरा रहस्य छिपा है जिसे उसे समझना होगा। असली कौन है और नकली कौन? या शायद असली और नकली के बीच का भेद ही गलत है? शायद, परिस्थिति के अनुसार, फुकाएरी असली और नकली दोनों हो सकती है?
“अभी भी कुछ बातें हैं जो मुझे समझ नहीं आ रही हैं,” कोमात्सु ने कहा, फिर मेज पर हाथ फैलाकर उन्हें देखने लगा। अधेड़ उम्र के व्यक्ति के लिए उसकी उंगलियां लंबी और नाजुक थीं। आवाज बंद हो गई, कुआं सूख गया, पैगंबर की मृत्यु हो गई। उसके बाद बेटी का क्या होगा? मुझे नहीं लगता कि वह भारत की विधवाओं की तरह आत्म-बलिदान करेगी।
प्राप्तकर्ता के बिना, बोधकर्ता की भूमिका समाप्त हो जाती है।
"अगर हम आपकी थ्योरी मानें तो," कोमात्सु ने कहा। "आपको लगता है कि फुकाएरी ने 'एयर क्राइसालिस' को इसके संभावित परिणामों को जानते हुए लिखा था? उस आदमी ने मुझे बताया कि यह जानबूझकर नहीं था। या कम से कम उसका इरादा ऐसा नहीं था। लेकिन उसे यह कैसे पता चलेगा?"
"ज़ाहिर है, मुझे सच जानने का कोई तरीका नहीं है," टेंगो ने कहा। "लेकिन मुझे नहीं लगता कि फुकाएरी ने जानबूझकर अपने पिता को मौत के घाट उतारा होगा, चाहे उसके इरादे कुछ भी रहे हों। मेरा मानना है कि वह किसी ऐसे कारण से मौत की ओर बढ़ रही थी जिसका उससे कोई लेना-देना नहीं था। शायद, इसके विपरीत, उसके ये कदम एक बचाव के तौर पर उठाए गए हों। या शायद उसके पिता अपनी आवाज़ से छुटकारा पाना चाहते हों। लेकिन ये सब निराधार अनुमान हैं।"
कोमात्सु काफी देर तक सोचता रहा। उसकी नाक के पास की झुर्रियाँ और भी गहरी हो गईं। उसने आह भरी और चारों ओर देखा।
— यह कैसी विचित्र दुनिया है! काल्पनिक और वास्तविक के बीच की रेखा दिन-प्रतिदिन धुंधली होती जा रही है। एक लेखक के रूप में, आप वास्तविकता को कैसे परिभाषित करेंगे?
"असली दुनिया वह है जहां सुई चुभोने पर खून निकलता है," टेंगो ने जवाब दिया। "तो फिर हम निश्चित रूप से वास्तविक दुनिया में हैं," कोमात्सु ने अपनी हथेली से अपनी बांह के अंदरूनी हिस्से को रगड़ते हुए कहा।
नसें नीली पड़ गई थीं। वे स्वस्थ रक्त वाहिकाओं जैसी नहीं लग रही थीं। शराब, सिगरेट, अनियमित जीवनशैली और साहित्यिक गोष्ठियों की साजिशों के कारण वर्षों से उन पर बुरा असर पड़ा था। कोमात्सु ने अपना गिलास एक ही घूंट में खाली कर दिया और गिलास में बची बर्फ को आपस में टकराया।
"जब हम इस विषय पर बात कर ही रहे हैं, तो क्यों न आप अपने सिद्धांत को थोड़ा और आगे बढ़ाएं?" कहानी दिलचस्प हो गई।
टेंगो ने कहा, "लोग 'आवाज सुनने वाले' के उत्तराधिकारी की तलाश कर रहे हैं। लेकिन साथ ही उन्हें एक ऐसी नई शाखा भी ढूंढनी होगी जो ठीक से काम कर सके। एक नए श्रोता को एक नए बोधकर्ता की आवश्यकता होती है।"
"दूसरे शब्दों में कहें तो, उन्हें फिर से एक उपयुक्त पदार्थ खोजना होगा। और इसका मतलब है कि उन्हें एक और वायु कोकून बनाना होगा। यह एक बड़ा काम है।"

— इसीलिए वे इतने गंभीर हैं।
- यह सही है।
"लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उन्हें पता नहीं है कि कहाँ जाना है," टेंगो ने कहा। "उनके मन में निश्चित रूप से कुछ योजना है।"
कोमात्सु ने सिर हिलाया।
"मुझे भी ऐसा ही महसूस हुआ। और इसीलिए वे हमें जल्द से जल्द अपने रास्ते से हटाना चाहते थे, ताकि हम उनके रास्ते में बाधा न बनें। मुझे लगता है कि हम उनके लिए थोड़ी परेशानी पैदा कर रहे थे।"
लेकिन आखिर किस वजह से हम इतनी बड़ी मुसीबत में फंस गए?
कोमात्सु ने अपना सिर हिलाया। उसे भी नहीं पता था।
"अब तक उस आवाज़ ने उन्हें क्या संदेश भेजे हैं?" टेंगो ने सोचा। और उसका छोटे लोगों से क्या संबंध है?
कोमात्सु ने एक बार फिर कमज़ोरी से अपना सिर हिलाया। ये ऐसी बातें थीं जिनकी वे दोनों कल्पना भी नहीं कर सकते थे।
क्या आपने कभी 2001: ए स्पेस ओडिसी फिल्म देखी है?
"हां," टेंगो ने उत्तर दिया।
कोमात्सु ने कहा, "हम उन बंदरों की तरह हैं। कोई लंबे बालों वाला, काले फर वाला जीव जो विशालकाय शिलाखंड के चारों ओर उछल-कूद करता है और बेतुकी बातें चिल्लाता रहता है।"
दो नए ग्राहक बार में दाखिल हुए, काउंटर पर परिचित अंदाज में बैठ गए और कॉकटेल का ऑर्डर दिया।
"खैर, एक बात तो साफ़ है," कोमात्सु ने बातचीत खत्म करते हुए कहा। "आपका सिद्धांत विश्वसनीय और तर्कसंगत है। मुझे आपसे बात करके अच्छा लगा। लेकिन इसे छोड़िए, हमें यहाँ से शांतिपूर्वक निकलना होगा और इस जाल से बाहर जाना होगा। अब से हम फुकाएरी और प्रोफेसर एबिसुनो से दोबारा नहीं मिलेंगे। 'एयर क्राइसालिस' एक पूरी तरह से भोली-भाली काल्पनिक कहानी है, जिसमें कोई ठोस जानकारी नहीं है। यह कैसी बकवास आवाज़ है, यह क्या संदेश दे रही है, हमें अब इसकी परवाह नहीं है। क्या हमें इसे यहीं छोड़ देना चाहिए?"
हम नाव से उतरते हैं और ज़मीन पर जीवन में लौट आते हैं।
“बिल्कुल,” कोमात्सु ने सहमति जताई। “मैं हर दिन काम पर जाऊँगा और पत्रिका के लिए ऐसी पांडुलिपियाँ इकट्ठा करूँगा जिनका कोई मतलब नहीं है। तुम किसी तैयारी स्कूल में होनहार लड़कों को गणित पढ़ाओ और साथ ही उपन्यास लिखो। हम दोनों अपनी रोज़मर्रा की दिनचर्या में लौट जाएँगे। न कोई तेज़ धाराएँ, न कोई झरने। दिन बीतते जाएँगे और हम शांति से बूढ़े हो जाएँगे। क्या तुम्हें कोई आपत्ति है?”
— खैर, हमारे पास कोई और विकल्प नहीं है।
कोमात्सु ने अपनी उंगलियों से अपनी नाक के पास की झुर्रियों को चिकना किया। "बिल्कुल सही। हमारे पास कोई और चारा नहीं है। मैं दोबारा अपहरण नहीं करवाना चाहती। मैं उस छोटे से कमरे में एक बार बंद हो चुकी हूँ। मुझे नहीं लगता कि मैं कभी दोबारा दिन का उजाला देख पाऊँगी। और अगर मैं दोबारा न भी देख पाऊँ, तो उन दोनों लड़कों को फिर से देखने की संभावना के बारे में सोचते ही मेरी धड़कनें तेज़ हो जाती हैं। वे लड़के तो बस एक नज़र से ही हँसी दिला देते हैं।"

कोमात्सु ने अपना गिलास काउंटर की ओर उठाया और अपना तीसरा हाईबॉल ऑर्डर किया। उसने एक सिगरेट भी जलाई।
"बातों को छोड़ो, तुमने मुझे यह बात पहले क्यों नहीं बताई? तुम्हारे अपहरण को काफी समय हो गया है। दो महीने। अगर तुमने मुझे सब कुछ पहले ही बता दिया होता तो क्या बेहतर नहीं होता?"
"मुझे भी पता है?" कोमात्सु ने अपना सिर थोड़ा एक तरफ झुकाते हुए कहा। "तुम सही कह रहे हो। मैं खुद से कहता रहा कि मुझे तुमसे बात करनी ही है, लेकिन मैं टालता रहा। पता नहीं क्यों। शायद इसलिए क्योंकि मुझे अपराधबोध हो रहा था।" “दोषी?” टेंगो ने आश्चर्य से पूछा।
उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि वह कोमात्सु के मुंह से ये शब्द सुनेगा।
— कम से कम मैं भी दोषी महसूस कर सकता हूँ।
— किसके मुकाबले?
कोमात्सु ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने कुछ देर तक बिना जली सिगरेट को अपने होठों के बीच घुमाया, उसकी आँखें सिकुड़ी हुई थीं।
“और फुकेरी को पता चला कि उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई है?” टेंगो ने पूछा।
"शायद हां। बिल्कुल," प्रोफेसर एबिसुनो ने एक बार उनसे कहा।
टेंगो ने सिर हिलाया। उसे कहीं न कहीं यह आभास था कि फुकेरी को यह बात बहुत पहले से पता थी। कोहरे में केवल वही अकेला बचा था।
— तो हम नाव से उतरते हैं और ज़मीन पर जीवन में लौट आते हैं।
— बिलकुल सही, हम बारूदी सुरंगों से भरे मैदान से बाहर निकल रहे हैं।
लेकिन क्या आपको लगता है कि हम आसानी से अपने पिछले जीवन में वापस जा सकते हैं?
कोमात्सु ने माचिस से सिगरेट जलाते हुए जवाब दिया, "हमें कोशिश करनी होगी। क्या कोई ऐसी खास बात है जो आपको परेशान कर रही हो?"
"बहुत सी चीजें एक साथ तालमेल बिठाने लगी हैं। मुझे ऐसा लगता है। और उनका स्वरूप पहले ही बदल चुका है। मुझे नहीं लगता कि वे आसानी से पहले जैसी हो पाएंगी।"
"भले ही हमारी जान खतरे में हो?"
टेंगो ने अस्पष्ट भाव से सिर हिलाया। काफी समय से उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी तीव्र और अविचल धारा में फंसा हुआ है, जो उसे किसी अज्ञात स्थान की ओर ले जा रही है। लेकिन वह इसे कोमात्सु को स्पष्ट शब्दों में समझा नहीं सकता था।
*

टेंगो ने कोमात्सु को यह नहीं बताया कि वह जिस उपन्यास को लिख रहे थे, उसमें उन्होंने 'द एयर क्राइसालिस' में वर्णित दुनिया को हूबहू लिया था। यह निश्चित रूप से उन्हें रास नहीं आता। लेकिन सबसे बढ़कर, यह पायनियर्स को भी रास नहीं आता। उन्हें एक नए खतरे में पड़ने और अपने आसपास के लोगों को भी उसमें घसीटने का जोखिम था। लेकिन उपन्यास लगभग अपने आप ही आगे बढ़ रहा था, अपनी अलग पहचान और अपना उद्देश्य बना रहा था, और टेंगो पहले से ही उसकी दुनिया में बुरी तरह फंस चुके थे। उनके लिए, यह अब एक काल्पनिक दुनिया नहीं, बल्कि एक वास्तविक दुनिया थी, जहाँ चाकू से त्वचा काटने पर असली खून बहता था। और उसके आकाश में दो चंद्रमा तैरते थे, एक बड़ा और एक छोटा।

अध्याय 19 वह क्या कर सकता है जो दूसरे नहीं कर सकते

गुरुवार की सुबह थी, हल्की हवा चल रही थी। उशिकावा हमेशा की तरह सुबह छह बजे से पहले उठ गए और ठंडे पानी से चेहरा धोया। फिर उन्होंने दांत साफ किए और इलेक्ट्रिक रेज़र से दाढ़ी बनाई, साथ ही रेडियो पर एनएचके की खबरें सुन रहे थे। उन्होंने पानी उबालने के लिए रखा और अपने लिए इंस्टेंट नूडल सूप बनाया। सूप खाने के बाद उन्होंने कुछ नेस (एक तरह का पेय) पिया। उन्होंने अपना स्लीपिंग बैग समेटा, अलमारी में रखा और खिड़की के पास कैमरे के सामने आराम से बैठ गए। पूरब की ओर आसमान हल्का होने लगा था। आने वाला दिन सुहाना होने वाला था।
सुबह काम पर जाने वाले सभी लोगों के चेहरे वह पहले से ही पहचान चुका था। उनकी तस्वीरें खींचने की कोई ज़रूरत नहीं थी। सात से साढ़े आठ बजे के बीच वे अपने अपार्टमेंट से निकलकर ट्रेन स्टेशन की ओर दौड़ पड़ते थे। वे जाने-पहचाने चेहरे थे। सड़क से छात्रों की खुशमिजाज आवाज़ें सुनाई देती थीं, जब वे समूहों में स्कूल जा रहे होते थे। उन आवाज़ों से उसे अपनी बेटियों के बचपन की याद आ जाती थी। उन्हें स्कूल जाना बहुत पसंद था। वे पियानो और बैले खेलती थीं और उनके बहुत सारे दोस्त थे। उशिकावा को कभी समझ नहीं आया कि उसके बच्चे इतने सामान्य कैसे हो सकते हैं। उसके जैसा कोई व्यक्ति उनका पिता कैसे हो सकता है? जब सब लोग काम पर चले गए, उसके एक घंटे बाद गली में कोई भी नहीं दिख रहा था। बच्चों की साफ-साफ आवाजें भी थम सी गईं। उशिकावा ने रिमोट कंट्रोल नीचे रख दिया और दीवार से टेक लगाकर सिगरेट पीते हुए पर्दे के बीच से प्रवेश द्वार की ओर देखने लगा। हमेशा की तरह, दस बजे के कुछ देर बाद, डाकिया अपने लाल स्कूटर पर आया और बड़ी कुशलता से लिफाफे मेलबॉक्स में डालने लगा। उशिकावा की नज़र में, उनमें से लगभग आधे लिफाफे बिना मांगे आए हुए थे। कई लिफाफे बिना खोले ही कूड़ेदान में जाने वाले थे। जैसे-जैसे दोपहर ढलने लगी, तापमान तेजी से बढ़ने लगा और सड़क पर चल रहे लोग अपने कोट उतारने लगे।
फुकाएरी ग्यारह बजे के कुछ देर बाद अपार्टमेंट बिल्डिंग की लॉबी में दिखाई दिया। उसने वही काला स्वेटर पहना हुआ था, जो उसने कल पहना था, गले में लटका रखा था। साथ ही उसने एक ग्रे जैकेट, जींस, स्नीकर्स और धूप का चश्मा भी लगा रखा था। उसके कंधे पर एक बड़ा हरा बैग भी टंगा हुआ था। बैग देखने में काफी अजीब लग रहा था, मानो उसमें तरह-तरह की चीजें भरी हों। उशिकावा दीवार से हटकर कैमरे के पास गया और व्यूफाइंडर से देखने लगा।
उसे एहसास हुआ कि लड़की जा रही है। उसने अपना सारा सामान अपने बैग में डाल लिया था, कहीं और जाने का इरादा था। वह ऐसी लग रही थी मानो उसका वापस आने का कोई इरादा न हो। शायद उसने उसे देखकर जाने का फैसला किया था। यह सोचकर उसका दिल तेजी से धड़कने लगा।
जैसे ही वह दरवाज़े से बाहर निकली, लड़की रुक गई और फिर ऊपर देखने लगी, मानो ट्रांसफ़ॉर्मर और उलझे हुए तारों के बीच कुछ खोज रही हो। धूप में उसके चश्मे के लेंस चकाचौंध कर रहे थे। चश्मे से उसका चेहरा छिपा हुआ था, इसलिए उशिकावा यह नहीं बता सका कि लड़की को वह चीज़ मिली या नहीं। लड़की लगभग तीस सेकंड तक वहीं खड़ी रही, उसकी आँखें आसमान पर टिकी हुई थीं। फिर उसने अचानक अपना सिर

घुमाया और उस खिड़की की ओर देखा जिसके पीछे उशिकावा छिपा हुआ था। उसने अपना चश्मा उतारा और उसे अपनी जैकेट की जेब में रख लिया। फिर उसने भौंहें चढ़ाईं और खिड़की के कोने में छिपे टेलीफ़ोटो लेंस पर अपनी नज़रें गड़ा दीं। वह जानती थी कि कोई उसे छुपकर देख रहा है, इसलिए उसने भी लेंस के दूसरी तरफ से उशिकावा को देखा, जैसे पानी किसी घुमावदार पाइप से उल्टा बह रहा हो। उशिकावा के दोनों हाथों पर रोंगटे खड़े हो गए।
फुकाएरी ने धीरे से पलकें झपकाईं। उसकी पलकें धीरे-धीरे और सावधानी से एक-दूसरे के करीब आती गईं, मानो दो शांत, स्वतंत्र प्राणी हों। लेकिन उसका एक हिस्सा स्थिर रहा। वह बस वहीं बैठी रही, उशिकावा को घूरती रही, उसकी गर्दन एक ऊंचे, गर्वित पक्षी की तरह मुड़ी हुई थी। उशिकावा अपनी नज़रें उससे हटा नहीं पा रहा था। ऐसा लग रहा था मानो पूरी दुनिया रुक गई हो। हवा चलना बंद हो गई थी, और उसके आसपास की हवा में कोई कंपन नहीं हो रहा था।
अंततः, फुकाएरी ने उसकी ओर देखना बंद कर दिया। उसने फिर से ऊपर, आकाश में उसी बिंदु की ओर देखा। लेकिन इस बार उसने कुछ ही सेकंड में अपनी खोज समाप्त कर दी। उसके चेहरे के भाव अपरिवर्तित रहे। उसने अपनी जेब से चश्मा निकाला, उसे वापस अपनी नाक पर लगाया और सहजता से और बिना किसी हिचकिचाहट के सड़क की ओर चल पड़ी। उसके पीछे दौड़ूँ? तेंगो अभी तक मुड़ा नहीं था, इसलिए उसने उसके पीछे-पीछे जाने का फैसला किया और देखने लगा कि वह कहाँ जा रही है। पता लगाने में कोई हर्ज नहीं था। लेकिन किसी कारणवश, उशिकावा ज़मीन से उठ नहीं पा रहा था। मानो वह लकवाग्रस्त हो गया हो। उसकी नज़र ने मानो उसकी सारी ताकत छीन ली थी।
"ओह, कोई बात नहीं," उसने ज़मीन पर पड़े हुए मन ही मन सोचा। "मुझे आओमामे को ढूंढना है। एरिका फुकाडा बहुत दिलचस्प हैं, लेकिन यह विषयांतर है। वह तो बस एक सहायक अभिनेत्री हैं जो संयोगवश इस सुनसान जगह पर आ गई हैं। अगर वह यहाँ से जाना चाहती हैं, तो जहाँ चाहे जा सकती हैं।"
सड़क पर निकलते ही फुकाएरी तेज़ी से स्टेशन की ओर चल पड़ी, पीछे मुड़कर भी नहीं देखा। उशिकावा धूप से फीके पड़े पर्दों के पीछे से उसे देखता रहा। जब हरे रंग का बैग लिए, जो आगे-पीछे हिल रहा था, उसकी आकृति उसकी नज़रों से ओझल हो गई, तो वह कैमरे से रेंगकर दीवार तक गई और उस पर झुक गई। उसने अपनी ताकत वापस आने तक इंतज़ार किया। उसने सेवन स्टार्स सिगरेट ली और लाइटर से जलाई। उसने धुएँ का गहरा कश लिया। लेकिन उसमें कोई स्वाद नहीं था।
उसकी ताकत अभी तक वापस नहीं आई थी। उसके हाथों और पैरों में सुन्नपन बना हुआ था। कुछ देर बाद, उसे एहसास हुआ कि उसके अंदर एक अजीब सा खालीपन छा गया है। एक गहरी गुफा। यह एक ऐसी जगह थी जिसका मतलब सिर्फ अभाव और खालीपन था। उशिकावा अपने अंदर फैली उस अनजान गुफा में बैठा रहा, उठने में असमर्थ। उसे अपनी छाती में हल्का दर्द महसूस हो रहा था, लेकिन ऐसा लग रहा था कि इसे दर्द नहीं कहा जा सकता। यह अभाव और अभाव की स्थिति के बीच दबाव में अंतर जैसा था।
उशिकावा काफी देर तक गुफा के तल पर बैठा रहा। वह दीवार से टेक लगाकर एक साधारण सी सिगरेट पी रहा था। वह खालीपन उस लड़की की वजह से था जो अभी-अभी गई थी। शायद नहीं, उसने सोचा। शायद यह खालीपन हमेशा से मेरे अंदर था और उसने बस मुझे इसका एहसास दिलाया था।
उशिकावा को एहसास हुआ कि एरिका फुकाडा ने सचमुच उसे सिर से पैर तक कंपकंपा दिया था। उसकी तीखी, स्थिर निगाहों ने न केवल उसके शरीर को बल्कि उसके पूरे

कैमरे के सामने बैठे हुए, उशिकावा ने अपनी हथेलियों को अच्छी तरह से रगड़ा, फिर यह सुनिश्चित किया कि वह अपनी सभी दस उंगलियों को स्वतंत्र रूप से हिला सकता है।
उसने मन ही मन सोचा, “ऐसी बहुत सी चीजें हैं जो आम लोग कर सकते हैं, पर मैं नहीं कर सकता। यह तो पक्का है। टेनिस या स्कीइंग उनमें से कुछ हैं। किसी कंपनी में नौकरी करना, खुशहाल परिवार होना। लेकिन दूसरी तरफ, कुछ ऐसी चीजें भी हैं जो मैं कर सकता हूँ, पर दूसरे नहीं कर सकते। और मैं इन कुछ चीजों में बहुत अच्छा हूँ। मैं दर्शकों से तालियाँ बजवाने या पैसे लुटाने की उम्मीद नहीं करता। लेकिन क्या मुझे ये हुनर दुनिया को नहीं दिखाने चाहिए?”
साढ़े नौ बजे, उशिकावा ने दिन का काम खत्म किया। उसने एक बर्तन में चिकन सूप का डिब्बा डाला, उसे चूल्हे पर गर्म किया और बड़े ध्यान से चम्मच से खाया। उसने दो ठंडे ब्रेड रोल भी खाए। उसने एक सेब को छिलके समेत थोड़ा-थोड़ा चखा। फिर उसने पेशाब किया, दांत साफ किए, अपना स्लीपिंग बैग ज़मीन पर बिछाया और सिर्फ़ अंडरवियर पहने उसमें घुस गया। उसने ज़िप को गर्दन तक बंद किया और एक कीड़े की तरह सिकुड़कर लेट गया।
उसका दिन इसी तरह समाप्त हुआ। बिना किसी फल के। उसे बस इतना पता चला था कि फुकाएरी ने अपना सामान पैक किया और चला गया। लेकिन उसे नहीं पता था कि वह कहाँ गया है। कहीं। अपने स्लीपिंग बैग में दुबका हुआ उशिकावा ने अपना सिर हिलाया। कहीं, जिसका उससे कोई लेना-देना नहीं। थोड़ी देर में उसका जमा हुआ शरीर गर्म हो गया और उसी समय वह गहरी नींद में सो गया। आखिरकार, उसके भीतर का वह छोटा, ठंडा हिस्सा उसकी आत्मा में फिर से बस गया।
*

अगले दिन कुछ खास नहीं हुआ। फिर शनिवार आया, एक और गर्म और शांत दिन। दोपहर तक कई लोग बिस्तर पर आराम कर रहे थे। उशिकावा खिड़की के पास बैठकर चुपचाप रेडियो पर समाचार, यातायात की जानकारी और मौसम की रिपोर्ट सुन रही थी।
दस बजने से कुछ ही पहले एक बड़ा कौआ दिखाई दिया, जो प्रवेश द्वार की सुनसान सीढ़ियों पर कुछ देर बैठा रहा। वह ध्यान से चारों ओर देखता रहा और सहमति जताते हुए कई बार अपना सिर हिलाया। उसकी बड़ी, मोटी चोंच हवा में ऊपर-नीचे हिल रही थी और उसके चमकदार काले पंख धूप में चमक रहे थे। जब डाकिया अपने लाल स्कूटर पर आया, तो कौए ने अनिच्छा से अपने पंख फैलाए और उड़ गया। वह एक छोटी सी कर्कश आवाज के साथ हवा में ऊपर उठा। डाकिया के डाक बांटने के बाद, गौरैयों का एक झुंड दिखाई दिया। वे प्रवेश द्वार के आसपास बेचैनी से छानबीन करने लगे। जैसे ही उन्हें कोई छोटी-मोटी चीज मिलती, वे उसे झट से पकड़कर तुरंत कहीं और भाग जाते। उसके बाद, एक धारीदार बिल्ली दिखाई दी। ऐसा लग रहा था कि वह पड़ोसियों में से किसी की है, क्योंकि उसके गले में पिस्सू का पट्टा बंधा हुआ था। उशिकावा ने उसे पहले कभी नहीं देखा था। बिल्ली सूखे फूलों की एक कतार में गई और पेशाब किया, और जब वह कर चुकी, तो उसने उसे सूंघा। उसे कुछ गड़बड़ लग रही थी, क्योंकि उसने नाखुशी से अपनी मूंछें मरोड़ लीं। फिर वह अपनी पूंछ ऊपर उठाए हुए ब्लॉक के पीछे गायब हो गया।
दोपहर तक, कई निवासी घर से बाहर निकल आए थे। उनके पहनावे से लग रहा था कि वे कहीं मौज-मस्ती करने या खरीदारी करने जा रहे हैं। उशिकावा ने हर चेहरे को पहचान लिया था, लेकिन उन्हें उनके व्यक्तित्व या जीवनशैली में ज़रा भी

दिलचस्पी नहीं थी। वे एक पल के लिए भी कल्पना नहीं कर सकते थे कि वे कैसे दिखते होंगे।
उसने सोचा, "तुम्हारी ज़िंदगी तुम्हारे लिए बहुत मायने रखती होगी। और तुम अनमोल हो। मैं समझता हूँ। लेकिन मेरे लिए तो तुम बस कागज़ की कटी हुई आकृतियाँ हो जो पृष्ठभूमि में गुम हो जाती हैं। मैं तुमसे बस इतना चाहता हूँ कि तुम मेरे रास्ते में न आओ। अच्छा करो और बस कटी हुई आकृतियाँ ही बने रहो।" "हाँ, तुम नाशपाती के आकार की हो!" वह पास से गुजर रही नाशपाती के आकार के नितंबों वाली एक अधेड़ उम्र की महिला पर चिल्लाया। "तुम तो बस एक खोखली आकृति हो! तुममें कोई सार नहीं, कुछ भी नहीं! क्या तुम्हें पता है? ठीक है, कागज के टुकड़े के हिसाब से तुम थोड़ी मोटी हो।"
लेकिन इस नज़रिए से देखने पर, उस पृष्ठभूमि में सब कुछ "अर्थहीन" और "समानांतर" लगने लगा। शायद पृष्ठभूमि भी काल्पनिक थी। शायद असल में वही उन खोखले लोगों के जाल में फँस रहा था। इस विचार से उशिकावा धीरे-धीरे बेचैन हो गया। इसकी जड़ यह थी कि वह एक बिना साज-सज्जा वाले घर में बंद था और दिन-ब-दिन दुनिया को छुपकर देखता रहता था। उसकी नसें भी काँप रही थीं। उशिकावा ने अपने मन की बात ज़ोर से कहने का फैसला किया। "सुप्रभात, कान!" उसने एक लंबे, पतले बूढ़े आदमी को संबोधित किया, जिसे वह व्यूफाइंडर से देख पा रहा था, जिसके सफेद बालों से सींगों जैसे नुकीले कान निकले हुए थे। "क्या आप टहलने गए थे? टहलना सेहत के लिए अच्छा होता है। मौसम सुहाना है, इसका आनंद लीजिए! मैं भी थोड़ा टहलना चाहता हूँ, लेकिन दुर्भाग्य से मुझे सारा दिन यहीं पीछे बैठना पड़ता है, और मेरी नज़रें इस जर्जर दरवाजे पर टिकी रहती हैं।" बूढ़ा आदमी सीधी कमर करके चल रहा था, उसने ऊनी पतलून और एक कार्डिगन पहना हुआ था। उसके साथ एक गंभीर सफेद कुत्ता अच्छा लगता, लेकिन उस इमारत में पालतू जानवरों की अनुमति नहीं थी। जब वह कुत्ता गायब हो गया, तो उशिकावा को गहरी बेबसी महसूस हुई। शायद उसकी निगरानी का कोई नतीजा न निकले। हो सकता है उसकी अंतर्ज्ञान शक्ति बेकार हो, और वह उस खाली घर में अपना समय व्यर्थ कर रहा हो, कुछ भी हासिल न कर पा रहा हो। ठीक वैसे ही जैसे जिज़ो की मूर्ति का सिर बच्चों के लगातार छूने से घिस जाता है।
दोपहर में, उशिकावा ने एक सेब और चीज़ क्रैकर्स खाए, फिर अचार वाले बेर के साथ ओनिगिरी खाई। फिर वह दीवार के सहारे झुककर सो गया। उसने एक छोटी, बिना सपनों वाली नींद ली, लेकिन जब वह जागा, तो उसे याद नहीं था कि वह कहाँ है। उसकी याददाश्त चार कोनों वाले एक खाली डिब्बे की तरह थी। उस डिब्बे के अंदर खालीपन के सिवा कुछ नहीं था। उशिकावा ने चारों ओर देखा। जब उसने गौर से देखा, तो उसे पता चला कि यह सिर्फ खालीपन नहीं था, बल्कि एक अंधेरा, खाली और ठंडा कमरा था, जो पूरी तरह से खाली था। एक अपरिचित जगह। उसके बगल में पड़े अखबार पर सेब का एक टुकड़ा पड़ा था। उशिकावा हैरान था। वह इस अजीब जगह पर क्या कर रहा था?
फिर उसे याद आया कि वह उस अपार्टमेंट बिल्डिंग के प्रवेश द्वार पर नज़र रख रहा था जहाँ टेंगो रहता था। हाँ, उसके पास टेलीफ़ोटो लेंस वाला मिनोल्टा डीएसएलआर कैमरा था। उसे सफ़ेद बालों और बड़े कानों वाले उस बूढ़े आदमी की भी याद आई, जो अकेले टहलने गया था। यादें धीरे-धीरे उस खाली डिब्बे में लौटने लगीं, जैसे सूर्यास्त के समय पक्षी अपने बगीचे में लौट आते हैं। और वहाँ से दो ठोस सत्य उभरे:

(1) एरिका फुकाडा चली गई है।
(2) टेंगो कवाना वापस नहीं आया।

उस समय टेंगो के दूसरी मंज़िल के अपार्टमेंट में कोई नहीं था। खिड़की पर पर्दे लगे थे और खाली कमरे में सन्नाटा छाया हुआ था, जिसे कभी-कभार रेफ्रिजरेटर के थर्मोस्टेट की टिक-टिक की आवाज़ ही तोड़ रही थी। उशिकावा अनमने ढंग से उस दृश्य की कल्पना करने लगा। एक खाली कमरे की कल्पना करना मानो मृत्यु के बाद की दुनिया की कल्पना करने जैसा था। तभी उसे अचानक NHK के उस रहस्यमय बिल कलेक्टर की याद आई जो लगातार दरवाज़ा खटखटा रहा था। उसने ध्यान से देखा था, लेकिन उसे उसके जाने का कोई आभास नहीं हुआ था। क्या वह उसी इमारत में रहता था? या फिर यह संभव था कि किरायेदारों में से कोई NHK बिल कलेक्टर बनकर अपने पड़ोसियों को परेशान कर रहा हो? लेकिन वह ऐसा क्यों करेगा? यह एक बेहद घिनौनी परिकल्पना थी। लेकिन इस विचित्र स्थिति को और कैसे समझाया जा सकता था? उशिकावा के पास कोई जवाब नहीं था।
*

शनिवार की दोपहर, सूर्यास्त से कुछ पहले, शाम चार बजे से कुछ देर पहले, टेंगो कावाना अपार्टमेंट बिल्डिंग की लॉबी में दिखाई दिए। उनकी पुरानी जैकेट का कॉलर ऊपर चढ़ा हुआ था, सिर पर नेवी ब्लू रंग की टोपी थी और कंधे पर एक डफ़ल बैग था। वे प्रवेश द्वार पर रुके बिना या इधर-उधर देखे बिना सीधे इमारत के अंदर चले गए। उशिकावा अभी भी काफी खोए हुए थे, लेकिन उनकी नज़र उस लंबे कद के व्यक्ति पर पड़ी जो उनकी नज़रों के सामने से गुज़रा।
"अरे वाह, आपका स्वागत है, श्रीमान कावाना!" उशिकावा ने स्वचालित उपकरण से उनकी तीन तस्वीरें लेते हुए बुदबुदाया। आपके पिताजी कैसे हैं? आप बहुत थके हुए होंगे। थोड़ा आराम कीजिए! घर वापस आकर बहुत अच्छा लग रहा है। भले ही यह जर्जर इमारत हो। तो, जब आप बाहर थे, एरिका फुकाडा ने अपना सामान पैक किया और चली गईं।
ज़ाहिर है, उसकी आवाज़ टेंगो के कानों तक नहीं पहुँची। यह महज़ एकालाप था। उशिकावा ने अपनी घड़ी पर नज़र डाली और नोटबुक में समय नोट किया। टेंगो कावाना अपनी यात्रा से तीन बजकर छप्पन मिनट पर लौटा।
जैसे ही टेंगो अपार्टमेंट बिल्डिंग में दाखिल हुआ, एक दरवाज़ा खुल गया और उशिकावा के सामने वास्तविकता का सैलाब उमड़ पड़ा। ताज़ी हवा से भरते ही उसकी इंद्रियाँ पल भर में तेज़ हो गईं और उसके शरीर में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। वह भी दुनिया के पहियों का एक कुशल पुर्जा था, जो एक सुखद क्लिक के साथ अपनी जगह पर फिट हो गया। उसके रक्त का प्रवाह तेज़ हो गया, जिससे उसके शरीर में एड्रेनालाईन दौड़ने लगा। उशिकावा ने सोचा, "यही तो सब कुछ है। यही मेरा असली चेहरा है, यही दुनिया का असली चेहरा है।"
*

सात बजने के बाद टेंगो फिर प्रकट हुआ। सूर्यास्त के बाद हवा चलने लगी थी और तापमान तेज़ी से गिर रहा था। उसने हुडी, चमड़े की जैकेट और फीकी जींस पहनी हुई थी। अपार्टमेंट बिल्डिंग से निकलते ही वह रुका और चारों ओर देखने लगा। पर उसे कुछ नहीं मिला। उसने उशिकावा की ओर भी देखा, पर उसकी छिपी हुई आकृति उसे दिखाई नहीं दी। उशिकावा ने मन ही मन सोचा, एरिका फुकादा के सामने वो कुछ भी नहीं है।

आया था। कोई भी ग्राहक बाहर नहीं गया था। शायद टेंगो अकेले बैठकर कुछ पी रहा था और हल्का खाना खा रहा था। उशिकावा उसके पीछे-पीछे गया, ठीक वैसे ही जैसे अंदर आते समय उसने दूरी बनाए रखी थी। टेंगो वापस उसी रास्ते से गया, शायद सीधे घर जाने का इरादा था।
लेकिन वह अपने रास्ते से भटक गया और एक ऐसी गली में मुड़ गया जिसे उशिकावा नहीं जानता था। इसलिए वह सीधे घर नहीं जा रहा था। पीछे से देखने पर, अपनी चौड़ी पीठ के साथ, वह विचारों में डूबा हुआ प्रतीत हो रहा था। और पहले से भी ज़्यादा गहरे विचारों में। उसने पीछे मुड़कर बिल्कुल नहीं देखा। उशिकावा ने आसपास का जायज़ा लिया, जिन गलियों से वह गुज़रा था उनके नाम याद करने की कोशिश कर रहा था, ताकि कुछ दिनों बाद वह अकेले उस रास्ते पर फिर से चल सके। उशिकावा उस इलाके से परिचित नहीं था, लेकिन लगातार आती गाड़ियों की तेज़ होती आवाज़ से उसने अंदाज़ा लगाया कि वह रिंग रोड नंबर 7 के पास पहुँच रहा है। इसी बीच, तेंगो ने अपनी चाल थोड़ी तेज़ कर दी, जो इस बात का संकेत था कि वह अपने गंतव्य के करीब पहुँच रहा है।
उशिकावा ने सोचा, बुरा नहीं है। यह आदमी ज़रूर कुछ हासिल करेगा। ऐसा ही होता है! इसका मतलब है कि मैंने उसका पीछा व्यर्थ नहीं किया।
टेंगो रिहायशी इलाके की गलियों से जल्दी-जल्दी गुजर रहा था। शनिवार की रात ठंडी और हवादार थी। लोग घरों के अंदर गर्म हवा में बैठे थे, टीवी के सामने गर्म पेय हाथ में लिए हुए। सड़कों पर लगभग कोई नहीं था। उशिकावा उससे काफी दूरी बनाए हुए था। टेंगो का पीछा करना आसान था। लंबा और मजबूत होने के कारण वह भीड़ में खो नहीं जाता था। चलते समय वह बस चलता ही रहता था। उसकी नजरें जमीन पर टिकी रहती थीं और ऐसा लगता था मानो वह कुछ सोच रहा हो। वह गंभीर और खुले विचारों वाला व्यक्ति था, राज़ रखने वाला नहीं। उशिकावा ने सोचा, "मुझ जैसा नहीं।"
और जिस महिला से उशिकावा ने शादी की थी, वह रहस्यों को पसंद करने वाली इंसान थी। असल में, बात सिर्फ इतनी नहीं थी कि उसे रहस्य पसंद थे, बल्कि ये थे कि वह इनके बिना रह ही नहीं सकती थी। अगर आप उससे समय पूछते, तो शायद वह आपको सही समय नहीं बताती। लेकिन यहाँ भी उशिकावा अलग था। वह ज़रूरत पड़ने पर ही कुछ छुपाता था। वह ऐसा सिर्फ इसलिए करता था क्योंकि उसका काम उसे मजबूर करता था। अगर कोई उससे समय पूछता और उसके पास झूठ बोलने का कोई कारण नहीं होता, तो वह उसे सही समय बता देता। और वह भी विनम्रता से। लेकिन उसकी पत्नी हर स्थिति में और हर बात पर झूठ बोलती थी। वह उन चीजों को भी बड़ी सावधानी से छुपाती थी जिन्हें छुपाने की ज़रूरत नहीं थी। उसने अपनी उम्र भी चार साल गलत बताई थी। उशिकावा को यह बात शादी के सर्टिफिकेट से पता चली थी, लेकिन उसने अनदेखा करने का नाटक किया और कुछ नहीं कहा। उसे उन झूठों का कोई मतलब समझ नहीं आता था जो देर-सवेर सामने आ ही जाते। और वह उम्र के अंतर को लेकर परवाह करने वाला आदमी भी नहीं था। उसके दिमाग में और भी बातें थीं। क्या फर्क पड़ता है अगर उसकी पत्नी उससे सात साल बड़ी हो?
जैसे-जैसे वह स्टेशन से दूर जाता गया, सड़कें सुनसान होती गईं। आखिरकार, टेंगो एक छोटे से पार्क में पहुँचा। यह एक साधारण सा बच्चों का खेल का मैदान था, जो एक रिहायशी इलाके के कोने में स्थित था। वहाँ दूर-दूर तक कोई नज़र नहीं आ रहा था। खैर, यह तो सामान्य बात है, उशिकावा ने सोचा। इस दुनिया में बहुत कम

उशिकावा मन ही मन बुदबुदाया, "यह कैसा उलझा हुआ आदमी है!" इस ठंडी, हवादार सर्दियों की शाम में, स्लाइड के ऊपर बैठकर, आसमान को निहारते हुए वह क्या सोच रहा था? लेकिन उसके पास तेंगो की आलोचना करने का कोई कारण नहीं था। वह उसका पीछा इसलिए कर रहा था क्योंकि वह चाहता था, क्योंकि उसे यह ठीक लगता था, और अगर उसे इसमें कोई परेशानी हो रही थी, तो इसमें तेंगो की कोई गलती नहीं थी। एक स्वतंत्र नागरिक होने के नाते, तेंगो को मौसम की परवाह किए बिना, जितना चाहे और जहाँ चाहे आसमान को देखने का अधिकार था।
उशिकावा ने मन ही मन सोचा, अभी भी ठंड है। उसे थोड़ी देर पहले पेशाब करने की इच्छा हुई थी, लेकिन उसे रोकना पड़ा, कोई चारा नहीं था। सार्वजनिक शौचालय पूरी तरह से बंद था, और वह टेलीफोन बूथ के पास भी नहीं जा सकता था, भले ही सड़क पर कोई नहीं था। चलो, यहाँ से चलें? उशिकावा ने एक पैर से दूसरे पैर पर हिलते हुए सोचा। चाहे आप सोच में डूबे हों, भावुक हों, या तारों को निहार रहे हों, आपको भी ठंड लग रही होगी, है ना? चलो जल्दी से घर चलते हैं, गर्म हो जाते हैं! मुझे पता है कि कोई हमारा इंतज़ार नहीं कर रहा है, लेकिन फिर भी यह यहाँ से बेहतर है।
लेकिन तेंगो का उठने का कोई इरादा नहीं दिख रहा था। आखिरकार, उसने आसमान से अपनी नज़र हटाई और सड़क के उस पार वाली इमारत की ओर देखा। यह एक नई इमारत थी, पाँच मंज़िला, जिसकी आधी खिड़कियाँ रोशन थीं। तेंगो इसे उत्सुकता से देख रहा था। उशिकावा ने भी इसे देखा, लेकिन उसे कुछ भी ऐसा नहीं दिखा जिसने उसका ध्यान खींचा हो। यह कई अन्य इमारतों की तरह एक साधारण इमारत थी। ज़रूरी नहीं कि आलीशान हो, लेकिन पूर्वी शैली की झलक ज़रूर थी। इसकी वास्तुकला भव्य थी, और बाहरी आवरण पर काफ़ी खर्चा हुआ होगा। प्रवेश कक्ष शानदार और रोशनी से भरपूर था। यह तेंगो की जर्जर हालत से बिल्कुल अलग था।
क्या टेंगो उसे देखकर सोच रहा था कि अगर हो सके तो वह भी वहीं रहना चाहेगा? नहीं, ऐसा नहीं था। जहाँ तक उशिकावा जानता था, टेंगो उस तरह का आदमी था जिसे इस बात की परवाह नहीं थी कि वह कहाँ रहता है। ठीक वैसे ही जैसे उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि वह क्या पहनता है। वह जिस सस्ते अपार्टमेंट में अभी रह रहा था, उससे वह बिल्कुल भी नाखुश नहीं था। बस सिर पर छत होना और ठंड से बचाव होना ही उसके लिए काफी था। यही तो उसका स्वभाव था। स्लाइड के ऊपर बैठकर वह जिन चीजों के बारे में सोच रहा था, वे शायद कुछ और ही थीं।
कुछ देर तक अपार्टमेंट की खिड़कियों को घूरने के बाद, टेंगो ने अपनी नज़रें वापस आसमान की ओर घुमा लीं। उशिकावा ने भी ऐसा ही किया। जहाँ वह खड़ा था, वहाँ से आसमान एल्म के पेड़ की शाखाओं, बिजली की तारों और इमारतों से आधा छिपा हुआ था। उसे यह जानने का कोई तरीका नहीं था कि टेंगो कहाँ देख रहा है। अनगिनत बादल एक के बाद एक आक्रमणकारी सेना की तरह आगे बढ़ रहे थे।
आखिरकार, टेंगो खड़ा हुआ और उदास भाव से स्लाइड से नीचे उतरा, मानो कोई पायलट अकेले रात की उड़ान पूरी करके लौटा हो। वह लालटेन की रोशनी में चलता हुआ पार्क से बाहर निकल गया। उशिकावा एक पल के लिए हिचकिचाया, लेकिन उसने उसके पीछे न जाने का फैसला किया। वह घर तो ज़रूर लौटेगा। इसके अलावा, उसे पेशाब करने की भी इच्छा हो रही थी। उसने टेंगो के ओझल होने का इंतज़ार किया, फिर पार्क में घुसकर शौचालय के पीछे गया और अंधेरे में झाड़ियों के बीच पेशाब किया। उसका मूत्राशय पहले से ही भरा हुआ था।

पेशाब करने के बाद, जिसमें उसे उतना ही समय लगा जितना एक लंबी मालगाड़ी को पुल पार करने में लगता है, उशिकावा ने अपनी पैंट की ज़िप खोली और आँखें बंद करके राहत की गहरी साँस ली। घड़ी में आठ बजकर सत्रह मिनट हो रहे थे। तेंगो लगभग पंद्रह मिनट से वहीं खड़ा था। यह सुनिश्चित करने के बाद कि वह कहीं दिखाई नहीं दे रहा है, उशिकावा स्लाइड की ओर बढ़ा और अपने छोटे, टेढ़े पैरों से सीढ़ियाँ चढ़ गया। वह ऊपर, बर्फीली सतह पर बैठ गया और अपनी नज़र उस दिशा में घुमाई जहाँ तेंगो देख रहा था। वह जानना चाहता था कि तेंगो इतनी दिलचस्पी से क्या देख रहा था।
उशिकावा की दृष्टि कमजोर नहीं थी। उन्हें दृष्टि दोष था, इसलिए उनकी आँखों के सामने की छवि थोड़ी असंतुलित दिखाई देती थी, लेकिन वे बिना चश्मे के भी शांति से रह सकते थे। लेकिन चाहे वे कितनी भी कोशिश कर लें, उन्हें एक भी तारा दिखाई नहीं देता था। फिर भी, उनका ध्यान आकाश में तैरते हुए चाँद पर गया, जो लगभग दो- तिहाई पूर्ण था, जिसका धब्बेदार चेहरा तेज़ी से गुज़रते बादलों के बीच से झाँक रहा था। यह सर्दियों का सामान्य चाँद था। पीला, ठंडा, प्राचीन काल से विरासत में मिले रहस्यों और संकेतों से भरा हुआ। यह आकाश में चुपचाप ऊँचाई पर तैर रहा था, मानो किसी मृत व्यक्ति की आँख हो, बिना पलक झपकाए।
अचानक, उशिकावा की सांस अटक गई। वह कुछ देर वहीं खड़ा रहा, सांस लेना भूल गया। बादल छंट गए थे, और उसने देखा कि सामान्य चंद्रमा से कुछ दूरी पर एक और चंद्रमा था। वह छोटा, हरा, मानो काई से ढका हुआ हो, और उसका आकार अजीब था। लेकिन वह निस्संदेह एक चंद्रमा था। इतना बड़ा तारा तो कभी नहीं होता। और वह कोई कृत्रिम उपग्रह भी नहीं था। वह एक ही जगह पर स्थिर था, हिल नहीं रहा था। उशिकावा ने अपनी आँखें बंद कीं और कुछ सेकंड बाद फिर खोलीं। यह निश्चित रूप से एक दृष्टिभ्रम था। उस चीज़ का वहाँ कोई स्थान नहीं था। लेकिन जब भी वह अपनी आँखें बंद और खोलता, वह छोटा सा नया चाँद वहीं रहता। वह एक बादल के पीछे गायब हो जाता, लेकिन जब बादल हटता, तो वह उसी स्थान पर फिर से प्रकट हो जाता। उशिकावा ने सोचा कि टेंगो शायद यही देख रहा था। टेंगो कावाना खास तौर पर इस नज़ारे को निहारने या यह देखने आया था कि क्या यह अब भी मौजूद है। उसे पहले से ही पता था कि आकाश में दो चाँद तैर रहे हैं। उसे इसमें कोई शक नहीं था। उन्हें देखकर उसने ज़रा भी हैरानी नहीं दिखाई थी। स्लाइड पर बैठे उशिकावा ने गहरी साँस ली। यह कैसी दुनिया है? उसने सोचा। हम किस दुनिया में आ गए हैं? इसका जवाब कहीं नज़र नहीं आ रहा था। हवा अनगिनत बादलों को उड़ा रही थी और दो चाँद हवा में एक पहेली की तरह तैर रहे थे।
उशिकावा ने सोचा, मैं सिर्फ एक बात पक्के तौर पर कह सकता हूँ। यह वह दुनिया नहीं है जहाँ से मैं आया हूँ। जिस पृथ्वी को मैं जानता हूँ, उसका सिर्फ एक ही प्राकृतिक उपग्रह है। यह एक निर्विवाद तथ्य है। लेकिन अब इसके दो उपग्रह हैं।
लेकिन कुछ देर बाद, उशिकावा ने महसूस किया कि यह दृश्य उसे déjà vu (पहले भी ऐसा कुछ देखा है) का आभास दे रहा है। उसने कुछ ऐसा ही पहले भी देखा था। उसने ध्यान लगाकर अपनी याददाश्त में उस घटना को खोजने की कोशिश की जिससे उसे यह आभास हुआ था। उसने मुँह बनाया, दाँत पीसे, दोनों हाथों से अपनी चेतना की गहराइयों में टटोला, और अंत में उसे याद आया: 'द एयर क्राइसालिस'। उस उपन्यास में, बिल्कुल अंत में, दो चाँद दिखाई देते हैं। एक बड़ा और एक छोटा। जब एक माँ

अध्याय 20 मेरे रूपांतरण के भाग के रूप में

रविवार को हवा थम गई, जिससे एक खूबसूरत और शांत दिन की शुरुआत का संकेत मिला, जो पिछली शाम से बिल्कुल अलग था। लोगों ने अपने मोटे कपड़े उतार दिए थे और धूप का आनंद ले रहे थे। आओमामे ने हमेशा की तरह पर्दे गिराकर पूरा दिन घर के अंदर बिताया, बाहर के मौसम की उसे कोई परवाह नहीं थी।
जनाचेक की सिम्फोनीटा को चुपचाप सुनते हुए उन्होंने अंगड़ाई ली, फिर मशीनों पर अपनी मांसपेशियों का व्यायाम किया। पूरे कार्यक्रम को खत्म करने में उन्हें लगभग दो घंटे लग गए, जो हर दिन और भी व्यस्त होता जा रहा था। उन्होंने कुछ खाना बनाया, कुछ सफाई की, फिर सोफे पर बैठकर 'इन सर्च ऑफ लॉस्ट टाइम' से कुछ और पढ़ा। आखिरकार, वे गुएरमांटेस के खंड तक पहुँच गए। वे इस बात का पूरा ध्यान रखते थे कि उनके पास बिल्कुल भी खाली समय न बचे। टेलीविजन पर वे केवल शाम सात बजे एनएचके की समाचार देखते थे। अभी भी कोई महत्वपूर्ण खबर नहीं थी। हाँ, कुछ महत्वपूर्ण खबरें थीं। दुनिया भर में अनगिनत लोग मर रहे थे। उनमें से कई दर्दनाक मौत मरे। ट्रेनें पटरी से उतर रही थीं, नौकाएँ डूब रही थीं, विमान दुर्घटनाग्रस्त हो रहे थे। गृहयुद्ध बेकाबू होकर भड़क रहे थे, हत्याएँ हो रही थीं, लोगों का नरसंहार हो रहा था। जलवायु परिवर्तन के कारण सूखा, बाढ़, अकाल पड़ रहा था। आओमामे को ऐसी त्रासदियों और आपदाओं से प्रभावित सभी लोगों के लिए दुख हुआ। लेकिन इन सब बातों को छोड़ दें तो, फिलहाल ऐसा कुछ भी नहीं हुआ था जो सीधे तौर पर उन्हें प्रभावित करता हो।
सड़क के उस पार छोटे से पार्क में मोहल्ले के बच्चे खेल रहे थे। वे सब ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहे थे। कौवों की तेज़ आवाज़ भी सुनाई दे रही थी, जो आपस में बातें कर रहे थे। हवा में शहरी सर्दियों की महक फैली हुई थी।
ओमामे को अचानक एहसास हुआ कि जब से वह उस अपार्टमेंट में रहने आई थी, उसे एक भी यौन इच्छा नहीं हुई थी। उसे किसी के साथ सेक्स करने का मन नहीं हुआ था, न ही उसने हस्तमैथुन किया था। शायद यह उसकी गर्भावस्था के कारण था और उसके हार्मोन बदल गए थे। खैर, ओमामे के लिए यह ठीक ही था, क्योंकि जिस माहौल में वह थी, अगर उसे सेक्स करने की इच्छा होती भी, तो उसके पास उसे पूरा करने का कोई तरीका नहीं था। उसे इस बात की भी खुशी थी कि उसका मासिक धर्म बंद हो गया था। वैसे भी इससे उसे ज्यादा परेशानी नहीं होती थी, लेकिन फिर भी उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसने लंबे समय से ढोए जा रहे एक बोझ से छुटकारा पा लिया हो। वह खुश थी, बस यह जानकर कि उसने उस चीज से छुटकारा पा लिया है जिसके बारे में उसे सोचना पड़ता था।
तीन महीनों में उसके बाल काफी बढ़ गए थे। सितंबर में वे मुश्किल से उसके कंधों तक पहुँचते थे, और अब वे उसके कंधों की हड्डियों तक पहुँच गए थे। जब वह छोटी थी, तो उसकी माँ हमेशा उसके बाल लड़कों की तरह काटती थी, और हाई स्कूल में उसने कभी अपने बाल बहुत लंबे नहीं होने दिए, क्योंकि उसका जीवन खेलों पर केंद्रित था। उसे अपने बाल थोड़े लंबे लगते थे, लेकिन चूंकि वह खुद उन्हें काट नहीं सकती थी, इसलिए उनके पास उन्हें वैसे ही छोड़ने के अलावा कोई चारा नहीं था। वह केवल अपनी आगे की लटों को कैंची से काटती थी। वह दिन में उन्हें

कसकर रखती थी, और शाम होते ही उन्हें खोल देती थी। वह संगीत सुनते हुए सौ बार उनमें कंघी करती थी - जो कि समय की कमी होने पर असंभव है।
ओमामे वैसे भी ज्यादा मेकअप नहीं करती थी, और अब, घर में ही बंद रहने के कारण, उसे इसकी ज़रूरत भी नहीं थी। लेकिन जीवन की एक नियमित लय बनाए रखने के लिए, वह अपनी त्वचा का बहुत ध्यान रखती थी। वह क्रीम या लोशन से चेहरे की मालिश करती और सोने से पहले हमेशा मास्क लगाती थी। वैसे भी स्वस्थ शरीर होने के कारण, वह बिना ज्यादा मेहनत किए अपनी त्वचा को सुंदर और चमकदार बनाए रखती थी। या शायद यह गर्भावस्था का असर भी था। उसने सुना था कि गर्भवती महिलाओं की त्वचा खूबसूरत होती है। खैर, शीशे के सामने बैठकर, बाल खुले रखकर, ओमामे ने अपने चेहरे को देखा और वह पहले से कहीं ज्यादा खूबसूरत लग रहा था। या कम से कम उसे अपने चेहरे पर एक परिपक्व महिला की शांति दिखाई दी। शायद।
जब से उसे याद है, उसने कभी खुद को सुंदर नहीं समझा था, और बचपन में भी किसी ने उसे कभी सुंदर नहीं कहा था। इसके विपरीत, उसकी माँ उसके साथ बदसूरत बच्चे जैसा व्यवहार करती थी। "काश तुम और सुंदर होती!" वह उससे बार-बार कहती थी। इसका मतलब यह था कि अगर आओमामे और सुंदर होती, अगर वह एक प्यारी बच्ची होती, तो वह और भी लोगों को अपने साथ जोड़ पाती। इसीलिए, बचपन से ही आओमामे आईने में देखने से बचती थी। जब ज़रूरत होती, तो वह आईने के सामने खड़ी होकर जल्दी से और व्यावहारिक रूप से कुछ चीज़ों का निरीक्षण कर लेती थी। यह उसकी आदत बन गई थी। तामाकी ने उससे कहा था कि उसे उसका चेहरा पसंद है। उसने कहा था कि यह बिल्कुल भी बुरा नहीं है, बल्कि बहुत सुंदर है। उसने कहा कि वह शांत हो सकती है और खुद पर अधिक भरोसा कर सकती है। यह सुनकर आओमामे बेहद खुश हुई थी। किशोरावस्था की दहलीज पर खड़ी, उसकी सहेली के स्नेह भरे शब्दों ने उसे सुकून और शांति दी थी। उसने यह सोचना भी शुरू कर दिया था कि शायद वह उतनी बदसूरत नहीं है जितना उसकी माँ हमेशा उसे कहती थी। लेकिन तामाकी ने भी उसे कभी यह नहीं कहा था कि वह सुंदर है।
और अब, अपने जीवन में पहली बार, आओमामे को लगा कि शायद उसके चेहरे में भी कुछ खूबसूरती है। वह पहले से कहीं ज़्यादा बार आईने के सामने खड़ी होकर खुद को बहुत ध्यान से देखने लगी थी। लेकिन वह ऐसा आत्ममुग्धता के कारण नहीं कर रही थी। वह आईने में अपने प्रतिबिंब को बारीकी से, व्यावहारिक रूप से, विभिन्न कोणों से देखती थी, मानो वह किसी और को देख रही हो। क्या उसके चेहरे की बनावट सचमुच ज़्यादा खूबसूरत हो गई थी, या उसने अपने नज़रिए को बदल लिया था जबकि वास्तव में उसमें कोई बदलाव नहीं आया था? वह इसका पता नहीं लगा पा रही थी। कभी-कभी, आओमामे आईने में देखकर अपना पूरा गुस्सा निकालती। उसका गुस्सा पहले जैसा ही था। उसके चेहरे की मांसपेशियां हर दिशा में खिंच जातीं और उसके चेहरे के भाव पूरी तरह से बिखर जाते। हर तरह की भावनाएं उसके चेहरे पर उमड़ पड़तीं। वह अब न तो सुंदर दिखती थी और न ही बदसूरत। एक कोण से वह बौने जैसी, दूसरे से विदूषक जैसी और तीसरे से तो बस अस्त-व्यस्त सी लगती थी। जब वह गुस्सा करना बंद कर देती, तो उसके चेहरे की मांसपेशियां धीरे-धीरे पानी की सतह पर उठने वाली लहरों की तरह शिथिल हो जातीं और उसका चेहरा अपने मूल भाव में लौट आता। आओमामे ने अपने अंदर एक नया व्यक्तित्व पाया, जो पहले वाले से कुछ अलग था।
कितना अच्छा होता अगर तुम स्वाभाविक रूप से मुस्कुरा पाती! तामाकी अक्सर उससे कहती थी। तुम्हारे चेहरे के भाव इतने कोमल हो गए हैं, मुस्कुराए बिना

रहना कितना दुखद है! लेकिन आओमामे लोगों के सामने स्वाभाविक रूप से, बेफिक्र होकर मुस्कुरा नहीं पाती थी। अगर वह ज़बरदस्ती भी मुस्कुराती, तो उसके चेहरे पर एक कठोर और भावहीन भाव आ जाता, जिससे उसे देखने वाला व्यक्ति असहज और असहज महसूस करता। तामाकी हमेशा जितना हो सके उतनी गर्मजोशी और स्वाभाविक रूप से मुस्कुराती थी। सब उसे शुरू से ही पसंद करते थे और उससे प्यार करते थे। लेकिन अंत में, उसने निराशा और हताशा से टूटकर अपनी जान ले ली, और आओमामे को पीछे छोड़ गई, जो अब ठीक से मुस्कुरा भी नहीं पाती थी।
*

रविवार का दिन शांत था। सूरज की गर्म किरणों से आकर्षित होकर, कई लोग सड़क के उस पार पार्क में आ गए थे। माता-पिता अपने बच्चों को रेत के डिब्बे और झूले पर खेलने के लिए लाए थे। कुछ बच्चे स्लाइड पर भी फिसल रहे थे। बुजुर्ग लोग बेंच पर बैठे बच्चों को खेलते हुए निहार रहे थे। बालकनी में लॉन की कुर्सी पर बैठी आओमामे प्लास्टिक की टाइलों के बीच से खोई-खोई सी देख रही थी। यह एक शांत दृश्य था। दुनिया सुचारू रूप से चल रही थी। किसी की जान खतरे में नहीं थी, कोई हत्यारे की तलाश में नहीं था। एक ऐसी दुनिया जहाँ कोई भी अपनी नौ-मिलीमीटर गोलियों से भरी पिस्तौल को टाइट्स में लपेटकर अलमारी के दराज में छिपाकर नहीं रखता।
क्या मैं कभी ऐसे सामान्य और शांतिपूर्ण ब्रह्मांड का हिस्सा बन पाऊँगी? आओमामे ने सोचा। क्या मैं कभी अपने नन्हे से जीव के साथ पार्क में हाथ में हाथ डालकर चल पाऊँगी, उसे झूला झुला पाऊँगी और स्लाइड पर घुमा पाऊँगी? क्या मैं कभी किसी को मारने या खुद मारे जाने के बारे में सोचे बिना अपना जीवन जी पाऊँगी? क्या यह 1Q84 में संभव है? या यह केवल किसी दूसरी दुनिया में ही संभव है? और सबसे बढ़कर – क्या तब टेंगो मेरे साथ होगा?
आओमामे ने पार्क देखना छोड़ दिया और घर के अंदर चली गई। उसने कांच का दरवाज़ा बंद किया और पर्दा खींच दिया। बच्चों की आवाज़ें अब सुनाई नहीं दे रही थीं। उदासी उसके मन में घर करने लगी। वह अंदर से बंद एक जगह में कैद हो गई थी, हर किसी से और हर चीज़ से अलग-थलग। उसने तय किया, "दिन में पार्क की तरफ न देखना ही बेहतर है। वैसे भी, जब बाहर उजाला होता है तो टेंगो के आने का कोई कारण नहीं होता, क्योंकि वह तो दो चांद देखना चाहता है।"
*

साधारण भोजन के बाद, आओमामे ने बर्तन धोए और गर्म कपड़े पहनकर बालकनी में चली गई। उसने कंबल को अपने घुटनों तक ओढ़ लिया और एक कुर्सी पर बैठ गई। शाम बिल्कुल शांत थी। आसमान में बादल पतले-पतले फैले हुए थे, मानो किसी रंग चित्रकार की कल्पना हो। वे नाजुक ब्रश स्ट्रोक की तरह लग रहे थे। बादलों से मुक्त, दो-तिहाई पूर्ण चंद्रमा धरती पर निर्मल प्रकाश बिखेर रहा था। उस समय, जहाँ वह खड़ी थी, आओमामे को दूसरा चंद्रमा भी दिखाई नहीं दे रहा था। वह एक इमारत के पीछे छिपा हुआ था।
लेकिन आओमामे जानती थी कि वह भी वहाँ मौजूद है। वह उसकी उपस्थिति महसूस कर सकती थी। बस उस कोण से वह उसे देख नहीं पा रही थी, बस इतना ही। लेकिन जल्द ही वह खुद को प्रकट करेगी।
घर में बंद रहने के बाद से, आओमामे अपने दिमाग से हर विचार को तुरंत निकाल देने में माहिर हो गई थी। खासकर जब वह बालकनी में खड़ी होकर पार्क को देखती,

जानता है कि मैं टेंगो को ढूंढ रहा हूँ, और वह इसी का फायदा उठा रहा है। वह धूर्त और नीच है। उसने मेरी कमजोरी ढूंढ ली है। यही एक तरीका था जिससे वह मुझसे अंदर से दरवाजा खुलवा सकता था।
ओमामे ने यह सुनिश्चित किया कि आसपास कोई नहीं है और अपनी पीठ से बंदूक निकाली। उसने सेफ्टी लॉक हटाया और बंदूक को अपनी जैकेट की जेब में रख लिया, ताकि वह तुरंत इस्तेमाल कर सके। उसका दाहिना हाथ बिस्तर पर मजबूती से टिका हुआ था और तर्जनी उंगली ट्रिगर पर थी। उसने अपने बाएं अंगूठे से दरवाजे की घंटी का बटन दबाया।
अंदर से दरवाज़े की घंटी बजी। यह एक धीमी आवाज़ थी, जो उसके दिल की तेज़ धड़कन से मेल नहीं खा रही थी। आओमामे ने अपने हाथ में पकड़ी बंदूक को कसकर पकड़ लिया और दरवाज़ा खुलने का इंतज़ार करने लगी। लेकिन दरवाज़ा नहीं खुला। और ऐसा लग रहा था कि कोई भी झाँककर नहीं देख रहा है। उसने एक पल और इंतज़ार किया और फिर घंटी बजाई। दरवाज़े की घंटी फिर बजी। एक तेज़ आवाज़, इतनी तेज़ कि पूरे सुगिनामी वार्ड के निवासी चौंक गए और कान खड़े हो गए। बंदूक के बट पर उसकी हथेली पर हल्का पसीना आने लगा। लेकिन कुछ नहीं हुआ।
उसने सोचा, अब मुझे जाना चाहिए। अपार्टमेंट नंबर 303 का कावाना नाम का किरायेदार, चाहे वो कोई भी हो, घर पर नहीं है। और इस समय वो अजनबी इमारत में कहीं छिपा हुआ है। यहाँ रुकना खतरनाक है। आओमामे जल्दी से सीढ़ियों से नीचे उतरी, मेलबॉक्स पर आखिरी नज़र डाली और अपार्टमेंट की इमारत से बाहर निकल गई। सिर झुकाए वह पीली रोशनी में तेज़ी से आगे बढ़ी और सड़क की ओर चल पड़ी। फिर उसने पीछे मुड़कर देखा कि कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा है।
उसे बहुत कुछ सोचना था। और उतने ही फैसले भी लेने थे। उसने अपनी जेब में हाथ डालकर बंदूक का सेफ्टी लॉक लगा दिया। जब वह किसी सुनसान जगह पर पहुंची, तो उसने बंदूक वापस अपनी जींस में रख ली। उसने खुद से कहा, "ज्यादा उम्मीदें मत रखो। शायद कावाना ही टेंगो हो। लेकिन शायद न भी हो। एक बार उम्मीदें जाग जाएं, तो दिल अपने आप चलने लगता है। जब उम्मीदें टूटती हैं, तो निराशा होती है, और निराशा से बेबसी का एहसास होता है। मेरे लिए, इस समय, यही सबसे खतरनाक बात है।" मुझे नहीं पता कि कैपाटाना को कितना पता है। लेकिन उसका मेरे करीब आना एक गंभीर समस्या है। अगर उसने हाथ बढ़ाया, तो पल भर में मुझे छू लेगा। मुझे अपने दिल पर काबू रखना होगा और सावधान रहना होगा। वह खतरनाक आदमी है, वह कुछ भी नहीं चूकता। छोटी सी गलती भी जानलेवा हो सकती है। सबसे पहले तो, मुझे उस पुरानी इमारत के पास बिल्कुल नहीं जाना है। वह आदमी शायद इमारत में कहीं छिपा हुआ है, मुझे पकड़ने की साजिश रच रहा है, जैसे कोई जहरीली, खून की प्यासी मकड़ी अंधेरे में अपना जाला बुनती है।
जब तक वह घर लौटी, आओमामे पूरी तरह से दृढ़ निश्चयी हो चुकी थी। उसके पास अनुसरण करने के लिए केवल एक ही रास्ता था।
*

इस बार उसने तमारू का नंबर पूरा डायल किया। उसने बारह बार घंटी बजने दी और फिर फोन काट दिया। उसने जैकेट और टोपी उतारी, बंदूक वापस दराज में रख दी और दो गिलास पानी पिया। उसने हरी चाय बनाने के लिए पानी उबालने के लिए रख दिया। उसने पर्दे के बीच से सड़क के उस पार पार्क पर एक नज़र डाली, यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह सुनसान है। वह बाथरूम के शीशे के सामने खड़ी होकर अपने

बालों में कंघी करने लगी। लेकिन उसकी उंगलियां अभी भी ठीक से नहीं चल रही थीं। वह अभी भी तनाव में थी। जैसे ही वह चायदानी में उबलता पानी डाल रही थी, फोन की घंटी बजी। ज़ाहिर है, यह तमारू का फोन था।
"मैंने पहले Căpățâna को देखा था," उसने घोषणा की।
मौन।
— "मैंने उसे पहले देखा था" का मतलब है कि वह अब चला गया है?
"हां। कुछ समय पहले यह सड़क के उस पार वाले पार्क में था। लेकिन अब यह वहां से चला गया है।"
"लगभग कितने समय पहले?"
लगभग चालीस मिनट।
"और आपने चालीस मिनट पहले फोन क्यों नहीं किया?"
— क्योंकि मुझे उसका पीछा करना था और मुझे मौका नहीं मिला।
तामारू की घुटती हुई सांसें सुनाई दे रही थीं।
"क्या तुमने उसका पीछा किया?"
मैं उसे अपनी नजरों से ओझल नहीं होने देना चाहता था।
मैंने तुमसे कहा था कि चाहे कुछ भी हो जाए, घर से बाहर मत निकलना।
ओमामे ने सोच-समझकर अपने शब्दों का चयन किया।
मैं बस वहां बैठकर खतरे को अपनी ओर आते हुए नहीं देख सकता था। अगर मैं तुम्हें फोन भी करता, तो तुम तुरंत नहीं आ सकते थे, है ना?
तामारू ने अपने गले के पिछले हिस्से से एक धीमी सी आवाज निकाली।
- तो आपने Căpăţâna का अनुसरण किया।
"उसके मन में कभी यह ख्याल भी नहीं आया कि कोई उसका पीछा कर रहा है।"
एक पेशेवर व्यक्ति दिखावा कर सकता है।
तामारू सही थी। हो सकता है कि यह सिर्फ एक चालाकी से बिछाया गया जाल हो। लेकिन वह यह बात उससे कहने की हिम्मत नहीं जुटा पा रही थी।
"आप तो निश्चित रूप से यह कर सकते हैं, लेकिन मैंने जो देखा है, उससे लगता है कि कैपाटाना आपके स्तर का नहीं है। वह इसमें अच्छा हो सकता है, लेकिन वह आपके जैसा नहीं है।"
और अगर उसके पास अतिरिक्त सैनिक होते तो?
नहीं, वह निश्चित रूप से अकेला था।
तामारू कुछ क्षणों के लिए चुप रहा।
"ठीक है। और क्या आपको पता चला कि वह कहाँ गया?"
ओमामे ने उसे पता बताया और इमारत का विवरण दिया। उसे अपार्टमेंट नंबर नहीं पता था। तामारू ने सब कुछ लिख लिया। उसने उससे कुछ सवाल पूछे, जिनका ओमामे ने यथासंभव सटीक उत्तर दिया।
“तो आपने उसे सड़क के उस पार वाले पार्क में पाया?” उसने पूछा।
- हाँ।
वह वहां क्या कर रहा था?
ओमामे ने समझाया। वह लड़का स्लाइड पर बैठा काफी देर तक आसमान को घूरता रहा।
लेकिन उसने दो चांदों के बारे में कुछ नहीं कहा।
“क्या वह आसमान की ओर देख रहा था?” तामारू ने पूछा।

ऐसा लग रहा था मानो वह फोन के जरिए ही सुन सकता हो कि उसका दिमाग कितनी तेजी से घूमने लगा है।
आकाश की ओर, चंद्रमा की ओर, तारों की ओर।
"और वह स्लाइड के शीर्ष पर खुले में खड़ा था?"
- हाँ।
"क्या तुम्हें ये अजीब नहीं लगता?" तमारू ने पूछा। उसकी आवाज़ सूखी हुई थी, जैसे कोई रेगिस्तानी पौधा जो साल में सिर्फ़ एक दिन होने वाली बारिश पर ही ज़िंदा रहता है। उस आदमी ने तुम्हें घेर लिया था। वो तुम्हारे बिल्कुल करीब आ गया था। ये बहुत बड़ी बात है। फिर भी वो स्लाइड के ऊपर आराम से बैठा है, उसकी नज़रें आसमान पर टिकी हैं। वो तुम्हारी तरफ देखता तक नहीं। मेरी नज़र में तो ये सब समझ से परे है।
"हां। मैंने भी यही सोचा था कि यह अजीब है और इसका कोई मतलब नहीं है। लेकिन इन सब बातों को छोड़ दें तो, मैं इसे किसी भी कीमत पर नजरअंदाज नहीं कर सकता।" तामारू ने आह भरी।
— मुझे तो यह अब भी बेहद खतरनाक लगता है।
आओमामे ने कुछ नहीं कहा।
"और अगर तुमने उसका पीछा किया तो क्या रहस्य थोड़ा-बहुत सुलझ गया?" तामारू ने पूछा।
नहीं। लेकिन मुझे एक ऐसी बात पता चली जिसने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया।
"क्या वास्तव में?"
मैंने गलियारे में लगे डाकपेटियों पर नजर डाली और पाया कि दूसरी मंजिल पर कवाना नाम की कोई व्यक्ति रहती है।
- और?
क्या आप 'द एयर क्राइसालिस' नामक उपन्यास के बारे में जानते हैं, जो इस गर्मी में बेस्टसेलर रहा था?
— खैर, कम से कम मैं अब भी अखबार पढ़ता हूँ। इसकी लेखिका एरिका फुकाडा, पायनियर्स संप्रदाय के एक सदस्य की बेटी हैं। वह लापता हो गईं और संदेह था कि उन्हें संप्रदाय द्वारा अगवा कर लिया गया था। पुलिस ने जांच की। मैंने किताब नहीं पढ़ी है।
एरिका फुकाडा सिर्फ एक सदस्य की बेटी नहीं है। उसके पिता असल में अग्रणी नेता थे। दूसरे शब्दों में, वह उस व्यक्ति की सगी बेटी है जिसे मैंने खुद वहाँ भेजा था। और टेंगो कावाना वह व्यक्ति है जिसे प्रकाशक ने 'द एयर क्राइसालिस' को पूरी तरह से फिर से लिखने के लिए नियुक्त किया था। दरअसल, यह उपन्यास उन दोनों के सहयोग से लिखा गया है।
काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। इतना सन्नाटा कि कमरे के दूसरे छोर तक जाकर एक शब्दकोश लाकर उसमें कुछ ढूंढा जा सके और वापस आ जाया जा सके। फिर तमारू ने कहा:
— इस बात की पुष्टि नहीं हुई है कि कावाना नाम का किरायेदार वास्तव में टेंगो कावाना ही है।
"अभी नहीं," आओमामे ने स्वीकार किया। "लेकिन अगर यह वही व्यक्ति है, तो कहानी थोड़ी और समझ में आती है।"

"अभी भी मामले की कड़ियों को जोड़ा जा रहा है। लेकिन आपको कैसे पता कि टेंगो कावाना ने 'द क्राइसालिस ऑफ एयर' को दोबारा लिखा था? ऐसा तो कभी सार्वजनिक नहीं हुआ होगा। अगर पता चल जाता, तो बहुत बड़ा घोटाला हो जाता।"
"मुझे यह बात लीडर से पता चली। उन्होंने मरने से ठीक पहले मुझे यह बताया था।" "तुम्हें मुझे पहले ही बता देना चाहिए था," तामारू ने ठंडे स्वर में कहा। "क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता?"
— उस समय मुझे यह ज्यादा प्रासंगिक नहीं लगा।
फिर सन्नाटा छा गया। आओमामे को यह जानने का कोई तरीका नहीं था कि तमारू उस समय क्या सोच रहा था, लेकिन वह जानती थी कि उसे बहाने पसंद नहीं थे।
"ठीक है," उसने आखिरकार कहा। "खैर, संक्षेप में कहें तो, आप यह कह रहे हैं कि इस घटना के मद्देनजर, कैपाटाना की नज़र टेंगो कावाना पर है। और वह इसी जानकारी के आधार पर आपसे संपर्क कर रहा है।"
— मुझे भी यही लगता है।
"मुझे समझ नहीं आ रहा," तामारू ने कहा। "तेंगो कावाना तुम्हारे लिए सुराग कैसे बन सकता है? तुम्हारा उससे क्या संबंध है? सिवाय इसके कि तुमने एरिका फुकाडा के पिता को फंसाया और उसने एरिका के उपन्यास को दोबारा लिखा?"
"मैं एक लेना चाहूंगी," आओमामे ने सपाट स्वर में उत्तर दिया।
"आपका और टेंगो कावाना का सीधा संबंध है। क्या आपका यही मतलब है?"
"हम प्राथमिक विद्यालय में सहपाठी थे। और जिस बच्चे को मैं जन्म देने वाली हूँ, वह शायद उन्हीं का है। लेकिन मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं बता सकती। यह बहुत ही निजी मामला है।"
रिसीवर के ज़रिए आओमामे को डेस्क पर पेन की हल्की-हल्की खटखटाहट सुनाई दी। इसके अलावा और कुछ सुनाई नहीं दिया।
"यह एक निजी मामला है," तामारू ने उस लहजे में कहा जैसे उसने अभी-अभी बगीचे में एक सपाट पत्थर पर एक विचित्र जानवर को देखा हो।
- मैं क्षमाप्रार्थी हूं।
"मैं समझ गया। यह बेहद निजी मामला है। मैं और कोई सवाल नहीं पूछूंगा," तामारू ने जवाब दिया। "तो, आप मुझसे असल में क्या चाहते हैं?"
"सबसे पहले तो मैं यह जानना चाहूंगा कि क्या वहां रहने वाला व्यक्ति वास्तव में टेंगो कावाना है। अगर संभव होता तो मैं खुद भी इसमें दिलचस्पी लेता, लेकिन उस इलाके के पास जाना बहुत जोखिम भरा है।"
— इस पर कोई चर्चा नहीं हो सकती।
"और कैपाटाना शायद कहीं छिपा हुआ है और कुछ साजिश रच रहा है। अगर उसे पता चलने वाला है कि मैं कहां हूं, तो मुझे लगता है कि हमें कार्रवाई करनी चाहिए।"
"उस आदमी को पहले ही पता चल चुका है कि तुम्हारा और उस महिला का कोई संबंध है, और अब वह इन सभी सुरागों को जोड़ने की कोशिश कर रहा है। ज़ाहिर है, मैं चीज़ों को ऐसे ही नहीं छोड़ सकता।"
"मेरी एक और विनती है," आओमामे ने कहा।
मैं सुन रहा हूँ।
"अगर यह टेंगो निकला, तो मैं नहीं चाहता कि उसे कोई नुकसान पहुंचे। और अगर किसी को भुगतना ही पड़े, तो मैं चाहूंगा कि वह मैं भुगतूं, न कि वह।"

तामारू फिर चुप हो गया। इस बार मेज पर कलम की आवाज नहीं सुनाई दी। सन्नाटा पसरा हुआ था। तामारू एक खामोश दुनिया में विचारों में खो गया था।
उन्होंने कहा, "पहले दो काम तो मैं संभाल सकता हूँ। ये मेरा काम है। लेकिन तीसरे के बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता। इसमें बहुत सारे निजी मुद्दे शामिल हैं और बहुत सी बातें हैं जो मुझे समझ नहीं आतीं। और मैं अपने अनुभव से कह सकता हूँ कि एक साथ तीन कामों को ठीक से संभालना मुश्किल होता है। चाहे आपको पसंद हो या न हो, प्राथमिकता तो तय करनी ही पड़ेगी।"
"मुझे कोई आपत्ति नहीं है। अपनी प्राथमिकताओं का पालन करो। लेकिन मैं चाहता हूँ कि तुम एक बात याद रखो। जब तक मैं जीवित हूँ, मुझे हर हाल में टेंगो से मिलना है। मुझे उससे कुछ कहना ही है।"
"मैं इसे कर लूंगा," तामारू ने जवाब दिया। "बशर्ते उसमें जगह खाली हो।"
- धन्यवाद।
मुझे वही बात बतानी है जो आपने मुझे बताई है। यह एक संवेदनशील मामला है, और मैं अकेले कुछ नहीं कर सकता। मैं अभी के लिए बंद कर रहा हूँ। घर से बाहर मत निकलो! दरवाजा बंद कर लो और अंदर ही रहो! अगर तुम बाहर गए तो सब गड़बड़ हो जाएगा। या शायद तुमने पहले ही गड़बड़ कर दी हो।
इसके बदले में, मुझे उस व्यक्ति के बारे में कुछ बातें पता चलीं।
— ठीक है, तमारू ने हताशा से कहा। जहाँ तक मैं देख पा रहा हूँ, तुमने सब कुछ सही किया है। मैं मानता हूँ। लेकिन सावधान रहना। हमें अभी भी ठीक से नहीं पता कि वह क्या कर रहा है। और स्थिति को देखते हुए, किसी न किसी रूप में, उसके पीछे अभी भी कोई संगठन है। जो मैंने तुम्हें कुछ देर पहले दिया था, वह तुम्हारे पास अभी भी है ना?
- बिल्कुल।
— फिलहाल, इसे हमेशा अपने पास रखें।
मैं यही करूंगा।
थोड़ी देर का विराम होता है और बातचीत समाप्त हो जाती है।
*

ओमामे गर्म पानी से भरे सफेद टब में बैठ गई और धीरे-धीरे अपने शरीर को गर्म होने दिया, तेंगो के बारे में सोचते हुए। तेंगो, जो शायद उस पुरानी दो मंजिला इमारत के किसी कमरे में रह रहा होगा। ओमामे को वह ठंडा स्टील का दरवाजा और उसके होल्डर में लगा "कावाना" नाम का कार्ड याद आया। दरवाजे के पीछे का अपार्टमेंट कैसा दिखता होगा और वहाँ जीवन कैसा होगा?
आओमामे ने पानी के नीचे अपने स्तनों को छुआ और धीरे-धीरे मालिश की। उसके निप्पल बड़े और सख्त हो गए थे। और वे पहले से कहीं ज़्यादा संवेदनशील हो गए थे। काश ये तेंगो के हाथ होते, उसने सोचा। आओमामे ने उसके मज़बूत हाथों की कल्पना की। उसके हाथ ज़रूर मज़बूत और कोमल रहे होंगे। अगर वह उसके स्तनों को अपने हाथों में थाम लेता, तो उसे शांति और खुशी का एहसास होता। आओमामे ने यह भी देखा कि उसके स्तन बड़े हो गए थे। यह कोई भ्रम नहीं था। वे निश्चित रूप से ज़्यादा भरे हुए और ज़्यादा लचीले आकार के थे। शायद गर्भावस्था के कारण। या शायद वे बस ऐसे ही बड़े हो गए थे, गर्भावस्था से इसका कोई संबंध नहीं था। मेरे कायापलट के हिस्से के रूप में।

ओमामे ने अपना हाथ अपने पेट पर रखा। गर्भावस्था अभी पूरी तरह से दिखाई नहीं दे रही थी। और, अजीब बात यह थी कि उसे अभी तक कोई मॉर्निंग सिकनेस भी नहीं थी। लेकिन उसका नन्हा सा जीव अंदर ही अंदर छिपा हुआ था। ओमामे यह बात समझ गई थी। क्या तुम्हें पता है? उसने सोचा। शायद वे मेरी जान नहीं, बल्कि मेरे नन्हे से जीव को इतनी बेसब्री से चाहते थे। शायद वे उसे, मेरे साथ, नेता की हत्या के बदले में ले जाना चाहते थे। यह सोचकर वह कांप उठी। मुझे सच में टेंगो को ढूंढना होगा, उसने खुद से दृढ़ता से कहा। हमें मिलकर इस नन्हे से जीव की रक्षा करनी होगी। मेरे जीवन में कई महत्वपूर्ण चीजें मुझसे छीन ली गई हैं। लेकिन मैं इसे किसी को नहीं दूंगी।
ओमामे बिस्तर पर लेट गई और थोड़ी देर और पढ़ती रही। लेकिन नींद आने में देर लग रही थी। उसने किताब बंद की और पेट को बचाते हुए सिकुड़ गई। उसने अपना गाल तकिए पर टिकाया और पार्क के ऊपर हवा में तैरते चाँद के बारे में सोचने लगी। और उसके बगल में छोटे, हरे चाँद के बारे में। माँ और संतान। उनकी किरणें आपस में गुंथी हुई थीं और पत्तों से रहित एल्म के पेड़ पर फैल रही थीं। उस समय, तमारू ज़रूर स्थिति को सुलझाने की रणनीति बना रहा होगा। उसके दिमाग में विचारों की दौड़ तेज़ हो रही थी। ओमामे ने कल्पना की कि वह भौंहें चढ़ाए, अपनी मेज पर कलम थपथपा रहा है। आखिरकार, निरंतर और एकरस लय में बहते हुए, नींद ने उसे एक नरम कंबल की तरह लपेट लिया।

अध्याय 21 मेरे मन के एक छोटे से कोने में

फोन की घंटी बजी। अलार्म घड़ी में चार बजकर दो मिनट का समय हो रहा था। सोमवार की सुबह, 2:04 बजे। बाहर अभी भी अंधेरा था, और टेंगो गहरी नींद में सो रहा था। वह शांतिपूर्ण, बिना सपनों वाली नींद में था।
टेंगो को सबसे पहले फुकाएरी का ख्याल आया। वही अकेली थी जो उसे इतने अजीब समय पर फोन कर सकती थी। फिर कोमात्सु का चेहरा उसके दिमाग में कौंध गया। वह भी समय को लेकर कुछ ज्यादा ही समझदार नहीं था। लेकिन फोन की घंटी बजने का तरीका उसे ठीक नहीं लगा। घंटी कुछ औपचारिक और जरूरी सी लग रही थी। और कुछ ही घंटे पहले तो वे आमने-सामने काफी देर बात करने के बाद अलग हुए थे।
एक विकल्प यह था कि फोन को अनदेखा करके वापस सो जाया जाए। वह यही करना चाहता था। लेकिन फोन लगातार बजता रहा, मानो हर संभव विकल्प को खत्म करने की कोशिश कर रहा हो। शायद सुबह होने तक यह बजना बंद न हो। टेंगो बिस्तर से उठा और रिसीवर उठाते हुए किसी चीज से टकरा गया।
"हेलो!" उसने जीभ बाहर निकालते हुए कहा।
ऐसा लग रहा था मानो उसके दिमाग की जगह जमे हुए सलाद के पत्ते हों। शायद कुछ लोग यह नहीं जानते होंगे कि सलाद के पत्तों को फ्रीजर में नहीं रखना चाहिए। एक बार पिघलने के बाद, वे बिल्कुल भी कुरकुरे नहीं रहते। और यही तो उसका सबसे बड़ा गुण है।
कान से लगे रिसीवर से उसे हवा के चलने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। संकरी घाटी में रुक-रुक कर हवा के झोंके चल रहे थे, जो साफ़ पानी की धारा से पानी पीने के लिए झुके हिरणों के फर को धीरे से हिला रहे थे। लेकिन यह हवा की आवाज़ नहीं थी, बल्कि किसी की साँसों की आवाज़ थी, जो उस उपकरण से तेज़ सुनाई दे रही थी।
"हैलो!" टेंगो ने दोहराया। शायद कोई मज़ाक कर रहा था। या फिर वे दिल को छू लेने वाली बातें कर रहे थे।
“हैलो!” एक अपरिचित महिला की आवाज ने जवाब दिया।
वह फुकेरी नहीं थी। और न ही उसकी बड़ी उम्र की प्रेमिका थी।
"नमस्ते!" टेंगो ने फिर कहा। "मैं टेंगो कवाना हूं।"
“टेंगो?” आवाज ने कहा।
आखिरकार, संपर्क ठीक से स्थापित हो गया। लेकिन उसे अब भी नहीं पता था कि दूसरी तरफ कौन है।
मैं किससे बात कर रहा हूँ?
— मैं कुमी अदाची हूँ।
“ओह, क्या यह तुम थीं?” टेंगो ने कहा। (कुमी अदाची वह युवा नर्स थी जो उस अपार्टमेंट बिल्डिंग में रहती थी जहाँ उल्लू की आवाज़ सुनाई दी थी।) क्या हुआ?
- क्या आप सो रहे थे?
"हाँ," टेंगो ने उत्तर दिया। "तुम?"
एक बेकार सवाल। सोता हुआ आदमी फोन नहीं कर सकता। वो ऐसी बेतुकी बातें क्यों कहेगा? शायद उसके दिमाग में जमे हुए सलाद के पत्तों की वजह से।

"मैं ड्यूटी पर हूँ," उसने जवाब दिया और एक बार खाँसी। "आपको पता है, श्री कवाना का कुछ समय पहले निधन हो गया।"
"श्री कावाना का निधन हो गया है," टेंगो ने बिना समझे दोहराया।
"क्या यह किसी तरह मुझे यह बता रहा है कि मैं मर चुका हूँ?" उसने सोचा।
"तुम्हारे पिता की मृत्यु हो गई है," कुमी ने बात को दूसरे शब्दों में कहा।
टेंगो ने बिना सोचे-समझे रिसीवर को अपने दाहिने हाथ से बाएं हाथ में स्थानांतरित कर दिया।
"यह बर्बाद हो गया है," उसने उसे फिर से फुसलाने की कोशिश की।
— मैं आपातकालीन कक्ष में ऊंघ रहा था जब लगभग एक बजे घंटी बजी। यह आपके पिताजी की घंटी थी। वे कोमा में थे, इसलिए वे खुद बटन नहीं दबा सकते थे, और मुझे आश्चर्य हुआ, लेकिन मैं तुरंत चला गया। लेकिन जब मैं वहाँ पहुँचा, तो उनकी साँसें रुक चुकी थीं। उनकी नब्ज़ भी नहीं चल रही थी। मैंने ड्यूटी पर मौजूद डॉक्टर को जगाया और उन्हें प्राथमिक उपचार दिया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।
"तुम्हारा मतलब है कि पापा ने बटन दबाया?"
"शायद। क्योंकि किसी और के पास कोई नहीं था।"
“मृत्यु का कारण?” टेंगो ने पूछा।
मैं इस बारे में कुछ नहीं कह सकता। लेकिन ऐसा लगता है कि उन्हें ज़रा भी तकलीफ़ नहीं हुई। उनका चेहरा बहुत शांत था। मैं इसे कैसे कहूँ, जैसे पतझड़ के मौसम में पेड़ से गिरता हुआ पत्ता, भले ही हवा न चल रही हो। शायद यह एक कमज़ोर अभिव्यक्ति है।
"बिल्कुल नहीं," टेंगो ने जवाब दिया। "मुझे तो यह बहुत अच्छा लगा।"
"क्या आप आज यहां आ सकते हैं?"
- मुझे भी ऐसा ही लगता है।
उसे सोमवार से दोबारा स्कूल जाना था, लेकिन चूंकि उसके पिता का निधन हो चुका था, इसलिए इसका कोई मतलब नहीं था।
मैं पहली एक्सप्रेस ट्रेन से आ रहा हूँ। मुझे दस बजे से पहले वहाँ पहुँच जाना चाहिए।
"मुझे इसकी बहुत सराहना होगी। इसके अलावा कई प्रशासनिक मामले भी निपटाने हैं।"
"प्रशासनिक," टेंगो ने कहा। "मुझे कौन सी विशिष्ट तैयारियां करनी होंगी?" "क्या आप श्री कवाना के इकलौते रिश्तेदार हैं?"
- मैं बस यही कहूँगा।
"तो फिर अपनी निजी मुहर अपने साथ ले जाइए, आपको इसकी आवश्यकता पड़ सकती है। क्या आपके पास पंजीकरण प्रमाण पत्र है?"
मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने इसे हासिल कर लिया हो।
"इसे अपने साथ ले जाओ, एहतियात के तौर पर। मुझे नहीं लगता कि और कुछ चाहिए। तुम्हारे पिता ने सारी तैयारियां कर ली हैं।"
"सारी तैयारियां?"
हां, जब तक वह होश में थे, उन्होंने अंतिम संस्कार के खर्च से लेकर ताबूत के कपड़ों और अस्थि कलश रखने की जगह तक, हर चीज का बारीकी से इंतजाम किया था। वह बहुत ही व्यवस्थित व्यक्ति थे। व्यावहारिक, बस यही।

"हाँ, ऐसा ही था," टेंगो ने अपनी कनपटी को सहलाते हुए कहा।
"मेरी शिफ्ट सात बजे खत्म हो जाती है और मैं घर जाकर सो जाता हूँ। लेकिन तामुरा और ओमुरा सुबह की शिफ्ट में होंगे और वे आपको सब कुछ समझा देंगे।" तामुरा चश्मा पहने एक अधेड़ उम्र की नर्स थी, और ओमुरा वह थी जिसके बालों में कलम फंसी हुई थी।
“मदद के लिए धन्यवाद,” टेंगो ने कहा।
"खुशी से," कुमी ने उत्तर दिया और औपचारिक लहजे में कहा, मानो उसे अचानक याद आ गया हो: "मेरी हार्दिक संवेदनाएँ।"
“धन्यवाद,” टेंगो ने कहा।
*

नींद न आने के कारण तेंगो ने पानी उबाला और अपने लिए कॉफ़ी बनाई। कॉफ़ी पीने के बाद उसका दिमाग़ थोड़ा साफ़ हुआ। उसे भूख भी लगी थी, इसलिए उसने फ्रिज में रखा टमाटर और पनीर का सैंडविच खा लिया। उसका स्वाद फीका था, मानो वह उसे अंधेरे में खा रहा हो। फिर उसने ट्रेन का शेड्यूल निकाला और तातेयामा जाने वाली एक्सप्रेस ट्रेनों के प्रस्थान समय देखे। वह दो दिन पहले, शनिवार दोपहर को ही बिल्लियों के शहर से लौटा था, और अब उसे वापस जाना था। लेकिन इस बार उसे एक या दो रात से ज़्यादा नहीं रुकना था।
चार बजते ही टेंगो ने बाथरूम में जाकर चेहरा धोया और दाढ़ी बनाई। उसने ब्रश उठाया और अपने बेकाबू बालों को संवारने की कोशिश की, लेकिन इस बार भी वह कामयाब नहीं हो पाया। बस, बात यहीं खत्म। दोपहर के खाने तक उसके बाल और भी उलझने लगे थे।
अपने पिता के देहांत ने उसे ज़्यादा परेशान नहीं किया था। उसने उनके साथ दो सप्ताह बिताए थे और मानो उनकी आसन्न मृत्यु को एक अटल सत्य के रूप में स्वीकार कर लिया था। यह सुनने में अजीब लग सकता है, लेकिन ऐसा लग रहा था मानो एक बार मन बना लेने के बाद उन्होंने खुद ही स्विच बंद कर दिया हो और कोमा में चले गए हों। डॉक्टर उनकी कोमा की स्थिति का कारण पता नहीं लगा पाए थे। लेकिन तेंगो जानता था। उसके पिता ने मरने का फैसला कर लिया था। या यूँ कहें कि जीने की इच्छा त्याग दी थी। कुमी के शब्दों में कहें तो, "पेड़ पर एक पत्ते" की तरह, उन्होंने अपनी चेतना की रोशनी बुझा दी थी, अपनी सभी इंद्रियों के द्वार बंद कर दिए थे और अपने समय की प्रतीक्षा कर रहे थे।
*

उन्होंने चिकुरा स्टेशन से टैक्सी ली और साढ़े दस बजे समुद्र किनारे स्थित सैनिटोरियम पहुंचे। यह शुरुआती सर्दियों का दिन था, पिछले दिन की तरह ही शांत। बगीचे की घास पर सूरज की गर्म किरणें भरपूर पड़ रही थीं, जो अब मुरझाने लगी थी, और एक अनजान बिल्ली, जिसके शरीर पर धब्बे थे, धूप सेंक रही थी और आराम से अपनी पूंछ चाट रही थी। नर्स तामुरा और ओमुरा ने प्रवेश द्वार पर उनका स्वागत किया। दोनों ने धीमी आवाज़ में तेंगो को कुछ दिलासा भरे शब्द कहे। उन्होंने उन्हें धन्यवाद दिया।
उनके पिता के शव को अस्पताल के एक एकांत क्षेत्र में बने एक छोटे से कमरे में रखा गया था। नर्स तामुरा तेंगो को वहाँ ले गईं। उनके पिता एक चबूतरे पर लेटे थे और सफेद चादर से ढके हुए थे। चौकोर, बिना खिड़की वाले उस कमरे में छत से आती नियॉन लाइट सफेद दीवारों पर और भी तेज रोशनी बिखेर रही थी। कमर जितनी ऊँची एक

छोटी सी मेज पर तीन सफेद गुलदाउदी के फूलों से भरा एक कांच का फूलदान रखा था। ये फूल शायद उसी सुबह वहाँ रखे गए थे। दीवार पर एक गोल घड़ी टंगी थी। यह एक पुरानी घड़ी थी, धूल से ढकी हुई, लेकिन सही समय बता रही थी। शायद इसका काम किसी बात का गवाह बनना था। इसके अलावा, वहाँ कोई और फर्नीचर या सजावट की वस्तु नहीं थी। मरने वाले कई बुजुर्ग शायद इसी तरह उस सादे कमरे से गुज़रे होंगे। वे चुपचाप अंदर आते और चुपचाप बाहर चले जाते। कमरा औपचारिक लग रहा था, लेकिन उसमें एक गंभीर भाव भी था, मानो किसी महत्वपूर्ण मामले को किसी और को सौंपना हो।
उनके पिता का चेहरा जीवित अवस्था से कुछ खास अलग नहीं लग रहा था। पास से देखने पर भी ऐसा नहीं लगता था कि वे मर चुके हैं। उनका चेहरा पीला नहीं पड़ा था, और किसी ने उनकी दाढ़ी ठीक से बनाई थी, क्योंकि उनकी नाक और ठोड़ी के नीचे की त्वचा अजीब तरह से चिकनी थी। उस समय यह कहना मुश्किल था कि वे बेहोश होकर गहरी नींद में सो रहे थे या उनकी मृत्यु हो चुकी थी। उन्हें भोजन या मल-मूत्र त्यागने की आवश्यकता नहीं थी। लेकिन अगर वे इसी अवस्था में रहते, तो कुछ ही दिनों में उनका शरीर सड़ जाता। और यही जीवन और मृत्यु का अंतर था। लेकिन ज़ाहिर है, उनके पहुँचने से पहले ही उनके शरीर का अंतिम संस्कार कर दिया जाएगा।
एक डॉक्टर उनके पास आया, जिनसे वे पहले भी कई बार बात कर चुके थे। डॉक्टर ने अपनी संवेदना व्यक्त की और फिर उनके पिता की मृत्यु के कारणों को समझाया। डॉक्टर ने उनसे विनम्रता और धैर्य से बात की, लेकिन उनकी सारी बातों का सार संक्षेप में यही था कि "मुझे वास्तव में मृत्यु का कारण नहीं पता।" चाहे कितनी भी जांच की गई हो, उन्हें कोई विशेष गड़बड़ी नहीं मिली। इसके विपरीत, परीक्षणों के परिणाम बताते थे कि उनकी हालत ठीक थी। उन्हें बुढ़ापे से संबंधित स्मृतिभ्रंश था, बस इतना ही। हालांकि, वे कोमा में चले गए थे (कारण स्पष्ट नहीं थे), और उनके शरीर के महत्वपूर्ण अंग धीरे-धीरे कमजोर होते चले गए। जैसे ही उनकी हालत एक निश्चित सीमा से अधिक बिगड़ी, वे अंततः मृत्यु के करीब पहुंच गए और उन्हें जीवित नहीं रखा जा सका। स्पष्टीकरण तो सरल था, लेकिन एक विशेषज्ञ होने के नाते डॉक्टर के लिए यह स्थिति कई समस्याएं खड़ी कर रही थी। कारण यह था कि वे मृत्यु का कारण पता नहीं लगा पाए थे। बुढ़ापा सबसे सटीक परिभाषा हो सकती थी, लेकिन उनके पिता केवल साठ वर्ष के थे और इस निदान के लिए बहुत छोटे थे।
"मैं आपके पिता का इलाज करने वाला चिकित्सक था, और इसीलिए मैं मृत्यु प्रमाण पत्र भर रहा हूँ," उन्होंने संकोच से कहा। "क्या आप सहमत हैं कि मैं मृत्यु का कारण 'लंबे समय तक कोमा में रहने के कारण हृदय गति रुकना' लिखूँ?"
“भले ही मृत्यु का वास्तविक कारण ‘लंबे समय तक कोमा में रहने के कारण हृदय गति रुकना’ न हो। क्या आपका यही मतलब है?” टेंगो ने पूछा।
डॉक्टर ने असमंजस भरा चेहरा बनाया।
अंत में, हमें हृदय में कोई खराबी नहीं मिली।
— न ही अन्य अंगों को।
"नहीं..." डॉक्टर ने बड़ी मुश्किल से कहा।
लेकिन क्या दस्तावेजों में स्पष्ट कारण बताना आवश्यक है?
- एकदम सही।

"मैं इस विषय का विशेषज्ञ नहीं हूं, लेकिन अंत में, उसका दिल धड़कना बंद हो गया, है ना?"
— जी हाँ, उसका दिल धड़कना बंद हो गया था।
"यह एक असामान्य स्थिति है, है ना?"
डॉक्टर ने टेंगो की कही बातों पर विचार किया।
— यदि सामान्य अवस्था से हमारा तात्पर्य हृदय के कार्य करने से है, तो हाँ, इसे असामान्य अवस्था कहा जा सकता है। बिल्कुल सही।
"तो फिर यह लिखिए: 'लंबे समय तक कोमा में रहने के कारण हृदय गति रुक गई।' मुझे इसमें कुछ भी गलत नहीं दिख रहा है।"
डॉक्टर को राहत मिली। उन्होंने बताया कि आधे घंटे में मृत्यु प्रमाण पत्र जारी हो जाएगा। टेंगो ने उन्हें धन्यवाद दिया। वह चले गए, और पीछे केवल चश्मा पहने नर्स, तामुरा को छोड़ गए।
"क्या आप कुछ पल अपने पिता के साथ अकेले रहना चाहेंगे?" उसने औपचारिक स्वर में पूछा, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि वह नियमों के अनुसार ही यह प्रश्न पूछ रही थी।
"नहीं, इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। धन्यवाद," टेंगो ने कहा।
अकेले में उनके पास बात करने के लिए कुछ नहीं होता था। उसके जीवित रहते भी उनके पास ज्यादा कुछ नहीं होता था। अब जब वह मर चुका है, तो अचानक बातचीत के विषय मिलने का तो सवाल ही नहीं उठता।
"तो क्या आपको कोई आपत्ति होगी अगर हम आगे बढ़ें और इस बारे में बात करें कि क्या व्यवस्थाएं करने की आवश्यकता है?"
टेंगो ने उससे कहा कि इससे उसे कोई फर्क नहीं पड़ता।
जाने से पहले, नर्स तामुरा ने कुछ देर के लिए बेजान शरीर के सामने हाथ जोड़े। टेंगो ने भी ऐसा ही किया। लोगों में मृतकों के प्रति स्वाभाविक सम्मान होता है। और उनके बगल में लेटे उस व्यक्ति ने अभी-अभी मृत्यु की महान व्यक्तिगत उपलब्धि हासिल की थी। वे दोनों उस बिना खिड़की वाले कमरे से निकलकर कैफ़ेटेरिया में गए। वहाँ कोई नहीं था। आंगन की ओर खुलने वाली बड़ी खिड़की से सूरज की किरणें अंदर आ रही थीं। उस रोशनी से घिरे टेंगो ने राहत की सांस ली। वहाँ अब मृत्यु का कोई आभास नहीं था। यह जीवितों की दुनिया थी। चाहे वह कितनी भी अनिश्चित और अधूरी क्यों न हो।
नर्स तामुरा ने दो कप अनाज वाली चाय भरी और उन्हें अंदर ले आई। वे मेज पर आमने- सामने बैठकर कुछ देर चुपचाप चाय पीते रहे।
“क्या आप कहीं रात भर रुकेंगे?” उसने उससे पूछा।
— हां, मैं रुकने की योजना बना रहा हूं, लेकिन मैंने अभी तक आरक्षण नहीं कराया है।
"अगर आप चाहें तो आप उस आरक्षित क्षेत्र में रह सकते हैं जिसमें आपके पिता रहते थे। अभी उसका उपयोग नहीं हो रहा है और इससे आपके पैसे बच जाएंगे। बशर्ते आपको यह विचार बुरा न लगे।"
"मुझे यह बिल्कुल भी नापसंद नहीं है," टेंगो ने थोड़ा आश्चर्यचकित होकर जवाब दिया। "लेकिन निश्चित रूप से यह ठीक ही होगा?"
"कोई बात नहीं। अगर इससे आपको, हमें या किसी और को कोई परेशानी नहीं है, तो मैं बाद में बिस्तर ठीक कर दूंगा।"

"तो," टेंगो ने शुरू किया, "अब मैं क्या करूं?"
— चिकित्सक द्वारा मृत्यु प्रमाण पत्र जारी किए जाने के बाद, अंतिम संस्कार की अनुमति लेने के लिए नगर पालिका कार्यालय जाएँ, फिर पारिवारिक रजिस्टर से अपना नाम हटवाने की औपचारिकताएँ पूरी करें। फिलहाल, यही सबसे महत्वपूर्ण है। पेंशन, बचत खाते के हस्तांतरण और कुछ अन्य संबंधित दस्तावेज़ भी अभी पूरे करने बाकी हैं, लेकिन आप उनके बारे में वकील से बात कर सकते हैं।
“वकील?” टेंगो ने आश्चर्य से पूछा।
श्री कवाना, आपके पिता ने अपनी मृत्यु के बाद आवश्यक औपचारिकताओं के बारे में एक वकील से बात की है। वकील शब्द से कोई बड़ी बात मत समझिए। हमारे सैनिटोरियम में बहुत से बुजुर्ग लोग हैं, और उनमें से कई की सोचने-समझने की क्षमता कमजोर है, इसलिए संपत्ति के बंटवारे में कानूनी समस्याओं से बचने के लिए, हम उन्हें स्थानीय लॉ फर्म के माध्यम से कानूनी सलाह प्रदान करते हैं। वे नोटरी के माध्यम से वसीयत भी तैयार करते हैं, इस तरह के काम। इसमें ज्यादा खर्च भी नहीं आता।
"क्या मेरे पिता ने कोई वसीयत छोड़ी थी?"
"कृपया वकील से बात करें। मैं इस बारे में चर्चा नहीं कर सकता।"
"मैं समझ गया। क्या जल्द ही उनसे मिलने का कोई तरीका है?"
मैंने उनसे पहले ही संपर्क कर लिया है, और वे आज तीन बजे यहाँ आ रहे हैं। क्या यह ठीक रहेगा? थोड़ी जल्दीबाजी है, लेकिन मुझे लगा कि आप भी व्यस्त होंगे, इसलिए मैंने अपनी सुविधानुसार व्यवस्था कर ली है।
"धन्यवाद," टेंगो ने उसकी कार्यकुशलता के लिए आभार व्यक्त करते हुए उत्तर दिया।
किसी तरह, उसके आसपास की सभी बुजुर्ग महिलाएं बहुत कुशल थीं।
सबसे पहले, अपने परिवार का पंजीकरण रद्द करवाने और दाह संस्कार की अनुमति प्राप्त करने के लिए नगर पालिका कार्यालय जाएं।
"ठीक है, तो मुझे इचिकावा जाना होगा, क्योंकि वहीं मेरे पिता का निवास था।
लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैं तीन बजे तक वापस आ पाऊँगी।"
नर्स ने अपना सिर हिलाया।
— यहाँ आते ही, आपके पिता ने अपना निवास प्रमाण पत्र और अधिवास प्रमाण पत्र इचिकावा से चिकुरा में स्थानांतरित करवा लिया। ताकि ज़रूरत पड़ने पर चीज़ें आसान हो जाएँ।
"बहुत ही व्यवस्थित," टेंगो ने प्रभावित होकर कहा।
ऐसा लग रहा था मानो उसके पिता को शुरू से ही पता था कि उसकी मृत्यु वहीं होगी। “बिल्कुल सही। बहुत कम लोग इतनी दूर की सोचते हैं। सबको लगता है कि मैं यहाँ सिर्फ़ कुछ समय के लिए हूँ। लेकिन...” नर्स ने कहा, लेकिन फिर रुक गई और अपने हाथों को सामने जोड़कर आगे आने वाले शब्दों की ओर इशारा किया। वैसे भी, इचिकावा तक जाने की कोई ज़रूरत नहीं है।
*

टेंगो को उसके पिता के कमरे में ले जाया गया। यह वही कमरा था जहाँ उन्होंने अपने जीवन के अंतिम महीने बिताए थे। चादरें तह करके रखी हुई थीं, रजाई और तकिया हटा दिए गए थे, और अब बिस्तर पर केवल एक धारीदार गद्दा था। मेज पर एक साधारण सा लैंप था, और संकरी अलमारी में पाँच खाली कोट टांगने वाले लटके हुए

थे। किताबों की अलमारी खाली थी, और उनका बाकी निजी सामान कहीं और रखा हुआ था। टेंगो को यह भी याद नहीं था कि वह निजी सामान क्या था। उसने अपना बैग ज़मीन पर गिरा दिया और कमरे में चारों ओर देखा।
अंदर, दवा की हल्की सी गंध अभी भी बाकी थी। उसे अपनी नाक में बीमार आदमी की सांस की गंध भी महसूस हो रही थी। तेंगो ने खिड़की खोलकर थोड़ी हवा अंदर आने दी। धूप से फीके पड़े पर्दे हवा में ऐसे लहरा रहे थे जैसे कोई नन्ही बच्ची की स्कर्ट। उन्हें देखकर तेंगो को अचानक ख्याल आया कि कितना अच्छा होता अगर आओमामे उसके साथ होती, उसका हाथ थामे चुपचाप।
*

टेंगो बस से चिकुरा नगर पालिका गए, काउंटर पर मृत्यु प्रमाण पत्र दिखाया और अंतिम संस्कार की अनुमति प्राप्त कर ली। उन्हें मृत्यु के चौबीस घंटे के भीतर श्मशान घाट ले जाया जा सकता था। उन्होंने पारिवारिक रजिस्टर से अपना नाम हटवाने के लिए आवेदन किया और उसे प्रमाणित करने वाला दस्तावेज़ प्राप्त किया। औपचारिकताओं को पूरा करने में उन्हें कुछ समय लगा, लेकिन सिद्धांत रूप में, सब कुछ अप्रत्याशित रूप से आसानी से सुलझ गया। आत्म-मंथन का कोई समय नहीं, कुछ भी नहीं। जैसे कार का पंजीकरण रद्द करवाना। नर्स तामुरा ने नगर पालिका से प्राप्त प्रत्येक दस्तावेज़ की तीन प्रतियां कार्यालय के कॉपियर पर बना लीं।
"दो बजकर साढ़े दो बजे, वकील से मिलने से पहले, ज़ेंको फ़्यूनरल होम से कोई यहाँ आएगा," उसने कहा। "कृपया उन्हें अंतिम संस्कार परमिट की एक प्रति दे दें। वे बाकी सब कुछ संभाल लेंगे। आपके पिता ने उनके एक प्रतिनिधि से बात की थी और सभी व्यवस्थाएँ कर ली थीं। उन्होंने खर्चों के लिए पैसे भी अलग रख दिए हैं। इसलिए आपको वास्तव में कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है। हाँ, अगर आपको कोई आपत्ति हो तो।"
टेंगो ने उससे कहा कि उसके पास कुछ भी नहीं है।
उनके पिता अपने पीछे लगभग कोई निजी सामान नहीं छोड़ गए थे। कुछ पुराने कपड़े, कुछ किताबें, बस इतना ही।
"क्या आप कुछ लेना चाहेंगे, कोई भी ऐसी वस्तु जो आपको उनकी याद दिलाती हो?" इसका मतलब है अलार्म क्लॉक रेडियो, पुरानी मैकेनिकल घड़ी, चश्मा, बस इतना ही। टेंगो ने जवाब दिया कि उसे कुछ नहीं चाहिए और उसने उससे कहा कि वह उनके साथ जो चाहे कर सकती है।
*

ठीक ढाई बजे, काले सूट पहने एक अंतिम संस्कार गृह का प्रतिनिधि चुपचाप अंदर आया। वह पचास वर्ष की आयु का एक दुबला-पतला आदमी था। उसकी उंगलियां लंबी थीं, आंखें बड़ी थीं और नाक के पास एक काला, सूखा मस्सा था। उसका चेहरा कानों तक धूप में तपा हुआ था, मानो वह घंटों धूप में रहा हो। पता नहीं क्यों, टेंगो ने कभी किसी मोटे अंतिम संस्कार प्रबंधक को नहीं देखा था। उसने टेंगो को अंतिम संस्कार की प्रक्रिया के बारे में विस्तार से बताया। वह विनम्रता से और बहुत धीरे-धीरे बोल रहा था, मानो यह जता रहा हो कि जल्दी करने की कोई जरूरत नहीं है। "जब आपके पिता जीवित थे, तब उन्होंने एक साधारण अंतिम संस्कार की इच्छा व्यक्त की थी। उन्हें एक साधारण ताबूत में रखा जाए जो अपना उद्देश्य पूरा करे, और फिर सीधे श्मशान घाट ले जाया जाए। वे चाहते थे कि हम सब कुछ छोड़ दें -

वेदी, समारोह, सूत्रों का पाठ, मरणोपरांत नाम, फूल, विदाई के शब्द। वे कब्र नहीं चाहते थे। उन्होंने कहा था कि अस्थि कलश को किसी आम कब्र में दफना दिया जाए। इसलिए, यदि आपको कोई आपत्ति नहीं है तो—"
उस समय, वह आदमी रुका और विनती भरी निगाहों से टेंगो की ओर देखने लगा।
"अगर मेरे पिता यही चाहते थे, तो मुझे तो कोई आपत्ति नहीं है," उसने सीधे उसकी आंखों में देखते हुए कहा।
प्रतिनिधि ने सिर हिलाया और अपनी निगाहें थोड़ी नीचे कर लीं।
"आज रात प्रार्थना सभा होगी और हम शव को अपने मुख्यालय में रात भर रखेंगे। यदि संभव हो तो हम इसे अभी वहीं ले जाना चाहेंगे। और कल दोपहर एक बजे पास के श्मशान घाट में अंतिम संस्कार होगा। क्या यह ठीक रहेगा?"
मुझे कोई आपत्ति नहीं है।
— क्या आप अंतिम संस्कार में आना चाहेंगे?
"मैं आऊंगा," टेंगो ने जवाब दिया।
— कुछ लोग उपस्थित नहीं होना चाहते। यह आप पर निर्भर करता है।
"मैं आऊंगा," टेंगो ने दोहराया।
“मैं समझ गया,” उस व्यक्ति ने राहत भरी आवाज़ में कहा। “तो मेरे पास वही चीज़ है जो मैंने आपके पिता को उनकी मृत्यु से पहले दिखाई थी। मुझे उम्मीद है कि आप सहमत होंगे।”
ये कहते हुए प्रतिनिधि ने अपनी कीड़ों जैसी लंबी उंगलियों से एक फाइल खोली और उसमें से एक बिल निकाला, जो उसने टेंगो को दे दिया। यहां तक कि अंतिम संस्कार के बारे में कुछ भी न जानने वाले टेंगो भी समझ गए कि यह बहुत ही सस्ता सौदा है। जाहिर है, उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी। उन्होंने कलम उठाई और कागज पर हस्ताक्षर कर दिए।
वकील तीन बजे से कुछ मिनट पहले पहुंचा और टेंगो के सामने ही अंतिम संस्कार करने वाले से कुछ देर बात की। विशेषज्ञों के बीच हुई संक्षिप्त बातचीत जैसी ही थी। टेंगो को समझ ही नहीं आया कि क्या चर्चा हो रही है। ऐसा लग रहा था जैसे दोनों एक-दूसरे को जानते हों। यह एक छोटा सा कस्बा था। जाहिर है, वहां हर कोई एक-दूसरे को जानता ही होगा।
जिस कमरे में शव रखा गया था, उसके ठीक बाहर एक छोटा सा प्रवेश द्वार था, और उसके बगल में अंतिम संस्कार गृह की वैन खड़ी थी। ड्राइवर की खिड़की को छोड़कर बाकी सभी खिड़कियाँ काली रंगी हुई थीं, और पूरी तरह काली कार पर कोई प्रतीक चिन्ह या लिखावट नहीं थी। दुबले-पतले ठेकेदार और उनके सफेद बालों वाले सहायक, जो ड्राइवर का भी काम कर रहे थे, ने टेंगो के पिता के शव को स्ट्रेचर पर रखा और उसे कार तक ले गए। वैन को विशेष रूप से ऊँची छत के साथ डिज़ाइन किया गया था, और एक रेलिंग की मदद से बिस्तर का ऊपरी हिस्सा अंदर खिसकाया जा सकता था। पीछे के दरवाजे औपचारिक ध्वनि के साथ बंद हुए, प्रतिनिधि ने टेंगो को विनम्रतापूर्वक प्रणाम किया, और वैन चल पड़ी। वे चारों—टेंगो, वकील, नर्स तामुरा और नर्स ओमुरा—ने काली टोयोटा के पीछे के दरवाजों की ओर हाथ जोड़कर इशारा किया।
*

टेंगो और वकील कैफ़ेटेरिया के एक कोने में बैठकर बातें करने लगे। वकील की उम्र लगभग पैंतालीस वर्ष थी और अंतिम संस्कार करने वाले के विपरीत, वह बहुत मोटा था। उसकी ठुड्डी लगभग गायब हो चुकी थी। हालाँकि सर्दी का मौसम था, फिर भी

उसके माथे पर हल्का पसीना था। गर्मियों में तो उसे खूब पसीना आता होगा। उसके भूरे ऊनी सूट से कपूर की अप्रिय गंध आ रही थी। उसका माथा संकरा था और उसके बाल बेहद घने और काले थे। उसका मोटा शरीर उसके घने बालों से बिल्कुल मेल नहीं खाता था। उसकी पलकें भारी और सूजी हुई थीं और आँखें संकरी थीं, लेकिन अगर आप गौर से देखते तो उनमें दयालुता की एक झलक दिखाई देती।
"आपके पिता ने अपनी वसीयत मुझे सौंपी है। लेकिन इसे कोई बड़ी बात मत समझिए। यह जासूसी उपन्यासों में मिलने वाली किसी चीज़ जैसी नहीं है," वकील ने एक बार खांसते हुए कहा। "इसे एक संक्षिप्त नोट कहा जा सकता है। मैं पहले संक्षेप में समझा देता हूँ कि इसमें क्या है। वसीयत में मुख्य रूप से उनके अंतिम संस्कार की व्यवस्थाओं का उल्लेख है। ज़ेंको के सज्जन ने आपको पहले यही समझाया था, है ना?"
"हां," उन्होंने समझाया। "एक साधारण अंतिम संस्कार समारोह।"
“जी हां,” वकील ने कहा। “आपके पिता यही चाहते थे। सब कुछ जितना हो सके उतना सरल रखना चाहते थे। अंतिम संस्कार के खर्चों के लिए एक धनराशि अलग रखी गई है, और चिकित्सा खर्च उस राशि से कवर किए जाएंगे जो उन्होंने यहां भर्ती होने के समय गारंटी के रूप में छोड़ी थी। सब कुछ इस तरह से व्यवस्थित किया गया है ताकि आगे कोई वित्तीय बोझ न पड़े।”
यानी, किसी का ऋणी न होना।
"बिल्कुल सही। सब कुछ अग्रिम भुगतान कर दिया गया था। फिर चिकुरा डाकघर में उनके खाते में कुछ पैसे हैं, जो उन्होंने आपको विरासत में दिए हैं। खाताधारक को बदलना होगा। इसके लिए आपको पारिवारिक रजिस्टर से नाम हटाने का प्रमाण पत्र, आपके पारिवारिक रजिस्टर का आधिकारिक उद्धरण और डाक टिकट के पंजीकरण का प्रमाण पत्र चाहिए होगा। इन्हें लेकर सीधे चिकुरा डाकघर जाएं और फॉर्म हाथ से भरें। इन औपचारिकताओं में काफी समय लगता है। जैसा कि आप जानते हैं, जापान में बैंक और डाकघर फॉर्म भरने के मामले में बहुत सख्त होते हैं।"
वकील ने अपनी जैकेट की जेब से एक बड़ा सफेद रुमाल निकाला और उससे अपना माथा पोंछा।
"मैं आपको उनकी संपत्ति के बारे में बस इतना ही बताना चाहता था। संपत्ति से मेरा मतलब केवल डाकघर में जमा की गई उनकी बचत है, क्योंकि उनके पास कोई जीवन बीमा, शेयर, अचल संपत्ति, कीमती पत्थर या प्राचीन वस्तुएं नहीं हैं। मैं आपको कैसे बताऊं, यह सब बहुत स्पष्ट है और इसमें कोई मेहनत नहीं लगती।"
टेंगो ने चुपचाप सिर हिलाया। अपने पिता की यही आदत थी। लेकिन उनकी बचत का पैसा विरासत में मिलने के ख्याल से ही उसे बेचैनी होने लगी। उसे ऐसा लगा जैसे उसके हाथों में गीले, भारी कंबलों का ढेर रख दिया गया हो। वह उन्हें स्वीकार करना नहीं चाहता था। लेकिन घने बालों और विनम्र मुस्कान वाले इस मोटे वकील से वह यह बात कह नहीं सका।
"इनके अलावा, मेरे पास आपके पिता का एक लिफाफा सुरक्षित रखा हुआ है। मैं इसे अपने साथ लाया था और अब इसे आपको सौंपना चाहता हूं।"
बड़े आकार का, फूला हुआ भूरा लिफाफा टेप से कसकर सील किया हुआ था। मोटे वकील ने उसे अपने काले ब्रीफकेस से निकाला और मेज पर रख दिया।
"उन्हें यहां भर्ती किए जाने के तुरंत बाद, मेरी मुलाकात श्री कवाना से हुई और उनसे बातचीत हुई, और उन्होंने यह लिफाफा मुझे सौंप दिया। उस समय वे पूरी तरह

से होश में थे। हां, कभी-कभी वे भ्रमित हो जाते थे, लेकिन ज्यादातर वे एक सामान्य जीवन जी रहे थे। उन्होंने मुझसे कहा कि जब उनकी मृत्यु हो जाए, तो मैं इसे उनके कानूनी उत्तराधिकारी को दे दूं।"
"कानूनी वारिस," टेंगो ने थोड़ा आश्चर्यचकित होते हुए कहा।
"हां। आपके पिता ने उस समय किसी का नाम नहीं लिया था। लेकिन आप ही एकमात्र कानूनी वारिस हैं।"
— जहाँ तक मुझे पता है, यह सच है।
“इसलिए, मैं इसे आपको सौंपता हूँ,” वकील ने मेज पर रखे लिफाफे की ओर इशारा करते हुए कहा। “क्या आप कृपया मेरे लिए हस्ताक्षर कर सकते हैं?”
टेंगो ने रसीद पर हस्ताक्षर कर दिए। भूरा लिफाफा मेज पर पड़ा था, जो अनावश्यक रूप से औपचारिक और बेजान लग रहा था। उसके आगे या पीछे कुछ भी नहीं लिखा था। "मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ," टेंगो ने कहा। "क्या उस समय मेरे पिता ने मेरा नाम, टेंगो कावाना, लिया था? या 'बेटा' शब्द का प्रयोग किया था?"
सोचते-सोचते वकील ने अपनी जेब से रुमाल निकालकर दोबारा अपना माथा पोंछा। फिर उसने संक्षेप में अपना सिर हिलाया।
"नहीं, श्री कवाना ने केवल 'कानूनी उत्तराधिकारी' कहा था। उन्होंने कभी कोई और शब्द इस्तेमाल नहीं किया। मुझे यह बात याद है क्योंकि यह मुझे थोड़ा अजीब लगा था।"
टेंगो चुप रहा। वकील ने सुलह भरे लहजे में कहा।
"लेकिन श्री कवाना को अच्छी तरह पता था कि आप ही एकमात्र कानूनी वारिस हैं। उन्होंने बातचीत में बस आपका नाम नहीं लिया, बस इतना ही। क्या कोई बात आपको परेशान कर रही है?"
"मुझे किसी बात की चिंता नहीं है," टेंगो ने कहा। "मेरे पिता में हमेशा से ही कुछ छोटी-मोटी अजीब आदतें रही हैं।"
वकील ने धीरे से मुस्कुराते हुए सिर हिलाया। फिर उन्होंने टेंगो को पारिवारिक रजिस्टर की एक नई, पूरी प्रति सौंप दी।
क्षमा करें, लेकिन चूंकि यह बीमारी चिंता का विषय है, इसलिए मैंने दस्तावेजों में कोई त्रुटि न हो, यह सुनिश्चित करने के लिए पारिवारिक रजिस्टर की जाँच करने का विवेकाधिकार लिया। अभिलेखों से पता चलता है कि आप श्री कवाना के इकलौते पुत्र हैं। आपके जन्म के डेढ़ वर्ष बाद आपकी माता का देहांत हो गया। आपके पिता ने बिना पुनर्विवाह किए अकेले ही आपका पालन-पोषण किया। उनके माता- पिता और भाई सभी दिवंगत हैं। आप निःसंदेह इकलौते कानूनी उत्तराधिकारी हैं। वकील खड़ा हुआ, संवेदना व्यक्त की और चला गया। टेंगो मेज पर बैठा लिफाफे को घूरता रहा। उसके पिता उसके जैविक पिता थे, और उसकी माँ वास्तव में मर चुकी थी। वकील ने यही कहा था। और शायद यह सच भी था। या कम से कम कानूनी तौर पर। लेकिन जैसे-जैसे ये तथ्य सामने आते गए, उसे लगा कि सच्चाई उससे और दूर होती जा रही है। क्यों?
टेंगो अपने पिता के कमरे में लौटा, मेज पर बैठ गया और भूरे लिफाफे को खोलने की कोशिश करने लगा। शायद इसके अंदर कुछ राज़ खोलने की चाबी छिपी हो। लेकिन यह आसान काम नहीं था। उसे न कैंची मिली, न कटर, और न ही कोई और चीज़ जिससे वह खोल सके। उसे बस अपने नाखूनों से टेप की हर पट्टी छीलनी थी। जब उसने बड़ी मुश्किल

से, सिसकते हुए, लिफाफा खोला, तो अंदर कई और लिफाफे मिले, जो सब बहुत अच्छे से टेप से चिपके हुए थे। बिल्कुल उसके पिता की आदत।
एक नोट में पाँच लाख येन नकद थे। पचास एकदम नए दस हज़ार येन के नोट, पतले कागज़ में कई बार मोड़े हुए। अंदर एक नोट था जिस पर लिखा था "आपातकालीन धन"। यह उसके पिता की लिखावट थी, इसमें कोई शक नहीं। छोटे अक्षरों में, हर अक्षर को बड़ी सावधानी से लिखा गया था। क्या इसका मतलब यह था कि अगर कोई अप्रत्याशित खर्च आ जाए तो वह इसका इस्तेमाल कर सकता है? उसके पिता को उम्मीद थी कि "कानूनी वारिस" के पास पर्याप्त नकदी नहीं होगी।
सबसे मोटे लिफाफे में पुराने अखबारों की कतरनें और कई डिप्लोमा भरे हुए थे। ये सभी टेंगो से संबंधित थे। प्राथमिक विद्यालय में अंकगणित ओलंपियाड जीतने का डिप्लोमा, स्थानीय अखबार का लेख, उसकी ट्रॉफियों की एक तस्वीर, कलाकृतियों की तरह परिपूर्ण उसकी रिपोर्ट कार्ड, सभी विषयों में सर्वोच्च अंक, और कई अन्य शानदार प्रमाण जो एक विलक्षण प्रतिभा के रूप में उसकी स्थिति को प्रमाणित करते थे। प्राथमिक विद्यालय में जूडो की पोशाक पहने उसकी एक तस्वीर। वह खुशी से मुस्कुरा रहा था, उसके हाथ में उपविजेता का झंडा था। टेंगो उन्हें देखकर बेहद हैरान था। उसके पिता सेवानिवृत्त हो गए थे, एनएचके द्वारा दिए गए सरकारी आवास को छोड़कर इचिकावा चले गए, वहाँ भी किराए पर रहने लगे, और फिर चिकुरा के सैनिटोरियम में आ गए। अकेले रहने और कई बार जगह बदलने के कारण, उनके पास बहुत कम निजी सामान बचा था। इसके अलावा, वर्षों से उनके रिश्ते में खटास आ गई थी। फिर भी, उसके पिता ने अपने "विलक्षण प्रतिभा" के दिनों की इन चमकदार निशानियों को सहेज कर रखा था।
एक दूसरे लिफाफे में एनएचके में कैशियर के रूप में उनके कार्यकाल से संबंधित कई दस्तावेज़ थे। वर्षों से उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों को दर्शाने वाले कागज़ात। कुछ साधारण डिप्लोमा थे। एक तस्वीर, शायद किसी सहकर्मी के साथ कंपनी ट्रिप पर ली गई। एक पुराना पहचान पत्र। पेंशन और स्वास्थ्य बीमा की रसीदें। कुछ वेतन पर्चियाँ, जिन्हें पता नहीं किस कारण से रखा गया था। सेवानिवृत्ति लाभों की प्राप्ति से संबंधित कागज़ात... एनएचके के लिए तीस से अधिक वर्षों तक लगातार काम करते हुए उन्होंने जो कुछ कमाया था, उसके मुकाबले यह राशि आश्चर्यजनक रूप से कम थी। प्राथमिक विद्यालय में टेंगो की उल्लेखनीय उपलब्धियों की तुलना में, उनकी अपनी उपलब्धियाँ लगभग नगण्य थीं। शायद सामाजिक दृष्टिकोण से, वह एक ऐसे व्यक्ति थे जिनका कोई महत्व नहीं था। लेकिन टेंगो के लिए, वह बिल्कुल भी "शून्य" नहीं थे। उनके पिता ने उनकी आत्मा पर एक गहरा, काला साया छोड़ दिया था। और उस डाक बचत खाते का भी।
उन लिफाफों में एनएचके में शामिल होने से पहले के उनके जीवन के बारे में कुछ भी नहीं था। ऐसा लग रहा था मानो कैशियर बनने के क्षण से ही उनका जीवन शुरू हुआ हो।
आखिरी व्यक्ति ने जिस पतले, छोटे लिफाफे को खोला, उसमें एक काली-सफेद तस्वीर थी। बस इतना ही। और कुछ नहीं। एक पुरानी तस्वीर, जो पतली सी परत से पूरी तरह ढकी हुई थी, मानो उस पर पानी के दाग लगे हों। उसमें दो माता-पिता अपने बच्चे के साथ थे। पिता, माता और बच्चा। बच्चे के आकार को देखकर लग रहा था कि वह एक साल से ज़्यादा का नहीं है। किमोनो पहने माता ने अपने बच्चे को बड़ी सावधानी से अपनी गोद में लिया हुआ था। पृष्ठभूमि में एक शिंटो मंदिर का द्वार था। कपड़ों

टेंगो को एक बात स्पष्ट थी, और वह यह थी कि उसके पिता ने उसे एक खास तथ्य कभी समझाना नहीं चाहा था। न तो अपने जीवनकाल में, और न ही अब, उनके मरने के बाद। "ये रही तस्वीर। मैं बस इसे तुम्हें दे रहा हूँ। अब से तुम खुद फैसला कर लेना।" उसके पिता उससे यही कहा करते थे।
टेंगो गद्दे पर लेट गया और छत की ओर देखने लगा। छत प्लाईवुड की बनी थी, सफ़ेद रंग से रंगी हुई। बिल्कुल सपाट, बिना किसी बनावट या गांठ के, बस कुछ सीधी जोड़ियाँ थीं। यही नज़ारा उसके पिता ने अपने जीवन के अंतिम महीनों में अपनी धँसी हुई आँखों से देखा था। या शायद उन आँखों ने कुछ देखा ही नहीं। खैर, उनकी निगाहें वहीं टिकी हुई थीं, चाहे वे देख पा रहे हों या नहीं।
टेंगो ने अपनी आँखें बंद कर लीं और कल्पना की कि वह धीरे-धीरे मौत की ओर बढ़ रहा है, वहीं लेटा हुआ है। लेकिन तीस साल के उस आदमी के लिए, जिसे कोई स्वास्थ्य समस्या नहीं थी, मौत कहीं दूर थी, जहाँ उसकी कल्पना भी नहीं पहुँच सकती थी। वह धीरे-धीरे साँस लेते हुए, गोधूलि की रोशनी से दीवार पर पड़ रही हिलती हुई परछाइयों को देखता रहा। उसने कुछ भी न सोचने का निश्चय किया। उसके लिए कुछ भी न सोचना बिल्कुल भी मुश्किल नहीं था। वह इतना थका हुआ था कि किसी और बात की परवाह ही नहीं कर पा रहा था। अगर हो सकता तो वह थोड़ी देर सोना चाहता, लेकिन इतनी थकान के कारण उसे नींद नहीं आ रही थी।
*

छह बजने से कुछ ही देर पहले नर्स ओमुरा आईं और बताया कि कैंटीन में दोपहर का खाना तैयार है। टेंगो को बिल्कुल भूख नहीं थी, और उसने उन्हें यह बताया भी, लेकिन लंबी, सुडौल नर्स जाने को तैयार नहीं थीं। उन्होंने ज़िद की कि उन्हें कुछ तो खिलाना ही है, चाहे थोड़ा सा ही क्यों न हो। यह एक आदेश जैसा लग रहा था। यह तो स्पष्ट था कि वह लोगों को अपने शरीर की देखभाल के बारे में निर्देश देने में माहिर थीं। और टेंगो उस तरह का आदमी था जो किसी आदेश का विरोध करना नहीं जानता था, खासकर अगर वह आदेश उससे उम्र में बड़ी महिला से आए।
वह सीढ़ियों से नीचे उतरा, कैंटीन में गया और वहाँ उसे कुमी अदाची मिली। नर्स तामुरा कहीं नज़र नहीं आ रही थी। तेंगो ने नर्स ओमुरा और कुमी के साथ दोपहर का भोजन किया। उसने सलाद और सब्ज़ी का स्टू खाया, साथ ही क्लैम और हरे प्याज़ वाला मिसो सूप भी पिया। उसने गर्म दलिया की चाय भी पी।
“अंतिम संस्कार कब है?” कुमी ने पूछा।
"कल दोपहर एक बजे," टेंगो ने जवाब दिया। "यह सब खत्म होने के बाद, मुझे लगता है कि मैं सीधे टोक्यो वापस चला जाऊंगा। मुझे काम पर जाना है।"
क्या आपके अलावा कोई और भी अंतिम संस्कार में शामिल होगा?
मुझे ऐसा नहीं लगता। सिर्फ मुझे ऐसा लगता है।
“सुनो, अगर मैं भी आ जाऊं तो क्या तुम्हें कोई आपत्ति होगी?” कुमी ने उससे पूछा।
“मेरे पिता के अंतिम संस्कार में?” टेंगो ने आश्चर्य से कहा।
हां। सच कहूं तो, मुझे आपके पिताजी बहुत पसंद थे।
बिना सोचे समझे, टेंगो ने चॉपस्टिक नीचे रख दीं और कुमी की तरफ देखा। क्या वह सचमुच अपने पिता के बारे में बात कर रहा था?
"तुम्हें उसमें क्या पसंद आया?" उसने उससे पूछा।

उन्होंने कहा, "वह ईमानदार थे और ज्यादा बात नहीं करते थे। इस मामले में, वह मेरे पिता की तरह थे, जिनका निधन हो गया।"
— आह।
"मेरे पिता मछुआरे थे। पचास साल की उम्र से पहले ही उनका निधन हो गया।"
"क्या उसकी मृत्यु समुद्र में हुई?"
"नहीं, फेफड़ों का कैंसर। वह बहुत ज्यादा धूम्रपान करता था। मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन सभी मछुआरे बहुत ज्यादा धूम्रपान करते हैं। ऐसा लगता है जैसे वे अपने शरीर से धुआं निकाल रहे हों।"
टेंगो ने उसकी कही बात पर विचार किया।
— शायद बेहतर होता अगर मेरे पिता भी मछुआरे होते।
- क्यों?
"मुझे भी यही पता है," टेंगो ने कहा। "मुझे ऐसा ही लगता है। एनएचके में कैशियर बनने की बजाय वह मछुआरा बनकर ज्यादा बेहतर जीवन जी सकता था।"
क्या इस तरह आप दोनों एक-दूसरे को बेहतर ढंग से समझ पाते?
— कम से कम बहुत सी चीजें तो सरल होतीं।
टेंगो ने कल्पना की कि वह एक छोटा लड़का है, छुट्टी के दिन सुबह-सुबह अपने पिता के साथ मछली पकड़ने वाली नाव में बैठा है। प्रशांत महासागर की तेज़ हवा और चेहरे पर पानी की फुहारें पड़ रही हैं। डीज़ल इंजन की नीरस गर्जना सुनाई दे रही है। इचिकावा में रेडियो-टीवी का शुल्क इकट्ठा करने के चक्कर में बिताए गए दिनों की तुलना में वे दिन कहीं अधिक स्वाभाविक और संतुष्टिदायक होते। "लेकिन एनएचके की फीस वसूलना काफी मेहनत का काम रहा होगा," नर्स ओमुरा ने उबली हुई मछली खाते हुए कहा।
"शायद," टेंगो ने सोचा कि वह अकेले ऐसा नहीं कर पाता।
“लेकिन तुम्हारे पिता तो वाकई प्रतिभाशाली थे, है ना?” कुमी ने कहा।
बहुत ही शानदार।
उन्होंने मुझे कुछ डिप्लोमा भी दिखाए।
"हाय रे!" नर्स ओमुरा ने अचानक अपनी चॉपस्टिक नीचे रखते हुए कहा। मैं तो बिल्कुल भूल ही गई थी। ओह! इतनी ज़रूरी बात मैं कैसे भूल सकती हूँ? एक मिनट रुको। मुझे आज टेंगो को कुछ देना ही है।"
नर्स ओमुरा ने अपने रूमाल से अपना मुंह पोंछा, अपनी कुर्सी से उठीं और अपना खाना प्लेट में ही छोड़कर कैफेटेरिया से जल्दी से बाहर निकल गईं।
"इतना महत्वपूर्ण क्या हो सकता है?" कुमी ने अपना सिर एक तरफ झुकाते हुए सोचा।
जाहिर है, टेंगो को इस बात का कोई अंदाजा नहीं था।
उसके लौटने का इंतज़ार करते हुए, टेंगो ने ज़बरदस्ती अपना सलाद खाया। अभी तक कैफ़ेटेरिया में ज़्यादा लोग खाना खाने नहीं आए थे। एक मेज़ पर तीन बुज़ुर्ग बैठे थे, लेकिन उनमें से कोई भी नहीं बोला। दूसरी मेज़ पर, सफ़ेद कोट पहने एक सफ़ेद बालों वाला आदमी अकेला बैठा था और गंभीर चेहरे के साथ शाम का अख़बार पढ़ रहा था।
अंत में, नर्स ओमुरा दौड़ती हुई वापस आई, उसके हाथ में एक कागज़ का थैला था।
उसने उसमें से कुछ करीने से तह किए हुए कपड़े निकाले।

उन्होंने कहा, "श्री कवाना ने इन्हें मुझे लगभग एक साल पहले दिया था, जब वे पूरी तरह होश में थे। उन्होंने कहा था कि जब उन्हें ताबूत में रखा जाए तो इन्हें पहनाया जाए। इसलिए मैंने इन्हें साफ करवाकर नेफ़थलीन की गोलियों में रख दिया।"
वह निस्संदेह एनएचके के कैशियर की वर्दी थी। पैंट करीने से इस्त्री की हुई थी और उस पर एक पट्टी थी। उसमें कपूर की गंध आ रही थी। टेंगो कुछ देर के लिए अवाक रह गया।
"श्री कावाना ने मुझसे कहा था कि वे इसी वर्दी में अंतिम संस्कार करवाना चाहते हैं," नर्स ओमुरा ने कहा, फिर वर्दी को मोड़कर वापस बैग में रख दिया। "तो मैं इसे अभी आपको दे रही हूँ। इसे कल शवगृह ले जाना ताकि वे उन्हें यह पहना सकें।"
"लेकिन क्या इसे पहनना अब भी मूर्खतापूर्ण नहीं है? वर्दी एक उधार ली गई संपत्ति है जिसे सेवानिवृत्ति पर एनएचके को वापस करना होगा," टेंगो ने कमजोर आवाज में कहा।
"चिंता मत करो," कुमी ने उससे कहा। "अगर हम कुछ नहीं कहेंगे तो किसी को पता नहीं चलेगा। अगर एनएचके की कोई पुरानी वर्दी खो भी जाए तो उसे कोई नुकसान नहीं होगा।"
नर्स ओमुरा सहमत हो गईं।
श्री कवाना ने एनएचके के लिए तीस साल से अधिक समय तक सुबह से शाम तक काम किया। नियमों और हर तरह के बदमाशों से उनका काफी वास्ता रहा होगा। वर्दी को लेकर भला कौन नाराज़ होगा? क्योंकि इसका इस्तेमाल कोई नुकसान पहुंचाने के लिए तो नहीं करता।
"जी हां, मेरे पास अभी भी मेरी हाई स्कूल की यूनिफॉर्म है," कुमी ने कहा।
"एनएचके कैशियर की यूनिफॉर्म और हाई स्कूल की यूनिफॉर्म दो अलग-अलग चीजें हैं," टेंगो ने बीच में कहा, लेकिन कोई उसकी बात नहीं सुन रहा था।
“हां, यह अभी भी मेरी अलमारी में है,” नर्स ओमुरा ने कहा।
"और तुम अब भी इसे अपने पति के सामने पहनती हो? ऐसे, सफेद मोजों के साथ?" कुमी ने चिढ़ाते हुए कहा।
"यह बुरा विचार नहीं होगा," नर्स ओमुरा ने अपनी हथेली पर गाल टिकाते हुए जवाब दिया। "मुझे लगता है कि इससे उसे उत्तेजना महसूस होगी।"
"खैर," कुमी ने बातचीत समाप्त करते हुए कहा, "श्री कावाना ने स्पष्ट रूप से अपनी इच्छा व्यक्त की है कि उनका अंतिम संस्कार एनएचके की वर्दी में किया जाए। कम से कम उनकी यह इच्छा तो पूरी होनी चाहिए। है ना?"
*

टेंगो एनएचके की वर्दी वाला कागज़ का थैला लेकर कमरे में लौट आया। कुमी भी उसके साथ आई और बिस्तर ठीक किया। साफ़ चादरें, जिनमें अभी भी स्टार्च की महक थी, एक नया कंबल, एक नया तकिया। सब कुछ तैयार होने के बाद, जिस बिस्तर पर उसके पिता सोए थे, वह पूरी तरह से अलग दिख रहा था। अचानक, टेंगो को कुमी के घने, काले गुप्तांग के बाल याद आ गए।
"आपके पिता अंत तक कोमा में रहे," उसने चादर की सिलवटों को हाथ से ठीक करते हुए कहा। "लेकिन मुझे नहीं लगता कि वे पूरी तरह से बेहोश थे।"
"आप ऐसा क्यों सोचते हैं?"

— क्योंकि कभी-कभी ऐसा लगता था कि वह किसी को कोई संदेश भेज रहा है।
टेंगो खिड़की से बाहर देख रहा था, लेकिन वह मुड़ा और कुमी की तरफ देखा।
— कोई संदेश?
"हाँ, वह बिस्तर के फ्रेम पर लगातार पीट रहा था। उसने अपना हाथ नीचे लटका रखा था और ऐसा लग रहा था जैसे वह मोर्स कोड में पीट रहा हो, ज़ैक-ज़ैक, ज़ैक-ज़ैक। कुछ ऐसा ही।"
कुमी ने उसकी नकल की और अपनी मुट्ठी से लकड़ी के पलंग के फ्रेम पर प्रहार किया।
"क्या आपको नहीं लगता कि वह किसी तरह का संकेत भेज रहा था?"
सिग्नल नहीं था।
"तो फिर वो क्या था?"
"वह दरवाजा खटखटा रहा था," टेंगो ने रूखे स्वर में कहा। "वह किसी के दरवाजे पर दस्तक दे रहा था।"
"हाँ, अब जब तुमने यह बात कही है, तो मुझे भी यही लगता है कि वह यही कर रहा था। सच में ऐसा लग रहा था जैसे वह दरवाज़ा खटखटा रहा हो," कुमी ने कहा, और फिर उसकी आँखें सिकुड़ गईं। "क्या इसका मतलब यह है कि श्री कावाना बेहोश होने के बाद भी टोल वसूलने जाते रहे?"
"शायद हां। उसके दिमाग के किसी छोटे से कोने में।"
"पुराने जमाने के उन सैनिकों की तरह, जो मरने के बाद भी अपने तुरही नहीं छोड़ते थे," कुमी ने प्रभावित होकर कहा।
टेंगो के पास कहने के लिए कुछ नहीं था, इसलिए वह चुप रहा।
"तुम्हारे पिता को यह नौकरी बहुत पसंद आई। उन्हें जाने दो और रेडियो और टीवी का शुल्क ले लो।"
"मुझे नहीं लगता कि यह पसंद या नापसंद का मामला था," टेंगो ने कहा।
"तो फिर किस बारे में?"
— यही वह काम था जिसमें वह सबसे माहिर था।
"हम्म। तो फिर," कुमी ने कहा और सोचने लगी। "लेकिन शायद एक तरह से ऐसा जीवन ही सही उत्तर है।"
"बिल्कुल सही," टेंगो ने चीड़ के पेड़ों की कतारों को देखते हुए जवाब दिया। और यह निश्चित रूप से सच था।
"और तुम?" कुमी ने पूछा। "तुम किस चीज़ में सबसे अच्छे हो?"
"मुझे नहीं पता," उसने उसकी आँखों में देखते हुए जवाब दिया। "सच कहूँ तो, मुझे नहीं पता।"

अध्याय 22 इन आँखों में तुम दया पढ़ सकते हो

रविवार शाम सवा छह बजे, टेंगो अपार्टमेंट बिल्डिंग की लॉबी में दिखाई दिया। जैसे ही वह दरवाजे से बाहर निकला, वह रुक गया और चारों ओर देखने लगा, मानो कुछ खोज रहा हो। उसने दाएं से बाएं, फिर बाएं से दाएं देखा। उसने अपनी निगाहें आसमान की ओर उठाईं, फिर ज़मीन की ओर। लेकिन उसकी आँखों को कुछ भी असामान्य नहीं दिखा। टेंगो तेज़ी से सड़क पर निकल गया। उशिकावा पर्दे की दरार से उसे देख रहा था।
इस बार वह उसके पीछे नहीं गया। टेंगो के पास कुछ भी नहीं था। उसके बड़े-बड़े हाथ बिना किसी सिलवट के इस्त्री की हुई कपड़े की पतलून की जेबों में ठूंसे हुए थे। गले में स्वेटर, उसके ऊपर एक थोड़ी पुरानी सी जैतून रंग की कॉरडरॉय जैकेट, और बिखरे हुए बाल। जैकेट की जेब में एक मोटी किताब ठूंसी हुई थी। शायद वह पास ही कहीं दोपहर का खाना खाने जा रहा था। उसका काम था जहाँ चाहे वहाँ जाना।
सोमवार को तेंगो की स्कूल में कुछ क्लासें थीं। उशिकावा ने पहले ही फोन करके पता कर लिया था। जी हां, सचिव ने उसे बताया था कि प्रोफेसर कावाना ने हफ्ते की शुरुआत से ही अपना सामान्य शेड्यूल फिर से शुरू कर दिया है। बहुत बढ़िया। तो अगले दिन से तेंगो भी अपने नियमित शेड्यूल पर लौट आएगा। जहां तक उसे पता था, वह उस शाम ज्यादा दूर नहीं जा रहा था। (हालांकि, अगर वह उसके पीछे जाता, तो उशिकावा को पता चल जाता कि तेंगो योत्सुया के एक बार में कोमात्सु से मिलने जा रहा है।)
आठ बजने से कुछ ही पहले, उशिकावा ने अपना ऊनी कोट, स्कार्फ और बुनी हुई टोपी पहनी और आँखें चौड़ी करके अपार्टमेंट बिल्डिंग से बाहर निकल पड़ा। तब तक टेंगो वापस नहीं आया था। पास में ही खाना खाने के लिए उसे थोड़ा समय लग सकता था। अगर उसकी किस्मत खराब रही, तो अपार्टमेंट बिल्डिंग से बाहर निकलते समय उससे मुलाक़ात हो सकती थी। लेकिन इस खतरे के बावजूद, उशिकावा को उस शाम, उस समय घर से निकलना ही था, क्योंकि उसे कुछ काम था।
अपनी याददाश्त के मुताबिक, वह कुछ बार मुड़ा, कुछ जगहों को पार किया और टटोलते हुए आखिरकार खेल के मैदान तक पहुँच गया। तेज़ उत्तरी हवा थम चुकी थी और दिसंबर की शाम के हिसाब से मौसम अप्रत्याशित रूप से गर्म था, लेकिन पार्क हमेशा की तरह सुनसान था। उशिकावा ने फिर चारों ओर देखा और यह सुनिश्चित करने के बाद कि कोई उसे देख नहीं रहा है, वह स्लाइड पर चढ़ गया। ऊपर पहुँचकर वह बैठ गया, अपनी पीठ रेलिंग से टिकाई और आसमान की ओर देखा। चाँद पिछली शाम की तरह ही लगभग उसी स्थिति में था। वह चमकीला था, दो-तिहाई पूरा। उसके चारों ओर एक भी बादल नहीं था। लेकिन उसके बगल में छोटा, हरा-भरा, टेढ़ा-मेढ़ा चाँद था। उशिकावा ने आह भरते हुए और धीरे से सिर हिलाते हुए सोचा, "मुझे तो ऐसा नहीं लग रहा था।" यह न तो सपना था और न ही कोई दृष्टि भ्रम। दोनों चंद्रमा स्पष्ट रूप से पत्तों से रहित एल्म के पेड़ के ऊपर हवा में तैर रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो वे वहीं स्थिर खड़े होकर उसके वापस आने का इंतज़ार कर रहे हों। वे जानते थे कि वह वापस आएगा। मानो वे एक-दूसरे को समझ चुके हों, उनके चारों ओर फैली खामोशी में कई छिपे अर्थ थे। और उन्होंने उशिकावा से अपनी खामोशी साझा करने को कहा।

पहले फोन करके पता करना स्वाभाविक था कि वह कब घर आएगा। इस तरह वह बेवजह का जोखिम उठाने से बच जाती।
कैमरे के सामने बैठे उशिकावा ने काफी देर तक दिमाग खपाया, लेकिन उन्हें कोई तर्कसंगत कारण नहीं सूझा। उस महिला का व्यवहार - भेस बदलकर आना, अपने छिपने की जगह छोड़कर वहाँ आना - उस आओमामे के व्यक्तित्व से मेल नहीं खाता था जिसे वह जानते थे। वह कहीं अधिक सतर्क और सावधान थी। और इस बात ने उशिकावा को परेशान कर दिया। उन्हें यह ख्याल भी नहीं आया कि शायद उन्हीं की वजह से वह वहाँ आई थी।
खैर, कल मैं स्टेशन पर स्थित फोटो स्टूडियो जाऊंगा और सारी फिल्में डेवलप करवा लूंगा, उसने फैसला किया। इस रहस्यमयी महिला की तस्वीरें भी उनमें जरूर दिखाई देंगी।
उशिकावा रात दस बजे तक कैमरे के पास ही रहे, लेकिन उस महिला के जाने के बाद, दरवाजे से कोई भी अंदर नहीं आया। शो बहुत कम दर्शकों के साथ समाप्त हुआ, और हॉल एकदम शांत, खाली हो गया, मानो कोई मंच सबको भुलाकर छोड़ दिया गया हो। तेंगो कहाँ गई? उशिकावा ने हैरानी से सोचा। जहाँ तक उन्हें याद था, इतनी देर रात तक बाहर रहना अजीब था, खासकर तब जब अगले दिन से स्कूल शुरू होने वाला था। या शायद वह उनके जाने के दौरान वापस आ गई हो और जल्दी सो गई हो।
दस बजते-बजते उशिकावा को एहसास हुआ कि वह पूरी तरह से थक चुका है। उसे इतनी नींद आ रही थी कि वह मुश्किल से अपनी आँखें खुली रख पा रहा था। यह उसके लिए अजीब था, क्योंकि वह हमेशा रात में देर तक जागने वाला व्यक्ति था। आमतौर पर, अगर ज़रूरत पड़ती तो वह किसी भी समय तक जाग सकता था। लेकिन उस रात, नींद उसके सिर पर एक प्राचीन कब्र के पत्थर की तरह लगातार दबाव डाल रही थी।
शायद मैंने उन दो चाँद को बहुत देर तक घूरा था, उसने सोचा। शायद मैंने उनकी रोशनी को अपनी त्वचा में बहुत ज़्यादा समा जाने दिया था। दो चाँद, एक बड़ा और एक छोटा, की छवि अभी भी उसकी आँखों में बसी हुई थी। उनकी काली परछाइयों ने उसके दिमाग के एक संवेदनशील कोने को सुन्न कर दिया था, ठीक वैसे ही जैसे ततैया की एक खास प्रजाति इल्लियों को डंक मारती है, उन्हें लकवाग्रस्त कर देती है और उनकी सतह पर अपने अंडे देती है। उनके लार्वा जमी हुई इल्ली को भोजन के रूप में इस्तेमाल करते हैं और उसे ज़िंदा ही खा जाते हैं। उशिकावा ने माथे पर शिकन डाली और उन निराशाजनक छवियों को अपने दिमाग से दूर धकेल दिया।
बस, हो गया! उसने सोचा। मैं कब तक यहाँ टेंगो का इंतज़ार करता रहूँ? उसके लौटने का क्या मतलब है? वैसे भी वो सीधे सोने ही जाएगा। और उसके पास जाने के लिए और कोई जगह नहीं है। शायद।
थकावट से चूर उशिकावा ने अपनी पैंट और स्वेटर उतार दिए और सिर्फ़ एक बाजूबंद और अंडरवियर पहने स्लीपिंग बैग में घुस गया। फिर वह सिकुड़कर लेट गया और तुरंत सो गया। वह इतनी गहरी नींद में सो गया, मानो बेहोशी में चला गया हो। जैसे ही उसे नींद आई, उसे लगा जैसे किसी ने दरवाज़े पर दस्तक दी हो, लेकिन उसकी चेतना पहले ही किसी दूसरी दुनिया में चली गई थी। वह अब चीज़ों में फ़र्क नहीं कर पा रहा था। अगर वह ज़बरदस्ती भी उनमें फ़र्क करने की कोशिश करता, तो उसे अपने शरीर का हर हिस्सा घिसता हुआ महसूस होता। इसलिए उसने आँखें भी नहीं खोलीं, बल्कि नींद के दलदल में वापस डूब गया, उस आवाज़ का मतलब समझने की कोशिश भी नहीं की।

*

ज़रूर आएगी। उसे अभी तक नहीं पता कि उसके पिता की मृत्यु हो गई है। टेंगो को यह खबर रात भर में मिली और वह सुबह जल्दी निकल गया। और लगता है कि वे उससे फोन पर संपर्क नहीं कर पा रहे हैं। इसका मतलब है कि वह यहाँ ज़रूर आएगी। उसका कोई ज़रूरी काम है जिसकी वजह से उसे यहाँ आना पड़ता है, भले ही यह जोखिम भरा हो। इस बार मैं ज़रूर पता लगाऊँगा कि वह कहाँ जा रही है। और इसके लिए मुझे पूरी तैयारी करनी होगी।
और शायद इससे एक रहस्य पर कुछ रोशनी पड़ जाए, यानी इस दुनिया में दो चंद्रमा क्यों हैं। उशिकावा इसकी दिलचस्प संरचना के बारे में और अधिक जानना चाहता था। हालांकि, उसने खुद से कहा, आखिरकार, यह तो गौण बात है। मेरा काम सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण यह पता लगाना है कि आओमामे कहाँ छिपी है। इसे अच्छे से सजाकर उन दो संदिग्ध व्यक्तियों को सौंप देना है। चाहे आकाश में दो चंद्रमा हों या सिर्फ एक, मुझे यथार्थवादी होना होगा। क्योंकि, आखिरकार, यही मेरी खूबी है।
*

उशिकावा स्टेशन पर स्थित फोटो शॉप में गए और छत्तीस एक्सपोज़र वाली पांच फिल्म रोल जमा करा दीं। फिर उन्होंने तस्वीरें खींचीं, पास के एक रेस्तरां में गए और चिकन करी का एक कटोरा खाते हुए उन्हें क्रम से देखा। उनमें से अधिकांश तस्वीरें निवासियों के जाने-पहचाने चेहरों की थीं। उनकी दिलचस्पी तीन लोगों की तस्वीरों में जागी: फुकाएरी, टेंगो और वह रहस्यमयी महिला जो रात में अपार्टमेंट बिल्डिंग से चली गई थी।
फुकाएरी की आँखों ने उसे तनाव से भर दिया। तस्वीर में भी उसकी आँखें सीधे उसकी ओर देख रही थीं। उसे पूरा यकीन था कि उशिकावा वहाँ था और उसे देख रहा था। शायद उसे यह भी पता था कि उसने चुपके से उसकी तस्वीर खींची थी। उसकी क्रिस्टल जैसी आँखों ने उसे यही बताया। वे सब कुछ भेद रही थीं और उसके इस काम से बिल्कुल सहमत नहीं थीं। उस सीधी नज़र ने उसके दिल को बेरहमी से छेद दिया, बिल्कुल दूसरी तरफ तक। उसने जो किया था, उसके लिए उसके पास कोई बहाना नहीं था। लेकिन साथ ही, उसने न तो उसकी निंदा की और न ही उसे नीचा दिखाया। एक तरह से, उन खूबसूरत आँखों ने उसे माफ़ कर दिया। नहीं, वे मुझे माफ़ नहीं करतीं, उशिकावा ने खुद को सुधारा। उन आँखों में दया दिखती है। वे जानती हैं कि मैंने एक गंदा काम किया है और उन्हें मुझ पर तरस आता है।
यह सब कुछ बहुत कम समय में घटित हुआ था। उस सुबह, फुकाएरी ने पहले बिजली के खंभे को देखा, फिर झट से अपना सिर उस खिड़की की ओर घुमाया जिसके पीछे उशिकावा छिपा हुआ था, वहाँ छिपे कैमरे के लेंस से सीधे उसकी ओर देखा और उसे घूरने लगी। फिर वह चली गई। समय थम सा गया, फिर चलने लगा। यह सब ज़्यादा से ज़्यादा तीन मिनट तक चला। उस समय में, उसकी निगाहें उसके अस्तित्व के हर कोने में उतर गईं, उसकी सारी गंदगी और बदतमीज़ी को देख लिया, और उसे अपनी मौन दया दिखाई। फिर वह गायब हो गई।
उसकी आँखों में देखते हुए, उशिकावा को एक तीव्र दर्द महसूस हुआ, मानो उसकी पसलियों में सुई चुभ गई हो। उसने खुद को एक बेहद कुटिल और बदसूरत आदमी समझा। लेकिन मैं क्या करूँ, उसने खुद से कहा। मैं सचमुच एक बेहद कुटिल और बदसूरत आदमी हूँ। और फिर, उसकी आँखों में करुणा की वह सच्ची और पारदर्शी अभिव्यक्ति उसकी आत्मा में गहराई तक उतर गई। वह उसे दोषी ठहराना चाहता था, उससे घृणा करना

चाहता था, उसका न्याय करना चाहता था, उसे दोषी ठहराना चाहता था। वह उसे बेसबॉल के बल्ले से पीटना चाहता था। वह यह सब सह लेता। लेकिन यह नहीं।
इसके मुकाबले, टेंगो कहीं अधिक शांत था। तस्वीर में, वह प्रवेश द्वार पर खड़ा था, उसकी निगाहें उसी की ओर टिकी थीं। वह फुकाएरी की तरह ही अपने आसपास के माहौल का सावधानीपूर्वक निरीक्षण कर रहा था। लेकिन उसकी नजर किसी चीज पर नहीं पड़ी। उसकी भोली-भाली आँखों ने न तो पर्दे के पीछे छिपे कैमरे को देखा, न ही अपने सामने बैठे उशिकावा को।
इसके बाद, उशिकावा ने "रहस्यमयी महिला" की तस्वीरें देखीं। उसके तीन फ्रेम थे। बेसबॉल कैप, काले फ्रेम का चश्मा, नाक तक खींचा हुआ धूसर स्कार्फ। उसके चेहरे की बनावट पहचानना मुश्किल था। सभी तस्वीरें धुंधली होने के साथ-साथ, विज़र की छाया भी उसके चेहरे पर पड़ रही थी। लेकिन यह उसके मन में बनी आओमामे की छवि से बिल्कुल मेल खाती थी। उशिकावा ने तीनों तस्वीरें लीं और उन्हें एक-एक करके देखा, मानो ताश के खेल में अपने पत्ते पर विचार कर रहा हो। जितना अधिक वह उसे देखता, उतना ही उसे यकीन होता जाता कि वह आओमामे के अलावा कोई और नहीं हो सकती।
उसने वेट्रेस को बुलाया और पूछा कि आज मिठाई में क्या है। वेट्रेस ने जवाब दिया, आड़ू पाई। उशिकावा ने एक हिस्सा और एक और कप कॉफी मंगवाई।
पाई के आने का इंतजार करते हुए उसने सोचा, अगर यह आओमामे नहीं है, तो मुझे नहीं लगता कि मुझे उससे दोबारा मिलने का मौका कभी मिलेगा।
पीच पाई उनकी उम्मीद से कहीं ज़्यादा स्वादिष्ट निकली। क्रस्ट कुरकुरा था और भरावन रसीला। शायद डिब्बाबंद आड़ू से बनी थी, लेकिन एक साधारण रेस्टोरेंट में मिठाई के तौर पर यह बिल्कुल भी बुरी नहीं थी। उशिकावा ने पाई खत्म की, कॉफी का कप खाली किया और संतुष्ट होकर वहाँ से चले गए। वे सुपरमार्केट गए और तीन दिन का सामान खरीदा, फिर अपने अपार्टमेंट लौट आए और कैमरे के पीछे अपना काम फिर से शुरू कर दिया।
पर्दे की दरार से अपार्टमेंट बिल्डिंग के प्रवेश द्वार को देखते हुए, उशिकावा रोशनी में दीवार से टेक लगाकर कई बार झपकी ले बैठा। लेकिन इससे उसे ज़्यादा चिंता नहीं हुई। सोते समय उससे कुछ खास छूटने वाला नहीं था। तेंगो अपने पिता के अंतिम संस्कार में गया था और टोक्यो से बाहर था, और फुकाएरी भी वापस नहीं आने वाली थी। वह जानता था कि फुकाएरी निगरानी जारी रखेगी। और इस बात की भी बहुत कम उम्मीद थी कि वह "रहस्यमयी महिला" दिन में दिखाई देगी। वह बहुत सावधानी बरत रही थी और अंधेरा होने तक कोई हरकत नहीं करेगी।
*

लेकिन अंधेरा होने के बाद भी वह "रहस्यमयी महिला" नहीं दिखी। वही जाने-माने चेहरे हमेशा की तरह खरीदारी करने, टहलने और काम से लौटने वाले लोग और भी थके हुए लग रहे थे। उशिकावा उन्हें बस देखता रहा, कैमरे का बटन दबाए बिना। अब उसे उनकी तस्वीरें खींचने का कोई कारण नहीं था। उसकी दिलचस्पी अब सिर्फ तीन लोगों में थी। बाकी सब तो बस राहगीर थे। समय बिताने के लिए वह हर किसी को उसके उपनाम से पुकारता था।
— श्रीमान माओ (उस व्यक्ति के बाल माओत्से तुंग के बालों से काफी मिलते-जुलते थे), काम से वापस आने पर आपका स्वागत है!
लिटिल ईयर, आज सैर के लिए कितना सुहावना और गर्म मौसम था, है ना?

"श्रीमती गुशाता, फिर से खरीदारी कर रही हैं? आज रात खाने में क्या खा रही हैं?"
उशिकावा रात ग्यारह बजे तक अपनी निगरानी जारी रखता है।
फिर उसने एक लंबी जम्हाई ली और अपना काम खत्म करने का फैसला किया। उसने बोतल से थोड़ी हरी चाय पी, कुछ नमकीन बिस्कुट चबाए और एक सिगरेट पी। जब वह बाथरूम में ब्रश कर रहा था, तो उसने अपनी जीभ बाहर निकाली और शीशे में देखा। उसने बहुत समय से अपनी जीभ नहीं देखी थी। ऐसा लग रहा था जैसे उस पर मिट्टी की मोटी परत जमी हो। उसका रंग हल्का हरा था, बिल्कुल असली काई जैसा। उशिकावा ने रोशनी में उसे ध्यान से देखा। वह डरावनी लग रही थी। वह उसकी पूरी जीभ पर जमी हुई थी और ऐसा लग रहा था कि उसे कभी हटाया नहीं जा सकता। अगर ऐसा ही चलता रहा, तो मैं मांसपेशियों वाला आदमी बन जाऊंगा, उसने सोचा। मेरी त्वचा पर जगह-जगह हरे धब्बे दिखाई देने लगेंगे, जीभ से शुरू होकर। दलदल में रहने वाले कछुए के खोल की तरह। इसके बारे में सोचकर ही मुझे उदासी छा जाती है।
उन अनकहे शब्दों के साथ, उशिकावा ने आह भरी और बाथरूम की लाइट बंद कर दी, अपनी भाषा के बारे में सोचना छोड़ दिया। उसने अंधेरे में अपने कपड़े उतारे और स्लीपिंग बैग में घुस गया। उसने ज़िप को गर्दन तक बंद किया और एक कीड़े की तरह सिकुड़कर लेट गया।
*

जब वह जागा, तो चारों ओर घना अंधेरा था। उसने घड़ी देखने के लिए सिर घुमाया, लेकिन वह अपनी जगह पर नहीं थी। उशिकावा कुछ पल के लिए असमंजस में पड़ गया। सोने से पहले, वह हमेशा यह सुनिश्चित करता था कि उसने अपनी घड़ी कहाँ रखी है, ताकि अंधेरे में भी वह तुरंत समय देख सके। यह उसकी वर्षों पुरानी आदत थी। तो फिर वह अपनी जगह पर क्यों नहीं थी? पर्दे की दरार से हल्की सी रोशनी छनकर आ रही थी, लेकिन वह कमरे के एक छोटे से कोने में ही फैल रही थी। चारों ओर रात का अंधेरा छाया हुआ था।
उशिकावा ने महसूस किया कि उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा है। वह ज़ोर से धड़क रहा था, मानो उसके पूरे शरीर में एड्रेनालाईन दौड़ रहा हो। उसकी नाक के नथुने फूल गए थे और सांस लेने में तकलीफ़ हो रही थी, मानो वह किसी गहन, उत्तेजक सपने से अभी-अभी जागा हो।
लेकिन उसने सपना नहीं देखा था। असलियत में कुछ घट रहा था। उशिकावा को महसूस हुआ कि कोई उसके सिर के ऊपर खड़ा है। कमरे के अंधेरे से भी ज़्यादा काली एक परछाई उसके चेहरे पर पड़ी। उसकी रीढ़ की हड्डी अकड़ गई। पल भर में उसका दिमाग वापस होश में आया और उसने सहज ही अपने स्लीपिंग बैग की ज़िप खोलने की कोशिश की।
ठीक उसी क्षण, किसी ने उसे सांस लेने का भी समय दिए बिना, उसकी गर्दन पर अपना हाथ कसकर पकड़ लिया। वे एक प्रशिक्षित और बलवान व्यक्ति की मांसपेशियां थीं। वह हाथ उसे बेरहमी से, शिकंजे में जकड़े हुए, कसकर दबा रहा था। उस व्यक्ति ने एक शब्द भी नहीं बोला। उसकी सांसें भी सुनाई नहीं दे रही थीं। उशिकावा अपने स्लीपिंग बैग में छटपटा रहा था। उसने अपने नाखूनों से नायलॉन की परत फाड़ दी और पैर पटके। उसने चीखने की कोशिश की, लेकिन इन सब का कोई फायदा नहीं हुआ। जैसे ही वह फर्श पर मजबूती से बैठ गया, हमलावर ने अपनी जगह से हिले बिना, धीरे- धीरे अपने हाथ की मांसपेशियों को कसना शुरू कर दिया। यह एक प्रभावी,

सुनियोजित हरकत थी। उशिकावा को अपनी श्वासनली पर बढ़ता दबाव महसूस हुआ और उसकी सांसें उथली होती चली गईं।
उस हताशा भरी हालत में उसके मन में यही सवाल उठा कि वह व्यक्ति घर में कैसे घुसा। दरवाजे पर सिलिंडर लॉक लगा था और वह बंद था। अंदर की तरफ एक चेन भी थी। सभी खिड़कियाँ भी पूरी तरह से बंद थीं। तो फिर वह अंदर कैसे घुस पाया? अगर उसने ताला तोड़ने की कोशिश की होती, तो ज़रूर आवाज़ आती और वह जाग जाता। उशिकावा ने सोचा, "यह तो पेशेवर है। ज़रूरत पड़ने पर, वह बिना किसी झिझक के इस आदमी को मार डालेगा। उसे इसके लिए प्रशिक्षित भी किया गया है। क्या अग्रदूतों ने उसे भेजा होगा? क्या उन्होंने मुझसे छुटकारा पाने का फैसला किया होगा? या उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला होगा कि मैं उनके किसी काम का नहीं हूँ और बस उनके रास्ते में रुकावट हूँ? यह गलत निष्कर्ष होगा, मैं आओमामे को पकड़ने के कगार पर हूँ।" उशिकावा ने बोलने की कोशिश की, उस आदमी से अपनी बात कहने की कोशिश की। उसे यह कहने की कोशिश की कि कम से कम पहले उसकी बात सुन ले। लेकिन उसकी आवाज़ नहीं निकल रही थी। उसके स्वर रज्जु को कंपन करने के लिए पर्याप्त हवा नहीं बची थी, और उसकी जीभ उसके गले के पिछले हिस्से में एक चट्टान की तरह अटक गई थी।
उसकी श्वास नली पूरी तरह से अवरुद्ध हो चुकी थी। हवा का एक झोंका भी अंदर नहीं जा पा रहा था। उसके फेफड़े ताज़ी ऑक्सीजन के लिए तड़प रहे थे, पर कहीं जाने का रास्ता नहीं था। उशिकावा को लगा जैसे उसका मन उसके शरीर से अलग हो रहा है। उसका शरीर स्लीपिंग बैग में छटपटाता रहा, जबकि उसकी चेतना भारी, चिपचिपी हवा की एक परत में समा गई। उसके हाथों और पैरों में सुन्नपन आने लगा था। क्यों? उसने बेहोश होते हुए सोचा। इतनी दयनीय जगह पर, इतने दयनीय तरीके से क्यों मरना? ज़ाहिर है, उसे कोई जवाब नहीं मिला। असीम अंधकार उस पर छा गया और सब कुछ अपनी चपेट में ले लिया।
*

जब उसे होश आया, तो वह अपने स्लीपिंग बैग से बाहर निकाला जा चुका था। उसे अपने हाथों और पैरों में कोई संवेदना नहीं थी। उसे बस इतना पता था कि उसकी आँखों पर पट्टी बंधी है और उसके गाल पर ज़मीन पर बिछी चटाई का स्पर्श हो रहा है। उसकी गर्दन खुली हुई थी। उसके फेफड़े फूल रहे थे और सिकुड़ रहे थे, ताज़ी हवा को ज़ोर-ज़ोर से अंदर खींच रहे थे, जैसे कोई धौंकनी चल रही हो। जमी हुई, सर्दियों की हवा। उसके खून में नई ऑक्सीजन पहुँच रही थी और उसका दिल उस गर्म लाल तरल को पूरी गति से उसकी नसों के छोर तक पंप कर रहा था। उशिकावा का ध्यान केवल साँस लेने पर केंद्रित था, वह बीच-बीच में ज़ोर से खांस रहा था। इसी बीच, धीरे-धीरे उसके हाथों और पैरों में संवेदना वापस आने लगी। उसके दिल की धड़कन की स्थिर आवाज़ उसके कानों में गूँज रही थी। मैं अभी भी ज़िंदा हूँ, उसने अँधेरे में खुद से कहा।
उशिकावा ज़मीन पर औंधे मुंह लेटा हुआ था। उसके हाथ पीछे की ओर एक मुलायम कपड़े से बंधे हुए थे। उसके टखने भी बंधे हुए थे। बंधन बहुत मज़बूत नहीं था, लेकिन प्रभावी और कुशलता से किया गया था। वह बस करवटें बदल सकता था। उशिकावा को आश्चर्य हुआ कि वह अभी भी जीवित है और सांस ले रहा है। तो यह मृत्यु नहीं थी। वह मृत्यु के बहुत करीब आ गया था, लेकिन मरा नहीं था। उसकी गर्दन में अभी भी तेज़ दर्द हो रहा था। उसकी अंडरवियर पेशाब से भीगी हुई थी, जो धीरे-धीरे

ठंडी हो रही थी। लेकिन यह बिल्कुल भी अप्रिय एहसास नहीं था। बल्कि, यह सुखद था। दर्द और ठंडक इस बात का प्रमाण थे कि वह अभी भी जीवित है।
"तुम इतनी आसानी से नहीं मरोगी," उस आदमी की आवाज ऐसे निकली मानो उसने उसके मन की बात पढ़ ली हो।

अध्याय 23 एक प्रकाश अवश्य होना चाहिए

आधी रात को रविवार सोमवार में बदल गया, लेकिन नींद आने में काफी समय लगा। आओमामे नहाकर उठी, पजामा पहना, बिस्तर पर लेट गई और लाइट बंद कर दी। देर तक जागने का कोई फायदा नहीं था, क्योंकि वैसे भी वो कुछ कर नहीं सकती थी। फिलहाल, मामला तमारू के हाथ में था। वो तो बिस्तर पर जाकर अगली सुबह तक के लिए सारी चिंताएं टाल देना चाहती थी, जब उसका दिमाग शांत होगा। लेकिन उसका दिमाग पूरी तरह से जागा हुआ था और शरीर हिलने-डुलने के लिए बेचैन था। उसके लिए सोना नामुमकिन था।
*

हताश होकर आओमामे बिस्तर से उठी और बाथरोब ओढ़ लिया। उसने पानी उबाला और अपने लिए एक कप हर्बल चाय बनाई, जिसे वह रसोई की मेज पर बैठकर धीरे-धीरे पीती रही। उसके मन में एक विचार बार-बार आ रहा था, पर वह समझ नहीं पा रही थी कि वह क्या है। वह विचार घना और गहरा था, मानो दूर कहीं बारिश का बादल मंडरा रहा हो। हालाँकि उसे उसका आकार दिखाई दे रहा था, पर उसकी रूपरेखा स्पष्ट नहीं हो पा रही थी। आकार और रूपरेखा में कुछ अस्पष्टता सी लग रही थी। आओमामे कप हाथ में लिए खिड़की के पास गई और पर्दे के बीच से पार्क को देखने लगी।
वह जगह बिल्कुल सुनसान थी। सुबह एक बजे, रेत का गड्ढा, झूले और स्लाइड सब खाली पड़े थे। रात बेहद शांत थी। हवा थम गई थी, आसमान में बादल नहीं थे। और अलग-अलग आकार के दो चाँद जमे हुए एल्म के पेड़ के ऊपर अगल-बगल तैर रहे थे। जब उसने आखिरी बार उन्हें देखा था, तब से पृथ्वी के घूमने के कारण उनकी स्थिति बदल गई थी, लेकिन वे फिर से उसकी नज़र के सामने आ गए थे।
वहाँ खड़े-खड़े आओमामे उस पुराने अपार्टमेंट भवन के बारे में सोचने लगी जिसमें कापाटाना दाखिल हुई थी और दरवाज़े नंबर 303 पर लगे सफेद कार्ड के बारे में। उस पर "कावाना" नाम बनाने वाले दो चित्रलिपि छपे हुए थे। वह कार्ड नया नहीं लग रहा था। उसके कोने मुड़े हुए थे और जगह-जगह नमी के धब्बे थे। वह कार्ड काफी समय से वहीं पड़ा था।
तामारू पता लगा लेगा कि किरायेदार तेंगो है या कोई और, जिसका नाम कावाना है, उसने सोचा। वह मुझे बहुत जल्द बता देगा, शायद कल तक। वह समय बर्बाद करने वाला आदमी नहीं है। और फिर मुझे पता चल जाएगा कि मामला क्या है और शायद मैं उससे जल्द ही मिल पाऊँगी। यह सोचकर आओमामे को घुटन महसूस हुई। उसके आसपास की हवा अचानक पतली हो गई।
लेकिन मामला इतना आसान नहीं है। भले ही 303 नंबर के मकान का किरायेदार टेंगो कावाना है, लेकिन उस इमारत में कैपाटाना नाम का एक अजीब आदमी छिपा हुआ है। और वो कुछ गड़बड़ कर रहा है, पता नहीं क्या, लेकिन कुछ तो गड़बड़ है। वो ज़रूर कुछ कर रहा है। वो ज़िद करके मुझसे और टेंगो से चिपका हुआ है और हमें दोबारा मिलने से रोकने की कोशिश कर रहा है।
नहीं, तुम्हें चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है, आओमामे ने खुद को समझाने की कोशिश की। तामारू एक भरोसेमंद आदमी है। साथ ही, वह मेरे जानने वालों में सबसे ज़्यादा सजग, कुशल और अनुभवी है। मैं सब कुछ उसके भरोसे छोड़ सकती हूँ,

रही गहरी भावनाओं को शब्दों में व्यक्त करने की कोशिश करने लगी। उस क्षण, उसे शायद कोई रहस्योद्घाटन तो नहीं हुआ, लेकिन एक स्पष्ट तस्वीर ज़रूर मिल गई।
मुझे यहाँ संयोग से नहीं लाया गया था।
उस तस्वीर से उसे यही आभास हुआ था।
मैं यहाँ इसलिए हूँ क्योंकि मुझे यहीं होना चाहिए।
अब तक मुझे लगता था कि मुझे बिना मेरी मर्ज़ी के 1Q84 में लाया गया है। किसी मकसद से स्विच बदला गया था, जिस ट्रेन में मैं था वह मुख्य पटरी से उतर गई थी और मुझे इस अजीब नई दुनिया में ले आई थी। अचानक मैंने खुद को यहाँ पाया। एक ऐसी दुनिया में जहाँ आकाश में दो चाँद हैं और जहाँ छोटे लोग घूमते हैं। जिसका एक प्रवेश द्वार है, लेकिन कोई निकास द्वार नहीं है।
नेता ने मरने से पहले मुझे ये सब बातें समझाई थीं। "द ट्रेन" असल में टेंगो की लिखी किताब थी, और मैं इस कहानी से गहराई से जुड़ा हुआ हूँ। इसीलिए मैं यहाँ हूँ। एक निष्क्रिय अस्तित्व के रूप में। एक सहायक कलाकार के रूप में, अज्ञानी और भ्रमित, घने कोहरे में भटकता हुआ।
लेकिन बात सिर्फ इतनी ही नहीं है, आओमामे ने सोचा। बात सिर्फ इतनी ही नहीं है। मैं केवल एक निष्क्रिय प्राणी नहीं हूँ, जिसे किसी और की इच्छा से, किसी बलपूर्वक यहाँ लाया गया हो। बेशक, यह पहलू भी है। लेकिन साथ ही, मैंने अपनी इच्छा से यहाँ रहना भी चुना है।
मैं अपनी मर्जी से यहाँ हूँ।
यह आओमामे की मान्यता थी।
मेरे यहाँ होने का कारण स्पष्ट है। और वह केवल एक ही है – टेंगो से मिलना और उसके साथ रहना। इसीलिए मैं इस दुनिया में हूँ। नहीं, बल्कि इसके विपरीत, यही एकमात्र कारण है कि यह दुनिया मेरे भीतर मौजूद है। या शायद यह एक विरोधाभास है, जैसे दो दर्पण आमने-सामने रखे हों और एक-दूसरे को अनंत काल तक प्रतिबिंबित करते हों। मैं इस दुनिया में हूँ, यह दुनिया मेरे भीतर है।
ज़ाहिर है, आओमामे को यह जानने का कोई तरीका नहीं था कि टेंगो जिस किताब को लिख रहा था, उसकी कहानी क्या थी। उस ब्रह्मांड में, आकाश में शायद दो चंद्रमा थे। शायद छोटे लोग भी प्रकट होते थे।
वह बस इतना ही अनुमान लगा सकती थी। लेकिन यह टेंगो की कहानी थी, और साथ ही, यह उसकी भी कहानी थी। आओमामे यह जानती थी।
उसे यह एहसास तब हुआ जब उसने उस दृश्य को दोबारा पढ़ा जिसमें नायिका रात में झोपड़ी में बैठकर नन्हे लोगों के साथ हवा का कोकून बुन रही होती है। उस विस्तृत और ताज़ा वर्णन को पढ़ते हुए उसे अपने पेट में एक गर्माहट महसूस हुई। एक मोहक गर्माहट, अजीब तरह से भेदने वाली। वहाँ गर्मी का एक स्रोत था जिसका भीतरी भाग छोटा लेकिन ठोस था। यह सोचने की ज़रूरत नहीं थी कि गर्मी का वह स्रोत क्या था और उससे निकलने वाली गर्मी क्या दर्शाती थी। वह उसका नन्हा जीव था। उसने नायिका को नन्हे लोगों के साथ हवा का कोकून बुनते हुए देखकर प्रतिक्रिया दी थी, और इसीलिए उसे गर्माहट महसूस हो रही थी।
ओमामे ने किताब को अपने बगल की मेज पर रखा, अपने पजामा टॉप के बटन खोले और अपना हाथ अपने पेट पर रखा। उसे भीतर से गर्माहट महसूस हो रही थी। ऐसा लग रहा था मानो उसके अंदर एक नारंगी रोशनी तैर रही हो। ओमामे ने लैंप बंद किया और कमरे के अंधेरे में उस रोशनी को खोजने लगी। वह बहुत हल्की सी टिमटिमाहट थी। लेकिन

धीरे-धीरे उसके पूरे शरीर में फैल गई। चाहे कुछ भी हो जाए, मुझे इस नन्हे जीव की रक्षा करनी है। मैं किसी को भी इसे मुझसे छीनने नहीं दूंगी। मैं किसी को भी इसे नुकसान नहीं पहुँचाने दूंगी। हम इसकी रक्षा करेंगे और इसे साथ मिलकर पालेंगे, आओमामे ने अंधेरे में दृढ़ निश्चय के साथ खुद से कहा।
फिर वह बेडरूम में गई, अपना बाथरोब उतारा और बिस्तर पर लेट गई। पीठ के बल लेटकर उसने अपना हाथ अपने पेट पर रखा और हथेली में फिर से गर्माहट महसूस की। चिंता गायब हो गई थी। उसे अब कोई संदेह नहीं था। मुझे और भी मजबूत बनना होगा, उसने खुद से कहा। मेरा दिल मेरे शरीर के साथ एक हो जाना चाहिए। आखिरकार, नींद धुएं की तरह चुपचाप उसके पास आई और उसे अपनी गिरफ्त में ले लिया। दो चांद अब भी हवा में अगल-बगल तैर रहे थे।

अध्याय 24 बिल्ली शहर छोड़ना

उनके पिता का शव, साफ-सुथरी इस्त्री की हुई एनएचके वर्दी में, एक साधारण ताबूत में रखा था। शायद सबसे सस्ता ताबूत। यह एक भद्दा ताबूत था, संदूक से ज्यादा ठोस नहीं। हालांकि मृतक कद में छोटे थे, लेकिन लंबाई में एक इंच भी जगह नहीं बची थी। प्लाईवुड से बना और बिना किसी सजावट के बना यह ताबूत ठीक नहीं था। ठेकेदार ने शर्मिंदा होकर टेंगो से पूछा कि क्या यह ठीक है। टेंगो ने कहा कि हाँ। यही वह ताबूत था जिसे उनके पिता ने कैटलॉग से चुना था और जिसके लिए उन्होंने पैसे दिए थे। अगर मृतक को कोई आपत्ति नहीं थी, तो टेंगो को भी नहीं थी।
एनएचके की वर्दी पहने और अपने साधारण ताबूत में लेटे हुए उनके पिता मृत नहीं लग रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो वे काम के दौरान झपकी ले रहे हों। ऐसा लग रहा था कि वे किसी भी क्षण अपनी आँखें खोलेंगे, खड़े होंगे, अपनी टोपी पहनेंगे और मैदान में चले जाएँगे। एनएचके के प्रतीक चिन्ह से सजी वर्दी उनकी त्वचा का ही हिस्सा लग रही थी। वे इसे पहनकर ही दुनिया में आए थे और इसी में उनका अंतिम संस्कार होना था। उन्हें इस तरह देखकर, टेंगो को उनकी अंतिम यात्रा के लिए इससे अधिक उपयुक्त वस्त्र कोई और नहीं सूझा। वैगनर के ओपेरा के योद्धाओं की तरह, उन्हें अपने कवच में ही आग में जलाया गया।
मंगलवार की सुबह, टेंगो और कुमी के सामने, उन्होंने ताबूत का ढक्कन बंद किया और उसे कीलों से ठोक दिया। फिर उन्होंने शव को शव वाहन में रखा। शव वाहन वही व्यावहारिक टोयोटा वैन थी जो शव को अस्पताल से अंतिम संस्कार गृह तक ले गई थी। बस इस बार, स्ट्रेचर की जगह ताबूत था। यह सबसे सस्ता शव वाहन रहा होगा। उसमें कोई गंभीरता नहीं थी। यहाँ तक कि 'ट्वाइलाइट ऑफ़ द गॉड्स' का संगीत भी नहीं बज रहा था। लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि टेंगो को शव वाहन पर आपत्ति करने का कोई कारण था। कुमी को भी कोई परवाह नहीं थी। यह तो बस परिवहन का एक साधन था। महत्वपूर्ण बात यह थी कि एक व्यक्ति इस दुनिया से चला गया था, और पीछे रह गए लोगों को इस तथ्य को अच्छी तरह से समझना ज़रूरी था। वे दोनों एक टैक्सी में बैठे और उस काली वैन के पीछे चल दिए।
पहाड़ी के किनारे वाली सड़क से निकलने के बाद, वे पहाड़ पर थोड़ी दूर चले और श्मशान घाट पर पहुँचे। यह अपेक्षाकृत नई इमारत थी, लेकिन बेहद नीरस थी, श्मशान घाट की बजाय किसी कारखाने या सरकारी संस्था जैसी लग रही थी। लेकिन इसमें एक सुंदर, सुव्यवस्थित बगीचा था, और आसमान में शान से उठती चिमनी यह बताती थी कि यह इमारत किसी विशेष उद्देश्य के लिए बनी है। उस दिन ज्यादा भीड़ नहीं थी, इसलिए ताबूत बिना किसी प्रतीक्षा के सीधे भट्टी में चला गया। उसे धीरे से अंदर धकेला गया, फिर भारी ढक्कन पनडुब्बी के हैच की तरह बंद हो गया। हाथों में दस्ताने पहने एक बुजुर्ग कर्मचारी ने तेंगो को प्रणाम किया, फिर प्रज्वलन बटन दबा दिया। कुमी ने बंद ढक्कन की ओर मुँह करके अपने हाथ जोड़ लिए, और तेंगो ने भी ऐसा ही किया।
अंतिम संस्कार एक घंटे तक चला, जिसे टेंगो और कुमी ने इमारत के एक विश्राम कक्ष में बिताया। कुमी ने वेंडिंग मशीन से गर्म कॉफी के दो कैन खरीदे और चुपचाप पी लिए। वे एक बड़ी कांच की खिड़की के सामने एक बेंच पर अगल-बगल बैठे

थे। खिड़की के पार बगीचा था, जिसमें सर्दियों में पीली पड़ चुकी घास और पत्तों से रहित पेड़ों का एक झुंड था, जिनकी शाखाओं पर दो अज्ञात काले पक्षी बैठे थे। उनकी लंबी पूंछें और छोटे शरीर थे, लेकिन उनकी चहचहाहट तेज और बुलंद थी। जब वे गाते थे, तो अपनी पूंछें सीधी ऊपर उठाते थे। पेड़ों के ऊपर नीला शीतकालीन आकाश फैला हुआ था, जिसमें एक भी बादल नहीं था। कुमी ने एक छोटी काली पोशाक पहनी थी, जिसके ऊपर उसने क्रीम रंग का कोट पहना था। टेंगो ने गले के नीचे कॉलर वाला काला स्वेटर और गहरे भूरे रंग की ज़िगज़ैग जैकेट पहनी थी। पैरों में उसने भूरे रंग के लोफर्स पहने थे। यह उसका सबसे औपचारिक पहनावा था। "मेरे पिता का अंतिम संस्कार यहीं हुआ था," कुमी ने कहा। "मेरे साथ आए लोग लगातार धूम्रपान कर रहे थे। आपने कहा था कि छत से धुएं का बादल लटका हुआ था। आप क्या कर सकते हैं, वे सब उनके दोस्त थे, मछुआरे थे।"
टेंगो ने उस दृश्य की कल्पना की। धूप से झुलसे हुए लोगों का एक समूह, गहरे रंग के सूट पहने हुए, जिनमें वे सहज महसूस नहीं कर रहे थे, सिगरेट के कश लगा रहे थे। और उसके पिता का शोक मना रहे थे, जिनकी फेफड़ों के कैंसर से मृत्यु हो गई थी। लेकिन अब, कमरे में केवल वे दोनों ही थे। उनके चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। केवल पेड़ों के झुरमुट में पक्षियों की छिटपुट चहचहाहट ही उस सन्नाटे को तोड़ रही थी। न कोई संगीत था, न ही किसी की गुनगुनाहट। सूरज की कोमल रोशनी ज़मीन पर पड़ रही थी। उसकी किरणें खिड़की से कमरे में प्रवेश कर रही थीं, मानो उनके पैरों पर प्रकाश की एक शांत किरण बिखेर रही हों। समय धीरे-धीरे बीत रहा था, जैसे किसी नदी का पानी मुहाने के पास बहता है।
उस लंबे मौन के अंत में टेंगो ने कहा, "मेरे साथ आने के लिए धन्यवाद।"
कुमी ने हाथ बढ़ाकर अपना हाथ उसके हाथ पर रख दिया।
"अकेले रहना मुश्किल है। किसी का साथ होना बेहतर है। असल बात तो यही है।" "हाँ, बिल्कुल सही," टेंगो ने स्वीकार किया।
"किसी की मृत्यु होना बहुत कठिन होता है, चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों। क्योंकि यह दुनिया में एक गहरे खालीपन की तरह है। और हमें इसे उचित सम्मान देना होगा। अन्यथा, यह ठीक से भर नहीं पाएगा।"
मैं सहमत हूं।
कुमी ने कहा, "गड्ढा खुला नहीं छोड़ना चाहिए। क्योंकि कोई उसमें गिर सकता है।"
"लेकिन कभी-कभी लोग अपनी आत्मा में रहस्य लिए मर जाते हैं," टेंगो ने कहा। "और जब गड्ढा भर जाता है, तो रहस्य भी उसके साथ चले जाते हैं।"
मैं तो यही मानता हूं कि ऐसा ही होना चाहिए।
- क्यों?
अगर वह व्यक्ति मरने के समय उन्हें अपने साथ ले जाता है, तो इसका मतलब है कि कुछ ऐसे रहस्य थे जिन्हें पीछे नहीं छोड़ा जाना चाहिए था।
"उन्हें पीछे क्यों न छोड़ दिया जाए?"
कुमी ने अपना हाथ उसके हाथ से छुड़ाया और उसकी आंखों में देखा।
शायद इसलिए कि यह उन चीजों के बारे में है जिन्हें केवल वही व्यक्ति ठीक से समझ सकता था जो मर चुका है। ऐसी चीजें जिन्हें शब्दों में बयां करना नामुमकिन है, चाहे आप उन्हें शब्दों में कितना भी समेटने की कोशिश करें, और जिन्हें उस

व्यक्ति के पास मृत्यु के साथ ले जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। जैसे कोई बहुत महत्वपूर्ण सामान।
टेंगो अपने पैरों के पास पड़ी प्रकाश की किरण को घूरता रहा, उसका मुंह बंद था। वह किरण लिनोलियम के फर्श पर तेज़ी से चमक रही थी। उसके सामने उसके फटे हुए लोफ़र्स और कुमी के सादे काले जूते थे। वह दृश्य बिल्कुल सामने था, पास ही था, फिर भी मानो मीलों दूर था।
"आपके पास भी कुछ ऐसी चीजें हैं जिन्हें आप दूसरों को समझा नहीं सकते, है ना?"
- मुझे भी ऐसा ही लगता है।
कुमी ने बिना कुछ कहे, काली टाइट्स में लिपटी अपनी टांगों को देखा।
"तुमने कहा था कि तुम एक बार मर चुकी हो?" टेंगो ने उससे पूछा।
"हां, मैं एक बार मर चुका था। एक उदास रात में, ठंडी बारिश के बीच।"
— क्या आपको याद है कि क्या हुआ था?
"हां, यह कुछ ऐसा है जिसका मैं लंबे समय से सपना देख रही थी। एक बहुत ही वास्तविक सपना और हमेशा बिल्कुल वैसा ही। मुझे बस यही विश्वास हो रहा है कि यह सचमुच हो गया है।"
"क्या आपको लगता है कि यह पुनर्जन्म है?"
"पुनर्जन्म?"
हां, पुनः जन्म लेना। पुनर्जन्म।
कुछ पल सोचने के बाद कुमी ने कहा, "क्या मुझे पता है?" शायद हाँ। या शायद नहीं। "क्या मरने के बाद आपको इसी तरह जलाया गया था?"
कुमी ने अपना सिर हिलाया।
"मुझे इतना याद नहीं है। क्योंकि मृत्यु के बाद ऐसा ही होता है। मुझे सिर्फ इतना याद है कि मैं कब मरा। किसी ने मेरा गला पकड़ लिया। एक अनजान आदमी, जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था।"
"क्या आपको अभी भी याद है कि वह कैसा दिखता था?"
"बिल्कुल, मैं उन्हें जानती हूँ। मैंने उन्हें अपने सपनों में कई बार देखा है। अगर मैं उनसे सड़क पर मिलूँ, तो मैं उन्हें देखते ही पहचान लूँगी।"
और अगर आप उससे सड़क पर मिलें तो आप क्या करेंगे?
कुमी ने अपनी नाक को उंगली के सिरे से रगड़ा, मानो यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह अभी भी उसके पास है।
मैंने खुद भी इस बारे में कई बार सोचा है। अगर मैं उससे सड़क पर टकरा जाऊं तो मैं क्या करूंगी? शायद मैं भाग जाऊं। या शायद मैं उसका पीछा करूं। मुझे उस पल तक पता नहीं चलेगा।
— अगर आप उसका अनुसरण करते, तो आगे क्या करते?
मुझे नहीं पता। लेकिन हो सकता है कि वह व्यक्ति मेरे बारे में कोई महत्वपूर्ण रहस्य जानता हो। शायद मेरी किस्मत अच्छी हो और मुझे पता चल जाए।
"किस तरह का रहस्य?"
"यहाँ होने का क्या मतलब है या कुछ ऐसा ही?"
"लेकिन शायद वे तुम्हें एक बार और मार डालें।"
"शायद," कुमी ने कहा और अपने होंठ हल्के से सिकोड़ लिए। "यह खतरनाक होगा। मुझे पता है, बिल्कुल। शायद भाग जाना, वहाँ से निकल जाना ही सबसे अच्छा होगा। लेकिन यह रहस्य, जो निश्चित रूप से मौजूद है, मुझे बेतहाशा आकर्षित कर रहा है। ठीक

वैसे ही जैसे कोई बिल्ली अपने सामने आने वाले किसी अंधेरे छेद में झाँकने से खुद को नहीं रोक पाएगी।"
*

अंतिम संस्कार पूरा होने के बाद, रीति-रिवाजों के अनुसार, कुमी और टेंगो ने अपने पिता की अस्थियों को कलश में रखा। कलश टेंगो को सौंप दिया गया। उसने उसे ले लिया, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसका क्या करे। वह उसे कहीं भी नहीं छोड़ना चाहता था। कुमी को बाहों में लिए वह टैक्सी से स्टेशन के लिए रवाना हुआ।
टैक्सी में कुमी ने उससे कहा, "मैं प्रशासनिक मामलों को संभाल लूंगा जिन्हें सुलझाना बाकी है," और थोड़ा सोचने के बाद उसने आगे कहा, "क्या आप चाहते हैं कि मैं मतदान का काम भी संभाल लूं?"
"क्या तुम ऐसा कर सकते हो?" ये शब्द सुनकर टेंगो स्तब्ध रह गया।
"मुझे इसमें कोई दिक्कत नहीं दिखती," उसने जवाब दिया। "मैंने ऐसे कई अंत्येष्टि समारोहों के बारे में सुना है जिनमें परिवार का कोई भी सदस्य नहीं आता।"
"अगर आप ऐसा करेंगे तो इससे मुझे बहुत मदद मिलेगी," टेंगो ने कहा।
उसे थोड़ा अपराधबोध हुआ, लेकिन उसने राहत की एक गहरी साँस लेते हुए उसे कुमी को सौंप दिया। उस क्षण उसने सोचा कि वह उन हड्डियों को फिर कभी नहीं देख पाएगा। अब बस यादें ही बची थीं। और वे यादें भी एक दिन धूल और राख में मिल जाएँगी।
मैं इसी इलाके का रहने वाला हूँ और मैं इसे आसानी से संभाल सकता हूँ। बेहतर होगा कि आप जितनी जल्दी हो सके टोक्यो वापस चले जाएं। बेशक हम आपको पसंद करते हैं, लेकिन यह हमेशा के लिए रहने की जगह नहीं है।
मतलब, बिल्ली वाले शहर को छोड़ दो, टेंगो ने सोचा।
"हर चीज के लिए धन्यवाद," उसने फिर कहा।
— टेंगो, क्या मैं आपको कुछ सलाह दे सकता हूँ? हालाँकि मैं सलाह देने की स्थिति में नहीं हूँ।
- बेशक मैं।
मुझे लगता है तुम्हारे पिता कोई राज़ लेकर दूसरी दुनिया में चले गए हैं। और तुम इस बात से थोड़ी परेशान लग रही हो। मैं तुम्हें समझती हूँ। लेकिन सच में, उस अंधेरे छेद में झाँकने की कोशिश मत करो। उसे बिल्लियों पर छोड़ दो। तुम ऐसा व्यर्थ कर रही हो, इससे तुम्हें कुछ हासिल नहीं होगा। बेहतर होगा कि तुम सोचो कि आगे क्या होने वाला है।
"इस छेद को बंद करना होगा," टेंगो ने कहा।
"बिल्कुल सही। उल्लू यही कहता है। क्या तुम्हें याद है?"
- बेशक मैं।
उल्लू जंगल के रक्षक देवता हैं और चूंकि वे सब कुछ जानते हैं, इसलिए वे रात के ज्ञान को हमारे साथ साझा करते हैं।
क्या वह अब भी बाग में बैठकर गा रहा है?
नर्स ने कहा, "उल्लू कहीं नहीं जाते। वे वहीं रहते हैं जहां वे होते हैं।"

*

"तुम ये सब व्यर्थ में कर रहे हो, इससे तुम्हें कुछ हासिल नहीं होने वाला," कुमी ने उससे कहा था। "तुम्हें बेहतर होगा कि सोच लो कि इसका क्या परिणाम होगा।"
लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता, टेंगो ने सोचा। बात सिर्फ इतनी ही नहीं है। हो सकता है कि रहस्य जानने के बाद भी मुझे कोई फायदा न हो। लेकिन मुझे यह पता लगाना होगा कि इससे मुझे कोई फायदा क्यों नहीं हो रहा है। अगर मैं इसे ठीक से समझ लूं, तो शायद मुझे कुछ हासिल हो जाए।
टेंगो ने ब्लैक होल से कहा, "तुम मेरे असली पिता थे या नहीं, इससे अब कोई फर्क नहीं पड़ता। जो भी हो, मुझे कोई परवाह नहीं। वैसे भी, तुम मेरे एक अंश को अपने साथ लेकर मरे, और मैं तुम्हारे एक अंश को अपने साथ लेकर ज़िंदा रहा। चाहे हमारा खून का रिश्ता हो या न हो, यह एक ऐसा तथ्य है जिसे बदला नहीं जा सकता। समय बीत चुका है, दुनिया आगे बढ़ चुकी है।"
टेंगो को लगा कि उसने खिड़की के बाहर उल्लू की आवाज सुनी। लेकिन जाहिर है, यह सिर्फ एक भ्रम था।

अध्याय 25 सर्दी हो या न हो, ईश्वर उपस्थित रहेगा

"इतनी आसानी से मौत नहीं आती," पीछे से एक आदमी की आवाज़ आई, मानो उसने उसके मन की बात पढ़ ली हो। "तुम बस बेहोश हुई हो। लेकिन तुम अपनी सीमा तक पहुँच चुकी हो।"
वह आवाज़ उसके लिए अपरिचित थी। तटस्थ, भावहीन। न पतली, न गहरी, न कठोर, न नरम। ऐसी आवाज़ जिससे हवाई जहाज़ों की उड़ान अनुसूची या शेयर बाजार की स्थिति की घोषणा की जाती है।
आज कौन सा दिन है? उशिकावा ने बिल्कुल बेतुके ढंग से सोचा। सोमवार की शाम है। या यूँ कहें कि मंगलवार है, क्योंकि तारीख तो बदल ही गई होगी।
"उशिकावा-सान," उस आदमी ने कहा। "क्या मैं आपको उशिकावा-सान कह सकता हूँ, ठीक है?"
उशिकावा चुप रहा। लगभग बीस सेकंड तक चुप्पी छाई रही, फिर अचानक उस आदमी ने उसकी बाईं किडनी पर एक जोरदार मुक्का मारा। पीछे से आया मुक्का, चुपचाप लेकिन बेहद शक्तिशाली। उसके शरीर में तेज दर्द की लहर दौड़ गई। उसके सारे अंग सिकुड़ गए और दर्द थोड़ा कम होने तक वह ठीक से सांस नहीं ले पा रहा था। अंत में, उशिकावा के मुंह से एक सूखी सी आह निकली।
“मैंने विनम्रता से एक सवाल पूछा है और मुझे जवाब चाहिए। अगर आप अभी ठीक से बोल नहीं सकते, तो बस हां या ना में सिर हिला दीजिए। यह शिष्टाचार की बात है,” उस आदमी ने कहा। “क्या मैं आपको उशिकावा-सान कह सकता हूँ?”
उशिकावा ने कई बार सिर हिलाया।
"उशिकावा-सान। याद रखने में आसान नाम। मुझे यह मेरी पैंट में रखे बटुए में मिला। अंदर मुझे मेरा ड्राइविंग लाइसेंस और बिजनेस कार्ड मिले। स्थायी प्रबंधक, विज्ञान और कला संवर्धन हेतु नव जापान संघ। कितना प्रभावशाली पदनाम है, उशिकावा-सान! लेकिन विज्ञान और कला संवर्धन हेतु नव जापान संघ का एक स्थायी प्रबंधक इस तरह की जगह पर, छिपे हुए कैमरे के साथ क्या कर रहा है?" उशिकावा चुप था। वह अभी भी बोलने में असमर्थ था।
“तुम्हें जवाब देना ही होगा,” उस आदमी ने कहा। “मैं तुम्हें यही सलाह देता हूँ। गुर्दे के कुचल जाने से तुम्हें जीवन भर दर्द सहना पड़ेगा।”
"मैं इस अपार्टमेंट बिल्डिंग में रहने वाले किसी व्यक्ति पर नज़र रख रहा था," उशिकावा ने अंततः उत्तर दिया।
उनकी आवाज अब भी कांप रही थी और कभी-कभी फट भी रही थी। आंखों पर पट्टी बंधी होने के कारण, उनकी आवाज उनकी अपनी आवाज जैसी भी नहीं लग रही थी।
क्या वो राज्यपाल हैं?
उशिकावा ने सिर हिलाया।
“टेंगो कावाना, जिसने ‘द एयर क्राइसालिस’ को फिर से लिखा था।” उशिकावा ने फिर सिर हिलाया और खांसा। उस आदमी को इसके बारे में पता था।
"तुम्हें किसने नियुक्त किया?"
— अग्रणी लोग।

"कम से कम मुझे तो यही उम्मीद थी, उशिकावा-सान। लेकिन संप्रदाय इस समय तेंगो कावाना पर नज़र क्यों रख रहा है? वह उनके लिए बिल्कुल भी महत्वपूर्ण व्यक्ति नहीं है।"
उशिकावा ने तुरंत अपना दिमाग लगाना शुरू किया और यह पता लगाने की कोशिश करने लगा कि यह आदमी किस पद पर है और उसे कितनी जानकारी है। उसे इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि वह कौन है, लेकिन कम से कम वह पायनियर्स द्वारा नहीं भेजा गया था। फिलहाल, वह यह नहीं कह सकता था कि यह अच्छी बात है या नहीं।
"मैंने तुमसे कुछ पूछा था," उसने कहा और अपनी उंगलियों से उसकी बाईं किडनी में हल्का सा धक्का दिया।
शक्ति के साथ।
"इसका संबंध एक खास महिला से है," उशिकावा ने आह भरी।
"इस महिला का नाम क्या है?"
— आओमामे.
और तुम उसका पीछा क्यों कर रहे हो?
— क्योंकि उसने संप्रदाय के नेता को चोट पहुंचाई थी।
"उसने उसे चोट पहुँचाई," उस आदमी ने कहा, मानो उसके चेहरे के भावों को परख रहा हो। "तुम्हारा मतलब है कि उसने उसे मार डाला, है ना?" सीधे-सीधे।
"हां," उशिकावा ने उत्तर दिया।
उसने सोचा, इस आदमी से कुछ भी छिपा नहीं सकते। देर-सवेर वो तुम्हें सच उगलवा ही देगा।
लेकिन यह बात किसी को पता नहीं है।
इसे गुप्त रखा गया है।
— इस संप्रदाय में कितने लोगों को यह रहस्य पता है?
— बस एक हाथ।
और आप भी उन्हीं में से एक हैं।
उशिकावा ने सिर हिलाया।
"इसका मतलब है कि आप संप्रदाय में एक महत्वपूर्ण पद पर आसीन हैं।"
"नहीं," उशिकावा ने सिर हिलाते हुए कहा। सिर हिलाते ही उन्हें अपनी घायल किडनी में दर्द महसूस हुआ। मैं तो बस एक छोटा-सा कदम रखने वाला हूँ। बस ऐसे ही पता लगाने के लिए ये सब हुआ।
"गलत आदमी गलत जगह पर। कुछ ऐसा ही?"
- हाँ।
"वैसे, क्या अब आप अकेले ही अभिनय कर रहे हैं?"
उशिकावा ने सिर हिलाया।
— यह थोड़ा अजीब है। आम तौर पर, निगरानी और ट्रैकिंग के लिए एक टीम बनाई जाती है। और अगर आपूर्ति की ज़िम्मेदारी के लिए एक और व्यक्ति को शामिल कर लिया जाए, तो कम से कम तीन लोगों की ज़रूरत होती है। और आप एक संगठन हैं, इसलिए आप हमेशा समूहों में ही काम करते हैं। स्वतंत्र रूप से काम करना स्वाभाविक नहीं है। इसीलिए आपका जवाब मुझे ठीक नहीं लगा।
"मैं किसी पंथ का सदस्य नहीं हूँ," उशिकावा ने कहा। उनकी साँसें सामान्य हो गई थीं और वे फिर से सामान्य रूप से बात कर पा रहे थे। "वे मुझे निजी तौर पर काम

पर रखते हैं। जब उनके लिए किसी बाहरी व्यक्ति का उपयोग करना अधिक सुविधाजनक होता है, तब वे मुझे बुलाते हैं।"
— क्या वे विज्ञान और कला संवर्धन हेतु न्यू जापान एसोसिएशन के स्थायी प्रबंधक के रूप में कार्य करेंगे?
"यह एक काल्पनिक संस्था है। इसका वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं है। इसे उनके करों में सहायता करने के लिए बनाया गया था। मैं उनके लिए एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में विभिन्न मामलों को संभालता हूं, न कि उनमें से एक बनकर।"
— तो तुम किसी तरह के भाड़े के सैनिक हो।
"नहीं, मैं भाड़े का सैनिक नहीं हूँ। मैं तो बस उनके कहने पर जानकारी इकट्ठा करता हूँ। अगर हिंसा की ज़रूरत पड़ती है, तो वो काम संप्रदाय के दूसरे लोग संभालते हैं।"
— उशिकावा-सान, क्या संप्रदाय ने आपको टेंगो का पीछा करने और यह पता लगाने के लिए कहा था कि आओमामे से उसका क्या संबंध है?
- हाँ।
नहीं। गलत जवाब। अगर उस पंथ को पता होता कि आओमामे और टेंगो कावाना के बीच कोई संबंध है, तो वे आपको अकेले उसकी निगरानी करने नहीं देते। वे अपने लोगों की एक टीम भेजते। इस तरह भागने वालों की संख्या कम होती और वे बल प्रयोग कर सकते थे। "लेकिन ठीक यही हुआ है। मैं तो बस उनके निर्देशों का पालन कर रहा हूँ। मुझे भी समझ नहीं आता कि उन्होंने मुझे इससे खुद निपटने के लिए क्यों छोड़ दिया," उशिकावा ने जवाब दिया, उसकी आवाज फिर से अस्थिर थी और बीच-बीच में टूट रही थी। अगर उसे पता चला कि पायनियर्स को अभी भी आओमामे और टेंगो के बीच के संबंध के बारे में नहीं पता है, तो वह शायद मुझे बता देगा। क्योंकि इस तरह, अगर मैं गायब हो जाऊं तो किसी को भी इसके बारे में पता नहीं चलेगा।
"मुझे गलत जवाब पसंद नहीं हैं," उस आदमी ने ठंडे लहजे में कहा। "और तुम्हें यह बात कड़वे अनुभव से सीखनी होगी। मैं तुम्हारी किडनी पर फिर से मुक्का मार सकता हूँ। लेकिन अगर मैंने तुम्हें ज़्यादा ज़ोर से मारा, तो मेरे हाथ में भी दर्द होगा, और मेरा मकसद तुम्हारी किडनी को बर्बाद करना नहीं है। मुझे तुमसे कोई व्यक्तिगत दुश्मनी नहीं है। मेरा एक ही मकसद है, और वो है सही जवाब पाना। इसीलिए हम एक नई योजना लागू करने जा रहे हैं। मैं तुम्हें समुद्र की गहराई में भेज रहा हूँ।"
समुद्र की तलहटी? उशिकावा सोचने लगा। आखिर वह किस चीज़ की बात कर रहा है?
वह आदमी अपनी जेब से कुछ निकाल रहा था। प्लास्टिक रैप जैसी सरसराहट की आवाज़ आई और किसी चीज़ ने उसका पूरा सिर ढक लिया। वह एक थैला था। मोटा सा, जैसा खाना फ्रीज़ करने के लिए इस्तेमाल होता है। फिर उसने उसे एक मज़बूत रबर बैंड से अपने गले में बाँध लिया। उशिकावा समझ गया, "यह आदमी मुझे दम घोंटकर मारना चाहता है।" उसने साँस लेने की कोशिश की, लेकिन थैला उसके मुँह में चला गया। और उसकी नाक बंद हो गई। उसके फेफड़ों को ताज़ी ऑक्सीजन की सख्त ज़रूरत थी, लेकिन उन्हें मिल नहीं पा रही थी। थैला उसके चेहरे पर मौत के मुखौटे की तरह चिपक गया था। जल्द ही उसकी सारी मांसपेशियाँ फड़कने लगीं। उशिकावा ने उसे हटाने के लिए हाथ बढ़ाने की कोशिश की, लेकिन उसके हाथ पीछे कसकर बंधे होने के कारण हिल नहीं पा रहे थे। उसका दिमाग गुब्बारे की तरह फूल गया, फटने को तैयार। वह चीखना चाहता था। उसे किसी भी कीमत पर हवा की सख्त ज़रूरत थी। लेकिन ज़ाहिर है, उसकी

आवाज़ नहीं निकल रही थी। उसकी जीभ चौड़ी खुल गई थी। उसकी चेतना धीरे-धीरे खत्म हो रही थी।
अंततः, उसके गले का पट्टा ढीला हो गया और थैला उसके सिर से गिर गया। उशिकावा ने बेबसी से गहरी साँस ली। फिर, कई मिनट तक, वह ज़ोर-ज़ोर से हाँफता रहा, अपनी पीठ को ऐसे मोड़ता रहा जैसे कोई जानवर किसी ऐसी चीज़ को काटने की कोशिश कर रहा हो जिस तक वह पहुँच नहीं सकता।
"समुद्र की गहराई में कैसा लगा?" उस आदमी ने अपनी सांसें सामान्य होने का इंतज़ार करते हुए पूछा। उसकी आवाज़ भी उतनी ही सपाट थी। "तुम गहराई तक गए। मुझे लगता है तुमने वहाँ कई ऐसी चीज़ें देखीं जो तुमने पहले कभी नहीं देखी थीं। यह एक बहुत ही मूल्यवान अनुभव है।"
उशिकावा कुछ नहीं कह सका। उसकी आवाज सुन्न हो गई थी।
"उशिकावा-सान, मैंने आपको पहले भी बताया है और फिर से बता रहा हूँ, मुझे सही जवाब चाहिए। इसलिए मैं आपसे फिर पूछता हूँ। क्या संप्रदाय ने आपको तेंगो कावाना का पीछा करने और उसके और आओमामे के बीच संबंध खोजने का काम सौंपा है? यह बहुत महत्वपूर्ण मामला है। जीवन और मृत्यु का मामला है। ध्यान से सोचें और सही उत्तर दें। अगर आप मुझसे झूठ बोलेंगे तो मुझे पता चल जाएगा।"
"इस संप्रदाय को इसके बारे में कुछ नहीं पता," उशिकावा ने किसी तरह बुदबुदाते हुए कहा।
"हाँ, सही उत्तर। संप्रदाय को अभी तक यह नहीं पता कि आओमामे और टेंगो कावाना के बीच कोई संबंध है। आपने अभी तक इस तथ्य को उनके ध्यान में नहीं लाया है। है ना?"
उशिकावा ने सिर हिलाया।
"अगर आपने पहली बार में ही सही जवाब दे दिया होता, तो आप समुद्र की तलहटी को दोबारा देखे बिना ही बच जाते। यह बुरा था, है ना?"
उशिकावा ने सिर हिलाया।
“मुझे पता है। मैंने एक बार इसका अनुभव किया है,” उस आदमी ने ऐसे कहा जैसे वह किसी मामूली घटना के बारे में बात कर रहा हो। “जिसने इसे खुद न झेला हो, वह इसकी भयावहता को समझ ही नहीं सकता। दर्द को आसानी से एक ही श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। हर दर्द की अपनी अलग विशेषता होती है। अगर आप मुझे टॉलस्टॉय के शब्दों को थोड़ा बदलकर कहने की अनुमति दें, तो सभी सुख एक जैसे होते हैं, लेकिन हर दर्द अलग होता है। और तो और, हर दर्द का अपना अलग ही अंदाज़ होता है। क्या आप ऐसा नहीं सोचते?”
उशिकावा ने सिर हिलाया। वह अभी भी तेजी से सांस ले रहा था।
वह व्यक्ति आगे कहता है:
"तो चलिए खुलकर, स्पष्ट रूप से, बिना कुछ छिपाए बात करते हैं। आपका क्या कहना है, उशिकावा-सान?"
उशिकावा ने सिर हिलाया।
"अगर मुझे एक और गलत जवाब मिला, तो मैं तुम्हें समुद्र की गहराई में एक और यात्रा पर भेज दूँगा। इस बार थोड़ा लंबा और धीमा। सीमा के और करीब। और अगर नतीजा बुरा रहा, तो शायद तुम वापस भी न आ सको। तुम ऐसा नहीं चाहोगे, है ना?" उशिकावा ने अपना सिर हिलाया।

— मुझे लगता है कि हम दोनों में बहुत कुछ समानता है, उस आदमी ने कहा। हम दोनों अकेले भेड़ियों की तरह हैं। या झुंड में खोए हुए कुत्तों की तरह। दूसरे शब्दों में, हम समाज के लिए अनुपयुक्त हैं। हम समूहों में ढलने के लिए नहीं बने हैं। या उनमें हमें स्वीकार नहीं किया जाता। हम सब कुछ अकेले करते हैं। हम अकेले निर्णय लेते हैं, अकेले काम करते हैं, अकेले जिम्मेदारियाँ उठाते हैं। हमें ऊपर से आदेश मिलते हैं, लेकिन हमारे पास कोई सहकर्मी या अधीनस्थ नहीं हैं। हम केवल अपने दिमाग और अपनी क्षमताओं पर निर्भर हैं। यही तो सब कुछ है, है ना?
उशिकावा ने सिर हिलाया।
— यही हमारी ताकत है, और कभी-कभी यही हमारी कमजोरी भी। उदाहरण के लिए, आपने यहाँ थोड़ी जल्दबाजी कर दी। आप पंथ को कुछ भी बताए बिना, खुद ही हिसाब बराबर करना चाहते थे। इसे अपनी खूबसूरत निजी उपलब्धि मान लीजिए। और इसी तरह आपने अपनी सतर्कता कम कर दी। है ना?
उशीकावा ने फिर सिर हिलाया।
"आपको इतनी दूर जाने के लिए किस बात ने प्रेरित किया?"
मैं नेता की मृत्यु का दोषी हूँ।
- किस तरह से?
"मैंने आओमामे की जांच की। नेता से मिलने से पहले मैंने उसकी पूरी तरह से छानबीन की। मुझे कुछ भी आपत्तिजनक नहीं मिला।"
"लेकिन वह नेता के पास उसे जान से मारने के इरादे से गई थी, और उसने ठीक वही किया। तुम्हें जो काम सौंपा गया था, तुमने उसे पूरी तरह से बिगाड़ दिया, और तुम जानते थे कि किसी न किसी मोड़ पर तुम्हें जवाबदेह ठहराया जाएगा। आखिर तुम एक ऐसे व्यक्ति हो जिसे कोई महत्व नहीं देता, एक बाहरी व्यक्ति। और अब तुम एक ऐसे आदमी हो जिसे बहुत सारी अंदरूनी जानकारी है। अगर तुम जिंदा रहना चाहते हो, तो तुम्हें आओमामे का सिर थाली में रखकर उन्हें सौंपना होगा। कुछ ऐसा ही?" उशिकावा ने सिर हिलाया।
“मुझे बहुत खेद है,” उस व्यक्ति ने कहा।
क्या मुझे सचमुच खेद है? उशिकावा ने अपने विकृत सिर पर हाथ फेरते हुए उन शब्दों का अर्थ समझने की कोशिश की। और उसे समझ आ गया।
“क्या तुमने नेता की हत्या का षड्यंत्र रचा था?” उशिकावा ने पूछा।
उस व्यक्ति ने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन उशिकावा समझ गया कि उसकी चुप्पी का मतलब नकारात्मक जवाब बिल्कुल नहीं था।
“तुम मेरे साथ क्या करने वाले हो?” उसने पूछा।
"क्या मुझे पता है? सच कहूँ तो, मैंने अभी तक फैसला नहीं किया है। मैं इस बारे में सोचूंगा। यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि आप क्या करते हैं," तामारू ने उससे कहा। "मैं आपसे कुछ और सवाल पूछूंगा।"
उशिकावा ने सिर हिलाया।
मुझे पायोनियर्स से संपर्क करने के लिए एक फ़ोन नंबर चाहिए। क्या आपका कोई सीधा बॉस है?
उशिकावा एक पल के लिए हिचकिचाया, लेकिन आखिरकार उसने उसे नंबर दे दिया। यह ऐसी बात नहीं थी जिसे वह अपनी जान की कीमत पर भी छिपा सकता था। तमारू ने इसे लिख लिया।

- नाम?
"मुझे उसका नाम नहीं पता," उशिकावा ने झूठ बोला, लेकिन तमारू ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया।
- सख्त मिज़ाज वाला आदमी?
- बहुत कठिन।
लेकिन पेशेवर नहीं।
"वे कुशल हैं। उन्हें जो भी करने को कहा जाता है, वे बिना किसी झिझक के करते हैं। लेकिन वे पेशेवर नहीं हैं।"
"तुमने आओमामे के बारे में कितना जाना है?" तामारू ने पूछा। "क्या तुम्हें पता है कि वह कहाँ छिपी है?"
उशिकावा ने अपना सिर हिलाया।
"ऐसा नहीं है। इसीलिए मैं अभी भी यहाँ खड़ा होकर टेंगो कावाना को देख रहा हूँ। अगर मुझे पता होता कि आओमामे कहाँ है, तो मैं बहुत पहले ही वहाँ चला गया होता।" "यह बात समझ में आती है," तामारू ने कहा। "वैसे, आपको कैसे पता चला कि उन दोनों के बीच कोई संबंध है?"
मैंने अपने पैरों का इस्तेमाल किया।
— वीर्य?
मैंने आओमामे का पूरा अतीत, उसके बचपन से लेकर अब तक का, बहुत कम कीमत में खरीद लिया। वह इचिकावा के एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय में पढ़ती थी। टेंगो भी इचिकावा से है। मैंने सोचा, 'क्या पता?' और मैं वहाँ उस विद्यालय में गया और पता चला कि हाँ, वे दो साल तक सहपाठी थे।
तामारू ने बिल्ली की तरह अपने गले के पिछले हिस्से से धीमी सी गुर्राहट की। "वाह! आप तो बहुत ही बारीकी से जाँच कर रहे हैं, उशिकावा-सान। आपने इसमें बहुत समय और मेहनत लगाई है। बहुत बढ़िया!"
उशिकावा ने कुछ नहीं कहा। उसने उससे कोई सवाल नहीं पूछा था।
"मैं आपसे फिर पूछता हूँ," तामारू ने कहा। "क्या इस समय केवल आप ही हैं जो आओमामे और तेंगो कावाना के बीच के संबंध के बारे में जानते हैं?"
- आप भी।
मुझे अकेला छोड़ दो, मेरा मतलब है अपने आस-पास के लोगों को।
उशिकावा ने सिर हिलाया।
— हाँ, जहाँ तक मेरी बात है, यह बात सिर्फ मुझे ही पता है।
और आप झूठ नहीं बोल रहे हैं।
- मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ।
"वैसे, क्या आपको पता था कि आओमामे गर्भवती है?"
"गर्भवती?" उशिकावा ने आश्चर्य भरी आवाज़ में कहा। किसके बच्चे की माँ बनने वाली हो?
तामारू ने कोई जवाब नहीं दिया।
"क्या आपको सचमुच नहीं पता था?"
मुझे पता नहीं था। मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ।
तामारू मन ही मन सोच रहा था कि उशिकावा की प्रतिक्रिया वास्तविक थी या नहीं।

“मैं समझ गया,” उसने तब कहा। “ऐसा लगता है कि आपको पता ही नहीं था। मैं आपकी बात पर विश्वास करता हूँ। वैसे, आपने अज़ाबू में विलो विला के आसपास कुछ समय बिताया था। क्या यह सही है?”
उशिकावा ने सिर हिलाया।
- क्यों?
“घर की मालकिन पास के एक आलीशान स्पोर्ट्स क्लब में जाती हैं, और उनकी पर्सनल ट्रेनर आओमामे थीं। ऐसा लगता है कि उनके बीच घनिष्ठ व्यक्तिगत संबंध बन गए थे। उस महिला ने विला के बगल वाली ज़मीन पर घरेलू हिंसा से पीड़ित महिलाओं के लिए एक आश्रय स्थल बनवाया था। और वे वहाँ सुरक्षा के बहुत सख्त उपाय करते हैं। मेरी राय में, ज़रूरत से ज़्यादा सख्त। ज़ाहिर है, मैंने मान लिया था कि आओमामे ने वहाँ शरण ली होगी।”
- और?
और अंत में मैंने यही निष्कर्ष निकाला कि ऐसा नहीं था। उस महिला के पास धन और प्रभाव की कोई कमी नहीं थी। अगर वह आओमामे को शरण देने वाली होती, तो वह उसे अपने घर में नहीं रखती। वह उसे जितना हो सके दूर ले जाती। इसीलिए मैंने अज़ाबू विला की जांच छोड़ दी और टेंगो कावाना के सुरागों का पीछा करने का फैसला किया।
तामारू ने फिर से धीमी सी गुर्राहट की।
आपमें अच्छी अंतर्दृष्टि है और आप तार्किक रूप से अपने दिमाग का इस्तेमाल करते हैं। आप दृढ़ निश्चयी भी हैं। सिर्फ एक सीढ़ी के रूप में इस्तेमाल होना शर्मनाक है। क्या आप लंबे समय से यह काम कर रहे हैं?
“मैं एक वकील के तौर पर अपनी खुद की फर्म चलाता था,” उशिकावा ने कहा।
"अहा। मुझे लगता है कि तुम बहुत होशियार थे। लेकिन तुम कुछ ज्यादा ही उत्साहित हो गए और एक समय पर फिसलकर गिर पड़े। अब तुम गिर चुके हो और जेब खर्च चलाने के लिए न्यू जापानी एसोसिएशन में काम कर रहे हो। कुछ ऐसा ही?"
उशिकावा ने सिर हिलाया।
- ऐसा कुछ।
“कुछ नहीं कर सकते,” तमारू ने कहा। हम जैसे अकेले रहने वालों के लिए अंधेरे से बाहर निकलकर दूसरों की तरह रोजी-रोटी कमाना आसान नहीं है। जब सब कुछ ठीक चल रहा होता है, तो हम ठोकर खा जाते हैं। यही दुनिया का नियम है,” तमारू ने मुट्ठी भींचते हुए कहा, जिससे जोड़ों से चटकने की आवाज़ आई। आवाज़ बहुत तेज़ और अप्रिय थी। “क्या तुमने संप्रदाय को विलो विला के बारे में बताया?”
"मैंने किसी को नहीं बताया," उशिकावा ने ईमानदारी से जवाब दिया। "मैं बस संयोग से वहाँ थोड़ा और छानबीन कर रहा था। वहाँ बहुत कड़ी सुरक्षा थी, और मुझे वैसे भी कोई ठोस सबूत नहीं मिला।"
"बहुत बढ़िया," तामारू ने कहा।
"आपने इसका ध्यान रखा था, है ना?"
तामारू ने कोई जवाब नहीं दिया। सवाल तो वही पूछ रहा था और दूसरे के सवालों का जवाब देने का उसके पास कोई कारण नहीं था।
"अब तक तो तुम ईमानदार रहे हो," उसने कहा। कम से कम ज़्यादातर मामलों में। एक बार जब तुम समुद्र की गहराई में पहुँच जाते हो, तो झूठ बोलने की इच्छा ही खत्म

हो जाती है। और फिर भी तुम्हारी आवाज़ में झूठ झलकने लगता है। यह डर से आता है।"
"मैंने झूठ नहीं बोला," उशिकावा ने कहा।
"बहुत बढ़िया। कोई भी बेवजह दर्द नहीं सहना चाहता। वैसे, क्या आपने कार्ल जंग के बारे में सुना है?"
उशिकावा ने अपनी आंखों पर बंधी पट्टी के नीचे भौंहें चढ़ाईं। "कारी जंग? यह आदमी क्या बकवास कर रहा है?"
— क्या जंग एक मनोवैज्ञानिक थे?
- एकदम सही।
"बस थोड़ा-बहुत," उशिकावा ने सावधानी से जवाब दिया। उनका जन्म उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में स्विट्जरलैंड में हुआ था। वे पहले फ्रायड के शिष्य थे, लेकिन बाद में उन्होंने फ्रायड से नाता तोड़ लिया। सामूहिक अवचेतन मन। बस इतना ही मुझे पता है।"
- बस काफी है।
उशिकावा ने उसके बोलने का इंतजार किया।
कार्ल जंग का ज्यूरिख झील के पास एक शांत और आलीशान इलाके में एक आलीशान घर था, जहाँ वे अपने परिवार के साथ सुखमय जीवन व्यतीत करते थे। लेकिन उन्हें एक ऐसी जगह की ज़रूरत थी जहाँ वे एकांत में ध्यान लगा सकें। इसलिए उन्होंने बोलिंगेन नामक इलाके में झील के किनारे एक छोटा सा भूखंड ढूँढा और वहाँ एक छोटा सा घर बनवाया। यह कोई भव्य विला या आलीशान इमारत नहीं थी। उन्होंने खुद पत्थर जोड़कर एक ऊँची, गोलाकार संरचना खड़ी की। इसके लिए वे सामग्री पास की एक खदान से लाते थे। उस समय स्विट्ज़रलैंड में पत्थर से निर्माण करने के लिए पत्थर मिस्त्री का लाइसेंस ज़रूरी होता था, और जंग ने इसके लिए विशेष रूप से योग्यता प्राप्त की। वे मिस्त्री संघ में भी शामिल हो गए। उस घर का निर्माण, और विशेष रूप से अपने हाथों से, उनके लिए बहुत मायने रखता था। उनकी माता की मृत्यु भी एक प्रमुख कारण थी जिसने उन्हें यह घर बनाने के लिए प्रेरित किया। तामारू थोड़ी देर के लिए रुका।
उस इमारत को “टावर” कहा जाता था। उन्होंने इसे अफ्रीका की यात्रा के दौरान एक गाँव में देखी कुछ झोपड़ियों के आधार पर बनाया था। उन्होंने इसे इस तरह डिज़ाइन किया था कि सभी दैनिक गतिविधियाँ एक ही, बिना विभाजन वाले स्थान में हो सकें। यह एक बहुत ही साधारण घर था। उन्हें लगता था कि यह जैसा है वैसा ही काफी है। इसमें बिजली, गैस या नल का पानी नहीं था। वे पास के पहाड़ों से पानी लाते थे। लेकिन बाद में पता चला कि यह महज़ एक आदर्श इमारत थी। अंततः, टावर का विभाजन किया गया, उसे अलग-अलग हिस्सों में बाँटा गया, एक और मंज़िल जोड़ी गई, फिर कुछ अतिरिक्त कमरे बनाए गए। जंग ने दीवारों पर अपने हाथों से चित्रकारी की। यह उनके मानस के विभाजन और विकास को दर्शाता है। यह इमारत एक तरह का त्रि- आयामी मंडल थी। इसे पूरा करने में उन्हें लगभग बारह साल लगे। जंग के अध्ययन में लगे शोधकर्ताओं के लिए यह एक बेहद दिलचस्प इमारत है। क्या आपने कभी यह कहानी सुनी है?
उशिकावा ने अपना सिर हिलाया।
— वह घर आज भी ज्यूरिख झील के किनारे मौजूद है। इसका प्रबंधन जंग के वंशज करते हैं, लेकिन दुर्भाग्य से यह आम जनता के लिए खुला नहीं है और यहाँ जाया

नहीं जा सकता। कहा जाता है कि टावर के प्रवेश द्वार पर आज भी एक पत्थर है जिस पर जंग ने स्वयं अपने हाथों से लिखा था। "सर्दी हो या न हो, ईश्वर हमेशा उपस्थित रहेगा"{25}, जंग ने उस पर यही लिखा था।
तामारू फिर रुक गया।
— “सर्दी हो या न हो, ईश्वर तो उपस्थित रहेगा,” उसने धीरे-धीरे दोहराया, क्या आप इसका अर्थ समझते हैं?
उशिकावा ने अपना सिर हिलाया।
मुझे उसकी बात समझ नहीं आती।
— हाँ, बिल्कुल। मुझे भी समझ नहीं आता कि उनका क्या मतलब है। इसके बहुत गहरे निहितार्थ हैं। इसकी व्याख्या करना बहुत मुश्किल है। लेकिन कार्ल जंग ने ज़िद की कि वे छेनी लेकर अपने हाथों से उन शब्दों को अपने बनाए घर के प्रवेश द्वार पर पत्थर-पत्थर उकेरेंगे। और पता नहीं क्यों, ये शब्द हमेशा मुझे आकर्षित करते रहे हैं। मैं इन्हें अच्छी तरह समझ नहीं पाता, लेकिन ये मेरे दिल को गहराई से छूते हैं। मैं ईश्वर के बारे में ज़्यादा नहीं जानता। मैंने कैथोलिकों द्वारा चलाए जा रहे एक अनाथालय में बहुत भयानक अनुभव झेले हैं और उनके बारे में मेरी धारणा अच्छी नहीं है। और वहाँ हमेशा ठंड रहती थी, यहाँ तक कि गर्मियों के बीच में भी। बहुत ठंड या हद से ज़्यादा ठंड, दोनों में से एक। अगर ईश्वर वहाँ थे, तो मैं यह नहीं कह सकता कि वे मेरे प्रति बहुत दयालु थे। लेकिन ये शब्द मेरी आत्मा की गहराई में उतर गए। कभी-कभी मैं अपनी आँखें बंद करके इन शब्दों को बार-बार दोहराता हूँ। और एक अजीब तरीके से, मुझे शांति मिलती है। "ठंड हो या न हो, ईश्वर हमेशा साथ रहेंगे।" क्या आप भी इन्हें ज़ोर से बोलेंगे?
— "ठंड हो या न हो, भगवान तो मौजूद रहेंगे," उशिकावा ने धीरे से कहा, मानो उसे बात पूरी तरह समझ नहीं आई हो।
— मैंने आपकी बात नहीं सुनी।
— "सर्दी हो या न हो, भगवान तो हमेशा मौजूद रहेंगे," उशिकावा ने जितनी जोर से हो सकता था, दोहराया।
तामारू ने अपनी आँखें बंद कर लीं और उन शब्दों की गूंज को महसूस किया। फिर उसने गहरी साँस ली, मानो उसने आखिरकार कोई फैसला कर लिया हो, और साँस छोड़ी।
उसने अपनी आँखें खोलीं और अपने हाथों को देखा। उसने उंगलियों के निशान न छोड़ने के लिए पतले, सर्जिकल दस्ताने पहने हुए थे।
"मुझे खेद है," उसने धीरे से कहा, और उसकी आवाज में एक गंभीर स्वर था।
उसने दोबारा प्लास्टिक की थैली उठाई और उशिकावा का सिर ढक दिया। उसने रबर की पट्टी उसके गले में कसकर बांध दी। उसने यह सब फुर्ती और दृढ़ता से किया। उशिकावा ने विरोध करने की कोशिश की, लेकिन उसके मुंह से शब्द नहीं निकले और न ही किसी के कानों तक पहुंचे। क्यों? उसने थैली के अंदर से सोचा। मैंने उसे सब कुछ ईमानदारी से बता दिया था। उसे मुझे क्यों मारना है?
उसके दिमाग में, जो मानो फटने ही वाला था, चूओ-रिंकन के उस छोटे से घर और उसकी छोटी बच्चियों की छवि उभर आई। वहाँ के उनके कुत्ते की भी। उसे वह लंबा, बौना कुत्ता कभी पसंद नहीं था, और न ही वह उशिकावा को पसंद करता था। वह एक मूर्ख जानवर था जो बहुत भौंकता था। वह हमेशा कालीनों को कुतरता रहता था और नए हॉल में पेशाब करता था। वह उस चतुर आवारा कुत्ते जैसा बिल्कुल नहीं था जो वह बचपन

में था। फिर भी, अपने जीवन के अंतिम क्षणों में, उस मूर्ख कुत्ते की छवि, जो लॉन वाले आँगन में उछल-कूद कर रहा था, उसकी आँखों के सामने आ गई। तमारू ने अपनी आँख के कोने से देखा कि उशिकावा का गोल-मटोल शरीर, कसकर बंधा हुआ, पुआल की चटाई पर बुरी तरह छटपटा रहा था, जैसे सूखी ज़मीन पर फंसी कोई बड़ी मछली। उसके हाथ-पैर पीछे बंधे हुए थे, और चाहे वह कितना भी छटपटाए, आस-पड़ोस के अपार्टमेंट में किसी के कुछ सुनने का कोई खतरा नहीं था। तमारू जानता था कि वह मौत कितनी दर्दनाक थी, लेकिन किसी को मारने का यही सबसे कारगर और साफ तरीका था। न चीख, न खून। उसने अपनी टैग ह्यूअर डाइविंग घड़ी की सेकंड वाली सुई देखी। तीन मिनट बाद, उशिकावा का ज़ोरदार संघर्ष रुक गया। उसके शरीर में एक हल्की सी कंपकंपी दौड़ी, मानो किसी चीज़ से गूंज रही हो, और फिर उसके हाथ-पैर हिलना बंद हो गए। तमारू ने तीन मिनट तक अपनी घड़ी देखी, फिर अपनी गर्दन छूकर उसकी नब्ज़ जाँची और यह सुनिश्चित किया कि उसके शरीर से जीवन के सभी लक्षण गायब हो गए हैं। पेशाब की हल्की सी गंध आ रही थी। उशिकावा ने उस पर फिर से पेशाब कर दिया था। इस बार, उसका मूत्राशय पूरी तरह से खाली हो गया था। भला उसे कौन दोष दे सकता था? यह यातना सहना सार्थक था।
तामारू ने उसके गले में बंधी रबर की पट्टी खोली और उसके सिर से थैला हटाया। प्लास्टिक उसके मुंह में काफी अंदर तक घुस गया था। उशिकावा की मृत्यु खुली आँखों और टेढ़े लटके मुंह के साथ हुई थी। उसके कसे हुए, गंदे दांत दिखाई दे रहे थे और उसकी जीभ हरी काई से ढकी हुई थी। उसका चेहरा किसी मुंच की पेंटिंग जैसा था। उसका विकृत सिर अब और भी टेढ़ा हो गया था। वह किसी भयानक यातना से गुजरा था।
"मुझे खेद है," तामारू ने कहा। "मैंने यह आनंद के लिए नहीं किया।"
उसने अपनी उंगलियों से अपने चेहरे की मांसपेशियों को ठीक किया, अपनी ठोड़ी को सही जगह पर लाया, ताकि वह कम से कम थोड़ा सामान्य दिखे। उसने रसोई में मिले एक तौलिये से अपने मुंह के आसपास की लार पोंछी। इसमें थोड़ा समय लगा, लेकिन आखिरकार वह उसे थोड़ा बेहतर दिखाने में कामयाब हो गया। कम से कम अब आप उससे नज़रें नहीं हटा सकते थे। बस उसकी आँखें किसी भी हालत में बंद नहीं हो रही थीं।
"जैसा कि शेक्सपियर ने लिखा है," तामारू ने उस बेढंगे और भारी सिर में फुसफुसाते हुए कहा, "अगर हम आज मर जाते हैं, तो कल नहीं मरेंगे। चलो चीजों के सकारात्मक पहलू को देखें।"
उसे याद नहीं आ रहा था कि यह कथन हेनरी चतुर्थ का था या रिचर्ड तृतीय का, लेकिन तमारू को यह ज़रूरी नहीं लगा, और उशिकावा को भी अब इसके सटीक स्रोत का पता लगाने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उसने अपने हाथ-पैर खोल दिए। उसने मुलायम तौलिये की पट्टियों का इस्तेमाल किया था जिन्हें उसने खास तरीके से बांधा था ताकि कोई निशान न रह जाए। उसने पट्टियों, थैले और रबर बैंड को इकट्ठा किया और उन्हें अपने तैयार किए हुए विनाइल बैग में रख दिया। उसने उशिकावा के सामान पर नज़र डाली और उसके द्वारा खींची गई सभी तस्वीरें इकट्ठा कर लीं। उसने कैमरा और ट्राइपॉड को अपने साथ ले जाने के लिए थैले में रखने का फैसला किया। वह नहीं चाहता था कि किसी को पता चले कि वह वहाँ किसी पर नज़र रख रहा है, क्योंकि तब सवाल उठेगा कि किस पर। और फिर तेंगो का नाम भी सामने आ सकता था। उसने मोटी, छोटी-छोटी चिट्ठियों से भरी नोटबुक भी ले ली। उसने कोई भी ज़रूरी चीज़ पीछे

नहीं छोड़ी। कमरे में बस उसका स्लीपिंग बैग, खाना और कपड़े, बटुआ और चाबियाँ, और उशिकावा का बेजान शरीर ही बचा था। अंत में, तामारू ने अपने बटुए से "स्थायी प्रबंधक, विज्ञान और कला संवर्धन हेतु न्यू जापान एसोसिएशन" अंकित एक बिजनेस कार्ड निकाला और उसे अपनी कोट की जेब में रख लिया।
जाते समय उसने एक बार फिर उससे कहा, "मुझे माफ कर दो।"
*

तामारू स्टेशन के पास एक टेलीफोन बूथ में गया, अपना कार्ड डाला और उशिकावा द्वारा दिए गए नंबर पर डायल किया। यह एक स्थानीय नंबर था, संभवतः शिबुया क्षेत्र का। छठी घंटी बजने पर फोन उठा।
बिना किसी भूमिका के, तामारू कोएंजी में पता और अपार्टमेंट नंबर बताता है। “क्या इस पर ध्यान दिया गया?” उसने पूछा।
- क्या आप उसे दोहरा सकते हैं?
तामारू ने अपनी बात दोहराई, और उसके वार्ताकार ने इसे नोट किया, फिर इसे पढ़ा।
"उशिकावा-सान आपको वहीं मिलेंगे," तामारू ने कहा। "आप जानते हैं ना कि वह कौन हैं?"
- उशीकावा-सान?
तामारू उसकी बात अनसुनी कर देता है और आगे बढ़ता रहता है।
"उशिकावा-सान वहीं हैं, लेकिन दुर्भाग्य से उनकी सांसें नहीं चल रही हैं। ऐसा नहीं लगता कि उनकी मृत्यु प्राकृतिक कारणों से हुई है। उनके बटुए में कुछ बिजनेस कार्ड हैं जिन पर लिखा है 'स्थायी प्रबंधक, विज्ञान और कला संवर्धन हेतु नव जापान संघ'। अगर पुलिस को ये कार्ड मिल गए, तो वे जल्द ही आपसे संपर्क करेंगे। और फिर वे मुसीबत में पड़ सकते हैं, खासकर मौजूदा हालात को देखते हुए। इस मामले को जल्द से जल्द निपटाने में कोई हर्ज नहीं है। आप एक अच्छे इंसान हैं।"
- आप कौन हैं?
"एक दयालु संदेशवाहक," तामारू ने उत्तर दिया। "मुझे भी पुलिस पसंद नहीं है।" "क्या यह स्वाभाविक मृत्यु नहीं थी?"
"कम से कम उनकी मृत्यु बुढ़ापे से नहीं हुई, न ही शांति से।"
वार्ताकार ने कुछ देर तक कोई टिप्पणी नहीं की।
"और ये उशिकावा-सान वहाँ क्या कर रहे थे?"
"मुझे यह नहीं पता। आपको उनसे विस्तार से पूछना चाहिए, लेकिन जैसा कि मैं कह रहा था, उनकी स्थिति ऐसी नहीं है कि वे जवाब दे सकें।"
“मुझे लगता है कि ओकुरा होटल में आई उस युवती से आपका कुछ संबंध है, है ना?” वार्ताकार ने थोड़ी देर रुकने के बाद कहा।
— यह एक बेकार सवाल है जिसका जवाब नहीं मिलेगा।
"मैं उन लोगों में से एक हूं जो उस महिला से मिले थे। उसे यह बता दो, वह जान जाएगी कि तुम कौन हो। मुझे उसे एक संदेश देना है।"
मैं सुन रहा हूँ।
हम उसे किसी भी तरह का नुकसान नहीं पहुंचाना चाहते।
"लेकिन मैं समझता हूं कि आप उसे बेसब्री से ढूंढ रहे हैं।"
"बिल्कुल सही। मैं इसे काफी समय से ढूंढ रहा था।"
लेकिन आप कहते हैं कि आप उसे नुकसान नहीं पहुंचाना चाहते। ऐसा क्यों?

जवाब आने से पहले कुछ देर का विराम था।
सरल शब्दों में कहें तो, किसी समय परिस्थिति बदल गई। बेशक, नेता की मृत्यु पर उनके आसपास के लोग गहरा शोक मना रहे हैं। लेकिन यह मामला अब समाप्त हो चुका है। नेता पीड़ा में थे और एक तरह से वे स्वयं ही अपनी पीड़ा समाप्त करना चाहते थे। इसलिए, इस दृष्टिकोण से, हम आओमामे से आगे कोई पूछताछ नहीं करना चाहते। अब हम उनसे बात करना चाहते हैं।
- किस बारे मेँ?
— साझा हितों के बारे में।
"यही तो आप चाहते हैं। आपको उससे बात करनी चाहिए, लेकिन शायद वह बात करना नहीं चाहती।"
"चर्चा के लिए गुंजाइश होनी चाहिए। हम आपको कुछ चीज़ें दे सकते हैं। उदाहरण के लिए, स्वतंत्रता और सुरक्षा। ज्ञान और जानकारी। क्या हम कहीं, किसी तटस्थ स्थान पर बातचीत नहीं कर सकते? कोई भी जगह, आप तय कर लें। हम शत प्रतिशत सुरक्षा की गारंटी देते हैं। न केवल उनकी, बल्कि इसमें शामिल सभी लोगों की। अब किसी को भागने की ज़रूरत नहीं है। मुझे यह दोनों पक्षों के लिए एक उचित प्रस्ताव लगता है।"
"तुम यही कहते हो," तामारू ने कहा। "लेकिन मुझे तुम्हारे प्रस्ताव पर भरोसा करने का कोई कारण नहीं है।"
“किसी भी सूरत में, हम आपसे अनुरोध करते हैं कि यह संदेश श्रीमती आओमामे तक पहुँचा दिया जाए,” सतर्क वार्ताकार ने कहा। “यह एक गंभीर मामला है, और हम समझौते की गुंजाइश रखते हैं। यदि हमारे भरोसे के और ठोस सबूत की आवश्यकता होगी, तो हम इस संबंध में विचार करेंगे कि हम क्या कर सकते हैं। आप हमें कभी भी कॉल कर सकते हैं, हम आपको जवाब देंगे।”
"आप मुझे थोड़ा बेहतर तरीके से समझा क्यों नहीं देते कि मामला क्या है? आपको उसकी इतनी ज़रूरत क्यों है? ऐसा क्या हुआ जिससे स्थिति इतनी तेज़ी से बदल गई?"
वार्ताकार ने एक गहरी सांस ली। फिर उसने उत्तर दिया:
"हमें उस आवाज़ को सुनते रहना चाहिए। यह हमारे लिए एक समृद्ध स्रोत के समान है। हम इसे खो नहीं सकते। अभी के लिए मैं बस इतना ही कह सकता हूँ।"
और आपको आओमामे की जरूरत है कि वह इसकी अच्छी तरह से रक्षा करे।
"इसे संक्षेप में समझाना मुश्किल है। मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि इसका उससे कुछ लेना-देना है।"
"एरिको फुकाडा का क्या हुआ? अब आपको उसकी ज़रूरत नहीं है?"
"हमें अभी एरिका फुकाडा की वास्तव में कोई जरूरत नहीं है। वह जहां चाहे जा सकती है और जो चाहे कर सकती है। उसने अपना मिशन पहले ही पूरा कर लिया है।" "कौन सा मिशन?"
कुछ देर रुकने के बाद वार्ताकार ने कहा, "यह थोड़ा अधिक संवेदनशील मामला है। मुझे खेद है, लेकिन मैं यहां और अधिक जानकारी नहीं दे सकता।"
"अपनी स्थिति पर ध्यान से विचार करो," तामारू ने जवाब दिया। "इस खेल में हम किनारे पर हैं। हम जब चाहें आपसे संपर्क कर सकते हैं, लेकिन आप हमसे नहीं। आप तो यह भी नहीं जानते कि हम कौन हैं। है ना?"

"बिल्कुल सही। पहल तो आप ही कर सकते हैं। मैं आपको नहीं जानती, लेकिन यह बातचीत फोन पर करने का समय नहीं है। वैसे भी मैं पहले ही बहुत कुछ बोल चुकी हूँ। मुझे जो अधिकार दिए गए हैं, उनसे कहीं ज़्यादा।"
तामारू कुछ देर तक चुप रहा।
"ठीक है। हम इस प्रस्ताव पर विचार करेंगे। हमें मिलकर परामर्श करना होगा। मैं शायद कुछ समय बाद वापस आऊँगा।"
— मैं आपके संपर्क का इंतजार कर रहा हूँ। मैं दोहराता हूँ, यह दोनों पक्षों के लिए एक उचित प्रस्ताव है।
और अगर हम इसे अनदेखा कर दें या अस्वीकार कर दें तो?
"तब हमारे पास अपने तरीके से काम करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता। हमारे पास कुछ शक्ति है। दुर्भाग्य से, हालात हिंसक मोड़ ले सकते हैं और हमारे आसपास के लोग प्रभावित हो सकते हैं। आप चाहे जो भी हों, आप बिना किसी नुकसान के बच नहीं सकते। यह दोनों पक्षों के लिए अप्रिय स्थिति होगी।"
"संभव है। लेकिन वहां तक पहुंचने में थोड़ा समय लगेगा। और, अगर मैं आपके शब्दों का इस्तेमाल करूं तो, यह एक अत्यावश्यक मामला है।"
फोन पर बात कर रहे व्यक्ति ने हल्की खांसी की।
हां, इसमें थोड़ा समय लग सकता है। लेकिन शायद उतना लंबा समय न लगे।
जब तक आप चीजों को व्यवहार में नहीं लाते, तब तक आपको पता नहीं चल सकता। "बिल्कुल सही," उस आदमी ने जवाब दिया। "एक और महत्वपूर्ण बात है जिसका मुझे जिक्र करना चाहिए। आपकी उपमा को उधार लेते हुए, इस खेल में आप सर्वर हैं।
लेकिन मुझे नहीं लगता कि आपको अभी तक खेल के बुनियादी नियम पता हैं।"
— जब तक आप चीजों को व्यवहार में नहीं लाएंगे, तब तक आपको यह भी पता नहीं चलेगा।
लेकिन अगर आप उन्हें व्यवहार में लाते हैं और वे सही ढंग से काम नहीं करते हैं, तो परिणाम अच्छा नहीं होता है।
दोनों तरफ से।
कुछ देर के लिए मौन छा गया, मानो कोई भाव ही न हो।
“तो उशिकावा-सान के बारे में क्या?” तामारू ने पूछा।
"हम इस मामले को पहले अवसर पर ही उठाएंगे। शायद आज रात ही।"
आपको पता होना चाहिए कि दरवाजा बंद नहीं है।
- धन्यवाद।
"वैसे, क्या आप उशिकावा-सान की मृत्यु पर घोर शोक मनाएंगे?"
हम यहां किसी की भी मृत्यु पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं।
"आप बहुत अच्छा कर रहे हैं। वह बहुत ही सक्षम व्यक्ति थे।"
"लेकिन पर्याप्त कुशल नहीं, है ना?"
— कोई भी व्यक्ति इतना कुशल नहीं होता कि वह अमर जीवन जी सके।
- तो आप यह सोचते है।
"बिल्कुल," तामारू ने कहा। "मैं भी यही सोचता हूँ। तुम भी, है ना?"
"हम आपके संपर्क करने का इंतजार कर रहे हैं," उस व्यक्ति ने ठंडे स्वर में बिना जवाब दिए कहा।

तामारू ने बिना कुछ कहे फोन काट दिया। अब और कुछ कहने को नहीं था। अगर ज़रूरत पड़ी तो वो दोबारा फोन कर सकता था। वो केबिन से निकला और अपनी कार की पार्किंग वाली जगह की ओर चल पड़ा।
वह एक पुरानी टोयोटा कोरोला थी, हल्के नीले रंग की, जो देखने में बिल्कुल भी आकर्षक नहीं थी। उसने उसे पंद्रह मिनट तक चलाया, फिर एक सुनसान पार्क के सामने रुक गया और यह सुनिश्चित करने के बाद कि उसे कोई देख नहीं रहा है, उसने प्लास्टिक की थैली, पट्टियाँ और रबर बैंड कूड़ेदान में फेंक दिए। उसने सर्जिकल दस्ताने भी फेंक दिए।
"हम किसी की भी मृत्यु पर गहरा शोक मनाते हैं," तामारू ने कार स्टार्ट करते और सीट बेल्ट लगाते हुए धीरे से कहा। "मुझे खुशी है," उसने सोचा। "किसी की मृत्यु पर शोक मनाना सही है। भले ही थोड़ी देर के लिए ही सही।"

अध्याय 26 कितना रोमांटिक!

मंगलवार दोपहर को फोन की घंटी बजी। आओमामे अपनी योगा मैट पर बैठी थी, पैर फैलाकर इलियोप्सोआस मांसपेशी को खींच रही थी। यह देखने में जितना आसान लग रहा था, उससे कहीं ज़्यादा कठिन व्यायाम था। उसकी ब्लाउज पसीने से थोड़ी भीगी हुई थी। आओमामे रुकी, तौलिए से चेहरा पोंछा और फोन उठाया।
"कैपटाना अब उस ब्लॉक में नहीं है," तामारू ने बिना किसी भूमिका के घोषणा की। न "हैलो", न कुछ और।
"क्या अब ऐसा नहीं है?"
वह गया। वह आश्वस्त था।
"उसे यकीन हो गया था," आओमामे ने चिढ़ाते हुए कहा। "तुम्हारा मतलब है कि तामारू ने उसे जबरदस्ती वहाँ से हटा दिया था?"
और वहाँ रहने वाला कावाना नाम का व्यक्ति ही वह है जिसकी आपको तलाश है, टेंगो कावाना।
आओमामे के चारों ओर की दुनिया फैलती है, फिर सिकुड़ती है। मानो यह उसका दिल हो।
“क्या तुम मुझे सुन सकते हो?” तामारू ने पूछा।
— ते ऑड.
"लेकिन वह अभी वहां नहीं है। वह कुछ दिनों के लिए गया है।"
"क्या वह सुरक्षित है?"
"वह अभी टोक्यो में नहीं है, लेकिन मुझे यकीन है कि वह सुरक्षित है। मुखिया ने इमारत के भूतल पर एक अपार्टमेंट किराए पर लिया था और वह उम्मीद कर रहा था कि आप तेंगो कावाना से मिलने आएंगे। वह एक छिपे हुए कैमरे से गलियारे पर नज़र रख रहा था।"
"क्या उसने मेरी भी तस्वीर ली?"
"हां, उसने तीन तस्वीरें लीं। अंधेरा था, आपने चश्मा पहना हुआ था और आपका चेहरा स्कार्फ से ढका हुआ था, इसलिए आपका चेहरा ठीक से दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन आप ही थीं, बिल्कुल। अगर आप दोबारा वहां जातीं, तो आपको वह तस्वीर ज़रूर मिल जाती।"
— इसलिए मैंने सब कुछ आपके हाथों में सौंपकर सही फैसला लिया।
— यानी अगर कोई सही विकल्प है तो।
— किसी भी सूरत में, अब वह चिंताजनक उपस्थिति नहीं है।
"वह अब आपको और कोई नुकसान नहीं पहुंचाएगा।"
— क्योंकि आपने उसे मना लिया।
"कुछ चीज़ों में सुधार की ज़रूरत थी, लेकिन अंत में, हाँ," तामारू ने जवाब दिया। "मैंने सभी तस्वीरें ज़ब्त कर ली हैं। उसका मकसद आपके आने का इंतज़ार करना था, और टेंगो कावाना तो बस एक मोहरा था। इसलिए फिलहाल मुझे उसे नुकसान पहुँचाने का कोई कारण नहीं दिखता। वह सुरक्षित है।"
- कितना बढ़िया!
"टेंगो कावाना योयोगी के एक प्रारंभिक विद्यालय में गणित पढ़ाते हैं। वे एक अच्छे शिक्षक लगते हैं, लेकिन वे सप्ताह में केवल कुछ ही दिन काम करते हैं और

शायद ज्यादा पैसे नहीं कमाते। वे अविवाहित हैं और उस साधारण से अपार्टमेंट में अकेले ही सादा जीवन जीते हैं।"
ओमामे ने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपने कानों में अपने दिल की धड़कन सुनने लगी। अब वह अपने और बाकी दुनिया के बीच की सीमा को पहचान नहीं पा रही थी। "प्रिप स्कूल में गणित पढ़ाने के अलावा, वह एक उपन्यास भी लिख रहे हैं। एक लंबा उपन्यास। 'द एयर क्राइसालिस' को दोबारा लिखना तो बस एक अस्थायी काम था। उनकी अपनी साहित्यिक महत्वाकांक्षाएं हैं। यह अच्छी बात है। महत्वाकांक्षा की अच्छी मात्रा आपको एक बेहतर इंसान बनने में मदद करती है।"
और आपको कैसे पता चला?
— वो घर पर नहीं थे, इसलिए मैं अंदर चली गई। दरवाजा बंद था, लेकिन वो ताला भी नहीं था। मुझे उनकी निजता का उल्लंघन करने का बुरा लगा, पर मुझे एक सामान्य जाँच करनी थी। हालाँकि वो अकेले रहते हैं, उनका घर साफ-सुथरा है। चूल्हा भी साफ था। फ्रिज में सब कुछ करीने से रखा था, शेल्फ के नीचे कहीं भी सड़ी हुई पत्तागोभी नहीं थी। जहाँ तक मैंने देखा, वो कपड़े इस्त्री भी करते हैं। वो बिल्कुल भी बुरे पति नहीं बनेंगे। हाँ, अगर वो समलैंगिक हों तो बात अलग है। "आपको और क्या पता चला?"
मैंने स्कूल में फोन करके उसके कार्यक्रम के बारे में पूछा। फोन पर मेरी बात हुई लड़की ने बताया कि उसके पिता का रविवार रात चिबा प्रांत के एक अस्पताल में निधन हो गया और उसे अंतिम संस्कार के लिए टोक्यो छोड़ना पड़ा। इसलिए उसने सोमवार को अपनी कक्षाएं रद्द कर दीं। उसे नहीं पता था कि अंतिम संस्कार कहाँ और कब है। खैर, उसकी अगली कक्षाएं गुरुवार को हैं, इसलिए वह तब तक टोक्यो वापस आ जाएगा।
ओमामे को याद था कि टेंगो के पिता एनएचके में टोल कलेक्टर थे। रविवार को टेंगो उनके साथ टोल वसूली मार्गों पर जाया करता था। वे इचिकावा की सड़कों पर कई बार मिले थे। उसे अपने पिता का चेहरा ठीक से याद नहीं था। वे कद में छोटे और पतले थे, टोल कलेक्टर की वर्दी पहने हुए। और वे टेंगो से बिल्कुल भी मिलते- जुलते नहीं थे।
अगर अब Cápăţăna नहीं है, तो क्या मैं Tengo देखने जा सकता हूँ?
— बेहतर होगा कि ऐसा न हो, तमारू ने तुरंत जवाब दिया। कैपाटाना को मेरी बात पर पूरा यकीन हो गया, लेकिन मुझे एक अनसुलझे मामले के बारे में उस पंथ से संपर्क करना ही था। एक ऐसी वस्तु है जिसे मैं न्याय अधिकारियों के हाथों में नहीं पड़ने देना चाहता। अगर वह मिल जाती, तो उस ब्लॉक के सभी निवासियों से एक-एक करके पूछताछ की जाती। आपका दोस्त भी इसमें शामिल हो सकता था। मेरे लिए उस वस्तु से अकेले छुटकारा पाना बहुत मुश्किल होता। अगर न्याय अधिकारी मुझसे उस वस्तु के बारे में पूछताछ करते, जिसके लिए मैंने आधी रात को इतनी मशक्कत की थी, तो मेरे बचने का कोई रास्ता नहीं होता। उस पंथ के पास लोग और गतिशीलता दोनों हैं, साथ ही उन्हें ऐसी गतिविधियों का अनुभव भी है। वे ओकुरा होटल से भी एक वस्तु ले गए थे। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं?
ओमामे ने मन ही मन तामारू द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्दों को अन्य, अधिक ठोस शब्दों से बदल दिया।
— मुझे समझ आ रहा है कि आपकी समझाने-बुझाने की कला ने एक कठोर रूप ले लिया है।
तामारू ने धीमी सी गुर्राहट की।

मुझे खेद है, लेकिन उस व्यक्ति को जरूरत से ज्यादा जानकारी थी।
"क्या संप्रदाय को इस बात की जानकारी थी कि वह वहां क्या कर रहा था?"
"मुखिया संप्रदाय के लिए काम कर रहा था, लेकिन अब तक वह स्वतंत्र रूप से काम कर रहा था। उसने अभी तक अपने कार्यों की रिपोर्ट नहीं दी थी। जो हमारे लिए ठीक है।"
लेकिन अब उन्हें यह भी पता चला कि वह अभी भी वहां कुछ कर रहा था।
"बिल्कुल सही। इसलिए बेहतर होगा कि आप कुछ समय के लिए उस जगह से दूर रहें। उनकी सूची में शायद 'द एयर क्राइसालिस' के लेखक के रूप में टेंगो कावाना का नाम और पता होगा। शायद उन्हें आपके साथ उनके व्यक्तिगत संबंध के बारे में पता नहीं था। लेकिन अगर वे इस बात की पड़ताल करते हैं कि कैपाटाना उस अपार्टमेंट में क्यों थे, तो वे अंततः टेंगो को ढूंढ लेंगे। यह बस समय की बात है।"
"लेकिन अगर हमारी किस्मत अच्छी रही, तो उन्हें यह समझने में काफी समय लग सकता है। हो सकता है कि वे मुखिया की मौत और टेंगो के बीच संबंध को इतनी जल्दी न जोड़ पाएं।"
"अगर किस्मत अच्छी रही तो," तामारू ने कहा। "अगर लोग मेरी उम्मीद के मुताबिक सावधान नहीं रहे तो। लेकिन मैं किस्मत पर भरोसा नहीं करता। इसीलिए अब तक मुझे कोई बड़ी परेशानी नहीं हुई है।"
"और इसीलिए मुझे उस जगह के पास नहीं जाना चाहिए।"
"बिल्कुल। हम बहुत नाजुक स्थिति में जी रहे हैं। हम कभी यह नहीं कह सकते कि हम बहुत ज्यादा सावधान हैं।"
मुझे आश्चर्य है कि क्या उस आदमी को पता चल गया कि मैं कहाँ छिपा हुआ था।
"अगर उन्हें पता चल जाता, तो तुम पहले ही ऐसी जगह पर होते जहाँ मैं तुमसे संपर्क नहीं कर पाता।"
लेकिन वह मेरे बहुत करीब आ गया था।
"हां। लेकिन मेरी राय यह है कि किसी आकस्मिक घटना ने उसे वहां खींच लिया। इससे ज्यादा कुछ नहीं।"
और इसीलिए उसने स्लाइड के शीर्ष पर खुद को कमजोर साबित कर दिया।
"हाँ। उसे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि तुम उसे देख रहे हो। उसे इसकी उम्मीद नहीं थी। और अंत में, यही घातक साबित हुआ। क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया था? एक आदमी की ज़िंदगी तलवार की नोक पर टिकी होती है।"
कुछ सेकंड का सन्नाटा छा गया। एक गहरा सन्नाटा, वैसा सन्नाटा जो किसी की भी मृत्यु के समय आता है।
— मुखिया तो चला गया, लेकिन संप्रदाय अभी भी मेरा पीछा कर रहा है।
"और अब एक और बात जो मुझे समझ में नहीं आती," तामारू ने कहा। "शुरू में, वे तुम्हें पकड़ना चाहते थे और यह पता लगाना चाहते थे कि नेता की हत्या की योजना के पीछे किस तरह का संगठन था। तुम अकेले यह सब नहीं कर सकते थे। उन्हें साफ पता है कि किसी ने तुम्हारा साथ दिया था। और अगर वे तुम्हें पकड़ लेते, तो तुमसे कड़ी पूछताछ की जाती।"
— इसीलिए मुझे बंदूक की जरूरत थी।
— ज़ाहिर है, कैपाटाना ने भी यही समझा था, तामारू ने आगे कहा। उसे लगा कि संप्रदाय के लोग तुमसे पूछताछ करने और तुम्हें सज़ा देने के लिए तुम्हारे पीछे पड़े हैं। लेकिन रास्ते में, हालात पूरी तरह बदल गए। कैपाटाना के गायब

हो जाने के बाद, मैंने उनमें से एक आदमी से फ़ोन पर बात की, जिसने मुझे बताया कि वे तुम्हें और नुकसान नहीं पहुँचाना चाहते। वह चाहता था कि मैं तुम्हें यही बताऊँ। हाँ, यह एक जाल हो सकता है। लेकिन मुझे उसकी बात सच लगी। उस आदमी ने मुझे समझाया कि एक तरह से, यह नेता मरना चाहता था। आप कह सकते हैं कि यह एक तरह की आत्महत्या थी और इसीलिए अब उन्हें तुम्हें इसके लिए सज़ा देने की ज़रूरत नहीं है।
"हाँ, बिल्कुल," आओमामे ने रूखे स्वर में कहा। नेता को शुरू से ही पता था कि मैं उसे मारने के लिए वहाँ गया था। और वह सचमुच चाहता था कि मैं उसे मार डालूँ। उस रात, ओकुरा होटल के सुइट में।
"सुरक्षाकर्मियों को तुम्हारी गंध नहीं आई। लेकिन नेता को पता था।"
"हाँ, मुझे समझ नहीं आ रहा कि कैसे, लेकिन उसे सब कुछ पहले से पता था," आओमामे ने कहा। "वह मेरा इंतजार कर रहा था।"
तामारू थोड़ी देर रुका, फिर पूछा:
और क्या हुआ?
हमने एक समझौता किया।
"मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता," तामारू ने तनाव भरे स्वर में कहा।
मुझे आपको बताने का मौका ही नहीं मिला।
अब मुझे समझाओ कि यह मेला किस बारे में है।
मैंने उसके साथ एक घंटे तक स्ट्रेचिंग की, इस दौरान उसने मुझसे बातें कीं। वह टेंगो के बारे में जानता था। उसे किसी तरह मेरे और उसके बीच के संबंध का भी पता चल गया था। और उसने मुझसे उसे मार डालने के लिए कहा। वह उस भयानक दर्द से जल्द से जल्द छुटकारा पाना चाहता था जो उसे कभी कमजोर नहीं करता था। उसने मुझसे कहा कि अगर मैं उसे मौत की पेशकश करूँ, तो वह बदले में टेंगो की जान बचा लेगा। इसलिए मैंने उसे मारने का फैसला किया। वरना, मेरे हस्तक्षेप के बिना भी, वह वैसे भी मरने वाला था, और अब तक उसने जो कुछ भी किया था, उसे देखते हुए मैं उसे उसी हालत में तड़पने के लिए छोड़ देना चाहता था।
और आपने उस महिला को इस मेले के बारे में कुछ भी नहीं बताया।
"मैं वहां नेता को मारने गया था और मैंने अपना काम कर दिया," आओमामे ने कहा। "और टेंगो एक निजी मामला है।"
"ठीक है," तमारू ने आधे मन से कहा। "आपने वाकई अच्छा काम किया है। मैं यह मानती हूँ। और तेंगो कावाना का मामला निजी मामला है। बस बात यह है कि आप उस दौरान गर्भवती हो गईं। यह ऐसा मामला है जिसे मैं नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती।"
— उस दौरान नहीं, बल्कि उसी तूफानी शाम को। जिस शाम मैंने नेता की "देखभाल" की थी। और जैसा कि मैंने आपको बताया, बिना किसी यौन संबंध के।
तामारू ने आह भरी।
"असली सवाल यह है कि क्या मुझे आपकी हर बात पर विश्वास करना चाहिए या नहीं। मैंने हमेशा आपको भरोसेमंद इंसान माना है, और मैं अब भी आप पर विश्वास करना चाहता हूँ। लेकिन यह कहानी समझ से परे है। और मैं उस तरह का इंसान हूँ जो केवल तार्किक रूप से सोच सकता है।"
ओमामे चुप रही।
"क्या नेता की हत्या और तुम्हारी रहस्यमय गर्भावस्था के बीच कोई कारण-कार्य संबंध है?" तामारू ने पूछा।

- मैं नहीं जानता कि मैं क्या कहूं।
क्या ऐसा संभव नहीं है कि तुम नेता के बच्चे को गर्भ में धारण किए हो? क्या उसने किसी तरह, न जाने किस तरीके से, तुम्हें गर्भवती किया? इससे यह बात समझ में आती है कि वे लोग तुम्हें क्यों पकड़ना चाहते हैं। उन्हें नेता का उत्तराधिकारी चाहिए।
ओमामे ने रिसीवर पर अपनी मुट्ठी कस ली और अपना सिर हिलाया।
"यह असंभव है। यह टेंगो का बच्चा है। मुझे इस बात का पूरा यकीन है।"
और यहाँ मेरे पास अभी भी दो विकल्प हैं, कि मैं आप पर विश्वास करूं या न करूं।
मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं समझा सकता।
तामारू ने फिर से आह भरी।
ठीक है। फिलहाल, मैं आपकी बात को सच मान लेता हूँ। वह आपका और टेंगो का बच्चा है। आप यह जानते हैं। लेकिन फिर भी मुझे इस पूरी बात में कोई तर्क समझ नहीं आ रहा। शुरू में तो वे लोग आपको पकड़कर कड़ी सजा देना चाहते थे, लेकिन किसी बात का पता चल गया। या कुछ ऐसा हुआ कि अब उन्हें आपकी ज़रूरत है। वे न सिर्फ आपकी सुरक्षा की गारंटी दे रहे हैं, बल्कि यह भी कह रहे हैं कि उनके पास आपको देने के लिए कुछ है। और इसी बारे में वे आपसे आमने-सामने बात करना चाहते हैं। आखिर हुआ क्या होगा?
"उन्हें मेरी ज़रूरत नहीं है," आओमामे ने कहा। "उन्हें मेरे गर्भ में पल रहे बच्चे की ज़रूरत है।" उन्हें आखिरकार इस बात का एहसास हो ही गया।
"हो, हो," कहीं से आए छोटे लोगों में से एक ने उसके साथ आवाज़ लगाई।
"तुमने मुझे बहुत जल्दी ले लिया," तामारू ने कहा और फिर धीमी आवाज़ में गुर्राया। "मुझे अब भी इसमें कोई तर्क समझ नहीं आ रहा है।"
आओमामे ने सोचा, आकाश में दो चंद्रमा होना समझ से परे है। इससे सारी तर्कसंगतता खत्म हो गई। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा।
"हो, हो," बाकी छह छोटे लोगों ने एक साथ कहा।
"उन्हें किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जो उस आवाज़ को सुन सके," तामारू ने कहा। यही बात मुझे उस व्यक्ति ने बताई जिससे मैंने फ़ोन पर बात की थी। अगर उनकी आवाज़ चली गई, तो उनका संप्रदाय शायद लुप्त हो जाएगा। मुझे ठीक से नहीं पता कि इसका क्या मतलब है, लेकिन उस व्यक्ति ने मुझे यही बताया था। क्या आपके गर्भ में पल रहा बच्चा ही "वह आवाज़ सुनने वाला" हो सकता है?
आओमामे ने अपना हाथ हल्के से अपने पेट पर रखा। माँ और संतान, उसने मन ही मन सोचा। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। चंद्रमाओं को यह बात पता नहीं चलनी चाहिए। "मुझे नहीं पता," आओमामे ने सोच-समझकर शब्दों का चयन करते हुए कहा। "लेकिन मुझे इसके अलावा कोई और कारण समझ नहीं आता कि उसे मेरी ज़रूरत क्यों होगी।" लेकिन टेंगो कावाना के साथ गर्भ धारण करने वाले बच्चे में यह विशेष गुण क्यों होगा?
- मुझें नहीं पता।
आओमामे ने सोचा, शायद अपने जीवन के बदले में, नेता मुझे अपने उत्तराधिकारी की जिम्मेदारी सौंपना चाहता था। शायद इसी कारण से, उस रात नेता ने अस्थायी रूप से उन परिपथों को खोल दिया जिनके माध्यम से दुनियाएँ आपस में जुड़ती हैं और मुझे और टेंगो को मिला दिया।

“चाहे वह बच्चा किसी का भी हो और उसमें चाहे जो भी गुण हों, तुम्हारा उस संप्रदाय से कोई समझौता करने का इरादा नहीं है,” तामारू ने कहा। ठीक है? चाहे वे बदले में तुम्हें कुछ भी दें। यहाँ तक कि अगर वे तुम्हारे लिए कुछ रहस्यों को सुलझा भी दें।”
- कोई बात नहीं क्या।
"लेकिन वे आपकी मंशा चाहे जो भी हो, बलपूर्वक इसे हासिल करने की कोशिश करेंगे। वे हर संभव प्रयास करेंगे। और आपमें एक कमजोरी है, टेंगो कावाना। शायद यही आपकी इकलौती कमजोरी है। लेकिन यह बहुत ही नाजुक कमजोरी है। अगर उन्हें इसका पता चल गया, तो आप निश्चिंत रहें कि वे इसी पर ध्यान केंद्रित करेंगे।" तामारू सही थी। तेंगो, आओमामे के जीने का कारण था और साथ ही, उसकी घातक कमजोरी भी।
"वहाँ रहना बहुत खतरनाक है। इससे पहले कि इन लोगों को आपके संबंध के बारे में पता चले, हमें आपको किसी सुरक्षित स्थान पर ले जाना होगा।"
"इस दुनिया में इस समय कहीं भी कोई सुरक्षित जगह नहीं है," आओमामे ने जवाब दिया।
तामारू ने उसके शब्दों पर ध्यानपूर्वक विचार किया। फिर उसने शांत भाव से कहा: "लेकिन मुझे बताओ कि तुम क्या सोच रहे हो।"
"सबसे पहले, मुझे टेंगो से मिलना है। तब तक मैं यहाँ से नहीं जा सकता। चाहे कितना भी खतरा क्यों न हो।"
आप मिलते हैं। और फिर?
मुझे ठीक-ठीक पता है कि मुझे क्या करना है।
तामारू कुछ क्षणों के लिए चुप रहा।
"बिना किसी संदेह के?"
मुझे नहीं पता कि मैं सफल हो पाऊंगा या नहीं, लेकिन मुझे पता है कि मुझे क्या करना है। इसमें कोई शक नहीं।
"लेकिन तुम मुझे बताना नहीं चाहते।"
मुझे माफ करना, लेकिन मैं अभी ऐसा नहीं कर सकती। सिर्फ आपको ही नहीं, मैं किसी को भी नहीं बता सकती। जिस पल मैं ये शब्द बोलूंगी, वो पूरी दुनिया में फैल जाएंगे।
चांद सुनते हैं। नन्हे लोग सुनते हैं। घर सुनता है। ये शब्द उसके भीतर ही बंद होने थे। और इसके लिए उसे अपने दिल के चारों ओर एक मोटी दीवार बनानी पड़ी। फोन के दूसरी तरफ, तमारू अपनी मेज पर कलम से थपथपाहट कर रहा था। आओमामे को उसकी रुक-रुक कर, सूखी सी थपथपाहट सुनाई दे रही थी। यह एक अकेली सी आवाज़ थी, जिसमें कोई गूंज नहीं थी।
"ठीक है। मैं टेंगो कावाना से संपर्क करूँगा। लेकिन पहले मैडम की सहमति ज़रूरी है। मुझे आदेश मिला था कि आपको वहाँ से जल्द से जल्द निकालकर कहीं और ले जाया जाए। लेकिन आप कहती हैं कि आप उनसे मिलने तक नहीं जाना चाहतीं। मेरे लिए यह समझाना आसान नहीं होगा कि क्यों। क्या आप समझ रही हैं?"
किसी अतार्किक बात को तार्किक रूप से समझाना बहुत मुश्किल है।
"बिल्कुल सही। मुझे लगता है कि रोप्पोंगी में क्लैम परोसने वाले किसी रेस्टोरेंट में मोती ढूंढना ज्यादा आसान है। लेकिन मैं किसी तरह कोशिश जरूर करूंगा।"

“धन्यवाद,” आओमामे ने कहा।
"जो कुछ तुम मेरे साथ करने पर तुले हो, वह तो पूरी तरह से बेतुका लगता है। मुझे कारण और परिणाम के बीच कोई तार्किक संबंध नज़र नहीं आता। फिर भी, तुमसे इस तरह बात करते हुए, मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं तुम्हारी बातों को फिलहाल सच मान लूँ। पता नहीं क्यों।"
ओमामे चुप रही।
"वह महिला आप पर भरोसा करती है और विश्वास रखती है," तामारू ने कहा। "और अगर आप इतना ही ज़ोर देते हैं, तो उन्हें कोई कारण नहीं दिखेगा कि आप टेंगो से क्यों नहीं मिल सकते। आप और टेंगो बहुत करीबी लगते हैं।"
"दुनिया में किसी भी चीज से ज्यादा," आओमामे ने कहा।
दुनिया में किसी भी चीज़ से ज़्यादा, उसने मानसिक रूप से खुद को सुधारा।
और अगर मैं यह भी कह दूं कि वह बहुत खतरनाक है और आपको उससे संपर्क कराने से इनकार कर दूं, तब भी आप जाकर उसके दरवाजे पर दस्तक देंगे।
इसकी संभावना बहुत अधिक है।
— आपको कोई नहीं रोक सकता।
- नहीं।
तामारू कुछ क्षणों तक चुप रहा।
मुझे टेंगो कावाना को क्या संदेश देना चाहिए?
"जब अंधेरा हो जाए, तो उसे स्लाइड पर आने देना। अंधेरा होने के बाद कभी भी। मैं उसका इंतजार करूंगी।" उसे बताना कि आओमामे ने ऐसा कहा है, वह समझ जाएगा।
"मैं समझ गया। मैं उसे बता दूंगा। उसे अंधेरा होने के बाद स्लाइड पर आना चाहिए।"
और उसे यह भी बता दें कि अगर उसके पास कोई महत्वपूर्ण चीज है जिसे वह पीछे नहीं छोड़ना चाहता, तो उसे उसे अपने साथ ले जाना चाहिए। लेकिन उसे अपने दोनों हाथों का स्वतंत्र रूप से उपयोग करने में सक्षम होना चाहिए।
और वह इस सामान के साथ कहाँ जाएगा?
बहुत दूर।
- कितनी दूर?
- मुझें नहीं पता।
ठीक है। मैं यह संदेश पहुंचा दूंगा, बेशक, महोदया की अनुमति से। और मैं आपकी सुरक्षा के लिए अपनी पूरी कोशिश करूंगा। जितना हो सकेगा। लेकिन फिर भी, खतरा मंडराता रहेगा। लोग भी हताश होते हैं। आखिर आपको अपना ख्याल तो रखना ही होगा। "मुझे पता है," आओमामे ने शांत स्वर में कहा।
उसका हाथ अब भी उसके पेट पर था। और यह सिर्फ मेरे साथ ही नहीं हो रहा है, उसने सोचा।
*

फोन रखने के बाद, आओमामे सोफे पर गिर पड़ी। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और टेंगो के बारे में सोचने लगी। उसे और कुछ सूझ ही नहीं रहा था। उसकी छाती में दर्द होने लगा। लेकिन यह एक सुखद दर्द था, सहने योग्य दर्द। टेंगो सचमुच वहीं रहता था, उसके बहुत करीब। दस मिनट से भी कम दूरी पर। बस इस ख्याल से ही उसे अंदर से गर्माहट महसूस हुई। वह अविवाहित था और एक प्रीप स्कूल में गणित पढ़ाता था। वह एक साधारण से घर में रहता था जहाँ वह साफ-सफाई रखता था, खाना

अब से सब कुछ पहले जैसा नहीं रहेगा। मैं किसी को भी अपने ऊपर हावी नहीं होने दूंगी। अब से मैं सिर्फ एक ही सिद्धांत का पालन करूंगी, और वो है मेरी अपनी इच्छा। चाहे कुछ भी हो जाए, मैं इस नन्हे जीव की रक्षा करूंगी। मैं अपनी आखिरी सांस तक इसके लिए लड़ूंगी। यह मेरा जीवन है, यह मेरा बच्चा है। मुझे परवाह नहीं कि इसे किसने और किसलिए बनाया है, यह निःसंदेह मेरा और टेंगो का बच्चा है। मैं इसे किसी को नहीं दूंगी। मैं ही तय करूंगी कि क्या अच्छा है और क्या बुरा, मैं ही मूल सिद्धांत और दिशा बनूंगी। इसे कोई न भूले!
*

अगले दिन, बुधवार की दोपहर दो बजे, फोन की घंटी बजी।
"मैंने संदेश पहुंचा दिया," तामारू ने हमेशा की तरह बिना किसी भूमिका के कहा। "वह अब घर पर है। मैंने आज सुबह उससे फोन पर बात की थी। वह आज रात ठीक सात बजे स्लाइड पर आएगा।"
"क्या उसे अभी भी मैं याद था?"
"बिल्कुल, बहुत अच्छा। उन्होंने आपसे संपर्क करने की भी कोशिश की।"
नेता सही था। और टेंगो मुझे ढूंढ रहा था। उसने मन ही मन सोचा, बस इतना ही काफी है यह जानने के लिए, और उसका दिल खुशी से भर गया। दुनिया के किसी और शब्द का उसके लिए कोई मतलब नहीं था।
"जैसा कि आपने कहा, वह उन चीजों को लेगा जिनकी उसे परवाह है। मुझे लगता है कि उनमें वह पांडुलिपि भी शामिल होगी जिस पर वह अभी काम कर रहा है।"
मुझे पूरा यकीन है।
मैंने आस-पास के इलाके की जाँच की और सब ठीक लग रहा है। मुझे इलाके में कोई संदिग्ध व्यक्ति घूमता हुआ नहीं दिखा। जिस अपार्टमेंट में Căpăţână ठहरी थी, वह सुनसान है। आसपास शांति थी, लेकिन बहुत ज्यादा नहीं। लड़कों ने रात भर सामान का अच्छे से ध्यान रखा और उसे साफ किया। वे ज्यादा देर तक नहीं रुके।
मैंने हर चीज का बारीकी से निरीक्षण किया और शायद कोई रिसाव नहीं है।
- मैं खुश हूं।
"लेकिन यह एक संभावित बात है, एक क्षणिक बात है। स्थिति पल-पल बदलती रहती है।
जाहिर है, मैं भी परिपूर्ण नहीं हूँ। हो सकता है मैंने कुछ महत्वपूर्ण बात नज़रअंदाज़ कर दी हो। हो सकता है कि वे लोग मुझसे ज़्यादा कुशल निकले हों।" और यही वजह है कि अंततः मुझे अपना ख्याल रखना होगा।
- जैसा कि मैं कह रहा था।
— हर चीज के लिए धन्यवाद। मैं आभारी हूँ।
"मुझे नहीं पता कि तुम कहाँ जा रहे हो या क्या करने वाले हो," तामारू ने कहा।
"लेकिन अगर तुम कहीं दूर जा रहे हो और फिर कभी नहीं मिल पाओगे, तो जान लो कि मुझे तुम्हारी बहुत याद आएगी। यह कहना कम होगा, लेकिन तुम्हारे जैसे लोग बहुत कम मिलते हैं। तुम्हारे जैसे लोग बहुत कम देखने को मिलते हैं।"
आओमामे ने रिसीवर की ओर देखकर मुस्कुराया।
— मैं आपको लगभग यही प्रभाव देना चाहता था।
"उस महिला को आपकी ज़रूरत थी। काम के अलावा एक निजी साथी के रूप में। और इसीलिए उन्हें बहुत दुख है कि आपको उनसे अलग होना पड़ा। वह अभी फोन पर बात नहीं कर सकतीं। कृपया समझने की कोशिश करें।"
"मैं समझता हूँ। मुझे नहीं लगता कि मैं भी ठीक से बोल पाऊँगा।"

"तुमने कहा था कि तुम बहुत दूर जा रहे हो," तामारू ने कहा। "कितनी दूर?"
— एक ऐसी दूरी जिसे संख्याओं में मापा नहीं जा सकता।
— ठीक वैसे ही जैसे दो आत्माओं को अलग करने वाली दूरी।
ओमामे ने अपनी आंखें बंद कीं और गहरी सांस ली। उसकी आंखों में आंसू आने ही वाले थे, लेकिन उसने उन्हें रोक लिया।
"मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारे लिए सब कुछ अच्छा हो," तामारू ने धीरे से कहा।
मुझे खेद है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैं आपको बंदूक वापस दे सकता हूँ।
"यह कुछ भी नहीं है। यह मेरी तरफ से एक उपहार था। अगर इससे आपको परेशानी है, तो आप इसे टोक्यो खाड़ी में फेंक सकते हैं। इस तरह, दुनिया निरस्त्रीकरण की दिशा में एक और छोटा कदम बढ़ाएगी।"
"हो सकता है कि वह आखिरकार बंदूक न चलाए। चेखव के सिद्धांत के विपरीत।"
"मुझे इससे भी कोई परेशानी नहीं है। अगर यह ज़्यादा लंबा न खिंचे तो और भी अच्छा। हम बीसवीं सदी के अंत की ओर बढ़ रहे हैं। चीज़ें चेखव के ज़माने जैसी नहीं हैं। अब गाड़ियाँ नहीं चलतीं, औरतें कोर्सेट नहीं पहनतीं। दुनिया नाज़ीवाद, परमाणु बम, आधुनिक संगीत, इन सब से गुज़र चुकी है और फिर भी किसी तरह बची हुई है। इस बीच, साहित्यिक तकनीक में बहुत बदलाव आया है। आपको चिंता करने की ज़रूरत नहीं है," तमारू ने कहा। "लेकिन मेरा एक सवाल है। आज रात सात बजे आपकी मुलाकात स्लाइड पर टेंगो कावाना से है।"
— अगर मेरी किस्मत अच्छी रही तो हां।
"मान लीजिए कि आप दोनों मिलते हैं, तो आप स्लाइड के शीर्ष पर क्या करेंगे?" हम साथ मिलकर चांद को देखते हैं।
"कितना रोमांटिक है!" तामारू ने प्रशंसा करते हुए कहा।

अध्याय 27 शायद यह दुनिया पर्याप्त नहीं है

बुधवार की सुबह जब फोन की घंटी बजी, तो टेंगो सो रहा था। उसे भोर होने तक नींद नहीं आई थी और पिछली रात पी गई व्हिस्की का असर अभी भी उस पर था। वह बिस्तर से उठा और आश्चर्य से देखा कि बाहर उजाला हो चुका था।
“श्रीमान टेंगो कावाना?” एक अपरिचित पुरुष की आवाज ने पुकारा।
"हां," टेंगो ने जवाब दिया, यह सोचते हुए कि शायद यह उसके पिता की मृत्यु से संबंधित कोई औपचारिकता होगी।
उस व्यक्ति की आवाज़ में उसे औपचारिक और शांत लहजा महसूस हुआ। लेकिन अलार्म घड़ी बता रही थी कि आठ बजने ही वाले थे। नगर पालिका या अंतिम संस्कार गृह से उस समय उसे फोन नहीं आएगा।
मुझे इतनी जल्दी फोन करने के लिए खेद है, लेकिन मुझे जल्दी थी।
एक अत्यावश्यक मामला।
“यह सब क्या है?” टेंगो ने पूछा, उसका दिमाग अभी भी चकरा रहा था।
"क्या आपको आओमामे नाम याद है?"
आओमामे? उसी क्षण पेय के कारण होने वाला चक्कर और हल्कापन गायब हो गया।
बत्तियाँ वापस आ गईं और होश में आते ही तेंगो ने रिसीवर को अपने हाथ में और कसकर पकड़ लिया।
"मुझे वह याद है," उसने जवाब दिया।
— यह एक अजीब नाम है।
"हम प्राथमिक विद्यालय में सहपाठी थे," टेंगो ने अपना गला साफ करते हुए कहा।
वह व्यक्ति एक पल के लिए रुका।
"अगर मैं अभी आपको उसके बारे में बताऊं तो क्या आपको दिलचस्पी होगी?"
टेंगो ने मन ही मन सोचा, यह आदमी कितनी अजीब तरह से बोलता है। उसके चेहरे के भाव बिलकुल अनोखे हैं। ऐसा लगता है जैसे मैं किसी आधुनिक नाटक की पंक्तियों का अनुवाद सुन रहा हूँ।
"अगर आपको इसमें दिलचस्पी नहीं है, तो हम दोनों अपना समय बर्बाद कर रहे हैं। मैं अब फोन काट सकता हूँ।"
"मुझे दिलचस्पी है," टेंगो ने जल्दी से जवाब दिया। "लेकिन क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप कौन हैं?"
"मुझे आओमामे का संदेश मिला है," उस आदमी ने उसके सवाल को अनसुना करते हुए कहा। "वह आपसे मिलना चाहती है। आपका क्या कहना है? क्या आप उससे मिलना चाहेंगे?"
"हां," टेंगो ने गले में जकड़न दूर करने के लिए खांसते हुए कहा। "मैं भी उससे बहुत समय से मिलना चाहता था।"
"बिल्कुल सही। वह आपसे मिलना चाहती है, आप उससे मिलना चाहते हैं।"
टेंगो को अचानक एहसास हुआ कि कमरा ठंडा है। उसने पास पड़ा एक कार्डिगन उठाया और उसे अपने पजामे के ऊपर पहन लिया।
“तो फिर मुझे क्या करना चाहिए?” टेंगो ने पूछा।
क्या आप अंधेरा होने के बाद स्लाइड पर आ सकते हैं?
“स्लाइड पर?” टेंगो ने कहा।

यह आदमी किस बारे में बात कर रहा था?
"ओमामे ने कहा था कि तुम समझ जाओगे कि बात क्या है। चलो स्लाइड से नीचे आ जाओ। मैं बस उसका संदेश तुम्हें बता रही हूँ।"
टेंगो ने अनजाने में अपने बालों में हाथ फेरा। नींद से उसके बाल बिखरे हुए थे, जगह-जगह से लटके हुए थे। स्लाइड। स्लाइड से मैंने दो महीने देखे। जाहिर है, उसका इशारा इसी की ओर है।
"मैं समझ गया," उसने रूखे स्वर में कहा।
"बहुत बढ़िया। और अपने साथ वे महत्वपूर्ण चीजें ले जाइए जिन्हें आप ले जाना चाहते हैं। ताकि आप दूर तक यात्रा कर सकें।"
“मुझे कौन सी ज़रूरी चीज़ें ले जानी हैं?” टेंगो ने आश्चर्य से पूछा।
— जिन्हें आप पीछे नहीं छोड़ना चाहते।
टेंगो ने सोच-समझकर अपने शब्दों का चयन किया।
मुझे ठीक से समझ नहीं आया, लेकिन क्या इसका मतलब यह है कि मैं यहाँ वापस नहीं आऊँगा?
"मुझे इतनी जानकारी नहीं है। जैसा कि मैंने आपको बताया, मैं बस संदेश को हूबहू आगे पहुंचा रहा हूं।"
टेंगो ने अपने बिखरे बालों में उंगलियां फेरते हुए सोचा, "क्या हम चल सकते हैं?"
— मैं अपने साथ और भी कागजात ले जा सकता हूँ।
"कोई बात नहीं," उस आदमी ने कहा। "आप जो चाहें चुन सकते हैं। बस आपको उन्हें एक ऐसे थैले में रखना होगा जिससे आप दोनों हाथों का स्वतंत्र रूप से उपयोग कर सकें।"
"दोनों हाथों का स्वतंत्र रूप से उपयोग करने के लिए," टेंगो ने दोहराया। "मेरा मतलब है, सूटकेस तो काम नहीं करेगा, है ना?"
मुझे ऐसा नहीं लगता।
उस आदमी की आवाज़ से उसकी उम्र या शक्ल-सूरत का कोई अंदाज़ा नहीं लग रहा था।
उसकी आवाज़ में कोई ठोस सुराग नहीं था। शायद फ़ोन रखते ही वह उसे भूल जाएगा।
उसकी खास बातें, उसकी भावनाएँ—अगर थीं भी—तो पूरी तरह दबी हुई थीं।
"मुझे बस इतना ही कहना था," उस व्यक्ति ने कहा।
“क्या आओमामे ठीक है?” टेंगो ने पूछा।
"शारीरिक रूप से तो कोई समस्या नहीं है," उन्होंने सावधानीपूर्वक उत्तर दिया। "लेकिन वह इस समय काफी तनावपूर्ण स्थिति में है। उसे हर हरकत में बहुत सावधानी बरतनी होगी, चाहे वह कितनी भी छोटी क्यों न हो। अन्यथा, उसे नुकसान हो सकता है।"
"उसे तकलीफ हो सकती है," टेंगो ने यंत्रवत दोहराया।
उस आदमी ने आगे कहा, "ज़्यादा देर मत करना। यहाँ समय बहुत महत्वपूर्ण है।" टेंगो ने मन ही मन दोहराया, "समय यहाँ एक महत्वपूर्ण कारक है। क्या यह आदमी शब्दों का चुनाव ठीक से नहीं कर रहा था? या वह बहुत तनाव में था?"
"मुझे लगता है कि मैं आज रात सात बजे स्लाइड पर आ सकता हूँ। अगर किसी कारणवश हम आज रात नहीं मिल पाते हैं, तो मैं कल उसी समय आ जाऊँगा।"
— ठीक है। तो अब आप समझ गए होंगे कि स्लाइड किस बारे में है।
- मैंने भी यही कहा।

टेंगो ने दीवार पर लगी घड़ी पर नजर डाली। अभी भी ग्यारह घंटे बाकी थे।
"वैसे, मैंने सुना है कि आपके पिता का निधन इस रविवार को हो गया। मेरी संवेदनाएं।"
टेंगो ने सहज भाव से उसे धन्यवाद दिया। फिर उसने सोचा कि उस आदमी को यह बात कैसे पता चली।
"मुझे आओमामे के बारे में थोड़ा और बताओ," उसने कहा। "वह कहाँ है, वह क्या करती है?"
"वह अविवाहित है और हिरोओ के एक स्पोर्ट्स क्लब में प्रशिक्षक के रूप में काम करती है। वह एक प्रतिभाशाली प्रशिक्षक है, लेकिन संयोगवश अब वह वहां काम नहीं कर रही है। और कुछ समय से, महज़ संयोगवश, वह आपके आस-पास ही रह रही है। आप उससे इस बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।"
और यह किस प्रकार की तनावपूर्ण स्थिति है?
उस आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने बस उन सवालों को अनसुना छोड़ दिया जिनका वह जवाब नहीं देना चाहता था—या जिन्हें जवाब देने की उसे ज़रूरत महसूस नहीं हुई। लगता है टेंगो ऐसे ही लोगों को आकर्षित करता था।
"तो यह आज रात सात बजे ही रहेगा," उस आदमी ने कहा।
"एक मिनट रुको!" टेंगो ने जल्दी से कहा। "मेरा एक सवाल है। किसी ने मुझे आगाह किया था कि कोई मुझ पर नज़र रख रहा है और मुझे सावधान रहना चाहिए। क्षमा करें, लेकिन क्या वह आपके बारे में बात कर रहा था?"
"नहीं, मैं नहीं हूँ," उस व्यक्ति ने तुरंत जवाब दिया। "कोई और आपको देख रहा था। लेकिन वैसे भी, ज़्यादा सावधानी बरतने में कोई बुराई नहीं है। जैसा कि उस व्यक्ति ने बताया।"
"क्या इस बात का कि मुझ पर नजर रखी जा रही है, उस बेहद खास स्थिति से कोई संबंध हो सकता है जिसमें वह खुद को पाती है?"
“हालात काफी तनावपूर्ण हैं,” उस आदमी ने उसे सुधारते हुए कहा। “हाँ, मुझे लगता है कि कहीं न कहीं कोई संबंध है।”
क्या यह जोखिम भरा है?
वह व्यक्ति बिना जल्दबाजी किए, सावधानीपूर्वक अपने शब्दों का चयन कर रहा था, मानो वह आपस में मिले हुए कई किस्मों के अनाजों को छांट रहा हो।
"अगर आपके लिए आओमामे-सान से दोबारा न मिल पाना एक तरह का जोखिम है, तो बेशक यह जोखिम भरा हो सकता है।"
टेंगो ने उस व्यक्ति के जटिल अभिव्यक्ति के तरीके को समझने में आसान बनाने के लिए अपने मन में उसे पुनर्व्यवस्थित करने का प्रयास किया। हालाँकि वह तथ्यों या परिस्थितियों को पूरी तरह से नहीं समझ पाया, लेकिन उसे यह अहसास हो गया कि स्थिति तनावपूर्ण थी।
"अगर हालात बिगड़ गए, तो शायद हम फिर कभी न मिलें।"
- बिल्कुल।
"मैं समझ गया। मैं इसका ध्यान रखूंगा," टेंगो ने कहा।
"आज सुबह आपको परेशान करने के लिए मैं क्षमा चाहता हूँ। मुझे लगता है मैंने आपको जगा दिया।"
ये कहकर उस आदमी ने फोन काट दिया। टेंगो कुछ देर तक अपने हाथ में पकड़े काले रिसीवर को देखता रहा। जैसा कि उम्मीद थी, फोन रखने के बाद उसे उस आदमी की

आवाज़ याद नहीं रही। टेंगो ने फिर से अपनी घड़ी देखी। आठ बजकर दस मिनट हो चुके थे। शाम सात बजे तक बचे हुए घंटे वह कैसे बिताएगा?
*

पहले वह नहाने गया, बाल धोए और बिखरे बालों को जितना हो सके संवारा। फिर उसने शीशे के सामने दाढ़ी बनाई। उसने अच्छे से दांत साफ किए और फ्लॉस भी किया। उसने फ्रिज से टमाटर का जूस निकाला और पी लिया, फिर केतली में पानी उबाला, कॉफी पीसी और अपने लिए कॉफी बनाई। उसने ब्रेड का एक टुकड़ा टोस्ट किया। उसने किचन टाइमर पर समय देखते हुए एक अंडा उबाला। उसने हर काम पर ध्यान केंद्रित किया और उसे सामान्य से अधिक समय दिया। और अभी तो सिर्फ साढ़े नौ बजे थे।
आज रात मेरी मुलाकात स्लाइड पर आओमामे से होगी।
इस विचार से उसे लगा जैसे उसकी सारी इंद्रियाँ बिखर गईं और चारों ओर फैल गईं। उसके हाथ, पैर और चेहरा, हर एक अलग दिशा में चला गया। वह अपने भावों को लंबे समय तक काबू में नहीं रख सका। वह चाहे कुछ भी करने की कोशिश करे, ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा था। वह पढ़ नहीं पा रहा था, और ज़ाहिर है, लिख भी नहीं पा रहा था। वह एक जगह स्थिर भी नहीं बैठ पा रहा था। वह बस इतना ही कर पा रहा था कि बर्तन धोए, कपड़े धोए, अलमारी के दराज ठीक किए और बिस्तर ठीक किया। लेकिन चाहे वह कुछ भी करे, हर पाँच मिनट में वह रुक जाता और दीवार पर लगी घड़ी को देखता। हर बार जब वह समय के बारे में सोचता, तो समय और भी धीरे-धीरे बीतता हुआ लगता।
माँ को पता है।
यही बात टेंगो मन ही मन सोच रहा था, जब वह सिंक के ऊपर एक ऐसे चाकू को तेज़ कर रहा था जिसे तेज़ करने की ज़रूरत भी नहीं थी। उसे पता है कि मैं पार्क की स्लाइड पर कई बार गया हूँ। उसने मुझे ज़रूर स्लाइड के ऊपर अकेले खड़े होकर आसमान की ओर देखते हुए देखा होगा। मैं इसे किसी और तरह से समझा नहीं सकता। टेंगो ने खुद को स्लाइड पर लालटेन की रोशनी में नहाया हुआ महसूस किया। उस पल उसे ज़रा भी एहसास नहीं हुआ था कि कोई उसे देख रहा है। आखिर वह उसे कहाँ से देख रहा था?
इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कहाँ, उसने मन ही मन सोचा। यह कोई बड़ी बात नहीं है। वह मुझे कहीं से भी देखे, मुझे तुरंत पहचान लेगी। यह सोचकर उसके पूरे शरीर में खुशी की एक लहर दौड़ गई। जैसे मैं तब से हमेशा उसके बारे में सोचता आया था, वैसे ही वह भी मेरे बारे में सोचती थी। टेंगो को यह अविश्वसनीय लग रहा था कि इस चलती-फिरती भूलभुलैया जैसी दुनिया में, बीस साल तक एक-दूसरे को देखे बिना भी दो लोगों—एक लड़के और एक लड़की—के दिल इतने गहरे तक एक-दूसरे से जुड़े रह सकते हैं।
लेकिन आओमामे ने मुझसे वहीं, उसी वक्त बात क्यों नहीं की? उसने सोचा। यह बहुत आसान होता। और उसे कैसे पता चला कि मैं यहाँ रहता हूँ? उसे या उस आदमी को मेरा नंबर कैसे मिला? मेरा नंबर तो फ़ोन बुक में भी नहीं है, क्योंकि मुझे लोगों का फ़ोन आना पसंद नहीं है। और न ही मेरा नंबर डायरेक्टरी में है।
कुछ बातें समझना मुश्किल है। और कहानी की कड़ियाँ बहुत उलझी हुई हैं। मुझे समझ नहीं आ रहा कि कौन सी कड़ियाँ आपस में जुड़ी हैं या उनके बीच क्या कारण-कार्य संबंध है। लेकिन, जब मैं इस बारे में सोचता हूँ, तो फुकाएरी के आने के बाद से मुझे ऐसा लगता है कि मैं ऐसी जगह पर रहता हूँ जहाँ बहुत सारे सवालिया

निशान और बहुत कम सुराग होना स्वाभाविक है। लेकिन तेंगो को एक अस्पष्ट आभास था कि यह रहस्य भी धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है।
खैर, आज रात सात बजे तक कम से कम कुछ सवालों के जवाब तो मिल ही जाएंगे, उसने सोचा। हम स्लाइड पर मिलेंगे। दो असहाय बच्चों की तरह नहीं, बल्कि दो स्वतंत्र और आत्मनिर्भर वयस्कों की तरह। एक प्रीप स्कूल शिक्षक और एक स्पोर्ट्स क्लब प्रशिक्षक। हम किस बारे में बात करेंगे? मुझे नहीं पता। लेकिन हम बात करेंगे। हमें अधूरी बातों को पूरा करना है, एक-दूसरे के बारे में बातें साझा करनी हैं। और अगर मुझे फोन पर बात कर रहे उस व्यक्ति के अजीबोगरीब मुहावरे का इस्तेमाल करना हो, तो वहाँ से हम कहीं "आगे बढ़ेंगे"। इसीलिए मुझे उन ज़रूरी चीज़ों को इकट्ठा करना होगा जिन्हें मैं पीछे नहीं छोड़ना चाहता और उन्हें एक ऐसे बैग में रखना होगा जिससे मैं "दोनों हाथों का स्वतंत्र रूप से इस्तेमाल" कर सकूँ। मुझे यहाँ से जाने का कोई अफ़सोस नहीं होगा। मैं सात साल इस घर में रहा और हफ़्ते में तीन दिन तैयारी स्कूल में पढ़ाया, लेकिन मुझे कभी ऐसा नहीं लगा कि यही मेरी ज़िंदगी है। यह महज़ एक अस्थायी घर था, पानी में बहता हुआ एक तैरता हुआ द्वीप। जिस प्रेमिका से मैं हफ़्ते में एक बार छुपकर मिलता था, वह अब नहीं रही। फुकाएरी कुछ समय मेरे साथ रही, फिर वह भी चली गई। वे अब कहाँ हैं या क्या कर रही हैं, तेंगो को नहीं पता। लेकिन वे चुपचाप उसकी ज़िंदगी से गायब हो गईं। और अगर वह चला गया, तो तैयारी स्कूल में उसकी जगह कोई और ले लेगा। उसके बिना भी दुनिया चलती रहेगी। अगर आओमामे उसके साथ कहीं जाना चाहेगी, तो वह बिना सोचे समझे उसके साथ चला जाएगा।
वो अपने साथ कौन-कौन सी ज़रूरी चीज़ें ले जाना चाहता था? पचास हज़ार येन और एक प्लास्टिक का बैंक कार्ड। बस इतना ही था उसके पास। उसके बचत खाते में लगभग दस लाख येन थे। दरअसल, सिर्फ़ इतना ही नहीं। उसके पास वो पैसा भी था जो उसने 'द क्राइसालिस ऑफ़ एयर' की रॉयल्टी के तौर पर ट्रांसफर किया था। उसने इसे कोमात्सु को लौटाने का इरादा किया था, लेकिन अभी तक लौटाया नहीं था। इसके अलावा, वो उपन्यास भी था जिसे उसने लिखना शुरू किया था और जो छप चुका था। वो इसे छोड़ नहीं सकता था। इसका कोई भौतिक मूल्य नहीं था, लेकिन तेंगो के लिए यह बेहद महत्वपूर्ण था। उसने पांडुलिपि को एक कागज़ के थैले में रखा और उसे अपने स्कूल में इस्तेमाल होने वाले लाल-भूरे रंग के विनाइल कंधे वाले थैले में डाल दिया। सिर्फ़ इसी वजह से थैला काफ़ी भारी हो गया। उसने एक डिस्क भी ली, जिसे उसने अपनी चमड़े की जैकेट की जेब में अलग से रख लिया। क्योंकि वो वर्ड प्रोसेसर साथ नहीं ले जा सकता था, इसलिए उसने एक पेन और एक नोटबुक भी ले ली। और क्या था?
उसे चिकुरा में वकील द्वारा दिया गया लिफाफा याद आया। उसके अंदर उसकी बैंक खाता पुस्तिका, निजी डाक टिकट, पारिवारिक रजिस्टर का अंश और उसके पिता द्वारा छोड़ी गई (कथित तौर पर) पारिवारिक तस्वीर थी। उसे ये सब भी ले जाना चाहिए था। बेशक, अपने स्कूल के रिकॉर्ड और एनएचके डिप्लोमा के बिना। टेंगो ने कपड़े और शौचालय का सामान न लेने का फैसला किया। उसके बैग में उनके लिए जगह नहीं थी, और वैसे भी जरूरत पड़ने पर वह उन्हें खरीद सकता था।
जब उसका सारा सामान उसके बैग में आ गया, तो उसने अपने सारे काम निपटा लिए। अब न तो बर्तन धोने थे और न ही कपड़े इस्त्री करने। टेंगो ने दीवार पर लगी घड़ी पर फिर से नज़र डाली। साढ़े दस बज रहे थे। उसने अपने दोस्त को फोन करके स्कूल के

समय में उसकी जगह काम करने के लिए कहने का सोचा, लेकिन उसे याद आया कि उसे सुबह-सुबह फोन उठाना पसंद नहीं था।
टेंगो अपने कपड़ों में ही बिस्तर पर लेटा हुआ था और मन ही मन कई संभावनाओं के बारे में सोच रहा था। पिछली बार जब उसने आओमामे को देखा था, तब वह दस साल की थी। अब वे दोनों तीस साल के हो चुके थे। इतने समय में, दोनों ने कई अनुभव झेले थे। कुछ सुखद, कुछ कम सुखद (और शायद बाद वाले ज़्यादा थे)। उनके रूप-रंग में, स्वभाव में, और रहने के माहौल में भी कई बदलाव आए थे। अब वे लड़का-लड़की नहीं रहे थे। क्या वह आओमामे सच में वही थी जिसकी उसे तलाश थी? क्या वह वही टेंगो कावाना था जिसकी उसे तलाश थी? टेंगो ने कल्पना की कि उस शाम वे दोनों स्लाइड पर मिले, एक-दूसरे को गौर से देखा, और दोनों निराश हो गए। शायद उनके पास कहने के लिए कुछ भी न हो। ऐसा सच में हो सकता था। खैर, अगर ऐसा नहीं हुआ तो यह बहुत अजीब बात होगी।
"शायद हमें मिलना ही नहीं चाहिए," उसने छत की ओर देखते हुए कहा। "क्या अलग रहना बेहतर नहीं होगा, और हम दोनों इस बात को दिल से याद करते रहें कि हम फिर से एक-दूसरे को कितना प्यार से देखना चाहते हैं? इस तरह हम इस उम्मीद को अपनी आत्मा में हमेशा के लिए संजोकर रख सकते हैं। यह उम्मीद एक छोटी लेकिन बेहद महत्वपूर्ण ऊर्जा की तरह है जो हमें अंदर तक गर्म रखती है। एक छोटी सी लौ जिसे हमने अपनी हथेली में सुरक्षित रखा है, हवा से बचाकर। अगर हकीकत की हवा उस पर से गुज़र जाए, तो वह आसानी से बुझ सकती है।"
टेंगो पूरे एक घंटे तक इन दो विरोधाभासी भावनाओं के बीच झूलता रहा, छत को घूरता रहा। वह किसी भी चीज़ से ज़्यादा आओमामे से मिलना चाहता था। लेकिन साथ ही, उसे उसके सामने आने से बहुत डर भी लग रहा था। निराशा और अजीब सी खामोशी, जो उसे जकड़ सकती थी, ने उसके दिल को सुन्न कर दिया था। वह खुद को दो हिस्सों में बँटा हुआ महसूस कर रहा था। वह एक आम आदमी से लंबा और ताकतवर था, लेकिन वह अच्छी तरह जानता था कि कुछ स्थितियों में वह कितना बेबस हो सकता है। लेकिन वह उससे मिलने जाने से खुद को रोक नहीं सका। यही वह चीज़ थी जिसे वह बीस सालों से लगातार, पूरे दिल से चाहता था। चाहे कितनी भी निराशा उसका इंतज़ार कर रही हो, वह पीठ फेरकर भाग नहीं सकता था।
छत को घूरते-घूरते थककर, टेंगो पीठ के बल लेटते हुए सो गया। चालीस-पैंतालीस मिनट तक वह गहरी, शांतिपूर्ण और स्वप्नहीन नींद में डूबा रहा। सोचने-विचारने और एकाग्रता से थकने के बाद उसे एक सुखद और गहरी नींद आई। पिछले कुछ दिनों से उसकी नींद अनियमित और रुक-रुक कर आ रही थी। सूर्यास्त से पहले उसे अपने शरीर में जमा सारी थकान को दूर करना ही था। घर से तरोताज़ा होकर निकलना था और पार्क जाना था। उसे सहज रूप से पता था कि उसके शरीर को आराम की सख्त ज़रूरत है। नींद की गोद में जाते हुए, तेंगो को कुमी की आवाज़ सुनाई दी। या शायद उसे सिर्फ़ ऐसा लगा कि उसने आवाज़ सुनी है। "जब उजाला हो जाए, तो यहाँ से निकल जाना। इससे पहले कि बाहर निकलने का रास्ता बंद हो जाए।"
यह कुमी की आवाज़ थी, लेकिन साथ ही साथ, ऐसा लग रहा था जैसे यह उल्लू की आवाज़ हो। ये दोनों आवाज़ें उसकी यादों में इस कदर घुलमिल गई थीं कि उन्हें अलग करना मुश्किल था। उस पल, उसे सबसे ज़्यादा ज्ञान की ज़रूरत थी। रात का ज्ञान, जो धरती में गहराई से समाया हुआ हो। कुछ ऐसा जो केवल गहरी नींद में ही मिल सकता हो।

*

साढ़े छह बजे, टेंगो अपना बैग करीने से रखकर घर से निकला। उसने ठीक वैसे ही कपड़े पहने थे जैसे पिछली बार स्लाइड पर जाते समय पहने थे। ग्रे स्वेटशर्ट, पुरानी चमड़े की जैकेट, जींस और भूरे जूते। ये सब थोड़े घिसे हुए थे, लेकिन उसे इनमें अच्छा लग रहा था। उसे सचमुच ऐसा लग रहा था जैसे ये उसके शरीर का हिस्सा हों। वह अब कभी यहाँ वापस नहीं आएगा। उसने जल्दी से सामने के दरवाजे और मेलबॉक्स से अपने नाम का कार्ड हटा दिया। आगे क्या होगा, इसके बारे में वह समय आने पर सोच सकता था।
टेंगो दरवाजे पर रुक गया और चारों ओर ध्यान से देखने लगा। अगर फुकाएरी की बात मानें तो कोई उसे देख रहा था। लेकिन इस बार भी उसे कुछ नज़र नहीं आया। सब कुछ हमेशा की तरह ही था। सूर्यास्त के बाद सड़क पर एक भी इंसान नहीं होता था। टेंगो धीरे-धीरे चलते हुए स्टेशन की ओर बढ़ा। बीच-बीच में वह पीछे मुड़कर देखता रहता था कि कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा। वह कुछ बार संकरी गलियों में मुड़ा, लेकिन उसे कुछ नहीं मिला। वहाँ वह रुककर इंतज़ार करता रहा कि कोई दिखाई दे। फोन पर बात करने वाले व्यक्ति ने उसे सावधान रहने की सलाह दी थी। खुद के लिए भी और आओमामे के लिए भी, जो इस समय तनावपूर्ण स्थिति में थी।
क्या मुझे फोन करने वाला आदमी सचमुच आओमामे का परिचित था? तेंगो को अचानक आश्चर्य हुआ। क्या यह कोई सोची-समझी चाल नहीं थी? जैसे ही उसने इस संभावना पर विचार किया, वह चिंतित होने लगा। अगर यह कोई जाल था, तो यह केवल पायनियर्स का ही हो सकता था। क्योंकि उसने 'द एयर क्राइसालिस' को दोबारा लिखा था, इसलिए वह शायद (वास्तव में, निश्चित रूप से) अब उनकी ब्लैकलिस्ट में था। यही कारण था कि उशिकावा नाम का वह अजीब आदमी, जो उनका नौकर मात्र था, शेयर बाजार के बारे में उस संदिग्ध कहानी के साथ उसके पास आया था। और तो और, उसने तीन महीने तक फुकाएरी को अपने घर में पनाह दी थी - हालाँकि उसके पास कोई विकल्प नहीं था। संप्रदाय के पास उसे नापसंद करने के पर्याप्त कारण थे।
फिर भी, फिर भी, टेंगो ने अपना सिर एक तरफ झुकाते हुए सोचा, वे मुझे अपने ठिकाने से बाहर निकालने के लिए आओमामे को चारा बनाकर मेरे लिए जाल क्यों बिछाएंगे? उन्हें पता था कि वह कहाँ रहता है। ऐसा तो था नहीं कि वह कहीं छिपा हुआ था। अगर उन्हें उससे कोई काम होता, तो वे सीधे उसके पास आ सकते थे। उसे स्लाइड के ऊपर तक लाने की कोई ज़रूरत नहीं थी। दूसरी ओर, अगर सच में आओमामे को वहाँ लाने के लिए उसे ही चारा बनाया गया होता, तो कहानी ही बदल जाती।
लेकिन आओमामे को लुभाने की क्या जरूरत है?
उसे कोई कारण समझ नहीं आया। क्या उसका और पायनियर्स का कोई संबंध हो सकता है? लेकिन टेंगो इससे आगे कुछ नहीं सोच सकता था। उसे उससे सीधे पूछना ही होगा। यानी, अगर वे मिल सकें तो।
खैर, जैसा कि उस आदमी ने फोन पर कहा था, थोड़ी सी अतिरिक्त सावधानी कभी नुकसान नहीं पहुंचाती। टेंगो ने कई जगह रास्ता बदला और बड़ी सावधानी से यह सुनिश्चित किया कि कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा है। फिर वह पार्क की ओर तेज़ी से बढ़ गया।
*

वह पौने सात बजे वहाँ पहुँचा। शाम ढल रही थी और स्ट्रीटलाइट की रोशनी से छोटा सा पार्क कृत्रिम और असमान रोशनी से नहाया हुआ था, जो उसके हर कोने तक पहुँच

होश आया, तब तक सब कुछ हो चुका था, मानो समय एक छलांग लगाकर आगे बढ़ गया हो। बिना किसी भूमिका के, घटनाएँ अगले चरण में पहुँच गई थीं। कितना अजीब है, उसने आँखें बंद करके मन ही मन सोचा। ऐसा कैसे हो सकता है? एक पल पहले समय असहनीय रूप से धीरे-धीरे चल रहा था, और अगले ही पल वह कई कदम आगे बढ़ गया।
यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसका विशाल हाथ सचमुच वहीं है, किसी ने उसे और भी कसकर दबाया। उसकी उंगलियां लंबी और नाजुक थीं, लेकिन मजबूत थीं।
ओमामे, टेंगो ने मन ही मन सोचा, लेकिन उसने उसका नाम ज़ोर से नहीं लिया। उसने अपनी आँखें भी नहीं खोलीं। उसने बस उसका हाथ भी हल्के से दबा दिया। यह वही हाथ था जिसे वह पहचानता था। इन बीस सालों में वह एक पल के लिए भी उसका स्पर्श नहीं भूला था। बेशक, अब यह दस साल के बच्चे का छोटा सा हाथ नहीं था। निस्संदेह, बीस सालों में उस हाथ ने हर तरह की चीज़ों को छुआ, पकड़ा और संभाला था। हर आकार की चीज़ें। और उसमें ताकत भी आ गई थी। लेकिन टेंगो तुरंत समझ गया कि यह वही हाथ है। यह उसे उसी तरह थामे हुए था, वही भावनाएँ व्यक्त कर रहा था।
बीस साल उसके भीतर पल भर में पिघल गए, मानो एक बवंडर में मिल गए हों। इस दौरान उसने जो भी छवियां, शब्द और मूल्य संचित किए थे, वे सब एकत्रित होकर उसके हृदय के केंद्र में एक मोटे स्तंभ का रूप ले लिया, जो कुम्हार के चाक की तरह घूमता था। टेंगो चुपचाप इस दृश्य को देखता रहा, मानो कोई व्यक्ति किसी ग्रह के विनाश और पुनर्जन्म को देख रहा हो।
ओमामे भी चुप थी। दोनों जमे हुए स्लाइड पर चुपचाप हाथ पकड़े खड़े थे। वे फिर से दस साल के लड़के और दस साल की लड़की बन गए थे। एक अकेला लड़का और एक अकेली लड़की। स्कूल के बाद का क्लासरूम, सर्दियों की शुरुआत में। दोनों एक-दूसरे को क्या दें और क्या मांगें, यह उन्हें समझ नहीं आ रहा था। जन्म से ही उन्हें किसी ने सच्चा प्यार नहीं दिया था और न ही उन्होंने किसी को सच्चा प्यार दिया था। उन्होंने किसी को गले नहीं लगाया था और न ही किसी ने उन्हें गले लगाया था। उन्हें नहीं पता था कि उनका यह प्रयास उन्हें कहाँ ले जाएगा। तभी वे एक बिना दरवाजे वाले कमरे में दाखिल हुए। वे वहाँ से निकल नहीं सकते थे और न ही कोई अंदर आ सकता था। उस समय उन्हें इसका एहसास नहीं हुआ, लेकिन पूरी दुनिया में वही एक आदर्श जगह थी। एक ऐसी जगह जो असीम रूप से एकांत में थी, लेकिन जहाँ अकेलेपन का नामोनिशान नहीं था।
यह सिलसिला कब से चल रहा था? शायद पाँच मिनट, शायद एक घंटा। शायद पूरा एक दिन बीत गया था। या शायद समय थम सा गया था। टेंगो समय के बारे में क्या जानता था? सिवाय इसके कि वे पार्क की स्लाइड के ऊपर, हाथ पकड़े, चुपचाप, जितना चाहें उतना समय बिता सकते थे। दस साल की उम्र में भी उसे ऐसा ही महसूस होता था, और बीस साल बाद भी अब उसे ऐसा ही महसूस हो रहा है।
इसके अलावा, वह यह भी जानता था कि उसे इस नई दुनिया में ढलने के लिए समय चाहिए। अब से, उसके भाव, चीजों को देखने का नजरिया, शब्दों का चुनाव, सांस लेने या चलने का तरीका, सब कुछ धीरे-धीरे बदलना और फिर से सीखना होगा। और इसके लिए, उसे इस दुनिया का सारा समय समेटना होगा। या, कौन जाने, शायद यह दुनिया काफी न हो, उसने खुद से कहा।
"टेंगो," आओमामे ने उसके कान में फुसफुसाया, उसकी आवाज़ न ऊँची थी न नीची, बल्कि ऐसी थी मानो किसी बात का वादा कर रही हो। अपनी आँखें खोलो।
टेंगो ने अपनी आँखें खोलीं। दुनिया में समय फिर से चलने लगा।

"□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□," □□□□□□ □□ □□□□

अध्याय 28 उनकी आत्मा का एक अंश

उशिकावा का शरीर छत पर लगी नियॉन लाइटों की रोशनी में नहाया हुआ था। हीटर बंद था और एक खिड़की खुली रह गई थी, इसीलिए कमरा एकदम ठंडा था। कमरे के बीचोंबीच कई कॉन्फ्रेंस टेबलें एक साथ रखी हुई थीं, और उशिकावा उन पर पीठ के बल लेटा हुआ था। उसने मोटे सर्दियों के अंडरवियर पहने थे और एक पुराने कंबल से ढका हुआ था। कंबल उसके पेट के चारों ओर इस तरह फूला हुआ था जैसे खेत के बीच में कोई बदबूदार जानवर हो। उसकी आंखें जिज्ञासा से खुली हुई थीं—क्योंकि कोई उन्हें बंद नहीं कर पाया था—और एक कपड़े से ढकी हुई थीं। उसके होंठ थोड़े से खुले थे, लेकिन उनसे न तो कोई शब्द निकल रहा था और न ही कोई सांस। उसका सिर पहले से भी ज्यादा चपटा और रहस्यमय लग रहा था। उसकी घनी, घुंघराली काली भौहें, जो गुप्तांगों के बालों जैसी लग रही थीं, उसके चेहरे को ठीक से नहीं घेर रही थीं। बाल्ड ने गहरे नीले रंग का डाउन जैकेट पहना हुआ था, और कर्ली ने फर कॉलर वाला भूरे रंग का वेलवेट जैकेट। दोनों ही जैकेट उन पर ठीक से फिट नहीं हो रहे थे, मानो उन्हें सीमित स्टॉक में से जल्दबाजी में चुना गया हो। अंदर होने के बावजूद, वे पसीने से तरबतर थे। कमरे में केवल तीन ही लोग थे - बाल्ड, कर्ली और उशिकावा। छत के पास दीवार पर ऊँचाई पर एल्युमीनियम के फ्रेम वाली तीन खिड़कियाँ थीं, जिनमें से एक कमरे को ठंडा रखने के लिए खुली थी। जिस मेज पर शव रखा था, उसके अलावा कमरे में कोई और फर्नीचर नहीं था। कमरा बहुत ही नीरस और औपचारिक था। यहाँ तक कि शव भी - चाहे वह उसका हो या उशिकावा का - वहाँ पड़ा हुआ बहुत ही नीरस और औपचारिक लग रहा था।
किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा। कमरा एकदम शांत था। गंजे आदमी के मन में बहुत कुछ चल रहा था, और बालों वाला आदमी तो कुछ बोलता ही नहीं था। उशिकावा बोल सकता था, क्योंकि वह एक अच्छा वक्ता था, लेकिन दो शाम पहले ही उसका देहांत हो गया था। गंजा आदमी धीरे-धीरे उन मेजों के पास से गुजरा जिन पर उशिकावा का शव पड़ा था, वह सोच में डूबा हुआ था। सिवाय इसके कि जब वह मुड़कर एक दीवार के पास पहुँचा, तो उसके कदमों की चाल एक जैसी ही रही। उसके चमड़े के जूतों से फर्श पर बिछे सस्ते, फीके कालीन पर कोई आवाज़ नहीं हुई। बालों वाला आदमी हमेशा की तरह दरवाजे के पास खड़ा था, जहाँ वह अकड़ा हुआ, बिना हिले-डुले खड़ा था। उसने अपने पैर थोड़े फैला रखे थे, पीठ सीधी थी, और उसकी निगाहें हवा में एक बिंदु पर टिकी हुई थीं। उसे न तो ठंड लग रही थी और न ही थकान। उसकी दुर्लभ लेकिन तेज़ पलकों के झपकने और नियमित अंतराल पर उसके मुँह से निकलने वाली सफेद भाप से मुश्किल से ही अंदाज़ा लगाया जा सकता था कि वह जीवित है।
*

उस दिन, कई लोग उस ठंडे कमरे में इकट्ठा हुए थे और चर्चा कर रहे थे। प्रबंधन के कई सदस्य फील्ड में गए हुए थे, इसलिए उन्हें इकट्ठा होने में पूरा एक दिन लग गया था। यह एक गुप्त बैठक थी, इसलिए बातचीत दबे स्वर में, फुसफुसाते हुए की गई थी, ताकि बाहर किसी को सुनाई न दे। इस दौरान, उशिकावा का शरीर मेज पर पड़ा था, मानो किसी मशीन टूल मेले में प्रदर्शित कोई वस्तु हो। शव अकड़ चुका था, और उसे फिर से लचीला होने में कम से कम तीन दिन और लगेंगे। वहां इकट्ठा हुए लोगों ने कुछ व्यावहारिक मामलों पर चर्चा की, और बीच-बीच में उसकी ओर देखते रहे।

तस्वीरें नहीं मिलीं। उशिकावा के हत्यारे ने शायद उन्हें ले लिया होगा। फिल्मों के साथ, ज़ाहिर है। उसकी मौत सिर्फ़ अंडरवियर पहने हुए हुई थी, इसलिए शायद उस पर सोते समय, स्लीपिंग बैग में हमला किया गया था। वह व्यक्ति बिना किसी आवाज़ के कमरे में घुस गया था। इसके अलावा, ऐसा प्रतीत होता है कि उशिकावा की मृत्यु दर्दनाक तरीके से हुई थी। उनके अंडरवियर पेशाब से भीगे हुए थे।
उस कार में सिर्फ बाल्ड और कर्ली ही यामानाशी के लिए रवाना हुए। बाकी दोनों सफाई का काम पूरा करने के लिए टोक्यो में ही रुके रहे। शुरू से अंत तक, कार सिर्फ कर्ली ही चला रहा था। कार मेट्रोपॉलिटन एक्सप्रेसवे पार करके चूओ एक्सप्रेसवे पर पहुंची और पश्चिम की ओर चल पड़ी। भोर से पहले सड़क खाली थी, लेकिन उसने गति सीमा का सख्ती से पालन किया। अगर पुलिस ने उन्हें रोक लिया, तो उनका काम तमाम हो जाता। नंबर प्लेट नकली लगा दी गई थीं, और फ्लैटबेड पर एक कंटेनर था जिसमें एक मृत व्यक्ति था। उनके पास खुद को सही ठहराने का कोई तरीका नहीं था। दोनों पूरी यात्रा के दौरान चुप रहे।
भोर होते ही वे संप्रदाय पहुँचे। परिसर में पहले से ही उनका इंतज़ार कर रहे चिकित्सक ने उशिकावा के शरीर की जाँच की और पुष्टि की कि उनकी मृत्यु दम घुटने से हुई थी। हालाँकि, उनके गले पर गला घोंटने के कोई निशान नहीं थे। यह अनुमान लगाया गया कि उनके सिर पर एक बोरी डाली गई थी। उनके हाथों और पैरों की भी जाँच की गई, लेकिन बंधन के कोई निशान नहीं मिले। उन पर मारपीट या यातना के कोई संकेत नहीं थे। उनके चेहरे पर पीड़ा का भी कोई भाव नहीं था। उनके चेहरे पर केवल घोर असमंजस ही दिखाई दे रहा था, मानो कोई प्रश्न उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा हो। यद्यपि उनकी हत्या कर दी गई थी, शरीर काफी शालीन लग रहा था। चिकित्सक आश्चर्यचकित प्रतीत हुए। संभव है कि उनकी मृत्यु के बाद, किसी ने उनके चेहरे की मालिश की हो ताकि वह अधिक शांत दिखाई दे।
"यहाँ आप देख सकते हैं कि एक पेशेवर व्यक्ति किसी भी चीज़ को नज़रअंदाज़ नहीं करता," चेलियोस ने अपने वरिष्ठों को समझाया। कोई सुराग नहीं बचा था। शायद उसने उसे चीखने भी नहीं दिया। यह सब आधी रात को हुआ था और अगर वह दर्द से चीखता, तो उसकी आवाज़ पूरे मोहल्ले में सुनाई देती। एक बदमाश ऐसा काम नहीं कर सकता।"
उशिकावा की मौत एक पेशेवर के हाथों क्यों होनी चाहिए?
गंजे आदमी ने सोच-समझकर अपने शब्द चुने।
"शायद उसने गलती से किसी की पूंछ पर पैर रख दिया होगा। एक ऐसी पूंछ जिस पर उसे पैर नहीं रखना चाहिए था, और उसे यह एहसास भी नहीं हुआ होगा कि वह क्या कर रहा है।"
क्या ये वही लोग हैं जिन्होंने नेता की देखभाल की थी?
"हमारे पास सबूत नहीं हैं, लेकिन इसकी बहुत संभावना है। इसके अलावा, उशिकावा को लगभग यातना दी गई थी। हमें अभी तक ठीक से पता नहीं है कि उनके साथ क्या किया गया था, लेकिन हम मामले की गहन जांच कर रहे हैं।"
उशिकावा ने कितनी देर तक बात की?
"उसे वह सब कुछ बताने के लिए मजबूर किया गया जो वह जानता था। इसमें कोई संदेह नहीं है। हालांकि, उशिकावा की इस मामले से संबंधित जानकारी तक बहुत सीमित पहुंच थी। इसलिए, उसने जो कुछ भी कहा होगा, उससे ज्यादा नुकसान नहीं होगा।"

उस गंजे आदमी के पास संप्रदाय से संबंधित सभी जानकारी तक पहुंच नहीं थी, लेकिन वह उशिकावा जैसे बाहरी व्यक्ति की तुलना में कहीं अधिक जानता था। क्या पेशेवर का मतलब संगठित अपराध से है?
"इसमें किसी गिरोह का हाथ नहीं है, और न ही याकूज़ा का हो सकता है," गंजे आदमी ने सिर हिलाते हुए जवाब दिया। "उनका तरीका कहीं ज़्यादा हिंसक और खूनी होता है। वे इतने सलीके से काम नहीं करते। उशिकावा को मारने वाले ने हमारे लिए एक संदेश छोड़ा है। हमारा सिस्टम बहुत ही उन्नत है, और अगर तुमने दखल दिया, तो हम उसी हिसाब से कार्रवाई करेंगे। इस मामले में दखल मत दो।"
यह मामला?
गंजे आदमी ने अपना सिर हिलाया।
मुझे भी ठीक से पता नहीं कि मामला क्या है। उशिकावा आजकल अकेले ही काम कर रहा है। मैंने उससे कई बार रास्ते में रिपोर्ट देने को कहा, लेकिन उसका बहाना हमेशा यही होता था कि उसके पास ठीक से रिपोर्ट देने के लिए पर्याप्त जानकारी नहीं है। शायद वह खुद ही सच्चाई का पता लगाना चाहता था। और इसका मतलब है कि उसने जो कुछ भी सीखा था, वह सब उसके साथ चला गया। उशिकावा को नेता ने खुद बुलाया था, पता नहीं कहाँ से, और अब तक वह एक तरह से स्वतंत्र एजेंट के रूप में काम कर रहा था। वह किसी संगठन से जुड़ा नहीं था। और पदानुक्रम के हिसाब से, मैं उसे नियंत्रित करने की स्थिति में नहीं था।
गंजे आदमी को अपनी ज़िम्मेदारी का दायरा स्पष्ट रूप से बताना था। यह समूह भी एक संगठन था। हर संगठन के अपने नियम होते हैं, और नियमों का उल्लंघन करने पर सज़ा मिलती है। वह नहीं चाहता था कि सारा दोष उस पर आए।
वहां उशिकावा किसकी देखरेख कर रहे थे?
"मुझे अभी तक पता नहीं चला है। आम तौर पर, यह उस इमारत में या उसके आस-पास रहने वाला कोई व्यक्ति होता। टोक्यो में मैंने जिन लोगों को छोड़ा है, वे फिलहाल मामले की जांच कर रहे हैं, लेकिन उन्होंने अभी तक मुझसे संपर्क नहीं किया है। लगता है जांच में कुछ समय लगेगा। मुझे लगता है कि मुझे खुद टोक्यो जाकर इस मामले को सुलझाना चाहिए।"
गंजे आदमी ने टोक्यो में छोड़े अपने अधीनस्थों के कौशल को ज़्यादा महत्व नहीं दिया। वे वफादार तो थे, लेकिन कुशल नहीं थे। और उसने अभी तक उन्हें स्थिति के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं दी थी। उसके लिए सब कुछ खुद संभालना ज़्यादा कारगर था। और उशिकावा के कार्यालय की अच्छी तरह से जाँच करना भी अच्छा रहता। हालाँकि, शायद फ़ोन पर बात कर रहे उस आदमी ने पहले ही ऐसा कर लिया था। लेकिन उसे टोक्यो जाने की अनुमति नहीं थी। उसे स्थिति स्पष्ट होने तक गंजे आदमी के साथ मुख्यालय में ही रहना था। यह एक आदेश था।
Oare pe Aomame o supraveghea Ushikawa?
"नहीं, यह निश्चित रूप से आओमामे नहीं थी। अगर वह होती, तो जैसे ही उसे पता चलता कि वह कहाँ है, वह हमें बता देती, क्योंकि इससे उसकी ज़िम्मेदारी, उसे सौंपा गया काम, पूरा हो जाता। ज़रूर कोई और था जिसने उसे आओमामे तक पहुँचाया होगा, या शायद उसे उसके पास ले गया होगा। वरना, बात समझ में नहीं आती।"
और जब वह उस व्यक्ति पर नजर रख रहा था, उसी दौरान उसका पता लगाकर उसे फंसा दिया गया?

"हाँ, मैं भी यही कहूँगा," गंजे आदमी ने जवाब दिया। वह अकेला था और खतरे के बहुत करीब पहुँच गया था। उसे एक अहम सुराग मिला और वह नतीजे हासिल करने के लिए दौड़ पड़ा। अगर और लोग सतर्क होते, तो वे अपनी रक्षा कर सकते थे और यह नौबत नहीं आती।
आपने सीधे उस आदमी से फोन पर बात की। क्या आपको लगता है कि हम आओमामे से भी बात कर सकते हैं?
"मुझे भी समझ नहीं आ रहा कि क्या कहूँ। अगर आओमामे हमसे बातचीत करने को तैयार नहीं है, तो हमारे बीच बातचीत की कोई गुंजाइश नहीं है।"
फोन पर बात कर रहे व्यक्ति ने अपनी आवाज़ से यह बात स्पष्ट कर दी। सब कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि वह क्या चाहती है।
उन्हें इस बात की सराहना करनी चाहिए कि हम नेता के साथ इस मामले को एक तरफ रखना चाहते हैं और हम उनकी सुरक्षा की गारंटी देते हैं।
"और फिर भी वे हमसे और अधिक विस्तृत जानकारी मांग रहे हैं। हम आओमामे से क्यों मिलना चाहते हैं, हम उनके साथ शांति स्थापित करने के लिए क्यों तैयार हैं, या विशेष रूप से, हम उनके साथ किस बात पर बातचीत करने की कोशिश कर रहे हैं।"
जिस तरह से वे हमसे जानकारी मांग रहे हैं, उससे साफ पता चलता है कि उनके पास खुद सटीक जानकारी नहीं है।
"बिल्कुल सही। और फिर भी हमारे पास उनके बारे में सटीक जानकारी नहीं है। हमें अभी भी यह नहीं पता कि उन्होंने इतनी सुनियोजित योजना क्यों बनाई और नेता को मारने के लिए इतना प्रयास क्यों किया।"
बहरहाल, जब तक हमें उनकी ओर से कोई जवाब नहीं मिलता, हमें आओमामे की तलाश जारी रखनी चाहिए। भले ही इससे किसी को परेशानी क्यों न हो।
गंजे आदमी ने थोड़ी देर के लिए विराम लिया।
हम एक बहुत ही एकजुट संगठन हैं। हमारे पास लोग हैं और हम तेज़ी से और कुशलता से काम कर सकते हैं। हम स्थिर हैं, हमारा मनोबल ऊंचा है, और ज़रूरत पड़ने पर हम बलिदान भी देते हैं। लेकिन, विशुद्ध तकनीकी स्तर पर, हम बस कुछ बूढ़े लोग हैं। हमारे पास कोई विशेष प्रशिक्षण नहीं है। हमारे विपरीत, वे पेशेवर हैं। उनके पास जानकारी है, वे शांत भाव से काम करते हैं, और वे जो भी करते हैं उसमें संकोच नहीं करते। मैं कहूंगा कि उनके पास अनुभव भी है। और, जैसा कि आप जानते हैं, उशिकावा किसी भी तरह से लापरवाह व्यक्ति नहीं थे।
विशेष रूप से, जांच आगे कैसे बढ़ेगी?
"फिलहाल, सबसे अच्छा तरीका यही होगा कि उशिकावा को मिली उस बहुमूल्य बढ़त का लाभ उठाया जाए और उसका अनुसरण किया जाए। चाहे कुछ भी हो जाए।"
मतलब, इसके अलावा हमारे पास कोई और अच्छा संकेत नहीं है?
"नहीं," गंजे आदमी ने ईमानदारी से स्वीकार किया।
चाहे हमें कितनी भी मुश्किलों का सामना करना पड़े और चाहे कितनी भी कुर्बानियां देनी पड़ें, हमें आओमामे को ढूंढकर उसे सुरक्षित करना ही होगा। जितनी जल्दी हो सके।
"क्या यही बात उस आवाज़ ने कही थी जो हमें सुनाई दी थी?" चेलियोस ने पूछा।
क्या हमें जल्द से जल्द आओमामे को सुरक्षित कर लेना चाहिए, चाहे इसके लिए कोई भी बलिदान देना पड़े?

उन्हें कोई जवाब नहीं मिला। ऐसी जानकारी चेलियोस के स्तर तक नहीं पहुंचाई जा सकती थी। वह उच्च स्तरीय मंचों का हिस्सा नहीं थे। उनका काम केवल पहरेदारी करना था। लेकिन चेलियोस जानते थे कि यह एक अल्टीमेटम था और वेस्टल्स ने वह "आवाज" आखिरी बार सुनी थी।
*

जमे हुए कमरे में उशिकावा के शव के सामने इधर-उधर टहलते हुए, गंजे आदमी के मन में कुछ खटक रहा था। वह रुका, मुँह बनाया, भौंहें चढ़ाईं और अपने मन में कौंधी उस बात को समझने की कोशिश की। जब वह चलना बंद किया, तो बालों वाले आदमी ने चुपके से दरवाजे के पास अपनी जगह बदली। उसने गहरी साँस छोड़ी और अपना भार एक पैर से दूसरे पैर पर डाला।
कोएंजी, गंजे आदमी ने मन ही मन सोचा। उसने थोड़ा सा माथा सिकोड़ा और अपनी यादों की गहराई में छानबीन करने लगा। उसने एक पतला धागा पकड़ा और उसे धीरे- धीरे, सावधानी से खींच रहा था। इस मामले में कोई और भी शामिल था जो कोएंजी में रहता था। वह कौन हो सकता है?
उसने अपनी जेब से एक मोटी, मुड़ी-तुड़ी नोटबुक निकाली और जल्दी से उसके पन्ने पलटे। उसने यह सुनिश्चित किया कि उसकी याददाश्त सही है। हाँ, यह तेंगो कावाना ही था। उसका पता कोएंजी, सुगिनावा वार्ड में था। उसी इमारत में जहाँ उशिकावा की मृत्यु हुई थी। केवल अपार्टमेंट नंबर अलग था। एक दूसरी मंजिल पर था, दूसरा भूतल पर। क्या उशिकावा तेंगो पर नज़र रख रहा था? इसमें कोई शक नहीं। संयोग से उसका उसी इमारत में होना असंभव था।
लेकिन जब हालात इतने गंभीर थे, तब उशिकावा ने तेंगो पर नज़र क्यों रखी थी? गंजे आदमी को तब तक तेंगो का पता याद न रहने का कारण यह था कि उसकी उसमें बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं रही थी। तेंगो कावाना ने एरिका फुकादा के उपन्यास 'द क्राइसालिस ऑफ एयर' को दोबारा लिखा था। इस उपन्यास ने पत्रिका का पहला पुरस्कार जीता था, बेस्टसेलर सूची में रहने के दौरान यह प्रकाशित भी हुआ था, और तेंगो को ब्लैकलिस्ट कर दिया गया था। ऐसी अटकलें थीं कि उसने इसमें कोई बड़ी भूमिका निभाई थी या उसके पास कोई महत्वपूर्ण रहस्य था। लेकिन अब, उसकी भूमिका समाप्त हो चुकी थी। पता चला कि वह एक गुमनाम लेखक से ज़्यादा कुछ नहीं था। उसने कोमात्सु के कहने पर किताब को दोबारा लिखा था और थोड़ी सी रकम कमाई थी। बस इतना ही। इस समय, समूह की सारी दिलचस्पी केवल आओमामे पर केंद्रित थी। फिर भी उशिकावा ने उस एक व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित किया था। उसने खुद को ठीक से संगठित किया था और उस पर नज़र रखी थी। और इसी वजह से उसने अपनी जान गंवाई। क्यों?
गंजे आदमी को कुछ भी पता नहीं था। उशिकावा को ज़रूर कुछ सुराग मिल गया था और उसे लगता था कि अगर वह तेंगो कावाना पर कड़ी नज़र रखेगा, तो उसे आओमामे का पता चल जाएगा। इसीलिए उसने उसका अपार्टमेंट किराए पर लिया था, खिड़की के पास तिपाई लगा रखी थी और शायद कुछ समय से उस पर नज़र रख रहा था। क्या आओमामे और तेंगो कावाना के बीच कोई संबंध हो सकता है? और अगर था, तो किस तरह का संबंध? बिना कुछ कहे, गंजे आदमी ने कमरे से निकलकर बगल वाले गर्म कमरे में जाकर टोक्यो को फोन किया। उसने शिबुया के साकुरागाओका में एक इमारत का नंबर डायल किया। उसने अपने अधीनस्थों को वहाँ बुलाया और उन्हें तुरंत कोएंजी स्थित उस अपार्टमेंट में लौटने का आदेश दिया जहाँ उशिकावा था, और तेंगो कावाना की

वहाँ मौजूद हर किसी को लगा होगा कि उशिकावा कुछ बोलने वाला है। कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण, कुछ ऐसा जो केवल एक मृत व्यक्ति ही जान सकता है। वह व्यक्ति भयभीत तो हुआ होगा, लेकिन साथ ही साथ बेसब्री से प्रतीक्षा भी कर रहा होगा। आखिर कौन से रहस्य उजागर होंगे?
लेकिन उशिकावा के खुले मुंह से कोई आवाज़ नहीं निकली। उससे न तो शब्द निकले, न सांस, बल्कि छह छोटे-छोटे आदमी निकले। वे लगभग दो इंच लंबे थे। उनके छोटे-छोटे शरीर छोटे-छोटे कपड़ों से ढके हुए थे। वे हरी काई से ढकी अपनी जीभों पर चलते हुए आए, अपने भीड़भाड़ वाले और गंदे दांतों पर कदम रखते हुए आगे बढ़े और एक-एक करके बाहर निकले, जैसे शाम को काम खत्म करके खनिक सतह पर लौट रहे हों। लेकिन उनके कपड़े और चेहरे साफ थे, उन पर गंदगी का कोई निशान नहीं था। वे ऐसे लोग थे जिन्हें गंदगी या बदहाली का कोई ज्ञान नहीं था।
उशिकावा के मुंह से निकलते ही, छह छोटे लोग उस कॉन्फ्रेंस टेबल पर उतरे जहाँ शव पड़ा था, और वहाँ वे कांपने लगे और धीरे-धीरे आकार में बढ़ने लगे। वे अपनी इच्छा से अपना आकार बदल सकते थे। लेकिन उनका आकार एक मीटर से अधिक नहीं हो सकता था और तीन सेंटीमीटर से कम नहीं हो सकता था। जब उनका आकार लगभग साठ या सत्तर सेंटीमीटर हो गया, तो वे कांपना बंद कर दिए और एक-एक करके टेबल से नीचे उतर गए। उनके चेहरों पर कोई भाव नहीं था। इसका मतलब यह नहीं था कि उनके चेहरे मुखौटे जैसे दिख रहे थे। वे वास्तव में बहुत सामान्य थे। अपने आकार को छोड़कर, वे बिल्कुल आपके या मेरे जैसे ही थे। बस उस समय कोई भाव दिखाने की आवश्यकता नहीं थी।
वे न तो जल्दी में थे और न ही जल्दबाजी में। उनके पास अपना काम करने के लिए बिल्कुल सही समय था। न तो बहुत ज्यादा और न ही बहुत कम। बिना किसी के इशारे के, वे छह लोग चुपचाप ज़मीन पर एक घेरे में बैठ गए। यह एक सुंदर, अटूट घेरा था, जिसका व्यास लगभग दो मीटर था।
अंत में, उनमें से एक ने चुपचाप हाथ बढ़ाकर हवा से एक पतला धागा पकड़ लिया। यह लगभग छह इंच लंबा और क्रीम रंग का था, लगभग सफेद, अर्ध-पारदर्शी। उसने इसे ज़मीन पर रख दिया। दूसरे ने भी ठीक वैसा ही किया। उसी रंग और लंबाई का एक धागा। अगले तीन ने भी यही क्रिया दोहराई। लेकिन आखिरी वाले ने कुछ अलग किया। वह खड़ा हुआ, घेरे से बाहर निकला, वापस कॉन्फ्रेंस टेबल पर चढ़ गया, उशिकावा के विकृत सिर की ओर हाथ बढ़ाया और बालों का एक घुंघराला गुच्छा खींच लिया। उसने इसे बाकी गुच्छों की जगह इस्तेमाल किया। पहले वाले ने कुशलतापूर्वक हवा से खींचे गए पाँचों धागों और उशिकावा के सिर से निकाले गए एक धागे को कात दिया।
इस प्रकार छह नन्हे लोगों ने एक नया वायु कोकून बनाया। इस बार कोई नहीं बोला। और वे अब एक-दूसरे का साथ भी नहीं दे रहे थे। वे चुपचाप हवा से धागे खींच रहे थे, उशिकावा के सिर से बाल तोड़ रहे थे, और तेज़ी से वायु कोकून बुन रहे थे, एक सहज और निरंतर लय बनाए रखते हुए। कमरा ठंडा होने के बावजूद, उन्होंने भाप नहीं छोड़ी। अगर कोई वहाँ होता, तो वह भी इस पर आश्चर्य करता। या शायद उनके पास पहले से ही आश्चर्य करने के लिए बहुत सी चीजें थीं और वे इस बात पर ध्यान नहीं देते।
चाहे वे छोटे लोग कितनी भी मेहनत करें और बेचैन रहें (सचमुच वे आराम नहीं करते थे), वे एक रात में हवा का कोकून नहीं बना सकते थे। इसमें उन्हें कम से कम तीन

दिन लगते। लेकिन उन छहों को कोई जल्दी नहीं थी। उशिकावा को अकड़न से बाहर आने और भट्टी में पहुँचने में दो दिन और लगेंगे। वे इस बात से वाकिफ थे। अच्छा होता अगर वे दो रातों में कम से कम उसे कोई आकार दे पाते। उनके पास इसके लिए काफी समय था। और वैसे भी, उन्हें थकान का कोई अनुभव नहीं था।
उशिकावा मेज पर लेटा हुआ था, हल्की चाँदनी में नहाया हुआ। उसका मुँह खुला हुआ था और उसकी आँखें, जो बंद होने से इनकार कर रही थीं, एक मोटे कपड़े से ढकी हुई थीं। उसके जीवन के अंतिम क्षणों में, उसकी आँखों के सामने चूओ-रिंकन में बना उसका तैयार घर और उसका नन्हा कुत्ता, छोटे से लॉन में खुशी से उछल-कूद कर रहा था।
और उसकी आत्मा का एक हिस्सा हवा के कोकून में बदल जाएगा।

अध्याय 29 मैं अब इस हाथ को नहीं छोडूंगा

आओमामे ने फुसफुसाते हुए कहा, "टेंगो, अपनी आँखें खोलो।" टेंगो ने अपनी आँखें खोलीं। दुनिया में समय फिर से बहने लगा।
"चाँद दिखाई दे रहा है," आओमामे ने कहा।
टेंगो ने अपना सिर पीछे झुकाया और आकाश की ओर देखा। बादल अभी-अभी हट रहा था और एल्म के पेड़ की सूखी शाखाओं के बीच दो चाँद दिखाई दे रहे थे। एक बड़ा और पीला, दूसरा छोटा और हरा, थोड़ा बेढंगा। माँ और बेटी। अभी-अभी गुज़रे बादल की आकृति इन दोनों रंगों के मिश्रण से धुंधली सी दिख रही थी। जैसे किसी लंबी स्कर्ट का किनारा गलती से रंग में डूब गया हो।
तभी तेंगो ने अपने बगल में आओमामे को खड़ा देखा। वह अब दुबली-पतली, कुपोषित दस साल की बच्ची नहीं थी, जो पुराने, बेढंगे कपड़े पहने रहती थी और जिसकी माँ ने उसके बाल बेतरतीब ढंग से काट रखे थे। उसके पुराने रूप का कोई निशान नहीं बचा था। फिर भी उसने उसे देखते ही पहचान लिया। वह केवल आओमामे ही हो सकती थी, कोई और नहीं। बीस साल बाद भी उसकी आँखों का भाव नहीं बदला था। वह भाव दृढ़ और असीम रूप से स्पष्ट था। वे आँखें अपने लक्ष्य को लेकर दृढ़ थीं। वे जानती थीं कि किसे देखना है और कोई भी उनके रास्ते में नहीं आ सकता। और वे आँखें उसे देख रही थीं। वे उसकी आत्मा में झाँक रही थीं।
ओमामे ने वे बीस साल उन जगहों पर बिताए थे जिनके बारे में उसे कोई जानकारी नहीं थी और वह एक परिपक्व और खूबसूरत महिला में बदल चुकी थी, लेकिन टेंगो ने उन जगहों और उन सालों को तुरंत अपने भीतर समाहित कर लिया और उन्हें अपने शरीर और रक्त में समाहित कर लिया। अब वे जगहें और साल उसके थे।
मुझे कुछ कहना होगा, उसने सोचा। लेकिन शब्द नहीं निकल रहे थे। उसके होंठ हल्के से हिले, मानो सही शब्दों की तलाश में हवा में टटोल रहे हों।
लेकिन ये कहीं नज़र नहीं आए। होंठों से बस एक सफ़ेद धुंध निकली, मानो कोई अकेला भटकता हुआ द्वीप हो। उसकी आँखों में देखते हुए, आओमामे ने एक पल के लिए अपना सिर हिलाया, बस एक बार, और तेंगो समझ गया। तुम्हें कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है। उसने तेंगो का हाथ, उसकी जेब में, कसकर पकड़े रखा। उसकी उंगलियाँ एक पल के लिए भी उससे अलग नहीं हुईं।
"हम दोनों को एक ही बात दिख रही है," आओमामे ने धीरे से उसकी आँखों में देखते हुए कहा। यह एक सवाल भी था और नहीं भी। वह पहले से ही जानती थी। उसे बस पुष्टि चाहिए थी।
उसने कहा, आकाश में दो चंद्रमा हैं।
टेंगो ने सिर हिलाया। आकाश में दो चाँद थे। लेकिन उसने यह बात ज़ोर से नहीं कही। किसी कारणवश, वह ठीक से बोल नहीं पा रहा था। उसने बस मन ही मन सोचा। ओमामे ने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपना गाल उसकी छाती से सटा लिया। उसने अपना कान उसके दिल पर रखा और उसके विचारों को सुनने लगी। उसने कहा, "मैं यही जानना चाहती थी। कि हम एक ही दुनिया में हैं और एक ही चीज़ देखते हैं।"
टेंगो को अचानक एहसास हुआ कि उसके दिल में घूम रहा स्तंभ गायब हो गया है। अब बस शांत सर्दियों की शाम ही उसे घेरे हुए थी। सड़क के उस पार स्थित अपार्टमेंट बिल्डिंग की रोशनी—वह जगह जहाँ आओमामे ने भगोड़े के रूप में

पूरे दिन बिताए थे—उन्हें बता रही थी कि दुनिया में उनके अलावा भी लोग हैं।
लेकिन उन्हें यह बहुत अजीब, यहाँ तक कि अतार्किक भी लग रहा था कि अभी भी दूसरे लोग हैं, जिनमें से हर एक की अपनी-अपनी जिंदगी है।
टेंगो नीचे झुकी और उसके बालों को सूंघा। आओमामे के बाल सीधे और खूबसूरत थे।
उसका छोटा सा गुलाबी कान किसी शर्मीले जीव की तरह बालों से बाहर निकला हुआ था।
"काफी समय हो गया है," आओमामे ने कहा।
टेंगो ने सोचा, काफी समय बीत गया है। लेकिन साथ ही, उसने महसूस किया कि बीस साल अपनी निरंतरता खो चुके थे। वे पलक झपकते ही बीत गए थे और इसलिए पलक झपकते ही भर भी सकते थे।
टेंगो ने अपनी जेब से हाथ निकालकर उसे अपने चारों ओर लपेट लिया। वह अपनी हथेली में उसके शरीर की दृढ़ता को महसूस कर सकता था। फिर उसने अपना सिर उठाया और एक बार फिर आकाश की ओर देखा। बादलों के बीच से, दोनों चंद्रमा अब भी पृथ्वी पर अपना विचित्र, मिश्रित प्रकाश बिखेर रहे थे। बादल बहुत धीरे-धीरे चल रहे थे। उस प्रकाश में, टेंगो ने एक बार फिर गहराई से महसूस किया कि कैसे हृदय समय को सापेक्ष बना सकता है। बीस साल एक लंबा समय था, जिसमें बहुत कुछ घटित हो सकता था। बहुत सी चीजें जन्म ले सकती थीं और उतनी ही आसानी से लुप्त हो सकती थीं। और जो चीजें शेष रह जातीं, वे अपना रूप बदल सकती थीं और बिगड़ सकती थीं। यह एक लंबा समय था। लेकिन एक दृढ़ हृदय के लिए इसका कोई महत्व नहीं था। और अगर उनसे मिलने से पहले बीस साल और बीत जाते, तो भी टेंगो को उसके सामने ऐसा ही महसूस होता। और अगर वे पचास वर्ष की आयु तक साथ-साथ पहुँच जाते, तो भी उसका हृदय उतना ही धड़कता और उसे देखकर वह उतना ही व्याकुल होता। उसे अपनी आत्मा में वही आनंद और वही निश्चितता महसूस होती।
टेंगो ने ये सब बातें मन ही मन सोचीं, बिना बोले। लेकिन वह जानता था कि आओमामे ने उसके सारे मौन शब्द एक-एक करके सुन लिए थे। उसने अपना गुलाबी कान उसकी छाती से सटाकर उसके दिल की धड़कन सुनी। मानो उसने किसी नक्शे पर उंगलियां फेरकर उसमें जीवंत और रंगीन परिदृश्यों को पहचान लिया हो।
"मैं यहीं रुकना चाहती हूँ और समय व सब कुछ भूल जाना चाहती हूँ," उसने धीरे से कहा। "लेकिन हमें कुछ काम करना है।"
टेंगो ने सोचा, हमें यहाँ से निकलना होगा।
"हाँ, हमें चलना ही होगा," आओमामे ने कहा। "जितनी जल्दी हो सके उतना अच्छा, क्योंकि हमारे पास ज्यादा समय नहीं बचा है। लेकिन मैं अभी आपको शब्दों में नहीं बता सकती कि हम कहाँ जा रहे हैं।"
टेंगो ने सोचा, शब्दों की कोई आवश्यकता नहीं है।
“क्या तुम यह नहीं जानना चाहते कि हम कहाँ जा रहे हैं?” आओमामे ने पूछा। टेंगो ने अपना सिर हिलाया। वास्तविकता की हवा ने उसके दिल में जल रही लौ को बुझाया नहीं था। उसके लिए और कुछ भी इतना महत्वपूर्ण नहीं था।
"हम कभी अलग नहीं होंगे," आओमामे ने कहा। "यह बात मुझे किसी भी और बात से ज़्यादा स्पष्ट है। मैं तो इस हाथ को कभी नहीं छोडूंगी।"
एक नया बादल पास आया और धीरे-धीरे दोनों चंद्रमाओं को निगल गया। मानो किसी रंगमंच पर पर्दा गिर गया हो, दुनिया को घेरने वाली छाया और गहरी होती चली गई।

"हमें जल्दी करनी होगी," आओमामे ने फुसफुसाते हुए कहा और वे दोनों खड़ी हो गईं।
उनकी परछाइयाँ आपस में मिल गईं। उन्होंने एक-दूसरे का हाथ कसकर पकड़ लिया, मानो दो बच्चे घने, अंधेरे जंगल में एक साथ घूम रहे हों।
"हम बिल्लियों के शहर को छोड़ रहे हैं," टेंगो ने सबसे पहले ये शब्द कहे, और आओमामे ने उस नई, नवजात आवाज को ध्यान से सुना।
— बिल्लियों का शहर?
"दिन में एकांत से भरा और रात में बड़ी बिल्लियों का राज करने वाला शहर। इसमें एक खूबसूरत नदी भी है, जिस पर एक पुराना पत्थर का पुल बना हुआ है। लेकिन हमें इसमें नहीं रुकना चाहिए।"
आओमामे ने मन ही मन सोचा, "हम दोनों इस दुनिया के लिए अलग-अलग शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। मैं इसे '1Q84' कहती हूँ, वह इसे 'बिल्लियों का शहर' कहता है। लेकिन दोनों का मतलब एक ही है।" आओमामे ने उसका हाथ और कसकर पकड़ लिया। "हाँ, हम बिल्लियों के शहर को छोड़ रहे हैं। साथ में," उसने कहा। "एक बार हम चले गए, चाहे दिन हो या रात, हम फिर कभी अलग नहीं होंगे।"
जब वे दोनों जल्दी से पार्क से निकले, तो आसमान में धीरे-धीरे सरकते बादलों के पीछे चांद अभी भी छिपा हुआ था। उनकी आंखें ढकी हुई थीं। लड़का और लड़की हाथ पकड़े जंगल से बाहर निकल रहे थे।

अध्याय 30 जब तक मैं गलत न हूँ

वे दोनों पार्क से निकले और एक टैक्सी ली। आओमामे ने ड्राइवर से कहा कि उन्हें डीएन 246 होते हुए संगेनजाया ले जाए।
तभी टेंगो की नज़र उसके कपड़ों पर पड़ी। उसने हल्के रंग का ओवरकोट पहना हुआ था, जो मौसम के हिसाब से थोड़ा पतला था। उसकी बेल्ट सामने बंधी हुई थी। उसके नीचे हरे रंग का खूबसूरत सूट था। स्कर्ट छोटी और चुस्त थी। उसने टाइट्स, चमकदार ऊँची एड़ी के जूते और एक मोटा और भारी दिखने वाला काले चमड़े का शोल्डर बैग पहना हुआ था। उसने दस्ताने या स्कार्फ नहीं पहना था। न ही उसने अंगूठी, हार या झुमके पहने थे। उसने इत्र भी नहीं लगाया था। टेंगो को उसके पहने हुए कपड़े और जो कुछ भी उसने नहीं पहना था, सब कुछ बहुत स्वाभाविक लगा। उसे कुछ भी बदलने या जोड़ने की ज़रूरत नहीं लगी।
टैक्सी रिंग रोड नंबर 7 पर चल पड़ी और डीएन 246 की ओर बढ़ने लगी। यातायात सुचारू था। गाड़ी चलने के बाद दोनों काफी देर तक चुप रहे। रेडियो बंद था और युवा ड्राइवर भी चुप था। केवल टायरों की एकरस और लगातार गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी। आओमामे तेंगो से सटकर उसका हाथ थामे बैठी रही। अगर वह हाथ छोड़ देती, तो उसे फिर कभी न मिलने का खतरा था। रात के अंधेरे में जगमगाते शहर की सड़कें उनके सामने से समुद्री धाराओं की तरह बह रही थीं, जिन पर चमकीले जीव-जंतुओं की रोशनी पड़ रही थी।
*

कुछ देर बाद आओमामे ने कहा, "मुझे तुम्हें बहुत कुछ बताना है। मुझे नहीं लगता कि वहाँ पहुँचने तक मैं तुम्हें सब कुछ समझा पाऊँगी। हमारे पास इतना समय नहीं है। लेकिन शायद चाहे हमारे पास कितना भी समय हो, मैं तुम्हें सब कुछ समझा ही न पाऊँ।"
टेंगो ने संक्षेप में अपना सिर हिलाया। स्पष्टीकरण देने की कोई आवश्यकता नहीं थी। अब वे आराम से बैठकर एक-एक करके कमियों को भर सकते थे—बशर्ते कि भरने के लिए कोई कमियाँ हों। लेकिन अभी, इस साधारण तथ्य में कि उनके पास साझा करने के लिए कुछ था, चाहे वह कोई अनसुलझी कमी हो या कोई अनसुलझी पहेली, टेंगो को एक मधुर आनंद मिला, जो कोमलता के करीब था।
"अभी मुझे आपके बारे में क्या जानना चाहिए?" उसने पूछा।
“तुम मेरे बारे में क्या जानते हो?” उसने पलटकर पूछा।
"बिल्कुल भी नहीं," उसने जवाब दिया। "बस इतना ही कि आप एक स्पोर्ट्स क्लब में प्रशिक्षक हैं, आप अविवाहित हैं, और आप कोएंजी में रहते हैं।"
"मैं भी," आओमामे ने कहा। "हालांकि मुझे कुछ बातें पता हैं। जैसे कि आप योयोगी के एक प्रीप स्कूल में गणित पढ़ाते हैं और अकेले रहते हैं। और यह कि आपने ही 'द एयर क्राइसालिस' लिखी है।"
टेंगो ने हैरानी से थोड़ा मुंह खोलकर उसकी ओर देखा। बहुत कम लोग यह बात जानते थे। क्या आओमामे का उस संप्रदाय से कोई संबंध था?
"चिंता मत करो। हम दोनों एक ही पक्ष में हैं," उसने कहा। "मुझे कैसे पता चला, यह बताने में बहुत समय लगेगा। वैसे, मुझे पता है कि तुमने और एरिका फुकाडा ने मिलकर यह किताब लिखी है। और हम दोनों एक ऐसी दुनिया में आ गए हैं जहाँ आकाश

में दो चाँद हैं। और मैं अपने गर्भ में एक बच्चे को लिए हुए हूँ। तुम्हारा बच्चा। अभी के लिए तुम्हें बस इतना ही जानना ज़रूरी है।"
"क्या तुम मेरे बच्चे को गर्भ में धारण कर रही हो?"
यह संभव था कि ड्राइवर उनकी बातचीत सुन सकता था, लेकिन टेंगो को अब इसकी परवाह नहीं थी।
"हम बीस साल से नहीं मिले हैं," आओमामे ने कहा। "और फिर भी, तुमने मुझे गर्भवती कर दिया। जिस बच्चे को मैं जन्म देने वाली हूँ, वह तुम्हारा ही है। मुझे पता है कि यह पूरी तरह से अतार्किक लगता है।"
टेंगो चुपचाप उसके बोलने का इंतजार करता रहा।
क्या आपको याद है कि सितंबर की शुरुआत में एक भयंकर तूफान आया था?
"बिल्कुल ठीक है," टेंगो ने जवाब दिया। दोपहर में मौसम बहुत सुहावना था, लेकिन सूरज डूबने के बाद गरजने की आवाजें आने लगीं और तूफान शुरू हो गया। अकासाका- मित्सुके स्टेशन में पानी भर गया और मेट्रो रुक गई।
फुकेरी ने कहा था, "छोटे लोग बेचैन हैं।"
— उसी रात मैं गर्भवती हो गई। लेकिन न तो उस दिन, न ही उससे कई महीने पहले और बाद में, मेरा किसी के साथ कोई संबंध था।
ओमामे ने इस तथ्य को समझने के लिए कुछ देर इंतजार किया। फिर उसने आगे बोलना जारी रखा।
"लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि उस रात यही हुआ था। और यह निश्चित रूप से आपका बच्चा है। मैं इसे समझा नहीं सकती, लेकिन मुझे पता है।"
उस तूफानी रात में फुकाएरी के साथ हुए उस अजीबोगरीब यौन कृत्य की याद तेंगो के मन में कौंध गई। बाहर ज़ोरदार बिजली कड़क रही थी और बारिश की बड़ी-बड़ी बूँदें खिड़की पर पड़ रही थीं। जैसा फुकाएरी ने कहा था, छोटे लोग जाग रहे थे। वह बिस्तर पर पूरी तरह से लकवाग्रस्त अवस्था में लेटा था, और फुकाएरी उसके ऊपर चढ़ गई, उसके कड़े लिंग को अपने अंदर डाला और उसका वीर्य ग्रहण किया। वह मानो किसी समाधि में चली गई थी। उसकी आँखें शुरू से अंत तक बंद रहीं, जैसे वह किसी विचार में डूबी हुई हो। उसके स्तन बड़े और गोल थे, लेकिन गुप्तांगों पर एक भी बाल नहीं था। वह दृश्य बिल्कुल अवास्तविक लग रहा था। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं था कि यह वास्तव में हुआ था।
अगली सुबह, फुकाएरी को पिछली रात के बारे में कुछ भी याद नहीं था। या कम से कम उसने याद करने का कोई संकेत नहीं दिया। वह यौन क्रिया तेंगो को एक औपचारिक लेन-देन जैसी लगी थी। उस तूफानी रात, फुकाएरी ने तेंगो के लकवे का फायदा उठाकर उसके सारे शुक्राणु इकट्ठा कर लिए थे। एक-एक बूंद तक। तेंगो को वह अजीब सा एहसास आज भी अच्छी तरह याद था। फुकाएरी बिल्कुल अलग इंसान बन गई थी।
"मुझे कुछ याद है," टेंगो ने रूखे स्वर में कहा। "उस रात मेरे साथ भी कुछ ऐसा हुआ था जिसे तार्किक रूप से समझाया नहीं जा सकता।"
ओमामे ने उसकी आंखों में देखा।
"तब मुझे इसका मतलब समझ नहीं आया था," टेंगो ने कहा। "और अब भी मुझे पूरी तरह समझ नहीं आया है। लेकिन अगर तुम उस रात गर्भवती हो गई थी, और इसका कोई और कारण नहीं है, तो यह निश्चित रूप से मेरा बच्चा है।"

फुकेरी महज एक मार्ग था। उसे यही भूमिका सौंपी गई थी, तेंगो और आओमामे को जोड़ने वाले मार्ग के रूप में कार्य करना। उन्हें थोड़े समय के लिए शारीरिक रूप से एकजुट करना। तेंगो यह बात जानता था।
"एक दिन मैं आपको बता पाऊंगा कि तब क्या हुआ था," टेंगो ने कहा। "लेकिन अभी मेरे पास जो शब्द हैं, उनसे मैं नहीं बता सकता।"
"लेकिन क्या आप सचमुच मुझ पर विश्वास करते हैं? क्या आपको लगता है कि यह नन्ही सी चीज आपकी बच्ची है?"
"पूरे दिल से," टेंगो ने जवाब दिया।
"अच्छा! मुझे बस यही जानना था। अगर आप मेरी बात पर विश्वास करते हैं, तो और कुछ मायने नहीं रखता। और स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं है।"
— तो आप गर्भवती हैं।
"चार महीनों में," आओमामे ने अपने कोट के ऊपर, अपने पेट पर हाथ रखते हुए जवाब दिया।
तेज़-तेज़ साँस लेते हुए, टेंगो ने जीवन का कोई संकेत खोजने की कोशिश की। वह अभी बहुत छोटा था, लेकिन वह अपनी हथेली में उसकी गर्माहट महसूस कर सकता था। हम कहाँ जा रहे हैं? मैं, तुम और वो नन्ही सी बच्ची?
"कहीं और," आओमामे ने जवाब दिया। "ऐसी दुनिया में जहाँ आकाश में केवल एक ही चाँद हो। जहाँ हमें वास्तव में होना चाहिए, और जहाँ बौनों की कोई शक्ति न हो।" “छोटे लोग?” टेंगो ने थोड़ा भौंहें चढ़ाते हुए पूछा।
"आपने 'द एयर क्राइसालिस' में उनका विस्तार से वर्णन किया है। वे कैसे दिखते हैं, वे क्या करते हैं।"
मैं सहमत हूं।
"वे सचमुच इस दुनिया में मौजूद हैं। बिल्कुल वैसे ही जैसे आपने उनका वर्णन किया है।"
जब उसने 'द एयर क्राइसालिस' को दोबारा लिखा था, तब उसके लिए लिटिल पीपल महज़ काल्पनिक जीव थे, जो एक सत्रह वर्षीय लड़की की असीम कल्पना से गढ़े गए थे। या शायद महज़ एक रूपक या प्रतीक। लेकिन वे सचमुच मौजूद थे और उनके पास वास्तविक शक्तियाँ थीं। अब टेंगो इन बातों पर विश्वास कर सकता था।
और यह सिर्फ छोटे लोगों की बात नहीं है। हवा के प्यूपा, माता और संतान, दोनों चंद्रमा, वे सभी इस दुनिया में मौजूद हैं।
क्या आपको इस दुनिया से जाने का कोई तरीका पता है?
"हम उसी रास्ते से जा सकते हैं जिससे मैं आई थी। मुझे कोई और रास्ता नहीं सूझ रहा," आओमामे ने कहा, फिर बोली, "क्या आपको वह पांडुलिपि मिल गई जिस पर आपने काम शुरू किया था?"
"यह रहा," टेंगो ने भूरे रंग के कंधे वाले बैग को हल्के से थपथपाते हुए जवाब दिया।
"उसे किताब के बारे में कैसे पता चला?" उसने आश्चर्य से पूछा।
"मुझे पता है, बस इतना ही," आओमामे ने झिझकती हुई मुस्कान के साथ कहा।
“लगता है तुम्हें बहुत कुछ पता है,” टेंगो ने जवाब दिया।
यह पहली बार था जब उसने उसे मुस्कुराते देखा था। मुस्कान बस एक पल की थी, लेकिन उसने महसूस किया कि उसके आसपास की दुनिया का प्रवाह बदलने लगा है। कुछ ऐसा जिसका उसे एहसास था।

"उसे जाने मत दो," आओमामे ने कहा। "यह हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है।"
— चिंता मत करो, मैं उसे नहीं दूंगा।
हम एक-दूसरे से मिलने के लिए इस दुनिया में आए थे। यही हमारा उद्देश्य था, हालांकि हमें इसका पता नहीं था। हमें कई अप्रिय घटनाओं से गुज़रना पड़ा। अतार्किक और अकथनीय चीज़ें। अजीब, खूनी या दुखद चीज़ें। कभी-कभी, खूबसूरत चीज़ें भी। हमसे शपथ लेने को कहा गया और हमने ली। हमें कठिन परीक्षाएँ दी गईं और हमने उन्हें पार किया। और इस तरह हमने अपने उद्देश्य को पूरा किया। लेकिन अब खतरा हमारा पीछा कर रहा है। वे मेरे अंदर की 'फिलिया' (पुत्री) को पाना चाहते हैं। आप जानते हैं ना कि 'फिलिया' का क्या मतलब होता है?
टेंगो ने गहरी सांस ली, फिर कहा:
— हम दोनों ने एक बेटी को जन्म दिया है।
— बिलकुल सही। मुझे ठीक से नहीं पता कि यह कैसे काम करता है, लेकिन मैं एक संतान को जन्म देने वाली हूँ। या तो वायु परिपथ के ज़रिए, या मैं खुद वायु परिपथ बनकर यह भूमिका निभाऊँगी। और वे हम तीनों को पकड़ने की कोशिश कर रहे हैं। एक ऐसा तंत्र बनाने के लिए जो "आवाज़ सुन सके।"
"और यहाँ मेरी भूमिका क्या है? इस संतान का पिता होने के अलावा मेरी कोई और भूमिका है क्या?"
"तुम..." आओमामे ने कहना शुरू किया, लेकिन रुक गई, आगे बोलने के लिए शब्द नहीं मिल रहे थे।
उनके आसपास कई खाली जगहें रह गई थीं, जिन्हें उन्हें मिलकर, धीरे-धीरे, एकजुट होकर भरना था।
"मैंने तुम्हें ढूंढने का पक्का इरादा कर लिया था," टेंगो ने कहा। "लेकिन मैं नहीं ढूंढ पाया। तुमने मुझे ढूंढ लिया। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैंने कुछ किया ही नहीं। और मुझे लगता है कि यह ठीक नहीं है।"
"क्या आपको नहीं लगता कि यह उचित है?"
मैं आपका बहुत ऋणी हूँ। आखिरकार, मैं किसी काम का नहीं था।
"तुम पर मेरा कोई एहसान नहीं है," आओमामे ने सीधे-सीधे कहा। "अब तक तुमने ही मुझे रास्ता दिखाया है। एक ऐसे रूप में जो आँखों से दिखाई नहीं देता। हम एक हैं।"
"मुझे लगता है मैंने उस लड़की को देखा था," टेंगो ने कहा। "या कम से कम उस लड़की का मतलब समझ आया। वह बिल्कुल तुम्हारे जैसी दिखती थी जब तुम दस साल के थे, और वह हवा के कोकून में सो रही थी, हल्की रोशनी में लिपटी हुई। मैंने उसकी उंगलियों को छुआ था। लेकिन ऐसा सिर्फ एक बार हुआ था।"
आओमामे ने अपना सिर टेंगो के कंधे पर टिका दिया।
"टेंगो, हम एक-दूसरे के ऋणी नहीं हैं। बिलकुल भी नहीं। अभी हमें बस यही सोचना है कि उस नन्हे जीव की रक्षा कैसे करें। वे हमारा पीछा कर रहे हैं, हमारे बहुत करीब हैं। मैं उनके कदमों की आहट सुन सकता हूँ।"
"चाहे कुछ भी हो जाए, मैं तुम्हें किसी के हवाले नहीं करूँगा। न तुम्हें, न तुम्हारे भीतर के उस नन्हे जीव को। हम मिल चुके हैं, इसलिए हमने इस दुनिया में आने का उद्देश्य पूरा कर लिया है। यह एक खतरनाक जगह है। लेकिन तुम यहाँ से निकलने का रास्ता जानते हो।"
"मुझे लगता है मुझे पता है," आओमामे ने कहा। "अगर मैं गलत नहीं हूँ तो।"

अध्याय 31 फली में एक सेम की तरह

एक परिचित जगह पर टैक्सी से उतरकर, आओमामे ने चौराहे के चारों ओर नज़र घुमाई और राजमार्ग के नीचे स्थित धातु की बाड़ से घिरे एक काले रंग के गोदाम को देखा। उसने तेंगो का हाथ पकड़कर सड़क पार की और उसकी ओर चल पड़ी।
उसे ठीक से याद नहीं था कि बिना पेंच वाली प्लेट कहाँ थी, लेकिन धैर्यपूर्वक एक-एक करके कोशिश करने पर उसने किसी तरह एक आदमी के निकलने के लिए पर्याप्त जगह बना ली। आओमामे झुककर अंदर घुस गई, इस बात का ध्यान रखते हुए कि उसके कपड़े न फँसें। टेंगो भी अपने भारी शरीर को झुकाकर उसके पीछे-पीछे गया। अंदर का नजारा अप्रैल जैसा ही था। वहाँ पड़े फीके पड़े सीमेंट के बोरे, जंग लगे लोहे के खंभे, फीकी पड़ी पट्टियाँ, फेंके हुए पुराने कागज़, जगह-जगह बिखरी कबूतर की सफेद बीट। पिछले आठ महीनों में कुछ भी नहीं बदला था। शायद इस बीच कोई यहाँ आया ही नहीं था। शहर के बीचोंबीच, एक मुख्य सड़क के किनारे स्थित होने के बावजूद, यह एक सुनसान और भूली हुई जगह थी।
*

"क्या यही वह जगह है?" टेंगो ने चारों ओर देखते हुए पूछा।
ओमामे ने सिर हिलाया।
"अगर यहां से निकलने का रास्ता नहीं है, तो हम कहीं नहीं जा रहे हैं।"
अंधेरे में, आओमामे उस आपातकालीन सीढ़ी को ढूंढ रही थी जिससे वह कभी नीचे उतरी थी। वह संकरी सीढ़ी जो मेट्रोपॉलिटन एक्सप्रेसवे को ज़मीन से जोड़ती थी। वह यहीं होनी चाहिए, उसने खुद को समझाने की कोशिश की। मुझे इस पर विश्वास करना ही होगा।
और उसे वह मिल गया। वह एक टूटी-फूटी सी सीढ़ी जैसी थी, जितनी उसे याद थी उससे कहीं ज़्यादा जर्जर और खतरनाक। क्या ऊपर से आते हुए मुझे यही मिला था? आओमामे ने फिर सोचा। खैर, वह तो वहीं था। अब बस उसे उल्टे क्रम में, कदम-दर-कदम चलना था। उसने अपनी ऊँची एड़ी के जूते उतारे, उन्हें अपने बैग में रखा और फिर बैग को अपने कंधे पर टांग लिया। नंगे पैर, उसने पहली सीढ़ी पर कदम रखा।
"मेरे पीछे आओ," उसने टेंगो की ओर मुड़ते हुए कहा।
“क्या मुझे पहले नहीं जाना चाहिए?” टेंगो ने चिंता से पूछा।
नहीं, मैं इसे ले लूंगा।
वह इसी रास्ते से आई थी। उसे पहले ऊपर जाना था।
जब वह सीढ़ी से नीचे उतरी थी, तब की तुलना में अब सीढ़ी कहीं ज़्यादा ठंडी थी।
उसके हाथ पहले से ही जम चुके थे, लगभग सुन्न हो चुके थे। खंभों के बीच से हवा और भी तेज़ सीटी बजा रही थी। वह सीढ़ी कठोर और ठंडी थी, और उससे किसी अच्छे संकेत की उम्मीद नहीं थी।
जब वह सितंबर की शुरुआत में इसकी तलाश में राजमार्ग पर आई थी, तो यह गायब हो चुका था। रास्ता बंद था। लेकिन जैसा कि उसे शक था, ऊपर सामग्री गोदाम से एक रास्ता था। आओमामे को आभास था कि उस दिशा से सीढ़ी अभी भी मौजूद है। मैं अपने भीतर एक छोटा सा जीव लिए हुए हूँ, जो अगर किसी विशेष शक्ति से युक्त है, तो निश्चित रूप से मेरी रक्षा करता है और मुझे सही रास्ता दिखाता है।

उतरते हुए, आओमामे को फिर से तमाकी की याद आई। उसे उसके सुंदर, कोमल स्तन याद आ गए। वो हमेशा से तमाकी के भरे-भरे स्तनों से ईर्ष्या करती थी। उसके दुबले- पतले, अविकसित स्तनों के सामने तो वो कुछ भी नहीं थे। लेकिन अब वो भी नहीं थे। फिर आओमामे को अयुमी की याद आई, वह अकेली महिला पुलिसकर्मी जिसे अगस्त की एक रात शिबुया के एक होटल में हथकड़ी पहनाकर उसके गाउन की डोरी से गला घोंटकर मार डाला गया था। एक अकेली युवती, परेशान और विनाश के गर्त की ओर अग्रसर। उसके भी भरे हुए स्तन थे।
आओमामे ने अपनी दोनों सहेलियों की मृत्यु पर गहरा शोक व्यक्त किया। उनके इस दुनिया से चले जाने से वह बेहद दुखी थी। उसे इस बात का बहुत गुस्सा था कि दो खूबसूरत स्तन बिना किसी निशान के गायब हो गए।
किसी तरह मेरी रक्षा करो, आओमामे ने मन ही मन प्रार्थना की। कृपया, मुझे आपकी मदद की ज़रूरत है। उसकी मूक आवाज़ उसके बेचारे दोस्तों तक ज़रूर पहुँचेगी। और वे उसकी रक्षा ज़रूर करेंगे।
अंततः, उस सीधी सीढ़ी के अंत तक चढ़कर, वह एक पैदल मार्ग पर पहुँची जो सड़क के बाहरी किनारे की ओर जाता था। उस पर एक नीची रेलिंग थी और उसे आगे बढ़ने के लिए झुकना पड़ा। उसके अंत में, उसे घुमावदार सीढ़ी दिखाई दी। यह भी बहुत खड़ी नहीं थी, लेकिन कम से कम अब तक की सीधी सीढ़ी से थोड़ी पूर्व दिशा में थी। जहाँ तक आओमामे को याद था, यह राजमार्ग पर आपातकालीन पार्किंग स्थल की ओर जाती थी। सड़क पर तेज़ गति से दौड़ते ट्रकों के कंपन से पैदल मार्ग पानी पर तैरती छोटी नाव की तरह अस्थिर रूप से हिल रहा था। कारों का शोर पहले ही बढ़ चुका था। आओमामे ने यह सुनिश्चित किया कि टेंगो सीढ़ियाँ चढ़कर उसके पीछे आ गया है, फिर उसने हाथ बढ़ाकर उसका हाथ थाम लिया। उसकी हथेली गर्म थी। उसने सोचा, इतनी ठंडी शाम में, इतनी बर्फीली सीढ़ी पर हाथ दबाए रखने के बाद भी उसके हाथ अभी भी गर्म कैसे हो सकते हैं?
"बस अब खत्म होने ही वाला है," उसने अपने होंठ उसके कान के पास लाते हुए कहा। गाड़ियों के शोर और तेज़ हवा के कारण उसे ज़ोर से बोलना पड़ा। "हम उन सीढ़ियों से ऊपर जा रहे हैं और हाईवे पर निकलेंगे।"
अगर इसे ब्लॉक नहीं किया गया है, तो उसने मन ही मन सोचा।
“तुम्हारा इरादा इसी रास्ते से ऊपर जाने का था, है ना?” टेंगो ने पूछा।
हां, अगर मुझे सीढ़ी मिल जाए तो।
"और फिर भी तुमने ऐसे कपड़े पहनना चुना। मतलब, छोटी, तंग स्कर्ट, ऊंची हील। ये ऐसे कपड़े नहीं हैं जिन्हें पहनकर तुम खड़ी सीढ़ियां चढ़ सको।"
ओमामे फिर मुस्कुराई।
मुझे वैसे कपड़े पहनने पड़े। मैं किसी दिन इसका कारण जरूर समझाऊँगी।
"तुम्हारे पैर बहुत खूबसूरत हैं," टेंगो ने उससे कहा।
- आप उन्हें पसंद करते हैं?
- विशाल।
"धन्यवाद," आओमामे ने कहा, फिर उसकी ओर झुकी और धीरे से अपने होंठ उसके कान से लगा दिए।
उसका कान फूलगोभी की तरह फटा हुआ था। वह ठंड से जम गया था।
ओमामे ने फिर से आगे बढ़कर फुटपाथ पार किया और आखिर में बनी संकरी, खड़ी सीढ़ियों पर चढ़ना शुरू किया। उसके पैर जम चुके थे और उंगलियां सुन्न हो गई

थीं। उसे बहुत सावधानी बरतनी थी ताकि वह उन पर टेढ़ा कदम न रखे। वह संभलकर चल रही थी, हवा से उड़ते बालों को चेहरे से हटा रही थी। ठंडी हवा के झोंकों से उसकी आंखों में पानी आ रहा था। वह रेलिंग को कसकर पकड़े हुए थी, उसे डर था कि हवा उसे गिरा देगी, और वह धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए टेंगो के बारे में सोच रही थी। उसके बड़े-बड़े हाथ, उसका कान फूलगोभी की तरह जमा हुआ। उसके अंदर दुबका हुआ छोटा सा जीव। उसके बैग में छिपी काली पिस्तौल और सात नौ-मिलीमीटर की गोलियां।
हमें हर हाल में इस दुनिया से निकलना ही होगा। और इसीलिए तुम्हें पूरे दिल से यह मानना होगा कि यह सीढ़ी राजमार्ग की ओर जाती है। तुम्हें विश्वास करना ही होगा, उसने खुद को समझाया। उसे वे शब्द याद आए जो नेता ने उस तूफानी रात को मरने से पहले कहे थे। वे एक गीत के बोल थे, जो उसे आज भी पूरी तरह याद थे।

और सर्कस की रोशनी,
एक कृत्रिम दुनिया,
लेकिन अगर तुमने मुझ पर विश्वास किया होता
यह सच हो सकता है।

चाहे कुछ भी हो जाए, चाहे जो भी घटित हो, मुझे अपनी शक्ति से इसे साकार करना होगा। नहीं, हम मिलकर, कंधे से कंधा मिलाकर इसे साकार करेंगे। हम अपनी शक्तियों को एकजुट करेंगे। अपने लिए भी और इस नन्हे जीव के लिए भी।
आओमामे सीढ़ियों के नीचे रुक गई और पीछे मुड़कर देखा। तेंगो वहीं था। उसने अपना हाथ बढ़ाया और उसने उसे अपने हाथ में ले लिया। उसे उसमें पहले जैसी ही गर्माहट महसूस हुई, जिससे उसे शक्ति मिली। आओमामे फिर उसकी ओर झुकी और अपने होंठ उसके कान से लगा दिए।
"जानते हो, एक समय ऐसा भी आया था जब मैं तुम्हारे लिए अपनी जान देने को तैयार थी," उसने बताया। "मैं सचमुच मौत के कगार पर थी। बस कुछ मिलीमीटर दूर। क्या तुम यकीन करोगे?"
"बिल्कुल, मैं करता हूँ," टेंगो ने कहा।
"क्या आप मुझसे कह रहे हैं कि आप मुझ पर पूरी तरह से विश्वास करते हैं?"
"मैं पूरे दिल से तुम पर विश्वास करता हूँ," टेंगो ने दिल से उससे कहा।
ओमामे ने सिर हिलाया और उसका हाथ छोड़ दिया। फिर वह मुड़ी और दोबारा चढ़ने लगी।
*

कुछ मिनटों बाद वह मेट्रोपॉलिटन हाईवे नंबर 3 पर सीढ़ियों के शीर्ष पर पहुँच गया। रास्ता अवरुद्ध नहीं था। उसका अनुमान सही निकला और उसकी मेहनत रंग लाई। लोहे की जाली के ऊपर से कूदने से पहले उसने अपनी हथेली के पिछले हिस्से से अपनी आँखों से ठंडे आँसू पोंछे।
कुछ देर चुपचाप चारों ओर देखने के बाद टेंगो ने आश्चर्य से कहा, "मेट्रोपॉलिटन नंबर 3। यही इस दुनिया से बाहर निकलने का रास्ता है।"
"हां," आओमामे ने उत्तर दिया। "इस दुनिया में आना और इस दुनिया से जाना।" ओमामे ने अपनी स्कर्ट ऊपर खींची और टेंगो ने पीछे से सहारा देकर रेलिंग के ऊपर से छलांग लगा दी। दूसरी तरफ दो कारों के लिए एक आपातकालीन पार्किंग की

जगह थी। वह तीसरी बार यहाँ आई थी। एस्सो का विशाल बिलबोर्ड उसकी आँखों के सामने आ गया। आपकी टंकी में एक बाघ। वही लिखावट, वही बाघ। ओमामे नंगे पैर वहीं खड़ी रही, कुछ नहीं बोली। उसने शाम की ताज़ी हवा में गहरी साँस ली, जो गाड़ियों के धुएँ से भरी हुई थी। उसे यह हवा बाकी सभी हवाओं से ज़्यादा ताज़ी लगी। हम वापस आ गए हैं, उसने सोचा। हम यहाँ वापस आ गए हैं।
हाईवे पर भी उतना ही जाम लगा हुआ था। शिबुया की ओर जाने वाली गाड़ियों की कतार थम सी गई थी। आओमामे ने यह देखकर हैरानी जताई। मुझे समझ नहीं आ रहा कि ऐसा क्यों है? जब भी मैं यहाँ आती हूँ, हमेशा जाम लगा रहता है। ये बहुत अजीब बात है कि इस समय, हफ्ते के बीचोंबीच, इतना ट्रैफिक है। शायद आगे कहीं कोई दुर्घटना हो गई हो। दूसरी तरफ तो ट्रैफिक सामान्य रूप से चल रहा था। सिर्फ बीचोंबीच की तरफ ही अफरा-तफरी मची हुई थी।
टेंगो ने उसका पीछा किया और रेलिंग के ऊपर से छलांग लगा दी। उसने एक पैर उठाया और आसानी से उसे दूसरी तरफ घुमा दिया। फिर वह आओमामे के बगल में खड़ा हो गया। दोनों चुपचाप अपने सामने खड़ी कारों के ढेर को ऐसे घूर रहे थे मानो दो लोग किनारे पर खड़े होकर पहली बार प्रशांत महासागर देख रहे हों।
गाड़ियों में बैठे लोग उन्हें हैरानी से देख रहे थे, उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उनकी आँखों में आश्चर्य से ज़्यादा संदेह था। ये युवा जोड़ा यहाँ क्या कर रहा था? वे अचानक कहीं से प्रकट हुए थे और आपातकालीन पार्किंग में बेसुध खड़े थे। महिला ने सूट पहना था, लेकिन ऊपर से पतला कोट था और वह नंगे पैर थी। पुरुष एक हट्टा-कट्टा आदमी था, जिसने चमड़े की जैकेट पहनी थी। दोनों के कंधों पर बैग लटके हुए थे। क्या उनकी गाड़ी कहीं आस-पास खराब हो गई थी या उनका एक्सीडेंट हो गया था? लेकिन आस-पास कहीं भी ऐसी कोई गाड़ी नज़र नहीं आ रही थी। और वे मदद की तलाश में भी नहीं लग रहे थे।
आखिरकार आओमामे को होश आया, उसने अपने बैग से जूते निकाले और पहन लिए। उसने अपनी स्कर्ट को ठीक किया और उसे समेटा, फिर अपना बैग कंधे पर टांग लिया। उसने अपने ओवरकोट का डोरी बांधा। उसने अपने होंठों को चाटा और अपने बालों को संवारा। उसने एक रुमाल निकाला और अपनी आँखों से आंसू पोंछे। फिर वह दोबारा टेंगो के करीब आ गई।
वे एक-दूसरे का हाथ थामे, चुपचाप खड़े थे, ठीक वैसे ही जैसे बीस साल पहले दिसंबर के एक दिन, स्कूल के बाद, अपने प्राथमिक विद्यालय के कक्षा कक्ष में खड़े थे। उस दुनिया में उनके सिवा कोई और नहीं था। वे अपने सामने से गुजरती गाड़ियों के सुचारू प्रवाह को देख रहे थे। लेकिन वास्तव में, उनमें से कोई भी किसी चीज़ को नहीं देख रहा था। जो कुछ वे देख और सुन रहे थे, उसका उनके लिए कोई महत्व नहीं था। उनके आसपास के दृश्य, ध्वनियाँ, गंध सब अर्थहीन हो चुके थे। "तो हम दूसरी दुनिया में चले गए?" टेंगो ने आखिरकार कहा।
"शायद," आओमामे ने उत्तर दिया।
"हमें बेहतर सुनिश्चित कर लेना चाहिए।"
एक ही रास्ता था, और उसे शब्दों में बयां करने की ज़रूरत नहीं थी। बिना कुछ कहे, आओमामे ने आसमान की ओर देखा। टेंगो ने भी लगभग उसी समय ऐसा ही किया। वे दोनों चाँद को खोज रहे थे। वह एस्सो के बिलबोर्ड के ऊपर कहीं होना चाहिए था। लेकिन चाँद कहीं नज़र नहीं आ रहा था। ऐसा लग रहा था मानो वह बादलों के पीछे छिपा हो, जो हवा के साथ धीरे-धीरे दक्षिण की ओर बढ़ रहे थे। वे इंतज़ार करते

रहे। जल्दी करने की कोई ज़रूरत नहीं थी। उनके पास काफ़ी समय था। उनके पास खोए हुए समय की भरपाई करने के लिए पर्याप्त समय था। साथ बिताया हुआ समय। कोई भी उन्हें पीछे से धक्का नहीं दे रहा था। एक पंजे में पेट्रोल पंप पकड़े और चेहरे पर एक शरारती मुस्कान लिए, विज्ञापन में दिख रहा बाघ उन्हें हाथ थामे हुए तिरछी नज़रों से देख रहा था।
उसी क्षण, आओमामे को एहसास हुआ कि कुछ अलग है। फ़िलहाल, वह समझ नहीं पा रही थी कि क्या बदल गया है और कैसे। उसने ध्यान लगाकर देखा। और उसे समझ आ गया। विज्ञापन में बाघ बाईं ओर से दिख रहा था। लेकिन जिसे वह याद कर रही थी, वह दाईं ओर से दुनिया का सामना कर रहा था। बाघ की छवि उलट गई थी। उसका चेहरा अपने आप सिकुड़ गया। उसकी धड़कन तेज़ हो गई। उसे लगा जैसे उसके अंदर कुछ उसे विपरीत दिशा में खींच रहा हो। लेकिन क्या वह निश्चित रूप से ऐसा कह सकती थी? क्या उसकी यादें इतनी सटीक थीं? उसे यकीन नहीं था। बस ऐसा लग रहा था। कभी-कभी यादें हमें धोखा देती हैं।
ओमामे ने अपने संदेह को ज़ाहिर नहीं किया। उसे अभी इसे ज़ुबान देने की ज़रूरत नहीं थी। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, अपनी साँसों को नियंत्रित किया, अपने दिल की धड़कन को शांत किया और बादलों के छंटने का इंतज़ार किया।
लोग अपनी कारों की खिड़कियों से उन्हें देख रहे थे। आखिर वे दोनों इतनी दिलचस्पी से क्या देख रहे थे? और उन्होंने एक-दूसरे का हाथ इतनी मजबूती से क्यों पकड़ रखा था? कुछ लोगों ने उनकी तरफ सिर घुमाया, लेकिन उन्हें सिर्फ सफेद बादल और एस्सो का विज्ञापन दिखाई दिया। आपकी टंकी में एक बाघ। बाघ अपना बायां गाल राहगीरों की तरफ करके खड़ा था, मानो उन्हें और ज़्यादा पेट्रोल इस्तेमाल करने के लिए उकसा रहा हो। उसने अपनी नारंगी, धारीदार पूंछ को विजयी भाव से हवा में ऊंचा उठा रखा था।
*

अंततः बादल छंट गए और आकाश में चंद्रमा दिखाई दिया।
वहाँ केवल एक ही चाँद था। वही पीला और गौरवशाली चाँद। वो चाँद जो मैदानों पर चुपचाप सरकता है, जो झीलों की शांत सतह पर सफेद तश्तरी की तरह प्रतिबिंबित होता है और नींद में डूबे घरों की छतों को धीरे से रोशन करता है। वो चाँद जो समुद्र को किनारों तक खींच लाता है, आदिवासियों के फर को सहलाता है और रात के यात्रियों को अपने सुरक्षात्मक आवरण में लपेट लेता है। वो चाँद जो कभी नए चाँद में बदल जाता है और आत्माओं की त्वचा को खरोंचता है या कभी नए चाँद में बदल जाता है और जमीन पर अकेलेपन की खामोश बूँदें गिराता है। अब वो एस्सो के विज्ञापन के ठीक ऊपर था। विकृत, छोटा और हरा चाँद अब उसके बगल में दिखाई नहीं दे रहा था। वो चुपचाप आकाश में तैर रहा था, किसी की नहीं सुन रहा था। निस्संदेह, दोनों की आँखों के सामने एक ही दृश्य था। आओमामे ने बिना कुछ कहे टेंगो का हाथ दबाया। उसके अंदर बहने वाली विपरीत धारा का वो एहसास गायब हो गया था।
उसने मन ही मन सोचा, हम 1984 में वापस आ गए हैं। हम अब 1Q84 में नहीं हैं, हम वापस 1984 में आ गए हैं।
लेकिन क्या ऐसा करना सुरक्षित है? क्या दुनिया इतनी आसानी से पहले जैसी हो सकती है? क्या नेता ने मरने से पहले यह नहीं कहा था कि पुरानी दुनिया में लौटने का रास्ता अब मौजूद नहीं है?

क्या हम यहाँ किसी अलग जगह पर नहीं हैं? क्या हम एक तीसरी दुनिया में प्रवेश कर चुके हैं, जो भी अलग है? एक ऐसी दुनिया जहाँ बाघ अपने दाहिने गाल की बजाय बाएँ गाल से मुस्कुराता है? क्या यहाँ हमारे लिए नए रहस्य और नए नियम इंतज़ार कर रहे हैं?
शायद, आओमामे ने सोचा। या कम से कम अभी तो मैं ना नहीं कह सकती। लेकिन एक बात मैं पूरे भरोसे से कह सकती हूँ। चाहे कुछ भी हो, हम अब उस दुनिया में नहीं हैं जहाँ आसमान में दो चाँद होते थे। और मैं टेंगो का हाथ थामे हुए हूँ। हम एक खतरनाक जगह में दाखिल हुए जहाँ तर्क की कोई शक्ति नहीं थी, हमने कठिन परीक्षाओं का सामना किया और खुद को फिर से पाया। फिर हम वहाँ से निकल गए। मुझे पुरानी दुनिया में लौटने या किसी दूसरी दुनिया में खुद को पाने से क्यों डरना चाहिए? अगर नई परीक्षाएँ हमारा इंतज़ार कर रही हैं, तो हम उन्हें भी पार कर लेंगे। बस इतना ही। कम से कम अब हम अकेले नहीं हैं।
आओमामे ने आराम किया और जो उसे मानना था, उस पर विश्वास करने के लिए वह टेंगो की चौड़ी छाती से टिक गई। उसने अपना कान उसके कान से लगाया और उसकी धड़कन सुनी। उसने खुद को उसकी बाहों में सौंप दिया, जैसे कोई फली में लिपटा हुआ बीज।
*

"और अब कहाँ?" काफी देर बाद टेंगो ने उससे पूछा।
वे वहां हमेशा के लिए नहीं रुक सकते थे। यह तो निश्चित था। लेकिन मेट्रोपॉलिटन एक्सप्रेसवे पर कोई शोल्डर नहीं था। इकेजिरी एग्जिट अपेक्षाकृत पास था, लेकिन उस संकरे रास्ते से गाड़ियों के बीच से निकलना बहुत खतरनाक होता, चाहे ट्रैफिक कितना भी धीमा क्यों न हो। और कौन सा ड्राइवर हाईवे पर लिफ्ट मांगने के लिए रुकेगा? बेशक, वे मदद के लिए हाईवे विभाग के आपातकालीन नंबर पर कॉल कर सकते थे, लेकिन उन्हें वहां पहुंचने का एक ठोस कारण बताना पड़ता। और अगर वे किसी तरह इकेजिरी एग्जिट तक पैदल भी पहुंच जाते, तो टोल बूथ पर टोल कलेक्टर उनसे पूछताछ कर लेता। जिस सीढ़ी से वे आए थे, उससे वापस ऊपर जाना तो नामुमकिन था।
"मुझे नहीं पता," आओमामे ने कहा।
उसे सचमुच समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे या किससे मदद मांगे। आपातकालीन सीढ़ियों के शीर्ष पर पहुंचते ही उसकी भूमिका समाप्त हो गई थी। उसके पास सोचने, सही-गलत का फैसला करने की कोई ऊर्जा नहीं बची थी। उसमें जरा भी दम नहीं बचा था। अब आगे क्या होगा, यह वह किसी और शक्ति पर छोड़ सकती थी।

हे स्वर्ग में विराजमान प्रभु, तेरा नाम पवित्र माना जाए, तेरा राज्य आए। हमारे पापों को क्षमा कर। और हमारे मार्ग को आशीष दे। आमीन।

प्रार्थना उसके होठों से सहजता से निकली। यह लगभग एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया की तरह था। उसे इसके बारे में सोचना भी नहीं पड़ा। अलग-अलग देखें तो, उन शब्दों का कोई अर्थ नहीं था। वे महज़ ध्वनियों और प्रतीकों की एक श्रृंखला थे। लेकिन उस प्रार्थना को यंत्रवत बोलते ही, एक रहस्यमय भावना ने उसे जकड़ लिया। शायद भक्ति भी। किसी चीज़ ने उसकी आत्मा की गहराई में उसे छू लिया। मैं खुश हूँ कि जो कुछ भी हुआ, मैं खुद को खोने से बच गई, उसने खुद से कहा। मैं खुश हूँ कि मैं यहाँ तक पहुँच पाई - जहाँ भी हूँ - खुद को महसूस करते हुए।

"तेरा राज्य आए," आओमामे ने भोजन से पहले प्राथमिक विद्यालय की कैंटीन में हमेशा की तरह ज़ोर से दोहराया। उन शब्दों का जो भी अर्थ हो, वह दिल से यही चाहती थी। "तेरा राज्य आए।"
टेंगो उसे सहलाता है, अपनी उंगलियों से उसके बालों में फेरता है।
*

दस मिनट बाद, टेंगो ने एक टैक्सी रोकी। कुछ पल के लिए उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। मेट्रोपॉलिटन हाईवे पर, जहाँ ट्रैफिक बहुत ज़्यादा था, एक खाली टैक्सी कछुए की चाल से आती हुई दिखाई दी। जब टेंगो ने अविश्वास में हाथ उठाया, तो पीछे का दरवाज़ा अपने आप खुल गया और वे दोनों जल्दी से अंदर चले गए, इस डर से कि कहीं यह कोई भूत तो नहीं है जो गायब हो जाएगा। चश्मा पहने युवा ड्राइवर ने उनकी तरफ़ सिर घुमाया।
“ट्रैफिक की वजह से हमें पहले एग्जिट, इकेजिरी पर उतरना पड़ेगा। क्या आपको कोई आपत्ति है?” उसने थोड़ी पतली आवाज़ में पूछा, जो एक आदमी के लिए ठीक नहीं थी, लेकिन तीखी भी नहीं थी।
"कोई बात नहीं," आओमामे ने जवाब दिया।
सच तो यह है कि कानून हमें मेट्रोपॉलिटन से ग्राहकों को लेने से रोकता है।
“कौन सा कानून?” आओमामे ने पूछा।
रियरव्यू मिरर में दिख रहे उसके चेहरे पर थोड़ी सी शिकन थी।
ड्राइवर को उस कानून का नाम याद नहीं आ रहा था जो टैक्सी चालकों को राजमार्ग पर ग्राहकों को बिठाने से रोकता था। और आओमामे का चेहरा थोड़ा डरावना लग रहा था।
"बस, यही बात है," उसने विषय बदलते हुए कहा। "तो तुम कहाँ जा रहे हो?"
"कृपया हमें शिंजुकु स्टेशन के पास छोड़ दें," आओमामे ने कहा।
"मैं मशीन चालू नहीं करने वाला," ड्राइवर ने कहा। "हाईवे से उतरने के बाद आप मुझे उस पुर्जे का भुगतान कर देना।"
“लेकिन बिना ग्राहक के टैक्सी यहाँ क्या कर रही है?” टेंगो ने पूछा।
"यह एक जटिल कहानी है," उसने थकी हुई आवाज़ में जवाब दिया। "क्या आप चाहते हैं कि मैं आपको बताऊँ?"
"हां," आओमामे ने कहा।
यह लंबा और उबाऊ हो सकता था, लेकिन उसे कोई फर्क नहीं पड़ता था। वह इस नई दुनिया के लोगों की बातें सुनना चाहती थी। शायद इस तरह उसे नए रहस्य, नए सुराग मिल जाएं।
किनुता पार्क के पास, मैंने एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति को लिफ्ट दी जो आओयामा गाकुइन विश्वविद्यालय पैदल जा रहा था। उसने मुझे हाईवे से जाने के लिए कहा, क्योंकि शिबुया इलाके में पैदल चलना भीड़भाड़ वाला होता है। उस समय, मेट्रो हाईवे पर ट्रैफिक जाम की कोई सूचना नहीं थी और मैंने सोचा कि रास्ता आसान होगा। इसलिए मैंने उसकी बात मान ली और योगा स्टेशन से मेट्रो हाईवे पर चढ़ गया। लेकिन तनिमाची स्टेशन पर कोई दुर्घटना हो गई, और आप ड्राइविंग करना भूल जाते हैं। और एक बार मेट्रो हाईवे पर चढ़ गए, तो इकेजिरी स्टेशन तक उतरने का कोई रास्ता नहीं है। खैर, एक बात नहीं, मेरे ग्राहक की मुलाकात एक परिचित से हो गई। हम कोमाज़ावा स्टेशन पर फंसे हुए थे, तभी एक चांदी की मर्सिडीज बेंज कूप कार हमारे बगल वाली लेन में आ गई, और मेरे ग्राहक उस महिला को जानते थे जो

गाड़ी चला रही थी। उन्होंने खिड़की नीचे की और थोड़ी देर बातें कीं, फिर उस महिला ने उन्हें अपनी कार में बैठने के लिए कहा। तब उस व्यक्ति ने मुझसे कहा कि मैं उसे ऊपर ही पैसे दे दूं और वह उस महिला से बात करे। मैंने कभी ऐसी बात नहीं सुनी थी कि ग्राहक को हाईवे पर उतरने दिया जाए, लेकिन हम तो लगभग हिल ही नहीं रहे थे और वैसे भी मेरे पास उसे मना करने का कोई तरीका नहीं था। तो वो मर्सिडीज में चला गया। ठीक है, उसे बुरा लगा और उसने मुझे टिप भी दी, लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि मैं उसके इस व्यवहार से सहमत थी। क्योंकि मैं वहीं फंसी हुई थी। और इसी तरह मैं यहाँ धमाके के साथ पहुँच गई। लगभग इकेजिरी एग्जिट के पास। और मैंने क्या देखा? एक ग्राहक मुझे हाथ हिला रहा था। आप यकीन नहीं करेंगे, है ना?
"जी हां, बिलकुल," आओमामे ने सरलता से उत्तर दिया।
*

उस रात वे अकासाका की एक गगनचुंबी इमारत में बने होटल में ठहरे। उन्होंने बत्तियाँ बुझाईं, एक-दूसरे के कपड़े उतारे और बिस्तर पर लेटकर एक-दूसरे से लिपट गए। उन्हें बहुत सी बातें करनी थीं, लेकिन वे सूर्योदय के बाद कर सकते थे। फिलहाल, उन्हें पहले कुछ और काम करने थे। अँधेरे में, दोनों ने बिना कुछ कहे, धीरे-धीरे एक-दूसरे के शरीर को टटोला। उनकी उंगलियाँ और हथेलियाँ हर अंग को बारी-बारी से छूती गईं और उसकी जगह और आकार को परखती गईं। जैसे बच्चे किसी गुप्त कमरे में खजाना खोज रहे हों, उनके दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहे थे। उन्होंने हर खोजे गए अंग को चुंबन से भर दिया।
यह अध्याय समाप्त होते ही, आओमामे ने तेंगो के कड़े लिंग को काफी देर तक अपने हाथ में थामे रखा, ठीक वैसे ही जैसे उसने स्कूल के बाद कक्षा में उसका हाथ पकड़ा था। वह पहले से कहीं अधिक कठोर महसूस हो रहा था। यह लगभग अजीब सा था। फिर उसने अपने पैर फैलाए, खुद को उससे सटाया और उसे अपने भीतर गहराई तक धकेल दिया। अंधेरे में डूबी हुई, उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और गहरी साँस ली। फिर उसने धीरे-धीरे, लंबी साँस छोड़ी। तेंगो ने अपनी छाती पर उसकी गर्म साँस महसूस की।
"मैंने हमेशा कल्पना की है कि तुम मुझे इसी तरह पकड़े रहोगे," उसने उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा और हिलना बंद कर दिया।
"क्या तुम मेरे साथ सेक्स करोगे?"
- हाँ।
"क्या तुमने दस साल की उम्र में यही कल्पना की थी?" टेंगो ने पूछा।
"नहीं!" आओमामे हंस पड़ी। "जब मैं थोड़ी और बड़ी हो जाऊंगी।"
मैंने भी यही सोचा था।
"क्या तुम मुझे भेद रहे हो?"
- हाँ।
"और क्या यह वैसा ही है जैसा आपने कल्पना की थी?"
"मुझे अब भी विश्वास नहीं हो रहा कि यह सच में हो रहा है," टेंगो ने ईमानदारी से जवाब दिया। "ऐसा लगता है जैसे यह अभी भी मेरी कल्पना में ही है।"
लेकिन असलियत में ऐसा होता है।
— यह सच होने के लिए बहुत अच्छा है।

अँधेरे में आओमामे मुस्कुराई। उसने अपने होंठ उसके होंठों से दबाए और कुछ देर तक वे उसी स्थिति में रहे, उनकी जीभें आपस में उलझी रहीं।
“मेरे स्तन थोड़े छोटे हैं, है ना?” आओमामे ने कहा।
"ये तो बस अच्छे हैं," उसने उसे छूते हुए जवाब दिया।
"क्या आप सच में ऐसा सोचते हो?"
"बिल्कुल। अगर यह और बड़ा होता, तो तुम अब तुम नहीं रहते।"
"धन्यवाद," आओमामे ने कहा, और फिर जोड़ा, "लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती। बाएं और दाएं हिस्से के आकार में भी काफी अंतर है।"
"यह बिल्कुल ठीक है। दायाँ दायाँ है, बायाँ बायाँ है। कुछ भी बदलने की जरूरत नहीं है।"
ओमामे ने अपना कान उसकी छाती से सटा दिया।
"जानते हो, मैं लंबे समय से अकेला रहा हूँ। और कई बातों ने मुझे बहुत गहरा दुख पहुँचाया है। कितना अच्छा होता अगर हम बहुत पहले फिर से मिल गए होते! हमें इतने सारे उतार-चढ़ाव से नहीं गुजरना पड़ता।"
टेंगो ने अपना सिर हिलाया।
"नहीं, ऐसा मत सोचो! यह अच्छा है। अभी सही समय है। हम दोनों के लिए।"
आओमामे रोने लगी। लंबे समय से रुके हुए आँसू उसकी आँखों से बह निकले। वह उन्हें रोक नहीं पाई। वे बारिश की बूंदों की तरह बिस्तर पर टपकने लगे। वह काँपती हुई, सिसकती रही, तेंगो को अपने भीतर कसकर पकड़े हुए। तेंगो ने उसे अपनी बाहों में भर लिया और उसी तरह थामे रखा। यही वह शरीर था जिसे वह अब से हमेशा के लिए थामे रहेगा। और इस विचार ने उसे किसी भी चीज़ से ज़्यादा खुशी दी।
हमें यह एहसास होने में बहुत समय लग गया कि हम कितने अकेले थे।
"चलिए," उसने उसके कान में फुसफुसाया। धीरे-धीरे, बिना जल्दबाजी के।
टेंगो ने ठीक वैसा ही किया। वह धीरे-धीरे चलने लगा। हल्की साँसें लेते हुए और अपने दिल की धड़कन सुनते हुए। आओमामे डूबते हुए आदमी की तरह उसके विशाल शरीर से लिपट गई। उसने रोना बंद कर दिया, सोचना बंद कर दिया, अतीत और भविष्य से खुद को अलग कर लिया और टेंगो की हरकतों में समा गई।
*

भोर होते ही वे बाथरोब पहने विशाल खिड़की पर खड़े थे, दोनों के हाथों में रूम सर्विस से मंगाई गई रेड वाइन का गिलास था। आओमामे ने बस अपने होंठों को हल्का सा गीला किया। उन्हें अभी नींद की ज़रूरत नहीं थी। सोलहवीं मंज़िल पर स्थित अपने कमरे की खिड़की से वे चाँद को निहार सकते थे। बादल छंट चुके थे और उनके नज़ारे में कोई रुकावट नहीं थी। भोर होते-होते चाँद ने काफी दूरी तय कर ली थी और क्षितिज के बहुत करीब पहुँच गया था। धीरे-धीरे सफ़ेद होता हुआ, जैसे धूसर, वह जल्द ही क्षितिज के नीचे डूब जाएगा और उसका नज़ारा समाप्त हो जाएगा। स्वागत समारोह में, आओमामे ने ऊपरी मंजिल पर एक कमरा मांगा था, जहां से वह चांद देख सके, भले ही वह अधिक महंगा हो।
उन्होंने कहा था, "यह बहुत महत्वपूर्ण है।"
बिना रिजर्वेशन के आए उस युवा जोड़े के प्रति रिसेप्शनिस्ट का व्यवहार बहुत ही विनम्र था। उस शाम होटल में ज्यादा भीड़ नहीं थी, और रिसेप्शनिस्ट को पहली ही नज़र में वे दोनों पसंद आ गए थे। उसने एक बेलबॉय को उनके कमरे में यह

सुनिश्चित करने के लिए भेजा कि चांद दिखाई दे रहा है या नहीं, फिर उन्हें एक जूनियर सुइट की चाबी सौंप दी। उसने उन्हें एक विशेष छूट भी दी थी।
"क्या आज रात पूर्णिमा है?" उसने बड़े चाव से उनसे पूछा।
उन्होंने अनगिनत ग्राहकों की हर संभव इच्छा और आवश्यकता सुनी थी, लेकिन उन्हें कभी कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला था जिसने कमरे से चंद्रमा को खूबसूरती से देखने पर जोर दिया हो।
"नहीं," आओमामे ने जवाब दिया। पूर्णिमा बीत चुकी है। अब यह लगभग दो-तिहाई ही पूरी है। लेकिन कोई बात नहीं। जब तक आप इसे देख सकते हैं, तब तक ठीक है।"
क्या आपको चांद देखना अच्छा लगता है?
"यह महत्वपूर्ण है," आओमामे ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "बहुत महत्वपूर्ण।"
*

भोर हो चुकी थी, लेकिन आकाश में चंद्रमाओं की संख्या अपरिवर्तित थी। केवल एक ही चंद्रमा था, हमेशा की तरह। वही उपग्रह जो अनादिकाल से पृथ्वी के चारों ओर एक ही गति से परिक्रमा कर रहा है। चंद्रमा को देखते हुए, आओमामे ने यह सुनिश्चित करने के लिए अपने पेट को फिर से छुआ कि नन्हा जीव अंदर ही है। उसे महसूस हुआ कि वह पहले से थोड़ा अधिक फूला हुआ है।
मुझे अभी भी यह स्पष्ट नहीं है कि यह किस तरह की दुनिया है, उसने सोचा। लेकिन चाहे यह जैसी भी बनी हो, हमें यहीं रहना है। इसमें शायद अपने खतरे और जोखिम भरे पहलू होंगे। और उतने ही रहस्य और विरोधाभास भी। हमें शायद कई अंधेरे और अनजान रास्तों पर चलना होगा।
लेकिन कोई बात नहीं। हम एक-एक करके हर चुनौती का सामना करेंगे। मैं यहाँ से नहीं जा रहा। चाहे कुछ भी हो जाए, हम तीनों, टेंगो, मैं और वो छोटा सा जीव, इस दुनिया में सिर्फ एक महीने के लिए ही रहेंगे।
"तुम्हारे टैंक में एक बाघ है," एस्सो बाघ ने अपना बायां गाल दुनिया की ओर घुमाते हुए कहा। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि वह किस तरफ देख रहा था। उसकी चौड़ी, स्वाभाविक, गर्मजोशी भरी मुस्कान सीधे आओमामे की ओर थी। फिलहाल, वह उस पर भरोसा कर सकती थी। यही महत्वपूर्ण था। उसने भी मुस्कुराकर जवाब दिया। बहुत स्वाभाविक और कोमल।
ओमामे ने अपना हाथ थोड़ा सा उठाया और टेंगो ने उसे थाम लिया। वहाँ खड़े होकर, एक साथ, वे चुपचाप इमारतों के ठीक ऊपर मंडराते चाँद को देखते रहे। उन्होंने देखा कि रात के अंधेरे में उगते सूरज की रोशनी से उसकी चमक धीरे-धीरे कम होती जा रही है, जब तक कि वह हवा में लटकती एक धुंधली सी भूरी आकृति में तब्दील नहीं हो गया।

[illegible]
[illegible]
[illegible] 15 [illegible], 1960 [illegible], [illegible]
[illegible]
[illegible]
13 [illegible]
[illegible], 12 [illegible]
[illegible]: [illegible]
[illegible]
Daibosatsu tōge, roman al autorului Kaizan Nakazato, care cuprinde 41 de volume
[illegible] 11 [illegible], 1961[illegible]
[illegible]
[illegible], 2004, [illegible]. 243-244[illegible]

□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□,/ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □ □□□□ □□,/ □□□□□ □□□□□,/ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□, □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□, 1961□

□□□□□□□□ □□□□□□□□

□□□□□ □□ □□□□□□□, □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□, □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□

□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□

□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□: "□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□, □□□□ □□□□□□□□" ("□□□□□□□ □□□□ □□ □ □□□□□□□ □□□□, □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□")

***** □□□□□□□ *****

sjeet